Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

112802

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

RI-0657

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

फरवरी (प्रथम) 1991 रुपए 7.00

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अरिता

पारिवारिक पुनर्निर्माण
क्षिक पत्रिका

(प्रथम) 1991

हित्य

गल
ामे
ा गए
ात्रा

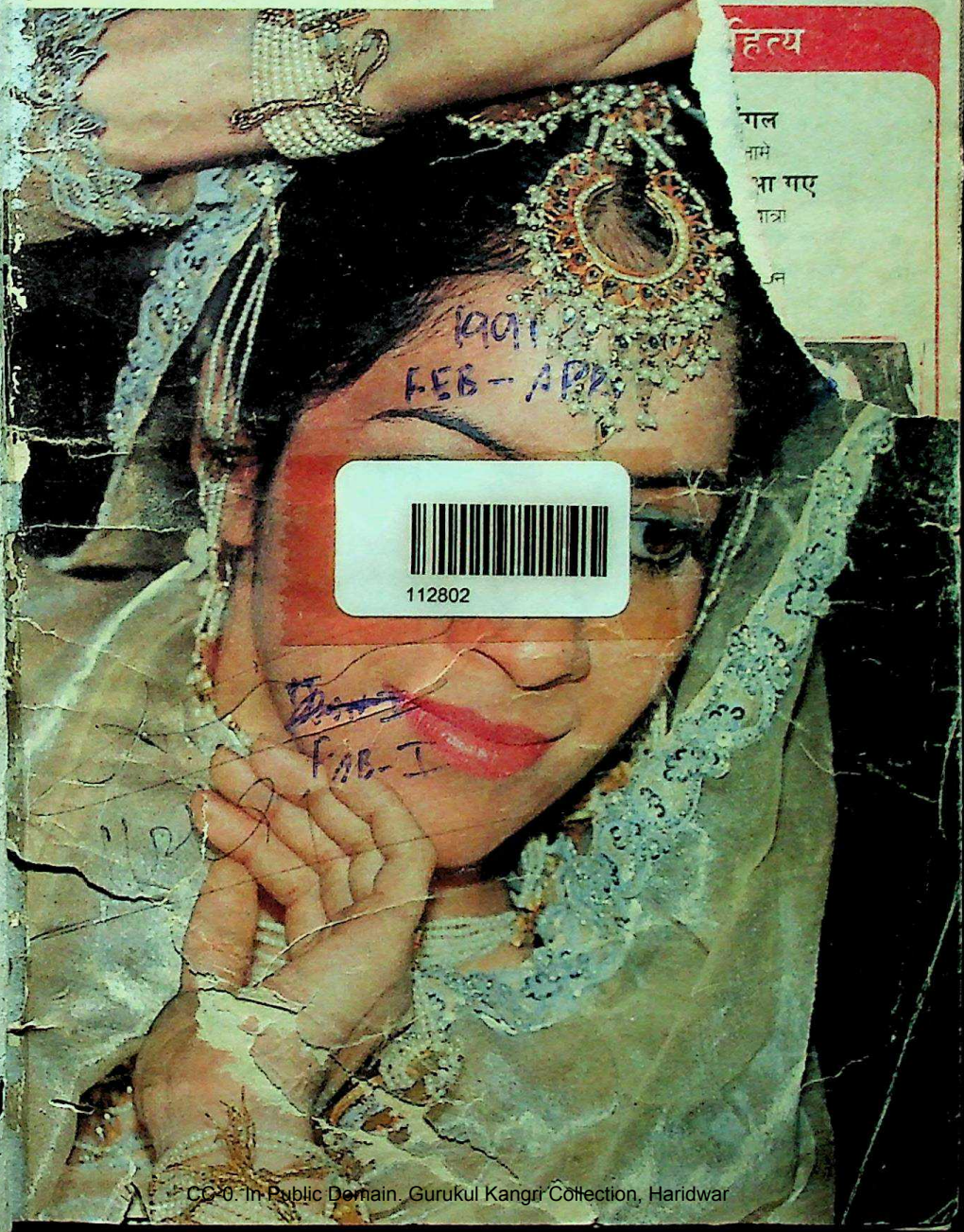

112802

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"डॉक्टर बाबू ने
मेरे पति को बताया...

बालों का झड़ना रोकने और रूसी को खत्म करने के लिए और कुछ इस्तेमाल न कर केवल केयो-कार्पिन हेयर वाइटालाइज़र इस्तेमाल कीजिए।

मैं भी यही इस्तेमाल करती हूँ।
क्योंकि मैंने देखा है उनका बहुत उपकार हुआ है।"

केयो-कार्पिन हेयर वाइटालाइज़र रोज सुबह स्नान से एक घंटा आगे और रात में सोने से पहले पूरे माथे पर अंगुली से अच्छी तरह लगाइये। बाल सुन्दर और स्वस्थ रहेंगे।

केयो-कार्पिन हेयर वाइटालाइज़र में है—

● केराटिन : बालों का मूल उपादान
● बायोटिन : बालों का झड़ना रोकता है
● पेन्थेनॉल : बालों के नष्ट टिसू में प्राण संचार करता है ● निकोटिनिक एसिड : औषधि को सोखने में मदद करता है ● रेसॉर्सिनॉल : रूसी को खत्म करता है ● हाइयेलकिल संक्रमण को रोकता है

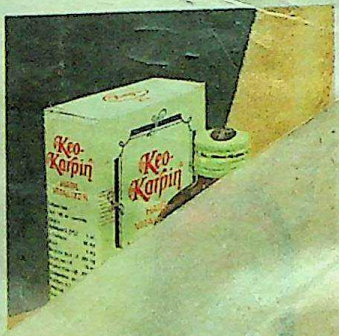

TSA-C/DMHV/490

Dey's®
दे'ज मेडिकल
की संभाल, आपका भरोसा

बालों का झड़ना रोक
करने के लिए एक प्रसाधन

* यह श्रृंगार सामग्री नहीं है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरिता

सामाजिक व पारिवारिक पुनर्निर्माण की पाक्षिक पत्रिका

संपादक व प्रकाशक : विश्वनाथ अंक : 859 फरवरी (प्रथम) 1991

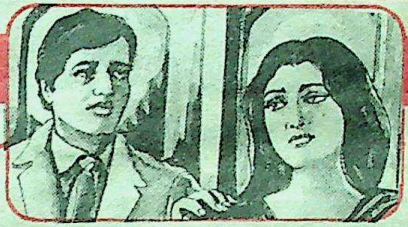

कथा साहित्य

36 **आत्मीयता का रिश्ता**
बेटी की हर इच्छा पूरी करने की कोशिश

64 **मेरा अंश**
बच्चे की चाह से पीड़ित दंपती

75 **दुश्मन**
नई राह खोजती उपेक्षित विधवा

116 **मृगतृष्णा**
पति से असंतुष्ट पत्नी

141 **सच्चा साथी**
मुसीबत में राह निकालने वाली महिला

148 **पीर पंजाल के जंगल**
आतंकवादियों के कारनामे

163 **अच्छा हुआ आप आ गए**
शाल से दाढ़ी तक की यात्रा

174 **छोटा सा सफर**
पूर्व प्रेमिका से ट्रेन में मिलन

लेख

20 **आर्थिक संकट**
नई सरकारों की विफलता का कारण

27 **कैसेट डिमांड**
अयोध्या कांड की असलियत

31 **पिछड़े वर्ग में सामाजिक चेतना**
शिक्षा द्वारा ही उत्थान

5[illegible] **फैक्टस**
क[illegible] पौधे

83 **नापतोल हो यदि उत्तम**
व्यंजन बने सर्वोत्तम

91 **बेटी और बहू**
दो नजरिए क्यों?

95 **बुरी आदत**
क्या आप भी इस से पीड़ित हैं?

101 **बच्चों की पोशाक**
खरीदते समय सावधानी

103 **पिता की संपत्ति में पुत्री का अधिकार**
पाठकों के विचार

TSA-C/DMHV/490/ 1

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

123 21वीं सदी की ओर
विकास का झूठा दावा

131 समय की पाबंदी
दांपत्य संबंधों के लिए आवश्यक

135 भूलो और क्षमा करो
व्यावहारिक बनने के गुर

161 वर्ष 1990
शोकसभा और हड़तालों के नाम

स्तंभ

6 आप के पत्र
16 सरित प्रवाह
35 दिनदहाड़े
71 बंबई महानगर में
86 नए पकवान
115 ननमुन
134 बच्चों के मुख से
167 इधरउधर
172 पाठकों की समस्याएं
183 चंचल छाया

कविताएं

14 तुम कौन हो
51 मुझे नींद न आई
114 चूहे चाचा का खत
130 तेरा चेहरा
147 कर्फ्यू में कितने दिन?

संपादकीय, विज्ञापन व प्रकाशन कार्यालय :
दिल्ली प्रेस भवन, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.
दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन लि. के लिए विश्वनाथ द्वारा प्रकाशित तथा दिल्ली प्रेस समाचार पत्र प्रा.लि. साहिबाबाद/गाजियाबाद में मुद्रित.
अन्य कार्यालय : अहमदाबाद-503, नारायण चैंबर्स, आश्रम रोड, अहमदाबाद-380009.
बंगलौर : 302-बी, 'ए' क्वींस कारनर एपार्टमेंट्स, 3, क्वींस रोड, बंगलौर-560001. बंबई : 79-ए, मित्तल चैंबर्स, नरीमन पाइंट, बंबई-400021. कलकत्ता : तीसरी मंजिल, पोद्दार पाइंट, 113, पार्क स्ट्रीट, कलकत्ता-700016. मद्रास : 14, पहली मंजिल, सीसंस कांप्लेक्स, 150/82, मांटीअथ रोड, मद्रास-600008. सिकंदराबाद : 122, पहली मंजिल, चिनाय ट्रेड सेंटर लेन, 116, पार्कलेन, सिकंदराबाद-500003.

© दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन लि. बिना आज्ञा कोई रचना किसी प्रकार उद्धृत नहीं की जानी चाहिए.

सरिता में प्रकाशित कथा साहित्य में नाम, स्थान, घटनाएं व संस्थाएं काल्पनिक हैं और वास्तविक व्यक्तियों, संस्थाओं से उन की किसी भी प्रकार की समानता संयोग मात्र है.
वैवाहिक विज्ञापन विभाग : एम-12, कनाट सरकस, नई दिल्ली-11001.
वार्षिक मूल्य केवल ड्राफ्ट/मनीआर्डर द्वारा ही 'सरिता' के नाम से ई-3, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-110055. को ही भेजें.
चैक व वी.पी.पी. स्वीकार नहीं किए जाते.
मूल्य : विदेशों में (समुद्री डाक से) 300 रु., (हवाई डाक से) 675 रु.

मूल्य : एक प्रति 7.00 रुपए. वार्षिक 168 रुपए.
वायुसेवा अतिरिक्त भार 50 पैसे प्रति :
सिल्चर, डिब्रूगढ़, अगरतला, तेजपुर, इंफाल, पोर्ट ब्लेयर, अकारस और नेपाल में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साधारण बाम व रब-देते हैं धीमा आराम

ाम रब व बाम में पेट्रोलियम जेली की मात्रा अधिक व
र्दी-जुकाम से राहत दिलाने वाले तत्वों की मात्रा कम होती है।
प कारण यह कम असरदायक होते हैं। और जब भी आपको
ीघ्र आराम की जरूरत होती है, तो आपको राहत कम और
ली ज्यादा मिलती है।

नए ओलेसान से तुरंत आराम

ओलेसान में है जुकाम से राहत के लिए शत-प्रतिशत असरदा
तत्व। अपने रूमाल पर ओलेसान की कुछ बूंदे डालिए तथा स
खींचिए। या फिर सीधे नाक पर लगाइए। ओलेसान का
असरदायक वेपर आप की बंद नाक खोले, छाती की जकड़न
तुरंत दूर करे, सरदर्द व भारीपन से तुरंत राहत दिलाए।

जुकाम से तुरंत आराम के लिए इसे खोलिए.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

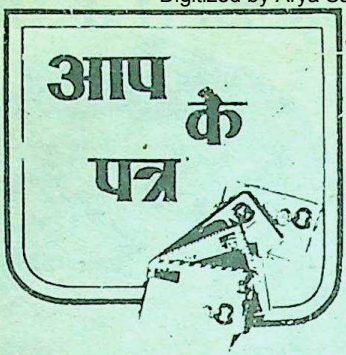

सरित प्रवाह/दिसंबर/द्वितीय

उत्तरप्रदेश के मुख्य मंत्री मुलायम सिंह यादव के विषय में आप के विचार पढ़े.

वास्तव में इस समय उत्तरप्रदेश बड़ी अजीबो-गरीब स्थिति से गुजर रहा है क्योंकि यह देश की सब से अधिक आबादी वाला गरीब राज्य है, जिस में सत्तासीन होने की बात को ले कर तरहतरह के मुद्दों को उभारा जा रहा है.

यह भी सच है कि उत्तरप्रदेश के मुख्य मंत्री मुलायम सिंह यादव आठनौ माह पहले तो कांग्रेस पार्टी के सामने बड़ी बेरुखी से पेश आते थे, लेकिन आज कुरसी के लालच में उन्होंने कांग्रेस के सामने आत्मसमर्पण कर दिया है और शासन की बागडोर कांग्रेस के हाथ में सौंप दी है.

लेकिन भोलीभाली जनता के साथ इन्होंने जो किया है, उस के लिए इन्हें उत्तरप्रदेश की ही नही बल्कि पूरे देश की जनता कभी माफ नहीं करेगी.

— दिनेशकुमार त्रिपाठी

*

पंजाब की परिस्थितियां तो वैसी ही हैं, जैसा कि आप ने जिक्र किया है, लेकिन उस की प्रगति के रहस्य पर आप के विचारों से मैं पूर्णतः असहमत हूं.

आप के विचार से यह बात सिद्ध होती है कि आप सरकारी तंत्र को भ्रष्टाचार का पर्याय मान बैठे हैं. सरकार की असफलता के आधार पर निराशावादी दृष्टिकोण अपना कर किसी परिस्थिति का मूल्यांकन सर्वदा निंदनीय है.

यदि आतंकवाद से ग्रसित पंजाब भी प्रगति पथ पर सतत चलायमान है तो संभव है कि वहां कानून और व्यवस्था कायम करने पर और त्वरित गति से विकास होता.

भ्रष्ट अधिकारियों के कारण भले ही जनता सरकारी कार्यक्रमों से लाभांवित नहीं होती हो, निकम्मी पुलिस व्यवस्था के कारण भले ही असुरक्षा की भावना ज्यादा हो, लेकिन लोकतंत्र में सर्वाधिक जनकल्याण की भावना तो निर्विवादेन सत्य है. भ्रष्ट व्यवस्था तो सामाजिक विकृति है, जिस का उन्मूलन कष्टसाध्य अवश्य है, असंभव कदापि नहीं. फिर राष्ट्रीय एकता, अखंडता एवं सुखशांति का सौदा कर के विकसित होने की अपेक्षा अविकसित रहना ही कहीं श्रेयस्कर है.

—देवेंद्रनाथ

*

आज देश हर तरफ से समस्याओं से घिरा है. फिर चाहे वह आंतरिक समस्याएं हो या बाहरी. स्थानस्थान पर दंगे हो रहे हैं, महंगाई बढ़ रही है, आतंकवाद फैल रहा है. हमारे अर्थशास्त्री देश की अर्थव्यवस्था को बहुत लचीला मानते थे तथा सोचते थे कि वह इतनी मजबूत है कि हर खतरे का सामना कर सकती है. लेकिन खाड़ी संकट और सरकार के गलत निर्णयों ने उस की कमर ही तोड़ दी, जैसे खाड़ी में बसे भारतीयों को बिना खर्च लाना आदि, जबकि वे मात्र धन कमाने वहां गए थे.

—शीतलाप्रसाद गुप्ता

*

चंद्रशेखरः विघटनकारी राजनीतिज्ञ

जगदीश चावला का लेख चंद्रशेखरः कल के 'खलनायक', आज के 'महानायक' (दिसंबर/द्वितीय) से स्पष्ट है कि भारत के नए प्रधान मंत्री अपने पूरे जीवन काल में एक विघटनकारी राजनीतिज्ञ की भूमिका निभाते रहे हैं. वह आज भी उसी के बल पर देश के सर्वोच्च पद पर विराजमान हैं.

जिस प्रकार चंद्रशेखर ने अपनी स्वार्थसिद्धि के लिए कई बार दल बदले हैं, उसी प्रकार उन के उप प्रधान मंत्री देवीलाल व उन के मंत्रिमंडल के सदस्यों ने तीन से सात बार तक दल बदले हैं. ऐसे मंत्रिमंडल से किसी अच्छे कार्य की आशा करना मृगमरीचिका के समान है.

आज चंद्रशेखर उसी राजीव गांधी के कांग्रेस (इ) दल के सहारे जी रहे हैं, जिन को कुछ माह पूर्व वह कोसते नहीं अघाते थे.

यह विडंबना ही है कि लालबहादुर शास्त्री को छोड़ कर सभी प्रधान मंत्रियों के विरुद्ध कोई न कोई लांछन लगा हुआ है. साथ ही प्रधान मंत्रियों का कार्यकाल भी निरंतर घटता जा रहा है जबकि 1950 से प्रारंभ हुए दशक में एक प्रधान मंत्री था, 1970 के दशक में दो, 1980 के दशक में तीन और 90 के दशक में चार प्रधान मंत्री हो चुके हैं.

वास्तव में यह शोध का विषय है कि देश में सशक्त नेतृत्व का अभाव क्यों होता जा रहा है? जो कुछ भी हो, चंद्रशेखर प्रधान मंत्री की कुरसी हथियाने में सफल तो हो गए हैं परंतु उन का शासन काल कुछ माह से अधिक टिकने वाला नहीं.

—विद्यासागर

*

खलनायक तो खलनायक ही रहता है, कुछ समय के लिए अपना ऊपरी आवरण बदल कर नायक तो नहीं बन सकता. चंद्रशेखर गिरगिट की तरह रंग बदलने में माहिर हैं. जब वह एक दल में रह कर एक मौका विशेष की तलाश में रहते हुए अपने दल के साथ दगा कर सकते हैं तो वह वास्तव में जनता के समक्ष तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बूझो तो जानें,
ऐसो शुद्ध नारियल तेल कि मैंने अपनाया?

- A

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खलनायक ही हैं, चाहे वह राजनीतिक क्षेत्र में नायक हों.

हमें नहीं लगता कि ऐसी अल्पमत सरकार होने पर वह नायक की भूमिका बखूबी निभा पाएंगे. खासतौर पर वे मंत्रीगण, जिन के पास अनुभव के नाम पर कुछ भी नहीं है, अपना कार्य कैसे करेंगे. देशविदेश में कोई भी चंद्रशेखर सरकार से कोई खास अपेक्षा नहीं करता. इतना अवश्य है कि आने वाले समय में उन का नाम भूतपूर्व प्रधान मंत्रियों की सूची में आ जाएगा.

—शैलेंद्र सिंह यादव

*

मैं लेखक के विचारों से पूर्ण रूप से सहमत हूं. चंद्रशेखर को तो 'दलबदलू' नेता की अपाधि प्रदान की जानी चाहिए. कभी कांग्रेस, कभी जनता दल तो कभी जनता दल (स).

उप प्रधान मंत्री देवीलाल के यह कहने से कि बोफोर्स कोई बड़ा मुद्दा नहीं है, यह स्पष्ट हो गया है कि उन के लिए बड़ा मुद्दा तो कुरसी ही है.

—भारतभूषण गोयल

*

राष्ट्रीयकृत बैंकों का सही विश्लेषण

लेख 'राष्ट्रीयकृत बैंक' दिवालिएपन की ओर बढ़ते कदम (दिसंबर/द्वितीय) में लेखक द्वारा राष्ट्रीयकृत बैंकों का सही विश्लेषण किया गया है.

बैंकों की इस स्थिति के लिए पूरी तरह से सरकार और बैंक प्रबंधक जिम्मेदार हैं. प्रबंधक वर्ग बैंक की जमा राशियों के लक्ष्य व्यावहारिकता को ध्यान में रखे बिना ही बढ़ा देते हैं और उन लक्ष्यों को अधिकारियों की पदोन्नति एवं स्थानांतरण के साथ जोड़ दिया जाता है. ऐसे लक्ष्य जिन की प्राप्ति असंभव है, बैंक अधिकारियों को अपने व्यक्तिगत लाभ के लिए फर्जी आंकड़े प्रस्तुत करने को विवश कर देते हैं. उदाहरण के तौर पर तीन बैंकों का त्रिकोण बना कर ग्राहक से एकदूसरे के पक्ष में चेक जारी करवा दिए जाते हैं. बैंक ऐसे चेक को खरीद कर अपने जमा शेष को बढ़ा लेते हैं, जिस से असंभव लक्ष्यों की भी पूर्ति दर्शा दी जाती है जबकि वास्तविकता कुछ और होती है.

दूसरी ओर वोटों की राजनीति के कारण जो ऋण माफ करने के आश्वासन दिए जाते हैं, वे ऋणी को ऋण वापस न करने के लिए प्रेरित करते हैं. जिस से बैंकों की करोड़ों की राशि डूब जाती है.

यदि राष्ट्रीयकृत बैंकों की आर्थिक स्थिति मजबूत करनी है तो सरकारी नीतियों (जो कि दिवालिएपन की ओर ले जाती हैं) का बैंकिंग सेवाओं में कम से कम दखल होना चाहिए और प्रबंधक वर्ग द्वारा भी ऐसे लक्ष्य रखे जाने चाहिए जो व्यावहारिक एवं साध्य हो.

—रवि जैन

*

जन्म से भेदभाव

लेख 'अविवाहिताओं की आत्महत्याएं: दोषी दहेज या मातापिता' (दिसंबर/द्वितीय) में लड़कियों को दहेज के लिए इच्छुक बताया गया है. आखिर इस में बुरा क्या है? क्या लड़कियों की कोई इच्छा नहीं होती?

लड़कियों के साथ तो जन्म से ही भेदभाव होता है. उस के जन्म के समय मातापिता मायूस हो जाते हैं और लड़के के जन्म के समय वे खुशियां मनाते हैं. आर्थिक रूप से संपन्न न होने पर लड़की को सामान्य शिक्षा दिला कर घर बैठा लिया जाता है जबकि लड़के को उच्च शिक्षा दिलवाई जाती है. पैतृक संपत्ति पर भी लड़के का ही अधिकार होता है. ऐसे में अगर लड़कियां अपनी शादी में कुछ पाने की इच्छा रखती हैं तो कुछ बुरा नहीं करतीं. वे भी तो ससुराल में अपनी ननदों की शादियों में उन्हें अपनी हैसियत के अनुसार दहेज दे कर विदा करती हैं.

जिन लड़कियों को दहेज नहीं मिल पाता उन्हें आत्महत्या जैसा कायरतापूर्ण कदम नहीं उठाना चाहिए. उन्हें अपने अंदर आत्मविश्वास पैदा कर

सरिता के लेखक

दीपा त्यागी:

कहानी 'मेरा अंश' की लेखिका दीपा त्यागी पेशे से होमियोपैथिक चिकित्सक हैं. पारिवारिक, सामाजिक विषयों पर अन्य रचनाओं के अलावा आप के दो कहानी संग्रह भी प्रकाशित हो चुके हैं.

दीनानाथ शरण:

गद्य गीत 'कर्फ्यू में कितने दिन' के रचयिता दीनानाथ शरण को हिंदी में लेखन कार्य के लिए साहित्यालंकार, साहित्य मनीषी आदि उपाधियों से अलंकृत किया गया है.

माया प्रधान:

'सच्चा साथी' की लेखिका माया प्रधान की सामाजिक, पारिवारिक व मनोवैज्ञानिक आदि विषयों पर हिंदी में लगभग तीन सौ कहानियां, दो उपन्यास तथा एक कहानी संग्रह प्रकाशित हो चुका है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चुराई हुई धुनों को भी अपना मेहनत से ऐसा नया रूप दे देते हैं कि मूल गाना भी फीका पड़ जाता है. 'जिलेले जिलेले' 'चोरीचोरी यूं जब हो आंखें चार', 'तमा तमा लोगे' आदि इस के कई उदाहरण हैं.

और तो और लेखक ने आनंद मिलिंद को भी नहीं बख्शा है. उन्होंने फिल्म 'स्वर्ग' को छोड़ कर अपनी सभी फिल्मों में अच्छा संगीत दिया है और इन का नाम बहुत कम समय में ही मधुर संगीत का पर्याय बन गया है.

वैसे भी 'कुत्ते बिल्ली', 'गधे के रेंकने' आदि शब्दों एवं शुरू से अंत तक फूहड़ और अपमानजनक भाषा से भरे ऐसे लेख शोभा नहीं देते. —सुधीर चंडाक

*

लेख में गायकों, गीतकारों और संगीतकारों की आलोचना के सिवाय कुछ भी नहीं था.

लेखक ने भूपेंद्र को जुकामिया कह कर नाकारा बना दिया जबकि भूपेंद्र ने कम संख्या में गीत गाने के बावजूद हिट गीत गाए हैं. यही नहीं लेखक को कुमार शानू से भी कोई उम्मीद नहीं है जबकि पिछले वर्ष फिल्म 'जीना तेरी गली में' तथा हाल में 'आशिकी' के लिए शानू ने मर्मस्पर्शी गीत गाए हैं. और सभी काफी प्रसिद्ध हुए हैं.

उदित नारायण के शास्त्रीय संगीत की शिक्षा लेने पर भी लेखक को शक है. यह सच हो सकता है लेकिन इस के बावजूद उदित ने 'लाल दुपट्टा मलमल का' व 'हिल' फिल्म में जबरदस्त गीत गाए हैं. 'कयामत से कयामत तक' की गायिकी को तो लेखक ने स्वयं सराहा है.

पंजाबी भाषा से लेखक को कुछ विशेष ही चिढ़ है तभी उस ने लक्ष्मीकांतप्यारेलाल व आनंदबख्शी द्वारा अपने गीतों में पंजाबी लोकधुनों व शब्दों के प्रयोग पर आपत्ति की है जबकि उर्दू व अंगरेजी के शब्दों पर लेखक ने कोई एतराज नहीं किया.

गीतकार व संगीतकार भी क्या करें क्योंकि श्रोताओं के कानों का स्वाद भी तो बदलता रहता है. लेखक को 'कुर्बानी' का संगीत टवांय टवांय लगता है जबकि इस फिल्म के गीत काफी प्रसिद्ध हुए हैं. अनुराधा पोडवाल, सपना मुखर्जी, कविता कृष्णमूर्ति व अन्य नए गायकों का उत्साह बढ़ाने के बजाय लेखक ने बेवजह इलजाम लगा कर उन्हें निरुत्साहित करने की कोशिश की है. लेखक को यह नहीं भूलना चाहिए कि गायकी शुरू करने के दिनों में लता मंगेशकर को भी आवाज के अधिक पतली होने की वजह से कोई विशेष महत्त्व नहीं दिया गया था. —हरजीत सिंह बग्गा

*

लेखक का कहना कि आलीशा चिनाय और शेरोन प्रभाकर की हैसियत बाथरूम सिंगर से ज्यादा नहीं है, एकदम गलत, बेबुनियाद और मनगढ़ंत आरोप हैं. बाथरूम सिंगर उसे कहा जाता है जिस की आवाज बेसुरी हो.

स्वाद

ड कॉटनसीड ऑइल एकदम शुद्ध
रिफाइन्ड
है। और तो और इसमें तली चीज़ें
है। क्योंकि
ताजी रहती हैं। इसीलिए मैं अपने
PUFA) से
स्वादिष्ट व्यंजन इसमें बनाती हूँ।
स्थ्य-वर्धक है
के तौर पर
फैक्टर)

बेहद कम दाम

गिन्नी रिफाइन्ड कॉटनसीड ऑइल, और तेलों के मुकाबले कम दाम में मिलता है। इतने कम दामों में इतने ज्यादा गुण अच्छा सौदा नहीं तो फिर क्या है?

१, २, ५ और
१५ किलो पैक में उपलब्ध।

गिन्नी
रिफाइन्ड कॉटनसीड ऑयल

हुत, स्वाद, कम दाम का बेजोड़ मेल

CLARION D 306

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शेरोन ने केवल एक या दो गाने गाए हैं. ऐसे में चुनौती का सवाल ही नहीं उठता. जहां तक आलोशा का प्रश्न है, उस का फिल्मों में पौप गायक के रूप में एकाधिकार है. —आशीष

*

इस लेख के माध्यम से जहां एक ओर फिल्म संगीत के गिरते हुए स्तर के प्रति क्षोभ व्यक्त किया गया है. वहीं दूसरी ओर इस में फिल्म संगीत के स्वर्णिम युग के गवाह एवं संगीत पारखियों का आक्रोश एवं पीड़ा भी झलकती है. निस्संदेह आज फिल्मों का संगीत बद से बदतर होता जा रहा है.

फिल्म संगीत के इस निकृष्ट संगीत के लिए लेखक ने विशेषकर संगीतकारों, गायकों, गीतकारों एवं निर्माताओं को सामूहिक रूप से दोषी ठहराया है. यह उचित ही है. रातोरात लोकप्रिय हो जाने की ललक एवं पैसा कमाने की हवस में संगीत का गला दबाया जा रहा है. इस के लिए वे रिकार्डिंग कंपनियां भी कम जिम्मेदार नहीं है (जिन का उल्लेख लेखक ने नहीं किया है) जो वर्जित कैसेट निकाल कर फिल्मों के सुरीले संगीत की धरोहर के साथ खिलवाड़ करती हैं. लता, रफी, हेमंत दा और किशोर कुमार के कालजयी गानों की नकल को कुकुरमुत्तों की तरह उग आए गायकों की आवाज में दिहाड़ी पर रखे हुए तथाकथित संगीतकारों के संगीत में सुनना अत्यंत ही असहनीय है.

—सुभाष जोशी संगीत

*

मर्मस्पर्शी कहानी

कहानी 'परख' (दिसंबर/द्वितीय) अंतर्मन को छू गई. आज भारतीय युवतियों को इसी प्रकार की सोच की आवश्यकता है. मैं 'सरिता' से इसी प्रकार की समस्यापरक और उद्देश्यमूलक कहानियों की आशा करती हूं. —प्रतिभा चतुर्वेदी

*

विदेशी फिल्मों की भोंडी नकल

स्तंभ 'चंचल छाया' (दिसंबर/द्वितीय) में फिल्म 'कफन' की समीक्षा पढ़ी.

विदेशी डरावनी फिल्मों की नकल पर हमारे यहां बनने वाली अधिकांश फिल्मों में आत्मा के अस्तित्व को सिद्ध करने की असफल कोशिश की गई है. इन में न तो कोई तथ्य होता है और न कोई वैज्ञानिक तर्क. इन फिल्मों में कोई नयापन भी नहीं होता, बस भोंडे सेक्स के साथ दर्शाई जाने वाली एक ही ढंग की प्रतिशोध और प्रेम की कहानी होती है. ऐसी फिल्मों का समाज पर बहुत खतरनाक असर पड़ता है. इस तरह की फिल्मों पर प्रतिबंध लगा देना चाहिए. —प्रणय मिश्र

*

ज्ञानवर्धक लेख, पर विसंगतियां भी

लेख 'संपत्ति का बीमा क्यों और कैसे?' (दिसंबर/प्रथम) ज्ञानवर्धक लगा.

वास्तव में बीमा आज मनुष्य जीवन का एक आवश्यक अंग बन गया है परंतु आज भी इस के बारे में बहुत कम लोगों को जानकारी है.

इस लेख में कुछ विसंगतियां भी नजर आईं. पृष्ठ 81 पर पैरा III 'किसी बीमा पालिसी पर आंशिक दावा वसूल... 12 हजार रुपए के बीमा मूल्य के लिए चालू रहेगी.' यह कथन सर्वथा गलत है. 15 हजार रुपए के बीमित स्कूटर का एक दुर्घटना होने पर यदि 3 हजार रुपए का दावा ले लेते हैं तो शेष अवधि के लिए भी वह पालिसी 15 हजार रुपए के लिए ही चालू रहेगी क्योंकि मोटर वाहन नियम के अंतर्गत वाहन की दुर्घटना के उपरांत हुई क्षति की मरम्मत इत्यादि होने के बाद वाहन का मूल्य पुनः अपने पूर्ण मूल्य के बराबर हो जाता है. सिर्फ अग्नि बीमा के अंतर्गत आप के द्वारा दिया गया कथन लागू होता है.

इसी पृष्ठ पर किया गया व्यंग्य, 'कोई शुभचिंतक सर्वेयर हो तो बिना दुर्घटना हुए भी आप को पैसा दिला सकता है. आप उसे खुश कीजिए वह आप को खुश कर देगा,' सही नहीं है. सर्वेयर तो कंपनी के सक्षम अधिकारी द्वारा नियुक्त किए जाते हैं तथा उसे भी अधिकारी स्वयं की मरजी से नियुक्त करता है न कि पार्टी की मरजी से. अतः इस तरह के फर्जी दावे की रकम पार्टी को मिल ही नहीं सकती. ज्ञानवीर सिंह

लेखक का उत्तर

लेख आप को पसंद आया व उपयोगी लगा, आभारी हूं.

आप की पहली आपत्ति स्वीकार्य है. स्कूटर का उदाहरण केवल समझाने के लिए दे दिया गया था. वास्तव में केवल "शापकीपर्स पालिसी" में ही आंशिक दावा ले लेने के बाद पालिसी शेष समय तक बाकी बीमाधन के लिए चालू रहती है. अन्य बीमों में पूरे बीमा धन के लिए.

आप की दूसरी आपत्ति से मैं कतई सहमत नहीं. आप ने किताबी बात लिखी है और मैं ने व्यावहारिक. किसी भी दुर्घटना से हुई हानि को बढ़ाचढ़ा कर दिखा देना सर्वेयर के बाएं हाथ का काम है. जान पहचान, किसी प्रकार के लालच या अन्य कारणों से ऐसा होता ही रहता है. हां, सभी सर्वेयर एक से नहीं होते. किंतु जब एक मछली सारे तालाब को गंदा कर देती है तो ऐसी कई मछलियां हों तो... लेखक

*

क्षमा याचना

'यह भी खूब रही' सरिता, जुलाई (प्रथम) 1990 में प्रकाशित मेरी रचना मौलिक है या नहीं मैं नहीं जानता क्योंकि यह रचना मेरे मित्र ने मुझे दे कर सरिता में प्रकाशित करवाने के लिए उकसाया था. यदि मुझे पता होता कि उकसाने का इतना बड़ा जुर्म हो सकता है तो मैं इस रचना को कभी भी नहीं भेजता. जो गलती मुझ से हुई है वैसी गलती अन्य किसी से न हो. इस गलती के लिए मैं आप से क्षमा चाहता हूं.

[illegible] कपड़ा मार्केट गली. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

याद रखिए, संतुलित पौष्टिक आहार के बिना, आपके शिशु को चुस्त-तंदुरुस्त रहने के लिए 'उचित' कैलोरी नहीं मिल सकतीं.

"तभी तो मैं अपने शिशु को सेरेलॅक देती हूँ."

और यह 'उचित' कैलोरी क्या होती है?
डॉक्टर बताते हैं कि उचित कैलोरी का मतलब है–भोजन में प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट और फैट का सही संतुलन. शिशु के सही विकास और उसे चुस्त-तंदुरुस्त रखने के लिए भोजन में इन तीनों चीजों का होना बहुत जरूरी है.

अपने शिशु को उचित कैलोरी देने के लिए आप उसे संतुलित पौष्टिक आहार ही खिलाइए
हर बार, हर दिन, दिन-प्रतिदिन.
ज्यादातर माताओं के लिए साधारण खाने द्वारा संतुलित पौष्टिक आहार दे पाना आसान नहीं होता है.
इसका समाधान?
सेरेलॅक संतुलित पौष्टिक ठोस आहार, जो चौथे महीने से शिशुओं को देने के लिए उपयुक्त आहार है, जब सिर्फ दूध ही काफी नहीं होता.
सेरेलॅक में हैं–प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, फैट, विटामिन, आयरन और कैल्शियम
तभी तो आपके शिशु को मिलती है 'उचित' कैलोरी और पूरा स्वाद
तो आज से ही अपने शिशु को संतुलित पौष्टिक सेरेलॅक का पूरा लाभ दीजिए
और जब शिशु 6 माह का हो जाए तो उसे व्हीट-एप्पल, व्हीट-ऑरेंज और व्हीट-वेजीटेबल का अतिरिक्त लाभ दीजिए.

कृपया पैक पर दिए निर्देशों का पालन कीजिए.

मुफ्त सेरेलॅक बेबी केयर बुक
लिखिए: सेरेलॅक, पोस्ट बैग न 21, नई दिल्ली-110 029.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुम कौन हो!

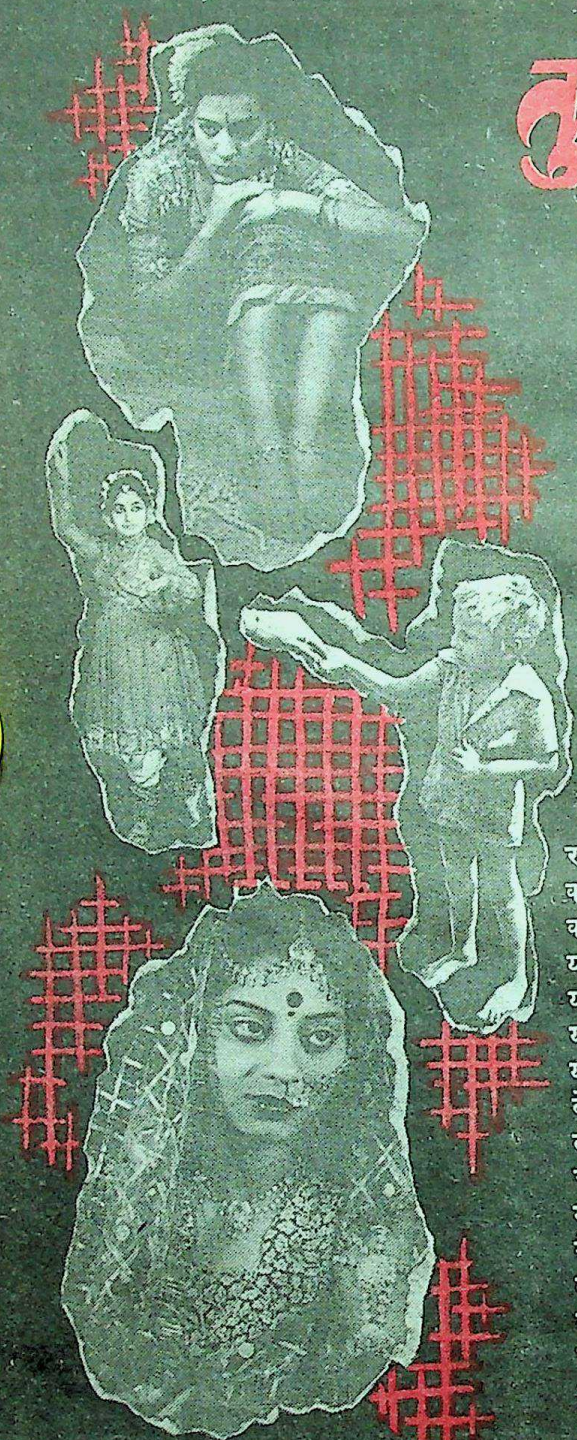

रात, रात तुम कौन हो,
क्या हो, कहां से आई हो?
क्या तुम एक सन्नाटा हो,
या फिर दर्दभरी चीख हो
या ठिठुरती गठरी बनी देह हो.
या कि सुबह का इन्तज़ार हो
या फिर घुंघरुओं का नीलाम घर हो
बेलेचमेली की महक हो.
दो रोटियों का सवाल हो
गुनाहों का संरक्षण हो
या कि नवेली दुलहन की
मेहंदी की रंगत हो.
या थकीहारी सांसों का विश्राम हो
या विरह की आग हो
या मिलन की प्यास हो
रात तुम कौन हो,
क्या हो और कहां से आई हो?

—विनीताकुमार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होली के
इस उल्लास
में आप के लिए
रंगों की फुहार
लिए

अरिता
होली विशेषांक

फरवरी
(द्वितीय)
1991

इस इंद्रधनुषी विशेषांक में आप के लिए है :

- होली के लिए अपने को तैयार कर लीजिए.
- होली तेरे कितने रंग.
- होली पर मर्यादा का उल्लंघन न कीजिए.
- सालियों वाली ससुराल.

इस के अतिरिक्त होली के मर्म को छूती अनेक कहानियां, सामाजिक व राजनीतिक गुत्थियों को खोलते लेख, गुलाल के रंगों से सराबोर कविताएं, स्वादिष्ट सतरंगी पकवान तथा सभी स्थाई स्तंभ व रोचक जानकारी.

खरीदना
न भूलें.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संपादकीय
फरवरी (प्रथम) 1991

शरित प्रवाह

अमरीका को अंततः इराक के विरुद्ध युद्ध छेड़ना ही पड़ा क्योंकि सारी धमकियों, दलील और अपीलों के बावजूद सद्दाम हुसैन कुवैत को छोड़ने को तैयार नहीं हुए. उलटे वह लगातार यह कहते रहे कि वे अमरीका या संयुक्त राष्ट्र संघ की चिंता नहीं करते क्योंकि उन के पास उन्हें सबक सिखाने की खासी ताकत है. अब यह युद्ध इराक को तो नष्ट कर ही देगा, खाड़ी क्षेत्र से विश्वभर की तेल की आपूर्ति को छिन्नभिन्न भी कर देगा.

इराक को तो यह युद्ध बिलकुल तहसनहस कर देगा क्योंकि अमरीकी सेनाएं अपने सैनिकों की जानें बचाने के लिए हवाई जहाजों की बमवर्षा पर अधिक जोर दे रही हैं. बमवर्षा से न केवल सैनिक ठिकाने बल्कि आसपास के इलाके भी नष्ट हो जाते हैं.

इराक को यह आशा थी कि विश्व जनमत अरब देशों के आपसी विवादों में पड़ कर तेल की आपूर्ति को खतरे में नहीं डालना चाहेगा. अंततः युद्ध की नौबत आने पर अमरीका और अन्य सहयोगी देश ही नहीं, सऊदी अरब, जिस की जमीन से युद्ध लड़ा जाना है, अपने तेल कुओं को बचाने के लिए इराक की शर्तें मान लेंगे.

अमरीका व अन्य पश्चिमी देश इस विवाद में न उलझते अगर उन्हें सद्दाम हुसैन की आदत का पता न होता. वे जानते हैं कि सद्दाम हुसैन कुवैत को हड़प कर ही बैठने वाला न था. वह सऊदी अरब पर भी कब्जा कर के पूरी दुनिया के तेल भंडार का मालिक बन जाता. इसी दुस्स्वप्न के कारण सद्दाम हुसैन को इराकी जनता का समर्थन मिल रहा है. इराकी सेना अधिकारी भी जानते हैं कि अमरीका से यह युद्ध आत्मघाती ही होगा.

इराक से युद्ध का जोखिम लेना पूरी दुनिया के लिए एक आवश्यक कदम था. रूस और अमरीका की संधि के बाद जो शांति का माहौल बना है, उसे बनाए रखना आज विश्व के लिए आवश्यक है. अब मानव हर तरह की भौतिक सुविधाएं चाहता है पर बिना प्रकृति को नष्ट किए. यह तभी संभव है जब सेनाओं पर किए जाने वाला खरबों रुपए का खर्च प्रकृति के संतुलन को बनाए रखने में किया जाए. इस के लिए आवश्यक है कि दुनिया के किसी भी कोने में सैनिक बल के खड़े हो रहे खतरे को कुचला जाए.

यह कहना गलत होगा कि अमरीका व पश्चिमी देश केवल तेल की आपूर्ति को बचाने के लिए युद्ध लड़ रहे हैं. इन देशों के अपने तेल भंडार भी कम नहीं हैं. वहां तेल महंगा है पर इतना है कि काम न रुके. वे तो यह युद्ध इसलिए लड़ रहे हैं कि तेल के कुओं पर कब्जा कर कोई और हिटलर या स्टालिन या माओ न पैदा हो जाए.

इस विवाद में भारत सरकार की स्थिति दयनीय रही है. इस बार फैसले राजनीतिबाजों को नहीं, विदेश मंत्रालय के महाबाबुओं को करने थे. अफसोस, उन में न दूरदर्शिता कभी रही है, न सहीगलत समझने की अक्ल. उन्होंने पहले ही दिन हाथ डाल दिए और अपनेआप को निष्पक्ष घोषित कर के कायरता का प्रदर्शन कर दिया.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अलग थलग और एक महत्त्वहीन देश बना दिया है. जहां मानो लोग नहीं, जानवर या चूहे बसते हों जिन्हें दुनिया से कुछ लेनादेना नहीं.

हमारे लगभग सारे राजनीतिक दलों के राजनीतिबाज (सिवाय भारतीय जनता पार्टी के) व तथाकथित बुद्धिवादी जवाहर-लाल नेहरू की अमरीका से घृणा और समाजवादी रूस व देश में मुसलिम वोट बैंक को बनाए रखने के लिए अरब मुसलिम देशों के प्रति अथाह आस्था के कारण हमेशा रूस, अरब चरणचुंबन करते रहे हैं. चाहे अमरीका व पश्चिमी राष्ट्र कहीं भी कितने भी सही हों और रूस व अरब मुसलिम देश कितने ही गलत व भारत के प्रति उदासीन रहे हों.

इस नीति के अनुरूप आज भी विदेश मंत्रालय के महाबाबू इसी लकीर पर चल रहे हैं. वे यह देखते हुए भी कि रूस व सिवाय जार्डन व यमन के सभी अरब मुसलिम देश सद्दाम हुसैन की कुवैत पर कब्जा करने की भर्त्सना कर रहे हैं और राष्ट्र संघ के प्रस्ताव के अंतर्गत अमरीका द्वारा सैनिक काररवाई का समर्थन कर रहे हैं. भारत अभी भी इराक का समर्थन कर रहा है. यह देखने की बात है कि पाकिस्तान तक, जो रोज अपने कट्टर इसलामी होने का दावा करता है, खाड़ी युद्ध में 20,000 सैनिक अमरीकी व सऊदी अरब की फौजों की सहायता के लिए भेज चुका है. और हम इस सैनिक काररवाई की भर्त्सना कर रहे हैं.

*

इराक युद्ध का दुष्प्रभाव भारत पर बुरी तरह होगा. दुनिया भर में तेल की कीमतें (कब्जे से) पहले से ऊंची ही रहेंगी. आमतौर पर तो भारत थोड़ीबहुत दामों की ऊंचनीच सह लेता है पर इस बार विदेशी मुद्रा की कमी के कारण यह बोझ असहनीय है.

भारत की आंतरिक समस्याओं के कारण भी देश भर का कामकाज ढीलाढाला चल रहा है जिस से उत्पादन को काफी धक्का पहुंचा है.

ऐसा नहीं है कि हम इस स्थिति से उबर नहीं सकते. हमारे यहां अभी भी मशीनीकरण इतना कम है कि हम काफी कम तेल से काम चला सकते हैं. पर हमें तो बैठेबिठाए खाने की आदत हो गई है. पहले हमारे पास शूद्रों की फौज काम करने को होती थी, अब हम आयातित तकनीक के गुलाम होने लगे हैं. शूद्रों से तो धर्म और पूर्वजन्म के नाम पर कम पैसे दे कर काम ले लिया जाता था पर तेल कौन मुफ्त देगा?

तेल की बरबादी सब से अधिक हमारी सरकार करती है. राजनीतिबाज, महाबाबू व बाबू सभी बेदर्दी से वाहनों को इधर से उधर दौड़ाते हैं. ये सब उत्पादन करते नहीं, रोकते हैं. इन का खरबूजिया रंग और लोगों पर चढ़ रहा है जो सोचते हैं असली जीना उत्पादन करना नहीं, नष्ट करना है.

जैसे जब नादिरशाह आ रहा था तो दिल्ली का शहंशाह 'दिल्ली दूरस्त, दिल्ली दूरस्त' का राग अलाप रहा था, हमारे शहंशाह 'खतरा नहीं, खतरा नहीं' का राग अलाप रहे हैं. यह खतरा टल भी सकता है बशर्ते कि बचत भी की जाए और मेहनत भी.

इस के लिए जरूरी है कि राजनीति-बाजों के खेल समाप्त हों और नौकरशाही की तानाशाही को कुछ दिन की छुट्टी दी जाए. अगर राजनीतिबाज और नौकरशाही परिवहन क्षेत्र को ही छः माह के लिए भी अपने चंगुल से छोड़ दें तो देश में तेल की खपत 10% से 15% कम हो जाए. चौकियों, चुंगियों, परमिटों, लाइसेंसों की चैकिंगों से ही अरबों का तेल नष्ट हो जाता है. अगर हम यही बचा लें तो देश को काफी राहत मिले.

कठिनाई यह है कि इसी के बहाने नौकरशाही को करोड़ों की आमदनी होती है जिस में राजनीतिबाजों की अपनी लूट शामिल है. उसे भला कौन छोड़े. देश चाहे भाड़ में जाए.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दलबदल कानून के अंतर्गत सिर्फ 35 दल का बाद करना है तो कैसे मुद्दे सांसदों को अयोग्य घोषित कर लोकसभा अध्यक्ष रवि राय ने कानून का महत्त्व भी बनाए रखने की कोशिश की है और चंद्रशेखर सरकार को गिरने न देने की भी. विश्वनाथ प्रताप सिंह का जनता दल 35 सदस्यों को अयोग्य घोषित कराने का दावा प्रस्तुत कर रहा था और यह दावा चंद्रशेखर सरकार के लिए खतरा बना हुआ था.

इसी से भयभीत हो कर चंद्रशेखर सरकार के विधि व न्याय मंत्री सुब्रह्मण्यम स्वामी तो लोकसभा अध्यक्ष को जेल में भेजने की धमकी तक दे आए थे. उन्होंने दलबदल कानून के अंतर्गत समाजवादी जनता दल द्वारा लिए गए उच्च न्यायालय के स्थगन आदेश को अध्यक्ष के अधिकार से ऊपर मनवाना चाहा था पर जब रवि राय नहीं माने तो यह धमकी दी थी.

बाद में लोकसभा में व बाहर हल्ला हुआ तो प्रधान मंत्री चंद्रशेखर व सुब्रह्मण्यम स्वामी दोनों को माफी मांग कर मामला रफादफा करना पड़ा था.

दलबदल कानून के कारण चंद्रशेखर सरकार अभी भी परेशानी में है. अयोग्य घोषित किए गए 8 सांसदों में से 5 मंत्री हैं और नैतिकता का तकाजा है कि वे अयोग्य घोषित होने तक मंत्री पद छोड़ देते. पर इतनी कठिनाई से मिला मंत्री पद आखिर आसानी से छोड़ा भी नहीं जाता. दूसरे, चंद्रशेखर के पास अपने इतने सदस्य भी नहीं हैं जिन से कामचलाऊ मंत्री का भी काम लिया जा सके.

ये सब प्रकरण केंद्र सरकार की कमजोरी और उस की प्रतिष्ठा के पतन के ब्योरे हैं. चंद्रशेखर कुछ दलबदलुओं को ले कर कांग्रेस की घोड़ी पर चढ़ कर दुलहन तो ले आए हैं पर वे उसे रख नहीं पाएंगे. उन के पास देश के लिए गंभीर कदम उठाने का न साहस है, न जन समर्थन.

उन की सरकार आज और कल पर टिकी है. कांग्रेस कभी उन को पूर्ण समर्थन विरोधी दल की तरह बोलती है. उन के अपने दल के 10 सदस्यों का हर गुट अपनेआप में सरकार गिराने को सक्षम है. अतः हर कोई धमकी देता है. मुलायमसिंह यादव इसी धमकी के कारण उत्तर प्रदेश में टिके हुए हैं.

यह ठीक है कि इस समय देश के लिए आम चुनाव एक महंगा खेल साबित होंगे और संभव है कि चुनावों में धर्म व जाति को ले कर भीषण हिंसा हो. अगर स्थिति ऐसी है तो चंद्रशेखर को कांग्रेस का ही नहीं अन्य दलों का समर्थन भी पाना चाहिए ताकि जब तक तय किया जाए, चंद्रशेखर स्थिर सरकार बनाए रख सकें.

*

भारतीय जनता पार्टी और विश्व हिंदू परिषद द्वारा अयोध्या में चलाया जा रहा कार सेवा सत्याग्रह का नाटक 40 दिन तक चला पर कोई उपद्रव नहीं हुआ. अक्तूबर के अंत और नवंबर के आरंभ में इन दलों ने कार सेवा के नाम पर पूरे देश में सनसनी पैदा कर दी थी और दावा किया था कि चाहे कुछ हो जाए पर अयोध्या की बाबरी मसजिद गिरा कर ही दम लेंगे.

उन 40 दिनों में गिरफ्तारियां दी गईं पर मसजिद पर न धावा बोला गया, न उसे तोड़ने की कोशिश की गई. कारण साफ था, भारतीय जनता पार्टी ने मंदिर विवाद को केवल मंडल आयोग विवाद के जनक विश्वनाथ प्रताप सिंह की सरकार को गिराने के लिए खड़ा किया था. विश्वनाथ-प्रताप सिंह चले गए तो फिर सिर्फ सांप गुजर जाने के बाद दिखाने के लिए लाठियां पीटी जा रही थी.

भारतीय जनता पार्टी विश्व हिंदू परिषद की सहायता से राम जन्मभूमि का मसला केवल राजनीतिक लाभ के लिए खड़ी कर रही है. हिंदू समाज 500 वर्ष से बाबरी मसजिद के बावजूद रोतेपीटते और कलपते जिंदा रहा है और इस दौरान भी उस ने अपने पैमाने से उन्नति कर ली है. अंगरेजों से संघर्ष

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में मुख्यतः हिंदू समाज ही आगे रहा था. बाद में जो थोड़ाबहुत औद्योगिकीकरण हुआ है, वह भी बिना राम जन्मभूमि मंदिर के हो गया था. बाबरी मसजिद हिंदुओं के आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक या सांस्कृतिक निर्माण में कहीं आड़े नहीं आ रही थी.

1986 तक तो भारतीय जनता पार्टी को भी इस की याद न थी. जब भारतीय जनता पार्टी को लगा कि कांग्रेस हिंदुओं और मुसलमानों दोनों के वोट ले जा रही है तो यह शगूफा छोड़ा गया ताकि कम से कम कट्टर हिंदू तो उस की झोली में आ गिरें. 1990 में यह विश्वनाथ प्रताप सिंह को गिराने के काम आया.

ऐसा नहीं कि दूसरे दल धर्म के मामलों में ज्यादा शरीफ हैं. कांग्रेस हो या जनता दल, द्रमुक या तेलुगू देशम, सभी धर्म का इस्तेमाल राजनीति के लिए करते हैं. वे सब चाहते हैं कि जैसे धार्मिक प्रवृत्ति के लोग आंख मूंद कर अपनेअपने भगवानों के गुणदोष स्वीकार कर लेते हैं, वैसे ही जनता राजनीतिबाजों के गुणदोष स्वीकार कर उन्हें देवता की तरह पूजती रहे, उन के चरणकमलों पर वोट अर्पण करती रहे.

*

सोवियत संघ के राष्ट्रपति मिखाइल गोरबाचौफ ने शांति लाने के लिए पूर्वी जरमनी, पोलैंड, चेकोस्लोवाकिया, हंगरी आदि से अपने टैंक हटा लिए पर अपने ही देश के गणराज्य लिथुआनिया में उन को टैंक भेजने पड़े हैं. लिथुआनिया की राज्य सरकार अपनेआप को स्वतंत्र घोषित कर सोवियत संघ से अलग होने का प्रयास कर रही थी.

इस प्रयास को रोकने के लिए गोरबाचौफ को टैंक भेज कर विद्रोहियों को गिरफ्तार करना पड़ा, सरकारी कार्यालयों को सीधे अपने अधिकार में लेना पड़ा.

सोवियत संघ के टैंक वैसे तो किसी भी लोकतांत्रिक आशाओं को कुचलने के लिए बदनाम है पर इस बार स्थिति दूसरी है. अगर गोरबाचौफ लिथुआनिया को छूट दे देंगे तो पूरा देश तहसनहस होने लगेगा और उस का परिणाम होगा कि देश की सत्ता फिर फौजियों के हाथ में आ जाएगी जो बिना तानाशाही के काम न चलाएंगे.

इस दृष्टि से ये टैंक लोकतंत्र की रक्षा के लिए हैं क्योंकि हर देश के शासक का पहला कर्तव्य देश को टूटने से बचाना होता है. इस प्रकार का काम अमरीका में भी होता है, ब्रिटेन में भी और भारत में भी.

रूसी गणराज्यों के नागरिक उसी तरह बेचैन हो गए हैं जैसे भारत में असम, पंजाब या कशमीर में. वे सोचते हैं कि केंद्र की शक्ति के सामने उन्हें बौना बना दिया गया है और केंद्र उन से भेदभाव कर रहा है. अगर वे अलग हो जाएंगे तो अधिक उन्नति और प्रतिष्ठा पाएंगे.

किसी भी देश की केंद्र सरकार कितनी ही क्रूर या अकर्मण्य क्यों न हो, उस से नाराजगी का उत्तर अलग होना नहीं है. छोटे देशों को अपनी सुरक्षा के लिए चिंतित रहना पड़ता है. उन की आर्थिक स्थिति भी खराब रहती है. भारत के पड़ोसी नेपाल और भूटान का उदाहरण सामने है. दोनों छोटे देश दूसरों की भीख पर जिंदा हैं और उन का आर्थिक स्तर उन से सटे भारतीय इलाकों से भी खराब है.

फर्क बस इतना रहता है कि छोटे क्षेत्र के जिन नेताओं को अब प्रधान मंत्री या राष्ट्रपति होने का तमगा नहीं मिल पाता देश बनने पर यह सुख मिल जाता है, लेकिन इस के नुकसान कितने हैं?

अगर लिथुआनिया के राजनेता इस बात को समझने से इनकार कर रहे हैं ताकि उन्हें शक्ति मिल सके तो राष्ट्रपति गोरबाचौफ को अधिकार ही नहीं, उन की जिम्मेदारी है कि उन्हें आत्मघाती कदम न उठाने दें. हमारे लिए भी यह घटना सबक है. हमें भी चाहे टैंक चलाने पड़ें या मोर्टार, पंजाब, कशमीर या असम किसी को भी भारत छोड़ने की इजाजत नहीं मिल सकती. हां, देश में ही रह कर वह हर अधिकार पाने की कोशिश कर सकते हैं. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

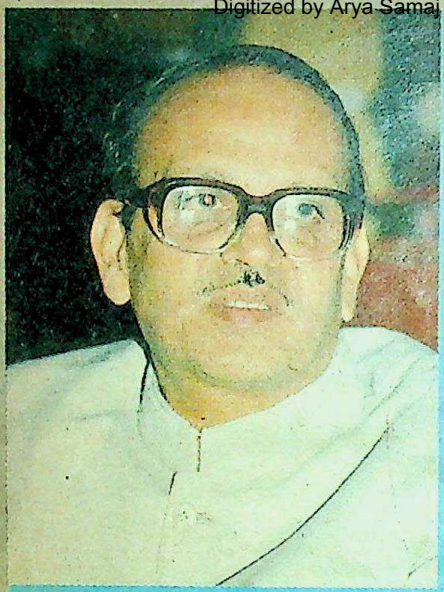

आर्थिक सब से

लेख ● सुरेंद्र द्विवेदी

यह अजीब संयोग है कि जनता पार्टी के शासन के बाद आर्थिक संकट से उबरने के लिए सन 1981 में तत्कालीन प्रधान मंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी को अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष से ऋण लेना पड़ा था. उसी क्रम में 10 वर्ष बाद इस वर्ष चंद्रशेखर सरकार को विदेशी ऋणों और सौदों के भुगतान के लिए पुनः मुद्राकोष के दरवाजे पर मजबूरी से दस्तक देनी पड़ रही है. राजनीतिक परिवर्तन से जुड़ी अर्थव्यवस्था में उत्पन्न होने वाली गड़बड़ी इस बात की ओर इशारा करती है कि विपक्षी दल एकजुट हो कर लंबे समय से सत्तारूढ कांग्रेस को बरखास्त तो कर सकते हैं लेकिन उन में आपसी टकरावों के कारण देश और उस की अर्थ-व्यवस्था को संभालने की क्षमता नहीं है. पिछले दो अनुभवों के आधार पर यदि विपक्षी दलों की सरकारों के प्रति आम लोगों में अविश्वास की धारणा बनती है तो उन के राजनीतिक उखाड़पछाड़ का कोई अर्थ नहीं रह जाएगा.

इस का अर्थ यह नहीं है कि जब दिसंबर 1989 में विश्वनाथ प्रताप सिंह सत्ता में आए थे उस समय देश की अर्थव्यवस्था पूरी तरह से सुदृढ़ थी और उस में किसी गड़बड़ी के लक्षण मौजूद नहीं थे. प्रधान मंत्री की कुरसी पर बैठते ही उन्होंने अपने राष्ट्रीय प्रसारण में कहा था कि नई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संकट नई सरकारों की बड़ी विफलता

पुस्तकालय
112802
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार

मोरचा सरकार के आने से यह आशा जगी थी कि देश की आर्थिक स्थिति में सुधार होगा. लेकिन ऋण माफी जैसे निर्णयों से यह भ्रम शीघ्र ही दूर हो गया. आज हालत यह हो गई है कि देश में कोई भी सरकार आ जाए, आर्थिक संकट से उबरना उस के लिए लोहे के चने चबाना होगा.

सरकार को तिजोरी खाली मिली है. उस समय बजट घाटे में तेजी से बढ़ोतरी हुई थी और विदेशी बकाया के भुगतान की समस्या के लक्षण प्रकट हो रहे थे. फलस्वरूप अंतर्राष्ट्रीय मुद्राकोष से फिर से ऋण प्राप्त करने की चर्चा होने लगी थी. लेकिन आर्थिक ढांचे, औद्योगिक उत्पादन और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निर्यात के मामले में बेहतर स्थिति पैदा हुई थी तथा मुद्रास्फीति की दर भी बहुत कुछ नियंत्रण में थी.

मोरचा सरकार के प्रथम तीन महीनों में आर्थिक क्षेत्रों में यह अहसास जागा था कि (तत्कालीन) वित्त मंत्री मधु दंडवते के नेतृत्व में देश की अर्थव्यवस्था नई मजबूती और उचाइयां प्राप्त करेगी. उन्होंने कांग्रेस शासन के समय बढ़ा बजट घाटा कम कर के 72 अरब रुपए पर ला दिया था और यह आश्वासन दिया था कि इसे आगे नहीं बढ़ने दिया जाएगा. इस के लिए उन्होंने बजट में भारी कर भी लगाए थे. परंतु इस के बाद अर्थव्यवस्था मझधार में बिना पतवार की नाव जैसी स्थिति में आ गई और उस के डूबने का खतरा दिखाई देने लगा.

बजट घाटा बढ़ा

विश्वनाथ प्रताप सिंह का 11 महीने का शासनकाल अन्य बातों के अलावा आर्थिक गिरावट के लिए वर्षों तक याद किया जाएगा और अर्थव्यवस्था को पटरी पर लाने में किसी भी सक्षम एवं प्रभावी सरकार को दोतीन वर्ष का समय लग जाएगा. आज की आर्थिक स्थिति पिछले वर्ष के दिसंबर माह की आर्थिक स्थिति से अधिक भयानक है. बजट घाटा 15 हजार करोड़ के आसपास घूम रहा है. जबकि 10 वर्ष पूर्व यह दोढ़ाई हजार करोड़ रुपए के पास ठहरा करता था.

विदेशी मुद्रा भंडार गत नवंबर में घट कर मात्र 3,045 करोड़ रुपए रह गया जो कुछ ही सप्ताहों के आपात के लिए पर्याप्त हो सकता है. निर्यात में गिरावट आने से विदेश व्यापार घाटा बढ़ा है. इस के साथ ही राजस्व वसूली भी कम हुई है और औद्योगिक उत्पादन गिरा है. इस सब का बुरा असर कीमतों पर हुआ है और इन्हें रोकने के लिए विश्वनाथ प्रताप सिंह सरकार ने अपनी कोई राजनीतिक इच्छाशक्ति नहीं दिखाई. इस आर्थिक फिसलन के दौर में खाड़ी संकट ने खनिज तेल की नई समस्या पैदा कर दी जिस से विदेशी मुद्रा भंडार और कीमतों का दबाव और भी बढ़ गया.

वित्त मंत्री मधु दंडवते पुराने अनुभवी समाजवादी नेता रहे हैं और उन से वित्त मंत्री के नाते काफी आशाएं, अपेक्षाएं थीं लेकिन ये आशाएं पूरी नहीं हुईं. उन पर राजनीतिक और सरकारी दायित्वों का इतना बोझ था कि उन के लिए वित्त मंत्रालय की चौकसीपूर्ण जिम्मेदारी निभाना कठिन हो गया. नाथूराम मिर्धा का खाद्य एवं आपूर्ति मंत्रालय इतना उदासीन रहा कि उन्हें कभी नहीं लगा कि बढ़ती हुई कीमतों को रोकने के लिए चहुंमुखी हमले की जरूरत है. प्रधान मंत्री की ओर से भी इन मंत्रालयों के बीच प्रभावी समन्वय करने की भी कोई कारगर कोशिश नहीं की गई.

इस के अलावा सत्ता में आने के तीन महीने के भीतर ही विश्वनाथ प्रताप सिंह सरकार को हर दो महीनों के राजनीतिक संकटों का ऐसा सामना करना पड़ा कि हर महत्त्वपूर्ण मसला गौण बन गया और राजनीतिक बचाव के लिए सरकार की कलाबाजियां शुरू हो गईं. इन्हीं कला-बाजियों की परिणति मंडल आयोग में हुई. राजनीतिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण इस मसले पर केवल संबंधित कल्याण मंत्री के साथ ही प्रधान मंत्री ने विचारविमर्श किया और मामला मंत्रिमंडल में आ गया था. इस को लागू करने का असर आर्थिक गतिविधियों पर हुआ जिस में करोड़ों रुपए की क्षति हुई.

अर्थव्यवस्था और राजनीति दो अलगअलग चीजें हैं. विश्वनाथ प्रताप सिंह ने अर्थव्यवस्था को राजनीति से जोड़ दिया. जनता दल का जनाधार मजबूत करने के उद्देश्य से किसानों के 10 हजार रुपए तक के बैंक ऋणों की माफी की घोषणा की गई. राजीव के शासन काल में जनार्दन पुजारी के ऋण मेले पहले ही बहुत कुछ नुकसान पहुंचा चुके थे. नई ऋण माफी ने स्थिति को और भी गंभीर बना दिया.

अगस्त से नवंबर के बीच मंडल और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

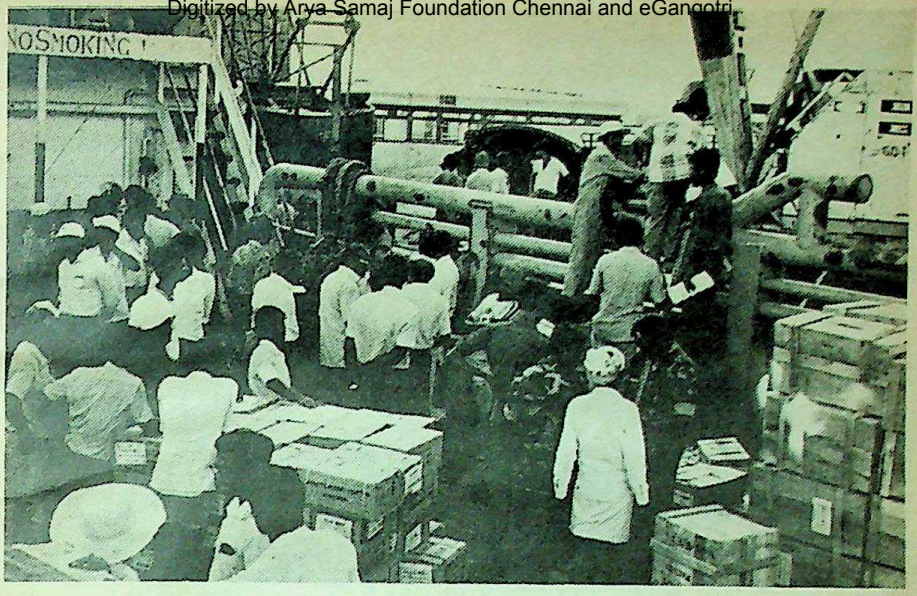

निर्यात में गिरावट के कारण भारत का विदेशी मुद्रा कोष खाली होने के कगार पर पहुंच गया है.

मंदिर आंदोलनों के कारण प्रशासन लगभग ठप हो गया. इस का सब से ज्यादा असर उत्पाद और सीमा शुल्क की वसूली पर पड़ा. जिस केंद्र की मासिक वसूली चारपांच करोड़ हुआ करती थी उस की वसूली कुछ लाख रुपयों में सिमट गई. इस से सरकारी कर्मचारियों के वेतन भुगतान की भी समस्या पैदा होने लगी. चंद्रशेखर सरकार बनते ही उस के वित्त मंत्री यशवंत सिन्हा को इस राजस्व वसूली को बढ़ाने के उद्देश्य से मुंबई और कलकत्ता जैसे बड़े नगरों का दौरा कर के वसूली अभियान छेड़ना पड़ा. अक्तूबर के अंत तक इस वसूली में 25 अरब रुपए की कमी आई थी.

जार्ज फर्नांडीज के रेल मंत्रालय की अपनी कहानी रही. कशमीर और अन्य राजनीतिक मामलों में अधिक लिपटे रहने के कारण पिछले तीन वर्षों में रेलवे ने जो आर्थिक मजबूती और क्षमता हासिल की थी वह उन के कार्यकाल में नीचे फिसल गई. परिणाम यह हुआ कि उस के यात्री किराए और मालभाड़े के रूप में अर्जित राशि में काफी कमी आई और आंदोलनों के कारण रेलवे को सवा सौ करोड़ रुपए की अतिरिक्त क्षति उठानी पड़ी. आज रेलवे घाटे की स्थिति में है. इस की पूर्ति के लिए यात्री किराए और मालभाड़े की दरों को बढ़ाना फिर जरूरी हो गया है.

इस आर्थिक अराजकता के माहौल में राजस्व घाटे और सरकारी खर्च को पूरा करने के लिए रिजर्व बैंक की उधारी बढ़ती गई. इस का सीधा अर्थ यह हुआ कि सरकारी एवं अन्य खर्चों के लिए करेंसी नोट छापे गए और मुद्रास्फीति बढ़ती गई जो पिछले वर्ष के 9% के मुकाबले में बढ़ कर इस वर्ष 11% के पास पहुंच गई. इस के साथ ही उपभोक्ता वस्तुओं की कीमतें बेलगाम हो गईं.

हमारी अर्थव्यवस्था की सब से बड़ी समस्या सरकार के गैरयोजना खर्चों में लगातार वृद्धि होना है. देश में उत्तर प्रदेश जैसे कई राज्य हैं जिन की राजस्व वसूली इतनी नहीं रह गई है कि उन के कर्मचारियों के वेतन और महंगाई भत्तों के भुगतान के लिए पूरा पड़ सके. राज्यों की अर्थव्यवस्था में ओवरड्राफ्ट लेने के कठोर नियम होने के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कारण कुछ वित्तीय अनुशासन है लेकिन केंद्र ने अपने खर्चों को पूरा करने के लिए रिजर्व बैंक के माध्यम से नए नोट छापने की आदत डाल रखी है जिस के दूरगामी आर्थिक परिणाम हुए हैं.

गैर योजना खर्चों में वृद्धि

राजस्व की तुलना में गैरयोजना खर्चों में भारी बढ़ोतरी होने के कारण अर्थ-व्यवस्था में एक प्रकार का असंतुलन पैदा हो गया है. यदि चालू वित्तीय वर्ष 1990-91 के बजट का निरीक्षण करें तो पता चलता है कि केंद्र सरकार को कर एवं करभिन्न राजस्व से 58,000 करोड़ रुपए की आमदनी होने की आशा है परंतु कुल खर्च 95,000 करोड़ रुपए होने का अनुमान है. इस का सीधा अर्थ है कि बजटीय खर्चों को पूरा करने के लिए 37 हजार करोड़ रुपए की पूर्ति घरेलू और बाह्य ऋणों तथा प्राप्त जमा राशियों से की जानी है.

बजट की करीब 70% राशि गैरयोजना और गैरउत्पाद मदों पर खर्च की जाती है. आंतरिक और बाह्य ऋणों की लगातार बढ़ोतरी के कारण केंद्र सरकार की देनदारी 2,60,000 करोड़ रुपए हो गई है जिस में से 1,00,000 करोड़ रुपए का विदेशी ऋण है. बढ़ते ऋण बोझ के कारण प्रतिवर्ष देय ब्याज की राशि 17,000 करोड़ रुपए हो गई है जो प्राप्त कर राजस्व का लगभग एकतिहाई बैठती है. अगले वित्त वर्ष में देय ब्याज की राशि 20,000 करोड़ रुपए पार कर जाने का अनुमान है. अर्थशास्त्री नानी पालकीवाला का कहना है कि भारत पर प्रतिदिन 110 करोड़ रुपए के हिसाब से ऋण का बोझ बढ़ रहा है.

गैरयोजना खर्च की मदों में दूसरी बड़ी समस्या रक्षा व्यय की है जिस की राशि 13,000 करोड़ रुपए के आसपास है. इस के अलावा खाद्यान्न, उर्वरकों तथा निर्यात संवर्धन पर दी जाने वाली छूट की कुल राशि 8,515 करोड़ रुपए है. किसानों को दी गई 1,000 करोड़ रुपए की ऋण माफी अलग है. यह राशि इस से भी अधिक हो सकती है.

दूसरे शब्दों में वर्ष में हम जितने राजस्व की वसूली करते हैं उस का दोतिहाई से अधिक भाग ब्याज, रक्षा और आर्थिक कूटों में खर्च हो जाता है. बाकी खर्चों को पूरा करने के लिए उधारी का ही सहारा रह जाता है. इस संकटपूर्ण बजटीय स्थिति के दौर में खाड़ी संकट ने 5,000 करोड़ रुपए का बोझ और बढ़ा दिया है जिस के कारण पूरी अर्थव्यवस्था लड़खड़ाने लगी है.

वर्तमान आर्थिक संकट से उबरने के लिए जरूरी है कि और अधिक कर लगा कर अतिरिक्त राजस्व जुटाया जाए अथवा योजना और गैरयोजना खर्चों में कटौती की जाए. बजट आने के दो मास पूर्व सीमा शुल्क और उत्पाद शुल्कों की दरों में वृद्धि कर दी गई है और 75,000 रुपए से अधिक आय वाले वर्ग पर अधिभार की दर 8% से बढ़ा कर 12% कर दी गई है.

ये कदम बढ़ते हुए बजट घाटे को कम करने के लिए उठाए गए हैं. यह इस बात का भी संकेत है कि अगले बजट में खाली सरकारी खजाने को भरने के लिए भावी कर लगाए जाएं. सरकारी खर्चों में कटौती करना सरकार के बस की बात नहीं रह गई है. बढ़ती हुई कीमतों और मुद्रास्फीति के दौर में वह सरकारी कर्मचारियों के वेतन अथवा महंगाई भत्ते में कटौती करने में असमर्थ है. फिर चुनावी संभावनाओं के दौर में ऐसा करना और भी कठिन है. उस के लिए आसान विकल्प यही रह जाता है कि योजना खर्च में कटौती करे. इसी मजबूरी में आठवीं योजना लड़खड़ा रही है और योजनाराशि को कम किया जा रहा है. ऊर्जा और पेट्रोलियम क्षेत्र की खर्च राशि को कम किया जा रहा है. यह भी विकास की दृष्टि से अच्छे संकेत नहीं हैं.

वर्तमान आर्थिक असंतुलन उत्पन्न करने में सरकारी उद्योगों और उद्यमों का भी काफी कुछ हाथ है. पिछले चार दशकों में केंद्र सरकार में 231 उद्यमों में 71,000 करोड़ रुपए और राज्य सरकारों के 636

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

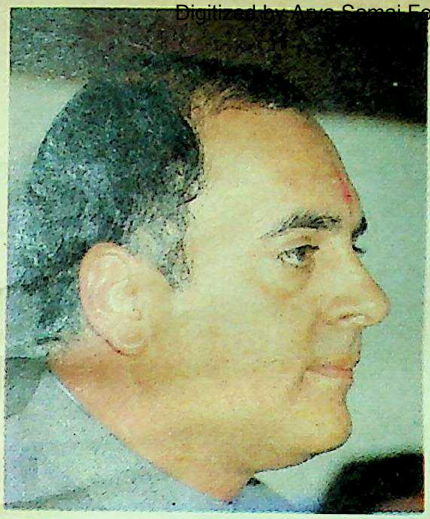

राजीव गांधी के कार्यकाल में कोई भी मंत्रालय उन के इशारे के बिना एक कदम नहीं उठाता था.

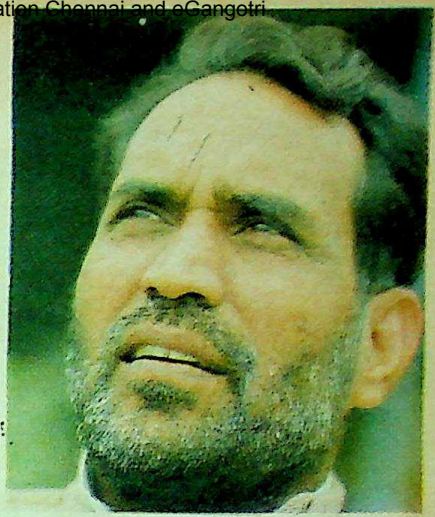

चंद्रशेखर सरकार के सामने आर्थिक चुनौतियां अधिक हैं लेकिन संसाधन काफी सीमित हैं.

उद्यमों में 25,000 करोड़ रुपए की पूंजी लगी हुई है. परंतु कुछ उद्यमों को छोड़ कर अधिकतर उद्यम घाटे में चल रहे हैं और लाभ के रूप में पूंजी का सृजन नहीं हो रहा है. जितनी राशि इन सरकारी उद्यमों में लगी है उस तुलना में देश में बढ़ते बेरोजगारों के लिए रोजगार के अवसर भी नहीं बढ़े हैं.

देश की अर्थव्यवस्था जिस अराजकता के दौर से गुजर रही है उस में आर्थिक अनुशासन लाने की सख्त जरूरत हो गई है. उसे अब और राजनीतिक खेल का साधन नहीं बनाया जा सकता है.

वर्तमान राजनीतिक एवं आर्थिक अस्थिरता के दौर में चंद्रशेखर सरकार की जिम्मेदारी और भी बढ़ गई है. परंतु पश्चिमी उत्तर प्रदेश के किसानों के 20 महीने के बिजली बिलों और इसी अवधि की मालगुजारी माफ करने की घोषणा आर्थिक सतर्कता और संकट के प्रति सरकार की गंभीरता को प्रकट नहीं करती है. करीब 300 करोड़ रुपए के बिजली बिलों और मालगुजारी की माफी उस समय हास्यास्पद लगती है जब राज्य विद्युत परिषद 5 अरब रुपए के घाटे के संकट से चरमरा रही हो.

अर्थव्यवस्था के गड़बड़ाने से देश के औद्योगिक क्षेत्र की मांग घटने के कारण मंदी का दौर शुरू हो गया है.

सरकारी आंकड़ों के अनुसार पिछले वित्त वर्ष के प्रथम छह महीनों की तुलना में चालू वर्ष के अप्रैल से सितंबर तक के छह महीनों में इंजीनियरिंग और इलेक्ट्रोनिक्स सामान, सीमेंट, रबड़ और रबड़ का सामान, कागज, मानव निर्मित धागा तथा बिजली के सामान के उत्पादन में गिरावट आई है. शेयर बाजार एक वर्ष तक ऊंचाइयों पर रहने के बाद धड़ाम से नीचे आ गया है.

चंद्रशेखर सरकार के सामने आर्थिक चुनौतियां काफी पड़ी हैं और विकल्प काफी सीमित है. जनता पर और अधिक कर भार से पर्याप्त आर्थिक साधन जुटाना और फालतू सरकारी खर्चों में कटौती करना तथा विदेशी मुद्रा कमाने के लिए निर्यात बढ़ाना एक मजबूरी बन गई है. यह सब करने के लिए चुनाव वर्ष में सरकार कहां तक अपनी राजनीतिक इच्छाशक्ति पैदा करती है, यह आगे देखने की बात है. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

BPL · SANYO

तानसेन की तान पर कालिदास

अंक 1, दृश्य 3 की टीका करने हेतु संगीतमय पृष्ठपट । आपके लिए, पेश है । बीपीएल सैन्यो टू-इन-वन् से .....सौम्य मधुर तरंग । बीपीएल क्वालिटी में जन्मी सैन्यो टेक्नॉलॉजी । जिससे बने अनेक प्रकार के कैसेट रेकार्डर, मोनो और स्टीरियो टू-इन-वन् । खूबियां भी अनेक । जैसे डबल कैसेट डेक, डिटॅचेब्ल् स्पीकरस् मेटल टेप चलाने की सुविधा, हाई स्पीड डब्बिंग और कई अन्य सुविधाँए । आकर्षक मनोहर रगों में । ताकी आपको मिले मन चाहा, मनोरंजक संगीत । वह भी मुनासिब दामों में ।

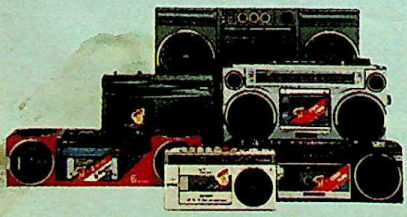

BPL · SANYO

Two-in-Ones

बरसों संग मधुर तरंग

Mudra:Blr:BPL:172:89:HIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कैसेट डिमांड-

अयोध्या कांड

लेख ● नीलकमल सिंह

पुलिस गोली चला रही है. ठांयठांय की आवाज टेलीविजन के स्पीकर पर गूंज रही है. घरों के दरवाजे तोड़े जा रहे हैं और अंदर से चीखनेचिल्लाने की आवाजें आ रही हैं. किसी के सिर में तो किसी के सीने पर गोली लगी है. अनेक लोगों का भेजा और कइयों की अंतड़ियां बाहर नजर आ रही हैं. गोली से छलनी हुए लोग 'राम श्री राम' का जाप कर रहे हैं. घायलों और मृतकों को जिस बेरहमी से पुलिस ने घसीटा है, वह सड़कों पर पुते हुए खून से स्पष्ट नजर आ रहा है.

पवित्र सरयू नदी में लाशों को तलाशा जा रहा है. सड़ीगली बदबूदार लाशें सीमेंट की बोरियों और घड़ों में बंधी हुई बाहर निकाली जा रही हैं. लाशों के बदन पर गोलियों के निशान हैं. टीवी के परदे पर उन्हें पहचानना नामुमकिन है. उन्हें तो कोई भी नहीं पहचान सकता.

ये सारे दृश्य अयोध्या नरसंहार के हैं जो अनेक वीडियो कैसेटों में भर कर जनता तक पहुंचाए गए हैं.

30 अक्तूबर और 2 नवंबर 1990 को अयोध्या में राम मंदिर और बाबरी मसजिद के गुंबदों के 300 मीटर की परिधि में जो भी

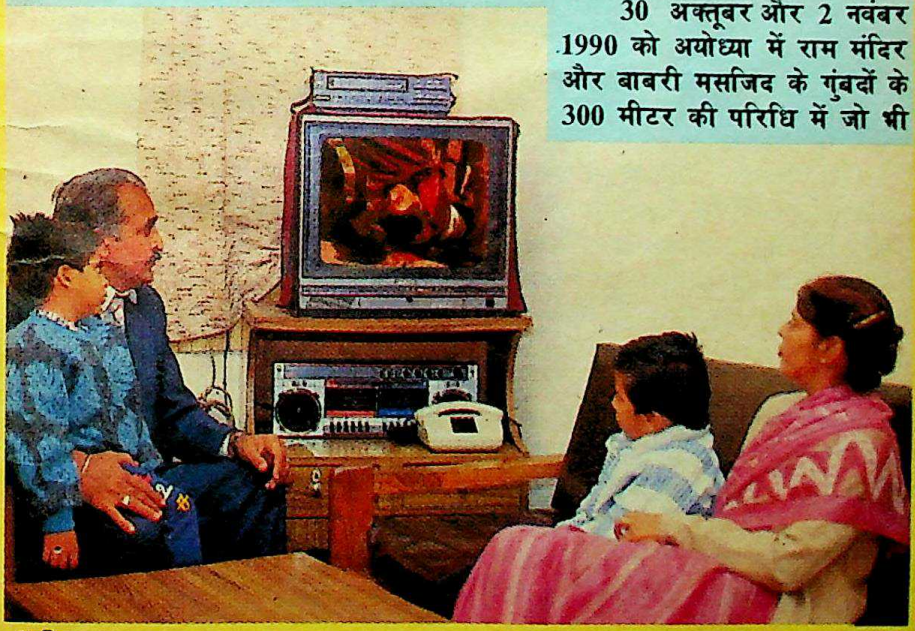

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कांड हुए उन का चलचित्र ले कर जनता के सामने अनेक वीडियो कैसेट आ गए.

वैसे तो वीडियो मैगजीन (पत्रिका) के रूप में 'न्यूजट्रेक' ने 1988 में ही भारत में पदार्पण किया था परंतु आम जनता को उस से कोई खास सरोकार नहीं था. पिछले दोढाई वर्षों के समय को भारत में वीडियो पत्रिका की गर्भावस्था का काल माना जाना चाहिए. इस विषय पर तो कोई विवाद हो ही नहीं सकता है कि भारत में भी 'सूचना युग' का प्रवेश हो चुका है. आम जनता भी समाचारों के लिए उतावली नजर आती है. भौतिक दूरियों को यांत्रिक संसाधनों ने समाप्त कर दिया है और अब घर में बैठे हुए आप को विश्व की महत्त्वपूर्ण घटनाएं चायकाफी के साथ देखने को मिल जाती हैं.

अभी भारत में तीन मुख्य वीडियो पत्रिकाएं अपने अंक नियमित रूप से निकालने में प्रयासरत हैं. ये हैं– 'न्यूजट्रेक' (अंगरेजी), 'आब्जर्वर न्यूज चैनल' (हिंदी तथा अंगरेजी) और 'कालचक्र' (हिंदी). इन में अभी कई और नाम जुड़ने वाले हैं. कुछ प्रमुख पत्रिका निकालने वाले होंगे– पीटीआई टीवी, टाइम्स टीवी, हिंदुस्तान टाइम्स टीवी आदि. इन्होंने कार्यक्रमों को तैयार करने के लिए अपनी पूरी टीम तैयार कर के कुछ एक कार्यक्रम दूरदर्शन तक पहुंचा भी दिए हैं. जल्दी ही इन के भी नियमित कार्यक्रम कैसेटों में भर कर जनता तक पहुंचने लगेंगे.

दक्षिण में तमिल और मलयालम भाषाओं में क्रमशः 'पूमलाई' तथा 'चित्रांजलि' वीडियो पत्रिकाएं उभर रही हैं. हैदराबाद के सांप्रदायिक दंगों का यदि उन्होंने रोचक फिल्मांकन कर लिया तो उन की लोकप्रियता भी निश्चित रूप से तेजी से बढ़ेगी.

अयोध्या कांड को भी जे. के. जैन के कैसेटों ने जम कर उछाला है. ऐसा माना जा रहा है कि अगले आम चुनावों के लिए जैन ऐसे कैसेट तैयार कर रहे हैं. उन की योजना पूरे देश में एक लाख कैसेट वितरित करने की है. यह तो तय ही है कि अगले आम चुनावों में वीडियो कैसेटों का खासा जोर रहेगा.

न्यूजट्रेक का मेहम वाला अंक बहुत लोकप्रिय हुआ. इस अंक से उसे एक ठोस आधार मिला. इस के बाद अक्तूबर के अंक में नई दिल्ली के आई. एन. ए. मार्केट में पुलिस की बर्बरता का जो दृश्य न्यूजट्रेक ने दिखाया, उस से कठोर से कठोर हृदय भी द्रवित हो गया. अक्तूबर का कैसेट बड़ी मुशकिल से लोगों को नसीब हुआ. उस की नकली कापियां भी लोगों के वीसीपी, वीसीआर पर चढ़ी रहीं जबकि उन का प्रिंट अच्छा नहीं था. कैसेट दुकानदारों ने उस कैसेट को 30से 40 रु. तक बेचा और खूब पैसा बनाया. आरक्षण विरोधी आंदोलन ने न्यूजट्रेक को एक सशक्त आधार दे दिया जिस के बाद किराए पर वीसीपी और वीसीआर ले जा कर लोगों ने न्यूजट्रेक देखना शुरू कर दिया.

यदि विवादग्रस्त मसलों पर अच्छी वीडियो पत्रिकाएं बनाई जाएं तो उन की

अयोध्या व आरक्षण जैसी घटनाओं की सचाई को सचित्र उद्घाटित करने के कारण देश में कैसेट पत्रिकाओं की लोकप्रियता बढ़ी है. इस में दो राय नहीं कि जिन सचाइयों को सरकारी इलेक्ट्रानिक माध्यम दबा देते हैं उन्हें ये पत्रिकाएं जनता तक पहुंचाती हैं. लेकिन सवाल है कि क्या इन कैसेटों की नंगी सचाइयां आपसी सौहार्द व सामाजिक संतुलन के लिए कोई खतरा तो नहीं बन रही हैं?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

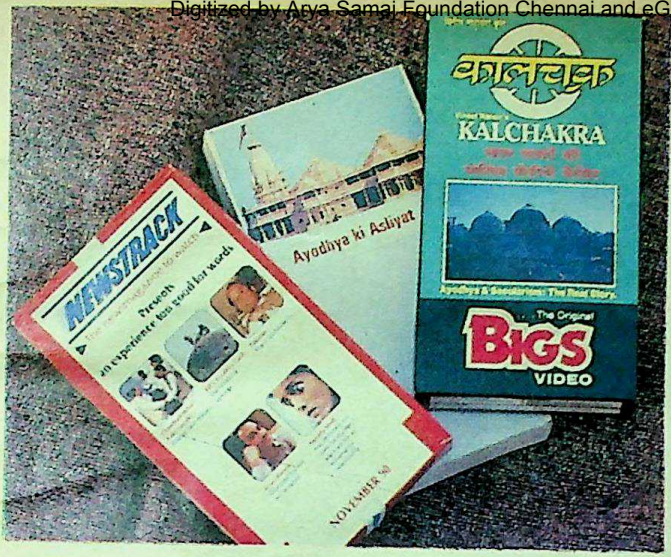

अयोध्या की घटनाओं पर अनेक संस्थाओं ने कैसेट निकाले जो जनता के बीच काफी लोकप्रिय हुए.

सांग तेजी से बढ़ेगी और उन से आम लोगों के ज्ञानचक्षु भी खुलेंगे. भारतीय समाज में व्याप्त कुरीतियों, अंधविश्वासों और गलत परंपराओं को समाप्त करने में ये वीडियो पत्रिकाएं अपना अहम किरदार निभा सकती हैं.

चुनाव और सांप्रदायिक हिंसा (भागलपुर हत्याकांड एवं कशमीर) के संबंध में नलिनी सिंह के कार्यक्रम दूरदर्शन पर दिखाए गए जिन की लंबे समय तक चर्चा होती रही. लोगों को उन से कई ऐसी जानकारियां हासिल हुईं जो समाचारपत्रों में देख कर भी लोग उन पर विश्वास नहीं करते थे.

अयोध्या में निहत्थे भक्तों पर जिस प्रकार गोलियां बरसाई गईं, उस दृश्य को सरकारी संचार माध्यम पर शायद कभी भी नहीं दिखाया जाएगा. ऐसी घटनाओं को स्वतंत्र प्रेस ही जनता के सामने प्रस्तुत करता है. मध्य नवंबर में 'प्राण जाहूं परु वचनु न जांहू' नामक कैसेट में गोली से घायल भक्तों का जो मार्मिक चित्र दिखाया उस से लोगों के रोंगटे खड़े हो गए.

चंदा नारंग का कैसेट 'अयोध्या एक जलता हुआ शहर' भी लगभग उन्हीं दृश्यों के आधार पर निर्मित है. अयोध्या में जो कुछ भी हुआ उसे शुद्ध रूप में राजनीतिक कहना शायद युक्तिसंगत नहीं. हमारे संस्कार और हमारी संस्कृति हमें बहुत कुछ सहने पर विवश कर देते हैं.

अयोध्या के जो दृश्य हमें वीडियो कैसेट में देखने को मिले हैं वे इस देश के लिए एक अभूतपूर्व बात है. अब तक भारतीय दर्शकों ने विदेशी कैसेटों के माध्यम से विश्व के कई देशों में हुई जघन्य हिंसा (रोमानिया, फिलीस्तीन, लेबनान आदि) को ही देखा था जिन्हें देख कर उन के शरीर के रोंगटे खड़े हो जाते थे. यह पहला मौका था जब भारत में घटनास्थल पर अनेक कैमरों ने आग उगलती बंदूकें और गोली खा कर गिरते लोगों के चित्र खींचे. भारतीय फिल्मों की तरह हिंसा के बाद वहां पुलिस नहीं पहुंची, बल्कि पुलिस और कैमरे एक साथ घटनास्थल पर मौजूद थे. इस का कारण था कि सभी इस बात को जानते थे कि 30अक्तूबर और नवंबर को अयोध्या में कुछ होने वाला है. नवंबर और दिसंबर में हुए सांप्रदायिक कत्लों का चलचित्र लेने घटनास्थल पर कोई कैमरा पूर्व की भांति तैनात नहीं था. कैमरे सिर्फ जले मकान और घायलों का चित्र खींच कर ही अपना कर्तव्य पालन करते रहे.

सच को दिखाना चाहिए परंतु यदि इस के प्रदर्शन से कड़वाहट और घृणा की ज्वाला भभकती है तो इस का नियंत्रण आवश्यक हो जाता है. ऐसे कैसेटों के सार्वजनिक प्रदर्शन से उत्पन्न होने वाले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आक्रोश की कल्पना कर के उस की पूर्व समीक्षा अवश्य कर लेनी चाहिए.

किसी भी सशक्त माध्यम का प्रयोग सावधानी से करना चाहिए. जरा सी भी असावधानी से स्थिति विस्फोटक हो सकती है और परिस्थितियां विकट हो सकती हैं. सब को इस बात का हमेशा ध्यान रखना चाहिए कि आपसी सौहार्द और सामाजिक संतुलन को इन कैसेटों से कोई खतरा नहीं पहुंचने पाए.

लोगों को यह भी समझना चाहिए कि इन कैसेट पत्रिकाओं के निर्माताओं का एकमात्र उद्देश्य जनता तक स्पष्ट समाचार ही पहुंचाना नहीं, बल्कि इस की आड़ में धन कमाना भी है. कैसेट निर्माता अपने व्यापार को बढ़ाने के लिए भविष्य में सामाजिक लक्ष्मण रेखाओं का अतिक्रमण न करें, इस पर सरकार को ध्यान देना चाहिए. अनेक वीडियो पत्रिकाओं के बाजार में आने से स्पर्धा बढ़ी है. अब निर्माता हमेशा ऐसे विषयों और दृश्यों को दिखाना चाहेगा जिस से उसे अधिक से अधिक व्यावसायिक लाभ हो.

वीडियो पत्रिकाएं अयोध्या कांड के पश्चात जिस गति से लोकप्रिय हुई हैं उस से यह लगता है कि उन के पास भी अब विज्ञापनों का ढेर लग जाएगा. न्यूजट्रेक पत्रिका आधे मिनट के एक विज्ञापन के लिए लगभग 30 हजार और एक मिनट के विज्ञापन के लिए पूरे 50 हजार रुपए लेती है. बाजार में अपनी साख जमाने के उद्देश्य से आब्जर्वर न्यूज चैनल ने अभी तक अपनी विज्ञापन दर काफी कम रखी है जबकि कालचक्र को अब तक सेंसर की वजह से कई परेशानियां उठानी पड़ी हैं. विज्ञापन प्राप्त करने के बाद भी कैसेटों के सेंसर में फंस जाने की वजह से उन्हें खासी हानि उठानी पड़ी है.

न्यूज चैनल ने न्यूजट्रेक के लिए अनेक परेशानियां खड़ी कर दी हैं. यह हिंदी में भी प्रकाशित होती है तथा महीने में दो बार भी निकलती है. अतः ताजे समाचार न्यूज चैनल जनता तक पहले पहुंचा देगी जिस से न्यूजट्रेक की मांग घटेगी. वैसे भी अपने पहले ही अंक में न्यूज चैनल ने न्यूजट्रेक की संख्या के बराबर कैसेट निकाल कर (लगभग 20,000) अपने दृढ़ इरादे का संकेत दे दिया है. रिलायंस के आधार पर खड़ी न्यूज चैनल पत्रिका अभी अपने प्रतिद्वंद्वियों के लिए सिरदर्द बनी हुई है. उस में विनोद दुआ सरीखे व्यावसायिक बुद्धिजीवी भी हैं जिन्हें दर्शक भलीभांति पहचानते हैं. उधर नवनिर्मित जैन वीडियोज ने अयोध्या विवाद पर अपने कैसेट बना कर संघर्ष को त्रिकोणीय बनाने की चेतावनी दे दी है.

भारतीय सेंसर बोर्ड के 1952 के नियम वीडियो कैसेट के मामले में कितने प्रभावकारी हैं, इस प्रश्न पर भी काफी विवाद हो रहा है. निकट भविष्य में वीडियो पत्रिकाओं के लिए भी नई संहिता का आना लगभग तय है. इन सब के बावजूद अयोध्या के राम मंदिर और बाबरी मसजिद पर आई पत्रिकाओं की बरसात एक नए युग का सूत्रपात कर चुकी है. इन का भविष्य उज्ज्वल दिखाई दे रहा है. ●

नन्हे मुन्नों की रंगीन पाक्षिक पत्रिका

चंपक

आकर्षक रंगों में छपी मनमोहक सचित्र कहानियों, शिक्षाप्रद लेखों, कार्टूनों और चित्र पहेलियों की अनूठी पत्रिका

दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन, नई दिल्ली- 55

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पिछड़े वर्ग में सामाजिक चेतना

लेख ● अनिल कुमार मिश्र

नौकरियों में पिछड़े वर्ग के लिए आरक्षण के समर्थन में बारबार यह कहा गया है कि देश की कुछ जातियां सदियों से उपेक्षित, दलित, शोषित एवं पीड़ित रही हैं. उन के उत्थान के लिए सरकारी तथा सार्वजनिक उपक्रमों की नौकरियों में उन्हें पर्याप्त स्थान देना जरूरी है.

यहां विचारणीय बात यह है कि किसी भी जाति या समाज के उत्थान के लिए क्या नौकरियों में आरक्षण ही पर्याप्त एवं अंतिम उपाय है? सरकारी आंकड़े बताते हैं कि देश की संपूर्ण जनसंख्या की 52% जातियां तथाकथित रूप से पिछड़ी हैं. इन में से यदि कुछ लोगों (अधिक से अधिक 27%) को आरक्षण के नाम पर नौकरी दे कर उन का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मात्र नौकरियों में आरक्षण कर देने से ही पिछड़े वर्ग का उत्थान होना संभव नहीं है. जब तक इस वर्ग में व्याप्त अंधविश्वासों और रूढियों को समाप्त कर सामाजिक चेतना जागृत नहीं की जाएगी तब तक पिछड़े वर्ग के विकास पर प्रश्नचिह्न लगा रहेगा.

पिछड़ापन दूर कर भी दिया जाए तो शेष का क्या होगा? पिछड़ापन तो उन का भी दूर होना जरूरी है.

भारत के सामाजिक इतिहास पर दृष्टिपात करने से पता चलता है कि पिछड़े वर्ग के समुचित उत्थान के लिए किसी सत्ता, समाज या समाजसेवी संस्था ने कभी कोई भी रचनात्मक कार्य नहीं किया. 19वीं शताब्दी को भारतीय समाज के पुनर्जागरण का युग कहा जा सकता है. सदियों से कुप्रथाओं, अंधविश्वासों, रूढियों आदि में जकड़े समाज को देख कर पाश्चात्य सभ्यता और संस्कृति से प्रभावित प्रबुद्ध वर्ग तब क्षुब्ध हो उठा था. फलतः समग्र समाज के पुनर्जागरण हेतु अनेक सामाजिक संस्थाओं का उदय हुआ.

सर्वप्रथम बंगाल के राजा राममोहन राय ने ब्रह्म समाज की स्थापना कर के सामाजिक कुरीतियों एवं रूढियों के विरुद्ध सशक्त आवाज उठाई. उन्होंने सती प्रथा, बहुविवाह, छुआछूत, मूर्तिपूजा, प्रचलित अंधविश्वास आदि की खुल कर निंदा की. इसी दिशा में देवेंद्रनाथ ठाकुर, ईश्वरचंद्र विद्यासागर, केशवचंद्र सेन, रवींद्रनाथ ठाकुर, जगदीशचंद्र बसु, लार्ड सिन्हा सदृश समाज सुधारकों ने महत्त्वपूर्ण योगदान दिया. इसी क्रम में आर्य समाज, प्रार्थना समाज, रामकृष्ण मिशन, थियोसोफिकल सोसाइटी की स्थापना की गई.

इन सभी का उद्देश्य धर्म और समाज की विसंगतियों को दूर करना था किंतु इन में से एक भी संगठन ऐसा न था जिस ने पिछड़े वर्ग के उत्थान या विकास के लिए कोई कदम उठाया हो.

20वीं सदी में महात्मा गांधी और भीमराव अंबेडकर ने दलित एवं पिछड़े वर्ग के लिए कुछ उल्लेखनीय कदम अवश्य उठाए थे पर वे भी छुआछूत मिटाने के अलावा और कुछ नहीं कर सके. संभवतः अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजातियों के लिए नौकरियों में आरक्षण डा. अंबेडकर के संघर्ष का ही प्रतिफल है.

यों देखा जाए तो नौकरियों के बंटवारे से जातीय उत्थान की कल्पना करना बेकार है. यदि पिछड़े वर्ग को वास्तव में अपना उत्थान करना है तो उसे सरकार या सवर्णों की दया का मुहताज नहीं रहना चाहिए. इस के लिए यह आवश्यक है कि उन के पिछड़ेपन के कारणों की बारीकी से छानबीन कर के उन्हें दूर करने का प्रयास किया जाए.

हिंदू विधिविधान का विरोध

एक सरकारी कार्यालय में कार्यरत रामभरोसे यादव ने जातियों के पिछड़ेपन पर प्रकाश डालते हुए बताया, "भारतीय समाज में अधिसंख्य जातियों के पिछड़ेपन के मूल में स्मृतिकालीन वर्ण व्यवस्था है, जिस ने सदैव शूद्र कहे जाने वाले पिछड़े वर्ग को पददलित किया है, उन्हें शिक्षा से दूर रखा है ताकि वे समाज में सिर उठाने का भी प्रयास न कर सकें. सदियां बीत गईं. देश में अनेक राजनीतिक एवं धार्मिक परिवर्तन हुए. नएनए राज्य बने और बिगड़े किंतु समाज पर वर्ण व्यवस्था और जातिप्रथा का शिकंजा ढीला नहीं हुआ. तथाकथित उदारवादी हिंदू धर्म ने भी अपने पिछड़े अंग को ऊपर उठाने की कोशिश नहीं की.

वस्तुतः पिछड़ी जातियों का एक बड़ा वर्ग हिंदू धर्मानुयायी होने के कारण उस के विधिविधानों में जकड़ा हुआ है. इस का एक दुष्परिणाम यह हुआ है कि वह परंपरागत अथवा पैतृक पेशे को छोड़ पाने में अपनेआप

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को असमर्थ पाता है—भले ही वह अन्य कामों के लिए कितना ही योग्य क्यों न हो. इस से श्रमिक की स्वतंत्र गतिशीलता प्रभावित हो कर अवरुद्ध हो जाती है. अतः यह बिलकुल भी जरूरी नहीं कि बढ़ई का बेटा बढ़ईगीरी ही करे, कुम्हार का बेटा मिट्टी के बरतन ही बनाए.

किसी भी वर्ण, वर्ग या जाति का व्यक्ति अपनी पसंद का व्यवसाय चुन सकता है—यह भारतीय संविधान के अंतर्गत प्रत्येक व्यक्ति का मौलिक अधिकार है. उस के इस कार्य में व्यवधान डालना कानून की दृष्टि में अपराध है.

आज पिछड़े वर्ग में असंतोष है, जाति प्रथा के प्रति छटपटाहट है, परिवर्तन लाने और आगे बढ़ने की ललक है, फिर भी वह अपने कर्तव्य के प्रति उदासीन है. यह हिंदूधर्म की जकड़ ही है जिस के वशीभूत हो कर वह अपने उत्थान और विकास के लिए किसी 'ईश्वरीय शक्ति' की प्रतीक्षा कर रहा है.

जब तक पिछड़े लोग धर्मशास्त्रीय बंधनों को अंगीकार करते रहेंगे, वे छुआछूत, जातिपांति, ऊंचनीच, संस्कार, पुनर्जन्म, भाग्यवाद, अध्यात्मवाद जैसी परंपरावादी मान्यताओं में फंसे रहेंगे. विचार पीछे बात यह है कि सदियों पुरानी और मानवता विरोधी इन मान्यताओं की आज के औद्योगिक और वैज्ञानिक युग में पिछड़े (या अगड़े किसी भी) वर्ग के लिए क्या उपयोगिता है. किसी भी मान्यता, धारणा या विधान का वरण करने के पूर्व यह जान लेना जरूरी होता है कि वह अनुकूल है भी या नहीं.

यहां पिछड़े वर्ग को यह भी समझ लेना चाहिए कि समग्र विश्व में भारतीय चतुर्वर्ण जैसी व्यवस्था कहीं नहीं रही. भारत में ही चार वर्णों की कल्पना की गई थी और उसे प्रामाणिकता का जामा पहनाने के लिए ईश्वरीय विधान भी घड़ लिया गया कि ब्रह्मा के मुख ब्राह्मण, भुजाओं से क्षत्रिय, उदर से वैश्य और पैरों से शूद्रों का जन्म हुआ था.

अनेक भारतीय तथा विदेशी विद्वानों ने इस वर्ण व्यवस्था को अवैज्ञानिक तथा अमानवीय घोषित किया है. कोई भी व्यक्ति जन्मजात पिछड़ा नहीं होता. वैसे भी आज प्राचीन वर्ण व्यवस्था धूमिल पड़ गई है—भले ही रूढिवादी लोग बातबात पर

पिछड़ों में व्याप्त गरीबी शिक्षा और सामाजिक चेतना द्वारा दूर हो सकती है अन्यथा नहीं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दलीलें उन्हीं धर्मशास्त्रों से उद्धृत करें, जो वर्ण व्यवस्था के आधार ग्रंथ रहे हैं.

संविधान के अनुच्छेद 28 के अंतर्गत यह विधान है कि शिक्षा संस्थाओं में प्रवेश के मामलों में किसी के साथ कोई भेदभाव नहीं बरता जाएगा. अतः पिछड़ों को अपने दिमाग से यह बात निकाल देनी चाहिए कि वे पिछड़े होने के कारण शिक्षा पाने के अधिकारी नहीं, जैसा कि प्राचीन वर्ण-व्यवस्थापकों ने विधान बना रखा था.

भीमराव अंबेडकर जानते थे कि पिछड़े वर्ग को इस विधान से संविधान द्वारा ही दूर रखा जा सकता है. इसी लिए उन्होंने भारतीय संविधान में जाति और धर्म निरपेक्ष समाज की बात की है. वैसे 1851 में ज्योति वा फुले ने सर्वप्रथम अछूतों व पिछड़ों के लिए विद्यालय के द्वार खोल दिए थे. फिर भी पिछड़े वर्ग में साक्षरों और शिक्षितों का प्रतिशत न्यूनतम है.

पिछड़े वर्ग में पुरुष ही नहीं, स्त्रियों की दशा भी चिंतनीय है. वे और भी पिछड़ी हैं. उन में शिक्षा की कमी है.

वर्तमान की चिंता न कर भविष्य की चिंता में उलझना उन के मानसिक पिछड़ेपन का परिचायक नहीं तो और क्या है? ▲

जाति रक्षा के नाम पर स्त्रियों से अनेक अधिकार तो हिंदू वर्ण व्यवस्थापकों ने पहले ही छीन लिए थे. रहीसही कमी को पिछड़े वर्ग के मुखियों ने पूरा कर दिया. उन की गतिशीलता चूल्हेचक्की और परदे तक ही सीमित कर दी गई. आज भी अनेक पिछड़ों में बाल विवाह जैसी कुप्रथाएं हैं. विवाह का अर्थ समझने के पूर्व ही उन्हें ब्याह दिया जाता है. घरपरिवार में पालनपोषण की समुचित व्यवस्था न होने पर भी हर वर्ष बच्चे पैदा करना मानो उन की नियति है. इस का परिणाम यह होता है कि वे युवावस्था में ही वृद्धा बन जाती हैं.

इस दयनीय दशा से निकलने के लिए सर्वप्रथम उन का विद्या मंदिर में प्रवेश

(शेष पृष्ठ 179 पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिनदहाड़े

एक दिन हम डाकघर में खड़े थे, तभी एक अनपढ़ ग्रामीण आया और डाकपाल से 200 रुपए के एक मनीआर्डर के बारे में शिकायत करने लगा. पता चला कि वह जिस दिन मनीआर्डर करने आया था, उस ने एक शिक्षित युवक से फार्म भरने को कहा था. उस युवक ने ग्रामीण के संबंधी की जगह अपना पता लिख दिया था.

—निर्मलकुमार

*

हमारी कालोनी में दो छोटे बच्चे रोते हुए घूम रहे थे. रोने का कारण पूछने पर उन्होंने बताया कि "आतंकवादियों के डर से उन के मातापिता यहां आ गए हैं और वे उन से बिछुड़ गए हैं."

बच्चों का रोना देख हम सब को उन पर तरस आ गया, और एक सरदारजी ने उन्हें अपने यहां शरण दे दी. मौका देख कर वे घर का सारा कीमती सामान ले कर चंपत हो गए.

—अलका खोसला

*

गर्मी के दिन थे. चाचीजी घर पर अकेली थीं. तभी पुलिस की वर्दी पहने चारपांच लोग उन के घर आए और बोले, "हमें आप के घर की तलाशी लेनी है."

यह कह कर उन्होंने घर की तलाशी ली और चले गए. जाने के बाद चाची ने देखा कि अलमारी से काफी रुपए गायब थे. पुलिस में सूचना देने पर पता चला कि वे पुलिस वाले नहीं बल्कि पुलिस के वेश में लुटेरे थे.

—मुहम्मद शरीफ

*

मेरे पड़ोसी के लड़के काफी उद्दंड थे. कई बार मारपीट के सिलसिले में उन का एक लड़का जेल भी जा चुका था. उन के सामने होटल में काम करने वाला एक नौकर उन के घर बराबर आताजाता था और बहुत घुलामिला हुआ था.

एक बार वह अपने बच्चों को छोड़ कर गांव गए हुए थे. उन्हीं दिनों वह नौकर उन के गांव जा धमका और बोला, "चाची, चंदू भैया (उन का लड़का) को पुलिस पकड़ कर ले गई है. वह 600 रुपए मांग रही है. चंदू भैया ने मुझे पैसे के लिए भेजा है."

उस की बातों पर विश्वास कर उस ने पैसे दे दिए, वापस आने पर सारी बातों से वाकिफ होने पर वह समझ गई कि वह ठगी जा चुकी है.

—चतुर्भुजकुमार

*

मेरे चाचाजी ने शृंगार प्रसाधन की नईनई दुकान खोली थी. एक दिन दो नवयुवक आए और अपना परिचय एक शृंगार प्रसाधन बनाने वाली कंपनी के विक्रय प्रतिनिधि के रूप में दिया. साथ ही उन्होंने बहुत से नमूने भी दिखाए. चाचाजी ने उन की बातों में आ कर कुछ सामानों के आदेश के साथसाथ 400 रुपए अग्रिम भी दे दिए. एक ने रसीद काट कर चाचाजी को देते हुए कहा, "यह सारा सामान आप को 15 दिन के अंदर मिल जाएगा."

काफी दिनों तक सामान न मिलने पर चाचाजी ने रसीद पर लिखे पते पर पत्रव्यवहार किया तो पता चला कि इस नाम की कोई कंपनी ही नहीं है.

—कुमार रजनीश उपाध्याय ●

इस स्तंभ के लिए अपने तथा अपने संबंधियों के अनुभव भेजिए. प्रत्येक प्रकाशित अनुभव पर 50 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. अपने अनुभव इस पते पर भेजें. संपादकीय विभाग, सरिता, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

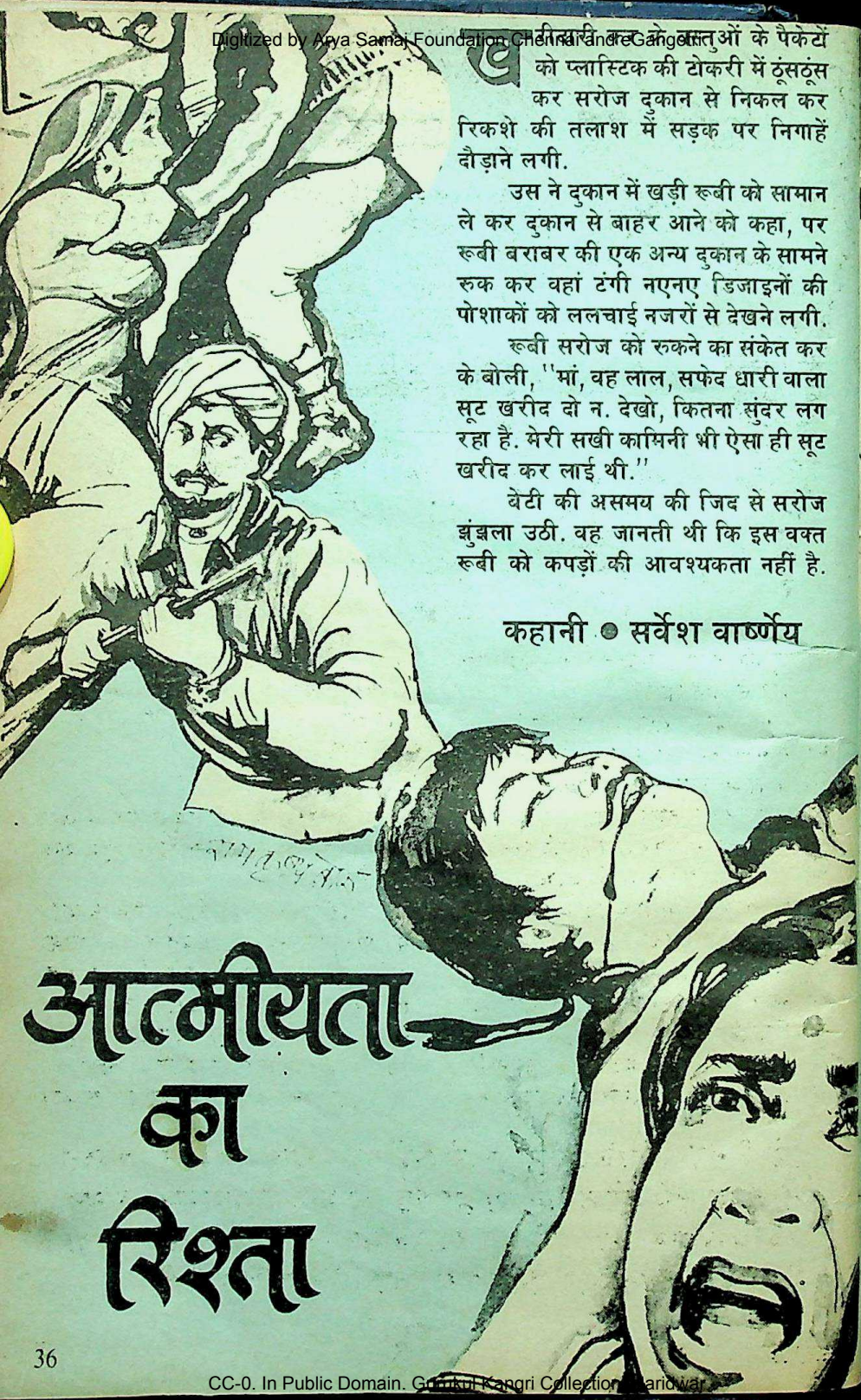

खरीदारी कर के वस्तुओं के पैकेटों को प्लास्टिक की टोकरी में ठूंसठूंस कर सरोज दुकान से निकल कर रिकशे की तलाश में सड़क पर निगाहें दौड़ाने लगी.

उस ने दुकान में खड़ी रूबी को सामान ले कर दुकान से बाहर आने को कहा, पर रूबी बराबर की एक अन्य दुकान के सामने रुक कर वहां टंगी नएनए डिजाइनों की पोशाकों को ललचाई नजरों से देखने लगी.

रूबी सरोज को रुकने का संकेत कर के बोली, ''मां, वह लाल, सफेद धारी वाला सूट खरीद दो न. देखो, कितना सुंदर लग रहा है. मेरी सखी कामिनी भी ऐसा ही सूट खरीद कर लाई थी.''

बेटी की असमय की जिद से सरोज झुंझला उठी. वह जानती थी कि इस वक्त रूबी को कपड़ों की आवश्यकता नहीं है.

कहानी • सर्वेश वार्ष्णेय

आत्मीयता का रिश्ता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

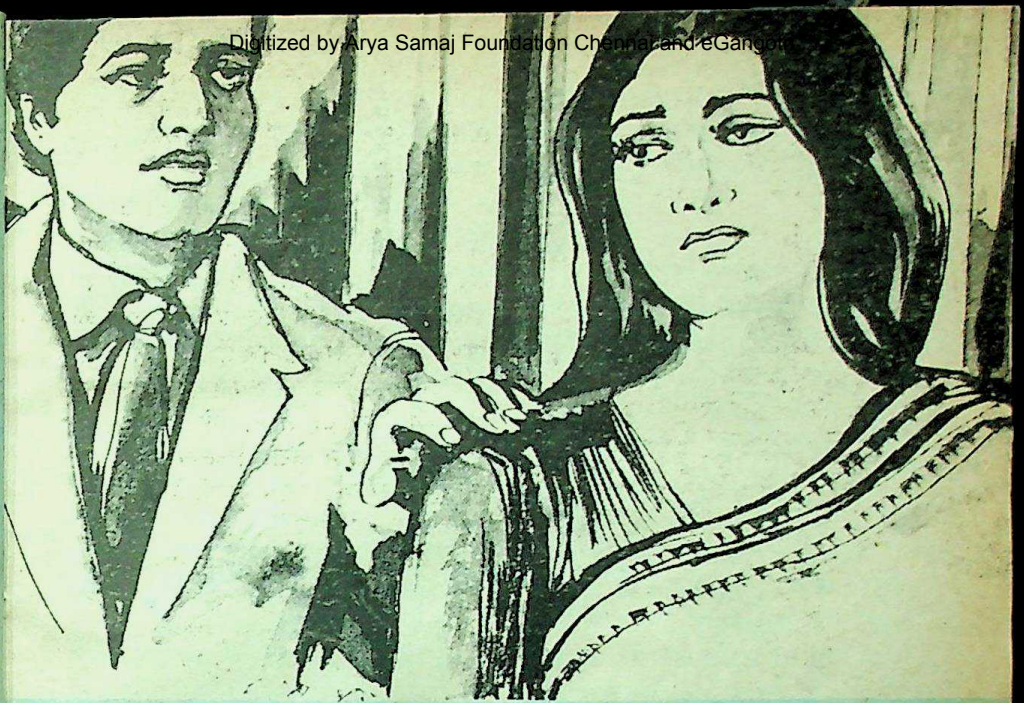

फालतू की वस्तुएं खरीद कर रुपयों की बरबादी से क्या लाभ?

पर यहां बाजार में रूबी को समझानाडांटना नामुमकिन था इसलिए सरोज को अनिच्छापूर्वक रूबी की मांग पूरी करने हेतु तत्पर होना पड़ा.

उस ने दुकानदार से रूबी की पसंद का सूट निकाल कर पैक करने को कहा और कीमत पूछ कर पर्स से पैसे निकालने लगी.

लेकिन दुकानदार की मांग के अनुसार डेढ़ सौ रुपए पर्स में नहीं निकले तो सरोज दुकानदार से सूट की कीमत कम करने का आग्रह करने लगी.

परंतु दुकानदार अड़ गया, "बहनजी, कीमत तो पहले ही सोचसमझ कर कम बताई है. किसी दूसरी दुकान पर जा कर कीमत पता कर आइए. दो सौ रुपए से कम में नहीं मिलेगा."

सरोज असमंजस में डूब गई कि बेटी की मांग पूरी नहीं हुई तो वह कई दिनों तक रूठी रहेगी. फिर उस ने यही उचित समझा कि जनरल स्टोर से खरीदा हुआ कुछ सामान वापस कर दिया जाए और वहां से मिले रुपयों से सूट खरीद लिया जाए.

वह जनरल स्टोर में जा कर सामान

अंधेरे का लाभ उठा कर शेखर सरोज के कंधे पर हाथ रख कर फुसफुसाए, "सोचविचार कर मेरे प्रश्नों का उत्तर तैयार रखना, मैं कल शाम अवश्य आऊंगा."

छोटी बेटी की जिद पूरी करने के लिए सरोज अनजान व्यक्ति से रुपए लेने को तैयार तो हो गई पर पता दे कर मन ही मन संशय से भर उठी. उसे क्या मालूम था कि यह छोटी सी घटना ही उन के बीच आत्मीयता का नया रिश्ता बना देगी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वापस लेने का आग्रह करने लगी पर दुकानदार आनाकानी करने लगा. अब तो सरोज के सामने विकट समस्या पैदा हो गई.

यह सब देख कर रूबी ने सूट खरीदने से मना कर दिया तो सरोज ने संतोष की सांस ली.

तभी दुकान में खड़ा एक ग्राहक आगे बढ़ कर सरोज से कहने लगा, "मैं काफी देर से आप की परेशानी देख रहा हूं, बेटी का मन क्यों दुखाती हैं, इसे सूट ले दीजिए."

"लेकिन बात यह है..."

"मैं समझ रहा हूं...बाजार में खरीदारी करते वक्त अकसर पैसे कम पड़ जाया करते हैं. आप पैसों की चिंता मत कीजिए, सूट का मूल्य मैं चुका देता हूं."

सरोज के मना करतेकरते भी उस ने जबरदस्ती वह सूट खरीद कर रूबी को थमा दिया. फिर वह सरोज की ओर उन्मुख हुआ, "जब आप के पास पैसे हों तो मेरे घर भिजवा दीजिएगा."

"आप का पता?"

उस व्यक्ति ने अपनी जेब से अपना परिचयकार्ड निकाल कर सरोज को दे दिया.

सरोज संकोच में गड़ी जा रही थी क्योंकि यह प्रथम अवसर था, जब उसे भरे बाजार में डेढ़ सौ रुपए का कर्ज लेना पड़ रहा था.

उस व्यक्ति के बिना मांगे ही उस ने अपने घर का पता भी लिख कर उसे थमा दिया. फिर रिकशा कर के दोनों मांबेटी घर चल पड़ीं.

सरोज के मन में शंका उठ रही थी कि एक अनजान व्यक्ति को अपने घर का पता दे कर अच्छा किया या बुरा.

किसी के मन का क्या पता, कौन अंदर से कैसा है. चेहरे से शरीफ दिखने वाले भी अकसर बदमाश निकल आते हैं. अगर पता न दिया जाता तो वह आदमी शायद रुपए मारने की नीयत समझ बैठता.

'खैर, जो होगा, देखा जाएगा. अभी से चिंता कर के मन अशांत कर लेना कहां की बुद्धिमानी है' सोचती हुई सरोज घर के कामों में उलझ गई.

"देखो मां, यह ढीलाढाला सूट कितना फब रहा है, मेरे ऊपर." रूबी सूट पहन कर उस के सामने आ कर खड़ी हो गई.

बेटी को प्रसन्न देख कर सरोज के होंठों पर मुसकराहट फैल गई. "सभी नई वस्तुएं अच्छी लगती हैं. धुलने के बाद यह सूट भी अन्य सूटों जैसा ही हो जाएगा."

"ओह मां, तुम कैसी बातें करती हो." रूबी जा कर टीवी देखने बैठ गई.

फिल्म शुरू होने में कुछ ही मिनट बाकी रह गए थे. सरोज के हाथ तेजी से चलने लगे. उस ने सब्जी बना कर आटा गूंधना शुरू किया था कि रूबी पुकार उठी, "मां, जल्दी आओ न. फिर कहोगी, आधी फिल्म ऐसे ही निकल गई."

"आती हूं." आटे की परात को बड़ी थाली से ढक कर सरोज ने कमरे की ओर कदम बढ़ा दिए.

मनोरंजन के नाम पर एक रविवार की फिल्म ही तो थी जो रूबी की जिद पर उसे देखनी पड़ती थी, नहीं तो उस के जीवन में अंधेरे के अलावा और रह ही क्या गया था.

फिल्म शुरू हुई, पहले दृश्य में ही घोड़ों पर बैठे बंदूकधारी डाकू नजर आने लगे जो हवा में गोलियां छोड़ते हुए चिल्लाचिल्ला कर ग्रामवासियों से धन-दौलत की मांग कर रहे थे.

सरोज का मन कसैला हो उठा. ऐसी फिल्में देखते हुए उसे अपनी जिंदगी का वह हादसा याद हो उठता था, जिस ने उस की मांग का सिंदूर मिटा कर विधवा का कारुणिक जीवन जीने के लिए उसे विवश कर दिया था.

वह माधव के साथ मायके से ससुराल आ रही थी. रूबी उस वक्त मुशकिल से चार महीने की रही होगी. अचानक बस में डाकू चढ़ आए थे और हथियारों से डराधमका कर यात्रियों से रुपए, घड़ियां और आभूषण छीनने लगे थे. बस के अंदर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

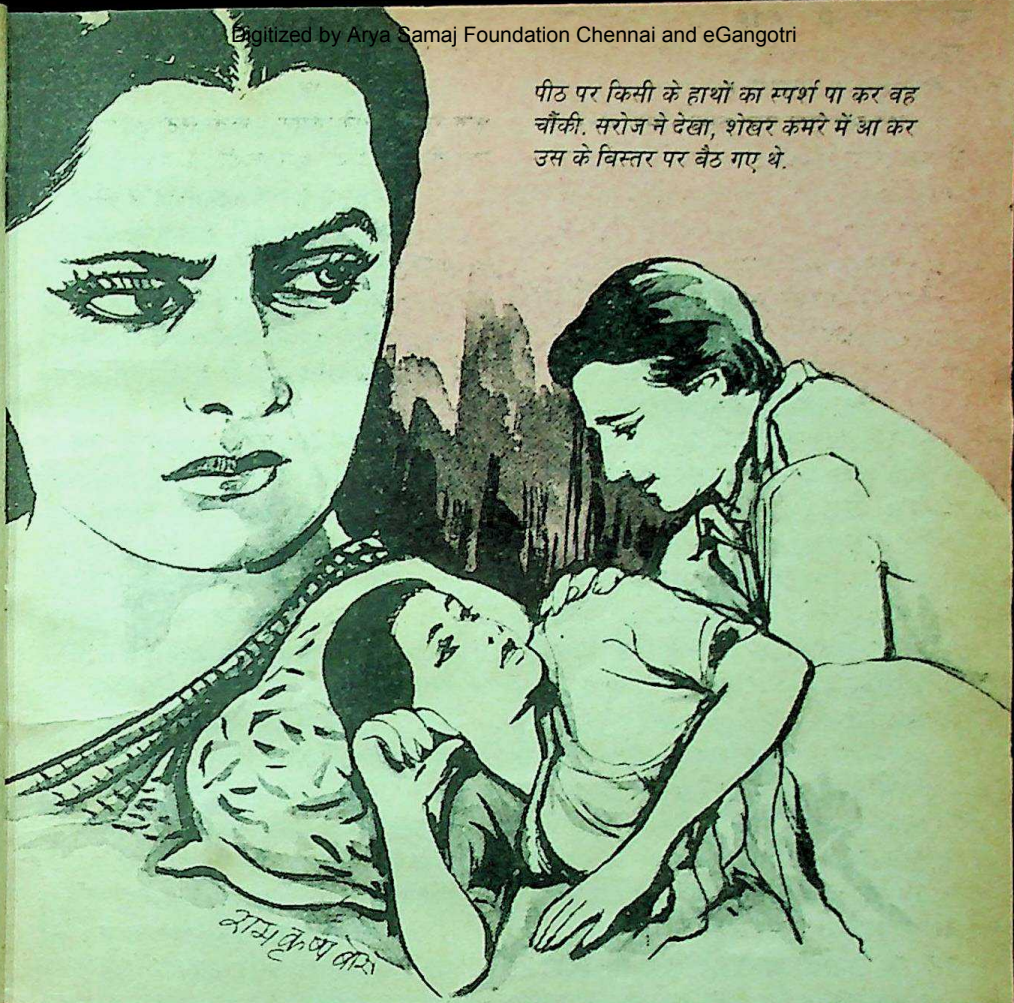

पीठ पर किसी के हाथों का स्पर्श पा कर वह चौंकी. सरोज ने देखा, शेखर कमरे में आ कर उस के बिस्तर पर बैठ गए थे.

दहशत व्याप्त हो गई. भय के कारण सभी जड़ हो गए थे. ड्राइवर, कंडक्टर भी कुछ नहीं कर पाए. डाकुओं के डर ने उन्हें मूक दर्शक बना डाला था.

एक डाकू की नजर यात्रियों के बीच छिपी बैठी एक दुलहन पर पड़ी. सिर से पैर तक गहनों में सजी उस ग्रामीण बाला को देखते ही एक डाकू अन्य यात्रियों को छोड़ कर उस की ओर लपक पड़ा. फिर वह उस का हाथ पकड़ कर उसे बस के दरवाजे की ओर घसीट कर ले जाने लगा.

दुलहन के साथ बैठा उस का पति व अन्य ससुराल वाले प्रतिवाद न कर के खामोश बैठे रहे. डाकुओं का मुकाबला कर के अपनी जान खतरे में डालने का साहस किसी के अंदर नहीं था.

माधव उस असहाय दुलहन का करुण क्रंदन और सहायता की उम्मीद में सब की ओर उठती याचना भरी निगाहों की पीड़ा सहन नहीं कर पाए थे. वह अपनी सीट से खड़े हो कर डाकुओं से उस दुलहन को छोड़ देने की विनती करने लगे.

उन के प्रतिरोध से अपने काम में बाधा पड़ती देख कर डाकू क्रुद्ध हो उठे, क्योंकि माधव का साहस देख कर कुछ अन्य यात्री

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी डाकुओं का मुकाबला करने हेतु तत्पर होने लगे थे. शीघ्र ही लोगों ने मिल कर दुलहन को छुड़ा लिया था.

दुलहन और उस के हजारों रुपयों के आभूषण हाथों से निकल जाने के कारण क्रोधित डाकुओं ने एकाएक माधव पर गोलियां दागनी शुरू कर दीं.

तत्काल माधव की मृत्यु हो गई थी. तब से अब तक वर्षों तनाव और अभाव ही तो सहन किए थे, सरोज ने.

रूबी ने पुकारा तो उस की तंद्रा भंग हुई, "मां, खाना बना दो न, ..भूख लगी है."

सरोज चौंक कर उठी. उसे मालूम ही नहीं हुआ कि कब फिल्म का मध्यांतर हो गया.

माधव की याद से छलक आई आंखें पोंछ कर सरोज रसोईघर में जा कर फुलके सेंकने लगी.

फिर घर के कामों से फुरसत पा कर प्रतिदिन की भांति उस ने रात में ही अपना पर्स संजो कर रख दिया. उस ने डेढ़ सौ रुपए अतिरिक्त भी रख लिए थे. सोचा, छुट्टी के पश्चात वह कार्ड पर छपे पते पर जा कर रुपए वापस करते हुए घर आ जाएगी.

दोपहर को दो बजे स्कूल की छुट्टी हुई तो सरोज ने कार्ड पर छपे पते पर जाने के लिए रिकशा कर लिया.

रिकशा एक कोठी के सामने रुका तो वह असमंजस में पड़ गई कि अंदर जाए या न जाए. उसे इन साधारण कपड़ों में देख कर ये संपन्न लोग बात करना भी शायद पसंद नहीं करेंगे. गृहस्वामिनी एक साधारण औरत के लिए दोपहरी के वक्त दरवाजा खोलने में अवश्य एतराज करेगी.

लेकिन रुपए वापस करने भी तो आवश्यक थे. झिझकते हुए सरोज कोठी का गेट खोल कर अंदर दाखिल हो गई. लान में कोई नजर नहीं आया तो उस ने बरामदे में दीवार पर लगी घंटी का बटन दबा दिया.

दरवाजा 13-14 वर्ष की लड़की ने खोला था. वह स्कूल की पोशाक पहने हुए थी, जैसे अभी स्कूल से लौटी हो.

"बेटी, जरा अंदर से अपनी माताजी को भेज दो, उन से कुछ काम है." सरोज ने झिझकते हुए कहा.

"मां नहीं हैं, आप मुझे ही काम बतला दीजिए."

"मुझे रुपए वापस करने हैं. तुम्हारी मां नहीं हैं तो कोई और बड़ा होगा घर में... उन्हें बुला दो."

"भैया कारखाने में होंगे, पिताजी का पता नहीं... शायद बाजार चले गए हों. इस वक्त घर में सिर्फ मैं ही बड़ी हूं."

तभी पीछे से स्कूटर रुकने की आवाज आई. सरोज ने मुड़ कर देखा वही सज्जन थे, जिन्होंने कल उसे रुपए उधार दिए थे.

"आप...?" वह चौंकते हुए बोले.

"मैं रुपए वापस करने आई हूं, लीजिए." सरोज पर्स खोल कर रुपए निकालने लगी.

"ऐसी भी क्या जल्दी थी, रुपए फिर कभी आ जाते."

"बोझ जितनी जल्दी उतर जाए, उचित रहता है." सरोज ने रुपए उन के हाथ में थमा दिए और वापस जाने के लिए मुड़ गई.

"सुनिए, आप घर तक आई हैं तो अंदर चल कर एक गिलास पानी तो पी ही लीजिए. अतिथि ऐसे ही घर से चला जाए, यह अच्छा नहीं लगता."

सरोज न चाहते हुए भी उन का आग्रह न टाल सकी. वह घर के अंदर प्रविष्ट हुई. अंदर का माहौल बाहर की चमकदमक से सर्वथा भिन्न था. सर्वत्र गंदगी ही गंदगी दृष्टिगोचर हो रही थी. जहांतहां मैले कपड़े, बरतन व अन्य वस्तुएं बिखरी पड़ीं थीं.

'बड़ी फूहड़ और आलसी गृहिणी है.' सरोज सोचने लगी थी.

"बैठिए, मेरा नाम शेखर है और आप का?"

"सरोज."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"आप के पति क्या करते हैं? वह आप के साथ नहीं आए?"

"मेरे पति इस दुनिया में नहीं हैं."

"ओह, फिर आप का गुजारा कैसे चलता है?"

"मैं एक स्कूल में पढ़ाती हूं."

जिस लड़की ने दरवाजा खोला था, वही पानी ले कर आई तो शेखर परिचय कराने लगे, "यह मेरी बेटी मीना है, इस से छोटी एक बेटी सारिका है. बेटा संदीप बेटियों से बड़ा है. वह आजकल व्यवसाय संभालने में मेरी मदद करता है."

"इन बच्चों की मां को भी तो बुलाइए. वह कहीं बाहर गई हैं क्या?"

शेखर का चेहरा उदास हो उठा, "गीता... यानी मेरी पत्नी का देहांत हुए तीन वर्ष बीत चुके हैं."

"ओह.."

शेखर ने मीना को पुकार कर चाय लाने को कहा.

"रहने दीजिए, क्यों परेशान करते हैं बेचारी को." सरोज सहानुभूति से भर उठी, "कोई नौकरानी नहीं रखी क्या?"

"नौकरानी आजकल छुट्टी पर है."

वार्त्तालाप में व्यवधान पड़ा. अंदर कुछ गिरने व किसी के रोने की आवाज सुनाई पड़ी. शेखर अंदर की ओर लपके. मीना भी रसोईघर में से निकल कर कमरे की ओर दौड़ी.

फिर शेखर 11-12 वर्ष की एक लड़की को गोद में उठाए बाहर निकले. लड़की की बांह में खरोंचें लगी थीं, जिन से खून रिस रहा था.

मीना अंदर से डिटोल की शीशी, रूई, पट्टी ले लाई. शेखर ने लड़की की बांह पर पट्टी बांध कर ठंडी सांस ली, "यह मेरी छोटी बेटी सारिका है. बेचारी जन्म से गूंगीबहरी है."

'ओह, इस की देखभाल कैसे होती होगी..' सरोज सारिका के प्रति सहानुभूति से भर उठी. 'कितनी भोली व खूबसूरत है, यह बच्ची, पर बिना खुशबू के फूल जैसी. अपंगता इसे खुशी से कैसे जीने देगी?'

"मैं अपनी इस छोटी बेटी की वजह से बेहद दुखी हूं. सरोजजी, ऐसा लगता है, मैं जीवन भर इस के बोझ से उबर नहीं पाऊंगा.." कहतेकहते गला भर आया शेखर का.

तभी मीना चाय बना कर ले आई. शेखर के आग्रह पर सरोज को एक प्याला चाय पीनी पड़ी.

शेखर का बिखरा टूटा घरपरिवार देख कर सरोज का मन दुखी हो उठा था. उसे आए काफी देर हो चुकी थी इसलिए वह जाने के लिए उठ खड़ी हुई.

"फिर कब आएंगी? सरोजजी, अवश्य आइएगा." शेखर अपनेपन से आग्रह कर बैठे.

"हां, अवश्य आऊंगी." सरोज के मुंह से स्वतः ही निकल गया.

सरोज घर लौटी तो रूबी उस की प्रतीक्षा में व्याकुल सी दरवाजे में खड़ी थी. "बड़ी देर कर दी, मां?"

एहसास

आए थे खाली हाथ,
गए भी हैं खाली हाथ,
हो रहा क्यों दिल में
लुट जाने का एहसास.

—प्रसून

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हां, उन्होंने खाना पिलाए बिना नहीं आने दिया, तुम ने खाना खा लिया?"

"नहीं, तुम्हारे बिना खाने को मन नहीं किया."

रूबी ने सब्जी परांठे पहले ही बना कर रखे थे. सरोज ने जल्दीजल्दी भोजन परोसा और दोनों मांबेटी खाने बैठ गईं.

"मां, वे कैसे लोग हैं?" रूबी ने पूछा.

"कौन?"

"वही, जिन के घर तुम रुपए देने गई थीं."

"ठीक हैं."

"उन के यहां कोई लड़की भी है मेरे जितनी?"

"हां, पर उस की मां नहीं है." सरोज के होंठों से आह निकल आई.

"बेचारी, कितने दुखी होते हैं वे लोग, जिन के मां या पिता नहीं हुआ करते." रूबी उदास हो उठी.

सरोज ने बातों का रुख बदल दिया. वह जानती थी कि रूबी को हमेशा पिता का अभाव कचोटता रहता है. जब भी वह किसी बच्चे को अपने पिता के साथ हंसतेबोलते, खेलते व घूमते देखती तो एकाएक उदास हो जाती.

सरोज अपनी ओर से रूबी को मां और पिता दोनों का स्नेह देने की भरपूर कोशिश करती, लेकिन पिता के स्थान की रिक्तता मां कहां दूर कर सकती है.

कभीकभी रूबी भावुक हो कर छोटे बच्चों की भांति मचल कर जिद कर उठती, "बतलाओ न मां, मेरे पिताजी देखने में कैसे लगते थे? उन की चालढाल कैसी थी? आवाज कैसी थी? वे कौन सी सब्जी व दाल खाना पसंद करते थे? वे मुझे प्यार करते थे या नहीं?"

ऐसे अवसरों पर सरोज को अपनी भावनाओं पर नियंत्रण रखना कठिन हो जाता. वह उमड़ते आंसुओं को अंदर ही अंदर पी कर रूबी के प्रश्नों के उत्तर देते हुए उसे संतुष्ट करने का भरसक प्रयास करती. फिर रात को एकांत में काफी देर तक आंसू बहा कर वह मन पर पड़ा बोझ हलका करती रहती.

जब से रूबी बी.ए. में आई थी, सरोज की चिंता बढ़ गई थी. जबतब वह सोचने बैठ जाती कि क्या वह मातापिता दोनों का दायित्व भलीभांति निभा लेगी? सब से विकट समस्या उस के विवाह की थी. माधव जीवित होते तो अच्छा घरवर तलाशने के लिए उन्होंने न मालूम कहांकहां के चक्कर लगाने शुरू कर दिए होते. वह बेटी को किराए के एक कमरे वाले घर में अकेली छोड़ कर कैसे कहीं जा सकती थी?

सरोज ने परिचितों से रूबी के लिए अच्छा घरवर तलाश करने को कह रखा था, पर इस दहेज लोलुप समाज में गरीब विधवा मां की बेटी को अपनाने के लिए श्रेष्ठ घर, परिवार आसानी से कहां उपलब्ध हो सकता था?

कभी वह यह सोच कर दुखी हो उठती थी कि रूबी ससुराल चली गई तो उसे पहाड़ जैसा अकेलापन काटना मुशकिल हो जाएगा. माधव के साथ बिताए कुछ वर्षों की खट्टीमीठी यादें उस का मानसिक संतुलन डगमगा देंगी.

पर बेटी तो पराए घर की अमानत हुआ करती है. उस की जिंदगी मायके में रह कर नहीं कट सकती.

एक दिन स्कूल से लौटने के पश्चात सरोज शाम के वक्त आराम करने के लिए बिस्तर पर लेटी ही थी कि अचानक किसी ने दरवाजा खटखटाया.

सरोज ने उठ कर दरवाजा खोला, देखा शेखर थे.

"आप? अंदर आइए..." मन का संकोच दबा कर सरोज ने स्वागत किया.

"इधर से गुजर रहा था.... सोचा आप से मिलता चलूं. आप तो फिर हमारे घर आई ही नहीं." शेखर अंदर कुरसी पर बैठ गए.

सरोज उन के लिए एक गिलास पानी ले आई.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"बड़ा छोटा परिवार है आप का... परेशानी होती होगी."

"परिवार भी छोटा है सिर्फ एक बेटी है मेरी."

बातें करने की आवाजें सुन कर रूबी अंदर कमरे में से निकल कर बरामदे में आ गई. फिर शेखर को देख कर चहक उठी, "नमस्ते चाचाजी."

"नमस्ते बेटी. खुश रहो. सुनाओ, सूट कैसा निकला?"

"वह सूट आप की मेहरबानी से मिला था, इसलिए बहुत अच्छा निकला."

शेखर हंस पड़े, "तुम बातें बहुत अच्छी बनाती हो, बेटी. आओ बैठो."

"आप मां के साथ बातें कीजिए. मैं आप के लिए चाय बना कर लाती हूं." रूबी रसोईघर में चली गई.

"हां तो सरोजजी, आप कब आ रही हैं, हमारे गरीबखाने पर."

"महल जैसी कोठी को आप गरीब-खाना कहते हैं."

"महल सिर्फ दीवारों का नाम नहीं हुआ करता. जिस घर से खुशियां रूठ चुकी हों, जहां आंसुओं की बरसात होती हो क्या वह घर महल कहला सकता है?" शेखर का स्वर आर्द्र हो उठा.

"आप दूसरा विवाह क्यों नहीं कर लेते? पत्नी घर और बच्चों को संभाल लेगी."

"कहां मिलेगी ऐसी स्त्री, जो मेरी अपाहिज बेटी को अपनी संतान जैसा स्नेह दे सके. मुझे अपने लिए पत्नी नहीं, अपने बच्चों के लिए मां चाहिए. एक बात पूंछूं, सरोजजी, आप ने पुनर्विवाह क्यों नहीं किया?"

सरोज को यों लगा, जैसे किसी ने उस के दुखते जख्म को छेड़ दिया हो. वह चाय लाने के बहाने उठ कर जाने लगी तो शेखर बोल उठा, "आप ने मेरी बात का उत्तर नहीं दिया."

"आप समाज के नियमों से अनजान तो होंगे नहीं. हमारे समाज में विधवाओं को हेय दृष्टि से देखा जाता है. जिस समाज में कुंआरी लड़की का विवाह होना लोहे के चने चबाने के बराबर हो, फिर बच्चे वाली विधवा को कौन अपना सकता है? मैं ने कभी पुनर्विवाह की आवश्यकता महसूस ही नहीं की, माधव की मृत्यु के बाद. रूबी के पालनपोषण व नौकरी की व्यस्तता ने मुझे यह सब कभी नहीं सोचने दिया."

रूबी चाय ले कर आ गई. उस ने प्यालों में चाय डाल कर शेखर और सरोज की ओर बढ़ाते हुए कहा, "आप अपनी बेटी को अपने साथ क्यों नहीं लाए, चाचाजी?"

पुरुषों में जागता सौंदर्य प्रेम

कुछ वर्ष पहले तक पुरुष सौंदर्य प्रसाधनों का प्रयोग करने में अपनी तौहीन समझते थे. लेकिन अब हालात काफी बदल गए हैं. आजकल सौंदर्य क्लिनिकों में जाने वाले पुरुषों की संख्या 40% तक हो गई है. एक सौंदर्य विशेषज्ञ के अनुसार पहले केवल अभिनेता लोग ही ऐसे सौंदर्य उपचार के लिए आते थे, लेकिन अब व्यापारी, उच्च अधिकारी, विद्यार्थी और हर तरह के लोग आने लगे हैं.

हाल ही में किए गए एक सर्वेक्षण से यह बात सामने आई है कि इस के लिए पुरुषों को महिलाएं प्रेरित करती हैं. सौंदर्य क्लिनिकों में ज्यादातर लोग चरबी घटाने, चेहरे पर दिख रही झुर्रियों को मिटाने, अधिक उम्र के पुरुष अपनी आयु को छिपाने तथा महिलाओं के बीच सदा जवान बने रहने की भावना से जाते हैं. सर्वेक्षणकर्ताओं का यह भी विश्वास है कि निकट भविष्य में ही पुरुष और स्त्रियां बराबर संख्या में इन सौंदर्य केंद्रों में आने लगेंगे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तैयार कर के लाती हूं." उत्साह से भर कर रूबी अंदर चली गई.

शेखर बाहर जाने के लिए अपने मन को तैयार नहीं कर पाए. इस वक्त वह अपनी गृहस्थी की समस्याओं में उलझ से गए थे और इस उलझन से मुक्ति पाने के लिए एकांत की आवश्यकता थी.

उन के न जाने पर संदीप कार में मीना और रूबी को घुमाने ले गया. शेखर के इनकार करने पर पता नहीं क्यों सरोज भी नहीं जा पाई.

सरोज नौकरानी के पास बैठ कर बातें करने लगी. फिर शेखर की इच्छानुसार उसे रात का भोजन भी अपने हाथों से पकाना था. रूबी की भी यही इच्छा थी. बेटी की खुशी के लिए सरोज उस की प्रत्येक इच्छा पूरी करने के लिए तत्पर रहती थी.

सब्जी छौंक कर वह कोठी के लान में निकल आई और तरहतरह के पौधों को देखने में तल्लीन हो गई. अचानक अपने पीछे किसी के कदमों की आहट पा कर चौंक कर उस ने मुड़ कर देखा, शेखर खड़े थे.

वह धीरे से बोली, "आप?"

"अंदर मन नहीं लगा. सोचा, बाहर आ कर आप से ही बातें करूं."

"चलिए, बैठक में चलते हैं."

शेखर उदास से सरोज के सामने सोफे पर बैठ गए. फिर हिचकिचाते हुए बोले, "क्या आप हमेशा के लिए इस घर में नहीं आ सकतीं, सरोजजी. देखिए मुझे गलत मत समझिएगा. मेरा मतलब किसी ऐसीवैसी बात से नहीं है."

"कोई अपना घर छोड़ कर हमेशा के लिए दूसरे के घर में कैसे रह सकता है?"

"आप मेरी किराएदार बन कर तो रह सकती हैं. आप यहां रहेंगी तो आप से बातें कर के मेरे मन को थोड़ा सुकून तो मिल ही जाया करेगा."

"मुझ में ऐसी क्या खास बात है, बातें करने के लिए लोगों की कमी है क्या? किसी को भी चुन लीजिए."

"आप को क्यों नहीं..." आगे के शब्द शेखर के होंठों से बाहर नहीं निकल सके.

उसी समय कार कोठी के अंदर प्रविष्ट हुई. मीना और रूबी दोनों परस्पर चुहलबाजी करती हुई कार से उतर कर बैठक में आईं. आते ही रूबी सरोज के गले में बांहें डाल कर कहने लगी, "मां, आज तो मजा आ गया. संदीप ने बहुत तेज कार चलाई थी."

"कल फिर आना, आज से भी तेज गति से ले चलूंगा." संदीप मुसकराया.

"कहां ले चलोगे?"

"जहां तुम चलना चाहोगी."

सरोज भोजन तैयार करने रसोईघर में चली गई. मीना ने टीवी का बटन खोल दिया, फिल्म शुरू हो गई थी.

आदत के मुताबिक रूबी ने पुकारा, "मां, जल्दी आओ. फिल्म शुरू हो चुकी है."

"रूबी, घर नहीं चलना क्या? चलो उठो, देर करने से रात हो जाएगी." सरोज बैठक में आ कर बोली.

"लेकिन मां, फिल्म शुरू हो चुकी है. हमारे घर तक पहुंचतेपहुंचते आधी रह जाएगी."

"मौसीजी, फिल्म देख कर और खाना खाने के बाद चली जाना." मीना और संदीप बारबार आग्रह करने लगे.

सरोज को रुकना पड़ा.

फिल्म की समाप्ति के पश्चात भोजन से निबट कर सरोज उठ खड़ी हुई, "अब हमें इजाजत दीजिए."

"चलो, मैं कार से छोड़ आता हूं." शेखर ने बाहर आ कर कार स्टार्ट कर दी.

मीना और रूबी एक ही दिन में घनिष्ठ सहेलियां बन चुकी थीं. दोनों के मध्य एकदूसरे को अपने घर बुलाने के लिए वादों का आदानप्रदान हुआ. फिर मीना से विदा ले कर रूबी कार में बैठ गई.

सरोज ने घर पहुंच कर ताला खोला तो शेखर भी उस के साथ अंदर आ गए और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसीलिए मैं उन्हें नियमित रूप से झंडु स्पेशल च्यवनप्राश देती हूँ. सचमुच यह स्पेशल है. शुद्ध हरा आँवला, पीपली, वंशसालोचन, कुंडकोल, लौंग, जावंत्री, इलायची और अकलकरा जैसी जड़ी-बूटियाँ. सब को शुद्ध देसी घी में बनाया गया है. मेरा बाज़ार का आना-जाना तो रोज़ ही लगा रहता है, मैं जानती हूँ कि अच्छी और उम्दा दर्जे की चीज़ें हमेशा कुछ महँगी ही मिलती हैं. फिर, जब क्वालिटी की बात हो तो हर कोई झंडु को जानता है और उस पर भरोसा करता है.

मैं, अपने बच्चों को झंडु स्पेशल च्यवनप्राश बारहों महीने देती हूँ. इसीलिए उनमें छोटी-मोटी बीमारियों का मुक़ाबला करने की शक्ति आ गई है. ख़ास तौर से खाँसी और ज़ुकाम.

हाँ, थोड़ी सी परेशानी मुझे ज़रूर है. इसमें मिले तत्त्व इतने ताज़ा और शुद्ध हैं कि इसका स्वाद भी कमाल है. बच्चों का बस चले तो वे इसे दिनभर खाते रहें. हर दो-चार दिन बाद मुझे बोतल कहीं दूसरी जगह छिपाकर रखनी पड़ती है. क़ीमती है न!"

"बच्चों की पढ़ाई या सेहत का मामला हो तो मैं समझौता कभी नहीं करती..."

क़ीमती ही सही

झंडु स्पेशल च्यवनप्राश.

असली च्यवनप्राश

अब १ किलो के आकर्षक पॉलीजार में भी उपलब्ध.

CLARION/B/ZP/32/173 HIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अधर का लाभ उठा कर उस के कंधे पर हाथ रख कर फुसफुसाए, मेरे प्रश्नों को सोचविचार कर उत्तर तैयार रखना, मैं कल शाम को चार बजे अवश्य आऊंगा.''

शेखर चले गए तो विचारों में खोई सरोज बिस्तर पर लेट गई.

शेखर उस से जो कुछ चाहते थे, अपने हावभाव से व्यक्त कर चुके थे. अब फैसला सरोज को करना था.

वह सोचने लगी कि वह भी तो वही सब कुछ चाहती है, जो शेखर चाहते हैं. लेकिन उसे अपनी भावनाओं पर नियंत्रण रखना आता है.

शेखर पुरुष हैं, उन के अंदर अपनी भावनाओं को स्पष्ट करने का साहस मौजूद है. वह समझ रही थी कि शेखर उस के आकर्षण में पूरी तरह से डूब चुके हैं. वह खुद भी तो इस आकर्षण से अछूती नहीं रह पाई थी. ऐसा कौन सा इनसान है, जो अंधेरों से मुक्त हो कर उजाले में नहीं आना चाहता और उस के जीवन में उजाले की हलकी सी किरण भी मौजूद नहीं थी.

सरोज सोचने लगी, 'वर्षों तक मानसिक तनाव झेलने के पश्चात अब शेखर के रूप में जो मानसिक सुख मिलने वाला है, क्या उसे ठुकरा देना उचित है?

'शेखर को ठुकरा देना क्या उस के प्रति अन्याय नहीं होगा? वह इनकार कर देगी तो उन के मन को भारी आघात पहुंचेगा, वह और अधिक टूट जाएंगे.

'लेकिन रूबी का क्या होगा? वह यह सब कैसे सहन कर पाएगी? 18 वर्ष की आयु में वह अब स्त्रीपुरुष के अंतरंग संबंधों से अनजान तो नहीं. उस की विधवा मां प्रौढ़ावस्था में किसी पुरुष को हमसफर बनाएगी तो क्या उसे खुशी होगी?

'फिर यह समाज क्या कहेगा, लोग उस के नाम पर थूकेंगे, बदचलन करार देंगे, उंगलियां उठाएंगे, रूबी का विवाह होना कठिन हो जाएगा. सिर्फ विवाह ही क्यों, उस की इस हरकत से रूबी का भविष्य, पूरा जीवन बरबाद हो जाएगा.

'शेखर का युवा बेटाबेटी क्या झेल पाएंगे उसे सौतेली मां के रूप में? वह शेखर की दूसरी पत्नी बन कर रूबी को ले कर वहां रहने जाएगी तो उस घर में तूफान उठ खड़ा होगा. तब क्या शेखर को और उसे मानसिक शांति मिल सकेगी?

'नहीं मैं ऐसा नहीं कर सकूंगी. मैं दो परिवारों के विनाश का कारण नहीं बन सकती. मैं शेखर से साफसाफ मना कर दूंगी.' सरोज कांप कर सोचने लगी.

लेकिन शेखर से यह सब कहना क्या आसान था. वह उम्मीदों के दीप जलाए उस की स्वीकृति की कामना मन में लिए कल यहां आएगा. इनकार सुन कर न मालूम क्या हालत हो जाएगी, उस की. उस का बुझा हुआ चेहरा देखने की हिम्मत भी तो नहीं थी, उस के अंदर.

सरोज रात में ही शेखर को पत्र लिखने बैठ गई. 'मेरे कंधों पर अभी युवा बेटी के विवाह की भारी जिम्मेदारी का बोझ है. जब मैं अपनी बेटी के प्रति अपने सभी दायित्व पूरे कर लूंगी, तभी मेरे अंदर आप के गम बांटने की सामर्थ्य पैदा हो पाएगी. आप कुछ वर्षों तक मेरी प्रतीक्षा नहीं कर सकते तो अपने मन को सुकून देने के लिए कोई अन्य सहारा खोज लीजिए. मेरा एक निवेदन भी आप को मानना पड़ेगा. जब तक मेरी बेटी का विवाह नहीं हो जाता, आप मेरे घर आना स्थगित रखें.'

पत्र को लिफाफे में बंद कर के मन का बोझ उतर जाने से सरोज को गहरी नींद आ गई.

अगले दिन शाम को उसे शेखर की अधिक प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ी. वह अपने कहे अनुसार ठीक चार बजे आ पहुंचे. वह जैसे ही कुरसी पर बैठे, उन के हाथ में लिफाफा थमा कर सरोज बिना कुछ बात कहे कमरे में जा कर बिस्तर पर लेट गई. बहुत रोकने पर भी उस की आंखों से आंसू बह निकले.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हॉकिन्स लाइए. ४०% ईंधन खर्च बचाइए.

आजकल ईंधन की कीमतें तो बढ़ती ही जा रही हैं. ईंधन और पैसे बचाने का काफ़ी समय से परखा हुआ साधन है हॉकिन्स प्रेशर कुकर.

पेट्रोलियम मंत्रालय के परीक्षण दरसाते हैं कि प्रेशर कुकर ४०% से भी अधिक ईंधन बचाते हैं. हॉकिन्स में किए गए पकाने के वैज्ञानिक प्रयोगों ने सिद्ध किया है कि हॉकिन्स औसतन ५३% मिट्टी का तेल बचाता है.

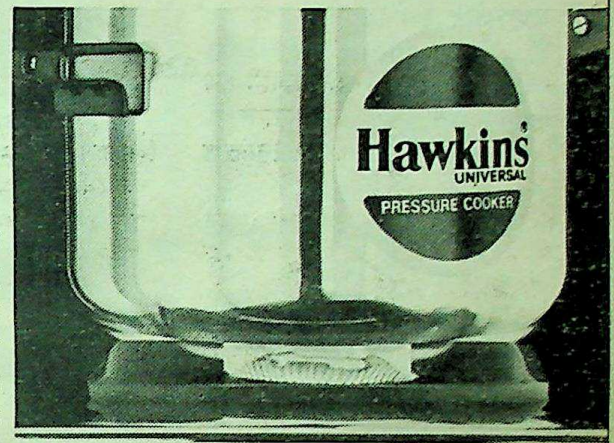

हॉकिन्स बचाता है रु. ५०० प्रतिवर्ष

कैसे? हॉकिन्स की डिज़ाइन और क्वॉलिटी सर्वोत्तम हैं. प्रमाण? हॉकिन्स ही सिर्फ़ ऐसा भारतीय प्रेशर कुकर है जो यूरोप और अमेरिका के सबसे अच्छे डिपार्टमेंट स्टोरों में भी बिक रहा है.

किफ़ायत और सहूलियत के सबसे अच्छे मिलाप के लिए आपके पास छोटे, मध्यम और बड़े हॉकिन्स प्रेशर कुकरों की श्रेणी होनी चाहिए. थोड़ा-सा खाना पकाने के लिए बड़ा कुकर इस्तेमाल करने से ईंधन की बरबादी होती है.

साइज़	मूल्य*	साइज़	मूल्य*
२ लिटर	रु. २९०	६.५ लिटर	रु. ५१५
३ लिटर	रु. ३५०	८ लिटर	रु. ५६५
४ लिटर	रु. ४२५	१० लिटर	रु. ६६५
५ लिटर	रु. ४६५	१२ लिटर	रु. ७६५

* सभी करों सहित अधिकतम मूल्य सेपरेटरों के बिना स्टैंडर्ड बेस के लिए.

ज़्यादा खाना पकाने के लिए छोटा कुकर उपयोग करना अव्यावहारिक है. इसलिए अपनी रसोई की हर ज़रूरत के मुताबिक सही साइज़ के हॉकिन्स खरीदिए. और समय तथा पैसे की और भी अधिक बचत कीजिए.

किफ़ायत करने का समय बिलकुल न खोयें. जल्दी से नज़दीक के हॉकिन्स नियमित विक्रेता के पास जाएं और अपनी ज़रूरत के मुताबिक हॉकिन्स के मॉडल अपने लिए चुन लें.

३०० से भी अधिक सेवा केंद्रों में हॉकिन्स मुफ़्त सेवा प्रदान करते हैं. हर केंद्र में फ़ैक्टरी में प्रशिक्षित कारीगर तैनात हैं. और हरेक में असली अतिरिक्त पुर्ज़ों का स्टॉक है. कोई मदद चाहिए तो यहां लिखें : हॉकिन्स, विभाग क्र. ६०, पी.ओ. बॉक्स ६४८१, बम्बई ४०० ०१६.

उत्तमता ऐसी कि भारतभर को है भरोसा

हॉकिन्स®

१ करोड़ से ज्यादा प्रेशर कुकर बिके हैं

HC 576 H-N

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पता नहीं कब तक उस के आंसू बहते रहे. फिर पीठ पर किसी के हाथों का स्पर्श पा कर वह चौंकी. उस ने देखा, शेखर कमरे में आ कर उस के बिस्तर पर बैठ गए थे.

"आप गए नहीं? मेरा उत्तर जान कर तो आप को अब तक चले जाना चाहिए था." उसे आश्चर्य हुआ.

"मैं आज तुम से कुछ मांगने आया हूं."

"क्या? मेरे पास क्या रखा है?"

"मैं अपने बेटे संदीप के लिए तुम्हारी बेटी रूबी का हाथ मांगने आया हूं. बोलो, स्वीकार है?"

"यह आप क्या कह रहे हैं? कहां मैं और कहां आप का संपन्न खानदान. जानते हैं, मेरे पास बेटी के विवाह में देने को दहेज के नाम पर कुछ भी नहीं है."

"मैं दहेज का भूखा नहीं हूं, सिर्फ यह चाहता हूं कि तुम मेरे साथ मेरे घर में रहो. रूबी की शादी संदीप के साथ हो जाएगी तब तो तुम मेरे साथ रह कर मेरे गम बांट सकोगी. बोलो सरोज, उत्तर क्यों नहीं देतीं? मेरे अंदर वर्षों तक इंतजार करने की शक्ति शेष नहीं बची है..." गला भर आया शेखर का.

वरवधू ढूंढ़ने की समस्या सरिता में वैवाहिक विज्ञापन दे कर हल कीजिए

सरिता सारे भारत में समृद्ध, सजग व सुशिक्षित परिवारों में पढ़ी जाती है. इस प्रकार सरिता में वैवाहिक विज्ञापन आप को वरवधू ढूंढ़ने में बहुत सहायक सिद्ध होगा. दैनिक पत्र तो केवल अपने शहर या इलाके में पढ़े जाते हैं, लेकिन सरिता का क्षेत्र सारा भारत है. इन विज्ञापनों का शुल्क भी सरिता के पाठकों के लिए नाम मात्र रखा गया है.

विस्तृत जानकारी के लिए निम्नलिखित पते पर पत्रव्यवहार करिए :

विज्ञापन व्यवस्थापक, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सरोज शोर में पड़ गई. जब शेखर ने उस का सब से बड़ा बोझ, सब से बड़ा दायित्व पल भर में उतार दिया तो उसे अब शेखर के गम बांटने में क्या आपत्ति हो सकती थी.

लेकिन शंकाएं अब भी मन में बाकी थीं. "क्या संदीप रूबी से विवाह करने के लिए मान जाएगा? आप ने उस से इस विषय में बात की है?"

"नहीं, पर मुझे पूरा विश्वास है कि वह मेरी बात टालेगा नहीं, मैं कल देख चुका हूं कि संदीप और रूबी एकदूसरे में काफी दिलचस्पी ले रहे थे."

"फिर भी आप दोनों से एक बार पूछ तो लीजिए. हमें वही करना चाहिए जो उन दोनों की इच्छा हो."

"ठीक है." शेखर चले गए.

उन्होंने संदीप और रूबी से पूछा तो दोनों ने स्वीकृति दे दी. फिर शीघ्र ही दोनों का विवाह कर दिया गया.

एक दिन संदीप और रूबी जिद कर उठे, "मां, तुम यहां किराए के मकान में अकेली कहां पड़ी रहोगी. हमारे साथ चल कर रहो."

शेखर कहने लगे, "सरोज, अब तुम मेरी समधिन बन चुकी हो. क्या मुझे अब भी यह कहने का हक नहीं बनता कि तुम चल कर हम सब के साथ रहो. इन बच्चों को तुम्हारी छत्रछाया की आवश्यकता है."

अब सरोज को बेटी दामाद के साथ रहने में कोई एतराज नहीं था. उस ने नौकरी से त्यागपत्र दे दिया और शेखर के घर में आ कर रसोईघर की जिम्मेदारी संभाल ली.

एक दिन नौकरानी के न आने पर शेखर सारिका को संभालने लगे तो झट सरोज सामने आ कर कहने लगी, "आप कारखाने जा कर अपना काम संभालिए, सारिका की देखभाल करने की जिम्मेदारी अब मेरी है."

यह सुन कर शेखर के होंठों पर मुसकराहट फैल गई. वह कृतज्ञता भरी निगाहों से सरोज को देखते रह गए. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब उन की याद नैन सरोवर में नहाई...
सच कहता हूं
उस रात मुझे नींद न आई.

जिस ने तरसाया उस बैरी को
ये मेरा प्रणाम है
मुझे मालूम न था
ये प्यार कौन सी चिड़िया का नाम है
मीठीमीठी सी जलन
मैंने जानी भी न थी
एक रात ऐसी चीज पपीहे ने सुनाई...
सच कहता हूं
उस रात मुझे नींद न आई.

वे भी क्या दिन थे
जब परिंदों की तरह हम उड़ा किए
एक इशारे पर
किसी के हम ने दिलो जां लुटा दिए
वो मेरी हमजोली मुस्करा के बोली
थामी तो मीत छोड़ न देना ये कलाई...
सच कहता हूं
उस रात को मुझे नींद न आई.

उस की बातें हैं
जैसे पनघट पे खनकती हो चूड़ियां
उस की पावनता
जैसे मंदिर में आरती का हो दीया
उस का चेहरा है कमल
उस की आंखें हैं गजल
उस की हंसी है मेरी उम्र भर की कमाई...
सच कहता हूं
उस रात मुझे नींद न आई.

तू जहां खुश हो
मेरे सुखचैन की दहलीज वहीं है
कि तुझ से प्यारी
मुझ को दुनिया में कोई चीज नहीं है
हो मेरी आस जुदा
या मेरी सांस जुदा
लेगी जो मेरी जान तो बस तेरी जुदाई...
सच कहता हूं
उस रात मुझे नींद न आई.

—प्रवीण शुक्ल तन्मय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रक्तचाप

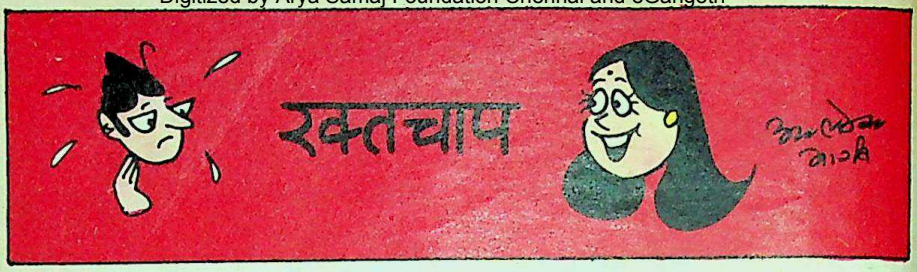

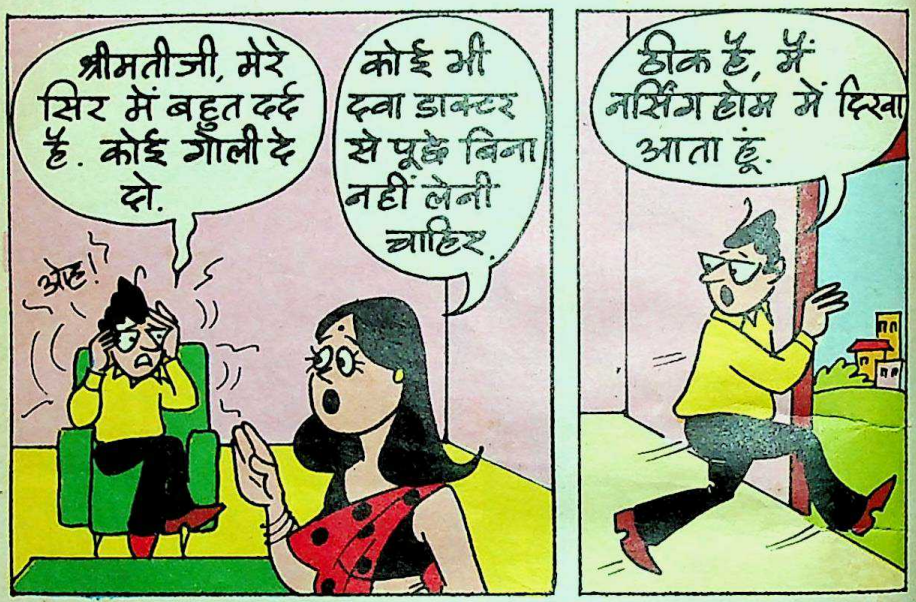

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कांटे बिंधे पौधे : कैक्टस

लेख ● डा. सुनीलकुमार

महाभारत के प्रसिद्ध पात्र भीष्म पितामह ने अपने जीवन में इच्छा-मृत्यु के वरदान की बात करते हुए अपना अंतिम समय अर्जुन के बाणों से बिंधे शरीर के साथ बाणों की नुकीली शैय्या पर व्यतीत किया था. उसी परंपरा को शायद आज तक कैक्टस के कोमल पौधे निभा रहे हैं, जिन्होंने अपने शरीर में कांटों का वरण किया. विकास की प्रारंभिक अवस्था में शायद इन पौधों के तन पर कांटे नहीं थे परंतु महाभारत काल में जिस प्रकार विषम परिस्थितियों में पितामह भीष्म को कांटों की सेज मिली उसी प्रकार शायद इन पौधों को भी पर्यावरण की विषम परिस्थितियों ने कांटें उपहारस्वरूप दे दिए.

कैक्टस पौधों व इन के फूलों की सुंदर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बनावट उन के लिए वरदान साबित हुई और यह उपहार उन्हें रेगिस्तानी पर्यावरण में अपना जीवन गुजारने के उपहारस्वरूप मिला. ये पौधे अपने आप को प्रत्येक विषम पारिस्थितियों के अनुरूप ढाल लेने की क्षमता रखते हैं.

ऐसा माना जाता है कि इन का वास्तविक उद्गम स्थल पृथ्वी के शुष्क व गरम प्रदेश में रहा है. शुष्क व गरम क्षेत्रों में अपने आप को जीवित बनाए रखने के लिए ये पौधे अपने तने अथवा जड़ों में काफी मात्रा में पानी शोषित कर के रखते हैं. तने पर उगे कांटें इन पौधों से पानी के वाष्पन को कम कर देते हैं तथा पौधे को सुरक्षा भी प्रदान करते हैं. तने पर लगे कांटें वास्तव में पत्तियों का ही रूपांतरण हैं और ये कांटें तने पर गहरे में स्थित वायुरंध्रों को चारों तरफ से घेरे रहते हैं. इन का कार्य ओस की बूंदों को इन वायु रंध्रों तक पहुंचाना भी है. बाद में इन बूंदों का तने में अवशोषण हो जाता है.

कैक्टस पौधे, रसीले पौधों (सैक्यूलैंटस) का एक छोटा समूह है. इन का जन्मस्थान मध्य तथा दक्षिणी अमरीका को माना गया है. इस (कैक्टस) समूह में अनेकों जातियों व प्रजातियों के पौधों को रखा गया है. अगर आप ध्यान से देखें तो कैक्टस पौधों

कैक्टस को भी अन्य पौधों की तरह उचित देखभाल की आवश्यकता होती है. क्या आप सोचते हैं कि वे कौन से तरीके हैं जिन से कांटे बिंधे कैक्टसों को विभिन्न आकार व सौंदर्य से अभिभूत किया जा सके? यदि नहीं तो जानिए.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के तन पर उगे कांटें एक आश्चर्यजनक ज्यामितीय रूप में व्यवस्थित होते हैं.

घरों के अंदर भी सजावट के लिए कैक्टस सब से उपयोगी, आसानी से उगाए जा सकने वाले परंतु सब से उपेक्षित भी होते हैं. क्या ये आश्चर्य नहीं है कि आप की घोर उपेक्षा के बावजूद भी यह पौधा अपनेआप को जिंदा बनाए रखता है.

कैक्टस अपनेआप को उपेक्षित नहीं कर पाता परंतु इस की वृद्धि धीरे होती है. कैक्टस की मूलभूत आवश्यकताओं की जानकारी होना आवश्यक है.

कैक्टस फूले आधी रात

आम धारणा ऐसी है कि कैक्टस सात वर्षों में एक बार फूल देते हैं. लोगों का ऐसा मत भी है कि इन की जितनी उपेक्षा की जाए यह उतने ही खुश रहते हैं. लेकिन वास्तविकता यह है कि इन्हें भी अन्य पौधों की भांति उचित देखभाल की आवश्यकता पड़ती है. अत्यधिक महीन रेत, अत्यधिक गरमी, अत्यधिक ठंड व अत्यधिक नमी इन को मार भी सकती है.

उचित विकास एवं लगातार फूलने के लिए इन्हें भी कड़कड़ाती ठंड की आवश्यकता पड़ती है. गरमी में इन्हें छाया में रखना आवश्यक है जिस से ये गरमी की तपिश से राहत पा सकें.

ऐसा मत है कि अधिकतर कैक्टसों में फूलों का खिलना शाम को शुरू होता है तथा सुबह होतेहोते फूल मुरझाने लगते हैं. पुष्प वर्द्धन के समय वे अत्यंत ही सुंदर व मोहक लगते हैं.

यद्यपि कुछ कैक्टस पौधों की नवोदय अवस्था में भी फूल दे देते हैं परंतु कुछ कैक्टस यथा आर्पीशिया व सिश्यस सामान्य अवस्थाओं में फूल नहीं देते.

कैक्टस की लगभग 50% जातियां कमरों के अंदर रखे जाने पर तीनचार वर्षों के उपरांत ही पुष्पित हो पाती हैं. इसलिए उन जातियों का चयन करना चाहिए जो वर्ष भर फूल देते रहें.

कैक्टस में फूल अधिकतर नई आने वाली वृद्धि पर ही आते हैं. परंतु इस के लिए पौधे को गरम व ठंडा तापक्रम उपलब्ध कराना आवश्यक होता है. अतः गरमियों में इन्हें बाहर रखें व सर्दियों में आवश्यकतानुसार कम तापक्रम उपलब्ध कराएं.

कैसेकैसे कैक्टस

कैक्टस पौधों का समूह विभिन्न प्रकार की जातियों के पौधों का मिश्रण है. इसी समूह के रसीले पौधे (सैक्युलैंटस) वास्तविक कैक्टस से काफी अलग होते हैं. सैक्युलैंटस पौधों को आसानी से पहचाना जा सकता है. उन की मांसल पत्तियां तथा तना आसानी से पानी भंडारित कर सकता है. इस की प्रत्येक जाति में कुछ लक्षण मिलतेजुलते होते हैं. सभी कैक्टस प्रैस्किया व नवोदित आर्पीशिया को छोड़ कर लगभग पत्ती रहित होते हैं. इन के तनों पर वायुरंध होते हैं जो कि कांटों या धागों जैसी रचनाओं से ढके रहते हैं.

ये रसीले पौधे अलगअलग आकारों व रचनाओं में व्यावसायिक दृष्टि से काफी संख्या में उपलब्ध होते हैं. इन में से अधिकतर की पत्तियों की संरचना गुलाब के फूल की पंखुड़ियों की तरह होती है, जैसे अलोय, अगेव, इकवेरिया, फरकेरिया, ग्रैपैटोपैलेटम, हावर्थिया, सेमपरविवम व सीडम आदि. पत्तियों का यह गठा हुआ तरीका, इन पौधों से पानी के अधिक वाष्पन को रोकता है. इन सब के बावजूद इन पौधों को भी उचित व अच्छी पानी की निकासी वाले खाद मिट्टी के मिश्रण, सूर्य के प्रकाश, ताजा हवा तथा वृद्धि के मौसम में पानी की आवश्यकता पड़ती है. सर्दियों में इन्हें भी शुष्क व ठंडे 'आराम' (रेस्टिंग पीरियड) की आवश्यकता पड़ती है.

तीनचार रसीले पौधे तथा एक या दो कैक्टस को एक डिश में लगा कर लंबे समय तक गृह सज्जा कर सकते हैं.

कैक्टस समूह के पौधों को दो भागों में विभाजित किया गया है. रेगिस्तानी कैक्टस व वन कैक्टस.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

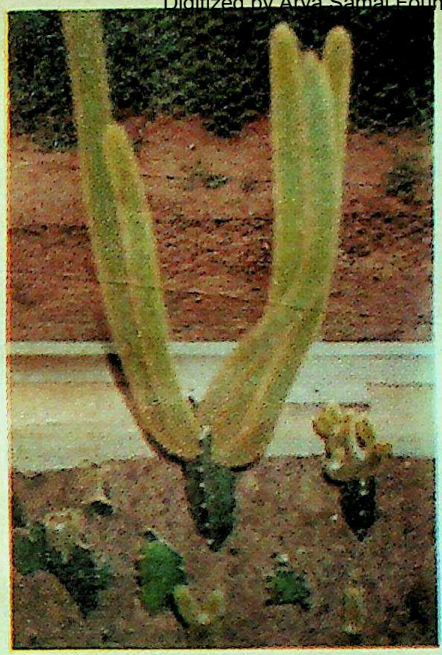

शीघ्र वृद्धि एवं पूर्ण सफलता के लिए प्रत्यारोपण मूलवृंत पर करें. एक ही मूलवृंत पर 4-5 कैक्टस एक साथ प्रत्यारोपित किए जा सकते हैं.

रेगिस्तानी कैक्टस : रेगिस्तानी कैक्टसों का प्राकृतिक रिहायशी स्थान अमरीका के गरम तथा अर्द्ध रेगिस्तानी क्षेत्र माना गया है. 'रेगिस्तानी कैक्टस' नामकरण होने के बावजूद भी, इन में से कुछ ही कैक्टस सर्वथा रेतीले इलाकों में जिंदा रह सकते हैं. इसी समूह के कैक्टसों को घरों में उगाने के लिए अधिकतर रखा जाता है. इन में से अधिकतर को कलम तकनीक द्वारा पुनर्उत्पादित किया जा सकता है. इन को मध्य अक्तूबर से मार्च अंत तक बहुत कम या पानी की नगण्य आवश्यकता पड़ती है. इन को सूर्य के सीधे प्रकाश की आवश्यकता पड़ती है. अतः इन्हें मकानों के दक्षिणी भाग में या खिड़कियों में रखना चाहिए.

वन कैक्टस : वन कैक्टस अमरीका के वन क्षेत्रों में स्वाभाविक आवास में पाए गए थे. वहां ये कैक्टस अन्य पेड़ों के ऊपर लगे उपररोही (ईपीफाईटस) अवस्था में पाए जाते हैं. इन पौधों के तने पत्तियों की तरह चपटे होते हैं और इन की वृद्धि रेंग कर होती है. वैसे इन की कुछ ही जातियां व्यावसायिक रूप में उपलब्ध हो पाती हैं. इन पौधों को सर्दियों के मौसम में भी पानी व खाद की आवश्यकता पड़ती है. वर्ष के गरम महीनों में इन्हें मकान के पूर्व व उत्तर दिशाओं में छायादार स्थानों में रखना ठीक रहेगा.

भू वास्तुकला में कैक्टसों का महत्त्व

कैक्टसों व रसीले पौधों की पत्तियों व उन की आपसी समायोजन संरचनाएं अति मनमोहक होती हैं. अतः ये भू वास्तुकला में अत्यंत ही आकर्षक दिखते हैं.

इन पौधों को किसी भी उपेक्षित स्थान पर उगाया जा सकता है. खाली पड़े टबों, गमलों व ऊबड़खाबड़ मिट्टी की छोटीछोटी पहाड़ियों (राकरीज) पर आसानी से उगाया जा सकता है.

कैक्टसों की ऊंचाई कुछ सें.मी. से ले कर कई मीटर तक हो सकती है. अतः इन को विभिन्न ऊंचाई के अनुसार समायोजित किया जा सकता है.

जंगली कैक्टस काफी तेजी से बढ़ते हैं, अतः इन को उद्यान के चारों तरफ बाड़ के रूप में उगाया जा सकता है तथा बाद में प्रत्यारोपण के लिए आवश्यक मूलवृंत आसानी से मिल जाता है.

तापक्रम व वातावरण : कैक्टस पौधों का यह समूह तापक्रम के काफी उतारचढ़ाव को आसानी से सह लेता है. परंतु अति तो प्रत्येक चीज की नुकसानदायक ही होती है. 10^0 से ले कर 13^0 से. तक का तापक्रम सहनशील है. वैसे तो 4 से. तक कम तापक्रम कोई खासा नुकसान नहीं पहुंचाता फिर भी इस तापक्रम से पौधों को बचाएं. उन्हें हरित गृह या कमरों में रखें. सर्दियों में इन्हें सूर्य के तीव्रतम प्रकाश वाले स्थान पर रखें. सिफैलोसिरस व इस्पोस्तोआ को सर्दियों में लगभग 15.5^0 से. तापक्रम तक ही अनुकूल रहता है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पानी व आर्द्रता : कैक्टसों में वृद्धि के लिए आवश्यकतानुसार पानी दिया जाना काफी महत्त्व रखता है. घरों के कैक्टसों में यह बात अति महत्त्वपूर्ण है कि इन्हें भी अन्य पौधों के समान गरमियों में सुबहशाम पानी दें. गरमियों में इन की वृद्धि अवस्था होती है. छोटे गमलों में पानी ज्यादा व बड़े गमलों में पानी कम दें. क्योंकि बड़े गमलों में पानी का निकास अच्छा नहीं होता अतः पौधे की जड़ें सड़ सकती हैं. ध्यान रखें कि पानी पौधे के तने के किसी कटाव या गहराई में न रुके. ईकाइनोप्सिस, ईकाइनो कैक्टस, रिब्यूटिया आदि पौधों में वृद्धिबिंदु अग्रभाग में स्थित होता है. अतः पानी की अधिकता से ये भाग सड़ना नहीं चाहिए.

उचित निकासी की मिट्टी प्रयोग करें :

इन पौधों में खास ध्यान देने वाली बात यह है कि इन को मिट्टी से ज्यादा नमी न मिले. मिट्टी में पानी का उचित निकास हो. मिट्टी में पुराना इमारती चूना, कठोर चूना पत्थर, मारबल के बारीक टुकड़े, सीपों का चूरा, पत्तियों की खाद, चारकोल पाउडर तथा जली लकड़ी का चूरा मिला कर छान लें. महीन मिट्टी छान कर अलग कर दें. इस में थोड़ी हड्डी की खाद, सुपर फास्फेट भी मिला दें. मिश्रण में कच्ची गोबर की खाद न मिलाएं वरना जड़ें सड़ जाएंगी. वैसे बदरपुर या मोटा रेत ले कर उस में पत्तियों की खाद व चारकोल मिला कर भी काम चलाया जा सकता है.

बीजों के द्वारा : इस विधि के द्वारा व्यावसायिक उत्पादन ही करना चाहिए. इस विधि से कैक्टस अपनी पूर्ण अवस्था प्राप्त करने में काफी समय लेते हैं. बीज बोने के लिए रेत (मोटा), मिट्टी व पत्तियों की खाद का 1:1:1 का मिश्रण बना लें. इस में बदरपुर व थोड़ा चारकोल पाउडर भी मिलाएं. बीज बोने के लिए उथले गमले, बर्तन या मिट्टी की क्यारियों में बोएं. इस

मूलवृंत व सायन तराशने के विभिन्न तरीके

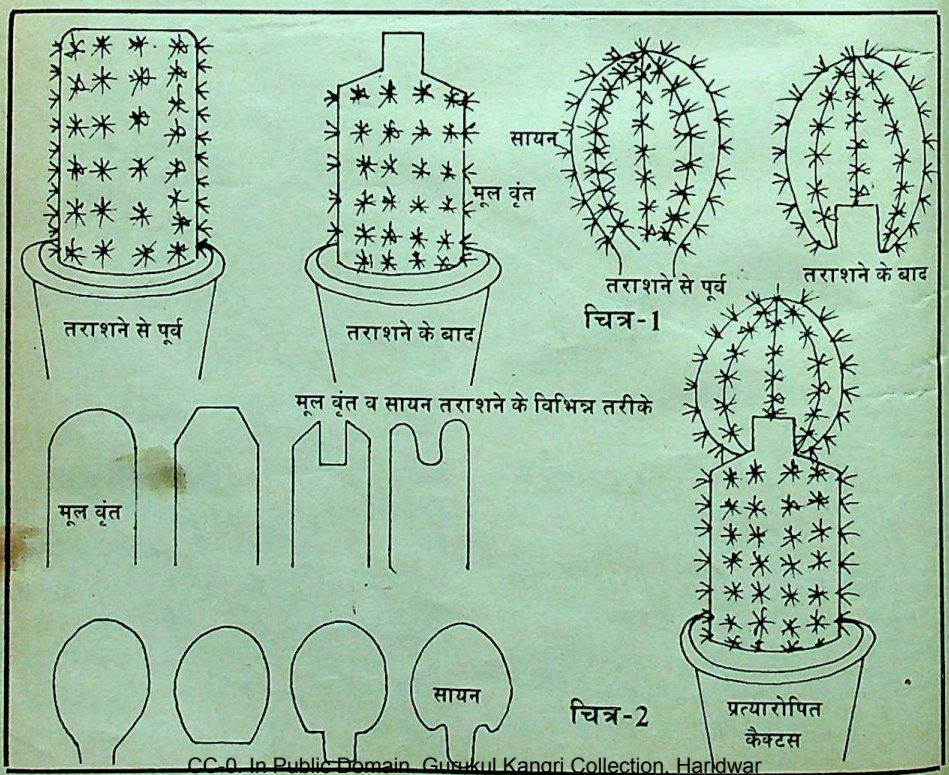

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

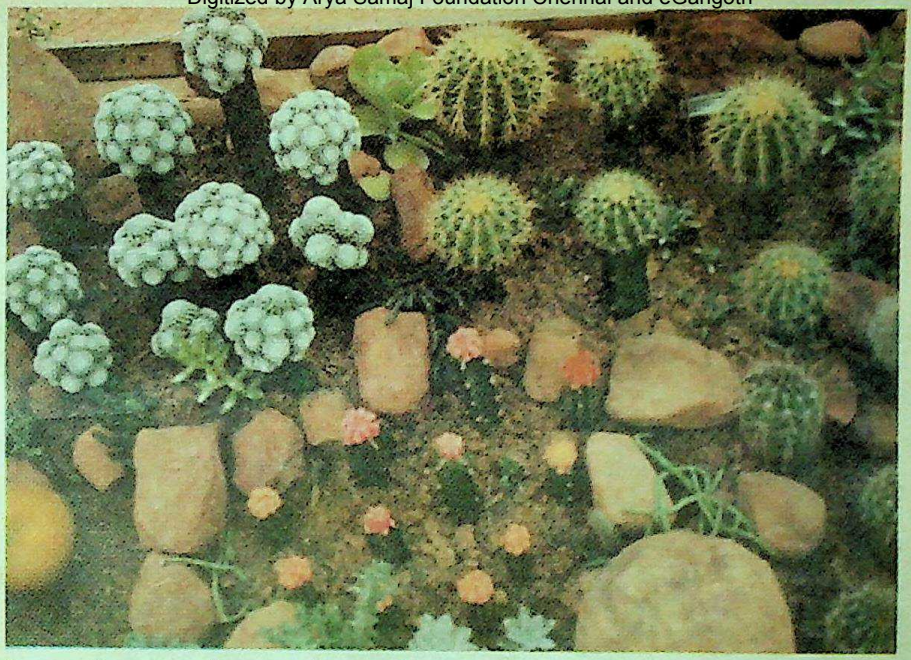

कैक्टसों को सीले पौधों के साथ लगाएं. इस से वे अधिक मनमोहक व आकर्षक दिखाई देते हैं.

मिश्रण को एकसार फैला कर थोड़ा दबा दें. इस पर बीज एकसार फैला कर इस के ऊपर रेत की पतली पर्त बिछा दें. पानी हलका व फुहारे से दें. फिर इसे कागज या प्लास्टिक या शीशे की प्लेट से ढक दें. बीज मार्च से सितंबर के मध्य बोना ठीक रहता है. बीज अंकुरण 7 दिन से ले कर 30 दिनों में हो जाता है.जब पौधा 4-5 सेंमी व्यास व 5-10 सेमी लंबा हो जाए तो उसे क्यारी से निकाल कर गमले में लगा दें. पौधे में पानी पुनर्रोपण के 2-3 दिन बाद दें व पौधा छाया में रखें.

अकसर कुछ कैक्टसों जैसे मैमलेरिया, ईकाईनो कैक्टस आदि में मातृ पौधे की जड़ों से या शरीर के किसी भाग से पुनर्उत्पादन से कुछ बच्चे पौधे निकल आते हैं. इन पौधों को अलग कर के सीधे प्रत्यारोपण विधि से या सीधे ही गमले में लगाया जा सकता है.

लंबे उगने वाले कैक्टसों में वृद्धि के दौरान तने पर एक निशान आ जाता है. प्रत्येक दो वर्षों बाद आने वाला निशान ज्यादा साफ दृष्टिगोचर होता है. इन जातियों में पौधों की कलमें इसी निशान से काटी जानी चाहिए. लंबे बढ़ने वाले कैक्टसों में ऊपर से कलम काटने पर आप का पौधा आदर्श नमूना तो नहीं रहेगा फिर भी कटे स्थान से अन्य शाखाएं निकल आएंगी जिन का उपयोग नए पौधे तैयार करने में किया जा सकता है. जिन पौधों में एक ही गोलाकार तना होता है उन में कलम काट कर उत्पादन संभव नहीं होता. लंबे कैक्टस के उदाहरण हैं—जाईगोकैक्टस, ईपीफिल्लम, रिहपसैली-डोप्सिस व फिलमो कैक्टस आदि.

मांसल पौधों में (सेमपरविवम व ईकवेरिया आदि) पत्ती या भूस्तारिका (सकर्स) की कलमें काट कर पौधों में वृद्धि की जा सकती है.

कलम प्रसारण तकनीक में कुछ आवश्यक बातें:

कलमों को जमीन में लगाने व सड़ने से बचाने के लिए कलमों को मोटाई के अनुसार 2-7 दिनों तक सुखाना चाहिए. सुखाने का समय 30 दिन का भी हो सकता है. बाद में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कलमों को रेत तथा पत्तियों की खाद के मिश्रण में लगाएं. पानी बहुत कम डालें जब तक कि कलमों में नई जड़ें न आ जाएं.

हैरिसिया व सेलेनिसिरस की कलमें उचित लंबाई की काटें. पैकीसिरस व लिमैरिओसिरस की कलमें तने के सिकुड़े स्थान पर से काटें. मैमलेरिया व रिब्यूटिआ में गुच्छों को तोड़ कर अलग कर लें. ट्राईकोसिरस, क्लिस्टोकैक्टस व ईकाई-नोसिरस आदि को मातृ पौधों से चलने वाले सकर्स को काट कर अलग कर के लगाएं. ईपीफिल्लम में जड़ व तने की आड़ी कलमें काटें.

शीघ्र वृद्धि व पूर्ण सफलता के लिए प्रत्यारोपण (ग्राफ्टिंग)

कुछ विशेष कैक्टसों में (अधिकतर संकर कैक्टसों में) कलम अथवा बीज द्वारा कैक्टस अपने विशेष गुण खो देते हैं अथवा जमीन में लगाने पर शीघ्र वृद्धि नहीं कर पाते एवं कवक रोगों के शिकार हो जाते हैं. इस समस्या के निदान के लिए गुलाब में प्रत्यारोपण की भांति ही कैक्टस में मूलवृंत

ईकाईनोरसेरस कैक्टस को मातृपौधों से चलने वाले सकर्स को काट कर अलग कर के लगाए.

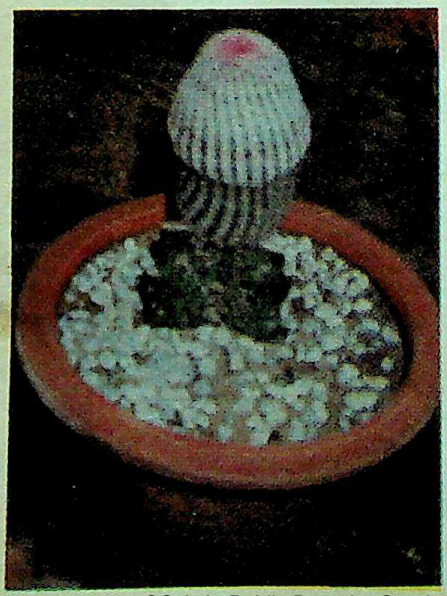

किसी जंगली कैक्टस का लिया जाता है. इस कैक्टस की जीवन क्षमता अन्य कैक्टसों की अपेक्षा अधिक होती है. ये कैक्टस जमीन से अधिक मात्रा में भोजन शोषण कर सकते हैं तथा बीमारी रोधक भी होते हैं.

मूलवृंत के लिए मुख्यतः सेलेनिसिरस, ट्राईकोसिरस, हैरिसिया, सिरयस, आपंशिया व क्लिस्टो कैक्टस आदि का प्रयोग किया जाता है. इन सभी कैक्टसों को मिट्टी : रेतः खाद के मिश्रण में इच्छित आकार व लंबाई की कलमों के रूप में उगाया जाता है. इन कलमों के जमीन में व्यवस्थित हो जाने पर इच्छित कैक्टस को इन के अग्र भाग पर प्रत्यारोपित किया जाता है (चित्र 1 देखें)

प्रत्यारोपण के लिए चित्रानुसार मूलवृंत को पहले जमीन के समतल, तेज चाकू या ब्लेड से तराशा जाता है. इस के उपरांत प्रत्यारोपित किए जाने वाले कैक्टस के निचले भाग में भी समतल चीरा लगाया जाता है. फिर मूलवृंत पर इच्छित कैक्टस इस प्रकार बैठाया जाता है कि दोनों के ऊतकों के बीच में कोई जगह न बचे. तदोपरांत ऊपर के प्रत्यारोपित कैक्टस को किसी चीज से दबा दिया जाता है या तार से बांध दिया जाता है या बांस की पतली खपच्ची से मोड़ कर दबा दिया जाता है. इस का उद्देश्य दोनों कैक्टसों के ऊतकों को आपस में मिलाना होता है. लगभग एक माह में दोनों कैक्टसों के ऊतक आपस में जुड़ जाते हैं और ऊपर वाला कैक्टस मूलवृंत के जरिए अपनी खुराक लेने लगता है.

प्रत्यारोपण के लिए मूलवृंत व सायन (जिस कैक्टस को प्रत्यारोपित करना है) में चीरा लगा कर विभिन्न तरीकों से इन्हें तराशा व जोड़ा जा सकता है (देखें चित्र नीचे 2)

एक मूलवृंत पर 3-4-5 कैक्टस एक साथ भी प्रत्यारोपित किए जा सकते हैं. प्रत्यारोपण के समय प्रसारोपित किए जाने वाले कैक्टस की आयु कम से कम 1-2 वर्ष होनी चाहिए तथा प्रत्यारोपण कम नमी वाले महीनों में करना चाहिए (अप्रैल से जुलाई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गगन पेश करते हैं बढ़िया खाने का राज़

गगन में पका खाना इतना स्वादिष्ट होता है
कि खाने का मज़ा बढ़ जाता है!

खाना चाहे रोज़ाना का हो, पार्टी का
या तीज-त्यौहारों का, गगन उसमें
नया स्वाद भर देता है और खाने वाले
आपकी तारीफ करते
रह जाते हैं।

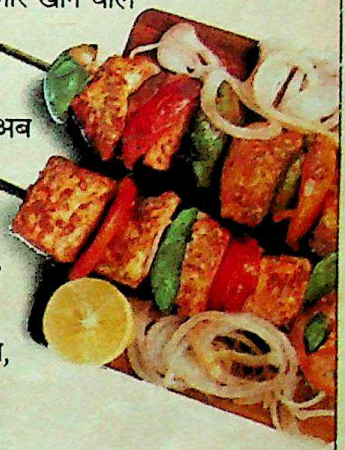

आप भी अपने परिवार का खाना अब
गगन में पकाइए — फिर देखिए उन्हें
कितना मज़ा आता है!

नाश्ता — ऑमलेट, पूरी-आलू, चीला, डोसा,
अंडे की भुर्ज़ी।

लंच — खट्टे आलू, पनीर दो प्याज़ा,
गोभी-मसाला, वैजीटेबल पुलाव,
फ्राइड भिंडी।

शाम की चाय — समोसा, पकौड़ा,
केक, चीज़ टोस्ट।

डिनर — दम आलू,
भरवां करेले, छोले, बैंगन भर्ता,
करारे परांठे।

PS/ABC/2690/HIN

खाओ गगन रहो मगन!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गमलों में [illegible] करने का उपयुक्त समय बसंत ऋतु ही है. रोपण के समय मिट्टी अधिक गीली नहीं होनी चाहिए. रोपण के समय पौधे की जड़ों के नीचे थोड़ा रेत अवश्य डाल दें.

रोपण के 2-3 दिन उपरांत ही हलका पानी फुहारे से दें. ज्यादा पानी से जड़ें व तने का निचला भाग सड़ सकता है. पौधे को छोटे गमले में ही लगाएं. गमले की मिट्टी में पानी का ठीक निकास रखें. रोपण के पश्चात एक सप्ताह पौधा छाया में रखें फिर एक सप्ताह अर्द्ध छाया में फिर सीधे सूर्य के प्रकाश में रख सकते हैं.

कैक्टस को गमलों में लगाते समय इस के नीचे के 1/3 भाग में कंकड़पत्थर या गमले के टूटे ठीकरे डाल दें. अगर गमला बड़ा है तो कैक्टस को बीच में न लगा कर किनारे पर लगाएं. इस से पौधे की जल्दी वृद्धि होती है.

वैसे तो नियम यह है कि बचाव करना बीमारी दूर करने की अपेक्षा आसान है. इन पौधों में आवश्यकता से अधिक पानी न दें. जड़ से सड़ने या कालर राट के सड़ने पर पौधे को उखाड़ कर देखें. यदि पूरी जड़ें सड़ चुकी हों तो पौधा नहीं बचेगा. अगर कुछ जड़ें बची हैं तो सड़ी जड़ों को काट कर अलग कर दें तथा जड़ों को 2% ब्लाईटाक्स अथवा किसी अन्य कवकनाशी के घोल में 2 मिनट डुबाएं और फिर 2 दिन सुखा लें. पौधे को बाद में दूसरी (कवकनाशक से उपचारित) मिट्टी व गमले में रोपित कर दें. पानी हलका दें. कीट पतंगों व मकड़ी की रोकथाम के लिए 2% का मैलाथियान व मेटासिस्टाक्स को मिला कर 15 दिनों के अंतराल पर हलका छिड़काव करें.

इन कैक्टसों में से कुछ में से निकलने वाला सफेद दूध के समान द्रव हानिकारक है. ध्यान रखें बच्चे इस के संपर्क में न आएं.

इस क्षेत्र में विशेष शोध :

भुवनेश्वर कृषि विश्वविद्यालय में इस विषय पर (पहली बार भारतवर्ष में) जो शोध कार्य हो रहे हैं वह पाठकों की जानकारी के लिए आवश्यक हैं. डा. पी. दास के नेतृत्व में इस विषय को पीएच. डी. के लिए पहली बार किसी विश्वविद्यालय में मान्यता मिली है. डा. दास की महत्त्वपूर्ण उपलब्धियां हैं : 400 प्रजातियों में संकर कैक्टस का उत्पादन करना. पुमणु संवर्धन (पालन कल्चर) द्वारा संकर कैक्टस उत्पन्न करना तथा पेरिस्किआप्सिस मूलवृंत पर सूक्ष्म प्रत्यारोपण (माइक्रो ग्राफ्टिंग) करना

लेखकों से निवेदन

प्रकाशनार्थ रचनाओं पर निर्णय लेने में चार छः सप्ताह लग जाते हैं. इस दौरान रचना के बारे में पत्रव्यवहार करने से कोई लाभ नहीं होता क्योंकि हम कुछ भी बताने में असमर्थ होते हैं. हम केवल स्वीकृत रचनाओं का हिसाब रखते हैं, अस्वीकृत का नहीं. स्वीकृत रचनाओं के बारे में सूचना चार से छः सप्ताह में दे दी जाती है.

टिकट लगे लिफाफे के साथ आई अस्वीकृत रचनाएं निर्णय के बाद तुरंत लौटा दी जाती हैं. अन्य अस्वीकृत रचनाएं नष्ट कर दी जाती हैं..

कविताओं और स्तंभों के साथ टिकट लगा पता लिखा लिफाफा न भेजें. छः सप्ताह तक यदि कोई सूचना प्राप्त नहीं होती तो कविताओं और स्तंभों को अस्वीकृत समझ लें. अस्वीकृत की गई कविताएं और स्तंभ लौटाए नहीं जाएंगे. अतः उन की एकएक प्रति अपने पास अवश्य रखें. इस संबंध में कोई पत्र-व्यवहार न करें.

यदि आप किसी ऐसे विषय पर लिखना चाहते हैं जिस में अधिक समय अथवा परिश्रम के लगने की संभावना है तो उस बारे में पूर्व सलाह लेना काफी लाभदायक होता है.

सरिता
ई-3, दिल्ली प्रेस, झंडेवालान एस्टेट,
नई दिल्ली-110055

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Sarayu Trust Foundation Chennai and eGangotri

नहाने का साबुन नहीं... बालों को चाहिए खास साबुन.

नहाने के साबुन बालों की सही सफ़ाई नहीं कर पाते. इनसे बालों को नुकसान पहुंच सकता है, बाल चिपचिपे हो सकते हैं, डैंड्रफ़ हो सकता है, बाल कमज़ोर हो सकते हैं.

इसलिए बालों को चाहिए बालों का खास साबुन, जो बालों की ज़रूरतों को समझे. यानी विप्रो शिकाकाई. वर्षों से आज़माये गये शिकाकाई से भरपूर विप्रो शिकाकाई बालों को साफ रखे, स्वस्थ रखे.

और बाल स्वस्थ रहें, तो क्यों गिरें?

विप्रो
शिकाकाई

everest/90/WL/328/hn

सुंदर बालों की स्वस्थ राह.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरा अंश

कहानी ● डा. दीपा त्यागी

कमरे के भीतर पंखा पूरी गति से घूम रहा था. कभीकभी पंखे से 'क्रिच-क्रिच' ध्वनि निकलती, जो कमरे की शांति को भंग कर रही थी. मेरा ध्यान बारबार उस आवाज में अटक रहा था. लगता था, मेरे भीतर ही कुछ लगातार टूट रहा है, परत दर परत मेरे हृदय को छील रहा है. यह तभी से हो रहा था, जब से डाक्टर विकास की रिपोर्ट मिली थी और उन्होंने मेरी पत्नी रिन्नी को पूर्ण स्वस्थ करार दिया था. मुझे अपनी रिपोर्ट लेने दोपहर बाद उन के क्लिनिक जाना था.

यह तो अच्छा ही हुआ कि रिपोर्ट सोमवार को मिली और रिन्नी को इतवार अचानक मायके जाना पड़ गया. अगर रिन्नी रिपोर्ट देख लेती तो क्या कहती? अब तक उस की सूनी गोद के लिए सभी रिश्तेदारों, घरपरिवार के सदस्यों के साथ मैं भी उसे ही दोष देता आ रहा था. लेकिन वह अपनी रिपोर्ट देख कर मुझे हिकारत की नजरों से न देखती? तब मैं आंख से गिरे आंसू की तरह क्या रिन्नी की आंखों से न गिर जाता?

न जाने क्याक्या सोचते हुए मैं ने अपना सिर सोफे से टिका लिया और इस दुख को दृढ़ता के साथ सहन करने के लिए स्वयं को तैयार करने लगा. हार मान कर हाथ पर हाथ धर कर बैठ जाना मुझे कभी नहीं सुहाता. सोचने लगा, 'हर स्थिति का मुकाबला करना होगा.

गरमी बहुत थी. माथे पर पसीने की बूंदें छलक आई थीं. जेब से रूमाल निकाल कर मैं ने पसीना पोंछा और फिर उसांस छोड़ कर पानी पीने रसोई में चला गया.

घड़ी की सूइयां पलपल सरक रही थीं.

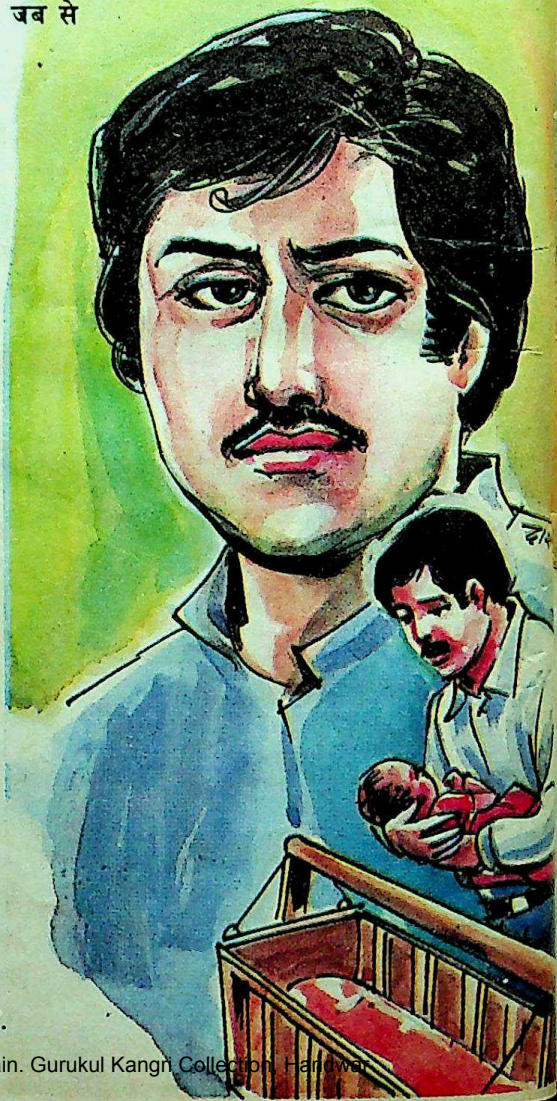

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Fo... eGangotri

डाक्टर से मिलने का मेरा समय नजदीक आता जा रहा था. मैं ने रिन्नी की जांच रिपोर्ट अपने दफ्तर की फाइल में छिपा दी और गाड़ी की चाबी उठा कर घर का

"रिन्नी, मैं तुम्हारा दुख समझता हूं.... मैं भी तो तुम्हारे सूनेपन में शामिल हूं." मैं ने रिन्नी से धीमे स्वर में कहा.

रिन्नी की सूनी गोद के लिए पारिवारिक सदस्यों एवं रिश्तेदारों के साथसाथ रवि ने भी उसे ही दोषी ठहराया लेकिन जब जांच रिपोर्ट सामने आई तो उस के पांवों से धरती ही खिसक गई.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

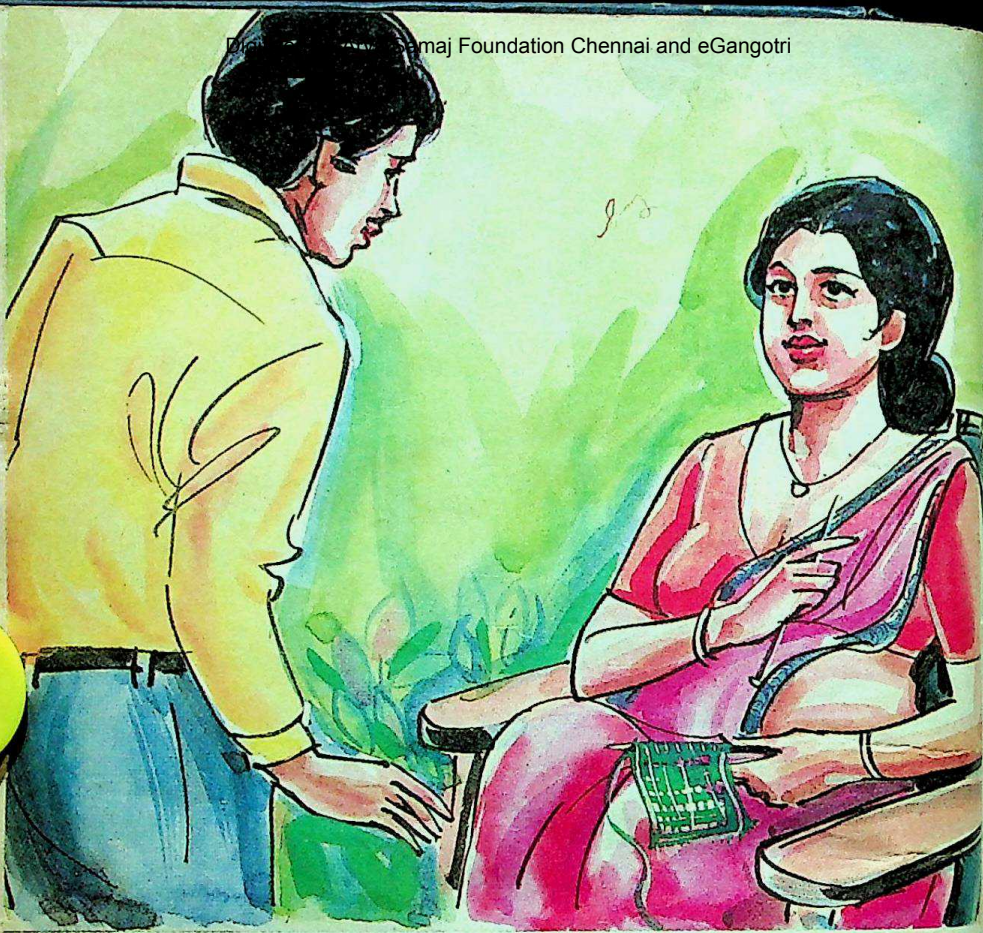

दरवाजा बंद कर कार में जा बैठा.

क्लिनिक पहुंच कर मैं ने डाक्टर विकास की तरफ हाथ बढ़ाते हुए कहा, "नमस्ते डाक्टर साहब."

डाक्टर ने हमेशा की तरह कुरसी से उठ कर गरमजोशी से हाथ मिलाते हुए कहा, "आइए, बैठिए. रिन्नी की रिपोर्ट तो देख ली है न? वह तो बिलकुल ठीक है."

"जी, रिन्नी तो ठीक है... आप ने आज मुझे मेरी मेडिकल रिपोर्ट के लिए..." मैं धीरेधीरे अपना वाक्य पूरा कर रहा था कि वह बीच में ही बोल उठे, "हांहां..." डाक्टर ने एक फाइल खोल कर मेरी रिपोर्ट निकाली और मेरे आगे मेज पर सरका दी. मैं ने ज्यों ही लिफाफा उठाया वह बोले, "रवि, तुम उधर दूसरे कमरे में इंतजार करो, मैं थोड़ी देर में वहीं आता हूं."

एक सुबह दफ्तर जाते हुए मैं रिन्नी के पास खड़ा हो कर बोला, "कुछ मंगाना है?"

मैं रिपोर्ट उठा कर दूसरे कमरे में चला गया. मैं ने रिपोर्ट देखी, पूरी बात मेरी समझ से बाहर थी, पर इतना मैं जान गया था कि वह मेरे मन मुताबिक नहीं है.

"हां, तो रवि", डाक्टर विकास ने कमरे में प्रवेश करते हुए कहा, "रिपोर्ट देखी?"

अब मेरी जांच रिपोर्ट का लिफाफा उन के हाथ में था. उन की अनुभवी आंखें मेरे भीतर देख रही थीं. मैं उन की निगाहों के ताप से बचने की कोशिश कर रहा था. अपने अधूरेपन का अहसास कितना दुखदायी होता है, यह मैं ने तभी जाना. मेरे भीतर के इस खालीपन को रिन्नी ने पूरे [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्ष तक पारिवारिक सदस्यों द्वारा 'बांझ' का लांछन सहते हुए भोगा था. वह तो पूर्ण स्त्री थी. लेकिन मैं ही अधूरा पुरुष निकला. अपनी रिपोर्ट के अनुसार मैं ही पिता बन पाने में असमर्थ था.

"इतना परेशान होने की जरूरत नहीं..." डाक्टर ने सहज स्वर में कहा. वह कुछ क्षण चुप रहे. फिर किसी नतीजे पर पहुंचते हुए बोले, "तो तुम ने क्या सोचा है?"

"जी... मैं भला इस बारे में क्या कह सकता हूं... आप जैसा कहें..." मैं ने अपनी खिसियाहट पर काबू पाते हुए कंधे उचका कर कहा.

"देखो, कृत्रिम गर्भाधान की यहां सुविधा है." उन्होंने गहरी दृष्टि से मेरी ओर देख कर कहा.

मैं नकारात्मक जवाब में चीखना चाहता था, पर आवाज मेरे गले में घुट कर रह गई. आज मुझे पहली बार उस स्त्री के दर्द का अहसास हुआ, जिसे समाज बांझ कह कर लांछित करता है और पुरुष बच्चे की चाह में दूसरा विवाह कर उसे तनमन से घायल कर देता है. मेरे भीतर घोर उथलपुथल मची हुई थी. पर मैं ने किसी तरह कहा, "इस में कोई कानूनी उलझन..."

"नहीं, यह सब पूर्ण गोपनीय होता है." उन्होंने अपनी बात कहते हुए मुझे आश्वस्त किया.

कुछ देर डाक्टर विकास मुझे इस पूरी प्रक्रिया को समझाते रहे और मैं शून्य में देखता रहा. अंत में मैं ने सिर झुका कर अपनी सहमति जाहिर कर दी. मैं अब रिन्नी को मां बनते हुए देखना चाहता था क्योंकि अब न तो मुझ से घर का सूनापन देखा जाता था, न आसपास की फुसफुसाहटें और तरहतरह की बातें सुनी जाती थीं.

मेरी सहमति पाते ही डाक्टर ने कहा, "तो ठीक है, रिन्नी को कुछ दिन हमारे क्लिनिक में रहना होगा... यही, कोई सातआठ दिन. उसी समय हम रिन्नी की डिंबग्रंथि में गर्भतत्व (जर्मगोट) प्रतिस्थापित करेंगे. बस फिर छुट्टी, घर जाओ, आराम करो और आने वाले मेहमान का इंतजार करो."

"अगर कोई यह सब जान गया तो...?" मैं ने अपने सूखे कंठ से किसी तरह मन की शंका उगलते हुए कहा.

"ओह, नहीं, चिंता न करो. डाक्टरों के पास मरीजों के रहस्य हमेशा रहस्य ही रहते हैं." उन्होंने गंभीर स्वर में मेरे भीतर तक झांकते हुए कहा, "रिन्नी वैसे ही सामान्य मां बनेगी, जैसे आम औरतें बनती हैं."

"ठीक है... फिर आप समय दे दें." मैं ने उठते हुए कहा. न जाने क्यों, किसी भी विषय पर घंटों बात करने वाला मैं इस विषय पर बात करने से कतरा रहा था.

"ठीक है, मैं फोन पर बता दूंगा. फोन घर पर करूं या दफ्तर में?" डाक्टर अपनी डायरी खोल कर नोट करते हुए पूछ बैठे.

"फोन दफ्तर में ही कीजिएगा." मैं ने साहस बटोर कर कहा.

"ठीक है." वह हंसे.

उस दिन सड़क पार कर के गाड़ी का दरवाजा खोलते हुए न जाने क्यों मेरे हाथ कांपे थे. भीतर का डर, खालीपन, दांव पर लगाया अपना भविष्य सब स्टेयरिंग के साथ कटते चले गए थे और कार के पहियों के साथ घूमता हुआ मेरा मन घर तक आतेआते स्थिर हो गया था.

मैं किसी विजेता की तरह अपने फ्लैट में पहुंचा था. रिन्नी मायके से लौट चुकी थी और बैठक में गजलों का रिकार्ड बज रहा था. मैं ने उस के दोनों कंधों पर हाथ रख कर धीरे से कहा, "रिन्नी."

उस ने शून्य में देखते हुए कहा, "बड़ी देर कर दी."

"डाक्टर विकास के पास गया था, तुम्हारे ही लिए." मैं ने कमरे में आते हुए कहा.

"डाक्टर के पास?" रिन्नी की भौएं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तिरछी हुई. वह झट मेरे पीछेपीछे कमरे में आ गई.

"रिन्नी, मैं तुम्हारा दुख समझता हूं. वह अभाव, जो तुम झेलती हो, मेरा भी तो है. मैं भी तो तुम्हारे सूनेपन में शामिल हूं. चलो, पहले एक प्याला चाय पिलाओ, फिर बताता हूं."

रिन्नी की आंखों के कौर भीग गए थे. मैं अनदेखा करते हुए स्नानघर में घुस गया.

चाय पीते हुए मैं ने धीरेधीरे रिन्नी को डाक्टर विकास से हुई मुलाकात सुना दी. उसे मैं ने कई तरह के परीक्षणों और भीतरी जांच की बात ही बताई, शेष पूरी प्रक्रिया को मैं उस से छिपा गया. वह अपने इलाज के लिए तुरंत तैयार हो गई, पर क्लिनिक में सातआठ दिन रुकने की बात पर वह चिंतित थी क्योंकि उस का मायका इसी शहर में था और उस के परिवार का कोई न कोई सदस्य दोचार दिन में हमारे यहां चक्कर जरूर लगा जाता था.

आखिर सोचविचार कर वह बोली, "ठीक तरह से पूरी जांच में इतना समय तो लग ही जाता है, पर मां से यह सब छिपाना होगा."

रिन्नी की मां जिस तरह बात में से बात निकाल कर बहस करती थीं, उस से रिन्नी तो क्या मैं भी घबरा जाता था. मैं ने रिन्नी का हाथ दबा कर धीरे से कहा, "तुम निश्चित रहो."

रिन्नी फिर बरतन उठाने का बहाना कर उठ खड़ी हुई थी. वह कुछ आश्वस्त थी और खुश भी. उस दिन हम दोनों में बहुत दिनों बाद सामान्य दंपती की तरह बातचीत हुई थी.

सुबह मैं जागा तो देखा, रिन्नी बिस्तर छोड़ चुकी थी. मैं ने कमरे की खिड़की से देखा, वह बरामदे में खड़ी थी और प्राकृतिक छटा निहार रही थी. सूर्य की सुनहरी किरणें उस के चेहरे पर पड़ रही थीं. रिन्नी का कांतिहीन मुखड़ा अनजानी आभा से दमक रहा था.

डाक्टर विकास के निर्देशानुसार रिन्नी को उन के क्लिनिक में भरती करवा दिया गया था. जहां उस का आपरेशन होना था. आपरेशन थियेटर के बाहर लगी लाल बत्ती चेतावनी देती सी जल रही थी. मैं अकेला बाहर खड़ा था.

अचानक लाल बत्ती बुझ गई तो मेरे हृदय की धड़कन बढ़ गई. सफलता और असफलता जैसे शब्दों के झूले में मेरा बेचैन हृदय हिचकोले लेने लगा. मैं आगे बढ़ कर कुछ पूछताछ करता कि तभी नर्स दरवाजा खोल कर बाहर आई. उस ने मुझे बाहर खड़े देखा तो थके पर उल्लास भरे स्वर में बोली, "आपरेशन सफल हुआ, कुछ ही देर में मरीज को 10 नंबर कमरे में ले जाएंगे?"

आपरेशन की सफलता जान कर मैं निश्चित हो गया और फिर खिड़की के पास आ कर खड़ा हो गया.

कुछ ही देर में रिन्नी को कमरे में ले जाया गया. वह बारबार मेरा नाम ले कर कुछ अस्फुट शब्द बड़बड़ा रही थी. होश में आतेआते वह फिर तंद्रा में डूब जाती थी. एक दिन आराम करने के बाद रिन्नी को छुट्टी मिल गई और वह घर आ गई.

दोचार दिन के पूर्ण आराम और देखभाल ने रिन्नी को स्वस्थ कर दिया था और वह अपने दैनिक कार्य करने लगी थी. मैं चाहता था कि रिन्नी को आपरेशन से संबंधित वास्तविक स्थिति के बारे में बता दूं, पर साहस नहीं जुटा पाता था.

जिस तरह कोई उतावला विद्यार्थी अपनी परीक्षा के परिणाम की प्रतीक्षा करता है, मैं भी उसी तरह एकएक दिन गिन कर रिन्नी के पांव भारी हो जाने की खुशखबरी सुनाए जाने के दिन की प्रतीक्षा कर रहा था.

आखिर मेरी प्रतीक्षा खत्म हुई, एक शाम जब मैं घर पहुंचा तो रिन्नी के मातापिता भी हमारे ही घर आए हुए थे. घर में कुछ ज्यादा ही चहलपहल थी. मुझे देखते ही जैसे हंसीखुशी का दरिया उमड़ पड़ा. रिन्नी संकोच से पलकें झुकाए बैठी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थी. मेरी सास आने वाले मेहमान की खुशियों के मनसूबे बांध रही थी. उन्होंने ही मेरे मुंह में लड्डू ठूंसते हुए मुझे निकट भविष्य में पिता बनने की खुशखबरी दी.

किसी बहुत बड़े कार्य की कामयाबी पर जैसी तृप्ति का भाव हृदय में हिलोरें लेने लगता है और चेहरा कांति से दमक उठता है, ठीक वैसा ही भाव मुझे अपने परिवारजनों के बीच महसूस हुआ. उस दिन मैं ने यह जाना कि क्यों नए मेहमान के आने की खुशी में मिठाई खिलाई जाती है. असल में मिठाई, बधाई, खिलखिलाते चेहरे और कहकहों के आवरण में ही दंपती अपने स्त्रीपुरुष होने की संपूर्णता को घोषित कर तृप्त होते हैं.

उस खुशी और संपूर्णता के वातावरण में सब के साथ हंसतेहंसते न जाने क्यों एक अनजाना सा डर मेरे भीतर उग आया था कि आने वाला नया मेहमान कैसा होगा? मेरे घर को खुशियों से भरने वाले उस बालक में मेरा अंश कहां होगा? अगर उस का चेहरा मुझ से या रिन्नी से जरा भी न मिला तो...?

अंधेरीस्याह रातों में जब दिन भर के थके लोग गहरी निद्रा में सो जाते हैं, मैं अकसर अपने भविष्य के प्रश्नों का उत्तर खोजते हुए जागता रहता.

कई दिनों से मैं बहुत परेशान भी था. बारबार सोचता रिन्नी को आने वाले मेहमान के जन्म की वास्तविकता से परिचित करा दूं. वह पढ़ीलिखी, प्रगतिशील विचारों की लड़की है, जरूर पूरी बात समझ लेगी. रिन्नी यह भी तो जानती है कि सिर्फ पतिपत्नी का संबंध ही तो इतना घनिष्ठ और अनौपचारिक होता है कि वे एकदूसरे के आगे बेझिझक अपने मन की गांठ खोल सकते हैं.

आखिर एक दिन मैं ने अपने मन की ऊहापोह डाक्टर विकास के सामने प्रकट कर दी. मेरी पूरी बात सुन कर संजीदा हो गए और बोले, "देखो, गोपनीयता का अर्थ गोपनीयता ही होता है. अब रिन्नी को सब

नींद उड़ गई

दिन में आंखों में हुई,
जाने क्याक्या बात.
आंखों में आंखें बसीं,
नींद उड़ गई रात.

—पंतकुमार टंडन 'रसिक'

कुछ बताना उस पर अन्याय करना है. वह जो अब तक नए मेहमान के आने की खुशी को उत्साहपूर्वक ले रही है, सचाई जान कर ग्लानि से भर उठेगी." डाक्टर की बात पर मैं ने काफी गौर किया और चुप हो गया.

मैं जानता था कि रिन्नी शारीरिक और मानसिक परिवर्तनों के दौर से गुजर रही है. उस में होने वाले परिवर्तन मेरे हृदय पर गहरा असर छोड़ते जा रहे थे. दिन प्रतिदिन परिवर्तित होता उस का शरीर मेरे लिए किसी आश्चर्य से कम नहीं था. उस की भरीभरी देह और उभरे हुए पेट को देख कर मुझे बड़ी बेचैनी होती. पर मेरे भीतर चल रहे अंतर्द्वंद्व से रिन्नी एकदम बेखबर थी.

एक सुबह दफ्तर जाते हुए मैं रिन्नी के पास खड़े हो कर बोला, "कुछ मंगाना है?"

उस ने स्वेटर बुनते हुए मेरी तरफ देखा. उस के चेहरे पर एक अनोखी आभा तैर रही थी. उस ने मेरा हाथ पकड़

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर उठते हुए कहा, "बाजार से लाने वाले सामान की एक सूची बना दी थी, हस्पताल जाने से पहले ले आना."

रिन्नी ने मेरे हाथ में सूची पकड़ाई तो मैं यह देख कर दंग रह गया कि ढेरों सामान सिर्फ उस नन्हें मेहमान के स्वागत के लिए था, जिसे अभी जन्म लेना था. हमेशा अजीबअजीब चीजों के खाने की फरमाइश करने वाली रिन्नी ने अपने लिए कुछ भी नहीं मंगवाया था. मैं ने मुसकरा कर उस की तरफ देखा, "आज ही लेता आऊंगा."

एक सुबह रिन्नी बहुत बेचैन हो गई. दर्द की परछाइयां उस के चेहरे पर मंडरा रही थीं. शनैः शनैः वह घड़ी नजदीक आ रही थी, हमारी लंबी प्रतीक्षा समाप्त होने वाली थी.

रिन्नी को ले कर मैं और मां नर्सिंग होम पहुंचे तो उसे दर्द शुरू हो चुका था. बाहर इंतजार करने वालों में पहले सिर्फ मैं और मां ही खड़े थे, पर जब तक हमें रिन्नी के बेटा होने की सूचना मिली, तब तक उस के मातापिता और बहनबहनोई वहां पहुंच चुके थे.

कुछ ही घंटों बाद रिन्नी को नवजात शिशु के साथ कमरे में ले जाया गया. मैं ने दरवाजे में खड़े हो कर देखा था. रिन्नी के मातापिता, बहनबहनोई बालक का पालना घेरे खड़े थे. सब की खोजी निगाहें उसे ध्यानपूर्वक देख रही थीं. मैं आ कर रिन्नी के सिरहाने खड़ा हो गया. घबराहट के कारण मेरे माथे पर पसीने की बूंदें छलक आईं. सोचने लगा, 'वे सब इतने ध्यानपूर्वक क्या देख रहे हैं? क्या नवजात शिशु से मेरा या रिन्नी का चेहरा बिलकुल नहीं मिलता?'

तभी कमरा हंसी के ठहाकों से गूंज उठा, रिन्नी की मां कह रही थीं, "बहुत सुंदर लड़का है, बिलकुल रवि पर गया है, वही चौड़ा माथा, वैसी ही बड़ीबड़ी आंखें... वैसे ही सुंदर होंठ हैं."

"और तंदरुस्ती भी तो..." रिन्नी की बहन हंस रही थी.

कमरे में सब के खिलखिलाते चेहरों को देख कर मेरा मन खुशी से झूम उठा. धीरेधीरे सब विदा हो रहे थे. मेरी मां को घर पहुंच कर लड्डू बांटने की जल्दी थी.

जब कमरे में मैं और रिन्नी ही रह गए तो मैं धीरेधीरे पालने तक पहुंचा. वहां नवजात शिशु नीले कंबल में लिपटा सो रहा था. उस के घने काले बाल टोपी से बाहर माथे तक फैल आए थे.

नरम, गुलाबी, रूई के फाए सा कोमल वह शिशु मेरे हृदय की तमाम उथलपुथल से बेखबर था. उस के चेहरे में अपना प्रतिबिंब खोजता मेरा हृदय न जाने कब उसे उठा कर चूमने लगा. मेरी छाती से लगे उस नन्हें बालक ने मेरे हृदय की तमाम शंकाओं को निर्मूल कर दिया था. उसी क्षण मैं ने फैसला किया कि मैं डाक्टरी रिपोर्ट जला दूंगा, जो मैं ने दफ्तर की फाइल में सहेज कर रख दी थी. यह मेरा शिशु है, सिर्फ मेरा. ●

शराबी का बेटा भी शराबी

शराब के तात्कालिक दुष्परिणाम तो होते ही हैं, उस के दीर्घकालीन तथा पीढ़ी दर पीढ़ी भी दुष्प्रभाव हो सकते हैं. कैलीफोर्निया के लास एंजिल्स विश्वविद्यालय तथा टेक्सास विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों को इस बात के स्पष्ट प्रमाण मिले हैं. अपने शोधकार्य के दौरान इन वैज्ञानिकों को शराब पीने और शराब न पीने वाले लोगों के दिमागों में कुछ आनुवंशिकी अंतर का पता चला है.

वैज्ञानिकों ने 35 मृतक शराबियों के दिमाग की जांचपड़ताल से यह खोज की है कि 77% लोगों के दिमाग में 'डोपमिन डी' तत्त्व पाए गए जबकि शराब न पीने वालों में 7% लोगों में ही ऐसे तत्त्व थे. वैज्ञानिकों का दावा है कि डोपमिन से एक सीमा तक यह भी पता चल सकता है कि शराब का किसी व्यक्ति के शरीर पर क्या प्रभाव होता है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बंबई महानगर में

टिड्डी से भी खतरनाक

—महेंद्र सरल

काफी समय से अब टिड्डियों के दल का नाम नहीं सुना गया. उन का दल लाखों की संख्या में उड़ता हुआ आता था और किसी भी खेत की खड़ी फसल को मिनटों में चट कर के उड़ जाता था. किसान बेचारा हाथपैर मारता रह जाता था. इस महानगर वासियों को टिड्डी का न तो नाम मालूम है न शक्ल. उन्हें सब से ज्यादा परेशान करते हैं मच्छर और काकरोच यानी तिलचट्टे. शहर के साफ क्षेत्रों में मच्छरों से भी नजात पा ली गई है मगर काकरोच नाम का यह अति दुखदायी कीड़ा इतनी अधिक संख्या में पैदा और बढ़ता है कि उन को खत्म करने वाले तमाम साधन डी.डी.टी. वगैरह बेकार साबित हो चुके हैं. शहर में हर रोज बचे हुए खाद्य पदार्थ, फलों के छिलके, सड़ीगली सागभाजियां जैसी चीजें हर गली, हर सड़क के कोनों पर टनों के वजन में फेंकी जाती हैं. नगर निगम का सफाई विभाग हमेशा ही हड़ताल पर रहता है इसलिए उस से भरपूर तंदुरुस्त चूहे आराम से पलते जाते हैं. कूड़े के ढेरों से निकल कर मोटेमोटे चूहे कईकई मंजिल चढ़ कर नालियों, नलों के रास्ते घरों के अंदर पहुंचते हैं और वहां जो भी चीजे सामने आती है, खा जाते हैं.

इन मानुष शत्रुओं के अलावा इस वर्ष एक और नया शत्रु महानगर पर आक्रमण कर चुका है. उस को कुछ क्षेत्रों में घोंघा कहा जाता है. कुछ लोग इसे शंख कीट भी कहते हैं. महाराष्ट्र में इस का नाम 'घोंघागाय' है. गया शायद इसलिए कहा गया कि इस के सींग गायों के सींगों जैसे होते हैं. इस कीड़े को नया शत्रु इसलिए कहा गया है क्योंकि अब से पहले यह कभी सागर के किनारे रेत में ही दिखाई पड़ता था मगर इस साल की बरसात में महानगर भर के लोगों ने इन्हें

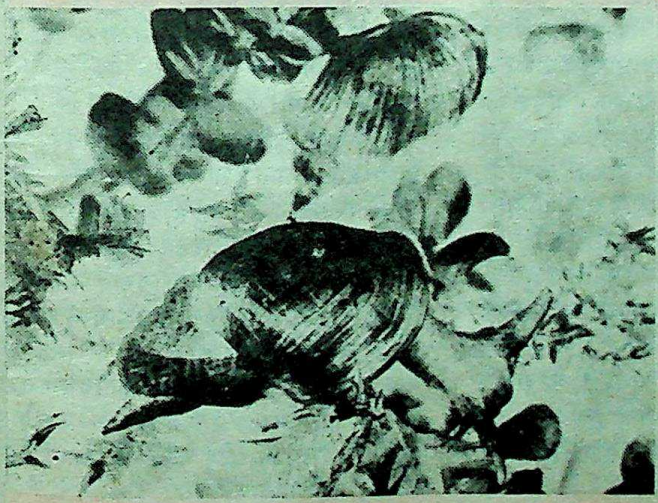

घोंघे : मुंबई महानगर के नए और बेहद खतरनाक शत्रु.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऊंचीऊंची अट्टालिकाओं पर चढ़ते हुए देखा है. हर गली, सड़क, बाग, बगीचा, नाली, कीचड़, पेड़ों, खंभों पर इन्हें देखा है. बच्चे इन पर पत्थर फेंक कर मारते हैं मगर इन का बाल भी बांका नहीं होता. ये अपने सींगों समेत अपनेआप को शंखकवच में समेट लेते हैं.

इस वर्ष महानगर में पूरे पांच महीने जम कर वर्षा हुई जिस से जितनी भी चारदीवारियां हैं सब पर मोटीमोटी काई जम गई. वह काई इस घोंघे का प्रिय भोजन है. रात को जब महानगरवासी नींद लेते थे तब ये घोंघे बाहर निकलते थे. वैज्ञानिकों ने इस को 'अर्चातिना फुलिका' नाम दिया है और उन का कहना है कि यह जीन अफ्रीका से यहां लाया गया था. वे इस जीव को अत्यंत भयानक मानते हैं और कहते हैं कि इस को देखते ही खत्म कर देना चाहिए वरना यह मनुष्यों को खत्म कर देगा. अगर इन घोंघों को खत्म नहीं किया गया तो वह दिन दूर नहीं है जब महानगर के चप्पेचप्पे पर ये घोंघे ही घोंघे रेंगते नजर आएंगे. यह अतिशयोक्ति नहीं है.

बोरिवली (उपनगर) से गोरई जाने वाले मार्ग पर 'राम धाया' नाम का एक बंगला है. बंगले वालों का कहना है कि उन्हें घोंघों की सेना ने इस तरह घेर लिया है कि उन का आनाजाना मुशकिल हो गया है. दरवाजा खोलते हैं तो वे ऊपर की चौखट पर चढ़े मिलते हैं. उन का सफाया करने के लिए तरहतरह की कीटनाशक दवाइयों का उपयोग किया जा चुका है. कोई असर नहीं हुआ. बंगले का बगीचा बरबाद हो चुका है. बांद्रा पूर्व गांधीनगर में चारचार मंजिली इमारतें हैं. कुछ छतों पर बगीचे लगाए गए हैं. घोंघे उन्हें चट करने पर लगे हुए हैं.

बोरिवली या बांद्रा में ही नहीं समूचे महानगर में लाखों की संख्या में यह जीव अपनी सेना ले कर पहुंच चुका है. खासतौर पर निचले और सीलन वाले इलाकों में इन का फैलाव आतंक की सीमा तक पहुंच गया है.

मारीशस अनुसंधान विभाग के वैज्ञानिक मनीश मुनि को इस जीव का इतिहास मालूम है. सन 1847 में (आजादी से पूरे सौ वर्ष पहले) बेलसन नाम का एक अंगरेज (प्राणीविज्ञानी) इस जीव को मारीशस द्वीपों से उठा कर कलकत्ता लाया था कि इस जीव पर कुछ प्रयोग किए जाएं. उस ने इसे पाला. और 30 वर्ष की अवधि में यह जीव समूचे बंगाल में इस कदर फैल गया कि बागबगीचे, शाकभाजियों के खेत, चाय बागान इत्यादि सब को चट करता चला गया. तब से अब तक इस जीव को नेस्तनाबूद करने के तमाम प्रयास असफल रहे हैं. वहां का कृषि मंत्रालय इस को सब से बड़ा सिरदर्द मानता है.

छिपकलियां, गिरगिट, कछुए उन्हें खाते तो हैं मगर बिलकुल अनिच्छा से क्योंकि जैसे खटमल अपने ऊपर हमला करने वालों पर बदबू छोड़ता है उसी तरह घोंघा भी बदबू छोड़ता है जिस से हमलावर घबरा कर भाग जाता है और यह आराम से अपने कवच 'शंख' में सिमट कर बैठ जाता है. बगैर कुछ खाएपीए बरसात के बाद के सातआठ महीने जमीन के अंदर घुस कर छिपा पड़ा रहता है. जब बरसात आती है तब अंडे देता है. उन अंडों को गिनना मुशकिल होता है. साबूदाने की शक्ल के अनंत अंडे गाढ़े से द्रव्य के अंदर लिपटे पड़े रहते हैं. वह द्रव्य अंडों की रक्षा करता है. उन अंडों का सफाया करने के लिए तो उन्हें कुचल कर पीस देना चाहिए.

रूइया कालिज (माटुंगा उपनगर) की प्राणीविज्ञान प्रयोगशाला में प्रोफेसर घोष घोंघों पर प्रयोग कर रहे हैं. उन का मत है कि मुंबई में यह जीव केवल चार साल पहले ही आया था. वह यह भी पता लगाने में लगे हैं कि कुछ खास जगहों पर ही यह जीव ज्यादा संख्या में क्यों पाया जाता है, वहां की मिट्टी में क्या खास बात है? आश्चर्य का विषय यह भी है कि मुंबई महानगर के अलावा महाराष्ट्र भर में और कहीं भी यह कीड़ा दिखाई नहीं पड़ा है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुत्तों की जिंदगी

वह कुत्ते की मौत मरा...वह कुत्ते की जिंदगी जी रहा है... यानी कुत्ते की मौत तो विशेष होती ही है, जिंदगी भी विशेष होती है. मुंबई महानगर पालिका के लिए अनापशनाप बढ़ती मनुष्य संख्या तो सिरदर्द बनी ही हुई है, कुत्तों की बढ़ती हुई संख्या उस से भी ज्यादा बड़ा सिरदर्द है. उन की संख्या मनुष्यों से आठ गुनी तेज रफ्तार से बढ़ रही है. उन की संख्या कम करने के लिए लगभग 45 हजार कुत्ते (जो सड़कों पर आवारा घूमते रहते हैं) प्रति वर्ष मार डाले जाते हैं. फिर भी न तो संख्या कम होती है, न उन की समस्याओं का कोई समाधान निकलता है.

कुत्तों को पकड़ कर ले जाने वाला दल बड़ी सी गाड़ी ले कर आता है और जिन कुत्तों के गले में पट्टा नहीं दिखता उन्हें फांस कर गाड़ी में डाल कर ले जाता है. फिर महालक्ष्मी रेलवे स्टेशन के पूर्व में जो घिनौनी बदबू भरी बस्ती है वहीं ले जाता है जहां पर इन के लिए जेल की व्यवस्था की गई है. उस जेल के आसपास जो लोग रह रहे हैं वे वास्तव में कुत्तों का ही जीवन जी रहे हैं.

वहां पुरानी सी बदबू भरी जेल के बीसों दड़बे बने हुए हैं. पकड़ कर लाए कुत्तों को उन दड़बों में बंद कर दिया जाता है. फिर हर रोज इन्हें एकएक दड़बे आगे सरकाया जाता है. चौथे दिन वे उस दड़बे में पहुंच जाते हैं जहां के बाद उन्हें कसाई घर में ले जा कर बिजली के झटके दे कर खत्म कर दिया जाता है. चार दिन तक उन के दड़बे इसलिए बदले जाते हैं कि अगर किसी कुत्ते का मालिक उसे खोजता हुआ आएगा तो उस से सवा सौ रुपए दंड ले कर कुत्ता वापस दे दिया जाएगा.

उस जेल में कुत्ते आर्तनाद करते, भोंकते, बिलबिलाते रहते हैं. उन की वह दयनीय दशा देख कर दयावान लोगों ने अखिल भारतीय पशु कल्याण संस्था बनाई थी, जहां पर कुत्तों को फौरन खत्म करने के बजाय उन्हें पालने और स्वस्थ बनाने के काम किए जाएं अलबत्ता उन्हें अपनी संतति बढ़ाने योग्य न छोड़ा जाए. कुछ वर्ष बाद तो वे अपनी मौत मर ही जाएंगे.

उस पशु कल्याण संस्था को देख कर लगता है कि काम बड़े बेमन से सिर्फ खानापूरी करने के लिए ही किया जा रहा है. वैसे तो उन के यहां भी पशुचिकित्सकों को कुत्तों की देखरेख के लिए रखा हुआ है मगर उन का हस्तपाल भी कूड़ाकरकट डालने की जगह बना हुआ है. उस से चार कदम आगे मुंबई के कुछ दयावान लोगों ने 'वेलफेयर आफ स्ट्रे हाउस' (आवारा कुत्ता कल्याण संस्था) की स्थापना की है जिसे कुत्ता प्रेमियों का एक ट्रस्ट चला रहा है. उस की स्थापना अप्रैल 1990 को की गई थी. उन्होंने महानगर पालिका से एक तरह का समझौता कर रखा है. नगरपालिका का कुत्तों को पकड़ कर लाने वाला दल जिन कुत्तों को उठा कर लाता है उन में से अच्छे स्वस्थ कुत्तों को यह 'ट्रस्ट' 50 रुपए प्रति कुत्ता अदा कर के गोद ले लेता है. इन कुत्तों को वह 'ट्रस्ट' अपने

CC-0. In Public Domain: Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हस्पताल में ला कर उन का कायाकल्प करता है. इलाज के दौरान प्रत्येक कुत्ते के लिए एक अलहदा कुटरिया का इंतजाम किया जाता है. उस कटुरिया की सफाई के लिए आधुनिकतम सफाई यंत्र काम में लाए जाते हैं. कुत्तों को भरपूर एहतियात के साथ नहलाया जाता है. कहीं पर भी जरा भी मैल नहीं रहने दिया जाता. उन कुटरियों पर बिजली के पंखे लगाए हुए हैं. नर और मादा कुत्तों का आपरेशन कर के उन्हें प्रजनन योग्यता से वंचित किया जाता है. उन्हें एंटीरेबीज इंजेक्शन दिए जाते हैं. फिर उन की बाईं जांघ के ऊपर उन्हें दागा जाता है. पट्टा पहनाया जाता है और उन्हें जीवित रहने के अधिकार का प्रमाणपत्र दिया जाता है. यानी नगरपालिका का कुत्ता पकड़ने वाला दल उन्हें पकड़ कर नहीं ले जाएगा. अगर गलती से ले भी जाएगा तो 'ट्रस्ट' के लोग आ कर फौरन उन्हें निकाल ले जाएंगे.

आवारा कुत्तों का शुभचिंतक यह ट्रस्ट अब तक 147 कुत्तों का कायाकल्प कर के नए मालिकों को सौंप चुका है. सौंपते समय 'ट्रस्ट' उन से एक पैसा भी वसूल नहीं करता. हरेक कुत्ते पर लगभग 500 रुपए प्रतिमाह खर्च करने के बाद भी जब कोई उन्हें पालने के लिए लेने आता है तो उसे मुफ्त में दे डालते हैं.

इस नए किस्म के टस्ट के ट्रस्टी कार्यकर्ता हैं: आलिम चंदानी, दीपचंद गार्दी, मफतलाल मेहता इत्यादि. आलिम चंदानी अब 68 वर्ष के हो गए हैं. रिटायर होने से पहले वह कस्टम विभाग में सहायक आयुक्त थे. अभी तक अविवाहित हैं. कुत्तों पर कई पुस्तकें लिख चुके हैं. एकएक पुस्तक के कईकई संस्करण निकल चुके हैं. उन का कहना है कि विदेशी कुत्तों को पालने का शौक रखने वाले तो खूब लोग मिल जाएंगे मगर हम नस्ल वगैरह की परवाह किए बगैर आवारा कुत्तों को पालने योग्य बना कर पालने वालों को मुफ्त में सौंपने का कार्य करते हैं. पशु चिकित्सक डा. लोखंडे उन कुत्तों की देखभाल के लिए नियुक्त हैं.

गणेश वाहन ने मंगल नक्षत्र को निगल लिया

राहू चंद्रमा को निगल जाता है. उस दिन मंगल नक्षत्र की सैर का पक्का कार्यक्रम बन गया था. अचानक खबर आई कि समूचे मंगल नक्षत्र को गणेश वाहन ने निगल लिया है. सैर धरी की धरी रह गई. सैर के लिए आए जनसमूह का धैर्य जवाब देने लगा. कोलाहल मच गया. उन्हें शांत करने के लिए बताया गया कि समूचे देवीदेवता मंगल नक्षत्र को सुरक्षित निकाले जाने के भगीरथ कार्य में जुटे हुए हैं. थोड़ा धैर्य रखिए.

आखिर देवदूत डा. वी.एस. वेंकटवर्धन ने आ कर बताया कि नक्षत्रावलि के अन्य कई नक्षत्रों को भी निगल जाने के प्रयास किए गए हैं. इन गणेश वाहनों ने प्रलय मचा रखा है. मुंबई की नक्षत्रावलि 'नेहरू प्लेनेटेरियम' में आधुनिकतम सुरक्षा संयत्र लगाए गए हैं मगर स्वस्थ हट्टेकट्टे चूहों के सामने सब कुछ परास्त हो जाता है.

पास के ही स्टेडियम में आजकल मुक्केबाजों की प्रतिस्पर्धाएं हो रही हैं. एक से एक दैत्याकार मुक्केबाज अवतीर्ण हो कर अपना कौशल दिखा रहा है मगर इन चूहों के सामने वे दैत्याकार पहलवान मुक्केबाज भी कोई चीज नहीं हैं. नक्षत्रावलि के बिलकुल पिछवाड़े गंदे नाले की चौड़ी धारा बहती है. वहां की दुर्गंध से तो नक्षत्रों को बचा लिया मगर चूहों के आक्रमण से नहीं बचा सके.

चूहे दिनरात के किसी भी प्रहर में आ कर बिजली के तारों को काट जाते हैं. तार ही क्या कोई भी चीज उन के प्रकोप से बच नहीं पाती. उन के लिए कोनेकोने में चूहेदान लगाए गए मगर उन के रणनीति निर्धारकों ने तमाम सावधानियां बता रखी हैं. वे उन चूहेदानों के पास ही नहीं जाते और अपना काम कर के सुरक्षित अपने खेमों में पहुंच जाते हैं. और बेचारे निदेशक वेंकटवर्धन को नए तार तो मंगाने ही पड़ते हैं, नए मंगल, शनि, बृहस्पति जैसे नक्षत्रों को भी आए दिन बनाते रहना पड़ता है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुश्मन

सरिता बीस साल पहले फरवरी (प्रथम) 1971

और समिया विधवा हो गई. समिया का पति गिरधारी पिछले कई सालों से राजयक्ष्मा का मरीज था. सरकारी रेलवे विभाग का नौकर होने की वजह से इलाज की व्यवस्था थी, मगर एक दिन यह भी निष्फल हो गया और उस ने दुनिया से आंखें मूंद लीं.

समिया गिरधारी की दूसरी पत्नी थी. उस की स्वर्गीया सौत से एक पुत्र था, मानिक. उस की अपनी एक लड़की थी, कांता.

समिया जब ब्याह कर गिरधारी के घर आई उस समय मानिक की उम्र 11 वर्ष थी. गिरधारी की उम्र उस की उम्र के लगभग दोगुनी थी, मगर समिया अधिक कुछ नहीं जानती थी. उसे पति में ही अपना संसार देखने की सीख मिली थी. उस

कहानी ● 'मधुप' मगधशाही

बेटे की नई बहू पर आसक्ति देख कर गिरधारी की मां अपनी खीज निकालने के लिए बहू को डांटती रहती.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिवार में उन्हें छोड़ गिरधारी का छोटा भाई संतू, उस की पत्नी झुनिया और गिरधारी के मातापिता थे.

विवाह के कुछ दिनों के भीतर ही अधिक उम्र वाला गिरधारी उस के रूपरस में शहद में गिरे भंवरे की तरह डूब गया. बाहर से उड़ती हुई खबरें और फुसफुसाहटें उस के कानों तक भी पहुंचतीं, घरवाले बहुत अधिक चिंतित थे.

संतू सब से अधिक चिंतित रहता, कहता, "भैया, अपनी जिम्मेदारी बिलकुल भूल गए हैं. उस औरत की खातिर मानिक का खयाल ही छोड़ बैठे."

औरत सदैव पुरुष पर अपना एकाधिकार चाहती है, चाहे वह उस का पति हो या पुत्र. गिरधारी की मां बेटे को नई बहू पर इतना आसक्त देख कर कुड़बुड़ाती रहती. बातबात पर अपनी खीज व्यक्त करने के लिए बहू को डांटती. अवसर मिलते ही घरवालों या पड़ोस वालों के बीच कहने लगती, "मुझे लगता है, उस ने कुछ खिलापिला दिया है गिरधरिया को. उस की मति ही मारी गई है. ऐसा नहीं था वह पहले."

गिरधारी के पिता दरसन जरूर कुछ नहीं कहते. लेकिन उन के चेहरे और आचरण से लगता कि वह भी बेटे के करतबों से नाखुश हैं.

आखिर एक दिन ऐसा आया कि संतू और उस की पत्नी झुनिया ने मिल कर घर में फसाद खड़ा कर दिया. संतू तन गया, "गिरधारी जितना मैं भी कमाता हूं. मेरी औरत भी जवान है. फिर वही क्यों मौजमजा लूटेगा. और मैं ही क्यों घरगिरस्ती की चिंता में मरूंगा?"

झुनिया ने हाथ नचानचा कर तान तोड़ा, "मैं किसी की दाईलौंडी नहीं, मेरे बाप ने भी दहेज दिया है. मैं ही क्यों खटूंगी?"

और झगड़ा मिटाने तथा समझौता कराने आए पंचों ने फैसला किया कि गिरधारी अपनी बीवी को ले कर अलग हो जाए. जब वे अलग हुए, समिया ने चाहा कि मानिक भी उन के साथ चले. आखिर वह उस के ही पति का बेटा था, पर संतू ने, झुनिया ने और मानिक के दादादादी ने उसे उन के साथ नहीं भेजा. मानिक ने भी उन के साथ आने और रहने से इनकार कर दिया.

फिर एक लंबा समय समिया और गिरधारी ने अकेले गुजारा. उन की जिंदगी में दूसरे लोग थे, लेकिन अपना कहा जाने वाला कोई न था. गिरधारी को मानिक की चाहत होती, पर अपने और समिया के प्रति हुए अन्याय का खयाल कर वह इच्छा की रास खींच लेता. समिया को उस से भी अधिक याद आती मानिक की. वह गिरधारी की तरह अपनी इच्छा की रास भी नहीं खींच पाती. सिर्फ मानिक की उपेक्षा उसे अपराधी की पीड़ा देती. समय की दौड़ में यह दर्द अवश्य कम होता गया. विविध स्रोतों से यह भी मालूम हुआ कि मानिक के नवांकुरित मस्तिष्क में खुद उस के घरवालों की तरह से संतू, झुनिया और उस की सास की तरफ से—तथा पड़ोसियो की तरफ से काफी जहर भरा गया है. इसी से मानिक उस के साथ अपने बाप से भी नफरत करने लगा है.

समिया को जब कांता पैदा हुई तो उस

गिरधारी की मौत ने समिया को तोड़ कर रख दिया था. पुत्र, सासससुर सभी दुश्मन हो गए थे. समिया को समझ नहीं आ रहा था कि ऐसे में वह क्या करे, कहां जाए. चारों तरफ से निराश हो कर उस ने एक ऐसा निर्णय लिया जिस से सभी तिलमिला कर रह गए.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

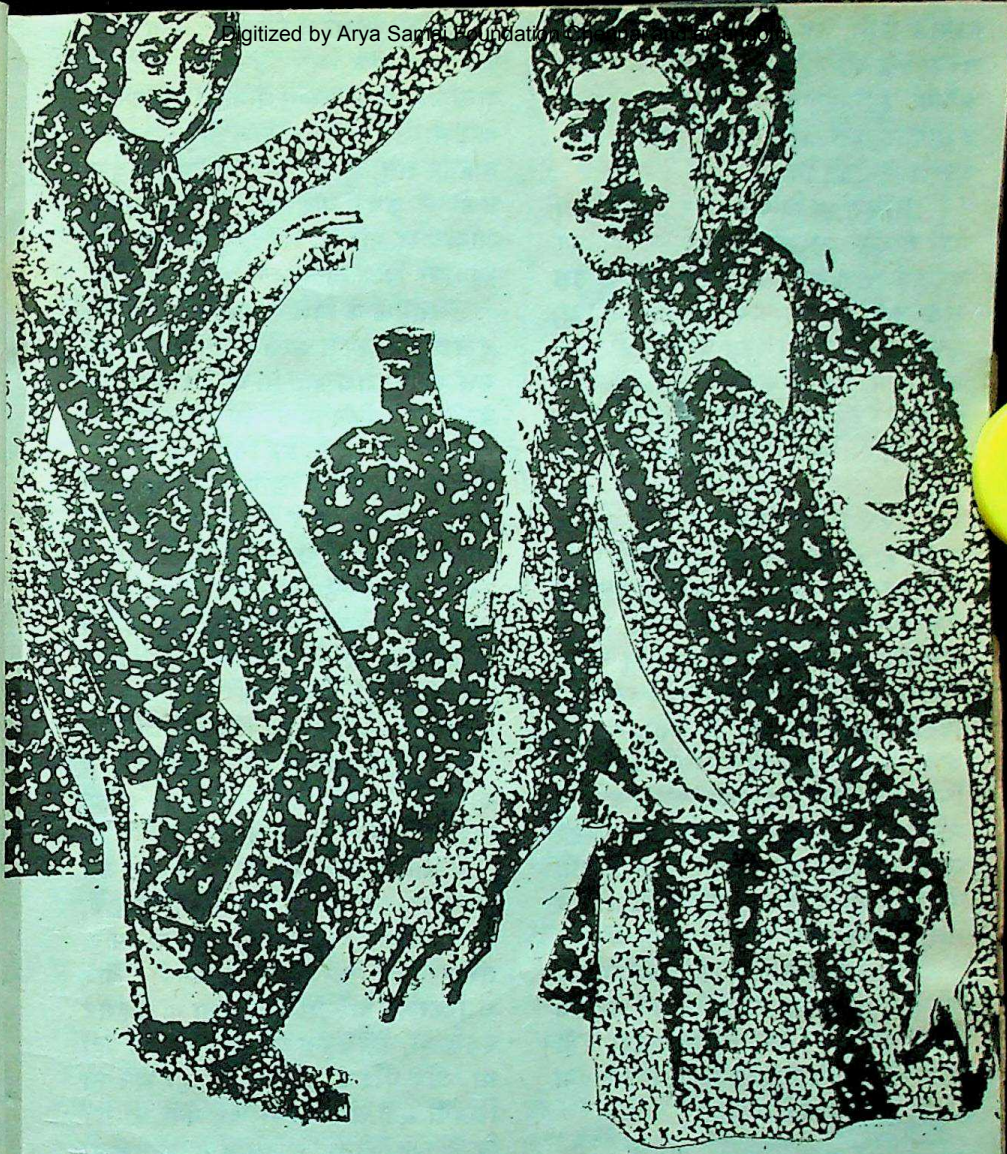

के बहुत अनुरोध करने पर गिरधारी ने फिर अपने घर से रिश्ता जोड़ा. उन का आनाजाना, बातचीत शुरू हो गई. मगर इस बीच उस के बीच जो कटाव आ गया था वह बना रहा. मानिक पर संतू और झुनिया ने अधिकार कर लिया था. गिरधारी के मातापिता भी ऐसा ही चाह रहे थे. गिरधारी ने तो एक ठंडी सांस खींच कर संतोष कर लिया. लेकिन समिया को लगा

"तुम नहीं समझ सकते. मैं किन परिस्थितियों से गुजरी हूं. अच्छा होगा तुम यहां से चले जाओ." समिया ने मानिक से कहा.

कि उसे न सिर्फ अपराधी के कटघरे में खड़ा किया गया है, बल्कि वहां उसे निर्वस्त्र भी कर दिया गया है. उसे मानिक के सामने आने में, संतू और झुनिया के सामने आने में, साससुर के सामने आने में बड़ी लज्जा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महसूस होती. वह दृष्टि उठा कर उन की तरफ देख भी नहीं पाती. उधर संतू और झुनिया मानिक को अपनाने का अपना यशोगान गाते, सिर उठाए, छाती ताने, हेकड़ी से ऐंठते फिरते.

समिया का दिल अब उन से मिलने को नहीं चाहता. उसे उन के पास अपमान और घुटन के सिवा कुछ नहीं मिलता. गैर के पास सुख नहीं था तो अपमान भी नहीं था, उल्लास नहीं था तो घुटन भी नहीं थी. और एक आम चीज थी—सहानुभूति. अपने दर्द के बदले में मिलने वाली सहानुभूति उसे शुरू से प्यारी थी. अब तो एकांत भला लगने लगा था.

फिर गिरधारी बीमार पड़ा. उस ने अकेले ही यह दुख भी झेल लेना चाहा. बहुत दिनों तक झेला भी. किंतु जब स्थिति सुधरी नहीं और वह विचलित होने लगी. उस ने घरवालों को भी खबर भेजी. संतू आया, झुनिया आई. उन दोनों ने कोई चिंता नहीं दिखाई, भाई और जेठ के लिए. मानिक आया, वह भी उसी प्रकार निर्विकार अपने पिता को देख कर चला गया. उस के साससुर आए. सास बहुत अधीर हुई और उन्होंने बारबार उसे कोसा. "पहले ही उस की मति मार सब से अलग कर दिया. अब उस की जान ले कर ही छोड़ेगी यह डायन."

और उस की सास की बात ही सच हुई. इस दुनिया में उसे अकेले ही मरने व मिटने के लिए छोड़ कर गिरधारी बड़ी खामोशी से उस को छोड़ गया. सिर्फ दे गया अपनी एक निशानी—कांता.

गिरधारी की मृत्यु की खबर पा कर दोबारा सभी लोग आए. सास ने रोरो कर बुरा हाल कर लिया. समिया के लिए वातावरण अजूबा हो गया. दर्द उस के दिल में था, दुनिया उस की उजाड़ हुई थी. माथे से सिंदूर उस के पुंछा था. हाथों की चूड़ियां उस की तोड़ी गई थीं. सुहागिन से विधवा उसे बना दिया गया था. जीने की समस्या उस के सामने थी. मगर आंसू उस की आंखों में नहीं थे. उस की आंखों में फैला फैला सवाल था, यह क्या हो गया? मगर उन अपना कहे जाने वालों में किसी के दिल में थोड़ी सी सहानुभूति नहीं थी उस के लिए. सास लाखलाख बुरा मनाती. संतू, झुनिया और मानिक की घृणा तेजी से उभर कर आई सामने. उस से अनिच्छित भार की तरह, घृणित की तरह व्यवहार किया जाने लगा.

समिया के दिल में यह हूक भी थी कि ये सब क्यों नफरत करते हैं उस से? आखिर उस का अपराध क्या है. वह गिरधारी की पत्नी थी. लेकिन विवाह तो हर लड़की का होता है, उस का विवाह गिरधारी से हुआ. उसे इज्जत मिलनी चाहिए थी कि उस ने दोगुने उम्र वाले और विधुर गिरधारी को अपना लिया. गिरधारी उस के रूपरस में डूब गया, उसे बहुत चाहने लगा, तो इस में उस का क्या दोष? कौन लड़की नहीं चाहती कि वह खूबसूरत हो, और उस का पति सिर्फ उसे ही चाहे. विवाह के पहले ये सभी अनजाने थे—अपरिचित. विवाह के बाद उस ने सभी को अपना बना लिया. किंतु ये उसी की भांति उसे अपना नहीं सके बल्कि विरोधी बनते गए—दुश्मन.

समिया की इच्छा थी कि ये लोग उसे अपना लें. उसे घर के आदमी का दर्जा दें, अब, जबकि गिरधारी नहीं रहा था, सारा संसार उस के लिए अजनबी और अंधकारमय था. उसे कहां जाना था, किधर बढ़ना था, कैसे बढ़ना था—कुछ भी पता नहीं था. और यदि ये उसे अपना नहीं लेते तो जिंदगी एक समस्या थी. वह कैसे जीती? किस तरह जीती? न उसे जीने का तरीका मालूम था, न जिंदगी की टेढीमेढी पगडंडियों का पता, जिन से हो कर आदमी जिंदगी का सफर तय करता है. साथ में उस की बेटी कांता भी थी, जो बंधन ही थी, बोझ ही थी, वह नहीं होती तो वह कोई न कोई राह पकड़ लेती.

समिया को पूरी उम्मीद थी कि घर वाले इस मौके पर कठोर न होंगे. उसे जरूर अपने साथ ले जाएंगे.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संतू ने उत्साह के साथ अपने भाई का क्रियाकर्म किया. गिरधारी के प्राविडेंट फंड और सर्विस का रुपया उठाने के लिए वह और कई दिनों तक ठहरा. रुपए मिल जाने पर पहले उस ने अपना रुपया जो खर्च हुआ था, वह ले लिया, शेष को दो हिस्सों में बांट कर समिया और मानिक को दे दिया, समिया की आस का एक थम उसी दिन टूट गया. बहुत साहस कर उस ने कातर स्वर में कहा, "यह क्या, संतूजी? रुपया अपने ही पास रखो."

"नहीं, यह तुम्हारे हिस्से का है, रख लो." संतू ने कहा, "मैं कोई बेईमान नहीं. बराबर का हिस्सा बांट दिया है तुम्हारा और मानिक का."

मानिक—उस की सौत का लड़का. समिया ने कभी नहीं चाहा था कि मानिक उस की सौत के लड़के की तरह समझा जाए. मगर ऐसा नहीं हुआ. मानिक अब जवान हो चुका था, कुछ दिनों में उस की बहू आएगी. लेकिन वह उसे अपने आंचल में नहीं ले सकेगी. साथ रहने के ये दिन शायद अंतिम दिन हैं. उन के बीच जो संबंध सेतु था, माध्यम था वह टूट गया है. और ये नया सेतु बनाना नहीं चाहेंगे. कभी उसे अपने साथ रखना पसंद नहीं करेंगे.

समिया का दिल कांप रहा था, उसे आने वाले दिनों की भयंकरता का अहसास हो रहा था. सभी जाने को थे, और उन के जाते ही उस को जिंदगी में एक और वैधव्य शुरू हो जाने वाला था. बड़ी कोशिश के बाद अपने भीतर के तूफानों से जूझते हुए मानिक के सामने आई, "मानिक बेटा!"

"क्या है?"

"तुम लोग चले जाओगे?"

"हां."

"मुझे छोड़ कर!"

"मैं नहीं जानता," वह हट जाना चाहता था.

"मुझे भी अपने साथ ले चलो, बेटा."

"मैं नहीं जानता. चाचाजी से पूछो, वह जानते हैं." वह सचमुच हट गया.

मिलन

जहां रातें हुई हैं
वहां सवेरा भी होगा,
जुदाई का ये आलम है
कभी मिलन भी होगा.

—माधवेंद्र मधु

समिया संतू के सामने भी आई, "संतूजी, आप लोग मुझे छोड़ कर चले जाओगे?"

"मैं नहीं जानता, बाबूजी से पूछो," आवाज आई.

और समिया पहली बार अपने ससुर के सामने हुई. बोली, "बाबूजी, आप लोग क्या सचमुच मुझे छोड़ कर चले जाएंगे?"

वृद्ध दरसन कुछ देर गुमसुम पड़े उसे देखते रहे, फिर निरीह वाणी से बोले, "मुझे कुछ नहीं मालूम."

"अब मैं किस के पास जाऊं?" समिया रोने लगी, "मानिक ने कहा, चाचाजी जानते हैं, संतूजी ने कहा आप जानते हैं, आप कहते हैं मुझे कुछ नहीं मालूम. फिर मैं कहां जाऊं? किस के पास जाऊं?"

दरसन उस का रोना सहन नहीं कर सके तो उठ कर बाहर चले गए. समिया के पास कोई नहीं आया—न झुनिया, न उस की सास. मां का रोना सुन कर कांता उस के गले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से आ लगी और मां के साथ स्वर मिला कर रोने लगी.

समिया पुनः आई मानिक के पास, और उस से लिपट कर बिलख पड़ी, "बेटा, तुम हमें छोड़ कर मत जाना. मैं तुम्हारे पांव पड़ती हूं. कभी मत छोड़ कर जाना हमें... नहीं तो मेरा और तुम्हारी इस छोटी बहन का न जाने क्या होगा? तुम्हें मेरी कसम, बेटा, तुम्हें इस छोटी बहन की कसम... तुम मत जाना. कभी मत जाना."

पर मानिक तुरंत ही अपने को छुड़ा कर चला गया. कुछ क्षण में लौट कर आया तो उस के हाथों में रुपए थे, उस के हिस्से के रुपए जो चाचाजी ने हिस्सा कर के उसे दिए थे. उस ने उन्हें समिया के आंचल में डाल दिया और कहा, "तुम्हें रुपयों की जरूरत पड़ेगी, सो अपना हिस्सा भी तुम्हें ही दे कर जा रहा हूं, मुझे नहीं चाहिए, रख लो." और वह जैसे आया था, वैसे ही मुड़ कर चला गया.

समिया एक नजर आंचल में पड़े नोटों को और मानिक के जाते हुए कदमों को अवाक दृष्टि से देखती रही.

सभी ने जाने की तैयारी कर ली. किसी ने उसे साथ चलने की आज्ञा नहीं दी. समिया ने भी अपनी आवाज को बंद कर लिया. यह सोच लिया कि आने वाला दिन जैसा होगा, देखा जाएगा. उस की सास ने कांता को ले जाना चाहा मगर अपने जीवन की ज्योति और गिरधारी की निशानी को उस ने देने से इनकार कर दिया. वे चले गए, उस ने उफ भी नहीं किया.

उन के जाते ही समिया के जीवन में अकेलेपन का निविड़ अंधकार फैल गया. उस ने इसे तो स्वीकार कर लिया, लेकिन हर कदम पर उसे सहारे की जरूरत महसूस होने लगी. वह अपढ़ थी, नादान थी, गिरधारी ने भी स्वच्छंदता नहीं दी थी. अपनी जिंदगीभर दड़वे की कबूतरी बना कर रखा था उसे. अतः रोशनी से एकाएक अंधकार में आने की तरह अपने चारों और फैले अज्ञानों के अंधकार में उसे भयंकर डर लगने लगा. वहां उस के लिए अकेले चल सकना, अपनी राह बना पाना कठिन हो गया...और धीरधीरे उस के सामने दुनिया के अनेक राज जाहिर होने लगे. वे चेहरे स्पष्ट होने लगे जिन के बारे में उस ने पहले कभी खयाल तक न किया था.

...और एक दिन ऐसा भी आया कि परिस्थितियों के सम्मुख समिया ने आत्म-समर्पण कर दिया. जिंदगी जी सकने के लिए, कांता को जिला सकने के लिए उस ने एक और पुरुष को वरण कर लिया.

यह खबर संतू और झुनिया तक भी पहुंची और मानिक तक भी पहुंची. इस बीच काफी लंबा समय गुजर चुका था. संतू और झुनिया का अपना एक बच्चा हो चुका था. मानिक का विवाह हो चुका था. वह अपनी सुंदर पत्नी की प्रेमक्रीडा में मस्त रहने लगा था. वह यह भी भूल गया था कि उस का पिता गिरधारी था और समिया नाम की उस की सौतेली मां और कांता नाम की छोटी बहन थी. कभी भूलेभटके उन की याद आ भी जाती तो स्प्रिट के गंध की तरह उन की स्मृति को मस्तिष्क से उड़ा देता. संतू और वह एक साथ रहते थे. उन का जीवन सुखी और शांत था. लेकिन इस खबर ने उन की शांति में एक तूफान ला दिया. संतू चिल्ला उठा, "मैं जानता था, वह कुलटा यही करेगी! आखिर सारे खानदान की इज्जत ले डूबी."

झुनिया बोली, "जेठजी की आत्मा को भी नहीं सोचा पापिन ने! कितना तड़प गए होंगे? कितना चाहते थे इस चुड़ैल को हाय!"

मानिक ने वस्तुतः कभी उसे मां नहीं समझा था. उस के हृदय में उस के प्रति कोई श्रद्धा नहीं थी बल्कि घृणा ही थी. लेकिन यह सूचना उस के हृदय को छुर्रे की तरह छेद गई, घृणा की नींव में भी अपनत्व होता है. उस पर पड़ी चोट ने उसे तिलमिला दिया. वह तड़प उठा. अपनी पत्नी से आंखें मिलाते भी उसे लज्जा लगी. सारी दुनिया उसे अपने पर थूकती महसूस हुई. बौखला कर वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जल्द और आसान

सुरक्षित और विश्वसनीय

किफ़ायती

वैध (अविवाहित व विवाहित)

गोपनीय

गर्भपात

गर्भपात - किफ़ायती, विश्वसनीय, गोपनीय, सुरक्षित, वैध (अविवाहित या विवाहित) और जल्द (दो-तीन घंटों में) तथा स्त्री-रोग संबंधी सलाह, कॉपर टी और नसबन्दी भी उपलब्ध.

MARIE STOPES

LONDON

मेरी स्टोप्स क्लिनिक्स (समय प्रातः 9 से सायं : 5 बजे, रविवार बंद) :

दिल्ली • 5439 आर्य समाज रोड, कीकरवाला चौक, करोल बाग, फ़ोन 5736101, 5710446 ○ 4 विनोभापुरी, रिंग रोड, डबल स्टोरी बस स्टॉप और लाल साईं मंदिर के पास, लाजपत नगर, फ़ोन 6833315 ○ 1/9652 प्रताप पुरी, बाबरपुर रोड, शाहदरा, फ़ोन 2281583 ○ 4 अशोक मोहल्ला, सुल्तानपुरी मोड़ के सामने, नांगलोई, फ़ोन 5472949 ○ **जयपुर** • शर्मा बिल्डिंग, एम.आई. रोड, नीरोज़ रेस्तॉरां के पास, फ़ोन 79943 ○ **जोधपुर** • 29 नई सड़क, बाटा शोरूम के ऊपर, फ़ोन 27405 ○ **उदयपुर** • 1 डी, उदयपोल, सिटी स्टेशन रोड, बैंक ऑफ महाराष्ट्र के सामने ○ **बरेली** • 44 सिविल लाइन्स, गांधी आई होस्पिटल के सामने, अय्यूब ख़ान चौराहा, फ़ोन 72072 ○ **शाहजहाँपुर** • राम निवास, टाऊन हॉल रोड, स्टेट बैंक आफ़ इंडिया के सामने, फ़ोन 2690 ○ **मोरादाबाद** • राजा राम बिल्डिंग, चौमुखा पुल, चूड़ी वाली गली के सामने, स्टेट बैंक आफ़ पटियाला के ऊपर, फ़ोन 24045 ○ **लखनऊ** • 1 शिवपुरी, लाटूश रोड, पुराने आर.टी.ओ. दफ्तर के पास, फ़ोन 235414 ○ **कानपुर** • 15/59 एफ़, सिविल लाइन्स, एम.जी. कालेज के पीछे, विरेन्द्र स्वरूप स्कूल के पास, फ़ोन 211552 ○ **गोन्डा** • गुड्डूमल चौराहा, उत्तरोला रोड, मालवीय नगर, फ़ोन 676 ○ **वाराणसी** • 28 लाजपत नगर, मलदहिया, फ़ोन 57085 ○ **आगरा** • 1154 बाग़ मुज़फ़र खां, रास्ता सेंट जॉन्स कालेज से रघुनाथ टॉकीज, फ़ोन 66269 ○ **भोपाल** • 3-4-5 शाह बिल्डिंग, हमीदिया रोड, फ़ोन 76748 ○ **ग्वालियर** • गश्त का ताज़िया के पास, फालका बाज़ार, कोपरेशन बैंक के ऊपर, फ़ोन 26798 ○ 51 मयूर मार्केट, थाटीपुर, मोरार ○ **रायपुर** • दिक्षित कॉम्प्लेक्स, पहली मंज़िल, बैजनाथ पाड़ा ○ **पटना** • 389 चारकोठियां, यूनस पार्क, न्यू डाक बंगला रोड, फ़ोन 223156 ○ **आरा** • गार्डन विला, क्लब रोड, डी.एम. बंगले के पास, फ़ोन 506 ○ **कलकत्ता** • 27 फ्री स्कूल स्ट्रीट, दूसरी मंज़िल, फ़ोन 244184 ○ 174/8 एन.एस.सी. बोस रोड, नेताजी नगर, टालीगंज, फ़ोन 726557 ○ 100 ऑरोबिंदो सरणी, हातीबगान जंक्शन के पास, स्टार सिनेमा के सामने, हातीबगान, फ़ोन 337285 ○ 39 डायमंड हार्बर रोड, साखेर बाज़ार, बिहाला, फ़ोन 776842 ○ **अहमदाबाद** • महाकांत आफ़िस काम्प्लेक्स, आश्रम रोड, वि. एस. होस्पिटल के सामने, एल्लिस ब्रिज के पास, फ़ोन 402780 ○ **मद्रास** • 31 पॉन्डी बाज़ार, टी नगर, नागेश सिनेमा के पास ○

मेरी स्टोप्स नर्सिंग होम (प्रसूति सेवा और 24 घंटे एमरजेंसी सेवाएं भी उपलब्ध) :

अलीगढ़ (ओ.पी.डी. प्रातः 9 से सायंः 5, रविवार बंद) • कोर्ट ऑफ वाईस, कंपनी बाग के सामने, आगरा रोड, फ़ोन 29271 ○ **हैदराबाद** (ओ.पी.डी. प्रतिदिन प्रातः 9 से 1, सोमवार-शनिवार सायंः 5-8) • 2-2-1105/10 अ, तिलक नगर, न्यू नल्लाकुन्ठा, फ़ोन 428350.

Nexus/PSS/2H R

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चीख पड़ा, "मैं, मैं उस का खून कर डालूंगा. मेरे बाप और खानदान की इज्जत को सरे बाजार लुटाने वाली को जीने का कोई हक नहीं है."

समिया के नए घर तक आतेआते उस के जोश में बहुत बार उतारचढ़ाव आया. हर बार उस ने अपने को समिया के सामने खड़ा कर सकने और उस की हत्या कर सकने के योग्य तैयार करने का प्रयत्न किया...और फिर वह समिया के सामने था.

"ह...हम...हम ने सुना है..." वह क्रोध से कांप और हकला रहा था.

"तुम ने ठीक सुना है," समिया ने कहा, "मैं ने दूसरी शादी कर ली है."

"क्यों?"

समिया संयत स्वर में बोली, "क्योंकि बिना सहारे के मेरे लिए जीना मुशकिल हो गया था."

"तो तुम मर क्यों नहीं गई?" मानिक हांफने लगा था, "तुम्हारी जैसी कुलटा औरत को बहुत पहले मर जाना चाहिए था."

"मानिक!"

"मत लो मेरा नाम! मेरा नाम तुम्हारे मुख पर अच्छा नहीं लगता."

"तो फिर तुम क्यों आए हो यहां?" समिया उत्तेजित होने लगी.

"तुम्हारा गला घोंटने के लिए!"

"गला घोंटने के लिए? लेकिन मैं ने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है?"

"अब भी पूछती हो, क्या बिगाड़ा है! सारे खानदान की इज्जत धूल में मिला दी तुम ने...मेरे पिता के नाम पर कालिख पोत दी."

"चुप करो!" चीख उठी समिया, "उस दिन कहां थे तुम, जब मैं ने आंचल फैला कर तुम से सहारे की भीख मांगी थी. तुम्हारे पांव पकड़ कर मैं गिड़गिड़ाई थी कि 'मानिक बेटा, हमें छोड़ कर मत जाओ, अपनी छोटी बहन को छोड़ कर मत जाओ, नहीं तो न जाने हमारा क्या होगा?' उस दिन तुम सहारा देने की जगह इस आंचल में रुपए डाल गए थे." वह बिलखने लगी, "लेकिन मैं उन रुपयों का क्या करती? मुझे कागज के नोट नहीं, सहारा चाहिए था. मेरा पति गया था, मुझे पुत्र चाहिए था. लेकिन तुम ने वह नहीं दिया, नहीं दिया मानिक..." उस की मुद्रा कठोर होने लगी, "फिर आज क्यों आए हो! आज मैं ने अपनी राह ढूंढ़ ली है. संसार के अंधेरे में मैं अकेले नहीं चल सकती थी, सो मैं ने साथी खोज लिया है, वह तुम नहीं हो, कोई और है. तुम्हारी नजरों में पराया, लेकिन मेरे लिए अपना ही है. अब अगर वह है, तो इस का दोषी कौन है? तुम या मैं?"

मानिक से जवाब देते नहीं बना.

समिया आगे बोली, "क्यों भूलते हो! धूप और वर्षा मिट्टी को भी चट्टान बना देती है. मैं वही चट्टान बन गई हूं. तुम नहीं समझ सकते, मैं किन परिस्थितियों से गुजरी हूं. अच्छा होगा तुम चले जाओ! मैं जो कुछ हूं, ठीक हूं. मुझे मेरी दशा पर छोड़ दो."

मानिक ने आखिरी बार समिया के चेहरे की ओर देखा, फिर उस के कदम बाहर की तरफ उठ पड़े. वह चला गया.

उस के जाने के बाद समिया फफकफफक कर रो पड़ी. ●

यह अंक
आप को कैसा लगा?

सरिता आप ही के लिए प्रकाशित की जाती है. हम पूरीपूरी कोशिश करते हैं कि सरिता का प्रत्येक अंक आप की रुचि के अनुसार रहे और उस से आप को अधिक से अधिक संतोष हो और वह आप की प्रिय पत्रिका बनी रहे.

कृपया हर अंक पर अपनी राय भेजिए. कौन सी रचना आप को पसंद आई, कौन सी नहीं आई. आप किन विषयों पर लेख और कहानियां पढ़ना चाहेंगे. हम आप की आलोचना और सुझावों का स्वागत करेंगे. अपनी आलोचनाएं व सुझाव निम्न पते पर भेजें:
सरिता, नई दिल्ली-110055.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विविध व्यंजन बनाना तो आप अवश्य जानती होंगी. नमकीन पकवानों के साथ मिठाई बनाने का प्रचलन भी प्रायः सभी घरों में है. पाककला में प्रवीण महिला के लिए आवश्यक है कि उस के बनाए व्यंजनों में डलने वाली सामग्री नापतोल की दृष्टि से भी सही अनुपात में हो.

अकसर हम देखते हैं कि मिठाई बनाते समय चीनी, बेसन, सूजी अथवा घी आदि विभिन्न सामग्रियों को अनुपात में तोलने के लिए कांटे का सहारा लेना होता है. बहुत से घरों में छोटे कांटे आसानी से उपलब्ध नहीं होते, जिन पर 25-50 ग्राम वजन का सामान

प्रत्येक सामान की कांटे से नापतोल कर व्यंजन बनाना घर में संभव नहीं है. उचित नापतोल न होने पर व्यंजन खराब होने की संभावना रहती है. प्रस्तुत नापतालिका का प्रयोग कीजिए और व्यंजनों को खराब होने से बचाइए.

लेख ● हंसा दसानी

नापतोल हो यदि उत्तम व्यंजन बने सर्वोत्तम

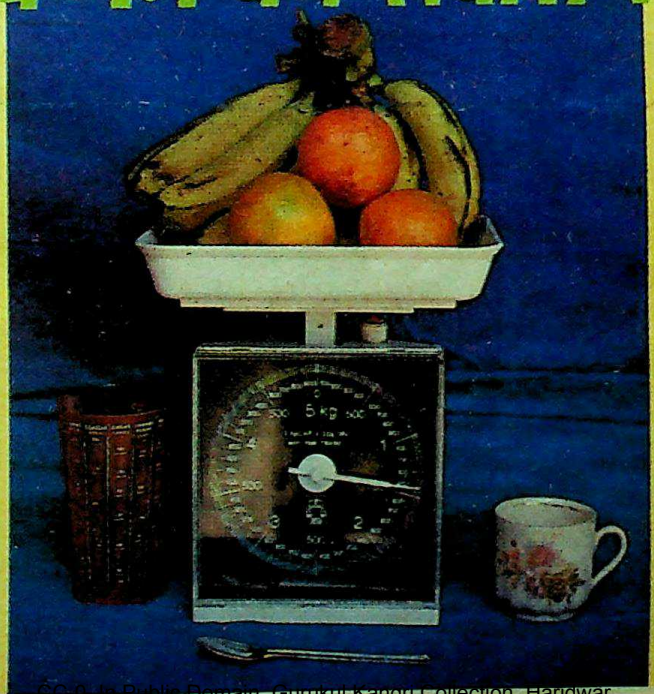

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तोला जा सके. ऐसे में हम अपनी रसोई में ही किसी बरतन को अंदाजन तोल के बरतन के रूप में इस्तेमाल करते हैं.

यद्यपि थोड़ी मात्रा में बनने वाली मिठाई में तो हमारा अंदाज थोड़ा कम, अधिक रहे तो विशेष फर्क नहीं पड़ता, पर अगर अधिक मात्रा में कुछ दिनों तक चलने वाली मिठाई, जैसे लड्डू, बरफी या अचार, मुरब्बे, शर्बत आदि बनाने हों तो सामग्री के सही अनुपात का विशेष महत्त्व होता है.

प्रायः हम चीनी, मैदा, बेसन आदि के वजन को समान समझ कर एक ही बरतन से माप लेते हैं, जो सही नहीं है. एक प्याला चीनी का तोल एक प्याले बेसन या मैदे से अधिक होता है. इसी प्रकार तरल पदार्थों के वजन में भी अंतर होता है. समान मात्रा में घी, तेल या पानी का वजन भी एकसमान नहीं होता.

इस के अलावा केक, पेस्टरी, बिस्कुट आदि बनाते समय भी उन की व्यंजन विधियों का तोल अकसर औंस व पौंड में लिखा होता है. ऐसे समय औंस या पौंड को आसानी से ग्राम में परिवर्तन करना हर महिला के लिए सहज संभव नहीं होता.

सूखी सामग्री का वजन

औंस	पौंड	ग्राम
½	—	15
1	—	30
4	¼	125
8	½	250
12	¾	375
16	1	500

आप की इसी समस्या का समाधान उपर्युक्त तालिका में दिया गया है. जिस के आधार पर आप सरलता से औंस और पौंड को ग्राम में परिवर्तित कर सकती हैं. इसी प्रकार, तरल पदार्थों के नाप को औंस से प्याले अथवा लिटर में कैसे परिवर्तित किया जा सकता है, वह दूसरी तालिका से स्पष्ट है. किंतु ध्यान रहे कि ये परिवर्तन सारिणियां केवल उपयोगिता में व्यावहारिकता को देख कर ही बनाई गई हैं, अन्यथा पूर्णतः सही नहीं है. प्रायः किसी भी चीज को एक छोटे (चाय के) चम्मच की सतह तक भरने

तरल पदार्थों का वजन

औंस (तरल)	प्याला	मि.लिटर
2	¼	60
4	½	125
6	¾	185
8	1	250

ध्यान दें : 1000 मि.लि. = 1 लिटर

पर उस का तोल 5 ग्राम के लगभग माना जाता है.

इसी प्रकार एक औंस को ग्राम में परिवर्तित करने पर उस का नाप 30 ग्राम के बराबर होगा. इसी तरह 500 ग्राम का तोल 16 औंस या 1 पौंड के लगभग होगा. उपर्युक्त आधार पर तरल पदार्थों के वजन को भी औंस से प्याले या लिटर में आसानी से परिवर्तित किया जा सकता है.

इस प्रकार सूजी, चीनी, घी या मैदा आदि के वजन को अगर एक ही बरतन में उस की सतह तक नापा जाए तो उन के वजन में अंतर होगा.

एक बरतन को अगर सतह तक भरा जाए तो उस में सूजी का तोल 250 ग्राम, मैदे का तोल 200 ग्राम, चीनी का तोल 300 ग्राम, बेसन का तोल 150 ग्राम और पानी का तोल लगभग 300 मिलीलिटर होगा. इस प्रकार बेसन तोल में सब से हलका और चीनी सब से भारी होगी.

उपर्युक्त नाप तालिका को आप चाहें तो अपने रसोईघर में भी टांग सकती हैं जिस से जब भी नापतोल के परिवर्तन की आवश्यकता हो तो आप इस की सहायता ले सकें. अगर व्यंजन विधि के अनुरूप सामान या नापतोल अनुपात में रहेगा तो कभी भी आप के बनाए व्यंजन के खराब होने की आशंका नहीं रहेगी. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मस्ती ने बनाया हमें मर्ज़ी का मालिक

मस्ती–भारत का एक बेहतरीन लग्ज़री कॉण्डोम। जापानी मशीनों पर अत्यंत आधुनिक तरीके से बना। संपूर्ण सुरक्षा के लिए इलैक्ट्रॉनिक तरीके से जाँचा हुआ। अतिरिक्त आनंद के लिए 0.03 मिलीमीटर महीन मस्ती सिलिकॉन तेल की चिकनाई से युक्त है, जो कि पूरी दुनिया में उत्तम मानी जाती है। मस्ती केवल कॉण्डोम नहीं, एक बेहतर एहसास है।

MASTI
एक बेहतर एहसास

Contract.PSI.22563 HIN

विपणक : परिवार कल्याण विभाग, भारत सरकार, सी एस एम पी के अन्तर्गत पॉपुलेशन सर्विसेज इन्टरनैशनल, इंडिया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हरियाले पालक के

सब्ज पैटीज

सामग्री : 400 ग्राम पालक, ½ छोटा चम्मच सरसों के बीज, 4 बड़े चम्मच चीज कसा हुआ, ¼ छोटा चम्मच हींग, ¼ छोटा चम्मच हलदी, ¼ छोटा चम्मच नमक, 1 चम्मच अमचूर पिसा हुआ, 3 चम्मच शक्कर, ½ नारियल सूखा, 50 ग्राम पुदीने के पत्ते, 10 ग्राम अदरक, 5 हरी मिर्चें, 200 ग्राम मैदा, 200 ग्राम आलू, 500 ग्राम तेल, 1 प्याला दूध.

विधि : पालक बारीकबारीक काट कर गरम उबलते हुए तेल में से लाल कर के निकाल लें. छलनी से तेल छन जाएगा. फिर आलू उबाल कर छील कर मसल लें. मैदे में 50 ग्राम गरम तेल डाल कर, आलू और चीज उस में मिला कर दूध से सख्त गूंध लें. नमक थोड़ा डाल सकते हैं. अब लाल तली हुई पालक पत्तियों में कुतरा हुआ नारियल, हींग, राई, हरी मिर्च, गरम मसाला, कटा हुआ अदरक डाल कर तड़के हुए सरसों के बीज मिला दें. हलदी आवश्यक नहीं, इच्छा हो तो डाल सकते हैं. चकले पर आलू मैदे चीज के पेड़े को गोल बेलें. मोटाई ½ इंच और आकार कटोरी के बराबर हो. उस पर थोड़ा तेल लगा कर पालक की पेस्ट लगाएं. थोड़ा हिस्सा उलटाएं. फिर थोड़ा तेल लगाएं, पालक की पेस्ट लगाएं, फिर थोड़ा उलटें. इसी तरह तीन तहों में लगा कर किनारे मोड़ कर मरोड़ लगा दें. जब तक सारी पेस्ट और आटा समाप्त न हो छोटीछोटी पेटीज बनाते जाएं, फिर तेल गरम कर के धीमी आंच पर तल लें या ग्रिल कर लें.

पालक मशरूम कोरमा

सामग्री : 400 ग्राम पालक, 200 ग्राम मशरूम, 100 ग्राम नगेट, 2 उबले हुए अंडे (छोटेछोटे काटे हुए), 1 टमाटर (बारीक पिसा हुआ), 1 प्याज (बारीक पिसा हुआ), 6 कलियां लहसुन, 1 मध्यम आकार का आलू, 100 ग्राम मटर के दाने (ताजे), 1 छोटा चम्मच हलदी, 1 चम्मच देगी मिर्च, 1 छोटा चम्मच नमक, 1 चम्मच गरम-मसाला, 100 ग्राम तेल, 50 ग्राम कसा हुआ ताजा नारियल या 30 ग्राम सूखा नारियल, 50 ग्राम क्रीम, 1 प्याला दूध, 50 ग्राम

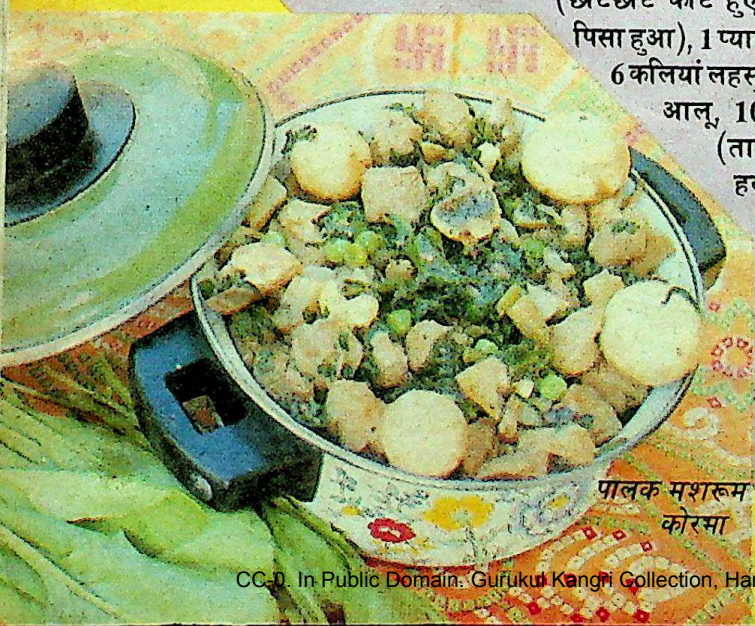

पालक मशरूम कोरमा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंदाज नए निराले

काजू, 1 बड़ा चम्मच दही, 1 बड़ा चम्मच कटी हुई हरी धनिया, 50 ग्राम मक्खन.

विधि : पालक और मशरूम को बारीकबारीक काट कर, 100 ग्राम तेज गरम तेल में तल कर छलनी में डाल दें. उसी तेल में मटर और बारीक कटा हुआ आलू तल कर अलग रख दें. बचे हुए तेल में लहसुन लाल कर लें और निकाल कर सब तली हुई चीजों के साथ मिला कर इन पर थोड़ा नमक और गरममसाला बुरक कर 20 मिनट के लिए रख दें.

एक प्याला दूध उबाल कर उस में नगेट डाल कर 20 मिनट के लिए रख दें. 20 मिनट के बाद मक्खन में प्याज और टमाटर धीमी आंच पर भूनें. हलका गुलाबी होने पर नमक, देगी मिर्च, हलदी, गरममसाला और दही डाल कर दो मिनट पकाएं, फिर सारी सब्जियां लहसुन सहित मिला कर पांच मिनट तक पकाएं. इस के पश्चात दूध सहित नगेट, क्रीम, कटे हुए अंडे, काजू, नारियल डाल कर तीन मिनट पका कर ढक दें. गरमगरम परोसने से पहले हरी धनिया व थोड़े से कुतरे नारियल से सजा सकते हैं.

—शक्ति मरवाहा

पालक पुलाव

सामग्री : 3 गड्डी पालक, 1 प्याला बेसन, 1 छोटा चम्मच धनिया, 1 छोटा चम्मच जीरा, ½ छोटा चम्मच काली मिर्च, 6 हरी मिर्चें, थोड़ी सी अदरक, स्वादानुसार नमक व हलदी, 2½ प्याले चावल, 6 लौंग, 4 इलायची, थोड़ी सी दालचीनी, 1 तेजपत्ता, 1 नीबू का रस, तेल.

सजावट के लिए : 2 प्याज, 10 काजू, ¼ प्याला कतरी हुई गिरी.

विधि : धनिया, काली मिर्च तथा जीरा हलका भून कर, हरी मिर्च तथा अदरक के साथ पीस लें. बेसन सूखा ही अच्छी तरह भून लें. पालक को हलकी आंच पर, बिना पानी डाले पका लें. फिर हाथों से निचोड़ कर पानी निकाल दें. यह पानी कटोरी में अलग रख लें. पालक, बेसन, हलदी, नमक तथा पीसा हुआ मसाला इकट्ठा गूंध लें. इस के छोटेछोटे गोले बना कर तेल में तल कर रखें.

चावल धो लें. सजावट के लिए दो प्याज बारीक काट लें. ¼ प्याला तेल में काजू, गिरी व प्याज अलगअलग तल कर रखें. बाकी तेल में तेज-पत्ता, लौंग, इलायची

सब्ज पैटीज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व दालचीनी डालें. इस पर चावल डाल कर 2 मिनट कड़छी चलाएं. पालक के निचोड़े हुए पानी में सादा पानी मिला कर कुल 2½ प्याले बना लें. चावल में नीबू का रस, नमक तथा 2½ प्याले पानी (पालक वाला) डाल कर पका लें. परोसने से पहले चावल में से साबूत मसाला निकाल दें व पालक के गोले मिला दें. चावल को प्लेट में निकाल कर, तले हुए प्याज, काजू व गिरी से सजाएं.

ग्रीन केक

सामग्री : 1 प्याला चावल, ¾ प्याला चना दाल, 2 प्याले पका कर निचोड़ा हुआ पालक (अथवा अन्य कोई भी साग), ¼ प्याला तेल, अदरक, लहसुन, हरी मिर्च तथा नमक, सभी स्वादानुसार, 1½ छोटा चम्मच बेकिंग पाउडर, ¾ प्याला दही.

सजावट के लिए : 3 उबले हुए आलू, 1 प्याला उबले हुए मटर के दाने.

विधि : चावल तथा दाल रात भर भिगो कर, सुबह महीन पीस लें. पालक, अदरक, लहसुन तथा हरी मिर्च दही के साथ पीस लें. पीसे हुए चावल-दाल में पालक का मिश्रण, नमक व बेकिंग पाउडर मिलाएं. लोफ टीन में खूब तेल लगा कर, इस में तैयार मिश्रण डालें तथा सुनहरा रंग होने तक बेक करें. (या लोफ टीन को प्रेशर कुकर में डाल कर, बिना सीटी के आधा घंटा पकाएं).

सजावट : उबले हुए आलू छील कर नमक के साथ मुलायम गूंध लें. लोफ को प्लेट में निकाल कर पूरी तरह ठंडा होने दें. फिर गूंधे हुए आलू को लोफ के चारों तरफ तथा ऊपर आइसिंग की तरह फैलाएं. इस पर मटर के दानों से अपनी पसंद के अनुरूप डिजाइन बनाएं. टमाटर की चटनी और गरम डबलरोटी के साथ नाश्ते पर पेश करें.

—नीना कडकोल

पालक के पनीरी गोले

सामग्री : 500 ग्राम पालक, 150 ग्राम क्रीम, 50 ग्राम डबलरोटी का चूरा, 100 ग्राम सोयाबीन का आटा, 50 ग्राम टमाटर प्यूरी, 50 ग्राम प्याज पिसा हुआ, 20 ग्राम अदरक बारीक कटा हुआ, 20 ग्राम धनिया बारीक कटी हुई, 1 छोटा चम्मच गरममसाला, 1 छोटा चम्मच नमक, 1 छोटा चम्मच हलदी, चुटकी भर लाल मिर्च (देगी), ½ प्याला वाइट सास, 300 ग्राम ताजा पनीर, 4 बड़े चम्मच तेल, ½ प्याला दही.

विधि : पालक को बारीक काट कर भाप में नमक के साथ पका लें. ठंडा होने पर पत्थर पर पीस कर उस में डबलरोटी और सोयाबीन का चूरा मिला दें. बारीक कटा हुआ अदरक भी मिला दें. यह सख्त होने लगे तब उस में वाइट सास मिला दें. 20 मिनट के लिए फ्रिज में रख दें. इतने में, पनीर में थोड़ा सा नमक डाल कर हाथों में मसल कर उस की छोटी-छोटी गोलियां बना लें.

पालक के पनीरी गोले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब उपर्युक्त मिश्रण को फ्रिज से निकाल कर हर गोली को उस में लपेट लें. वाइट सास के कारण वह गोलियों पर अच्छी तरह चिपक जाएगा. एक थाली में थोड़ा तेल लगा कर इन गोलों को ओवन में 10 मिनट बेक कर लें.

इस बीच आप गैस पर भगोना रखें. तेल गरम करें. उस में प्याज भूनें. फिर टमाटर प्यूरी भूनें. लाल होने पर नमक, हलदी, देगी मिर्च डाल कर दही डाल दें. अच्छी तरह उबलने पर क्रीम डाल दें. क्रीम डालने के एक मिनट पश्चात बेक किए हुए गोले क्रीम में डाल कर भगोना ढक दें और आग से उतार लें. परंतु पांच मिनट पश्चात खोल कर देख लें. यह क्रीम में फूल कर दोगुने बड़े हो जाएंगे. परोसने के समय सावधानी से डिश में डालें. यदि दोबारा गरम करने पड़े तो तेज ओवन में गरम करें. धनिए से सजाएं. चपाती और चावल दोनों के साथ खा सकते हैं.

सुनहरी पालक डायमंड

सामग्री : 1 किलो पालक, 2 अंडे, ½ प्याला भुनी हुई सूजी, ½ प्याला ताजा दही, ½ प्याला पानी, ¼ प्याला भुनी हुई चना दाल का आटा, 1 बड़ा चम्मच नारियल का सूखा चूरा, 1 बड़ा चम्मच पिसा हुआ प्याज, 1 छोटा चम्मच पिसी हुई हरीमिर्च, 50 ग्राम महीन कटा हुआ अदरक, ½ प्याला छना दूध, 1-1 चम्मच मिर्च, गरम-मसाला, नमक, 50 ग्राम घी, मक्खन या तेल, 50 ग्राम पनीर या चीज.

विधि : दही को मथ लें और भूनी हुई सूजी में मिला कर थोड़ा नमक डाल कर रख दें.

सुनहरी पालक डायमंड

आटे में एक अंडे का तत्व सकते हैं. इस से ज्यादा नहीं. थोड़ा सा तेल या घी गरम करें और प्याज, हरी मिर्च और अदरक को भून कर भूरे रंग का कर लें. उस का पानी सुखा कर उस में चना दाल (भुनी हुई) के साथ बारीक पीस लें. अब पिसे पालक में चीज या पनीर मसल कर मिला दें. गरममसाला, मिर्च, नमक मिला कर दही वाली सूजी में मिला दें. थोड़ा सा नमक और बेकिंग पाउडर मिला कर फिर दूध मिला कर अच्छी तरह फेंट लें. फिर अंडे फेंट कर उस में मिला दें. ओवन को 180 प्वाइंट पर गरम रखें. जब अच्छी तरह गरम हो जाए, एक चौड़ी डिश को घी से चिकना कर लें. दोनों तरफ थोड़ा घी डाल कर डिश में सारी पेस्ट डाल कर डिश ओवन में रख दें. ऊपर सूखा नारियल बुरक दें. 30-40 मिनट के पश्चात निकालें. ठंडा होने पर डायमंड की शक्ल में काट लें. दिल के मरीजों के लिए अति उत्तम स्नैक है.

पालक की टिक्कियां

सामग्री : 200 ग्राम आलू, 100 ग्राम मशरूम (खुम्मी), 50 ग्राम अरबी, 250 ग्राम पालक, 100 ग्राम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नारियल का बूरा, 100 ग्राम भुनी हुई चना दाल का आटा, 20 ग्राम कटी हुई अदरक, 20 ग्राम लहसुन की तुरियां कटी व भुनी हुई, 1 चम्मच नमक, 1 चम्मच मिर्च तथा गरममसाला, 1 चम्मच पिसी हुई हरी मिर्च, 2 बड़े चम्मच भुनी हुई खसखस, 2 बड़े चम्मच मूंगफली दाने बारीक कुतरे हुए, 200 ग्राम तेल, 100 ग्राम चीज, 100 ग्राम पनीर.

विधि : आलू और अरबी को उबाल कर मसल लें. पालक व मशरूम को बारीक काट कर थोड़ा तेल डाल कर नमक के साथ भाप में पका लें. गलने पर उस में (पनीर) चीज, दही, हरी मिर्च मिला कर मिश्रण को पत्थर पर पीस लें. अब इस पिसी हुई पीठी में भुनी हुई चना दाल का आटा धीरे धीरे मिलाते जाएं. जब वह पानी सोख कर नम रह जाए तो आलू, अरबी, गरममसाला, अदरक, लहसुन मिला कर अच्छी तरह हाथों से मल कर मूंगफली की गिरी मिला कर पांच मिनट के लिए रख दें. गहरे तवे पर तेल डाल कर उसे आग पर रखें. जब धुआं छोड़ने लगे तो उपर्युक्त पीठी को छोटी छोटी टिक्कियां बना कर तवे पर डाल दें. आंच धीमी कर दें. टिक्कियां उलटते जाएं. जब टिक्कियां हलकी सुनहरी हो जाएं, तवे से निकाल कर खसखस अथवा नारियल के बूरे में रख दें. इस तरह पूरी टिक्कियां तैयार होने पर बड़ी प्लेट में सजाकर टमाटर चटनी के साथ पेश करें. —शक्ति मरवाहा ●

इस स्तंभ में पाठिकाओं के व्यंजन भी प्रकाशित किए जाते हैं. व्यंजन किसी पत्रिका या पुस्तक से न लिए गए हों और उस में प्रेषक की मौलिकता हो. प्रत्येक प्रकाशित व्यंजन पर पुरस्कार दिया जाता है. पता है : नए पकवान, सरिता, नई दिल्ली-110055.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बेटी और बहू दो नजरिए क्यों?

लेख • विजया वासुदेवा

बेटी, जो विवाह के पहले पिता के घर में 'बच्ची है,' 'नासमझ है', जैसे शब्दों के माध्यम से अपनी हर छोटीबड़ी गलती के लिए सहानुभूतिपूर्ण बरताव पाती है, वही विवाह की औपचारिकताएं पूरी होने के साथ ही बेटी से बहू, बच्ची से युवती और नासमझ से समझदार बन जाती है और तब ससुराल पक्ष उस से अपेक्षा रखता है समझदारी की, सूझबूझ की. जहां ये अपेक्षाएं पूरी नहीं होतीं वहीं तानेकशी शुरू हो जाती है, 'यही सिखाया था मांबाप ने' आदि.

वैसे देखा जाए तो दोष दोनों ही पक्षों का है. मातापिता की बेटी के प्रति जो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अकसर बेटी की गलतियों को 'नासमझ है' कह कर नजरअंदाज कर दिया जाता है, दूसरी ओर बहू से अत्यधिक समझदारी की अपेक्षा की जाती है. आखिर बहू और बेटी के बीच यह दोहरी मानसिकता क्यों?

अतिरिक्त कोमलता है अथवा बच्चों का मातापिता की अवज्ञा कर के भी अपनी मनमानी करने की जो प्रवृत्ति है, वही काफी हद तक भविष्य में इन बच्चों के विकास एवं संतुलित, समझदार व्यक्तित्व बनाने में एक बाधा बनती है.

आज की पीढ़ी के मातापिता भी कम क्षुभित नहीं हैं अपने बच्चों के इस व्यवहार से कैसी विडंबना है कि मातापिता बेटी के भविष्य को पूर्ण रूप से इस एक ब्रह्म वाक्य की दया पर छोड़ देते हैं, 'अजी, मांबाप का घर है राज कर ले, कल को जिम्मेदारी पड़ेगी तो अपनेआप सुधर जाएगी.' और इस कल के सलीब पर कितनी ही जिंदगियां लटका दी जाती हैं.

मातापिता एक निश्चित दिशा, एक सफल व्यक्तित्व का मूलमंत्र अपनी बेटियों को अनुशासन और कर्तव्यपरायणता द्वारा दे सकते हैं. पर उन का लाड़प्यार सहज ही आने वाली पीढ़ी का भविष्य दांव पर लगाने की स्थिति उत्पन्न कर देता है.

आरती के व्यवहार से उस के मातापिता वर्मा दंपती हमेशा ही परेशान रहते थे. घर के कामकाज से उस का कोई वास्ता नहीं था. कालिज, फैशन और मित्रों के संग मनोरंजन में उस का समय अच्छा बीतता था. जहां भी अपनी व्यक्तिगत स्वतंत्रता में बाधा पाती, खूब बुराभला कहती मातापिता को. लाज शर्म आधुनिक मानसिकता के तले दब कर रह गई. 'शादी होते ही सब ठीक हो जाएगा' की मानसिकता ने उन्हें लापरवाह बना दिया. आरती के लिए वर की कमी नहीं थी. सुंदर, सुशिक्षित, अच्छे आर्थिक स्तर की कन्या के लिए एक से एक अच्छा वर उपलब्ध था.

धूमधाम से विवाह संपन्न हो गया. आरती का जैसा व्यवहार घर पर था वैसा ही ससुराल में भी रहा. आरती को पति और उस के परिवार का अनुशासन न तो स्वीकार ही था न सहनीय ही. व्यक्तिगत स्वतंत्रता की पक्षधर आरती आए दिन पति को विवश करती, संयुक्त परिवार से अलग रहने के लिए.

किंतु सब से विचित्र दृष्टिकोण है आरती की मां का पूरी स्थिति के प्रति, "हाय, मेरी फूल सी बेटी पर क्या गुजर रही है, बेचारी को दबा कर रख दिया है. यही तो उस के खानेखेलने के दिन थे."

शायद कंचन एक मां की ममता के जोश में यह भूल गई कि इसी बेटी ने उन्हें नाकों चने चबवा रखे थे, अपनी परेशानी को किसी दूसरे के सिर मढ़ने के लिए उन्होंने आरती की शादी करने का फैसला किया था. बेटी की कमियां सुधार कर एक अच्छी पत्नी और सुघड़ गृहिणी बनने का मार्गदर्शन करने की जगह अभी भी गलत सहानुभूति का आश्रय दे कर कंचन बेटी के भविष्य को नष्ट करने का काम ही कर रही हैं. आखिर बेटी जब किसी घर की बहू बन गई तो उस के सारे अवगुण गुणों में कैसे परिवर्तित हो गए? बेटी की दूरी ने ममता को उद्वेलित कर दिया है.

ममता और वात्सल्य को तभी सार्थक कहा जा सकता है जब वे शुरू से ही बेटी में आधुनिकता की तेज रफ्तार के साथसाथ घर के कामकाज और घर को बांध कर रखने की क्षमता में भी वृद्धि कर सकें. जो बेटी मांबाप के घर सहानुभूति व स्नेह नहीं दे सकी. उस से ससुराल पक्ष के साथ सुलझे हुए समझदार व्यवहार की आशा कैसे की जा सकती है.

सरोज की आपबीती भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किसी कहानी से कम नहीं है. उन के बेटे को एक से एक अच्छे कपड़े पहनने का शौक था. बेहद सुदर्शन और फैशनपरस्त युवक था राजेश. उस का अधिकांश समय अपने कपड़ों के रखरखाव, घूमने में ही नष्ट होता था. जाहिर है, पढ़ाई के लिए समय बचता ही नहीं था. जैसेतैसे 12वीं पास की और किसी रिश्तेदार की सिफारिश से सेल्समैन की नौकरी पा ली.

नौकरी भी महाराष्ट्र क्षेत्र में इसी दृष्टिकोण से चुनी कि शायद फिल्म जगत की निकटता से वह अभिनेता बन कर अपने स्वप्न साकार कर सके. किंतु फिल्म में अवसर नहीं मिला. हां, नौकरी से जरूर हाथ धोना पड़ा, क्योंकि कंपनी का निर्धारित बिक्री कोटा भी राजेश फिल्मी हीरो बनने के चक्कर में पूरा नहीं कर सका.

राजेश को दिल्ली वापस लौटना पड़ा. फिर नौकरी का जुगाड़ बिठाया गया.

इसी बीच सरोज का कोई मित्र परिवार कुछ दिनों के लिए उन के घर रहने के लिए आया. उन की बेटी रुचि एम.ए., बी.एड. कर चुकी थी. देखने में, व्यवहार में अत्यंत आकर्षक. सरोज ने राजेश से रुचि की प्रशंसा की ओर बहुत हसरत से बोली,

बेटी हो या बहू दोनों के प्रति व्यावहारिक ईमानदारी जरूरी है. ▲

"अगर तू कुछ ढंग की नौकरी कर रहा होता, अच्छा पढ़ालिखा होता तो मैं चाहे अपनी झोली फैलाती, किसी भी तरह तेरे लिए रुचि जैसी बहू लाती. ऐसी अच्छी लड़कियां रोज नहीं मिलतीं."

सरोज की बात राजेश के दिल में लग गई. उस ने रुचि को प्रभावित कर के मां की इच्छा पूरी कर ही दी. किसी मित्र का होंडा घर पर ला कर खड़ी कर दी. आए दिन रुचि को एक से एक बढ़िया जगह ले जाता, तरहतरह के उपहार भेंट करता. ऐसी स्थिति में किसी भी लड़की का प्रभावित होना स्वाभाविक था. फिर देखने में, व्यक्तित्व में भी राजेश कम नहीं था. रुचि के मातापिता ने हर तरह से रुचि को समझाया किंतु सब व्यर्थ. प्यार का पागलपन रुचि के दिमाग पर छा गया. रुचि के मातापिता की अस्वीकृति के बावजूद विवाह हो कर ही रहा.

शादी होते ही राजेश की असलियत भी सामने आने लगी. जिन दोस्तों से पैसे उधार ले कर रोब जमाया था रुचि पर, अब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वे ही दफ्तर से वेतन मिलते ही तकाजा करते घर तक भी आने लगे. रुचि से शादी कर के राजेश ने सिर्फ मां का सपना ही पूरा किया था, क्योंकि बिना पूरी शिक्षा और अच्छी नौकरी के केवल अपने आकर्षण के बल पर ही वह रुचि जैसी लड़की से शादी कर सका था.

अब सरोज दुखी होती हैं. आत्मग्लानि से जैसे टूट रही हैं. उन का बेटा अपने वेतन में अपने खर्च ही पूरे नहीं कर पाता, घर का खर्च कहां से आए? परिणामस्वरूप रुचि भी नौकरी कर रही है और घर पर भी कोल्हू के बैल की तरह जुती असमय ही अपनी उम्र से बड़ी दिखने लगी है. किसी से कोई शिकवा नहीं, किसी से शिकायत नहीं. मानो अपनी गलती का प्रायश्चित्त कर रही हो.

बेटी का व्यवहार हो या बहू के साथ की गई ज्यादती, गलत दोनों ही हैं. यदि रुचि के सामने सरोज ने असलियत रख दी होती और रुचि फिर भी राजेश से शादी कर लेती तब न रुचि को पछतावा होता और न सरोज को आत्मग्लानि. रुचि पति के छल से ही नहीं छली गई, सास का मूक समर्थन भी उस के प्रायश्चित्त का कारण है. जीने का उत्साह, खुशी जैसे उस की जिंदगी से कहीं खो गई हो. छले जाने की पीड़ा उम्र भर कम नहीं होती, क्योंकि सास और पति के साथ उसे हर दिन बिताना है.

बेटी हो या बहू दोनों के प्रति स्नेह और व्यावहारिक ईमानदारी जरूरी है. बेटी की गलतियों को बचपन से ही सुधारना आवश्यक है. मांबाप के घर ही बचपन और किशोरावस्था में जो आदतें पड़ गईं, वे ही जीवन भर बेटी के भविष्य के सुख व दुख की नींव बनी रहेंगी. 'ससुराल में सब सीख जाएगी,' जैसे मुहावरे तभी तक ठीक थे जब बाल विवाह की प्रथा थी. आज लड़की 20 वर्ष की आयु के आसपास ही विवाह योग्य मानी जाती है. तब मातापिता का यह नैतिक दायित्व है कि बेटी को कार्यकुशल, सहनशील होने के साथसाथ व्यवहार कुशल भी बनाएं. बेटी का यह व्यवहार न केवल मांबाप के घर की शोभा बनेगा अपितु उस से उस का भावी जीवन भी सफल होगा.

बहू जीवन भर के लिए ससुराल आती है, सुख में वृद्धि और दुख बंटाने के लिए. इस महत्त्वपूर्ण रिश्ते की इमारत छलकपट पर न खड़ी करें अन्यथा जीवन भर साथ निभाने वाली बहू का जीवन तो पश्चात्ताप की भट्ठी में दहकता ही रहेगा. ससुराल पक्ष भी सुखचैन की सांस लेने में परेशानी महसूस करता रहेगा. बेटी और बहू के बीच के मानसिक अंतर को समाप्त कर समान व्यवहार की नीति अपनाएं. यही सुख संपन्नता की कुंजी है. ●

पाठकों की सेवा में :

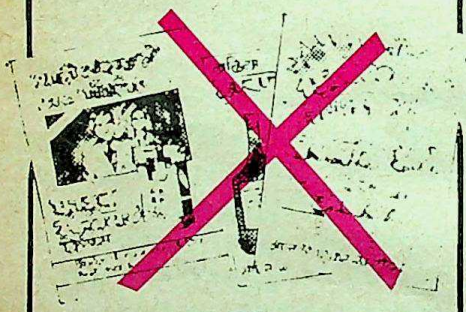

शरिता

में

सिगरेट, शराब, लाटरी (सरकारी जुआ/धोखाधड़ी) बोगस पत्राचार शिक्षण संस्थाओं के विज्ञापन प्रकाशित नहीं किए जाते और न ही जनभ्रामक ज्योतिष की साप्ताहिक या पाक्षिक तथाकथित भविष्यवाणियां.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या आप को भी कोई बुरी आदत है?

लेख ● शम्मी टंडन

संदीपन साहब अभी-अभी नींद से उठे हैं. उठते ही उन्होंने जोर से जम्हाई ली, कुछ ऐसे मुंह फाड़ कर कि उन की आवाज दूसरे कमरे तक पहुंच गई. फिर वह अपने कुरते को बनियान समेत ऊपर कर के पेट खुजाने लगे.

इस के बाद वह रसोईघर पहुंचे. अपनी पत्नी से पूछने लगे, "आज क्या बना है?" और जो कुछ भी नजर आया, उसे खाने के लिए बरतन में सीधे ही हाथ डाल दिया. खाते वक्त मुंह से चपरचपर की आवाज भी आ रही थी. आती भी क्यों नहीं, अपनी प्रिय पत्नी के हाथ के बने व्यंजन तो चटखारे लेले कर ही खाए जाते हैं.

इस प्रकार वह मुंह चलातेचलाते बालकनी में पड़ी लंबी कुरसी पर आ बैठे. पैर कुरसी के ऊपर ही चढ़ा लिए और सिगरेट सुलगा ली. एक हाथ में सिगरेट हो तो दूसरा हाथ खाली क्यों रहे? अतः दूसरे हाथ की उंगलियां कभी मुंह तक पहुंचतीं तो कभी कान की मैल निकालने का प्रयास करतीं.

इस सारे क्रम के बाद वह गुसलखाने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अधिकांश व्यक्तियों में कुछ आदतें ऐसी होती हैं जो उन्हें स्वयं तो बुरी नहीं लगती लेकिन उन आदतों के कारण दूसरों की नजरों में उन की प्रतिष्ठा गिर जाती है. इन से बचिए.

पहुंचे. जहां जोरजोर से आवाज करते हुए गला साफ किया, नहाएधोए.

इस प्रकार तैयार हो कर वह दफ्तर पहुंच जाते. लेकिन अब उन का हुलिया कुछ और ही होता, सूटेडबूटेड, बाल संवरे हुए, एकदम टिपटाप.

हो भी क्यों न? वह राजपत्रित अधिकारी जो ठहरे. अतः दफ्तर में तो टिपटाप रहना ही पड़ता है लेकिन यदि उन के दफ्तर का कोई व्यक्ति उन का घरेलू हुलिया और तौरतरीके देख ले तो शायद ही विश्वास कर सके कि यह वही संदीपन साहब हैं जो दफ्तर में अपने टिपटाप, सुसंस्कृत और शानदार व्यक्तित्व के लिए जाने जाते हैं. सच क्या है यह तो उन के पड़ोसी और परिवार के सदस्य ही जानते हैं, जो सुबहशाम उन का वास्तविक रूप देखते हैं.

कैसी अजीब हैं ये आदतें भी. शायद ही कोई व्यक्ति होगा जिसे कोई बुरी आदत या ऐब न हो. नाखून चबाना, बालों में उंगली फिराना या हाथ फेरना या फिर बारबार जूड़ा ठीक करना, मुंह में पेन या पेंसिल का सिरा डालना आदि अनेक हरकतें हैं जो बुरी आदत में शुमार होती हैं. 99% लोग इन आदतों के शिकार होते हैं लेकिन कोई भी इस तथ्य को स्वीकार नहीं करता कि वह अमुक आदत का शिकार है.

इन आदतों पर स्वयं आप का ध्यान तो नहीं जाता क्योंकि आप को तो इस से कोई परेशानी नहीं होती, लेकिन जो लोग आप के साथ रहते हैं उन में से अधिकांश को कभीकभी इन से बेतुचिढ़ होती है क्योंकि उन्हें आप की ये हरकतें बहुत भद्दी लगती हैं.

क्या हैं ये बुरी आदतें

सामान्य रूप से हर व्यक्ति में कमोबेश मात्रा में ये कुछ आदतें अवश्य होती हैं. आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के मनोवैज्ञानिकों ने इस संबंध में सर्वेक्षण किया तो पाया कि 87% ऐसे व्यक्ति जो किसी असामान्य व्यवहार के कारण कभी भी किसी मनोवैज्ञानिक के पास नहीं गए, किसी न किसी आदत के शिकार हैं. वे बिना कुछ अजीब हरकत किए रह ही नहीं सकते. यह और बात है कि वे इसे अचेतन मस्तिष्क से अर्थात बिना जानेबूझे करते हैं.

आप किसी के साथ किसी जरूरी बात पर विचारविमर्श कर रहे हैं तो देखते हैं कि वह जनाब कभी नाक में उंगली घुमा रहे हैं तो कभी नाक के ऊपर उंगली फेर रहे हैं, कभी ऐनक के सिरे को मुंह में डाल रहे हैं तो कभी पैंट की मोहरी को ऊपर की ओर खींच रहे हैं. (यदि महिला हैं तो उन की उंगलियां साड़ी के पल्लू को घुमाती रहेंगी).

इस का मतलब यह है कि वह आप की बात को बहुत गंभीरता से सुन रहे हैं. अपना ध्यान पूरी तरह आप की बात पर केंद्रित करने के लिए ही वह ये सब हरकतें कर रहे हैं.

यदि आप के बड़े साहब कोई महत्त्वपूर्ण निर्णय लेना चाहते हैं और बात करतेकरते अगर वह अचानक झटके से अपनी पैंट की मोहरी को ऊपर घसीटें या पेपरवेट को उंगलियों में घुमाना छोड़ दें तो इस का मतलब है कि वह किसी निष्कर्ष पर पहुंच गए हैं.

लेखकलेखिकाओं की गतिविधियां तो और भी अजीब होती हैं. लिखते वक्त बीचबीच में उन की उंगलियां कभी होंठों से खेलने लगती हैं तो कभी पेन मुंह में पहुंच जाता है, कभी दाढ़ी खुजाने लगते हैं तो कभी गालों पर हाथ फेरने लगते हैं. इन सब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

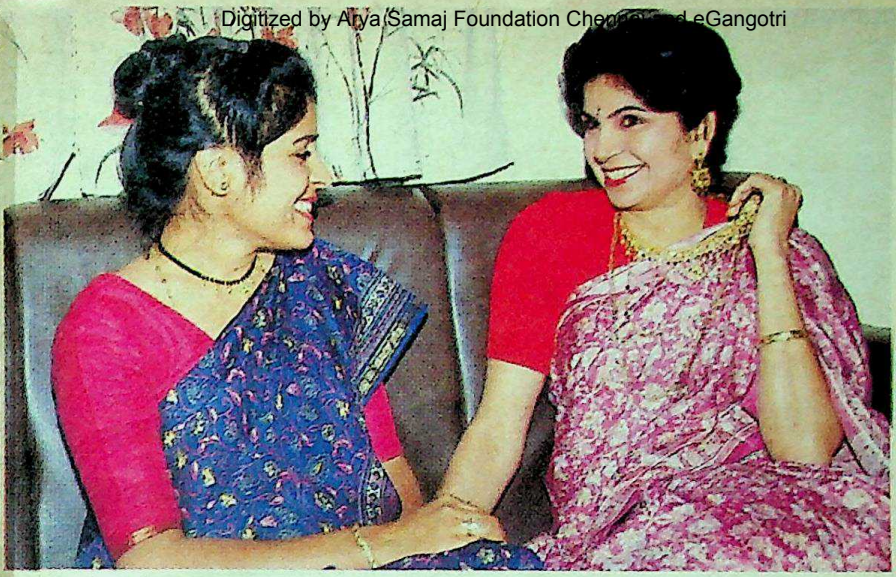

गले की चेन खींचना या घुमाना बुरी आदत तो है ही, यह मनोविकार भी है.

का मतलब यह है कि वे बारबार सोचते हैं कि और क्या लिखूं अर्थात उन्हें और बिंदुओं की तलाश है.

मंजु दीदी में सुनने का धैर्य बहुत कम है. जब उन्हें जबरदस्ती किसी की बातें सुननी पड़ें तो कभी उन के होंठ भिचने लगते हैं तो कभी उन की उंगली कान को कुरेदने लगती है. उन्हें कोई प्रत्युत्तर न देना पड़े, इसलिए कभी वह उंगली होंठों पर रख लेती हैं तो कभी रूमाल से मुंह ही पोंछती जाती हैं. समझदार के लिए यह इशारा ही काफी है. यही वक्त है जब या तो वह वहां से खिसक ले या फिर अपनी जुबान बंद कर ले.

यदि कभी मंजु बात करतेकरते सामने वाले की बांह या कलाई पकड़ ले तो पता चल जाता है कि आज उन की मनःस्थिति ठीक है यानी कि सामने वाला व्यक्ति बेधड़क अपनी बात कह सकता है.

अब यदि किसी सिगरेट के शौकीन व्यक्ति से बात करनी पड़ जाए तब तो स्थिति बहुत विकट हो जाती है क्योंकि न तो सिगरेट का धुआं बरदाश्त होता है और न ही सामने से हटना उचित होता है.

निस्संदेह धूम्रपान बुरी लत है लेकिन इस के शिकार बहुत मजबूर हैं. वे तो बिना सिगरेट सुलगाए कुछ सोच ही नहीं पाते (कई बार तो वे सोचने में इतने मशगूल होते हैं कि सिगरेट कब बुझ गई, इस का उन्हें पता ही नहीं चलता). कुछ लोग तो सिगरेट की तरफ आंखें गड़ाए हुए इस प्रकार बात करते हैं मानो कि सिगरेट के ऊपर लिखा हो कि क्या बोलना है.

कुछ महिलाओं की आदत होती है कि वे घर में तो बड़े आराम से सोफे और कुरसी पर भी पैर ऊपर कर के बैठ जाती हैं (इस प्रकार वे घर पर अपना आधिपत्य दर्शाती हैं). लेकिन जब उन के सामने कोई असमंजस की स्थिति आती है तो उन की उंगलियां गले पर पहुंच कर नेकलेस से खेलने लगती हैं मानो वे यह देखना चाहती हों कि गले में नेकलेस है या नहीं.

और यदि पुरुष ऐसी असमंजस की स्थिति में हों तो वे अपने हाथ की त्वचा को ही नोचते रहेंगे या फिर जो कुछ सामने हो उसे मुंह में डालते रहेंगे, भले ही वह पेपरक्लिप ही क्यों न हों. यदि यह असमंजस किसी सम्मेलन को ले कर है तो सब से पहले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपनी कुरसी की अच्छी तरह संभाल करेंगे मानो यह तसल्ली करना चाहते हों कि सब कुछ ठीकठाक तो है.

कई लोगों को जेब में हर वक्त हाथ डालने या पैसे खड़काने की आदत होती है. मौका मिलते ही वे जेब में से पैसे या नोट निकाल लेते हैं ताकि दूसरे को पता चल जाए कि उस के पास पैसे हैं. वस्तुतः वे पैसे की कमी के कारण हीनता के शिकार होते हैं. लेकिन इस हीनता को छिपाने के लिए वे जेब में हाथ डाल कर पैसे या नोटों से खेलते रहते हैं.

कारण क्या है?

व्यक्ति में ये आदतें पड़ कैसे जाती हैं? यदि इस बात का सर्वेक्षण करें तो इस का पहला आधार तो मनोवैज्ञानिक ही है. जब व्यक्ति के हावभाव से उस की मानसिक स्थिति (तनाव, हीनता, असुरक्षा और आत्मविश्वास आदि) का पता चलता है.

लेकिन इस के अलावा और भी कई कारण हैं, जिन के फलस्वरूप व्यक्ति इस प्रकार की आदतों का शिकार बना है, जैसेः

● ऐसा कुछ करते रहने से हृदय में एक तृप्ति और शांति का अहसास तो होता ही है, साथ ही मस्तिष्क को भी आराम मिलता है. यही कारण है कि भले ही दूसरे को बुरा लगे लेकिन जो इन आदतों के शिकार होते हैं, उन्हें इन से सुकून मिलता है.

● कई लोगों के थके हुए शरीर में ऐसा करने से शक्ति का संचार होता है. यदि कोई विद्यार्थी परीक्षा की तैयारी में पढ़तेपढ़ते थक जाता है तो उस का ध्यान भटकने लगता है. दोबारा ध्यान केंद्रित करने के लिए वह या तो अपने नाखून चबाने लगता है या पेंसिल मुंह में डाल लेता है.

● कुछ लोग वहम के कारण भी इन आदतों के शिकार हो जाते हैं. उदाहरण के लिए, कुछ लोग इतने वहमी होते हैं कि उन में बारबार हाथ धोने की लत होती है. कुछ लोग बारबार उठ कर बिजली के बटन या स्विच बोर्ड देखने जाते हैं कि कहीं प्लग लगा न रह गया हो या स्विच खुला न हो, या कि कुछ लोग रात को उठउठ कर दरवाजे देखने के आदी होते हैं. उन्हें यह वहम रहता है कि कहीं कुंडी खुली न रह गई हो.

● कई लोग अंधविश्वास के कारण भी इन के आदी होते हैं. हमारी एक परिचिता हैं, जो अपने बच्चे को देख कर बारबार मुंह से 'थू' कहती हैं. विशेष रूप से तब, जब बच्चा कोई शैतानी कर के उन्हें रिझा रहा हो. इस 'थू' करने की आदत का आधार वह अंधविश्वास है जिस के अनुसार यह माना जाता है कि यदि मां ऐसा करे तो बच्चे को नजर नहीं लगती है. इसी प्रकार आजकल के पढ़ेलिखे युवकयुवतियां 'टच वुड' (लकड़ी छूना) कहते हैं या फिर सिर के बालों को हाथ लगाते हैं मानो 'टच वुड' कहने से किसी अनिष्ट से बचा जा सकता है.

इन आदतों की उत्पत्ति के पीछे का कारण कोई भी हो लेकिन यह सच है कि इन से होने वाला नुकसान ही है.

पहली बात तो यही है कि इस से साथ वाले व्यक्ति पर आप का प्रभाव ठीक नहीं पड़ता. अब जो व्यक्ति हर वक्त नाक में उंगली घुमाता रहेगा उस के पास बैठना भला कौन पसंद करेगा? यह तो फूहड़ता को दर्शाता है. साथ ही ऐसी हरकतों से आप की कमजोरी जाहिर होती है, अर्थात व्यक्तित्व का जो प्रभाव पड़ना चाहिए वह नहीं पड़ पाता.

स्वास्थ्य की दृष्टि से भी ये आदतें ठीक नहीं हैं क्योंकि यदि नाखून लगातार चबाते रहने की आदत है तो नाखून के साथसाथ उन के पास की त्वचा भी कट जाती है, जो बहुत पीड़ादायक होती है. यह भी तो हो सकता है कि आप के हाथ अस्वच्छ हों क्योंकि यदि नाखून कुतरने के आदी हैं तो स्वाभाविक है कि वे हाथ धो कर तो नाखून मुंह में डाल नहीं. अतः यदि हाथों पर मैल, धूल या कीटाणु और लगा है तो नाखून चबाते वक्त कीटाणु भी मुंह में चले जाते हैं जो रोग पैदा कर सकते हैं.

इसी प्रकार यदि बारबार हाथ धोने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओरिएण्टल

एक पहचान

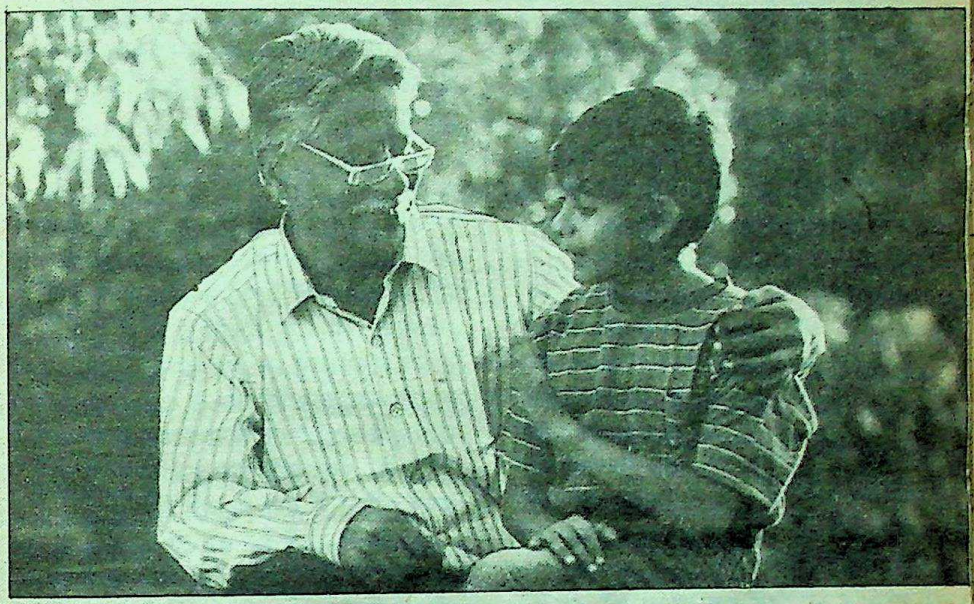

हमारी बहुमूल्य निधि

ग्राहकों की आस्था

ग्राहकों से हमारे प्रगाढ़ सम्बन्ध - हमारी बहुमूल्य निधि की परिभाषा.

जी हाँ! हमारे ग्राहकों की आस्था और उनसे हमारे प्रगाढ़ सम्बन्ध ही हमारी बहुमूल्य निधि हैं. और है इस विश्वास का प्रमाण हमारे पॉलिसी-धारकों का विशाल समुदाय. 45 लाख की संख्या आप "विशाल" कहेंगे ना!

प्रिय ग्राहकगण

आपकी सुरक्षा और उससे सम्बन्धित आपकी सभी जरूरतों की पूर्ति हमारा सतत् उद्यम रहा है. हमारी ग्राहक-सेवा का एक नया आयाम है - एक विशेष 'ग्राहक-परामर्श' अनुभाग. यह सेवा आपको हमारे बम्बई, कलकत्ता, मद्रास, दिल्ली तथा अन्य कई क्षेत्रीय कार्यालयों में उपलब्ध है. आपकी शिकायतों पर समुचित विचार तथा हर सम्भव समाधान के लिए एक विशेष विभाग तो कृत संकल्प है ही. इसके अतिरिक्त हमारी आन्तरिक प्रणाली द्वारा बकाया दावों की निरन्तर समीक्षा तो की ही जाती है.

औद्योगिक क्षेत्र के लिए उपयुक्त सुरक्षा सम्बन्धी सेवा भी उपलब्ध है- निःशुल्क! बिना किसी पूर्वाग्रह के आप इस सेवा का लाभ उठा सकते हैं, चाहे आपने हमसे बीमा ले रखा हो, या लेना चाहते हों.

प्रिय पॉलिसी-धारक

आपकी सुरक्षा हमारे लिए सर्वोपरि है. आपकी सन्तुष्टि, आपकी आस्था, तथा आपका 'ओरिएण्टल' में विश्वास ही हमारी बहुमूल्य निधि है.

दि
ओरिएण्टल इंश्योरेंस कम्पनी लिमिटेड
जनरल इन्शोरेंस कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया की सहायक कम्पनी
ग्राहकों से सौजन्य-
ओरिएण्टल की विशिष्ट परम्परा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आदत है तो कड़कती सर्दी में भी ठंडे पानी से हाथ धोए जाते हैं, भले ही ठंड लग जाए और यदि पानी न हो तो वहम ऐसे व्यक्ति को इतना विचलित कर देता है कि वह बेचैनी सी अनुभव करता है क्योंकि जब तक वहम का निराकरण न हो तब तक शांति मिलना मुशकिल है.

कई बार ये आदतें मानसिक रूप से व्यक्ति पर इस प्रकार हावी हो जाती हैं कि वह स्वयं तकलीफ सहने के साथसाथ उपहास का कारण भी बनता है. अब यदि आप बिस्तर से उठ कर बारबार दरवाजों की जांचपड़ताल करेंगे तो साथ वाला व्यक्ति तो आप का मजाक ही उड़ाएगा.

छुटकारा पाएं तो कैसे?

यदि आप इन आदतों के शिकार हैं और इन से छुटकारा पाना चाहते हैं तो सब से पहले यह जरूरी है कि आप ठंडे दिमाग से सोचें कि इन के कारण आप को क्याक्या नुकसान हो सकते हैं. जब आप के सामने यह बात स्पष्ट हो जाएगी तो इन से छुटकारा पाने के लिए आप स्वयं ही तत्पर हो जाएंगे. आप अपने हाथों को नियंत्रित करेंगे. उस स्थिति में भी जब आप बहुत परेशान हैं, आप के हाथों में चाबी का छल्ला नहीं घूमेगा और न ही आप के हाथ नेकलेस तक पहुंचेंगे.

यदि आप वहम के कारण इन आदतों के शिकार हैं तो भी छुटकारा पाया जा सकता है, इस शर्त पर कि आप अपने दिल को मजबूत करें. एक मनोवैज्ञानिक के पास जब एक ऐसा व्यक्ति लाया गया जो दिन में कम से कम 50 बार हाथ धोता था तो जानते हैं उस ने क्या किया? उस ने सब से पहले उसे साबुन दे कर वाशबेसिन के पास खड़ा कर दिया ताकि वह स्वयं हाथ धो ले लेकिन सिर्फ एक बार.

जब वह दोबारा हाथ धोने लगा तो उस से पूछा गया कि क्या तुम्हारे हाथ पर कुछ लगा है? जब उस ने देखा तो वास्तव में हाथ तो साफ थे ही, अतः वह हाथ धोतेधोते रुक गया. इस प्रकार समझाने से उस के सामने यह स्पष्ट हो गया कि हाथ तो एक बार साबुन लगा कर धोने से ही अच्छी तरह साफ हो जाते हैं तो फिर भले ही आप सात बार साबुन लगाते जाएं हाथ तो वैसे के वैसे ही रहेंगे. हां, यह जरूर है कि साबुन, पानी और वक्त की बरबादी के साथ आप स्वयं ही असामान्य व्यवहार का शिकार बन जाएंगे.

जब चेतन मस्तिष्क में यह बात स्पष्ट हो जाएगी तो स्वयं पर नियंत्रण किया जा सकेगा.

इसी प्रकार, यदि आप अंधविश्वास के कारण किसी आदत के शिकार हैं तो उस से छुटकारा पाने के लिए यह आवश्यक है कि आप उस का वैज्ञानिक ढंग से निराकरण करें. यदि आप भी अपने बच्चे को नजर से बचाने के लिए 'थू' कहती हैं तो जरा ठंडे दिमाग से सोचिए कि क्या वास्तव में नजर नाम की कोई बला है? यदि है, तो क्या केवल 'थू' कहने से ही उस से छुटकारा पाया जा सकता है? क्या आप ऐसा कर के बच्चे को किसी अहित से बचा सकती हैं?

सच तो यह है कि जब आप मुंह से 'थू' कहती हैं तो हो सकता है कि बच्चे के ऊपर थूक का एकाध छींट पड़ जाए जो देखने में तो भद्दा लगता ही है, साथ ही यह भी हो सकता है कि आप का बच्चा भी ऐसा करना सीख जाए, अतः ऐसी अंधविश्वास भरी खोखली बातों से बचना चाहिए.

वैसे तो नाखून कुतरने जैसी आदतों से बचने के लिए अभी तक कोई कारगर दवा नहीं बनी है लेकिन यदि आप छुटकारा पाना चाहते हैं तो कोई कड़वी वस्तु अपने नाखूनों पर लगा लें ताकि जब हाथ मुंह में जाए तो कड़वाहट के कारण उंगली फौरन बाहर आ जाए. इसी प्रकार धूम्रपान से छुटकारा पाने के लिए पान या चुइंग गम का सहारा ले सकते हैं.

स्पष्ट है कि बुरी आदतें व्यक्ति की सामाजिक प्रतिष्ठा के साथसाथ स्वास्थ्य के लिए भी नुकसानदायक हैं अतः इन से छुटकारा पाना बहुत आवश्यक है. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब बच्चों की पोशाक खरीदने जाएं

लेख ● अनिता होलानी

आजकल की भागदौड़ भरी व्यस्त जिंदगी में किस के पास समय है कपड़े सिलनेसिलाने का. पैसे ले, बाजार को दौड़ना ज्यादा आसान है. पैसे दो और सिलीसिलाई मनचाही रंगबिरंगी पोशाक घर ले आओ. अब यह बात और है कि फिर उन कपड़ों की सिलाई उधड़ती रहे या कपड़ा घटिया निकल आए या रंगबिरंगे टुकड़ों से बनी पोशाक किसी एक रंग के छूट जाने से बदरंग हो जाए और फिर आप दुकानदार को सौसौ गालियां देते हुए उन कपड़ों को सुधारती रहें.

अगर हम खुद के लिए रंग और डिजाइन के मोह में बंधे कोई घटिया किस्म का कपड़ा ले आते हैं तो हम उस कपड़े को ज्यादा धोनेनिचोड़ने और खाचखरोंच से बचाने के लिए सतर्क रहते हैं लेकिन जब बात बच्चों की पोशाक की हो तो ज्यादा

बच्चों की पोशाक खरीदते समय पोशाक की गुणवत्ता, लंबाई चौड़ाई, सिलाई, डिजाइन और मौसम का ध्यान रखा जाए तो बाद में दुकानदार को कोसने या झींकने की नौबत नहीं आएगी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

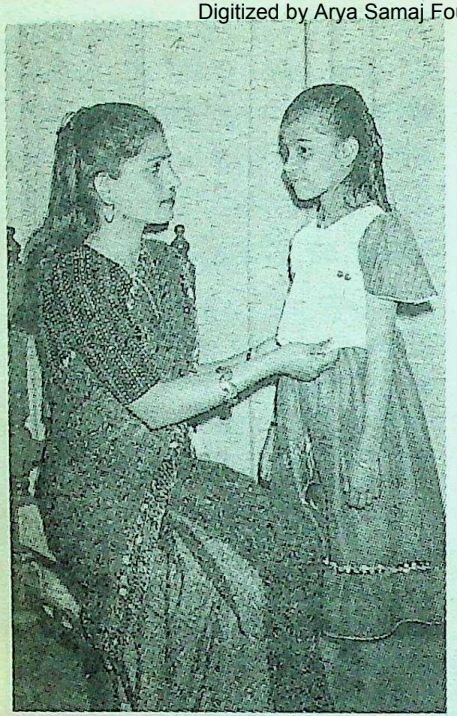

पोशाक खरीदने के बाद सब से पहले बच्चों को पहना कर अच्छी तरह देख लीजिए कि ठीकठाक है या नहीं.

समझदारी की जरूरत है क्योंकि बच्चों को आप मनमरजी से रोक नहीं सकतीं और एक बार के बाद ही पोशाक का हुलिया उतरन जैसा हो जाए यह भी तो आप को नागवार होगा. इसलिए पोशाक खरीदते समय इन बातों का ध्यान रखें :

● मौसम कोई भी हो बच्चों की पोशाक का कपड़ा मुलायम ही हो. गरमी के लिए सूती, वायल आदि ले सकती हैं. सर्दियों के लिए फलालेन आदि. सिंथेटिक कपड़ों से बनी पोशाक हालांकि चलती ज्यादा है पर इन का प्रयोग कम ही करना चाहिए क्योंकि इन में पसीना सोखने की क्षमता कम होती है और इसी वजह से बच्चे को गरमी लगती है, जिस से बच्चा रोता, चिड़चिड़ाता रहता है. इसी वजह से घमौरियां भी निकल आती हैं. हां, सिंथेटिक कपड़े बरसात के लिए अनुकूल हैं क्योंकि ऐसे कपड़े जल्दी सूख जाते हैं.

● बच्चों के कपड़े कुछ ढीले ही खरीदें अन्यथा ये बच्चों को जल्दी ही छोटे पड़ने लगेंगे, लेकिन इतने ढीले भी न हों कि बच्चा उन्हीं में उलझता रहे. कपड़े की फिटिंग ऐसी हो कि पहनने और पहनाने वाले दोनों को सहूलत रहे.

● कपड़ों की सिलाई पर विशेष ध्यान दें. बच्चे हर समय भागादौड़ी या उलटपुलट में व्यस्त रहते हैं. उन के कपड़ों की सिलाई मजबूत रहनी चाहिए अन्यथा रोज ही उन के कपड़ों की मरम्मत करनी होगी.

● लाई गई पोशाकों के बटनों पर भी गौर करें. अकसर बाजार से खरीदी गई पोशाकों में बटन हलके से टांके होते हैं. आप इन्हें नन्हे को पहनाने के पहले ही कस कर टांक दें, नहीं तो टूटे बटनों के मिलने तक या तो पोशाक बेकार पड़ी रहेगी या कोई और रंग या डिजाइन का बटन लगा कर काम चलाना पड़ेगा.

● बच्चों के लिए सूती कपड़े खरीदते समय कपड़ा जरा गौर से देखें. कभीकभी मांड़ लगे होने की वजह से पोशाक सुंदर तो दिखती है पर एक धुलाई के बाद ही कपड़ा झीनाझांझर निकल आता है.

● ज्यादा लेस और झालर लगी पोशाकें न खरीदें. कारण, अकसर बच्चों के कपड़े ज्यादा गंदे होने की वजह से या तो गरम पानी में धोने पड़ते हैं या ब्रश से रगड़ने पड़ते हैं. लेस नाइलोन की हुई तो गरम पानी में खराब हो जाएगी और ज्यादा रगड़े जाने से लेस झालर जल्दी ही कटफट जाएगी.

● तरहतरह के रंगों से बनी पोशाकें भी देख कर ही खरीदें क्योंकि अगर कोई एक रंग भी कच्चा निकल गया तो पूरी पोशाक की सुंदरता मारी जाएगी.

● कोई पोशाक आप को कितनी ही आकर्षित करे अगर जरूरत न हो तो हरगिज न खरीदें क्योंकि बच्चे जल्दी बढ़ते हैं और फिर छोटी पड़ रही नई पोशाकें न घर में काम आती हैं न दूसरों को देते ही बनता है. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पिता की संपत्ति में पुत्री का अधिकार

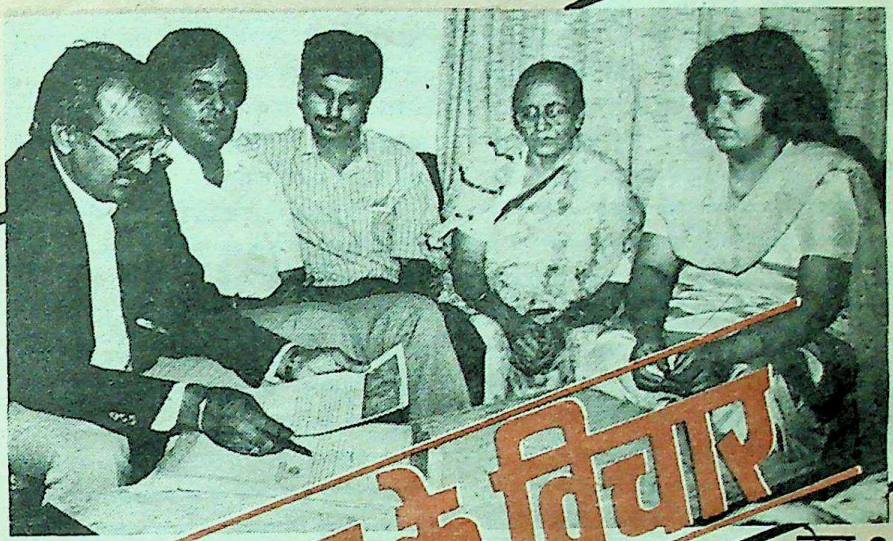

आप के विचार

लेख ● विशेष प्रतिनिधि

प्रायः प्रत्येक देश और काल में पुत्री की अपेक्षा पुत्र ही अधिक वांछनीय रहा है. भारत भी इस का अपवाद नहीं है. यहां पुत्री की अपेक्षा पुत्र की महत्ता के पीछे उस का शारीरिक गठन एवं सामाजिक वर्चस्व जुड़ा है. शारीरिक दृष्टि से पुत्री की अपेक्षा पुत्र अधिक बलवान होता है. अतः पारिवारिक धनजन की रक्षा के लिए अधिक उपयोगी रहता है. वह पिता के कारोबार में हाथ बंटा कर पैतृक संपत्ति की वृद्धि करता है और पिता की मृत्यु के बाद परिवार के लिए प्रमुखतः जीविकोपार्जन करता है. इन के अलावा यहां पुत्र की महत्ता में कुछ आध्यात्मिक व कर्मकांडीय कारण भी जोड़ दिए गए हैं, जैसे पितरों की शांति के लिए यज्ञ, जलदान आदि पुत्र के ही दायित्व माने गए हैं.

समाज में पुत्रों की इस प्रतिष्ठा को हमारे प्राचीन ग्रंथों ने ढोल पीटपीट कर और भी बढ़ावा दिया है. 'ऐतरेय ब्राह्मण' में पुत्र को 'दिव्य ज्योति' कह कर महत्त्व दिया गया है, जबकि पुत्री को 'कृपण' बताया गया है:

"कृपणं हि दुहिता ज्योतिर्हि पुत्रः परमें व्योमन". (ऐतरेय ब्राह्मण 33/1)

'महाभारत' (1/159/11) में पुत्री को आपत्ति कहा गया है. वह मातापिता तथा पति तीनों के कुलों के लिए संकट मानी गई है:

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पिता की संपत्ति में पुत्री का अधिकार हो या न हो, यदि हो तो कितना और यह अधिकार चल संपत्ति में हो या अचल संपत्ति में? आदि प्रश्न पिछले कुछ समय से समाज में काफी तीव्रता से उठे हैं. आखिर इस समस्या का निदान क्या है?

"मातुः कुलं पितृकुलं यत्र चैव प्रदीयते
कुलचयं संशयितं कुरूते कन्यका सतां." (महाभारत, 5/97/15-16)

परंपरागत रूप से पुत्री को 'पराया धन' माना जाता है. वह परिवार के लिए एक उत्तरदायित्व रही है. वह वंश की रक्षा करने के स्थान पर स्वयं वंशरक्षिता है. उस के विवाह के अवसर पर पैतृक संपत्ति का कुछ भाग दूसरे यानी पराए घर चला जाता है. ऐसे ही अनेक कारणों से समाज में पुत्री को पुत्र की अपेक्षा हेय दृष्टि से देखा गया है.

किंतु आधुनिक युग में प्रायः यह देखा जाता है कि पुत्रियां किसी भी क्षेत्र में पुत्रों से कम नहीं हैं. वे पुत्रों के समान, बल्कि उन से भी बढ़चढ़ कर शिक्षा प्राप्त करती हैं. वे किसी भी स्तर पर अपने भाइयों से पीछे नहीं हैं, पारिवारिक दायित्व निभाने में भी. अनेक परिवारों में तो पुत्रों के अभाव में उन की उदासीनता के कारण पुत्रियां ही जीविकोपार्जन कर के परिवार का भरणपोषण करती हैं.

संभवतः पुत्रियों के इन बढ़ते कदमों को देख कर ही भारतीय संविधान ने पुरुषों और महिलाओं को पुत्र और पुत्रियों को समदृष्टि से देखते हुए समान अधिकार प्रदान किए हैं. इसी क्रम में हिंदू उत्तराधिकार अधिनियम 1956 के तहत पिता की संपत्ति में पुत्री को भी समान रूप से भागीदार बना दिया गया है. यही वह समय था जब हिंदू स्त्री को शायद पहली बार अपने व्यक्तित्व के नाते संपत्ति पर अधिकार मिला था.

उस समय इस विधेयक का जम कर विरोध हुआ था, जिस में यह कहा गया था कि इस से भाईबहन के रिश्तों में दरार पड़ जाएगी, परिवार और व्यवसाय छिन्नभिन्न हो जाएंगे. विधेयक बहस के दौरान पुरुषोत्तमदास टंडन ने आधुनिक नवयुवतियों के बनावशृंगार, पहनावउढ़ाव, खरीदारी आदि पर तीक्ष्ण कटाक्ष करते हुए संसद सदस्यों से पूछा था कि क्या उन के लिए हजारों वर्षों से चली आ रही हिंदू संस्कृति को बदल दिया जाए?

विधेयक के इस विरोध से प्रतीत होता है कि हिंदू समाज में भाईबहन के प्रेम, उन की सद्भावनाओं और संबंधों को पैसों से ही मूल्यांकित किया गया है. क्या संपत्ति पर बहन के अधिकार जताने से उस का सारा स्नेह, लगाव, भ्रातृभाव—सब समाप्त हो जाएगा? अस्तु.

कुछ भी हो, विधेयक का व्यावहारिक दुष्परिणाम इस रूप में अवश्य सामने आया है कि अनेक परिवारों में मुकदमेबाजी शुरू हो गई और यह प्रश्न उठाया गया कि जिस समाज में मोटे दहेज की परंपरा समाप्त न हो पा रही हो, वहां विवाहित पुत्री द्वारा पिता की संपत्ति में अधिकार मांगना पुत्रों पर दोहरा बोझ तो नहीं?

इस संदर्भ में सरिता/जुलाई/प्रथम में सरला भाटिया का लेख—'पिता की संपत्ति पर पुत्री का अधिकार'—प्रकाशित किया था जिस में कुछ विधि विशेषज्ञों के विचारों का विश्लेषण किया गया था. इसी क्रम में हम ने सुधी पाठकों के विचार भी जानने चाहे थे. पाठकों से प्राप्त विचारों का विश्लेषण करने पर पता चलता है कि 3.3% पुरुषों एवं महिलाओं ने तो तटस्थता का रुख प्रदर्शित किया, और इस के पक्ष में 10% पुरुषों एवं महिलाओं ने विचार व्यक्त किए, जबकि विपक्ष में 40% पुरुषों एवं 33.3% महिलाओं ने. जो इस बात का द्योतक है कि पिता की संपत्ति पर पुत्री के अधिकार को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

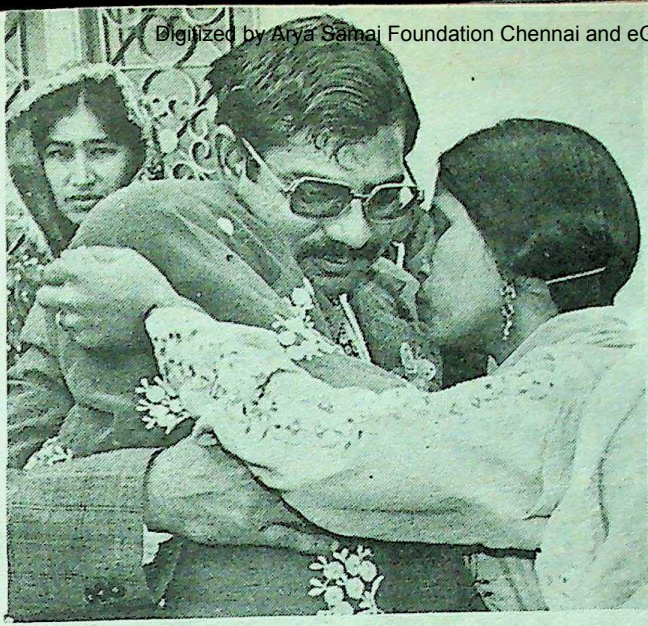

पत्नी को हमेशा से पराया धन माना गया है, इसी लिए इसे पिता की संपत्ति से वंचित रखा गया है.

लगभग 34 वर्ष पूर्व कानूनी मान्यता मिल जाने पर भी समाज आज तक उसे पूर्णतः स्वीकार नहीं कर पाया है.

मानसिकता में बदलाव जरूरी

इस संबंध में सर्वाधिक अहम बात है समाज की मानसिकता को बदलना. सामान्यतः यह देखा गया है कि लड़कियां अपने पिता की संपत्ति में से बंटवारा नहीं करातीं या नहीं कराना चाहतीं, क्योंकि जीवन का एक बड़ा भाग जिस वृक्ष की छाया में बीता है उस से कुछ न कुछ लगाव होना स्वाभाविक है. अतः वे उस फलतेफूलते वृक्ष की शाखाओं को बंटवारे के रूप में तोड़ना नहीं चाहतीं. प्रायः ऐसी भावनाओं से अभिभूत हो कर बंगलौर की करुणा देवी सचान का कहना है, "जो खुशी भाभी के हाथ से साड़ी लेने में है, वह बंटवारा करा लेने में नहीं. एक लड़की अगर अपने मायके में बंटवारा कराएगी तो अपने घर में बंटवारा कर के ननद को देगी भी. इस से दोनों ओर के रिश्तों में कड़वाहट भर जाएगी."

मंजु कालरा (जयपुर) का अनुभव एक कदम और आगे बढ़ जाता है. वह कहती हैं, "जिन घरों में संपत्ति के बंटवारे हुए भी हैं, वहां बहनभाई के संबंध तो विषाक्त हुए ही हैं, कई लोभी ससुराल वालों ने पैसा, जमीन, जेवर आदि हथिया कर बहुओं की हत्या भी कर डाली है, वरना उमा शर्मा व अनिता भारद्वाज जैसी लड़कियों के साथ ऐसा हादसा न होता."

बंटवारे के दूसरे पहलू में ऐसे उदार मायके वाले खोज पाना कुछ टेढ़ी खीर ही है जो सहर्ष लड़की को उस का हिस्सा दे दें. हरिद्वार के मनोजकुमार के अनुसार, "इस का मुख्य कारण यह है कि लड़की के पिता किसी भी तरह अपने पुत्रों को नाराज नहीं करना चाहेंगे, क्योंकि पुत्र ही उन के बुढ़ापे का सहारा बनते हैं."

आशा गुप्ता ने अपने एक परिचित के उदाहरण से इस तथ्य को और भी स्पष्ट करना चाहा है. उन के परिचित के चार लड़कियों के बाद का भाई है. पिता अवकाश प्राप्त हैं. वह अपनी तीन लड़कियों की शादी तो अपने सेवाकाल में ही कर चुके हैं. एक पुत्री कुंआरी है. उन के पास जमा पूंजी भी अधिक नहीं है. जो है, उस से खींचतान कर पुत्री की शादी ही हो सकती है. फिर पुत्र के लिए उन के पास क्या बचेगा. वह तो अभी पढ़ ही रहा है.

"अब यदि इस के बाद भी वह हिस्सा बांट करने लगे (मकान वगैरह का) क्या यह उचित होगा. ऐसी दशा में पुत्रियां बोझ नहीं लगेंगी? क्या मातापिता व भाई से उन के संबंध मधुर रह सकेंगे?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सीधी सी बात है. परंपरा से पिता की संपत्ति पर उस का पुत्र ही अघोषित अधिकारी रहा है. अब जिस का परंपरागत अधिकार छिनेगा, उस के दर्द तो होगा ही. तो क्या भ्रातृ स्नेह और संबंधों की मधुरता की दुहाई दे कर कोई अपना मिला हुआ हक छोड़ दे? यह एक विचारणीय प्रश्न है.

यह तो सर्वविदित है कि जब तक वसीयत न हो, एकाधिक पुत्र होने पर संपत्ति का बंटवारा सभी पुत्रों में समान रूप से होता है. फिर पुत्री के हिस्से पर ही हायतोबा कैसा, जैसा कि मोनिका देव का कहना है, "लड़कों में संपत्ति का बंटवारा होते समय भी भाइयों में संबंध बिगड़ जाते हैं. क्या वे इस कारण अपना हिस्सा नहीं लेते?

"प्रत्येक परिवार की निजी परिस्थितियां होती हैं. यदि किसी परिवार में अचल संपत्ति है, नकद नहीं, तो ऐसे में लड़कियां नौकरी कर के दहेज के पैसे जुटाती हैं. भाई बड़े भी हों तो वे अपने बालबच्चे पालते हैं. ऐसी स्थिति में पुत्रियों को पिता की संपत्ति से क्या मिलता है? जो लड़कियां प्रेम विवाह या अदालती विवाह कर लेती हैं वे भी दहेज के रूप में कुछ नहीं पातीं. ऐसे में वे पिता की संपत्ति में से अपना हिस्सा ले सकती हैं.

"एक बात और है. बहन आर्थिक विपन्नता की स्थिति में हो और भाई पिता की संपत्ति पर ऐश कर रहे हों तो वह अपना अधिकार ले कर आर्थिक रूप से सबल हो सकती है. इस से विपरीत परिस्थितियों में वह अपना अधिकार छोड़ भी सकती है."

अतः समाज में परंपरागत दृष्टिकोण का बदलाव जरूरी है. बड़ा नगेला (मंदसौर) के अर्जुन झंवर ने ठीक ही कहा है, "मातापिता को यह अच्छी तरह समझ लेना चाहिए कि उन के पुत्र और पुत्री में कौन अधिक योग्य है. यदि पुत्र गलत ढंग से पैसा खर्च करता हो तो यह जरूरी नहीं कि वह निकट रहने पर भी उन की समुचित देखभाल करेगा. यदि पुत्री योग्य हो तो कुछ संपत्ति उस के नाम की जा सकती है.

साथ ही परिवार वालों को इस बात पर भी गौर करना चाहिए कि पुत्री किन परिस्थितियों में अपना अधिकार मांग रही है. प्रथम स्थिति में पुत्री के लिए पिता की संपत्ति में अधिकार मांगना जरूरी हो जाता है, जबकि उस की ससुराल वाले उसे निकाल दें और मायके से भी उसे मदद न मिले. दूसरी स्थिति उन परिवारों की रहती है जिन में पिता अथाह स्थावर संपत्ति का मालिक हो और उस के एकदो पुत्र ही हों तो पुत्री चाहती है कि पिता की संपत्ति में से उसे भी कुछ हिस्सा अवश्य मिलना चाहिए."

अधिकार का उपयोग कब उचित

सर्वेक्षण के दौरान कुछ पाठकों ने कानून में संशोधन की बात भी उठाई है. ऐसे पाठकों की दृष्टि में यह जरूरी नहीं कि हर स्थिति में पुत्री को अपने अधिकार की मांग करनी ही चाहिए. ग्वालियर की उमा उपाध्याय का कहना है कि निम्नलिखित परिस्थितियों में पुत्री को पिता की संपत्ति से उस का हिस्सा मिलना ही चाहिए:

—तलाकशुदा होने पर,

—विधवा होने पर,

—अशिक्षिता होने पर,

—ससुराल में आर्थिक शोषण होने पर,

—भाइयों के उपेक्षापूर्ण व्यवहार होने पर.

"इस के विपरीत यदि पुत्री का विवाह एक समृद्ध परिवार में हुआ हो और वह पूर्ण रूप से सुखी व संतुष्ट हो तो उसे पिता की संपत्ति में हिस्सा नहीं मिलना चाहिए."

लगभग इन्हीं परिस्थितियों में पुत्री को पिता की संपत्ति में से हिस्सा मिलने और न मिलने की बात कपूरथला के तेजपाल 'मस्ताना' ने कही है. उन्होंने अपना उदाहरण देते हुए स्पष्ट किया है, "मेरे पिता की कोई संपत्ति नहीं है. केवल छोटा सा एक घर है. हम दो भाई और तीन बहनें हैं. बहनों के विवाह हो गए. पिता ने मजदूरी कर के हमारा पालनपोषण किया. बहनों की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

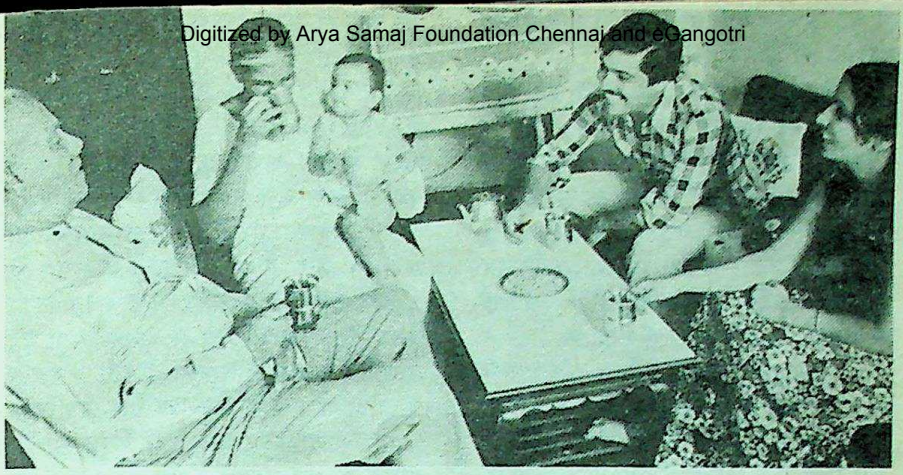

बेटे को पिता के बाद परिवार के जीविकोपार्जन का साधन माना जाता है. इसलिए उस पर मातापिता की विशेष अनुकंपा रहती है.

शादी का कर्जा हम अभी तक उतार रहे हैं, जबकि बड़े भाई के परिवार में दो बच्चे भी हैं. उन की आय भी कम है.

"अब यदि हमारे पिता की संपत्ति का बंटवारा हो तो हमारे पास क्या बचेगा? और बहनों के पल्ले क्या पड़ेगा?

"सभी बहनों से हमारे अच्छे संबंध हैं. वे भी हमारे सुखदुख में शामिल होती हैं. उन्होंने हम से कभी कुछ मांगा ही नहीं. विदा के समय जो कुछ दे दिया, सहर्ष स्वीकार कर लिया. संपत्ति के नाम पर हम दोनों भाइयों के पास मातापिता ही हैं. क्या उन का बंटवारा किया जा सकता है?"

कुछ पाठकों ने इस अधिकार को दहेज से भी जोड़ा है. ऐसे पाठकों का विचार है कि जिस लड़की की शादी में भरपूर दहेज दिया जाता है उसे पैतृक संपत्ति में से हिस्सा नहीं मांगना चाहिए. साथ ही कानून में भी ऐसा प्रावधान होना चाहिए. आरती कोछल (वारा सिवमी) का तो यहां तक कहना है, "शादी में दहेज के सामान की पक्की सूची दोनों पक्षों के साथसाथ लड़की व लड़के के पास भी सुरक्षित रहनी चाहिए."

ऐसा प्रावधान अब दहेज कानून में कर दिया गया है.

इसी क्रम में विलास जोशी (इंदौर) ने एक प्रश्न और उठाया है, "यदि लड़की का पिता मरते वक्त लाखों/हजारों रुपयों का कर्ज छोड़ जाए तो ऐसी स्थिति में विवाहित पुत्री का क्या कर्तव्य है? हमारे समाज में पिता का कर्ज चुकाने के लिए विवाहित पुत्री या उस की ससुराल वाले, जिन्होंने दहेज लिया है, अपनी इच्छा से लड़की के पिता का कर्ज चुकाने के लिए क्या आगे आएंगे?"

आजकल बढ़ती महंगाई के साथसाथ दहेज की मांग भी निरंतर बढ़ती जा रही है. कभीकभी तो यह पिता की कुल हैसियत से काफी अधिक हो जाती है, जैसा कि डा. देवव्रत भटनागर के साथ हुआ. उन के शब्दों में, "मैं ने 33 वर्षों से भी अधिक समय तक नौकरी की. सेवाकाल में कभी रिश्वत नहीं ली. आर्थिक तंगी में गांव का मकान तक बेचना पड़ा. सेवानिवृत्ति के बाद भविष्य निधि, ग्रेच्युटी तथा एकतिहाई पेंशन का राशिकरण कराने के बाद कुल 50 हजार रुपए प्राप्त हुए.

"मेरे दो पुत्र तथा तीन पुत्रियां हैं. जीवन भर की इस कमाई में मकान का प्रबंध करूं या पांचों संतानों को 10-10 हजार रुपए बांट कर अपने कर्तव्य का पालन करूं? इस द्वंद्व से उबर कर दोनों पुत्रियों के विवाह में काफी कमी करतेकरते सारी कमाई खर्च

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो गई. अर्थात पुत्री का भाग पुत्र से ढाई गुना अधिक हो कर रहा."

पिता की संपत्ति में पुत्री का कोई अधिकार नहीं होना चाहिए. इस के पक्ष में सर्वाधिक ठोस दलील यह दी जाती है कि शादी के पश्चात पुत्री का सीधा संबंध उस की ससुराल से जुड़ जाता है, जहां की सारी चल और अचल संपत्ति में उस का हिस्सा होता है. जयदेव शर्मा (लखनऊ) ने इसे बैंक के संयुक्त खाते के रूप में देखा है.

राजेंद्रकुमार अत्रे (इंदौर) का कहना है कि जब यह बात प्रत्येक परिवार में प्रत्येक पुत्री पर लागू होती है तो फिर पुत्री को अलग से पिता की संपत्ति में हिस्सा देने के लिए कानून बनाने का क्या औचित्य?

वैयक्तिक चेतना

क्षण का अनुभव अनंत में और अनंत का अनुभव क्षण में कराने वाली वैयक्तिक चेतना ही मूल जीवन धारा की एक मात्र उपलब्धि और सार्थकता है. —इलाचंद्र जोशी

कुछ शब्द भेद से इसी बात को देवेंद्रनाथ शुक्ल ने इस प्रकार कहा है, "कोई भी भाई यदि अपनी बहन को बिना अचल संपत्ति दिए पराए घर भेज देता है, तो एक पराई लड़की को पत्नी के रूप में बिना किसी अचल संपत्ति के सहर्ष स्वीकार भी कर लेता है. यह भी एक सचाई है.

"इसलिए लड़कियों को अचल संपत्ति में भागीदार बनाना न तो उचित है और न ही व्यावहारिक."

इसी लिए कानून की व्यावहारिकता पर प्रश्नचिह्न लगाते हुए भोपाल के संतोष श्रीवास्तव का विचार है, "इस कानून की आड़ ले कर लड़की की ससुराल वाले उसे उकसाते हैं और कहींकहीं तो प्रताड़ित भी करते हैं कि वह अपने पिता से अपने हिस्से की जायदाद मांगे.

"अभी हाल ही में एक प्रकरण देखने में आया है, जिस में लड़की के न चाहते हुए भी उस से अपने हिस्से की मांग के लिए मुकदमा दायर करवाया गया. उस के पति का कहना था कि तुम तो बस दस्तखत कर दो, बाकी हम देख लेंगे. जब लड़की ने ऐसा करने से मना कर दिया तो उसे मारापीटा गया. अंततः उसे हस्ताक्षर करने ही पड़े.

"संभवतः ऐसे ही मामलों से सचेत हो कर एक अन्य मामले में शादी के समय ही लड़की से उस के भाइयों व पिता ने यह लिखा लिया कि, "मैं भविष्य में अपने पिता की जायदाद से कोई मांग नहीं करूंगी." इस से ससुराल वाले भी मजबूर हो गए और बिना किसी परेशानी के भाइयों में पैतृक संपत्ति आपस में बांट दी गई.

"संयुक्त व्यवसाय की स्थिति में पिता की कुल जायदाद से लड़की का हिस्सा मांगना कदापि उचित नहीं कहा जा सकता क्योंकि इस में लड़की के भाइयों द्वारा मेहनत कर के कमाई गई संपत्ति भी शामिल होती है. इस दशा में यदि लड़की अपने पिता की जायदाद में हिस्सा मांगती भी है तो उसे उसी तारीख तक की जायदाद से हिस्सा दिया जाना चाहिए जब उस की शादी हुई थी."

दहेज की जड़

अधिसंख्य पाठकों ने हिंदू उत्तराधिकार 1956 के अंतर्गत पिता की संपत्ति में पुत्री के अधिकार को दहेज की जड़ माना है. उन की दृष्टि में वर पक्ष दहेज के रूप में इस अधिकार का ही परोक्षतः प्रयोग करते हैं, जैसा कि कुसुमलता जैन का खयाल है, "यह कानून बनने के बाद से दहेज जैसी कुप्रथा बढ़ती जा रही है... पहले लोग खुशी से लड़की की शादी में रुपया लगाते थे.

"मेरे ताऊजी की 15 लड़कियां हैं. उन्होंने उन लड़कियों को कभी भार नहीं समझा. लेकिन आज दहेज के बढ़ते भार की वजह से एकदो लड़कियां भी भारी पड़ रही हैं. दहेज मांगने वाले इस कानून के मुताबिक लड़की वालों से दहेज लेना अपना हक समझते हैं."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

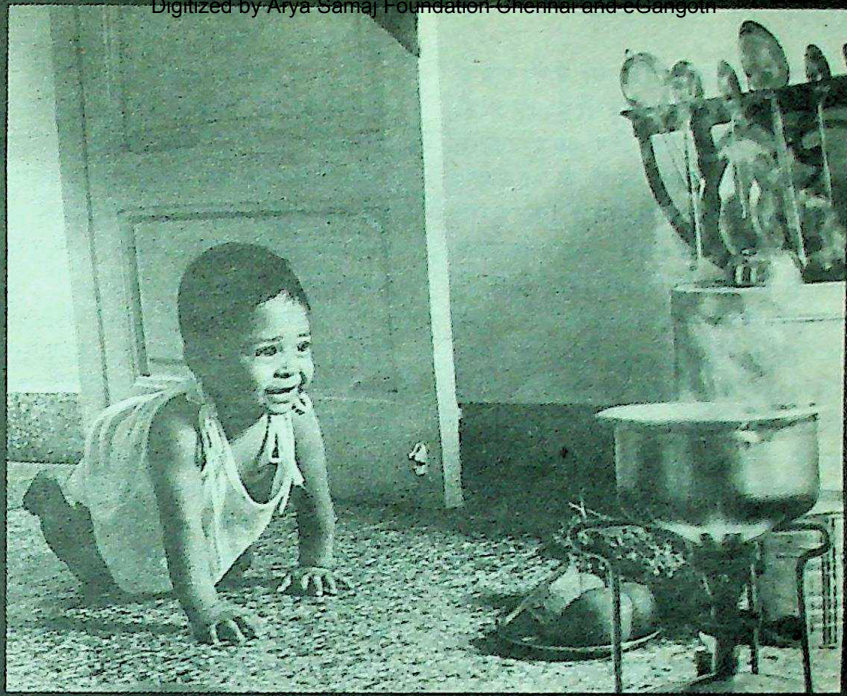

कुछ क्षणों बाद

बच्ची ने रसोईघर में प्रवेश किया...
यह उसका प्रथम और अंतिम प्रवेश था.

फ़र्श पर स्टोव जल रहा था और वह नीली-नीली ज्वालाओं से आकर्षित हो गई. बाक़ी की घटना शोकमय है. इससे पहले कि आपके परिवार के साथ कोई ऐसी दुर्घटना हो, ध्यान रखें. रसोईघर में सुरक्षा नियमों का पालन करें. कुछ सुरक्षा नियम इस प्रकार हैं : ● बच्चों को रसोईघर में कभी न खेलने दें. ● स्टोव (गैस/केरोसिन) को हमेशा किसी ऊंचे प्लेटफ़ार्म पर ही रखें, ज़मीन पर कभी नहीं ● प्रेशर स्टोव में ज़रूरत से ज़्यादा हवा कभी न भरें. ● खाना पकाए जाने वाले स्थान के ठीक ऊपर सामान रखने की अलमारियां और तख़्तियां कभी न बनवाएं. ● गैस स्टोव इस्तेमाल करते समय तेल कंपनियों द्वारा दिए गए निर्देशों का पालन करें.

सुरक्षित रहें. आपके परिवार की खुशियां कहीं आंसुओं में न बदल जाएं.

LPA
सुरक्षेव अमृतम्

लॉस प्रिवेन्शन एसोसिएशन ऑफ़ इंडिया लि.
(जनरल इन्श्योरन्स इंडस्ट्री द्वारा प्रायोजित)
वॉर्डन हाउस, सर पी. एम. रोड, मुम्बई 400 001

LINTAS LPA AS 14 1811 HI

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोहरा नहीं तिहरा बोझ

इस में दो राय नहीं कि दहेज की कुप्रथा ने कन्या पक्ष की कमर तोड़ दी है. दहेज की बढ़ती मांगों में नकद और आधुनिकतम साजसामान की लंबी सूची के साथसाथ स्वर्णाभूषण भी शामिल होते हैं. फिर बरात की व्यवस्था, खानपान, स्वागतसत्कार आदि में भी कम खर्च नहीं होता. उस पर विवाहित कन्या के भाईबहन छोटे, प्रायः नाबालिग हैं, तो उस का पिता से अपना अधिकार मांगना पिता पर दोहरा ही नहीं तिहरा बोझ होगा इस संदर्भ में उचित ही कहा है, "पिता की मृत्यु के पश्चात यदि बहन छोटे से मकान, छोटी सी दुकान (जो भाई का एकमात्र जीविकोपार्जन का साधन हो) को बंटवाना चाहे तो स्वाभाविक है कि उस पर अत्यधिक बोझ बढ़ेगा—आर्थिक भी और मानसिक भी. मातापिता की सारी जिम्मेदारी हर हाल में पुत्रों पर ही होती है.

"ऐसे में बहन के द्वारा एक बोझ दहेज, दूसरा अकेले मातापिता एवं नाबालिग भाईबहनों को संभालने की जिम्मेदारी और तीसरा बहन के द्वारा किया गया दावा—ये तीन बोझ बढ़ेंगे."

वसीयतः एक समाधान?

उपर्युक्त विचारों की परस्पर भिन्नता को देखते हुए किसी एक निर्णय पर पहुंच पाना एक जटिल समस्या है. पीयूषकुमार श्रीवास्तव (विदिशा) की दृष्टि में, "इस समस्या के समाधान के लिए पिता को चाहिए कि वह वसीयत कर जाएं, जिस में पुत्री को बराबर का हक देने का भी उल्लेख हो, अन्यथा पुत्री हक से वंचित रह जाएगी. इस प्रकार बराबरी का हक मिलने से दहेज के दानव से छुटकारा तो मिलेगा ही, हमारा समाज भी उन्नतिशील बनेगा."

वसीयत का यह सुझाव कहां तक समीचीन है, इस का अंदाजा जबलपुर के राममोहन की आपबीती से सहज ही लगाया जा सकता है.

"घटना अगस्त 1949 की है. उस समय पिता की संपत्ति पर पुत्री का अधिकार कानून प्रदत्त नहीं था. मेरे पितामह ने वसीयत कर दी थी कि अपने जीवन काल में वही अपनी संपत्ति के मालिक रहेंगे, किंतु उन की मृत्यु के बाद एक हिस्से का मालिक मैं बनूंगा (क्योंकि मेरे पिता की मृत्यु मेरे जन्म के नौ माह बाद ही हो गई थी) और दूसरे हिस्से का मालिक मेरा चचेरा भाई होगा (क्योंकि मेरे चाचा बेहद आवारा थे.)

"मेरे बालिग होने तक मेरे हिस्से की संरक्षक मेरी मां को नियुक्त किया गया था. चाचाजी के आवारापन और चाचीजी की मृत्यु हो जाने के कारण पांच वर्षीय चचेरे भाई की संपत्ति के लिए हमारे फूफाजी को संरक्षक बनाया गया था. चूंकि हम दोनों ही

जीवन रक्षक दवा की खोज

चिकित्सकों ने रूरे में ग्रेटवर्ग स्थित बीचम जैव विज्ञान अनुसंधान केंद्र में 10 वर्षों के कठिन शोधकार्य और परीक्षणों के बाद एक ऐसी दवा बनाई है जो दिल के घातक दौरे में रामबाण साबित होगी.

इस जीवन रक्षक दवा का नाम है 'इमिनसे'. हाल ही में ब्रिटेन के स्वास्थ्य विभाग की ओर से इस के प्रयोग की अनुमति दे दी गई है. इमिनसे की सूई नस में लगाई जाती है. इस में केवल चार से पांच मिनट का समय लगता है. दवा नस में प्रवेश करते ही बंद धमनी को खोल देती है और रक्त का रुका हुआ प्रवाह फिर से चालू हो जाता है. इस की सब से बड़ी उपलब्धि यह है कि इस से दिल की मांसपेशियों को कोई हानि नहीं पहुचती है.

फिलहाल यह दवा काफी महंगी है. लेकिन इस की लोकप्रियता को देखते हुए ब्रिटेन के डाक्टरों का मानना है कि यह दवा लाखों को जीवनदान देगी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

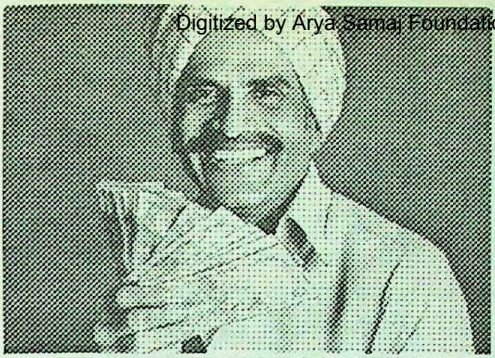

"यूनाइटेड इंडिया इन्श्युरेन्स ने मुसीबत के वक्त मेरी मदद की– और वह भी कितनी जल्दी!

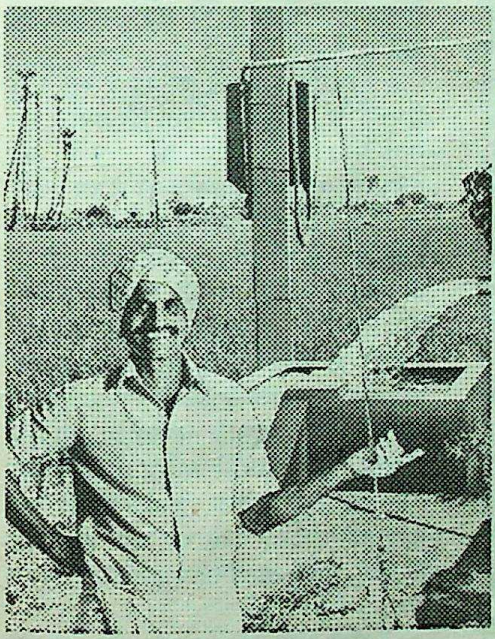

मैं खुशनसीब था. मैंने उनकी बहुत कम कीमत की कृषि पंपसेट बीमा पॉलिसी ली थी.

यह मेरा सही फैसला था. क्योंकि जब मेरा पपसेट बिगड़ा, मुझे उसकी मरम्मत के लिए बहुत जल्द ही अपने नुकसान की भरपाई मिल गयी.

मेरी देखादेखी अब तो मेरे कई दोस्तों ने भी यही किया है.

आप भी यह बीमा पॉलिसी क्यों नहीं लेते? इसे एकदम सस्ता पायेंगे."

यूनाइटेड इंडिया की
कृषि पंपसेट बीमा पॉलिसी

मशीन या बिजली की खराबी से पंपसेट के बिगड़ने; पपसेट को आग लगने/बिजली गिरने; या उसके चोरी हो जाने से आपके पंपसेट की सुरक्षा.

अधिक जानकारी के लिए, अपने क्षेत्र के यूनाइटेड इंडिया के कार्यालय या एजेंट से संपर्क करें:

UNITED INDIA

यूनाइटेड इंडिया इन्श्यूरेन्स कं. लि.

(जनरल इन्श्यूरेन्स कॉर्पोरेशन ऑफ़ इंडिया की सहायक संस्था)
२४, व्हाइट्स रोड, मद्रास-६०००१४.

HTA 7774

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कमजोर स्थिति में थे, अतः पूरी संपत्ति की सुरक्षा एवं देखभाल के लिए तीसरा हिस्सा हमारी बूआ को भी दिया गया था, ताकि फूफाजी, जो स्वयं एक छोटे मोटे जमींदार थे, को हमारे वयस्क होने तक हमारी संपत्ति की देखभाल के लिए अपने पास से खर्च न उठाना पड़े.

"वसीयत करने के चार वर्ष बाद पितामह की मृत्यु हो गई. मेरी मां शिक्षित और अध्यापिका थीं. अतः मुझे योग्य बनाने में वह समर्थ थीं, किंतु असामियों की छीनाझपटी, किराया, लगान वसूल करने और जमीन पर नाजायज कब्जा करने वालों से निबट पाना उन के वश में नहीं था.

"दूसरी ओर फूफाजी आते और यह कह कर कि वह दूसरी जगह रह कर जायदाद की देखभाल नहीं कर सकते, मेरे चचेरे भाई की जमीनजायदाद (जिस पर मेरे चाचा पहले ही अनधिकृत रूप से कर्ज लेते जा रहे थे) बेच कर मेरे चचेरे भाई को अपने साथ ले गए. (यहां यह गौरतलब है कि इसी जमीनजायदाद की सुरक्षा के लिए उन्हें संरक्षक नियुक्त किया गया था.) यही नहीं, वह अपने हिस्से की जायदाद पर भी कर्ज लेते जा रहे थे.

"कुछ माह बाद चाचा मर गए. चचेरा भाई बूआफूफा के परिवार की गुलामी से तंग आ कर कहीं चला गया तो आज तक नहीं लौटा.

"बालिग होने और पूर्वी उत्तर प्रदेश में नौकरी लग जाने पर मैं ने यह सोच कर कि अपने पैतृक स्थल पर कभी नहीं पहुंच सकता, अपने हिस्से की जमीनजायदाद बेच दी और पैसा अपने व मां के नाम जमा कर दिया था. मेरी शादी हो चुकी थी. एक पुत्र भी था. वे दोनों मां के पास ही रहते थे.

"उन्हीं दिनों मेरे फूफाजी आए. उन्होंने मां को उलटीसीधी पट्टी पढ़ाई कि पूर्वजों की निशानी बेची नहीं जाती. उन्होंने मां को भरमा कर बूआ के हिस्से की वह जायदाद बेच दी जिस पर वह कर्ज ले चुके थे और जिस पर अधिकांश आसामी अरसे से बिना लगान दिए अवैध कब्जा किए थे.

"बाद में फूफा आ कर मां को आश्वासन दे गए कि मां मुकदमा दायर कर दें. वह आ कर मदद करते रहेंगे. वह मुकदमा भी दायर करा गए.

"मां ने ये सब बातें मुझे सूचित नहीं कीं. मुझे तो बाद में आने पर यह किस्सा पता चला. चारपांच वर्ष तक मुकदमे चले. मां के मुकदमे निरस्त होते गए. अंत में मां ने औनेपौने दाम ले कर उन्हीं असामियों को पितामह की बचीखुची निशानी बेच कर पिंड छुड़ाया.

"मेरे खाते में यह 'आरोप' आया कि मैं ने मुकदमा लड़ने के लिए पैसा नहीं दिया. जबकि सचाई यह है कि मैं पारिवारिक खर्च के लिए पैसा भेजता था, क्योंकि मेरी पत्नी व बच्चे मां के पास ही रहते थे. अपने जीवन की हानि सूचक इस बैलेंस शीट का स्पष्टीकरण मैं आज भी अपनी संतानों को नहीं दे पाया हूं."

राममोहन के इस अनुभव से कई बातें उभरती हैं. जैसे प्रश्न पिता की संपत्ति पर मात्र पुत्री के अधिकार का नहीं है. जो समस्याएं पुत्री के अधिकार को ले कर उठाई जाती हैं वे पुत्रों पर भी समान रूप से लागू होती हैं. जो लोग पैतृक संपत्ति में पुत्रों के योगदान की चर्चा करते हैं, तो कोई जरूरी नहीं कि उस में सभी पुत्रों का योगदान बराबर हो. कोई पुत्र ज्यादा योग्यता व श्रम योगदान में लगाता है और कोई कम. कोई नौकरी में चला जाता है तो कोई आवारागर्दी में मस्त रह कर संपत्ति का क्षय भी करता है. ऐसा भी हो सकता है कि कोई पुत्र पारिवारिक कलह के कारण पहले ही अलग हो जाए. वह न तो योगदान करेगा और न ही क्षय.

फिर संपत्ति में योगदान और क्षय की बात व्यवसाय, उद्योग, नकद संपत्ति आदि संदर्भ में तो ठीक है, पर मकान, जमीन आदि अचल संपत्ति, होने पर पुत्र, पुत्रियां (दामाद) उस पर निर्भर न रह कर अपनेअपने कारोबार, नौकरी आदि में इधरउधर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

बिखर जाते हैं. माना एकदो संतानें ही स्थानीय जमीन, मकान आदि की देखभाल करती हैं अथवा वह उन के अधिकार में रह जाती हैं. ऐसी संपत्ति की वसीयत करने या बिना वसीयत किए ही मर जाने वाले व्यक्ति की संतानें उस पर कब्जा करने या हिस्सा लेने में प्रायः असफल हो जाती हैं, जब उन के स्थानीय भाईबहन उन्हें इस पर पैर भी नहीं रखने देते.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूरस्थ भाईबहन कोर्टकचहरी, मुकदमे, वकीलों के मोटे खर्च, असीमित समयावधि आदि के चक्कर में फंसने से परेशान हो कर भी निश्चित नहीं हो सकते कि वे अपना हिस्सा पा भी सकेंगे या नहीं. यदि वे किसी प्रकार जीत भी जाएं तो स्थानीय जनमत स्थानीय बहनभाई के साथ ही होगा और ऐसी स्थिति में दूरवासी दावेदार मुकदमा जीतने पर भी आसानी से संपत्ति का कब्जा नहीं ले पाएंगे. दूसरे यह भी संभव है कि स्थानीय भाईबहन उच्च न्यायालय में अपील कर के मामले को और भी लंबा खींच ले जाएं और ऐसी हालत में दूरवासी भाईबहनों की हिम्मत जवाब दे जाए.

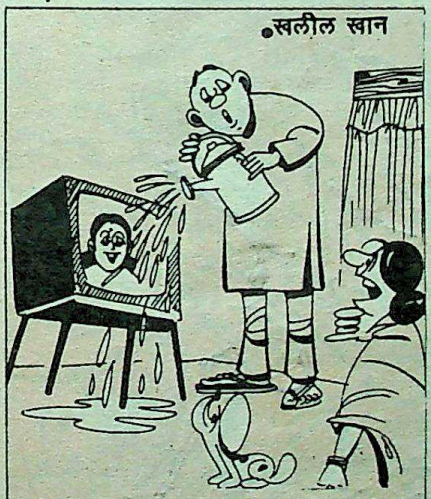

"दंगाफसाद, आग वगैरह की खबरों से कल पड़ोसियों का टीवी सुलग उठा था, इसलिए पानी डाल रहा हूं."

एक स्थिति और भी हो सकती है कि पुत्रपुत्रियां नाबालिग हों या मर गए हों, ऐसी स्थिति में भी वे संपत्ति में समान अधिकार से वंचित रह सकते हैं.

समग्रतः इस समस्या का विश्लेषण करने पर निम्नलिखित तीन कारण सामने आते हैं, जो प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से प्रभावी रहते हैं.

1. हमारी धार्मिक मनोवृत्ति,
2. सामाजिक रीतिनीति, और
3. महंगी और असुविधाजनक न्याय-प्रणाली.

यों देखा जाए तो धर्म, सामाजिक रीतिनीति और न्याय व्यवस्था—सभी का आधार नैतिकता और मानवीय संरक्षण है. लेकिन तीनों में पर्याप्त विरोधाभास है. हमारी विडंबना यह है कि हम धर्म, समाज और संविधान तीनों को एक साथ मिला कर चलना चाहते हैं.

एक ओर तो हम धर्म के वशीभूत हो कर पुत्र प्राप्ति के पीछे दीवाने हैं और पुत्र प्राप्त हो जाने पर पुत्रियों को उपेक्षित कर देते हैं, दूसरी ओर सामाजिक रीतिनीतियों के फेर में पड़ कर कर्ज ले कर भी उन्हें निबाहते हैं और पुत्र व पुत्रियों को अलगअलग नजरिए से देखते हैं. इन कारणों से जब विवाद उठता है, समस्या खड़ी होती है तब हम चाहते हैं कि कानून हमारी सहायता करे.

कानून की, संविधान की अपनी सीमाएं होती हैं. उन्हें नजरअंदाज कर के हम हर बात अपने पक्ष में करना चाहते हैं. साथ ही अपनी एक टांग धर्म में और दूसरी समाज में फंसाए रखना चाहते हैं भले ही गरदन कानून के शिकंजे में हो. अतः यदि हम अपनी धार्मिक मनोवृत्ति और सामाजिक रीतिरिवाजों से मुक्त हो कर एकराष्ट्रीय समाज की स्थापना कर सकें, जिस में पुत्रपुत्रियां स्वयंमेव अपने विवेक से पैतृक संपत्ति का बंटवारा कर सकें तो इस समस्या का अपनेआप ही समाधान हो जाएगा. •

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चूहे चाचा का खत

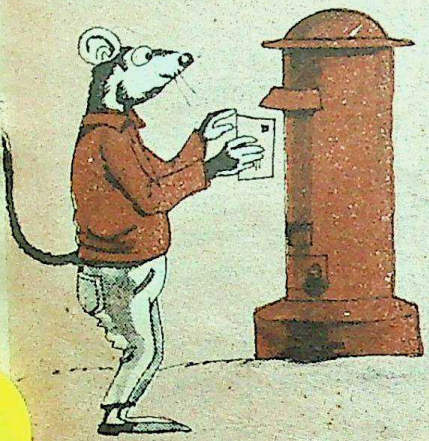

चूहे चाचा ने नानाजी को, एक सुंदर सा खत डाला
नानाजी को रामराम लिख, लेटर बाक्स में डाला.

खत जवाब में नानाजी ने, लिखी बहुत सी बातें,
बेटे क्यों तुम हम से रूठे, खतों से हमें सताते.

होगी बात वही जो तुम, मांग करोगे अपनी,
चिट्ठीपाती का झंझट छोड़, तुम रख देओ लेखनी.

गुस्सा छोड़ वहीं पर अपना, घर को हो जाओ रवाना,
तुम्हारे लिए मैं टाई, पेंट और तैयार रखूंगा खाना.

नानाजी का खत मिलते ही, चूहे की तन गई मूंछें,
मैं वैसे ही घर आऊंगा, जैसे आया था बिन पूछे.

नानाजी अब खत नहीं लिखूंगा, तुम जाओ अपने रास्ते,
अंतिम बार मेरा स्वीकार करो नमस्ते.

—अमरलाल माह

रास्ता ढूंढ़ो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ननमुन... — पंकज गोस्वामी

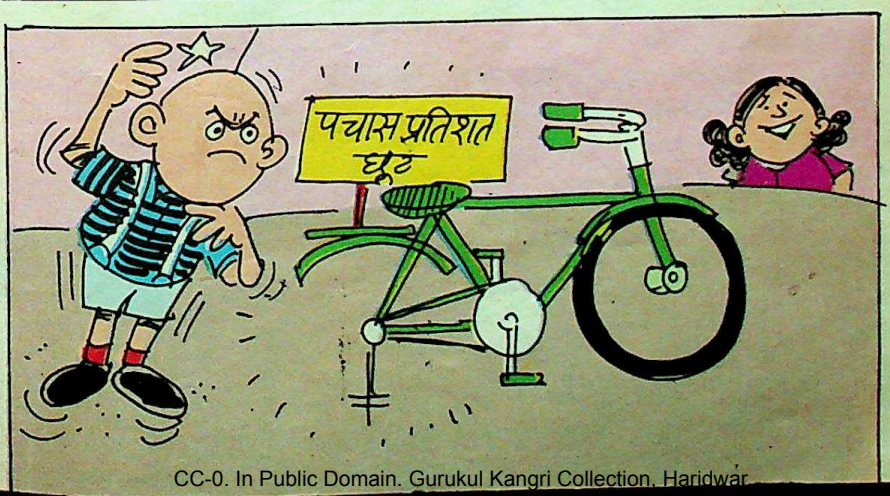

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मृगतृष्णा

कहानी • संतोष बजाज

हाल तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा. माइक पर प्रिंसिपल का गर्व एवं प्रशंसा से भरा स्वर सुनाई दे रहा था, "आज हमारा विद्यालय अंतरविद्यालय प्रतियोगिता में प्रथम आया है. इस संगीत एवं नृत्य की प्रतियोगिता में प्रथम आने का सारा श्रेय हमारी संगीत एवं नृत्य की अध्यापिका मीना रानी को जाता है, जिन्होंने इतने परिश्रम और लगन से यह सारा कार्यक्रम तैयार करवाया."

हाल एक बार फिर तालियों से गूंज उठा. मीना ने अपने सहकर्मियों एवं मुख्य अतिथि के सम्मुख खड़े हो कर अपना स्थान ग्रहण किया. सब की प्रशंसा भरी नजरें केवल मीना की ओर उठ रही थीं. वह मन ही मन फूली न समा रही थी. ऐसी सफलता की उस ने हमेशा अभिलाषा की थी, लेकिन उसे विश्वास न था कि यह सब कुछ सचमुच में संभव हो पाएगा.

समारोह समाप्त हुआ. मुख्य अतिथि एवं स्टाफ के सभी सदस्य उठ कर उधर चले गए, जहां जलपान वगैरह का आयोजन था. वहां भी बातचीत में सब ने मीना की सराहना की. थोड़ी देर पश्चात सभी ने अतिथियों को विदा दी और विद्यालय के इस वार्षिक समारोह की सफलता पर आनंदित होते हुए अपनेअपने घर लौट आए. इसी समारोह के उपलक्ष्य में अगले दिन स्कूल में छुट्टी की घोषणा भी कर दी गई.

मीना घर पहुंची तो आनंदविभोर थी. उस ने कपड़े बदले और आराम से बिस्तर पर लेट गई. वह अतीत में खो गई. उसे लगा कि आज की इस सफलता के पीछे एक लंबी कहानी है, जिसे मन ही मन वह दोहराने लगी.

तब मीना मात्र 18 वर्ष की थी, जब उस का विवाह शहर के एक जानेमाने धनी परिवार के बड़े बेटे नवीन के साथ तय हो गया था. ऐसे रिश्ते के लिए मातापिता ने उसे बी.ए. की पढ़ाई भी पूरी न करने दी. वह अपने पिता की लाड़ली बेटी थी. सुंदर, गुणवती, पढ़ाईलिखाई में तेज और घर के कामकाज में भी निपुण थी. इस के साथ ही उसे संगीत एवं नृत्य के प्रति विशेष रुचि थी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पिताजी ने 13 वर्ष की आयु से ही मीना की इस रुचि को प्रोत्साहन देने के लिए एक संगीत अध्यापक का प्रबंध घर पर ही कर दिया था. मीना नियमित रूप से संगीत एवं नृत्य का अभ्यास करती, पहले स्कूल और फिर कालिज में. कोई भी समारोह उस के नृत्य अथवा गायन के बिना अधूरा माना जाता. उस का गला काफी सुरीला था. घरपरिवार में भी कभी कोई समारोह होता तो उस से गाने के लिए सदैव फरमाइश की जाती. मीना भी निस्संकोच गा देती थी. उस की तो बहुत इच्छा थी कि वह संगीत की दुनिया में बहुत आगे बढ़े, संगीत विशारद बने और इस क्षेत्र में खूब नाम कमाए. लेकिन बीच में ही विवाह का प्रस्ताव आ गया तो सब कुछ सपना सा बन कर रह गया.

विवाह के पश्चात जब मीना ने अपने

नेहा के पास किसी लड़के का पत्र देख कर उस की मां मीना ने गुस्से से आगबबूला हो उस पर हाथ उठा लिया. लेकिन नेहा ने मां का हाथ रोक कर जो कुछ कहा, उस से वह स्तंभित रह गई. बेटी के भविष्य के लिए अब मीना मृगतृष्णा के उस जाल से बाहर निकलने के लिए छटपटाने लगी जिसे उस ने खुद ही ओढ़ा था.

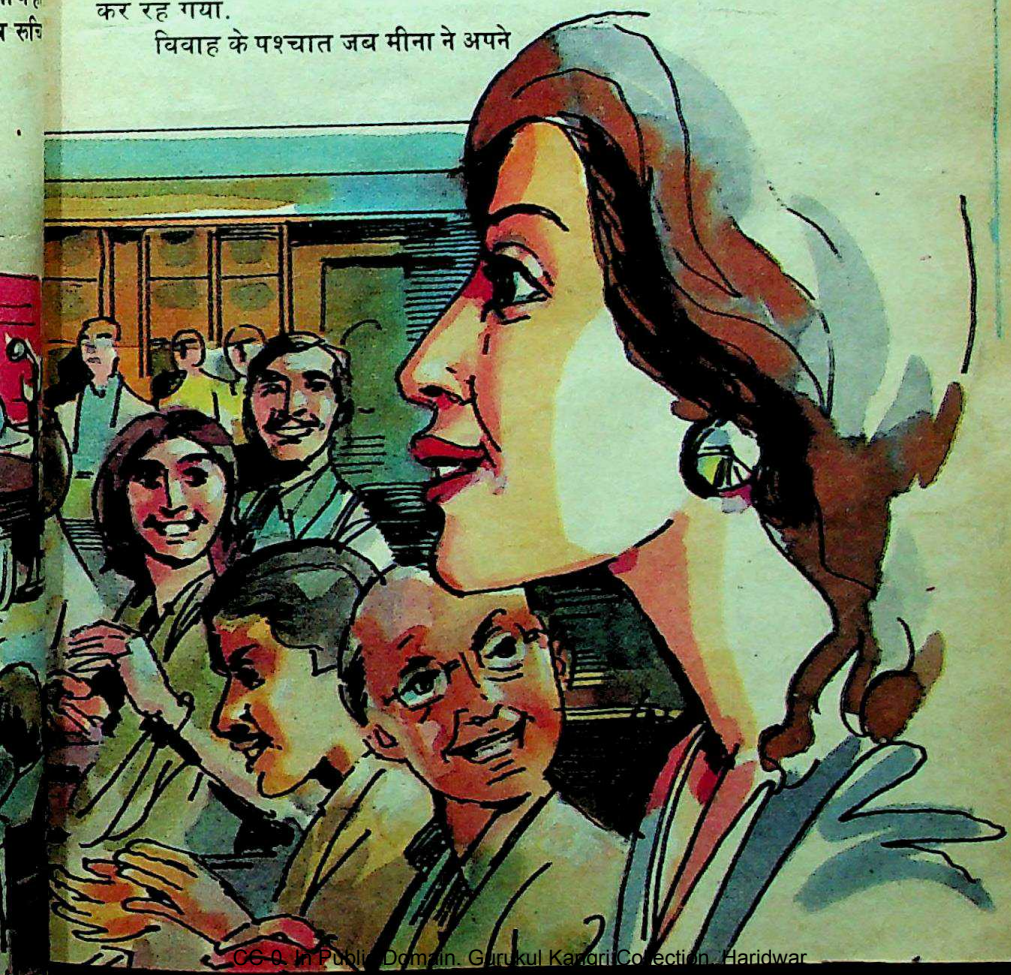

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पति को नजदीक से जाना तो उसे बहुत आश्चर्य एवं निराशा का सामना करना पड़ा. नवीन एवं मीना की आयु में 10 वर्ष का अंतर था. मीना स्वच्छंद स्वभाव की, हंसमुख, जीवन की उलझनों से दूर रागरंग एवं कला की दुनिया में विचरण करने वाली अल्हड़ युवती थी. उस ने वैवाहिक जीवन के बड़े रसीले सपने बुने थे.

लेकिन नवीन उच्च पदाधिकारी, परिपक्व बुद्धि वाले, अंतर्मुखी, कठोर, यथार्थवादी और अपने स्वभाव से कुछ हद तक स्वार्थी पुरुष थे. उन की दिनचर्या का अर्थ था, सुबह दफ्तर जाना और शाम को दफ्तर से लौट कर आए तो खापी कर जल्दी ही सो जाना. घूमने या किसी को आमंत्रित करने के नाम पर उन का एक ही उत्तर होता था कि वह थक गए हैं. यदि छुट्टी के दिन उन से कहीं जाने के लिए मीना कहती तो वह इतना ही उत्तर देते, "सप्ताह में एक दिन छुट्टी का होता है, उस दिन तो आराम करने दिया करो."

मीना मन मसोस कर रह जाती. उस के पति का स्वभाव ही कुछ ऐसा था, जिसे वह लाख चाहने पर, प्रयत्न करने पर भी बदल नहीं पाई. धीरेधीरे उस का मन वितृष्णा से भरने लगा. पति तो खाना खाते और सोते ही खर्राटे भरने लगते, लेकिन मीना तनमन से प्यासी बगल में लेटी कभी आंसू बहाती तो कभी स्वयं को कोसती रहती. सब कुछ होते हुए भी कुछ नहीं था, उस के पास. दुनिया की दृष्टि में वह अत्यंत सुखी थी. घर सुखसंपदा से भरा था. विवाह के पहले वर्ष में ही एक सुंदर सी बिटिया का जन्म हुआ, जिस का नाम उस ने नेहा रखा.

नेहा धीरेधीरे बड़ी होने लगी. जीवन अपने पुराने ढर्रे पर चलता रहा. मीना का मन सदैव भटकता रहता, उसे कहीं शांति नहीं मिलती थी. इस मानसिक दबाव एवं निराशा के कारण उस का स्वास्थ्य भी धीरेधीरे गिरने लगा. नवीन तो वैसे ही बहुत व्यावहारिक व्यक्ति थे. अकसर वह कह देते, "बीमार हो तो दवा लो, अब पास बैठ कर तीमारदारी करने का समय भला मेरे पास कहां है?"

ऐसे ही एक दिन मीना की तबीयत अचानक ज्यादा खराब हो गई थी. नवीन ने दफ्तर जाते समय अपने मित्र डाक्टर आनंद को कह दिया था कि जब वह दवाखाना बंद कर के जाए तो रास्ते में उन के घर पर मीना को भी देखता जाए.

लगभग एक बजे का समय था. डाक्टर आनंद आए तो मीना ने बड़ी कठिनाई से उठ कर दरवाजा खोला और पुनः आ कर बिस्तर पर लेट गई. वह आनंद की पूर्व परिचित थी. आनंद ने मीना की पूरी तरह से जांच की. उसे तो ऐसा कोई विशेष रोग नहीं दिखाई दिया. थोड़ी देर बातचीत कर के दवा देने के पश्चात वह लौट गया और जातेजाते यह कह गया कि मीना को जब भी आवश्यकता हो वह उन के दवाखाने फोन कर लिया करे.

उस दिन आनंद के चले जाने के बाद मीना बहुत देर तक उसी के बारे में सोचती रही. आनंद का हंसमुख व्यक्तित्व उसे बहुत लुभावना लगता था. इस मुलाकात में उस की सहानुभूतिपूर्ण बातचीत से तो वह उस की ओर एक अजीब सा आकर्षण महसूस करने लगी थी. वह रोज आनंद से बात करने और मिलने के नएनए बहाने सोचती.

कुछ दिन बाद मीना अकसर आनंद को फोन करने लगी. कभीकभी तो वह उसे घर पर ही बुला लेती. आनंद भी मीना में काफी दिलचस्पी लेने लगा था. ऐसे समय में नेहा स्कूल गई होती और नवीन दफ्तर. धीरेधीरे ये मुलाकातें काफी गहरी होती जा रही थीं. एकदो बार तो ऐसा भी हुआ कि नेहा घर पर थी और आनंद का फोन आया. कई बार ऐसा भी हुआ कि नेहा स्कूल से लौटी तो उस ने आनंद को जाते हुए देखा या उस की कार अपने घर के बाहर खड़ी देखी. नेहा अब 14 वर्ष की हो गई थी और उसे सब कुछ समझ आने लगा था. लेकिन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उस ने कभी मुंह से कुछ नहीं कहा था.

एक दिन नेहा पढ़ रही थी और मीना पास ही बैठी कुछ बुन रही थी. अचानक मीना ने देखा कि नेहा की किताब से एक तह किया हुआ कागज गिरा है. जैसे ही नेहा ने नीचे मुंह कर के कागज उठाने की कोशिश की, मीना ने उस का हाथ पकड़ लिया. नेहा ने अपनी मुट्ठी में उस कागज को बुरी तरह भींच रखा था. मीना ने जोर लगा कर उसे खोला और पढ़ने लगी.

मीना का शक ठीक निकला. वह किसी लड़के का पत्र था, जो उस ने नेहा को लिखा था. काफी बचकाना सा खत था. पढ़ कर मीना को तो जैसे लकवा मार गया. एक

खत पढ़ कर मीना नेहा से कड़क कर बोली, "यह सब क्या है... यह लड़का कौन है? यह कब से चल रहा है?"

क्षण में ही संभल कर वह नेहा से कड़क कर बोली, "यह सब क्या है... यह लड़का कौन है? यह कब से चल रहा है?" मीना प्रश्नों की बौछार सी करती हुई क्रोध में आपे से बाहर हो गई. वह अपने को रोक न सकी. उस का हाथ नेहा को मारने के लिए उठा.

अब तक जो नेहा चुपचाप अपराधी की भांति सिर झुकाए सब कुछ सुन रही थी, चुप न रह सकी. अपनी मां का अपनी ओर उठा हुआ हाथ उस ने बड़ी धृष्टता से रोक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिया और दोगुने आक्रोश एवं घृणा भरे स्वर में बोली, "आप क्यों इतना ताव खा रही हैं. आप मुझे कैसे कुछ कह सकती हैं, क्या मैं नहीं जानती कि आप दिन भर आनंद चाचा के साथ क्या करती रहती हैं."

इतना सुनते ही मीना के पैरों तले जमीन खिसक गई. नेहा बोले जा रही थी, "आप समझती हैं कि जैसे मैं कुछ समझती ही नहीं. कभी आप आनंद चाचा से फोन पर बात करती हैं, कभी उन के साथ घूमने, खरीदारी करने जाती हैं और मुझ से बहाना बनाती हैं कि फलां सहेली के साथ जा रही हूं और फलांफलां किटी पार्टी में जा रही हूं. क्या मैं नहीं जानती कि आप कहांकहां जाती हैं, मैं सब कुछ जानती हूं." कहतेकहते नेहा ने अपनी किताबें समेटीं और दूसरे कमरे में चली गई. उस के व्यवहार से लगा कि न तो उसे किसी प्रकार का मां का भय है और न ही उस के मन में अपराधबोध.

इस बात को घटित हुए कई दिन बीत गए. मीना को पछतावा भी हुआ अपने व्यवहार पर, क्रोध भी आया और ग्लानि भी हुई कि वह क्यों भटक रही थी इस मृगतृष्णा के पीछे. आज वह सुदृढ़ होती तो ऐसी नौबत ही क्यों आती? उस ने मन को समझाया और अपनेआप पर काबू पाने की भरसक कोशिश की. इस कोशिश से धीरेधीरे उस की विचारधारा में परिवर्तन हुआ. उस ने बड़ी कठिनाई से स्वयं को और फिर आनंद को समझाया कि इस रिश्ते की बुनियाद कहीं नहीं, इस का परिणाम कुछ नहीं है.

मीना को बेटी की चिंता सब से अधिक थी. उस ने अपनेआप में घुटते रहना स्वीकार कर लिया, लेकिन उसे यह स्वीकार नहीं था कि उस की इस कमजोरी का लाभ उठा कर नेहा कहीं गलत कदम उठा ले. उस के जीवन में फिर से रिक्तता छाने लगी. दिन भर कभी वह रेडियो सुनती, कभी कोई किताब पढ़ती और कभी अखबार के पन्ने पलटती रहती. उसे कुछ सूझता ही न था कि वह क्या करे, अपने मन को कैसे शांत करे.

एक दिन यों ही अखबार के पन्ने पलटतेपलटते मीना की दृष्टि एक विज्ञापन पर पड़ी. एक विद्यालय का विज्ञापन था. जिस में एक संगीत अध्यापिका की आवश्यकता के लिए लिखा गया था एवं संपर्क करने के लिए शीघ्र बुलाया गया था. विज्ञापन पढ़ कर उसे लगा कि उसे एक दिशा मिल गई है. उस का जीवन, जो दिशाहीन हो कर बिखर रहा था, उसे समेटने का सुंदर अवसर उसे मिल रहा है.

मीना धीरे से उठी और स्नेह भरी दृष्टि से उस ने कोने में पड़े उस तानपूरे की ओर देखा, जिस की बरसों से कभी धूल भी न झाड़ी थी. उस दिन वह अपनी उस प्यारी वस्तु के प्रति एक नई ममता से भर उठी. तानपूरे का आवरण उतारा, उसे ठीक किया और तारों को झंकृत किया. दिन भर वह यही सोचती रही कि कल का दिन आए और वह उस दिए हुए पते पर पहुंच जाए.

जैसेतैसे वह रात कटी. दिन हुआ तो न उस ने पति से बात की और न ही नेहा से क्योंकि उसे पूरी तरह से विश्वास नहीं था कि नौकरी उसे मिल ही जाएगी. मीना ने सोचा था कि नौकरी मिल जाएगी, तभी वह पति से बात करेगी.

निश्चित समय पर मीना साक्षात्कार के लिए पहुंची. आवेदनपत्र की मांग न करते हुए विद्यालय वालों ने सीधे साक्षात्कार करने के लिए कहा था, इसी लिए मीना अगले ही दिन उन के सामने प्रस्तुत थी. बातचीत और साक्षात्कार से वे लोग काफी संतुष्ट हुए और वहीं उस का चयन हो गया.

तीसरे दिन मीना को विद्यालय की तरफ से पत्र मिला. मीना को सभी शर्तें मंजूर थीं. वैसे भी कोई विशेष शर्त थी भी नहीं. समय भी ठीकठाक था और पैसों की तो मीना को अधिक चिंता ही नहीं थी. वैसे विद्यालय वाले उसे अच्छी तनख्वाह देने को कह रहे थे. वेतन से अधिक आवश्यकता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मेरे बेटे के सपने दिन पर दिन बढ़ते ही जा रहे हैं."

चुस्ती-फुर्ती और शरारतों का पुलिंदा है मेरा बेटा. जब देखो तब दौड़ना-भागना, उछलना-कूदना, चढ़ना-फांदना... दिन भर बस धमाचौकड़ी मचाए रखना. पर वह सिर्फ शरारतें ही नहीं करता, बड़े-बड़े सपने भी देखता रहता है.

कभी वह एक मशहूर खिलाड़ी बनता है, तो कभी अंतरिक्ष यात्री... कभी वैज्ञानिक, तो कभी डॉक्टर. उसके सपनों का तो कोई अंत ही नहीं! और उसकी मां होने के नाते मैं तो यही चाहती हूं कि वह सदा स्वस्थ, हृष्ट-पुष्ट, खुश रहे और उसके सारे सपने पूरे हों.

इसलिए मैं हमेशा लाती हूं विजया ताज़ा, शुद्ध घी - स्वादिष्ट और पौष्टिक.

"बच्चों को पुष्ट बनाएगा आपकी खुशी बढ़ाएगा"

विजया शुद्ध घी
१/२ किलो, १ किलो, २ किलो और ५ किलो के पैक में उपलब्ध.

R K SWAMY/BBDO APDDCFL 348-90 HIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मीना को आत्मसंतुष्टि की थी. वह प्रसन्न थी कि उस का मनमस्तिष्क सुरुचिपूर्ण ढंग से मनचाहे वातावरण में व्यस्त रहेगा और संगीत कला के प्रति उस का बचपन से जो रुझान था. वह भी फलेफूलेगा. वह अपनी कोमल भावनाओं को इस कला के माध्यम से प्रकट कर के एक अजीब सा संतोष प्राप्त कर पाएगी. यही सोच कर उस ने यह नौकरी सहज स्वीकार कर ली और धीरेधीरे उस की संगीत साधना रंग लाई.

विद्यालय के बच्चे और अध्यापिकाएं सभी मीना को चाहते थे. विद्यालय का कोई भी उत्सव, आयोजन होता तो चारों ओर उस की ही पुकार होती. लड़कियां तो अपनी संगीत अध्यापिका की दीवानी सी हो गई थीं. ऐसे में ही इस प्रतियोगिता का निमंत्रण आया. मीना ने इस प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए जी तोड़ मेहनत की थी. छात्रछात्राओं को चुन कर एक विशेष दल बनाया.

कवि कालिदास की रचना 'मेघदूत' के हिंदी रूपांतरण को आधार बना कर नाट्य शैली में उस को रंगमंच पर खेलने का प्रस्ताव रखा गया.

अन्य सदस्यों ने भी यथासंभव सहायता देने का वचन दिया. दो महीने की अथक साधना के पश्चात इस के मंचन का दिन आया. पहले एक प्रदर्शन अपने ही विद्यालय में हुआ. उस प्रदर्शन के प्रभाव से ही सभी बहुत प्रभावित हो गए थे. मीना का उत्साह दोगुना हो गया.

अगले दिन मीना बड़े आत्मविश्वास के साथ वहां पहुंची. प्रदर्शन के पश्चात बड़ी देर तक तालियां बजती रहीं. बाद में परिणाम घोषित हुआ प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त कर के छात्रछात्राओं और अध्यापिकाओं सहित मीना प्रफुल्ल मन से अपने स्कूल लौटी. प्रिंसिपल अत्यधिक प्रसन्न हुए और विद्यालय के वार्षिक उत्सव पर उसी नाटक की सफलता की भरी सभा में फिर से चर्चा हुई. सभी अतिथियों, छात्रछात्राओं और उन के अभिभावकों के सम्मुख मीना को फिर से सम्मानित किया गया.

मीना को लगा, उस का परिश्रम सफल हो गया है, उस के जीवन को एक नई दिशा और एक स्वच्छ, सुंदर, नई डगर मिल गई है. अब कोई उलझन नहीं थी.●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

21वीं सदी की ओर

अग्नि प्रक्षेपास्त्र का सफल प्रयोग हमारी सरकार की दृष्टि में भारत के 21वीं सदी में प्रवेश की शुरुआत है. लेकिन जिस देश में आम जरूरत की वस्तु कम ही नहीं हों, त्रुटिपूर्ण भी हों, अर्थव्यवस्था जर्जर हो और आधी जनसंख्या भूखी हो, उसे विकसित देशों में गिनने का दंभ कितना सार्थक है?

लेख ● महेंद्र राजा जैन

भूतपूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी अपने शासन काल के दौरान अपने भाषणों में बराबर इस बात की याद दिलाते रहे कि अग्नि प्रक्षेपास्त्र की सफलता भारत के विकास अर्थात इक्कीसवीं सदी की दिशा में एक अभूतपूर्व कदम है. अपने अग्नि प्रक्षेपास्त्र से हम ने अमरीका को बता दिया है कि अब भारत भी अन्य विकसित देशों की श्रेणी में अपने को शुमार किए जाने योग्य समझता है या यह कि आधुनिक तकनीकी विकास के क्षेत्र में भारत तथाकथित महाशक्तियों से किसी भी दशा में पीछे नहीं है.

यदि राजीव गांधी आज भी प्रधानमंत्री होते तो इस बात की भी पूरीपूरी संभावना थी कि पिछले गणतंत्र दिवस पर अग्नि प्रक्षेपास्त्र की सफलता से संबंधित सभी वैज्ञानिकों को पुरस्कार एवं पदकों से सराबोर कर दिया जाता. इतना ही नहीं, राजीव गांधी एवं उन के राजनीतिक सलाहकार इसी संदर्भ में इस बात की दुहाई भी देते रहे कि एशिया में हम ने सब से पहला पारमाणविक परीक्षण किया था या अंतरिक्ष में पहला राकेट छोड़ा था और इस बात की शेखी बघारना भी उन्हें अच्छा लगता कि रूस और अमरीका के बाद तकनीकी क्षेत्र में दुनिया में हमारा नंबर तीसरा है.

लेकिन केवल मैं ही नहीं, मेरे जैसे अन्य [illegible] नहीं समझ पाते कि अगर हमारा देश वास्तव में इतना अधिक विकसित हो चुका है, यदि तकनीकी दृष्टि से हम अन्य देशों की अपेक्षा वास्तव में काफी आगे बढ़े हुए हैं, तो क्या कारण है कि जनसाधारण को बिजली और पानी जैसी दैनिक जीवन की आवश्यक वस्तुएं बराबर एवं पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध नहीं हैं? क्यों दिल्ली और कलकत्ता जैसे शहरों में भी सभी लोगों को 24 घंटे बराबर बिजली नहीं मिल पाती या शीतकाल में भी दूसरी मंजिल से [illegible] पानी नहीं [illegible] इसलिए [illegible] पूरी [illegible]

CC-0. [illegible] Domain. Gurukul Kangri [illegible] Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पिछड़े देशों (यथा तनजानिया और जांबिया) में भी कई वर्ष तक रहने का अवसर मिला है, पर ऐसा याद नहीं आता कि कभी वहां किसी भी समय बिजली चली गई हो या पेय जल की परेशानी हुई हो. वहां छोटेछोटे गांवों में भी हमें कभी बिजली, पानी की समस्या से नहीं उलझना पड़ा.

स्वतंत्रता के पूर्व हमारा देश पिछड़ा माना जाता था, लेकिन मुझे अच्छी तरह याद है, तब भी कभी पानी या बिजली की दिक्कत नहीं हुई. पर अब जब हम विज्ञान के क्षेत्र में अपने को अन्य महाशक्तियों के

राजीव गांधी : अग्नि का प्रक्षेपण करा लिया पर गरीबी को दूर न कर पाए.

समकक्ष समझने लगे हैं, पानी की कमी एवं बिजली की कटौती तो जैसे आम बात हो गई है. टेलीफोन की भी हालत यह है कि दो महानगरों के बीच लाइन मिलने में भी कभीकभी एक घंटे से ज्यादा समय लग जाता है जब कि लंदन और न्यूयार्क के बीच बात करने में एक मिनट भी नहीं लगता.

दुकानों में जैसा सामान मिलता है, उस

के तो सभी भुक्तभोगी हैं. स्वतंत्रता के पूर्व जो माचिस (दियासलाई) मिलती थी, उस से किसी को शायद ही कभी कोई शिकायत रही हो, पर आज इस विकसित स्थिति में भी हमें माचिस जैसी छोटी एवं सामान्य चीज भी ऐसी नहीं मिलती कि उस पर पूर्णतः निर्भर रहा जा सके. बरसात के मौसम में माचिस जलाने का अनुभव नहीं होगा?

आज दैनिक जीवन के उपयोग में आने वाले तरहतरह के नए विद्युत उपकरण बाजार में भरे पड़े हैं. इस बात पर

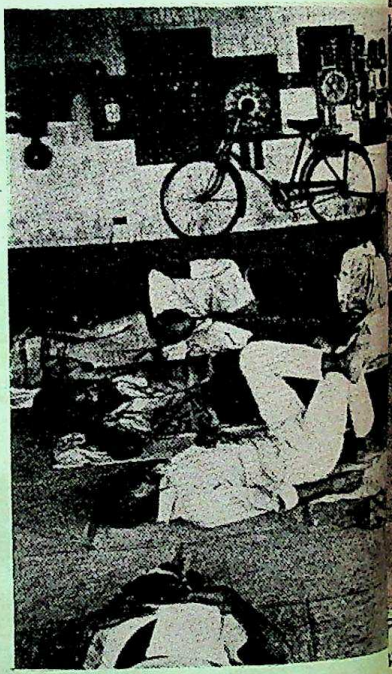

फुटपाथ पर सोते गरीब लोग : 21वीं सदी में ऐसे ही सोएंगे.

राजीव गांधी को गर्व हो सकता है कि ये पिछले शासन की नीतियों की देन हैं, पर उपकरणों से कभीकभी जो विद्युत आघात लगता है, क्या उस का भी उन्हें अनुभव है? यदि नहीं, तो क्या कारण है कि इस प्रकार के उपकरणों को बाजार में आने दिया गया? इस प्रकार के उपकरण बनाने वाली कंपनियों को लाइसेंस दिए गए? निर्यात के क्षेत्र में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अन्य देशों की तुलना में पिछड़े हुए क्यों हैं?

दुनिया के बाजार में हमारी बनाई हुई चीजों की साख क्यों गिरी हुई है? हमारे द्वारा बनाई गई चीजें इतनी घटिया क्यों हैं?

हमारे देश में श्रम सस्ता होने के बावजूद विदेशी बाजार में हमारी चीजों के मूल्य इतने अधिक क्यों हैं कि लोग उन्हें खरीदना पसंद नहीं करते?

इस प्रश्न का हमारे पास क्या उत्तर है कि पारमाणविक एवं अंतरिक्ष क्षेत्र में तो हम दुनिया के बड़ेबड़े देशों के बराबर ही नहीं, उन से आगे बढ़ने का भी दावा करते हैं

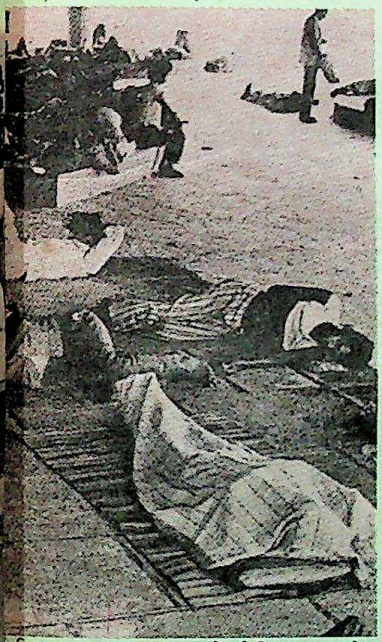

लेकिन जनसाधारण के दैनिक उपयोग में आने वाली छोटीछोटी वस्तुओं को भी हम ठीक से नहीं बना सकते. इस का उत्तर शायद यही है कि जहां करोड़ों, अरबों रुपए के खर्च की बात आती है, जहां खर्च पर कोई प्रतिबंध नहीं है (जैसे पारमाणविक एवं सुरक्षा संबंधी विषयों में) वहां हमारे वैज्ञानिक दूसरे देशों की तुलना में बाजी मार ले जाते हैं. पर जब ऐसा सामान बनाने की बात आती है जो कम से कम लागत पर बन सके तो वहां उन की तथाकथित 'कुशलता' एवं 'योग्यता' दम तोड़ने लगती है. नवोन्मेष के मामले में तो वे श्रेष्ठ कहे जा सकते हैं, पर साधनों के समुचित उपयोग एवं लागत नियंत्रण के मामले में बिलकुल ही अक्षम.

विदेशों में भारत का सब से बड़ा मित्र रूस है और रूस में भी बहुत कुछ ऐसी ही स्थिति है जैसी भारत में. अतः यह सोचने को विवश होना पड़ता है कि वैज्ञानिक, अंतरिक्षीय एवं पारमाणविक क्षेत्रों में तो हम बड़ेबड़े देशों से टक्कर लेने की बात करते हैं, पर जनोपयोगी वस्तुओं के मामले में तथाकथित पिछड़े देशों से भी पीछे हैं.

रूस पहला देश था जिस ने अंतरिक्ष में पहला उपग्रह छोड़ा या अंतरिक्ष में आदमी भेजा. लेकिन उस के द्वारा बनाई गई दैनिक उपयोग की चीजें गुणवत्ता के साथ ही उत्पादन की दृष्टि से ऐसी घटिया होती हैं कि विश्व बाजार में टिक नहीं पातीं. और तो और कोरिया तथा ब्राजील जैसे देशों की चीजें भी रूस में बनी चीजों की अपेक्षा अच्छी और सस्ती होती हैं. तकनीकी और वैज्ञानिक दृष्टि से रूस चाहे जितनी बढ़चढ़ कर बात करे, पर क्या जनोपयोगी एक भी ऐसी चीज रूस में बनती है जिसे अन्य देशों में बनी हुई चीजों के समकक्ष रखा जा सके या जिस की विश्व बाजार में मांग है? क्या रूस में बना कोई भी कैमरा, घड़ी, साइकिल, सिलाई मशीन, मिक्सी आदि एक भी ऐसी चीज है जिस की मांग इसलिए हो कि वह रूस में बनी है. इसी प्रकार भारत में बनी कुछ चीजों का निर्यात भी भले ही विदेशों में होता हो पर जहां तक मैं जानता हूं, उन चीजों की खपत वहां इसलिए नहीं होती कि वे भारत में बनी हैं वरन इसलिए कि वहां की सरकारों को भारत में बनी चीजें किसी न किसी बाध्यता के कारण लेनी पड़ती हैं.

पर इस के लिए भारतीय या रूसी वैज्ञानिकों को दोष नहीं दिया जा सकता और न यह ही कहा जा सकता है कि वे अच्छी चीजें बनाने लायक नहीं हैं. दोष वस्तुतः हमारे यहां की व्यवस्था का है, उस वातावरण का है, जिस में रह कर उन्हें काम करना पड़ता है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे यहां जो वैज्ञानिक बड़ेबड़े संस्थाओं में काम करते हैं, जहां बजट पर कोई प्रतिबंध नहीं है, उन्हें तो पदोन्नति के साथ ही बड़ेबड़े पुरस्कार और पदक मिलते हैं. लेकिन यदि कोई वैज्ञानिक पहले से बेहतर मिक्सी, पंखा, साइकिल या ऐसी ही कोई और चीज बनाता है या बनाने की कोशिश करता है तो उसे किसी प्रकार का प्रोत्साहन नहीं दिया जाता. यदि सरकारी क्षेत्र की किसी कंपनी में कार्यरत कोई व्यक्ति कोई ऐसी तकनीक ईजाद करता है जिस में कम श्रम, शक्ति या ऊर्जा की आवश्यकता हो या जिस में कम लागत आती हो तो हो सकता है कि किसी अखबार में नीचे दोचार पंक्तियों में उस का उल्लेख हो जाए लेकिन अधिक संभावना इसी बात की है कि उस नई ईजाद का श्रेय सही व्यक्ति को मिलने की अपेक्षा उस अधिकारी को मिलेगा जिस के मातहत वह कर्मचारी काम कर रहा है या जो उस संस्था या कंपनी का प्रधान है.

दर्द दूर करने वाली एलोपैथिक दवाओं में इब्रोप्रोफेन का भी उपयोग किया जाता है. इंगलैंड की एक प्रसिद्ध दवा निर्माता कंपनी बूट्स पहले भारत में लगभग एक हजार रुपए प्रति किलो की दर पर इब्रोप्रोफेन बेचती थी. एक भारतीय कंपनी डा. रेड्डी लेबोरेट्रीज ने इस दवा के स्थान पर उपयोग करने के लिए एक दूसरी औषधि का पता लगाया जो आज बाजार में केवल 400 रुपए प्रति किलोग्राम उपलब्ध है. इस से हमारी विदेशी मुद्रा की बचत ही नहीं हो रही है वरन जनसाधारण को पहले की अपेक्षा आधे से कम मूल्य में दवा मिल रही हैं.

ग्लेक्सो बनाम रैनबक्सी

एक अन्य अंतर्राष्ट्रीय कंपनी ग्लैक्सो 'जंताक' नामक एक दवा बनाती है, जिस से प्रभाव से फोड़ा पकने नहीं पाता. चूंकि इस दवा पर ग्लैक्सो का एकाधिकार है, अतः पहले यह दवा काफी अधिक मूल्य पर बिकती थी. बाद में भारत में ही एक कंपनी रैनबक्सी ने इस संबंध में अनुसंधान कर इस दवा का विकल्प खोज निकाला जो ग्लैक्सो के विक्रय मूल्य की अपेक्षा नाम मात्र के मूल्य पर उपलब्ध था. आज स्थिति यह है कि रैनबक्सी कंपनी ने ग्लैक्सो का तथाकथित एकाधिकार समाप्त कर विदेशों में भी दवा का निर्यात कर काफी बड़ा बाजार बना लिया है.

कंप्यूटर के क्षेत्र में हिंदुस्तान कंप्यूटर तथा स्टर्लिंग इलेक्ट्रानिक्स ने सस्ते कंप्यू

पारमाणविक तथा अंतरिक्ष में तो हम विकसित देशों बराबरी का दावा करते हैं लेकिन दैनिक उपयोग की वस्तुएं ठीक नहीं बना पाते.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by

कंप्यूटर के क्षेत्र में भारत ने जरूर सफलता प्राप्त की है और विदेशी कंपनियों का बाजार हथियाया है.

का निर्माण कर विदेशी अंतर्राष्ट्रीय कंपनियों का बाजार हथिया लिया है, जो कंप्यूटर पहले विदेशी कंपनियां 20-25 हजार रुपए में बेचती थीं, उसी प्रकार के कंप्यूटर अब जनसाधारण को पांच हजार रुपए तक में मिल जाते हैं.

अकसर देखा यह जाता है कि सरकारी क्षेत्र की कंपनियों के बड़ेबड़े अधिकारियों का ध्यान इस बात की ओर कम रहता है कि किसी चीज की लागत को कम कैसे किया जाए. उन का सारा ध्यान तो इस बात की ओर रहता है कि वे अपनी नई पोस्टिंग दिल्ली या ऐसी ही किसी अन्य महत्त्वपूर्ण जगह कैसे करा लें और यही बात रूस में भी है.

अमरीका या यूरोपीय देशों में ऐसी कोई बात नहीं है, यह मैं नहीं कहता. वहां भी झूठी शानशौकत एवं दिखावे पर काफी खर्च किया जाता है. वहां भी कहींकहीं धन की काफी बरबादी होती है पर उस पैमाने पर नहीं जैसी कि भारत में. वहां निजी क्षेत्र की कंपनियों के पास अमर्यादित पैसा नहीं होता. प्रायः सभी कंपनियां ऐसे वैज्ञानिकों व तकनीशियनों की नियुक्ति करती हैं जो उन के उत्पादनों में सुधार करने के साथ ही साथ उत्पादन की लागत में कमी भी कर सकें. वहां दिखावे एवं तड़कभड़क की अपेक्षा बराबर यही प्रयत्न किया जाता है कि किस प्रकार चीज में और अधिक सुधार किया जा सके या उसे अधिक उपयोगी बनाया जा सके. उपभोक्ताओं की संतुष्टि एवं किफायत उन का मुख्य ध्येय होता है. जो कंपनियां यह ध्येय नहीं अपना पातीं, वे अन्य कंपनियों की प्रतियोगिता में नहीं ठहर पातीं.

लेकिन भारत और रूस जैसे देशों में जहां तरहतरह के नियंत्रण हैं, जराजरा से काम के लिए बीसियों प्रकार के अड़ंगों से निबटना पडता है वहां की बात बिलकुल ही अलग है. रूस में उपभोक्ता की आवश्यकता या रुचिअरुचि की ओर कोई ध्यान नहीं दिया जाता. वहां तो उपभोक्ताओं को जो कुछ मिलता है, सरकारी फैक्टरियां जो कुछ बनाती हैं, सरकार जो कुछ उपलब्ध कराती है, उसी से संतोष करना पड़ता है.

इस प्रकार किसी स्वस्थ प्रतियोगिता के अभाव में वहां के कारखानों के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यवस्थापकों को और न ही अन्य कर्मचारियों को उपभोक्ताओं की आवश्यकता या सुविधा का ध्यान रहता है. वहां तो कारखानों के व्यवस्थापकों को बस एक निश्चित समय में, एक निश्चित मात्रा में कोई चीज तैयार कर के देनी होती है और ऐसा करने में श्रम, शक्ति या ऊर्जा या कच्चे माल का कितना अपव्यय होता है, इस से उन्हें कोई मतलब नहीं.

अभी भारत में ऐसी स्थिति नहीं आई है. वायु सेवाएं, बिजली, टेलीफोन, पानी, यातायात आदि पर सरकार का एकाधिकार अवश्य है लेकिन उपभोक्ताओं के लिए बनाई जाने वाली वस्तुएं अभी इस से बची हुई हैं. परंतु लाइसेंस, परमिट प्रणाली के कारण यहां भी उपभोक्ता को बहुत कुछ रूस जैसी स्थिति का ही सामना करना पड़ता है. यहां भी उसे वही चीज खरीदनी पड़ती है जो बाजार में उपलब्ध है. उसे इतनी सुविधा नहीं है कि उसे जो चीज चाहिए उस का चुनाव कर सके. उस के सामने जो चीज होती है, वह अधिक से अधिक दो या तीन प्रकार की ही होती है और वे सभी करीबकरीब मिलतीजुलती होती हैं. अतः यहां उस की पसंदनापसंद का कोई प्रश्न ही नहीं उठता. स्वस्थ प्रतियोगिता का कोई भय न होने के कारण निर्माता चीजों की कमी बनाए रखते हैं या कमी का ढोंग करते हैं. निर्माताओं का सारा ध्यान नेताओं एवं अफसरों को खुश करने में लगा रहता है, न कि उपभोक्ता की आवश्यकता या कठिनाइयों को समझने में. वे बराबर इसी फिराक में रहते हैं कि किसी लाइसेंस को प्राप्त करने या वर्तमान लाइसेंस को बनाए रखने के लिए कौन सी तिकड़म अपनाएं.

"तेरा कल्याण हो, माई, तुझे जल्दीजल्दी रसोई गैस मिले... बाबूजी को जल्दी गाड़ी का पेट्रोल मिले!"

हमारे देश में न तो योग्य व्यक्तियों की कमी है, न साधनों की, अन्यथा भारतीय वैज्ञानिक एवं अन्य क्षेत्रों के विशेषज्ञ विदेशों में जा कर नहीं बस पाते और न वहां प्रसिद्धि प्राप्त करते. कमी है तो केवल सरकारी प्रोत्साहन की. केवल 'ब्रेन ड्रेन' (प्रतिभा पलायन) का रोना रो कर हम जनता को अधिक समय तक भुलावे में नहीं रख सकते. हम ने कभी यह जानने की कोशिश नहीं की कि विदेशों में शिक्षा प्राप्त एवं वर्षों के अनुभवी जो भारतीय अपने देश लौट कर आ चुके हैं उन के साथ क्या बीतती है? मैं कई ऐसे लोगों के नाम बतला सकता हूं जो वर्षों तक विदेशों में रह कर भारत लौटे हैं, पर यहां कहने भर के लिए तो उन्हें 'साक्षात्कार' में बुला लिया जाता है लेकिन चुना ऐसे लोगों को जाता है जिन के पास न तो विज्ञापन में पूछी गई योग्यताएं होती हैं, न अनुभव.

ऐसी स्थिति में उन का मनोबल कैसे बढ़ सकता है? अपने देश की श्रेष्ठतम प्रतिभाओं को हम देश में ही कैसे रोक सकते हैं?

आज आवश्यकता पूरा वातावरण या पर्यावरण बदलने की है, लाइसेंस, परमिट पद्धति बदलने की है, लोगों के सोचने-विचारने का तरीका बदलने की है. तभी हम अपनी मानव संपदा का समुचित उपयोग कर पाएंगे. हमें आशा है कि नई सरकार इस दिशा में आवश्यक कदम उठाएगी. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रेम की सार्थकता के लिए पढ़िए

मुक्ता

प्रेम विशेषांक

फरवरी (प्रथम) 1991

इस अंक में आप पढ़ेंगे

- समाज के कठोर नियमों के बोझ से प्रेम के घरौंदे को बचाने के तौरतरीकों पर गंभीर व व्यावहारिक जानकारी.
- एक ऐसा विशेषांक जो प्रेम के कठिन रास्तों पर जानकारी की कलियां बिखेरेगा.
- प्रेम की सफलता व असफलता पर युवकों के दृष्टिकोण.
- प्रेम की मान्यता के लिए अभिभावकों को मनाने के तौरतरीके.
- प्रेम प्यार में भींगी कविताएं और जीवन की वास्तविकता को उजागर करने वाली प्रेम कहानियां.

साथ ही हर अंक की तरह व्यवहार, कैरियर, उद्योग फिल्म, खेल पर सामयिक लेख व देशविदेश की घटनाओं की विस्तृत समीक्षा.

अपनी प्रति आज ही सुरक्षित कराएं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चेहरा

पलकें झुकीं तो हो गया नकाब तेरा चेहरा
और उठीं तो बना एक खुली किताब तेरा चेहरा.

दिन में दिखे तो कह उठे बेसाख्ता जुबां
है दूसरा जहां में आफताब तेरा चेहरा.

इतरा उठेगी शब भी बन जाए गर कभी
किसी खुशनसीब का हसीन ख्वाब तेरा चेहरा.

लहरा गईं मचल कर जुल्फें तो हो गया
बदलियों में उलझा महताब तेरा चेहरा.

सहमी सी हंसी उभरी होंठों पे तब लगा
बंद कलियों की नजाकत सा गुलाब तेरा चेहरा.

आइना देगा गवाही तेरे चेहरे के नूर का
है लाजवाब का भी जवाब तेरा चेहरा.

—लक्ष्मीकांत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समय की पाबंदी दांपत्य संबंधों के लिए आवश्यक

लेख ● शम्मी

गीता और मनोज के विवाह को मात्र चार साल हुए हैं, लेकिन इन चार सालों में ही दोनों प्रौढ़ दिखने लगे हैं. मनोज के बाल सफेद होने लगे हैं तो गीता की आंखों के नीचे के स्याह घेरे यह इंगित करते हैं कि दोनों अंदर ही अंदर घुल रहे हैं.

पूछने पर पता चला कि मनोज को व्यापार में काफी घाटा हो रहा है जबकि गीता को दोनों बच्चों की देखरेख, घर के काम और ऊपर से मनोज के व्यापार की चिंता आदि कई परेशानियां हैं.

दोनों अपनीअपनी परेशानियों से खुद जूझ रहे हैं. आपस में कम बातचीत होती है. फलस्वरूप दोनों में तनाव बढ़ता जा रहा है, जिस के चिह्न उन के चेहरों पर स्पष्ट दिखते हैं.

घर चाहे कोई भी हो और वहां चिंताएं न हों, ऐसा तो हो ही नहीं सकता. स्त्री और पुरुष दोनों को ही कोई न कोई चिंता सदा घेरे रहती है. जहां स्त्री के लिए घरेलू (सासबहू, ननदभाभी, देवरानीजेठानी के

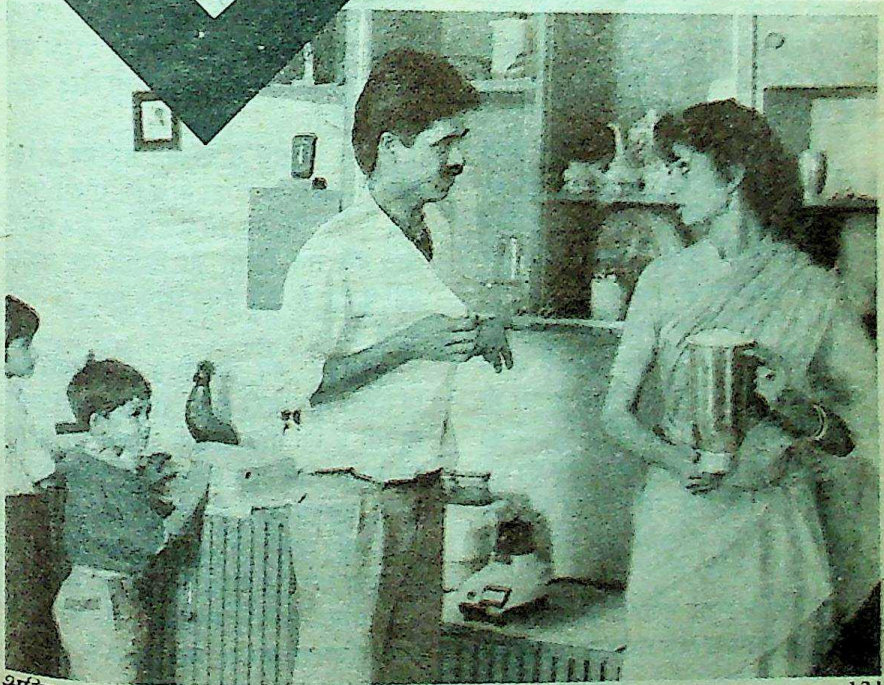

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गृहस्थी के झंझटों से निबटते पतिपत्नी तनावयुक्त हो अकसर उत्तरदक्षिण सा रुख अपना लेते हैं जो इन के बीच कटुता का बीज बो देता है. इसलिए समय के मूल्य को पहचानिए और उन क्षणों को बांध लें जो दांपत्य जीवन के लिए महत्त्वपूर्ण हैं.

झगड़े,बीमारी, घर के कामकाज, बच्चों की पढ़ाईलिखाई आदि) परेशान करते रहते हैं, वहीं पुरुष को घरेलू झमेलों के साथसाथ अपने व्यवसाय या नौकरी आदि की समस्याएं भी सुलझानी पड़ती हैं.

इन सब समस्याओं को भोगते हुए पतिपत्नी कई बार एकदूसरे से दूर भी हो जाते हैं. ऐसा उस स्थिति में होता है, जब उन के पास व्यक्तिगत जिंदगी के लिए वक्त ही नहीं होता.

होता यह है कि सवेरे का समय तो काम पर जाने की तैयारी, नहानेधोने, घर के कामकाज में बीत जाता है. जब पुरुष शाम को घर वापस आता है, तब स्त्री बच्चों के गृहकार्य कराने, खाना बनाने आदि में लगी होती है और पति इंतजार करता रहता है कि कब उस की पत्नी कमरे में आए और वे दोनों कुछ बातचीत करें.

जब रसोई का काम समेट कर पत्नी कमरे में पहुंचती है तो देखती है कि पति तो सो रहा है. तब पत्नी भी सो जाती है और रात यों ही गुजर जाती है. सवेरे उठ कर फिर वही दौड़धूप की दिनचर्या.

कई बार किस्सा उलटा भी होता है. पत्नी कमरे में समय से पहुंच जाती है. बच्चे भी सो चुके हैं लेकिन बात शुरू करते ही तकरार में बदल जाती है और शिकायतों का पुलिंदा खुल जाता है. दोनों में से एक का मुंह फूल जाता है और एक उत्तर दिशा की ओर एवं दूसरा दक्षिण की ओर मुंह कर के सो जाता है.

यों ही दिनरात गुजरते जाते हैं और जिंदगी के अनमोल क्षण तकरार में नष्ट हो जाते हैं. इस का सीधा दुष्प्रभाव दांपत्य संबंधों पर पड़ता है, जहां स्नेह जल के अभाव में प्रेम का पौधा मुरझा जाता है और दांपत्य जीवन में शुष्कता आ जाती है.

जिंदगी तो मशीन की भांति चलती रहती है, किंतु फिर भी कहीं बहुत कुछ छूट जाता है.

मधुरता कैसे लाएं

स्पष्ट है कि कितनी भी कोशिश की जाए, समस्याओं से बचा नहीं जा सकता क्योंकि गृहस्थ जीवन के साथ कुछ न कुछ समस्याएं हमेशा लगी ही रहती हैं.

वस्तुतः यह समस्याएं आप की बुद्धिमता की परीक्षा है. यदि आप सूझबूझ से इन का मुकाबला करें और दांपत्य जीवन पर इन का बुरा प्रभाव न पड़ने पाए तो जीत आप की ही होगी.

इस का सब से आसान तरीका है कि आप हर काम का समय बांध लें. एक नियम बना लें कि रात को 10 बजे से ले कर सवेरे आठ बजे तक किसी भी विषय पर बहस नहीं करनी है. यह वक्त सिर्फ प्यार से बातें करने का होगा.

ब्रिटेन की वैवाहिक पारिवारिक विशेषज्ञ मारजोरी हेंसेन शेविट्ज भी यही मानती हैं कि यदि दांपत्य जीवन की गाड़ी को सुगम गति से चलाना है तो रोमांस का समय अवश्य बांध लें. उस समय आप को सिर्फ प्यार करना है, सारी दुनिया की बातों को भुला कर उन क्षणों को भरपूर जीना है.

यदि किसी समस्या के बारे में विचारविमर्श करना आवश्यक है तो इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निर्धारित समय से पहले करें. प्रेम के लिए निर्धारित समय में किसी भी समस्या की चर्चा नहीं करनी चाहिए. कमरे का दरवाजा बंद करने का मतलब यह समझें कि आप ने चिंताओं का द्वार बंद किया है.

इस प्रकार जब आप समय तय कर लेंगे तो स्पष्ट है कि एकदूसरे के ज्यादा करीब आ सकेंगे क्योंकि इस निर्धारित समय में आप एकदूसरे को ज्यादा प्यार दे सकेंगे और जब दांपत्य संबंधों के पौधे को प्रेमरूपी जल मिलता रहेगा तो यह पौधा सदा हराभरा, लहलहाता रहेगा.

इसी प्रकार माह के प्रत्येक रविवार का कार्यक्रम बना लें. पहले रविवार फिल्म का तो दूसरे को पिकनिक का. तीसरे रविवार को बाहर रात्रिभोज करने तो चौथे रविवार को मित्रों अथवा संबधियों के घर जाने का कार्यक्रम बनाएं.

यदि रविवार को संभव न हो या रविवार को परिवार के अन्य सदस्यों के साथ घूमने जाना पड़ता हो तो हर महीने के पहले या अंतिम शनिवार की रात को अकेले रात्रिभोज का कार्यक्रम बनाइए ताकि आप अकेले भी आनंद उठा सकें और दांपत्य संबंध फीके न पड़ें.

दांपत्य जीवन यदि सुखद बनाना है तो कुछ समय ऐसा जरूर निश्चित कर लें जिस में सिर्फ प्रेम की ही बातें की जाएं, समस्याओं की नहीं.

शुरूशुरू में हो सकता है, आप को यह अजीब लगे किंतु जब इस की आदत पड़ जाएगी तो आप खुद ही हलकाफुलका महसूस करेंगी. ऐसा प्रतीत होगा, मानो दिल से कोई बोझ उतर गया हो, जैसे आप ने कुछ पा लिया हो और अभी भी नईनवेली हों.

अतः यदि आप का दांपत्य जीवन भी चिंताओं के कारण नीरस होता जा रहा है तो और वक्त न गवांएं. इस से पहले कि समय हाथ से निकल जाए और जिंदगी पीछे छूट जाए, समय बांध लें. अपने रोमांस की दिनचर्या बना लें ताकि प्रेम घटने की बजाय दिनबदिन और बढ़े. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बच्चोंके मुखसे

एक बार हमारे महल्ले में चोरी हो गई. हम लोग इस विषय पर बातें कर रहे थे. मैं ने कहा, "चोरों ने तो पूरे घर की सफाई कर दी."

यह सुन कर मेरा भानजा बोला, "क्या चोरों ने चोरी करना छोड़ झाड़ूपोंछा करने का काम शुरू कर दिया है."—पवन धवन

*

एक सुबह पिताजी ने मेरे छोटे भाई से कहा, "अब जग जाओ. देखो सूरज भी निकल आया है."

वह बोला, "पिताजी, सूरज तो शाम को छः बजे ही सो जाता है जबकि मैं तो रात को 10 बजे सोता हूं."—रीतु गुप्ता

*

एक दिन मेरा भतीजा बगल वाले मकान से चोरीछिपे अमरूद तोड़ने लगा, तभी मकान का मालिक आ गया. उसे देख कर वह भाग खड़ा हुआ.

परंतु दूसरे दिन जब वह मकान वाला मिला तो मेरे भतीज़े से बोला, "कल तुम मेरे पेड़ से अमरूद क्यों तोड़ रहे थे?"

भतीजे ने जवाब दिया, "मैं ने सोचा आप घर पर नहीं हैं, इसलिए."

—अंबुजकुमार

*

नए मेहमान को देख कर मेरा कुत्ता जोरजोर से भूंकने लगा. मेहमान के साथ उन का चार वर्षीय बेटा भी था. वह कुत्ते के सामने जा कर खड़ा हो गया. और कुत्ते को गौर से देखने लगा.

उसे ऐसा करते देख कर मैं ने बताया, "बेटा, कुत्ते अनजान आदमी, चोर, उचक्कों को देख कर भूंकते हैं."

इस पर वह तपाक से बोला, "दीदी, मैं अपना नामपता इसे बता दूं तो यह चुप हो जाएगा."—आर. रंगा राव

*

मेरा तीन वर्षीय बेटा नर्सरी में पढ़ता है. एक दिन वह अपना पाठ याद कर रहा था.

मैं ने इसी पाठ का प्रश्न उस से पूछा, "तुम दूध क्यों पीते हो?"

वह सुनते ही झट से बोला, "अम्मां मारती हैं इसलिए."

—राजेंद्रकुमार कटारिया

*

मेरी सात वर्षीया चचेरी बहन बहुत ही हाजिरजवाब है. एक दिन मैं ने घर फोन किया तो रिसीवर उसी ने उठाया. मैं ने पूछा, "किरण, क्या कर रही हो?"

उस ने बड़ी मासूमियत से जवाब दिया, "आप से बातें कर रही हूं. —हरप्रीत सिंह

*

हम लोग एक बार चिड़ियाघर घूमने गए थे. घूमते हुए अचानक मेरा पांच वर्षीय ममेरा भाई बोल पड़ा, "मेरे लिए भी कोई जानवर खरीद दीजिए न."

मैं ने कहा, "लेकिन हम उस के लिए खाना कहां से लाएंगे."

वह तपाक से बोला, "वह जानवर खरीद दीजिए न, जिस के आगे बोर्ड पर 'खाना डालना मना है' लिखा है."

—रजनीश जैन●

इस स्तंभ के लिए आप अपने बच्चों, मित्रों व संबंधियों के बच्चों के मुख से कही गई बात भेज सकते हैं. प्रत्येक प्रकाशित संस्मरण पर 50 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. अपने संस्मरण इस पते पर भेजें. संपादकीय विभाग, सरिता, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेख ● प्रो. राजेंद्र गर्ग

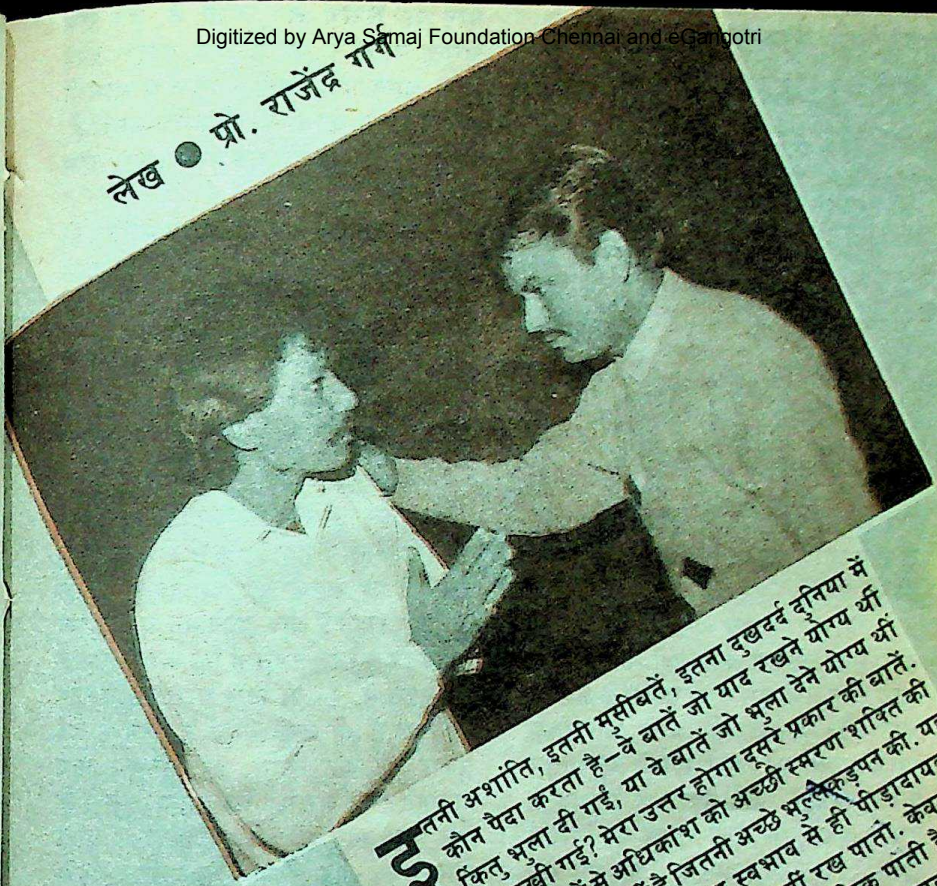

भूलो और क्षमा करो

इतनी अशांति, इतनी मुसीबतें, इतना दुखदर्द दुनिया में कौन पैदा करता है—वे बातें जो याद रखने योग्य थीं किंतु भुला दी गईं, या वे बातें जो भुला देने योग्य थीं किंतु याद रखी गईं? मेरा उत्तर होगा दूसरे प्रकार की बातें. निश्चय ही हम में से अधिकांश को अच्छी स्मरण शक्ति की उतनी आवश्यकता नहीं है जितनी अच्छे भुलक्कड़पन की. यह एक अच्छी बात है कि मनुष्य स्वभाव से ही पीड़ादायक घटनाओं को लंबे समय तक याद नहीं रख पाता. केवल मजेदार बात ही उस की याददाश्त में टिक पाती है. इसी लिए समय को हम मन के घाव भर देने वाला चिकित्सक मानते हैं.

बचपन से बुढ़ापे तक प्रतिदिन और प्रतिक्षण हमें अनेक लोगों के बीच रहना होता है. ये हमारे परिवारजन, रिश्तेदार और पड़ोसी हो सकते हैं या हमारे सहपाठी, सहखिलाड़ी, और सहकर्मी या फिर यह हमारे हमसफर अथवा हमवतन भी हो सकते हैं. इसी सामूहिक जीवन से हम अपनी भाषा, अपनी संस्कृति और अपनी जीवनपद्धति ग्रहण करते हैं. हमारी आशानिराशा, शोकहर्ष, महत्वाकांक्षा और मायूसी, क्रोध

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूसरों के शब्दबाण से मिली चोटों को सहलाते रहने से कोई फायदा नहीं है. उन्हें उन की गलती के लिए क्षमा कर अपने घावों पर स्नेहलेप लगा लेना चाहिए. इस तनाव भरी जिंदगी में हंसीखुशी रहने का इस से आसान तरीका और कोई नहीं है.

और शांति, कल्पना और विवेक सभी प्रकार के भाव और विचार हमारे सामूहिक जीवन की ही देन हैं.

विभिन्न स्वभाव और विभिन्न आदतों वाले सैकड़ोंहजारों व्यक्तियों के संपर्क में आते रहने से ही हम मानव प्रकृति के असंख्य रूपों और मनुष्यों की अनंत चारित्रिक विभिन्नताओं को अपने मन में आत्मसात करते रहते हैं. इसी प्रकार के अनुभव से हमारे अंदर एक ऐसी समझ का विकास होता है जिस की सहायता से हम मानवीय प्रेमघृणा, रागद्वेष, सहयोगईर्ष्या, उत्साह अवसाद, दयाक्रोध और मैत्रीशत्रुता जैसे भावों के रंगबिरंगे धागों से बने आदमी के व्यक्तित्व की खूबसूरती का मजा ले सकते हैं.

बेशक इस सामूहिक जीवन में निरंतर टकराहट और संघर्ष भी होते रहते हैं किंतु सहयोग और प्रेम की तरह असहयोग और संघर्ष भी जीवन के खेल के हिस्से ही हैं. इन्हें आदमी की जिंदगी से अलग नहीं किया जा सकता है, उसी प्रकार जैसे प्रकाश को अंधेरे से या बसंत को पतझड़ से.

रोजाना के कामकाज में, खेलों में, घर या दफ्तर में, बसोंट्रेनों में, सभी जगह अकसर ऐसा भी होता है कि हमारे शरीर पर कोई चोट या खरोंच आ जाए. दोचार कोई नई खरोंच लग जाती है. यह क्रम चलता रहता है पर इस पर हमारा कोई खास ध्यान नहीं जाता क्योंकि ये मामूली खरोंचें बहुत जल्दी ही ठीक हो जाती हैं. और फिर इन की वजह से हमारा कोई काम रुकता भी नहीं.

कल्पना कीजिए कोई ऐसा व्यक्ति हो जिस की चोट खरोंच कभी भी न मिटे. कुछ ही वर्षों में आप देखेंगे कि उस का पूरा शरीर चोटों से घायल हो चुका है, घाव रिस रहे हैं, नासूर बन गए हैं, चलाफिरा नहीं जाता, बदबू आ रही है, मक्खियां भिनभिना रही हैं और वह बेचारा पीड़ा से कराह रहा है.

ठीक इसी प्रकार कई लोग इतने संवेदनशील, इतने नाजुकमिजाज और इतने बीमार दिमाग के होते हैं कि सारी जिंदगी के दुखदर्दों को सहेज कर अपनी स्मृति में सुरक्षित रखते हैं और अपने मन के घावों को इस कदर कुरेदते रहते हैं कि वे हमेशा हरे बने रहते हैं. इन का दिल पुरालेख विभाग की फाइलों की तरह होता है जिन में हर प्रकार की कटु स्मृति, हर अन्याय और अपमानजनक बरताव की घटना, दूसरों के कहे हुए सारे कटु शब्द, पड़ोसी द्वारा समयसमय पर किया गया तिरस्कार, सहपाठियों द्वारा चिढ़ाए जाने की हर कहानी, माता द्वारा दूसरे भाईबहनों की तुलना में किया गया पक्षपातपूर्ण व्यवहार, 20 साल पहले बड़े भाई द्वारा लगाई गई फटकार, पांच वर्ष पहले दफ्तर के सहकर्मी द्वारा किया गया व्यंग्य और सात वर्ष पूर्व विभागाध्यक्ष द्वारा अकारण किया गया स्थानांतरण सभी घटनाएं अमिट अक्षरों में लिखी हुई हैं और हर घटना आज भी वैसा ही तीर चुभा देती है, वैसी ही आग तनमन में लगा देती है और वैसा ही क्रोध जगा देती है जैसा उस ने 20 साल पहले किया था. उन के मन में हजारों घाव अब नासूर बन कर बह रहे हैं. उन्हें चैन की नींद नहीं आती क्योंकि उन के बिस्तर पर असंख्य पीड़ादायक कटु स्मृतियों के कांटे बिछे हुए हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

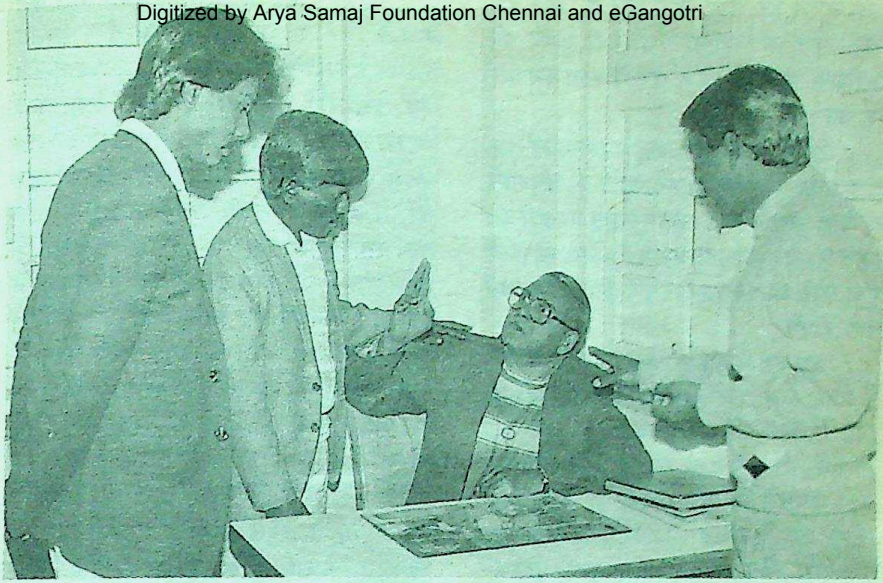

कार्यालय में अधिकारी से मिली डांटफटकार मन में न रखें. इसे भूल जाने में ही आप का हित है.

ऐसे लोगों के चेहरे पर आप को तनाव की झुर्रियां और क्रोध की कठोरता साफ झलकती दिखाई देगी. उन की आंखें पथराई हुई सी दिखाई देती हैं, जिन में से द्वेष, प्रतिशोध और हिंसक शत्रुता की भावनाएं झांक रही होती हैं. अपमान की स्मृतियां उन के मन में पत्थर की लकीर की तरह स्थायी रूप से अपने निशान बना चुकी हैं क्योंकि इन का मन पहले से ही पत्थर की तरह कठोर था. अगर इन के मन में तरलता और सरलता होती तो ऐसी पीड़ादायक घटनाएं पानी पर बनी लकीर की तरह उसी क्षण मिट कर समाप्त हो जातीं.

निस्संदेह कड़वी बातों को भूल जाने की क्षमता और दूसरों की गलतियों को सरल भाव से भुला देने की आदत जिंदगी को आनंदपूर्ण बना सकने की सब से बड़ी और सब से पुख्ता गारंटी है. क्षमा रहित कठोर स्वभाव के लोग मिट्टी के घड़े की तरह एक बार टूट जाने के बाद फिर कभी नहीं जुड़ सकते और दिनरात द्वेष के तनाव से खिंचे रहते हैं. ठीक इस के विपरीत सरल और क्षमाशील व्यक्ति धातु के बरतन की तरह जब भी टूटते हैं बड़ी ही आसानी से फिर जुड़ जाते हैं.

वस्तुतः जिंदगी का सुख और व्यक्तित्व की परिपक्वता अपने लोगों से बारबार जुड़ने की योग्यता पर ही निर्भर है. टकराव और संघर्ष से टूटन तो आती ही रहती है, "रूठे सजन मनाइए जो रूठे सौ बार", यही एक सुखी जीवन का आधार है.

हम अपनी रोजमर्रा की जिंदगी में दोनों ही तरह के आदमियों के संपर्क में आते हैं—वे जो मिट्टी के घड़े ही की तरह झट से टूट जाएंगे और फिर कभी नहीं जुड़ेंगे और वे जो कभीकभार कहीं दरार पैदा भी हो गई तो झट से फिर जुड़ जाएंगे. कितने सुखी हैं ऐसे लोग जिन्हें हर बात पर चोट नहीं पहुंचती और जो पारस्परिक संबंधों को हंसतेहंसते निभा लेते हैं.

इस लंबी जिंदगी में कभी उन्हें कुछ नाराजगी भी महसूस हुई तो वे कुछ समय बाद उसे बिलकुल ही भूल जाएंगे और फिर से सामान्य हो जाएंगे. ऐसे ही लोग जब खुद भी कोई गलती कर देते हैं या किसी की भावनाओं को जानेअनजाने चोट पहुंचा देते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं, तो तुरंत ही क्षमा मांग लेते हैं. और इस प्रकार, खुद का पश्चात्ताप तथा दूसरे की नाराजगी दोनों ही क्षण भर में भाप बन कर उड़ जाते हैं.

आइए, हम इस पर विचार करें कि किस प्रकार के लोग अपनी चोटों को सहलाते रहते हैं और मन के पुराने घावों को कुरेदते रहते हैं. हम यह भी देखेंगे कि ऐसे लोगों में भूल जाने और क्षमा कर देने की क्षमता क्यों नहीं होती.

इस वर्ग में सब से पहले तो वे लोग आते हैं जिन के व्यक्तित्व में परिपक्वता नहीं आ पाई है. वे अभी भी बच्चे ही हैं चाहे उम्र कितनी भी क्यों न हो गई हो. ऐसे लोग यह नहीं समझते कि इस धरती पर रहने वाले लोगों का स्वभाव, आदतें, पारिवारिक पृष्ठभूमि और जीवनपद्धति अनंत विभिन्नताओं से भरी हैं और यह आवश्यक नहीं है कि सभी व्यक्ति ठीक वैसे ही बन जाएं जैसे वे स्वयं हैं. इस प्रकार के बचकाने लोग अपने आप को हमेशा ही सही मानते हैं. और अपने से भिन्न लोगों को वे हमेशा ही गलत मानते हैं. यही कारण है कि इन की लोगों से पटती नहीं है और ये बातबात में नाराज हो कर मुंह फुला लेते हैं.

अविकसित व्यक्तित्व के लोग आत्मकेंद्रित होते हैं. ऐसे लोग अकेलेपन को ही पसंद करते हैं. और अपने ही झुकाव या रुझान के मुताबिक दूसरों के कार्यकलापों का फैसला लेते रहते हैं. अकेलेपन की जिंदगी के शौकीन इन लोगों को रातदिन पुरानी बातें याद करते रहने और आगे के लिए तानाबाना बुनते रहने का खूब समय मिल जाता है. अच्छा हो ऐसे लोग एकाकीपन छोड़ दें क्योंकि पारस्परिक अंतरसंबंधों की प्रेमभरी ऊष्मा में पुराने घाव कुरेदते रहने के बजाए अंदर की घुटन और क्रोध निकाल बाहर करने की क्षमता होती है.

शक्की, वहमी या व्यामोहाभ व्यक्तित्व के लोग भी न भूलते हैं न क्षमा करते हैं. इन लोगों को हर आदमी उन के खिलाफ षड्यंत्र करता दिखाई देता है.

वे लोग भी जो स्वयं को माफ नहीं कर सकते और अपनी पुरानी भूलों व गलतियों का आज तक शोक मना रहे हैं, कभी दूसरों की गलतियां नहीं भूल सकते. ऐसे लोग अपराधभाव से दबेकुचले और कुंठित रहते हैं और आत्मग्लानि से स्वयं को जीवन भर दंडित करते रहते हैं. जब वे स्वयं के प्रति निर्दयता का व्यवहार कर रहे हैं तो दूसरे के प्रति सहानुभूति कैसे रख सकते हैं? जो लोग अपनी गलतियों पर आत्मग्लानि से पीड़ित होने के बजाय अपने आप को सुधार लेते हैं वही लोग बिना नाराज हुए दूसरे को सुधरने का मौका दे सकते हैं.

क्षमाशीलता अहसान नहीं है

सब से पहले तो हमें यह समझ लेना चाहिए कि क्षमाशील हो कर दूसरे के दोषों को भूल जाना किसी पर अहसान नहीं है बल्कि यह हमारे ही हित में है. निरंतर गुस्से में रहने से आप का मन हमेशा उत्तेजित बना रहेगा और मानसिक उत्तेजना से आमाशय व्रण और अम्लता जैसी शिकायतें शुरू हो सकती हैं. इस के अतिरिक्त दस्त, अतिसार, पेशीय तनाव, सिरदर्द, आंखों के आगे धुंधलापन आना, कमर दर्द, गरदन में दर्द आदि लक्षण भी प्रकट हो सकते हैं.

अत्यधिक उत्तेजना और क्षोभ से दिल की धड़कनें तेज और अनियमित हो सकती हैं और एंजाइना जैसे हृदय रोग भी शुरू हो सकते हैं. मन में क्रोध, बैरभाव और द्वेष पालते रहने से सब से अधिक संभावना होती है उच्च रक्तचाप की बीमारी पैदा होने की. एक बार आप का रक्तचाप ऊंचा हो गया तो आप को हमेशा के लिए सावधानी बरतनी पड़ेगी. इन सब मुसीबतों से बचाव के लिए एक ही व्यावहारिक सूत्र है—भूल जाओ और क्षमा कर दो.

बाबू नंदकिशोर बिजली विभाग में लिपिक हैं. 15 वर्ष की नौकरी में उन का 17 बार स्थानांतरण हो चुका है. हर जगह अपने साथियों से लड़े, अधिकारियों से झगड़े और जिस महल्ले में रहे अपने पड़ोसियों से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपसी मनमुटाव भुला कर मित्रता का भाव बनाए रखना ही सफल जीवन की कुंजी है.

मनमुटाव किया. रातदिन इस जमाने को, समाज को, परिवारजनों को, रिश्तेदारों को और इस शिक्षापद्धति को गालियां देते रहते हैं. पेट में अल्सर का दो बार आपरेशन करा चुके हैं और अब उच्च रक्तचाप के शिकार हो गए हैं.

वृद्धा तारा बूआ की उम्र हो गई है 70 साल. 55 वर्ष पहले शादी हुई थी. जाते ही सासससुर से लड़ना शुरू कर दिया और जब तक वे जीवित रहे उन से कभी न बोली. फिर जेठानी, देवरानी से महाभारत शुरू और बोलचाल बंद. सभी भाई अलगअलग रहने लगे.

तारा के तीन लड़कों की शादियां हुईं. बहुएं आ गईं. बस फिर क्या था. घर में रातदिन बकबक चालू. महल्ले वाले सुनते थे. जब बहुएं ससुर के समझाने पर चुप हो जातीं तो ससुर पर मुसीबत. ससुर और बहुओं में मिलीभगत होने का आरोप अगला कदम होता. लड़कों को नौकरी मिली और वे दूर चले गए तो अब तारा बूआ पति से झगड़ने लगीं. आजकल वह अपने घर से नाराज हो कर पीहर में ही रह रही हैं.

दुनिया वैसे नहीं चलेगी जैसे आप चलाना चाहेंगे: यहां आप जैसे अरबों लोग बसते हैं. हर एक का अपना अलग स्वभाव है, अपनीअपनी समझ है. आप को दुनिया के मुताबिक ढलना होगा. कदमकदम पर समायोजन या समझौता करना पड़ेगा. सभी को साथ ले कर ही जीवनयात्रा पूरी करनी होती है.

अगर आप सब का मन रखने का प्रयास नहीं करते तो आप की तानाशाही कैसे चल सकती है? परिवार हो या दफ्तर, ट्रेन हो या बस, घर हो या देश, खेल का मैदान हो या राजनीति का मंच, प्रशासक की कुरसी हो या फुटपाथ हर जगह आप को दूसरों की भावनाओं और सुविधाओं का ध्यान रखना पड़ेगा. अगर आप ऐसा नहीं कर पाए तो आप कहीं जम नहीं पाएंगे औरों के साथ निर्वाह नहीं कर पाएंगे और हमेशा दुखी ही रहेंगे.

क्षमा भाव ही मैत्री भाव है: हम जिन से प्रेम करते हैं, उन के दोषों को नजरअंदाज कर देते हैं और उन्हें सुधारने में सहायता करते हैं. अगर आप किसी की गलतियों पर शांति से उसे समझाने की जगह मुंह फुला कर अलग हो गए तो आप ने दोनों का नुकसान किया, खुद का और दूसरे का. खुद का तो मन क्रोध के जहर से भर गया और दूसरों को पश्चात्ताप कर के सुधार करने के बजाय आप ने अपने क्रोधपूर्ण व्यवहार से और भी जिद्दी और सख्त बना दिया.

यहां तक कि परिवार में बच्चों को दंड देते रहने और उन पर तानाशाही करते रहने से वे हठी और दुराग्रही हो जाते हैं. बहुत क्रोधी पिता के लड़के दब्बू, डरपोक, हकलाने वाले, किताबी कीड़े या अपराधी बन जाते हैं, जबकि वे ही बच्चे स्वस्थ व्यवहार द्वारा बड़े कलाकार, प्रसिद्ध खिलाड़ी या प्रभावशाली वक्ता बन सकते थे.

संक्षेप में, दूसरों को अपनेआप में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुधार करने की प्रेरणा आप के प्यार और क्षमाभाव से ही मिल सकती है. नाराजी और बदले का भाव पालते रहने से आप का ही अहित होगा. जिस प्रकार लोहे का जंग लोहे को ही खा जाता है उसी तरह आप का गुस्सा आप को ही खा जाएगा.

मुंशी रामदयाल और चौधरी रामेश्वर में जमीन के चार गज टुकड़े के लिए 20 साल से मुकदमा चल रहा था. दोनों परिवारों में बोलचाल नहीं थी. रातदिन एकदूसरे को नुकसान पहुंचाने की योजनाएं बनती थीं. कई फौजदारी मुकदमे भी चल पड़े थे. लगभग रोजाना ही स्त्रियों और बच्चों में तूतू मैंमैं होती रहती थी.

एक दिन मुंशीजी का लड़का सिद्धार्थ बूढ़े और बीमार चौधरीजी के स्वास्थ्य का हालचाल पूछने उन के घर चला गया. दिल साफ हो गए. झगड़े खत्म हो गए. 50 रुपए की जमीन पर दोनों पक्षों के 50 हजार रुपए खर्च हो चुके थे. बड़े लोग भी आपस में मिल बैठे और दोनों पक्षों ने तुरंत अपने मुकदमे वापस ले लिए. ठंडे लोहे ने गरम लोहे को काट दिया. दोनों परिवारों ने अपनी गलतियों पर पश्चात्ताप किया. नए बच्चों ने सीखा एक चमत्कार—भूलो और क्षमा करो.

बुरे से बुरे आदमी में भी कोई न कोई गुण अवश्य होता है और श्रेष्ठ व्यक्ति में भी कोई कमजोरी पाई जा सकती है. हम सभी का कर्तव्य है कि सभी को भूलो और क्षमा करो की नीति पर चलते हुए सुधार करने का मौका दें.

मित्रों की संख्या बढ़ाइए

आप भी शत्रुभाव समाप्त कर के मित्रों की संख्या बढ़ाइए. अगर आप में दूसरों के दोषों पर नाराज होने के बजाय शांत रहने की क्षमता आ गई और गुस्से में चिल्ला पड़ने के अवसर पर मौन रहने की सहनशीलता आ गई तो आप को यह सारी दुनिया ही मैत्रीपूर्ण लगने लगेगी. आप की लोकप्रियता को इस से अधिक और कोई चीज नहीं बढ़ा सकती.

क्षमा मांगने से भी बहुत कठिन है क्षमा कर देना. क्षमा मांगने के लिए इतना ही काफी है कि हमारे मन में अपनी गलती के लिए पश्चात्ताप पैदा हो जाए और हम सच्चे दिल से यह चाहें कि दूसरे को जो कष्ट हुआ उसे वह भूल जाए. मगर क्षमा कर देना इतना आसान नहीं. ऊपर से आप भले ही किसी को माफ कर दें मगर जब तक आप का दिल पूरी तरह साफ नहीं हो गया है, जब तक आप ने दूसरे के कहे कटु वचनों को भुला नहीं दिया है, जब तक उस के द्वारा पहुंचाए नुकसान को मन से निकाल न दिया है, जब तक आप उस में हो रहे सुधार से प्रसन्न नहीं हो गए हैं, समझ लीजिए, आप ने उसे क्षमा नहीं किया है.

हम सभी विभिन्न प्रकार के संबंधों के तानेबाने में गुंथे हुए हैं. ये संबंध दफ्तर के भी हो सकते हैं, घर के भी और पड़ोस के भी. याद रखिए, सभी प्रकार के संबंधों को सींचना पड़ता है, ठीक वैसे ही जैसे माली सुंदर पुष्पों के लिए बगिया को सींचता है. संबंधों को लगातार प्रेमपूर्ण व्यवहार की खुराक चाहिए अन्यथा ये सूख जाते हैं.

समयसमय पर पैदा हुई अप्रिय स्थितियों को भी साफ करते रहना होता है और इस का एक ही तरीका है—भूलो और क्षमा करो. आप पूछेंगे—भूलें कैसे? उत्तर है—क्षमा प्रार्थना और आत्मसुधार द्वारा.

उदाहरण के लिए, आप ने गुस्से में किसी प्रियजन को कड़वे शब्द कह दिए. अब आप पछता रहे हैं. मगर इस घटना को भूलें कैसे? एक ही तरीका है. जब तक आप उस व्यक्ति से क्षमा नहीं मांग लेते या अपने गुस्से के लिए खेद प्रकट नहीं कर देते, आप पश्चात्ताप से पीड़ित रहेंगे और उसे भूलना आप के लिए मुशकिल हो जाएगा. खेद प्रकट करते ही आप का मन हलका हो जाएगा और आप अपने अतीत की जकड़ से छूट जाएंगे.

याद रखिए, बिना भूले क्षमा नहीं किया जा सकता है और बिना क्षमाभाव के भूला नहीं जा सकता है. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सच्चा साथी

कहानी • माया प्रधान

दीवार घड़ी की टनटन के साथ ही आशिमा चौंक कर उठ गई. रोतेरोते उस की आंखें सूज गई थीं. आंखों पर ठंडे पानी के छींटे मारे, बाल ठीक किए और रसोई में जा कर चाय की तैयारी करने लगी.

उस के हाथ तेजी से चल रहे थे क्योंकि रंजन अपने मित्र के साथ आने ही वाला था पर उस के मस्तिष्क में द्वंद्व मचा हुआ था. एक के बाद एक दुख की काली घटाएं उन के छोटे से घर के सुख को अपना ग्रास बना रही थीं.

थोड़ी ही देर में रंजन उसे आवाज देते हुए सीधे रसोई में ही आ गया. आशिमा ने गरदन उठा कर उसे देखा और मुसकराने की चेष्टा की पर रंजन ने उस की गीली आंखें देख ली थीं. हाथ का बैग रख कर बोला, "क्या हुआ आशी?"

आशिमा ट्रे में प्याले रखते हुए बोली, "आज द्वारकाजी फिर आए थे."

"अच्छा." रंजन की आवाज भी बुझ गई. "क्या कह रहे थे?"

"वही मकान खाली करने की पुरानी धमकी दे रहे थे."

रंजन ने एक आह सी भरी. बैग उठाया और बाहर निकलते हुए बोला, "प्रवीन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रंजन अपने मित्र राकेश के साथ व्यापार करने लगा. परंतु रंजन को इस का अनुभव नहीं था, न ही वह अनुभव हासिल करना चाहता था. एक दुर्घटना में राकेश की मृत्यु होते ही उन का धंधा चौपट हो गया. उसे दिन में तारे नजर आने लगे. तभी राकेश की पत्नी शोभा ने जो सुझाव दिए उस ने रंजन और आशिमा की आंखें खोल दीं.

आया है, देखें, कुछ काम बनता है या नहीं."

आशिमा उन दोनों की चाय पहुंचा कर पुनः पलंग पर जा लेटी. उस का मन किसी भी कार्य में नहीं लग रहा था. कानों में मकान मालिक द्वारका के स्वर पुनः गूंजने लगे, "अगर एक माह के अंदर यह घर खाली नहीं कर दिया तो मुझे अब न्यायालय का दरवाजा खटखटाना पड़ेगा."

आशिमा बोली थी, "आप तो जानते हैं, पिछले छः माह से हमारे व्यापार में घाटा ही घाटा हो रहा है. ऐसे में एक नई परेशानी न खड़ी करें."

"कमाल है, आप सिर्फ अपने ही कष्ट की बात सोच रही हैं. हमारे बेटे का विवाह हो गया है. हमें अब यह घर भी चाहिए... आप को इसे खाली करने में क्या तकलीफ है?"

रंजन तीन माह से इस घर का किराया नहीं दे पा रहा था. आशिमा जानती थी कि बात शायद केवल तीन माह के किराए की नहीं है. बात थी उस साख के खो जाने की, जिस के सहारे मनुष्य समाज में एक उच्च स्थान बना पाता है. वह साख रंजन बहुत तीव्रता से खोता जा रहा था. उस के जिस व्यापार के जमते ही आशिमा का चेहरा गर्व से दिपदिपाने लगा था, यहां तक कि अपनेपरायों की पहचान भी वह खो चली थी उसी व्यापार में अब घाटा ही घाटा हो रहा था. रंजन बारबार हाथपैर मार रहा था कि फिर से सब कुछ पूर्ववत चल पड़े.

आशिमा की आंखों में कुछ वर्ष पूर्व की कितनी बातें, कितने चेहरे घूम गए. केवल 10 वर्ष ही तो हुए थे, जब वह रंजन की पत्नी बन कर उस छोटे से मकान में आई थी. मन में थी ढेरों उमंगें, ऊंचेऊंचे आदर्श व साथ में थी पिता की दी हुई काफी धनराशि.

रंजन और आशिमा के प्यार की कहानी उस छोटे से घर में सब को मालूम थी. बहुत खुले दिल से तो नहीं, फिर भी रंजन की मां ने उसे ब्याह की आज्ञा दे दी थी. बेहद लाड़ली बेटी होने के कारण मातापिता को मनाने में आशिमा को भी अधिक परेशानी नहीं हुई.

उसे वह दिन अच्छी तरह याद था, जब रंजन ने अपनी मां से प्रथम बार उसे मिलवाया था. उन्होंने धीरे से कहा था, "आओ बेटी, इस छोटे से घर में तुम्हारा स्वागत है. यहां तुम्हें रहने में कष्ट चाहे जितना हो पर हमारे प्यार में कभी कोई कमी नहीं पाओगी."

तब प्यार के साथ आदर्श का सुनहरा रंग भी मन में हिलोरे ले रहा था. मां के चरण छू कर आशिमा बोली थी, "यह छोटा सा घर ही हमारी खुशियों का सुनहरा संसार होगा."

अब अपने ही शब्दों की मार एक चाबुक की तरह उसे तिलमिला गई. कहां है, वह सुनहरा संसार? किस ने उसे तहसनहस कर दिया. आदर्शों के वे सुनहरे रंग कैसे मटियाले होने लगे. उस छोटे से घर में कब और कैसे उस का दम घुटने लगा, यह भी ठीक से याद नहीं था.

रंजन बैंक में एक साधारण कर्मचारी था. आशिमा के पिता जब भी आते, उसे अपना व्यापार आरंभ करने को प्रोत्साहित करते. आखिर उन्होंने अपनी बेटी के नाम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...उस की दुकान के कपड़े बाहर भी जाने लगे. दोनों मित्रों ने तब एक छोटी सी जगह ले कर कुछ दर्जियों के साथ अपने ही निरीक्षण में कार्य बढ़ाना आरंभ कर दिया.

"भाभीजी, आप ने तो बहुत अच्छी राह सुझाई है." रंजन खुश हो कर बोला.

बैंक में एक मोटी रकम किस लिए दी थी. आशिमा को भी उस बड़े परिवार और छोटे से घर में घुटन महसूस होने लगी थी. दो ननदों का ब्याह होना बाकी था और देवर पढ़ रहा था. एक नई चिंता आशिमा को परेशान करने लगी थी कि उस का पैसा कहीं ननदों के ब्याह में खर्च न कर दिया जाए. इसी लिए वह भी रंजन को व्यापार करने के लिए जोर देने लगी थी.

आखिर एक मित्र राकेश के साथ मिल कर रंजन ने सिलेसिलाए कपड़ों का व्यापार आरंभ किया. एक दुकान भी किराए पर ले ली. बहुत जल्दी ही वह उद्योग रंग

रंजन चाहता था कि एक दिन किसी फैक्टरी का मालिक बने, जहां निर्यात के लिए बड़े पैमाने पर माल की कटाईछंटाई व सिलाई आदि हो सके. जब व्यापार फलफूल रहा था तभी रंजन की बहन के विवाह की बात तय हो गई थी. पर विवाह से पूर्व ही अति साधारण घरेलू नोकझोंक के मध्य अचानक आशिमा हठ कर बैठी कि अब वह इस घर में नहीं रह सकती. उस के हठ के आगे रंजन को झुकना पड़ा और तभी से इस घर में आ कर वे लोग रहने लगे थे. आशिमा सोचती थी कि एक दिन अपना मकान भी बनवा लेगी. बच्चों को उस ने महंगे स्कूल में भरती करवा दिया था.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्व बाल साहित्य

विश्व बाल पुस्तकें

आप के बच्चों के लिए अति आवश्यक

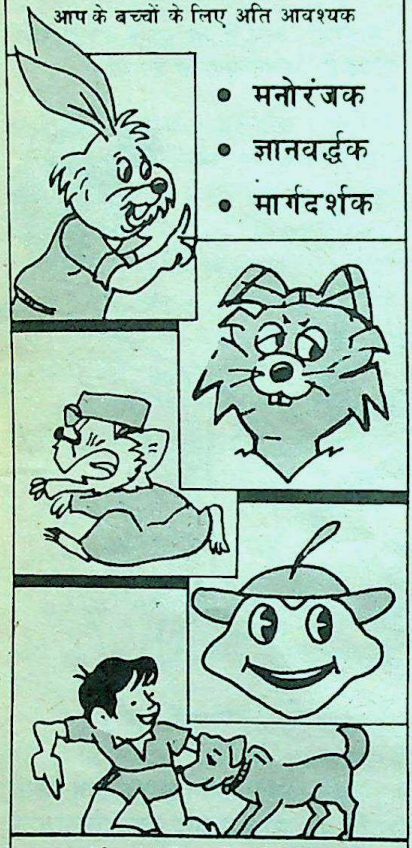

- मनोरंजक
- ज्ञानवर्द्धक
- मार्गदर्शक

आकर्षक रंगीन चित्रों में चीकू, चुंचू, पप्पू, पिंटू और मोती भी.

350 से अधिक हिंदी और अंग्रेजी की पुस्तकें

उपहार के लिए सब से उत्तम

दिल्ली बुक कंपनी,

एम-12, कनाट सरकस, नई दिल्ली-110001

फोन: 3321313

माताजी को बड़ी ठेस लगी थी. फिर भी उन्होंने कहा था, "देख बहू, धीरेधीरे यह घर खाली हो जाएगा. बेटियां ससुराल चली जाएंगी. छोटा पता नहीं नौकरी कर के कहां बसेगा. कुछ दिन कष्ट सह लो, फिर जैसे चाहे रहना."

पर आशिमा को स्वतंत्र जीवन जीने की ललक और पति के बढ़ते व्यापार का गर्व कुछ भी सोचनेसमझने नहीं दे रहा था. इसी बीच उस के अपने पिता का भी निधन हो गया था और पिता से मिलने वाली आर्थिक सहायता बंद हो गई.

आशिमा को मालूम नहीं था कि सुख जैसे चहकता हुआ जीवन में आता है, दुख उस से एकदम विपरीत स्थिति में अपने रंग दिखाता है. दुख बिल्ली की चाल से धीरेधीरे दबे पांव घर में प्रवेश कर चुका था पर उसे और रंजन को उस स्थिति की तनिक भी भनक नहीं थी.

रंजन का साझेदार मित्र राकेश बहुत ही समझदार, परिश्रमी व कुशल व्यापारी सिद्ध हुआ था. उसी की सूझबूझ से दोनों की साख बाजार में जम गई थी. राकेश के परिवार में पत्नी के अतिरिक्त दो बच्चे थे. पत्नी शोभा बहुत पढ़ीलिखी नहीं थी पर स्वभाव से अत्यंत विनम्र थी. राकेश प्रायः उस की प्रशंसा करते हुए कहता, "पढ़ाई ही सब कुछ नहीं होती. वही जानती है कि कैसे हर कदम पर पति का साथ देना है."

रंजन से भी वह प्रायः कहा करता था, "देख रंजन, खाली पैसा लगा कर और दुकान पर बैठ भर लेने से कोई व्यापारी नहीं बन जाता."

रंजन हंस देता, "तू जो है व्यापार में गहरे पैठने के लिए. मुझे तुझ पर बहुत भरोसा है. मित्र, तेरे होते हुए मुझे चिंता करने की क्या जरूरत है."

रंजन अधिकतर दुकान पर ही रहता. नौकरों से कैसे कार्य लेना है, आर्डर कैसे लाने हैं, बिक्री और निर्यात का प्रबंध कैसे करना है, ऐसे कार्यों में स्वयं को अधिक उलझाना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह आवश्यक नहीं समझता था.

उसे नहीं मालूम था कि व्यक्ति पर तो भरोसा किया जा सकता है, पर मृत्यु पर भरोसा करना मनुष्य के वश में नहीं है. उस दिन एक विदेशी आर्डर बुक करने ही राकेश गया था पर रास्ते में ही ट्रक दुर्घटना में सदासदा के लिए वह रंजन से दूर हो गया.

आशिमा से रंजन का वह विलाप देखा नहीं जाता था, वह रोरो कर कह रहा था, "मित्र, तुम ने तो कभी धोखा न देने का वादा किया था, फिर क्यों मझधार में छोड़ गए?"

धीरेधीरे रंजन उस दुख से उबरने की चेष्टा में लग गया. व्यापार में उस ने भरसक भागदौड़ आरंभ कर दी पर उस में एक कुशल प्रबंधक के न तो गुण थे और न ही गंभीर स्थितियों से जूझने का साहस. और धैर्य, परिश्रमी तो वह बचपन से ही नहीं था. शीघ्र क्रोधित हो जाना उस की सब से बड़ी कमजोरी थी.

कर्मचारी मनमानी करने लगे थे. व्यापार घाटे में चलने लगा था. ऐसा लगता था कि रंजन हवा में कुछ पतंगे बटोरता फिर रहा है. कभी एक डोर छूट जाती है तो कभी दूसरी. अंततः घाटे पर घाटा होने लगा.

मित्र के बच्चे भी छोटे थे. रंजन के कारण एक साथ दो परिवार दुख की गहरी छाया में घिर गए थे. चाहते हुए भी वह शोभा की सहायता नहीं कर पा रहा था.

कर्मचारियों को ठीक समय पर वेतन न दे पाने के कारण वे भी साथ छोड़ने लगे थे या जो थे, वे मन लगा कर कार्य नहीं कर रहे थे. पैसा साथ छोड़ रहा था और साथ ही उन दोनों का धैर्य भी जवाब दे रहा था.

रंजन ने कमरे की बत्ती जलाते हुए कहा, "यह क्या? तुम फिर अंधेरे में पड़ी रो रही हो."

आशिमा उठ कर बैठ गई. रंजन भी थकाहारा सा बैठते हुए कपड़े बदलने लगा, "आज दुकान बंद थी, सोचा था कि सारा दिन भागदौड़ कर के कुछ उधार का प्रबंध हो जाएगा."

उत्तम प्रभाव डालिये... बार बार

AKA/455/Hin

हरेक कोरस स्टेन्सिल कम से कम 3000 सुस्पष्ट और साफ़ प्रतिलिपियाँ निकालता है किमान भाव में.

हाथ की लिखाई और रेखाचित्रण के लिये खास कोरस स्टेन्सिल पेपर इस्तेमाल कर के अनोखी डिज़ाइने निर्माण कीजिये.

बहुरंगी प्रतिलिपियाँ बनाने के लिये तरह तरह की सामग्री और रंगीन छपाई की स्याहियाँ हैं.

खास प्रमाणित फॉरमॅट, लेटर हेड, आदि के लिये हम पहले से स्टेन्सिल काट कर देते हैं.

सभी स्टेशनरी स्टोर्स में उपलब्ध

कोरस (इंडिया) लि. बम्बई 400 018

कोरस
उत्तम छाप का प्रतीक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हम यह मकान छोड़ देंगे." अचानक आशिमा ने कहा.

"पर हम जाएंगे कहां? अम्मां, बाबूजी को तो पहले ही नाराज कर दिया, अब कहां ठौर है? तुम्हारे भाई तो हमें वैसे भी पसंद नहीं करते..." रंजन ने दोनों हथेलियां गरदन में फंसा कर तकिया सा बना लिया और वहीं लेट कर सोच में डूब गया.

"मातापिता भी कभी बच्चों से नाराज होते हैं? यह हमारा वहम है. सच तो यह है कि वे लोग भी अब अकेले हो गए हैं, उन्हें भी हमारी जरूरत है." आशिमा ने धीरे से कहा.

"नहीं आशी, अब अम्मां, बाबूजी को हम तभी मनाने जाएंगे, जब अपना एक छोटा सा मकान होगा और हम उन से कह सकेंगे कि बेटे का घर छोड़ कर आप किराए के मकान में क्यों पड़े हैं?"

आशिमा ने होंठ सिकोड़ लिए. "किराए का तो संभल नहीं रहा, अपना मकान कहां से आएगा?"

सुबह रंजन जल्दी उठ गया था. प्रवीन ने उसे बैंक से कर्ज दिलवाने में सहायता देने का वादा किया था और उस के व्यापार में भी रुचि दिखाई थी. वह बड़े विश्वास से शीघ्र से शीघ्र सब कुछ नए सिरे से ठीक करने को तत्पर हो रहा था.

आशिमा चाय बना रही थी तभी द्वार पर घंटी बजी. आशिमा ने द्वार खोला तो चौंक पड़ी, सामने शोभा खड़ी थी. उसे देख आशिमा ने सोचा, 'एक नई परेशानी. अवश्य ही यह यहां पैसों के लिए आई होगी.'

उस ने शोभा को अंदर आने को कहा. रंजन भी आ कर बैठ गया और हालचाल पूछने लगा. आशिमा चाय ले कर आई तो प्याला शोभा को देते हुए धीरे से जैसे सफाई में बोली, "भाई साहब क्या गए, हम सब पर तो मुसीबत का पहाड़ ही टूट पड़ा."

शोभा की आंखें भर आईं. आंसू पोंछ कर उस ने चाय का एक घूंट भरा, फिर बोली, "अब तो यह पहाड़ हमें ही मिलजुल कर हटाना है, भाई साहब."

"हां भाभी", रंजन बोला, "मैं बराबर भागदौड़ कर रहा हूं."

शोभा ने धीरे से कहा, "मैं भी आज इसी सिलसिले में आई हूं."

रंजन और आशिमा किसी आशंका से भयभीत स्तब्ध हो उसे देखने लगे. वह बोली "खर्चे कम किए बिना शायद राह न मिले. बच्चे पढ़ने चले जाते हैं, मैं सारा दिन अकेली रहती हूं. सोच रही हूं कि सिलाईकटाई वाली जगह यदि खाली करवा कर आप मेरे ही घर के एक कमरे में कुछ दर्जियों को बैठा दें तो मैं सारा दिन उन से अपनी देखरेख में कार्य ले सकूंगी."

रंजन और आशिमा ने फिर आश्चर्य से शोभा को देखा. कितनी विचित्र बात थी. स्थिति संभालने की यह राह आशिमा को क्यों नहीं सूझी. वह सोचने लगी, 'इस तरह तो सचमुच उस जगह का किराया भी बच जाएगा और एकांत का लाभ उठा कर कर्मचारी मनमानी भी नहीं कर पाएंगे."

रंजन को एहसास हुआ कि एक परिश्रमी और साहसी व्यक्ति की पत्नी भी ठीक उस के कदमों पर चल कर उतने ही धैर्य से अंधेरे में राह टटोल रही है. राकेश ठीक ही कहता था, "वह जानती है कि कैसे पति को हर कदम पर साथ देना है." राकेश इस दुनिया में नहीं था, फिर भी शोभा उस के छोड़े पदचिह्नों पर चलने को तत्पर थी और एक वह स्वयं है, घबराया और हारा हुआ व्यक्ति.

रंजन सोचते हुए बोला, "भाभीजी, आप ने तो बहुत ही अच्छी राह सुझाई है. आशिमा को चाहिए कि वह भी दिन के समय आप का साथ दे." उस ने हसरत से आशिमा को देखा.

आशिमा को लग रहा था कि वह इतने वर्षों तक केवल धन के बल पर या केवल काल्पनिक आदर्शों के कारण इतराती रही लेकिन शोभा ने कितनी सादगी और सहजता से स्वयं को एक उदाहरण के रूप में प्रस्तुत कर दिया है. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

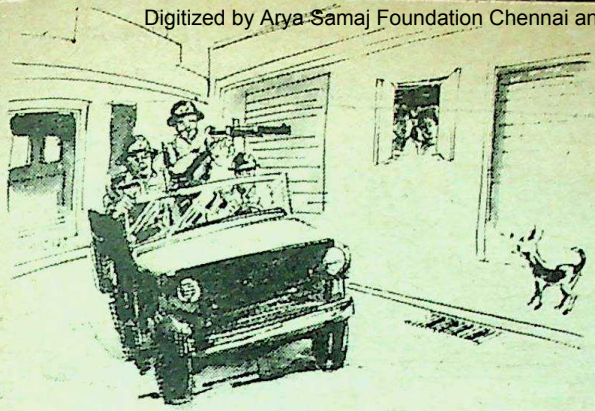

कर्फ्यू में कितने दिन

गद्यगीत • डा. दीनानाथ 'शरण'

हे प्रभावशाली कर्फ्यू! देश की आजादी के बाद तुम कई बार आए, मगर जल्द ही लौट गए. अपनी पूरी मर्यादा के साथ, लोगों के बीच अपना पूरा 'प्रभाव' जमा कर लेकिन इस बार तो तुम बैठ गए हो जम कर,पांव पसार कर, आम आवाम की जिंदगी दूभर कर.

एक लंबे समय से बैठे हो तुम और लूटपाट, हिंसा, हत्या का सिलसिला जैसे थम ही नहीं रहा. कहां चला गया तुम्हारा 'प्रभाव' प्रभु! कर्फ्यू!

जब लोग सुबह जल्दीजल्दी तैयार हो कर जाते थे अपने कामकाज पर, बहुत दिन हो गए!

दुकानें बंद पड़ी हैं, कितने दफ्तरों में ताले जड़े हैं और तुम हो अड़े हुए!

हाटबाट बंद है, पढ़ाई बंद है, स्कूलकालिज, विश्वविद्यालय में सब कुछ ठप है. छात्रों को महाविद्यालयों में गए कितने दिन बीत गए!

जब बूढ़े भी सुबह के समय टहलने निकलते थे, बच्चे मैदानों में खेलतेमचलते थे, स्त्रियां बाजारों में साड़ी खरीदने निकलती थीं, तितलियों सी लड़कियां, बच्चियां सड़कों पर विहार करती थीं, नौजवानों को नुक्कड़ों पर जमा होते देखते थे, हाय! वे दृश्य कहां गए? उन नजारों को देखे बहुत दिन हो गए.

इन दिनों ठेले वाले नहीं दिखाई देते, फेरी वाले नहीं आते, सब्जी वाली का इधर आना बंद है, अंडा बेचने वाले का भी पता नहीं. अजीब सन्नाटा है. कहां गए ये लोग?

अपनेअपने घरों में बंद हैं लोग! हे कर्फ्यू, तुम ने किस कदर कैद कर रखा है, बिना अपराध ही कैदी हुए हैं लोग. भैयाभाभी का समाचार नहीं मिला. 'चचा' बहुत दिन से नहीं आए. दोस्तों से 'गप्प' ठप है. एकदूसरे से करीब होते हुए भी आज कितनी दूर हैं लोग!

कर्फ्यू! क्रूर! निष्ठुर! निर्मम! राजनीतिक दमन के प्रतीक हो तुम. तुम्हारा जन्म ही राजतंत्र में राजनीतिक प्रतिशोध की भावना से हुआ. विलियम द कांकरर ने जाने किस कुसमय में तुम्हें जन्म दिया. आज की तमाम सरकारें तुम्हारा करती हैं दुरुपयोग. प्रशासनिक असफलताओं पर परदा डालने को आते हो तुम. बुलाए जाते हो तुम. साथ में बुला लाते हो सेना को तुम.

पुलिस द्वारा गश्त, सेना द्वारा फ्लैग मार्च. घरघर द्वार तोड़ कर तलाशी भलेभले लोगों की इज्जत उतार देते हो तुम.

कितनों की जानें जाती हैं,धनजन जाते हैं, मानमर्यादा भी जाती है, अब भी तो जाओ तुम. कब जाओगे तुम कर्फ्यू? क्यों हो तुम अड़े हुए? कितने दिन बीत गए! •

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पीर पंजाल के जंगल

कहानी ● निर्मलकुमार

आधे घंटे की गोलाबारी ने जंगल को दहला दिया.

अब पौ फट रही थी. पतझड़ की सुबह सहमे पहाड़ों पर एक गुलाबी आभा बिखेर रही थी. किंतु अब भी तरबतर पेड़ों से सूखी पत्तियों पर गिरती ओस का शोर जिंदगी के उस गीत की तरह था, जिसे मौत ने सुर दिए हों.

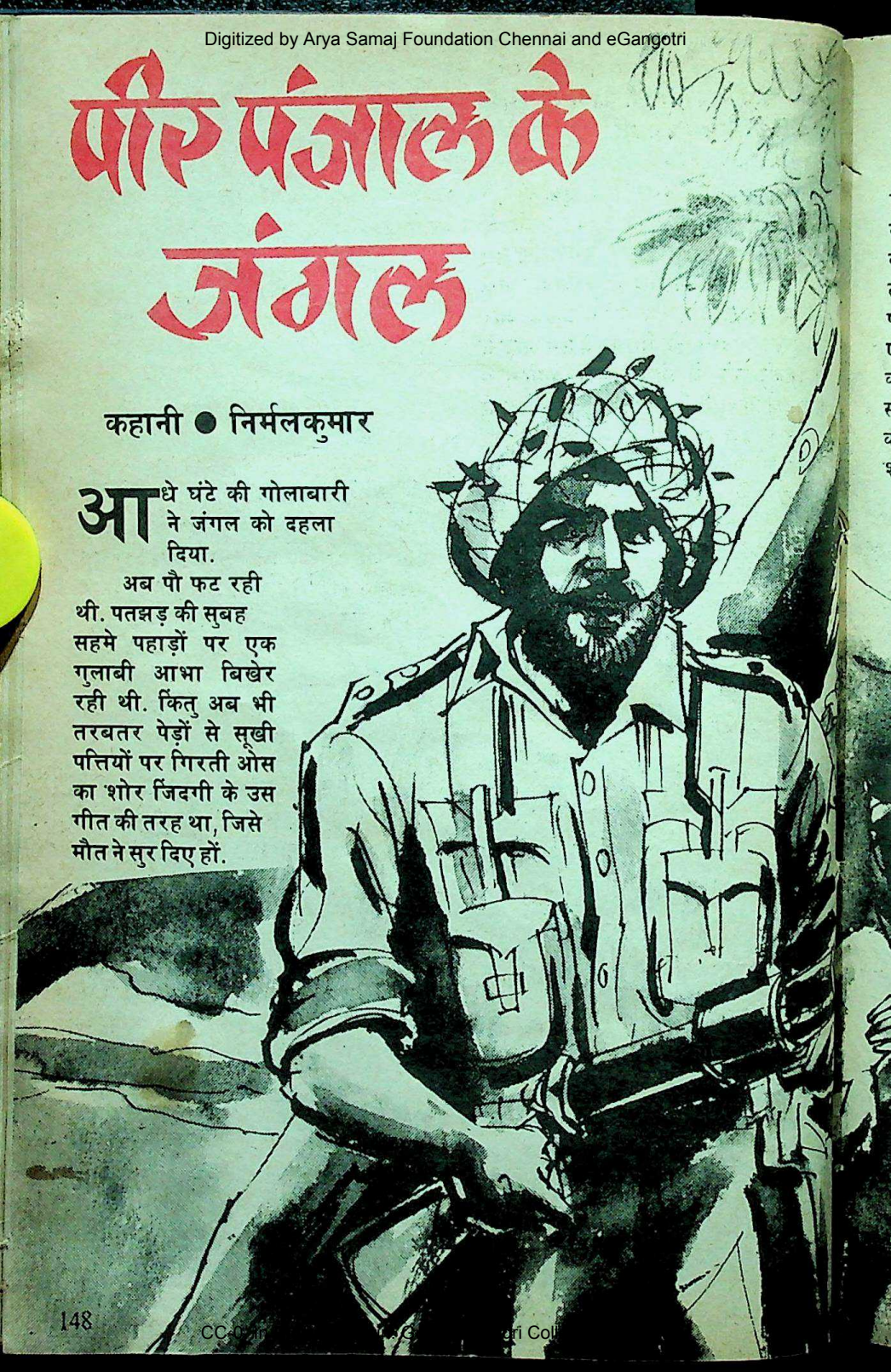

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मासूमियत को देख रहा था मगर महसूस नहीं कर सकता था. रात भर की गश्त, थकान, नींद और गोलियों की गर्जन उस के स्नायुओं को जकड़े हुए थी.

अचानक नीचे नाले पर खड्ड में इनसानी आकृतियां नजर आईं. एक आदमी दूसरे को पीठ पर लादे नाला पार करने की कोशिश कर रहा था. उस के पैर लड़खड़ाए तो कई आदमियों ने उसे थाम लिया ताकि पानी के बहाव में उस के पैर न उखड़ें. और एक दूसरे आदमी की पीठ पर वे उस आदमी को लादने लगे. ये लोग सलवारकमीज में साधारण कशमीरी लग रहे थे. उन में से कुछ ने चादरों से अपने जिस्म ढक रखे थे, शायद शस्त्र छिपाने को.

कुछ ही क्षणों में वह टुकड़ी नीचे खड्ड की ओर तेजी से उतरने लगी.

फौज ने उन्हें कुछ दूर जंगल में दबोच लिया. ये 12 आतंकवादी थे जो पाकिस्तान अधिकृत कशमीर में 15 दिन का प्रशिक्षण ले कर लौट रहे थे. इन्हें पाकिस्तानी शिविर से 6 अक्तूबर 1990 को छोड़ा गया था. आठ दिनों से ये लगातार चल रहे थे. इन में से अधिकांश किशोर थे. थकान, भूख और ठंड ने इन की दशा दयनीय कर दी थी.

पाकिस्तानियों के बहकावे में आ कर मुहम्मद सिकंदर काशमीरी मुसलमानों को सरहद के पार ले जा कर जबरन प्रशिक्षण दिलवाता और वादी में तोड़फोड़, मारकाट मचाने को प्रेरित करता था. तथ्य जब उजागर हुआ तब सब ने अपने दिल के घाव दिखलाए, पर यह तो सच था ही कि वे वादी में पंजाल के जंगल से भी अधिक घना आतंकवाद का अंधेरा फैलाने में सफल हो गए थे.

बड़ा मुशकिल होता है कशमीरियों में मुजाहिदों को चुनना. यह मारी कौम पंडितों की है जो लालच या डर से मुसलमान बने. पाकिस्तानी उस्तादों की बातचीत सुन कर जावेद स्तंभित रह गया.

Public Do... Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गोलाबारी से जो साथी जख्मी हुआ था, वह अब नहीं था. उसे ले कर चलना मुशकिल हो गया था और उस के घावों से काफी खून बह चुका था. इसलिए दल के नेता मुहम्मद सिकंदर ने उस की जीवनलीला समाप्त कर दी थी.

जिस तरह जानवर को जिबह करने से पहले कलमा पढ़ा जाता है, करीब उसी गंभीरता और नीयत के साथ पहले मुहम्मद सिकंदर ने उन्हें एक सच्चे आतंकवादी के गुण बताए और फिर एक पत्थर से जख्मी साथी के सिर पर चोट की. उस की सांस फिर भी चल रही थी. कर्तव्य भावना से बंधे मुहम्मद सिकंदर ने तब उस का गला घोंट कर उसे मृत्यु प्रदान की. उस की इस क्रूरता से टुकड़ी में मौन अप्रसन्नता थी, जिस का दबाव लीडर सिकंदर अपने दिल पर महसूस कर रहा था और चलताचलता अपनी सफाई दे रहा था.

"कभी जख्मी साथी को पीछे मत छोड़ना. कहे देता हूं मुजाहिदो, यह पहला उसूल है. अपने हाथ से उसे शहीद कर दो. कौम की आजादी के लिए बहुत कुरबानियां देनी पड़ती हैं. मैं देख रहा हूं, तुम में जो जाहिल और नामर्द हैं, उन के कलेजे लरज रहे हैं. याद रखो, उन्हें दोजख की आग मिलेगी. फौलादी सीने बनाओ. भूल जाओ घर, कुटंब, कबीला, भाई बिरादर. याद रखो सिर्फ 'कशमीर और आजादी' नापाक काफिरों से."

मरने वाला मंजूर अहमद वान था, जिसे तीन हफ्ते पहले जबरदस्ती 'जाबाज फोर्स' में भरती किया गया था. घर पर उस की जवान बीवी सायरा और छः महीने की बच्ची उस का इंतजार कर रहे थे. वह बाजार से अपनी बीवी के लिए सिर पर बांधने का एक ऊनी रूमाल ले कर लौट रहा था. एक सफेद जिप्सी में उसे दो आतंकवादियों ने जबरदस्ती घुसाया. 'जब जिहाद छिड़ा हो तो एक परिवार की रोजाना की सरल जिंदगी मुजाहिदीन को ऐयाशी दीखने लगती है. उसे उन दोनों ने लानत दी थी कि जब सारी घाटी में आग लगी थी, वह ऐयाशी में मशगूल था.

सायरा को एक और दुख था कि उस दिन वह उस से लड़ी थी और दिन भर बोली नहीं थी. लड़ने की वजह और कोई नहीं थी, बस इतनी सी कि मंजूर की आंखों की गहरी उदासी उस से सही नहीं जाती थी. इस उदासी में उसे अपनी सुंदर सजीली देह का अपमान महसूस होता था. इतना रूप दिखा कर भी उन आंखों की उदासी दूर नहीं कर पाती थी.

सायरा को क्या पता था कि मंजूर उस के लड़ने से कतई नाराज नहीं था. वह इस नाजुक सी लड़ाई को खूब समझता था और सच पूछे तो यह उसे अच्छी लगती थी. उसे मनाने के लिए ही उस ने उस रोज एक काला ऊनी सिर का रूमाल खरीदा था, जिस पर खूबसूरत सफेद लाल और नीले फूल कढ़े थे. वह सायरा को तो न दे सका मगर वह रूमाल उस के बहुत काम आया था.

पीर पंजाल की ऊंची चोटियों पर हवा बहुत ठंडी थी और उस से बचने को उस का स्वेटर नाकाफी था. तब यह रूमाल गले में बांध कर उस ने ठंड से कुछ बचाव किया था.

अब मंजूर अहमद वान का ताजा शव वही रूमाल गले में बांधे घनी झाड़ियों में पड़ा था और गंदरबाल के सलूरा गांव में बैठी उस की बीवी सायरा रोती बच्ची को चुप करा रही थी.

वह गागा कर अबोध बच्ची को उस के अब्बा के लौटने की जो आशा लोरी के रूप में दे रही थी, वह उस बच्ची के लिए कम और स्वयं उस के भयत्रस्त विरही हृदय के लिए अधिक थी.

आतंकवादियों के हथियार तुरंत ले लिए गए. उन के पास दो ए.के. 47, दो कालाशनिकोव और तीन पिस्तौलें थीं. बारूद नहीं था. काफी पूछताछ के बाद उन्होंने लाश की निशानदेही की. जब तक सैनिकों ने मंजूर अहमद वान की लाश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बरामद की, चीलें उस की आंखें निकाल चुकी थीं.

जिस समय आतंकवादियों से मंजूर के शव की शनाख्त कराई जा रही थी, सलूरा गांव में उस के घर के आंगन में गेंदे और गुलदाउदी के फूल पतझड़ की सुनहरी धूप में दमक रहे थे. उस का बूढ़ा बाप अरशाद वान नाश्ते में देर हो जाने के कारण उस की बीवी सायरा पर झल्ला रहा था. चिंता में जलते मनुष्य की भूख या तो मर जाती है या अत्यधिक भड़क उठती है.

सायरा जल्दीजल्दी नाश्ता बना रही थी और मंजूर की उदास आंखें रसोई की कलसाई दीवार पर बारबार लौट रही थीं और सायरा के ध्यान को उलझा रही थीं. मंजूर बी.ए. करने के बाद भी साल भर से बेरोजगार था. वह अपने बूढ़े बाप पर निर्भर था और इस का गम उसे हंसने नहीं देता था. अपने सुनहरे गेंदे जैसे जिस्म, अरुणाए केसरिया मुख और कोयल जैसी काली आंखों के उन्मुक्त सौंदर्य के बारबार प्रदर्शन से भी सायरा उस की आंखों की उदासी दूर नहीं कर सकी थी. आज उस उदासी को एक चील ने खा लिया था.

"उस से तुम्हें कुछ लेनादेना नहीं है जनाब. वह हमारा बिरादर है." पूछताछ के दौरान सिकंदर ने भारतीय कमांडर से कहा.

भूखे, थके आतंकवादियों को अब मंजूर की लाश ढोनी पड़ रही थी क्योंकि लाश पुलिस को पोस्टमार्टम के लिए देनी थी.

मुहम्मद सिकंदर को प्रशिक्षण देने वाले पाकिस्तानियों पर गुस्सा आ रहा था, जिन्होंने उन्हें पर्याप्त गोलियां नहीं दी थीं. उन्हें कह दिया था कि घाटी में वापस पहुंचने पर उन का आदमी खुद उन से मिलेगा और गोलियां और ग्रेनेड देगा. अगर उन्हें पर्याप्त गोलियां दे दी होतीं तो सैनिकों को मार डाला होता, गिरफ्तारी की नौबत ही न आती.

आतंकवाद सिखाने वालों के खुद अपने राग थे. वे अकसर बारूद में हेराफेरी कर लेते थे. कबाइलियों को अपने झगड़े निबटाने और मूंछें ऊंची रखने के लिए एवं डकैतों को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपना प्राचीन धंधा चलाने के लिए गालियों की बहुत जरूरत रहती है. उन से अच्छे दाम मिल जाते थे. इस से जो ऊपरी कमाई होती थी, वह पाकिस्तानी शिविर के मुखिया उस्मान साहब समेत सभी छोटेबड़े उस्तादों में बंट जाती थी.

ये उस्ताद अकसर कशमीरी लड़कों से बेहूदे मजाक किया करते थे, जिस से कभीकभी लड़के भड़क उठते थे. तब मुहम्मद सिकंदर उन्हें समझाता, "नई कोंपल के जवान हो न इसी लिए फौजियों के मजाक से नावाकिफ हो. इन की बातों का बुरा नहीं मानते, बच्चो... इन की बातों में एक शोख फिजूलियत होती है जो इन की जिंदादिली की सब से बड़ी दलील है."

सफर आठदस दिन का था. रास्ते के लिए खाना मांगने पर पाकिस्तानी प्रशिक्षण शिविर के कमांडर ने कहा था, "साले चले आते हैं खाने को."

एक पाकिस्तानी सिपाही बीच में बोला था, "उस्तादजी, भूखे होते हैं कशमीरी."

"अरे, इन के मुंह हमारे पंजाब का गंदुम लग गया है... मोटा चावल खाने वाले काफिर."

"कुछ भी कहो साहबजी, औरतें बहुत खूबसूरत होती हैं इन की."

"ओए, औरतें तो खूबसूरत होंगी ही. खाना खा के या तो फौलादी जिस्म बना लो या नरम जिस्म और खूबसूरत चेहरे. इन के जिस्म देखो नरमनरम."

जावेद इंटर में पढ़ता था, श्रीनगर में. नाजुक भोला सा लड़का, जिस को मांबाप दिन छिपने के बाद घर से बाहर नहीं रहने देते थे. उन का खयाल था कि रात को घूमने वाले लड़के आवारा हो जाते हैं. उस की दो बहनें हैं, बड़ी आयशा, जो मेडिकल कर रही है, छोटी सीमा, जो 10वीं में है. वह कालिज से लौट रहा था, जब एक शाम बारिश में उस के पास एक गाड़ी रुकी, उसे लिफ्ट दी और 200 किलोमीटर दूर ले गई. वहां सिकंदर था. उस ने उस जवान [illegible] लिए लड़ने की जरूरत पर पहला भाषण दिया.

जब उस ने वापस घर जाने की जिद की तो चाकू निकाल कर दिखाते हुए कहा था कि अगर तू न माना तो तेरी दोनों बहनों को नंगा कर दिया जाएगा और उन्हें बलूचों के हवाले कर दिया जाएगा. उस ने कुछ गद्दार लड़कों के नाम गिनाए थे, जिन्होंने पाकिस्तान प्रशिक्षण के लिए जाने से इनकार कर दिया था और जिन की बहनों को मजबूर हो कर पाकिस्तान पहुंचाना पड़ा था.

"और कोई हमें शौक है कि अपने कशमीर की लड़कियों की बेइज्जती कराएं." सिकंदर ने पाकिस्तानी सिपाहियों के बोलने का अंदाज नकल करतेकरते काफी कुछ अपना लिया था. उसी अंदाज में वह बोला, "ओए, मजबूरी होती है कोई चीज. जो अपने वतन के लिए कुरबानी नहीं दे सकता, उस का बीज जरूर दोगला है. उस के खानदान का इतिहास देखो जरूर कोई न कोई सुराग मिल जाएगा. उस की दादी या नानी जरूर उन पाकिस्तानी सिपाहियों से हामिला हुई होंगी, जिन्होंने 1947 में हजारों कशमीरी औरतों की इज्जत खराब की थी."

जावेद को संयोगवश इसी घोषणा के सत्यापन स्वरूप पाकिस्तानी प्रशिक्षण शिविर में एक वार्त्तालाप सुनने को मिला था, जो बराबर के खेमे में हो रहा था. दो पाकिस्तानी उस्ताद शराब पी कर खुल गए थे.

जावेद ने सुना, एक कह रहा था, "बड़ा मुशकिल होता है कशमीरियों में मुजहिदों को चुनना, यह सारी कौम पंडितों की है जो लालच से या डर से मुसलमान बने. इन के नाम नहीं देखते, कोई दर है, कोई गुरटू, कोई हुक्कू, कोई टकरू. सब के सब काफिर. इन के वही लड़के काम आते हैं जो कबाइली हमले से पैदा हुए."

"कबाइली हमले से?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"ओए, तू नहीं समझ सकता न पुत्तर. मेरा वालिद कबाइली हमले में कशमीर गया था. वह मेरी मां को चिढ़ाया करता था कि उस का एक और बेटा है कशमीर में. तू जानता है, यह सिकंदर इन कशमीरियों का लीडर, मेरा भाई है. हम दोनों का एक ही वालिद है. मैं ने उस औरत का पता सिकंदर को दिया था और तब उस ने बताया था कि वह उस की मां है. हमले के नौ महीने बाद की सिकंदर की पैदाइश है."

दो घंटे बाद वे भारतीय शिविर में लाए गए. वहां पहले उन सब को नहाने के लिए मजबूर किया गया और फिर वे ही कपड़े दिए गए, गंदे, बदबू भरे जो पहले से पहने हुए थे.

भारतीय कमांडर जसवंतसिंह हैरान था और अपनी हैरानी पूछताछ के दौरान जाहिर कर रहा था, "अरे, मैं हैरान हूं कि तुम अपने ही घर में आग लगाने आ गए. अरे, तुम्हारे पास दिलदिमाग कुछ है या नहीं. भूल गए, 1947 में क्या हाल किया था पाकिस्तानियों ने तुम्हारा."

सिकंदर बोला, "उस से तुम्हें लेनादेना कुछ नहीं है जनाब. वह हमारा बिरादर है."

कमांडर अवाक उस का मुंह देखता रह गया.

मगर सूबेदार जवाहरसिंह को उस की बेशर्मी पसंद नहीं आई. बंदूक का कुंदा उस के कंधों पर ठोंकता हुआ वह बोला, "अबे, तेरा भाई है तो क्या उसे अपनी बहन देगा. तेरा खून है या पानी? जिन्होंने तुम्हारी दादियों और नानियों की इज्जत लूटी, आज वे ही तुम्हारे भाई बन गए. सब इतनी जल्दी भूल गए. अरे, जिस पाकिस्तान के गुण गाते हो, देखा उन का कारनामा बंगलादेश में. मदर टेरेसा को तीन हजार बंगाली औरतें नंगी मिली थीं पाकिस्तानी फौज के बंकरों में. उन के कपड़े ही नहीं थे कि कहीं वे भाग न जाएं, वे गैर थीं."

"जनाब आप हमें भड़काना चाहते हैं. हमारे मकसद से हटाना चाहते हैं, आप..." सिकंदर फिर तमका.

कमांडर ने परेशानी से बालों में हाथ फेरा, गुस्से में अपने बाल नोचे, रोती हुई हंसी हंसा और सिकंदर को पास बुलाया. एक हलकी सी चपत उस के मुंह पर मारी, फिर एक फीकी, खोखली हंसी हंसते हुए बोला, "अबे, तू तो बुड्ढा हो गया. वे तो चलो मासूम हैं, नौजवान हैं, मगर तुम्हें क्या हुआ? तेरे दिमाग को क्या हो गया? अबे दहशतगर्दी से क्या हासिल करेगा तू?" कमांडर क्रोध और निराशा में चीखा.

फिर आवाज धीमी की और उसे प्यार के सुर में समझाता हुआ बोला,

"अरे मूर्ख, इनसानियत सब से बड़ा मजहब है. हिंदू मुसलमान हमारी पहचान नहीं है. यह तो दुनिया वालों के लगाए हुए ठप्पे हैं. कुदरत ने हमें एक मजहब दिया है, इनसानियत. जो तुम्हारी इज्जत करे, तुम से इनसान जैसा सुलूक करे, वह तुम्हारा भाई है या वह जो तुम्हारे अजीजों को कत्ल करे और तुम्हारी बहनों की इज्जत लूटे? अरे कब निकलोगे इन वहशी अंधेरों से? हमारी

शिक्षा

शिक्षित पत्नी ने
पति महाशय को
यूं तो कई बातें
काम की सिखाईं,
मसलन, खाना पकाना
और स्वेटर की बुनाई.

—हरिविश्नोई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फौज का अखलाक देखो. हमारी एक भी सिपाही तुम लोगों की गद्दारी के बावजूद कभी कोई ओछी हरकत करता है? यही फर्क है हिंदुस्तानी और पाकिस्तानी में."

सिराजुद्दीन हूक्ककुल 19 साल का था. बघपोरा का रहने वाला. बाप आपूर्ति विभाग में सहायक निदेशक है और बड़ा भाई कृषि सहायक. फलों के कारोबार में 150 रुपए रोज कमा लेता था. उसे भी आतंकवादी जबरदस्ती पकड़ कर ले गए थे. वह भागने लगा था. गिरफ्तारी के हंगामे में उसे कुछ चोट लगी थी, कुछ सदमा था और 15 दिनों के प्रशिक्षण की तकलीफें थीं. कुछ पीर पंजाल के जंगलों में भूखे, पानी पी कर गुजारे दिन थे, जिन्होंने उसे विक्षिप्त कर दिया था. वह बीचबीच में फटी आंखें खोलता और पूछता कौन सा शिविर है? मुजफ्फराबाद या मीरपुर?

चीलें सनसनाती हुई नीची उड़ान ले रही थीं. हवा में पतझड़ की ठंड आ गई थी. कभी निवायापन कहने न देता कि गर्मियां चली गईं. कभी ठंडी छुरी की धार याद दिला देती कि शीत का दानव पहाड़ों की चोटी पर भेड़ें लिए आ बैठा है. कभी भी, किसी भी घड़ी, वादियों पर उस की सफेद दाढ़ी और भेड़ें फैल जाएंगी.

इन 12 के अलावा और तीन आतंकवादी पकड़ कर शिविर में लाए गए थे. कोई तेलेन गजनजीर में पकड़ा था, कोई कुपवारा सेक्टर में, कोई कंगन में. कोई मलाश पहाड़ पार कर के आया था, कोई पीर पंजाल. किसी ने गुलतारी के जंगल में प्रशिक्षण लिया था, किसी ने यूसमर्ग में.

"साहबजी, मुझे खानसामा बना लो या दर्जी का काम ले लो. मुझे छोड़ना मत वरना ये फिर पकड़ लेंगे." कुलगांव का 18 वर्षीय मुहम्मद अशरफ मीर इल्तजा कर रहा था.

फिर से पकड़े जाने का डर, घर वालों से बदला लिए जाने का डर, अनिश्चितता का डर और लौट कर जाने पर परिवार की दुर्दशा में शरीक होने का डर था.

"अब घर नहीं जाना चाहता साहबजी." गुलाम हसन भी बोला. गला भर्रा आया था.

"क्यों? तुम्हारी बीवी है, बच्चे हैं."

"बस," गुलाम हसन ने हाथ आसमान की ओर फेंके, कुछ बोलना चाहा, मगर उस के शब्द रुलाई में फूट गए. उस ने एक सिगरेट मांगी और सिगरेट के कशों में अपनी भावनाओं पर काबू पाने की कोशिश करने लगा. वह अपना दुख कैसे भरी मजलिस में बयां करता. वह जानता था, उसे छः महीने हो गए थे घर छोड़े. उस की पत्नी और शकील एकदूसरे के हो चुके होंगे. उन दोनों में एक कशिश थी एकदूसरे के लिए जो वह उसी दिन भांप गया था, जब शकील विवाह की मुबारकबाद देने उस के यहां आया था. विवाह के पिछले पांच वर्षों में उस ने इस कशिश को अपने दिल के आरपार कई बार महसूस किया था. उसे लगने लगा था, जैसे उस का दिल एक ऊंचा पहाड़ हो. जो उन दो प्रेमियों को मिलने से रोक रहा हो. अब तो वे एकदूसरे के आगोश में अपने दिल के अरमान निकाल चुके होंगे. गुलाम हसन के दोनों बच्चे भी बीवी के साथ शकील ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपना लिए होंगे. उसे तो पता था कुछ होंगे गांव वाले.

गुलाम हसन के खयालों में एक अनावश्यक सी तेजी आई. अगर इन्होंने छोड़ दिया तो मैं कशमीर में नहीं रहूंगा, उस ने तय किया.

"मैं शिमला चला जाऊंगा, साहब. कुलीगिरी कर के जिंदगी तमाम कर दूंगा." उस के होंठों से जैसे बिना उस के बोले, बिना उस की किसी कोशिश के अपनेआप निकला.

"मगर शिमला क्यों चले जाओगे?" अफसर ने पूछा.

गुलाम हसन खयालों की दुनिया से वापस शिविर में आ गया था. खयालों का अंधड़ जा चुका था और अब अंधड़ की जगह खयाल उस की नाभि में एक भंवर बना रहे थे, जिस में उस की जिंदगी छोटी सी कागज की नाव की तरह डगमगा रही थी. उस ने कोई उत्तर नहीं दिया. उस की सारी चेतना ने जैसे उस नाव को दो हाथों में पकड़ लिया था.

जिंदगी की नाव खयालों के भंवर में रुक गई थी. उसे चेतना ने डूबने से बचा लिया था. मगर इस तरह रोक दिए जाने से अब घबराहट पेट से उठ सीधे दिल में आ गई थी. गुलाम हसन का दिल बहुत घबराने लगा और सहारा लेने के लिए वह जरा पीछे को सरका. मगर एक फौजी ने उसे रोक दिया, "उस का सहारा न लो. देखते नहीं, उस पर टेंट टिका है."

गुलाम हसन को पसीना आ गया था. उस की आंखों में अंधेरा अचानक उठ आया था. वह वहीं मिट्टी में गुडमुड़ा कर लेट गया, घुटने सीने के पास हो गए और गरदन सीने पर झुक गई. जितनी गोलाई उस का जिस्म बना सकता था, उतनी उस ने बना ली थी. गुलाम हसन को इस तरह गोलाई में जिस्म कर लेने में बड़ा सुख मिल रहा था.

रियाज अहमद ने उसे इस तरह लुढ़कते देखा तो उसे न जाने क्यों अपना भाई याद आया जो खिड़की से कूद गया था. हिजबुल मुजाहिदीन के दो ही लोग तो थे जो उस के गांव बेलवार में आए थे. गंदरवाल इलाके के और गांवों में भी वे ही दो गए थे. क्यों सब उन से डरते थे? अगर डरते न तो वे मार देते. उन पर हमला करते तो उन के साथी गांव को आ कर तहसनहस कर देते, घरों को आग लगा देते, और सारे इलजाम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय फौज पर लगा देते. उन पर कोई शक नहीं करता. कमरुद्दीन की बेटी के कपड़े हिजबुल मुजाहिदीन ने उतारे थे और उसे गांव के बीच में वस्त्रहीन खड़ा किया था. मगर दहशत के मारे जैसे गांव वाले अपनी आंखों पर यकीन खो बैठे थे. जांच करने वालों को उन के बयान यही थे कि भारतीय फौज ने ऐसा किया.

"लेकिन अगर मैं भी भाई की तरह खिड़की से कूद जाता? उन्होंने भाई का भी आखिर क्या कर लिया? हौसला भी कोई चीज है."

रियाज को अपने दिल में एक नई ताकत मिली. वह सोचने लगा, 'भाई कूद कर भाग गया और हिजबुल उस का कुछ नहीं कर सके. हम 20 को सिर्फ पूंच वाला गाइड इकबाल और एक अन्य गाइड भेड़ों की तरह हांक कर पीर पंजाल के पार ले गए थे. एक दहशत थी, जैसे ये दो नहीं दो लाख हों, जैसे हर पेड़ के पीछे एक हिजबुल था.' दहशत ने दिल में इन की संख्या कई गुनी कर दी थी.

रियाज को पहली बार यह करिश्मा साफ दिखा, उस के अपने दिल में वे दो दो लाख बन गए थे. दहशत दिल में दहशतगर्दी की आबादी बढ़ा देती है और तब आंखों को चारों तरफ दहशतगर्द ही नजर आने लगते हैं.

मगर यह हरकत जिगर में भी हो रही थी, उसे लगा. ज्योंज्यों यह खयाली आबादी बढ़ी त्योंत्यों सांस फूलने लगी. रियाज को हैरानी हुई कि यह कैसे दिलोजिगर थे उस के, जो उसी से गद्दारी करते रहे थे.

मन ही मन वह बोला, "नहीं, वे सिर्फ दो थे. दो हिजबुल. तुम ने उन के दो लाख किए. तुम किसी इनसान के जिस्म में रहने के काबिल नहीं हो. तुम्हें तो किसी जानवर का दिलोजिगर होना चाहिए था. ठीक से देखो, उस ने अपने दिलोजिगर को हुक्म दिया, वे दो थे, सिर्फ दो.'

और इस के बाद उस के दिलोजिगर में जैसे एक ताकत पानी की तरह चढ़ने लगी. 'मैं छूट जाऊं तो यह प्रशिक्षण दूसरे लोगों को भी दूंगा. कोई जरूरत नहीं है, मलाश या पीर पंजाल पहाड़ों के पार जाने की. ये दहशतगर्द मुट्ठी भर हैं. ये कुछ नहीं कर सकते. अगर उन दो पर हम 12 हमला कर देते तो वे हमें कैसे पीर पंजाल के पार ले जाते? अगर मैं और मेरा भाई उस दिन उन्हें घर में ही दबोच लेते तो?

'दहशत सच को झूठ कर देती है और झूठ को सच. रियाज को लगा कि तालीम दरअसल इस की होनी चाहिए कि कैसे दिल और जिगर अपनी आंखों से देखें, दहशत की आंखों से नहीं.'

उस के खयालों का यह सिलसिला तब टूटा, जब उस ने सुना, अहमद सपरू कह रहा था, "साहबजी, मुझ से बस में जब सिपाही ने पूछा तो मैं ने कुछ नहीं छिपाया. मैं ने बता दिया कि पाकिस्तान से प्रशिक्षण ले कर आ रहा हूं."

"झूठमूठ कह रहा है यह." रियाज के गले में आ कर शब्द रुक गए, "इस की पोल मेरे सामने एक दूसरे लड़के महमूद टकरू ने खोली थी, जिसे डरा कर यह सरहद के पार ले जा रहा था. बस में तो यह कह रहा था कि गांव से आया हूं और श्रीनगर जा रहा हूं."

अहमद सपरू की आंखें आशंका में उस की आंखों से मिलीं. मगर रियाज को क्या पड़ी थी जो सच कहता. अच्छा है, यह मासूमियत अहमद सपरू को बचा ले जाए.

सिकंदर अब तक 212 लड़के सरहद के पार ले जा चुका था और वे सब लौट कर जगहजगह वादी में बिखरे आतंक और चालाकी से फिजां को विषमय बना रहे थे. आखिर वह करता भी क्या? हर इनसान के जिस्म में एक उद्दंड हैवान रहता है, उसी की शक्ल का. उसे जीने के लिए रास्ता चाहिए और यह रास्ता अमन और ईमानदारी की जिंदगी से तो हासिल होता नहीं. वह दहशतगर्द न बनता तो गुंडा बनता. दहशतगर्द बनने में एक शान तो थी, एक नकाब तो थी कि वह धर्म के नाम पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का? जाहिल लोगों का, उसी के वतन के जाहिल लोग जो हब्बा खातून और मुसलमान सूफी ऋषियों की वाणी बचपन से सुनसुन कर रुहानी नशे के आदी हो गए थे और भूल गए थे कि भारत एक हिंदू राज है और पाकिस्तान उन का अपना है.

सिकंदर को अपनी कोख में, पीठ में, मेरुदंड में और दिमाग के बीचोबीच लगा, जैसे पेड़ उग आएं हों, मोटेमोटे पेड़ और उन्होंने उस से सोचने की ताकत छीन ली हो. इन पेड़ों से यही दहशतगर्दी की आवाजें निकल रही थीं, जिन्हें वह अपनी आवाज समझ रहा था. "अगर यह मेरी आवाज नहीं तो मेरी आवाज कहां है?" और तब उस के भीतर उठा एक छोटा सा लड़का, 10 साल का सिकंदर, जिसे उस का बाप बुरी तरह लकड़ी से मार रहा था क्योंकि उस ने जुआ खेला था. वह बच्चा थरथर कांप रहा था और कोई भी उसे उस के बाप के जुल्म से नहीं बचा रहा था. उस की मां डरी हुई एक कोने में चूल्हे के पास बैठी यह नजारा देख रही थी.

यह दहशतगर्दी जो उस ने अपनाई थी, उस कायर मां के प्रति उस की नफरत का इजहार थी. उस ने उस मां को कभी माफ नहीं किया. वह सोचता, 'उस ने मुझे बचाया क्यों नहीं? एक मां का फर्ज है, अपने बच्चे को बचाना, जानवर मां भी बच्चे को बचाती है, मगर मेरी मां...?' और तब उस की आंखों में उभरा एक और दृश्य, जब उस ने मां को संयोग से बाप की बांहों में देख लिया था. किशोर उत्कंठा में परदे के पीछे ही रुक कर वह सब देर तक देखा था, जो देखना एक पुत्र को शोभा नहीं देता.

उस मां का बदला वह कशमीर से ले रहा था. उसी मां का बदला वह भारत मां से ले रहा था. यह क्या बकवास है, उस ने खीज कर अपने भीतर बेहिसाब बोले जा रहे 'पागल' को टोका. मगर वह पागल तो खुद उस की शक्ल का था. तो क्या अपने शरीर में वह कई शक्लों की नकाबें लगाए रह रहा है, वही दहशतगर्द, वही पागल और वही इसलामी जांबाज फोर्स का अधिकारी.

ये सब इरादे कमजोर करने वाली बातें हैं, उस ने उन चेहरों को दफा करने की कोशिश की. 'ये शैतानी हरकते हैं. यह शैतान है जो मेरे ही इतने चेहरे ले कर मुझ में घुस गया है. मैं सिर्फ एक मुजाहिद हूं, एक रूह हूं. इस जिस्म से मेरा कोई ताल्लुक नहीं. इस दिलदिमाग में जो चेहरे उभर रहे हैं, ये मेरे लगते हैं, मगर मेरे नहीं हैं."

मीरपुर में पाकिस्तानी शिविर में उस्ताद उस्मान साहब ने बताया था कि बचपन, मित्र, सगेसंबंधी आदि के तरह-तरह के रूप धर कर शैतान मुजाहिद के दिलदिमाग पर जोर डालता है. दिलोदिमाग कमजोर हैं और शैतान के कब्जे में आ जाते हैं. मगर रुह नहीं आती क्योंकि वह खुदा का नूर है. और रुह को बचाता है, सिर्फ एक खयाल, यह खयाल कि मैं मुजाहिद हूं और कुछ नहीं.

उस्ताद उस्मान का पहला भाषण था.

"दहशतगर्दी एक कमाल है आज की सियासी सोच का. यही एक कामयाब रास्ता है हुकूमत हासिल करने का. लोगों का यकीन है, जैसी करनी वैसी भरनी. तुम यह यकीन बदल डालो. इसी यकीन के सहारे हुकूमतें टिकी हैं. इस के बदलने से वे गिर जाएंगी. आम आदमी यह सोच कर इतमीनान से जीता है कि जिस का उस ने कुछ नहीं बिगाड़ा, वह उस का क्यों कुछ बिगाड़ेगा. वह किसी का खून नहीं करता तो कोई उस का खून क्यों करेगा.

"तुम बेगुनाहों को मारो. अंधाधुंध

जनता की एकता

जब जनता एक हो जाती है तब उस के सामने जालिम से जालिम हुकूमत भी नहीं टिक सकती.

—सरदार पटेल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गोलियां बरसाओं. कहर की तरह टूट पड़ो. लोग बदहवास हो जाएं, यह भूल जाएं कि गुनाह करने पर ही सजा मिलेगी. सरकार पागल हो जाए. तुम्हारी हरकतें बेसिरपैर की हों. फुजूल खून करो.

"उन का यकीन नेकी पर से हटा दो. उन का यकीन मुहब्बत जैसी फुजूल बात से हटा दो. उन का यकीन तुम पर आ जाएगा. याद रखो, ये इनसानियत की बातें, सब मजहबों की एकता की बातें बकवास हैं. इनसान बनने के लिए पहले इसलाम कुबूल करना जरूरी है. बिना मुसलमान बने जो इनसानियत की बात करे, समझ लो कि मक्कार है, झूठा है."

इलियास अहमद अल्लाह टाइगर्स का नेता बी.ए. में पढ़ता था बडगाम में. इस दल में मुहम्मद सिकंदर के बाद वही दूसरा आतंकवादी था, जिस ने पाकिस्तानी प्रशिक्षण में सब से ज्यादा वक्त गुजारा था. सिकंदर के बड़प्पन से उसे ठेस लग रही थी. आखिर वह भी अपने दल का लीडर था और सिकंदर से ज्यादा पढ़ालिखा था. उस ने सिकंदर पर चोट करने की गरज से कहा, "हम जानते हैं कि, साहब पाकिस्तान को हम से कोई हमदर्दी नहीं. वह तो अपना उल्लू सीधा कर रहा है. मगर करें क्या? लड़कों में हवा ही उलटी चल गई है. वरना मैं वहां छः महीने काट कर आता क्या? कम से कम 50 साल पीछे हैं वे लोग हम से. शुक्र है अल्लाह का कि हमारे बुजुर्गों ने हिंदुस्तान को अपना माना, उन तंगदिल, बेईमान पाकिस्तानियों को नहीं."

बोलतेबोलते उसे लगा कि वह सच बोल रहा है. कमांडेंट के व्यक्तित्व ने और उस की तहेदिल से निकली बातों और भावों ने उस के युवा मस्तिष्क कर काफी असर डाल दिया था. उसे लगा, उस के खयाल सचमुच बदल गए हैं. लेकिन इलियास उन जोशीले नौजवानों में से था, जिन के विचार बाहर से ही आते हैं, उन की अपनी कोई सोच नहीं होती. जिस की आवाज में सचाई की गरमी थी, उस की बड़ी उम्मीद के हो लिए.

दो और स्नातक थे इस दल में. एक शोपियान डिगरी कालिज, पुलवामा का खुर्शीद और दूसरा सैय्यद अहमद अंदराबी, अनंतनाग डिगरी कालिज का स्नातक. हाजीपोरा, अनंतनाग में जामा मसजिद द्वारा चलाए अंगरेजी माध्यम स्कूल में मास्टर. अंदराबी बोला, "देखिए सर, मैं तो लंगड़ा हूं. मैं क्या दहशतगर्दी करूंगा? नकाबपोश मेरे घर में 14 सितंबर 1990 को आधी रात घुस आए और मुझे ले गए. मुझे अगवा करने वाले गाइड इकबाल पूंचवाले को बहुत लताड़ा गया कि इस अपाहिज को क्यों ले आए."

बंदपोरा क्षेत्र में अशाम गांव के मुहम्मद शबान दर ने अंदराबी का समर्थन किया, "हम आतंकवादी नहीं हैं, जनाब. उन का क्या है, किसी को भी पकड़ लेते हैं. उन के शिविरों में रह कर हम आतंकवादी थोड़े ही बन जाएंगे. हम भी खानदानी लोग हैं. मेरे वालिद कांग्रेस में नेता थे. मुझे तो इसलिए पकड़ कर ले गए कि मैं भारत का वतन परस्त नागरिक हूं."

कमांडेट काफी उलझ चुका था. उस की समझ में नहीं आ रहा था कि किस पर यकीन करे, किस पर नहीं. सच और झूठ में कोई भेद ही नजर नहीं आ रहा था. इतने में किसी के जोरजोर से रोने की आवाज आने लगी. यूसुफ शाह एक बूढ़ा गूजर था जो रोने लगा था. उसे चुप कराने के लिए कमांडेंट ने अपनी सिगरेट दी, मगर उस की उत्तेजित बूढ़ी उंगलियां सिगरेट होंठों से नहीं लगा पा रही थीं.

वह दिल खोल कर रो रहा था. न जाने कितने घुटते दुख थे जिंदगी के, कशमीर जो धरती पर 'स्वर्ग' है, उस कशमीर की दुर्दशा के और उस के अपने निजी दुख. उस के रोने में बहुत असर रहा होगा क्योंकि कुछ ही देर में उस के रोने ने दूसरों के भी दिलों में आंसुओं को रोकने वाला बांध तोड़ दिया. सभी आंखों में आंसू बहने लगे. "मैं ने देखा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुक्ता

पाक्षिक

युवाओं की अनूठी व अकेली पत्रिका

देश के युवा राष्ट्र निर्माण के आधार हैं. हमारा यह आधार जितना ही मजबूत होगा हम उतना ही सुखद, संपन्न व शक्तिशाली राष्ट्र की कल्पना कर सकते हैं.

युवाओं को मजबूत आधार देने तथा युवाओं को सही राह दिखाने में मुक्ता सदा ही अग्रणी पत्रिका रही है.

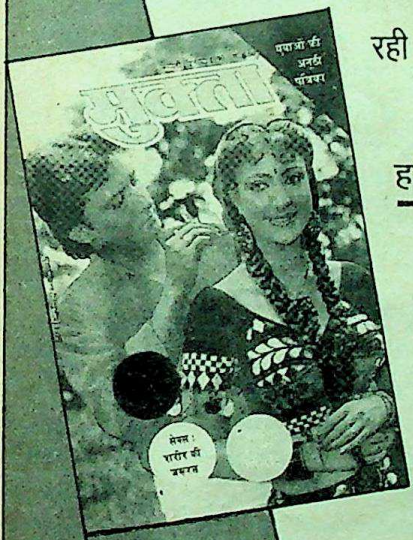

हर अंक में

राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय समस्याओं पर विचारोत्तेजक लेख, बेरोजगारी में स्वरोजगार की प्रेरणा, प्रतियोगिता में सफलता के नुस्खे, सफल उद्योगपति बनने के आसान तौरतरीके. इस के साथ साथ युवाओं के मनोरंजन के लिए कहानियां, प्रेम रस में डूबी कविताएं, फैशन, फिल्म व खेल पर विशेष सामग्री.

हर अंक में ढेरों पठनीय सामग्री

आज ही से नियमित खरीदें.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हजूर अपनी आंखों से, वह दिल पर मुट्ठी बांधता हुआ बोला, "दो लड़के थे, एक ही मासूम. उन्होंने बस इतना कहा था कि 'साहब, हमें खाना अच्छा नहीं मिलता, और टिन के डब्बों में परोसते हैं.' और दोनों बेगुनाहों को पाकिस्तानी अफसर ने वहीं गोली मार दी."

रात को सभी आतंकवादी कमरे में जमीन पर सो रहे थे. मुहम्मद सिकंदर और यूसुफ शाह के बिस्तर पासपास बिछे थे. यूसुफ शाह को नींद नहीं आ रही थी. सिकंदर भी नहीं सो पाया था. उसे यूसुफ शाह का रोना पसंद नहीं आया था.

"इस कदर फूटफूट कर रोना मर्दों को अच्छा लगता है क्या?" सिकंदर बोला, "तुम ने नहीं देखा वह मंजर जो मैं ने देखा था. कौम की आजादी हर कुरबानी से बड़ी है."

"कैसी आजादी? कौन गुलाम है यहां?" यूसुफ शाह तैश में आ गया था.

"आहिस्ते." दांतों के बीच सिकंदर फुंकारा. यूसुफ शाह सहम गया. वह लगभग फुसफसाने लगा. "ये सब मुगालता है. दुश्मनों ने फर्क पैदा कर दिया है. हम सब मिलजुल कर रह रहे थे. हमारी वादी मेहनतकशों की वादी है, सियासी तफरीह-बाजों की नहीं. पहाड़ पर आदमी काम नहीं करेगा तो भूखा मर जाएगा. हमें अमन से रहने दो. हमें नहीं चाहिए तुम्हारे जैसों की आजादी. यह आजादी है तो गुलामी क्या होगी?"

"तुम अहमक हो. खेती से कुछ नहीं होता. अफीम पैदा करने देंगे ये भारतीय कभी? उधर आजाद कशमीर में देखो. सरकार की शह पर अफीम की खेती हो रही है. अमरीका से अफीम की तिजारत करते हैं लोग और मालामाल हो रहे हैं?"

"हां, चंद लोग हैं जो मालामाल हो रहे हैं. अफीम उगाने वाले किसान वहीं के वहीं हैं. गुनाह और बेलज्जत. हमारे लोगों से वे अभी 50 साल पीछे हैं."

"आजादी बड़ी चीज है. वह तरक्की नहीं चाहिए जो हिंदुस्तान की तरफ से आती गुलामी!"

"गुलामी तो वह है जो तुम दे रहे हो, जबरदस्ती पैसे ऐंठते हो. मुझ से हजारों रुपए धमकाधमका कर ले लिए और मेरी बेटी के साथ जो सुलूक किया हिजबुल वालों ने." उस का गला रुंध गया, "पिछली बार खत आया कि रुपए बेटी के हाथ भेजूं. बेटी शाम की गई सुबह बदहवास लौटी. उन्होंने उस की असमत लूट ली थी. वह अब भी सोतीसोती चीखने लगती है. उस के बाद मैं ने रुपए देना बंद कर दिया. किस बात के देता? कमीनों ने मेरे साथ कैसा सुलूक किया." उस का गला सूख गया था.

सिकंदर की नफरत यह गाली सुन कर लपटों में बदल गई थी बोला, "जानते हो, वह हिजबुल मुजाहिदीन कौन था, जिस ने तेरी बेटी की असमत खराब की? वह मैं था."

बूढ़ा यूसुफ फटी बेबस आंखों से उसे देख रहा था. उस का मुंह खुला था मगर शब्द नहीं थे.

सिकंदर ने अपनी फरकी टोपी का किनारा उधेड़ा और एक सायनाइड कैप्सूल निकाल कर बूढ़े के मुंह में घुसा दिया. जहर के असर से बूढ़े की आंखें उसी तरह खुली रह गईं.

सिकंदर ने उस का मुंह नहीं ढका. वहीं उस के पास लेटा सिगरेट पीने लगा. एक खुशी उसे हो रही थी, वह झूठ बोल कर. यूसुफ शाह की आंखों में जो निराशा, बेबसी और नास्तिकता उस की बात के उत्तर में उभरी थी, वह उसे अपने जिहाद की एक बहुत बड़ी कामयाबी लग रही थी, जिस पर उसे खुशी और गर्व दोनों हो रहे थे. उस ने एक इनसान के दिल में फिर से उठते इनसानियत और देशभक्ति के भावों को एक ही झटके में डस लिया था. 'जिहाद तभी कामयाब हो सकता है' उस्ताद उस्मान का पैगाम था, 'जब इनसानी जज्बे हमारे सीने में उठना ही बंद कर दें.' ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

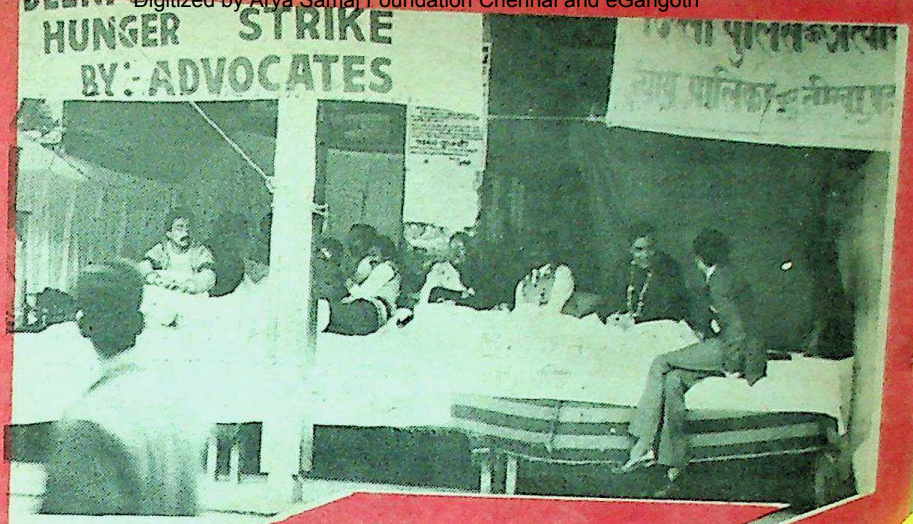

वर्ष 1990 शोकसभा और हड़तालों के नाम

लेख ● अवध श्रीवास्तव

न्यायालयों में, सार्वजनिक प्रतिष्ठानों में काम न करने की प्रवृत्ति दिनोंदिन बढ़ती जा रही है. कर्मचारी काम न करने का कोई न कोई बहाना ढूंढ़ते हैं. आज किसी की मृत्यु तो कल किसी की शोकसभा. और फिर दिन भर उसी की चर्चा या फिर शोकसभा और पूरी छुट्टी. शोकसभा कर के काम न करने की प्रवृत्ति इस हद तक आ पहुंची है कि सार्वजनिक अवकाशों के अतिरिक्त किसी नेता की मृत्यु, भूतपूर्व मुख्य मंत्रियों, राज्यपालों के निधन से काम के लगभग 30 दिन कम हो जाते हैं.

इंदौर के जिला जज सहित लगभग 30 न्यायाधीशों ने पिछले दिनों एक शपथ पत्र बतौर वसीयत दाखिल किया है. इन जजों ने अपनी मृत्यु पूर्व इच्छा जाहिर की है कि इन की मृत्यु पर कोई शोकसभा न की जाए व उस के कारण न्यायालय के कार्य में रुकावट बिलकुल भी न डाली जाए. इंदौर के जिला जज से मिलने पर उन्होंने ऐसा इच्छा पत्र अपने सेवा अभिलेख में सम्मिलित कराने का कारण बताया कि हम वर्ष भर में लगभग 70 शोकसभाएं कर लेते हैं और दूर गांवों से आने वाले मुकदमे लड़ रहे गरीब किसान कोई काम न होने के कारण एक पेशी और बढ़ गई मान कर निराश हो कर चले जाते हैं. अदालतों में वैसे ही हजारों लाखों मुकदमे लंबित हैं. ऐसे में शोकसभा की आड़

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में काम न करने की प्रवृत्ति और भी भयावह हो जाएगी.

लगभग दो वर्ष पूर्व दिल्ली में पुलिस अधिकारी किरण बेदी और वकीलों की लड़ाई के कारण एक माह तक देश के वकीलों की हड़ताल चली. अदालतों में ताले पड़े रहे. लगभग 60 हजार मुकदमों की सुनवाई इस दौरान नहीं हो सकी.

अभी अक्तूबर, नवंबर और दिसंबर 1990 में भोपाल में हाईकोर्ट की स्थापना की मांग को ले कर भोपाल व इस से संबंधित जिले व तहसील सीहोर, रायसेन, आष्टा आदि में 70 दिन अदालतों में तालाबंदी रही. परिणाम यह हुआ कि उच्च न्यायालय या उस की खंडपीठ तो फिलहाल भोपाल में स्थापित नहीं हो रही लेकिन टाइपिस्टों, मुंशियों, कनिष्ठ वकीलों की आर्थिक स्थिति बदतर होती चली गई. जेलें भरती गईं. न्यायालय से संबद्ध व्यवसाय जैसे स्टांप बिक्री, होटल व्यवसाय सब ठप पड़ गए.

इस दौरान एक युवा अधिवक्ता सुनील श्रीवास्तव के विरुद्ध दहेज अधिनियम के तहत उस की पत्नी मंजु प्रभा की शिकायत पर मुकदमा बनाया गया तो जमानत के प्रश्न पर वकील साहब को जेल जाने की नौबत आ गई. हड़ताल करने वाले करीब दो हजार वकीलों ने दंडाधिकारी के घर जा कर जमानत पर रिहाई की मांग की तो न्यायाधीश महोदय ने अधिवक्ताओं से पूछा, "आम आदमी का क्या हो रहा होगा? आप आज महसूस कर पा रहे हैं?"

एक बार पहले भी भोपाल में उच्च न्यायालय की खंडपीठ की मांग पर तीन माह अदालतें बंद रही थीं और काम न कर पाने तथा आर्थिक स्थिति डांवाडोल होने के कारण वकीलों में खीज और गुस्सा भर गया था. परिणाम यह हुआ कि आम वकील बेहद परेशान था और आंदोलन के नेताओं को विधिक सलाहकार के बड़े पद दे दिए गए थे. क्या यह आत्मघाती कदम नहीं है?

वकीलों को राजनीति से कुछ लेनादेना नहीं, यह तो हम नहीं कहते, लेकिन राम जन्मभूमि आंदोलन या मुंबई के रिंकू हत्याकांड के विरोध में काम न करने की प्रवृत्ति, अदालतों में न जाने का निर्णय व्यवसाय के प्रति कितनी ईमानदारी जताता है? वकीलों की ही बात नहीं है, लेकिन अभिभाषक संघ बंद होने से सैकड़ों रुपयों का नुकसान कर के जब पेशी पर आए ग्रामीण को खाली हाथ जाना पड़े तो उस की कौन सुनेगा?

देश में सैकड़ों भूतपूर्व न्यायाधीश हैं. देश के अभिभाषक संघों के हर जिला मुख्यालय पर कम से कम दो सौ वकील होते हैं. उन के पिता, माता, पुत्र, पुत्री, किसी न किसी का निधन हर तीसरे दिन हो जाता है और अभिभाषक संघ दो मिनट का मौन रख कर न्यायालयों को सूचना भेज देते हैं, हम शोकाकुल हैं, इसलिए काम नहीं करेंगे. न्यायाधीश भी राहत की सांस लेते हैं.

न्यायिक अधिकारी भी काम वैसे ही नाममात्र को करते हैं, फिर इस तरह का परवाना आ जाए तो क्या कहना. एक जिला जज की 101 वर्षीया सास मर गई. खुशामदी वकीलों ने न्यायालय के प्रांगण में ठीक 11 बजे वृद्ध सास के निधन पर शोक प्रस्ताव बनाया और उस दिन लगभग पांच सौ मुकदमों की सुनवाई टल गई.

गत वर्ष से देश में अब तक आतंकवादियों द्वारा सैकड़ों हत्याकांड किए गए. मंडल आयोग के विरोध में छात्रों द्वारा आत्मदाह हुए. समाचारपत्र पढ़ा. तुरंत देश भर की अदालतों के परिसरों में शोक-सभाओं का आयोजन हुआ, मृतात्माओं को श्रद्धांजलि देने के लिए. 1990 का पूरा वर्ष ही महापुरुषों के निधन पर शोकसभाओं के कारण दुखग्रस्त हो कर काम न करने में बीता है.

क्या नए वर्ष में हम अपनी इस कामचोरी की प्रवृत्ति पर रोक लगाने का संकल्प नहीं ले सकते?

हड़तालों से मांग पूरी कराने के क्रम में क्या राष्ट्रहित या अपने परिवार के हित को एकदम भुला दें? ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यंग्य ● ब्रजेश कुलश्रेष्ठ

अच्छा हुआ आप आ गए

अच्छा हुआ जो आप आ गए. क्यों न आते? आप आना जो चाहते थे. और फिर आप को तो आना ही था और आप बन भी गए तो क्या हर्ज है? क्या बुराई है? मैं अपनी कहूं तो मुझे तो बड़ा आराम हो गया है आप के आने से. मेरी कई उलझी समस्याएं सुलझ गई हैं. देश के लोग भी अगर चाहें तो आप से प्रेरणा ले कर कई ज्वलंत और जानलेवा समस्याएं सुलझा सकते हैं.

जब राजीव गांधी देश के प्रधान मंत्री बनाए गए थे तब बाजार में शाल मिलना मुशकिल हो गया था. तब शाल 'हाट केक' की तरह बिकने लगे थे. ऐसा लगने लगा था

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्वनाथ प्रताप सिंह और उन की टोपी ने हमारे कार्टून पेश और हमारे बेटे के सामान्यज्ञान को बड़े धर्म संकट में डाले रखा था. अब आप ने मुझ पर और मेरे बेटे पर बड़ी कृपा की है. जरा देखिए, कैसे?

कि शाल इस देश का राष्ट्रीय परिधान बन जाएगा.

राजीवजी के बाद विश्वनाथ प्रताप सिंह आए, तब टोपियां 'हाट केक' की तरह बिकने लगीं. टोपियां बनाने के लिए जानवर मारे जाने लगे. टोपियों की ऐसी टूट पड़ी कि देश में वावैला मचने लगा. कई प्रेस कानफ्रेंसों तक में विश्वनाथ प्रताप सिंह की टोपी छाई रही. प्रेस वालों ने टोपी उछालने में कोई कसर नहीं छोड़ी. फिर भी सिर पर टोपी जमी ही रही. पर देश टोपीमय होतेहोते बच गया. टोपी देश के सीन से एकदम गायब हो गई.

अब चंद्रशेखरजी आप आ गए हैं. अब देश को दाढ़ीमय हो जाना चाहिए था. अब देश के हर आदमी को दाढ़ी रखवा लेनी चाहिए. दाढ़ी रखने के अनेक लाभ हैं. दाढ़ी वाला आदमी नेता कम दार्शनिक ज्यादा लगता है. कहते हैं कि भारतीय तो पैदाइशी दार्शनिक होते हैं. अतः दाढ़ी रखने में हर्ज ही क्या है. हर भारतीय को दार्शनिक दीखना भी चाहिए.

आज हर आदमी 15 मिनट तो मूड बनाने में ही खर्च कर देता है कि दाढ़ी अब खुरचूं... अब खुरचूं. फिर 10 मिनट दाढ़ी खुरचने में जाया करता है. फिर पांच मिनट तक अपना चौखटा शीशे में देखता है. हाथ फेरता है कि कहीं कुछ खुरदरा तो नहीं रहा है. जब महसूसेगा कि मैदान साफ है तो फिर फिटकरी, क्रीम या कोई कालोन लगाएगा, तब कहीं जा कर पीछा छूटता है.

आज हर भारतीय दाढ़ी बनाने में आधा घंटा जाया करता है. अगर वह इसी हिसाब से 50 साल तक दाढ़ी बनाता है तो पूरा एक वर्ष तो वह दाढ़ी बनाने में ही निकाल देगा. समय की भयंकर बरबादी. क्रिमिनल वेस्ट आफ टाइम! इस एक वर्ष के महत्त्वपूर्ण समय व शक्ति को विकास के काम में लगाया जा सकता है.

आर्थिक रूप से भी दाढ़ी रखना लाभप्रद है. साबुन, क्रीम, फिटकरी, कालोन और ब्लेड इन सब का खर्चा बच जाएगा. जो लोग नाई से दाढ़ी बनवाते हैं उन्हें तो और भी फायदा है. हर तरह से फायदा ही फायदा है.

निश्चित रहें, दाढ़ी रखने से देश के नाई बेरोजगार नहीं हो सकते. उन के लिए मंडल आयोग के कमंडल में बहुत कुछ है.

सो भाई लोगो, मैं ने तो शाल भी पहना और टोपी भी लगा कर देख ली. पर आर्थिक लाभ मुझे किसी से नहीं मिला. अब मैं तो दाढ़ी रखूंगा. आर्थिक लाभ तो कहीं गए नहीं हैं. मैं तो देश के हर नागरिक को दाढ़ी बढ़ाने की सलाह दूंगा. सलाह माननी भी चाहिए जब देश ने शाल ओढ़ा और टोपी पहनी तो दाढ़ी रखने में क्या हर्ज है.

महामहिम, आप के आने से मेरे चार साल के नाती शेखर को बहुत लाभ हुआ है. उस का आई.क्यू. (बौद्धिक स्तर) काफी गिर गया था. आप के आने से ठीक हो गया है. मुझे विश्वास है कि अब उस का सामान्य ज्ञान सही हो जाएगा.

पहले एक बात बता दूं. हमारे पिताजी ने हमें अंगरेजी की दो कविताएं रटाई थीं—'ट्विंकल ट्विंकल लिटिल स्टार' वाली और 'हंपटी डंपटी' वाली. हमारे पिताजी ने ही क्या तब देश का हर पिता अपने हर पुत्र को यही दो पोइम रटाता था. हम ने इन दो पोइमों को न जाने कितने रिश्तेदारों, मेहमानों, पिताजी के मित्रों और बरातियों को सुनासुना कर पिता का सिर गौरव से ऊंचा किया होगा. इन अमर पोइमों के बल पर हमें न जाने कितनी बार एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

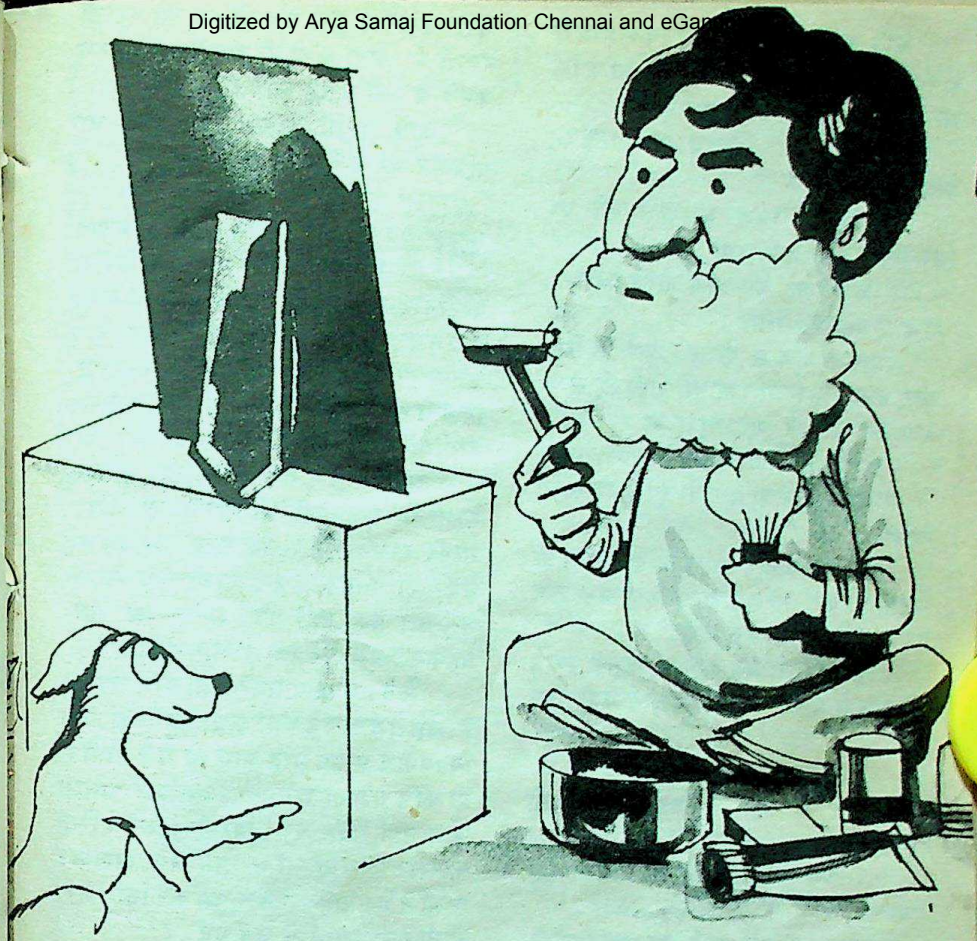

पेंसिल या एक कापी या एक रुपए का नोट इनाम में मिला है. उस जमाने में इन दो कविताओं से ही किसी परिवार के संस्कार और स्तर आंके जाते थे.

देश आजाद हुआ तो इन पोइमों का जमाना लद गया. अब हम ने अपने चार साल के नाती को सिखा रखा है कि "देश का प्रधान मंत्री कौन है", "तुम कहां रहते हो" (ताकि खो जाने पर उसे सही ठिकाने पर पहुंचाया जा सके), "देश की राजधानी क्या है," वगैरहवगैरह.

अबोध बालक देश के प्रधान मंत्री का नाम पूछते ही कह देता था 'राजीव गांधी'. बड़ा आसान नाम था लिखने में भी और उच्चारण में भी.

लेकिन विश्वनाथ प्रताप सिंह के आते ही सारा मामला गड़बड़ा गया. एक दिन जब हम ने पूछा, "देश के प्रधान मंत्री का क्या नाम है."

"राजीव गांधी."

"नहीं बेटे, अब विश्वनाथ प्रताप सिंह हैं. कौन हैं बेटे?"

आज हर भारतीय दाढ़ी बनाने में आधा घंटा लगाता है यानी समय की बरबादी. इस समय व शक्ति को देश के विकास के लिए काम में लगाया जा सकता है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बेटा खामोश. वह टुकुरटुकुर हमारी शक्ल देखने लगा. जरूर सोच रहा होगा कि आज दादाजी क्या बड़बड़ा रहे हैं.

"बोलो बेटे. विश्व..नाथ..प्रताप.. सिंह."

बालक ने लाख कोशिश की पर उच्चारण नहीं कर पाया.

"अच्छा तो मेरे साथ बोलो विश्व... नाथ... प्रताप... सिंह..."

बालक मुझ से पीछा छुड़ाने के लिए कोई बहाना तलाश रहा था. रोनी सी सूरत बना कर बोला, "मुझे शूशू आ रही है."

हम कर ही क्या सकते थे. बोले, "ठीक है, जाओ बेटे, शूशू कर के तुरंत वापस आ जाओ."

पर वह कहां आने वाला था. आता तो जाता ही क्यों. सो हमारा नाती सामान्य ज्ञान के ज्ञान से वंचित रह गया.

इत्तफाक से अब आप आ गए हैं. हम ने बालक से पूछा, "देश के प्रधान मंत्री कौन हैं?"

बालक खामोश.

हम ने कहा, "चंद्रशेखर... बोलो बेटे..."

"चन्न छेकल," झट से उस ने कह दिया.

शेखर हमारे नाती का नाम था ही. मंत्री नाम का उच्चारण उसकी मां उसे रटाती रहती थी. अतः अपने ही नाम का उच्चारण करने में उसे कतई कठिनाई नहीं हुई.

आप ने तो वास्तव में हमारे पूरे परिवार पर बड़ी कृपा कर दी.

मान्यवर, आप के आने से मेरे रोजगार पर भी अच्छा असर पड़ा है. मैं पेशे से कार्टूनिस्ट हूं. महात्मा गांधी के समय से ही कार्टून बना रहा हूं. गांधीजी जितने सरल थे उतना ही सरल उन का कार्टून बनाना था. कितनी सरल रेखाएं हैं. यह तो आप अकसर टीवी पर देखते ही होंगे.

अचकन में गुलाब लगाया और बन गए नेहरूजी. इंदिराजी भी सरल थीं. सिर, साड़ी, सामने वाले सफेद बाल. बस बन गई देश की प्रधान मंत्री. राजीवजी ने भी मुसीबत पैदा नहीं की. शरीर को शाल पहनाया. बस बन गए राजीव गांधी.

मैं ने हमेशा प्रतीकों से ही काम चलाया है. चेहरों के पचड़े में मैं कभी नहीं पड़ा. जब विश्वनाथ प्रताप सिंह आए तो मैं ने टोपी से ही काम चलाना शुरू कर दिया. पर मामला जमा नहीं. लोग मेरे विश्वनाथ प्रताप सिंह को फारूक अब्दुल्ला समझने लगे. अखबार वालों ने मेरे कई कार्टून वापस कर दिए. मेरी रोजीरोटी खतरे में पड़ गई.

अच्छा हुआ वह चले गए और आप आ गए. अब तो दाढ़ी से काम चल जाता है. मुंह बनाने की जरूरत ही नहीं पड़ती. नाक तो मैं किसी नेता की बनाता ही नहीं हूं. नाक होती भी कहां है. कान भी नहीं बनाता. कान बनाने की सार्थकता तभी है जब वह सुने. आप के केस में तो दाढ़ी ही काफी है. अगर आप को नाराज दिखाना है तो दाढ़ी के बाल खड़े दिखा दिए. अगर शांत दिखाना है तो बाल लेटे से दिखा दिए. कितना आसान हो गया है आप को बनाना.

देखा! आप के आने से मुझे कितना फायदा हो गया. मैं क्यों चाहूंगा कि आप चले जाएं? मेरा हित तो इसी में है कि आप दीर्घायु हों. ●

हिंदू 2000 वर्ष क्यों गुलाम रहे?

हिंदुओं की सैन्य कमजोरियों के धार्मिक, सामाजिक और कूटनीतिक कारणों का विश्लेषण करने वाली पुस्तक

हिंदू इतिहास या हारों की दास्तान?

लेखक : डा. सुरेंद्र अज्ञात

मूल्य : 10.00 रुपए

साधारण डाक से मंगाने के लिए 10.00 रु. मनीआर्डर द्वारा भेजिए तथा रजिस्टर्ड डाक से 3.00 रु. अतिरिक्त.

दिल्ली बुक कंपनी

एम-12, कनाट सर्कस, नई दिल्ली-110001

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रधान मंत्री द्वारा सदन से क्षमा याचना

केंद्रीय विधि एवं न्याय मंत्री डा. सुब्रह्मण्यम स्वामी की दुश्मन बनाने और विवाद खड़े करने की क्षमता निर्विवाद रूप से सिद्ध हो गई है. दस दिन के संसद अधिवेशन में लोकसभा पांच दिन डा. स्वामी के झमेलों में उलझी रही. उन के कारण प्रधान मंत्री चंद्रशेखर को उत्तेजित सदन को शांत करने के लिए न केवल दौड़ कर बारबार आना पड़ा वरन क्षमा याचना भी करनी पड़ी.

चंद्रशेखर सरकार के वित्त मंत्री और

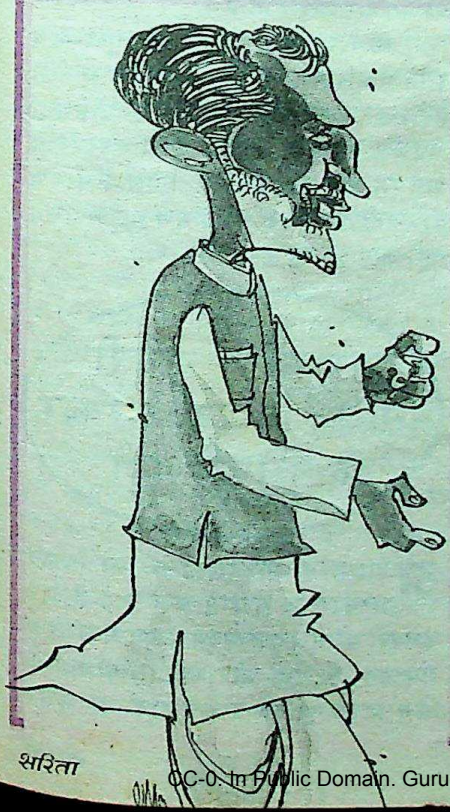

विदेश मंत्री उन के द्वारा खड़ी की गई उलझनों से परेशानी जाहिर कर रहे हैं. वित्त मंत्री यशवंत सिन्हा ने स्वयं प्रधान मंत्री के पास उस कतरन को पहुंचाया जो डा. स्वामी द्वारा एक विदेशी अखबार को वित्तीय मामलों में दिए गए साक्षात्कार के बारे में थी. विदेश मंत्री विद्याचरण शुक्ल का मानना है यदि डा. स्वामी ने अध्यक्ष रवि राय के साथ अपना बड़बोलापन न प्रकट किया होता तो शायद अध्यक्ष का रुख दलबदल के मामले में जनता दल (स) के सांसदों के साथ इतना सख्त न होता.

प्रधान मंत्री चंद्रशेखर भी डा. स्वामी के आचरण के प्रति अपनी नाराजगी को नहीं छिपा सके. अदालत में लगाए गए हलफनामे के मामले में इस सरकार की किरकिरी के बाद बाहर निकलते हुए प्रधान मंत्री सदन की लाबी में राजीव गांधी से टकरा गए. डा. स्वामी भी उसी समय वहां पहुंच गए. चंद्रशेखर ने तुरंत ही डा. स्वामी की ओर मुड़ते हुए कहा कि आप के कारण संसद के चालू अधिवेशन में छः बार माफी मांग चुका हूं.

राजीव गांधी ने व्यंग्य के लहजे में कहा कि आखिर इन के कारण कुछ हो तो रहा है. डा. स्वामी के पास इसे चुपचाप सुनने और मुसकराने के सिवाय कोई चारा नहीं था. अब पार्टी के अंदर इस प्रकार की सुगबुगाहट शुरू हो गई है कि बारबार की परेशानी से बचने के लिए प्रधान मंत्री को कम से कम विधि और न्याय मंत्रालय उन से ले लेना चाहिए.

केंद्रीय कक्ष: राजनीतिक गतिविधियों का केंद्र

संसद भवन का गोलाकार केंद्रीय कक्ष राजनीतिक गतिविधियों का एक बड़ा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केंद्र है, जहां पर भूतपूर्व एवं वर्तमान सांसदों के जमावड़े के अलावा केंद्रीय मंत्रियों, राज्यों के मुख्य मंत्रियों तथा कभीकभी प्रधान मंत्री का आनाजाना रहता है. यह ऐसा केंद्र है, जहां पर देश भर की राजनीतिक हवा पहुंचती है और यहां की हवा पूरे देश में जाती है. इस बहती राजनीतिक हवा को सूंघने के लिए पत्रकार समुदाय भी यहां जमा रहता है.

इसी केंद्रीय कक्ष के एक कोने में भूतपूर्व सांसदों का अड्डा रहता है. उन का संघ भी है जो उन के हितों की रक्षा के लिए सक्रिय है. भूतपूर्व प्रधान मंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी के पूर्व सहयोगी यशपाल कपूर इस संघ के कर्ताधर्ता हैं. वह वर्षों से नियमित रूप से केंद्रीय कक्ष में विराजमान रहते हैं. वह कांग्रेस में हैं परंतु पार्टी अध्यक्ष राजीव गांधी से उन की पटरी नहीं खाती है, फिर भी उन का किसी भी सरकार के साथ रुतबा बरकरार है.

इस सब का असर यह है कि भूतपूर्व सांसदों की अब पौ बारह हो गई है. अब एक भूतपूर्व सांसद की न्यूनतम पेंशन 500 रुपए थी जो बढ़ा कर 1,250 रुपए की जा रही है और अब ये सांसद विधायक के रूप में मिलने वाली पेंशन के भी हकदार होंगे. इन दोनों को मिला कर अधिकतम पेंशन राशि 5,000 रुपए तक मिल सकती है. बताया जाता है कि यह मामला हाथोहाथ सीधे कैबिनेट में पहुंचा और स्वीकृत भी हो गया है.

प्रधान मंत्री के पास अनेक मंत्रालयों का कीर्तिमान

प्रधान मंत्री के नाते चंद्रशेखर पर सरकारी कामकाज का दबाव बहुत अधिक है. संसद अधिवेशन के दिनों में उन की परेशानी और भी बढ़ जाती है क्योंकि किसी न किसी मसले पर सदन में उठे हंगामे का उत्तर देने के लिए स्वयं उन्हें ही दौड़ना पड़ता है. कारण, प्रधान मंत्री होने के अलावा वह रक्षा मंत्री, गृह मंत्री, सूचना एवं प्रसारण मंत्री, उद्योग मंत्री और श्रम मंत्री भी हैं. इस के अलावा अध्यक्ष रवि राय द्वारा दो कैबिनेट मंत्रियों का दलबदल कानून के तहत अयोग्य घोषित किए जाने के बाद उन के विदेश मंत्री और स्वास्थ्य मंत्री बनने की संभावना बढ़ गई है. प्रधान मंत्री ने एक साथ इतने मंत्रालयों का दायित्व संभाल कर एक नया रिकार्ड कायम किया है.

पिछले संसद अधिवेशन में लोकसभा और राज्य सभा में कई मौके आए जब प्रधान मंत्री को उठ कर अध्यक्ष से अनुरोध करना पड़ा कि 'मान्यवर, फलां देश के स्पीकर या फलां देश के विदेश मंत्री मेरा आधे घंटे से इंतजार कर रहे हैं, लेकिन सदन में उठे विवाद के कारण अभी मैं अपना वक्तव्य देने का इंतजार कर रहा हूं.'

लोग पूछते हैं कि उन्होंने एक साथ इतने मंत्रालयों का दायित्व क्यों संभाल रखा है? उत्तर में कुछ लोग बताते हैं कि उन्हें कुछ समर्थक सहयोगी दलों के अभी सरकार में शामिल होने की आशा है, जिस के कारण वह पार्टी के सांसदों को ये बचे हुए मंत्रालय नहीं सौंप पा रहे हैं.

राम मंदिर बाबरी मसजिद विवाद: सरकार के गले की हड्डी

अयोध्या के मंदिरमसजिद का विवाद सरकार के गले में फंस गया है. 10 जनवरी को गुजरात भवन में गृह मंत्रालय के संयोजन में दोनों ओर के प्रतिनिधियों के बीच वार्त्ता का दूसरा दौर शुरू था. उत्तर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रदेश, राजस्थान और महाराष्ट्र के मुख्य मंत्री बातचीत में सहयोग करने के लिए मौजूद थे.

बातचीत शुरू ही हुई थी कि विश्व हिंदू परिषद के अध्यक्ष विष्णु हरि डालमिया ने यह कह कर जोर का धमाका कर दिया कि बाबरी एक्शन कमेटी ने अपने दस्तावेजों में राम और राम की नगरी अयोध्या की ऐतिहासिकता पर प्रश्नचिह्न लगा दिया है. यदि उन्हें इतिहास सम्मत मानने के लिए तैयार नहीं हैं तो बातचीत का आधार ही समाप्त हो गया है. अतः आगे वार्त्ता चलाने का कोई फायदा नहीं है.

इस पर तुरंत ही बैठक का माहौल बदल गया और बातचीत का दौर लड़खड़ाने लगा.

बाबरी मसजिद कमेटी के प्रतिनिधियों ने स्थिति की गंभीरता को भांपते हुए कहा कि यह हम नहीं कह रहे हैं कि राम और उन की अयोध्या ऐतिहासिक है या नहीं. इन की ऐतिहासिकता के बारे में समयसमय पर जो कई लेखकों ने विचार प्रकट किए उन्हें केवल यहां प्रस्तुत कर दिया गया है. सरकार की ओर से भी कहा गया कि यह कोई प्रमाण के रूप में ऐतिहासिक दस्तावेज नहीं है. इस लंबी नोकझोंक के बाद ही वार्त्ता आगे बढ़ सकी.

इस बातचीत में इतिहास और पुरातत्त्व विशेषज्ञों के अलावा जामिया मिलिया के पूर्व इतिहासकार, राजस्व मामलों के विशेषज्ञ वी.वी. ग्रोवर भी मौजूद थे. उन्होंने फैजाबाद और अयोध्या की तहसील और जिला कचहरी के राजस्व दस्तावेजों का वहां महीनों रह कर अध्ययन किया है. अपने खोजपूर्ण विश्लेषण में उन्होंने बताया कि अंगरेजों के शासनकाल में हुए सभी बंदोबस्तों में विवादित स्थल को लगातार राम जन्मभूमि दर्ज किया गया है. बातचीत में इन सरकारी दस्तावेजों को विशेषज्ञों की समिति को छानबीन के लिए देने का फैसला किया गया है, जिन्हें उत्तर प्रदेश सरकार ने सुलभ कराने का निर्णय लिया है.

प्रसार भारती की फाइल अटक गई

इलेक्ट्रोनिक मीडिया को स्वायत्तता देने संबंधी प्रसार भारती कानून कुछ विडंबना जनक बन गया है. लोगों का कहना है कि जनता पार्टी के शासनकाल में तत्कालीन सूचना एवं प्रसारण मंत्री लालकृष्ण आडवाणी ने संसद में विचारार्थ पेश किया था लेकिन इस विधेयक के पारित होने के पहले ही सरकार गिर गई.

इस बार सन 1990 में मोरचा सरकार ने जैसेतैसे इसे संशोधित रूप में विपक्षी दल के समर्थन से पारित कर दिया लेकिन इसे लागू करने के पहले ही मोरचा सरकार सत्ता से बाहर हो गई और संसद द्वारा पारित प्रसार भारती कानून जहां का तहां रह गया.

नई चंद्रशेखर सरकार में इस कानून को लागू करने के प्रति विशेष उत्साह नहीं है.

अब जानने वाले बताते हैं कि प्रसार भारती की फाइल ऊपर अटक गई है और दो महीने से धूल खा रही है. नई सरकार का कहना है कि इस विधेयक को लागू करने के बारे में फिर से राजनीतिक दलों के साथ विचारविमर्श किया जाएगा, लेकिन वास्तविकता कुछ दूसरी है. कांग्रेस ने पिछले दो मौकों पर इसे पारित करने में काफी अंड़गेबाजी की थी. अब नई सरकार उस के समर्थन पर टिकी है. भला वह अपना पुराना रास्ता कैसे बदल सकती है.

प्रसार भारती कानून के तहत पहले उस के चेयरमैन और कार्यकारी गवर्नरों की नियुक्ति के लिए राज्य सभा के सभापति, प्रेस परिषद के अध्यक्ष और सरकार द्वारा मनोनीत व्यक्ति की तीन सदस्यीय समिति बनाई जानी है, परंतु प्रसार भारती की गाड़ी यथास्थान रुकी हुई है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शरद पवार: दोस्ती और पार्टी अनुशासन के बीच

महाराष्ट्र के मुख्य मंत्री शरद पवार और प्रधान मंत्री चंद्रशेखर के बीच पुरानी मित्रता है और कांग्रेस अध्यक्ष राजीव गांधी और शरद पवार के बीच बढ़ती दूरी पुरानी बात हो गई है. परंतु राजीव गांधी की नापसंद भी उस समय अधिक उजागर हो गई जब पार्टी उच्च कमान ने शरद पवार को विश्व हिंदू परिषद और बाबरी मसजिद एक्सन कमेटी की वार्त्ता महाराष्ट्र सदन में आयोजित न करने और बातचीत में कोई अहम भूमिका अदा करने से परहेज रखने की हिदायत थी. इस के पूर्व की वार्त्ता महाराष्ट्र सदन में हुई थी और शरद पवार ने सभी को भोज भी दिया था.

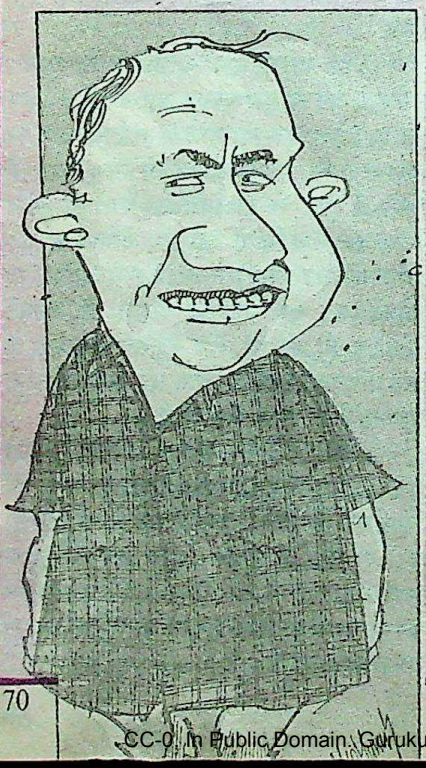

दूसरे दौर की बातचीत महाराष्ट्र सदन के बजाय गुजरात भवन में हुई तथा प्रधान मंत्री चंद्रशेखर के विशेष अनुरोध करने के बाद ही मुख्य मंत्री पवार बातचीत में शामिल हो सके थे. लोगों का कहना है कि शरद पवार द्वारा पार्टी उच्च कमान के मशवरे के बिना ही इस मंदिर मसजिद वार्त्ता में भाग लेने के प्रति उन की नाराजगी का इजहार था.

चुनाव तो कभी भी हो सकता है

जनता दल (स) के प्रवक्ता और पेट्रोलियम एवं रसायन मंत्री सत्यप्रकाश मालवीय भले ही बारबार दावा करते हैं कि उन की सरकार पूरे चार वर्ष चलेगी, परंतु उन के ही मंत्रिमंडल के सहयोगी इस पर विश्वास नहीं करते हैं और कहते हैं कि चुनाव कभी भी हो सकते हैं.

विदेश मंत्री विद्याचरण शुक्ल लोकसभा की सदस्यता के अयोग्य घोषित किए जाने के एकदो दिन पूर्व मध्य प्रदेश के अपने चुनाव क्षेत्र के दौरे का विस्तृत कार्यक्रम तैयार करवा रहे थे. उन के एक अंतरंग मित्र ने पूछा, "ऐसी क्या बात है कि इतना लंबा दौरा कर रहे हो, क्या चुनाव आ रहे हैं?"

विद्याचरण शुक्ल का जवाब था, "चुनाव तो कभी भी हो सकते हैं, इस का क्या भरोसा? आखिर चुनाव क्षेत्र में नहीं जाएंगे तो अगला चुनाव कैसे निबटेगा."

इस के बाद ही उन की संसद सदस्यता पर अध्यक्ष की कुल्हाड़ी चल गई. अब उन के लिए अगला चुनाव ही रास्ता रह गया है क्योंकि मध्य प्रदेश में भारतीय जनता पार्टी की दोतिहाई बहुमत वाली विधान सभा से उन के राज्य सभा के लिए चुने जाने की कोई संभावना नहीं है. समर्थक दल कांग्रेस के द्वारा उन के त्यागपत्र की मांग से उन की कुरसी पहले ही खतरे में पड़ गई है. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बच्चे तीन से कम पैदा कीजिए, पेड़ पांच से अधिक लगाइए

भारत की सब से बड़ी समस्या गरीबी है, और इस का बहुत बड़ा कारण है जनसंख्या का बेलगाम बढ़ते जाना. सारे धर्मग्रंथों में लगभग हर चौथे पृष्ठ पर यह लिखा होने पर भी अमुक राजा या व्यक्ति अमुक पुरुष के वीर्य से, अमुक स्त्री के गर्भ से उत्पन्न हुआ. जनता को यही भुलावा दिया जाता रहा कि संतान भगवान की देन है. कोई स्त्री बांझ है तो भगवान के कोप से, किसी के दर्जनों हैं तो भगवान की कृपा से.

जब तक आधुनिक विज्ञान और पश्चिमी चिकित्सा पद्धति भारत में नहीं आई थी, गरीबी, भूखमरी, अकाल और अनेक महामारियों के कारण जनसंख्या सीमित रहती थी. परंतु आज इन सब पर आधुनिक विज्ञान ने काबू पा लिया है और मृत्यु दर लगातार घटती जा रही है. जहां पहले 100 बच्चों में से मुश्किल से 5-10 बच पाते थे, आज 60-70 से अधिक जीवित रहते हैं. प्लेग, मलेरिया, हैजा, चेचक, तपेदिक, इत्यादि बड़ी संख्या में मारने वाली बीमारियां प्रायः स्वयं मर सी गई हैं.

इन सब के कारण जनसंख्या में भीषण वृद्धि हो रही है और इस व्याधि को भगवान और भाग्य के भरोसे छोड़ना सामूहिक आत्महत्या के प्रयत्न से कम नहीं है. 'भगवान जिसे दो हाथ देता है, उसे खाना भी देगा,' यह सिद्धांत पहले भी सही नहीं था, आज तो बिलकुल ही गलत और भ्रामक है.

यदि आप अपनी, अपने परिवार की और देश की गरीबी रोकना चाहते हैं तो बच्चे कम पैदा कीजिए. यह बिलकुल आप के हाथ की बात है, भगवान का इस में कोई दखल नहीं है. यदि गर्भ निरोधक सही प्रकार से प्रयोग में लाए जाएं, यानी पुरुष का वीर्य स्त्री के गर्भाशय में न जाए, तो भगवान भी लाख सिर पटक कर किसी स्त्री के संतान उत्पन्न नहीं कर सकते.

आज का युग मशीनी युग है. सैकड़ों व्यक्तियों का काम एक मशीन हजार गुना गति से पूरा कर देती है. आज वही व्यक्ति शक्तिशाली व धनी हो सकता है, जिस को ऊंचे दर्जे की शिक्षा और प्रशिक्षण मिला हो. इन सब के लिए धन चाहिए. जितने अधिक बच्चे होंगे, उतना ही धन प्रति बच्चा कम होता जाएगा. नतीजा यह होगा कि जिन के बच्चे कम होंगे, वे उन्हें अच्छा, महंगा प्रशिक्षण दे सकेंगे. आप के बच्चे यदि ज्यादा हैं तो वे पीछे रह जाएंगे.

जहां जनसंख्या सीमित करनी है, वहां देश में अधिक से अधिक पेड़ उगाने की भी आवश्यकता है. क्योंकि बाढ़ें अधिक आ रही हैं, नदियों और बांधों में मिट्टी भरती जा रही है, सूखा पड़ता जा रहा है. रेगिस्तान फैलता जा रहा है. लकड़ी कम और महंगी होती जा रही है.

इसलिए आप अपने बच्चों का मोह अधिक वृक्ष उगा कर पूरा कीजिए. यह निश्चय कीजिए कि अपने जीवन में आप कम से कम पांच वृक्ष अवश्य लगा कर बड़े करेंगे. आप को इन से भी बच्चों से कम खुशी नहीं प्राप्त होगी. बच्चे बड़े हो कर विश्वासघात कर सकते हैं, आप को कष्ट पहुंचा सकते हैं, परंतु वृक्ष सदा आप के प्रति वफादार रहेंगे. वे आप को बराबर हर वर्ष अपनी शक्ति के अनुसार फलफूल देंगे, छाया देंगे, मौसम की बदलती आंखों से आप के घर की रक्षा करेंगे.

हो सकता है आप किराए के मकान या फ्लैट में रहते हों, और आप की कोई जमीन नहीं हो. यदि आप निचली मंजिल में रहते हैं तो वहां भी पेड़ लगा सकते हैं—और इस पर लागत 10-20 रुपए से अधिक नहीं आती. यदि आप केवल ऊपरी मंजिलों में रहते हैं तो वहां गमलों में पौधे लगाइए. सब्जी बोइए, बेलें चढ़ाइए और अन्यथा जहां भी मौका मिले पेड़ लगाइए. अपनी जमीन न हो तो किसी सार्वजनिक स्थान में—स्कूल, अस्पताल, बगीचा, सड़क, धर्मशाला, आदि में, प्रबंधकों से अनुमति ले कर वृक्ष लगाइए. ज्यों ज्यों वे बढ़ते जाएंगे, आप को एक अपूर्व संतोष, शांति और परिपूर्ति का उत्तरोतर अनुभव हो जाएगा.

आज ही निश्चय कीजिए:

बच्चे दो या तीन—पेड़ पांच से पचीस.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठकों की समस्याएं

मैं 35 वर्षीय विवाहित युवक हूं, आठ वर्ष पूर्व मेरा विवाह हुआ था. समस्या यह है कि शादी से पूर्व एक लड़की से मेरे यौन संबंध हो गए थे, परिणामस्वरूप वह गर्भवती हो गई थी और मैं ने उस का गर्भपात भी करवा दिया था. परंतु इतने वर्षों के बाद मुझे पता चला कि वह अविवाहित है और जीवन भर अविवाहित ही रहना चाहती है, यह सुन कर पश्चात्ताप की अग्नि में जल रहा हूं, क्या करूं?

आठ वर्ष के सफल विवाहित जीवन के बाद आप को यदि यह पता चला कि वह लड़की अविवाहित है तो इस में आश्चर्य और पश्चात्ताप की क्या बात है. विवाह पूर्व आप ने उस से यौन संबंध बना कर उसे गर्भवती व गर्भपात की प्रक्रिया से गुजार कर एक गलती की थी, जिस में वह खुद भी शामिल थी. अब विवाह के बाद तो उस लड़की के विषय में पुन: सोच कर भयंकर भूल न कीजिए. इस से आप का पारिवारिक जीवन बिखर जाएगा और उस लड़की का भविष्य भी चौपट हो जाएगा. हमारे समाज में बहुत सी लड़कियां अविवाहित रहने का निर्णय लेती हैं, उस ने किसी भी कारण से यह निर्णय लिया मगर आप उस के निजी जीवन में हस्तक्षेप न करें वरना याद रखिए आप सब का भविष्य चौपट हो जाएगा.

मैं एक अविवाहित बैंक सेवारत क्लर्क हूं, पिछले पांच वर्षों से अपने सहकर्मी से प्रेम करती हूं. दोनों भिन्नभिन्न जाति के हैं पर शादी के लिए हमारे परिवार सहमत हैं. समस्या यह है कि यद्यपि मेरा दोस्त समृद्ध परिवार से है, घर में नौकर भी है परंतु कोई स्त्री नहीं है और उधर उस की मां की तबीयत ठीक नहीं रहती. सोचती हूं नौकरी छोड़ कर उन की सेवा करूं क्योंकि घर नौकरों के सहारे भी तो नहीं चल सकता. इधर दोस्त कहता है कि इतना पढ़लिख कर नौकरी छोड़ने का औचित्य क्या है. मुझे फिलहाल इन का परिवार अच्छा लग रहा है, क्या शादी के बाद लगीलगाई नौकरी छोड़ना उचित होगा, कृपया राय दीजिए.

दरअसल गृहस्थी का सच्चा सुख और उस की पूरी देखभाल तो तभी संभव है जब गृहिणी घर में रहे किंतु आज के परिप्रेक्ष्य में कामकाजी नारी का महत्त्व अधिक है और आप के भावी पति भी यही चाहते हैं. इसलिए सर्वोत्तम तो यही रहेगा कि शादी के बाद आप देखें कि घर किस प्रकार चल सकता है. यदि आप की भावी सास नौकरों से काम करवा सकती हैं और गृहस्थी ठीक से चल सकती है तो चलाइए, यदि गुजारा न हो पाए तभी नौकरी रखने का विचार कीजिए. शादी के बाद यह आप को स्वयं देखना होगा.

मैं 19 वर्षीय एक अविवाहित दुकानदार हूं. मेरी दुकान के सामने एक लड़की रहती है जो कई बार मेरी दुकान पर आ कर हंसहंस कर बात करती है. मुझे उस से प्रेम हो गया है, सोचा कि रास्ते में रोक कर पूछूंगा तो वह ऐसा बरताव करती है जैसे मुझे जरा भी नहीं जानती. क्या वह मुझे नहीं चाहती? मैं तो उस के बिना जी नहीं सकता, क्या करूं?

हंस कर बात करने का यह अर्थ कहां हुआ कि वह आप से प्यार करती है. हो सकता है हंसना उस का स्वभाव हो या आप को चिढ़ाती हो. आप अभी उस आयु से गुजर रहे हैं जहां विपरीत सेक्स का आकर्षण बहुत शीघ्र हो जाया करता है, जब आप स्वयं 19 वर्षीय हैं तो वह तो और भी छोटी होगी. आप उस को पढ़ाई में लगा रहने दीजिए. उस का ध्यान बदलने की भी चेष्टा मत कीजिए और स्वयं अपनी दुकानदारी में मन लगाइए.

मैं 18 वर्षीय अविवाहित छात्र हूं. दोस्त के परिवार से प्रगाढ़ संबंध हैं और उस परिवार की लड़की से मेरा प्रेम है. परंतु अब उस का विवाह हो गया है. मैं क्या करूं कि हमारे संबंध बरकरार रहें?

भूल कर भी उस लड़की के विवाहित जीवन में हस्तक्षेप न करें. अपनी पढ़ाई में स्वयं को व्यस्त कीजिए और उस लड़की की तरफ से ध्यान हटाने की चेष्टा कीजिए. इसी में आप का व उस का भला है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं 25 वर्षीय स्वस्थ युवक हूं और निजी व्यवसाय से 3,500 रुपए प्रतिमाह कमा रहा हूं, एक सजातीय 17 वर्षीय लड़की से प्रेम करता हूं, उस ने भी प्रेम का इजहार किया है. मेरे घर वालों को रिश्ता पसंद है पर लड़की वालों को मालूम नहीं है. समस्या यह है कि क्या इतनी कम आयु की लड़की से विवाह करना उचित है? हमारे बीच आठ वर्ष का अंतर है, मैं उस के बालिग होने तक इंतजार कर सकता हूं. सलाह दीजिए.

यदि लड़की के घर वाले राजी हों तो आठ वर्ष के अंतर से कोई अंतर नहीं पड़ता किंतु लड़की अभी छोटी है, उस के बालिग होने के बाद ही आप उस से विवाह कर सकते हैं.

मैं एक युवक हूं. समस्या यह है कि एक लड़की के प्रेम के चक्कर में पड़ कर उसे पत्र लिखे, उस ने मुझे लिखे. मैं ने लड़की को उस के पत्र लौटा दिए पर उस ने वापस नहीं दिए, उस का मामा उन पत्रों से मुझे ब्लैकमेल कर 800 रुपए झटक चुका है. मैं एक इज्जतदार आदमी हूं, क्या करूं?

आमतौर पर इन तथाकथित पत्रों द्वारा ब्लैकमेलिंग के केस में लड़की को भय रहता है किंतु आप के केस में इस का उलटा हो रहा है. लड़की से पत्र वापस लेना कोई मुश्किल काम नहीं है, आप उस से सीधे पत्र मांग सकते हैं, यदि न दे तो धमका सकते हैं, उस के मामा को भी आप धमका दें कि ब्लैकमेलिंग की थाने में रिपोर्ट कर देंगे, उस को समझा दें कि बदनामी लड़की की ही होगी.

एक 21 वर्षीय अविवाहिता हूं, मांबाप न होने से बड़े भाई के पास रहती हूं. भाभी है और चार भतीजियां हैं, समस्या यह है कि उन लड़कियों को एक मेरा हमउम्र लड़का पढ़ाने आता है जिस का मेरी 38 वर्षीय भाभी से लगाव है, बात चिंता की यह है कि संयोगवश उस के बड़े भाई से मेरी शादी तय हो गई है, वह मेरा देवर बन जाएगा. खानदान की इज्जत बचाने के लिए क्या करूं, मेरे इस देवर से तो घृणा हो गई है मुझे, क्या राय है आप की?

आप भाभी को स्पष्ट शब्दों में समझा दें और भैया से शिकायत का डर भी दिखा दें. आप की भाभी की सुप्त चेतना इस से ही जाग उठेगी. उन को अपनी समझदारी से एकांत का अवसर भी न दें. यदि समस्या फिर भी न सुलझे तो ट्यूटर को किसी प्रकार हटवा दें वैसे आप की धमकी से ही भाभी सही रास्ते पर आ जाएगी.

मैं एक नवयुवक हूं. हाल ही में मेरा विवाह हुआ है. शुरू में पत्नी के रजस्वला होने के कारण प्रथम रात्रि में हमारा मिलन नहीं हो सका. शुद्ध स्नान के बाद प्रथम मिलन पर जब मैं ने उन के स्तन को दबाया तो उस में से दूध निकल रहा था. क्या मासिक धर्म के पश्चात ऐसा होता है? कृपया शीघ्र बताएं.

रजस्वला होने के बाद भी और वैसे भी कभी कभी स्तनों से हलका स्राव होता है जो हलके से दबाव से निकल सकता है. अतः आप किसी प्रकार का गलत खयाल मन में न ला कर दांपत्य जीवन का आनंद ले सकते हैं.

मैं एक विवाहित पुरुष हूं. समस्या दर्दनाक है. हमारा पतिपत्नी एवं दो बच्चों यानी एक पुत्र व पुत्री का परिवार था. दुर्घटनावश पुत्री नहीं रही. अब चूंकि मैं नसबंदी करा चुका हूं तो और संतान की कल्पना करना व्यर्थ है. इधर पत्नी का बुरा हाल हो रहा है. क्या हमें कोई पांचछः वर्ष की बच्ची गोद मिल सकती है. इस से हम सब को बहुत शांति मिलेगी. और यह भी बताएं कि क्या एक पत्नी होते हुए हम दूसरी शादी कर सकते हैं?

पुत्री आप को गोद मिल सकती है. इस के लिए आप को स्थानीय समाज कल्याण विभाग से बातचीत करनी होगी. आप यहां भी संपर्क कर सकते हैं:

प्रोबेशन आफीसर,
समीप सिविल लाइंस कोर्ट, कानपुर

आप की पुत्री के न रहने से स्वाभाविक है आप सब परेशान हैं. ऐसे में आप का यह पूछना कि क्या आप एक पत्नी के रहते दूसरी शादी कर सकते हैं, बड़ा अजीब व खेदजनक है. इस समय तो आप की पत्नी को सहारे की जरूरत है, सौत की नहीं. आप हिंदू विवाह कानून के अनुसार एक पत्नी के रहते दूसरा विवाह बिलकुल नहीं कर सकते.

—कंचन ●

पाठकों की व्यक्तिगत, मनोवैज्ञानिक, पारिवारिक, कानूनी आदि समस्याओं के उत्तर इस स्तंभ में दिए जाते हैं. स्वास्थ्य संबंधी उत्तर देना संभव नहीं है. पत्र द्वारा उत्तर नहीं दिए जासकते. अपनी समस्याएं इस पते पर भेजें : कंचन, सरिता झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-55.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी ● सुरेशकुमार गोयल

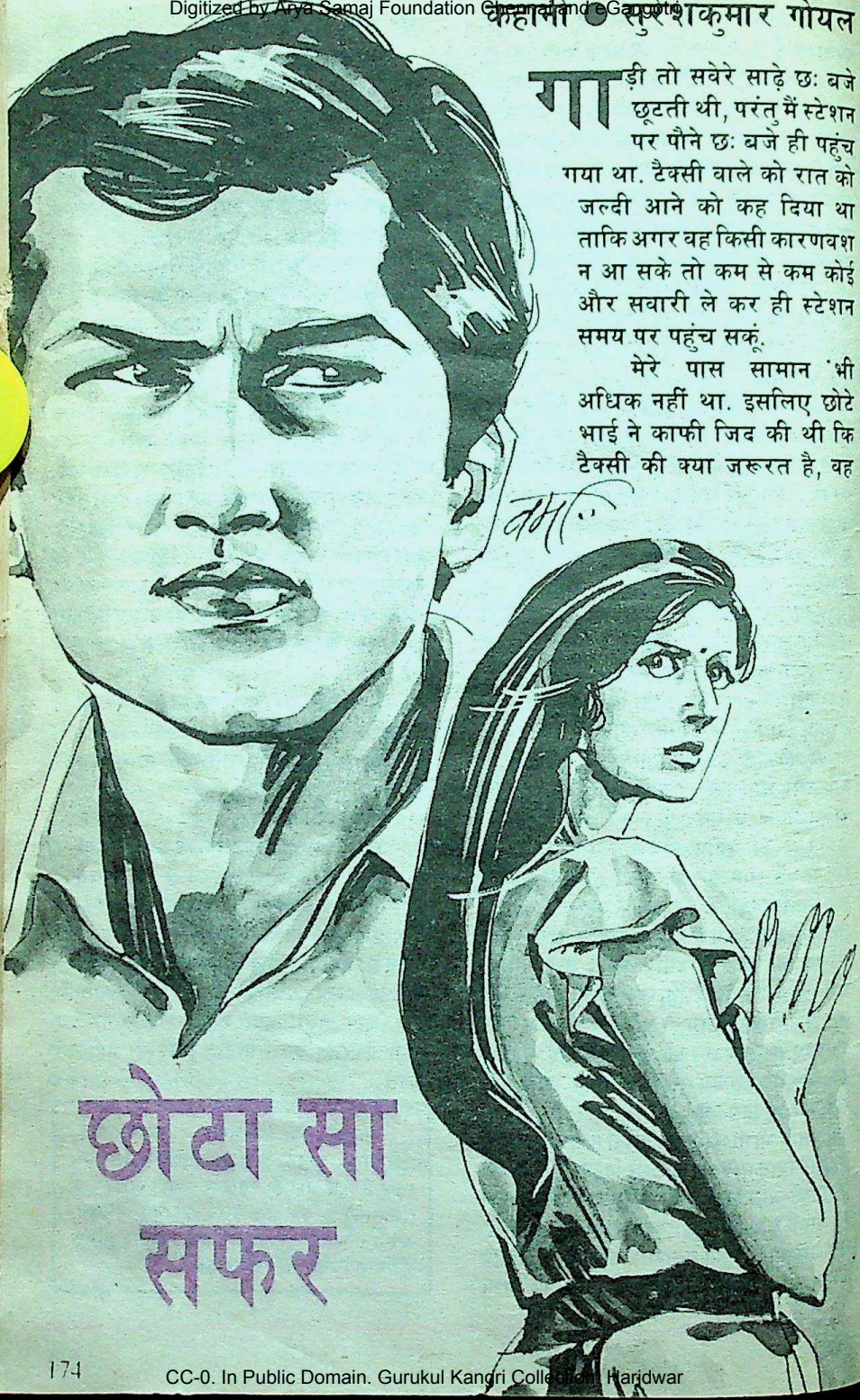

छोटा सा सफर

गाड़ी तो सवेरे साढ़े छः बजे छूटती थी, परंतु मैं स्टेशन पर पौने छः बजे ही पहुंच गया था. टैक्सी वाले को रात को जल्दी आने को कह दिया था ताकि अगर वह किसी कारणवश न आ सके तो कम से कम कोई और सवारी ले कर ही स्टेशन समय पर पहुंच सकूं.

मेरे पास सामान भी अधिक नहीं था. इसलिए छोटे भाई ने काफी जिद की थी कि टैक्सी की क्या जरूरत है, वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं आजकल टोरांटो विश्वविद्यालय में हूं." मैं ने संक्षिप्त सा उत्तर दिया.

स्कूटर पर छोड़ आएगा. परंतु सवेरेसवरे दिसंबर में स्कूटर पर अपने बदन की कुल्फी बनाने की मेरी तनिक भी इच्छा नहीं थी. फिर यह भी ख्याल आया कि जरूर ही छोटे भाई की पत्नी को अच्छा नहीं लगेगा कि उस का पति अपने भाई के लिए इस ठंड में स्कूटर पर जाए. मुझे कानपुर जाना था. वहां आई.आई.टी. वालों ने भाषण के लिए बुलाया था. मेरे कुछ मित्र भी वहां पढ़ रहे थे. सोचा, एक पंथ दो काज. भाषण भी दे आऊंगा और पुराने मित्रों से भी मिल लूंगा.

गार्ड हाथ में हरी झंडी लिए मटरगश्ती कर रहा था. मैं उचित समय जान कर डब्बे में चढ़ गया.

गाड़ी कुछ देर में चल दी. मेरी बगल में लगभग 12 वर्ष का एक सुंदर लड़का बैठा

मैं ट्रेन से कानपुर जा रहा था कि रास्ते में पूर्व प्रेमिका सुजाता और उस के पति कमलकुमार से मुलाकात हो गई. कमलकुमार की अनुपस्थिति में हम ने एकदूसरे के हालचाल पूछे परंतु हम दोनों एकदूसरे से आंखें भी चुराते रहे. फिर हमारा गंतव्य आ गया और इस छोटे से सफर की याद दिल में संजोए मैं ने उन से विदा ली.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था. वह चित्रकथा पढ़े जा रहा था. सामने एक महिला और पुरुष बैठे थे. पता नहीं क्यों, ऐसा लगा कि सामने बैठी महिला को देखा है कभी, पर याद नहीं आ रहा था.

अचानक वह महिला ही बोल उठी, "भाई साहब, आप शेखर को जानते हैं, उन्होंने बंबई से इंजीनियरी की थी."

"शेखर? भला उस को मैं कैसे भूल सकता हूं. वह तो मेरे साथ पांच साल पढ़ा था, मेरा जिगरी दोस्त था."

"मैं उन की छोटी बहन हूं, सुजाता." महिला ने अपना परिचय दिया, "और आप हैं मेरे पति कमलकुमार और आप हैं नरेंद्रकुमार." मेरा परिचय सुजाता ने अपने पति से कराया.

फिर बोली, "और यह है हमारा बेटा अजय. बेटा, चाचाजी को नमस्ते करो."

अजय अपने पिता की तरह ही भौचक्का था कि अचानक ट्रेन के डब्बे में मां की जानपहचान का कोई ऐसा इनसान मिल गया, जिस के बारे में पहले कभी कोई चर्चा ही नहीं हुई.

सुजाता ने अपने पति से कहा, "उन दिनों जब पिताजी आगरा में रहते थे, बंबई से दिल्ली जाते हुए नरेंद्र आगरा एकदो दिन रुक कर जाते थे. पर अब तो 15 साल से विदेश में ही हैं शायद... कहां हैं, आजकल आप?"

"मैं आजकल टोरांटो विश्वविद्यालय में हूं." मैं ने संक्षिप्त उत्तर दिया. "कमलजी, आप कहां काम करते हैं?" मैं ने सुजाता के पति से पूछा.

"मैं तो शिक्षा मंत्रालय में हूं, डिप्टी सेक्रेट्री पिछले साल ही बना था. कलकत्ता कार्यालय के काम से जा रहा हूं. अजय की इन दिनों छुट्टियां थीं, तो सोचा कि चलो परिवार के साथ ही चला जाए."

"यह तो अच्छा किया, इसी बहाने आप से परिचय हो गया. मैं तो सुजाताजी को देख कर पहचान भी नहीं पाया. यह तो इन्होंने पहचान कर अच्छा ही किया." मैं बोला.

"पिछले 15 वर्षों में क्या मैं इतना बदल गई हूं?" सुजाता ने शिकायत भरे लहजे में मेरी ओर देख कर कहा, "मेरा वजन काफी बढ़ गया है पहले से. रोज सोचती हूं, डाइटिंग शुरू करूंगी पर हमेशा ही अगले दिन के लिए टाल जाती हूं. पर आप तो लगभग वैसे के वैसे ही हैं, मुशकिल से दोचार किलो वजन बढ़ा होगा."

"कनाडा में लोग अपने स्वास्थ्य का काफी ध्यान रखते हैं. विकी इस बारे में काफी चौकस रहती है. पिछले 15 वर्षों में न तो उस का वजन बढ़ा है और न ही उस ने मेरा वजन बढ़ने दिया है. लगभग हर रोज तैरने जाते हैं हम दोनों. गरमियों में टेनिस भी खेलते हैं." मैं ने अपने दुबलेपतले बदन का रहस्य आखिर खोल ही दिया.

"मैं तो हमेशा ही इन से कहती हूं कि मेरे साथ सवेरे घूमने चलो, पर यह चलते ही नहीं."

भोजन यान वाला नाश्ते का आर्डर लेने आया था. मुझे सुजाता ने आर्डर नहीं देने दिया. सवेरे के नाश्ते का सब सामान तो वे साथ ही लाए थे, इसलिए नाश्ता मैं ने उन के साथ ही किया.

थोड़ी देर बाद सुजाता पूछ बैठी, "कितने बच्चे हैं आप के?"

मेरा मुंह यह प्रश्न सुन कर कुछ मलिन हो गया और उसे भी बुरा लगा कि बेकार ही यह प्रश्न पूछ बैठी. मैं ने बस यही कहा, "अगर मेरी बेटी होती तो आप के बेटे को मांग लेता उस के लिए."

"भाई साहब, हम अपने बेटे को आप को दे भी देते." कमल ने मुसकराते हुए कहा.

"क्या पता, आप का ही इरादा आखिरी वक्त में बदल जाता," सुजाता ने पुराने जख्मों को कुरेद दिया, "हमारा बेटा तो फिर कहीं का न रहता."

ऐसा लगा, जैसे खाना गले में ही अटक गया हो. सुजाता के घर मैं बंबई से दिल्ली जाते हुए अवश्य रुकता था. कुछ तो अपने मित्र के कारण और कुछ सुजाता के कारण.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

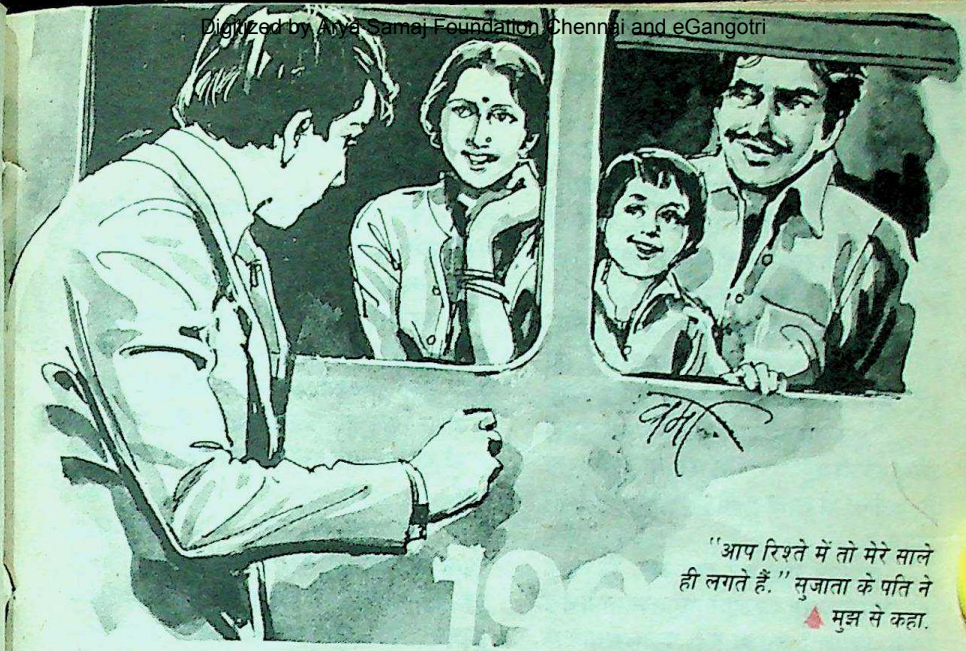

"आप रिश्ते में तो मेरे साले ही लगते हैं." सुजाता के पति ने मुझ से कहा.

सुजाता के मातापिता को भी मेरे आनेजाने में कोई आपत्ति न थी. इंजीनियरी करने के तुरंत बाद ही मैं कनाडा चला गया. परंतु शेखर से पत्रव्यवहार चलता रहा. सुजाता तो नियमित रूप से पत्र लिखती ही थी. उस के पिताजी मेरे पिताजी से मिल भी लिए थे. सब राजी ही थे हमारी शादी के लिए. परंतु मेरे जीवन में विकी अचानक आ गई और उस से मिलने के कुछ दिनों बाद ही मैं उस से शादी कर बैठा.

सुजाता न जाने क्या सोच रही थी. मुझ से आंखें मिलाने का या तो साहस नहीं जुटा पा रही थी अथवा व्यर्थ में अधिक बातें कर के अपने पति के दिल में बेकार का शक नहीं पैदा करना चाहती थी.

उस का बेटा अजय वहां बड़ों के साथ ऊब रहा था. वह इधरउधर गलियारे में चक्कर लगा रहा था. कमल शायद शौचालय गए थे.

"इतने वर्षों के बाद आप मिले हैं. सब कुछ कितना बदल गया है हम दोनों के जीवन में." सुजाता ने आह भरी.

"बीते सालों में न जाने तुम कितनी बार याद आई हो, सुजाता. तुम को त्याग कर मैं कभी खुश नहीं रह पाया. विकी बहुत अच्छी है, पर संतान की कमी हम दोनों को ही बहुत खटकती है." मैं इतना ही कह पाया कि तभी कमलकुमार आते दिखाई दिए.

मैं चुप हो गया. सुजाता की आंखें खिड़की से बाहर जाने क्या देख रही थीं, क्या ढूंढ़ रही थीं. कमलकुमार कनाडा के बारे में मुझ से तरहतरह के प्रश्न पूछ रहे थे. दोपहर के खाने का समय हो रहा था. सुजाता का आग्रह था कि मैं उन के साथ ही खाना खाऊं. उधर अजय भोजन यान में खाने की जिद कर रहा था. कमलकुमार पहले तो उसे मना करते रहे, परंतु उस की जिद के आगे उन की एक न चली. वह उसे भोजन यान में छोड़ने चले गए.

मुझे अच्छा मौका मिला था इसलिए पूछ ही बैठा, "तुम खुश हो न सुजाता. कमलकुमार काफी अच्छे पति लगते हैं. चांद सा बेटा है... सब कुछ तो है तुम्हारे पास."

"हां, सब कुछ है मेरे पास. आप भी खुश हैं न?" सुजाता बोली, "इनसान की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कामना तो कुछ और ही होती है... बस जिंदगी में जो भी मिले, अगर उसी में सब्र कर लिया जाए तो जीवन सुखमय हो जाता है."

"मुझे तो सुख एक मृगतृष्णा की तरह लगता है. जितना सुख पाने के लिए भागो, उतना ही वह दूर भागता जाता है. मैं ने तो अब जीवन के सुखदुख के बारे में सोचना ही छोड़ दिया है." मैं मुसकराया.

"कभी विकी को आप भारत लाए हैं?" सुजाता कनखियों से बाहर देखे जा रही थी कि कहीं कमलकुमार न आ जाएं.

"एक बार लाया था, लेकिन वह काफी बीमार रही यहां पर. अब जब भी मन करता है, अकेला ही आता हूं और घर वालों से मिल जाता हूं."

कानपुर एक घंटे बाद आने ही वाला था. कमलकुमार को आते हुए सुजाता ने देख लिया, इसलिए चुप हो गई. कमलकुमार के आने से मैं भी मन ही मन खुश हुआ. सुजाता से बातें करना मुझे काफी कठिन लग रहा था.

"शेखर का पता दीजिएगा?" यह प्रश्न मैं ने उन दोनों से ही किया था. कमलकुमार ने अपनी डायरी निकाल कर उस का पता मेरी डायरी में लिख दिया. मैं ने भी अपना परिचय कार्ड कमलकुमार को दे दिया.

"कभी कनाडा आएं तो मुझे अवश्य सूचित कीजिएगा. अजय को पढ़ने वहां भेज दीजिएगा, मैं उस की निगरानी कर लूंगा." मैं ने कहा.

गाड़ी कानपुर के बाहर आऊटर सिगनल पर खड़ी थी. अजय को भी भोजन यान में काफी देर हो गई थी. कमलकुमार उस को देखने के लिए चले गए. गाड़ी अब आगे बढ़ रही थी. मेरे पास यही आखिरी मौका था.

"मैं हमेशा ही तुम से माफी मांगने की सोचता था सुजाता, पर कभी आमनासामना नहीं हुआ. मैं ने अपना वादा नहीं निभाया. पर मुझे उस की सजा इसी जीवन में मिल रही है. जो बुराई शायद तुम मुझ में सकती थी, वह विकी नहीं दे पाई."

सुजाता चुप थी, मेरी बात का वह क्या उत्तर देती. उस ने तो शायद मुझे कभी का क्षमा कर दिया था, तभी तो अपने घरसंसार में सुखी थी.

"हम दोनों शायद एकदूसरे के लिए नहीं बने थे." सुजाता अपने आंसुओं को रोकने का प्रयास कर रही थी.

कानपुर के स्टेशन पर गाड़ी खड़ी थी. कमलकुमार अभी तक अजय को ले कर नहीं आए थे. मैं डब्बे से उतर कर खड़ा हो गया. सुजाता खिड़की से सटी बैठी थी. कुछ ही क्षणों बाद कमलकुमार अजय को ले कर आ गए.

"मैं अजय को जल्दी से भगा कर यहां लाया हूं. इस का बस चलता तो वहीं बैठा रहता." कमलकुमार शायद मन ही मन मेरे कानपुर में उतरने से प्रसन्न थे.

"आप से मिले बगैर तो गाड़ी को चलने नहीं देता." मैं ने कहा.

"आप रिश्ते में तो मेरे साले ही लगते हैं. शेखर के सब दोस्त मुझे जीजाजी ही कहते हैं." कमलकुमार ने विदा के क्षणों को हलकाफुलका बनाने के विचार से कहा.

"मुझे भी कहां एतराज है आप को जीजाजी कहने में." मैं ने मुसकराते हुए कहा. गाड़ी सरकने लगी. मैं ने कमलकुमार से हाथ मिलाया. सुजाता और अजय हाथ जोड़ कर नमस्ते कर रहे थे. कुछ दूर तक सुजाता की आंखें मुझे निहारती रहीं.

मैं कुछ देर तक वहीं प्लेटफार्म पर खड़ा रहा, जब तक कि सुजाता की गाड़ी आंखों से ओझल न हो गई. बरसों बाद सुजाता को अपने पति और बेटे के साथ खुश देख कर मेरे मन से एक भारी बोझ हट गया था. मैं ने एक गहरी सांस ली. कानपुर स्टेशन से बाहर निकला ही था कि स्कूटर वालों ने मुझे घेर लिया. उन के बीच घिरा मैं कुछ देर के लिए आज के छोटे से सफर की बात भूल ही गया. पर शायद आज का छोटा सा सफर मुझे सारा जीवन याद रहेगा. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पिछड़े वर्ग में सामाजिक चेतना

(पृष्ठ 34 का शेषांश)

अपेक्षित है. उन्हें चाहिए कि घर की देहरी से बाहर निकल कर देशदुनिया को देखें, ताकि आधुनिक समाज के तौरतरीके सीखने का अवसर मिल सके.

छुआछूत का अभिशाप किसी जहरीली गैस के समान पिछड़े वर्ग के सामाजिक जीवन को विषाक्त किए है, छुआछूत के नियम लक्ष्मण रेखा के समान हैं. जिन से अग्निमुख बन कर ही लोहा लिया जा सकता है.

इस छुआछूत में हिंदू वर्ण व्यवस्था और जाति प्रथा का सर्वाधिक हाथ रहा है. यह एक रोचक तथ्य है कि तथाकथित अगड़े वर्ग में ही नहीं पिछड़े वर्ग में भी ऊंचनीच और छुआछूत की भावना पाई जाती है. मेहतर, डेढ़, चमार, हबूड़ा आदि अछूत मानी जाने वाली जतियों को ऊंची जाति वाले ही नहीं, लुहार, कुम्हार आदि पिछड़े वर्ग की जातियां भी अछूत मानती हैं.

जैसे ब्राह्मणों में ऊंचे ब्राह्मण और नीचे ब्राह्मण के नाम पर ऊंचनीच, खानपान आदि का भेदभाव देखा जाता है, वैसे पिछड़े वर्ग की एक ही जाति में उपजाति, क्रम आदि के आधार पर भेदभाव बरता जाता है. उदाहरण के लिए मरे हुए जानवरों की खाल उधेड़ने वाले राजस्थानी खटीकों को राजस्थान से आए हुए और दिल्ली में रहने वाली 'नाड़ी बट' जो चमड़े की कतरनों के हंटर, बेंत व गुप्तियां बनाते हैं, अपने से नीचा बताते हैं और उन का भोजन, पानी व हुक्का स्वीकार नहीं करते. अनेक गांवों में नाई और धोबी हरिजनों व चमारों की हजामत नहीं करते और कपड़े नहीं धोते.

इस ऊंचनीच की भावना को प्रायः धर्म से जोड़ कर देखा जाता है. जैसे यदि अपने को ऊंचा मानने वाला व्यक्ति अपने से निचले व्यक्ति से यदि रोटीबेटी का संबंध रखेगा तो उस का धर्म भ्रष्ट हो जाएगा. ऐसे लोग बातबात में धर्मशास्त्रों के उदारण दे कर अपने को उन का गुलाम ही जाहिर करते हैं. इस संदर्भ में ध्यान देने योग्य बात यह है कि धर्म मनुष्य के लिए है न कि मनुष्य धर्म के लिए. जो धर्म अपने अनुयायियों को अपने सहधर्मियों के साथ सहानुभूति नहीं सिखाता वह धर्म नहीं, शक्ति का प्रदर्शन है. जो धर्म पशुओं को छूने की तो आज्ञा देता है और मनुष्य की परछाई से भी दूर रहने का उपदेश देता है, वह धर्म नहीं उपहास है.

विगत दशक में मीनाक्षीपुरम में अनेक लोगों ने धर्म की इस छुआछूत नीति से प्रपीड़ित हो कर धर्म परिवर्तन में ही अपना कल्याण समझा था. हाल ही में आगरा, मथुरा आदि नगरों में भी बड़ी संख्या में हुआ धर्म परिवर्तन इसी ओर इंगित करता है. दलितों के मसीहा कहे जाने वाले डा. भीमराव अंबेडकर ने भी हिंदू धर्म के ऐसे ही तमाम बंधनों से कुंठित एवं क्षुब्ध हो कर बौद्ध धर्म अपना लिया था.

अतः पिछड़े और अगड़े वर्गों को ऐसे धार्मिक आधार पर नए सिरे से संगठित होना चाहिए, जो स्वतंत्रता, समानता एवं भ्रातृभाव के सिद्धांतों को स्वीकार कर सके.

छुआछूत और ऊंचनीच की भावना से ग्रसित लोगों को यह भी पता रहना चाहिए कि भारतीय संविधान के अनुच्छेद 17 में अस्पृश्यता को एक दंडनीय अपराध माना गया है.

उपजातीय विवाह

ऊंचनीच और छुआछूत दूर करने से जुड़ी एक महत्त्वपूर्ण बात है आपस में ही ऊंचनीच मानने वाली जातियों और उपजातियों का परस्पर रोटीबेटी का संबंध. समाज में प्रायः यह देखा गया है कि रोटीबेटी के संबंधों से सामाजिक संबंधों में भी प्रगाढ़ता आती है, जातिगत आपसी वैमनस्य और विषमता दूर होती है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

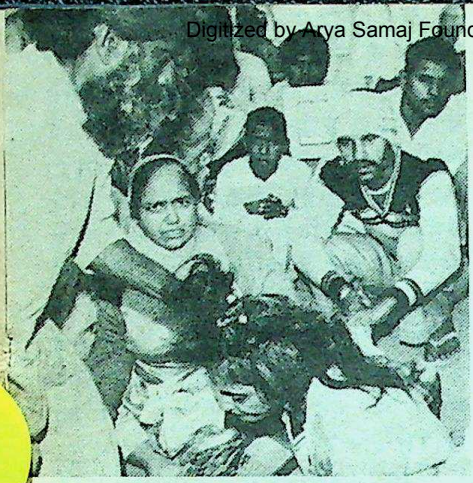

भूतप्रेत, जादूटोने के चक्कर में फंस होने की वजह से ही पिछड़ा वर्ग और पिछड़ता रहा है.

कुछ लोग पिछड़े वर्ग से सीधे अगड़े वर्ग में आने के लिए अंतर्जातीय विवाह के 'शार्टकट की बात करते हैं. किंतु अंतर्जातीय विवाह से पहले उपजातीय विवाह आवश्यक है. इस से रंग, रूप, गुण, रहनसहन, धर्म आदि में कोई भेद न होते हुए भी जहां जाति भेद की खाई है, वह पट जाएगी. आज पिछड़ा वर्ग कितना ही एकजुट या संगठित हो ले, उस में कितना ही प्रेम और सहयोग हो, मगर जातिवाद, भेदभाव वहां हर समय मौजूद रहता है और खानपान, शादीब्याह आदि में बाधक बनता है.

पिछड़ा वर्ग केवल जातीय और धार्मिक संदर्भों में ही नहीं पिछड़ा है, बल्कि सामाजिक रूप में भी पिछड़ा है, जिस के मूल्यांकन का आधार आर्थिक है. आर्थिक रूप से पिछड़े व्यक्ति की प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति न हो सकने के कारण वह अपराधवृत्ति की ओर उन्मुख हो जाता है. अधिसंख्य अपराधियों का कहना है कि पेट की आग को शांत करने के लिए ही उन्होंने चोरी की, जेब काटी या अन्य अपराध किए. वेश्यावृत्ति को अपनाने वाली अधिकांश नारियां अपनी गरीबी के कारण ही इस नरक में गिरीं.

आर्थिक तंगी के कारण पिछड़े वर्ग में ऋणग्रस्तता का अनुपात भी अपेक्षाकृत अधिक है. अनेक पिछड़ी जातियों में तो ऋणग्रस्तता वंशानुगत चली आ रही है. यानी पुत्र पिता का ऋण उतारता है और पिता अपने पिता का. इस वर्ग में ऋण लेने की सहज प्रवृत्ति को देखते हुए लगता है ऋण लेने का बहाना ही तलाशते रहते हैं. जन्म, मृत्यु, विवाह आदि संस्कारों के औचित्य का विचार किए बिना ही वे कर्ज लेले कर इन संस्कारों को धूमधाम से संपन्न करते हैं. जब साधारण रूप में कर्ज नहीं मिलता तो वे घर, जमीनजायदाद, आभूषण आदि को गिरवी रख देते हैं. ऋण लेते समय वे यह भी नहीं सोचते कि वे यह ऋण उतार भी सकेंगे या नहीं.

प्राचीन वर्ण व्यवस्था ने ही अपनी संतान के रूप में जाति प्रथा को जन्म दिया था, जो आज सरकार की गलत नीतियों के कारण जातिवाद का रूप धारण करने लगी हैं. जातिप्रथा हो या जातिवाद, दोनों में ही 'वर्ण' सदृश गतिहीनता है. जैसे प्राचीन वर्ण में परिवर्तन नहीं होता था, वैसे ही आज जाति बदलना संभव नहीं.

इस के विपरीत 'वर्ग' में गतिशीलता नजर आती है. संभवतः इसी लिए अब अगड़े और पिछड़े वर्गों की बात चलने लगी है. अगड़े वर्ग का व्यक्ति कभी भी प्रतिकूल परिस्थितियों में पिछड़ सकता है और पिछड़े वर्ग का कोई व्यक्ति अनुकूल परिवेश पा कर अगड़े वर्ग में आ सकता है. वर्ग को जातियों में नहीं बांधा जा सकता. संविधान की धारा 340 में सामाजिक और शैक्षणिक रूप से पिछड़ों के लिए वर्ग (क्लास) शब्द का प्रयोग किया गया है, 'जाति' (कास्ट) का नहीं.

अंधविश्वासों से छुटकारा

मेरे मित्र के गांव में एक ऐसा वृक्ष है जिस के तने में काफी जगह खोखली है. कुछ ग्रामवासियों की मान्यता है कि यदि उस जगह में से किसी नवजात शिशु को निकाला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं सताता. इस मान्यता के पोषकों में अधिसंख्य लोग सामाजिक रूप से पिछड़े हैं. ऐसा ही एक अंधविश्वासी अपने नवजात शिशु को उस में से निकाल रहा था कि बच्चा हाथ से छूट गया. बाद में तने का कुछ हिस्सा काट कर जब तक बच्चा निकाला गया तब तक बहुत देर हो चुकी थी. बच्चा भयंकर रोगों से ही नहीं, जीवन से भी छुटकारा पा चुका था.

सामाजिक रूप से पिछड़े अनेक लोगों में ऐसे ही असंख्य अंधविश्वास घर किए हैं जो उन्हें समाज में पीछे ही धकेलते हैं. ये अंधविश्वास मुख्यतः धर्म, मारण, उच्चाटन, वशीकरण एवं रोगनिवारण संबंधी हैं. साथ ही शकुन, अपशकुन, मणि, ताबीज, जादूटोना इत्यादि अंधविश्वासों की संततियों को भी उन्होंने खूब अपना रखा है. एक तरह से ये अंधविश्वास पिछड़ों के जीवन के अंग बन गए हैं. छोटेछोटे रीतिरिवाजों को निबाहते जाना ही शायद उन की परंपरा की रक्षा है.

सच पूछा जाए तो सामाजिक चेतना की गतिशीलता के लिए अंधविश्वासों, परंपराओं और रूढियों का मोह अवरोधक है. जब तक जर्जरित रूढियों, प्रतिगामी आस्थाओं, संकल्पशून्य निष्ठाओं और जड़ परंपराओं के मूल्यगत बोध से युग जीवन मुक्त नहीं होता, तब तक पिछड़े वर्ग के विकास पर प्रश्नचिह्न लगा ही रहेगा.

अंधविश्वास व्यक्ति में वैज्ञानिक एवं तार्किक दृष्टिकोण पैदा ही नहीं होने देते. उन के चक्कर में मनुष्य का धन एवं श्रम बरबाद होता है और व्यक्ति सटीक एवं उपयोगी उपायों से वंचित हो जाता है. अंधविश्वासी जन खसरा, चेचक जैसी बीमारियों को देवी माता का प्रकोप मान कर योग्य चिकित्सक के पास जाने के बजाय देवी पूजा के फेर में पड़ जाते हैं और धन व समय का अपव्यय करते हैं. डाक्टर की सूइयों में उन्हें विष लगता है. उन की नजर में सरकारी आदमी कुओं में दवाइयां डाल कर हैजा फैलाते हैं और विलायती दवा में गाय का खून मिला होता है.

परिवार में किसी की लंबी बीमारी होने पर पिछड़े लोग चिकित्सकों के पास न जा कर ज्योतिषियों के पास पहुंचते हैं क्योंकि उन की दृष्टि में वह बीमारी किसी दुष्ट ग्रह का प्रकोप होती है. अतः ऐसे ग्रहों की तत्काल शांति जरूरी है जो ज्योतिषी या पंडित ही करवा सकता है. ऐसे लोग यह नहीं जानते कि उन की अधिकांश बीमारियां दूषित वातावरण में निवास का परिणाम होती हैं.

यही नहीं, अपना भविष्य जानने के लिए भी वे ज्योतिषियों की 'भेंट पूजा' करते रहते हैं. यों देखा जाए तो भविष्यवाणियों पर विश्वास करना दोनों रूपों में हानिकारक है. अगर किसी व्यक्ति का भविष्य खराब बता दिया जाता है तो उस का सारा उत्साह नष्ट हो जाता है. यदि भविष्य अच्छा बता दिया जाता है तो व्यक्ति लापरवाह, निष्क्रिय और आलसी हो जाता है.

अशिक्षा निवारण

यह अशिक्षा ही है जिस ने पिछड़े वर्ग को अंधविश्वासों, रूढियों, परंपराओं आदि में जकड़ रखा है. पिछड़ों में व्याप्त गरीबी को उन की अशिक्षा से अलग कर के नहीं देखा जा सकता क्योंकि जो अशिक्षित होंगे, वे प्रायः गरीब भी होंगे. (यहां 'शिक्षा' को साक्षरता से नहीं जोड़ा जा सकता) इस अशिक्षा और गरीबी का ही प्रतिफल है कि पिछड़े वर्ग का प्रतिनिधित्व करने वाली कोई भी पत्रपत्रिका नहीं है, जो उन के विकास के लिए उचित दिशा निर्देश दे सके, समुचित विचारबिंदु दे सके, उन की आवाज को राष्ट्रीय स्तर पर बुलंद कर सके.

उस दिन अतरसिंह माली से यह पूछने पर कि वह अपने किशोर बच्चों को पढ़ने के लिए विद्यालय क्यों नहीं भेजता, उस ने जवाब दिया, "हमारे बच्चों को कौन पढ़ाएगा. वे अधिक न पढ़ पाने से अच्छी नौकरी भी नहीं कर पाएंगे. आखिर उन्हें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बनना माली ही है तो उन्हें स्कूल भेज कर समय बरबाद करने से ही क्या फायदा? अभी से काम सीख कर वे हमारा कुछ हाथ भी बंटा सकते हैं.''

यह केवल अतरसिंह का व्यक्तिगत जीवन दर्शन नहीं है, बल्कि समाज के पिछड़े वर्ग की बदभूल धारणा है. हो सकता है कि सभी पिछड़े बच्चे पढ़लिख कर अफसर, लिपिक आदि न बन सकें और उन्हें पैतृक कार्य करने के लिए मजबूर होना पड़े किंतु इतना निश्चित है कि मन लगा कर अर्जित की गई उन की शिक्षा उन के पैतृक कार्य को निखारने में सहयोग देगी, उनके रहनसहन, खानपान, आचारविचार आदि सभी को प्रभावित करेगी, जो उन के तथाकथित पिछड़ेपन से अलग और ऊपर उठने की दिशा में महत्त्वपूर्ण संकेत होगी.

कभीकभी तो उन्हें नशाखोरी और जुएबाजी के लिए भी ऋण लेते देखा गया है. इन की बुराइयों से संभवतः वे परिचित नहीं कि ये आदतें घर बरबाद करने के साथसाथ स्वयं की जान ले कर ही पीछा छोड़ती हैं. प्रतिदिन सायंकाल होते ही देशी शराब के ठेकों पर लगी लंबी लाइनें उन की नशाखोरी की परिचायक तो हैं ही, कभीकभी उन की गरीबी पर प्रश्नचिह्न भी लगा देती हैं कि यदि गरीब हैं, उन के पास पैसे नहीं हैं तो वे नशाखोरी में धन का अपव्यय क्यों कर रहे हैं?

समाज को नियमित और विकसित करने वाले मूलभूत नियम आर्थिक हैं. जब आर्थिक परिस्थितियां बदल जाती हैं तो उन के साथसाथ व्यक्तियों के स्वभाव, आदतें, दृष्टिकोण आदि भी परिवर्तित हो जाते हैं.

अभिप्राय यह है कि पिछड़े वर्ग की प्रगति में बाधक उक्त कारणों के परिप्रेक्ष्य में समुचित सामाजिक सुधारों की पहली आवश्यकता है. इस के लिए उन्हें कोई रोक भी नहीं रहा. न धर्म, न समाज, न सरकार और न ही संविधान. इस में अवरोधक हैं तो स्वयं पिछड़े वर्ग की मानसिकता, रूढ़िबद्धता और परंपरावादिता, जिन्हें तोड़ कर आत्मप्रेरित नेतृत्व का उभरना बहुत जरूरी है, जो पिछड़े वर्ग में सामाजिक चेतना ला सके, उसे जागरूक बना सके और अधिकार बोध करा सके. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चंचल छाया

★★★★ अति उत्तम ★★★ उत्तम ★★ मध्यम ★ साधारण ○ बेकार

★ बागी

निर्माता: नितिन मनमोहन
निर्देशक: दीपक शिवदासानी
संगीत: आनंद मिलिंद
मुख्य कलाकार: सलमान खान, नगमा, किरणकुमार, वीना, शक्ति कपूर.

'कयामत से कयामत तक' फिल्म हिट क्या हुई प्रेम कहानी पर बनने वाली फिल्मों की बाढ़ सी आ गई. ऐसी फिल्मों से दर्शकों को थोड़ी सी राहत मिली है. 'मैं ने प्यार किया' फिल्म को दर्शकों ने इतना पसंद किया कि उस ने प्रेम प्रधान फिल्मों के अब तक के सारे रिकार्ड तोड़ दिए. इसी फिल्म से सलमान खान रोशनी में आया और रातोरात स्टार बन गया.

फिल्म 'बागी' भी इसी परंपरा की एक और फिल्म है जिस का नायक भी वही सलमान खान है. लेकिन अगर 'मैं ने प्यार किया' से इस फिल्म की तुलना करें तो यह फिल्म उस के मुकाबले कुछ कमजोर है और जितना बढ़िया गीतसंगीत 'मैं ने प्यार किया' का था उतना इस फिल्म का नहीं है. प्रेम की आड़ में निर्देशक ने वह सब दिखा दिया है जो फिल्म के उद्देश्य को पीछे छोड़ जाता है.

साजन (सलमान खान) कर्नल (किरण कुमार) का बेटा है, जो अपने बेटे को फौज में भरती कराना चाहता है. साजन का रुझान फौज की ओर बिलकुल भी नहीं है. एक दिन एक वेश्याघर में उस की मुलाकात काजल (नगमा) से होती है, जिसे जबरदस्ती कोठे पर लाया गया होता है. दोनों में प्यार हो जाता है. साजन काजल के लिए अपने पिता से बगावत कर घर छोड़ देता है और उसे वहां से भगा कर उस के नानानानी तक पहुंचाता है. वह काजल से शादी की तैयारी करता है कि धनराज (शक्ति कपूर) के आदमी दोनों को पकड़ कर फिर वेश्याघर ले आते हैं परंतु ऐन मौके पर साजन के दोस्त और कर्नल के वहां पहुंचने पर धनराज और उस के आदमी मारे जाते हैं और साजन और काजल का मिलन होता है.

युवा होते दर्शकों को यह फिल्म पसंद आ सकती है. उन के मतलब का सभी मसाला फिल्म में मौजूद है. कालिज में मस्ती मारना, दोस्तों के साथ तफरीह करना और फिर इश्क फरमाना, जो आज के किशोर अपना फर्ज समझते हैं, भले ही इस के लिए उन्हें बाप की जेब से रुपए चोरी करने पड़ें, निर्देशक को यह सब दिखाने से पहले इस के दूरगामी परिणामों को सोचना चाहिए था. क्या फिल्म का उद्देश्य युवाओं को पथभ्रष्ट करना है? प्रेम कहानी दिखाने के लिए क्या ये छिछोरी हरकतें दिखाना जरूरी था? साफसुथरे ढंग से क्या प्रेम नहीं दर्शाया जा सकता?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस के लिए निर्देशक वेश्या उद्धार का बहाना बना सकता है परंतु एक 16 साल के किशोर द्वारा वेश्या उद्धार की बात समझ नहीं आती. दरअसल निर्देशक व्यावसायिकता के चक्कर में कुछ ज्यादा ही पड़ गया है.

वैसे तकनीकी दृष्टि से फिल्म अच्छी बनी है. फिल्म के दो गीत भी अच्छे बन पड़े हैं. छायाकार ने ऊटी की खूबसूरती के दृश्य कैमरे में कैद किए हैं. फिल्म के संवाद भी अच्छे हैं. मगर फिल्म में हास्य का न होना बहुत खटकता है.

अभिनय की दृष्टि से सलमान खान ने जानापहचाना अभिनय किया है. नायिका नगमा नई अभिनेत्री है. उस ने संवाद बोलते समय 'कयामत से कयामत तक' की जूही चावला की नकल की है. वैसे उस में प्रतिभा नजर आती है. वह चल निकलेगी, ऐसी उम्मीद है. अन्य कलाकार [illegible] संगीतकार आनंद मिलिंद ने इस फिल्म में थोड़ी सी मेहनत की है.

फिल्म जिम्मेदार में राजीव कपूर व अनिता राज असफलता के लिए ये दो चेहरे भी जिम्मेदार हैं.

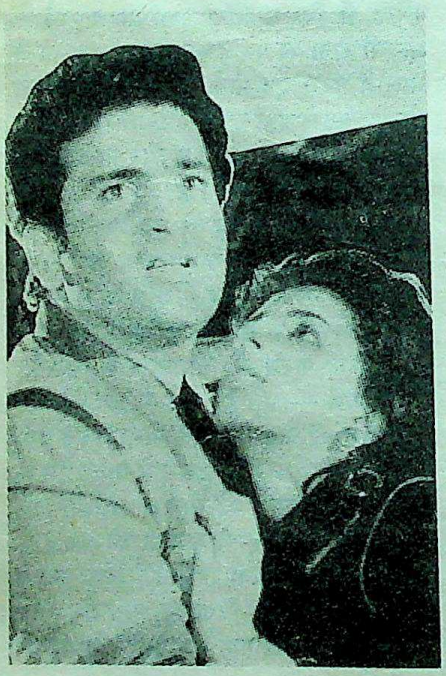

○ जिम्मेदार

निर्माता-निर्देशक : संतोषकुमार चौहान
संगीत : अनु मलिक
मुख्य कलाकार : राजीव कपूर, अनिता राज, किमी काटकर, रंजीत, विनोद मेहरा, विश्वजीत.

फिल्म 'जिम्मेदार' की नींव तबाही और बरबादी पर रखी गई है. दरअसल यह एक अपराध फिल्म है, जिस में हीरों की तस्करी को दिखाया गया है. इस तरह की फिल्में बारबार आती हैं और उन का स्वरूप एक जैसा ही रहता है, अतः प्रभावित नहीं कर पातीं.

जुर्म की दुनिया का बादशाह रंजीत सिंह (रंजीत) देश में तबाही फैलाने के लिए अंतर्राष्ट्रीय माफिया के एक एजेंट से 500 करोड़ में सौदा करता है. ये 500 करोड़ रुपए हीरों के रूप में देने तय होते हैं. हीरे भारत पहुंचते हैं परंतु एक जांच ब्यूरो के हाथ लग जाते हैं. वह हीरों को छिपा देता है. रंजीत सिंह उस अफसर का अपहरण करा लेता है परंतु उस की याददाश्त चली जाती है. रंजीत को पकड़ने के लिए इंस्पेक्टर वर्मा (विनोद मेहरा) को तैनात किया जाता है परंतु वह मारा जाता है. इंस्पेक्टर राजीव (राजीव कपूर) काफी जद्दोजहद के बाद रंजीत सिंह को पकड़ने और उसे खत्म करने में सफल होता है. जांच ब्यूरो के अफसर की याददाश्त लौट आती है और हीरे सरकार को सौंप दिए जाते हैं.

फिल्म में हीरों की तस्करी को जिस तरह दिखाया गया है वह तरीका काफी पुराना लगता है. फिल्म की सारी घटनाएं जानीपहचानी हैं. इंस्पेक्टर राजीव का स्केटिंग करते हुए लड़कियों के पीछे भागना और फिकरे कसना ओछी हरकतें हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मारधाड़ और शरीर प्रदर्शन से फिल्म भरी पड़ी है.

फिल्म के संवाद जरूर अच्छे हैं. छायांकन भी कुछ हद तक अच्छा है. अभिनय की दृष्टि से नायक राजीव कपूर एक बार फिर असफल रहा है. नायिका किमी काटकर ने जानीपहचानी पर व्यावहारिक अदाएं ही दिखाई हैं. रंजीत खलनायक के रूप में असफल रहा है. विश्वजीत पुलिस कमिश्नर लगता ही नहीं.

दरअसल यह फिल्म सिर्फ उन दर्शकों के लिए हैं जो सोचतेसमझते बिलकुल नहीं सिर्फ परदे पर देखते ही हैं.

○ नाचे नागिन गलीगली

निर्माता : बी.के. जायसवाल
निर्देशक : मोहनजी प्रसाद
संगीत : कल्याणजी आनंदजी
मुख्य कलाकार : मीनाक्षी शेषाद्रि, नितीश भारद्वाज, सदाशिव अमरापुरकर, साहिला चड्ढा, डा. श्रीराम लागू और सत्येन कप्पू.

नाग नागिनों पर बनी कुछ फिल्मों की सफलता देख कर जिस तेजी से सांपों पर फिल्में बन रही हैं, उस से लगता है कि फिल्म निर्माताओं के पास कोई महत्त्वपूर्ण विषय बचा ही नहीं है. अंधविश्वासों में घिरे ये निर्माता अन्य दर्शकों को और अंधकार में धकेल रहे हैं. आज विज्ञान यह मानता है कि सांप सिर्फ सांप होता है, एक जानवर. इच्छाधारी सांप नाम की कोई चीज नहीं होती. फिर भी ये निर्माता गलत बातें दर्शकों के मन में भरने में लगे हैं.

'नाचे नागिन गलीगली' भी इच्छाधारी सांपों पर बनाई गई फिल्म है. ऐसी ही अन्य फिल्मों की तरह इस में भी एक जोड़ा इच्छाधारी सांप है, तांत्रिक है, बीन है तथा तंत्रमंत्र है. पर फर्क इतना है कि इच्छाधारी नाग और नागिन दर्शकों की कल्पना में समाते ही नहीं. बीन का जादू भी बेअसर है. लगता है जैसे बीन खड़खड़ी हो गई है और तांत्रिक तांत्रिक कम, दस नंबरी गुंडा ज्यादा लगता है. इस प्रकार की बेअसर फिल्म का दर्शकों पर जादू भला कैसे चल सकता है.

फिल्म की कहानी तिलस्मी है. पात्र कभी तोता बन जाते हैं, कभी मुर्गा और कभी मेढ़ा बन जाते हैं. छूमंतर करते ही हाथों में भाले आ जाना, बीन आ जाना आदि जादुई करिश्मे जैसा लगता है.

इस प्रकार की फिल्मों में निर्देशन, संपादन, संवाद आदि की तरफ विशेष ध्यान न भी दिया जाए तो भी चलता है. यही बात इस फिल्म पर भी लागू होती है.

फिल्म के गीत साधारण स्तर के हैं तथा पार्श्व में बीन का संगीत घटिया स्तर का है. न जाने इस बार कल्याणजी आनंदजी को क्या हो गया है जो बीन भी ठीक से नहीं बजवा सके हैं. छायांकन भी साधारण है.

अभिनय की दृष्टि से मीनाक्षी शेषाद्रि बिलकुल नहीं जंची है. धारावाहिक महाभारत में कृष्ण बने नितीश भारद्वाज ने इस फिल्म में नायक की भूमिका निभाई है. अपनी पहली ही फिल्म में वह प्रभावित नहीं कर सका है. भैया, कहां आ फंसे, फिल्मों में. कृष्ण बन कर बांसुरी बजाओ, वही ठीक रहेगा. तांत्रिक बना सदाशिव अमरापुरकर निराश करता है. अन्य कलाकार साधारण हैं.

○ लोहे के हाथ

निर्माता-निर्देशक: एस.एस. अरोड़ा
संगीत: उषा खन्ना
मुख्य कलाकार: अनुराधा पटेल, जावेद खान, कपिल करजोन, रीता भादुड़ी, बंदिनी मिश्रा, सीमा वाज, गुलशन ग्रोवर और बिंदु.

कम दहेज मिलने के कारण सास द्वारा बहू को प्रताड़ित करने, उसे जलाने पर कई फिल्में पहले भी बन चुकी हैं. इस प्रकार की दहेज विरोधी फिल्मों के अंत में सास को उस के किए की सजा मिलते हुए दिखाया जाता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पिछले बारह महीनों में

★★ मैंने प्यार किया, दिल, प्रतिबंध.

★ रिहाई, आवारगी, बाप नंबरी बेटा दस नंबरी, जीने दो, बहुरानी, किशन कन्हैया, आतिशबाज, अमीरी गरीबी, आजाद देश के गुलाम, अनोखा हस्पताल, षड्यंत्र, घर हो तो ऐसा, पुलिस पब्लिक, आवाज दे कहां है, स्वर्ग, पति पत्नी और तवायफ, घायल, अप्पू राजा, आंधियां, जुर्म, जीवन एक संघर्ष, आज का अर्जुन, आशिकी, अम्बा, सैलाब, दूध का कर्ज, कारनामा, न्याय अन्याय, शेषनाग, अग्निकाल, जमाई राजा, आज के शहंशाह, शिवा, थानेदार, बहार आने तक.

○ घर का चिराग, जुर्रत, आग का गोला, प्यार के नाम कुरबान, महासंग्राम, तकदीर का तमाशा, खतरनाक, विद्रोही, अग्निपथ, मजबूर, जरहीले, वफा, खूनी मुरदा, शानदार, प्यार का कर्ज, इज्जतदार, क्रोध, सच, दुश्मन, बदनाम, हातिमताई, नाकाबंदी, आवारागर्दी, अव्वल नंबर, काली गंगा, सी. आई. डी., तुम मेरे हो, साजन की सहेली, पंचवटी, हम से न टकराना, मुकद्दर का बादशाह, गुनाहों का देवता, यादों का मौसम, हारजीत, दिनदहाड़े, सोलह सत्रह, वीरू दादा, जंगल लव, जवानी जिंदाबाद, शेरदिल, पाप की कमाई, कालिज गर्ल, एक नंबर का चोर, रोटी की कीमत, जख्मी जमीन, ओ बेवफा, कफन, करिश्मा काली का, तेरी तलाश में, तेजा.

है. ऐसी फिल्में बारबार प्रदर्शित होने के बावजूद दर्शकों पर अपना प्रभाव नहीं छोड़ पातीं. इस की वजह यही है कि इन में भाषणबाजी अधिक होती है. जो कुछ इन फिल्मों में दिखाया जाता है, दर्शकों को उस में यथार्थ कम और नाटकीयता अधिक नजर आती है.

फिल्म 'लोहे के हाथ' भी इसी समस्या पर आधारित एक कमजोर फिल्म है, जिस में नायक (जावेद खान) शादी कर के दुलहन घर लाता है तो उस की मां कम दहेज लाने की वजह से उसे जलाना चाहती है परंतु ऐन मौके पर खलनायक (गुलशन ग्रोवर) उसे बचा लेता है और मौका मिलते ही वह उस की इज्जत भी लूट लेता है. नायिका (अनुराधा पटेल) विद्रोहिणी हो जाती है और खलनायक के साथसाथ अपनी सास बिंदु को भी मार डालती है. इस लड़ाई में उस का पति भी मारा जाता है. नायिका अपने पूर्वप्रेमी के साथ शादी कर लेती है.

फिल्म की कहानी, पटकथा और संवाद ज्ञानदेव अग्निहोत्री ने लिखे हैं. पटकथा इस कदर उलझी हुई है कि कहां क्या हो रहा है, समझ नहीं आता. घटनाओं का आपस में तारतम्य नहीं है. फिल्म का निर्देशन भी कमजोर है. फिल्म में कामेडी लाने के लिए बंदिनी मिश्रा और कपिल कारजोन पर एक गीत फिल्माया गया है जो सस्ती रुचि के दर्शकों को भले ही पसंद आए परंतु पढ़ेलिखे दर्शकों को बेहूदा ही लगेगा.

फिल्म में पांच गीत हैं, जिन्हें अनजान विश्वेश्वर शर्मा ने लिखा है. तीन गीत काफी अरसे से बज रहे हैं और सुनने में अच्छे लगते हैं. दरअसल यह फिल्म ही काफी पुरानी है, जिसे बरसों बाद डब्बे में से बाहर निकाला गया है. शुक्र है कि फिल्म के रंग अभी ठीकठाक हैं, खराब नहीं हुए हैं.

अभिनय की दृष्टि से सभी कलाकारों ने निराश ही किया है. बंदिनी मिश्रा, सीमा वाज द्वारा की गई उत्तेजक हरकतें सस्ती रुचि की परिचायक हैं. अब इस प्रकार की अदाएं दर्शकों को नहीं रिझा पातीं. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यक्तिगत विज्ञापन

वैवाहिक विज्ञापन

वर चाहिए

पाल क्षत्रिय, 22/160, सुंदर, सुशील, स्मार्ट, स्टाफ नर्स कन्या हेतु आकर्षक, सेवारत वर चाहिए. दहेज नहीं. लिखें: वि.नं. 9833, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28, 157, दुआ, मैट्रिक, गेहुआं रंग, गृहकार्यदक्ष, तलाकशुदा, अकेली, दिल्ली निवासी हेतु सुयोग्य वर. निस्संतान, 35 वर्षीय, तलाकशुदा भी स्वीकार्य. लिखें: वि.नं. 9834, सरिता, नई दिल्ली-110055.

पंजाबी, 35, स्लिम, हिंदी भाषी, सुशिक्षित, एक बच्ची 5 वर्ष, ससुराल में सताने से तलाक, मध्य प्रदेश निवासी हेतु स्वावलंबी, खुले विचारों वाला वर चाहिए. उपजातिबंधन नहीं, विधुर स्वीकार्य. लिखें: वि.नं. 9835, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जायसवाल (कलवार), भोपालवासी, 24, 152, स्लिम, बी.ए., ब्यूटीशियन, शिक्षिका, सुंदर, सुशील, गृहकार्यदक्ष, गेहुआं रंग, हेतु स्वजातीय वर लिखें: वि.नं. 9836, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुमरेगोड (आदिवासी राजपूत, म.प्र.), 27, 155, 25, 153, सुंदर, सांवली, गृहकार्यदक्ष, बैंक कार्यरत व बी.ए. (2) अध्ययनरत कन्यार्थ वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9837, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जाट, 25, 162, एम.ए., कानूनी तलाकशुदा, पिता राजपत्रित अधिकारी, गौरवर्ण, सुंदर, सुशील, गृहकार्यदक्ष हेतु सुयोग्य वर चाहिए. सरकारी सेवारत को प्राथमिकता. लिखें: वि.नं. 109, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मि क्षत्रिय, 23 वर्षीया, एम.ए., सुंदर कन्या हेतु वर चाहिए. पूर्ण विवरण सहित लिखें: वि.नं. 110, सरिता, नई दिल्ली-110055.

ताम्रकार/कसेरा, हैहयवंश क्षत्रिय, 26, 155, एम.ए. (इंगलिश), कन्यार्थ सुयोग्य, सेवारत वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 111, सरिता, नई दिल्ली-110055.

ओसवाल जैन, मध्य प्रदेश निवासी, अत्यंत संपन्न एवं सुशिक्षित परिवार की 26 वर्षीया, 167 सें.मी., स्लिम, गौरवर्णा, आकर्षक नाकनक्श, सौम्य स्वभाव, एम.ए. (इंगलिश), फोटोग्राफी में डिप्लोमा, कमर्शियल आर्ट, डिजाइनिंग एवं स्क्रीन प्रिंटिंग के क्षेत्र में विशेष प्रतिभा तथा अवसर मिलने पर व्यावसायिक सफलता प्राप्त कर सकने की क्षमता, गृहकार्यों में भी पूर्ण दक्ष, कन्या हेतु सुशिक्षित एवं संवेदनशील परिवार में सुयोग्य जीवनसाथी की तलाश है. लिखें: वि.नं. 112, सरिता, नई दिल्ली-110055.

विश्वकर्मा, मांगलिक, 20, 160, बी.ए., गौरवर्ण, सुंदर, गृहकार्यदक्ष, इकहरी कन्यार्थ सुयोग्य, सेवारत, शिक्षित वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 113, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माहेश्वरी, 22, 155 सें.मी., कानवेंट शिक्षित, ऐजुएट कंप्यूटर डिप्लोमा (एन.आई.आई.टी.) स्लिम के लिए उच्च शिक्षित वर चाहिए. पिता उच्च अधिकारी. विज्ञापन उत्तम चयन हेतु. सविवरण लिखें: वि.नं. 114, सरिता, नई दिल्ली-110055.

पंजाबी ब्राह्मण, 26 वर्षीया, 165 सें.मी., एम.ए., गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु सजातीय, योग्य वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 115, सरिता, नई दिल्ली-110055.

यादव, 22, 164 सें.मी., बी.ए. आनर्स, गेहुआं रंग, सुंदर कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. पिता इंजीनियर. लिखें: वि.नं. 116, सरिता, नई दिल्ली-110055.

वैश्य, 20½, 154, बी.एससी. (होम साइंस), सम्मानित परिवारीय, आकर्षक, गौरवर्ण, गृहकार्य-दक्ष, कन्यार्थ सुयोग्य जीवनसाथी चाहिए. उत्तम विवाह, पूर्ण विवरण सहित लिखें: वि.नं. 117, सरिता, नई दिल्ली-110055.

वैश्य (रौनियार), 26, बी.ए., मंगली कन्या हेतु सजातीय वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 118, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गहलौत राजपूत कन्या, 23½, 157, एम.ए., एम.फिल., अति सुंदर, गौरवर्ण हेतु सजातीय वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 119, सरिता, नई दिल्ली-110055.

21, 158, सिंघल, गौरवर्ण, सुंदर, सुशील, गृहकार्यदक्ष, हरियाणा निवासी कन्यार्थ कार्यरत, सजातीय वर चाहिए. शीघ्र उत्तम विवाह. लिखें: वि.नं. 120, सरिता, नई दिल्ली-110055.

विश्नोई, 21 वर्षीया, 157 सें.मी., बी.ए., सुंदर, गेरुआ रंग, परिवारीय, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु वर चाहिए. पूर्ण विवरण सहित लिखें: वि.नं. 121, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अग्रवाल तायल, 23, 150, बी.एससी., बी.एड., सी.ए. इंटर प्रथम भाग, गोरी, स्मार्ट, (पिता बी.एच.इ.एल. अधिकारी), कन्यार्थ सजातीय, पश्चिम उत्तरप्रदेशीय, उच्च व्यवसायी, सी.ए., इंजीनियर, डाक्टर, अधिकारी वर चाहिए. प्रथम बार में ही पूर्ण विवरण सहित लिखें: वि.नं. 122, सरिता, नई दिल्ली-110055.

श्रीवास्तव, 23, 50, 156 सें.मी., गोरी, आकर्षक, गृहकार्यदक्ष, बी.काम., एलएल.बी. अध्य-यनरत, राजकोट, गुजरात निवासी कन्या हेतु सरकारी कार्यरत, व्यावसायिक, कायस्थ वर. पूर्ण विवरण लिखें: वि.नं. 123, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25 वर्षीया, विधवा, शासकीय शिक्षिका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गौरवर्ण, इकहरा बदन, गृहकार्य में निपुण (एक 7 वर्षीया लड़की जो नानानानी के पास भी रह सकती है) के लिए योग्य वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 124, सरिता, नई दिल्ली-110055.

बिहार निवासी, 26, 156, एम.ए., शोधकार्यरत कन्यार्थ सुशिक्षित, कार्यरत, बढ़ई, लोहार. वर चाहिए लिखें: वि.नं. 125, सरिता, नई दिल्ली-110055.

20 वर्षीया, 165 सें.मी., एम.ए. में अध्ययनरत, सुंदर, सुरुचिपूर्ण व्यक्तित्व, स्मार्ट, गौरवर्णा, सम्मानित विवाह हेतु राजपूत वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 126, सरिता, नई दिल्ली-110055.

मैथिल ब्राह्मण, बी.ए.एम.एस. तृतीय वर्ष की छात्रा, 26, 160, गौरवर्ण के लिए ब्राह्मण, बी.ए.एम.एस. वर चाहिए. शीघ्र संपर्क करें. लिखें: वि.नं. 127, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जाटव, 26, 155, बी.ए., सुंदर, आकर्षक व्यक्तित्व, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु डाक्टर, इंजीनियर, बैंक अधिकारी, दहेजविरोधी वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 128, सरिता, नई दिल्ली-110055.

यादव, 27 वर्षीया, 155 सें.मी., एम.ए., बी.एड., रंग गोरा, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 129, सरिता, नई दिल्ली-110055.

39, 160, 3,000/-, सक्सेना, (राजस्थान) कन्या हेतु वर. लिखें: वि.नं. 130, सरिता, नई दिल्ली-110055.

34 वर्षीया, 155 सें.मी., एम.एससी., सुंदर, कायस्थ, राष्ट्रीय बैंक में सेवारत, तलाकशुदा निस्संतान लड़की हेतु वर. कोई बंधन नहीं. प्रथम बार पूर्ण विवरण लिखें: वि.नं. 131, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कायस्थ, गौरवर्ण, गृहकार्यदक्ष, इंटर पास, 25, 150 सें.मी., लड़की हेतु आत्मनिर्भर युवक चाहिए. उपजातिबंधन नहीं. दहेजलोभी माफ करें. शीघ्र विवाह, प्रथम बार में ही पूर्ण विवरण आमंत्रित. लिखें: वि.नं. 132, सरिता, नई दिल्ली-110055.

चौरसिया, 23, 156, रंग गोरा, ग्रेजुएट, सुशील, गृहकार्यदक्ष कन्यार्थ सुशिक्षित/शासकीय सेवारत/उत्तम व्यवसायी, सजातीय वर चाहिए. उपजातीय बंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 133, सरिता, नई दिल्ली-110055.

31 वर्षीया, एम.ए., बी.एड., सुंदर, स्वस्थ गृहकार्यनिपुण, जाट, विधवा, तीन तथा पांच वर्षीया दो पुत्रियां, हेतु सुयोग्य वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 134, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जायसवाल, 28 वर्षीया, 158, एम.ए., बी.एड., प्रतिष्ठित परिवारीय, मामूली अदृश्य सफेद दाग, कन्या हेतु आत्मनिर्भर, सजातीय वर चाहिए. विवाह एवं उत्तम विधुर विचारणीय. लिखें: वि.नं. 135, सरिता, नई दिल्ली-110055.

23, 157 सं.मी., कानवेंट शिक्षित, बी.एससी., बी.एड., एम.ए. इंग्लिश लेक्चरेचर में अध्ययनरत, स्मार्ट, प्रतिभाशाली, घरेलू पाल/बघेल (धनगर), कन्या हेतु डाक्टर, इंजीनियर, चार्टर्ड एकाउंटेंट, सजातीय वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 136, सरिता, नई दिल्ली-110055.

21½ वर्षीया, 156 सें.मी., एम.एससी.,बी.एड., गेहुआं रंग, सुंदर, गोयल कन्या हेतु सुयोग्य वर. लिखें: वि.नं. 137 सरिता, नई दिल्ली-110055.

26½ वर्षीया, क्रिश्चियन, 157 सं.मी., सुंदर, सुशील, स्लिम, एम.ए., बी.एड., अध्ययनरत, दिल्लीवासी कन्या हेतु सरकारी लेक्चरर/टीचर/इंजीनियर/असिस्टेंट, 'क्रिश्चियन' वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 138, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जायसवाल, 25 वर्षीया, 157 सें.मी., बी.एससी. प्रथम श्रेणी, रंग गेहुआं, इकहरा बदन, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 139, सरिता, नई दिल्ली-110055.

श्रीवास्तव, 28/25, 155, गौरवर्ण, एम.ए. बी.एड., कन्याओं हेतु वर चाहिए. विवरण सहित लिखें: वि.नं. 140, सरिता, नई दिल्ली-110055.

31 वर्षीया, तलाकशुदा, निस्संतान, माथुर, एम.ए., सुंदर, गौरवर्ण, गृहकार्यदक्ष, अध्यापिका राजस्थान सेवारत, हेतु सरकारी सेवारत/प्राइवेट, उच्चस्तरीय वर चाहिए. शीघ्र साधारण विवाह. पूर्ण विवरण सहित लिखें: वि.नं. 141, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जाटव, 29, 152, हायर सेकंडरी, संपन्न परिवारीय, आकर्षक, सुंदर, सुशील, सिलाईबुनाई, गृहकार्यदक्ष, हाथपैरों में सफेद दाग, कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. जातिबंधन नहीं. विधुर तलाकशुदा भी स्वीकार्य, उतम विवाह. लिखें: वि.नं. 142, सरिता, नई दिल्ली-110055.

महेश्वरी, कलकता निवासी, बी.ए., कानवेंट, 21 वर्षीया, 160 सें.मी., गौरवर्ण, सुंदर, सुशील, गृहकार्य में दक्ष, संपन्न कन्या हेतु सजातीय, उच्च शिक्षित, इंजीनियर, सी.ए., उच्च व्यवसायी वर चाहिए. पूर्ण विवरण सहित लिखें: वि.नं. 143, सरिता, नई दिल्ली-110055.

इंदौरिया गौड़ ब्राह्मण, 23 वर्षीया, एम.ए., बी.एड. एवं 20 वर्षीया, बी.ए. फाईनल, सुंदर, सुयोग्य, गृहकार्यदक्ष बहनों वास्ते सुयोग्य, सुंदर, सजातीय, दहेजरहित वर. लिखें: वि.नं. 144, सरिता. नई दिल्ली-110055.

28 वर्षीया, गुजराती, राठौड़, औसत कद, एम.ए., बी.एड., कन्या हेतु वर. जातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 145, सरिता, नई दिल्ली-110055.

22 वर्षीया, एम.एससी., गोरी, सुंदर, सुशील गृहकार्यदक्ष, कोरी जाति कन्या हेतु डाक्टर, इंजीनियर वर चाहिए. सभी भाई उच्चपदाधिकारी. लिखें: वि.नं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंजाबी दत्त [illegible], 18, 157, अठ्वा पास, अति सुंदर, गृहकार्यदक्ष कन्यार्थ सेवारत, व्यवसायरत वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 147, सरिता, नई दिल्ली-110055.

18 वर्षीया, यादव, एम.एससी. प्रथम श्रेणी, पिता राजपत्रित अधिकारी, अति सुंदर कन्या हेतु सुयोग्य, डाक्टर, इंजीनियर, राजपत्रित अधिकारी वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 148, सरिता, नई दिल्ली-110055.

23, 157, बी.एससी., बी.एड., नौकरीरत, आकर्षक व्यक्तित्व, गृहकार्यदक्ष, कन्या हेतु सरकारी सेवारत, व्यवसायी, सिंधी, पंजाबी, दहेज विरोधी वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 149, सरिता, नई दिल्ली-110055.

ब्रजवासी, अग्रवाल बिदल. 22, 160, बी.क्रम., गृहकार्यनिपुण, गेहुआं रंग, स्लिम, गुजरात निवासी, प्रतिष्ठित परिवार हेतु योग्य वर. उतम विवाह. लिखें: वि.नं. 150, सरिता, नई दिल्ली-110055.

साहू, 21, 160, आकर्षक, स्लिम, गेहुआं, बी.एससी., बी.एड., शिक्षिका, पिता वायुसैनिक, भाई डाक्टर, हेतु सुयोग्य वर. लिखें: वि.नं. 151, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27, 157, कुमावत, सुंदर, सुशील, एलएल.बी., तलाकशुदा कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 152, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुशवाहा, 23½ वर्षीया, 155 सें.मी., एम.ए. (भूगोल), मेधावी, गृहकार्यदक्ष, सुशील, आकर्षक, प्रतिष्ठित परिवारीय कन्या हेतु सजातीय, सेवारत, सुयोग्य वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 153, सरिता, नई दिल्ली-110055.

दो बच्चों की विधवा मां, 26 वर्षीया, एम.ए., बी.एड., सुंदर युवतीयार्थ जैन वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 154, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सरयूपारीय ब्राह्मण, 30, 152, एम.एससी., एम.एड., गौरांग, पूर्वी उतरप्रदेशीय, परियोजना अधिकारी, 3,000/-, शिक्षित परिवारीय कन्यार्थ सुयोग्य वर. लिखें: वि.नं. 155, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कूर्मि क्षत्रिय, 20, 157, एम.ए., गेहुआं रंग, स्वस्थ कन्यार्थ सुयोग्य, सजातीय वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 156, सरिता, नई दिल्ली-110055.

यू.पी., सम्मानित ब्राह्मण परिवार, 38, 145, 3,500/-, पीएच.डी. (साइंस), आकर्षक, प्रतिभावान, सुशील, गोरी, सरकारी सेवारत, रीढ़ की हड्डी में सूक्ष्म दोष, कन्या हेतु संभ्रांत उच्च शिक्षित, उदार, सुयोग्य वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 157, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माहेश्वरी, 22 वर्षीया, 165 सें.मी., ग्रेजुएट, होमसाइंस आनर्स, डिप्लोमा बिजनेस मैनेजमेंट, कंप्यूटर मास्टर कोर्स में संलग्न, सुंदर, स्वस्थ, गृहकार्यदक्ष, गोत्र लिमिटेड कन्या हेतु सजातीय, सुयोग्य वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 158, सरिता, नई दिल्ली-110055.

बंबईवासी, 38 वर्षीया, उच्च शिक्षित, अविवाहित, एक्जीक्यूटिव पद पर कार्यरत, गुजराती सुपरिचित शाही परिवार से संबंधित हेतु शिक्षित, सुस्थापित वर. जाति व उम्र बंधन नहीं. तलाकशुदा एवं विधुर भी लिखें: वि.नं. 159, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अग्रवाल (मित्तल), 22½, 152, एम.ए., बी.एड., गेहुआं रंग, सुंदर, गृहकार्यदक्ष, प्रतिभाशाली, इकलौती कन्यार्थ सुयोग्य वर चाहिए, सूक्ष्म, अप्रत्यक्ष, श्रवण यंत्र (हीयरिंग एड) का प्रयोग. पिता, भाई उच्चाधिकारी. शीघ्र, उत्तम विवाह लिखें: वि.नं. 160, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सिंधी, 23/158/20/157, मैट्रिक, स्मार्ट, सर्वगुण कन्याओं हेतु दहेजविरोधी सिंधी वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 161, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24, 150, शर्मा (छिवारी), बी.एससी., गौरवर्णीय, सुंदर, शाकाहारी परिवार, बचपन से अग्रज (स्टेट बैंक में सेवारत) के साथ कन्या हेतु लिखें: वि.नं. 226, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26 वर्षीया, 152 सें.मी., कुमाऊंनी ब्राह्मण (पांडे), एम.ए., बी.एड, सुंदर, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु कुमाऊंनी, गढ़वाली वर चाहिए. पिता बैंक अधिकारी. लिखें: वि.नं. 227, सरिता, नई दिल्ली-110055.

धोबी, 23, 160, एम.ए. (इंगलिश), सांवली, सुंदर कन्या हेतु व्यवसायी अथवा सरकारी सेवारत, सजातीय, सुयोग्य वर चाहिए. शीघ्र उत्तम विवाह लिखें: वि.नं. 228, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कायस्थ, कन्या, 27/158, गोरी, मैट्रिक, आकर्षक गृहकार्यदक्ष हेतु कायस्थ, सुशील, संभ्रांत वर, 30/34 तक, दहेज नहीं. लिखें: वि.नं. 229, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अवकाश प्राप्त राजपूत कर्नल अपनी पुत्री सुंदर, पतली, निपुण, विज्ञान स्नातकोत्तर, 24/153, हेतु अच्छे परिवार के आई.पी.एस., आई.ए.एस. आफीसर से रिश्ते आमंत्रित हैं. जातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 230, सरिता, नई दिल्ली-110055.

खत्री, शिक्षित, 29/156 सें.मी., आकर्षक, सुंदर, गृहकार्यदक्ष, शाकाहारी, सरकारी सेवारत, आय चार अंकों में, कन्या हेतु सजातीय, डाक्टर, इंजीनियर, आफीसर (आर्मी) चार्टर्ड एकाउंटेंट, दहेजविरोधी, प्रेम स्वभाव हेतु निस्संतान, विधुर, तलाकशुदा भी स्वीकार्य लिखें: वि.नं. 231, सरिता, नई दिल्ली-110055.

वधू चाहिए

27/176, सुंदर, संपन्न एवं प्रतिष्ठित, दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निवासी, माहेश्वरी, आई.पी.एस., अफसर हेतु सुंदर व सुशिक्षित वधू चाहिए. पूर्ण विवरण सहित लिखें: वि.नं. 9850, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27 वर्षीय, व्यवसायरत, चौरसिया युवक, शिक्षित, सुंदर, स्वस्थ, मासिक आय 5,000/- रु. प्रतिमाह, हेतु शिक्षित, सुशील, सुंदर वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 9899, सरिता, नई दिल्ली-110055.

हिंदू (नाई), 25, 168, 11वीं, 6,000/-, ब्यूटी पार्लर/सैलून व्यवसायी, अपना मकान (दिल्लीवासी) हेतु योग्य, सुशील, गृहकार्यदक्ष, सजातीय कन्या चाहिए. लिखें: वि.नं. 9900, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27/175, एम.बी.ए. कर चुके, एम.सी.ए. अंतिम सेमिस्टर में अध्ययनरत, प्रतिष्ठित परिवार के सुंदर माहेश्वरी युवक हेतु अति सुंदर, शिक्षित, गृहकार्यदक्ष, माहेश्वरी/अग्रवाल कन्या चाहिए. प्रथम बार में संपूर्ण विवरण लिखें: वि.नं. 9901, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माहेश्वरी, 35, 165 सें.मी., कानूनन तलाकशुदा, निस्संतान, निजी व्यवसाय, मासिक आय पांच अंकीय, प्रतिष्ठित परिवारीय युवक हेतु सुसंस्कारित, गृहकार्यदक्ष, माहेश्वरी या अग्रवाल वधू चाहिए. निस्संतान विधवा भी स्वीकार्य. दहेजबंधन नहीं. पूर्ण विवरण लिखें: वि.नं. 9902, सरिता, नई दिल्ली-110055.

23½, 180, 10,000/-, एम.ए., निजी व्यवसाय, ओसवाल, जैन युवक हेतु सुंदर कन्या चाहिए. लिखें: वि.नं. 9903, सरिता, नई दिल्ली-110055.

राजपूत, 28, बी.ए., पक्की सर्विस, वेतन 2,400/- प्रतिमाह, सहारनपुर निवासी, युवक हेतु सुंदर, शिक्षित, गोरी, गरीब कन्या चाहिए. जाति/दहेजबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 9904, सरिता, नई दिल्ली-110055.

50, अधिकारी, 176, 60, 6,500/-, अकेला, तलाकशुदा, निर्व्यसनी, संपत्तिवान, दिल्लीवासी, स्वस्थ, दायित्वमुक्त, हेतु वधू. कोई बंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 9905, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मी क्षत्रिय, 26/170 सें.मी., एम.ए., स्मार्ट युवक, अपना व्यवसाय/पिता युनिवर्सिटी प्रोफेसर, अंकल रिटायर्ट आर्मी अफसर, प्रोपर्टी यू.पी. व एच.पी. में, युवक हेतु ग्रेजुएट, सुंदर, सुशील, लंबी, स्लिम, गौरवर्ण, 23 वर्ष से कम उम्र संभ्रांत परिवारीय वधू चाहिए. बुंदेलखंड निवासी को वरीयता. लिखें: वि.नं. 9906, सरिता, नई दिल्ली-110055.

34, 165, गोयल, अग्रवाल, शिक्षित, आकर्षक, निर्व्यसनी, निजी व्यवसाय, निस्संतान, तलाकशुदा हेतु युवती चाहिए. लिखें: वि.नं. 9907, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जाटव (अ.जा.), 26 वर्षीय, 168 सें.मी., 4,000/-, सहायक अधिशासी अभियंता, सरकारी सेवारत, उच्च आय वर्ग हेतु सुंदर, सुशिक्षित कन्या चाहिए. लिखें: वि.नं. 9908, सरिता, नई दिल्ली-110055.

ओसवाल जैन, 25/180, बी.काम., सी.ए. (पार्ट-1), पूर्वीय मध्य प्रदेश निवासी, संप्रति विस्तृत पारिवारिक व्यापार में कार्यरत, निकट भविष्य में मिडियम स्केल उद्योग स्थापित करने की परियोजना, संपन्न एवं सुशिक्षित परिवार के इकलौते पुत्र हेतु सुसंस्कृत एवं सुशिक्षित परिवार की योग्य कन्या चाहिए. लिखें: वि.नं. 162, सरिता, नई दिल्ली-110055.

23½, 177 सें.मी., गर्ग, जूनियर इंजीनियर हेतु योग्य व सुंदर वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 163, सरिता, नई दिल्ली-110055.

विधुर, 54½ (देखने में 45-48), 164 सें.मी., गौरवर्ण, मासिक 4,100/-, सेंट्रल आफिशियल, पैंशनेबल, चंडीगढ़ अस्थाई निवासी, उत्तरभारतीय हेतु गौरवर्ण, सुंदर, स्वस्थ, स्वयं निर्णायिका, निस्संतान, संतानोत्पत्ति असमर्थ, अनिच्छुक, विधवा, तलाकशुदा, जरूरतमंद, सुंदरता पसंद, जो पुत्री दसवीं कक्षा को बेटी समझे, प्यार उचित मार्गदर्शन दे सके, जीवनसाथी चाहिए. कोई बंधन नहीं. सविवरण एक ही बार, संभवता: कन्या स्वयं लिखें: वि.नं. 164, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सैनी (पंवार, कटारिया, कम्मा, सांखला), 31 वर्षीय, 2,000/-, मासिक, 180 सें.मी., हेतु वधू चाहिए. दहेजबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 165, सरिता, नई दिल्ली-110055.

स्वस्थ, दृष्टिहीन युवक, बी.ए., रंग सांवला, सरकारी आवास, 27, 171, 2,100/-, भारत अंतर्राष्ट्रीय विमान पत्तन प्राधिकरण में कार्यरत हेतु शिक्षित वधू चाहिए. बंधन रहित, शीघ्र विवाह लिखें: वि.नं. 166, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कलकत्ता निवासी, अग्रवाल, मारवाड़ी, विधुर, 48/167, अपना मकान, व्यवसाय, संपन्न व्यवसायी, दो पुत्रियां, विवाहित, पारिवारिक दायित्व नहीं, कार्यरत हेतु जीवनसाथी चाहिए. निस्संतान, विधवा, तलाकशुदा, मारवाड़ी, यू.पी., अग्रवाल, गुजराती, दहेजबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 167, सरिता, नई दिल्ली-110055.

पंजाबी, 30/168, आय पांच अंकीय, निजी व्यवसाय, आकर्षक (शादी के एक महीने बाद आपसी रजामंदी से तलाक) युवक हेतु सुंदर, सुशील, गृहकार्यदक्ष वधू चाहिए. दहेज आदि कोई बंधन नहीं. शीघ्र विवाह. लिखें: वि.नं. 168, सरिता, नई दिल्ली-110055.

49, 172, 2,500/-, हरियाणवी (संबंध विच्छेद), योगसाधक हेतु (38-45) संतान अनिच्छुक सुंदर, स्वावलंबी जीवनसंगिनी. दिल्ली/निकटवर्ती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

169, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जैन, 30/170, गुजरात स्थित, बैंक अधिकारी, एम.एससी., गौरवर्ण, सुंदर युवक, प्रथम पत्नी से संबंधविच्छेद, हेतु सुंदर, संस्कारी जैन कन्या. शीघ्र विवाह, सविवरण लिखें: वि.नं. 170, सरिता, नई दिल्ली-110055.

उ.प्र., जाटव, 32, 160 सें.मी., जू.ई. सिविल इंजी., केंद्रीय सेवारत, 2,250/-, हेतु शिक्षित, सजातीय वधू चाहिए. पूर्ण विवरण सहित शीघ्र लिखें: वि.नं. 171, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गुर्जर, विधुर, 38, 160, स्नातक, राजकीय सेवारत, आय 3,000/-, दो संतान (2 वर्ष, 10 माह) हेतु सुशिक्षित, निस्संतान, विधवा, परित्यक्ता जीवनसाथी चाहिए. जातिबंधन नहीं, सजातीय को वरीयता. लिखें: वि.नं. 172, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कोरी, 26/168 सें.मी., एम.काम., उद्योगपति एवं व्यवसायी, आय पांच अंकों में, प्रतिष्ठित परिवार के स्मार्ट युवक हेतु शिक्षित, सुंदर, योग्य वधू चाहिए. दहेज एवं उपजातिबंधन नहीं. प्रथम बार में संपूर्ण विवरण सहित लिखें: वि.नं. 173, सरिता, नई दिल्ली-110055.

पाठक, 26, मैट्रिक, बिजनेस, युवक हेतु सुंदर कन्या चाहिए. कोई भी कन्या (बिहारवासी) लिखें: वि.नं. 174, सरिता, नई दिल्ली-110055.

मैढ़ स्वर्णकार, 26, स्नातक, पुलिस सेवारत, 1,600/-, स्नातक युवकार्य सजातीय, सुशिक्षित, सुंदर कन्या चाहिए. लिखें: वि.नं. 175, सरिता, नई दिल्ली-110055.

भटनागर, विधुर, 49/180/2,800/-, दायित्व-मुक्त, असिस्टेंट, हरियाणा सरकार सर्विस, के लिए निस्संतान विधवा/तलाकशुदा जीवनसंगिनी चाहिए. जातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 176, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28 वर्षीय, 158 सें.मी., गेहुआं रंग, विधुर, बैंक कैशियर, 2 वर्ष की एक पुत्री, अनुसूचित जाति (धरकार), आय चार अंकों में, उ.प्र., मीरजापुर निवासी हेतु उदार हृदय वाली, सुशिक्षित, सुंदर कन्या चाहिए जो उक्त पुत्री को मां का प्यार दे सके. दहेज नहीं. लिखें: वि.नं. 177, सरिता, नई दिल्ली-110055.

लोधी राजपूत, 26, 165, 3,300/-, पोस्ट, ग्रेजुएट, पशु चिकित्सा अधिकारी (राजपत्रित अधिकारी, क्लास II) हेतु स्नातक/स्नातकोत्तर वधू चाहिए. योग्यता को वरीयता. लिखें: वि.नं. 178, सरिता, नई दिल्ली-110055.

38 वर्षीय, जैन श्वेतांबर, बीसा, ओसवाल, विधुर, चार संतानें (दो पुत्र व दो पुत्रियां), उम्र 8/11 व 13/15), ग्रेजुएट, आय छः अंकों में प्रतिमाह, महाराष्ट्र में स्थायिक निजी उद्योग, अच्छा व्यक्तित्व, हेतु सुंदर, सुसंस्कृत व अच्छे घर का पढ़ालिखा (मात्रक कम से कम) कन्या संपर्क करें. लिखें: वि.नं. 179, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जायसवाल, 34 वर्षीय, तलाकशुदा, शिक्षित, प्रतिष्ठित परिवार, स्वयं का घर व व्यवसाय, आय 8,000/- से ऊपर, हेतु गौरवर्ण, शिक्षित वधू. वर्ग बंधन नहीं. संपूर्ण विवरण सहित लिखें: वि.नं. 180, सरिता, नई दिल्ली-110055.

29 वर्षीय, 186 सें.मी., सनाढ्य ब्राह्मण, मध्य प्रदेश, प्रतिष्ठित कंपनी में सीनियर पर्सनल आफीसर, स्वस्थ, सुंदर नवयुवक हेतु सुंदर, सुशील, सुशिक्षित कन्या चाहिए. सविवरण लिखें: वि.नं. 181, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27, 170, नेपाली ब्राह्मण, इंजीनियरिंग (डिप्लोमा), सरकारी सेवारत, सुपरवाइजर पद पर कार्यरत, हंसमुख एवं आकर्षक व्यक्तित्व युवक हेतु सुयोग्य, सुशिक्षित, सजातीय वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 182, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28/163, रस्तोगी, वैश्य, जे.ई. (सिविल), प्राइवेट सेक्टर, संभ्रांत परिवारीय, मासिक आय चार अंकीय, हेतु सुंदर, शिक्षित सजातीय वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 183, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26/172, अच्छी कंप्यूटर सर्विस, कृषि फार्म, अपना मकान, आकर्षक, स्मार्ट, प्रतिष्ठित परिवार, चौहान, राजपूत लड़के के लिए सुंदर, सुशील, गृहकार्यदक्ष, सुशिक्षित, लंबी, प्रतिष्ठित परिवारीय कन्या चाहिए. शीघ्र विवाह. लिखें: वि.नं. 184, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माहेश्वरी, 28½/173, पीएच.डी. (रसायन), फार्मास्यूटिकल कंपनी देहली में कार्यरत, गौरवर्ण युवक हेतु सुशिक्षित, सुंदर, सुशील, स्लिम, सजातीय कन्या चाहिए. विज्ञापन उत्तम चयन हेतु. प्रथम बार सविवरण कुंडली सहित लिखें: वि.नं. 185, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सरकारी सेवारत, 57 वर्षीय, जांगिड़ ब्राह्मण, विधुर हेतु स्वस्थ, शिक्षित, शाकाहारी, अविवाहित अथवा निस्संतान जीवनसंगिनी चाहिए. लिखें: वि.नं. 186, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25, 175, धीमान, इलेक्ट्रिकल इंजीनियर, निजी प्रतिष्ठित उद्योग, आकर्षक व्यक्तित्व, हेतु सुंदर, सुयोग्य, प्रतिष्ठित परिवारीय वधू चाहिए. बी.ई. अथवा एम.बी.ए. को वरीयता, जातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 187, सरिता, नई दिल्ली-110055.

हिंदू, 28, विकलांग, अमीर व्यापारी हेतु कन्या चाहिए. लिखें: वि.नं. 188, सरिता, नई दिल्ली-110055.

ठाकुर, 37, विधुर, दसवीं, बिना बच्चे, अमीर व्यापारी हेतु वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 189, सरिता, नई दिल्ली-110055.

नाई, 28, 160, 2,800/-, दिल्ली सरकारी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सेवारत हेतु सुंदर, शिक्षित वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 190, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अग्रवाल, 21 वर्षीय, 170 सें.मी., मासिक आय 5,000/-, रंग सांवला, सुंदर, स्वस्थ हेतु सुशील वधू चाहिए. घरजंवाई रहने को भी इच्छुक. लिखें: वि.नं. 191, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुशवाहा (काछी), सरकारी सेवारत, 24 वर्षीय, 173 सें.मी., वेतन 4,025/-, हेतु सुंदर, शिक्षित वधू लिखें: वि.नं. 192, सरिता, नई दिल्ली-110055.

41/175, विधुर, बीसा अग्रवाल, गौरवर्ण, साथ में पुत्र एवं पुत्री 10/7, संपन्न परिवार, एक्सरे विशेषज्ञ, आकर्षक व्यक्तित्व हेतु शिक्षित, खूबसूरत, गृहकार्यदक्ष, सुशील, गौरवर्ण वधू चाहिए. दहेज नहीं. लिखें: वि.नं. 193, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अंतिम वर्ष मेडिकल कालिज में अध्ययनरत साहू (तेली) छात्र, 24/175 सें.मी. के लिए स्वजातीय, मेडिकोज कन्या चाहिए. प्रथम बार में ही संपूर्ण व्यक्तिगत एवं पारिवारिक विवरण सहित लिखें: वि.नं. 194, सरिता, नई दिल्ली-110055.

प्रतिष्ठित, पारिवारिक, सुंदर व स्वस्थ, 2 राजपूत भाइयों के क्रमशः शिक्षा बी.काम., उम्र 27, 25, संयुक्त निजी व्यवसाय, मासिक आय 15,000/-, इस के अतिरिक्त कृषि फार्म, हेतु सुंदर, शिक्षित व सजातीय वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 195, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मि क्षत्रिय, 26, 180, फैक्ट्री असिस्टेंट मैनेजर, सुंदर युवकार्थ गोरी, लंबी, सुशिक्षित, सुंदर कन्या चाहिए. लिखें: वि.नं. 196, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कहार, 26, 163 और 23, 165, सरकारी सेवारत इंजीनियरों, (मासिक आय 4,000/-), हेतु सुशिक्षित वधुएं चाहिए. लिखें: वि.नं. 197, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुमाऊंनी टम्टा, 32/168/2,000/-, स्वस्थ, सुंदर, राजकीय सेवारतार्थ सुशिक्षित, सुंदर कन्या चाहिए. प्राथमिकता सेवारत को.बंधन नहीं. शीघ्र विवाह. लिखें: वि.नं. 198, सरिता, नई दिल्ली-110055.

हिंदू अरोड़ा, 29 वर्षीय, तलाकशुदा, सरकारी सेवारत हेतु सुंदर, आत्मनिर्भर बिना दहेज वधू चाहिए. विधवा, तलाकशुदा, अंतर्जातीय विचारणीय. विवाह शीघ्र नहीं. निजी आवास प्रबंध होने पर, लड़की पर निर्भर परिवार स्वीकार्य, लड़की स्वयं पत्र लिखें: वि.नं. 199, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25, 168, विधुर, निस्संतान, निर्व्यसनी, बी.ए. अध्ययनरत, घरेलू आय, 1,600/-, 1,05,000/- बैंक बैलेंस, लाखों की चलअचल संपत्ति, हेतु सुंदर, चरित्रवान कन्या, दहेज, जाति नहीं. सर्विस/बिजनेस नियोजित करा सके या घरजंवाई को प्राथमिकता. लिखें: वि.नं. 200, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कान्यकुब्ज ब्राह्मण, 26,161, [illegible] नियर, आय 4,500/-, हेतु सजातीय, सुयोग्य अति सुंदर वधू चाहिए. जन्मपत्री सहित लिखें: वि.नं. 201, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माहेश्वरी, 26, 163, बी.कम., स्मार्ट, निजी व्यवसाय, उच्च चार अंकीय आय, हेतु सुंदर, गृहकार्यदक्ष कन्या चाहिए. पेंटिंग, ब्यूटीशियन डिप्लोमा को वरीयता. लिखें: वि.नं. 202, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28/156, दि. जैन, खंडेलवाल, मंगली, ग्रेजुएट, प्रतिष्ठित व्यवसायी हेतु सजातीय, सुंदर, सुशिक्षित कन्या चाहिए. दहेजबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 203, सरिता, नई दिल्ली-110055.

बंबई निवासी, माहेश्वरी, मोहता, 48 वर्षीय, निस्संतान, विधुर, व्यवसायी, मासिक आय पांच अंकीय, निजी घर व गाड़ी, प्रतिष्ठित परिवारीय युवक हेतु कुंआरी, विधवा, तलाकशुदा, सुशिक्षित, मृदुस्वभाव वाली, सुंदर, शाकाहारी, माहेश्वरी, अग्रवाल या जैन जीवनसंगिनी चाहिए. दहेज नहीं. पूर्ण विवरण सहित लिखें: वि.नं. 204, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26/177, गर्ग गोत्र, निजी व्यापार, आय चार अंकीय, सुंदर, गोरा रंग, युवकार्थ स्नातक, सुशील, सुंदर, पारिवारिक कन्या चाहिए. लिखें: वि.नं. 205, सरिता, नई दिल्ली-110055.

इकतालीस वर्षीय, आर.एम.पी. डाक्टर, पत्नी से संबंधविच्छेद, एकाकी, निस्संतान, आय चार अंकीय, हेतु निर्मल हृदया, मन से सुंदर, मित्र, जीवनसंगिनी वांछित जाति, प्रांत, आयु कोई बंधन नहीं, स्वयं लिखें: वि.नं. 206, सरिता, नई दिल्ली-110055.

खूबसूरत, गोरी, गरीब, अनाथ, लड़की स्वयं पत्र व्यवहार करे, बिना खर्चे की शादी, बी.ए., 28 वर्षीय/179 सें.मी./3,400/-, स्टेट बैंक, स्मार्ट, हिंदू युवक, विधवा, तलाकशुदा स्वीकार्य. लिखें: वि.नं. 207, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मी क्षत्री (बिहार), 26, 165, 4,000/-, बी.ए., निजी भवन, स्वव्यवसायरतार्थ शिक्षित, गृहव्यवहारकुशल कन्या चाहिए. लिखें: वि.नं. 208, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मी क्षत्रिय, 23/176 सें.मी., सांवला रंग, स्मार्ट, ग्रेजुएट, आकर्षक व्यक्तित्व, लखनऊ, प्रतिष्ठित परिवारीय, (निजी कार एवं अन्य संपत्तियां, आटो एजेंसी मालिक, आय प्रतिमाह पांच अंकीय), युवक हेतु सुंदर, गोरी, स्मार्ट वधू चाहिए. सजातीय को प्राथमिकता. पिता प्रथम श्रेणी राजपत्रित अधिकारी. पूर्ण विवरण सहित लिखें: वि.नं. 209, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सिंधी, 23/158, मैट्रिक, हैंडसम, स्मार्ट वर हेतु सिंधी कन्या चाहिए. दहेज नहीं. लिखें: वि.नं. 210,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरिता, नई दिल्ली-110055.

42 वर्षीय, आई.ए.एस., अविवाहित, अपना निजी व्यवसाय, सुपरिचित परिवार से संबंधित, हेतु स्मार्ट, शिक्षित वधू चाहिए. कोई भी जाति, विधवा और तलाकशुदा भी लिखें: वि.नं. 211, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माहुरी, वैश्य (बिहार निवासी), इलेक्ट्रोनिक्स इंजीनियर, 28/165/4,000/-, लिमिटेड संस्थान, दिल्ली में कार्यरत, हाथों में कुछ सफेद दाग के निशान, हेतु कन्या की आवश्यकता है. उपजातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 212, सरिता, नई दिल्ली-110055.

एयरमैन, जाटव, अनुसूचित जाति, एम.ए., 31, 167, कानपुर निवासी हेतु खूबसूरत वधू, जातिबंधन नहीं, बहन एम.बी.बी.एस. अध्ययनरत, भाई बैंक कर्मचारी/बिजनेसमैन. लिखें: वि.नं. 213, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सिंधी, 30, 187, 8,000/-, निजी व्यवसाय, संतानोत्पत्ति में असमर्थ, अनिच्छुक, विधवा जीवन-साथी चाहिए. लिखें: वि.नं. 214, सरिता, नई दिल्ली-110055.

विज्ञापनदाताओं के लिए सूचना

1. सरिता में वैवाहिक व गोद विज्ञापनों की दर 5.00 रु. प्रति शब्द है. अंगरेजी पाक्षिक वूमंस ईरा में 3.50 रु. प्रति शब्द. यदि सरिता के साथसाथ वही विज्ञापन वमूंस ईरा में भी प्रकाशित कराया जाए तो उस के लिए केवल 1.50 रु. अतिरिक्त यानी 7.00 रु. प्रति शब्द होगा.

अन्य व्यक्तिगत व व्यावसायिक विज्ञापनों की दर सरिता में 9.00 रु. प्रति शब्द है तथा वूमंस ईरा में 5.00 रु. प्रति शब्द. यदि सरिता के साथसाथ वही विज्ञापन वूमंस ईरा में भी प्रकाशित कराया जाए तो उस के लिए केवल 2.00 रु. अतिरिक्त यानी 11.50 रु. प्रति शब्द होगा.

विशेष छूट : यदि एक ही विज्ञापन दो लगातार अंकों में प्रकाशित कराया जाए तो तीसरे अंक में विज्ञापन मुफ्त में छपेगा. केवल 20 रु. डाक व्यय के अतिरिक्त देने होंगे, यानी डाक खर्च कुल 60 रु. एवं पंजीकृत डाक व्यय रु. 150/- होगा.

धनराशि अग्रिम आने पर ही विज्ञापन प्रकाशित किया जा सकेगा.

2. मूल विज्ञापन के साथ लिखें : "वि.नं. सरिता, नई दिल्ली-110055." इन 6 शब्दों का मूल्य आवश्यक है. "फोटो सहित" शब्द वाले व विज्ञापनदाता के निजी पते वाले विज्ञापन स्वीकार नहीं किए जाते. पर विदेशों में पत्रव्यवहार करने वाले विज्ञापनों में निजी पते छापे जाते हैं ताकि पत्रव्यवहार तुरंत हो सके. इन में बाक्स नं. की सुविधा उपलब्ध नहीं है.

विज्ञापन के उत्तर में प्राप्त पत्र विज्ञापनदाता के पास भेजने की व्यवस्था व डाकखर्च के लिए प्रति अंक 20 रु. अतिरिक्त लिए जाते हैं. पंजीकृत डाक व्यय रु. 50/- लिए जाते हैं. विज्ञापनदाता को केवल दो माह तक ही पत्र भेजे जाते हैं.

3. जाति/धर्म का उल्लेख न कर विवाह करने वालों के विज्ञापन आधे शुल्क पर प्रकाशित किए जाते हैं. ऐसे विज्ञापनों में विज्ञापनदाता की निजी जाति/धर्म का उल्लेख भी नहीं होना चाहिए.

4. कृपया शुल्क मनीआर्डर या बैंक ड्राफ्ट द्वारा अग्रिम भेजें, मनीआर्डर कूपन व ड्राफ्ट पर "सरिता, विज्ञापन विभाग, नई दिल्ली-110055." अवश्य लिखें. चैक स्वीकार नहीं किए जाते. मनीआर्डर कूपन पर कृपया अपना पूरा पता भी साफसाफ लिखें.

मुख्य व्यक्तिगत विज्ञापन कार्यालय :

सरिता, एम 12, कनाट सरकस, नई दिल्ली-110001.

* 79-ए, मित्तल चैंबर्स, नरीमन पाइंट, **बंबई**-400021. फोन : 2022409.
* 14, पहली मंजिल, सीसंस कंप्लैक्स, 150/82, मांटियथ रोड, **मद्रास**-600008. फोन : 868138.
* तीसरी मंजिल, पोद्दार पाइंट, 113, पार्क स्ट्रीट, **कलकत्ता**-700016. फोन : 298981.
* 302-बी, 'ए' विंग, क्वींस कार्नर अपार्टमेंट, 3, क्वींस रोड, **बंगलौर**-560001. फोन : 258091.
* 503, नारायण चैंबर्स, आश्रम रोड, **अहमदाबाद**-380009. फोन : 77845.
* 122, चिनाए ट्रेड सेंटर, 116, पार्क लेन, **सिकंदराबाद**-500003. फोन : 831576.
* 111, आशियाना टावर, प्रदर्शनी रोड, **पटना**-800001. फोन : 55286.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

28, 167 सें.मी., कुंआरा, आकर्षक, गोरा रंग, भूमिहार ब्राह्मण, इंटरमीडिएट, स्कूल संचालक, मासिक आय 4,000/-, हेतु धनाढ्य युवती चाहिए. जाति, विधवा, तलाकशुदा, शारीरिक दोष का कोई बंधन नहीं. नौकरीशुदा भी मान्य. लिखें: वि.नं. 215, सरिता, नई दिल्ली-110055.

31, 165, 1,000/- (दुकान), हाई स्कूल, शाहजहानपुर में मकान, गौरवर्ण, शाकाहारी युवक हेतु सुंदर, सुशील, मृदुभाषी, ईश्वर में आस्था रखने वाली वधू चाहिए. घरदामाद बनना स्वीकार्य. विशेष कमी लड़का कुछ हकलाता है. गरीब, विधवा, तलाकशुदा, कुंआरी, प्रांत, देश, दहेजबंधन नहीं. संपूर्ण जानकारी कुंडली सहित लिखें: वि.नं. 216, सरिता, नई दिल्ली-110055.

44, इंजीनियर, सेवारत, ब्राह्मण, विधुर, पुत्री 14, पुत्र 9, हेतु विधवा, तलाकशुदा भी स्वीकार्य. लिखें: वि.नं. 217, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25, 168 सें.मी., जायसवाल, स्वस्थ, स्मार्ट, सुव्यवस्थित युवक हेतु सुंदर, शिक्षित व्यवसायकी गायिका कन्या चाहिए. लिखें: वि.नं. 218, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जाससवाल, 30/180, मैनेजर, मल्टी नेशनल फर्म, (सवा लाख वार्षिक), हेतु आकर्षक, गोरी, कानवेंट शिक्षित, ग्रेजुएट वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 219, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सरकारी कर्मचारी, 37, परस्पर समझौते से तलाकशुदा हेतु ग्रेजुएट, सेवारत, स्वयं निर्णायिका वधू. विधवा, तलाकशुदा, जातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 220, सरिता, नई दिल्ली-110055.

पत्रकार, आकर्षक, अकेला, 38, 167 सें.मी., एवं आर्टिस्ट, गेहुआं, बुद्धिमान, 30, 168 सें.मी., हेतु जीवनसंगिनी, कोई बंधन नहीं, विपश्ची साधिका को प्राथमिकता, कोर्ट मैरिज भी स्वीकार. लिखें: वि.नं. 221, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24, 165, अग्रवाल, मैट्रिक, उत्तम आर्थिक स्थिति, अपना मेडिकल स्टोर, (दहेज नहीं), हेतु डी. फार्मेसी, सुंदर कन्या चाहिए. लिखें: वि.नं. 222, सरिता, नई दिल्ली-110055.

राजस्थानी, अग्रवाल, जिंदल, 26½ वर्षीय, स्नातक, स्मार्ट, सुंदर, निजी व्यवसाय, अच्छी परिवारीय आय, युवक हेतु सुशील, सुंदर, सुशिक्षित, संभ्रांत वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 223, सरिता, नई दिल्ली-110055.

पंजाबी, 48 वर्षीय, 164 सें.मी., एकाकी, 5,000/- मासिक, व्यवसायरत हेतु सुशिक्षित, गृहकार्यदक्ष वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 224, सरिता, नई दिल्ली-110055.

35 वर्षीय, यादव, विधुर, केंद्रीय सेवारत, वेतन 2,800/- माह, तीन जीवित संतानें, हेतु सुयोग्य, सजातीय वधू चाहिए. संतानहीन, तलाकशुदा, विधवा भी स्वीकार्य, दहेज नहीं. लिखें: वि.नं. 225, सरिता, नई दिल्ली-110055.

वरवधू चाहिए

दिगंबर जैन, 23, 146 सें.मी., बी.ए., बी.ए गेहुआं साफ, मंगली, आकर्षक, गृहकार्यदक्ष, अ खानदानी कन्या एवं 26, 162 सें.मी., एम.टे एम.पी.ई.बी. में इंजीनियर, 4,500/- मासिक युवक शीघ्र विवाह हेतु विवरण सहित लिखें: वि.नं. 992 सरिता, नई दिल्ली-110055.

गोद विज्ञापन

18 वर्षीय युवक, अध्ययनरत, उद्योगपति, संपन्न घराने को गोद जाने को इच्छुक. लिखें: वि.नं. 2 सरिता, नई दिल्ली-110055.

रिक्त स्थान

हिंदी शार्टहैंड, टाइपिंग की जानकार, 35, की साहित्यिक एकाकी महिला से पत्राचार आमंत्रि हैं. लिखें: वि.नं. 233, सरिता, नई दिल्ली-110055.

लोकप्रिय राष्ट्रीय हिंदी पत्रिका हेतु देशविदेश में सपारिश्रमिक संवाददाता चाहिए. इच्छुक व्यक्ति समसामयिक रचना सहित संपूर्ण विवरण भेजें. व्यवस्थापक, श्री साहित्य संदेश (मासिक), पुलिस लाइन, मोतिहारी (बिहार.)

वृद्ध, शाकाहारी, विधुर को गृहकार्य हेतु महिला चाहिए. लिखें: वि.नं. 234, सरिता, नई दिल्ली-110055.

मेडिकल

अमरीका प्रशिक्षित कासमेटिक सर्जन द्वारा संचालित कासमेटिक सर्जरी सेंटर, एफ-12, ईस्ट आफ कैलाश, नई दिल्ली. दूरभाष 6444511, 6444588,

प्लास्टिक/कासमेटिक शल्य चिकित्सा केंद्र, 11-ए/6, पुराना राजेंद्र नगर, नई दिल्ली. कासमेटिक शल्य चिकित्सा हेतु कृपया संपर्क करें, दूरभाष 585802,

व्यवसाय

अमरीकन ज्ञान पर अपना नाम, पता, 1,000 उत्तम क्वालिटी गोंद लगे लेबिल छपवा सकते हैं, जिन के बाईं ओर सुनहरे बार्डर, शुल्क रु. 60/-, वी.पी.पी. द्वारा (डाक खर्च अलग), कुलदीप सिंह, 32, दीं माल, अमृतसर-143017.

स्वतंत्र लेखन

लेखकोपयोगी साहित्य मंगाइए, सैन्नी अशोक, पांवटा साहिब (हिमाचल प्रदेश) 173025.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

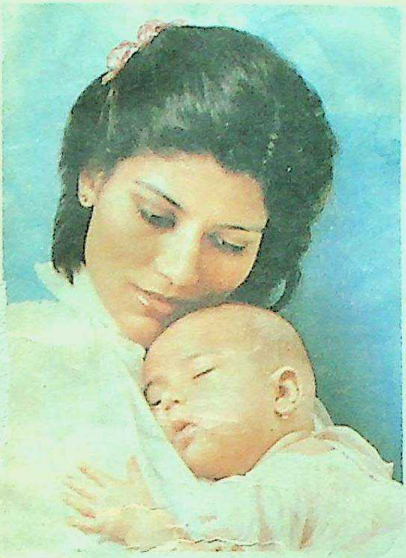

"अपने नन्हे की
कोमल त्वचा
के लिए मुझे
सिर्फ़ जॉन्सन्स
बेबी सोप पर
भरोसा है."

किसी और साबुन में नहीं
जॉन्सन्स बेबी ऑइल के गुण

जॉन्सन एण्ड जॉन्सन

शिशु लालन-पालन में वर्षों की निपुणता

Ogilvy&Mather 7764/HN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

13/2/91

Take the world in your stride.

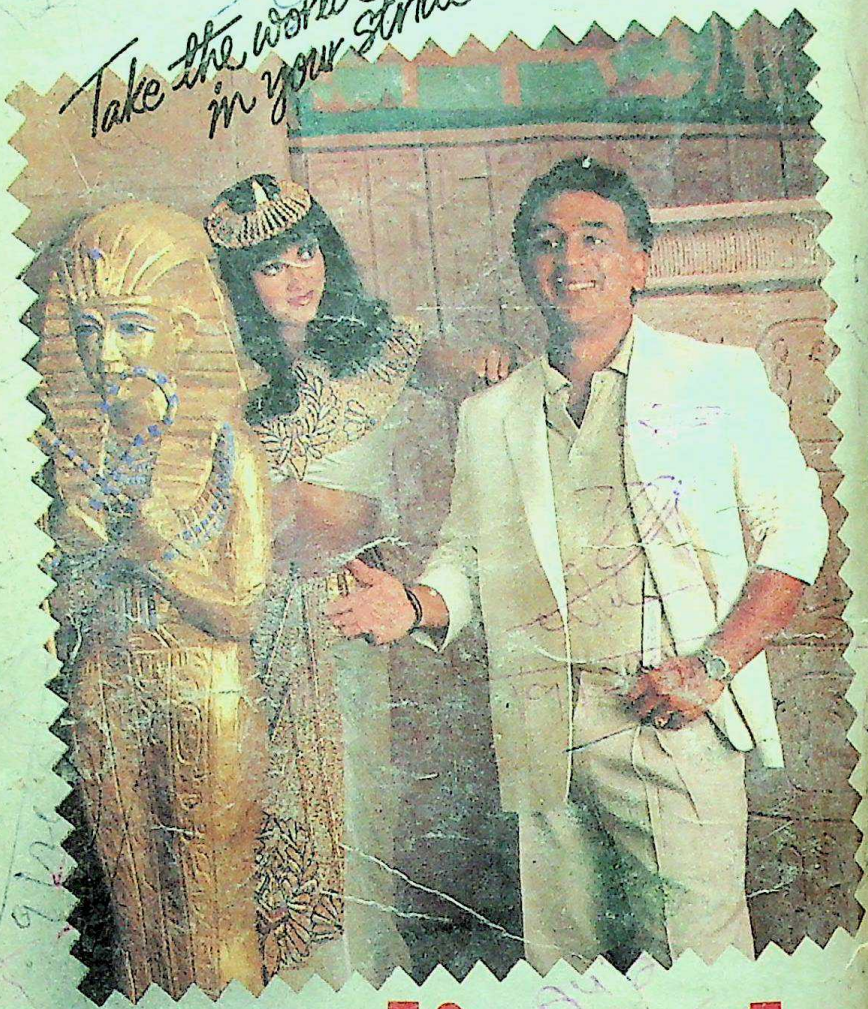

dinesh

ऐक्सक्लूज़िव्स ▲ सूटिंग ▲ को-ऑर्डिनेट्स ▲ सफ़ारी

The choice of leading fashion houses, internationally.

Authorised dealers: **BAREILLY:** Mehrotra's He & She • Sasta Suiting Paridhan • Shivshankarlal • **JAUNPUR:** Jalaludin Jamaluddin • **SAHARANPUR:** Aggarwal Brothers • Akash Deep • Bhagatram Godharam • Narsinghdas Bhagwandas • Rajendra & Sons • Saral Sons

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरिता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मस्ती ने बनाया हमें मर्ज़ी का मालिक

मस्ती – भारत का एक बेहतरीन लग्ज़री कॉण्डोम। जापानी मशीनों पर अत्यंत आधुनिक तरीके से बना। संपूर्ण सुरक्षा के लिए इलैक्ट्रॉनिक तरीके से जाँचा हुआ। अतिरिक्त आनंद के लिए 0.03 मिलीमीटर महीन मस्ती सिलिकॉन तेल की चिकनाई से युक्त है, जो कि पूरी दुनिया में उत्तम मानी जाती है। मस्ती केवल कॉण्डोम नहीं, एक बेहतर एहसास है।

MASTI

एक बेहतर एहसास

Contract.PSI.22583 HIN

विपणक : परिवार कल्याण विभाग, भारत सरकार, सी एस एम पी के अन्तर्गत पॉपुलेशन सर्विसेज इन्टरनैशनल, इंडिया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरिता

सामाजिक व पारिवारिक पुनर्निर्माण की पाक्षिक पत्रिका

संपादक व प्रकाशक : विश्वनाथ

अंक : 360 फरवरी (द्वितीय) 1991

कथा साहित्य

56 छींटे
अपाहिज के जीवन में रंग भरने वाली युवती

62 सालियों वाली ससुराल
सालियों की खोज पर व्यंग्य

68 वो दस साल
छोटे भाईबहन की बेवफाई

94 इंद्रधनुष
पितृप्रेम और जिम्मेदारियों के बीच फंसी युवती

100 हो ली सो हो ली
अधेड़ उम्र में भटकने की चाह

132 पहलू
दंगों के दौरान एक व्यक्ति की सोच

138 स्पेनिश मास
जंगली पौधे से सीख लेने वाली महिला

145 दाढ़ी बनाम लोहे के चने
दाढ़ी के कारण मुसीबत

161 रेडी वन टू थ्री
पेशेवर फोटोग्राफर की परेशानी

लेख

18 खाड़ी युद्ध
बदलते आयाम

27 सद्दाम की कहानी
करीम की जुबानी

35 होली आ रही है
होली की पूर्व तैयारी पर सटीक लेख

45 होली पर मर्यादा
उल्लंघन न करें

49 होली और सभ्यता
शालीनता से होली मनाने की सलाह

67 मंदाकिनी में स्नान
पाप मुक्ति का प्रमाण पत्र

83 होली तेरे कितने रंग
कहीं मजाक तो कहीं मन की उमंग

85 एस.एम. वाघेला
जिन्होंने कांच को भी शरमा दिया है

111 बेटीबहन पर अत्याचार
मायके वाले क्या करें?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

115 पत्नियां झूठ क्यों बोलती हैं?
दांपत्य संबंधों की दृढ़ता के लिए जरूरी बातें

119 मातापिता द्वारा उपेक्षा का व्यवहार
स्थिति चिंताजनक

127 वीडियो पत्रिकाएं
अस्तित्व के लिए संघर्ष

151 मूली
मूल्य में सस्ती, गुणों में अनमोल

155 घर में मरीज की देखभाल
जल्द स्वास्थ्यलाभ के लिए कुछ निर्देश

171 अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह
केंद्र और राज्य के झगड़े में फंसा समारोह

स्तंभ

82 मुझे शिकायत है
90 नए पकवान
131 पासा पलट गया
150 कटूक्तियां
154 यह भी खूब रही
176 इधरउधर
183 चंचल छाया

6 आप के पत्र
14 सरित प्रवाह

कविताएं

33 गले मिलने की बात
38 रंग भरी बौछारें
48 होली का त्योहार
61 तुम मिले मुझे
66 होंठ हुए कनेर
99 जंगल की होली
118 आओ प्रिये

संपादकीय, विज्ञापन व प्रकाशन कार्यालय :
दिल्ली प्रेस भवन, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.
दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन लि. के लिए विश्वनाथ द्वारा प्रकाशित तथा दिल्ली प्रेस समाचार पत्र प्रा.लि. साहिबाबाद/गाजियाबाद में मुद्रित.
अन्य कार्यालय : अहमदाबाद-503, नारायण चैंबर्स, आश्रम रोड, अहमदाबाद-380009. बंगलौर : 302- बी, 'ए' क्वींस कारनर एपार्टमेंट्स, 3, क्वींस रोड, बंगलौर-560001. बंबई : 79-ए, मित्तल चैंबर्स, नरीमन पाइंट, बंबई-400021. कलकत्ता : तीसरी मंजिल, पोद्दार पाइंट, 113, पार्क स्ट्रीट, कलकत्ता-700016. मद्रास : 14, पहली मंजिल, सीसंस कांप्लेक्स, 150/82, मांटीअथ रोड, मद्रास-600008. सिकंदराबाद : 122, पहली मंजिल, चिनाय ट्रेड सेंटर लेन, 116, पार्कलेन, सिकंदराबाद-500003.

© दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन लि. बिना आज्ञा कोई रचना किसी प्रकार उद्धृत नहीं की जानी चाहिए.

सरिता में प्रकाशित कथा साहित्य में नाम, स्थान, घटनाएं व संस्थाएं काल्पनिक हैं और वास्तविक व्यक्तियों, संस्थाओं से उन की किसी भी प्रकार की समानता संयोग मात्र है.

वैवाहिक विज्ञापन विभाग : एम-12, कनाट सरकस, नई दिल्ली-11001.
वार्षिक मूल्य केवल ड्राफ्ट/मनीआर्डर द्वारा ही 'सरिता' के नाम से ई-3, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-110055. को ही भेजें.
चैक व वी.पी.पी. स्वीकार नहीं किए जाते.
मूल्य : विदेशों में (समुद्री डाक से) 300 रु., (हवाई डाक से) 675 रु.

मूल्य : एक प्रति 7.00 रुपए, वार्षिक 168 रुपए.
वायुसेवा अधिभार 50 पैसे प्रति :
सिल्चर, डिब्रूगढ़, अगरतला, तेजपुर, इंफाल, पोर्ट ब्लेयर, अंडमान और नेपाल में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"इसीलिए मैं उन्हें नियमित रूप से झंडु स्पेशल च्यवनप्राश देती हूँ. सचमुच यह स्पेशल है. शुद्ध हरा आँवला, पिप्पली, वंशसालोचन, कुंडकोल, लौंग, जावंत्री, इलायची और अकलकरा जैसी जड़ी-बूटियाँ. सब को शुद्ध देसी घी में बनाया गया है. मेरा बाज़ार का आना-जाना तो रोज़ ही लगा रहता है, मैं जानती हूँ कि अच्छी और उम्दा दर्जे की चीज़ें हमेशा कुछ महँगी ही मिलती हैं. फिर, जब क्वालिटी की बात हो तो हर कोई झंडु को जानता है और उस पर भरोसा करता है.

मैं, अपने बच्चों को झंडु स्पेशल च्यवनप्राश बारहों महीने देती हूँ. इसीलिए उनमें छोटी-मोटी बीमारियों का मुक़ाबला करने की शक्ति आ गई है. ख़ास तौर से खाँसी और ज़ुकाम.

हाँ, थोड़ी सी परेशानी मुझे ज़रूर है. इसमें मिले तत्त्व इतने ताज़ा और शुद्ध हैं कि इसका स्वाद भी कमाल है. बच्चों का बस चले तो वे इसे दिनभर खाते रहें. हर दो-चार दिन बाद मुझे बोतल कहीं दूसरी जगह छिपाकर रखनी पड़ती है. क़ीमती है न!"

"बच्चों की पढ़ाई या सेहत का मामला हो तो मैं समझौता कभी नहीं करती..."

क़ीमती ही सही

झंडु स्पेशल च्यवनप्राश.

असली च्यवनप्राश

अब १ किलो के आकर्षक पॉलीजार में भी उपलब्ध.

CLARION/BZP/32/173 HIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

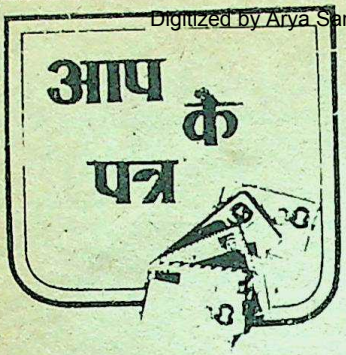

सरित प्रवाह/जनवरी/प्रथम

लालकृष्ण आडवाणी की रथयात्रा के संबंध में संपादकीय टिप्पणी पढ़ी.

यह रथयात्रा पुराने जमाने के अश्वमेध से कम न थी. तब घोड़े को रोकने पर मारकाट होती थी और अब रथ रोकने पर हुई. धर्म के नाम पर देश भर में हुए दंगों को देख कर कार्लमार्क्स की यह बात याद हो आई 'धर्म लोगों के लिए अफीम का कार्य करता है.'

खेद की बात है कि ये दंगे तब हुए जब देश मंडल आयोग रिपोर्ट पर युवाओं द्वारा आत्मदाह के सदमे से उबरा भी नहीं था. इस बार के दंगों में औरतों और बच्चों को भी नहीं बख्शा गया और कई ऐसे स्थानों पर भी दंगे हुए जहां पहले कभी नहीं हुए थे. लेदे कर इन दंगों का सब से अधिक असर गरीब जनता पर ही पड़ता है.

सोवियत संघ के बारे में आप के विचारों से मैं पूर्णतः सहमत हूं. मिखाइल गोरबांचौफ वाकई काबिले तारीफ हैं, जिन्होंने झूठी शान का लबादा फेंक कर कड़वी सचाई से अवगत करवाया है. एक अकेले आदमी ने पूरे देश का इतिहास बदल दिया है. अब समय आ गया है कि भारत को रूस का, जो खुद बरबादी के कगार पर है, पिछलग्गू बनना छोड़ देना चाहिए.

—दीपाली सरकार

*

अकाली दल की तुलना भारतीय जनता पार्टी से किसी भी मायने में नहीं की जा सकती है, न ही बाबरी मसजिद और पंजाब के मामले में कोई समानता है, जैसा कि आप ने अपने संपादकीय में बताया है.

सरकार की दृढ़ नीति के अभाव में ही पंजाब आतंक के साए से निकल नहीं पा रहा है. यदि पाकिस्तान से लगी सीमा को पूरी तरह से सील कर दिया जाए और आतंकवादियों के विरुद्ध अत्यंत कठोर कारर्वाई की जाए तो समस्या का हल सहज रूप से निकल आएगा क्योंकि आम पंजाबी आज भी भारत के साथ है. भयवश वह मुखर नहीं हो पा रहा है.

सरकार को कठोर कारर्वाई करते समय मानवाधिकार समिति की पूर्णतः उपेक्षा करनी चाहिए क्योंकि यह एक ऐसी राष्ट्र विरोधी समिति है जो सेना द्वारा मारे गए उग्रवादियों के लिए मानवाधिकार का नारा बुलंद करती है. पर जब ये ही उग्रवादी निर्दोष जन साधारण पर सुरक्षा कर्मियों की हत्या करते हैं तो उस की आवाज गुम हो जाती है. इस समिति को निरा 'फ्राड' समझना चाहिए क्योंकि 30 अक्तूबर और 2 नवंबर को अयोध्या में मारे गए निहत्थे कारसेवकों की नृशंस हत्या पर इस ने चूं तक नहीं किया.

—मनोज बरनवाल आर्य

*

लेख 'मध्यावधि चुनाव और बदलता राजनीतिक क्षितिज' (जनवरी/प्रथम) में एक त्रुटि है. यह ठीक है कि 1977 व 1989 में कांगेस सत्ता में नहीं आई किंतु किसी क्षेत्र ने इसे गैरकांग्रेसवाद की संज्ञा नहीं दी. चाहे वह 1977 का प्रयोग रहा हो या 1989 का, दोनों ही कांग्रेस के बदले हुए स्वरूप थे यानी कि बोतल नई और शराब पुरानी.

मोरारजी भाई, चंद्रशेखर तथा विश्वनाथ प्रताप सिंह पूर्व में कांग्रेस से ही निकले तथा उन की विचारधारा व कामकाज के ढंग पर कांग्रेस की छाप साफ परिलक्षित होती रही. सिर्फ वामपंथी दल तथा भाजपा के प्रयोग को ही सही रूप में गैर कांग्रेसवाद का प्रयोग माना जाएगा. जहां तक इन दोनों के सफल होने की बात है, दोनों ही सफल होंगे, ऐसा वह अपने द्वारा शामिल राज्यों की प्रशासनिक कुशलता से सिद्ध कर चुके हैं.

फिर भी जनता के मानस पटल से विशुद्ध कांग्रेसवाद को हटाने में समय लगेगा तथा अगला चुनाव 'मंडल कमंडल' पर न हो कर स्थायित्व के नाम पर होगा. एक बार फिर जनता को विशुद्ध कांग्रेस (कांग्रेस इ) अशुद्ध कांग्रेस (जनता दल) तथा भाजपा में से किसी एक को चुनना होगा.

—अनिलकुमार गुप्ता

*

भारतीय जीवन बीमा निगमः प्रतिक्रियाएं.

लेख 'भारतीय जीवन बीमा निगमः दोहरे दांतों वाला हाथी (जनवरी/प्रथम) पालिसीधारकों के लिए उपयोगी है.

जहां तक बोनस का सवाल है, लेखिका ने सही तथ्य नहीं दिए हैं. निगम द्वारा दिए जाने वाला बोनस जमा किए धन पर नहीं होता बल्कि जितनी राशि का बीमा हो, उस पर होता है. जैसे अगर एक लाख रुपए के बीमे का प्रीमियम सालाना 5000 रुपए है तो बोनस 5000 पर नहीं अपितु एक लाख पर माना जाएगा.

—सुरेंद्रपाल शर्मा

*

'भारतीय जीवन बीमा निगम' के बारे में आप की पत्रिका ने पाठकों को भयभीत कर दिया है.

अनियमितताएं, परेशानियां किस विभाग में नहीं होतीं? बिजली बोर्ड विभाग ने भी बहुत लूट मचा रखी है, लेकिन इस का यह मतलब नहीं कि हमें बिजली का कनेक्शन ही नहीं लेना चाहिए. जिस प्रकार बिजली के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओरिएण्टल

एक पहचान

हमारा बहु-आयामी विकास

ग्राहकों का निरन्तर बढ़ता विश्वास

अधिकांश कम्पनियों के लिए विकास का तात्पर्य होता है – बढ़ता हुआ कारोबार। इस मापदंड से देखा जाए तो हमारे विकास-वृद्धि की दर कम प्रभावशाली नहीं। 23.7 प्रतिशत कारोबार में वृद्धि प्रभावशाली ही तो कही जाएगी। और यह है हमारी अब तक की सर्वाधिक वृद्धि दर।

फिर भी हम कहना चाहेंगे, हमारी प्रभावशीला तो हमारे पॉलिसी धारक ही हैं। हमारी सेवा से संतुष्ट पॉलिसी धारक जिनके दावों को मिलती है हमसे सर्वोच्च प्राथमिकता। पिछले ही वर्ष हमने 3 लाख से अधिक दावे निपटाये, और तकरीबन 350 करोड़ रु. का भुगतान किया। हमारे संतुष्ट पॉलिसी धारक तो आप सब हैं ही, चाहे गृहस्वामी हो, या व्यापारी, अपना निजी व्यवसाय करने वाले हों, डाक्टर हों या इंजीनियर या कम्प्यूटर विशेषज्ञ, दुकानदार हों, किसान हों, मवेशीपालन व्यवसाय या किसी भी अन्य कारोबार से जुड़े हों। हमारे संतुष्ट पॉलिसी धारकों की संख्या तो वर्ष-प्रतिवर्ष बढ़ ही रही है।

प्रिय ग्राहकगण

आपके लिए कार्यरत हैं हमारे शिकायत निवारण, ग्राहक परामर्श और सुरक्षा व्यवस्था संबंधित हमारी विशेष सेवाएं। और आपकी सेवा में तत्पर है हमारा समस्त कर्मचारी वर्ग-18000 का विशाल समुदाय। और उपलब्ध है हमारी समस्त सेवाएं देश भर में हमारे करीब 1000 कार्यालयों द्वारा।

आप सहमत होंगे, हमारा विकास बहु-आयामी रहा है। और यह है हमारी सेवाओं के प्रति आपके निरन्तर बढ़ते विश्वास का प्रतीक।

दि
ओरिएण्टल इंश्योरेंस कम्पनी लिमिटेड
(जनरल इंश्योरेंस कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया की सहायक कम्पनी)

ग्राहकों से सौजन्य-
ओरिएण्टल की विशिष्ट परम्परा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिना हमारा काम नहीं चलता. एक व्यक्ति अपनी असुरक्षा की भावना के कारण भारतीय जीवन बीमा निगम की पालिसी लेने के लिए मजबूर है. कृपया स्पष्ट करें कि क्या भारतीय जीवन बीमा निगम की पालिसी किसी को नहीं लेनी चाहिए?

—उग्रसेन सहारन

जीवन बीमा हर व्यक्ति को कराना चाहिए. लेख का उद्देश्य सरकारी बीमा कंपनी की गलत नीतियों के बारे में जनता को सावधान करना है. हमें आशा है कि अगर जनता बीमा कंपनी पर दबाव डालेगी तो वे अवश्य अपनी नीतियां बदलेंगे.

—संपादक

*

यह सच है कि बीमा निगम के कर्मचारियों में कामचोरी, लापरवाही और आलस्य का बोलबाला है और इस का कार्यलोककल्याणकारी संस्था के बजाय सरकारी महकमे जैसा लाल फीताशाही वाला है, लेकिन लेख की हरेक बात अक्षरशः सही नहीं है.

जहां तक भुगतान संबंधी औपचारिकताओं का सवाल है, वह अधिकर्ता (एजेंट) येन केन प्रकारेण पूरी करवा देता है क्योंकि इस में उस का भी स्वार्थ निहित है. यदि बीमाधारक को वह पैसा समय पर मिल जाता है तो उक्त अभिकर्ता को वह और भी कई पालिसियां देता है. जहां तक मृत्यु दावों का प्रश्न है, वहां भी अधिकर्ता अधिक बीमा व्यवसाय मिलने के लालच में जल्दी भुगतान हेतु निगम पर दबाव डालता है.

लेखिका का यह मानना कि काल्पनिक प्रस्ताव पत्र के जरिए अभिकर्ता व विकास अधिकारी अपने लक्ष्य की पूर्ति करते हैं, गलत है. क्योंकि प्रस्ताव पत्र के साथ उम्र का प्रमाणपत्र लगाना होता है जो कि जन्म प्रमाणपत्र, मैट्रिक पास का प्रमाणपत्र आदि होते हैं और ये प्रमाणपत्र आसानी से उपलब्ध नहीं होते.

लेखिका का यह कहना बिलकुल सही है कि कमीशन दे कर कम प्रीमियम पर पालिसी बेचने का अभियान चलाया जाता है. इस में सिर्फ अभिकर्ता ही बलि का बकरा बनता है, न कि विकास अधिकारी. लक्ष्य पूर्ति हेतु यदि अभिकर्ता प्रीमियम पर छूट देता है तो उस का ही नुकसान होगा.

प्रीमियम में आंशिक रूप से या पूर्णरूप से हिस्सा देना न केवल उस के लिए हानिप्रद है वरन अनैतिक भी है. बीमा अधिनियम 1938 की धारा 41 के अनुसार यह दंडनीय भी है. पर निगम ने आज तक इस धारा के अंतर्गत किसी भी अभिकर्ता के खिलाफ कोई काररवाई नहीं की है क्योंकि सभी अधिकारीगण जानते हैं कि यदि काररवाई की गई तो शेष अभिकर्ता काम करना बंद कर देंगे. यदि ऐसा हुआ तो निगम के करोड़ों के लक्ष्य कैसे पूरे होंगे?

—सुनील रामनानी

*

लेख पढ़ कर ऐसा प्रतीत होता है कि लेखिका ने किसी एक कार्यालय के कार्य के आधार पर ही अपना विश्लेषण कर डाला. ऐसे लेख लिखने से पूर्व कम से कम 60-70% कार्यालयों का निरीक्षण करना चाहिए.

लेख के अंत में लेखिका ने यह वक्तव्य दे डाला, 'भारतीय जीवन बीमा निगम में इतनी कमियां होने के बावजूद न जाने क्या है जो लोग इस की ओर आकर्षित हुए जा रहे हैं. अर्थात कुछ तो है ही जो भारतीय जीवन बीमा निगम सफल हो रहा है. शायद उस की तह में जाने की जरूरत लेखिका ने नहीं समझी.

जीवन बीमा निगम की नीतियों के साथसाथ लेखिका ने कर्मचारियों की कार्य योग्यता पर लांछन लगाया है जिस से अच्छे कर्मचारियों को ठेस पहुंची है.

—संगीता सेठी

जीवन बीमा निगम सफल इसलिए हो रहा है क्योंकि उस से आयकर में काफी छूट प्राप्त हो रही है और इस क्षेत्र में उस का एकाधिकार है वरना आम बीमा की तरह कोई भी नागरिक इन शर्तों पर बीमा न कराता. रही बात कर्मचारियों की तो हम चाहते हैं कि नियम, कानून व कार्यप्रणाली ऐसी हो कि कोई भी कर्मचारी ग्राहक से गलत व्यवहार न करे. जब तक ऐसा न होगा, आलोचना करना उचित है.

—संपादक

*

संस्था जानने की इच्छा

शासकीय सेवानिवृत्त कर्मचारी के लिए सेवानिवृत्ति के बाद कोई संस्था अगर उन के शेष जीवन को शांतिमय बनाने के विचार से कोई कार्य करती हो तो अपनी पत्रिका द्वारा पता सूचित करें, ताकि पाठकगण उस से लाभ उठा सकें.

—अनिल मिश्रा

सरिता के लेखक

अश्विनीकुमार भटनागर :

कहानी 'हो ली सो हो ली' के लेखक अश्विनीकुमार भटनागर अंतर्राष्ट्रीय संबंध व कूटनीति, पुस्तक विज्ञान व सामाजिक समस्याओं पर लेखन कार्य करते हैं.

ऋषिमोहन श्रीवास्तव

लेख 'होली पर मर्यादाओं का उल्लंघन न करें' के लेखक ऋषिमोहन श्रीवास्तव हिंदी भाषा में सामाजिक पारिवारिक, स्वास्थ्य संबंधी रचनाएं तथा श्रृंगारिक गीत, कविताओं के लेखन में रुचि रखते हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हॉकिन्स लाइए. ४०% ईंधन खर्च बचाइए.

आजकल ईंधन की कीमतें तो बढ़ती ही जा रही हैं. ईंधन और पैसे बचाने का काफ़ी समय से परखा हुआ साधन है हॉकिन्स प्रेशर कुकर.

पेट्रोलियम मंत्रालय के परीक्षण दरसाते हैं कि प्रेशर कुकर ४०% से भी अधिक ईंधन बचाते हैं. हॉकिन्स में किए गए पकाने के वैज्ञानिक प्रयोगों ने सिद्ध किया है कि हॉकिन्स औसतन ५३% मिट्टी का तेल बचाता है.

हॉकिन्स बचाता है रु. ५०० प्रतिवर्ष

कैसे? हॉकिन्स की डिज़ाइन और क्वॉलिटी सर्वोत्तम हैं. प्रमाण? हॉकिन्स ही सिर्फ़ ऐसा भारतीय प्रेशर कुकर है जो यूरोप और अमेरिका के सबसे अच्छे डिपार्टमेंट स्टोरों में भी बिक रहा है.

किफ़ायत और सहूलियत के सबसे अच्छे मिलाप के लिए आपके पास छोटे, मध्यम और बड़े हॉकिन्स प्रेशर कुकरों की श्रेणी होनी चाहिए. थोड़ा-सा खाना पकाने के लिए बड़ा कुकर इस्तेमाल करने से ईंधन की बरबादी होती है.

साइज़	मूल्य*	साइज़	मूल्य*
२ लिटर	रु. २९०	६.५ लिटर	रु. ५१५
३ लिटर	रु. ३५०	८ लिटर	रु. ५६५
४ लिटर	रु. ४२५	१० लिटर	रु. ६६५
५ लिटर	रु. ४६५	१२ लिटर	रु. ७६५

* सभी करों सहित अधिकतम मूल्य सेपरेटरों के बिना स्टैंडर्ड बेस के लिए

ज़्यादा खाना पकाने के लिए छोटा कुकर उपयोग करना अव्यावहारिक है. इसलिए अपनी रसोई की हर ज़रूरत के मुताबिक सही साइज़ के हॉकिन्स खरीदिए. और समय तथा पैसे की और भी अधिक बचत कीजिए.

किफ़ायत करने का समय बिलकुल न खोयें. जल्दी से नज़दीक के हॉकिन्स नियमित विक्रेता के पास जाएं और अपनी ज़रूरत के मुताबिक हॉकिन्स के मॉडल अपने लिए चुन लें.

३०० से भी अधिक सेवा केंद्रों में हॉकिन्स मुफ़्त सेवा प्रदान करते हैं. हर केंद्र में फ़ैक्टरी में प्रशिक्षित कारीगर तैनात हैं. और हरेक में असली अतिरिक्त पुर्ज़ों का स्टॉक है. कोई मदद चाहिए तो यहां लिखें : हॉकिन्स, विभाग क्र. ६०, पी.ओ. बॉक्स ६४८१, बम्बई ४०० ०१६.

उत्तमता ऐसी कि भारतभर को है भरोसा

हॉकिन्स®

१ करोड़ से ज़्यादा प्रेशर कुकर बिके हैं

HC-578 BHN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐसी संस्थाएं यदि हम लिख तो हम पाठकों की सहायता करना चाहेंगे. —संपादक

*

लेख 'जब सौतन भई शराब तो पत्नी क्या करे' (जनवरी/प्रथम) में दी गई जानकारी शतप्रतिशत सही है.

पक्के शराबी का इलाज घर में होना लगभग असंभव ही है. उसे हस्पताल में भरती कर के ही शराब छुड़ाई जा सकती है, लेकिन इस के बाद भी पत्नी और घर के अन्य सदस्यों को जागरूक रहना पड़ता है क्योंकि शराबी के मन में शराब की चाह छिपी रहती है. वह फिर से किसी न किसी बहाने शराब लेना शुरू कर सकता है.

सरकार ने शराबबंदी समाप्त कर शराब सुलभ करा दी है. इस से शराब की लत और उस से होने वाले रोग, मारपीट, खूनखराबा बहुत अधिक बढ़ गए हैं. जब शराबबंदी थी तब कुछ लोग ही जहरीली शराब से मरते थे. लेकिन अब हजारों लोग धीरेधीरे शराब के कारण मर रहे हैं साथ ही अपने बच्चों को बरबाद कर रहे हैं.

मेरे खयाल से जितना राजस्व सरकार शराब से प्राप्त करती है, उतना ही बल्कि उस से भी अधिक पैसा शराबियों के इलाज पर और शराब से हुए दंगों को रोकने और सरकारी संपत्ति के नुकसान को पूरा करने पर खर्च कर रही है.

यदि अभी से सावधानी बरती जाए तो नई पीढ़ी को शराब से मुक्त रख कर स्वस्थ रखा जा सकता है. सुलभता से मिलते रहने पर शराबी को शराब से दूर रखना असंभव है. —वी. डी. बरगा

*

लेख 'सुदूर पूर्व के हिंदू साम्राज्य' (जनवरी/प्रथम) यथार्थ को दर्शाता है.

जिन धर्मग्रंथों पर हिंदू गर्व करते नहीं अघाते, उन के भीतर कितना जहर भरा पड़ा है, यह लेखक ने बड़े सटीक ढंग से सोदाहरण प्रस्तुत किया है. इन धर्मग्रंथों ने समयसमय पर भारतीय जनमानस को अपंग बनाया तथा अकर्मण्य रहने के उपदेश दिए, जबकि विदेशियों ने भारत को गुलामी की पीड़ा देने के साथसाथ धन संपदा लूट कर अपने देशों में पहुंचाई.

जो धर्मग्रंथ अपने ही धर्म के लोगों को सताने के उपदेशों से भरे हों, भला वे देश की उन्नति करने तथा एकजुट रखने में कैसे सहायक सिद्ध हो सकते हैं? अतः आज इन तथाकथित धर्मग्रंथों की जरूरत नहीं है. जरूरत है ऐसे साहित्य की, जो देश की उन्नति के साथसाथ देश की सीमा को हर परिस्थिति में बांधे रख सके अन्यथा वह दिन दूर नहीं जब भारत पुनः टुकड़ों में बिखर जाएगा. —निरंजनसिंह भारती

*

सरिता (जनवरी/प्रथम) अंक पढ़ा, पत्रिका सामाजिक उत्थान हेतु प्रकाशित होती है परंतु उन के

एक बात की तीन बात

एक कमाल की बात बताऊँ! मुझे एक ऐसा तेल मिला है जो एक में ही तीन के गुण देता है। गिन्नी रिफ़ाइन्ड कॉटनसीड ऑइल

बढ़िया सेहत

मेरे परिवार की सेहत मेरे लिए सबसे ज्यादा महत्त्वपूर्ण है। इसीलिए मैं गिन्नी रिफ़ाइन्ड कॉटनसीड ऑइल का प्रयोग करती हूँ। क्योंकि यह पॉलीअन्सैचुरेटिड फ़ैटी एसिड्स (PUFA) से भरपूर है और हृदय के लिए स्वास्थ्य-वर्धक है।

PUFA (%) लिनोलिक के तौर पर (कॉलेस्ट्रोल कंट्रोलिंग फ़ैक्टर)

कॉटनसीड ऑइल	42.0
ग्राउन्डनट ऑइल	26.0
मस्टर्ड ऑइल	20.0
कोकोनट ऑइल	2.0
बटर फ़ैट	2.0

आधार : वेलीज़ इण्डस्ट्रियल ऑइल एण्ड फ़ैट प्रोडक्ट्स, एन्साइक्लोपिडिया ब्रिटैनिका

50 YEARS OF

AMRIT BANASPATI CO. LTD.
GREAT YEARS. GREAT GOING.
1940-1990

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ लेख निराशाजनक वातावरण उत्पन्न करते हैं.

हिंदू दो हजार वर्ष गुलाम रहे, सुदूर पूर्व के हिंदू साम्राज्य उन की वीरता के प्रतीक नहीं हैं, तुलसीदास हिंदू समाज के पथभ्रष्टक थे आदि बातें छाप कर क्या आप हिंदुओं के पांच हजार वर्ष के पूरे इतिहास को भुला देना चाहते हैं?

यह ठीक है, 12वीं से 19वीं सदी तक वे परतंत्र रहे—जैसा कि अन्य कई देश रहे, अंगरेज भी परतंत्र रहे, इस से उज्ज्वल पक्ष छिपा कर आप समाज के उत्थान में सहायक कम होते हैं. एकदो कथनों से आप 'रामचरित मानस' के रचीयता तुलसीदास को पथभ्रष्टक नहीं सिद्ध कर सकते क्योंकि रामायण लाखों लोगों को सन्मार्ग पर ले जा रही है.

कर्नल टाड ने राजस्थान के विषय में लिखा है कि यहां स्थानस्थान पर धर्मोपोली और वीर ल्यूनीडास हैं. पाश्चात्य विद्वान भी भारत की प्रशंसा कर रहे हैं. अतः पत्रिका इतिहास के दोनों पक्ष प्रस्तुत करे तो उचित होगा.

—हरकिशोर

सरिता में उक्त लेख निराशा भाव पैदा करने के लिए नहीं, अपनेआप में संतुष्ट, सोए हिंदू समाज को झकझोरने का प्रयास है. हम अपने उस अतीत के गौरवगान में अपने मुंह मियां मिट्ठू बने हुए हैं जिस ने हमें गुलाम बनवाया, वर्ण, जाति के भेदों में बांटा, हमारे घर व मंदिर लुटवाए. ऐसे अतीत से चिपक कर हम प्रगति नहीं कर सकते. पश्चिमी देश हर समय अपने अतीत का गुणगान नहीं करते, वे आगे की बातें करते हैं.

हमारे पास वर्तमान और भविष्य के लिए कहने को कुछ नहीं, तभी हम खोखले इतिहास का ढोल पीट रहे हैं, इन से हमारे खुद के कान बंद हो रहे हैं, दूसरों को फर्क नहीं पड़ रहा. दूसरे लोग, सब हमारी कमजोरियों से परिचित हैं और उसी प्रकार हम से व्यवहार करते हैं. आज दुनिया के देशों में हमारी क्या स्थिति है, क्या यह कहने के लिए ग्रंथ लिखने होंगे?

—संपादक

*

समय की कसौटी पर खरी

कहानी 'नए दिन की शुरुआत' (जनवरी/प्रथम) काफी रोचक एवं शिक्षाप्रद थी. उस में एक नारी द्वारा नारी का सही समय पर उचित मार्गदर्शन कराया गया है.

—शोभा श्रीवास्तव

*

सरिता (जनवरी/प्रथम) अंक बेहद अच्छा लगा. विशेषकर बिंदु सिन्हा की 'नए दिन की शुरुआत' और सुधा गुप्ता की कहानी 'हब्शी' बेहद पसंद आई.

—जाफर जिंवानी, न्यूयार्क

*

सरिता में आप के प्रकाशन की पत्रिका चंपक, सुमन सौरभ के बारे में पढ़ा. वाकई बच्चों के स्वस्थ मानसिक विकास के लिए उन्हें रूढ़िवाद, भूतप्रेत, दैत्य राक्षस के दूषित कल्पना लोक से निकलना जरूरी है.

—गफूरखान स्नेही ●

बढ़िया स्वाद

गिन्नी रिफ़ाइन्ड कॉटनसीड ऑइल एकदम शुद्ध और गंधरहित है। और तो और इसमें तली चीज़ें ज़्यादा दिन तक ताज़ी रहती हैं। इसीलिए मैं अपने परिवार के मनपसंद व्यंजन इसमें बनाती हूँ।

बेहद कम दाम

गिन्नी रिफ़ाइन्ड कॉटनसीड ऑइल, और तेलों के मुकाबले कम दाम में मिलता है। इतने कम दामों में इतने ज़्यादा गुण अच्छा सौदा नहीं तो फिर क्या है?

१, २, ५ और १५ किलो पैक में उपलब्ध।

गिन्नी

रिफ़ाइन्ड कॉटनसीड ऑयल

सेहत, स्वाद, कम दाम का बेजोड़ मेल

गिन्नी रिफ़ाइन्ड कॉटनसीड ऑयल अब कैन्टीन स्टोर्स डिपार्टमेंट (सी.एस.डी.) में भी उपलब्ध

CLARION D 306 R

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

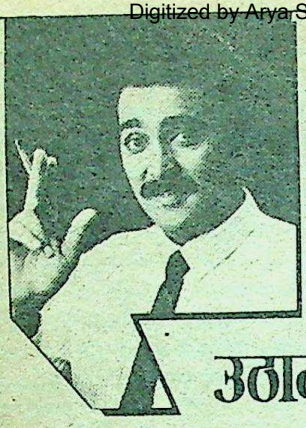

अस्पताल में
इलाज करवाने का खर्च
उठाना मुश्किल होता है,
सेवा-निवृत्त होने के बाद तो
और भी मुश्किल.
इसलिए
मैं तो अभी से
इंतज़ाम कर लूंगा !

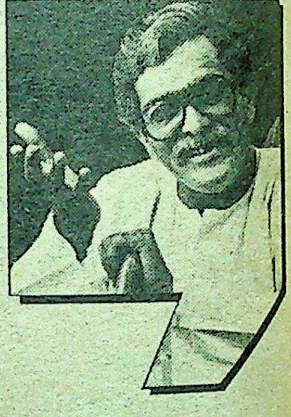

ऐसी अनोखी बीमा योजना
पहले उपलब्ध नहीं थी !

GIC

भारतीय साधारण बीमा निगम

प्रस्तुत करते हैं

भविष्य आरोग्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सेवा-निवृत्त होने के बाद अगर किसी बड़ी बीमारी का इलाज अस्पताल में करवाना पड़ जाए तो ज़िंदगीभर की जमा-पूंजी ख़त्म होने की नौबत आ सकती है. इसलिए ऐसे किसी मौके का सामना करने की तैयारी आप अभी से शुरू कर दीजिए.

ऐसी ही ज़रूरत के वक्त पर आपके काम आएगी भारतीय साधारण बीमा निगम की नई, अनोखी योजना - **भविष्य आरोग्य.**

अपने नौकरी-व्यवसाय के कार्यकाल में ही आप प्रीमियम की मामूली, आसान किस्तें भरेंगे. फिर आपकी चुनी हुई सेवा-निवृत्ति उम्र से लेकर उम्रभर के लिए अस्पताल में अथवा घर में अस्पताली इलाज के लिए रु. 50,000 तक का खर्च आपको देगा **भविष्य आरोग्य.** मगर, किसी भी एक बीमारी पर मिलनेवाले खर्च की सीमा रु. 20,000 होगी. सेवा-निवृत्ति के लिए 55 से 60 वर्ष तक के बीच कोई भी उम्र आप चुन सकते हैं.

भविष्य आरोग्य के लाभ को रु. 50,000 से अधिक भी बढ़ाया जा सकता है. उचित अनुपात में प्रीमियम भर कर इस लाभ को रु. 10,000 के गुणकों में बढ़ाया जा सकता है.

योजना में शामिल होने के वक्त की आपकी उम्र और आपकी चुनी हुई सेवा-निवृत्ति की आयु के अनुसार प्रीमियम की दर बदलेगी. (कृपया तालिका देखें).

डॉक्टरी जांच की कोई आवश्यकता नहीं. स्वास्थ्य संबंधी घोषणा-पत्र की ज़रूरत भी नहीं.

यदि आप अपनी बीमा पॉलिसी रद्द करवाना चाहें या दुर्भाग्य से आपके साथ कुछ भला-बुरा घट जाए तो आपके भरे हुए प्रीमियमों का अच्छा-खासा भाग आपको अथवा आपके नामांकित व्यक्ति को लौटा दिया जाएगा, बशर्ते कि तब तक खर्च का कोई दावा न किया गया हो.

वार्षिक प्रीमियम (रु. में) रु. 50,000 का बीमा करवाने के लिए सूचक तालिका

बीमा करवाने के वक्त आयु	सेवा-निवृत्ति की आयु					
	55	56	57	58	59	60
25	47	44	41	38	35	33
31	88	81	75	69	64	59
44	426	378	338	303	273	247
50	1335	1073	889	753	648	564
55	—	—	—	—	—	1517

एक ही किस्त में संपूर्ण प्रीमियम भरने की सुविधा उपलब्ध.

धारा 80D के अंतर्गत रु. 3000 तक के वार्षिक प्रीमियम पर आयकर में छूट मिलेगी. बड़े प्रतिष्ठानों के लिए रियायती दर पर समूह योजनाएं भी उपलब्ध हैं.

आपके लिए घर से संबंधित/व्यक्तिगत बीमे की कुछ अन्य योजनाएं ये हैं:

वार्षिक **मेडिक्लेम** - आपका और आपके परिवार का अस्पताली इलाज का खर्च चुकाने के लिए.

समुद्रपारीय मेडिक्लेम - विदेश यात्रा के दौरान अचानक बीमार पड़ने पर चिकित्सा का खर्च विदेशी मुद्रा में चुकाने के लिए.

गृहस्वामी व्यापक बीमा - आग लगने, बिजली गिरने, बाढ़, दंगे, हड़ताल, चोरी आदि से हुए घरेलू नुकसान की भरपाई करने के लिए.

व्यावसायिक क्षतिपूर्ति - वकीलों, चिकित्सकों, लेखाकारों व अन्य व्यावसायिक व्यक्तियों के लिए, अपने विरुद्ध कानूनी दायित्व की भरपाई के लिए.

व्यक्तिगत दुर्घटना बीमा - दुर्घटना के कारण होनेवाली अपंगता अथवा मृत्यु का बीमा.

अधिक जानकारी के लिए हमारी कार्यरत कंपनियों के किसी भी कार्यालय से संपर्क करें.

भारतीय साधारण बीमा निगम

इंडस्ट्रियल एश्योरेंस बिल्डिंग, चर्चगेट, बम्बई 400 020

कार्यरत कंपनियां

नेशनल इन्श्योरेंस कंपनी लिमिटेड

दी न्यू इंडिया एश्योरेंस कंपनी लिमिटेड

दी ओरिएण्टल इन्श्योरेंस कंपनी लिमिटेड

युनाइटेड इंडिया इन्श्योरेंस कंपनी लिमिटेड

RK SWAMY/BBDO GC 526 B I/N

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरित प्रवाह

जैसेजैसे खाड़ी युद्ध अपनी रफ्तार से बढ़ता जा रहा है, अनेक देशों में इस के विरोध में प्रदर्शन भी प्रारंभ हो गए हैं. ये प्रदर्शन अधिकांश में पेशेवर प्रदर्शनकारियों, कम्यूनिस्टों व मुसलिम धर्मावलंबियों द्वारा किए जा रहे हैं. इन का एक ही ध्येय है, किसी तरह सद्दाम हुसैन को बचाना जिस से इस लड़ाई को जीतने के बाद अमरीका पहले की अपेक्षा अधिक शक्तिशाली न हो जाए.

पेशेवर प्रदर्शनकारी तो भारत में किसान रैलियों की तरह हैं. अंतर केवल इतना है कि भारत में किसानमजदूर रैलियों में सम्मिलित होने वालों को दिन भर के खर्च के लिए पैसा, यातायात और कुछ बड़े नगरों की सैर का प्रलोभन देना होता है. पर पश्चिम में क्योंकि समाज काफी धनाढ्य है, पैसे की जरूरत नहीं होती. वहां क्योंकि काम के घंटे कम हैं और अवकाश ज्यादा है, ये प्रदर्शन थोड़ाबहुत आमोदप्रमोद का काम देते हैं.

वहां बढ़ते हुए औद्योगिकीकरण से आदमी अकेला पड़ गया है. इसलिए जनसमूह में सम्मिलित हो कर वह अपना अकेलापन कुछ देर के लिए खो बैठता है. इसी लिए वहां खेलों में अपार भीड़ होती है, यद्यपि वहां हर घर में टीवी मौजूद है और खेल बजाय स्टेडियम में बैठ कर देखने के टीवी पर बहुत अच्छी तरह देखा जा सकता है, फिर भी लोग स्टेडियमों को भर डालते हैं. यही बात प्रदर्शनों पर लागू होती है.

वैसे भी शांति का नारा एक सुहावना है, कौन युद्ध चाहता है?

जहां तक मुसलिम देशों में प्रदर्शन की बात है, वहां तो मजहब का जुनून बढ़ते देर नहीं लगती. खाड़ी युद्ध में सरगना अमरीका है जो ईसाई है. अमरीका यहूदी इजराइल का समर्थक है. ईसाई और यहूदी एकतरफ तो मुसलमान का दूसरी ओर होना स्वाभाविक है—मजहब तो हमेशा दूसरे मजहब वालों को दोजख/नरक में भेजने की प्रेरणा देता है ताकि मुसलिम खुदा का रास्ता साफ हो जाए और 'गौड' महाशय टुकुरटुकुर देखते रहें. इस मजहब के उन्माद में यह बात भुला दी जाती है कि सद्दाम हुसैन ने कुछ समय पहले (थोड़े दिन ही पहले समाप्त हुए) इसलामी ईरान पर हमला बोल कर 8 वर्ष तक लड़ाई लड़ी थी जिस में उस ने 10 लाख मुसलमान मरवा डाले थे. पर वहां भी मजहब के बीच छोटे मजहब का सवाल खड़ा कर दिया गया—सद्दाम हुसैन सुन्नी सऊदी अरब व कुवैत की सहायता प्राप्त कर के ईरानी शियाओं से लड़ रहा था.

*

इन प्रदर्शनों से युद्ध में कुछ रुकावट तो पड़ सकती है, पर युद्ध के अंतिम निर्णय में कोई अंतर नहीं होगा. चाहे सऊदी अरब व मिस्र युद्ध के पक्ष में कोई प्रदर्शन आयोजित न करें, तो भी वे जानते हैं कि यदि सद्दाम हुसैन की सामरिक शक्ति नष्ट नहीं हुई और युद्ध बीच में अमरीका द्वारा हार मान कर बंद हो गया तो स्वयं उन का, सऊदी अरब, मिस्र, सीरिया, जार्डन इत्यादि का अस्तित्व खतरे में पड़ जाएगा. जो व्यक्ति 10 लाख आदमियों को यों ही सनक में मौत के घाट उतार सकता है, वह पश्चिम एशिया में शहंशाह बनने का स्वप्न कैसे छोड़ देगा? विशेषतः जब अमरीका जैसी विश्व शक्ति पीछे हट जाए?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बतलाया जा रहा है. तेल और जगह भी बहुतायत से और सस्ता मिल सकता है.

यह लड़ाई वास्तव में सद्दाम हुसैन को एक नए हिटलर या स्तालिन की तरह संसार का, और जब तक यह स्वप्न पूरा न हो तब तक कम से कम पश्चिम एशिया का, तानाशाह बनने के प्रयत्न को रोकने के लिए है. यदि सद्दाम हुसैन को अभी नहीं रोका गया तो थोड़े दिन बाद सऊदी अरब, ईरान, सीरिया, जार्डन व तुर्की इत्यादि पर कब्जा कर के तेल का बादशाह बन कर, और उस से प्राप्त धन को अस्त्रशस्त्रों में लगा कर संसार का मालिक बनने का स्वप्न देखने लगेगा. इस बीच जो इराकी व अन्य लोग मरेंगे, उन की उसे क्या चिंता है? जहां अब तक 10 लाख मर गए वहां 20 लाख और मर जाएं तो क्या है?

यह भी देखने की बात है कि इन शांति प्रदर्शनकारियों ने जब ईरान इराक युद्ध हो रहा था तो कोई चूं चपड़ नहीं की. चुपचाप मजे लेते रहे. यही बात अमरीका व सऊदी अरब पर भी लागू होती है. पर इन के लिए तो उस समय इराक व ईरान दोनों शत्रु थे और यदि वे आपस में लड़ कर नष्ट हो रहे थे तो इस से बढ़िया क्या बात हो सकती है? राजनीति का तो यही तकाजा है.

*

हमारे नेता लोग हर रोज पंजाब व कशमीर में पाकिस्तान का और उत्तरपूर्वी क्षेत्र में चीन का हाथ होने का रोना रोते रहते हैं. उन का कहना है कि ये दोनों देश बेचारे, गरीब, कमजोर भारत को जड़ से हिलाने की कोशिश कर रहे हैं पर हमारे नेता स्वयं क्या करते हैं?

बरसों तक छिपा कर रखी गई, हर प्रकार से झूठ बोल कर दबाई गई, बात अब सब को मालूम है कि इंदिरा गांधी ने श्रीलंका में तमिलों के गुट लिट्टे को विद्रोह के लिए उकसाया, उसे धन दिया. उस के कार्यकर्ताओं को भारत में बंदूक, गोली और सुरंगों का प्रशिक्षण दिया और फिर श्रीलंका की सरकार का तख्ता पलटने या कम से कम श्रीलंका के उत्तरपूर्व में एक तमिल राज्य कायम करने के लिए प्रोत्साहित किया. उद्देश्य यह था कि श्रीलंका में भारत का प्रभुत्व कायम हो जाए. यह बात दूसरी है कि लिट्टे ने जिस हाथ से खाना खाया उसी पर दांत भी गाड़ दिए और भारत की सेना के छक्के छुड़ा दिए जो उस की रोकथाम करने के लिए श्रीलंका भेजी गई थी.

इंदिरा गांधी के बाद उन के सुपुत्र राजीव गांधी ने अपनी माताश्री की राजनीति को जारी रखा पर अंत में बड़े बे-आबरू हो कर श्रीलंका से लौटना पड़ा और लिट्टे नामक तमिल आतंकवादियों और विघटनकारियों को श्रीलंका सरकार से जूझने के लिए अपने भाग्य पर छोड़ना पड़ा.

अब जब राजीव महाशय सत्ता में नहीं हैं तो उन्हें रोज कोई न कोई शिगूफा चाहिए जिस से वह केंद्रीय व राज्यों की सरकारों को छेड़ते रहें. इसी छेदन क्रिया की एक सुई थी तमिलनाडु की करुणानिधि वाली द्रमुक सरकार.

अब दिल्ली में बैठे राजीव महाशय रोज प्रधान मंत्री चंद्रशेखर और तमिलनाडु केमुख्य मंत्री करुणानिधि की भर्त्सना करने लगे – करुणानिधि की इसलिए कि वह तमिलनाडु में लिट्टे के लोगों को प्रश्रय दे रहे हैं और चंद्रशेखर की इसलिए कि वह करुणानिधि सरकार को बरखास्त क्यों नहीं करते.

इस में कोई शक नहीं है कि भूतपूर्व तमिलनाडु मुख्य मंत्री विगत रामचंद्रन द्वारा सहायता दिए बिना लिट्टे श्रीलंका में इतना बड़ा उपद्रव व विद्रोह खड़ा नहीं कर सकता था. पर रामचंद्रन के पीछे केंद्र में सत्तारूढ माता इंदिरा और पुत्र राजीव भी तो थे. बिना उन की मरजी के रामचंद्रन अकेले क्या कर सकते थे?

इस में कोई मतभेद नहीं है कि लिट्टे की गतिविधियों को भारत की जमीन पर कोई पनाह या जगह नहीं मिलनी चाहिए. पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजीव गांधी की असली मंशा बिदके को बाहर निकालने की नहीं, करुणानिधि को निकाल बाहर करने की थी—करुणानिधि विश्वनाथ प्रताप सिंह के राष्ट्रीय मोरचे के एक सरगना हैं, और फिलहाल राष्ट्रीय मोरचा राजीव कांग्रेस का सब से बड़ा प्रतिद्वंद्वी और शत्रु है.

इसलिए अंत में प्रधान मंत्री चंद्रशेखर को मजबूर कर के तमिलनाडु में करुणानिधि सरकार बरखास्त कर दी गई और राष्ट्रपति शासन लागू कर दिया गया है. तमिलनाडु के राज्यपाल सुरजीतसिंह बरनाला ने कहा है, इस प्रक्रिया में राज्यपाल की हैसियत से उन का कोई हाथ नहीं है. सारा फैसला केंद्र ने किया है, बिना उन से सलाहमशवरा किए. परिपाटी यही है कि किसी भी प्रदेश में राष्ट्रपति का शासन वहां के राज्यपाल की सिफारिश से होता है पर यहां ऐसा कुछ नहीं हुआ.

*

आम चुनावों के फलस्वरूप सत्ता से हटने के बाद भी राजीव गांधी ने राजनीति के दांवपेंच पूरीतरह नहीं सीखे हैं. अभी भी वह कांग्रेस को अपनी पैतृक संपत्ति समझते हैं और उस पर किसी अन्य व्यक्ति की छाया भी नहीं पड़ने देना चाहते.

उन्हें एकछत्र राज चाहिए चाहे वह स्वयं इस कला में बिलकुल बेवकूफ भी हों.

नवंबर 1990 में हुए आम चुनावों में कांग्रेस देश के सारे प्रदेशों में हार गई. सिवाय तीन राज्यों के—आंध्र प्रदेश, कर्नाटक व महाराष्ट्र. इन तीनों जगह जो व्यक्ति मुख्य मंत्री बने वे अपनेअपने राज्यों में काफी दबदबे वाले थे. आंध्र में चेन्ना रेड्डी, कर्नाटक में वीरेंद्र पाटिल और महाराष्ट्र में शरद पवार. अब जब सारे देश में केवल तीन राज्यों में कांग्रेसी राज्य है तो तीनों मुख्यमंत्रियों का आपस में सलाहमशवरा करने के लिए मिलनाबैठना जरूरी हो ही जाता है. बस, यही बात राजीव महाशय को खटक गई. उन्हें लगा ये तीनों उन्हें कांग्रेस के आधिपत्य से हटाने का षड्यंत्र कर रहे हैं. राजीव के मुसाहिबों, दरबारियों ने भी आग को हवा दी.

अब ताबड़तोड़ तिगड़े को हटाओ योजना बनाई गई. पहले वीरेंद्र पाटिल की बारी आई. वह पक्षाघात से बीमार थे, इसलिए उन के विरुद्ध विधायकों को उकसाया गया और राज्यपाल भानुप्रताप सिंह को झमेले में डाल कर वीरेंद्र पाटिल को बरखास्त करा दिया गया.

इस के बाद नंबर आया चेन्ना रेड्डी का. हैदराबाद में धार्मिक दंगों का बहाना ले कर उन्हें भी धता बता दी गई, विधायकों के सामने दोबारा चुनाव कराने का डर दिखा कर.

इन दोनों जीतों से प्रोत्साहित हो कर राजीव ने अब महाराष्ट्र के मुख्य मंत्री शरद पवार पर हाथ डालने की मुहिम चलाई. कुछ मंत्रियों को दिल्ली बुला कर उन्हें आदेश दिए कि शरद पवार के खिलाफ विद्रोह का झंडा उठाओ और नए मुख्य मंत्री के चुनाव की मांग कराओ. इन लोगों ने हुक्म की पाबंदी की, परंतु शरद पवार भी राजीव के षड्यंत्र को बहुत पहले भांप गए थे और उन्होंने अपने अनुयायियों की फौज खड़ी कर ली थी. इसलिए जब राजीव द्वारा शरद को दिल्ली दरबार में हाजिर हो कर इस्तीफा देने का फरमान जारी हुआ तो शरद ने तत्काल अपना इस्तीफा दे दिया. पर साथ में यह भी बतला दिया कि वह और उन के 100 से अधिक साथी विधायक जनता दल में जाने को तैयार बैठे हैं.

अब तो 'शहंशाह' राजीव के पांव तले की मिट्टी खिसक गई और अपना सा मुंह ले कर महाशयजी शरद पवार से गद्दी पर बैठे रहने की मिन्नत करने पर मजबूर हो गए. शरद पवार से खाई पटखनी राजीव को काफी अरसे तक याद रहेगी, अखरती रहेगी.

*

सोवियत संघ के गोरबाचौफ आजकल बहुत द्विविधा व परेशानी में हैं. उन्होंने पेरेस्त्रोइका (पुनर्निर्माण) व ग्लासनोस्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(अगोपनीयता) का नारा लगा कर पिछले पांच वर्षों में सोवियत संघ को सोते हुए से, स्तालिन और कम्यूनिस्ट पार्टी की दिमागी जकड़ से, मुक्त तो कर दिया पर इस मुक्ति से अब वहां स्थिति उन के काबू से बाहर होती जा रही है.

बजाय इस के कि जनसाधारण समझबूझ और संयम से काम ले, लोग इस आजादी का दुरुपयोग कर रहे हैं. घोड़े की लगाम ढीली की गई थी कि वह उस ढील से आराम से भाग सके. पर वह अब ढीली लगाम का फायदा उठा कर पिछले दो पांवों पर खड़ा हो कर सवार को ही गिराने की कोशिश कर रहा है. हर व्यक्ति बेकाबू हो कर काम न करने पर उतारू है और आपाधापी से लगा हुआ है

सोवियत संघ को सब से बड़ा खतरा विभिन्न राज्यों की अलग होने की हवस से है—हर राज्य अपनेआप को सार्वभौम मानने लगा है और स्वतंत्र सेना, मुद्रा व विदेशों से संधियां करने पर तुला है.

इस बिखराव को देख कर गोरबाचौफ को अब पुराने स्तालिनी हथियारों का उपयोग करना पड़ रहा है. कम्यूनिस्ट पार्टी, जो पिछले 70 वर्षों से देश के प्रशासन पर आधिपत्य जमाए हुए थी और जिसे गोरबाचौफ ने हटा दिया था, फिर सेना और गुप्त पुलिस (के.जी.बी.) की सहायता से सिर उठा रही है. गोरबाचौफ बजाय जनतांत्रिक नेता बने रहने के स्तालिन की तरह फरमान जारी कर के स्थिति को संभालने की कोशिश कर रहे हैं.

वास्तव में गलती गोरबाचौफ की ही थी. 70 वर्ष से चली आ रही परिपाटी को एकदम बदलना आसान नहीं होता. जिस प्रकार हाथपांव बंधे व्यक्ति को खुला छोड़ दिए जाने पर वह छटपटाता है और दिशाहीन हो कर इधरउधर भागने लगता है वही हाल सोवियत संघ में हो रहा है.

पिछले पांच वर्षों में उद्योगव्यापार में जो ढील दी गई थी और लोगों को जमा किया धन खर्च करने का खुला मौका दिया गया था उस से एकदम खरीदारी की बाढ़ सी आ गई और हर व्यक्ति चाहे उसे कुछ जरूरत हो या न हो, सामान खरीदने पर उतारू हो गया. बजाय राशन के बाजार खोल दिया गया तो आवश्यक वस्तुओं के दाम बहुत तेजी से बढ़ गए और मांग की पूर्ति असंभव हो गई. इस को संभालने के लिए सोवियत संघ ने विदेशों से बड़ी मात्रा में ऋण भी लिए. यानी उधार सामान मंगाया पर वह शीघ्र ही समाप्त हो गया. यहां तक कि मास्को जैसे बड़े शहर के बाजार में खाना तक नहीं रहा. अंत में गोरबाचौफ को 50 व 100 रूबल (रूसी सिक्का) के नोटों को रद्द करना पड़ा है और बैंकों में जो रकम जमा थी उस में से केवल 500 रूबल हर महीने निकालने की अनुमति दी गई है. इस प्रकार करोड़ों लोगों की बरसों की बचत बेकार हो गई है और इस से उत्पन्न असंतोष को दबाने के लिए फौज और पुलिस को छूट दी गई है कि वह जहां चाहे, जिस समय चाहे, घरों व व्यावसायिक स्थानों में घुस कर तलाशी ले सकती है.

जनता की बेसब्री से और स्थानीय राजनीतिबाजों की आपाधापी से एक बहुत बड़ी क्रांति असफलता के कगार पर आ खड़ी हुई है. गोरबाचौफ, जो बीसवीं सदी के उत्तरार्ध का मसीहा माने जाने लगा था अब फिर तानाशाही की ओर बढ़ रहा है—वह तानाशाही जिस की ओर गोरबाचौफ के विदेश मंत्री शेवरनादजे ने कुछ दिन पहले जिक्र करते हुए अपने पद से इस्तीफा दे दिया था.

इस फौजी, पुलिस और कम्यूनिस्ट पार्टी की दोबारा जकड़ से एक बड़ा असर बाहरी वित्तीय सहायता पर भी पड़ेगा. जरमनी और अमरीका से जो धन/सामान उधार मिलने वाला था वह अब बंद हो जाएगा और शायद शीतयुद्ध फिर शुरू हो जाए. वैसे चाहे इस की संभावना कम ही है क्योंकि सोवियत व कम्यूनिस्टी समाज के खोखलेपन का कच्चा चिट्ठा अब खुल चुका है. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खाड़ी युद्ध के

खाड़ी युद्ध में इराक की जीत की उम्मीद न किसी को थी, न है. लेकिन सद्दाम के नित नए पैंतरों ने न केवल अमरीका तथा उस के मित्र देशों का यह आकलन गलत साबित कर दिया कि उसे कुछ ही दिनों में पराजित किया जा सकता है बल्कि इस युद्ध को सद्दाम ने कुछ ऐसे नए आयाम दिए हैं जो अमरीका के गले में हड्डी की तरह अड़ गए हैं.

लेख • सुरेंद्र द्विवेदी

खाड़ी युद्ध अपनी तेजी पर है, परंतु युद्ध का चरमबिंदु अभी आना बाकी है. इराक और उस के तानाशाह राष्ट्रपति सद्दाम हुसैन की प्रबल सैन्य शक्ति को तबाह करने की दिशा में अमरीका और उस की सहयोगी सेनाओं के विनाशकारी हमले जारी हैं. लगभग एकपक्षीय इस युद्ध में सद्दाम हुसैन घुटने टेकने के बजाय अमरीका को एक लंबे और तकलीफदेह युद्ध में घसीटने के लिए हर दांवपेंच का इस्तेमाल कर रहे हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

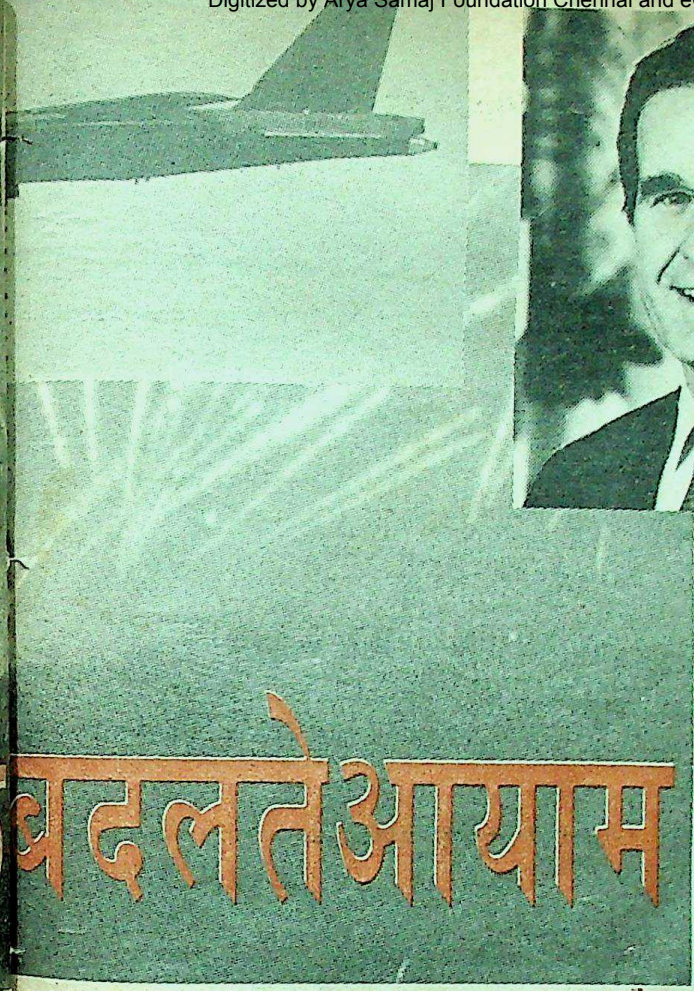

बदलते आयाम

इस मामले में युद्धरत पश्चिमी देशों का यह आकलन गलत साबित हो गया है कि आधुनिक सैन्य शक्ति और अचूक मिसाइलों के द्वारा हफ्तों में इराक को ध्वस्त कर के युद्ध जीता जा सकता है. पश्चिमी देशों की असीम संहारक क्षमता के मुकाबले इराक की प्रतिरोधक क्षमता का नए सिरे से मूल्यांकन करना शुरू हो गया है. यही कारण है कि संयुक्त सेनाएं इराक के खिलाफ हवाई हमलों के साथ जमीनी युद्ध शुरू करने से हिचक रही थीं, जो इराक अधिकृत कुवैत को मुक्त कराने का कारगर तरीका है.

युद्ध के प्रेक्षकों में कोई भी यह नहीं मानता है कि इस युद्ध में राष्ट्रपति सद्दाम हुसैन के विजयी होने की कोई संभावना है, फिर भी सद्दाम हुसैन के हारने, जीतने अथवा उन की यथास्थिति बरकरार रहने के खाड़ी क्षेत्र, पश्चिम एशिया सहित विश्व के अनेक देशों के लिए काफी व्यापक परिणाम हो सकते हैं. प्याज के छिलकों के समान खाड़ी युद्ध के इतने परत दर परत हैं कि अमरीका उन्हें उधेड़ना नहीं चाहता है जबकि इराक इस युद्ध के एकएक छिलके को अलगअलग कर के उसे धार्मिक, आर्थिक, राजनीतिक और क्षेत्रीय आयाम प्रदान करने की भरसक कोशिश कर रहा है. यह तभी संभव है जब युद्ध जल्दी से समाप्त होने की बजाय लंबे समय तक चले.

इराक द्वारा अब तक अपनाई गई रणनीति आक्रामक होने के बजाय सुरक्षात्मक तथा भड़काने वाली अधिक है जिस से संयुक्त सेनाओं को थकाया जा सके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और विश्व जनमत को अमरीका के खिलाफ उभारा जा सके.

युद्ध को धार्मिक स्वरूप और उसे बड़ा आकार देने के उद्देश्य से इराक ने यहूदी देश इजराइल पर मिसाइलों से हमला किया है. पश्चिम एशिया में इजराइल ऐसा देश है जिस के प्रति मुसलिम देशों को जातीय नफरत है और उस का अस्तित्वमात्र ही अरब के लिए एक बड़ी चुनौती बना हुआ है. इराक हमलों का प्रतिरोध करते हुए यदि इजराइल जवाबी सैनिक काररवाई के लिए तत्पर हो जाए तो सद्दाम हुसैन को इस युद्ध को जीतने अथवा यथास्थिति में बरकरार रहने के ईसाईयहूदी बनाम मुसलिम युद्ध बनाने में सफलता मिल जाएगी. तब अमरीका का साथ देने वाली अरब सेनाएं बिखर जाएंगी और संयुक्त सेना कमान में भी दरार पड़ने का खतरा

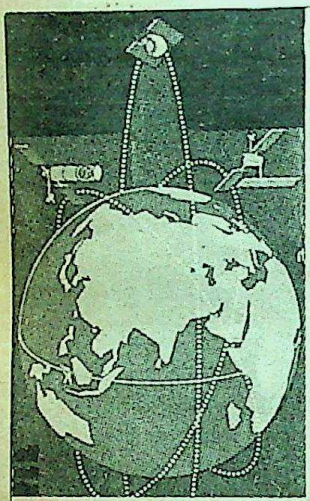

जासूसी उपग्रह

अमरीका ने खाड़ी युद्ध में इराक के महत्त्वपूर्ण सैनिक और असैनिक ठिकानों का पता लगाने और उन पर अचूक हमले करने के लिए निगरानी और जासूसी करने वाली उपग्रह प्रणाली का खूब उपयोग किया है. अगस्त 1990 में इराक द्वारा कुवैत को हड़पने के बाद से अमरीका के जासूसी उपग्रह लगातार युद्ध की तैयारी में इराकी सैन्य गतिविधियों पर निगरानी रख रहे थे. के. एच. 11 'की होल्ड' नामक तीन अमरीकी निगरानी उपग्रह इस समय अंतरिक्ष में चक्कर काट रहे हैं जो कम से कम दिन में तीन बार इराक के ऊपर से गुजरते हैं. इन्हीं उपग्रहों के द्वारा अमरीका को इराकी सेना के कुवैत की ओर बढ़ने की पहली जानकारी मिली थी.

इस के अलावा कई अमरीकी संचार उपग्रह हिंद महासागर और अटलांटिक सागर के ऊपर सक्रिय हैं. इन संचार उपग्रहों में कम से कम दो रक्षा संचार प्रणाली से जुड़े हुए हैं जिन को सऊदी अरब में स्थित भू केंद्रों से जोड़ा गया है. ये संचार उपग्रह अमरीकी सेनाओं की तैनाती और संचालन में मदद करते हैं.

अंतरिक्ष में स्थित अमरीकी इलेक्ट्रोनिक जासूसी उपग्रह रेडियो और टेलीफोन पर हो रही बातचीत की जासूसी भी कर रहे हैं. इन उपग्रहों की संख्या कम से कम 10 बताई जाती है. इस के साथ ही सैन्य गतिविधियों के बारे में पूर्ण सूचना देने के लिए एक दो उपग्रह पश्चिम एशिया में सक्रिय हैं. लंबी दूरी की मार करने वाले बैलिस्टिक मिसाइलों के दागे जाने की पूर्व सूचना इन उपग्रहों से मिल सकती है.

अपनी कार्यकुशलता से परिपूर्ण उपग्रह प्रणाली न केवल इराकी सैनिक गतिविधियों पर निगरानी रख रही है वरन संयुक्त सेना को प्रभावी संचार सहायता सुलभ कराती है. युद्ध के प्रथम दिन ही 17 जनवरी को तड़के इन्हीं इलेक्ट्रोनिक क्षमताओं के बल पर ही संयुक्त सेना इराकी संचार राडार और प्रतिरोधक क्षमता को ध्वस्त करने में सफल हो सकी. इस के लिए आधुनिक इलेक्ट्रोनिक प्रणाली से इराकी राडार और निगरानी रक्षा उपकरणों को तकनीकी दृष्टि से जाम कर दिया गया था कि जिस से संयुक्त सेना के लड़ाकू विमान बेरोकटोक प्रभावी बमबारी करने में सफल रहे. इराक के पास इस का कोई जवाब नहीं था.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इराकी मिसाइल से क्षतिग्रस्त तेल अवीव का एक मकान : युद्ध में इजराइल को जबरदस्ती घसीटने की इराकी कोशिश.

पैदा हो जाएगा.

यह ऐसा खतरा है जिसे अमरीका और उस के सहयोगी देश उठाने के लिए तैयार नहीं हैं. इसी कारण पश्चिमी देशों ने इजराइल से इराक के खिलाफ जवाबी काररवाई न करने का आग्रह किया और बदले में उस को काट करने वाली 'पेट्रियट' मिसाइलें सुलभ कराई हैं और हमलों से होने वाली संपूर्ण क्षति की पूर्ति करने की गारंटी दी है.

इस के अलावा इजराइल के युद्ध में कूदने की स्थिति में इराक अधिकृत कुवैत की स्वतंत्रता का मामला खटाई में पड़ सकता है और अमरीका तथा इजराइल के खिलाफ यह लड़ाई एक धार्मिक और जातीय स्वरूप ग्रहण कर सकती है, जिसे अमरीका नहीं चाहता है.

इस के प्रारंभिक लक्षणों के रूप में पाकिस्तान, भारत, ईरान, बंगलादेश सहित अनेक मुसलिम देशों और पश्चिमी देशों में अमरीका के खिलाफ और सद्दाम के समर्थन में प्रदर्शन हो रहे हैं. दिल्ली के निकटवर्ती शहर गाजियाबाद में गणतंत्र दिवस के अवसर पर इस प्रकार के प्रदर्शन को ले कर व्यापक हिंसक संघर्ष की नौबत आ गई. पाकिस्तान और बंगलादेश में तो खाड़ी युद्ध में इराक के खिलाफ भेजी गई सैनिक टुकड़ियों को वापस बुलाने की मांग जोर पकड़ रही है.

इस प्रकार मुसलिम तथा गैर मुसलिम देशों में अमरीका के विरुद्ध और सद्दाम हुसैन के खिलाफ तापमान बढ़ रहा है. यह वही स्थिति है जिसे इराक संपूर्ण मुसलिम वर्ग में पैदा करना चाहता है. इस की अंतिम परिणति विभिन्न देशों में, विशेषकर अमरीका और उस के समर्थक देशों में आतंकवादी घटनाओं की शुरुआत हो सकती है. इराक ऐसी घटनाओं के लिए उकसा भी रहा है.

राष्ट्रपति सद्दाम हुसैन ने कुवैत और फिलस्तीनी मामले पर विश्व की महाशक्ति अमरीका और उस के समर्थक देशों से टक्कर ले कर दुनिया के तमाम मुसलिम देशों में नई धार्मिक बंधुत्व की चेतना पैदा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर दी है और उन के लिए राष्ट्रपति सद्दाम हुसैन नए मुसलिम शक्ति पुंज के रूप में उभरे हैं. ऐसी स्थिति में खाड़ी युद्ध में सद्दाम की हार अथवा जीत के दूरगामी परिणाम होंगे और वह अरब देशों के वर्तमान सत्ता केंद्रों में परिवर्तन की संभावनाएं समेटे हुए हैं. इस के परिणामस्वरूप मुसलिम देशों में नए प्रकार के समीकरण भी स्थापित हो सकते हैं.

इस के साथ ही मोरक्को से ले कर बंगलादेश तक के मुसलिम देशों में अमरीका के खिलाफ एक नए प्रकार का आक्रोश पैदा हो सकता है जो किन्हीं परिस्थितियों में ईसाई बनाम मुसलिम का स्वरूप ग्रहण कर सकता है. आज तो सीरिया, मिस्र, तुर्की जैसे अनेक देश हैं जो अमरीका के साथ हैं परंतु युद्ध के बाद इन की स्थिति में भी परिवर्तन आ सकता है, यदि यह संघर्ष धार्मिक उन्माद का आकार ले ले.

54 वर्षीय सद्दाम हुसैन सन 1979 से इराक के सर्वेसर्वा और तानाशाह हैं. सामान्य निर्धन परिवार में जन्मे सद्दाम ने 1968 से वहां की सत्तारूढ बाथ पार्टी की कमान संभाल रखी है. एक महत्त्वाकांक्षी व्यक्ति के रूप में उन्होंने 1970 के पहले से ही इराक की सैनिक क्षमता को मजबूत बनाने के प्रयास शुरू कर दिए थे.

टामहाक क्रूज प्रक्षेपास्त्र

खाड़ी युद्ध में संयुक्त सेना द्वारा इराक की सैनिक क्षमता को नष्ट करने के लिए युद्धपोतों और पनडुब्बियों के द्वारा सैकड़ों नियंत्रित क्रूज मिसाइल दागे गए. 2,800 किलोमीटर दूरी तक मार करने वाले टामहाक क्रूज मिसाइल राडार प्रणाली के नीचे उड़ानें भरते हैं. इन मिसाइलों का उपयोग इराक के परमाणु, रासायनिक और जैव हथियारों की क्षमता को नष्ट करने के लिए किया गया. ये मिसाइल अधिकतर खाड़ी में तैनात युद्धपोतों से छोड़े गए थे, जो काफी हद तक सफल भी रहे. अब तक ऐसे करीब 300 मिसाइलों का प्रयोग किया जा चुका है. युद्ध में उन का यह पहला प्रयोग है.

एफ- 117 ए गुप्त बमवर्षक

खाड़ी युद्ध में महत्त्वपूर्ण एवं कारगर भूमिका अदा करने वाला 'स्टील्थ फाइटर' नामक लड़ाकू विमान अपने आकार तथा निर्माण धातु के कारण राडार प्रणाली पर दिखाई नहीं पड़ता है. अचूक बमबारी करने के लिए प्रसिद्ध यह लड़ाकू विमान चुपचाप शत्रु की सीमा में काफी भीतर तक घुस कर मार करने में सक्षम है.

युद्ध की पहली रात में ही इन विमानों ने अपनी अचूक बमबारी से इराक के कमान नियंत्रण केंद्र तथा स्कड मिसाइल केंद्रों को नष्ट करने में सफलता पाई थी. प्रथम दौर में करीब 20 विमानों का उपयोग किया गया था.

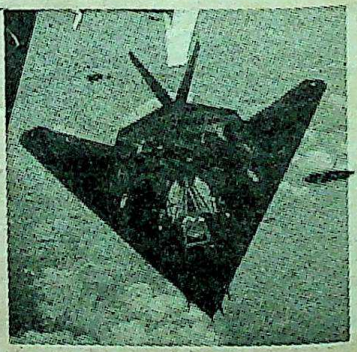

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बगदाद में इराकी महिलाएं हाथ में ए.के.-47 एसाल्ट राइफल व अन्य हथियार लिए अमरीका विरोधी प्रदर्शन करते हुए.

की इसी महत्त्वाकांक्षा और विश्व जनमत की निरादरपूर्ण अवहेलना का परिणाम है. फिलस्तीन के मामले को तो केवल समझौता वार्त्ता को उलझाने के लिए बाद में कुवैत के साथ जोड़ दिया गया है.

राष्ट्रपति सद्दाम हुसैन ने खाड़ी और

सन 1979 में सत्ता हथियाने के बाद उन्होंने सेना का विस्तार किया और उसे हथियारों से सज्जित करने के लिए सोवियत संघ के साथ दोस्ती का हाथ बढ़ाया. इराकी सेना में सोवियत विमान, टैंक और मिसाइलें हैं जो पश्चिमी सेनाओं के हमलों का जवाब दे रही हैं. सत्ता के संघर्ष में उन्होंने सेना में और सेना के बाहर अपने विरोधियों का सफलतापूर्वक सफाया कर दिया. फलस्वरूप आज वह इराक के निर्द्वंद्व शासक हैं.

पश्चिम एशिया और अरब में इराक को एक अद्वितीय सैनिक शक्ति बनाने का सपना देखने वाले सद्दाम हुसैन ने तेल को सैनिक शक्ति और अपनी महत्त्वाकांक्षा का आधार बनाया. आठ वर्ष तक ईरान के साथ खूनी संघर्ष के बाद इराक ने पिछले वर्ष 2 अगस्त को छोटे से पड़ोसी देश कुवैत को हड़प लिया. इस के पीछे उन का मुख्य उद्देश्य कुवैत के तेल क्षेत्र पर कब्जा करना था जिस से वह इस क्षेत्र का बड़ा तेल उत्पादक देश बन कर अपनी सैनिक क्षमता को न केवल बरकरार रख सकें वरन उस के बल पर अरब देशों पर अपना सिक्का जमा सकें.

वर्तमान खाड़ी युद्ध राष्ट्रपति सद्दाम

पेट्रियट मिसाइल

यह एक ऐसी आधुनिक मिसाइल है जो शत्रु के हमलावर विमान और मिसाइलों के खिलाफ तुरंत कारगर जवाबी कारवाई के लिए उपयोग में लाई जाती है तथा जमीनी सैनिक प्रतिष्ठानों और महत्त्वपूर्ण स्थलों को सुरक्षा प्रदान करती है. ये मिसाइलें रिमोट कंट्रोल प्रणाली से दागी जाती हैं और अपने अचूक निशाने के लिए प्रसिद्ध हैं. इन मिसाइलों ने इराक की प्रभावी स्कड मिसाइलों का युद्ध में मुकाबला किया है. अमरीका ने इन्हें इजराइल को अपनी सुरक्षा के लिए सुलभ कराया है तथा सऊदी अरब में अनेक सैनिक और असैनिक ठिकानों पर लगाया है.

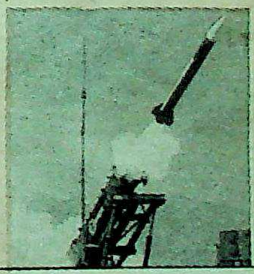

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पश्चिम एशिया में इराक का निर्विवाद वर्चस्व कायम करने के लिए इतने बड़े युद्ध का खतरा उठा कर अपने जीवन का शायद आखिरी दांव खेला है.

हवाई हमलों में इराक के भारी विनाश के बावजूद सद्दाम युद्ध को नित नए आयाम देने की कोशिश कर रहे हैं. ऐसी अवस्था में सद्दाम अमरीका और उस की सहयोगी सेनाओं को पाठ पढ़ाने के लिए किसी भी सीमा तक जा सकते हैं.

इस दिशा में पहले विकल्प के रूप में इराक ने खाड़ी में लाखों बैरल तेल बहा कर संयुक्त सेनाओं के लिए आग, प्रदूषण और पीने के पानी की कमी का खतरा पैदा कर दिया है. पराजय की संभावनाओं और विनाश के दौर में सद्दाम हुसैन गैरपरंपरागत रासायनिक और जैव हथियारों का भी उपयोग कर सकते हैं. अंतिम विकल्प के रूप में सद्दाम को परमाणु हथियारों के इस्तेमाल की जरूरत पड़ सकती है, परंतु यह सब इराक और खाड़ी देशों के विनाश का ही रास्ता बनेगा. खाड़ी युद्ध के इस भीषण तबाही के दौर में पहुंचने के पूर्व ही अमरीका इराक और उस के तानाशाह सद्दाम की

सद्दाम का सुरक्षित आवास

एक जरमन समाचारपत्र के अनुसार राष्ट्रपति सद्दाम हुसैन अमरीकी बमबारी से बचने के लिए अपने बगदाद स्थित राष्ट्रपति भवन के नीचे जरमन तकनीक से बने सभी सुखसुविधाओं से संपन्न और परमाणु अस्त्रों से अभेद्य तलघर में छिपे हुए हैं.

जब बगदाद के आसमान में आग के गोले फटते हैं और शहर बमों तथा राकेटों के विस्फोटों से कांपता रहता है तो इराकी तानाशाह पर उन का कोई असर नहीं होता. वह तो अपने सरकारी महल के ठीक नीचे स्थित परमाणु बम की मार से सुरक्षित बंकर में चैन से छिपे रहते हैं.

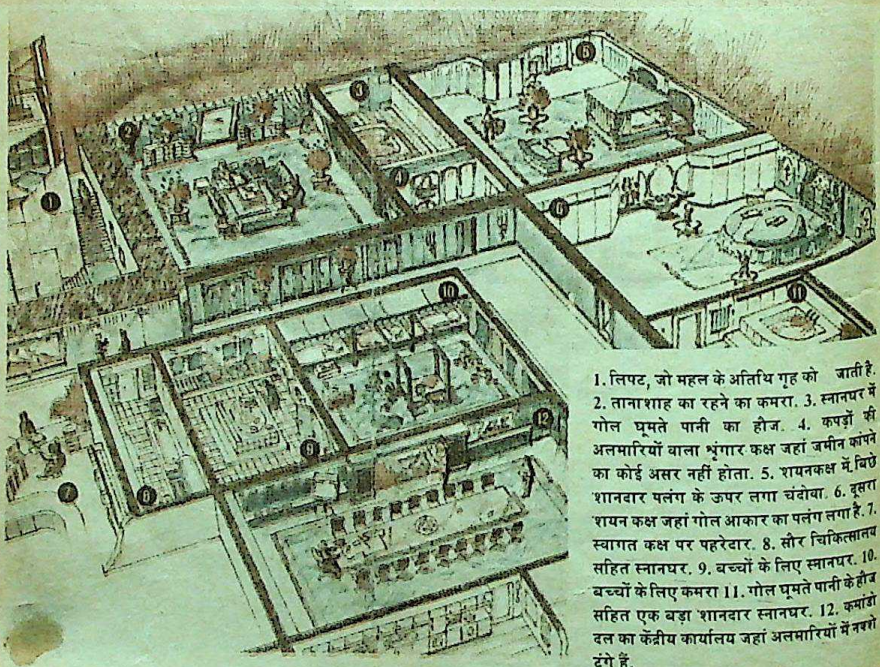

1. लिफ्ट, जो महल के अतिथि गृह को जाती है. 2. तानाशाह का रहने का कमरा. 3. स्नानघर में गोल घूमते पानी का हौज. 4. कपड़ों की अलमारियों वाला श्रृंगार कक्ष जहां जमीन कांपने का कोई असर नहीं होता. 5. शयनकक्ष में बिछे शानदार पलंग के ऊपर लगा चंदोवा. 6. दूसरा शयन कक्ष जहां गोल आकार का पलंग लगा है. 7. स्वागत कक्ष पर पहरेदार. 8. सौर चिकित्सालय सहित स्नानघर. 9. बच्चों के लिए स्नानघर. 10. बच्चों के लिए कमरा 11. गोल घूमते पानी के हौज सहित एक बड़ा शानदार स्नानघर. 12. कमांडो दल का केंद्रीय कार्यालय जहां अलमारियों में नक्शे टंगे हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कमर पूरी तरह तोड़ देना चाहता है.

सद्दाम हुसैन की पराजय, जो लगभग निश्चित है, के परिणाम भी काफी दूरगामी और भयानक हो सकते हैं. इराक की विनाशकारी हार के बाद संपूर्ण पश्चिम एशिया पर अमरीका और उस के मित्र यहूदी देश इजराइल का दबदबा बढ़ जाएगा तथा उस को चुनौती देने वाली फिलहाल कोई शक्ति नहीं बचेगी तथा विश्व के करीब 40% तेल स्रोतों पर उस का प्रभाव बढ़ जाएगा. इस से तेल की कीमतों को निर्धारित करने तथा गैर तेल उत्पादक [illegible] अपना जमाने की प्रवृति को बढ़ावा मिलेगा. अमरीकी वर्चस्व के भीतर इस क्षेत्र के कई देश जैसे ईरान, सीरिया, सऊदी अरब और मिस्र क्षेत्रीय शक्ति बनने का सपना देख सकते हैं किंतु अमरीका भी इन्हें एक सीमा के बाद बढ़ने की इजाजत नहीं दे सकेगा, क्योंकि बदलते क्षेत्रीय समीकरणों में उन पर पूरी तरह से विश्वास करना कठिन होगा. ईरान और अमरीका के बीच अविश्वास का माहौल पहले से ही पनप रहा है. वर्तमान युद्ध में तटस्थ रहने के बाद भी ईरान नहीं चाहता है कि अमरीकी

समाचारपत्र के अनुसार, जरमन कंपनियों ने, जिन में से एक म्यूनिख में स्थापित है, इस बंकर का डिजाइन तैयार किया था और कई वर्षों में जा कर इस के निर्माण और सज्जा का काम पूरा किया था.

इस बंकर पर करोड़ों मार्क–10 करोड़ डालर से अधिक लागत आई है जिस का बोझ उन आम इराकी लोगों को उठाना पड़ा है जो जिंदा बचने के लिए पुराने किस्म के तहखानों में छिपे बैठे हैं.

जरमन राजदूतावास और दजला (टिगरिस) नदी से थोड़ी ही दूर जामिया सड़क पर स्थित यह बंकर अमरीकी बमों की मार से ध्वस्त हो चुके महल के नीचे है. रिपोर्ट में कहा गया है कि महल से 18 मीटर नीचे विनाश का कोई संकेत नहीं है क्योंकि उत्कृष्ट जरमन प्रौद्योगिकी से निर्मित यह बंकर राष्ट्रपति हुसैन को मौत से बचा रहा है.

बंकर का क्षेत्रफल 1800 वर्ग मीटर है. इस की दीवारें, छत और नींव दोदो मीटर मोटी हैं और अधिक मजबूती के लिए विशेष किस्म की कंकरीट से बनाई गई हैं. इस के दरवाजे 30 सें.मी. मोटी प्रबलित स्टील कंकरीट के बने हैं और इस में पहुंचने के लिए जरमनी में बनी लिफ्टें लगी हुई हैं.

इस के भंडार कक्ष भोजन तथा दवाओं से छत तक भरे हुए हैं. और वहां 25 आदमी तक एक साल से भी अधिक समय तक निश्चित हो कर रह सकते हैं.

यह बंकर 300 डिगरी सेल्सियस तक ताप बरदाश्त कर सकता है और परमाणु विस्फोट से इस में मामूली सी कंपकंपी आ सकती है. यह संपूर्ण कक्ष रोलिंग बेयरिंग प्रणाली पर आधारित है और 60 सें.मी. तक डोल सकता है जिस से इस को दबाव तरंगों से क्षति नहीं पहुंच सकती.

इस तलघर में नलिकाओं तथा फिल्टरों के माध्यम से ताजा हवा आती है. यहां तक कि उस में शौचालयों को साफ करने के लिए भेजा जाने वाला पानी भी खासतौर से साफ कर के भेजा जाता है ताकि किसी प्रकार के जैविक या रासायनिक तत्त्व उस में न घुस सकें.

इस तलघर की साजसज्जा शानदार है. वहां एक आवास कक्ष का फर्नीचर उच्च कोटि के चमड़े से बना है जिस की कुछ चीजें फ्रांसीसी डिजाइन पर बनी हैं.

आवास कक्ष के पास ही एकतरण ताल है जिस के साथ ही कपड़े बदलने की जगह है.

सद्दाम के शयनकक्ष में एक चार खंभों वाला पलंग बिछा है जिस पर लाल रेशमी चंदोवा तना है. इसी कक्ष में रसोईघर भी है जिस में माइक्रोवेव डिशवाशर और वाशिंग मशीन लगी है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सेनाएं खाड़ी के चौकीदार के रूप में अस्त्र क्षेत्र में तैनात रहें. इराक के विनाश के बाद ईरान की एक क्षेत्रीय शक्ति बनने की संभानाएं बन रही हैं.

इस के अलावा इराक की पराजय के बाद सऊदी अरब, ईरान और पाकिस्तान का एक नया समीकरण उभर सकता है. यह नई सांठगांठ भारत के लिए भी कई समस्याएं खड़ी कर सकती है क्योंकि मुसलिम कट्टरवाद के बहाव में वे भारत की हेठी करने से नहीं चूकेंगे. ऐसी स्थिति में भारत को भी खाड़ी में किसी शक्तिशाली मित्र की तलाश करनी होगी.

अब तक खाड़ी में भारत, इराक, जोर्डन और सोवियत संघ के बीच मैत्रीपूर्ण तालमेल रहा है लेकिन कुवैत को हड़पने के बाद भारत को इराक का समर्थन करना मुशकिल हो गया है. यही कारण है कि भारत की वर्तमान सरकार ने खाड़ी युद्ध के बारे में जो रुख अपनाया है यह नेहरू काल से चली आ रही खाड़ी नीति से मेल नहीं खाता है. इसी कारण सरकार समर्थक कांग्रेस पार्टी ने सरकार की नीति को अमरीकापरस्त नीति बताया है.

सोवियत संघ के अमरीका की प्रतिद्वंद्वी बड़ी शक्ति के रूप में मैदान से हटने तथा इराक के वर्तमान विनाशकारी रूप से पश्चिम एशिया के शक्ति संतुलन में बड़ी तेजी से बदलाव आया है. जिस के कारण अमरीका का इराक पर खुला विनाशक हमला करने का हौसला बढ़ा है.

भारत को भी बदली हुई परिस्थितियों में राष्ट्रीय हितों के अनुरूप अपनी खाड़ी नीति में तालमेल बैठाने की जरूरत होगी. अर्थात युद्ध में संयुक्त सेनाओं की विजय से

(शेष पृष्ठ 182 पर)

बी-52 बमवर्षक

इराक के खिलाफ भारी बमबारी के लिए बी-52 बांबरों का खुल कर प्रयोग किया गया है. इस लड़ाकू विमान द्वारा चालक सुरक्षित स्थान से निर्धारित लक्ष्य पर बम गिरा सकता है. नियंत्रित लेजर प्रणाली और टीवी कैमरा प्रणाली से सज्जित होने के कारण इन विमानों का उपयोग अंधेरे में हमलों के लिए भी किया जाता है.

इलेक्ट्रोनिक अवरुद्धता

इराकी राडार प्रणाली को बेअसर करने के लिए अमरीकी सेनाओं द्वारा इस बार अति आधुनिक जैमिंग प्रणाली का प्रयोग किया गया है. इस के कारण इराकी राडार प्रणाली कारगर साबित नहीं हो सकी और बगदाद के ऊपर हमला करने वाले विमानों का उन की विमानरोधी गनें और मिसाइलें कुछ भी नहीं बिगाड़ सकीं और हमलावर लड़ाकू विमान अपने हवाई अड्डों पर सुरक्षित लौटते रहे.

खाड़ी युद्ध में सेना

सेना	
अमरीका और सहयोगी देश	6.76 लाख
इराक	10.35 लाख
टैंक	
अमरीका और सहयोगी देश	4,368
इराक	5,500
युद्धपोत	
अमरीका और सहयोगी देश	149
इराक	15
लड़ाकू विमान	
अमरीका और सहयोगी देश	2,500
इराक	689

टिप्पणी: खाड़ी युद्ध में अमरीका के नेतृत्व में 28 देशों की सेनाएं इराक के खिलाफ मोरचा ले रही हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सद्दाम की कहानी करीम की जुबानी

बगदाद में कमान केंद्र की दीवारें कुवैत के नक्शों से ढकी हुई थीं. सद्दाम हुसैन अपने नजदीकी सलाहकारों से घिरा हुआ था. उन में उस का साला/बहनोई यासीन और भतीजा अबद हम्मूद भी शामिल थे.

जब इराकी फौजें शेख के इलाके में घुसपैठ कर रही थीं, सद्दाम हुसैन '19 वें सूबे' को हड़पने की योजना को अंतिम रूप दे रहा था.

बनात की मेज के दूसरे सिरे से इराकी स्वास्थ्य मंत्री रैयद हुसैन ने अचानक मानो उस सुखमास के गुब्बारे में सूई चुभा दी. उस ने धीमी किंतु कांपती हुई आवाज में कहा, "हुजूरे आला, क्या हमें पक्का भरोसा

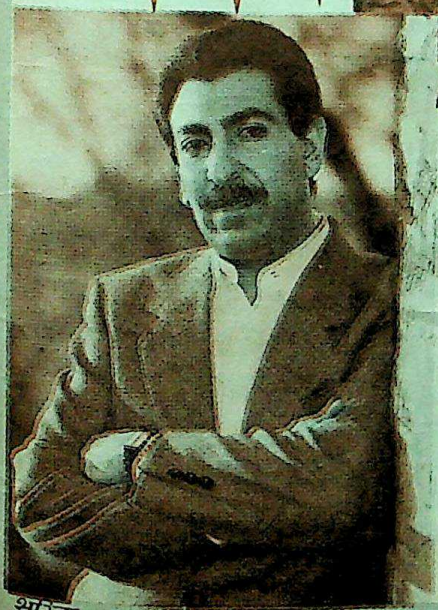

इराकी राष्ट्रपति सद्दाम हुसैन : दूसरा हिटलर बनने की कोशिश (ऊपर) करीम अब्दुल्लाह : संदेह के घेरे में आने के बाद जान बचा कर भाग जाने में सफल (बाएं).

है कि यह तजवीज कारगर हो सकती है?"

सद्दाम ने स्वास्थ्य मंत्री को अपने साथ पास के कमरे में चलने का इशारा किया. पांच गोलियां चलने की आवाज सुनाई दी. रैयद की लाश को ठिकाने लगाने का हुक्म दे कर सद्दाम अपनी कुरसी पर आ बैठा और डर के मारे पीले पड़े चेहरों वाले मंत्रियों से फिर बातें करने लगा.

तीन दिन बाद, सवेरे 5 बजे सद्दाम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्व शांति की धज्जियां उड़ाने वाला राष्ट्रपति सद्दाम हुसैन इराक व अन्य सुन्नी मुसलिम देशों में चाहे कितना ही लोकप्रिय क्यों न हो, वास्तव में वह इतना क्रूर और निर्मम है कि अपनी महत्त्वाकांक्षा की पूर्ति के लिए वह कुछ भी कर सकता है. प्रस्तुत है उसी के भूतपूर्व अंगरक्षक करीम अब्दुल्लाह से उस की लोमहर्षक कहानी.

बगदाद के अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे के पास स्थित अपने किलेनुमा फार्म में 'काजयत अल-मुकासिब' नामक अपने निजी निवास से एक गुप्त सुरंग के जरिए अपने व्यक्तिगत हेलीकाप्टर की ओर तेजी से कदम बढ़ा रहा था. वह उस व्यक्ति से मिलने जा रहा था जिस के देश के वजूद को उस ने दुनिया के नक्शे से मिटाने का पक्का इरादा कर लिया था. वह व्यक्ति था कुवैत का अमीर.

इराकी सैन्य पंक्ति के पीछे हेलीकाप्टर से उतरते ही उसे पता चला कि अमीर तो भाग गया. उस ने तुरंत 66 ब्रिगेड के स्टाफ कर्नल को बुलाया जिसे कुवैत के अमीर को पकड़ने का काम सौंपा गया था. इस कमांडर को अपनी असफलता का स्पष्टीकरण देने के लिए ज्यादा देर जिंदा नहीं रहना पड़ा.

ऐसी कहानियां अलबत्ता नई नहीं हैं. पश्चिमी गुप्तचर्या एजेंसियां इन्हें अकसर सुनती रही हैं और सुनने के भूखे पश्चिमी पत्रकारों को आगे सुनाती रही हैं.

नई और वास्तव में उल्लेखनीय बात तो यह है कि पहली बार एक ऐसा व्यक्ति यह सब सुनाने के लिए सामने आया है जिस ने खुद अपनी आंखों से यह सब होते देखा है.

यह व्यक्ति है 32 वर्षीय करीम अब्दुल्ला अल-जब्बूरी जो बगदाद से भागा हुआ एक कुशल इंजीनियर है. हट्टाकट्टा, गठीले बदन वाला यह जवान अपनेआप को अति महत्त्वपूर्ण व्यक्ति मानता है क्योंकि वह अभी थोड़े दिन पहले तक सद्दाम हुसैन का व्यक्तिगत अंगरक्षक था.

पिछले कुछ दिनों में इराकी नेता के बारे में कई करोड़ शब्द लिखे जा चुके हैं. उन में से बहुत सी बातों की, इस युद्ध की घटनाओं की तरह, आज तक पुष्टि नहीं हो पाई है. तथापि करीम इराकी तानाशाह को बहुत नजदीक से 'जानता' है.

करीम का कहना है कि वह लगभग चार साल तक पिस्तौल और कलाश्निकौफ से सुसज्जित हो कर छाया की तरह तानाशाह सद्दाम के साथ रहा. सद्दाम इराक में या पश्चिम एशिया में जहां कहीं भी जाता करीम रात को उस के शयनकक्ष की चौकीदारी करता और सवेरे उस के साथ ही नाश्ता करता (सद्दाम नाश्ते में ऊंटनी का दूध अवश्य लेता है जो दूरदराज के रेगिस्तानी इलाके से हेलीकाप्टर द्वारा मंगवाया जाता है).

सद्दाम का भाई बरजन अलताक्रिती करीम का हाकिम था. वह कुछ उन विशेषाधिकार प्राप्त सुरक्षाकर्मियों में से था जिन्हें सद्दाम की सुरक्षा का भार सौंपा गया था. करीम को गुप्त खौफनाक कामों को अंजाम देने का काम सौंपा गया था, जैसे किसी की गिरफ्तारी की योजना बनाना, षड्यंत्र रचना, हत्या करना आदि. वह कहता है कि इन में से कुछ हत्याएं तो खुद उस ने अपने हाथ से की थी.

करीम ने सद्दाम के क्रूर एवं आतंकपूर्ण शासन का बड़ी बारीकी से ब्योरा दिया और अपने तानाशाह के दिमाग का भीतरी कोनाकोना झांकने में सहयोग दिया.

करीम ने सद्दाम की अपार धनदौलत और ऐशोआराम का भी ब्योरा दिया जो इसलाम के उसूलों के बिलकुल खिलाफ है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सद्दाम अपनी महत्त्वाकांक्षा की पूर्ति के लिए कुछ भी करगुजरने से नहीं हिचकता.

उस ने बताया कि सद्दाम ने अनेक रखैलें रख छोड़ी हैं और उस की अपनी बीवी बेहिसाब खर्च करती है जो सद्दाम को बिलकुल नहीं सुहाता. करीम ने यह भी बताया कि उस के विचार से अगले कुछ महीनों में इराक में क्या होने जा रहा है.

सद्दाम के साथ करीम के संबंध कितने घनिष्ठ और प्रामाणिक थे इस विषय में करीम के कथन को आंख मूंद कर अक्षरशः सच तो नहीं माना जा सकता लेकिन जिस तथ्य की पुष्टि हो सकती है वह इस प्रकार है:

फ्रांस के प्रमुख टीवी चैनल टीएफआइ की कैमरा टीम ने इस बात की पुष्टि की है कि करीम ही वह आदमी है जिस ने उन की तलाशी ली थी. जब कुछ महीने पहले वे सद्दाम से भेंट करने गए थे. पेरिस स्थित विशेष शाखा ने भी उस से पूछताछ की है और उस की बातों पर विश्वास प्रकट किया है. सऊदी पत्रिका 'अल मजल्लाह' ने भी उस के कथन को सही माना है और लंदन में रहने वाले सद्दाम के इराकी विरोधियों ने भी इन बातों की पुष्टि की है.

जब करीम से तत्कालीन इराकी रक्षा मंत्री अदनान खैरल्लाह, जो सद्दाम का निकट संबंधी था और उत्तरी इराक में एक विमान दुर्घटना में 1989 में मारा गया था, की मौत के बारे में पूछा गया तो उस ने बताया कि जैसा कि लोगों को शक था, अदनान की हत्या की गई थी जबकि सरकारी स्पष्टीकरण यही था कि अदनान का हवाई जहाज खराब मौसम के कारण दुर्घटनाग्रस्त हो गया था.

करीम ने अपनी टूटीफूटी अंगरेजी में बताया कि उन दोनों के बीच कई वर्षों से मनमुटाव चल रहा था. लेकिन एक दिन स्थिति ने बहुत ही खतरनाक मोड़ ले लिया जब अदनान को पता चला कि एकसाथ 400 इराकी सैनिकों को गोली से उड़ाया जाने वाला है क्योंकि उन्होंने ईरान के आक्रमण से डर कर मैदान में पीठ दिखा दी थी.

अदनान का सोचना था कि सैनिकों को इस तरह मौत के घाट उतार देने से फौजों का मनोबल गिरेगा. लेकिन सद्दाम अपनी जिद पर अड़ा रहा, "नहीं, भागने वाले फ़ौजियों को तो मरना ही होगा." उस ने अदनान को संबोधित करते हुए कहा, "तुम एक मंत्री हो और मैं प्रेजीडेंट हूं. तुम उपसेनाध्यक्ष हो जबकि मैं प्रधान सेनाध्यक्ष हूं." और इस प्रकार 400 सैनिकों को गोली से उड़ा दिया गया.

करीम का कहना है कि "कुछ समय बाद मैं सद्दाम के साथ ससूक की यात्रा पर अदनान से मिलने जा रहा था. अदनान उस समय रक्षा मंत्री था. सद्दाम ने जिस प्रकार अदनान की ओर देखा, मुझे महसूस हुआ कि कुछ अनहोनी होने जा रही है. और मेरा सोचना सही निकला.

"हुक्म दे दिया गया कि बृहस्पतिवार, 5 मार्च को प्रातः 10.45 बजे अदनान के हवाई जहाज के काकपिट में एक टाइम बम रख दिया जाए. जो उसी दिन तीसरे पहर 4

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बजे फट जाए क्योंकि रक्षा मंत्री अदनान लंच के बाद उसी जहाज से यात्रा करने वाला था.

"बम का वजन 1 किलोग्राम, लंबाई लगभग 25 सेंटीमीटर और चौड़ाई 3 सेंटीमीटर थी. यह पिछली सीट के नीचे रखा गया था.

"अदनान खुद जहाज उड़ा रहा था, विमानचालक नहीं, जैसा कि खबरों में बताया गया था. जहाज 2 बजे बगदाद के लिए उड़ा और 4 बजे जब वह ताक्रित और अरबिल के बीच उड़ रहा था बम फटा. अदनान मारा गया. कुछ लोग बचे भी, वे हस्पताल ले जाए गए, लेकिन वहां उन्हें जहर का इंजेक्शन देकर उन्हें सदा के लिए सुला दिया गया."

करीम आगे कहता है, "आप को यह पता होना चाहिए कि सद्दाम के रक्षक कितने दुष्ट और निर्दय हैं. वह हमेशा उन्हें डराएधमकाए रखता है और वे बेचारे सदा उस से थरथर कांपते रहते हैं. बल्कि वे एकदूसरे से भी भयभीत रहते हैं क्योंकि हर आदमी एकदूसरे की जासूसी करता रहता है और वे सद्दाम को खुश करने के लिए कुछ भी कर सकते हैं."

जैसा कि उस की बातों से पता चलता है करीम खुद भी कोई अच्छा आदमी नहीं है और उस का नैतिक स्तर एक आम आदमी से भी बहुत घटिया किस्म का है.

ऐसा नहीं कि उस में ठग या गुंडे जैसी कोई बात हो, देखने में वह काफी सभ्य, सुसंस्कृत लगता है बल्कि आकर्षक व्यक्तित्व का धनी है और सीधीसादी भावशून्य भाषा में और बहुत से कारनामों का विवरण देता है.

चार साल पहले ईरान इराक युद्ध के दौरान एक बार एक जनरल ने सद्दाम के हुक्म की उदूली की तो सद्दाम ने तुरंत उसे अपनी रूसी पिस्तौल से मार गिराया. इसी तरह एक बार सद्दाम ने एक कर्नल को इराक में ही अपने किसी विरोधी को मारने के लिए भेजा. कर्नल उसे नहीं खोज पाया तो सद्दाम ने तुरंत कर्नल को ही अपनी गोली का निशाना बना लिया.

करीम का कहना है, "आप को यह कभी नहीं भूलना चाहिए कि सद्दाम स्वयं सत्ता में इसी लिए आया था क्योंकि वह एक आतंकवादी संगठन का मुखिया था. यह संगठन जो भी इस का विरोध करता था उसे मार डालता था. इसलिए हत्या उस के लिए कोई नई बात नहीं है"

लेकिन अपने तानाशाह की जो यह तसवीर करीम ने खींची है वह उस लोकप्रिय छवि से बिलकुल भिन्न है जो इराकी लोगों के मन में बसी है. करीम का कहना है कि "सद्दाम बहुत ही मृदुभाषी है. उस की नसनस में जो क्रूरता भरी है वह उस के बाहरी सौम्य रूप के भीतर छिपी हुई है. किंतु उस में कुछ घबराहट का थोड़ा सा आभास अवश्य होता है क्योंकि उस के भारी कंधे हमेशा तनाव में रहते हैं. वह बहुत ही गुमसुम रहता है. हरदम कुछ न कुछ सोचता या कोई जाल गूंथता रहता है लेकिन किसी को भी उस की भनक नहीं पड़ने देता.

करीम का कहना है कि निजी तौर पर अमरीकियों से भी बातचीत करते हुए सद्दाम कभी भावावेश में नहीं आता. उस की आवाज कभी ऊंची नहीं होती. वह किसी की हत्या भी करता है तो चुपचाप कर डालता है. उस के चेहरे पर कोई शिकन नहीं पड़ती. वह कभी गुस्सा नहीं करता. वह पूरी तरह संयत और संतुलित रहता है.

"वह हमेशा अपना अस्तित्व प्रमाणित करने के लिए प्रयत्नशील रहता है. उस की यह मनोवृत्ति उस के बचपन में ही बन गई थी. वह अवैध संतान है. वह नहीं जानता कि उस का असली पिता कौन है. उसी से आज भी वह कुंठाग्रस्त है. वह अकसर इस बारे में जिक्र भी करता है. वह सोचता है कि लोग उसे नीची नजर से देखते हैं और उस का विगत जानते हैं. यही असुरक्षा की भावना है जो उस की कारगुजारियों को नियंत्रित करती है."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"जब सद्दाम हुसैन कुवैत पर आक्रमण करने की योजना बना रहा था तो कुछ अफसरों ने उस पर आपत्ति की थी. इसलिए उस ने उन में से 120 अफसरों को तो मरवा ही डाला. इस तरह सद्दाम आतंक पैदा कर के ही अपनी योजना चलाता है."

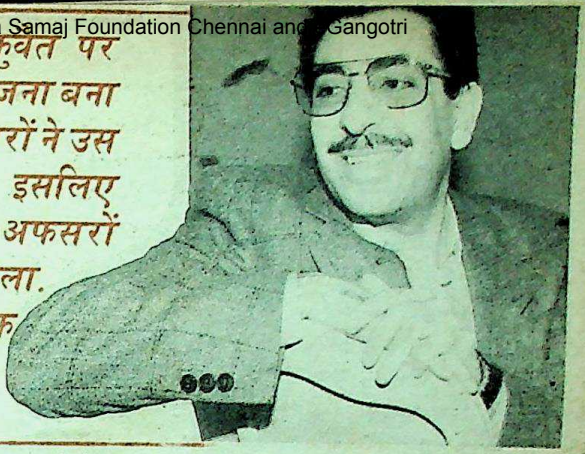

करीम जो एक अच्छे खानदान से है, बताता है कि उस ने बगदाद विश्वविद्यालय में पढ़ते हुए ही इराक के खुफिया विभाग के लिए 1978 में काम करना शुरू कर दिया था. छः साल के बाद उस का इराक की 'प्रेसीडेंसी' यानी सद्दाम के निकटवर्ती अधिकारियों की मंडली में तबादला कर दिया गया. उस के बाद उसे सद्दाम के निजी अंगरक्षकों में तैनात कर दिया गया क्योंकि वह भी सुन्नी मुसलमानों के उसी ताक्रिति कबीले का सदस्य है जिस में सद्दाम का जन्म हुआ था.

करीम कहता है कि सद्दाम द्वारा मुसलिम कट्टरपंथ को अपनाना भी कट्टरपंथी अरबों का समर्थन हासिल करने की एक चाल है वरना सद्दाम तो जन्म से एक उदार सुन्नी है.

किंतु इस कट्टर मुसलिम की सादा जिंदगी तो एक दिखावा मात्र है क्योंकि करीम कहता है कि सद्दाम अकेले में जोनी वाकर, ब्लैक लेबल ह्विस्की की खूब चुसकियां लेता है और ऐशोआराम की जिंदगी के मजे लेता है. सोना उसे बहुत प्यारा है. उस के फार्म में हर चीज सोने की बनी हुई है—दरवाजों के हत्थे, सिटकनियां, स्नानघर के नल, फुहारे, सब एक फ्रांसीसी कंपनी ने बनाए हैं. सारा फर्नीचर इटली का बना है. इराक भर में उस के अनेक घर हैं, सभी में इसी तरह की शानशौकत और धनदौलत है.

करीम कहता है कि सद्दाम सप्ताह में दो बार ही अपनी बीवी के साथ सोता है. बाकी दिनों वह जवान लड़कियों को अपने शयनकक्ष में बुलाना अधिक पसंद करता है. सद्दाम की धूमिल शीशेवाली काली शानदार गाड़ी उन्हें लिवाने जाती है. किसी रूपसी की मजाल नहीं कि वह आने से मना कर दे.

सद्दाम की इन प्रेयसियों की समयसमय पर देखभाल करना करीम के जिम्मे था. मोसुल की 26 वर्षीया रूपसी मंसिया उसे बहुत प्रिय थी.

"वह मूलतः बदूई नस्ल की थी. उस की पीलीपीली आंखें बहुत आकर्षक थीं और चूंकि वह सद्दाम की प्रेयसी थी उस के पास सब कुछ था जो भी वह चाहती थी. बगदाद में सद्दाम के अंगरक्षकों के बड़े भवन में एक सुंदर आवास और देहात में भी एक बढ़िया घर."

लेकिन ऐसा नहीं कि सद्दाम की बीवी साजिदा इस का मुआवजा वसूल न करती हो. करीम कहता है कि दो साल पहले वह स्वयं एक निजी विमान बोइंग 707 में साजिदा के साथ लंदन गया था. "वहां हम कंबरलैंड होटल में ठहरे थे और उस ने वहां हजारों पौंड के गहने और कपड़े खरीदे थे. इस का बिल इराकी दूतावास के एक अधिकारी ने चुकाया था."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक अन्य मौके पर करीम उस के साथ स्विटजरलैंड की यात्रा पर गया था जहां साजिदा ने अपनी बेटी रगद और राना के लिए कोई पांच लाख डालर के आभूषण खरीदे थे.

करीम बताता है कि सद्दाम को अपना बेटा उदय बहुत प्यारा है जो वहशीपन में अपने पिता से कम नहीं है, "छः साल पहले उदय की एक प्रेयसी थी जो बगदाद के अलकाराडा इलाके से थी. एक बार उस ने उदय के साथ सोने से इनकार किया तो उदय ने खुद उसे मार डाला."

"उस की एक दूसरी प्रेयसी शेरटन होटल में काम करती थी. नाम था सेडोस. वह अपने रूप के कारण बगदाद भर में प्रसिद्ध थी. लेकिन एक बार वह उदय के साथ बाहर गई थी. फिर उस का कोई पता नहीं चला."

आज करीम एक बात दृढ़तापूर्वक कहता है: सद्दाम को सेना के उन्हीं अफसरों से अपना तख्ता पलटने का खतरा है जो उस की व्यक्तिगत रक्षा के लिए तैनात हैं. कुवैत पर आक्रमण के बाद से उस ने बगदाद में अपने फार्म के चारों ओर 1,00,000 सैनिक तैनात कर रखे हैं.

करीम कहता है कि बहुत से कर्नल और अन्य अफसर सद्दाम से नफरत करते हैं, जबकि सद्दाम सोचता है कि वह वास्तव में कोई देवता है.

"वह खब्ती नहीं था जब मैं उस के साथ था. लेकिन अब वह खब्ती होता जा रहा है. जब वह कुवैत पर आक्रमण करने की योजना बना रहा था तो कुछ अफसरों ने उस पर आपत्ति की. इसलिए उस ने उन में से 120 को तो मरवा ही डाला. इस तरह सद्दाम आतंक पैदा कर के ही अपनी योजना चलाता है."

आखिर करीम ने सद्दाम से किनारा क्यों किया? करीम तो पाखंडपूर्वक यही कहेगा कि, उस ने मन में जान लिया, अब खूनखराबा काबू से बाहर हो रहा है. "अचानक मेरी आंख खुल गई कि सद्दाम दरअसल कितना बड़ा शैतान है."

लेकिन अधिक युक्तिसंगत स्पष्टीकरण यही है कि संदेह के घेरे में आने के बाद करीम खुद अपनी जान बचाने के लिए निकल भागा. उस के अनुसार, "उस ने 10 सितंबर को अपने भाग जाने की योजना पर अमल करना शुरू किया. इराक के उत्तरी भाग में नियुक्त एक सरकारी अफसर करीम का एहसानमंद था क्योंकि करीम ने उस की हत्या की साजिश से आगाह कर दिया था.

"उस के मारफत मैं ने उत्तरी इराक के कुर्दों के एक समूह से संपर्क किया और वे मुझे तुर्की की सीमा तक छोड़ आए. मैं इस्तंबुल पहुंचा. वहां मैं ने एक नकली ट्यूनीसियाई पासपोर्ट कबाड़ लिया. वहां से मैं यूगोस्लाविया, आस्ट्रिया, स्विटजरलैंड और अंततः फ्रांस पहुंचा जहां मेरे बहुत से इराकी भाई देश छोड़ कर बसे हुए थे." आज वह इसलिए बाहर प्रकट हो रहा है क्योंकि उसे पक्का विश्वास हो गया है कि सद्दाम की मौत अब दूर नहीं है. करीम के कुटिल मस्तिष्क ने यह सोचा है कि यदि वह पश्चिम को उस व्यक्ति के बारे में साफसाफ बता देगा जिसे वह अंतरंग रूप से जानता है तो शायद उसे युद्ध समाप्त होने के बाद वापस बगदाद नहीं भेजा जाएगा क्योंकि उस समय जो भी सत्ता में होगा उसे करीम को अनेक कठिन प्रश्नों का उत्तर देना पड़ेगा.

ठीक है, करीम कोई भला आदमी नहीं है. फिर भी ऐसे लोग हमेशा दुनिया में होते आए हैं. वे हिटलर और शिसेस्कू जैसे तानाशाहों के संरक्षण में बहुत फलेफूले हैं.

उस पर और दबाव डालेंगे तो वह सचाई उगल देगा कि हां, उस ने सब कुछ भोगा -है: ऐशोआराम, शानोशौकत, 1500 पौंड मासिक, कार, सोने की घड़ियां, शानदार कोठी, और खूबसूरत औरतों के नाजुक जिस्म भी. वह मुसकराते हुए कहता है, "सद्दाम ने कभी किसी चीज की कमी नहीं होने दी." ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छोड़ो कल की बातें
आज की बात करो,
होली का महीना है
रंगों की बात करो.

गम की दुनिया छोड़ कर
खुशी के रंगों में
लिपट जाने की बात करो.

उदासी का दामन छोड़ कर
मुसकराहट के रंगों में
रंग जाने की बात करो.

गिलेशिकवे त्याग कर
प्यार के रंगों में
दिल जोड़ने की बात करो.

बिछड़ने रूठने की बात छोड़ कर
मिलन के रंगों में
पास आने की बात करो.

दुश्मनी, कटुता की डोर तोड़ कर
अपनत्व के रंगों में
गले मिलने की बात करो.

—चंद्रमौलीश्वर

गले मिलने की बात करो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिंदी के उत्कृष्ट साहित्य

लेखक व पुस्तक का नाम	रुपए
भगवती चरण वर्मा	
रेखा	25
सामर्थ्य और सीमा	22
सबहिं नचावत राम गोसाई	20
प्रतिनिधि कहानियां	15
गोविंद मिश्र	
वह अपना चेहरा	10
उतरती हुई धूप	6
प्रतिनिधि कहानियां	15
उषा प्रियमृवदा	
शेष यात्रा	15
रुकोगी नहीं राधिका	12
नागार्जुन	
बाबा बटेसरनाथ	18
उग्रतारा	6
वरुण के बेटे	10
प्रतिनिधि कविताएं	12
हजारी प्रसाद द्विवेदी	
अनामदास का पोथा	20
बानभट्ट की आत्मकथा	22
राजेंद्र यादव	
शह और मात	22
प्रतिनिधि कहानियां	15
जयशंकर प्रसाद	
कंकाल	18
प्रतिनिधि कहानियां	15

लेखक व पुस्तक का नाम	रुपए
श्रीलाल शुक्ला	
उमराव नगर में कुछ दिन	10
सूनी घाटी का सूरज	12
राग दरबारी	25
सीमाएं टूटती हैं	18
भीष्म साहनी	
बसंती	15
प्रतिनिधि कहानियाँ	15
राही मासूम रज़ा	
ओस की बूंद	10
आधा गांव	25
निर्मल वर्मा	
चीड़ों पर चाँदनी	18
एक चिथड़ा सुख	15
प्रतिनिधि कहानियाँ	15
देवकीनंदन खत्री	
कुसुम कुमारी	12
काजर की कोठरी	10
चंद्रकांता सन्तति भाग 1	25
चंद्रकांता सन्तति भाग 2	25
चंद्रकांता सन्तति भाग 3	25
चंद्रकांता सन्तति भाग 4	25
चंद्रकांता सन्तति भाग 5	25
चंद्रकांता सन्तति भाग 6	25
चंद्रकांता सन्तति भाग 7	25

प्राप्ति स्थल : दिल्ली बुक कंपनी, एम-12, कनाट सर्कस, नई दिल्ली-110001

वी.पी.पी. से मंगवाने पर आदेश की 20 प्रतिशत राशि मनीआर्डर/ड्राफ्ट/पोस्टल आर्डर द्वारा अग्रिम भेजें. डाक खर्च केवल रुपए 3.50. तीन या अधिक पुस्तकें लेने पर 5 प्रतिशत की छूट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होली आ रही है तैयारी कर लीजिए

लेख ● हिमांशु राज

होली का अपना यह त्योहार मौज-मस्ती व रंगगुलालों का त्योहार होता है. इस दिन सब भेदभाव भूल कर होली खेलनी चाहिए. बहुत से लोग तो इस अवसर पर रंगों के बजाय कीचड़, तवे की कालिख पोत कर इस त्योहार को भद्दा व गंदा बना देते हैं. यह बहुत ही गलत और अनुचित है, यह रंगों का त्योहार है. इसे रंगों से ही खेलना चाहिए जिस से इस की गरिमा बनी रहे. भले ही आप का थोड़ा सा पैसा खर्च हो जाए, पर आप इसे खेलें तो शालीनता के साथ ही.

होली के आते ही हर गृहिणी के ऊपर काम की अधिकता आ जाती है. हर काम उस अकेली को ही संभालना, करना पड़ता है. गृहस्वामी और बच्चे तो बस इस त्योहार का आनंद लेना ही जानते हैं. उन्हें काम से क्या लेनादेना? इसलिए होली के आते ही आप उस की तैयारी करना प्रारंभ कर दें. जिस से आप को होली के दिन कोई विशेष परेशानी न हो और आप का मन खुश रहे.

हर बार आप को होली खेलने के बाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

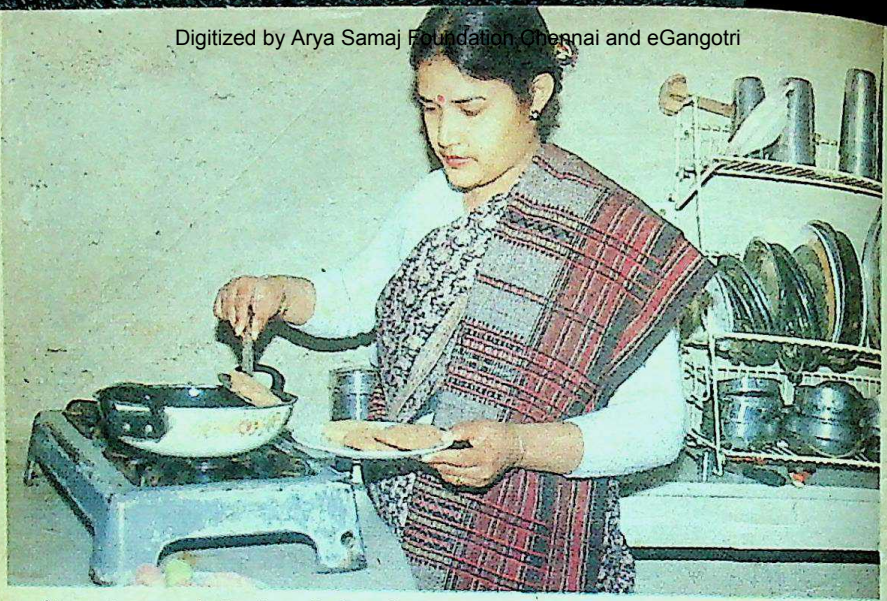

बच्चों का रंग उतारने में परेशानी होती है, क्योंकि वार्निश, पेंट आसानी से नहीं उतरते हैं. इसलिए इस बार थोड़ा सा सतर्क रहें और इस की तैयारी भी पहले से ही कर लें, जिस से कि आप को व बच्चों को भी होली खेलने के बाद रंग, पेंट, वार्निश आदि उतारने में कोई दिक्कत या परेशानी न हो.

इस के साथ ही आप अपने आने वालों के स्वागतसत्कार की तैयारी भी करती चलिए. इस में भी थोड़ीबहुत नवीनता लाने का प्रयास कीजिए जिस से कि होली की एकरसता, परंपरागत वातावरण की जड़ता समाप्त हो सके और आने वाले को आप के यहां होली खेलने में सब से अधिक आनंद आए.

इस के लिए सब से पहले आप होली खेलने की तैयारी कीजिए. जहां तक हो सके आप होली घर के बाहर या फिर आंगन में खेलिए.यद्यपि अब घरों में आंगन बहुत कम हो गए हैं. खैर, इस के लिए आप आंगन को एकदम खाली कर लीजिए. जिस से किसी वस्तु के टूटने या और कोई नुकसान होने का खतरा न रहे और रंग खेलने वाले कमरे के अंदर पहुंच कर कपड़े, कीमती सोफे, फर्नीचर आदि को खराब नहीं करने पाएं. जरा सी असावधानी से आप के कमरे के अंदर रंग पहुंच सकता है और फिर आप की कीमती चीजें खराब हो सकती हैं. होली होने के कारण आप किसी को बुराभला भी नहीं कह सकतीं. इसलिए आप होली खेलने के लिए जगह की तैयारी तो सब से पहले कर ही लीजिए.

इस के बाद अपने चेहरे, गरदन व

होली के त्योहार पर मेहमानों के लिए परंपरागत पकवानों के स्थान पर कुछ नए पकवान भी बनाएं. क्योंकि एक से पकवान खातेखाते वे ऊब जाते हैं.

यों तो होली मौजमस्ती का त्योहार है पर गृहिणियों पर इस अवसर पर काम का कुछ अधिक ही भार आ पड़ता है. लेकिन अगर वे पहले से ही कुछ तैयारियां कर लें तो न केवल वे त्योहार का पूरा आनंद ले सकेंगी बल्कि एक सुघड़ गृहिणी का सम्मान भी प्राप्त कर सकती हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

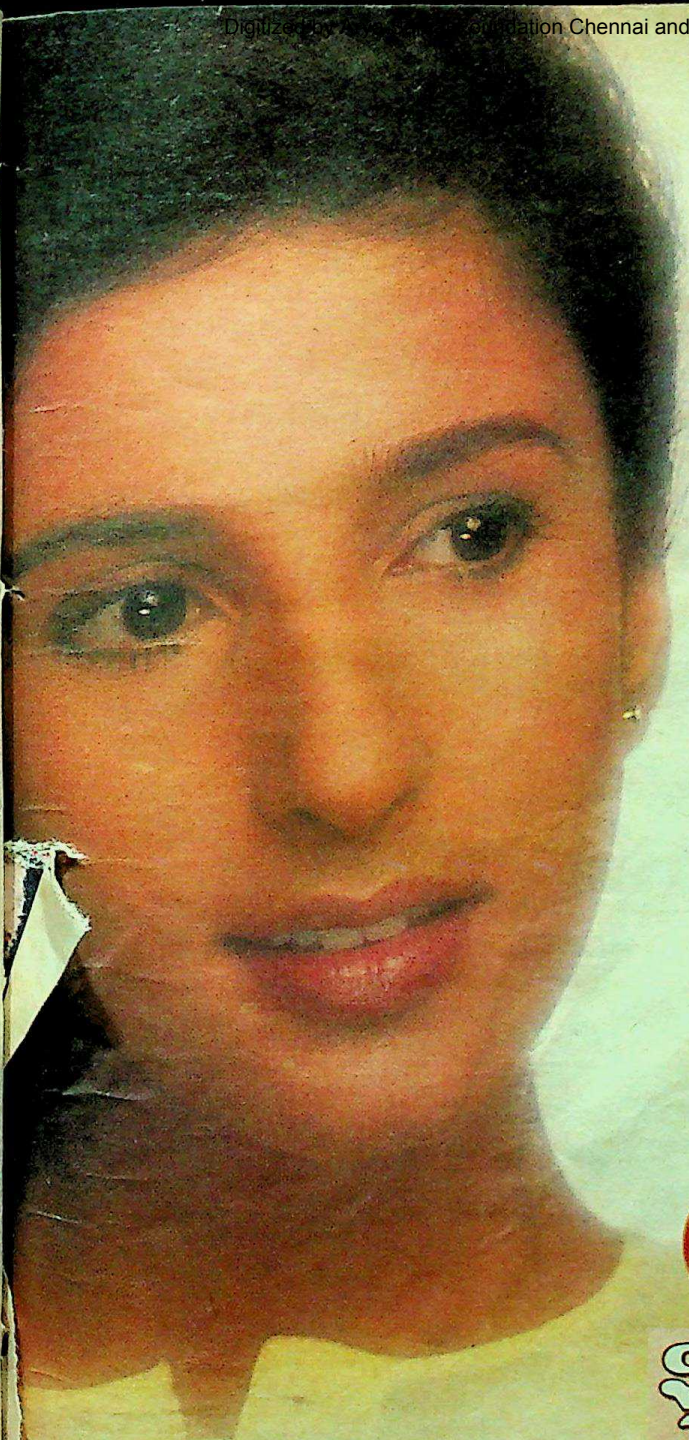

'मेरी त्वचा की देखभाल करे सिर्फ़ मेरा पियर्स'

जी हां, पियर्स सिर्फ़ साफ़ ही नहीं करता, बल्कि देखभाल भी करता है. वो इसलिए कि इसमें केवल शुद्धतम तत्व हैं, जो कोमलता से मैल को हटाएं, बिना ख़ुश्की पैदा किए... और इसका ग्लिसरिन से भरा फ़ार्मुला त्वचा को रखे कोमल, निर्मल और मासूम.

पियर्स - २०० से भी अधिक वर्षों से आज़माया हुआ और भरोसेमंद.

शुद्धतम पियर्स

आपके लिए कोमल त्वचा, नजाकत के साथ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिन का हर पल संवारे – मेरा कॉम्पैक्ट !

९.५५: दरवाज़े पर कौन है? अरे ये लोग आ पहुँचे!

१२.५०: दो जोड़ी सैण्डल ख़रीद कर भी मन नहीं माना, एक और हैण्डबैग ख़रीद डाला.

४.१०: ओह, पेस्ट्री! मगर इसमें तो कैलरीज़ ही कैलरीज़ हैं. चलो, कल से शुरू करेंगे अपनी डाइटिंग!

७.४८: वहाँ प्रोग्राम शुरू होने में सिर्फ़ बारह मिनट हैं, और मैं हूँ कि यहाँ...

पल भर में चेहरे पर निखार, लॅक्मे कॉम्पैक्ट की बदौलत. चाहे आप घर में हों या बाहर जाने की तैयारी में. शॉपिंग पर जाने की जल्दी हो या चाय पर. कार में हों या लिफ़्ट में... यह महीन, रेशम सा फ़ेस पाउडर आपके रंगरूप से मिलते-जुलते पांच शेड्स में मिलता है. रोम-छिद्रों को बन्द किये बिना, कुदरती निखार लाता है, ख़ूबसूरती प्रदान करता है. इसलिये, अब साधारण पाउडर को अपने चेहरे से दूर रखिये, लॅक्मे कॉम्पैक्ट अपनाइये.

लॅक्मे
कॉम्पैक्ट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूसरे सारे डाई एक तरफ,

गोदरेज शैम्पू-आधारित

हेयर डाई दूसरी तरफ...

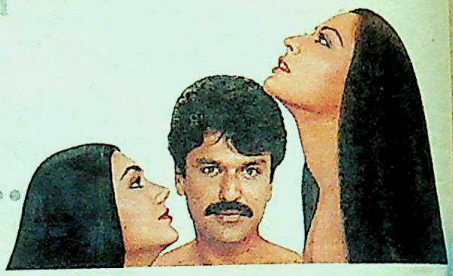

फिर भी,

गोदरेज हेयर डाई

इस्तेमाल

करने वाले

ज़्यादा ही होंगे!

इन ३ ख़ास कारणों से:

१ गोदरेज शैम्पू-आधारित हेयर डाई बालों को कुदरती रंग व
देता है. **बाल इतने स्वाभाविक काले हो जाते हैं कि कोई
जान ही न सके, जब तक आप खुद न बताएँ.**

२ गोदरेज शैम्पू-आधारित हेयर डाई इस्तेमाल में आसान औ
सुविधाजनक है जबकि अन्य हेयर डाई में यह विशेषता नहीं.
जी हां, आसान इतना बालों में शैम्पू करने जितना.

३ आप गोदरेज शैम्पू-आधारित हेयर डाई की क्वालिटी
पर भरोसा कर सकते हैं. **क्वॉलिटी जिसपर आप
भरोसा करें. यही गोदरेज का वादा है.**

Godrej शैम्पू-आधारित हेयर डाई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होली पर मर्यादाओं का उल्लंघन न करें

लेख ●
ऋषिमोहन श्रीवास्तव

पिछली होली पर सुबोध महल्ले में होली खेल रहा था. तभी उसे सामने अपने पड़ोसी डा. विश्वदेव की पत्नी दिखाई दीं. सुबोध डाक्टर साहब की पत्नी को 'भाभीजी' कहा करता था. होली के मस्तीमौज भरे आलम में सुबोध ने न तो अपने आसपास के वातावरण को समझा और न ही भाभी के रिश्ते की गरिमा उसे समझ में आई. वह तो होली की मस्ती में पूरे तौर पर 'होरियार' बना हुआ था.

सुबोध ने सब के सामने ही विश्वदेव की पत्नी कंचन को कस कर पकड़ लिया और उन के ब्लाऊज में रंग डालने का प्रयास करने लगा. बेचारी कंचन एकदम आश्चर्य-चकित थीं कि सुबोध को क्या पागलपन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होली मौजमस्ती से मनाइए लेकिन अपनी मर्यादाओं और सीमाओं को ध्यान में रख कर. अन्यथा रंगों के इस त्योहार में मधुर रिश्तों में दरार पड़ते देर नहीं लगेगी.

सवार हो गया है जो अपनी मां के बराबर भाभी के साथ इतने भद्दे ढंग से होली खेलने की कोशिश कर रहा है.

सुबोध की तरह ही मैं ने अपने पड़ोसी के व्यवहार को भी देखा है. पिछली बार मेरे पड़ोसी भारतभूषण की साली होली के अवसर पर उन के घर आई हुई थी. भारतभूषण ने होली के बहाने अपनी साली को कस कर पकड़ लिया था और सदाचार की सभी मर्यादाओं का उल्लंघन कर के उस के नाजुक अंगों से खिलवाड़ करने की कोशिश कर रहे थे. पहले तो साली को भी मजा आया होली खेलने में, लेकिन अधिक देर तक वह भी जीजाजी की अश्लील हरकतों से परेशान हो गई. भारतभूषण अपनी पूरी मस्ती में थे, उन्होंने अपनी पत्नी के सामने ही साली अलका को गोद में उठा लिया और उस को ले कर रंग लगाने के बहाने एक कमरे में बंद हो गए. वहां पता नहीं उन्होंने क्याक्या अश्लील हरकतें की होंगी? उन की पत्नी बारबार किवाड़ खोलने का अनुरोध कर रही थीं, पर भारतभूषण के मन में पता नहीं कौन सी कुंठा, घुटन थी जो होली पर अपनी साली को पूरी तरह 'सराबोर' करने पर उतारू थे.

सुबोध और भारतभूषण जैसे अनेक लोग होते हैं जो होली के अवसर पर रिश्तों की आड़ में अपनी सारी शालीनता और मर्यादा का उल्लंघन करके वह सब करते हैं जो नैतिक व मानवीय दृष्टिकोण से किसी प्रकार उचित नहीं कहा जा सकता.

जीजासाली, देवरभाभी, जीजा-सलहज जैसे रिश्ते काफी आत्मीय और स्नेहिल होते हैं. इन्हें बदरंग और बदनाम करने का प्रयास न करें, बल्कि इन की सुमधुरता और मिलनसारिता को परिपक्व रूप प्रदान करें.

शालीनता और सभ्यता के साथ होली मनाएं. इस से आप के संबंध और मधुर व सुदृढ़ होंगे.

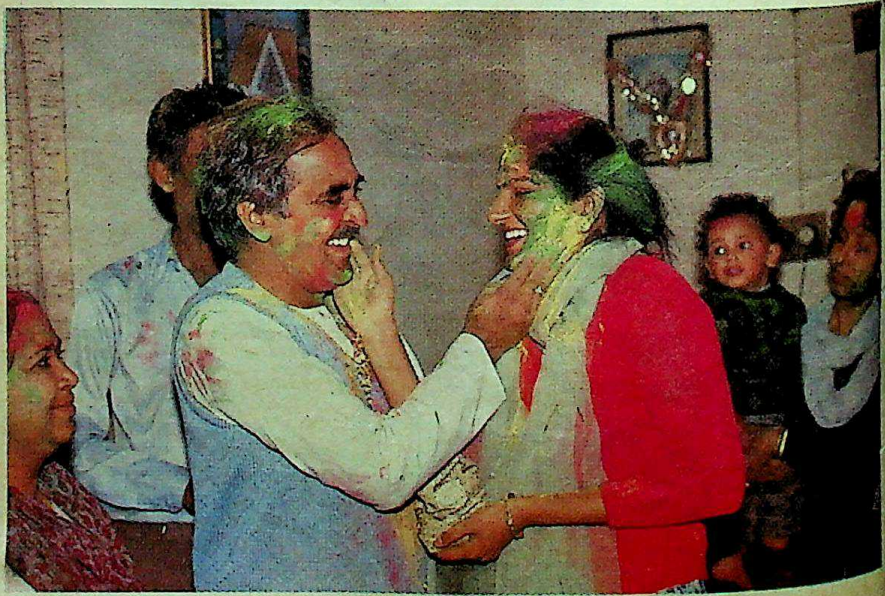

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj

हर क़दम, हर कहीं...

जवां ज़िंदगी, उमंगोंभरी.

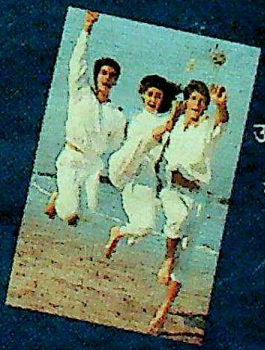

नया मारवल वाइट और पिंक.
जवां दिलों की जवां
उमंगों के साथ. नर्म-मुलायम छुअन
नई-नई महक. हर पल. हर क़दम
आपके साथ.

गोदरेज

मारवल वाइट और पिंक

अंतर्राष्ट्रीय क्वॉलिटी-अल्ट्रा लक्ज़री साबुन

Mudra B GS 812 1710 HN

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐसा भी नहीं है कि पुरुष ही अपनी लक्ष्मण रेखा पार करते हैं, महिलाएं भी कभीकभी अपनी मस्तीमौज में, रिश्तों की दुहाई देते हुए बड़ी अश्लील हरकतें कर बैठती हैं. पुरुष को तो केवल एक मौका चाहिए, फिर तो वे दो कदम आगे बढ़ जाते हैं.

कभीकभी इस तरह से बड़ी दुर्घटनाएं भी घटित हो जाती हैं. पिछली होली पर मेरे मित्र डाक्टर सुधीर की बेटी सुजाता सीढ़ियों से गिर पड़ी थी. हुआ यह था कि उस के जीजाजी उसे रंग लगाने के लिए उस के पीछे दौड़ रहे थे, तभी उस का पैर सीढ़ियों पर से फिसला और वह नीचे गिर पड़ी. जीजासाली की मौजमस्ती जरा सी देर में परेशानी का कारण बन गई.

होली जितनी शालीनता और सभ्यता से मनाई जाए उतना ही श्रेष्ठ है. रंग और गुलाल का यह त्योहार उस समय बहुत बड़ा विदूषक बन जाता है, जब लोग होली की आड़ में एकदूसरे से दुश्मनी निकालते हैं, गालीगलौज करते हैं, एकदूसरे पर कीचड़ गोबर फेंकते हैं.

गहरे रंग जैसे तारकोल, वार्निश आदि का प्रयोग होली खेलने में कदापि न करें, क्योंकि ऐसे पदार्थ, रंग शरीर के प्रति काफी संवेदनशील होते हैं. कभीकभी कुछ रंग आंखों में या शरीर के नाजुक अंगों पर अपना प्रतिकूल प्रभाव दिखाते हैं.

रंग लगाने के चक्कर में जानबूझ कर अवांछित तरीके से संवेदनशील नाजुक अंगों का स्पर्श करने का प्रयास न करें.

अतः रिश्तों को पूरे अपनत्व का रूप प्रदान करते हुए, आपसी समझदारी से होली खेलें, खूब रंगगुलाल लगाएं, इस के लिए कोई मना भी नहीं करता, अपनी सीमाओं एवं मर्यादाओं का ध्यान रखना न भूलिएगा.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होली और सभ्यता

लेख ● कमला सपोलिया

होली रंगों का त्योहार है. होली दंगों का भी त्योहार है. होली ही एक ऐसा त्योहार है जो जैसी जिस की इच्छा होती है वैसी मनाता है. लोग रंगों से खेलते हैं. पानी से खेलते हैं. गंदगी, कीचड़ और गोबर से भी खेलते हैं. कई बार तो लोग सभ्यता की सीमा को लांघ कर भद्दी हरकतें भी करने लगते हैं.

होली ऐसा त्योहार है जिस पर लोगों को हर तरह की आजादी मिल जाती है. कोई रोकटोक नहीं, कोई पाबंदी नहीं. हालांकि कुछ हरकतों का अंजाम बहुत भयानक होता है लेकिन लोग कुछ सोचते नहीं. यह भी नहीं समझते कि त्योहार तो खुशी का अवसर होता है, उसे दुख और गम में क्यों बदलें. सभ्य ढंग से ही त्योहार मनाना अच्छा होता है वरना त्योहार का मजा जाता रहता है.

उन दिनों हम इलाहाबाद में थे. होली आई तो शहर की हवा एकाएक गरम हो

यदि कोई होली न खेलना चाहे तो जबरन रंगने की कोशिश न कीजिए. कभीकभी ऐसा मजाक बहुत महंगा पड़ता है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होली का मतलब मनमरजी करने की छूट नहीं है. यह रंगों का त्योहार है, गंदगी और कीचड़ का नहीं. सभ्यता की सीमाओं में होली खेलिए ताकि रंगों की होली खून की होली में न बदले.

गई. सोचती हूं कभीकभी इनसान बहुत तंगदिल हो जाता है. वरना वह न होता जो उस दिन शहर में हुआ. मौके पर थोड़ी सी दरियादिली दिखाने से बात ही कुछ और हो जाती.

होली को अभी दो दिन रहते थे. बाजार में बच्चे पिचकारियां लिए खेल रहे थे. एक बूढ़े बुजुर्ग उजले कपड़े पहने अपनी साइकिल पर जा रहे थे. उस पर रंग के कुछ छींटे पड़ गए. बात आईगई हो सकती थी, लेकिन ऐसा नहीं हुआ. उस आदमी ने गुस्से में आ कर एक बच्चे को इतना मारा कि बच्चा वहीं मर गया.

बच्चे की मौत से त्योहार का नजारा ही बदल गया. हिंदू और मुसलमानों में फसाद हो गए. रंगों के बदले खून से होली खेली गई. शहर भर में मातम छा गया. उस के बाद लंबे अरसे तक ऐसा तनाव बना रहा कि सांस लेना तक मुशकिल हो गया.

जब भी कोई त्योहार आता है तो कुछ नियमों का ध्यान जरूर रखना चाहिए, जिन का त्योहार है उन्हें भी और जिन का त्योहार नहीं है उन्हें भी. माहौल को खुशनुमा बनाने में दोनों तरफ से कोशिश होनी चाहिए. आगे बढ़ कर आपस में मिलना नहीं चाहते तो भी ऐसी कोई बात नहीं करनी चाहिए जिस से कोई मुसीबत उठ खड़ी हो. वैसे भिन्न धर्मों के लोगों को त्योहारों पर आपस में मिलने में भी कोई हर्ज नहीं. साथ त्योहार मनाने से स्नेह की भावना बढ़ती है.

ईद पर अकसर हिंदू परिवार अपने मुसलिम भाइयों के घर ईद मिलन के लिए जाते हैं. इसी तरह मुसलिम परिवारों को भी होली और दीवाली अपने हिंदू मित्रों के साथ मनानी चाहिए. दूसरों की खुशी में शामिल होना अच्छी बात है.

पंजाब में आज भी कुछ लोग बहुत बुरी तरह होली खेलते हैं. मुंह पर मिट्टी, कीचड़ और गोबर मल देते हैं. पी, पिला कर हुल्लड़ करते हैं. लड़ाईझगड़ा, गालीगलौज कहीं भी उन की सीमा नहीं होती. लेकिन ये तो उस तबके के लोग हैं जिन्हें अभी सभ्यता सीखनी है. नफासत से कुछ करने में उन्हें अभी बहुत वक्त लगेगा. उन के बारे में तो यही कहा जा सकता है कि तब तक उन्हें माफ किया जाए जब तक वह सभ्यता के तौरतरीके नहीं सीख लेते.

लेकिन पंजाब के शिक्षित लोग होली पर कोई हंगामा नहीं करते. होली खेलने के लिए किसी को मजबूर नहीं करते. जो रंग खेलना चाहते हैं वही अपने घरों से बाहर निकलते हैं. किसी को खींचतान कर बाहर नहीं निकाला जाता.

हम पांच साल जालंधर में रहे. उस वक्त मेरे पति लड़ाई के मैदान में थे. फिर भी होली पर मुझे और बच्चों को कभी कोई परेशानी नहीं हुई. हमारा वहां तबादला इलाहाबाद से हुआ था. जहां होली पर तबाही हो जाती है. महीना भर पहले से ही बाजारों में रंगों के साथ गंदगी भी आनेजाने वालों पर फेंकी जाती है. होली के आगेपीछे के दिन मिला कर पांच छः दिन तो घर से बाहर निकलने का कोई हाल ही नहीं होता. बहुत से लोग तो डर से दुबक कर अपने घरों में छिपे रहते हैं.

जो बाहर निकलने का प्रयत्न करता है उस की बड़ी बुरी गत बनती है. एक बार की बात है. होली को दो दिन हो चुके थे. पैसों की जरूरत पड़ी तो मुझे बैंक जाना पड़ा. जैसे ही मेरी गाड़ी सिविल लाइंस में महात्मा गांधी मार्ग पर मुड़ी कि अचानक रंग के पानी से भरे पांचछः गुब्बारे मेरी कार पर आ कर गिरे. एक गुब्बारा खिड़की से होता हुआ मेरी आंख पर बड़ी जोर से लगा. इस चोट से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपनी त्वचा पर जो आप देख न पायें

लॅक्मे के क्लेन्ज़रों व वो सब नज़र आये.

आपके रोमछिद्रों में गहरे तक जो धूल और मैल छिपा है, उसे साफ़ करना साबुन के बस में नहीं. इस मैल और बासी मेकप से छुटकारा पाने के लिये आपकी त्वचा को ज़रूरत है लॅक्मे क्लेन्ज़रों की – हर रोज़ फिर अपनी त्वचा पर देखिये स्वच्छता की खूबसूरत झलक! सामान्य या सूखी त्वचा के लिये लॅक्मे डीप पोर क्लीन्ज़िंग मिल्क और तैलीय त्वचा के लिये नया लॅक्मे ऐक्टिव क्लेन्ज़र.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरे हाथ कांप गए और गाड़ी लड़खड़ा गई. उस दिन मैं बड़ी मुशकिल से कार चला कर घर पहुंची. आंख को काफी चोट पहुंची थी. कई महीने इलाज कराने के बाद आंख ठीक हुई.

सेना में बड़े सलीके से होली खेली जाती है. महिलाएं और बच्चे भी होते हैं, लेकिन कोई हंगामा नहीं होता. लोग सुबह अपने घरों से निकलते हैं और पड़ोस में टोलियां बनाते हुए अफसर मेस में पहुंचते जाते हैं. कुछ देर वहां रंग खेलते हैं और बातों का आनंद लेते हैं. चायकाफी और खाने की गरम चीजों का वहां पूरा प्रबंध होता है.

दोपहर 12 बजे तक अपनेअपने घरों को लौट जाते हैं और उस के बाद कोई रंगों की बात नहीं करता.

जवानों को भी होली पर अपनी यूनिट क्षेत्र से बाहर जाने की इजाजत नहीं होती. वे आपस में ही रंग खेलते हैं. हां, अफसरों के घरों में होली की मुबारक देने वे जरूर जाते हैं. अफसर खुश हो कर उन का स्वागत करते हैं. फिर वे आपस में रंग लगाते हैं. मुंह मीठा कराते हैं. फिर जवान प्रसन्नचित हो कर अपने यूनिट क्षेत्र में लौट जाते हैं.

इसी लिए यह कभी सुनने में नहीं आता कि छावनियों में होली पर सैनिक कहीं किसी के साथ टकरा गए, कहीं उन्होंने लड़ाई की. सैनिकों की होली भी उन की जंग की तरह होती है. बाकायदा कुछ नियमों के साथ खेली जाती है.

मौके का फायदा न उठा कर सलीके से होली खेलिए. ऐसी होली का मजा ही कुछ और है.

लेकिन इस का यह मतलब नहीं कि वे इनसान नहीं हैं और उन से कभी कोई गलती नहीं हो सकती. बात सिर्फ इतनी है कि वे नियमों से बंधे हुए हैं.

होली पर रंग जरूर खेलिए. वैसे भी मौसम का त्योहार है. सर्दी जा रही होती है. मौसम खुल जाता है. सरसों फूलती है. चारों तरफ एक खुशी सी छा जाती है. लोगों में चुस्ती आ जाती है. वैसे ही होली खेलने को मन करता है, खेलनी भी चाहिए. लेकिन होली खेलते हुए सभ्यता की सीमा का ध्यान जरूर रखें. ऐसी कोई हरकत न करें जिस से किसी को तकलीफ पहुंचे. न छेड़छाड़ करें, न मौके का फायदा उठाएं. यह न समझें कि होली है और मनमरजी करने की छूट मिल गई है. बस, फिर देखिए होली खेलने का कितना मजा आता है. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

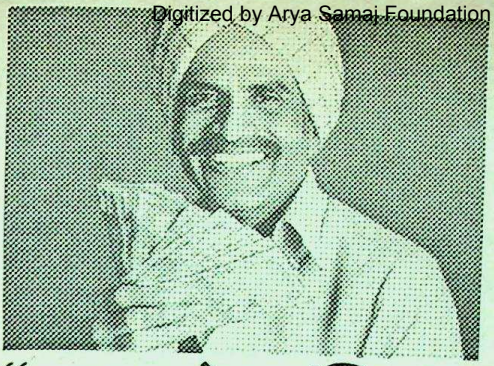

"यूनाइटेड इंडिया इन्श्युरेन्स ने मुसीबत के वक्त मेरी मदद की– और वह भी कितनी जल्दी!

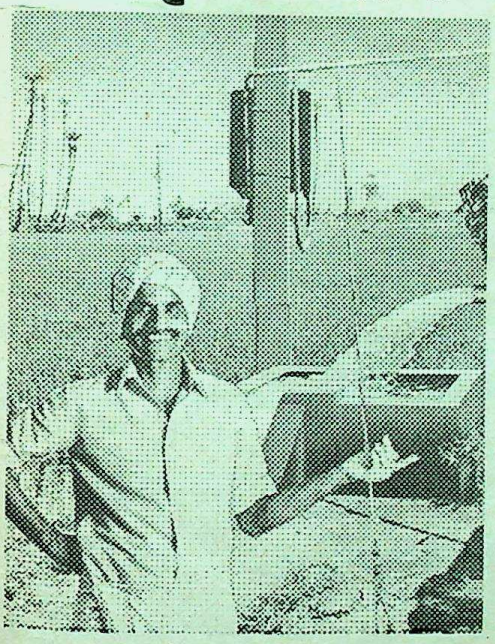

मैं खुशनसीब था. मैंने उनकी बहुत कम कीमत की कृषि पंपसेट बीमा पॉलिसी ली थी.

यह मेरा सही फैसला था. क्योंकि जब मेरा पंपसेट बिगड़ा, मुझे उसकी मरम्मत के लिए बहुत जल्द ही अपने नुकसान की भरपाई मिल गयी.

मेरी देखादेखी अब तो मेरे कई दोस्तों ने भी यही किया है.

आप भी यह बीमा पॉलिसी क्यों नहीं लेते? इसे एकदम सस्ता पायेंगे."

यूनाइटेड इंडिया की
कृषि पंपसेट बीमा पॉलिसी

मशीन या बिजली की खराबी से पंपसेट के बिगड़ने, पंपसेट को आग लगने/बिजली गिरने; या उसके चोरी हो जाने से आपके पंपसेट की सुरक्षा.

अधिक जानकारी के लिए, अपने क्षेत्र के यूनाइटेड इंडिया के कार्यालय या एजेंट से संपर्क करें:

UNITED INDIA

यूनाइटेड इंडिया इन्श्यूरेन्स कं. लि.

(जनरल इन्श्यूरेन्स कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया की सहायक संस्था)
२४, व्हाइट्स रोड, मद्रास-६०० ०१४.

HTA 7774

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धर्मयुद्ध.

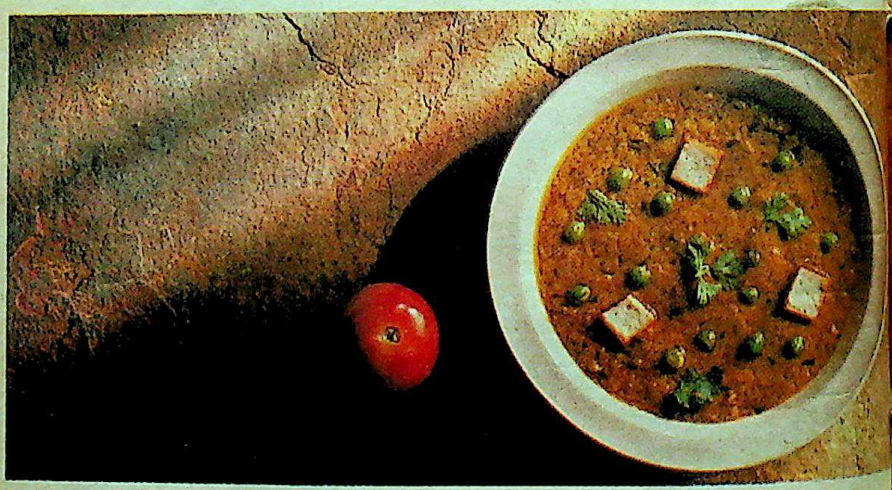

अच्छे और बुरे कोलेस्ट्रॉल के इस महासंग्राम में आपका पकाने का तेल है किस पक्ष में ?

अच्छे और बुरे कोलेस्ट्रॉल के बीच लड़ाई.

आपका हृदय. जहां एक लड़ाई निरंतर चलती रहती है. एक तरफ होता है अच्छा कोलेस्ट्रॉल और दूसरी तरफ बुरा कोलेस्ट्रॉल. बुरा कोलेस्ट्रॉल हृदय को रक्त पहुंचाने वाली धमनियों की दीवारों पर जमा हो जाता है और रक्त के संचार में रुकावट पैदा करता है. इससे दिल का दौरा भी पड़ सकता है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जबकि अच्छा कोलेस्ट्रॉल धमनियों से बुरे कोलेस्ट्रॉल की जमावट **दूर** करता है.

लेकिन इस लड़ाई में मेरे पकाने के तेल की भूमिका क्या है?

इसके लिए हमें सबसे पहले पकाने के तेल के गुण और दोषों को समझना होगा. पकाने का तेल पूफ़ा (पॉलिअनसैचुरेटेड फ़ैटी एसिड), मूफ़ा (मोनो-अनसैचुरेटेड फ़ैटी एसिड) और सैचुरेटेड फ़ैट (मक्खन, घी आदि) आदि पदार्थों का मिश्रण है. ज़्यादातर वनस्पति तेलों में पूफ़ा की मात्रा अधिक होती है. और पूफ़ा की मात्रा अधिक हो तो समझिए खैर नहीं! यह ***आंखें बंद करके*** बुरे कोलेस्ट्रॉल ***तो क्या*** अच्छे कोलेस्ट्रॉल का भी सफ़ाया कर डालता है. कई बार तो बुरे कोलेस्ट्रॉल के मुकाबले अच्छे कोलेस्ट्रॉल का ही ज़्यादा बेड़ा गर्क करता है. नतीज़ा - इस लड़ाई में जीत की संभावना बुरे कोलेस्ट्रॉल के पक्ष में ज़्यादा मज़बूत हो जाती है. और इसकी जीत का मतलब है आपकी हार. ***सूरजमुखी और करडी जैसे बीज से बने तेल पूफ़ा-आधारित हैं.***

और अगर मैं पोस्टमेन इस्तेमाल करूं तो?

पोस्टमेन शुद्ध रिफ़ाइन्ड मूंगफली का तेल है.

पोस्टमेन मूफ़ा-आधारित तेल है. और मूफ़ा **केवल** बुरे कोलेस्ट्रॉल को ख़त्म करके, अच्छे कोलेस्ट्रॉल को रखता है सही सलामत. इस तरह धमनियों में रक्त की रुकावट कम करके, दिल के दौरे का ख़तरा भी कम कर देता है.

याद रखिए, पोस्टमेन लड़ता है धर्म के पक्ष में...

यानी आपकी सुरक्षा के पक्ष में.

स्वाद से मालामाल,
रखे सेहत का ख़्याल.

पोस्टमेन

...स्वाभाविक.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छोटे

कहानी ● मैत्रेयी पुष्पा

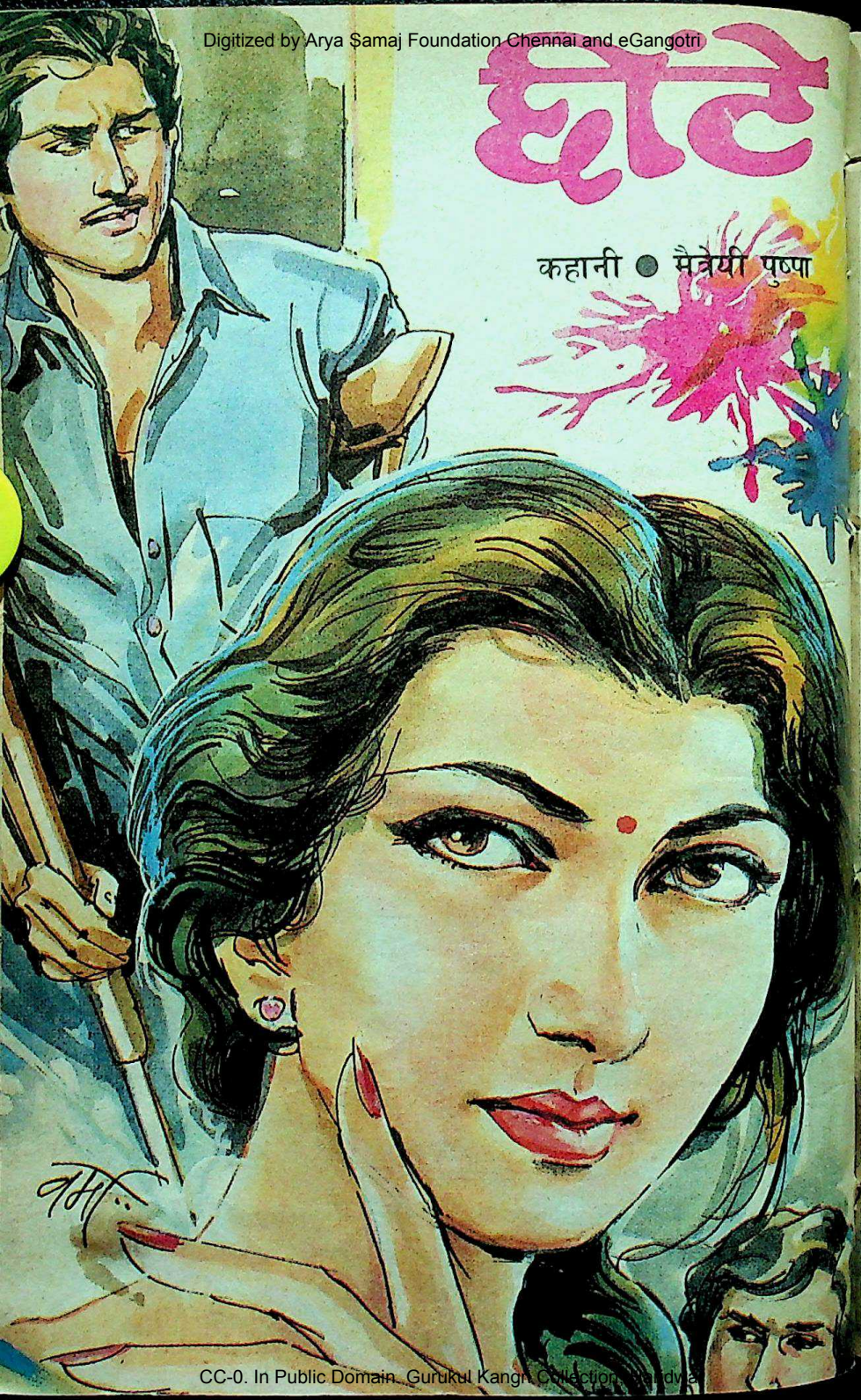

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुम मिले मुझे

तुम मिले मुझे हर सांस मेरी चंदनचंदन सी है
हर घड़ी मिलन के रंग रंगी फागुनफागुन सी है.

आंगनआंगन गीत उगे और झूम उठी पायलपायल
इस बुझेबुझे से जीवन में थिरकनथिरकन सी है.

तुम हंसो तो सारी उपमाएं, निर्धन सी जान पड़ें
तरुपात खनकते हैं, ध्वनि कुछ कंगनकंगन सी है.

बंधन खुले, बांध टूटे, संकोच की हर दीवार ढही
फिर भी हृदय की गंगोत्री, पावनपावन सी है.

यूं समा गई है रगरग में, रंगत टेसू के फूलों की
आज तुम्हारी देह प्रिय, कंचनकंचन सी है.

—अशोक 'अंजुम'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

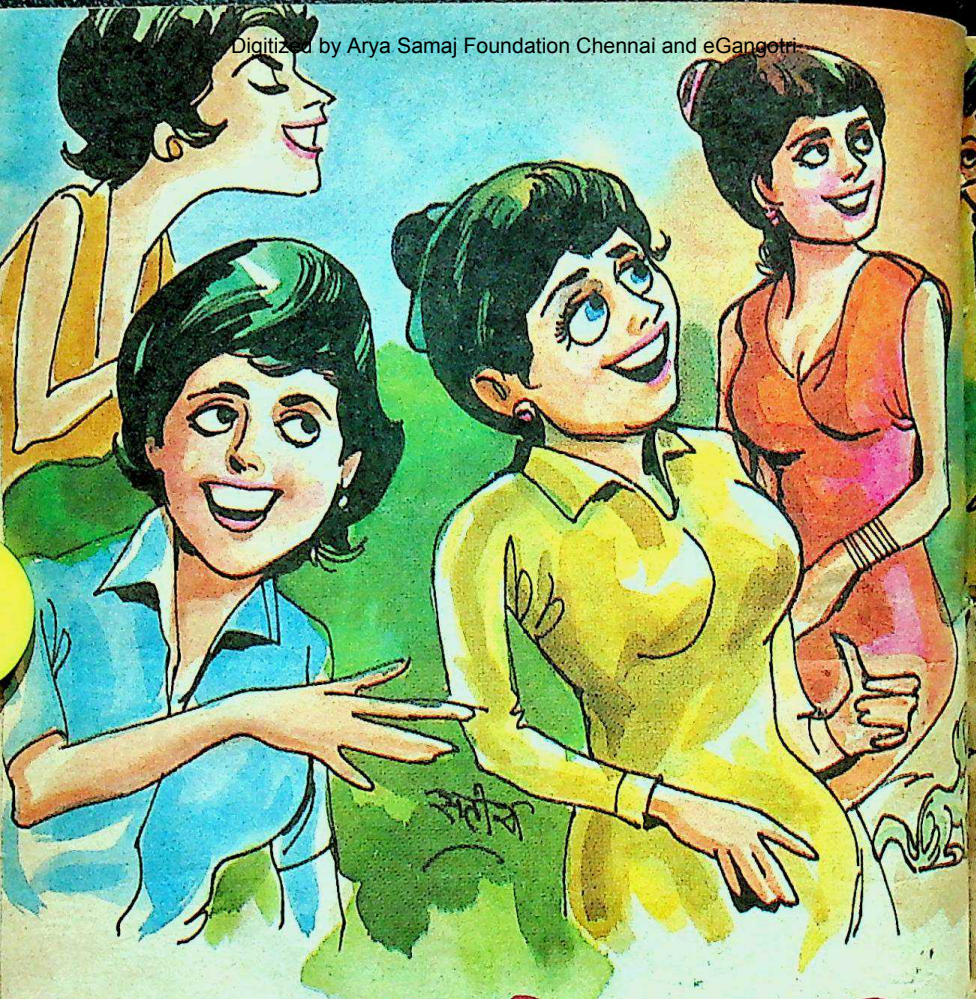

सालियों वाली ससुराल

व्यंग्य ● महेंद्र सरल

होली के इस मौके पर राज की बात बताता हूं, आप चाहे मुझे खलनायक कह लो चाहे दुष्ट लंपट. मैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऋषिमुनियों का हवाला दे कर कहता हूं. उन्होंने भी जब पारिवारिक नियमावली की दीवारें खड़ी की थीं तो इस जरूरत को पूरी तरह स्वीकार किया था कि पतिपत्नी हमेशा साथ रहतेरहते एक न एक दिन जरूर एकदूसरे से ऊब जाया करेंगे. उस ऊब को कम करने के लिए उन्होंने थोड़ीबहुत आजादी की सिफारिश की थी.

श्रेष्ठ कहानीकार मुंशी प्रेमचंद ने भी उस का अनुमोदन किया था, 'हरीहरी लहलहाती घास देख कर अगर कोई बछड़ा या बछिया मुंह मार ले तो कोई बात नहीं...' पत्नी अपने देवरों के साथ खुल कर खेलकूद सकती है, साल में कम से कम एक बार. गुलाल लगाने के बहाने उन का आलिंगन कर सकती है. पति भी क्यों सूखासूखा रहे, वह भी अपनी सालियों पर पिचकारी मार कर उन की साड़ियां अंगों से चिपका कर झांकते शरीर की झांकी देख सकता है. गुलाल लगाने के बहाने उन के नर्मनर्म गाल पर हाथ फेर सकता है, संपूर्ण आलिंगन का भी आनंद ले और दे सकता है.

जब मैं ने अपनी शादी की शर्त बताई तो वे कहने लगे, "यह शर्त तुम ने बहुत देर में बताई, हम तो एक घर में बात लगभग पक्की भी कर चुके..."

भीष्म और कृष्णमेनन की तरह मैं ने भी बाल ब्रह्मचारी रहने का फैसला किया था. लेकिन रामचंद्रिका के 'केशव' की पीड़ा से हार मान कर शादी कर लेने का निर्णय किया पर सालियों वाली ससुराल में. हादसे पर हादसे ने मुझे ऐसी पटखनी दी कि मैं ने तोबा कर ली.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बचाव का रास्ता यह रह गया कि उन्होंने उस 'आजादी' को सीमाओं में तो जरूर बांधा मगर न बंधने वालों के लिए किसी अदालत की स्थापना नहीं की. और बस उसी का भरपूर फायदा मैं उठा लेता हूं. पहले तो मैं ने सोचा था कि भीष्म और कृष्णमेनन की तरह मैं भी क्रानिक बैचलर (बालब्रह्म-चारी) रहूंगा मगर 'रामचंद्रिका' के केशव वाली पीड़ा होने लगी तो सोचने लगा कि मैं खुद ही मात हुआ जा रहा हूं, कहां तो भीष्म को भी मात करने की सोच रहा था.

खैर, तो जैसे ही मेरे शुभचिंतक रिश्तेदारों, अभिभावकों को मेरी परिवर्तित विचारशैली का पता चला उन्होंने मेरे लिए शादी का बाजार छान मारा. मैं ने उन से रेशमी रूमाल में लपेट कर एक बात कही कि आप जो भी घर देखें उस में यह जरूर देख लें कि सालियां जरूर हों, वे भी प्रत्याशी बहूरानी से छोटी हों. वे कहने लगे, "यह शर्त तुम ने बहुत देर में बताई, हम तो एक घर में बात लगभग पक्की भी कर चुके. अलबत्ता जब हम वहां गए थे तो कई सारी छोरियां भागी फिर रही थीं. कोई चाय ला रही थी, कोई गरम समोसे. वे जरूर भावी सालियां ही होंगी. तसल्ली ही करना चाहते हो तो होली आ रही है. मिलने के बहाने जा कर उन्हें गिन आना. कितनी हैं. तुम्हारे लिए बुलावा भी है."

मैं पूरे जोशखरोश के साथ रंग, गुलाल, अभ्रक वगैरह की ट्रंक भरवा कर पहुंचा कि तमाम सालियों को ही नहीं सालों को भी नहीं छोड़ूंगा. मगर हमारी तकदीर हम से ही होली खेल गई. वहां जा कर देखा तो बीसों सदस्यों के भरेपूरे परिवार में एक भी साली नहीं. धत तेरी की. मैं फौरन अपनी ट्रंक वापस ले आया.

खैर, अब दूसरी जगह बात चलवाई, पूरा साल निकल गया. मेरी वह खासमखास शर्त हर जगह पहुंच चुकी थी. एक दिन एकाएक एक मिनी बस दरवाजे पर आ कर

ऑल्विन ट्रेन्डी क्वॉर्ट्ज़ कोऑर्डिनेटस.
काफ़ी है बस एक घड़ी आपकी सभी
रंगबिरंगी पोशाकों का साथ निभाने को.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रुकी. उस में से तीन वयस्क और सात नवयौवनाएं उतरीं, "इधर से जा रहे थे सोचा आप लोगों को 'सरप्राइज' दें." उन्होंने कहा. मुझे बहुत ही अच्छा लगा. ऐसे ही स्पष्टवादी होना चाहिए हर किसी को. वे आगे बोले, "ये सारी बहनें कहने लगीं, हमें तो अपने होने वाले जीजाजी को देखना है. हम ने कहा चलो. 'शुभस्य शीघ्रम.'"

हमारा हाल यह था कि किसकिस को देखें. एक से एक नंबर लेने वाली थी. मन पूछ रहा था, 'पर इन में से वह कौन सी है?' फिर अपनेआप ही जवाब भी दे डाला. 'कोई भी हो, इन्हीं में से तो है.' उन्होंने पता बताया, जुहू पर सेंटौर होटल से पहले नीली बिल्डिंग. रोज सुबहशाम घूमनेफिरने वाले भरपूर तादाद में आतेजाते रहते हैं. और बस जैसे अचानक वे मिनी बस से उतरे थे उसी फुरती से वापस भी जा बैठे. घर की चाय पिलाने की इज्जत भी हमें नहीं बख्शी और मुझे बेहद बेचैन बना कर छोड़ गईं, सातों की सातों.

बड़ी मुशकिल से उछलकूद मचाने वाले दिल को लगाम लगाई. और सुबह होते ही प्रातःकालीन भ्रमण के बहाने जूहू की बस पकड़ी. भई, जब वे इतने बिंदास हो सकते हैं तो मैं क्यों नहीं. अलबत्ता रास्ते भर एक बात मुझे परेशान करती रही. कमाल की बहने थीं सातों की सातों. उन में छोटीबड़ी का ही पता नहीं चल रहा था. सब से छोटी और सब से बड़ी में कम से कम सात साल का तो फर्क होगा ही, तो 14 साल और 21 साल की बराबर कैसे दिख रही थीं. दूसरी तमाशे की बात यह थी कि सब गोरीचिट्टी तो थीं मगर नाकनक्श एक जैसे नहीं थे. शायद चचेरीतयेरी बहनें भी हों उस रेवड़ में.

घंटी बजते ही दरवाजा खुल गया. वे उस रेवड़ के पिताजी थे. उन की आंखें एकदम चौड़ी हो गईं. आखिर 'सरप्राइज' दिया था हम ने भी. घर बिलकुल खाली था. जिसे खास देखने गए थे. वह तब तक भी सोई पड़ी थी. मगर बाकी सब? उधर सामने

३ वर्ष की गारंटी

ऑल्विन ट्रेन्डी क्वॉर्ट्ज़ कोऑर्डिनेट्स के हर सेट में ये हैं:

- एक यूनिट घड़ी के डायल और क्वॉर्ट्ज़ मूवमेंट का
- ५ आकर्षक रंगों के घड़ी के केस
- ५ सेट रंगबिरंगे स्ट्रैप के

तो आइए. घड़ी उठाइए. अपने मन और पोशाक के मुताबिक रंग मिलाइए. समय के सजीले रंग आज़माइए.

ट्रेन्डी से कदम मिला कर चलें

डायल लें. | एक केस में बिठा दें. केस ५ आकर्षक रंगों में आते हैं. | एक रंग का स्ट्रैप एक ओर घुसा कर लगा दें. चुनने के लिए ५ रंग हैं. | अन्य किसी भी रंग का स्ट्रैप दूसरी ओर लगाएं. | इस तरह आप बदल-बदल कर रंग जोड़ते जाइए. एक सेट से १२५ रंग-संयोजन मिलेंगे आपको.

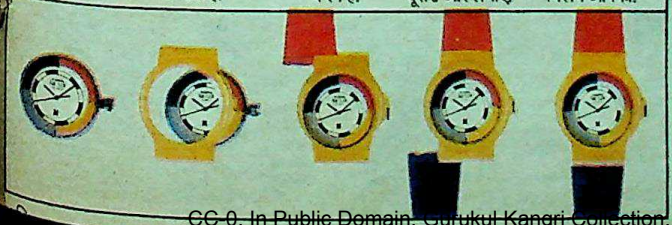

ALLWYN
TRENDY
QUARTZ
Co-ordinates

मज़बूत व हलकी.
पानी से प्रतिकार करती.
कीमत भी किफ़ायती.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खड़े मातापिता जी दोनों के होश फाख्ता थे जैसे उन्हें रंगे हाथ पकड़ लिया हो. आखिर उन्होंने खुद ही गुनाह कुबूल कर डाला.

वहां से निकलतेनिकलते तीसरे घर की याद आई. सोचा चलो आज का दिन सुंदरियों की गलियों के चक्कर काट कर ही गुजारा जाए. वैसे सच पूछो तो बिन बुलाए किसी के घर जाना... मगर एक शायर ने हिम्मत बंधवा दी:

खुदा करे हसीनों के मांबाप मर जाएं.
बहाना मौत का हो हम उन के घर जाएं.

ये शायर ऐसी मनहूस शायरी करने से भी बाज नहीं आते. मगर मेरा हृदय इतना सब्र करने को तैयार नहीं था कि उस के मांबाप के मरने तक का इंतजार करता. डायरी में पता देख कर मैं तो बेधड़क वहां जा पहुंचा. दरवाजा खोला एक किशोरी ने. बढ़िया बाब कट केशराशि, छींट वाली बुश्शर्ट, नीली जींस पहने थी. आधुनिक संस्कृति वाले घरों में लड़कियों ने साड़ियां पहनना ही छोड़ दिया है. उस के पान खाए से होंठ और सुरमा लगी सी आंखों से ही मैं ने अंदाजा लगा लिया, जरूर उस की छोटी बहन होगी– मेरी होने वाली साली. आव न देखा न ताव, पूछा, "तुम हमें पहचानती हो?" उस ने मुंह खोला, मुसकराई, "पहचानता हूं." उस की मरदानी आवाज सुन कर मेरे हाथ वहीं के वहीं रुक गए, वरना जेब से गुलाल निकालने के लिए बढ़ चुके थे. मैं आसमान से गिरा. वह लड़की का छोटा भाई निकला.

इन हादसों ने मुझे इतना बौखला दिया कि उस के बाद साली वाले घर को खोजने का विचार उठा कर ताक पर रख दिया. जहां अच्छा जीवनसाथी, अच्छी मनपंसद पत्नी मिलना केवल संयोग पर निर्भर है वहां उत्तम, जी लगाने वाली सालियां मिलना भी एकदम संयोग की ही बात है. अब होली वाले दिन मैं हर खूबसूरत नारी को अपनी प्रिय साली समझ कर सब तरह की आजादी ले लेता हूं. बस... ●

होंठ हुए कनेर

होंठ हुए कनेर तुम्हारे,
गाल सुर्ख गुलाब हो गए.
सरसों सी लहराई काया,
रंग सारे ही ख्वाब हो गए.

इठलाई ऐसी आंखें,
झूलेझूले से गेसू,
यौवन ऐसी आग लगाए,
जैसे खिले हों टेसू.
रंगा कौन सा रंग जो तुम
पल भर में लाजवाब हो गए.

नशा चढ़ा नभथल में,
धरती गाती गीत.
चितवन ने क्या कह दिया
पत्थर उपजी प्रीत.
अल्हड़ यौवन ले कर तुम,
फागुनी शोख शबाब हो गए.

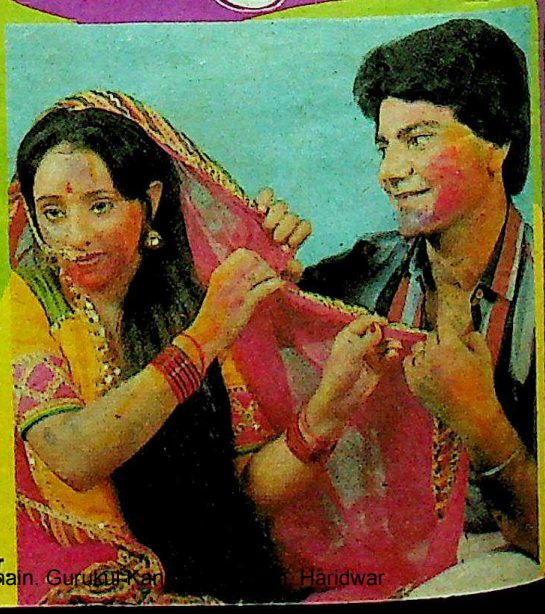

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मंदाकिनी में स्नान कीजिए

पाप मुक्ति प्रमाणपत्र लीजिए

लेख • डा. बसंतीलाल बाबेल

राजस्थान और मध्य प्रदेश की सीमा पर एक छोटा सा कसबा है प्रतापगढ़. प्रतापगढ़ से कोई 20 किलोमीटर की दूरी पर बसे अरनोद गांव के पास सुरम्य पहाड़ियों में एक दर्शनीय स्थल है. गौतमेश्वर महादेव. यहां गौतमेश्वर, मंगलेश्वर एवं नीलकंठ महादेव के तीन मंदिर हैं.

इस दर्शनीय स्थल का एक मुख्य आकर्षण है—मंदाकिनी गंगा. मंदाकिनी गंगा के नाम से विख्यात यह जलकुंड मंदिर के प्रवेशद्वार के ठीक बाईं तरफ है. यह इस क्षेत्र की श्रद्धालु जनता की धार्मिक आस्था का अनूठा उदाहरण है.

ऐसी मान्यता है कि इस जलकुंड में स्नान करने से दोषों का निवारण हो जाता है. पापों के प्रायश्चित्त के लिए इस जलकुंड में स्नान करना यहां की सामाजिक मान्यता के अनुसार आवश्यक है.जब कोई व्यक्ति किसी भी प्रकार का अपराध या बुरा काम करता है तो वह जाति से तब तक बहिष्कृत रहता है जब तक वह इस जलकुंड में स्नान कर के यहां से पापमुक्ति प्रमाणपत्र प्राप्त नहीं कर लेता है.

पापों के प्रायश्चित्त के लिए इस जलकुंड में स्नान करने वाले प्रत्येक व्यक्ति को यहां से एक प्रमाणपत्र दिया जाता है जिस का शुल्क 11 रुपए निर्धारित है. इस प्रमाणपत्र के माध्यम से गांव के पंचों को यह आदेश दिया जाता है कि प्रमाणपत्रधारी व्यक्ति को जाति में ले लिया जाए.

आश्चर्य तो इस बात का है कि इस प्रमाणपत्र को सजा में रिआयत पाने के लिए न्यायालयों तक में पेश किया जाता है. •

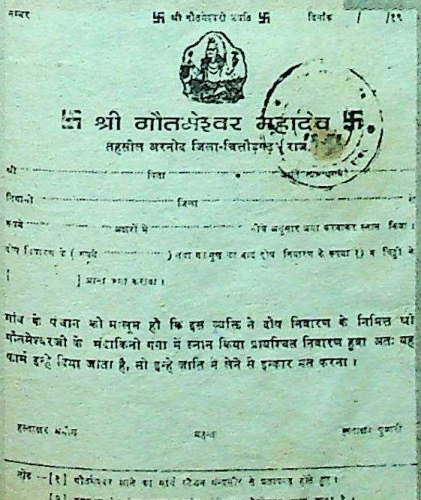

नम्बर 卐 श्री गौतमेश्वरो जयति 卐 दिनांक / /१९

卐 श्री गौतमेश्वर महादेव 卐

तहसील अरनोद जिला-चित्तौड़गढ़ (राज.)

श्री ..... पिता ..... ग्राम .....

निवासी ..... जिला .....

कस्बे ..... अवसरों पे ..... दोष अनुसार यात्रा करके स्नान किया।

दोष निवारण के (रुपये .....) तथा वस्तुएं का बाद दोष निवारण के कराया है। व चिट्ठी के (.....) आना भरा कराया।

गांव के पंचान को मालूम हो कि इस व्यक्ति ने दोष निवारण के निमित्त श्री गौतमेश्वरजी के मंदाकिनी गंगा में स्नान किया प्रायश्चित निवारण हुवा अतः यह फार्म इन्हें दिया जाता है, सो इन्हें जाति में लेने से इन्कार मत करना।

हस्ताक्षर अरनोद मंडल मंत्री हस्ताक्षर पुजारी

नोट :—[१] गौतमेश्वर आने का मार्ग रोडवेज बसस्टेंड से आसान है।

[२] रहने का घोड़ा ..... [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वो दस साल

कानों की हलकी सी आहट सुन कर ऐसे लगा, जैसे किसी के पांव जमीन पर नहीं, उस के हृदय पर ही पड़ते जा रहे हों. वही तो होगी, भला और कौन हो सकता है? इस घर में सदा वही तो थी, जो सब का स्वागत किया करती थी. जिस पल जिसे जो चाहिए, उसे मिल जाता था, चाय के प्याले से ले कर रुपएपैसे तक.

"अरे, आप?" परदा हटाते ही चिरपरिचित स्वर कानों में पड़ा और सामने वही 10 साल पुरानी शुभा खड़ी थी.

"नमस्कार... पहचान लिया आप ने... वरना मैं तो डर रहा था कि इतने वर्षों बाद शायद तुम मुझे पहचानोगी भी या नहीं?"

पहले 'आप' कहना और फिर 'तुम' इस जरा सी घबराहट में शब्द इधरउधर हो

कहानी ● सुधा गुप्ता

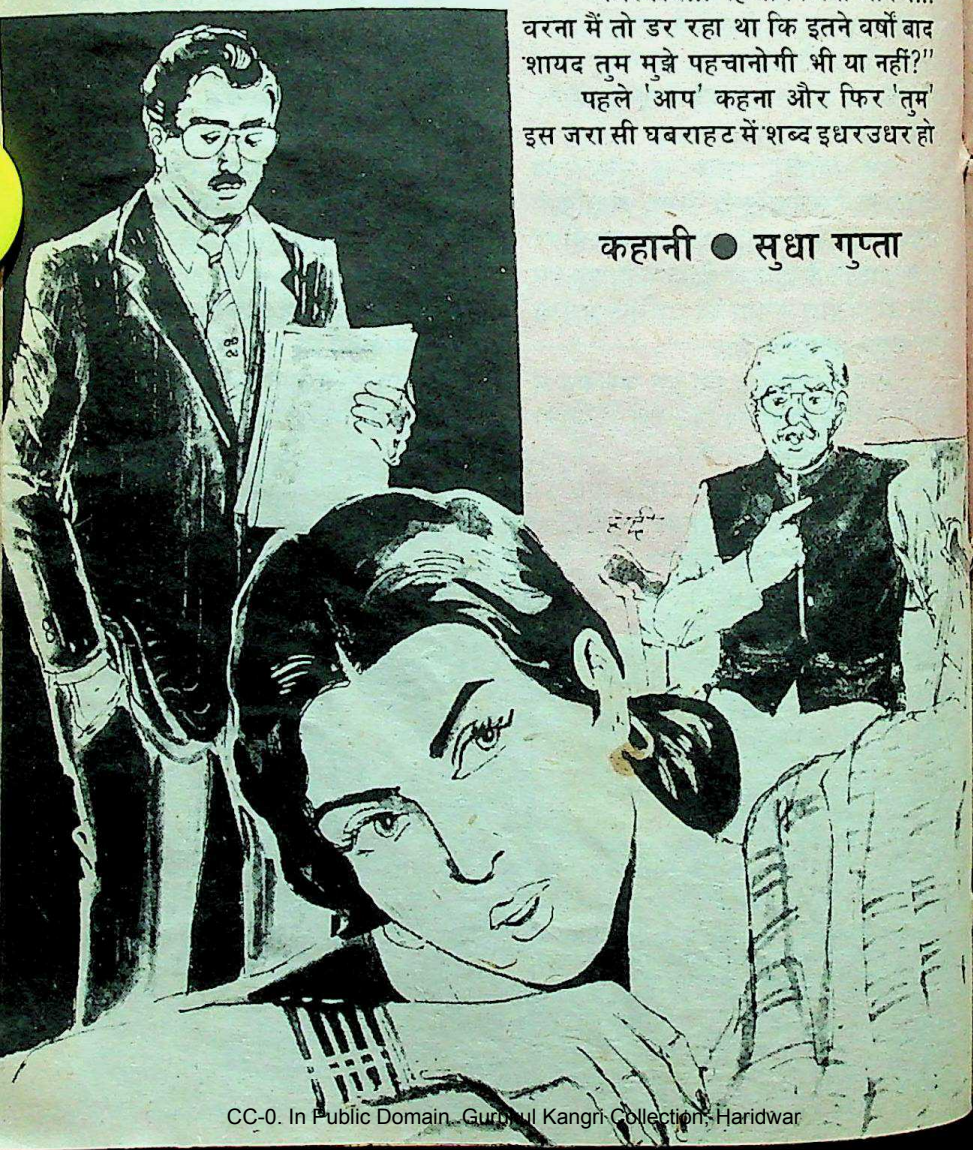

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाना स्वाभाविक ही था. 10 वर्षों में कितना कुछ बदल जाता है. मनुष्य की परिस्थितियां, उस की भावनाएं और यहां तक कि सूरत भी. स्वभाव भी तो बदल जाता है. 10 साल पुरानी शुभा अब कैसी होगी और किस हाल में होगी, इस जिज्ञासा के कारण वह पिछले दो दिन और दो रातों से सो नहीं सके थे.

"कैसी हो शुभा?" वह धीरे से बोले.

किंकर्तव्यविमूढ़ सी शुभा सामने खड़े अनुराग को देख कर मानो गूंगी सी हो गई थी. ठगी सी उन्हें निहार रही थी. शायद उसे विश्वास नहीं हो रहा था सामने खड़े प्राणी को देख कर. सच ही तो है, 10 साल में तो दुनिया ही बदल जाती है. लेकिन फिर अनुराग क्यों नहीं बदले? आंखों में वैसी ही चिरपरिचित भावना लिए वह उसे निहार रहे थे.

जिन भाइयों के लिए शुभा ने अपनी सारी इच्छाएं होम कर दी थीं, उन्हीं भाइयों की प्रतिक्रिया अनुराग से जान कर वह स्तब्ध रह गई और पिछले दस सालों की यादें उस के स्मृतिपटल पर नाच उठीं. उसे समझ नहीं आया कि कमी कहां रह गई.

"कैसी हो शुभा?" अनुराग का स्वर फिर उभरा और वह चौंक सी गई.

"अ... अच्छी हूं. आप बैठिए न." खोखली सी हंसी उभरी थी शुभा के होंठों पर, "आप बैठिए, मैं आप के लिए चाय..."

"इतनी दूर से मैं चाय पीने ही तो आया

"इस घर को बेच कर तुम्हारे भाई दिल्ली में फ्लैट खरीदने वाले हैं." अनुराग ने कहा तो शुभा अवाक रह गई.

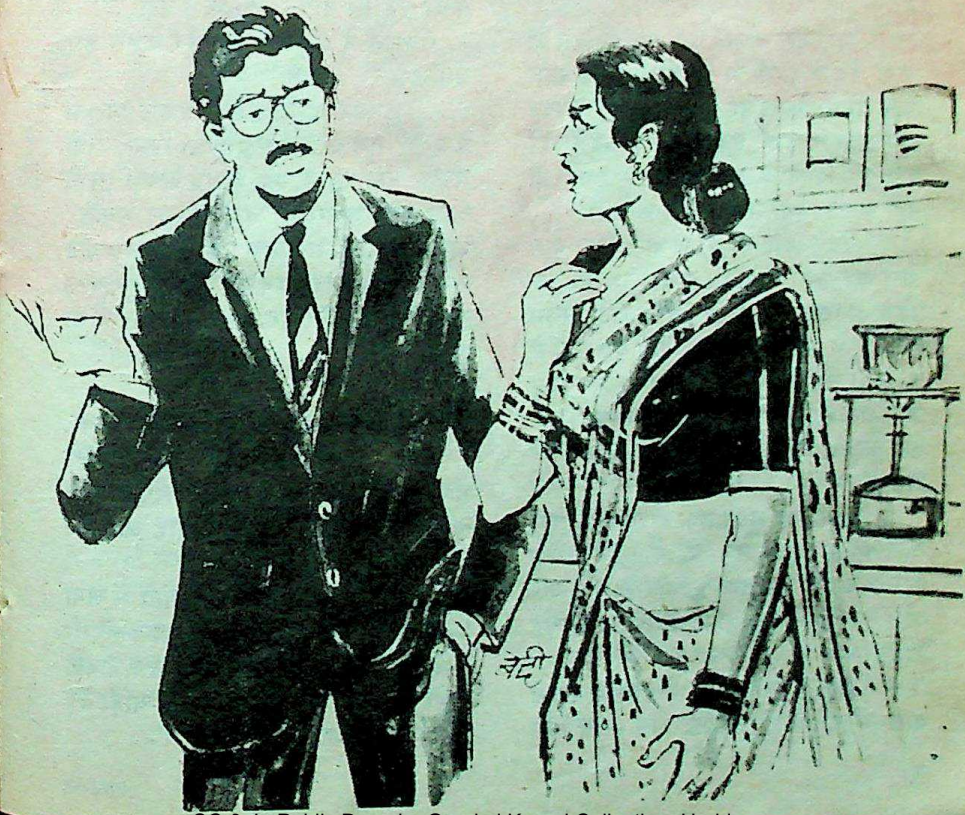

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हूं. जब आया हूं तो चाय भी पी लूंगा और खाना भी खाऊंगा. इतनी जल्दी भी क्या है? आओ, मेरे पास बैठो."

शुभा ने महसूस किया अनुराग की स्वर की मिठास आज भी वैसी ही थी, जैसे 10 साल पहले हुआ करती थी. आज भी वैसा ही अनुरोध था, वैसी ही व्याकुलता.

"आओ बैठो शुभा, क्या सोच रही हो?" अनुराग ने पुनः कहा.

साड़ी का आंचल हाथ में लपेटते हुए वह चुपचाप सामने आ कर बैठ गई.

"क्या मेरा आना आज भी अच्छा नहीं लगा?"

"जी... ऐसा तो नहीं."

"तुम्हारे पिताजी को मेरा तुम से मिलना पसंद नहीं था न, पिता की आज्ञाकारिणी बेटी थी न तुम, इसी लिए तो मुझे लौटा दिया था..."

"उन पुरानी बातों में अब क्या रखा है?"

"क्यों नहीं रखा? वही पुरानी बातें ही तो हैं, जिन्हें छाती से लगाए मैं ने 10 साल बिता दिए. मेरे लिए तो आज भी जीवन वहीं खड़ा है शुभा, एक कदम भी आगे नहीं बढ़ा. हम अपने अतीत को काट कर फेंक तो नहीं सकते. क्या तुम फेंक सकती हो?"

गरदन झुका ली थी शुभा ने. फिर कुछ सोच कर उस की तरफ देखा. 35-36 तक पहुंचे अनुराग पहले से कहीं ज्यादा सौम्य लग रहे थे. सौम्य और सभ्य तो वह सदा से थे, तभी तो उस के पिता द्वारा दुत्कार दिए जाने पर भी टस से मस नहीं हुए थे, सिर्फ उस की ओर देखते रहे थे, अपमानित और झेंपे से.

"अभी 10 साल तक शुभा की शादी नहीं हो सकती. तुम जाओ और अपना रास्ता नापो." पिताजी का फैसला सुन कर लौट गए थे और 10 साल बीतने पर ही वह वापस आए थे.

"आज तुम्हारे पिताजी होते तो उन से बात करता. तुम्हारे छोटे भाई से दो दिन पहले मुलाकात हुई तो पता चला अब वह नहीं रहे. तुम्हारे दोनों भाइयों ने शादी कर ली है न... और छोटी बहन क्या अभी पढ़ रही है?"

"जी."

"तुम्हारा अब क्या विचार है?"

"जी... किस बारे में?" चौंक कर रह गई थी शुभा. स्वर भर्रा गया था. अनुराग उठ कर पास चले आए और हाथ बढ़ा कर उस का कंधा छुआ, "मेरे बारे में? क्या मेरी जिंदगी के बारे में तुम ने कुछ नहीं सोचा?"

"क्या? आप ने अब तक शादी नहीं की?" भौचक्की रह गई शुभा.

"जिस से प्यार करता था, वह तो अपने भाईबहनों को पालने में व्यस्त थी. अपने कमजोर कंधों पर पिता की गृहस्थी का बोझ लादे वह मेरे प्यार का जरा सा स्पर्श भी सह पाने में असमर्थ थी. मैं कैसे शादी कर सकता था उस से? वह मेरे पास आ जाती तो उस के अपंग पिता का क्या होता? कभी पत्र भी नहीं लिखा मैं ने उसे..."

शुभा ने अनुराग की ओर देखते हुए उसांस भरी, "ओह."

"तुम्हारे दोनों भाई आजकल दिल्ली में हैं न? तुम ने उन्हें पढ़ालिखा दिया, दोनों अच्छा कमा रहे हैं. क्या वे अब अपनी छोटी बहन की जिम्मेदारी नहीं संभाल सकते? शुभा, बोलो." अनायास उसे बांह से पकड़ कर उठा लिया अनुराग ने, "शुभा, तुम कुछ बोलती क्यों नहीं? मेरे सवालों का जवाब दो शुभा."

एकाएक फफकफफक कर रो पड़ी शुभा. "शुभा, अब तो 10 साल बीत चुके हैं. अब तो तुम अपना घर बसा सकती हो. तुम्हारे पिताजी ने 10 साल बाद आने को कहा था न?"

अनुराग ने बढ़ कर उसे बांहों में लेना चाहा तो वह उस के वक्ष में सिर छिपा कर रो पड़ी. अनुराग ने उसे खुद से अलग करना चाहा तो वह धीरे से बोली, "अभी थोड़ी देर और अपने पास रहने दीजिए."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनुराग ने धीरे से उस का चेहरा अपनी तरफ घुमाया और उस के आंसू पोंछ दिए. शुभा का सामीप्य तनमन में संजीवनी जैसा घुलने लगा था. न जाने कब से थपकथपक

"खबरदार, जो फिर से हमारे घर आए. शुभा की शादी नहीं हो सकती." पिताजी ने क्रोधित स्वर में कहा.

शुभा को कितनी सुरक्षा मिली थी, अनुराग के अंक में. भावावेश में अनुराग के होंठ उस के माथे पर आ टिके तो सुबकते हुए वह धीरे से पूछने लगी, "क्या सचमुच आप ने शादी नहीं की?"

"मैं झूठ नहीं बोलता शुभा... मैं ने कहा न, मैं आज भी वहीं खड़ा हूं, जहां 10 साल पहले खड़ा था."

"क्यों?"

"इस का उत्तर अपने दिल से पूछो."

कर सुलाई हुई इच्छाएं जागने लगी थीं. उंगलियों से शुभा के घने केशों को सहलाते हुए अनुराग ने अपनी बांहों का घेरा और तंग कर लिया था.

"नहीं." धीरे से बुदबुदाई शुभा.

"क्यों शुभा, क्या आज भी मेरा स्पर्श अच्छा नहीं लगता?"

"ऐसा क्यों सोचते हैं आप?" धीरे से हाथ हटाने चाहे, लेकिन अनुराग के हाथों की नरमी कठोरता का रूप ले चुकी थी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मेरे बारे में क्या सोचा है, शुभा? जानती हो, मेरे सभी साथियों के बच्चे भी 10-10 साल के हो गए हैं. मुझे भी अपना घर चाहिए. अपनी गृहस्थी, अपनी संतान चाहिए. क्या तुम से यह सब चाहना मेरा अधिकार नहीं है?"

"मेरी... मेरी अब शादी की उम्र कहां रह गई है, 30 पार कर चुकी हूं. आप को तो कोई भी छोटी उम्र की लड़की मिल सकती है."

"दिमाग तो नहीं घूम गया तुम्हारा? तुम 30 पार कर गई हो तो क्या मेरी उम्र ठहर गई थी? क्या मैं 40 के पास नहीं पहुंच गया. शुभा, यह कैसा इनाम दे रही हो मुझे 10 साल लंबे इंतजार का? तुम कैसी पत्थर दिल हो गई हो, शुभी?"

'शुभी' इस नाम से दूसरी बार पुकारा था अनुराग ने. कानों में रस घोलते प्रणय निवेदन में डूबे शब्द किसे अच्छे नहीं लगते? जीवन के किसी भी पड़ाव पर किसी न किसी के होंठों से प्यार के मीठे बोल अच्छे लगते ही हैं.

"शुभी, अब मैं तुम्हें अपने साथ ही ले कर जाऊंगा. सादे से समारोह में शादी कर के हम अपना जीवन शुरू करेंगे. अब और इंतजार नहीं होता."

"अनुराग." रो पड़ी थी शुभा.

"रोओ मत शुभी, तुम्हारे मन में क्या है, मुझ से कह दो... बैठो." सहारा दे कर उसे सोफे पर बैठाया और खुद पास पड़ी कुरसी खींच कर सामने बैठ गए.

"मैं इतनी दूर से तुम्हें रुलाने तो नहीं आया हूं, शुभा. बताओ, क्या बात है जो इतना रो रही हो?"

परंतु शुभा उत्तर कहां दे पाई थी, अनुराग ने ही किसी तरह उसे चुप कराया. जब शांत हो गई तो धीरे से बोली, "अब तो कुछ बनाने दीजिए अपने लिए. जब से आए हैं, पानी भी नहीं पिलाया मैं ने."

"चलो, मैं तुम्हारे साथ रसोई में चलता हूं. तुम चाय बनाना, मैं तुम्हारे पास बैठूंगा." अनुराग मुसकराए थे.

"चलिए." आंखें पोंछती हुई शुभा उठ पड़ी थी.

रसोई में वह स्टोव जलाने लगी तो अनायास ही अनुराग ने पूछ लिया, "गैस नहीं है शुभी?"

"नहीं."

रसोई में नजरें दौड़ा कर देखा तो स्तब्ध रह गए अनुराग. घर में सुखसुविधा का कोई भी सामान नहीं था. छोटे भाईबहनों की परवरिश में शुभा अपना सुख भूल चुकी थी. क्या पूछते अनुराग? शुभा के स्वाभिमान को कोई चोट भी तो नहीं पहुंचाना चाहते थे.

कालिज में वह मेधावी छात्रा थी. स्नातक होते ही किसी कार्यालय में लिपिक हो गई थी. साथसाथ पढ़ती भी रही थी और घर भी संभालती रही. असमय मां का देहांत और फिर पिता का किसी दुर्घटना में टांग का बेकार हो जाना, कितना बड़ा हादसा था शुभा के लिए. शुभा एक ही झटके में उन से इतनी दूर चली गई. वह समझ ही नहीं पाए कि कैसे कब सब हो गया था.

"अरे, दूध फट गया..." शुभा का स्वर कानों में पड़ा और अनुराग की तंद्रा टूटी.

"आज सुबह उबाल कर नहीं जा सकी थी."

"कोई बात नहीं, तुम्हारे हाथ का कहवा ही पी लूंगा. क्या हुआ जो दूध फट गया."

"आजकल परीक्षाएं चल रही हैं न, कालिज में ज्यादा काम रहता है. निशा से कहा भी था, शायद वह भूल गई होगी."

"ठहरो, मैं दुकान से ले आता हूं." पलक झपकते ही अनुराग गए और नुक्कड़ वाली दुकान से सूखे दूध का डब्बा ले आए.

अवाक रह गई शुभा. उस के चेहरे पर आए भाव देख हंस पड़े अनुराग, "पूरे तीन साल तुम्हारे घर में किराएदार बन कर रहा हूं. याद नहीं क्या, इस महल्ले के चप्पेचप्पे से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाकिफ हूं. चलो हटो, मैं चाय बनाता हूं. अकेले रहतेरहते अच्छा रसोइया तो बन ही गया हूं."

कुछ क्षण बाद अनुराग बोले, "निशा आजकल क्या कर रही है?"

"नृत्य सीख रही है, वैसे बी.ए. कर चुकी है."

"कहीं नौकरी नहीं मिली क्या?"

"उसे नौकरी पसंद नहीं, कहती है, प्रसिद्ध नर्तकी बनना चाहती है."

"आजकल किसी बड़े गुरु की शिष्या है क्या?"

"जी."

"कितना खर्च आ जाता होगा?"

"छः महीने की फीस दस हजार रुपए है."

"क्या?" बुरी तरह चौंक गए अनुराग. अपनी जरूरत के लिए किसी तरह का भी सामान न जुटा कर शुभा बुरी तरह 'शहीद' हो चुकी थी. नजर दौड़ा कर देखा, शुभा के गले, हाथों अथवा उंगलियों में गहनों के नाम पर कुछ भी नहीं था. दाएं हाथ में एक घड़ी और कानों में छोटेछोटे टाप्स, शायद वे भी सोने के नहीं होंगे. सूती साड़ी और सूनासूना सा चेहरा.

"कितनी तनख्वाह मिलती है तुम्हें?"

"कुल मिला कर चार हजार हो जाती है. शाम को ट्यूशन पढ़ाती हूं."

खोखली सी हंसी हंस पड़े अनुराग, "मेरे घर में नौकरी करोगी शुभा, पांच हजार रुपए हर महीने ला कर तुम्हारी हथेली पर रख दिया करूंगा. यह नौकरी छोड़ दो."

"अनुराग..."

"हां शुभी, नृत्य सीखना बुरी बात नहीं, लेकिन यह महज एक शौक है. जीवन की जरूरत है दो वक्त की रोटी और तन का कपड़ा. निशा को सब से पहले अपनी रोटी का खयाल आना चाहिए था. तुम्हारे लिए भाईबहन क्या कभी नहीं सोचेंगे? तुम्हारी हर इच्छा, हर जरूरत को मार कर अपने

सिलसिला

तू ने जो दिए गम, कोई गम नहीं,
हम ने किए सितम, कुछ कम नहीं,
फिर किसी से क्या गिला, क्या शिकवा,
यह तो है मोहब्बत का इक सिलसिला.

—जाकिर मो. मदनी 'जकी'

शौक पूरे करने का उन्हें क्या अधिकार है?"

"अनुराग..."

"सब स्वार्थी हैं, शुभा. जानती हो, तीन दिन पहले मैं विजय से मिला था. संयोग से उस के घर जाना पड़ा. हमारी ही कंपनी में वह गुणवत्ता नियंत्रक का काम करता है. क्या नहीं है उस के घर में, हर सुख, हर सुविधा. तुम्हारी ही मेहनत का फल है, जो आज वह इतना सुखी है. मुझे तुम्हारे भाइयों के सुख से जलन या द्वेष नहीं है. मैं तो खुश हूं कि तुम्हारा त्याग असफल नहीं गया. लेकिन तुम कहां हो? तुम्हारे पास क्या है... जरूरत का सामान तक नहीं?

"मैं तो विजय को देखते ही पहचान गया था. बातोंबातों में तुम्हारे विषय में पूछा तो बड़ी सफाई से वह दोनों पतिपत्नी बात टाल गए. अजय भी वहीं मिल गया. मेरे और तुम्हारे विषय में शायद उन्हें पता नहीं था. वरना वे मुझ से ऐसी बातें कभी नहीं करते."

"कैसी बातें?" शुभा ने धीरे से पूछा.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"इस घर को बेच कर दोनों बहनें दिल्ली में फ्लैट खरीदने वाले हैं. तुम्हारे बारे में उन की यह राय है कि तुम किसी कामकाजी महिला होस्टल में रह सकती हो. शेष रहा निशा का सवाल, सो तीसरा हिस्सा उसे भी मिलेगा."

"नहीं..." अवाक रह गई शुभा.

"यह सच है, मैं ने अपने कानों से सुना है. इन 10 सालों की अथक मेहनत का यह पारितोषिक तुम्हें मिलने वाला है. कैसा है यह इनाम? पसंद आया...?

"इतनी मेहनत कर के भी आज तुम्हारे पास अपना कहने को कुछ नहीं है. सब तुम्हें सीढ़ी बना कर ऊपर जा पहुंचे, अब सीढ़ी की चिंता किसे है?"

शुभा की आंखों से आंसू बहने लगे थे. वह जानती थी कि कुछ ऐसा ही उस के साथ होगा. लेकिन इस घर में उस के लिए स्थान ही नहीं रहेगा, ऐसा तो उस ने कभी नहीं सोचा था.

"नहीं शुभी... पगली, रो क्यों पड़ी?" हाथ बढ़ा कर दोनों हाथ अपने हाथों में ले कर दबा दिए अनुराग ने, "यही दुनिया का नियम है. सदा से ऐसा ही होता आया है. सीढ़ी सदा वहीं की वहीं रह जाती है. लेकिन मैं हूं न तुम्हारा... आज भी मैं तुम्हारा हूं."

"अनुराग." तड़प कर अनुराग की बांहों में छिप कर फिर से शुभा फूटफूट कर रो पड़ी.

"तुम नहीं जानती, पिछली दो रातें मैं ने कैसे काटी हैं. जी चाहता था कि उड़ कर तुम्हारे पास चला आऊं. अब और मत सहो शुभी... तुम्हारे सभी फर्ज पूरे हो चुके हैं. निशा कहीं नौकरी कर के अपना शौक पूरा कर सकती है. अब अपने बारे में भी सोचो." उस की पीठ सहलातेसहलाते अनुराग बोले.

एक तूफान से शुभा का साक्षात्कार हो चुका था. भाइयों और बहन से उस ने वाहवाही तो कभी नहीं चाही थी, लेकिन ऐसे व्यवहार की तो उसे सपने में उम्मीद नहीं थी. ऐसा लगा, मानो इतने बड़े संसार में वह असहाय रह गई है नितांत अकेली.

"अपने दोनों भाइयों को बुलाओ और निशा से भी कह दो कि तुम शादी करना चाहती हो. बहुत हो चुका है शुभी. हद की कुरबानी और हद का लाड़प्यार ही अच्छा लगता है..." अनुराग ने धीरेधीरे ढाढ़स बंधाया और शुभा को आगामी दिशा की ओर बढ़ने का इशारा किया.

"निशा का क्या होगा? उस की शादी से पहले मैं अपने बारे में कैसे सोच सकती हूं?" वह धीरे से बोली.

"उस के भाई हैं न उस के लिए सोचने को. वह यह घर बेच रहे हैं. क्या बहन की शादी नहीं करेंगे?"

"मेरे सिर पर 30 हजार रुपया कर्ज है अनुराग, हर महीने छः सौ रुपया किश्त कटती है. नौकरी छोड़ दी तो वह रुपया...?"

"विजय और अजय क्या वह कर्ज नहीं चुका सकेंगे? खैर, जब नौकरी छोड़ोगी तो भविष्य निधि आदि के रुपए तो मिलेंगे ही... उन में से कर्ज उतार कर बाकी रुपए निशा की शादी के लिए रख देना..."

"और मैं?"

"तुम्हारे लिए मैं जो हूं. ज्यादा बड़ा तो नहीं लेकिन छोटा सा घर है मेरे पास. चार लाख का बीमा भी है. तुम्हारा भविष्य असुरक्षित नहीं है, शुभी. तुम्हारे लिए तिनकातिनका कर घर बनाया है मैं ने. सुखसुविधा का पूरा सामान सहेज कर रखा है. बस, तुम आ जाओ."

"दहेज नहीं चाहिए क्या? सिर्फ मुझे ही पा कर तृप्त हो जाएंगे?" रोतेरोते भी वह हंस पड़ी थी.

"तुम से भी बढ़ कर और कुछ नहीं है तुम्हारे पास जिसे मैं मांग सकूं. बोलो, कब आ रही हो?"

"सचमुच गंभीर हैं आप? विश्वास नहीं होता."

एकाएक उस का चेहरा दोनों हाथों में ले कर उस के मस्तक को चूम लिया अनुराग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ने, "चलो, कहीं बाहर चलें. रात का खाना बाहर ही खाएंगे. फिर सुबह मुझे वापस जाना है."

अनुराग का अनुरोध शुभा ने मान लिया.

रात नौ बजे शुभा को घर छोड़ वह होटल में चले गए, जहां वह ठहरे हुए थे.

निशा मुंह फुला कर बैठी थी. जैसे ही शुभा कपड़े बदल कर अपने कमरे में जाने लगी, उस ने पूछ लिया, "वह कौन थे जिन के साथ तुम इतनी देर तक...?"

"मेरे मित्र थे... क्यों?"

"मुझे यह सब अच्छा नहीं लगा दीदी, कोई क्या कहेगा?"

"चुपचाप सो जाओ, तुम से अधिक इस बात की मुझे चिंता है कि कोई क्या कहेगा."

निशा को टका सा जवाब दे कर शुभा अपने कमरे में चली गई. रात भर वह बीते हुए 10 सालों को चित्रपट की भांति देखती रही. उसे अब भी वह दिन याद था, जब निशा का जन्म हुआ था. वह तब 12 साल की थी. निशा का जन्म और मां की मौत में सिर्फ महीने भर का अंतर था. मां के जाते ही घर का बोझ उस के कंधों पर आ पड़ा था. वह भाइयों और बहन की बहन न हो कर मां बन गई थी. चार बच्चों के बाद अब पिता शादी भी कैसे करते. किसी तरह गाड़ी घिसटती रही. कुछ वर्ष बीते. पिताजी ने छत पर बना कमरा और रसोई किराए पर उठा दिया था.

"थोड़ा पानी मिलेगा?" हाथ में जग लिए पुकारा था अनुराग ने. पहली बार यही बात हुई थी अनुराग से. पता चला कि वह 'चार्टर्ड एकाउंटेंट' की पढ़ाई कर रहे हैं और अब एकदो साल यहीं रहेंगे.

कभी ज्यादा बात नहीं हुई थी उन से शुभा की.

लेकिन तीसरे वर्ष के अंतिम दिनों में एक हादसा हो गया. शुभा के पिता एक दुर्घटना में अपनी दाईं टांग खो बैठे. नौकरी

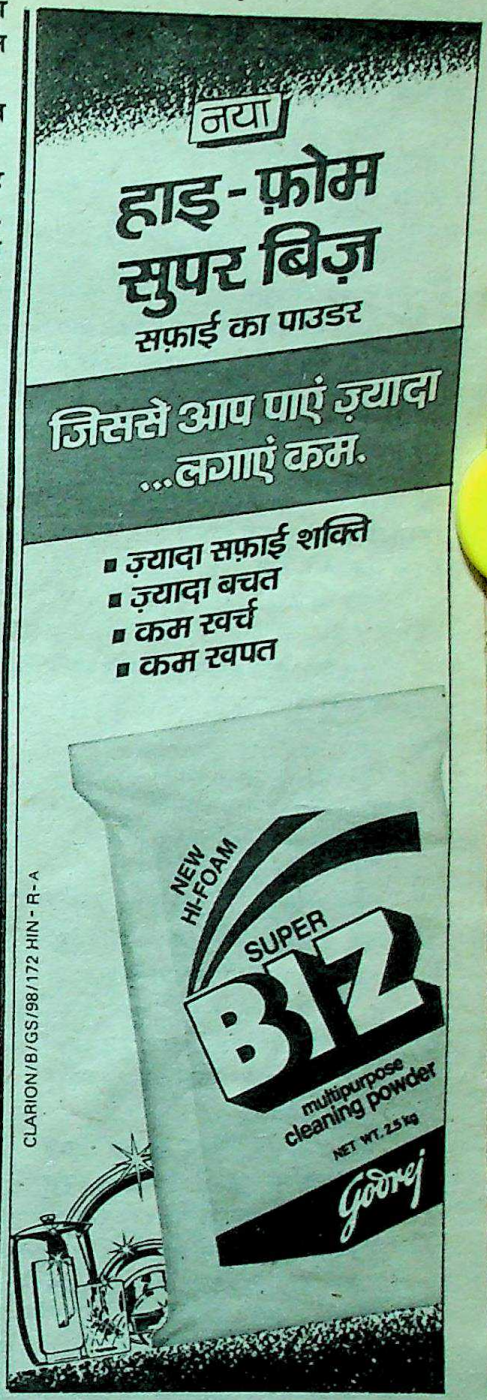

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छूट गई और जमापूंजी उन के इलाज में लग गई. तब विजय 12 साल का और अजय 10 साल का था, निशा सिर्फ आठ साल की थी.

अनुराग ही तो थे, जो हस्पताल में रातरात भर पिताजी की सेवा करते थे और वह घर और भाइयों एवं बहन को संभाला करती थी.

फिर एक दिन अनुराग का प्रथम स्पर्श मिला था उसे. वह पल अब भी याद था. उस रात बहुत सर्दी थी. बच्चों को सुला कर वह बरामदे में अनुराग का ही इंतजार कर रही थी. उन के लिए भी वह खाना बना लिया करती थी. इसी इंतजार में बैठीबैठी वह सो गई और एक तरफ को लुढ़की गरदन किसी के स्नेहिल हाथों से जब सीधी हुई तो घबरा कर जाग उठी थी, "अ... आप... आ गए? खाना लाऊं?" वह बौखला कर बोली थी.

"क्या बात है, तबीयत ठीक नहीं क्या? तुम्हारा माथा भी गरम है." अनुराग ने कहा तो वह झेंप गई.

"पूरे 15 मिनट से आया हुआ हूं... तुम्हें जरा भी होश नहीं. अगर कोई चोर घुस आता तो...?"

"जी... मुझ से भूल हो गई."

"नहीं शुभा, भूल तो मैं ने की है तुम्हें जगाने की. भूल ही नहीं, अपराध भी किया है. लेकिन तुम भूखी ही सो जातीं तब भी अपराध ही होता, इसी लिए जगाने का अपराध कर दिया. आओ, खाना खा लो."

"आप ने इतनी तकलीफ क्यों की? मुझे जगा दिया होता."

"इतनी सी तकलीफ अगर मुझे जीवन भर करनी पड़े, तो तब भी मैं खुद को बहुत सुखी समझूंगा. मैं तुम से प्यार करता हूं, शुभा... पिछले तीन सालों से..."

"ज... जी." वह बुरी तरह कांप कर रह गई थी.

"घबराओ नहीं, अपनी सीमा का अतिक्रमण मैं कभी नहीं करूंगा. तुम्हारा सम्मान मुझे अपनी जान से भी ज्यादा प्रिय है. तुम्हारे लिए कुछ करने की इस बात के लिए हर पल मेरा मन तत्पर रहता है." एकाएक उस का हाथ पकड़ कर अनुराग मेज के पास चले आए और प्लेट में रोटी और सब्जी डाल कर उस के सामने परोस दी.

शुभा अवाक सी बस अनुराग को देखती ही रह गई थी. अनुराग खाना खा कर लौट गए और दूसरे दिन पिताजी हस्पताल से घर आ गए थे. उस के बाद अनुराग ने उस के पास बैठ कर खाना नहीं खाया था. पहले तो पिताजी की वजह से उन्हें देर हो जाया करती थी, इसी लिए उस के पास खाने को मान गए थे.

एक शाम अनुराग ने ही अखबार में छपा एक निजी कार्यालय में लिपिक के लिए दिया विज्ञापन उसे दिखाया. उन्हीं के प्रोत्साहन पर वह चली गई और संयोग से चुन भी ली गई. पिताजी को बैसाखी मिल गई.

"तुम आगे पढ़ना मत छोड़ना शुभा, किताबें हैं मेरे पास. अंगरेजी में एम.ए. कर लो... उस के बाद किसी कालिज में प्राध्यापिका लग सकती हो. लड़कियों के लिए शिक्षा का क्षेत्र ज्यादा सुरक्षित है." एक दिन अनुराग ने कहा था.

"जी." गरदन झुका कर 'हां' कह दी थी शुभा ने.

फिर उस की पढ़ाई भी शुरू हो गई. हर शाम अनुराग आते, पिताजी का हालचाल पूछते और चले जाते. एक शाम वह सकुचाए से आए और धीरे से बोले, "आज कुछ मांगने आया हूं, शुभा, अगर दे सको तो..."

"जी... कहिए..."

"घर से मनीआर्डर नहीं आया, इसलिए..."

संयोग से उसी दिन शुभा को वेतन मिला था. लिफाफा ही ला कर उन के सामने रख दिया तो वह हंस पड़े.

"अरे नहीं, सिर्फ सौ रुपए चाहिए, उसी से काम चल जाएगा."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

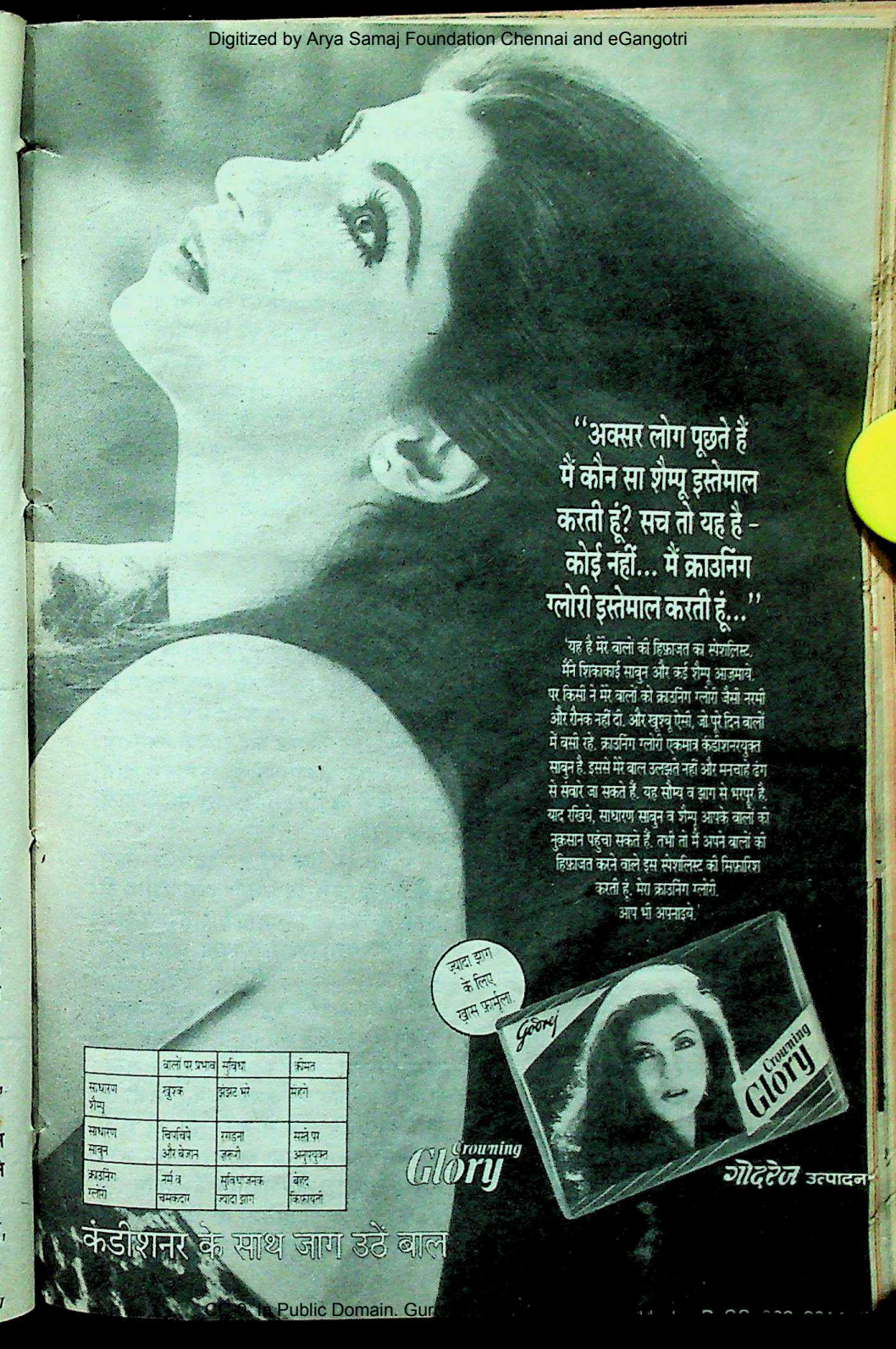

	बालों पर प्रभाव	सुविधा	कीमत
साधारण शैम्पू	खुश्क	झंझट भरे	महंगे
साधारण साबुन	चिपचिपे और बेजान	रगड़ना ज़रूरी	सस्ते पर अनुपयुक्त
क्राउनिंग ग्लोरी	नर्म व चमकदार	सुविधाजनक ज़्यादा झाग	बेहद किफ़ायती

CC-0. In Public Domain. Gur

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिफाफे में से सौ का एक नोट निकाला और फिर एकाएक उस का हाथ पकड़ अपने माथे से लगा कर चूम लिया, "तुम बहुत अच्छी हो शुभा."

शुभा बुरी तरह सिहर कर रह गई थी क्योंकि ऐसा स्पर्श पहली बार जो मिला था. वेतन में सौ रुपया कम पा कर उस ने बहाना बना दिया था कि किसी सहेली ने उधार मांग लिया. लेकिन तीसरे ही दिन जब पिताजी के सामने अनुराग ने पैसे वापस किए तो उस का झूठ खुल गया.

चिड़चिड़े से पिता अनुराग के सामने ही बरस पड़े, "कमाने लगी है तो क्या समझती है, मैं बेवकूफ हूं. झूठ बोलने लगी है मेरे साथ. यह ले अपनी तनख्वाह और जहां जी चाहे चली जा. इतना गयागुजरा तो नहीं हूं जो अपने बच्चों का पेट भी न पाल सकूं."

अपने बच्चों में वह शामिल नहीं थी शायद. 12 साल की उम्र से वह पिता की गृहस्थी को संभाल रही थी, जिस का पारितोषिक उन्होंने एक ही पल में दे दिया था. अपनी दयनीय स्थिति पर पैदा हुआ आक्रोश बेचारी शुभा पर उतरा था. उसी दिन उन्होंने गुस्से में अनुराग से भी मकान छोड़ देने को कह दिया था.

अपमानित से अनुराग उसी शाम कमरा खाली कर के चले गए. उन की सेवा का ऐसा ही सम्मान किया था पिता ने. जरा सा सुख जो उन के आने पर मिलता था, वह भी छिन गया. कितने ही दिन बीत गए, अनुराग नहीं आए. शुभा उन्हें ढूंढ़ती भी तो कहां, कैसे और किस अधिकार से. शायद दोतीन महीने बीत गए थे उस हादसे को.

एक शाम शुभा घर वापस आने को बस का इंतजार कर रही थी कि किसी ने हाथ पकड़ कर पीछे से खींच लिया. घबरा कर वह चीख उठती, लेकिन कानों में पड़ा स्वर उसे चौंका गया.

"अनुराग... आप?" भावावेश में रो पड़ी थी शुभा. मन की पीड़ा रुक नहीं पाई थी. सामने बने काफी हाउस में अनुराग उसे ले गए और एकांत मिलते ही वह स्वयं ही सभी सीमाओं का अतिक्रमण कर बैठी. उन से लिपट कर फूटफूट कर रो पड़ी. अनुराग देर तक उसे सहलाते रहे थे. जब ज़रा शांत हुई तो पानी का गिलास उठा कर उस के होंठों से लगा दिया.

"मैं अब थक गई हूं. अब और सहन नहीं होता मुझ से, पिताजी हमेशा जलीकटी सुनाते रहते हैं. जी चाहता है, सब कुछ छोड़ कर कहीं चली जाऊं." शुभा भरे गले से बोली.

"सब मेरी वजह से हुआ था शुभा. लेकिन तुम ने झूठ क्यों बोला था? मुझे पता होता तो क्या उन के सामने रुपए लौटाता. तुम्हारे अपमान की वजह मैं हूं... तभी तो इतने दिन तक तुम से न मिलने की सजा अपनेआप को देता रहा था. शायद तुम कभी न जान सको कि तीन महीने मैं ने कैसे बिताए हैं. मन में एक ही प्रतिज्ञा थी कि सफल हो कर ही तुम से मिलूंगा. मेरी पढ़ाई पूरी हो

विश्व बाल साहित्य

विश्व बाल पुस्तकें

बच्चों के लिए अति आवश्यक

- मनोरंजक
- ज्ञानवर्द्धक
- मार्गदर्शक

आकर्षक रंगीन चित्रों में चीकू, चुंचू, पप्पू, पिटू और मोती भी

350 से अधिक हिंदी और अंग्रेजी की पुस्तकें

उपहार के लिए सब से उत्तम

दिल्ली बुक कंपनी,

एम-12, कनाट सरकस, नई दिल्ली-110001

फोन: 3321313

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्यास बुझाने के बजाय पहुंचाये न कहीं टायफ़ाइड, हैज़ा और पेचीश जैसी हानि...

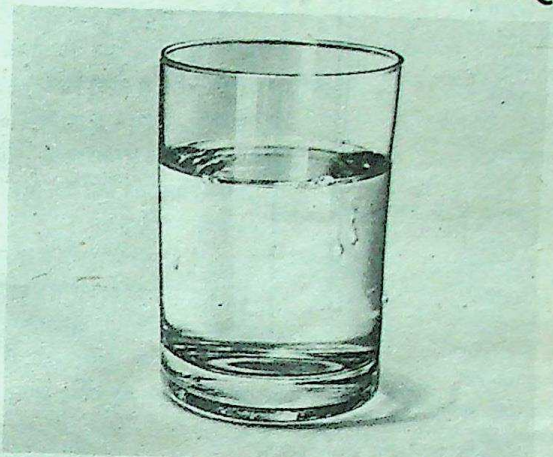

...ये साधारण सा साफ़ पानी.

आर पार साफ़ दिखनेवाला पानी भी बैक्टीरिया से भरा हो सकता है लेकिन आप देख नहीं सकते। यही पानी में पनपनेवाले घातक रोगों का कारण बनता है। वास्तव में सभी रोगों में ८०% का कारण दूषित जल ही पाया गया है।*

सभी ट्यूबवेलों में एक तिहाई का पानी असुरक्षित पाया गया है।

क्लोरीन प्रक्रिया किया हुआ पानी भी पीने तक दूषित हो सकता है।

ज़ीरो-बी सुरक्षा

सुरक्षित व किटाणु रहित पीने का पानी अब सहज ही पा सकते हैं आप – ज़ीरो-बी के साथ। ज़ीरो-बी नल के साथ लग जानेवाली एक साधारण सी चीज़ है जो पीने के पानी को तुरंत ही स्वच्छ और सुरक्षित बनाती है।

ज़ीरो-बी की हैलोजनेटिड रेज़िन तकनीक में पोलिआयोडाइड की सहायता से रोग उत्पन्न करने वाले किटाणुओं को हटाया जाता है और पानी को किटाणु रहित व पूरी तरह सुरक्षित बनाया जाता है। यही नहीं, ज़ीरो-बी का पानी घंटों दुबारा दूषित नहीं होता। इसीलिये, ज़ीरो-बी ही लीजिये और ऐसा स्वच्छ पानी पीजिये जो न केवल साफ दिखे बल्कि सुरक्षित भी हो।

ज़ीरो-बी

एमीबा कीटाणुरहित
शुद्ध पीने का पानी – जब चाहें तब्रीर!

* स्रोत : वर्ल्ड हैल्थ ऑर्गेनाइज़ेशन (W.H.O.)

सभी प्रमुख स्टोर्स, कैमिस्ट और उपकरणों की दुकानों और कैण्टीन स्टोर्स में भी उपलब्ध।

आयन एक्सचेंज (इंडिया) लि., १०, बेंगॉल कैमिकल कम्पाऊण्ड, १०२, वीर सावरकर मार्ग, प्रभादेवी, बम्बई ४०००२५

अधिकृत वितरक : भोपाल : ओमनीटैक, फ़ोन :५६३५९५. **इंदौर :** बी.आर. एजेंसीज़, फ़ोन : ३८०८५. **जबलपुर :** शाह ब्रदर्स, फ़ोन : २११६२. **रायपुर :** सुराना एन्टरप्राइज़ेस, फ़ोन : २७७३०, ४२३४९४. **ग्वालियर :** मेनन कन्स्ट्रक्टर्स, ३०, नेहरू कॉलोनी, गांधी रोड, फ़ोन : २८८०२. **दिल्ली :** द एम्पायर इलेक्ट्रिकल्स, फ़ोन : २३५९२४. **जयपुर :** रेडिएन्ट एसोसिएट्स, फ़ोन : ६३५८०. **चंडीगढ़ :** चांसलर मार्केटिंग प्रा. लि., फ़ोन : २७०६३. **कानपुर :** मर्क्युरी इन्टरनेशनल, होटल मधुबन, १५/५६ - बी, सिव्हिल लाइन्स. **लखनऊ :** यूनिक मार्केटिंग सर्विसेज़, फ़ोन : २४६५६१. **आगरा :** केमैक्स इंडिया, फ़ोन : ७२६७०. **मेरठ :** सॉलिटेयर सिस्टम्स, फ़ोन : ७७१५३. **देहरादून :** प्लास्टोटैक, फ़ोन : २८१८५. **वाराणसी :** मेसर्स मर्क्युरी इन्टरनेशनल, फ़ोन : ३११८७४. **कलकत्ता :** कोठारी सेल्स एजेंसीज़, फ़ोन : २९७६२६, ३४०९४२. **पटना :** द मार्केटर्स, फ़ोन : ३४५९७ पी.पी. **कटक :** मेसिन्स, फ़ोन : २२९३९, ३०२५५. **बैंगलोर :** प्रेमनंदा एन्टरप्राइज़ेस, फ़ोन : २६०७११; राजलक्ष्मी मार्केटिंग कं., फ़ोन : २६९७५१. **हैदराबाद :** अनिल एन्टरप्राइज़ेस, फ़ोन : २३६६७८.

Karishma/ION/153/2418 HI S

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरिता व मुक्ता में प्रकाशित लेखों के महत्त्वपूर्ण रिप्रिंट

सैट नं.–3

- सिपाही क्यों लड़ता है
- इसलाम और स्त्री
- डायरी न लिखिए
- प्रेम पत्र न लिखिए
- योगी अरविंद
- गीता में अंतर्विरोध
- गायत्री मंत्र
- गायत्री मंत्र : आ.व.आ. के उत्तर
- ट्रेड यूनियन
- त्रासदी मुसलिम समाज की
- भगवान की दुकानें
- वेदों में नारी
- स्वर्ग कहां है
- आखिरत की अटकलें
- हिन्दी साहित्य की बपौती
- घाटे वाले बालाजी
- भीष्म
- संत कवियों के चमत्कार
- उलाहने
- वैदिक युग में मांस भक्षण
- देवताओं के वैद्य-अश्विनी कुमार
- महाभारत की ऐतिहासिकता
- महाभारत की ऐतिहासिकता : आ.व.आ.के उत्तर
- दहेज और हिंदू धर्म
- आप की लड़की प्रेम करती है
- यूनियन
- सौंदर्य प्रतियोगिता
- वैज्ञानिक ज्ञान बनाम अध्यात्म ज्ञान
- पूंजीपति
- नियोग

पूरे सैट का मूल्य - 5 रुपए

- साधारण डाक व्यय एक रुपए.
- वी.पी.पी. द्वारा मंगाने पर डाक व्यय रु. 3 अतिरिक्त
- पुस्तकालयों, विद्यार्थियों व अध्यापकों के लिए 50% की विशेष छूट. रुपए अग्रिम भेजें.
- सैट में लेखों का परिवर्तन कभी भी हो सकता है.

दिल्ली बुक कंपनी,

एम-12 कनाट सरकस, नई दिल्ली-110001

गई है. दिल्ली में एक सफलतम चार्टड एकाउंटेंट के साथ मेरा अनुबंध भी हो गया है. अपनी गृहस्थी की गाड़ी अब मैं चला सकता हूं. बोलो, मुझ से शादी करोगी?"

अनुराग का यह अप्रत्याशित सा प्रश्न था. सुबकसुबक कर रो पड़ी थी शुभा और रोतेरोते उन के दोनों हाथ पकड़ कर अपने माथे से लगा लिए. उत्तर कहां था उस के पास. गरदन झुका कर आंसू बहाती रही तो वह स्वयं ही बोले थे, "तुम नौकरी कर के अपने पिता को आर्थिक सहायता देती रहना, मैं मना नहीं करूंगा."

"आप पिताजी से बात कीजिए." 20-22 वर्ष की हो चुकी थी शुभा, अपने घर का सपना देखना स्वाभाविक ही था.

"आज शाम को मैं घर आऊंगा." स्नेह से उस के गाल थपक दिए थे अनुराग ने.

लेकिन पिता की नजरों से निकलती आग उस के पूरे अस्तित्व को जला कर रख गई, "अपने भाईबहनों को किसी कुएं में धकेल दे बेटी और मुझे किसी खाई में... फिर मजे से शादी कर लेना."

शाम को अनुराग आए तो इस तरह सत्कार हुआ था उन का, "खबरदार जो फिर से हमारे घर आए. शुभा की शादी नहीं हो सकती, समझे... कम से कम 10 साल... जब तक विजय किसी लायक न हो जाए."

"आप चले जाइए, अनुराग, मैं आप का अपमान नहीं सह पाऊंगी. आप चले जाइए." पगलाई सी शुभा अनुराग का हाथ खींचती हुई बाहर चली आई थी और उन के सामने हाथ जोड़ दिए थे, "आप जाइए अनुराग, दो नावों का सवार हमेशा डूब जाता है. मैं शादी नहीं कर पाऊंगी."

"शुभा, मेरी बात तो सुनो." एकाएक एकांत पाते ही अनुराग ने उस का हाथ कस कर पकड़ लिया तो शुभा ने एक झटके से खींच लिया, "आप अब जाइए."

खामोशी से अनुराग लौट गए थे.

—क्रमशः

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीवन के रंग अजीब...

शुक्र है बोरोलीन करीब

बोरोलीन

खुशबूदार ऐन्टिसेप्टिक क्रीम

सूखी त्वचा और साधारण कटने-छिलने पर अनोखा असर

जी डी फार्मास्यूटिकल्स
कलकत्ता ७०००१३

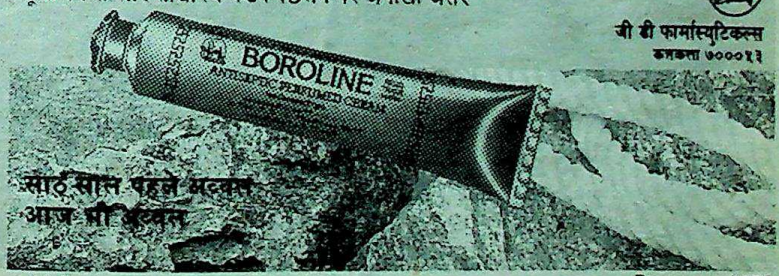

साठ साल पहले अब्बल
आज भी अव्वल

बोरोलीन प्रसाधन सामग्री नहीं

Response 1078

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुझे शिकायत है

इन प्रकाशित शिकायतों को काट कर संबंधित व्यक्तियों को भेजिए या उपयुक्त स्थान पर चिपकाइए ताकि इन्हें पढ़ने वाले अपनी त्रुटियों को पहचान कर उन्हें दूर कर सकें.

आप अपनी शिकायतें इस पते पर भेजें :

सरिता, ई-3, झंडेवाला एस्टेट,
नई दिल्ली-110055.

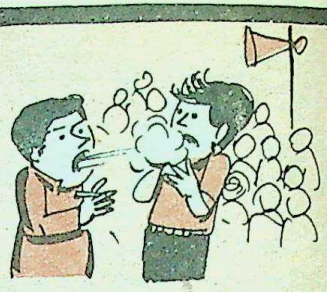

मुझे शिकायत है उन लोगों से जो सार्वजनिक या किसी भी स्थान पर खड़ेखड़े बीड़ीसिगरेट पीते हुए दूसरे लोगों के सामने मुंह खोल कर धुआं निकालते हैं. मनोहर व्यास

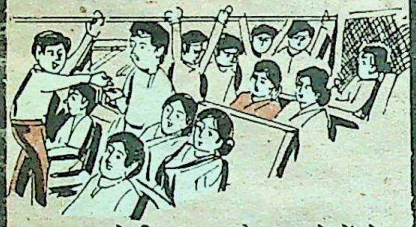

मुझे शिकायत है उन लोगों से जो बसों में आगे के दरवाजे से चढ़ते हैं और टिकट लेने के लिए दूसरे यात्रियों को पैसे पकड़ा देते हैं.

—प्रवीन सेठी 'शानू'

मुझे शिकायत है ऐसे लोगों से जो बिना सदस्यता प्राप्ति के पुस्तकालय की किताब मांगते हैं और वह भी तीनचार की संख्या में, फलतः हम पुस्तकालय के सदस्यों की सेवा नहीं कर पाते. प्रबंधक

मुझे शिकायत है उन मांबाप से जो अपने बच्चों को बातबात पर दूसरों के सामने कोसते हैं. परिणामस्वरूप बच्चों में आत्महीनता की भावना घर कर जाती है.

—अ.द. नारखेडे

मुझे शिकायत है उन पुरुषों से जो बसों में महिलाओं की सीटों पर बैठ जाते हैं और महिलाओं के आने पर भी सीट से नहीं उठते, चाहे महिला की गोद में बच्चा ही क्यों न हो. —राजेश्वरी गुप्ता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होली तेरे कितने रंग

लेख ● विजया वासुदेवा

होली त्योहार है रंगों का, मस्ती का, मन की उमंग का, आनंद की तरंग का. होली का त्योहार हमारे देश में ही नहीं विदेशों में भी विभिन्न ऋतुओं में मनाया जाता है. वर्ष में एक दिन मनुष्य सब अंकुशों से मुक्त हो कर मनचाही करने की छूट पा जाता है. यही कारण है कि छोटे और बड़े, अमीर और गरीब रंगों में रंगे एक से नजर आते हैं. हवा में अबीर की गुलाबी रंगत छा जाती है. मन निर्द्वंद्व हो कर अपनी मस्ती में हर बंधन से परे शरारती मौसम का साथ देने को आतुर हो जाता है, बस इस एक तर्क के साथ, 'बुरा न मानो होली है.'

प्रिया को होली का आनंद लेना बहुत भाता है लेकिन अपनी दुर्गत बनवानी और कपड़े खराब करवाने नहीं सुहाते, सो उन की होली खिड़की की ओट से ही खिलती है. लेकिन अब की बार जिस उत्साह से उस ने सुबह होली अपनी सहेलियों से खेली, शाम को उतनी ही नाराज रही. उस की सहेलियों ने उस के हलके रंगों के (बिना प्रिंटवाले) कपड़े होली से दस दिन पहले ही लेने शुरू कर दिए. किसी ने सलवारकुरता, किसी ने टोप, किसी ने साड़ी ले ली और होली की सुबह वही कपड़े अपने कपड़ों से मैच कर के पहने. प्रीति ने अनजाने में अपने ही कपड़ों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुड़दंगी त्योहार होली के विभिन्न रंगों में एक रंग है मजाक का. लेकिन मजाक कीजिए ऐसा, जो दूसरे को सुहाए न कि उन्हें हानि पहुंचाए.

पर गहरे पक्के रंग खूब मस्ती से डाले और अपनी सुरक्षा नीति पर मन ही मन आनंदित होती रही. लेकिन शाम को गुलाल की होली पर उपहार की तरह पैक किए कपड़े खोले तो उस के चेहरे की हवाइयां उड़ गईं सहेलियां समूहगान गा रही थी, 'बुरा न मानो होली है.'

छन्नूमल के यहां होली हो और भांग न घुटे यह तो हो ही नहीं सकता. उन्होंने अपनी पत्नी के संग मिल कर महिलाओं पर भांग के प्रभाव पर अच्छाखासा शोध ही कर लिया. पत्नी ने अपनी भोली सूरत से अपनी समस्त सहेलियों को झूठ विश्वास दिला दिया कि भांग केवल पुरुषों वाले पकौड़ों में ही है औरतों के लिए पालक और मेथी के पकौड़े बने हैं. भंग के रंग से अपरिचित महिलाओं की स्थिति विचित्र थी. भांग के नशे की लहर में चूर रीता फ्रिज से 30 गुलाब जामुन खाने के बाद शेष चाशनी भी पी गई. जबकि वह मीठा छूती भी नहीं. रश्मि को भांग की तरंग में लग रहा था कि वह गैस पर दूध उबलने रख कर आई है सो वह पूरी रात अपने पति को बारबार रसोई की तरफ दौड़ाती रही, "अक्षय, दूध उबल रहा है. गैस बंद कर के आओ. हम से उठा नहीं जा रहा." भंग की तरंग में झोंका खाने के बाद जाग कर फिर वही रट. आखिर अक्षय तकिया उठा कर बैठक में यह कह कर सो गया "हम रसोईघर में दूध उबाल कर ही आते हैं."

कुसुम पूरी रात अपने पति के पीछे पड़ी रही, "अरे देखो, हमारी नाक कितनी लंबी हो गई है, दीवार को छू रही है. डाक्टर को बुलाओ. अरे मेरी नाक" और नाक का पुराण पूरी रात अखंड चलता रहा. कभी लंबी नाक सोच कर हंसती, कभी रोती.

वैसे भंग की तरंग पुरुष भी नहीं सह सके थे. एक साहब पूरी रात अपने को कुत्ता समझते रहे और बोलने की जगह भूंकते, उन का जबड़ा अकड़ गया. सुबह अपनी सफाई में वह कुछ भी कहने में असमर्थ थे, बस झेंपती सी नजरें लिए बैठे रहे. एक सज्जन को लग रहा था, "आसमान नीचे आ रहा है, हम सब दब कर मर जाएंगे, हाय..." जब तक नशा रहा, प्रलाप जारी था.

ये हैं कुछ भंग की तरंग की झलकियां होली के रंग की.

जरूरी नहीं कि सभी लोग होली पर शालीन मजाक ही करें. कुछ लोग तो बिलकुल अति ही कर देते हैं. आलोक के यहां होली के खानपान के बाद मिस्री, इलायची दी गई. यह क्या, मुख शुद्ध करने वाले अकबका कर रह गए, इलायची? उन के शरारती बच्चों ने कापिग पेंसिल के सिक्के इलायची में चुभा दिए थे. खाने वालों के मुंह नीले और कड़वे हो गए. सभी थूकने को जगह ढूंढ़ रहे थे तो बच्चों ने प्रस्ताव रखा कि वहां बेसिन पर जा कर पेस्ट कर लें. कुल्ला करने के लिए पेस्ट मुंह में डाला कि झाग ही झाग और कड़वाहट पेस्ट की. टयूब को पीछे की तरफ से खोल कर उस में शेविंग क्रीम भर दी थी और लोगों की दयनीय दशा देख कर खूब प्रसन्न हो रहे थे शरारत करने वाले.

किंतु अगले साल होली पर लोगों ने उन के यहां कोई मिठाई, नमकीन कुछ भी नहीं छुआ और होली की सारी तैयारी व्यर्थ हो गई. दूध के जलों ने छाछ को भी फूंकफूंक कर पिया.

होली एक खुशी का त्योहार है. इस का आनंद यों ही बना रहने दें. बहुत बार होली पर मधुर संबंध भी कटु हो जाते हैं, गलत व्यवहार के कारण. मजाक तभी तक अच्छा है जब करने वाले के साथसाथ जिस से किया जा रहा है, वह भी इस का भरपूर आनंद उठाए. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

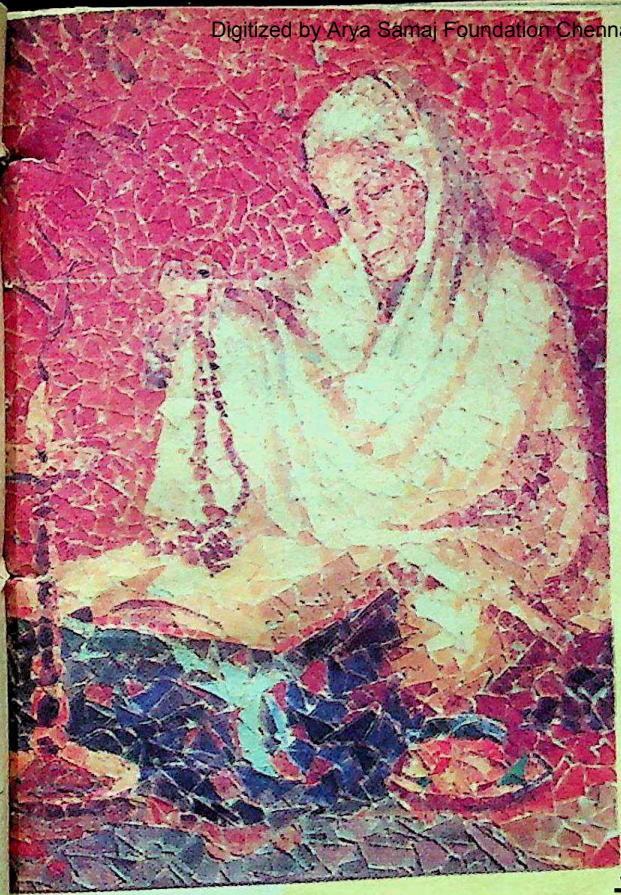

एस.एम. वाघेला

जिन्होंने कांच को भी शरमा दिया है

लेख ● नीलम कुलश्रेष्ठ

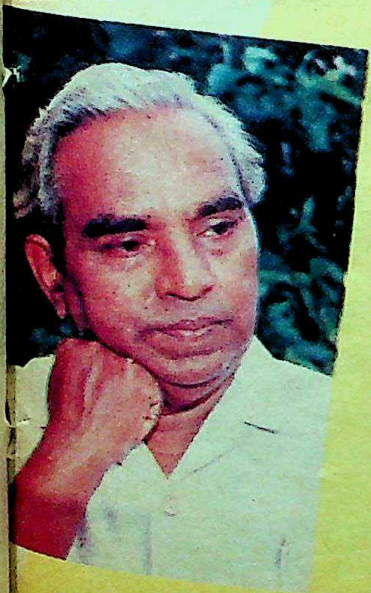

बहुत प्रचलित कहावत है कि कांच किसी की शर्म नहीं करता. यदि कांच को हाथ पर तोड़ा जाए तो चाहे वह हाथ धनी का हो या निर्धन का, घायल हो जाएगा. कांच उस पर टूटा है तो नुकीले किनारे त्वचा पर चुभेंगे ही और जब चुभेंगे तो दर्द भी होगा, खून की धार भी बहेगी. मतलब, कांच चुभा है तो खून की होली खेल कर ही रहेगा. उन की हथेलियां बरसों से यह टीस, यह खून की होली सहती आ रही हैं, महज कांच के माध्यम से मानवीय भावनाएं प्रकट करने के लिए. और मानवीय भावनाएं कौन सी? जैसे कि वृद्ध स्त्री के चेहरे की एकएक झुर्री में अभिव्यक्त भाव, जंगली फूल जैसे सौंदर्य वाली आदिवासी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुलाल, अबीर के रंगों से नहीं अपितु पीड़ा सह कर कांच के संग होली खेल कर अपनी भावनाओं को भित्तिचित्र के माध्यम से दर्शाने वाले एस.एम. वाघेला की कला वाकई अचंभित कर देने वाली है.

स्त्री, गांधी जी की डांडी यात्रा, यौवन व शक्ति के प्रतीक घोड़े इत्यादिइत्यादि.

कांच से इन अभिव्यक्तियों को संभव कर के दिखाया है बड़ोदरा के कलाकार एस.एम. वाघेला ने. है न अचरज की बात? एक निर्जीव, समतल, सीधा, सपाट कांच मुखर बन कर गहन मानवीय संवेदनाओं को व्यक्त करने लगे.

अब आप यह भी कह सकते हैं कि कला में कांच का प्रयोग तो हजारों वर्षों से होता आ रहा है. शायद उदाहरण भी देने बैठ जाएं, इंदौर का बूंदी का महल या मुगल कालीन शीश महल आदि. लेकिन उस प्राचीन कला व वाघेला की कला में एक बहुत बड़ा फर्क है. इन महलों की सजावट का मूल आधार है ज्यामितीय आकार में विभिन्न रंगों के कांचों का व्यवस्थित प्रयोग. वे डिजाइनें अपनी जगह पर स्थिर हैं. आप उन्हें एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले नहीं जा सकते. वे वर्षों से एक स्थान पर चित्रलिखित सी जड़ी प्रकाश की किरणों को परावर्तित कर के लोगों की आंखों में चकाचौंध पैदा करती रही हैं. लेकिन भारत का यह कलाकार जिस की कला आंखों में चकाचौंध पैदा करने के साथसाथ दर्शक को आश्चर्यचकित कर दे आज भी हम सब की आंखों से ओझल बड़ोदरा के अपने एक छोटे से स्टूडियो में अपना काम कर रहा है.

कला के अदभुत नमूने को देख उद्योगपति जमशेदजी टाटा तो एस.एम. वाघेला की कला से गदगद हो उठे ▼

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एस.एम. वाघेला के प्रिय पात्र गांधीजी की दांडी यात्रा का भित्ति चित्र. ▲

जब वह छोटे थे तो अकसर बड़ोदरा के लक्ष्मी विलास पैलेस में जाया करते थे. वहां का मोजेइक म्यूरल (रंगबिरंगा भित्तिचित्र) इन्हें बहुत प्रभावित करता था. यह भित्तिचित्र गायकवाड़ परिवार ने इटली के एक कलाकार से बनवाया था, जिस में एक रानी की अपने अंगरक्षकों के साथ तसवीर थी. वह सोचते, यदि दीवार पर जड़े इस म्यूरल को कहीं बाहर ले जाना पड़े तो कैसे ले जाया जा सकता है, तभी उन के मस्तिष्क में विचार कौंधा क्यों नहीं वह स्वयं फ्रेम में जड़े ऐसे म्यूरल बनाएं जिन्हें आसानी से एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाया जा सके.

"पहली बार आप ने कब मोजेइक म्यूरल बनाए?"

"सन 1950 में मैं ने अपना स्टूडियो खोल लिया था. लोगों के चित्र बनाता था. सन 1956 में गांधी जयंती के अवसर पर मैं ने मोजेइक म्यूरल बनाने की कोशिश की. हाथ पर कांच तोड़ने से हाथों में बेहद दर्द हुआ लेकिन जब दो म्यूरल बिक भी गए तो मैं ने इस कला की साधना को ही अपने जीवन का लक्ष्य बना लिया."

बचपन से ही श्री वाघेला का जीवन सहज नहीं रहा. जब वह सात वर्ष के थे तो उन के पिता की मृत्यु हो गई. मां ने कठिन संघर्ष कर के उन्हें पाला. उस घनघोर परिश्रम के बीच भी उन के मुख से गुजरात का सुमधुर 'गरबी' झरता रहता था. नन्हें वाघेला में कला की प्रथम अनुभूति मां के इन सुमधुर गीतों, ध्वनि तरंगों के स्पर्श से ही प्रस्फुटित हुई होगी.

थोड़े बड़े होने पर वह बड़ोदरा आ गए और यहां पेंटरों के यहां काम कर के अपना गुजारा चलाने लगे. साथ ही पढ़ाई भी करते रहे. उन्होंने मुंबई में जे.जे. स्कूल आफ आर्ट्स व बड़ोदरा के कला भवन से कला में डिप्लोमा प्राप्त किया. कुछ दिनों तक उन्होंने बड़ोदरा में 'एनैटामिकल आर्टिस्ट' की नौकरी की और बाद में एम.एस.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

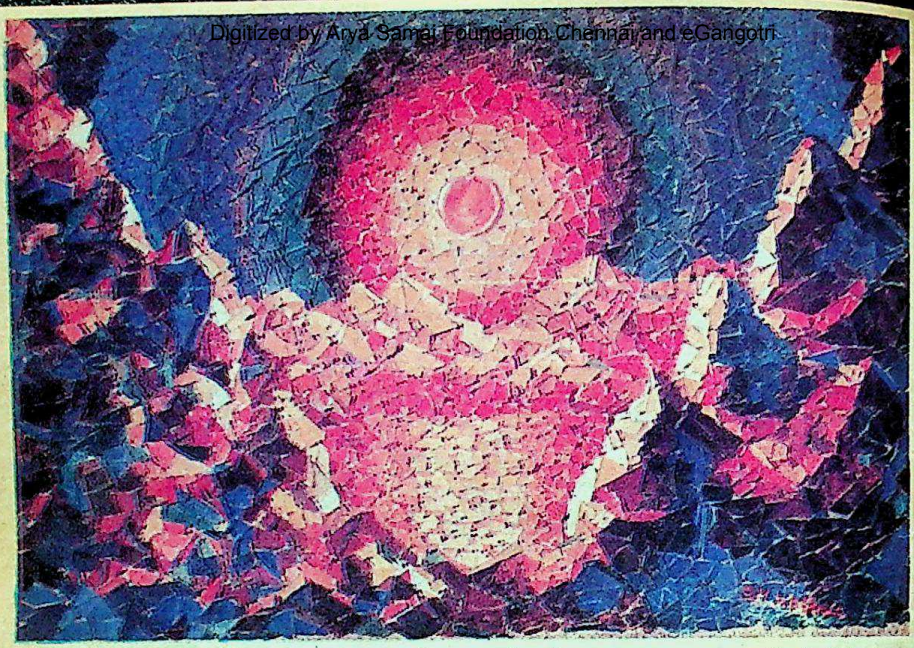

झील में डूबता हुआ सूरज : प्रकृति के रंगों को अपनी कला में आकर्षक रूप से समा देते हैं वाघेला.

विश्वविद्यालय के प्राणिविज्ञान विभाग में भी एनैटामिकल आर्टिस्ट की तरह कार्य करते रहे. पिछले वर्ष ही उन्होंने अवकाश प्राप्त किया है.

एक बार कांच पर कुछ गोंद की बूंदें गिर गईं. वह उसी कांच पर हाथ टिकाए बैठे थे. कांच के जिस भाग पर बूंदें गिरी थीं वह भाग अपारदर्शी हो गया था, बाकी कांच का हिस्सा प्रकाश को परावर्तित कर के उन के कुरते पर हरे रंग का प्रभाव पैदा कर रहा था. उन्होंने अपना हाथ वहां से हटाया तो देखा कुरता पहले की तरह सफेद रंग में था. वह बारबार कांच पर हाथ रख कर यह खेल खेलने लगे. सफेद कुरते की बांह का हरा हो जाना उन्हें बहुत रोचक लग रहा था. उन के मस्तिष्क में एक विचार और कौंधा, यदि इन विभक्त कांच के टुकड़ों को जोड़कर बांह का आकार तैयार किए जाएं तो? तभी उन के मस्तिष्क में लक्ष्मीनिवास पैलेस की वह रानी की कांच की तसवीर घूम गई. बस उन्हें लगा उन्हें अपने जीवन का लक्ष्य मिल गया है.

सफेद, नीली, कत्थई छोटीबड़ी शीशियों का कांच का संसार था उन के सामने. अपने दिल में बसी भावनाओं को वह इन शीशियों के टुकड़ों से बनी तसवीरों में कैद करने लगे. हर टुकड़े को वह बड़े मनोयोग से मनचाहे रंग में रंगते. इन तसवीरों में अभिव्यक्त होने वाली संवेदनाएं जब लोगों के दिलों को छूने लगीं तो वाघेला की हथेली में कांच की चुभन, उंगली के दर्द सब ओझल होते चले गए, इन तसवीरों के पीछे. किसी मित्र ने उन्हें एक उपाय भी बताया कांच को तोड़ने का, जिस से हाथ में कम से कम दर्द हो.

किसी म्यूरल को बनाने के लिए वाघेला प्लाईवुड पर पेंसिल से डिजाइन तैयार करते हैं. फिर प्लाईवुड पर कुछ रसायन लगा कर उसे मौसम के कुप्रभाव से सुरक्षित कर देते हैं. कुछ कांच के टुकड़ों पर जरूरत के हिसाब से सिरेमिक्स का रंग लगा देते हैं. कुछ को अपने मूल भूत रंग में ही प्रयोग में ले लेते हैं.

श्री वाघेला प्लाईवुड को जमीन पर

(शेष पृष्ठ 170 पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

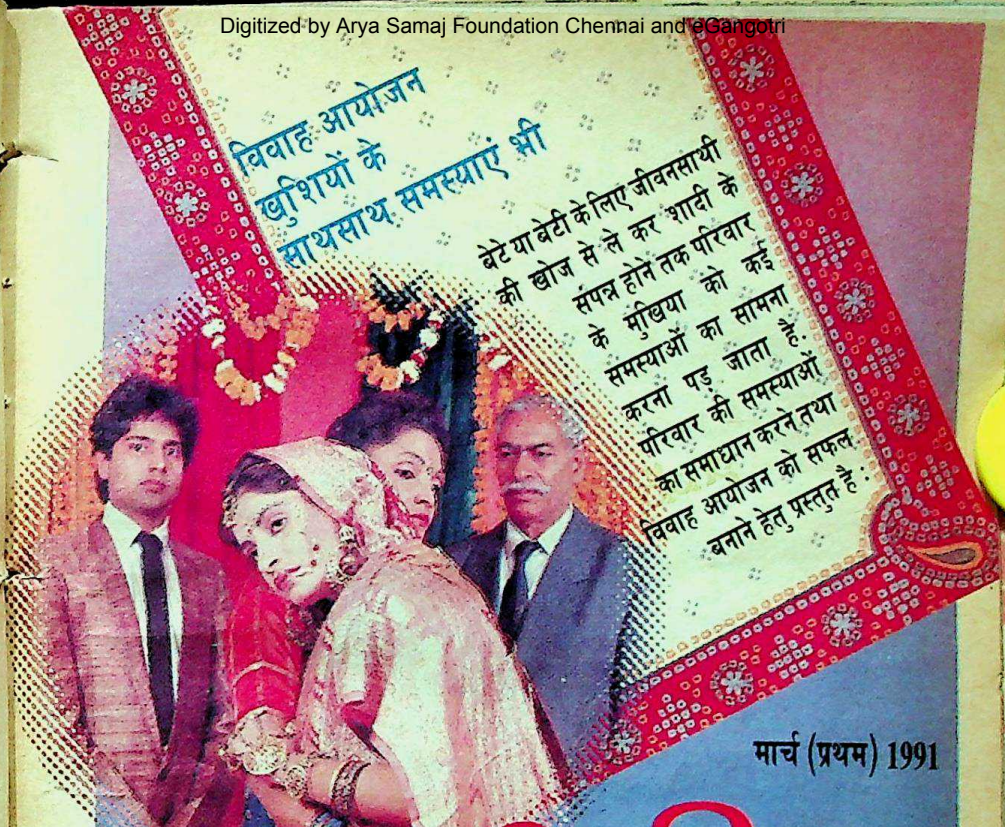

मार्च (प्रथम) 1991

सरिता

विवाह आयोजन विशेषांक

इस अनूठे संग्रहणीय विशेषांक में आप पाएंगे

- जीवन साथी की खोज विज्ञापनों द्वारा
- पहली मुलाकात का शिष्टाचार
- बेटी का विवाहोत्सव या मुसीबत?
- वैवाहिक आयोजनों में अंधाधुंध खर्च?
- विवाह में बिचौलिए की भूमिका
- वैवाहिक विवाद और कानूनी सहायता
- वैवाहिक मामलों में झूठ का सहारा
- बेटी का विवाह किस व्यवसाय वाले से करें
- विवाह में बीमा कंपनियों की मदद
- प्रेम विवाह तथा आयोजित विवाह
- कैसे खरीदें दुल्हन के कपड़े व गहने
- पंडालों में आग से बचाव

इन के अतिरिक्त विवाह के आयोजन संबंधी कई अन्य लेख, 8 कहानियां, मर्मस्पर्शी कविताएं तथा सभी स्थाई स्तंभ.

खरीदना न भूलें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होली के सतरंगी पकवान

खीरमोहन

सामग्री: 8 रसगुल्ले, ½ किलो दूध, ½ किलो लाल गाजर, 1½ चम्मच छोटी इलायची पाउडर, ½ कटोरी बारीक कतरे बादाम, स्वादानुसार चीनी, चुटकी भर केसर.

विधि: केसर को एक चम्मच दूध डाल कर रगड़ लें. इसी में आधा चम्मच इलायची पाउडर भी मिला लें. एकसार कर के गाढ़ी पेस्ट तैयार करें. रसगुल्लों को चारचार टुकड़ों में काटें. प्रत्येक टुकड़े पर यह पेस्ट लगा कर थोड़ी देर रख दें.

गाजर को साफ कर के, धो कर कद्दूकस करें. थोड़ा सा दूध व चीनी डाल कर गाजरों को मिक्सी में डाल कर एक बार जोर से चला लें. इस मिश्रण को बाकी के दूध के साथ एक भारी तले के बरतन में डाल कर आंच पर रखें. गाढ़ा होने तक पकाएं. जब यह मिश्रण रबड़ी जैसा लगने लगे तो इलायची पाउडर मिला दें व आंच बंद कर दें. ठंडा होने पर इस मिश्रण में रसगुल्ले के टुकड़े डाल दें. ठंडीठंडी रबड़ी खाएं व खिलाएं.

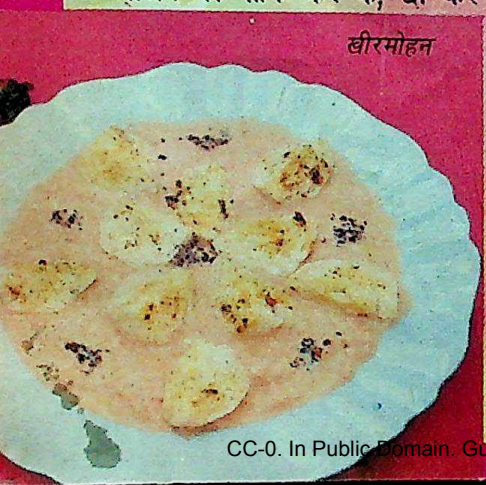
खीरमोहन

खजूरी लड्डू

सामग्री: 250 ग्राम ताजे बड़े खजूर, 500 ग्राम खोया, 100 ग्राम चीनी, 50 ग्राम सूखा नारियल बुरादा, 50 ग्राम बादाम गिरी, 50 ग्राम काजू, पिस्ते, 2 छोटे चम्मच इलायची पाउडर, 1 बड़ा चम्मच दूध, खाने का हरा व लाल रंग,

खजूरी लड्डू

विधि: खजूरों को गीले कपड़े से पोंछ कर साफ कर लें. बीच में से चीरा दे कर खजूरों की गुठली निकाल दें. बादाम, पिस्ते, काजू को बारीक काटें. इन में एक छोटा चम्मच इलायची पाउडर मिलाएं. एक भारी तले के बरतन को आंच पर रखें. उस में खोया भूनें. खोए को नरम करने के लिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थोड़ा दूध डालें, इसी में पिसी चीनी व बाकी इलायची पाउडर डाल कर एकसार करें. खजूरों को मेवा मिश्रण से भरें. खोए का थोड़ा सा हिस्सा हथेली में ले कर उस में खजूर को लपेटें. इसी प्रकार सारे खजूरों से खोए के गोल लड्डू बना लें. नारियल बुरादे को दो हिस्सों में बांटें. आधे में हरा व आधे में लाल रंग मिलाएं. आधे लड्डुओं को हरे रंग के नारियल बुरादे में लपेटें, आधों को लाल रंग के बुरादे में. होली के रंग में रंगे मेहमानों को रंगीन लड्डू खिलाएं.

शाही गोले

सामग्री: 250 ग्राम पनीर, 4 स्लाइस ब्रेड के या ½ कटोरी सूजी, 2 बड़े चम्मच चीज पाउडर (यदि पाउडर उपलब्ध न हो तो चीज के दो छोटे क्यूब भी कद्दूकस कर के प्रयोग किए जा सकते हैं), 100 ग्राम खोया, 25 ग्राम मटर, 25 ग्राम फूलमखाने, तलने के लिए घी, स्वादानुसार नमक व अन्य मसाले.

विधि: भरावन का मिश्रण बनाने के लिए: कड़ाही को आंच पर चढ़ा कर उस में एक बड़ा चम्मच घी डालें. फूलमखानों को थोड़े छोटे टुकड़ों में काट कर घी में भूनें. थोड़े नरम हो जाने पर मटर डाल दें. नमक व अन्य मसाले भी डालें. मटर गल जाने पर खोया हाथ से मसल कर डाल दें तथा आंच बंद कर दें. पनीर को हथेली से एक प्लेट में चिकना होने तक मसलें. पनीर में ब्रेड स्लाइस पानी में भिगो कर निचोड़ कर मिलाएं या सूजी मिलाएं. अच्छी तरह से मिला कर के थोड़ा नमक मिलाएं. चिकनी हथेली पर थोड़ा सा भाग पनीर का रख उस में थोड़ा सा भरावन का मिश्रण भरें. हलके हाथों से गोला बनाएं. गरम घी में सुनहरा होने तक तलें.

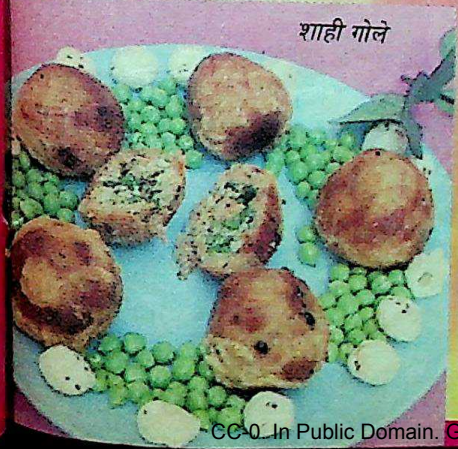
शाही गोले

मीठी कचौड़ी

सामग्री: 2 कटोरी मैदा, ½ कटोरी सूजी, ½ कटोरी पिघला घी मोयन के लिए, ¾ कटोरी चीनी.

भरावन का मिश्रण: 100 ग्राम खोया, 50 ग्राम बारीक कटे मेवे, 50 ग्राम नारियल का बुरादा, चुटकी भर केसर दूध में घिसा हुआ, 1 चम्मच इलायची पाउडर, स्वादानुसार पिसी चीनी.

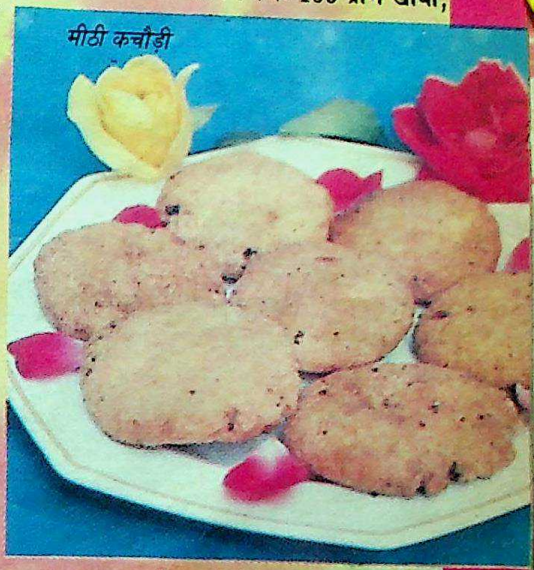
मीठी कचौड़ी

विधि: सूजी मैदा को छान लें. पिघले घी का मोयन डाल कर हथेलियों से अच्छी तरह मिलाएं. चीनी डाल कर पानी की सहायता से थोड़ा सख्त गूंध लें. कड़ाही को गैस पर रख कर उस में खोया डाल कर भून लें. नारियल का बुरादा. पिसी चीनी, इलायची पाउडर व केसर डाल कर सब को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अच्छी तरह मिला लें. बारीक कटे मेवे भी मिला दें. इस सामग्री को थोड़ा ठंडा होने दें. गुंधे हुए सूजीमैदे का एक पेड़ा हाथ में ले कर फैलाएं. उस में थोड़ा सा भरावन का मिश्रण डाल कर बंद करें. हलके हाथ से कचौड़ियां बेलें. तलने के लिए घी गरम करें. गरम घी में एक बार में दो या तीन कचौड़ी ही डालें. आग धीमी कर के बहुत ही सावधानीपूर्वक कचौड़ियों को सुनहरा तलें. गरम कचौड़ी बहुत ही नरम व ढीली लगती है पर ठंडी हो कर यह ठीक हो जाती है. ठंडी होने पर डब्बे में बंद कर के रखें.

—मृदुल जैन

तिरंगे लड्डू

सामग्री: 300 ग्राम चावल का आटा, 150 ग्राम बेसन, 250 मि. लिटर दूध, 500 ग्राम चीनी, 2 छोटे चम्मच बादाम कटे हुए, थोड़ा सा हरा रंग, 8-10 इलायची पिसी हुई, चांदी का 1 वरक, तलने के लिए पर्याप्त मात्रा में घी.

विधि: बेसन और दूध के घोल से बूंदी तल लें. दो तार की चाशनी में डाल कर अलग रखें. चावल के आटे का घोल (पानी में) बना कर उस के दो हिस्से कर लें. एक हिस्से की ऐसे ही बूंदी बना लें तथा दूसरे में हरा रंग मिला कर बूंदी बना लें. फिर तीनों तरह की बूंदी को एक साथ मिला कर, उस में बादाम व इलायची मिला कर लड्डू बना लें.

तिरंगे लड्डू

रंगबिरंगे शाही कोफ्ते

सामग्री: 200 ग्राम खोया या पनीर, 1 प्याला मटर पिसे हुए, 1 प्याला गाजर कद्दूकस की हुई, 50 ग्राम कोर्नफ्लोर, नमक स्वादानुसार, 2 छोटे चम्मच धनिया पिसा हुआ, 1 छोटा चम्मच मिर्च पिसी हुई, 1 छोटा चम्मच गरममसाला, ½ छोटा चम्मच हलदी, 4 टमाटर (कद्दूकस किए हुए), 2 बड़े चम्मच दही, 4 प्याज बारीक कटे हुए, 4-6 कली लहसुन की पिसी हुई, 1 छोटा चम्मच अदरक कद्दूकस किया हुआ, स्वादानुसार हरी मिर्च, हरी धनिया बारीक कटी हुई, 10-12 पनीर के चौकोर टुकड़े, 8-10 ताल मखाने, 8-10 काजू के टुकड़े, घी या तेल तलने के लिए.

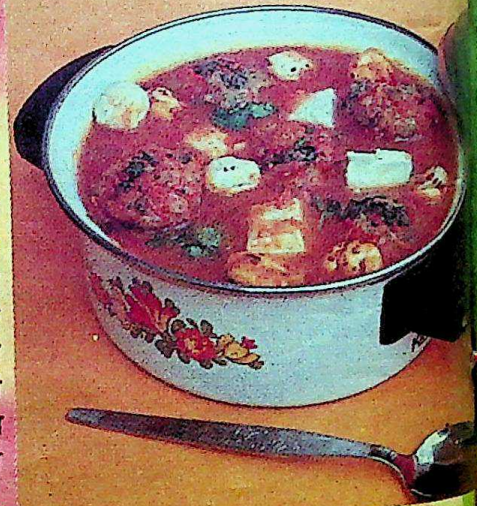

शाही कोफ्ते

विधि: खोया, मटर व गाजर में नमक, धनिया, मिर्च, गरममसाला, अदरक व हरी मिर्च मिला लें, कोफ्ते बना कर तल लें (इन्हें ओवन में भी बेक कर सकते हैं).

तेल गरम कर के प्याज व लहसुन को सुनहरे रंग का तल लें. मसाले डाल कर और भूनें, फिर दही डाल कर भूनें. टमाटर डाल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर तब तक भूनें जब तक कि बेल अलग न छूटने लगे. अब अंदाज से पानी डाल दें. जब पानी खौलने लगे, उस में कोफ्ते डाल कर कुछ देर बाद उतार लें. पनीर, ताल मखाने, काजू व गरममसाला डाल दें, हरी धनिया से सजा कर परोसें.

काजू शकरकंद डिलाइट

सामग्री: 8 बड़े काजू कुटे हुए, 3 बड़े चम्मच चीनी, 2 बड़े चम्मच मिल्क पाउडर, ½ किलो शकरकंद कसा हुआ, 125 ग्राम चीनी, 1 चुटकी भर खाने का पीला रंग, 1 बड़ा चम्मच घी, चांदी का वरक.

विधि: तीन बड़े चम्मच चीनी से दो तार की चाशनी बना कर उस में थोड़ा घी डाल कर पिसे काजू व मिल्क पाउडर मिला लें. इस के दो हिस्से कर के बेल कर अलग रखें.

एक बरतन में बाकी का घी गरम कर के उस में कसा हुआ शकरकंद डालें. गल जाने पर चीनी डाल दें. चीनी घुल जाने पर रंग मिला कर थोड़ा भून कर उतार दें.

एक थाली में घी लगा कर काजू मिश्रण का एक बेला हुआ भाग उस पर रखें. ऊपर आधा शकरकंद का भाग बराबर फैला दें. उस के ऊपर फिर काजू का दूसरा हिस्सा रखें. हलके हाथ से दबा दें. उस के ऊपर शकरकंद का बाकी मिश्रण फैला दें. अपनी इच्छानुसार बरफियां काट लें.

काजू शकरकंद डिलाइट

एक प्लेट में चांदी का वरक रख कर बरफियां रखें. एकएक बरफी पर कटे बादामपिस्ते रखें और परोसें.

त्योहारी परांठा

सामग्री: 1 कटोरी चने की दाल, 300 मि. लिटर दूध, 4 बड़े चम्मच चीनी, 3 बड़े चम्मच कच्चा नारियल कद्दूकस किया हुआ, 8-10 किशमिश, 1 बड़ा चम्मच बादाम महीन कटे हुए, 250 ग्राम मैदा, 4-6 इलायची पिसी हुई, तलने के लिए घी.

विधि: चने की दाल को भिगो कर दूध में पका लें. बड़े चम्मच से अच्छी तरह पीस

त्योहारी परांठा

व घोट लें. चीनी और घी डाल कर गाढ़ा होने तक पका लें. उस में नारियल, मेवे व इलायची मिला कर अलग रखें.

थोड़ा तेल डाल कर मैदा जरा सख्त गूंध लें. दो रोटियां बारीक बेल लें. एक रोटी पर दाल का मिश्रण फैला दें. दूसरी रोटी ऊपर से रख दें. हलका सा दबा कर बेल लें. इस प्रकार सब परांठे तैयार कर लें. एकएक कर के सब को घी में तल लें और गरमगरम परोसें.

—सविता भार्गव ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इंद्रधनुष

कहानी ● डा. राजलक्ष्मी शिवहरे

कितने वसंत बीते और कितनी होलियां आईं पर निशा वैसे ही साफसुथरी साड़ी के साथ साफ चेहरा लिए घूमती रही.

"ओफ, यह लड़की है या पाषाण प्रतिमा?" उस के साथ काम करने वाली नर्सें अकसर कहतीं, "तीजत्योहार पर भी इस के चेहरे के भाव नहीं बदलते. इस सपाट, भावहीन चेहरे पर तो रंग लगाने का साहस ही नहीं होता." निशा उन की बातों को पीठ फेर कर सुन लिया करती थी.

क्या हमेशा से ही वह ऐसी थी? उस के मन का उत्साह समाप्त न भी हुआ हो पर मन की उमंग कहीं खो गई थी. वह भी कभी होली खेला करती थी. जी भर कर दूसरों पर रंग डालती थी, परंतु उन दिनों वह स्कूल में पढ़ा करती थी.

"अरे, कपड़े तो बदल लिए होते, नए सलवार कुरते पर रंग डलवा आई..." एक

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बार उस की मां उस रंग में सराबोर देख कर झल्ला उठी थीं.

लेकिन वह मां को कैसे समझाती कि वह पीयूष से पुराने कपड़ों पर रंग कैसे डलवा सकती थी.

धीरेधीरे समय बदलता गया. जीवन ने स्याह रंग दिखाने शुरू किए कि वह होली के रंग भूलती ही चली गई.

एक दिन दफ्तर से लौट कर पिताजी ने धीरे से मां से कुछ कहा तो वह गुस्से से बोली थीं, ''अरे, आप ने समय से पहले ही सेवानिवृत्ति क्यों ले ली?''

''मैं ने सेवानिवृत्ति ली नहीं, मुझे जबरदस्ती नौकरी से निकाल दिया गया है.''

''पर क्यों?''

''कई प्रश्नों के उत्तर नहीं दिए जा सकते, निशा की मां...'' वह हताश से कुरसी पर गिर पड़े थे.

पूरे घर का भार निशा के नाजुक कंधों पर आ गया था. समय ने उसे गंभीर बना दिया था और यह परिपक्वता उस के हृदय के कोमल रंगों एवं भावों को सख्त बनाती चली गई थी.

''मुझ से तो निशा के चेहरे की गंभीरता देखी नहीं जाती...'' एक दिन जब निशा थक कर हस्पताल से लौटी तो मां के शब्द कानों में पड़े थे, ''रमा आई थी, निशा की सहेली... कैसे सुंदर बच्चे हैं उस के, और हमारी निशा? करुणा के ब्याह के बाद सोचा था कि पहले निशा का ब्याह कर देंगे, पर विमला के लिए रिश्ता आ गया.''

'तो यह बात है, अब इन्हें फिर पैसों की जरूरत पड़ गई है.' निशा ने मन ही मन सोचा.

दूसरे दिन जब वह हस्पताल जाने के लिए तैयार हो रही थी तो पिताजी ने कहा

पीयूष और निशा एकदूसरे से विवाह करना चाहते थे पर जिम्मेदारियों और पितृप्रेम ने निशा को जुबान खोलने की इजाजत ही न दी. लेकिन एक दिन उस के द्वारा हुई छोटी सी भूल ने उस की जिंदगी को इंद्रधनुष सा दमका दिया.

था, ''तुम्हारा ब्याह करने की बड़ी साध है, पर विमला के लिए अच्छा रिश्ता आया है...''

''इस से अच्छा और क्या हो सकता है?'' निशा अपनी सफेद साड़ी की ओर देखते हुए बोली थी, ''मेरे विवाह की चिंता न करें, वह कुछ दिनों के बाद भी हो सकता है.'' उस ने मन की कड़वाहट छिपा ली थी.

उस दिन होली थी. निशा के पिता ने कहा, ''आज तो होली है, बाहर जाना ठीक नहीं... कोई रंग डाल देगा.''

''मेरी यह पोशाक मेरी रक्षा कर लेती है. बीमारी कोई त्योहार देख कर तो नहीं आती और मेरी ड्यूटी वैसे भी आपातकक्ष में है, जाना जरूरी है.'' निशा जूड़े में पिन फंसाती हुई बोली थी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हस्पताल में चपरासी ने आ कर कहा, "सिस्टर, आप से कोई मिलने आया है."

सुनते ही निशा चौंक पड़ी थी, "अवश्य ही पीयूष होगा."

"तुम्हारा भी जवाब नहीं..." निशा पीयूष के ऊपर पड़े रंग को देखते हुए बोली थी.

"मैं यह सुनने नहीं आया... यह लो चुटकी भर गुलाल और यह मिठाई का डब्बा."

निशा गुलाल को देखती रह गई थी. हस्पताल में गुलाल लगाने से उस ने ही पीयूष को कभी मना किया था. उस ने अपने रूमाल में उस गुलाल को समेट लिया और मिठाई का डब्बा भी ले लिया. फिर गंभीर स्वर में बोली, "कब तक प्रतीक्षा करोगे पीयूष? तुम्हें इस तरह अकेला देख मुझे दुख होता है."

"तो मुझ से विवाह क्यों नहीं कर लेतीं? एकएक कर के सब भाईबहनों का विवाह हो गया, एक अकेला मैं ही रह गया हूं. यह भी जानता हूं कि कर्तव्यबोध तुम में कूटकूट कर भरा हुआ है. जब तक निखिल अपने पैरों पर खड़ा नहीं हो जाता, तुम विवाह के लिए कहां तैयार होगी. यह बताओ, क्या विमला के लिए कोई रिश्ता आया?"

निशा मुसकराई थी, "विमला की शादी की बड़ी चिंता है..."

"क्या करूं, वह भी तो मील का एक पत्थर है... उसे भी तो पार लगाना ही है."

पीयूष के लौटते कदमों की आहट को वह वहीं खड़ी हो कर सुनती रही थी और रूमाल में लिपटे गुलाल को देखते हुए उस की आंखें भर आई थीं. कैसा था यह गुलाल, जो पीयूष उसे दे कर चला गया था. इसे भी वह उस डब्बे में रख देगी, जिस में वह हर वर्ष गुलाल रखती रही थी.

निखिल की पढ़ाई का यह अंतिम वर्ष था. पीयूष का धैर्य अब जवाब देने लगा था. वह जब भी मिलता तो पूछता, "पिताजी से बात न ही हो तो कचहरी में जा कर अर्जी लगा देते हैं..."

"नहीं, बिना उन की अनुमति के नहीं." निशा का मन तैयार न होता.

"मैं बात करूं?" एक दिन पीयूष चिढ़ गया था.

"कहीं पिताजी तुम्हारा अपमान न कर दें. मैं खुद बात करूंगी."

"ठीक है." कहते हुए वह चला गया था.

पीयूष के जाने के बाद निशा सोचने लगी थी कि वह पिताजी से कैसे बात करेगी? क्या वह अंतर्जातीय विवाह के लिए मान जाएंगे? वैसे निशा के पिता पीयूष के बारे में जानते तो थे कि वह उस का मित्र है, पर वह निशा से विवाह करना चाहता है, इस बारे में कुछ नहीं जानते थे.

निशा की भूखप्यास और नींद उड़ गई थी. वह नींद की गोली खा कर ही सो पाती थी. धीरेधीरे वह इस की अभ्यस्त हो गई. उस का चंपई रंग काला पड़ता गया. भरी देह दुर्बल होने लगी थी और आंखों के नीचे स्याह घेरे बढ़ने लगे थे. उस की सुतवां सी नाक और लंबी लगने लगी थी.

एक दिन एक शीशी पलंग से उठाते हुए निशा की मां बोली थी, "देखो, यह क्या है?"

"अरे, ये तो नींद की गोलियां हैं... कहां मिलीं?" निशा के पिता ने आश्चर्य प्रकट किया.

"निशा के बिस्तर से...."

"तभी उसे आजकल भूख नहीं लगती. पता नहीं, उस के मन में क्या है... जो घुट रही है..."

"मैं जानती तो हूं, पर कहूं कैसे? डर लगता है."

"डरती रहीं तो एक दिन हम इस लड़की से हाथ धो बैठेंगे."

"ऐसा मत बोलिए... यह लड़की न होती तो जरा सोचिए, करुणा और विमला के हाथ कैसे पीले होते? आप तो न जाने क्यों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

असमय ही सेवानिवृत्त हो गए थे."

"उन बातों को भूला नहीं जा सकता निशा की मां, पर निशा यदि हमारा साथ न देती तो घर कैसे चलता? पूर्वजों का दिया यह घर कब तक हमारा पेट भरता?"

"हमारा पेट भर भी देता तो क्या करुणा और विमला इतने अच्छे घरों में बहुएं बन कर जातीं? निखिल क्या इंजीनियर बन पाता?"

"यह क्या है निशा?" एक शीशी की ओर संकेत करते हुए पिता ने निशा से पूछा.

"बताओ, फिर वह क्या चाहती है?" उन्होंने पत्नी की ओर देखा.

"पीयूष को जानते हैं न आप?"

"हां, कभीकभार निशा के साथ आता रहा है."

"यदि वह पीयूष से विवाह करना चाहे तो क्या आप राजी हो जाएंगे?"

"पर वह तो दूसरी जाति का है?"

"हां."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"क्या ऐसा हो सकता है? नहीं, कभी नहीं."

एकाएक वह गुस्से से पति से बोली, "मैं जानती थी, ऐसा ही होगा, आप कभी उसे विवाह की आज्ञा नहीं देंगे और वह इन गोलियों को खा कर अपनी जिंदगी बरबाद करती रहेगी. तुम उस के पिता हो सकते हो, पर उस की बराबरी नहीं कर सकते.

"क्या नहीं किया उस ने तुम्हारे घर को संजोने के लिए और आप क्या दे रहे हैं उसे? किस जाति के लोग आए थे सामने, जब आप अपनी गृहस्थी को संभालने का प्रयत्न कर रहे थे?" भावना के अतिरेक से उन का गला भर आया था.

निशा के पिता कुछ पल सोचते रहे, फिर कमरे में चले गए.

रात आठ बजे ड्यूटी समाप्त कर निशा हस्पताल से आई थी. कपड़े उतार कर उस ने मैक्सी पहन ली थी. तब तक मां चाय बना कर दे गई थीं.

"निशा, चाय पीने के बाद जरा मेरे कमरे में आना... कुछ बात करनी है." कह कर पिता दरवाजे से लौट गए थे.

निशा ने जल्दी से चाय समाप्त की और पिता के कमरे की ओर चल पड़ी. वह उसी की राह देख रहे थे.

"यह क्या है निशा?" एक शीशी की ओर संकेत करते हुए पिता ने पूछा.

निशा सिर से पैर तक कांप गई थी. नींद की गोलियों की शीशी, जो वह रोज अपनी अलमारी में बंद कर के जाती थी, भूल से बिस्तर पर ही छूट गई थी. वह धीरे से बोली, "जी, दवाई है."

"क्या इसी कारण आजकल तुम्हें कम भूख लगती है?"

"माफ कर दीजिए, अब इन्हें नहीं लूंगी."

"क्या तुम पीयूष से विवाह करना चाहती हो?"

"क्या...?"

"तुम्हारी मां ने कहा है..."

"जी, करना तो चाहती हूं पर यह भी जानती हूं कि आप की अनुमति के बिना मैं सुखी नहीं रह पाऊंगी. इस से बेहतर तो..."

"इस से बेहतर तो नींद की गोलियों का प्रयोग है, क्यों बेटी?" पीड़ा थी उन के शब्दों में, "तुम्हारे त्याग ने मुझे हमेशा उद्वेलित किया है, पर तुम्हारे पितृ प्रेम ने भी अभिभूत कर दिया है मुझे. तुम्हें दुखी कर के क्या हम सुखी रह पाएंगे. पीयूष से कहना, मैं उस से मिलना चाहता हूं."

"मैं कल ही उन्हें ले आऊंगी. कल होली है न, वह जरूर मिलने आएंगे."

"पर क्या उस के घर वाले भी तैयार हो जाएंगे?"

"वे तो कब से तैयार हैं." उतावलेपन में वह बोल गई. पर दूसरे ही क्षण झेंप गई. उस के चेहरे की ओर देखते हुए पिता मुसकरा दिए थे.

दूसरे दिन जब पीयूष चुटकी भर गुलाल ले कर आया तो निशा ने अपना चेहरा सामने कर दिया था.

"क्या यहां हस्पताल में...?" वह निशा के व्यवहार को देख व्यंग्य करने से चूका नहीं था.

"तो घर चलो, पिताजी ने बुलाया है."

"क्या?" खुशी से पीयूष का चेहरा दमकने लगा था, "तुम ने बात कर ली?"

"हां, वह तैयार हो गए हैं."

"ओह, तब तो घर चल कर यह मिठाई सब के साथ ही खाएंगे." कह कर उस ने चुटकी भर गुलाल निशा के गालों पर मल दिया, जिसे निशा ने आंचल से पोंछा नहीं था.

यह देख कर पीयूष की आंखों में सतरंगी इंद्रधनुष उतर आया था, "आओ चलें."

मोटरसाइकिल पर जाते समय कुछ शरारती बच्चों ने पिचकारी से उन पर रंग डाल दिया था. पर निशा को उन पर क्रोध नहीं आया था क्योंकि होली के अवसर पर उसे पिता की अनुमति से नया जीवन प्राप्त हो गया था. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जंगल की होली

बंदरजी ने ढोल लिया,
भालू ने झांझ बजाई.
गला फाड़ कर गदहेजी
चिल्लाए—होली आई.

गहरागहरा खूब घोल कर
रंग शेरनी लाई
और शेर को सराबोर कर
ताली खूब बजाई.

ले गुलाल गिलहरी बहन ने
चारों ओर उछाला.
उछलउछल कर खरहे ने
सब का मुखड़ा रंग डाला.

हाथी झूम रहा था गुझिया,
पूए, दहीबड़े खा.
थे सियारजी नाच रहे
मस्ती में ताथइ ताथा.

बारहसिंघा, ऊंट, भेड़िया
साथ चले टोली में,
खूब मजा आया अब की
इस जंगल की होली में.

—राजनारायण चौधरी

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो ली सो हो ली

कहानी ● अश्विनीकुमार भटनागर

कहते हैं कि जब पुरुष 40 की उम्र पार कर लेता है तो उस के मन में एक और प्यार बुझती लौ की तरह जोर मारता है. कुछ ऐसा ही हाल शमशाद का था. 14 दिसंबर की रात को उस ने अपनी पत्नी व दो बच्चों के साथ 45वीं वर्षगांठ मनाई थी.

हाल यह था कि जब वह सात स्वादिष्ट व्यंजनों का, जो यासमीन ने बड़े परिश्रम से मियां को खुश करने और सवाब पाने के लिए बनाए थे, चटखारे मारमार कर सेवन कर रहा था, उसे याद आ रही थी शमा की, जिस ने बुलाया तो बहुत आग्रह से था, परंतु जाने का कोई सबब नहीं बन रहा था. बीवी और बच्चों के प्यार की जकड़ बड़ी मजबूत थी.

शमशाद ने यह सोच कर मन को समझाया कि ये लोग आखिर उस के शरीर को ही तो बांध कर रख सकते हैं, मन पंछी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो एक आवारा की तरह होता है, उसे कोई बंदी नहीं बना सकता. शरीर यासमीन के साथ है तो मन शमा के आगोश में. हुर्रा, यानी एक ही म्यान में दो तलवारें और मजा यह कि एक तलवार को दूसरी तलवार का कोई पता नहीं.

शमशाद एक गैरसरकारी दफ्तर में उपनिदेशक था. जब उसे इस पद की नियुक्ति मिली तो साथ में शमा भी एक विरासत के तौर पर मिली. शमा निजी सहायिका थी और कार्य में अपने अधिकारी से भी अधिक निपुण. सुंदरता इस पद पर न केवल विशेषता होती है बल्कि जन संपर्क के लिए एक अहम आवश्यकता भी.

शमा बहुत सुंदर थी और उस की त्वचा दूध में धुली सी लगती थी. उस के सारे व्यक्तित्व में कोई कलंक न था. बस, एक ही बात थी कि पहले और अंतिम पति ने उसे तलाक दे दिया था. कारण, उस के इतने प्रशंसक थे कि पति की ईर्ष्या ने उसे जीते जी मार डाला. तलाकशुदा होना शायद उस के लिए फायदेमंद ही था. आमंत्रित सहानुभूति की छत्रछाया में वेतन और भत्ते बढ़बढ़ कर मिलते रहे. अब वह सुखी थी. उसे किसी बैसाखी की आवश्यकता नहीं है, ऐसा उस का विश्वास था.

परंतु तब तक उस की मुलाकात शमशाद से नहीं हुई थी. शमा और

शमशाद और शमा के प्रेम की पींगे पूरी जवानी पर थीं. शमशाद खुश था कि इस की खबर उस की बीवी को नहीं हुई. लेकिन उस की एक म्यान में दो तलवारें रखने की खुशी ज्यादा दिन नहीं टिक सकी. होली की उस एक घटना ने उस के प्रेम के सारे कच्चे चिट्ठे खोल कर रख दिए.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शमशाद शमा और पतंगे की तरह आकर्षण में बंध गए, एकदूसरे की आवश्यकता बन गए.

लगभग एक महीना वे एकदूसरे की नजरों में समाने की कोशिश करते रहे. नजरें ऐसे टकराती थीं, मानों वे चाय के दो प्याले हों. एक की उंगलियां अगर कहीं दूसरे से छू जाती थीं तो लगता था कि वह कोई रोमानी मुलाकात है.

एक दिन इन नजरों ने ही मेघदूत का काम किया.

"कहां?" शमा की नजरें उठीं.

"लोधी गार्डन में." शमशाद ने फुसफुसा कर कहा.

"कोई देख लेगा." शमा ने घबरा कर कहा.

"देखने दो. लोधी गार्डन तो आशिकों का 'जन्नत' है." शमशाद ने आह भर कर कहा.

"वहां से आशिकों का जनाजा भी निकलता है. कहीं यह जन्नत जिल्लत में न बदल जाए?" शमा की छाती तेजी से उठ और बैठ रही थी. खून का दौरा बढ़ गया था.

"प्यार किया तो डरना क्या." शमशाद ने शायराना अंदाज में कहा.

"यह बात तो पुरानी हो गई... कोई नई बात सुनाइए न."

"जब से बच्चे समझदार हो गए हैं, नई फिल्में देखना बंद कर दिया है. मेरे पहुंचते ही कर्फ्यू लग जाता है घर में." शमशाद ने मुसकरा कर कहा.

"बड़े जालिम हैं आप," शमा ने शिकायत की.

"उम्मीद है, आप की सोहबत रंग लाएगी."

"शायरी का शौक है?"

"है तो नहीं, पर हो जाएगा."

"वह कैसे?"

"कहते हैं न कि 'मैं शायर तो नहीं...शायरी आ गई..'" शमशाद गुनगुनाया.

"यह भी पुरानी फिल्म का गीत है."

"आप के साथ नई फिल्में भी देख लूंगा."

"हाय, क्या कयामत ढा रहे हैं? लगता है, आप एकदम संजीदा नहीं हैं... या तो खुला आसमान दिखता है या सिनेमाघर, कोई न कोई जरूर देख लेगा. ऐसे में मैं तो बस शर्म से मर ही जाऊंगी."

"तो फिर आप के घर आ जाता हूं. वीडियो का बंदोबस्त कर दूंगा. बस तनहाई भी होगी और नई फिल्में देखना भी सीख लूंगा."

"आप नहीं मानेंगे. जिस महल्ले में रहती हूं, वहां हजार आंखें आतेजाते मेरे बदन को छलनी करती रहती हैं. एक से एक बढ़ कर जासूस हैं. वहां वैसे ही रहना दुश्वार कर रखा है." शमा ने दुखी हो कर कहा.

"काश, आप को डोली में बिठा कर अपने घर ले जाता." शमशाद ने आंखें बंद कर के हाथ छत की ओर फैलाते हुए कहा.

"अच्छी मुसीबत है."

"जब तक कोई बंदोबस्त नहीं होता, बस एक ही सूरत है." शमशाद ने हंस कर कहा.

"वह क्या?" शमा की आंखों में आशा की चमक थी.

"बस यहीं इस कमरे में वक्त चुरा कर एकदूसरे की समीपता का अहसास करते रहेंगे."

"लोगों को शक हो जाएगा."

"इश्क और मुश्क छिपता नहीं, पर खैर, तब तक जल्द ही मैं कोई रास्ता ढूंढ़ निकालूंगा."

दरवाजे पर दस्तक हुई और एक सहयोगी ने प्रवेश किया. उस ने प्रश्नसूचक दृष्टि से शमशाद को देखा और फिर शमा को. शमा की पेंसिल पुस्तिका पर तेजी से चीलमकोड़े खींच रही थी.

"आप तशरीफ ले जाएं." शमशाद ने रोब से कहा, "इन्हें जल्दी से टाइप करवाइए और हां, दो प्याले काफी."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"जी." शमा ऐसे भागी मानो जेल का दरवाजा खुला रह गया हो.

"अब्बा, अब्बा." इरशाद शमशाद को झिंझोड़ रहा था, "अब्बा, कहां खो गए आप? आज आप ने वीडियो पर नई फिल्म दिखाने का वादा किया था न?"

इशरत ने दूसरा कंधा हिलाते हुए कहा, "आप के जन्मदिन पर हमें नई फिल्म जरूर देखनी है. मैं भैया को ले कर जा रही हूं. मना तो नहीं करेंगे न?"

यासमीन हंस रही थी. उस का पति कुछ महीनों से सख्त फौलाद का न रह कर एकदम गीले आटे जैसा हो गया था. सब बातें आसानी से मान जाता था. इस 'कायाकल्प' को देख कर वह हैरान तो थी, पर खैर मना रही थी कि सदा ऐसा ही रहे. हां, आधी रात में उसे बेचैनी से आहें भरते व करवटें बदलते देख कर परेशान हो जाती थी.

'कोई चक्कर तो नहीं? नहींनहीं...' उस ने सोचा, 'इतनी उम्र हो चली है, दो बच्चों के बाप भी हैं, ऐसी हरकत नहीं कर सकते. फिर भी मर्द जात का क्या भरोसा? जरा सतर्क रहना पड़ेगा. वह आतेजाते कपड़ों पर निगरानी रखने लगी कि शायद कोई लंबा बाल मिल जाए लेकिन उसे यह पता नहीं था कि शमा के बाल न तो बहुत लंबे थे और न छोटे. आसानी से पकड़ में नहीं आ सकते थे. वैसे मामला इतना संगीन नहीं हुआ था कि वह शमशाद के कंधे पर सिर रखे और उसे अपने बालों से खेलने का अवसर दे.

"क्यों जी, इतनी देर कहां लगा दी?" एक दिन यासमीन ने घड़ी की ओर देखते हुए पूछा.

"लो, एक घंटा देर भी कुछ देर है?" शमशाद ने इलजाम लगने से पहले ही आक्रमण किया, "वैसे तुम कोतवाल कब से हो गईं? अरे भई, दफ्तर है. जिम्मेदारी का काम है. क्या मुझे मामूली क्लर्क समझ रखा है जो पांच बजे नहीं और भाग खड़ा हुआ?"

यासमीन ने दबते हुए कहा, "मैं ने कब

"मजनूं है क्या?" जावेद ने हंस कर शमा से पूछा.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहा कि तुम मामूली क्लर्क हो? अरे इतने सालों से सही वक्त पर आ रहे हो तो क्या पूछना गुनाह हो गया?"

शमशाद ने जरूरत से ज्यादा मुसकराते हुए कहा, "जानेमन, अब तुम एक आला अफसर की बीवी हो. रुख और रवैया बदलना पड़ेगा."

"लो, हमारे पड़ोसी श्यामसुंदर क्या केंद्रीय मंत्रालय में आला अफसर नहीं हैं? शाम को साढ़े पांच बजे तक तो आ ही जाते हैं, दोपहर को भी खाना खाने आते हैं और फिर तीन बजे जाते हैं."

"अच्छा, तो जनाब पर श्यामसुंदर का रंग चढ़ रहा है." शमशाद ने तीव्र व्यंग्य से कहा, "चलो, मैं नौकरी छोड़ देता हूं. कल से तुम्हारी और बच्चों की हाजिरी बजाऊंगा."

"ऐसा तो मैं ने नहीं कहा." यासमीन एकदम दब गई.

"तो सुनो, उपनिदेशक से निदेशक बनने के लिए अब मुझे रोज सातसात बजे तक काम करना पड़ेगा. वैसे तो ज्यादातर खुशामद करने का ही काम है, पर खुशामद भी तो एक काम है."

यासमीन ने हथियार डालते हुए कहा, "अब यह सब मैं नहीं जानती... जो ठीक समझो, वही करो."

शमशाद मन ही मन बहुत प्रसन्न हुआ. एक तीर से दो चिड़ियां मर गईं. शमा को अधिक समय देने का अच्छा बहाना मिल गया. अब यासमीन को कोई शक नहीं होगा. यों तो यासमीन हर औरत की तरह बड़ी शक्की मिजाज थी, पर उसे मूर्ख बनाना शमशाद के लिए बाएं हाथ का खेल था.

शमा और शमशाद कार्यालय के पूरे समय में से कुछ अधिक ही समय चुराने लगे थे. अब लोगों को लगने लगा था कि दाल में कुछ काला है. पीठ पीछे यारों ने हलकी चुटकियां भी लेनी शुरू कर दी थीं.

जब आदमी दलदल में फंसने लगता है तो उसे घबराहट के मारे ऊपर लटकी डाल भी नजर नहीं आती कि उसे पकड़ कर अपने को बचाने की कोशिश करे. शमशाद और शमा कभी दोपहर का भोजन किसी होटल में करते तो कभी शाम की चाय वातानुकूलित रेस्तरां में लेते. छुट्टी का दिन आता तो शमशाद काम का बहाना कर के किसी पार्क में चला जाता था, जहां पिकनिक का सामान लिए शमा प्रतीक्षा में होती.

हौसले बढ़ते गए और डर उसी अनुपात में कम होता गया. अकसर कोई जानपहचान का मिल जाता तो पहले तो इधरउधर देखने का बहाना करते और फिर जब वह सामने ही आ जाता तो कोई कहानी गढ़ देते. अकसर लोगों को विश्वास नहीं होता था, पर बिला वजह अफवाह उड़ाना ठीक न समझ पैनी नजरें डाल कर चले जाते थे. लेकिन आखिर एक दिन तो पोल खुलनी ही थी.

"सुनिए," एक दिन शमा ने कहा, "पहले तो लोग इशारे करते थे, पर अब फिकरे भी कसने लगे हैं. लगता है, कुछ करना ही होगा, क्या आप ऐसा नहीं सोचते?"

"हां, असमंजस में तो मैं भी पड़ गया हूं, पर समझ नहीं आता कि क्या करूं?"

शमा ने पेंसिल से पुस्तिका खुरचते हुए कहा, "क्या आप मुझ से शादी नहीं कर सकते?"

शमशाद कुरसी से उछल पड़ा, "क्या कहा, शादी? क्या सच ही में तुम संजीदा हो या कोई मजाक कर रही हो?"

"मैं सच ही में संजीदा हूं. लोगों के ताने, फिकरेबाजी और गंदे इशारों से अब मैं तंग आ गई हूं."

"जरा सोचो, शादीशुदा व बालबच्चे वाला हूं. कितना तमाशा खड़ा हो जाएगा. पढ़ीलिखी समझदार हो. भई, विदेशों में तो ऐसे 'प्रेम संबंध' आम बात है. उबाऊ जिंदगी को तरोताजा बनाने का यह एक जानामाना तरीका है." शमशाद ने समझाने की कोशिश करते हुए कहा.

"पर यह विदेश तो नहीं..."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'शमशाद ने हंस कर कहा, "विदेश का एक दौरा ही बना लेते हैं. टोकियो में एक सम्मेलन होने वाला है. मैं अपने अफसर की खुशामद कर रहा हूं, शायद तिकड़म लग जाए."

"आप तो चले जाएंगे, पर मेरा क्या होगा?"

"अरे भई, एक सहायक तो मैं ले ही जा सकता हूं. छोटामोटा सम्मेलन थोड़े ही है? अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर नीतियां तय करनी होंगी. बिना आप की मदद के मैं तो भीड़ में खोया सा लगूंगा."

"हटिए भी, आप से सीखे कोई खुशामद करना. वैसे क्या आप सच कह रहे हैं?"

"मैं ने आप से कभी मजाक किया है क्या?"

'शमा विदेश के सपनों में खो गई तो 'शादी की बात दिमाग से हट गई. 'शमशाद को भी न सिर्फ राहत मिली बल्कि सोचने का भी अवसर मिल गया.

'शमशाद को सम्मेलन में कंपनी की ओर से प्रतिनिधित्व करने की आज्ञा मिल गई. बहुत कोशिशों के बावजूद वह 'शमा को साथ न ले जा सका. कंपनी ने अधिक रुपया खर्च करना मुनासिब नहीं समझा. टाइपिंग इत्यादि के लिए सम्मेलन के सचिवालय की मदद लेने के लिए कह दिया, वैसे टेलेक्स इत्यादि से संपर्क तो रखना ही था. सम्मेलन के बाद 'शमशाद को कंपनी की ओर से और देशों से व्यापार संबंध बढ़ाने के लिए दौरे पर भी जाना था. इस कारण वह लगभग सात सप्ताह बाहर घूमता रहा. कई पत्र 'शमा को भी लिखे, पर कोई जवाब नहीं मिला.

'शमशाद के पीछे 'शमा को सहयोगियों ने बहुत छेड़ा और तंग भी किया. व्यंग्यपूर्वक ताने व हंसी दूरदूर तक उस का पीछा करते थे. एक दिन उस के बरदाश्त की हद टूट गई. वह रोने लगी. परेशान हो कर उस ने दूसरी नौकरी तलाश कर ली. संयोग से

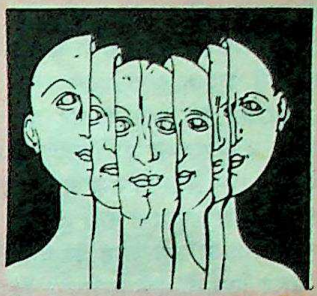

बड़ी मछली से

छोटी मछली को खाना
तुम ने सीखा कैसे, कहां से?
जबकि न तो तुम सभ्य हो
और न ही रहती हो नगरों में.

—दीपक शर्मा

'शीघ्र ही उसे एक और अंतर्राष्ट्रीय कंपनी के प्रबंध निदेशक की निजी सहायिका की नौकरी मिल गई. वेतन भी दोगुना था, साथ ही फ्लैट की भी सुविधा थी, जिस में टेलीफोन भी लगा था. ये दोनों सुविधाएं इसलिए थीं कि कंपनी का काम रात और दिन का था, कभी भी उसे बुला लिया जाता था.

जब 'शमशाद आया तो 'शमा को न पा कर बहुत निराश हुआ. जो खत उस ने लिखे थे, वे सब उस की ही दराज में पड़े थे. वह 'शमा के लिए एक बेशकीमती हार तथा तरहतरह के इत्र व सौंदर्य सामग्री लाया था. इन सब को यासमीन से छिपाने के लिए उस ने पहले से ही एक पार्सल अपने नाम से दफ्तर भेज दिया था. घर के लिए और तोहफे लाया था.

एक सप्ताह तो वह बड़ा व्यस्त रहा था. जो कुछ वह कर के आया था, अपने अधिकारियों को विस्तार से बताना था. कुछ दावतें भी हुईं. उस के बाद वह 'शमा को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खोजने में लग गया. यहां के दफ्तर से तो वह त्यागपत्र दे कर ही छूट गई थी. बहुत पूछने पर भी उस ने नहीं बताया था कि वह कहां जा रही है. अकसर लोग भांजी मार देते हैं. इस का उसे पूरा ज्ञान था.

शमशाद को उस के घर का पता मालूम था, हालांकि वह कभी वहां गया नहीं था. शमा ने आने से सख्त मना कर रखा था. वह अपनी हंसी उड़वाना नहीं चाहती थी. मकान मालिक से उसे शमा का पता मिल गया. दूसरे दिन ही उसे टेलीफोन किया.

"हाय शमा, यों तड़पा कर मार डालने का इरादा है क्या?" शमशाद ने नाटकीयता से कहा.

"कैसे हैं आप? बहुत मजे लूटे होंगे." शमा ने मीठे व्यंग्य से पूछा, "सुना है, वहां किराए की सहायिकाएं मिल जाती हैं, क्या यह सच है?"

"मजाक छोड़ो, आप से मिलने के लिए बेताब हूं. अब तो सब्र का बांध टूट रहा है. जानती हो, बेशकीमती तोहफे लाया हूं."

"तोहफे? मेरे लिए? छोड़िए भी मजाक. कुछ काम की बात हो तो करिए. मेरा अंदर से बुलावा आ रहा है."

"लगता है, बहुत मांग बढ़ गई है आप की." शमशाद ने हलके व्यंग्य से कहा, "सुना है, आप को फ्लैट भी मिला है."

"सो तो है, काम की मांग है." शमा हंसी.

"तो फिर आज शाम को आ रहा हूं."

"शाम को? नहींनहीं, एक चाय पार्टी का बंदोबस्त करना है. फिर एक रात्रिभोज में भी उपस्थित रहना है. रात के 12 बजे से पहले शायद ही फारिग हो पाऊं." शमा ने शीघ्रता से कहा.

"मैं क्या दूर गया, बस आप भी दूर हो गईं. कब होंगे फिर दीदार?" शमशाद ने निराशा से कहा.

"एक मिनट रुकिए, अपनी डायरी देख कर बताती हूं."

शमशाद चोंगा कान से लगाए खड़ा रहा. उधर से पन्ने उलटने की आवाज आ रही थी. वह ठंडी सांसें चोंगे में छोड़ता रहा.

"हैलो, हैलो."

"हांहां बोलो." शमशाद ने बेचैनी से कहा, "कब से कान लगाए खड़ा हूं."

"अगले जुमा को अशोक होटल में ठीक पांच बजे आ जाइए. मुझे कुछ दावतों का बंदोबस्त करना है. वहीं बैठ कर बात कर लेंगे. इस से पहले तो बहुत मुशकिल है."

एक गहरी सांस छोड़ते हुए शमशाद ने कहा, "बहुत बड़ी हो गई हैं आप. हमारे जैसे नाचीज बंदे पर भला क्यों निगाहें पड़ेंगी? खैर, हाय, इतने दिन किस के सहारे जिऊंगा?"

"सच," शमा ने मधुर हंसी बिखेरते हुए कहा, "मैं बहुत व्यस्त हूं. फ्लैट में भी लोग समयअसमय आते रहते हैं."

"आप की अदा हुई, हमारी जान गई."

शमा खिलखिलाई, "यह संवाद भी बहुत पुराना है. ठीक है फिर जुमा को मिलेंगे. मैं एक कोने की मेज आरक्षित करवा रही हूं. अच्छा."

शमशाद ठंडे और मुरदा फोन को हाथ में पकड़े देख रहा था. शमा बदल गई या दुनिया ही बदल गई? अब तो जब सामना होगा, तब ही पता लगेगा.

जब शमा मिली तो पूरी गरमजोशी से मिली. वक्त और जगह अगर मौजूं होता तो शायद दोनों गले भी लग जाते. शमशाद ने महसूस किया कि अब वह प्रेमिका की तरह नहीं बल्कि एक पुराने दोस्त की तरह मिल रही है. चलो, यह भी चलेगा. जिंदगी में कुछ तो शगल रहना चाहिए.

इस नए काम पर लगने के बाद शमा ने सोचा था कि अब उसे शमशाद के लिए अधिक वक्त नहीं होगा. दूसरी बात यह थी कि प्यार अगर शादी की सीमा पार न करे तो बेमानी हो जाता है. जाहिर था कि शमशाद शादी करने की स्थिति में नहीं था. शायद उस का नजरिया गलत था, जबकि वह प्यार को संजीदगी से ले रही थी. शमशाद के लिए यह दिल बहलाने का काम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था, यह सोचसोच कर उस का व्यक्तित्व उदास हो गया था. जब उस ने शमशाद के लाए हुए बेशकीमती और नायाब तोहफे देखे तो फिर से पसीज गई.

"अब कब मिलोगी?" शमशाद ने पूछा.

"मैं फोन कर दूंगी. सच कहती हूं, मिलने के लिए वक्त निकाल पाना बहुत मुशकिल है." शमा ने इत्र सूंघते हुए बेहोशी का नाटक करते हुए कहा, "हाय, एकदम जन्नत पहुंच गई."

शमशाद ने दुखी स्वर में कहा, "यानी मैं अब आप के फोन का मोहताज रहूंगा."

"बहुत अच्छी ईजाद है, यह टेलीफोन."

जब पूरा सप्ताह प्रतीक्षा में निकल गया तो शमशाद ने एक शिकायत भरा खत लिखा. जिस कागज पर शमा का पैगाम आया, वह शमशाद के दिए इत्र में डूबा हुआ था. इस तरह दोनों में खतोकिताबत चल पड़ी. शमशाद खत उस के फ्लैट के पते पर लिखता था और शमा शमशाद के कार्यालय के पते पर.

एकदो महीने बाद शमा के खत कम होते गए और शमशाद के ज्यादा. इस का कारण न केवल शमा की व्यस्तता थी बल्कि एक दूसरा लगाव भी था. एक नए सहयोगी जावेद ने उस पर डोरे डालने शुरू कर दिए थे. शमा जानती थी कि अकेली औरत समाज में रहने में बड़ी असमर्थ है. कभी न कभी उसे मर्द नाम की बैसाखी का सहारा लेना ही पड़ता है. यह बात अलग है कि अकसर औरत ही मर्द की बैसाखी होती है.

इस नए सहयोगी में बहुत से गुण थे. और सब से बड़ा गुण यह था कि अविवाहित था और शादी के लिए एकदम आजाद. आखिर अपनी जिंदगी अपने तौर से जीने का शमा को पूरा हक था.

जावेद का इश्क जब जोर पकड़ने लगा तो शमा ने शमशाद के बारे में सब कुछ सचसच बता दिया. वह उसे अंधेरे में नहीं रखना चाहती थी. प्यार और शादी की नींव

KIWI

क्लीन बोउल

दमदार!
असरदार!
करे चमत्कार!

किवी क्लीन बोउल को किसी भी प्रकार के टॉयलेट बोउल में बस छिड़किए और देखिए इसका कमाल! पानी बुदबुदाए और एकदम नीला हो जाए। यह अन्य पाउडरों की तरह न जमे न इकट्ठा हो। दुनिया-भर में जानामाना, इस्तेमाल में आसान किवी क्लीन बोउल जल्द असर दिखाए और हमेशा रखे आपके टॉयलेट बोउल को किवी चमक से भरपूर।

HTA 9194 E

दमदार, असरदार टॉयलेट क्लीनिंग पाउडर
यह उत्पादन KIWI का!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एकदूसरे के विश्वास पर खरी उतरेंगे, ऐसा शमा का विश्वास था.

जावेद खिलखिला कर हंस पड़ा, "कुछ फिक्र मत करो. मेरी अलमारी में भी बहुत से हड्डियों के ढांचे मिलेंगे. कहो तो बयान करूं?"

"बहका तो नहीं रहे?" शमा ने शंका से पूछा.

"करूं टेलीफोन?"

"न बाबा न." शमा ने जल्दी से कहा.

तभी टेलीफोन बज उठा. शमा ने उठाया.

"मैं हूं शमशाद."

"कैसे याद किया?"

"हम तो याद में तड़प रहे हैं. न तो आप मिलती हैं और न ही अब खत लिखती हैं. क्या इरादे हैं?" शमशाद की आवाज में नाराजगी थी.

"इरादे तो नेक हैं." शमा ने खिलखिलाते हुए कहा, "बस वक्त ही नहीं मिलता."

"हमारे लिए भी नहीं?"

"भाईजान," शमा ने हंसते हुए कहा, "जिंदगी को असलियत के आईने में देखना सीखिए."

"क्या...क्या...क्या..." शमशाद हकला कर बोला, "मैं मिलने आ रहा हूं. आज ही, अभी, इसी वक्त."

"न...न...न... इतना गजब मत कीजिए. बहुत लोग बैठे हैं यहां. तमाशा हो जाएगा."

"तो फिर बताइए, कब आऊं?"

"एक मिनट रुकिए, डायरी देख कर बताती हूं."

शमा ने चोंगे को हाथ से ढक दिया.

"मजनूं है क्या?" जावेद ने हंस कर पूछा.

"हां," शमा ने सिर हिला कर कहा, "मिलने के लिए पीछे पड़ा है."

"दीवाना है?"

"ऐसा ही समझो."

"तो मिल क्यों नहीं लेतीं?"

"क्या फायदा? कभी न कभी तो रिश्ता तोड़ना ही पड़ेगा."

"ऐसा करो," जावेद ने सोच कर कहा, "उसे अगले मंगल को बुला लो."

"मंगल को क्या है?"

"होली है. कहना, सुबह आठों बजे आए."

"क्यों सताते हो बेचारे को."

"देखना है कि कितना जोर है इश्क में उस के. अगर सच्चा आशिक होगा तो घुटनों के बल आएगा."

"क्यों इम्तिहान लेते हो?"

"आखिर पीछा छुड़ाना है या नहीं?"

शमा ने एक क्षण सोचा और टेलीफोन उठा कर शमशाद से कहा, "मंगल को आइए. साथ मिल कर होली खेलेंगे."

शमशाद ने बहुत ही सर्द आह छोड़ते हुए कहा, "ठीक है, आऊंगा. मिठाई तैयार रखिएगा, रंग मैं लाऊंगा. बस रंग में भंग मत कीजिएगा."

टेलीफोन रखते हुए शमा ने कहा, "वह तो आने को कह रहा है. लगता है, आप मेरा तमाशा बनवा कर ही छोड़ेंगे."

जावेद ने उठते हुए कहा, "यह तो मंगल को पता लगेगा. बालबच्चेदार खानदानी होगा तो घर वाले आने ही नहीं देंगे."

शमशाद ने दो दिन पहले ही भूमिका बांध ली थी कि "दिन होली का जरूर है, पर एक अहम मीटिंग है. कोई बाहर से आ रहा है, दोपहर को लौट जाएगा."

बारबार मना करने पर शमशाद ने झुंझला कर कहा, "अब दफ्तर तुम जाती हो या मैं? काम में होलीदीवाली क्या और ईद क्या? क्या त्योहारों से वक्त रुक जाता है."

"समझते क्यों नहीं? होली का दिन है. हुड़दंग मचाने वालों की कमी नहीं होती. उन्हें क्या मतलब कि आप किसी काम से जा रहे हैं या किसी पिकनिक पर?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिलती है. इतना असरकारी, इतना आसान गर्भ-निरोधक जिसपर अब मुझे पूरा विश्वास है.

यह एक छोटा, अंडाकार टेब्यूल है जिसे जब भी सुरक्षा चाहिए उससे १० मिनट पहले अपने शरीर में सरकाना होता है. ये काम बिल्कुल अकेले में आसानी से किया जा सकता है. इसका प्रभाव जो लगभग एक घंटे तक रहता है, अन्य गर्भ-निरोधकों की तुलना में सबसे अधिक - ९९% से अधिक आंका गया है.

आप जब खुद अंधकार में हों तो सही गर्भ-निरोधक को कैसे चुन सकेंगी ?

मेरी सहेलियाँ मुझे अक्सर चिढ़ाती हैं. 'टुडे' के बारे में मेरे उत्साह की कोई कल्पना भी नहीं कर सकता, वे कहती हैं. जब भी किसी मासूम सी नज़र आने वाली औरत से चहक कर बात करते वे मुझे देखती हैं तब सभी की आँखों में शरारती हँसी तैरने लगती है.

लेकिन इससे मेरे उत्साह में कोई फ़र्क नहीं पड़ा. मेरे लिए सबसे ज़रूरी तो यही था कि इन युवा नारियों के चेहरे पर मुस्कान रहे. वे गर्भ-निरोध के सही तरीके जानें. मेरे तजुर्बे को सुनकर वो भी सही गर्भ-निरोधक का फ़ायदा उठाएं.

मैंने देखा अधिकतर औरतें सही गर्भ-निरोधक की तलाश में परम्परागत तरीकों में ही उलझी रह जाती हैं. उनकी अच्छाई-बुराई की चर्चा किए बिना मैं तो सिर्फ़ एक तरीक के बारे में बात करना चाहती हूँ जिसने मेरे जीवन को ही पूरी तरह बदल डाला.

जब तक मैंने टुडे का इस्तेमाल नहीं किया, मैं जानती ही नहीं थी कि ऐसी चीज़ भी भारत में

और आफ़्टर इफ़ैक्ट? टुडे के सिर्फ़ दो ही आफ़्टर इफ़ैक्ट देखे मैंने - मेरे चेहरे की मुस्कान, और इसके बारे में बात करने का जोश!

टुडे नारी का अपना निजी गर्भनिरोधक

गर्भ-निरोध पर मुफ्त पुस्तिका के लिए कूपन यहाँ लिखिए.
क्लिनिकल कैमिकल्स एण्ड फार्मास्यूटिकल्स इंडिया लिमिटेड
फ़ाउन्टेन हाउस एनेक्सी, मरोल,
अंधेरी (पू.), बंबई ५९.

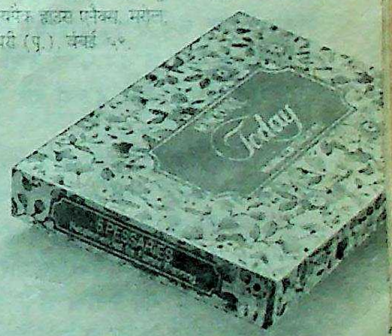

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शमशाद ने बहस पर पूर्णविराम लगाते हुए कहा, "बस, अब आखिरी बार सुन लो. मुझे जाना है और जरूर जाना है."

यासमीन चुप हो गई क्योंकि उलझना बेकार था.

सुबह उठते ही शमशाद ने जाने की तैयारी कर ली. स्कूटर में पेट्रोल पहले ही डलवा लिया था. अच्छे कपड़े पहने. उसे पूरा यकीन था कि कोई उसे नहीं छेड़ेगा. मौका पड़ने पर अपने मुसलमान होने का भी इजहार करेगा. मुसलमानों को होली के दिन कोई नहीं रंगता, जब तक कि वे स्वयं न चाहें.

सड़क पर दो तीन किलोमीटर आगे कुछ शैतान लड़कों ने काफी चिकना तेल फैला दिया था ताकि तेजी से आनेजाने वाले फिसल कर गिर पड़े और उन सब का मनोरंजन करें.

यहां तक शमशाद सकुशल चला आया था. रंग फेंकने वालों का गुट देख कर उस ने स्कूटर का ऐक्सीलेटर दबा दिया. तेल की चिकनाई से स्कूटर संभाल न पाया और स्कूटर समेत शमशाद फिसल कर दूर गिर पड़ा. अचानक वह चेतना खो बैठा. टांग की हड्डी टूट गई थी और कमर में भी काफी चोट आई थी. शैतानी करने वाले दुर्घटना देख कर भाग लिए.

कुछ समय बाद पुलिस की निगरानी करने वाली जीप सायरन बजाते हुए आई. घायल शमशाद को उठा कर हस्पताल पहुंचा दिया. जेब में पड़े ड्राइविंग लाइसेंस से पता मालूम कर के घर पर इत्तला भेज दी. यासमीन घबरा कर बच्चों को छोड़ कर भागी.

एक्सरे के बाद हड्डी जोड़ कर प्लास्टर चढ़ा दिया गया. हस्पताल व परिचर्या का बहुत खर्चा हुआ. घर में इतना रुपया नहीं था. शमशाद ने बताया कि उस की चैक बुक दफ्तर की मेज की दराज में है. यासमीन दफ्तर गई और आज्ञा ले कर चैक बुक की दराज में तलाश की. चेक बुक के साथ एक लिफाफे में उस ने कई खुशबू से महकते खत भी देखे. एकदो पढ़े. पहले तो क्रोध की लकीरें उभर आईं, पर बाद में मुसकरा कर रह गई. आखिर राज कब तक राज रहता?

इलाज के बाद जब शमशाद चलनेफिरने लायक हो गया तो उसे घर जाने की आज्ञा मिल गई.

शमशाद आधे उठे प्लास्टर वाली टांग पसार कर आराम से पीछे तकिया लगा कर बैठा था.

"लीजिए, गरमगरम खीर नौश फरमाइए." यासमीन ने खीर का कटोरा पकड़ाते हुए कहा.

"वाह, क्या खुशबू है?" शमशाद ने सूंघते हुए कहा, "क्या डाला है?"

लोकतंत्र

लोकतंत्र लोककर्तव्य के निर्वाह का एक साधन मात्र है. साधन की प्रभावक्षमता लोक जीवन के राष्ट्र के प्रति एकात्मकता, अपने उत्तरदायित्व का भान तथा अनुशासन पर निर्भर है. —दीनदयाल उपाध्याय

"यह विदेशी आयातित खुशबू है." यासमीन हंसी.

"क्या मतलब?"

"आप के कुछ खत पढ़ने के लिए माफी चाहती हूं... वही मैं ने चूल्हे के पास रख दिए थे. यह उन्हीं खतों की खुशबू है. जरा अच्छी तरह सूंघिए, पहचान जाएंगे."

शमशाद के दिमाग में बिजली सी कौंध गई. सारा माजरा समझ गया. अब राज खुल गया था. मासूमियत का नकाब अधिक दिन नहीं पहने रह सकता था.

वह आंखें नीची कर के बोला, "बहुत शर्मिंदा हूं. क्या माफ नहीं करोगी? अब दोबारा गलती नहीं होगी."

यासमीन ने हंस कर कहा, "मियां, अब जो हो ली, सो हो ली... आगे मौका दूंगी तब न?" ●

सरिता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बेटीबहन पर अत्याचार

मायके वाले क्या करें?

लेख • जगदीश चावला

उस दिन सुनंदा की ससुराल में किसी घरेलू बात को ले कर जो कहासुनी हुई, उस में सुनंदा की सास ने आवेश में आ कर उसे काफी खरीखोटी बातें कह सुनाईं.

'शाम को सुनंदा के पति जब घर लौटे तो वह भी बिना मतलब उस से उलझ पड़े. इसी बीच उन्होंने तैश में आ कर सुनंदा को दोचार चांटे भी जड़ दिए. सुनंदा ने तत्काल ही यह सारी व्यथा कथा एक पत्र में अपने पिता को लिख भेजी और साथ ही यह भी लिख दिया, 'पिताजी, अपनी गऊ सरीखी बेटी को इन कसाइयों के हवाले करने से पहले इन का आचरण तो देख लिया होता. अब यदि इस बूचड़खाने से आप अपनी बेटी को नहीं निकालेंगे तो यहां उस की हत्या या आत्महत्या अवश्यंभावी है.'

बेटी की चिट्ठी पढ़ कर पिता तो अपना माथा पकड़ कर रह गए. मगर सुनंदा का भाई उस के ससुराल वालों को गालियां देता हुआ आगबबूला हो उठा. बिना किसी सोचविचार के वह उसी शाम सुनंदा के ससुराल जा पहुंचा और उन सब से लड़झगड़ कर बहन को अपने साथ ले आया.

सुनंदा के पति को यह कृत्य सहन नहीं हुआ. उस ने इसे अपना अपमान समझा और कुछ दिन पश्चात उस ने सुनंदा को तलाक का नोटिस भिजवा दिया.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ससुराल में यदि आप की बहनबेटी पर कुछ अत्याचार हो भी रहा हो तो एकाएक जोश में आ कर कोई निर्णय मत लीजिए. हो सकता है कि आप की जल्दबाजी से मामला सुलझने की बजाए और उलझ जाए तथा आप को व आप की बहनबेटी को सारी उम्र पछताना पड़े.

सुनंदा को अपने पति से इस तरह के व्यवहार की अपेक्षा हरगिज नहीं थी. मायके वाले भी यदि संयम और समझदारी से काम लेते तो दो प्राणियों की गृहस्थी टूटने से बच सकती थी. लेकिन यहां तो हर किसी पर आवेश और उत्तेजना सवार थी. अतः मायके वालों की जिद के सामने सुनंदा को संबंधविच्छेद का निर्णय मानना ही पड़ा.

पहलेपहल तो मायके वालों ने भी सुनंदा के प्रति काफी सहानुभूति जताई. मगर बाद में उन का रुख भी निरंतर बदलता चला गया. ऐसे में सुनंदा अब जब यह कहती है कि मायके में तलाकशुदा बेटी की अपनी कोई हैसियत नहीं होती, बल्कि उसे तो हमेशा घर वालों की दया और सहानुभूति के आश्रित हो कर ही जीना पड़ता है तो लगता है कि वह भीतर से कहीं बहुत गहरे टूट चुकी है.

इस में कोई शक नहीं कि बेटीबहन पर ससुराल वालों के अत्याचार की भनक जब उस के मायके वालों को मिलती है तो वे अंदर ही अंदर काफी विचलित हो उठते हैं. परंतु ऐसे में वास्तविकता को जाने और समझे बिना जितना ससुराल वालों को दोषी मान लेना गलत है, उतना ही अपनी बेटी को निर्दोष समझना भी अनुचित है. ससुराल में बेटीबहन के सुखी रहने की कामना करने वाले अनुभवी मातापिता जराजरा सी बात पर विचलित नहीं होते और न ही एकदूसरे पर दोषारोपण कर के रिश्तों की मधुरता और आत्मीयता को समाप्त करते हैं.

यह ठीक है कि जब बेटी अथवा बहन को ससुराल में वांछित सुख या सम्मान नहीं मिलता तो वह दुख के आंसू बहाती है और मांबाप या भैयाभाभी से मायके बुला लेने को कहती है. ऐसे में मातापिता पर क्या बीतती है? इस की कल्पना करना भी कठिन है. 'परित्यक्ता' का विशेषण जुड़ने से समाज किसी लड़की को अच्छी नजर से नहीं देखता, पर केवल इसी लांछन के कारण कोई भी मांबाप या भाई अपनी बेटी व बहन को अत्याचार सहने के लिए उस की ससुराल में नहीं छोड़ सकते.

आजकल लड़की को ससुराल में परेशान किए जाने का मुख्य कारण दहेज बताना तो फैशन की तरह इस्तेमाल होने लगा है. दहेज का बहाना इसलिए आसान और स्वाभाविक है कि यह अब घरघर का रोना है, परंतु ऐसी हर घटना ससुराल में सामंजस्य न बैठा पाने के लिए सिर्फ दहेज के आरोपों से नहीं जुड़ी होती. कहींकहीं पर तो लड़की भी कसूरवार होती है.

लड़की यदि ससुराल की परंपराओं की अवहेलना करे, उन्हें वांछित सम्मान न दे, हर समय अपने मायके वालों की ही डींगें हांकती रहे, या घर के कामकाज में भी नकचढ़ी बन कर रहे, तो भला ऐसी लड़की को पति व उस के परिवार के सदस्य कब तक प्यार से अपने सिरमाथे पर बैठाए रखेंगे? जहां पत्नी खुद को महारानी और सास को मेहतरानी समझ लेने की गलती करती है, वहां तो सासबहू के आपसी सामंजस्य को समाप्त होते तनिक देर नहीं लगती.

प्रायः देखा गया है कि कई लड़कियां जब अपनी ससुराल में उचित सामंजस्य स्थापित नहीं कर पातीं तो वे ससुराल वालों की छोटीमोटी तानेबाजी को भी अत्याचार मान बैठती हैं और मायके में पहुंचते ही ससुराल की निंदा करनी शुरू कर देती हैं. इस से बात बिगड़ जाती है और बिगड़ी हुई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संबंधों को टूटने से बचाने के लिए गुस्से से काम न लें बल्कि प्यार से समझाबुझा कर स्थिति को संभालें.

बात बहुत कम संवरती है.

उस दिन नीहारिका ने अपनी मां के आगे अपनी सास की ज्यादतियों का जरा सा जिक्र किया तो उस की मां ने उसे ही डांटते हुए सीख दी कि शादी के बाद बेटी पर मायके वालों का उतना अधिकार नहीं रहता, जितना कि बहू पर ससुराल वालों का होता है. अब साससुर ही तुम्हारे वास्तविक मातापिता हैं. उन से लड़झगड़ कर आओगी तो यहां मायके में भी तुम्हारे आंसू पोंछने वाला कोई नहीं होगा?

मां की पिलाई हुई इस कड़वी लेकिन लाभकारी घुट्टी ने नीहारिका को काफी कुछ सहनेसुनने का आधार प्रदान किया. अब वह कभी यह शिकायत नहीं करती कि ससुराल में उसे कोई तंग करता है. उस ने अपनी मां की दी हुई सीख को हमेशा के लिए अपनी गांठ में बांध कर रखा हुआ है.

समझदार मांबाप बेटी का दुख जान कर भी उस के गृहस्थ जीवन में हस्तक्षेप नहीं करते. क्योंकि वे समझते हैं कि ऐसा करने से बात का बतंगड़ ही नहीं बनता, बल्कि इस के साथसाथ और भी कई तरह के बखेड़े खड़े हो जाते हैं. हाथापाई और मारपीट से ले कर कचहरी तक की नौबत भी आ सकती है. जहां तक बन सके ऐसे नाजुक मामलों में हमेशा संयम और समझदारी से ही काम लेना चाहिए.

बेटी व बहन की किसी समस्या में यदि मामला गंभीर हो तो भी ठंडे मन से समस्या को सुलझाना ज्यादा बेहतर होता है. उत्तेजना और आवेश दिखाने या अनावश्यक हस्तक्षेप करने से कई बार बनती बात भी बिगड़ जाती है और ऐसे में दुख और पछतावे के अतिरिक्त और कुछ भी हासिल नहीं होता. पानी यदि सिर से ऊपर जाता भी दिखाई दे तो भी यह कहना ठीक नहीं है कि हम अपनी बेटी अथवा बहन को पाल लेंगे. पालने की बात कहना जितनी सरल है, इसे निभाना उतना ही कठिन है.

उस दिन शिवकुमार जब बहन की ससुराल से अपने घर लौटा तो उस का मन बड़ा बोझिल था. वहां सभी लोग उस की बहन को बातबेबात अपमानित करने के आदी हो चुके थे. बहन ने भी रोरो कर शिवकुमार को बताया कि अब और सहने की क्षमता उस में नहीं है.

उस समय तो शिवकुमार जैसेतैसे अपनी बहन को समझाबुझा कर लौट आया. मगर जब दोबारा उस की बहन ने कहा कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह शीघ्र ही ससुराल छोड़ कर मायके आने वाली है तो वह और भी चिंतित हो गया.

उस ने अपनी यह चिंता एक वकील मित्र कंचनकुमार को बताई तो कंचनकुमार ने उसे समझाया कि उचित तो यही है कि तुम अपनी बहन के मामले में केवल भावुकता से काम मत लो. ससुराल के मामले में हस्तक्षेप करने से वे लोग इस का बुरा भी मान सकते हैं और कहींकहीं इसे चुनौती भी समझ सकते हैं. अतः हस्तक्षेप करने से तटस्थ रहना ज्यादा अच्छा है. हां, यदि ससुराल वाले सचमुच ही बहुत बुरे हों और वे लड़की पर मानसिक अत्याचारों के साथसाथ शारीरिक अत्याचार भी करते हों तो फिर ऐसे में लड़की को मायके बुला लेना ही ज्यादा सुरक्षित उपाय है.

वैसे इस तरह के अत्याचारों की रिपोर्ट पुलिस में भी की जा सकती है. और यदि मामले को न सुलझा कर पतिपत्नी में तलाक की नौबत आ जाए तो ऐसी अवस्था में शादी के एक साल तक तो तलाक हो ही नहीं सकता. इस के पश्चात पहले अदालत दोनों को एक वर्ष का 'जूडिशिअल सेपरेशन' (न्यायिक तौर पर अलग रहने की आज्ञा) का आदेश देती है. इस अवधि के बीच भी यदि पतिपत्नी में समझौता न हो तो हिंदू विवाह कानून की धारा 10 के अंतर्गत तलाक का दिया गया आवेदन मंजूर हो सकता है.

मगर तलाक की प्रक्रिया काफी जटिल होती है. केवल सताने की बात कहने भर से ही तलाक नहीं मिल जाता. इस के लिए सभी आवश्यक साक्ष्य जुटाने पड़ते हैं. झूठेसच्चे आरोप भी लगाने पड़ते हैं. अदालती प्रक्रिया में पैसे व समय की बरबादी भी होती है और तलाक के बाद नारी से जुड़ी विभीषिका तो सभी जानते हैं कि तलाकशुदा औरत यदि दूसरी शादी न करे तो उसे अपने पति की आय का तीसरा हिस्सा ही मिल सकता है.

वैसे तलाकशुदा औरतों की दूसरी शादी भी आसानी से नहीं हो पाती. हां, यदि यह लगे कि ससुराल में बेटी व बहन के जीवन को सचमुच कोई खतरा है तो ऐसे में उसे मायके ले आना भी कोई अपराध नहीं है. बेटी ससुराल वालों की रजामंदी से आए तो संबंध जल्दी नहीं टूटते और अगर संबंध तोड़ कर लाई जाए तो उस की जिम्मेदारी अतिरिक्त रूप से निभानी पड़ती है.

कंचनकुमार की बातों को सुन कर शिवकुमार के मातापिता अपनी बेटी की ससुराल पहुंचे और उन की रजामंदी से बेटी को घर ले आए. यहां उन्होंने अपनी बेटी को ससुराल संबंधों की सारी ऊंचनीच समझाई और एक दिन दामाद को भी आदरसत्कार के साथ खाने पर आमंत्रित किया.

खाना खा चुकने के बाद शिवकुमार ने अपने जीजा से कहा, "जीजाजी, मेरी बहन अभी उम्र और अनुभव में बहुत छोटी है. हम भी आप जैसे सुलझे हुए जीजा के सामने कुछ कहने की हैसियत नहीं रखते. मगर आप पर अपना पूरा अधिकार समझते हुए आज आप से यही विनती करते हैं कि यदि आप के घर में हमारी बहन से जानेअनजाने कोई गलती हो जाए तो उस की सजा सिर्फ इसे ही मत दीजिए, बल्कि हम सब को भी दीजिएगा. आखिर हम भी आप के कुछ लगते हैं..."

साले के मुंह से आत्मीयता भरे ये मीठे शब्द सुन कर जीजाजी पानीपानी हो गए. वे गिलेशिकवे भूल कर अपनी पत्नी की ओर देखने लगे, जो पहले से ही उन के सामने सिर झुकाए खड़ी थी.

आज शिवकुमार की बहन अपनी ससुराल में हर तरह से खुश है. बेटी व बहन के ससुराल और मायके वालों के आपसी संबंध काफी नाजुक होते हैं. अतः ऐसे नाजुक संबंधों को बेवजह की दखलअंदाजी से एक ही झटके में तोड़ देना कोई अक्लमंदी नहीं होती. उचित तो यही रहता है कि वस्तुस्थिति का सहीसही पता लगा कर तटस्थ ही रहा जाए. यदि ऐसे संभव न हो तो किसी ऐसे व्यक्ति को मध्यस्थ बना कर सारी बात समझानी चाहिए जो दोनों परिवारों की मानमर्यादा को सुरक्षित रखता हुआ बिगड़ी बात को संवारने और संभालने की क्षमता रखता हो. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पत्नियां झूठ क्यों बोलती हैं?

लेख ● प्रभा शर्मा

वैभव अपूर्वा को उस के दफ्तर से ले कर घर आ रहा था. अपूर्वा ने रास्ते में कई बार वैभव से बात की पर उस ने जवाब नहीं दिया. घर पहुंच कर अपूर्वा ने सहज भाव से पूछा, "क्या बात है, तबीयत ठीक नहीं है क्या? मैं अभी चाय बना कर लाती हूं."

वैभव ने आक्रोशपूर्ण तेज स्वर में कहा, "चायवाय नहीं पीनी मुझे, मेरी बात का सही उत्तर दो. तुम कल दफ्तर से कहां गई थी?"

अपूर्वा संभल गई, संयत स्वर में बोली, "कनाट प्लेस में सेल लगी थी सो सहेलियों के साथ दोपहर की छुट्टी में चली गई थी. क्यों क्या हुआ?"

वैभव की त्योरियां तन गईं. उस ने कहा, "बस कनाट प्लेस या और कहीं?"

अपूर्वा ने कहा, "देखो इस तरह की बातें मुझे पसंद नहीं. मैं कपड़े बदल कर आती हूं. तुम भी बदल लो."

वैभव चिल्लाया, "ऐसे कैसे चली जाओगी, सचसच कहो, तुम अपनी मां के यहां नहीं गई थी क्या?".

अपूर्वा समझ गई कि वैभव को कहीं से उस के मायके जाने की खबर लग गई है और अधिक छिपाने से लाभ नहीं. वह जानती थी कि वैभव को उस का मायके जाना बिलकुल पसंद नहीं है. मां का फोन आया था कि पिताजी की तबीयत खराब है पर यदि वैभव को बताती तो भी वह यही कहता कि यह सब बहाना है और तुम जा कर क्या

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या आप भी अपनी पत्नी के झूठ बोलने से परेशान हैं? जरा देखिए, कहीं आप का व्यवहार ही तो इस का कारण नहीं. कारण का निवारण कीजिए, झूठ सच में बदल जाएगा.

करोगी, तुम डाक्टर तो हो नहीं.

वैभव चिल्लाया, "क्यों अब चुप क्यों हो गई? चोरी पकड़ी गई इसलिए? तुम क्या सोचती हो, तुम दफ्तर से कहीं जाओगी और मुझे पता नहीं लगेगा?"

अपूर्वा ने पर्स रखा और बोली, "पिताजी बीमार हैं, देखने गई थी." वैभव चिल्लाया, "आज आखिरी बार कहे देता हूं, मुझे तुम्हारा इस तरह घूमना पसंद नहीं, अब कभी ऐसा हुआ तो देख लेना." अपूर्वा भीतर चली गई.

सवाल आत्मसम्मान का हो या परेशानी से बचने का, कई बार चाहेअनचाहे झूठ का सहारा लेना पड़ जाता है. गृहस्थी में शांति रखने के लिए या अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिए यदाकदा किसी को झूठ बोलना पड़ सकता है. यह सभी जानते हैं कि सत्य की समता किसी से नहीं की जा सकती परंतु कई बार व्यावहारिक जीवन में यह सत्य की महानता इतनी महंगी पड़ती है कि बोलने वाले को उसे झेलना कठिन हो जाता है. घरेलू पत्नी के सामने अनेक आर्थिक कठिनाइयां आती हैं. ऐसे में पति द्वारा भावनात्मक दबाव व आर्थिक तनाव के कारण कई बार पत्नियां झूठ का सहारा लेने को बाध्य हो जाती हैं.

रमेश अपना वेतन महीने के शुरू में ही पत्नी राधा के हाथ में थमा देता था पर पत्नी को बिना पूछे दो रुपए भी खर्चने की अनुमति नहीं थी. रमेश का नन्हा बेटा शृंगार टाफी खाने के लिए भी तरसता. रमेश के दफ्तर जाने के बाद मां से बारबार जिद करता. मां क्या करती, मना कर देती. शृंगार भी थोड़ी देर रोधो कर शांत हो जाता. राधा कई बार रमेश से कह चुकी थी कि दुनिया के बच्चे टाफी चाकलेट खाते हैं, अपना बेटा बेचारा तरसता रहता है.

रमेश तुरंत चिल्लाने लगता, "कितनी बार कहा है बेकार की बात न किया करो. मेरे पास इतने रुपए नहीं जो फिजूल खर्चा करूं. भला कोई फायदा है इन चीजों का? पैसे खर्चो अलग, बीमारी मोल लो. तुम न जाने कैसी पढ़ीलिखी औरत हो जो चार साल के बच्चे को नहीं समझा सकती. अब इस बारे में मुझ से बात न करना."

राधा अपने बच्चे की छोटी सी इच्छा भी पूरी न कर सकने की असमर्थतता से बेचैन हो उठी. रोज के खर्च को उसे डायरी में नोट कर के रमेश को दिखाना पड़ता था. उस ने सब्जी के भाव बढ़ाचढ़ा कर लिखने शुरू कर दिए और इस तरह कुछ रुपए बचाए. बेटे को चाकलेट खिलाई और कहा "पिताजी को मत बताना नहीं तो नाराज होंगे."

इस प्रकार के छोटेछोटे झूठ बोलने के पीछे पति को प्रसन्न रखने की भावना ही होती है. पत्नी या तो सच बोल कर पति को नाराज नहीं करना चाहती या सच बोलने के बाद के परिणामों को टाल कर घर के वातावरण को तनाव से बचाती है.

पतिपत्नी जब एक दूसरे की भावनाओं का सम्मान नहीं कर पाते तो ऐसी अवस्था में किसी भी एक को झूठ का सहारा लेना पड़ता है. यह सच है कि कमजोर व्यक्ति ही इस तरह के झूठ का सहारा लेना पसंद करता है परंतु गृहस्थी चलाने के लिए तथा छोटीछोटी बातों के ताने सुनने से बचने के लिए भी कई बार स्त्रियां झूठ का सहारा लेती हैं. परंतु इस प्रकार झूठ बोलने का सारा दोष केवल पत्नियों पर नहीं मढ़ा जा सकता. प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से अनेक ऐसे कारण होते हैं जो उन्हें इस प्रकार के व्यवहार के लिए बाध्य करते हैं. परोक्ष रूप से वे अपने पति को किसी भी तरह नाराज नहीं करना चाहतीं, इसी लिए झूठ बोलती हैं.

जैनेंद्र भी इसी प्रकार के पति है. उन्हें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

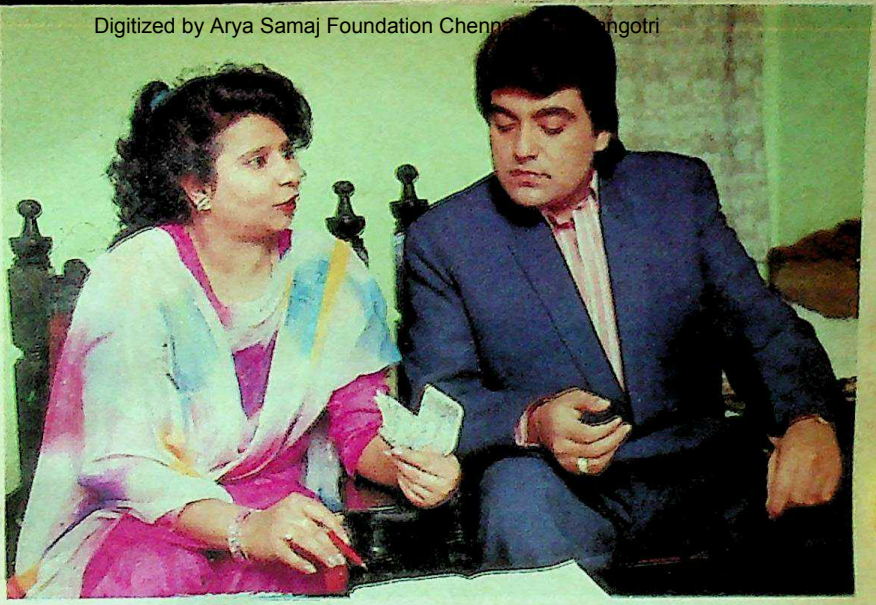

यह पसंद नहीं कि उन की पत्नी घर से बाहर निकले. उन का मानना था कि यदि उन की पत्नी नौकरी करे तो बहुत अच्छी नौकरी करे. आज के इस प्रतियोगिता के युग में अच्छे ओहदे मिलना सरल नहीं. जैनेंद्र अनेक प्रकार की आर्थिक कठिनाइयां झेलने के बाद भी नहीं चाहते थे कि उन की पत्नी कोई छोटी नौकरी करे.

पत्नी की अनेक छोटीछोटी इच्छाओं को पूरा करने में असमर्थ होने की हीन भावना को छिपाने के लिए उन्हें अपनी पत्नी आशा के मायके से अधिक उम्मीदें होने लगीं. कोई भी त्योहार होता तो वह आशा को ताने देते, "दीवाली पर क्या भेजा तुम्हारे पिताजी ने. उन्हें नहीं पता कि उन की बिटिया को नित नई साड़ी चाहिए."

आशा रोजरोज की झिकझिक से तंग आ गई. उस ने पति को बिना बताए पास ही चल रहे एक्सपोर्ट हाऊस से कढ़ाई के लिए कपड़े लाने शुरू कर दिए व खाली समय में कढ़ाई कर के तीनचार सौ मासिक कमाने लगी. उन्हीं रुपयों से अपनी पसंद की चीजें ला कर रख लेती व जैनेंद्र के पूछने पर कह देती "आज भैया आए थे, दे गए हैं या आज छोटी बहन आई थी, मां ने खरीद कर भेजी है."

नौकरों की तरह पत्नी से खर्च का हिसाब किताब पूछना उचित नहीं. गृहस्थी चलाने की जिम्मेदारी उन्हीं पर छोड़ दीजिए, उन्हें झूठ बोलने की जरूरत नहीं पड़ेगी.

कुछ पति अपनी पत्नियों के लिए रूढ़िवादी ही बने रहना चाहते हैं. समाज चाहे कितनी ही तरक्की क्यों न कर चुका हो, वे अपने लिए कितने ही आधुनिक क्यों न हों, परंतु जहां उन की पत्नी की बात आए वे दुनिया के सबसे बड़े दकियानूस बन बैठते हैं. इस श्रेणी के पति अपनी पत्नियों पर तरह तरह की पाबंदी लगाते हैं. इस प्रकार की पाबंदियां कई बार समाज में उपहास का कारण बनती हैं. कोई भी व्यक्ति अपनी सामाजिक स्थिति उपहासजनक बनाना पसंद नहीं करेगा. ऐसी विकट स्थिति में कई बार कामकाजी पत्नी को झूठ का सहारा लेना पड़ता है.

शहला का नौकरी करना उस के ससुराल में किसी को भी पसंद नहीं. कई बार दफ्तर में पार्टी होती या पिकनिक का कोई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कार्यक्रम बनता, सभी सहेलियां मनोरंजन करतीं परंतु शहला को मन मार कर रह जाना पड़ता. धीरेधीरे सारा दफ्तर जान गया कि उसे इस तरह बाहर घूमने की इजाजत नहीं. शहला स्वयं भी बहुत हीन अनुभव करने लगी.

इस बार स्टाफ क्लब की पिकनिक का कार्यक्रम बना. शहला ने भी मन ही मन फैसला कर लिया था कि वह अवश्य पिकनिक पर जाएगी. उस ने पिकनिक वाले दिन कह दिया कि आफिस में काम अधिक है घर आने में थोड़ी देर हो सकती है. शहला ने भी अपनी सहेलियों के साथ पिकनिक का आनंद लिया. अब धीरेधीरे शहला को जब भी कहीं जाना हो, वह इस तरह के बहाने बना देती.

निष्कर्ष यह निकलता है कि यदि पतिपत्नी के संबंधों में प्रेम व आपसी तालमेल असंतुलित हो गया है तो किसी को भी इस प्रकार के व्यवहार का सहारा लेना पड़ सकता है. इस का तात्पर्य यह नहीं है कि ऐसा व्यवहार उचित है. दांपत्य का सही सुख तो आपसी खुलेपन में ही है. यदि पतिपत्नी एकदूसरे की भावनाओं व समस्याओं को समझें तथा उन्हें दूसरों की नजरों में उपहास के पात्र बनाने पर न तुले हों तो परस्पर व्यवहार में सावधानी व जागरूकता बरतनी चाहिए. ऐसी स्थितियों को उत्पन्न ही नहीं होने देना चाहिए जिस से किसी को असत्य का सहारा लेना पड़े. ●

आओ प्रिये

आओ प्रिये, हम एक दूजे को रंग लें
रंगरंगीले फागुन के संग हंस लें.

मन में उमंगें
तन में तरंगे
सांसों में सुगंध फागुन की
अधरों पे तराने अधरों से
आओ प्रिये, हम लिख लें
रंगरंगीले फागुन के संग हंस लें.

रंग बरसाती
गंध बरसाती
छाई हैं बहारें फागुन की
मधु छलकता यौवन से
आओ प्रिये, हम पी लें
रंगरंगीले फागुन के संग हंस लें.

रात चांदनी
देह फागुनी
आई अंगड़ाई फागुन की
दो पल बहके मौसम से
आओ प्रिये, चुरा लें
रंगरंगीले फागुन के संग हंस लें
आओ प्रिये, हम एक दूजे को रंग लें.

—राधेश्याम मित्तल

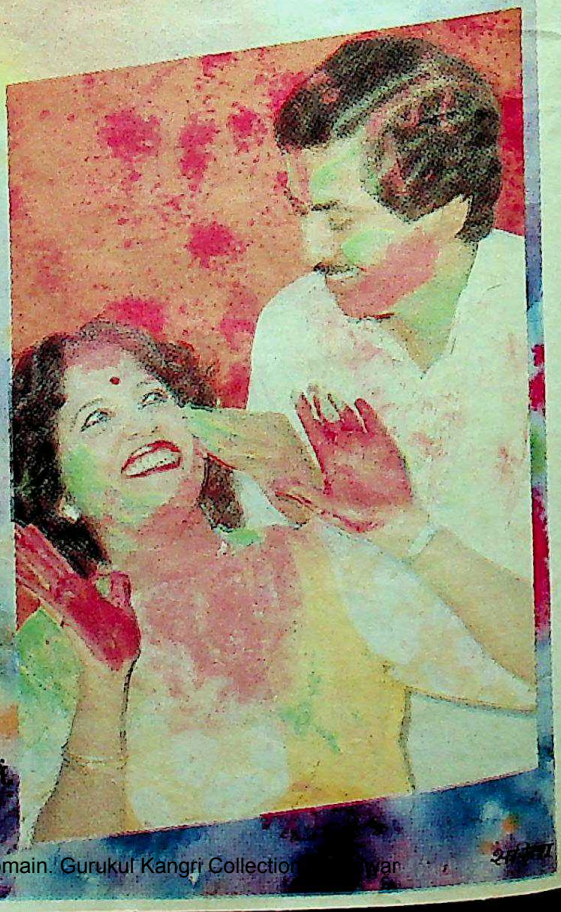

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मातापिता द्वारा उपेक्षा का व्यवहार: स्थिति चिंताजनक

लेख ● संगीता मोदी

अरे राजा बड़ी आज तुम कालिज नहीं गई?"

"नहीं पिताजी, जब तक मेरी नई ड्रेस नहीं आ जाती मैं कालिज तो क्या कहीं नहीं जाऊंगी."

"अच्छा बाबा आज तुम्हें नई ड्रेस ला देंगे."

"तो ठीक है... हम भी कल कालिज चले जाएंगे." रीना ने उसी अंदाज में कहा.

और उस के पिता तो ऐसे खुश हो रहे थे मानो रीना की हर जिद को पूरा करना ही उन के जीवन का लक्ष्य हो.

इतने में ही रीना की बड़ी बहन मीना अंदर आई, "अम्मां, हमारे कालिज वाले पिकनिक पर ले जा रहे हैं और केवल 25 रुपए में. मैं भी चली जाऊं?"

"क्या जरूरत है बेकार पैसे खर्च करने की?" अम्मां ने लापरवाही से कहा.

"जाने दो न अम्मां, मान भी जाओ. मैं तो अपनी सहेलियों से भी कह आई हूं."

"मुझे नहीं मालूम, अपने पिताजी से पूछ ले."

आगे मीना की हिम्मत नहीं हुई. पिताजी से पूछने का अर्थ वह अच्छी तरह जानती थी.

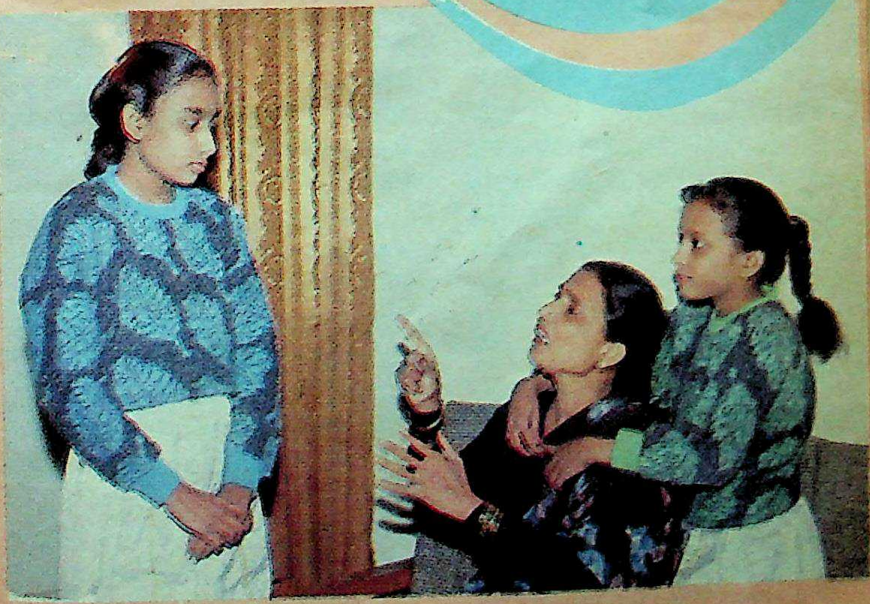

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कई बार मातापिता के चाहते हुए भी बच्चों के बीच पक्षपातपूर्ण व्यवहार करते हैं. हालांकि इस तरह के व्यवहार के पीछे कुछ ऐसा आधार होता है जो सिर्फ मातापिता के नजरिए से सही होता है लेकिन बच्चों के लिए यह बहुत दुखदायी होता है.

मीना ने बड़बड़ाना शुरू किया, "मुझे ही मना कर देती हो. रीना को कुछ नहीं कहती. वह भी तो परसों ही चार दिन की पिकनिक के बाद लौटी है."

"उस पर मत जल. उस की बराबरी तो तू कभी नहीं कर सकती." अंदर से पिताजी ने बोलना शुरू किया, "खबरदार जो रीना के खिलाफ कुछ बोली. मैं उस के लिए एक शब्द भी नहीं सुन सकता."

बेचारी मीना अंदर तक कुढ़ कर रह गई. यह कोई पहली बार नहीं हुआ था पर मीना समझ नहीं पाती थी कि ऐसा क्यों होता है और वह शाम उसने रोरो कर निकाली थी.

उपर्युक्त वार्त्तालाप पढ़ कर आप सोच रहे होंगे कि ऐसा व्यवहार तो सौतेले मांबाप ही कर सकते हैं. लेकिन यकीन मानिए, यह कहानी एक ही परिवार या यों कहिए कि एक ही खून की है. हां, यह बात अलग है कि इस के पीछे जो गलत धारणा है वह 20 वर्ष पुरानी है. जी हां, 20 वर्ष पुरानी.

मीना के जन्म देते ही किन्हीं कारणों से उस के पिता की नौकरी छूट गई तब से वह अपनी उस हालत का जिम्मेदार इस मासूम को मानते हैं. दो वर्ष तक वह बेरोजगार रहे और रीना के जन्म लेते ही इत्तफाक से उन्हें नई नौकरी मिल गई जिस पर वह आज तक टिके हैं. तब से उन्हें लगता है कि अगर रीना न होती तो वे लोग भूखों मर जाते. यही कारण है कि एक ही घर में रहने वाले दो बच्चों के प्रति अलगअलग ढंग का व्यवहार किया जाता है.

मातापिता द्वारा किया गया उपेक्षा का व्यवहार बच्चे के मन पर इस कदर हावी हो जाता है कि उस के सोचनेसमझने की शक्ति क्षीण हो जाती है. वह प्यार पाने की तलाश में इधरउधर भटकने लगता है और कई बार तो मानसिक रूप से अविकसित ही रह जाता है.

अभी कुछ दिन पहले अनुराधा के यहां जाना हुआ तो यही अंतर देखने को मिला. मधु के बारे में पूछा तो जवाब मिला, "पड़ी है कोपभवन में मुंह फुलाए."

मैं ने कहा, "कुछ तो बताओ." तो बोलीं, "खुद ही जा कर पूछ लो."

अंदर गई तो मुझे देखते ही मधु रो पड़ी. जब ढांढ़स बंधा कर पूछा तो बोली, "क्या बताऊं दीदी, कुछ भी तो बात नहीं है. जब मैं ने कहा कि एम.ए. करना चाहती हूं तो मां ने मना कर दिया. मां ने कहा कि आगे नहीं पढ़ा सकती. मैं ने बस यही कहा कि तुम हां कर दो, मैं टयूशन कर के पढ़ लूंगी तो बस तूफान मच गया, कोई भी ठीक से बात ही नहीं करता."

मैं ने समझाया, "चलो छोड़ो, यों ही गुस्से में कह दिया होगा?" इस पर मधु बोली, "मुझ पर ही क्यों गुस्सा करती हैं? आशु को तो कभी नहीं कहा. उसे तो होस्टल में रह कर पढ़ने की इजाजत है पर उसे क्यों कहेंगी... वह तो लाड़ली है न?"

वैसे यह बात तो मैं भी जानती हूं कि अनुराधा आशु को ज्यादा चाहती है. वह हमेशा उस की हां में हां मिलाती है. मधु ठहरी अलग खयालों की. गलत को गलत कहने में हिचकती नहीं. उस का कहना है कि उसे ऐसी शिक्षा ही क्यों दी गई कि न तो गलत कहना है और न ही सहना है. खैर. यह ठहरा उन का घरेलू झगड़ा. अतः मैं चुपचाप वहां से चली आई.

अकसर देखने में आता है कि इस उपेक्षा का शिकार लड़कियां अधिक होती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने बच्चों को एकसमान प्यार दें अन्यथा उपेक्षित बच्चा उस प्यार की पूर्ति करने के चक्कर में भटक सकता है.

हैं. इस का मुख्य कारण उन का अपनी मां के संपर्क में अधिक रहना भी हो सकता है. इस के अलावा यह कटु सत्य है कि मानव प्रवृत्ति ही ऐसी है कि व्यक्ति अपने को मिलने वाले प्यार में कमी या मिलावट बरदाश्त नहीं कर सकता और बच्चे खासतौर पर यह अनुभव जल्दी ही कर लेते हैं.

आइए अब कुछ ऐसे कारणों पर गौर करें जो मातापिता को ऐसा व्यवहार करने पर बाध्य करते हैं. कोई भी मातापिता चाह कर पक्षपात नहीं करता परंतु फिर भी किसी एक बच्चे के प्रति अधिक स्नेह होना स्वाभाविक है लेकिन इस का यह अर्थ कदापि नहीं होना चाहिए कि अन्य बच्चों की उपेक्षा की जाए. देखा जाए तो काफी हद तक हमारे दकियानूसी विचार ही इस भावना को जन्म देते हैं. बच्चे के जन्म पर किसी दुर्घटना का होना, पंडित की भविष्यवाणी को सर्वेसर्वा मान लेना अथवा ज्योतिषी द्वारा किसी बच्चे के ग्रह मांबाप पर भारी बताना कुछ ऐसी सामान्य बातें है जो बच्चे की जिंदगी तबाह कर देती हैं.

रामप्रसाद को किसी ने बताया कि उन का बेटा विक्की बड़ा हो कर उन की सेवा न कर सकेगा, बस तब से विक्की उन के लिए पराया हो गया. एक बार फेल होने पर आगे पढ़ाई के लिए खर्च देना बंद कर दिया. रूढिवादिता को महत्त्व देते उन्होंने बेटे की भावनाओं को कुचल दिया और उस के मार्ग में बाधक बन गए.

मुझे यह बात समझ नहीं आती कि पढ़ेलिखे मांबाप भी ऐसी दुखदायी भूलें क्यों करते हैं? क्यों भूल जाते हैं अपने फर्ज को? हमारे युवा इस समस्या का एक महत्त्वपूर्ण पक्ष हैं. युवावस्था में मिली उपेक्षा किसी भयानक भूल का कारण बन सकती है.

रमा को ही ले लीजिए. वह अपने मातापिता से कभी खुल कर बात नहीं करती, गुमसुम रहती है. मगर बाहर से आने वाले हर व्यक्ति के आगे सहज भाव से पेश आती है, खिलखिलाती है. घर वाले तो उस के चरित्र पर शक करने लगे हैं जबकि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

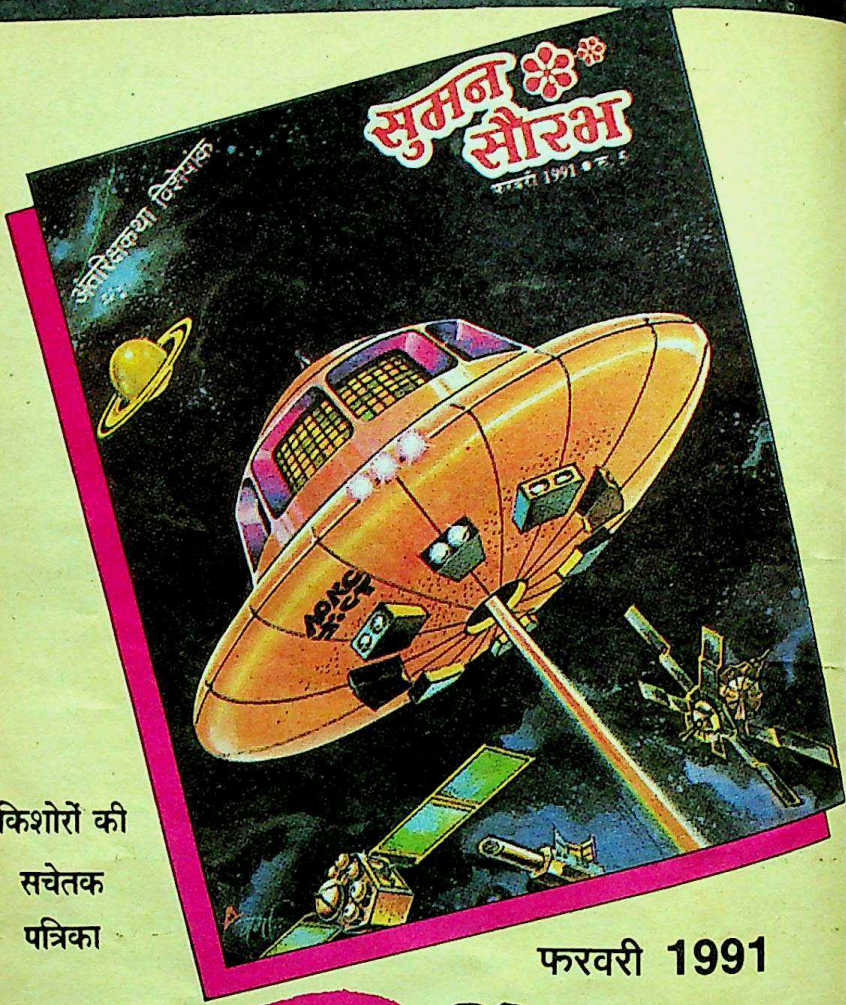

किशोरों की
सचेतक
पत्रिका

फरवरी 1991

सुमन सौरभ

अंतरिक्ष कथा विशेषांक

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुमन सौरभ

फरवरी 1991

अंतरिक्ष कथा विशेषांक

किशोरों के पूर्ण व्यक्तित्व निर्माण एवं विकास के लिए ज्ञानवर्धक लेख एवं रोचक कहानियां

प्रमुख आकर्षण

मनोरंजक कहानियां

- वह एक हादसा
- दूसरी दुनिया दूर है
- मानवता का महत्त्व
- ट्यूनिक के शैतान
- यंत्र मानव का बलिदान

मजेदार चित्रकथाएं

- आकाश गंगा के यात्री
- अनोखा चोर
- सुमितसुनीता
- टीपू

ज्ञानवर्धक लेख

- मंगल ग्रह की खोज में
- वायजर मिशन : सौर मंडल के खुलते रहस्य
- आइए आप को शुक्र ग्रह की सैर कराएं
- जहां विमानों और अंतरिक्ष यानों का इतिहास संगृहीत है

धारावाहिक उपन्यास

- गोपू और जोरावर की तीसरी किस्त

इसके अलावा अन्य रोचक लेख, कहानियां, मनभावन कविताएं एवं सभी स्थायी स्तंभ.

नमूने की प्रति मुफ्त मंगाने के लिए इस कूपन के साथ एक रुपए का डाक टिकट भेजें :

सुमन सौरभ

ई- 3, झंडेवाला एस्टेट,
रानी झांसी रोड,
नई दिल्ली- 110055

नाम _____

पता _____

पिन कोड. [ ][ ][ ][ ][ ][ ]

अपनी प्रति आज ही खरीदें.

...i Collection, Haridw...

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वास्तविकता यह है कि घर के तनावपूर्ण वातावरण में उसे जिस प्यार की कमी महसूस होती है उसी कमी को वह बाहर के लोगों में ढूंढ़ती है. ऐसे में अगर कभी वह गलत कदम उठा भी ले तो दोष उस का नहीं बल्कि उन परिस्थितियों का होगा, जिन में उस के कदम डगमगा गए.

इस व्यवहार की सब से बड़ी हानि यह है कि उपेक्षित व्यक्ति उपेक्षा करने वाले को कभी माफ नहीं करता. कई बार तो उस के मन में नफरत पनप जाती है. बच्चे हीन भावना से ग्रस्त हो जाते हैं. वे अपने उस भाई या बहन से चिढ़ने लगते हैं, जिसे ज्यादा प्यार मिल रहा होता है. कई बार उसे नुकसान पहुंचाने का प्रयत्न करते हैं. वे अपनी उपेक्षा का कारण उसे ही मान लेते हैं और बदला लेने की कोशिश करते हैं.

'एड्स' से भयंकर इस बीमारी को नियंत्रित करने का कोई उपाय न हो, ऐसी बात नहीं है परंतु योगदान तो मातापिता को ही देना होगा. किसी एक घटना को मन में जकड़े रहना और भूत की घटनाओं से भविष्य खराब कर देना कहां की समझदारी है? मातापिता को चाहिए कि वे अपने बच्चों

को अपनी दोनों आंखों के समान बराबर महत्त्व दें.

इस के अलावा बच्चों को अपने दिमाग से यह बात बिलकुल निकाल देनी चाहिए कि उस के प्रति उस के मातापिता का रवैया गलत है. कोई भी मातापिता स्वेच्छा से बच्चों में पक्षपात या भेदभाव नहीं करता. यदि किसी बच्चे को ऐसा लगता है तो उसे यह जानने का प्रयत्न करना चाहिए कि ऐसा क्यों हो रहा है. यकीनन उस में कोई कमी होगी या फिर उस के भाईबहन में कोई ऐसा गुण होगा जिस के कारण उसे यह उपेक्षा मिल रही है.

अपनी सूझबूझ से इस क्षेत्र में सराहनीय काम तो विक्की ने किया है. अपने दम पर भारतीय प्रशासनिक सेवा की परीक्षा पास कर के उस ने दिखा दिया कि वह रामप्रसाद का वही नालायक बेटा है जिस की पढ़ाई उन्होंने बीच में छुड़वा दी थी. अब उस के मातापिता अपनी गलती पर पछताते हैं व उस ज्योतिषी को कोसते हैं जिस ने उन के घरसंसार में तनाव पैदा कर दिया था. विक्की उन की खूब सेवा कर के पुरानी बातों को भुलाने की कोशिश कर रहा है.

मैं सारा दोष मातापिता को नहीं देती, बच्चा स्वयं काफी हद तक इस के लिए उत्तरदायी होता है. जिद्दी, क्रोधी व कहना न मानने वाले बच्चे इस उपेक्षा का शिकार अधिक होते हैं.

हर बच्चे को मांबाप के प्यार की छांव में पल कर बड़ा होने दिया जाना चाहिए, ताकि वह वैसा ही बन सके जैसा कि उसे बनना चाहिए. माली ही अगर अलगअलग पौधों में पक्षपात करेगा तो फूल कैसे खिल सकेंगे? बच्चे तो वे नन्हीं कलियां हैं जिन्हें खिल कर न केवल गुलशन बल्कि सारी दुनिया को महकाना है और एक माला का निर्माण कर यह दिखाना है कि वे एक जैसे इसलिए हुए क्योंकि उन्हें मातापिता का एक सा दुलार मिला और इस तरह वे कभी जुदा नहीं होंगे. •

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

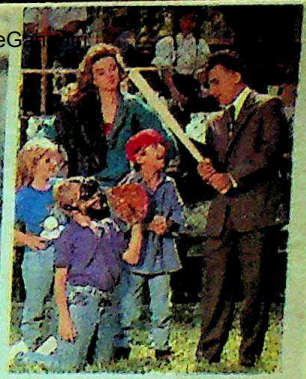

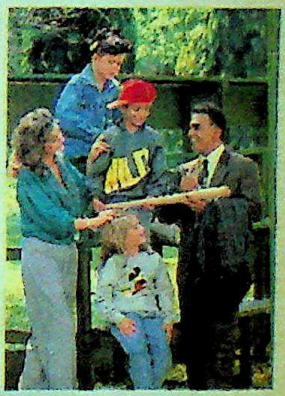

रसी • नूवो लूक • ट्रेंड सेटर • मैच मेकर सैटिन्स • हाय फैशन सूटिंग्स

dinesh

THE CHOICE OF LEADING FASHION HOUSES INTERNATIONALLY

AUTHORISED DEALERS: BHUBANESHWAR: KALAMANDIR • SATYAM SHIVAM SUNDARAM • CUTTACK: GOPI FABRICS • RAJHANS • RAJRATAN • JAMSHEDPUR: DIAMOND • DOONGARSIDAS BIHARILAL • PARADISE FABRICS • S. M. THAKKAR • TEXTILE CENTRE

(SAR/12)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय जीवन बीमा निगम की नयी पॉलिसी कहे- "मुझे तुमसे प्यार है!"

जीवन सरिता

यानी थ्री-इन-वन योजना

"मैं और मेरी पत्नी... एक दूसरे की खुशी और सुरक्षा के लिए क्या कुछ नहीं करते? और तभी तो हमने ली है विशेष रूप से तैयार की गई भारतीय जीवन बीमा निगम की जीवन सरिता पॉलिसी. जो हम जैसे हर पति-पत्नी के लिए खास तौर से एक आदर्श पॉलिसी है. इसमें संयुक्त जीवन बीमा सुरक्षा के साथ ही हम दोनों को मिलेगा आजीवन पेंशन का लाभ भी! इतना ही नहीं, इस पॉलिसी के ज़रिए हम अपने बच्चों के लिए एक अच्छी खासी रकम का भी इंतजाम कर सकते हैं! भारतीय जीवन बीमा निगम की जीवन सरिता एक ऐसी जीवन बीमा पॉलिसी जो कहे - "मुझे तुमसे प्यार है!"

जीवन सरिता संबंधी अधिक जानकारी के लिए अपने नज़दीकी भारतीय जीवन बीमा निगम कार्यालय, विकास अधिकारी या एजेंट से मिलिए.

भारतीय जीवन बीमा निगम

daCunha LIC 16 90 HIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

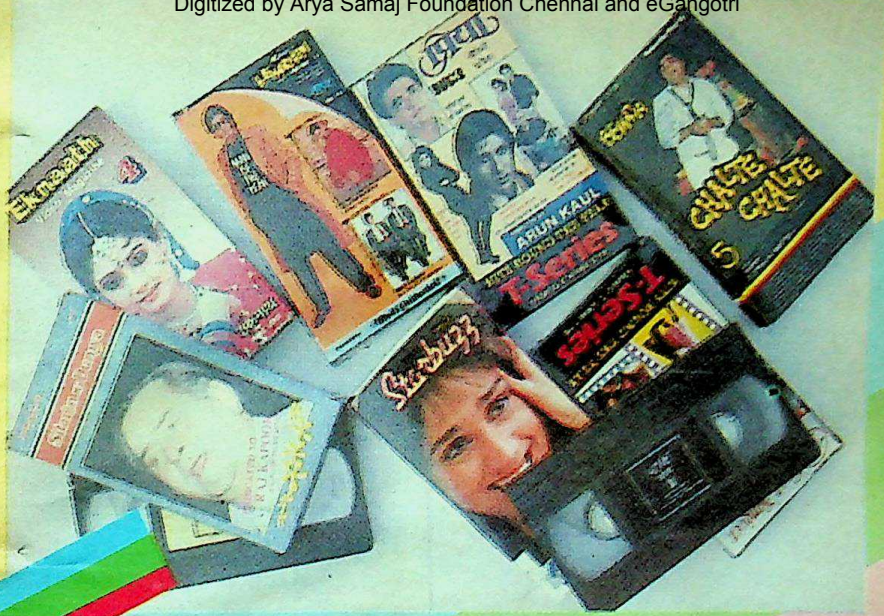

वीडियो पत्रिकाएं अस्तित्व के लिए संघर्ष कर रही हैं

लेख ● प्रदीप गुप्ता

पिछले कुछ महीनों से बाजार में वीडियो मैगजीनों की बाढ़ सी आ गई है. वीडियो मैगजीन यानी वीडियो कैसेट पर ऐसी सामग्री जो मैगजीनों और समाचारपत्रों में मिलती है लेकिन टेलीविजन पर देखने को नहीं मिल पाती है क्योंकि टेलीविजन पर तो दूरदर्शन कार्यक्रमों के अलावा और किसी को स्थान नहीं मिलता.

वीडियो मैगजीनों की शुरुआत 'लहरें' से हुई जो मुख्यतः फिल्मों और फिल्मी व्यक्तित्वों के बारे में है. 'लहरें' से पहली बार वीडियो दर्शकों को पता चला कि परदे पर तीन घंटे दिखने वाली फिल्म को बनाने में कितना श्रम करना पड़ता है. एकएक मिनट के दृश्य को फिल्माने के लिए क्याक्या तैयारी करनी पड़ती है. किस तरह आंधी, तूफान, वर्षा, कुहरे के दृश्य प्रभाव पैदा किए जाते हैं. और यह भी कि फिल्म की सफलता केवल परदे के कलाकारों पर ही नहीं, पूरी टीम पर निर्भर करती है, यह सब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पिछले कुछ समय में वीडियो पत्रिकाएं बाजार में काफी तादाद में नजर आईं हैं. इन में से कुछ बंद हो गईं, कुछ बंद होने के कगार पर हैं और कुछ नई मैदान में कूदने की तैयारी में हैं. लेकिन सवाल यह है कि क्या ये पत्रिकाएं प्रिंट मीडिया की तरह जनता में अपना प्रभाव जमाने में सफल हो पाएंगी?

पहली बार लोगों को घर बैठे देखने को मिला.

'लहरें' की शुरुआत से लोगों को संप्रेषण के एक नए माध्यम का पता चला. फिर तो पारिवारिक मनोरंजन की 'एकनाथ वीडियो', फिल्मी पक्षों पर 'स्टार बाज', 'चलते चलते', 'सागर', 'प्रिया', 'बुश फिल्म ट्रेक्स', 'मूवी वीडियो', 'मनोरंजन', 'सितारों की दुनिया', समाचार विचार पर 'न्यूज टेक', 'कालचक्र', 'आब्जर्वर टुडे', व्यवसाय और उद्योग पर 'बिजनेस प्लस' शुरू हुई. इन में से कई बंद हो गईं. कुछ बंद होने की प्रक्रिया में हैं. कुछ अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष कर रही हैं. 'चैनल वन', 'हिंदुस्तान टाइम्स टीवी', 'टाइम्स टीवी', 'ओपन चैनल' आदि कई और वीडियो मैगजीनें मैदान में कूदने की तैयारी में हैं.

वीडियो मैगजीनों की आवृत्ति नियमित नहीं है. कई बार लोग वीडियो लाइब्रेरी पर पता करते हैं और नया अंक न मिलने पर उन की रुचि समाप्त हो जाती है. इस बारे में 'लहरें' टीम के प्रमुख विनीत हांडा ने बताया, ''हमारी मैगजीन में 90 मिनट की सामग्री रहती है जिस में हम फिल्म जगत की महत्त्वपूर्ण घटनाओं को समेटने की कोशिश करते हैं. हमारी ओर से पूरी कोशिश रहती है कि हमारा अंक नियमित अंतराल पर मिले लेकिन हमारे ऊपर सेंसर है. कई बार सेंसर प्रमाणपत्र की प्रक्रिया में खासा समय लग जाता है, इस पर हमारा नियंत्रण नहीं है.''

फिल्म वीडियो मैगजीनों में फिल्मों के मुहूर्त, फिल्मी पार्टियां, गानों की रेकार्डिंग, शूटिंग आदि की भरमार रहती है. हम ने 'लहरें' के विनीत हांडा से पूछा, ''दर्शक एक सी ही सामग्री देख कर ऊब महसूस नहीं करते?''

''आप का कहना ठीक है, हमारे प्रारंभ के अंकों में इन पक्षों पर अधिक जोर था लेकिन अब हमारा ध्यान फीचर पर अधिक है. मीनाक्षी, माधवी आदि सितारों के व्यक्तित्व के विविध पक्षों और रंगों को प्रस्तुत करने वाले हमारे फीचर दर्शकों ने पसंद किए है. हमारे ताजा अंक में अमिताभ बच्चन के समग्र व्यक्तित्व पर फीचर है, 'जुम्मा जुम्मा' गाने से जुड़े विवाद पर जो अंश हैं वे हमारे परंपरागत मोल्ड से अलग हैं.'' विनीत हांडा ने बताया.

'सागर' नाम के फिल्म वीडियो मैगजीन निकालने वाले सुरेंद्र गुप्ता ने वितरक से कुछ विवाद के कारण इस का नाम 'फिल्म सिटी' कर दिया है. इस बारे में जब सुरेंद्र गुप्ता से चर्चा चली तो उन्होंने बताया, ''लोग फिल्में देखते हैं और उन के सितारों से अपना रिश्ता सा कायम कर लेते हैं. इसलिए उन के बारे में नईनई बातें जानने और उन्हें करीब से देखने को हमेशा उत्सुक रहते हैं. उन की इसी उत्सुकता को पूरा करने की कोशिश हम फिल्मी वीडियो मैगजीन में करते हैं.''

लेकिन वास्तविकता यह है कि फिल्मी वीडियो मैगजीनों में लगातार एकसी ही सामग्री देखने को मिली, उन्हें दर्शकों ने नकार दिया. मूवी वीडियो मैगजीन, बुश फिल्म ट्रेक्स आदि इस के उदाहरण हैं.

पारिवारिक मनोरंजन की वीडियो पत्रिकाएं निकालने की भी कोशिश हुई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

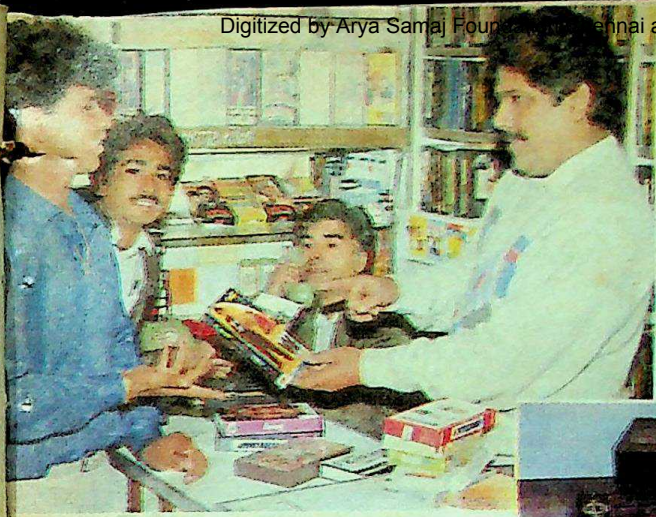

"अभी भी हमारा मुख्य जोर व्यवसाय पर ही है. हां, शुरुआत में हमारे पास विभिन्न स्थानों पर संवाददाता नहीं थे. अब हम अपने देश भर में फैले हुए संवाददाताओं और विदेशी एजेंसियों से प्राप्त रिपोर्टों के आधार पर समाचारों की पृष्ठ भूमि

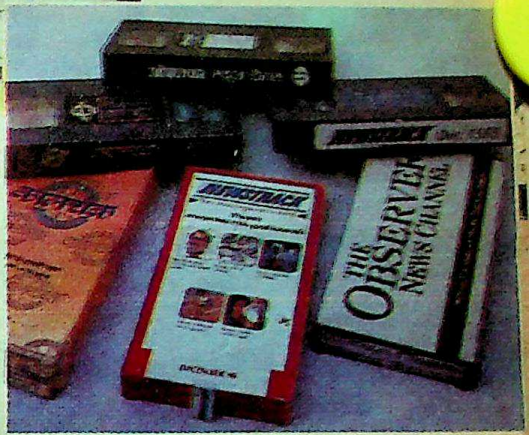

अयोध्या व आरक्षण आंदोलन की सटीक प्रस्तुति के बाद समाचार वीडियो पत्रिकाओं की मांग बढ़ी है. ▲

लेकिन ये सफल नहीं हो पाईं. ऐसी ही 'एकनाथ वीडियो पत्रिका' थी जिस में फिल्मी मनोरंजन के साथ ही पारिवारिक मनोरंजन की सामग्री भी थी. ज्योति वेंकटेश इस पत्रिका के साथ जुड़े रहे थे. इस के बंद होने का कारण पूछे जाने पर उन्होंने बताया, "प्रिंट मीडिया यानी साधारण पत्रिका जैसी सुविधा वीडियो मैगजीन में संभव नहीं है. ऐसी सामग्री लोग बस की पंक्ति में, लोकल ट्रेन में या फिर चलतेफिरते सरसरी निगाह से देखना, पढ़ना पसंद करते हैं. पत्रिका को तो आसानी से आप अपने साथ ले कर जा सकते हैं. कहीं भी पढ़ सकते हैं लेकिन वीडियो मैगजीन के साथ यह संभव नहीं है."

लेकिन समाचारविचार की वीडियो पत्रिकाएं खासी पसंद की जा रही हैं. 'न्यूज ट्रेक' की सफलता इस का संकेत है. यही नहीं व्यवसाय, प्रबंध और उद्योग के विभिन्न पक्षों को ले कर शुरू की गई 'बिजनेज प्लस' ने भी अंततोगत्वा समाचारविचार पत्रिका का ही स्वरूप ग्रहण कर लिया है.

हालांकि 'बिजनेस प्लस' के अमित खन्ना इस का प्रतिवाद करते हुए कहते हैं, भी दिखाते हैं. शुरुआत से ही हमारा आदर्श लंदन से प्रकाशित होने वाली पत्रिका 'इकोनमिस्ट' रही है. इस में 20% समाचार राजनीति, 60% व्यावसायिक घटनाक्रम और 20% जीवन शैली मनोरंजन रहता है. वैसे राजनीतिक पृष्ठभूमि पर ध्यान रखना हमारे लिए जरूरी है क्योंकि राजनीतिक घटनाक्रम व्यावसायिक गतिविधियों को प्रभावित करता ही है."

यह पूछे जाने पर कि वीडियो मैगजीनें समाचारपत्रों और पत्रिकाओं के अस्तित्त्व के लिए कोई खतरा बन सकती हैं, अमित खन्ना ने बड़े पते की बात कही, "प्रिंट मीडिया में भीतर ही भीतर तो बहुत कड़ी प्रतियोगिता पहले ही चल रही है. जो पत्रिका बेहतर है वह अपना अस्तित्व बनाए रख सकती है. लेकिन हमारी प्रतियोगिता प्रिंट मीडिया से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वीडियो पत्रिका कालचक्र विवादों के घेरे में

समाचार विचार की पहली हिंदी वीडियो पत्रिका 'कालचक्र' प्रारंभ से ही विवादों के घेरे में रही है. इस के पहले ही अंक में कालगर्ल के शौकीन रईसजादों के बारे में 'लाइव' फीचर ने पत्रकार नैतिकता पर विवाद खड़ा कर दिया था.

'कालचक्र' के पीछे कोई बड़ा औद्योगिक घराना या प्रकाशन समूह नहीं है, इसलिए इस में 'प्रोडक्शन' की गुणवत्ता देखने को नहीं मिलती है.

पिछले कई महीनों से हिंदी की इस पहली समाचारविचार पत्रिका का ताजा अंक बाजार में नहीं आया था, इसलिए यह समझा जाने लगा था कि पत्रिका बंद हो गई लेकिन इस का तीसरा अंक बाजार में आ गया है जो अयोध्या पर किए फीचर के कारण खासा चर्चित हो रहा है.

'कालचक्र' के निर्माता युवा पत्रकार विनीतनारायण गुप्ता हैं जो मुरादाबाद से पत्रकारिता में कुछ कर गुजरने के लिए महानगर दिल्ली आए थे. समाचारपत्रों में काम किया, दूरदर्शन के लिए नागरिक समस्याओं पर फीचर बनाए लेकिन उन्हें कहीं न कहीं अपनी रचनाधर्मिता के रास्ते में बाधा ही लगती थी इसलिए पुराने यूमैटिक वीडियो कैसेट, किराए की जगह में कामचलाऊ स्टुडियो, कम वित्तीय साधन के बावजूद समाचार वीडियो मैगजीन के व्यवसाय में कूद पड़े. 'न्यूजट्रेक' और 'आब्जर्वर टुडे' जैसे बड़े साधन संपन्न प्रकाशन समूहों के मुकाबले विनीत को अपना अस्तित्व बनाए रखने के लिए जबरदस्त संघर्ष करना पड़ रहा है.

बिलकुल नहीं है. हम तो टीवी पर दूरदर्शन की एकरसता या उबाऊपन से आक्रांत दर्शक के लिए कार्य कर रहे हैं.

वीडियो मैगजीन एक नई अवधारणा है इसलिए अधिकांश मैगजीनों में व्यावसायिक सूझबूझ का अभाव है. संपादन में चुस्ती देखने को नहीं मिलती. स्क्रिप्ट अधकचरी सी रहती है. प्रिंट मीडिया की तरह इन का अपने दर्शकों से संवाद नहीं है. कार्यक्रमों पर दर्शकों की प्रतिक्रिया को नापने का कोई तरीका विकसित नहीं हुआ है.

वीडियो मैगजीन में सूत्रधार यानी एंकर परसन की भूमिका महत्त्वपूर्ण रहती है. यही वह व्यक्तित्व है जो अपने प्रभाव से घटनाक्रम के सूत्रों को चतुराई से बांध कर रखता है. इस मामले में फिल्मी वीडियो मैगजीनों की स्थिति बहुत बुरी है. अधिकांश में एंकर परसन की आवाज प्रभावहीन होती है. उस का चेहरामोहरा दर्शक को बांधने में सक्षम नहीं होता है.

इस बारे में 'बिजनेस प्लस' के अमित खन्ना ने पूछे जाने पर कहा, "सच तो यह है कि हमारे यहां सारे दृश्यश्रव्य माध्यम में ही अच्छे प्रस्तुतकर्ताओं का अभाव है. पश्चिम में बारबरा वाल्टर जैसे कितने ही लोग हैं लेकिन मैं भविष्य के प्रति आशावान हूं. जैसेजैसे वीडियो मैगजीनों की संख्या और आवृत्ति बढ़ेगी, नएनए प्रोफेशनल लोग सामने आएंगे. कुछ सीमा तक न्यूज ट्रेक में प्रस्तुतकर्ता सीधे दर्शक से संवाद करते नजर आते हैं. बिजनेस प्लस में भी इस दिशा में अब थोड़ा सुधार हुआ है लेकिन फिल्मी वीडियो मैगजीनों में काफी कुछ करना बाकी है"

कुल मिला कर यह कहा जा सकता है कि वीडियो मैगजीनों की पहुंच समाज के अति संपन्न वर्ग तक ही सीमित है क्योंकि जिस के पास वीडियो है वही इस का लुत्फ उठा सकता है. लेकिन जो दर्शक टीवी पर दूरदर्शन के कार्यक्रमों के विकल्प की तलाश में रहते हैं उन के लिए वीडियो मैगजीनें काफी उपयोगी सिद्ध होंगी. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पासा पलट गया

आवारागर्दी, बदमिजाजी और शरारतों के लिए बदनाम मेरे भतीजे ने उस दिन दूसरे शहर जाते वक्त मेरे चरण स्पर्श किए. अब चूंकि उस से ऐसी आशा नहीं थी, सो ताज्जुब भी हुआ.

घर लौटते ही मैं ने भाभी से कहा, "आज आप के लाड़ले ने सभी के बीच हाथ बढ़ा कर ऐसी हरकत की कि मैं तो दंग रह गया."

भाभी ठहरी कड़कमिजाज, उन्होंने तेज आवाज में उसे कोसना शुरू कर दिया, जिस पर महल्ले के दोएक तमाशाई भी जमा हो गए. एक ने कहा, "भाईसाहब बता नहीं रहे पर जरूर उस ने या तो किसी को छेड़ा होगा या फिर किसी की जेब साफ कर दी होगी."

पहले तो मैं चुपचाप यह तमाशा देखता रहा, किंतु जब मैं ने उन्हें बताया कि मेरे भतीजे ने आज जिंदगी में पहली बार मेरे चरण स्पर्श किए हैं तो उन सभी के मुंह बंद हो गए. —नंदलाल

*

हमारे एक शिक्षक पढ़ाने के नाम पर शून्य थे. सिर्फ इधरउधर की बातें करते रहते थे. जब भी कोई छात्र उन से सवाल पूछता तो यह कह कर टाल देते कि 'यह तो बहुत सरल है. इसे क्या समझाना? किताब से देख कर पढ़ लेना.'

हम लोगों में से एक छात्र ने उन की इस आदत को छुड़ाने का निश्चय किया और बोला, "देखना, कल से यह पढ़ाने लग जाएंगे." दूसरे दिन हम लोगों के आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा, क्योंकि शिक्षक महोदय बहुत ध्यान से पढ़ाने लगे थे.

हम लोगों ने जब इस का राज पूछा तो उस ने बताया कि पिछले दिन हुई आंतरिक परीक्षा में एक सवाल के जवाब में उस ने लिखा था, "यह प्रश्न तो बहुत सरल है. इस में लिखने लायक कोई बात नहीं है. अतः इस का जवाब क्या लिखना." —पुष्पकुमार

*

मेरा घर रेलवे स्टेशन के पास है. उस के सामने ही तांगा पड़ाव भी है, जहां दिन भर तांगे वाले हर आनेजाने वाले को टोका करते, "कहां जाना है, बाबूजी."

एक दिन मेरा एक पड़ोसी कहीं से थकाहारा वापस आ रहा था कि एक तांगे वाले ने पूछा, "कहां जाना है, बाबूजी?"

वह तैश में बोले, "जहन्नुम में."

तांगेवाला भी कम नहीं था. वह बोला, "जल्दी कीजिए, बाबूजी. सामने मालवा एक्सप्रेस आने ही वाली है, पटरी पर लेट जाइए." —अशोक खत्री

*

हमारे पड़ोस में रहने वाले एक सज्जन की आदत थी कि वह केला खा कर छिलका सड़क पर फेंक देते और उस पर रपट कर गिरते व्यक्ति को देख कर उस की खिल्ली उड़ाते थे. यदि कोई मना करता तो वह उसे ही आंखें खोल कर चलने की सलाह देते.

एक बार वह अपने कमरे में बैठे थे कि पड़ोसियों के जोरजोर से हंसने की आवाज आने लगी. जब वह बाहर आए तो वह शर्म से पानीपानी हो गए, क्योंकि इस बार छिलके पर रपटने वाले उन के ही पिताजी थे.

—राकेश शर्मा ●

इस स्तंभ के लिए अपने तथा अपने संबंधियों के अनुभव भेजिए. प्रत्येक प्रकाशित अनुभव पर 50 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. अपने अनुभव इस पते पर भेजें. संपादकीय विभाग, सरिता, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहल

कहानी ● योगेश तिवारी

दूर कहीं बम के धमाके के साथ आग की तेज लपटें आसमान को छू गईं. उस के पश्चात तुरंत ही गोलियां चलने की आवाज सुनाई दी.

लाठियां, तलवारें लिए तीन व्यक्ति बदहवासी की हालत में भागते हुए एक संकरी गली में घुस गए. तभी एक जीप से उतर कर उन का पीछा करते हुए हथियारों से लैस सातआठ व्यक्तियों ने गली में प्रवेश किया. वे चिल्ला रहे थे, "मारो सालों को... हमारे ही महल्ले में..."

दुकानों के शटर भी बम के धमाके के साथ ही बंद हो चुके थे. सड़कें सुनसान थीं. निस्तब्ध वातावरण पर खौफ हावी हो चला था.

पुलिया के पास दीवार के पीछे दुबकी नगमा की पकड़ संदीप की बांह पर कस गई. पसीने में भीगी भयभीत हिरनी सी वह मानो उस में समा जाने का प्रयास कर रही थी. बौखलाया सा संदीप पाइप और दीवार के बीच की जगह में से बाहर के दृश्य देख रहा था.

कुछ क्षणों की नीरवता के पश्चात लगातार दो चीखें सन्नाटे को चीर गईं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रक्तरंजित तलवार तथा गंडासे लिए कुछ लोग सड़क पर आए और उन में से एक ने अपनी खूनी तलवार लहराते हुए कहा, "मार दो कुत्तों को."

रक्तरंजित तलवारें और गंडासे लिए कुछ लोगों ने सड़क पर कदम रखा. अपनी खून सनी तलवार लहरा कर एक ने कहा, "मार दिया दो कुत्तों को... आ... ह..."

उस की बात अधूरी ही रह गई. दाईं ओर से एक छुरा उस की गरदन में धंस गया था. प्रतिक्रियास्वरूप तत्काल उस के साथी मुड़े और दीवार के सहारे सट कर पीछे खिसक रहे व्यक्ति को घसीटते हुए जीप के पास ले गए. उन्होंने एक भी क्षण गंवाए बिना उसे टुकड़ों में विभाजित कर दिया. उस के पश्चात अपने घायल साथी को जल्दी से जीप में डाल कर ले गए.

आंधी में सूखे पत्ते के समान कांपती हुई नगमा अपने दुपट्टे में मुंह दे कर हिचकियां रोकने का प्रयत्न कर रही थी. संदीप किंकर्तव्यविमूढ़ सा वैसे ही दुबका हुआ था. उस दृश्य को देख कर उस का भी कलेजा हिल गया था. वह सोचने लगा,

दंगों की बीभत्सता देख कर नगमा और संदीप दोनों ही डर गए थे. यही नहीं, संदीप अपनी जान बचाने के लिए नगमा को दंगाइयों को सौंप देने का निर्णय भी ले चुका था. लेकिन नगमा के तेवर देख वह मन ही मन ग्लानि से भर उठा.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'इतनी क्रूरता? वह भी सिर्फ धर्म की खातिर?' परंतु इन विचारों को उस ने फौरन ही झटक दिया. उस वक्त तो उसे अपनी जान बचाने की फ्रिक थी.

'और यह नगमा...' संदीप फिर सोच में डूब गया, 'कहां गले पड़ गई. अगर किसी ने देख लिया तो बस मुसीबत ही समझो. इस माहौल में कैसे इसे ले कर घर तक पहुंचूंगा?'

नगमा रोज पास के कसबे में नौकरी करने जाती थी. वह किसी दफ्तर में टाइपिस्ट थी. संदीप भी वहीं एक फैक्टरी में निरीक्षक था. उस दिन शाम को लौटते समय जब गाड़ी बीच जंगल में खड़ी हो गई तो यह समाचार आग की तरह फैल गया कि सांप्रदायिक दंगों के कारण शहर में कर्फ्यू लग गया है.

स्टेशन पर बम रखे जाने की अफवाह के कारण ट्रेन बीच में रोक दी गई थी. तीन घंटे तक ऊपर की बर्थ पर लेटेलेटे संदीप अपनी उत्तेजना को शांत करने का प्रयास करता रहा. ट्रेन के स्टेशन पहुंचतेपहुंचते साढ़े आठ बज चुके थे. धड़कते दिल से वह उतरा और सामने बने अस्थायी पुलिस सहायता केंद्र की ओर बढ़ा, परंतु भीड़ बढ़ती देख कर दूर चला गया. शीघ्र ही किसी की आवाज पर वह चौंक कर पलटा.

नगमा खड़ी थी. संदीप को अपनी ओर देखता पा कर मुसकरा कर बोली, "अच्छा हुआ, तुम मिल गए. मेरी तो जान सूखी जा रही थी कि अकेली घर कैसे पहुंचूंगी? तुम ने सुना होगा न..?"

संदीप ने हामी भरी.

कुछ देर मौन रह कर नगमा ने पूछा, "चलें?"

"लेकिन कर्फ्यू?"

"अरे नहीं, वह तो कुछ ही इलाकों में..."

पास से गुजरते एक सबइंस्पेक्टर को देख उस ने अपनी बात अधूरी छोड़ दी और लपक कर पूछा, "क्यों चाचाजी, पुरानी बस्ती की तरफ तो कर्फ्यू नहीं लगा है न?"

सब इंस्पेक्टर ने रुक कर गौर से उस देखते हुए प्रतिप्रश्न किया, "तुम वहां रहती हो?"

"नहीं, हम तो..."

"हम कौन?"

"मैं और संदीप..." कह कर नगमा ने उन की बातें सुन रहे संदीप की ओर इशारा किया, "हम शांति कालोनी में रहते हैं."

"हां, अभी तक तो ऐसी कोई खबर नहीं है. फिर भी मैं विश्वासपूर्वक कुछ नहीं कह सकता."

तभी घोषणा हुई, "सभी यात्रियों से निवेदन है कि शीघ्र से शीघ्र स्टेशन से प्रस्थान कर जाएं. बाहर पुलिस सहायता केंद्र से वे कर्फ्यू पास ले सकते हैं."

सब इंस्पेक्टर घोषणा सुन कर आगे बढ़ गया. उस के साथ चलते हुए नगमा ने प्रश्न किया, "यह सभी को जाने को क्यों कह रहे हैं?"

"अभी कुछ देर पहले खबर मिली थी कि स्टेशन पर बम रखा है. तुम लोग भी पास ले लो. पता नहीं, वहां क्या स्थिति हो?"

"कृपया आप ही पास बनवा दीजिए. वैसे भी हम को स्टेशन के इस ओर जाना है."

सबइंस्पेक्टर शायद उस की याचना पर द्रवित हो गया था. वैसे भी इतने लोगों में वह अकेली लड़की नजर आ रही थी. उस ने जेब से कुछ खाली पास निकाले और नाम पूछा. नगमा ने अपना बताने के स्थान पर कहा, "संदीपकुमार."

"पिता का नाम?"

तब जा कर संदीप का मुंह खुला, "रामस्वरूप."

"हूं." उस ने लिख कर अगला प्रश्न किया, "पता."

"51, शांति कालोनी."

नगमा बीच में ही बोल पड़ी, "चाचाजी, मेरा भी नाम इसी में जोड़ दीजिए. मैं इन के ठीक पड़ोस में रहती हूं. आप की एक पास की बचत हो जाएगी."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हां, नहीं. सच पूछो ऋचा, तो मैं कहां दोस्ती बढ़ाऊं? कैसे? अंगरेजी बोलना भी तो नहीं आता. मांबाप ने हिंदी स्कूलों में पढ़ाया."

"ऐसा मत कहो." ऋचा ने बीच में टोका. "अपनी भाषा में स्कूल में पढ़ना कोई गुनाह नहीं."

"पर इस से मेरा हाल क्या हुआ, देख रही हो न?"

"यह स्कूल का दोष-नहीं."

"फिर?"

"दोष तुम्हारा है. अपने को समय व परिस्थिति के मुताबिक ढाल न सकना गुनाह है. बेबसी गुनाह है. दूसरे पर अवलंबित रहना गुनाह है. यही गुनाह औरत सदियों से करती चली आ रही है और पुरुषों को दोष देती चली आ रही है." ऋचा तैश में बोलती चली गई. चेहरा तमतमाया हुआ था.

"तुम कहना क्या चाहती हो, ऋचा?"

"बताती हूं. सामने पेड़ देख रही हो?"

"हां."

"उन पेड़ों की टहनियों से 'लेस' की भांति नाजुक, हलके हरे रंग की बेल लटक रही है. है न?"

"हां. पर इन से मेरी समस्या का क्या ताल्लुक?"

"अमरीका के दक्षिणी प्रांतों में ये बेलें प्रचुर मात्रा में मिलती हैं..."

"सुनो, ऋचा. इस वक्त मैं न कविता के 'मूड' में हूं, न भूगोल सीखने के." गीता लगभग चिढ़ गई थी.

ऋचा के चेहरे पर हलकी मुसकराहट उभर आई. फिर अपनी बात को जारी रखते हुए कहने लगी, 'इन बेलों को स्पेनिश मास' कहते हैं. इन की खासियत यह है कि यह पेड़ से चिपक कर लटकती तो हैं, पर उन पर अवलंबित नहीं हैं."

"तो मैं क्या करूं इन बेलों का?"

"तुम्हें 'स्पेनिश मास' बनना है."

"मुझे? स्पेनिश मास?"

"हां, अमर बेल नहीं, 'स्पेनिश मास.'

"पहेलियां न बुझाओ, ऋचा." गीता का कंठ क्रोध और अपनी असहाय दशा से भर आया.

"गीता, तुम्हारी समस्या की जड़ है तुम्हारी आश्रित रहने की प्रवृत्ति. पति पर निर्भर रहते हुए भी तुम्हें अपना अस्तित्व 'स्पेनिश मास' की भांति अलग रखना है. उन के साथ रहो, प्यार से रहो, पर उन्हें बैसाखी मत बनाओ. अपने पांव पर खड़ी हो."

"कहना आसान है..." गीता कड़वाहट में कुछ कहने जा रही थी.

पर गीता ने बात काट कर अपने ढंग से पूरी की.

"और करना भी."

"कैसे?"

"पहला कदम लेने भर की देर है."

अंतर

तब कसम खाते थे,
घूस न लेंगे,
हैं बच्चों वाले हम,
हैं बच्चों वाले हम.
अब कसम खाते हैं,
लेंगे, घूस लेंगे,
हैं बच्चों वाले हम,
हैं बच्चों वाले हम.

—अशोक खन्ना

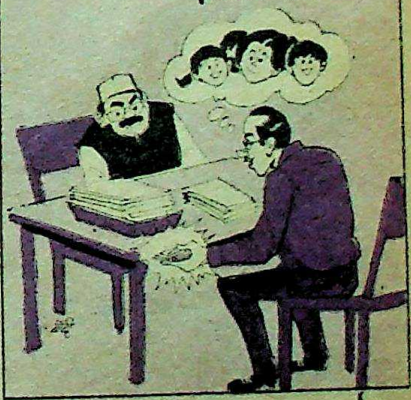

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो पहला कदम कौन सिखाएगा?"

"तुम्हारा अपना आत्मबल, उसे जगाओ"

"कैसे जगाऊं?"

"तुम्हें अंगरेजी बोलनी आती है, जिस की यहां आवश्यकता है? बोलो?"

"नहीं?"

"कार चलानी?"

"नहीं."

"यहां आए कितने वर्ष हो गए?"

"आठ."

"अब तक क्यों नहीं सीखी?"

"विश्वास नहीं है अपने पर."

"बस, यही है हमारी आम औरत की समस्या और यहां से शुरू करना है तुम्हें. मदद मैं करूंगी." ऋचा ने कहा.

गीता के चेहरे पर कुछ भाव उभरे, कुछ विलीन हो गए.

'स्पेनिश मास.' वह बुदबुदाई. दूर पेड़ों पर स्पेनिश मास के झालरनुमा गुच्छे लटक रहे थे. अनायास गीता को लगा कि अब तक उस ने नहीं जाना था कि स्पेनिश मास की अपनी खूबसूरती है.

"यह सुंदर बेल है ऋचा, है न?" आंखों में झिलमिलाते सपनों के बीच से वह बोली.

"हां, गीता. पर 'स्पेनिश मास' बनना और अधिक सुंदर होगा." ●

हिंदी गुलामों गंवारों जाहिलों की भाषा है न?

तभी तो आप

- हिंदी की बोलचाल में और हर वाक्य में दो तीन शब्द अंगरेजी के जरूर रखते हैं. हर दूसरा वाक्य अंगरेजी का बोलते हैं.
- अपने नाम का संक्षिप्तीकरण अंगरेजी अक्षरों में करते हैं बी.पी. शर्मा, एस.एन. वर्मा, के.एम. गुप्ता, आई.एम. दास.....
- अपने सांस्कृतिक, सामाजिक, पारिवारिक और निजी उत्सवों एवं सम्मेलनों के निमंत्रण पत्र अंगरेजी में छपवाते हैं, चाहे आप और आप के आमंत्रित अंगरेजी के चार वाक्य भी सही रूप में न लिख सकें और न समझ सकें.
- अपना निजी पारिवारिक पत्रव्यवहार अंगरेजी में करते हैं.

अंगरेजी साहबों की भाषा है. आप पूरी नहीं बोललिख सकते तो आधीअधूरी ही सही, साहबी कुछ तो दिखाई देगी ही!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दाढ़ी बनाम लोहे के चने

व्यंग्य • रमेशचंद्र छबीला

उस दिन मेरे मस्तिष्क में यह विचार बिजली की तरह कौंध उठा कि दाढ़ी में मनुष्य का व्यक्तित्व महान और निराला दिखाई देता है. दाढ़ी मनुष्य के सम्मान में सोने में सुहागे का कार्य करती है.

मैं ने कमरे में छत्रपति शिवाजी, रवींद्रनाथ टैगोर, रामकृष्ण परमहंस और कुछ साधुमहात्माओं के चित्र लगा लिए. सभी के चेहरों पर अपनेअपने ढंग की दाढ़ी थी.

चारपांच दिन बाद मैं बाजार से सब्जी लेने जा रहा था.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महापुरुषों के व्यक्तित्व से प्रभावित हो कर मैं ने भी दाढ़ी रखने की ठान ली. लेकिन दोस्तों के साथसाथ मेरी पत्नी भी मेरी दाढ़ी की जानी दुश्मन बन गई और उस ने मुझे ऐसा सबक सिखाया कि मुझे दाढ़ी रखना लोहे के चने चबाने के समान लगने लगा.

"बाबूजी, आ जाइए... अब तो टाइम है." नाई मंगल का स्वर सुनाई पड़ा जो हाथ पर हाथ रखे मेरी ओर देख रहा था.

"नहीं भाई... अब मैं दाढ़ी नहीं बनवाऊंगा. मैं ने अब दाढ़ी रखने का इरादा कर लिया है." मैं बोला.

फीकी हंसी हंसता हुआ मंगल बोला, "बाबूजी, आप को दाढ़ी जंचेगी बहुत क्योंकि आप के चेहरे पर पूरी आती है. लेकिन..."

"लेकिन क्या?"

"दाढ़ी रख कर बहुत झंझट हो जाता है. हर काम सोचसमझ कर करना पड़ता है. हर कदम संभाल कर रखना पड़ता है. जरा सी भूल होने पर लोग यही कहते हैं कि इतनी बड़ी दाढ़ी रख कर भी शर्म नहीं आई या अक्ल नहीं आई."

"मुझे किसी के कहने की कोई चिंता नहीं है." कह कर मैं आगे चल दिया.

एक रात को पत्नी ने तुनक कर कहा, "मैं ने कहा जी... यह दाढ़ी कटा लो."

"क्यों?"

"इतनी उम्र हो गई है तुम्हारी, कुछ समझा भी करो. न जाने किस ने तुम्हें दाढ़ी रखने की सलाह दे दी? चांद से चेहरे को काले बादलों में क्यों छिपाते हो?"

"तुम क्या जानो कि दाढ़ी से मनुष्य का कितना सम्मान बढ़ जाता है?"

"सम्मान दाढ़ी से नहीं, अपने कर्मों से बढ़ता है. यदि दाढ़ी से सम्मान बढ़ता तो सभी के चेहरों पर दाढ़ी होती. मैं भी देखूंगी कब तक रहेगी यह मुई..."

"यह गरदन कट सकती है परंतु दाढ़ी नहीं." मैं जोश में पत्नी की चेतावनी स्वीकार कर बोला.

जैसे आग में घी डाल दिया हो, पत्नी जलभुन कर मेरी दाढ़ी की ओर इस प्रकार घूरने लगी जैसे अपनी सौत को घूर रही हो.

दफ्तर में साथियों ने कान चबाने शुरू कर दिए. एक ने कहा, "यार, मान गए तुम्हें भी. बचत का अच्छा रास्ता ढूंढ़ लिया है. तुम अपनी दाढ़ी के नाम से बैंक या डाकखाने में एक खाता खुलवा लो. नाई को दिए जाने वाले ये फालतू पैसे हर महीने जमा कराते रहो. इधर तुम्हारी दाढ़ी बढ़ेगी और उधर तुम्हारा धन और ब्याज बढ़ेगा."

मेरे कुछ कहने से पूर्व ही दूसरा साथी बोल उठा, "इस दाढ़ी में तुम एकदम हाकिम लगते हो. मेरा कहा मानो, हाथ में असली या नकली पिस्तौल ले कर फोटो खिंचा लो और किसी प्रोड्यूसरडाइरेक्टर के पास मुंबई भेज दो. तुरंत शूटिंग रुकवा कर सिर के बल चल कर तुम्हें लेने आएगा. देखते ही देखते तुम बहुत बड़े खलनायक बन जाओगे."

तभी तीसरे ने अपने विचार प्रकट किए, "प्यारे, तुम भगवे कपड़े पहन कर हरिद्वार या ऋषिकेश में एक आश्रम खोल लो. तुम गुरु और हम सब तुम्हारे चेले. सुना है कि वहां आजकल विदेशी चेलियां बहुत आ रही हैं. यहां इन फाइलों में दिमाग खपातेखपाते सिर के बाल भी उड़ने लगे हैं. नौकरी से मन ऊब गया है. तुम्हारे साथ आश्रम में रहेंगे. देशीविदेशी चेलियां सेवा करेंगी. कमाएगी दुनिया और खाएंगे हम. जीवन आनंदमय हो जाएगा. बोलो गुरु कामेश्वर महाराज की जय." कह कर उस ने दंडवत प्रणाम किया.

मैं समझ नहीं पा रहा था कि उन के सामने हंसूं या रोऊं? मुझे लगा, किसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

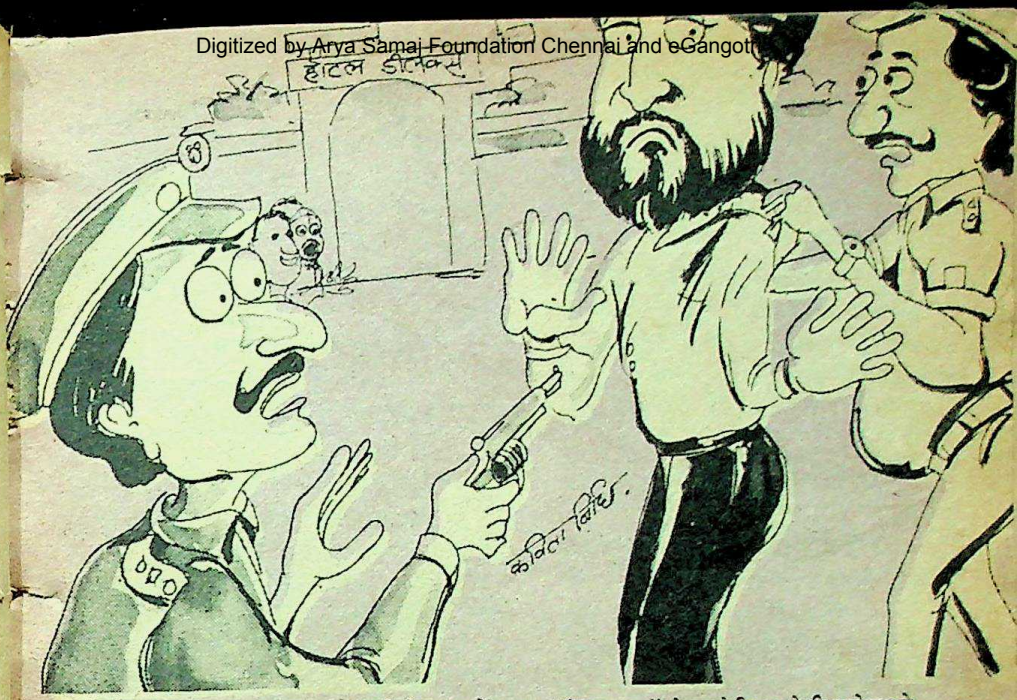

"हैंड्स अप." होटल से निकलते ही थानेदार ने पिस्तौल तानते हुए कहा और मुझे पकड़ लिया.

चक्रव्यूह में फंस गया हूं. जरा तीखे स्वर में बोला, "तुम लोग हाथ धो कर मेरी दाढ़ी के पीछे क्यों पड़े हो? मैं ने दाढ़ी रख कर संसार का आठवां आश्चर्य तो नहीं बना लिया जो तुम हर समय दाढ़ी को घूरते रहते हो? तुम्हें किसी ने मना किया है क्या? तुम भी रख लो. फिर कभी मेरी दाढ़ी के बारे में कुछ कहा तो मुझ से बुरा कोई न होगा."

इतना कह कर मैं मन ही मन उन कमबख्तों को गालियां देने लगा.

कुछ दिन बाद लोगों ने मेरे नाम के साथ एक उपनाम और जोड़ दिया-दढ़ियल.

अब मेरी दाढ़ी बड़ी और घनी हो गई थी. प्रातः स्नान के बाद मैं इस की तेल मालिश करता और कंघा कर के इस प्रकार सहलाता जैसे मां अपने दुलारे को प्यार करती है.

एक रात जब मैं घर पहुंचा तो पत्नी की तबीयत खराब थी सो मैं होटल डीलक्स में खाना खाने जा पहुंचा.

बिल दे कर बाहर निकला ही था कि किसी ने मुझे पीछे से दबोच लिया.

मैं चौंका कि अचानक ही यह क्या मुसीबत आ गई. जकड़ बहुत सख्त थी. यों तो मैं स्वयं को बहुत शक्तिशाली समझता हूं. लंबाई पांच फुट 10 इंच है. मैं ने कोई भी दांव चलाने से पहले पूछा, "कौन है?"

"तुम पुलिस से घिर चुके हो कुंदन. अब तुम बच कर नहीं जा सकते." एक रोबीला स्वर मुझे सुनाई दिया जो पुलिस थानेदार का था जिस ने मुझे पकड़ रखा था.

मैं घबराया. पुलिस? कुंदन? मेरे चारों तरफ पुलिस खड़ी थी.

दूसरे थानेदार ने पिस्तौल तानते हुए कहा, "हैंड्स अप."

"क्या मामला है? मैं कुंदन नहीं हूं. मैं तो..." मैं ने कहना चाहा.

"हाथ ऊपर कर लो नहीं तो..."

मुझे हाथ ऊपर करने पड़े.

होटल में खाना खाते हुए और सड़क

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर चलतेफिरते लोग निकट आ कर कुतूहल और चकित से देख रहे थे जैसे किसी फिल्म की शूटिंग हो रही हो. "तलाशी लो." एक थानेदार ने सिपाही से कहा.

एक सिपाही तलाशी लेने लगा. दोतीन व्यक्तियों ने पूछा, "क्या बात है इंस्पेक्टर साहब?"

"यह बहुत खतरनाक डाकू कुंदन है. इस का नाम अखबारों में छपा है. एक बैंक डकैती में इस ने दो लाख रुपया लूटा है. तीन व्यक्तियों का कत्ल भी कर चुका है."

"नहीं." मैं कांप उठा, "मैं डाकू नहीं हूं."

उस सिपाही को तलाशी लेने पर कुछ न मिला.

"तुम्हें जो भी कहना है, थाने चल कर कहना." थानेदार ने मुझे धकेला.

मैं ने भीड़ की ओर देखा कि कोई परिचित दिखाई दे जाए परंतु सभी चेहरे अपरिचित थे.

थाने में सामने कुरसी पर एक इंस्पेक्टर बैठा था. हृष्टपुष्ट शरीर, रोबीला चेहरा, सांवला रंग, मोटीमोटी आंखें, बड़ीबड़ी मूंछें.

मेरी तरफ देखते हुए इंस्पेक्टर ने कहा, "हूं, तो आज तुम पकड़े ही गए कुंदन."

"मैं कुंदन नहीं... ब्रजेश हूं." मैं बोला.

"तुम बहुत चालाक हो. हर शहर में अपना नाम बदल लेते हो. चंडीगढ़ में चंडीप्रसाद, रामपुर में रामलाल, बनारस में बनारसीदास और जयपुर में जयसिंह तुम ने नाम रखे हैं. अब यहां ब्रजेश बता रहे हो."

"लेकिन..."

"तुम मुझे नहीं जानते. मैं इंस्पेक्टर उधमसिंह हूं. शहर के सभी गुंडे मेरे नाम से कांपते हैं."

"मैं आप को कैसे विश्वास दिलाऊं कि..." मैं ने कहना चाहा परंतु वाक्य अधूरा रह गया.

"तुम गर्म तवे पर हाथ रख कर कहो तब भी मैं तुम्हारा विश्वास नहीं मानूंगा."

"आप को गलतफहमी हुई है."

सुन कर उधमसिंह ने अट्टहास किया. मूंछें मरोड़ीं और घूर कर बोला, "जिस तरह नेपोलियन की डिक्शनरी में असंभव शब्द नहीं था, उसी तरह मेरी डिक्शनरी में गलतफहमी या भ्रम कोई शब्द नहीं है. तुम कब से यहां हो?"

"जन्म से, मैं पैदा इसी शहर में हुआ."

"क्या तुम कोई लेखक या कवि हो."

"जी नहीं." मैं ने गरदन हिला दी.

"चित्रकार या कलाकार हो?"

"जी नहीं."

"साधु या संन्यासी हो?"

"बिलकुल नहीं इंस्पेक्टर साहब? मैं तो किशोरीलाल एंड कं. में एक क्लर्क हूं."

"क्लर्क हो? क्या क्लर्क ऐसी ही दाढ़ियां रखते हैं? क्या मैं जान सकता हूं कि तुम ने दाढ़ी क्यों रखी?"

"वैसे ही."

"वैसे कोई काम नहीं किया जाता. इस के पीछे जरूर कोई रहस्य है. खतरनाक अपराधियों से रहस्य उगलवाना उधमसिंह यानी मैं अच्छी तरह जानता हूं." कहते हुए इंस्पेक्टर ने मेरी दाढ़ी की ओर ऐसे घूरा जैसे नेवला सांप को घूरता है.

उस की तीव्र दृष्टि मैं सहन न कर पाया और थूक निगल कर मरियल स्वर में बोला, "क्या मैं अपने सेठजी को फोन कर सकता हूं."

"नहीं, तुम कुछ नहीं कर सकते. हम अपनेआप जांचपड़ताल करेंगे."

तभी फोन की घंटी बजी. इंस्पेक्टर ने रिसीवर उठा कर कहा, "हैलो... इंस्पेक्टर उधमसिंह बोल रहा हूं. क्या कह रहे हो? तुम्हें गलतफहमी हो गई थी... दाढ़ी... दाढ़ी के कारण... देखो, फिर कभी ऐसी गलती न करना... अच्छा, ठीक है."

इंस्पेक्टर ने रिसीवर रखा ही था कि सेठ किशोरीलाल दफ्तर के दो कर्मचारियों के साथ प्रविष्ट हुए.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इंस्पेक्टर सेठजी को जानता था. बहुत ही नम्र स्वर में बोला, "आइए सेठजी."

"हमारे दफ्तर के बाबू ब्रजेश को आप के आदमी क्यों पकड़ लाए? यह तो बहुत ही ईमानदार और सज्जन हैं. इन्होंने सपने में भी कोई कुत्ते का पिल्ला नहीं मारा. मैं इन के पूरे अहिंसावादी खानदान को जानता हूं." सेठजी ने बैठते हुए कहा.

"सेठजी, आप ठीक कहते हैं, यह कुंदन नहीं हैं. हमें फोन पर सूचना मिली थी कि कुंदन डाकू होटल डीलक्स में खाना खाने गया है. इन्हीं का हुलिया बताया गया. मैं ने उड़नदस्ता भेज दिया. ये बाहर निकले और पकड़े गए." इंस्पेक्टर ने कहा.

मैं ने अपने सूखे होंठों पर जीभ फेरी.

इंस्पेक्टर ने आगे कहा, "हमारे आदमी को तुम्हारी दाढ़ी के कारण भ्रम हुआ. हमें पिछले महीने ही रिपोर्ट मिली थी कि आजकल कुंदन ने दाढ़ी बढ़ा रखी है. तभी से हम ने दाढ़ी वालों पर अपनी नजर कड़ी कर दी. वैसे तुम्हारी शक्ल भी कुछकुछ कुंदन से मिलती है."

मुझे आत्मग्लानि सी होने लगी मानो दाढ़ी रख कर मैं ने कोई भयंकर अपराध कर दिया है. मैं ने दाढ़ी इसलिए बढ़ाई थी कि मेरा सम्मान बढ़ेगा परंतु इस ने तो मुझे सींखचों में बंद करने का प्रबंध कर दिया था. मुझे लगा कि दाढ़ी ही मेरी सब से बड़ी शत्रु है. चाणक्य के अनुसार शत्रु को जड़ से ही नष्ट कर देना चाहिए.

इंस्पेक्टर ने सहानुभूति व्यक्त की, "तो मिस्टर ब्रजेशकुमारजी, आप को बहुत परेशानी उठानी पड़ी..."

"जी, कोई बात नहीं." मैं ने कहा. हम सभी कार में बैठ कर लौट रहे थे. मैं रोनी सूरत बनाए उस मनहूस घड़ी को कोस रहा था जब मेरे मन में दाढ़ी रखने का विचार आया था. पश्चात्ताप की अग्नि में जलता हुआ मैं समझ न पाया कि यह एक सनक थी या पागलपन?

पुनः मेरी दृष्टि के सामने उन महापुरुषों के चेहरे घूमने लगे जिन के चित्र मैं ने कमरे में लगा रखे थे. मुझे लगा कि दाढ़ी बनाम लोहे के चने चबाना है.

मेरी दृष्टि माडर्न हेयर ड्रेसर पर पड़ी

दाढ़ी के रोमांचक पहलू

दाढ़ी रखने का चलन हर युग में रहा है. भारतीय समाज में दाढ़ी को बुद्धिजीवी, बड़े और बुजुर्ग होने का प्रतीक माना जाता रहा है. यहां हर युग में शतप्रतिशत ऋषि मुनि और 80% सामान्य पुरुष दाढ़ी रखते रहे हैं.

दाढ़ी बनाने की शुरुआत कब हुई, इस बारे में तो निश्चित रूप से कुछ कहा नहीं जा सकता. लेकिन पुरातत्त्व विशेषज्ञों व इतिहासकारों का कहना है कि इस की शुरुआत लगभग पांच हजार वर्ष पूर्व से हुई है. एक आम आदमी अपनी दाढ़ी के 25,000 बाल रोजाना साफ करता है. प्रत्येक बाल हर 24 घंटे में एक इंच के सौवें हिस्से के बराबर बढ़ता है. इस तरह प्रतिदिन 250 इंच लंबे बाल की सफाई करनी पड़ती है. और जिंदगी के 3,500 घंटे अर्थात 150 दिन दाढ़ी बनाने में व्यतीत हो जाते हैं.

भारत में हर साल तकरीबन 125 करोड़ दाढ़ी बनाने की ब्लेडों का उत्पादन होता है और जनसंख्या के अनुपात के हिसाब से प्रति व्यक्ति के हिस्से में साल में सिर्फ दो ब्लेड ही आते हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कटूक्तियां

*

वकील : दो व्यक्तियों को लड़ने की प्रेरणा देने वाला प्राणी.

*

युवक समझता है कि बुद्धि अनुभव का एक अनुकल्प है और उस के वयोवृद्ध समझते हैं कि अनुभव बुद्धि का अनुकल्प है.

—लाइमैन लायड वायसन

*

पति और पत्नी का एक दूसरे को न समझ पाने का एक मुख्य कारण है उन का भिन्न लिंगी होना.

—डौरोथी डिक्स

*

झगड़ा : वकील का कमाऊ पूत.

*

पति के अनिद्रा रोग से पत्नी का चिंतित होना स्वाभाविक है क्योंकि इस रोग के कारण पत्नी को महीनों पति की जेबें टटोलने का अवसर ही नहीं मिलता.

*

केवल दो प्रकार के पुरुष स्त्रियों को नहीं समझ पाते-विवाहित और कुंआरे.

*

पैसे और यौन संबंधों के बारे में सच बोलना असंभव है क्योंकि इन मामलों में व्यक्ति का अहं आड़े आ जाता है.

—मैलकोम मुगेरिज

*

पत्नी वह है जो अपने पति के लिए कुछ भी कर सकती है सिवाय उस की आलोचना न करने के तथा उसे सुधारने की कोशिश छोड़ने के.

—जे.बी. प्रोस्टले

तो मैं ने ड्राइवर से गाड़ी रोकने को कहा. कार रुकते ही मैं उतर गया. सेठजी ने पूछा, "कहां जा रहे हो?"

"सामने..." मैं ने दुकान की ओर संकेत किया, "आप की कृपा से मैं आज बच गया. इस दाढ़ी ने तो मुझे फंसा ही दिया था. बहुतबहुत धन्यवाद सेठजी." मैं ने हाथ जोड़ कर कहा और चल दिया.

दाढ़ी साफ करा कर मैं ने अपने निखरे हुए चेहरे को देखा तो लगा कि आयु 10 वर्ष कम लग रही है. दाढ़ी में तो 40 साल का अधेड़ लगता था.

घर पहुंचा तो पत्नी देखती ही रही. उस के उदास और चिंतित नेत्रों में विशेष चमक आ गई. बीमार और सूखे होंठ मुसकरा उठे, "मैं ने तो पहले ही तुम्हें समझाया था, परंतु तुम ने कभी मेरा कहा माना? जैसा समझाती हूं उस का उलटा ही करते हो."

"मैं बहुत परेशान हूं. तुम तो चुपचाप रहो. ओह... किसी को मिले न मिले परंतु मुझे दाढ़ी रखने का पुरस्कार मिल चुका है." मैं दुखी हो कर बोला.

"जो होना था हो चुका. यह एक संयोग था जो हो गया. एक ठोकर थी जिस ने तुम्हारी आंखें खोल दीं. जरा पचास रुपए दो, प्रसाद चढ़ाऊंगी."

"किस खुशी में?" मैं ने पूछा.

"मैं ने उसी दिन बोल दिया था कि प्रसाद चढ़ाऊंगी जिस दिन तुम ने मुझे चेतावनी दी थी कि गरदन कट सकती है, दाढ़ी नहीं. आज बजरंगजी की कृपा से यह दाढ़ी..."

मैं चौंका कि मेरी दाढ़ी के मामले में बजरंगजी कहां से टपक पड़े?

पत्नी बोली, "क्या तुम नहीं जानते इंस्पेक्टर उधमसिंह बड़े भैया के दोस्त हैं और बचपन से हम उन्हें बजरंग भैया कहते रहे हैं. दरअसल उन्हें पहलवानी का शौक है न, बस उन की कृपा से तुम्हारी दाढ़ी..."

मैं आगे सुनना गवारा न कर सका और मुंह छिपा कर भागा. •

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

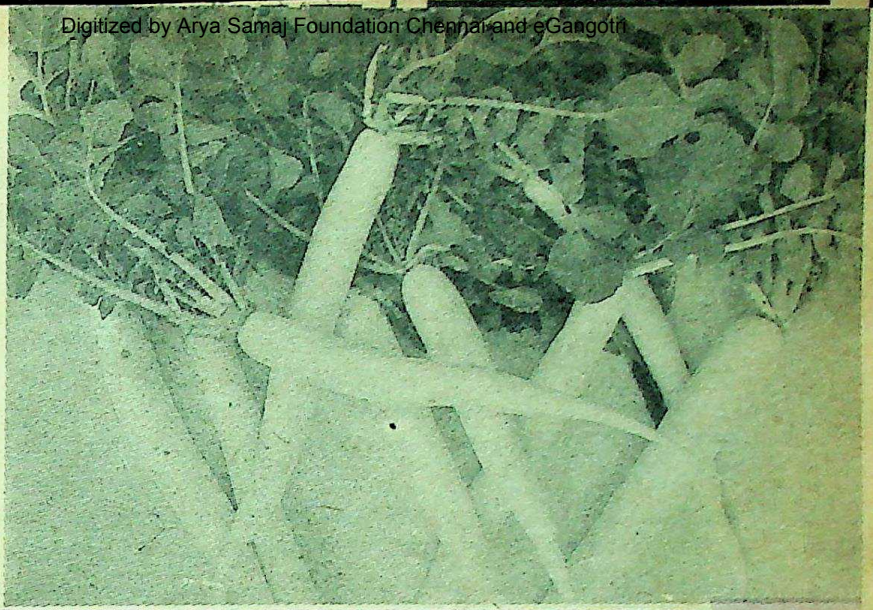

एक मूली हजार गुण

लेख ● पुष्पा खोले

इस युग की चमकदमक, बड़ेबड़े हस्पताल तथा विज्ञापनों की दुनिया में मनुष्य इतना भटक गया है कि वह अपने आसपास आसानी से उपलब्ध गुणकारी वस्तुओं पर ध्यान ही नहीं देता. इसी लिए वह छोटीछोटी बीमारियों पर हजारों रुपए खर्च कर के भी कभीकभी हानि ही उठाता है. आज आप को आसानी से उपलब्ध होने वाली मूली के बारे में जानकारी दी जा रही है, जिस में अनगिनत गुण भरे पड़े हैं.

मोटापा, कीलमुंहासे, डायबिटीज, खांसीजुकाम, पथरी जैसी सैकड़ों बीमारियों की एक दवा है मूली. विश्वास नहीं हो रहा है न, लेकिन यह सत्य है. आजमा कर देखिए. मूल्य में सस्ती और गुणों में अनमोल है यह मूली.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

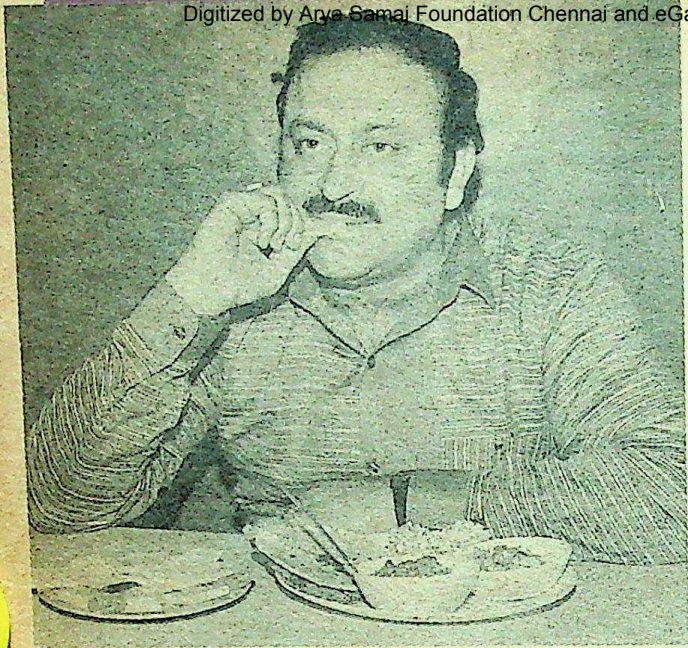

मूली को अपने भोजन का हिस्सा जरूर बनाएं. इस से आप अनेक बीमारियों से दूर रहेंगे.

खांसी और दमे के लिए रामबाण दवा है. इस में कैल्शियम होने के कारण यह हमारे दांतों तथा हड्डियों को मजबूत करती है. मूली का सेवन मूत्राशय की पथरी को निकालने में भी किया जाता है. आयुर्वेद में इसे पथरी को पिघलाने के लिए काम में लाया जाता है.

जो लोग प्रतिदिन एक मूली खाते हैं, उन का रंग निखर आता है. खुश्की, गरमी, कीलमुंहासे, झाइयां, दाग आदि मिटाने में मूली सर्वश्रेष्ठ वस्तु है. मूली में लौह लवण पर्याप्त मात्रा में होने के कारण यह रक्त को शुद्ध करती है. इस से प्राकृतिक रंगरूप निखर आता है तथा नाखूनों में लाली, होंठों पर गुलाबी आभा छा जाती है.

मूली का विशेष गुण यह है कि यह शरीर से विषैली गैस 'कार्बन डाई आक्साइड' को निकाल कर 'जीवनदायी आक्सीजन' उत्पन्न करती है. इस में विटामिन 'ए' पर्याप्त मात्रा में होने के कारण आंखों की ज्योति बढ़ती है. निरंतर सेवन से कई लोगों के चश्मे उतर चुके हैं.

मूली का रंग सफेद है किंतु यह शरीर को लाली प्रदान करती है. यह थकान को मिटा कर अच्छी निद्रा लाती है. रज और वीर्य को पुष्ट बना कर संतान प्राप्ति में सहायता करने के साथ ही श्वेत प्रदर (ल्यूकोरिया) तथा नपुंसकता से रक्षा करती है.

यह सच है कि मूली ठंडी है किंतु मूली इस में सोडियम तथा क्लोरीन होने के कारण यह शरीर के मल को निकाल देती है. इस से बदहजमी और अफारा भी दूर होता है. मूली पेट की जलन (एसिडिटी), खट्टी डकार, अम्लपित्त में लाभदायक है. इस में मैग्नीशियम होने के कारण पाचनशक्ति ठीक होती है. जल जाने पर मूली को पीस कर जले हुए स्थान पर लगाने से जलन शांत होने के साथसाथ घाव में पानी भी नहीं भरता.

यदि आवाज बैठ जाए तो चारपांच ग्राम मूली के बीज पीस कर गरम जल से सेवन करने पर आवाज खुल जाती है. आंतों में घाव या कीड़े होने की स्थिति में प्रतिदिन एक मूली खाने से घाव भर जाते हैं तथा कीड़ों से भी छुटकारा मिल जाता है. मूली के बीज मक्खन के साथ खाने से पुरुषत्व बढ़ता है. मूली में गंधक तत्व होने के कारण चर्म रोगों में भी लाभ होता है. उच्च रक्तचाप के मरीजों के लिए मूली प्रकृति का अनूठा वरदान है. भोजन के साथ प्रतिदिन सेवन करने से तमाम पेटेंट औषधियों से अधिक लाभ होता है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कानों के रिसावर दुरुस्त रखने के लिए दो तत्त्वों की आवश्यकता होती है—सिलिकान और आयोडीन. ये अनमोल तत्त्व सब्जी के छिलकों में होते हैं. छिलका उतार देने से ये तत्त्व नष्ट हो जाते हैं. अतः गाजर, मूली, शलजम, चुकंदर आदि को बिना छीले, धो कर काट कर नीबू निचोड़ कर सलाद के रूप में खाने से बंद कान खुल जाते हैं.

मूली के पत्ते तेल में उबाल कर वह तेल कान में डालने से कान का दर्द ठीक हो जाता है. घुटना, कंधा तथा अन्य जोड़ों में जकड़न आ जाने पर मूली के सेवन से जोड़ खुल जाते हैं. मूली को उबाल कर उस में मिसरी मिला कर खाने से हिला हुआ गर्भ स्थिर हो जाता है तथा गर्भपात का भय समाप्त हो कर संतान की प्राप्ति होती है. सूजन ठीक करने के लिए गरम पानी में मूली का रस मिला कर पीड़ित स्थान को धोने से सूजन उतर जाती है. गुरदे के रोग में मूली बहुत लाभदायक है. इस से पेशाब की कई खराबियां दूर हो जाती हैं.

मोटापा : इन दिनों मोटापे का डर बहुत बढ़ रहा है. मोटापा घटाने के लिए कई प्रकार के साधनों के उपयोग की सलाह विज्ञापनों द्वारा दी जाती है, जिन में अधिकांश ठगी के साधन हैं. मूली में क्षार होने के कारण चरबी का नाश होता है. अतः मूली का निरंतर सेवन कर के मोटापा कम किया जा सकता है. आधा प्याला मूली के रस में थोड़ा नमक और नीबू मिला कर पीने से बेडोल शरीर भी सुडौल हो जाता है. इसे आप 'स्लिमिंग जूस' भी कह सकते हैं.

पानी में मूली का रस मिला कर सिर धोने से जुएं मर जाती हैं तथा लीखें भी नष्ट हो जाती हैं. मूली के बीज तथा पत्ते पीस कर नीबू का रस मिला कर लगाने से दाद ठीक हो जाता है. मूली का भुरता थकान को दूर करता है. डाईबिटीज में भी इस से लाभ होता है.

पीलिया : एक मूली मय पत्तों के कूट कर उस का रस निकालें तथा उस में स्वाद के अनुसार नमक मिला कर प्रातःकाल प्रतिदिन पीने से पीलिया पूरी तरह ठीक हो जाता है.

याद रखें, मूली मूल्य में सस्ती तथा गुणों में अनमोल है. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह भी खूब रही

हम सपरिवार रेल से जा रहे थे. मेरे भाई साहब का नाम वैसे तो रूपकुमार है. लेकिन मां प्यार से मुन्ना कहती हैं. वह काफी मोटे भी हैं. रेल एक स्टेशन पर रुकी तो भाई साहब उतर कर चाय पीने चले गए. तभी एक लड़की आई और उन की सीट पर बैठ गई. मां बोली, "यह तो मेरे मुन्ना की सीट है."

इस पर लड़की ने कहा, "कोई बात नहीं, आने दो, मैं आप के मुन्ना को गोद में बिठा लूंगी."

इतने में भाई साहब आ गए और बोले, "यह सीट मेरी है."

लड़की ने कहा, "यह तो मुन्ना की सीट है."

मां ने यह सुन कर कहा, "यही तो है मेरा मुन्ना." —विनोदकुमार भोजक

*

मेरे पिताजी मूलतः उत्तर प्रदेश के हैं. वहां बनियान को गंजी कहते हैं. एक दिन वह रसोई में कुछ बना रहे थे और मां पास ही बरतन साफ कर रही थीं. अचानक पिताजी के पीठ में कुछ काटने लगा. वह जोर से चिल्लाए, "गंजी उठाओ, गंजी उठाओ."

मां झट से स्टील का भगौना ले कर खड़ी हो गईं. दरअसल मां मध्य प्रदेश की हैं, जहां स्टील के भगौने को गंजी कहते हैं.

—स्मिता सिंह

*

मेरे चाचाजी बनारस हिंदू विश्वविद्यालय की परीक्षा में कक्षा निरीक्षक थे. परीक्षा शुरू हुए काफी देर हो चुकी थी. तभी एक लड़का आया और उन से पूछा, "भाई साहब, यह भू विभाग कहां होगा."

चाचाजी ने कहा, "यहां ऐसा कोई विभाग नहीं है."

तब उस ने जेब से अपना प्रवेश पत्र निकाल कर दिखाया तो पता चला कि वह बी.एच.यू. अर्थात बनारस हिंदू यूनिवर्सिटी को भू पढ़ रहा है. —वंदना मिश्रा

*

मेरे बंगाली पड़ोसी हिंदी अच्छी तरह नहीं जानते थे. एक दिन हम दोनों हिंदी फिल्म देखने गए. फिल्म देखने के दौरान एक हास्य दृश्य में दर्शकों को काफी जोर की हंसी आई. यह हास्य उन के समझ में नहीं आया, उन्होंने मुझ से इस का अंगरेजी अनुवाद पूछा. मैं ने उस का अनुवाद कर दिया. तब तक परदे पर वह दृश्य बदल चुका था और कोई गंभीर दृश्य चल रहा था. मेरा अनुवाद सुन कर उन्होंने जोर का ठहाका लगाया.

हाल में बैठे दर्शक उन की ही तरफ देखने लगे कि ऐसे गंभीर दृश्य पर हंसने की क्या बात है. —हरि एम. कृष्णात्रेय

मेरी चचेरी बहन सपरिवार मेरे यहां आई हुई थी. नाश्ते के समय सारे लोग अपनीअपनी पसंद का नाश्ता मांग रहे थे. जीजाजी नाश्ते के लिए आए तो मैं ने पूछा, "जीजाजी, आप का आमलेट बनाऊं या भुजी."

जीजाजी मासूमियत से बोले, "नाश्ता दो चाहे न दो पर मेरी सब्जी तो न बनाओ."

—गीता खोसला ●

इस स्तंभ के लिए अपने तथा अपने संबंधियों के अनुभव भेजिए. प्रत्येक प्रकाशित अनुभव पर 50 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. अपने अनुभव इस पते पर भेजें. संपादकीय विभाग, सरिता, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, गनी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घर में मरीज की देखभाल कैसे करें?

लेख ● शम्मी टंडन

रामनरेश बाबू को दिल का दौरा पड़ा था. 15 दिन हस्पताल में रहने के बाद वह घर आ गए थे. लेकिन डाक्टर ने उन्हें दफ्तर जाने के लिए मना किया था. अतः उन्हें अभी एकदो महीने घर में ही पूर्ण आराम करना था.

जब मैं उन की खबर लेने गई तो देखा कि वह बैठकनुमा कमरे में लेटे थे. घर में काफी मेहमान आए हुए थे जो उन के पास पड़े सोफे पर ही बैठे गप्पें लड़ा रहे थे. पास ही बच्चे टीवी पर कार्टून फिल्म देख रहे थे.

तभी उन्हें प्यास लगी. उन्होंने अपनी बेटी को आवाज दी लेकिन वह शायद सुन न सकी क्योंकि वह मेहमानों के लिए चायनाश्ते का इंतजाम कर रही थी. मैं ही रसोई में गई. देखा तो वह मेहमानों के लिए पकौड़े तल रही थी.

रामनरेश बाबू का हाल देख कर अजीब सा लगा. डाक्टरों के अनुसार उन्हें आराम और शांति की जरूरत थी. लेकिन जहां मेहमानों के लिए पकौड़े बनें और मरीज पानी के लिए आवाजें देता रहे, जहां मरीज के कमरे में कार्टून फिल्म चल रही हो और मेहमान गप्पें लड़ाने में व्यस्त हों वहां मरीज को आराम क्या खाक मिलेगा?

लंबी बीमारी के मरीज जब घर में आते हैं तो सारे घर के माहौल को नहीं तो कम से कम मरीज के कमरे को तो हस्पताल

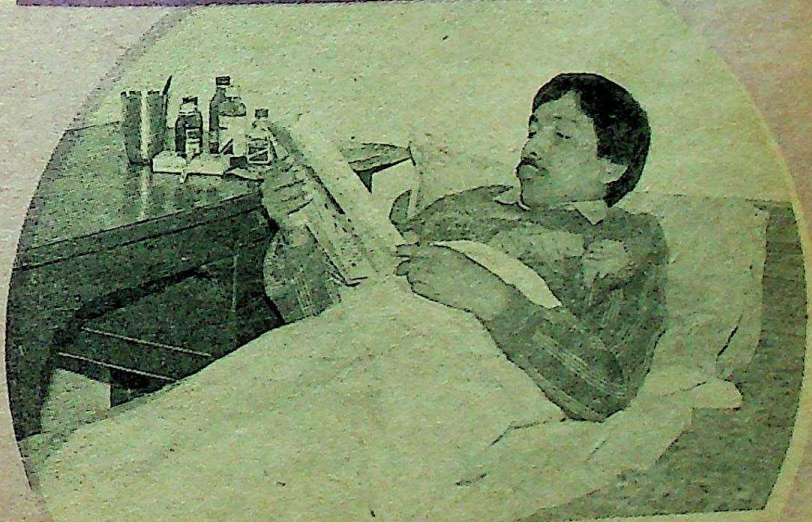

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मरीज की देखभाल करना आसान नहीं है फिर ऐसे मरीज की देखभाल तो और भी मुशकिल होती है जो घर पर रह कर स्वास्थ्य लाभ कर रहा हो. बच्चों के शोर और हालचाल पूछने वालों की भीड़ के बीच उसे समुचित आराम देने का तरीका जानिए और उन्हें जल्द स्वास्थ्य लाभ प्राप्त करने में मदद कीजिए.

के कमरे जैसा बनाना बहुत आवश्यक है. यदि हस्पताल के खर्चे और आनेजाने की परेशानी से बचने के लिए आप मरीज को घर ले आए हैं तो यह बहुत आवश्यक है कि आप घर में ही वे सब प्रयास करें जिस से कि मरीज जल्दी ठीक हो जाए.

इस के लिए घर में एक पढ़ेलिखे व्यक्ति का होना बहुत आवश्यक है जो ऐसे मरीज की देखभाल पूरी जिम्मेदारी से कर सके, ताकि उस की सेवाशुश्रूषा में कोई कमी न रहे. मरीज के चिकित्सीय उपचार तो डाक्टर ही करेगा लेकिन मनोवैज्ञानिक इलाज घर के सदस्य भी कर सकते हैं, बशर्ते कि उन में त्याग, सेवाभाव व सहनशक्ति हो.

आवश्यक सामान

मरीज के कमरे को हस्पताल के कमरे के समान बनाने के लिए उस में निम्नलिखित वस्तुएं होनी बहुत आवश्यक हैं :

पलंग : मरीज का पलंग आरामदायक हो. यदि मरीज बिस्तर पर हिलडुल नहीं सकता हो तो उस के लिए पलंग वैसा ही हो जैसा कि हस्पताल में होता है, यानी कि जो आधा ऊपर भी हो सके, ताकि मरीज यदि बिस्तर पर पूरी तरह लेटना न चाहे तो पलंग को ही ऊपर कर के उसे अधलेटी अवस्था में कर दिया जाए. फिर जब लेटने

ता मैं ने ड्राइवर से गाड़ी रोकने को कहा. का मन हो तो उसे सीधा कर दें.

यदि हस्पताल जैसा पलंग न लाना चाहें तो कोई भी पलंग दें लेकिन गद्दा आरामदायक हो, चादर साफसुथरी हो और दो तकिए हों ताकि जब वह बैठना चाहे तो तकिए पीछे लगा कर बैठ जाए.

आरामकुरसी : मरीज के कमरे में एक लंबी कुरसी या आरामकुरसी भी हो ताकि यदि वह पलंग पर लेटेलेटे थक जाए तो कुरसी पर भी बैठ सके.

कीटाणुनाशक तत्त्व : डिटोल, फिनाइल जैसी चीजें वहां अवश्य रहनी चाहिएं जिस से मरीज के कपड़े, बरतन आदि धोए जा सकें. लेकिन एक ही कीटाणुनाशक तत्त्व सब कामों के लिए इस्तेमाल नहीं किया जा सकता है. उदाहरण के लिए, मरीज के कपड़ों और बरतनों को कीटाणुरहित करने के लिए जहरीले कीटाणुनाशक तत्त्व नहीं इस्तेमाल किए जा सकते हैं. इसी प्रकार एंटीसेप्टिक पदार्थ बैक्टीरिया को खत्म नहीं करते बल्कि उन्हें बढ़ने से रोकते हैं. अतः भिन्नभिन्न कार्यों के लिए अलगअलग कीटाणुनाशक पदार्थ रखने चाहिए. आमतौर पर मरीज के कमरे के लिए निम्नलिखित कीटाणुनाशक तत्त्व आवश्यक होते हैं :

डिटोल : यह त्वचा तथा थर्मामीटर, इंजेक्शन आदि को साफ करने के लिए इस्तेमाल होता है.

पोटेशियम परमैंगनेट : इस का हलका गुलाबी रंग का घोल बना कर उस से बरतनों और फल आदि को धो कर कीटाणुरहित कर सकते हैं.

साबुन: हाथ धोने के लिए डिटोल साबुन चुनें. कपड़ों को डिटर्जेंट पाउडर में धो कर तेज धूप में सुखा कर गरम इस्तिरी करें.

फिनाइल : फर्श, फर्नीचर आदि साफ करने के लिए इस्तेमाल होता है.

बोरिक एसिड : आंखें साफ करने के लिए ठीक रहता है.

सेवलान : मरीज के बैडपैन आदि को साफ करने के लिए उत्तम है.

रबड़ के दस्ताने : यदि मरीज को कोई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छूत की बीमारी है तो उस का सारा काम करते वक्त दस्ताने पहनें. घाव आदि को साफ करते वक्त और मरहमपट्टी करते वक्त इस का इस्तेमाल अवश्य करें.

कागज की नेपकिन : लार, नाक आदि को पोंछने के लिए या फिर हाथ आदि साफ करने के लिए कागज की नेपकिन या टिशू पेपर ज्यादा अच्छे रहते हैं क्योंकि उन्हें धोने का चक्कर नहीं होता. इस्तेमाल के बाद फेंक देते हैं. अतः कीटाणु नहीं फैल पाते हैं.

थर्मामीटर : समयसमय पर शरीर का तापमान लेने के लिए थर्मामीटर होना आवश्यक है. इसे प्रयोग करने के पहले धो लें और प्रयोग के बाद कीटाणुनाशक घोल में साफ करें.

यदि मरीज मुंह में थर्मामीटर इस्तेमाल नहीं कर सकता है तो माथे पर लगाने वाला थर्मामीटर भी ले सकते हैं, जो अब बाजार में आसानी से मिल जाता है.

बरतन : मरीज के लिए पानी पीने का गिलास, चाय आदि के लिए कपप्लेट और खाना खाने के लिए एक बड़ी प्लेट, कटोरी, चम्मच आदि मरीज के कमरे में अलग ही रखें.

बच्चों के शोर और हालचाल पूछने वालों की भीड़ में मरीज जल्द स्वास्थ्य लाभ प्राप्त नहीं कर सकता. अतः उस का कमरा अलग बनाएं.

बैडपैन : यदि मरीज शौचालय तक नहीं जा सकता है तो मरीज की सुविधा के लिए मलमूत्र त्यागने का बैडपैन भी रखें. इस्तेमाल के बाद इन्हें सेवलान से कीटाणुरहित करें और वाशिंग पाउडर या तरल साबुन से साफ करें.

नापक गिलास : दवाई सही मात्रा में दी जाए, इस के लिए एक नापक गिलास भी रखें, जिस में मिलीग्राम के हिसाब से या फिर चाय का चम्मच या बड़े चम्मच के हिसाब से निशान बने हों.

फालतू प्लास्टिक बैग : कमरे में कुछ प्लास्टिक की थैलियां फालतू रखें, जिन में मरीज द्वारा प्रयुक्त बेकार वस्तुएं बंद कर के फेंक दी जाएं, जैसे टिशू पेपर, मरहमपट्टी आदि ताकि कमरे में गंदगी व कीटाणु न रहें.

अन्य सामान : मरीज के इस्तेमाल की रोजमर्रा की वस्तुएं, जैसे मुंह पोंछने के लिए छोटा तौलिया, रूमाल, नेपकिन, टूथब्रश, टूथपेस्ट, कंघा, हजामत का सामान,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नेलकटर आदि भी कमरे में ही रखें.

अलार्म घड़ी : यदि मरीज चाहे तो उस के लिए अलार्म घड़ी आदि का भी इंतजाम करें.

मरीज का कमरा

मरीज को रहने में कोई असुविधा न हो इस के लिए उस का कमरा ध्यान से चुनें. उस का कमरा घर में ऐसे स्थान पर हो जहां शांति हो, यानी कि रसोई पास न हो, अन्यथा प्रेशर कुकर की सीटियां उसे सोने नहीं देंगी. बच्चों का कमरा पास न हो अन्यथा बच्चों का शोरशराबा उसे परेशान करेगा, बैठक भी पास न हो, वरना टीवी, वीडियो का शोर और आनेजाने वालों की बातें उस की मानसिक शांति भंग करेंगी.

अतः मरीज का कमरा एकांत में हो ताकि उसे पूरी तरह मानसिक शांति व एकांत मिल सके. शोरशराबा उस की नींद भंग न करे.

लेकिन यह कमरा इतना दूर भी न हो कि वह आवाज देता रहे और कोई सुन भी न सके. यदि कमरा दूर है तो उस के कमरे में हर वक्त किसी न किसी को बैठना पड़ेगा ताकि उसे अपने काम के लिए आवाजें न देनी पड़े अन्यथा वह चिड़चिड़ा हो जाएगा और बिना बात घरवालों पर झल्लाता रहेगा.

ध्यान रहे कि जब किसी कामकाजी व्यक्ति को मरीज बन कर घर में कैद होना पड़ता है तो वह शारीरिक रोगी के साथसाथ मानसिक रोगी भी हो जाता है क्योंकि उसे हर वक्त यही लगता है कि वह निकम्मा है, दूसरों पर बोझ है. ऐसी अवस्था में अपेक्षाकृत अधिक प्यार व सहानुभूति जताने की आवश्यकता होती है. यदि उस की उपेक्षा हुई तो उस का क्रोधित होना स्वाभाविक है.

अतः मरीज की इस मानसिक दशा को ध्यान में रख कर ही उस का कमरा चुनें. कहीं उसे यह न लगे कि आप ने उसे कोने में पटक दिया है.

उस की सुविधा के लिए निम्नलिखित बातों का भी ध्यान रखें :

● बिस्तर के पास एक घंटी लगा दें ताकि जरूरत पड़ने पर वह आप को बुलाने के लिए घंटी बजा दे. यदि घंटी का एक कनेक्शन मित्र पड़ोसी के घर में भी हो तो बेहतर है, ताकि जब आप को घर से बाहर जाना हो तो वह पड़ोसी को बुला सके.

● मरीज के कमरे में खिड़की हो ताकि ताजा हवा आती रहे और उसे घुटन महसूस न हो. यदि आप उसे ऐसा कमरा दे सकें, जिस का एक दरवाजा सामने लान या बरामदे में खुलता हो तो बेहतर होगा क्योंकि मरीज यदि बाहर कुरसी डाल कर बैठना चाहे या टहलना चाहे तो जा सकता है.

वैसे भी मरीज को देखने डाक्टर और ऐसे लोग भी आ सकते हैं जिन का प्रवेश आप घर के अंदर से हो कर नहीं करा सकते. ऐसे लोग यदि सीधे मरीज के ही कमरे में जाएं तो बेहतर रहता है.

● मरीज के कमरे से जुड़ा हुआ शौचालय व बाथरूम यानी अटैच्ड टायलट हो, ताकि उसे कमरे के बाहर जाने का कष्ट न करना पड़े.

● मरीज के बिस्तर के पास एक अलमारी हो जिस में वह अपनी जरूरत का सामान रख सके, ताकि आवश्यकता पड़ने पर वह बिस्तर से उठे बिना भी अपना काम कर सके.

● यदि संभव हो तो मरीज के कमरे में फ्रिज भी रखें. फ्रिज उस की पहुंच से अधिक दूर न हो, ताकि वह जब चाहे खुद पानी पी सके. यदि फ्रिज की व्यवस्था न हो सके तो आइसबाक्स रख सकते हैं.

● मरीज के पास एक लिखने का पैड और पेन भी रखें, ताकि यदि वह स्वयं कुछ लिखना चाहे तो लिख सके.

● यदि संभव हो तो घर के बाहर या मरीज के कमरे के बाहर मुलाकात का समय बोर्ड पर लिख दें ताकि सारा दिन आनेजाने वाले मुलाकातियों से छुटकारा मिले, जो जब चाहे आ कर मरीज को परेशान करते हैं. यह उस अवस्था में और भी आवश्यक है

सरिता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब घर में कभी कभी मरीज को अकेला रहना पड़ता है. यदि बारबार दरवाजे पर घंटी बजती रही तो वह आराम नहीं कर सकेगा. अतः घर में आनेजाने वालों के लिए समय निर्धारित कर दें.

यदि मरीज के लिए आप अलग कमरा नहीं दे सकते और वह बैठक में रहता है तो यह और भी आवश्यक है क्योंकि जो पुरुष काम करने के आदी होते हैं वे बिस्तर पर भी निठल्ले नहीं बैठ सकते. उन की दिलचस्पी दफ्तर व व्यापार में अधिक होती है. उन्हें अपने व्यापार और दफ्तर की सारी जानकारी मिलती रहे इस के लिए फोन लगवा दें.

● यदि कमरे में टीवी लगवा सकें तो बेहतर है ताकि वह पड़ापड़ा उकताए नहीं, उस का मनोरंजन हो सके.

दैनिक कार्य क्या हों

हस्पताल में मरीज की देखरेख के लिए नर्स होती हैं जो उस के दैनिक कार्य करती है. उस की सेवा के लिए एक बंधा हुआ कार्यक्रम होता है.

वैसे तो घर में भी मरीज के लिए नर्स मिल जाती है. लेकिन वह महंगी तो होती ही है और वह घर का सदस्य भी तो नहीं बन सकती. अतः मरीज को भरपूर प्यार, ममता देना और सहानुभूतिपूर्ण हृदय से उस की सेवा करने का कार्य घर का कोई भी युवा सदस्य कर सकता है जो अपनी सेवाभावना द्वारा मरीज पर मनोवैज्ञानिक प्रभाव डाल कर उसे अपेक्षाकृत जल्दी ठीक कर सकता है और उसे खुश रख सकता है.

मरीज की देखभाल करने वाले को साफसुथरे कपड़े पहनने चाहिए. सफाई पर विशेष ध्यान देना चाहिए. वह चुस्तचौकस नजर आना चाहिए. उस की दिनचर्या इस प्रकार होनी चाहिए :

● मरीज को स्पंज कराना या नहलाना व कपड़े बदलना.

● बिस्तर की चादर बदलना. यदि मरीज बिस्तर से उठने लायक न हो तो उस

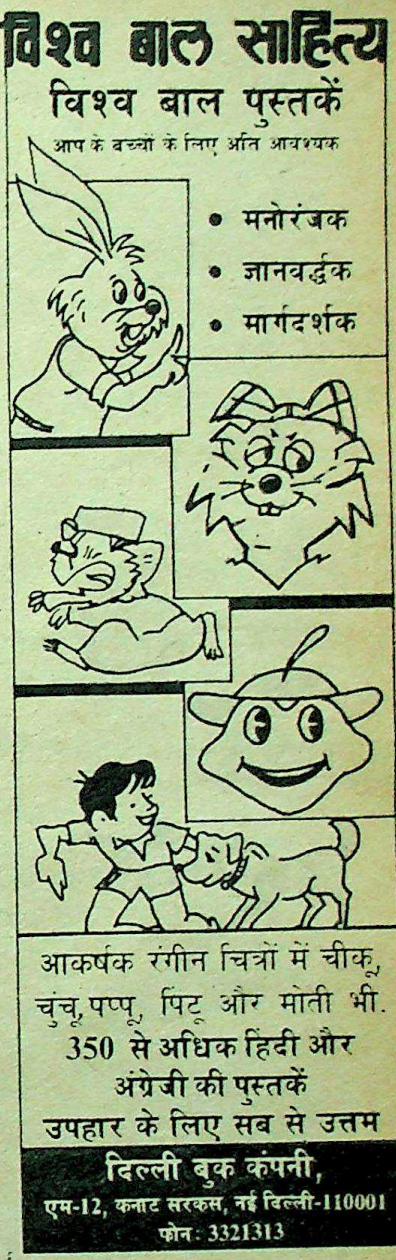

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नेलकटर आदि भी कमरे में ही रखें.

का करवट बदल कर आधा चादर राल कर के बिछाएं. इसी प्रकार दूसरा आधा हिस्सा भी बिछाएं.

- कंघी करना, दाढ़ी बनाना.
- कमरे की अच्छी तरह झाड़पोंछ करना.
- मरीज के प्रयोग में लाई हुई वस्तुओं को कीटाणुरहित करना.
- वक्त पर दवाई, भोजन आदि देना.
- मरीज की शारीरिक अवस्था का लिखित रेकार्ड बनाना जो डाक्टर को दिखाया जा सके. इस के अंतर्गत यह सब लिखें :

क. मरीज को दिए जाने वाले खाद्य पदार्थों (द्रव और ढीला आहार) की मात्रा.

ख. शौच आदि का विवरण (कितनी बार और कैसा).

ग. मूत्रत्याग का विवरण (कितनी बार, मात्रा, जलन आदि तो नहीं है).

घ. दिन में तीन वक्त सुबह, दोपहर, शाम शरीर का तापमान लेना.

ड. शारीरिक और मानसिक अवस्था (बेचैनी, खुशी, दर्द, आदि का विवरण).

च. नींद (कितने घंटे, कैसी).

छ. दवाइयां (कौन सी और कितनी दीं).

आहार : मरीज भोजन से जी जरूर चुराते हैं. अकसर यह भी होता है कि वे जो कुछ खाना चाहते हैं वह डाक्टर नहीं खाने देते और जो उन्हें स्वाद नहीं लगता वे ही खाना पड़ता है. ऐसी दशा में भोजन से अरुचि होना स्वाभाविक है.

लेकिन स्वास्थ्य लाभ के लिए सही वक्त पर सही खुराक लेना भी जरूरी है. अतः घर के सदस्यों को यह भी देखना पड़ेगा कि भोजन मरीज के हिसाब से बने.

उदाहरण के लिए, यदि मरीज को उबली सब्जियों से नफरत है और घी, तेल खाना सख्त मना है तो सब्जियों को नानस्टिक पैन में बनाइए, पानी सुखा कर ऊपर से थोड़ा सा टमाटर, नीबू, कच्चा प्याज आदि डाल कर दीजिए. इसी प्रकार सूप में भी ब्रेड के छोटे छोटे टुकड़े आदि भून कर डाल दीजिए तो मरीज सूप भी लेने लगेगा. यदि दूध नहीं पीना चाहता तो छाछ, दही, लस्सी आदि दीजिए. फलों का रस या फलों की चाट भी दी जा सकती है. इस प्रकार मरीज की इच्छानुसार खाना खिलाइए ताकि वह खाने में नागा न करे क्योंकि स्वास्थ्य लाभ के लिए सही खुराक लेना भी बहुत जरूरी है.

मनोरंजन : जिस प्रकार शारीरिक स्वास्थ्य के लिए खुराक आवश्यक है उसी प्रकार मानसिक स्वास्थ्य के लिए मनोरंजन भी आवश्यक है क्योंकि बिस्तर पर पड़ेपड़े मरीज उकता जाता है. यह खालीपन और बोरियत का अहसास यदि दूर न हो तो वह घरवालों के लिए और भी समस्या खड़ी कर सकता है. अतः मरीज के मनोरंजन का भी ध्यान रखें.

इस के लिए मरीज को जो भी पसंद हो वहां ला दें. यदि वह टीवी, वीडियो देख सकता है तो उसे मनपसंद कैसेट ला दें. किताबों का शौकीन हो तो किताबें ला दें. यदि टीवी देखने की मनाही हो तो टेपरिकार्डर व उस की मनपसंद कैसेट ला दें. यदि वह ताश का शौकीन हो तो उस के साथ ताश आदि भी खेलें.

आप उस के मनोरंजन के वक्त भी साथ रहें. यह नहीं कि टीवी लगा कर खुद काम करने चले जाएं. उसे अकेलापन महसूस न होने दें वरना वह अपने आप को उपेक्षित समझेगा.

मरीज की देखभाल करने वालों के लिए यह ध्यान रखना बहुत आवश्यक है कि वे उस की बीमारी की बात सिर्फ डाक्टर से ही करें. मरीज को उस की बीमारी की गंभीरता के बारे में कभी न बताएं अन्यथा वह स्वयं ही निराश व हताश हो जाएगा और इस कारण उस के ठीक होने में अधिक वक्त लगेगा. आप का काम सिर्फ यही है कि आप मरीज को प्रोत्साहन दें, भलीभांति उस की सेवा करें, ताकि वह स्वास्थ्य लाभ की दिशा में जल्दी कदम बढ़ाए. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रेडी वन, टू, थ्री

सरिता, बीस साल पहले,
फरवरी (द्वितीय) 1971

दौड़ कर मैं अपने कैमरे के पीछे आ गया. फिर बोला, "अच्छा, साहब, रेडी! वन, टू, थ्री... ओह, ओह, यह क्या करते हैं, साहब, आप से किस ने कहा था कि आप अपनी बीवी की तरफ देखने लग जाएं. यह आप ने छठी बार मेरी फिल्म खराब करवा दी है." मैं गुस्से में आ कर बोला.

"अजी, मैं जरा जूं देखने लग गया कि जे मेरी बीवी ठीक भी बैठी है कि नहीं." हरियाणे का चौधरी बोला.

मैं ने तड़प कर कहा, "चौधरीजी, मैं आप को पहले भी समझा चुका हूं कि यह देखना मेरा काम है कि आप की घरवाली ठीक तरह से देख रही है या नहीं."

"बुरा मत मान, भाई, बात जे है कि हमणे जे फोटू अमरीका अपने बेटे के कणे भेजनी है," चौधरी ने आजिजी से कहा.

मैं सातवीं बार फिर उन दोनों को ठीक से बैठा कर आया. इस बार सावधानी के तौर पर 'रेडी वन, टू, थ्री' जरा धीरेधीरे बोला. तब कहीं जा कर 25 मिनट में उस जोड़े का फोटो ले पाया.

मुझ जैसे पेशेवर फोटोग्राफर को ऐसे लोगों से रोज ही वास्ता पड़ता है. धंधे का मामला होता है अतः हमारी भरसक कोशिश रहती है कि किसी भी ग्राहक से जोर से या रुखाई से न बोला जाए, पर

व्यंग्य ● देवेंद्र पाबले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पेशेवर फोटोग्राफर को फोटो खींचने के दौरान ऐसेऐसे लोगों से पाला पड़ता है कि अपना ही सिर धुनने को मन करने लगता है. ग्राहकों को खुश करने के लिए कैसेकैसे पापड़ बेलने पड़ते हैं इस का एक नजारा आप भी देखिए.

कभीकभी यह जरूरी हो जाता है.

दूसरे दिन चौधरी साहब अपना फोटो लेने आए, देखते ही चौंक पड़े, "अरे भाई, जे तू ने क्या कर दिया? म्हारी चौधरानी की आंख के ऊपर या क्या है?"

मैं ने गौर से देख कर बताया, "अजी, यह तो चोट का निशान है."

"सो तो म्हणें भी पता है, पर जे फोटू में क्यों आया? अरे, हमणें तम्ने कही दी है कि जे फोटू अमरीका भेजना है. वहां हमारा बेटा इस को गोरीगोरी मेमा को दिखाएगा तो वे क्या कहेंगी?"

मैं ने लाख समझाना चाहा कि चौधरीजी, फोटो में तो वही आता है जो चेहरे में होता है, पर उस की समझ का दरवाजा शायद बंद था. अंत में मुझे एक तरकीब सूझी. मैं उस फोटो को अंदर ले गया और ब्रश ले कर काले रंग से उस दाग को भर दिया.

अब चौधरीजी खुश हो कर बोले, "जे हुई न बात." और वह खुशीखुशी विदा हो गया.

ऐसे ही एक दिन मैं शाम के समय अपने ग्राहकों को निबटा रहा था कि अचानक किसी के चांटा मारने की आवाज आई. सब लोग चौंक पड़े. देखा तो पता चला कि एक ग्राहक ने मेरे सहयोगी को, जो एक तरफ बैठा एक फोटो रंग रहा था, थप्पड़ मार दिया है. मेरी भी समझ में न आया. सहयोगी भी बेचारा भौचक्का रह गया. वह अपना गाल सहलाता हुआ थप्पड़ मारे जाने का कारण सोच रहा था कि मैं ने आगे जा कर ग्राहक से पूछा, "क्या बात हो गई, भाई साहब."

"अजी देखो, यह उल्लू का पट्ठा मेरे सामने मेरी बीवी को चाटे जा रहा है." वह ऊंचे व क्रोध भरे स्वर में बोला. मैं ने घूम कर देखा तो उस की बीवी को दुकान के दरवाजे पर खड़ा देखा. अपने पति को जोरजोर से बोलता देख कर वह भी अंदर आ रही थी. इतने में उस ग्राहक ने मेरी सहयोगी के हाथ से रंग किए जा रहे फोटो को छीन कर मुझे दे दिया और कहा, "मैं बड़ी देर से देख रहा हूं, यह बारबार मेरी बीवी का फोटो चाटे जा रहा है."

अब जा कर मामला समझ में आया. दरअसल उस ग्राहक की बीवी के सादे फोटो को रंग किया जा रहा था. जैसे कि रंग करने वाले को आदत पड़ जाती है, जरा सा ज्यादा रंग लग जाने पर वह उसे सादे पानी के ब्रश से साफ करने की तबालत से बचने के लिए अपनी जीभ से चाट कर साफ कर लेता है. मैं उसे सारी बात समझाने लगा ही था कि उस ने फुरती से तीनों फोटो ले कर फाड़ दिए और यह कह कर चलता बना कि हमें नहीं चाहिए तुम्हारे ये फोटो.

इस धंधे में बड़े आदमियों से निपटना उतना कठिन नहीं है जितना कि बच्चों से. एक साहब मुझे एक बार अपने घर 10 दिन के बच्चे का फोटो खिचवाने के लिए ले गए. बच्चा अपने सहारे बैठ नहीं सकता था. अतः मैं ने उसे जमीन पर एक चादर बिछा कर फोटो खींचने का विचार किया. सब कुछ सैट हो गया. जैसे ही मैं फोकस ले कर बच्चे का फोटो खींचने को नीचे झुका कि उस छोटे पहलवान ने पेशाब की एक जोरदार धार मार कर मुझे और मेरे कैमरे को तर कर दिया. हड़बड़ा कर मैं पीछे हटा. 15 मिनट तक कैमरे को सुखाता रहा. उस में लगी पहली रील खराब हो गई तो दूसरी बदली. फिर कुछ दूर हट कर जल्दी से फोटो खींच

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

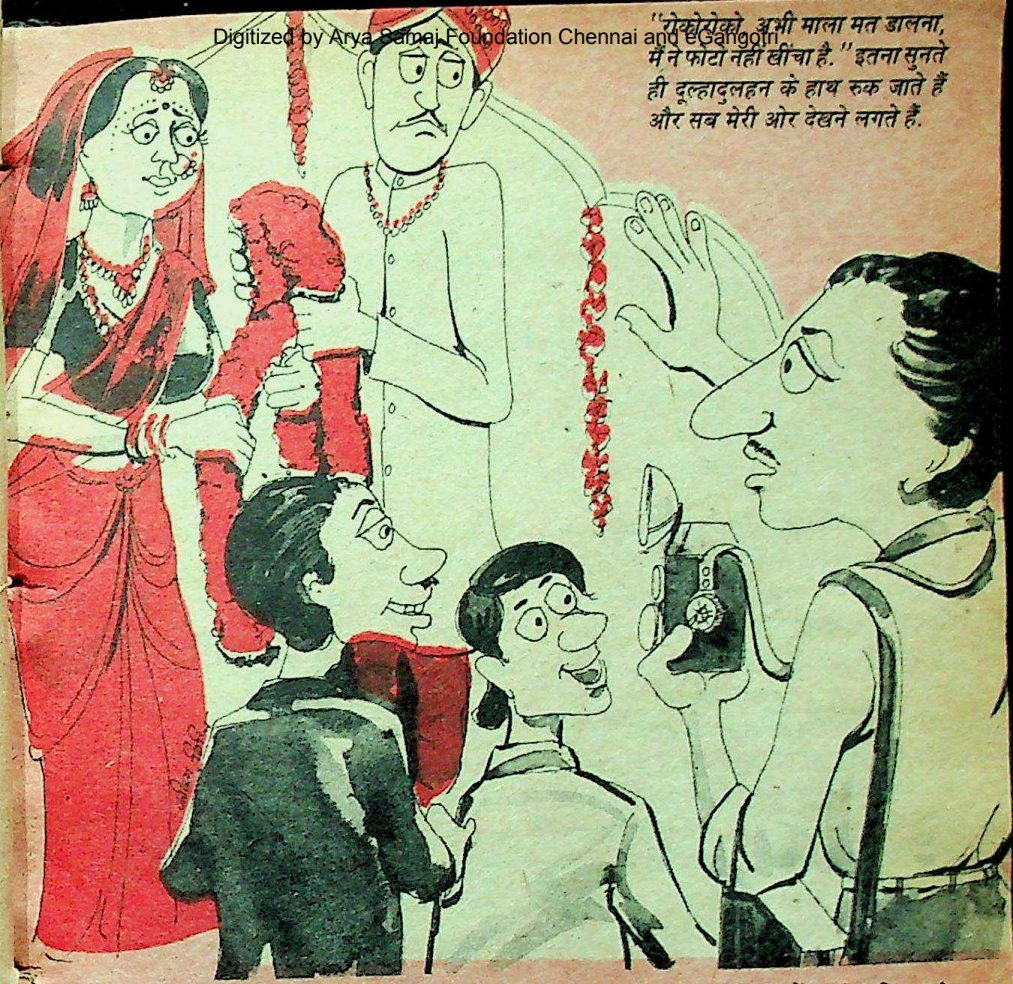

"रोको रोको, अभी माला मत डालना, मैं ने फोटो नहीं खींचा है." इतना सुनते ही दूल्हादुलहन के हाथ रुक जाते हैं और सब मेरी ओर देखने लगते हैं.

कर वहां से नजात पाई. उस दिन के बाद से मैं बच्चों का फोटो खींचने किसी के घर नहीं जाता.

लेकिन फिर भी चैन नहीं है. आखिर बच्चे स्टुडियो में तो खिचवाने आते ही हैं. कोई बच्चा कैमरे और स्टुडियो की तेज लाइटों को देख कर डर जाता है, तो बस एक बार रोना शुरू कर के चुप रहने का नाम ही नहीं लेता. मेरे साथसाथ उस के मातापिता भी पूरा जोर लगाते हैं कि किसी तरह बच्चा रोना बंद कर के मुसकरा दे. अंत में जब बच्चा जरा सांस लेने के लिए रुकता है तो मैं झट से बटन दबा देता हूं.

कुछ बड़े बच्चे तो और भी अधिक तंग करते हैं. उन को एक बार ठीक से बैठा कर या खड़ा कर के आता हूं तो जैसे ही कैमरे से झांकता हूं तो खड़ा बच्चा बैठा और बैठा बच्चा खड़ा पाता हूं. कभी बच्चे को कहता हूं कि मेरे दाएं हाथ की ओर देखो तो वह एक बार उधर देख कर मेरी बाईं ओर खड़े अपने मातापिता को देखने उधर मुड़ जाता है.

एक बार एक बच्चा अपनी स्कूली पोशाक में फोटो खिचवाने आया. उस के हाथ में उस की स्कूल ले जाने वाली अटैची भी थी. जब मैं सब कुछ सैट कर के अपने कैमरे के पीछे आया तो बच्चे को न जाने क्या

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूझा कि उस ने हाथ की अटैची नीचे रख दी. फिर तो बड़ी मुशकिल से बच्चे को इस बात के लिए राजी किया जा सका कि वह अटैची अपने हाथ में पकड़ ले. प्रायः ही बच्चों को यह कह कर कैमरे की तरफ देखने को बाध्य करना पड़ता है कि इस में एक चिड़िया निकलेगी. जब इस पर भी बच्चा अड़ा रहता है तो उसे टाफी आदि का प्रलोभन दे कर सीधे खड़ा या बैठे रहने को मनाना होता है. एक बार एक मनचला बच्चा मेरा कैमरा लेने की ही जिद करने लग गया और मना करने पर जमीन पर समाजवादी कार्यकर्ताओं की तरह लेट गया. उस दिन मैं ने उस सत्याग्रही से कैसे अपना पिंड छुड़ाया, यह मैं ही जानता हूं.

वैसे लड़कियां और औरतें भी फोटो खिचवाते समय काफी परेशान करती हैं. ऐसे सजसंवर कर आती हैं मानो किसी फैशन परेड में जा रही हों. उन्हें इस बात की तनिक भी परवाह नहीं होती कि जो कपड़ा वे पहने हैं, वह उन पर अच्छा लग रहा है या नहीं. लाख समझाने पर भी अपनी मरजी का पोज बना कर बैठेंगी. फोटोग्राफर का कहना बिलकुल नहीं मानेंगी. जब अपना फोटो देखेंगी तो फोटोग्राफर को दोष देंगी कि उस ने फोटो अच्छा नहीं खींचा. उन की समझ में इतना नहीं आता कि फोटोग्राफर उन का अच्छे से अच्छा फोटो खींचने के लिए ही उन को कोई पोज सुझाता है क्योंकि हरेक का हरेक पोज में फोटो अच्छा नहीं आता.

जो लड़कियां शादी के लिए फोटो खिचवाने आती हैं वे तो और भी तंग करती हैं. काली लड़की फरमाइश करेगी कि फोटो में उस का रंग काले से गोरा हो जाए ताकि लड़के वाले पहली बार में ही मना न कर दें. जो लड़की छोटे कद की होगी वह फरमाइश करेगी कि उस का चित्र ऐसा आए कि वह अपने कद से काफी लंबी लगे. इसी कोशिश में कई ऊंचा सा जूड़ा बना कर आती हैं. मोटी लड़की चाहती है कि उस का चित्र पतली लड़की सा चित्र लगे. जिस की हड्डियां निकली होती हैं, वह चाहती है कि उन हड्डियों पर कुछ मांस भी चढ़ा हुआ दिखना चाहिए. और क्या करें, साहब! अपने पेट और धंधे व स्टुडियो के नाम की खातिर कुछ ऐसे पोजों में फोटो खींचना पड़ता है कि उन के मन की मुराद बिलकुल पूरी न सही, कम से कम कुछ हद तक तो पूरी हो जाए.

ये तो हुई स्टुडियो की बातें! आउटडोर फोटोग्राफी का अपना ही मजा है. मैं अकसर ब्याहशादियों में फोटो खींचने जाता रहता हूं. वहां लोगों को अपना फोटो खिचवाने के चक्कर में एकदूसरे के सामने आने की जो होड़ मचती है वह देखने लायक होती है. अपना फोटो खिचवाने के लोभ में लोग भूल जाते हैं कि जिस की शादी हो रही है उस का भी तो एकाध फोटो खींच लेने दें. अकसर आप ने शादीब्याह के फोटो में देखा होगा कि कुछ लोगों की शुतुरमुर्ग जैसी गरदन ही दिखाई देती है. ऐसे लोगों को हम लोग लाख चाहने पर भी टाल नहीं पाते हैं.

कई दूल्हे या दुलहन फोटो खिचवाने के इतने शौकीन होते हैं कि वे सारे समय कैमरे और कैमरे वाले को ही देखते रहते हैं और ब्याह की रस्मों में गड़बड़ा जाते हैं. लड़की वाले भी फोटोग्राफर की अच्छी खातिर करते हैं. उन के मन में कहीं यह आशंका छिपी रहती है कि शायद फोटोग्राफर हम पर खुश हो जाए और हमारा भी एकाध फोटो खींच ले.

ब्याहशादी के रेलपेल में फोटो खींचना कोई आसान काम नहीं. मगर कई फोटो ऐसे होते हैं जो जरूर ही खींचने होते हैं जैसे जयमाला का चित्र. मैं कई बार यह फोटो लेने के लिए समय से ठीक स्थान पर नहीं पहुंच पाता हूं या फिर ठीक से फोकस नहीं मिला पाता, तब मैं एक ही काम करता हूं. जब जयमाला होने लगती है तो मैं चिल्ला पड़ता हूं, "रोको, रोको, अभी माला मत डालना, मैं ने फोटो नहीं खींचा है."

फौरन दूल्हादुलहन के हाथ रुक जाते हैं. सब की निगाह मेरी तरफ उठ जाती है और मैं आराम से दूल्हादुलहन को घेरे खड़े

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ZOOO

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नेलकटर आदि भी कभी-कभी रखें

लोगों को पीछे हटा कर, फोकस मिला कर कहता हूं, "हां, अब डालो माला." अगर कभी माला डल चुकी होती है तो मैं उन से इस क्रिया को पुनः दोहराने के लिए कहता हूं, फोटो की खातिर दोबारा जयमाला डाली जाती है.

एक दिन एक शादी में एक शरारती सा नौजवान मेरे पास मुसकराता आया. मैं घबराया कि यह जरूर किसी युवती की फोटो खिचवाना चाहता है, जिसे यह बाद में मुझ से ले जाएगा. कुछ गड़बड़ हो गई तो मैं बेकार में मारा जाऊंगा, मगर उस ने कोई ऐसी बात नहीं की. वह तो मुसकराता हुआ बोला, "भाई, एक बात तो बताइए, जब आप फोटो खींचने लगते हैं तो होंठों में क्या बुदबुदाते हैं? कोई मंत्र आदि पढ़ते हैं, क्या?"

मैं थोड़ा शरमा सा गया. सच कहूं तो झेंप गया. मैं ने सफाई देते हुए कहा, "नहीं भैया, यह बात नहीं है. दरअसल मैं कोई मंत्र नहीं पढ़ता, फोकस मिलाने के लिए हिसाब लगाता हूं कि कितना अपरचर देना है और कितनी स्पीड और यह कि कैमरे और व्यक्ति के बीच में फासला कितना है? यह मैं इसलिए करता हूं कि फोटो अच्छा और फोकस में आ जाए."

मेरा उत्तर सुन कर वह नौजवान जैसे मुसकराता हुआ आया था वैसे ही चला गया.

आम तौर पर लोग अपनी जरूरत का अंदाज दे देते हैं कि उन्हें शादी के किसकिस वक्त के कितने फोटो चाहिए. फोटोग्राफर उसी हिसाब से फोटो खींच लेता है.

एक बार मारवाड़ी सज्जन मेरे पास आए और अपने बेटे के विवाह के फोटो खींचने की बात करने लगे. सब से पहले उन्होंने रेट पूछा. मैं ने बताया, "प्रति फोटो छः रुपए."

वह थोड़ा चौंक कर बोले, "अजी साहब, यह तो बहुत ज्यादा है."

मैं ने उन्हें समझाया, "अजी बाजार में कोई एक पैसा भी कम ले तो मैं बिलकुल पैसे नहीं लूंगा."

इस पर उन्हें मेरी बात का विश्वास तो शायद नहीं हुआ पर वह उस के जवाब में कुछ कह भी न सके. फिर वह बुदबुदाने लगे, उन के होंठ फड़फड़ाने लगे और अपनी उंगलियों पर कुछ गिनने लगे. फिर कुछ देर आंखें बंद करने के बाद वह बोले, "अच्छा जी? म्हाकी शादी में 16 फोटो खींच दीजो."

मैं ने उन का नामपता नोट कर लिया. निश्चित हो कर मैं समय से पहुंच गया. मैं ने धीरे धीरे फोटो खींचने शुरू किए. अचानक मुझे लगा कि वह सज्जन मेरे आगेपीछे ही फिर रहे हैं और जब भी मैं कोई फोटो खींचता हूं, वह मन ही मन बुदबुदाते हैं. मैं डरा कि शायद वह मेरे रेट ज्यादा होने की बात सोच कर हड़बड़ा रहे हैं. खैर, बरात रवाना हुई. मैं भी बरात के साथसाथ फोटो खींचता चला. जब बरात लड़की वालों के घर के पास पहुंची तो मैं ने फोटो खींचने के लिए अपना कैमरा साधा. वह आंधी की फुरती से मेरे पास दौड़े और घबराए स्वर में बोले, "अजी बस करो ना, आप 16 फोटो खींच चुके. अब और मत खींचो."

मुझे अचानक हंसी आ गई. मैं ने उन्हें समझाया, "अजी, आप इस की चिंता मत करो कि मैं कितनी फोटो खींचता हूं. आप को जितनी चाहिए हों उतनी ही लेना. 16 से ऊपर बेचने के लिए मैं कोई जोरजबरदस्ती नहीं करूंगा."

बड़े ही अनमने मन से वह चले गए. ऐसे लोगों का इलाज मुझे मालूम ही था. अतः जब मैं 32 फोटो तैयार कर के ले गया तो अपने घरवालों के आग्रह पर वह बेचारे मारवाड़ी सज्जन कुछ न कर सके और उन्हें मुझे 32 फोटो के पैसों के साथ एलबम के पैसे भी देने पड़े.

क्या करें, फोटोग्राफी का धंधा ही ऐसा है. सब को किसी न किसी तरह से खुश करना पड़ता है. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छोट

(पृष्ठ 60 का शेषांश)

करने के लहजे से लगा कि वह मुझे ले कर गंभीर हो उठा है.

खैर, दूसरे दिन हम दोनों मांबेटी उसे विदा करने सड़क तक गई थीं. बस से उस का लहराता हुआ हाथ दूर तक दिखता रहा था. चाची आश्चर्य में थीं, "यह लड़का अब की बार जाने में कैसा दुखी हुआ है? पहले तो खुशीखुशी चला जाता था."

"बड़ा हो कर मोहममता समझने लगा है." चाचा अति भावुक हो कर कह उठे थे.

लेकिन मैं जानती थी कि उस का मन किस संताप से झुलस रहा था, उस के कदम क्यों पीछे को खिंच रहे थे. अंत तक उस की दृष्टि कहां उलझ रही थी.

प्रभाष तो चला गया, लेकिन चाची के घर मेरा जाना ज्यों का त्यों था. मुझे सुभाष की आंखों की मूक वेदना न जाने क्यों हर पल पुकारती सी प्रतीत होती थी.

उस की लाचारी मेरे मन को उस के इर्दगिर्द उड़ा ले जाती थी. न जाने क्यों उस की बेबसी का बादल मेरी आंखों से बरसने लगता था.

एक दिन चाची ने रोतेरोते उस क्षण की भी कथा सुना डाली थी, जिस ने सुभाष का जीवन अपाहिज कर रख दिया था, "बिटिया, कोई चोट में चोट थी? मामूली सी तकरार थी, दोनों भाई लड़ मरे. सुभाष का पांव पत्थर से टकरा गया. किसी ने कोई विशेष ध्यान नहीं दिया. बुखार चढ़ा तो उतरा नहीं. हस्पताल ले गए तो डाक्टर ने कुछ और ही कहा, "यह चोट देख रहे हो प्रधानजी, जहर फैला जा रहा है... पांव काटना पड़ेगा.

"उस समय लगा था, बिटिया, हम अंधे कुएं में समाते जा रहे हैं. इस की जिंदगी बच गई बस..."

मेरा मन कसैला हो गया था. पास ही बैठी मां की आंखें भी तरल हो उठी थीं. यह कथा हम बरामदे में सुन रहे थे और सुभाष सामने कमरे में चारपाई पर बैठा कहीं शून्य में ताक रहा था. उस वक्त हम से बैठा नहीं गया. मां ने मुझ से चलने को कहा तो मैं भारी कदमों से चल पड़ी.

अब सुभाष के पास मैं रोज ही जाती थी. एक दिन मैं ने उस से कहा, "अब तो कृत्रिम पैर बनने लगे हैं, सुभाष. जब पैर बन जाएगा तो तुम ठीक से चलने भी लगोगे."

सुन कर फीकी सी मुसकराहट उस के होंठों पर उभर आई थी.

प्रभाष के जाने के एक हफ्ते बाद ही मुझे उस का पत्र मिला था.

प्रिय मीता,

अब की बार लगता है, अपना सब कुछ गांव में ही छोड़ आया हूं. यहां आ कर किसी चीज में मन नहीं लग रहा. सोचने बैठता हूं तो तुम सड़क पर साइकिल पर जाती दिखती हो. किताबें खोलता हूं तो पन्नों पर तुम्हारी तसवीर उभर आती है और नींद में, सपनों में तुम... बस तुम... परीक्षा दे कर जल्दी ही घर आऊंगा. तुम क्या मुझे याद नहीं करती, मीता?

—प्रभाष

मेरी समझ में नहीं आ रहा था यह पत्र कहां छिपाऊं. अच्छा हुआ कि कालिज के पते पर भेजा था, गांव में आता तो चाचाचाची मेरे बारे में न जाने क्या सोचते. मैं ने पत्र फाड़ कर फेंक दिया था.

सुभाष के साथ मैं दूर खेतों की ओर निकल जाती थी. वह धीरेधीरे चलता, मगर मेरे साथ बातें करता दूर तक चला आता. अब वह दिन प्रतिदिन बदल रहा था. आशाओं के तिनके बीनबीन कर जोड़ने लगा था. आंखों में लाचारी की जगह मोहक चमक जगमगाने लगी थी.

होली समीप थी. गांव में चारों ओर उत्साह भरा वातावरण था. नीले आसमान तले दूर तक मनमोहक दृश्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नेलकटर आदि भी कमरे में ही रखें

बालों का भी ध्यान रखें

देखतेदखते सुभाष और मैं दूर तक निकल जाते. जब वह थक जाता तो वहीं किसी पेड़ के नीचे बैठ जाते. मैं कालिज के किस्से उसे सुनाती तो वह हंसने लगता. स्थिर आंखों की झील में जैसे लहरें डोलने लगतीं.

"मीता, एक बात पूछूं?"

"हां सुभाष, पूछो न."

"तुम क्यों इतना खयाल रखती हो मेरा?"

"तुम कैसी बात करते हो सुभाष, यह भी कोई पूछने की बात हुई?"

"मीता, जब से मेरा पांव कटा है, लगता है, दुनिया ने ही मुझ से संबंध काट लिए हैं. सब दोस्त छूट गए. पिताजी पहले बड़ा खयाल करते थे, लेकिन कब तक मेरे अपाहिज शरीर को सहारा देते. अम्मां कहां तक मुझे उठएंबैठएं? मैं उन के किस काम का हूं? उन की कोई उम्मीद पूरी नहीं कर सका, उलटा बोझ बन गया मैं उन के ऊपर. अब तो उन्हें प्रभाष से सारी आशाएं हैं. वही उन के बुढ़ापे को सहारा दे सकेगा. मीता, क्यों होता है ऐसा किसी के साथ? बोलो न आखिर क्यों?" कह कर उस ने अपनी निगाहें मेरे चेहरे पर टिका दीं. मैं क्या उत्तर देती उस के प्रश्न का?

होली की छुट्टी में अचानक प्रभाष आ गया था.

एक रंग भरी परत जो मेरे मन पर उस ने चढ़ा दी थी, उस से आह्लादित तो मैं भी थी. इस रंगों भरे मेले में प्रेम पत्र साथी आ पहुंचा था, उमंगों ने मेरे मन को सराबोर कर दिया था.

"क्यों, आश्चर्य नहीं हुआ मुझे इस तरह अचानक देख कर?" प्रभाष विमोहित सा मुझे देख रहा था.

"हां, आश्चर्य तो हुआ है..."

"पता है, क्यों आया हूं? सिर्फ तुम्हारे लिए... बस."

"मैं जानती हूं, तुम्हारा पत्र मैं ने पढ़ा था."

"उत्तर क्यों नहीं दिया?"

जवाब में मैं खामोश ही रही थी.

शाम को सुभाष के साथ मैं खेतों की ओर से लौट रही थी कि प्रभाष सामने ही खड़ा मिल गया. उस के चेहरे पर जो उतरतेचढ़ते भाव मैं ने देखे थे, उन से मुझे किसी अनिष्ट की आशंका हुई थी. वह मुझ से तो नजरें नहीं मिला सका, लेकिन जो आग्नेय दृष्टि उस ने सुभाष पर फेंकी थी, उस से वह बेचारा कांप सा गया था.

दूसरे दिन मैं सुभाष को लेने गई तो उस ने मेरे साथ जाने से साफ इनकार कर दिया, "मैं नहीं जाऊंगा मीता, मेरे लिए यह कमरा ही ठीक है."

"अरे, क्या हुआ तुम्हें? चलो न... देखो, कल होली है. तुम तो कितने प्रसन्न थे. अब यह क्या...? तुम ने मुझ से वादा किया था न कि मेरे साथ होली खेलोगे... खेलोगे न?"

मैं पूछती रही, लेकिन वह कुछ नहीं बोला. मेरी नजर कमरे के बाहर गई तो देखा, सामने प्रभाष आंगन में टहल रहा था. मैं वहीं बैठी सुभाष को सांत्वना देती रही, उस का हाथ सहलाती रही, आंसू पोंछती रही और यह कह कर बाहर आई, "सुभाष, मैं कल आऊंगी, बिलकुल सफेद कपड़े पहन कर. साथ में रंग और पिचकारी भी लाऊंगी. मुझ पर रंग सब से पहले तुम डालोगे... डालोगे न? वादा करो..." वह डबडबाई आंखों से ही मुसकरा दिया था.

होली के पर्व पर मैं कैसी भीतर तक रससिक्ता हुई डोल रही थी. हरे रंग के कुछ छींटे सुभाष ने अपनी बैसाखी के सहारे खड़े हो कर दूर से ही पिचकारी भर कर मेरे सफेद कुरते पर डाल दिए थे. बदले में मैं ने भी उस के मुख पर गुलाल लगा दिया था.

चाची देख कर मुसकराई थीं, "आज कितने बरस बाद सुभाष जी उठा है..." वह आंसू पोंछे जा रही थीं.

आंगन में आई तो प्रभाष हाथों में गुलाबी रंग का लेप लगाए मुझे रंगने के लिए तैयार खड़ा था,लेकिन मेरे कपड़ों पर रंग के छींटे पड़े देख कर उस ने हाथ नीचे कर लिए और मेरी ओर से मुंह फेर कर दूसरी ओर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चला गया. मैं उस के पीछेपीछे गई, लेकिन उस ने अपने कमरे में जा कर दरवाजा बंद कर लिया.

कमरे में आ कर मैं बैठी ही थी कि चाची के घर से एक करुण चीख सुनाई पड़ी. उलटे पैरों ही सुभाष के कमरे की ओर भागती गई. वहां जा कर देखा तो कलेजा फट कर रह गया.

प्रभाष सुभाष को उसी की बैसाखी से पीटे जा रहा था.

"लंगड़े... आ, तुझे होली खिलाऊं... बड़ा शौक है तुझे होली खलने का... ला खिलाऊं होली..."

चाची उसे रोक रही थीं, लेकिन उस पर तो न जाने कैसा जुनून सवार हो गया था, वह रोके नहीं रुक रहा था. सुभाष की चीखें सुन कर मेरा कलेजा फटने लगा. क्रोध की अग्नि में मैं भी जल उठी. मैं ने प्रभाष को पीछे कालर से पकड़ कर पूरे जोर से खींचा, "बस भी करो, इसे मार ही डालोगे क्या?"

प्रभाष अचकचा कर पीछे की ओर खिंचा चला आया और वहां मुझे पा कर आंखें नीची किए चुपचाप अपने कमरे की ओर चला गया.

मैं ने दौड़ कर सुभाष को गले से लगा लिया, "सुभाष..."

मेरे कंधे पर सिर रख कर वह बच्चों सा बिलख उठा था. सारा दिन मैं वहीं बैठी सोचती रही, 'प्रभाष, वरण तो मैं तुम्हारा भी कर सकती थी, लेकिन... इतनी छोटी सी बात पर... बस रंग के कुछ छींटे... और उस का इतना निर्मम दंड, इस असहाय को. मैं ने एकएक क्षण जोड़ कर आशा का एक छोटा सा बिरवा सुभाष के मन में रोपा था, लेकिन पनपने से पहले ही तुम ने उसे काट डाला... अब मेरातुम्हारा साथ कैसा?'

इस के बाद जब मैं अपने कमरे में आई तो सुभाष को भी अपने साथ लेती आई. कल यानी होली के दूसरे दिन हमारी शादी को पूरे चार साल हो जाएंगे. परंतु लगता है, जैसे कल की ही बात हो. ●

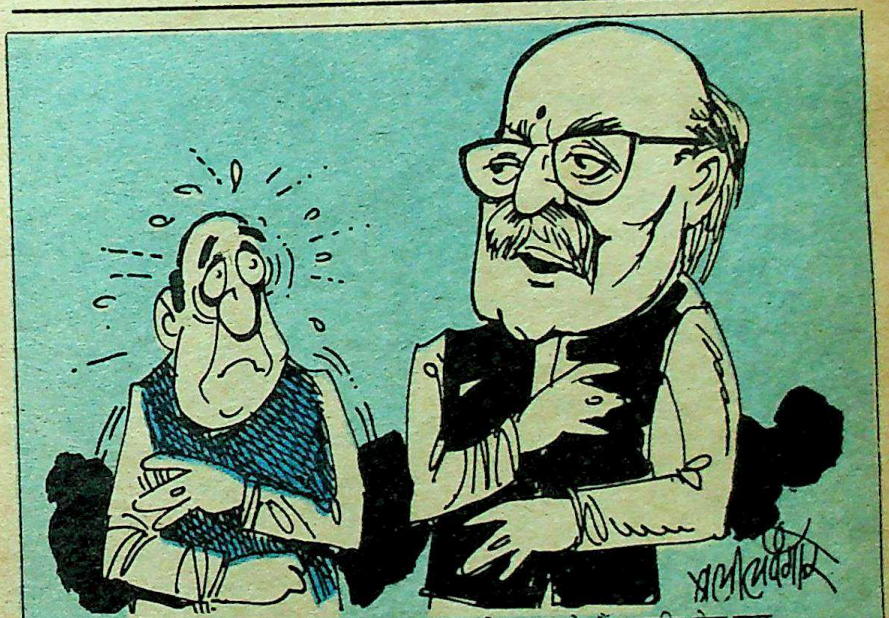

"आप मुझे बारबार रामकृष्ण आडवाणी कह रहे हैं, जबकि मेरा नाम लालकृष्ण आडवाणी है, हे श्री राम..."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नेलकटर आदि भी कमरे में ही रखें.

बातों का भी ध्यान रखें.

एस.एम. वाघेला

(पृष्ठ ४४ का शेषांश)

रख कर उस पर कांच चिपकाते जाते हैं. कभीकभी प्रभाव देखने के लिए तसवीर को खड़ा कर के दूर रख कर देखते हैं. पहले कांच को कम फेवीकोल से चिपकाते हैं. बाद में जब तसवीर पूरी तरह बन जाती है तो उसे पर्याप्त फेवीकोल से चिपका देते हैं. वह बताते हैं, "कांच का अपना स्वयं का भी अस्तित्व होता है. मुझे यह भी देखना होता है कि वह कांच तसवीर के शरीर की बनावट के हिसाब से अपने आप को बदल पाता है या नहीं. वह त्रिआयामी प्रभाव देता है या नहीं."

"आप की तसवीरों में कपड़े पूर्णतः डिजाइनदार लगते हैं. ऐसा आप किस तरह कर पाते हैं?"

श्री वाघेला ने कुछ कांच के टुकड़े दिखाए जिन पर कुछ डिजाइन खुदी हुई थी. "ऐसे टुकडों पर मैं एक रंग या दो रंग लगा कर इन को डिजाइनदार वस्त्रों के स्थान पर प्रयोग करता हूं. कभीकभी मैं सिक्कों या मरकरी ग्लास का भी प्रयोग करता हूं. शीशे का काम करने वालों के यहां से मुझे अकसर शीशे के टुकड़े मिल जाते हैं. मेरी जिंदगी भर का शोध यही है."

वाकई तेज भागते से घोड़ों को देख कर उन के शोध की गंभीरता का पता चलता है. यदि उन्हें प्रकाश में देखें तो उन की गति धीमी दिखाई देती है. घोड़ा अंधेरा करते ही ऐसा लगता है वह सरपट भागे चले जा रहा है. उन के प्रिय विषय हैं छोटे उदयपुर के आदिवासी, मजबूत घोड़े, गांधीजी या कोई प्रकृति का दृश्य.

प्रसिद्ध चित्रकार एन.एस. बेंद्रे ने तभी उन की कला के बारे में कहा था, "श्री वाघेला की कला चित्रकला व क्राफ्ट का अद्भुत संगम है."

"क्या आप अपना कोई शिष्य तैयार कर पाए हैं?"

"चित्रकला तो बहुत से लोग सीखते हैं. लेकिन कांच की चुभन से घबरा कर मोजेइक म्यूरल बनाना छोड़ देते हैं. अभी मैं कह नहीं सकता कि कौन व्यक्ति मेरा काम आगे बढ़ाएगा."

श्री वाघेला सन 1952 से भारत की प्रसिद्ध गैलरियों में प्रदर्शनियां लगा रहे हैं. 1976-77 में उन्हें न्यूयार्क में भारत व्यापार मेले में श्री एम.एस. हुसेन के साथ अपनी प्रदर्शनी लगाने का अवसर मिला था. एयर इंडिया कार्यालय में, मुंबई के ताजमहल होटल में, दिल्ली के अशोक होटल में, प्रधान मंत्री व राष्ट्रपति आवास में व अनेक संग्रहालयों में उन की कलाकृतियां लगी हुई हैं. उद्योगपति जमशेदजी टाटा तो उन की कला को सलाम कह उठे थे.

भारत सरकार के फिल्म प्रभाग ने उन की कला पर वृत्तचित्र बनाया है. दूरदर्शन व आकाशवाणी के माध्यम से उन की कला लोगों तक पहुंचती रही है. गुजरात दिवस के अवसर पर उन्हें एक लाख रुपए का पुरस्कार दे कर सम्मानित किया गया है. उन के आधे म्यूरल तो विदेशी ही खरीद कर ले जाते हैं.

"आप की कला अनोखी है, उस ने एक बिलकुल नए क्षितिज को तलाशा है फिर भी आप की कला का राष्ट्रीय स्तर पर जो मूल्यांकन होना चाहिए था वह क्यों नहीं हो पाया?"

"मैं मध्यम श्रेणी का व्यक्ति हूं. काकटेल पार्टी कर के लोगों को इकट्ठा कर के अपनी प्रशंसा लिखवाना मेरे बस की बात नहीं है. मैं पांच सितारा होटलों में प्रदर्शनी करता हूं लेकिन ठहरता सस्ते से सस्ते होटल में हूं." एस.एम. वाघेला ने बहुत सादगी से उत्तर दिया, जिस में उन की स्पष्टवादिता व आक्रोश का सम्मिश्रण था. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केंद्र और राज्य सरकार के झगड़े में फंसा

अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह

लेख ● मोहनदास

केंद्र सरकार और तमिलनाडु सरकार के झगड़े में फंसा अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह आखिर संपन्न हो ही गया. यह 22वां फिल्म समारोह मद्रास शहर में 10 जनवरी से 20 जनवरी तक चला. इस समारोह के लिए मद्रास शहर का चुनाव पिछली जनता मोरचे की सरकार के सूचना प्रसारण मंत्री पी. उपेंद्र ने किया था. बदली हुई परिस्थितियों में जब चंद्रशेखर सरकार तमिलनाडु सरकार को बरखास्त करने की कोशिश में थी, उस के लिए इस समारोह को संपन्न कराना एक मजबूरी बन

CC-0. I[illegible] Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नेलकटर आदि भी कमरे में ही रखें.

भारत में आयोजित किए जाने वाले अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोहों में हर बार कुछ न कुछ कमियां रह ही जाती हैं. इन समारोहों में जब हम विश्व की बेहतरीन फिल्में दिखाने की व्यवस्था तक नहीं कर सकते तो ऐसे समारोह आयोजित करने का औचित्य ही क्या है?

गया था. इसी लिए शायद प्रधान मंत्री चंद्रशेखर, जिन्हें इस समारोह के उद्घाटन अवसर पर उपस्थित होना था, उपस्थित नहीं हो पाए.

अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोहों का आयोजन फिल्म समारोह निदेशालय, नई दिल्ली द्वारा किया जाता है. यह निदेशालय अब सूचना प्रसारण मंत्रालय के अधीन है. इस बार आयोजित फिल्म समारोह के लिए अधिकृत बजट 60 लाख रुपए रखा गया था. इस 60 लाख रुपए को कैसे फूंकना है, इसी मुद्दे पर फिल्म निदेशालय और राज्य सरकार के अधिकारियों में पहले से ही मतभेद पैदा हो गए थे.

फिल्म निदेशालय की निर्देशिका (श्रीमती) दीपक संधु, जिन्हें समारोह आयोजित करने का अच्छा अनुभव नहीं है, को इस अंतर्राष्ट्रीय स्तर के समारोह की जिम्मेदारी सौंप दी गई. जिस तरह से यह समारोह आयोजित किया गया उस से तो अच्छा था कि इसे आयोजित ही न किया जाता.

तीन वर्ष पहले तक तो अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह प्रतियोगितात्मक होते थे. समारोह के अंत में इस प्रतियोगिता में भाग लेने वाली अच्छी फिल्मों के लिए स्वर्ण मयूर और रजत मयूर जैसे पुरस्कार प्रदान किए जाते थे. इन समारोहों में प्रवेश पाने के लिए अनेक देशों में होड़ सी लगी रहती थी अच्छी से अच्छी फिल्में भेजने की. लेकिन जब से हमारी सरकार ने इन समारोहों को गैरप्रतियोगी बना दिया है, इन में भाग लेने वालों में रुचि कम हो गई है. ऐसे में इन फिल्म

अमरीकी फिल्म 'वार आफ द रोजिज' : दांपत्य संबंधों पर एक अच्छी फिल्म.

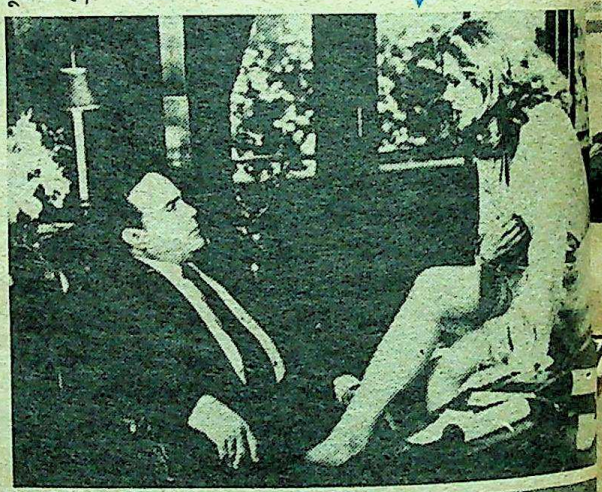

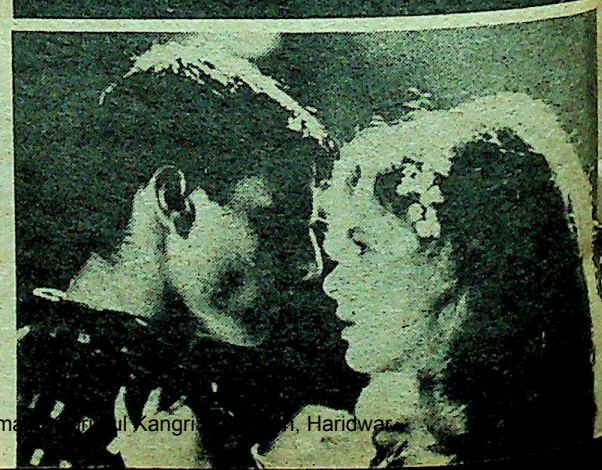

एक और अमरीकी फिल्म 'बोर्न आन द फोर्थ जुलाई' का एक दृश्य : देश पर सर्वस्व न्योछावर करने वाले युवक का आक्रोश.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

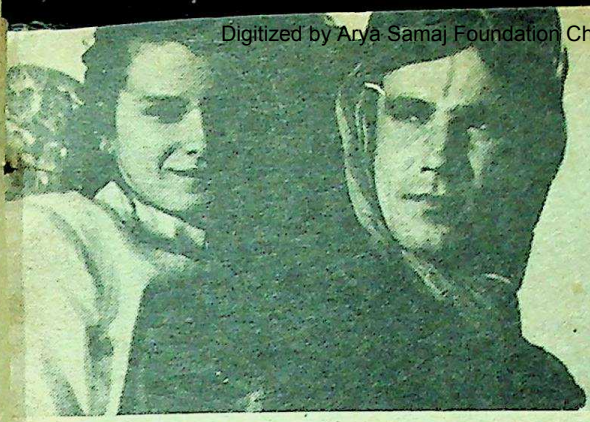

स्वरस्माइल न्यूजर्सी : अमरीका की एक अच्छी प्रविष्टि (ऊपर). भारतीय पेनोरमा के अंतर्गत दिखाई गई हिंदी फिल्म 'लेकिन' के एक दृश्य में डिंपल कापड़िया और विनोद खन्ना (नीचे).

समारोहों का औचित्य ही क्या रह जाता है? क्यों फूंका जाता है लाखोंकरोड़ों रुपया इन समारोहों पर?

इस 22वें अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह में थोड़ी सी प्रविष्टियां ही शामिल हुईं. हालत तो यहां तक हुई कि जो भी प्रविष्टि आई, निदेशालय के अधिकारीगण उसे स्वीकार करते चले गए, बिना सोचेसमझे कि फिल्म कैसी है? इस बार कुल 109 विदेशी फिल्मों को प्रदर्शन के लिए चुना गया.

इस के अलावा, भारतीय पैनोरमा के अंतर्गत 13 फिल्मों का चुनाव किया गया. 12 फिल्मों का चुनाव मुख्य धारा के लिए किया गया. इन में हिंदी की दो फिल्में 'दिल' और 'घायल' शामिल थीं. दिवंगत हुई पांच फिल्मी हस्तियों—शांताराम, शंकर नाग, मनमोहन कृष्ण, अरुंधती देवी, एस. मुखर्जी की दोदो फिल्मों का चुनाव भी प्रदर्शन हेतु किया गया.

'फोकस आन साउथ कोरिया' के अंतर्गत 17 फिल्मों का प्रदर्शन किया गया.

उद्घाटन समारोह

फिल्म समारोह का उद्घाटन 10 जनवरी को बंबई फिल्मोद्योग के जानेमाने कलाकारों के बिना फीका ही रहा. बंबई तो क्या, दक्षिण भारत की सब से प्रसिद्ध अभिनेत्री श्रीदेवी का न आना यह जाहिर करता है कि फिल्म उद्योग के कलाकार इस समारोह को कोई महत्त्व तक नहीं देते.

उद्घाटन भाषण में मुख्य मंत्री करुणानिधि ने तमिल सिनेमा पर ही प्रकाश डाला. केंद्रीय सूचना एवं प्रसारण मंत्री सुबोधकांत सहाय, जो अंगरेजी में अटक-अटक कर बोल रहे थे, ने कहा कि डब फिल्मों पर सेंसरशिप शीघ्र ही खत्म कर दी जाएगी. अपने भाषण में वह कई गलतियां भी कर गए.

फिल्म समारोह निदेशालय के एक अधिकारी ने बताया कि पहले तो मंत्री महोदय का भाषण निदेशालय के अधिकारी ही तैयार कर देते थे परंतु इस बार श्री सुबोधकांत सहाय का यह भाषण सूचना प्रसारण मंत्रालय के अधिकारियों ने तैयार किया था.

उद्घाटन समारोह में उस वक्त हास्यास्पद स्थिति पैदा हो गई जब मंत्री महोदय और राज्यपाल के ठीक ऊपर लगे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नेलकटर आदि भी कमर में ही रखे.

बैनर पर चिपके अक्षरों में से एक अक्षर अचानक नीचे गिर पड़ा और 'इंटरनेशनल' शब्द अपनेआप में कुछ और ही बन गया.

चकोस्लोवाकिया, फ्रांस तथा ब्रिटेन के सहयोग से बनी 'दि लास्ट बटर फ्लाई' उद्घाटन फिल्म, सर्वश्रेष्ठ कही जाने वाली फिल्म को देख कर दर्शकों को निराशा ही हुई.

कुछ अच्छी फिल्में

समारोह में दिखाई गई विदेशी फिल्मों में अधिकांश अच्छी फिल्में अमरीका की थीं. तकनीक की दृष्टि से और अभिनय की दृष्टि से भी. 'बोर्न आन द फोर्थ जुलाई' और 'द वार आफ रोजिज' फिल्में खास तौर पर क़ाबिले तारीफ थीं. 'बोर्न आन द फोर्थ जुलाई' में एक युवक को अपने देश की ओर से वियतनाम युद्ध में लड़ने के लिए जाना पड़ता है. युद्ध में वह अपंग हो जाता है. वापस लौटने पर उसे लगता है कि जिस देश के लिए उस ने कुरबानी दी, वही देश अब उस की परवाह तक नहीं करता. वह देश व राष्ट्रपति को गालियां देता है.

'द वार आफ द रोजिज' एक दुखांत कहानी है जो एक वकील अपने ग्राहक को सावधान करने के लिए सुना रहा है ताकि वह उसे अपनी पत्नी के पास लौट जाने के लिए प्रेरित कर सके. 17 वर्षों के वैवाहिक जीवन के बाद वे लड़नेझगड़ने लगते हैं, एक दूसरे को मारतेपीटते हैं. और अंत में लड़तेझगड़ते ही मर जाते हैं. निर्देशक ने इस फिल्म में ऐसी स्थितियां पैदा की हैं कि दर्शक बंधे से रहते हैं. फिल्म का छायांकन भी गजब का है.

अमरीकी फिल्मों की यह खासियत रही है कि वे अपनी फिल्मों में अपने देश, नेता, राष्ट्रपति तक को गालियां देते हुए पात्र को दिखा देते हैं मगर हमारे देश में बिलकुल इस के विपरीत है. जरा सी भी पोल खोलने की कोशिश की तो झट सेंसर कैंची चला देता है.

अमरीकी फिल्मों की विशेषता

इस के अलावा 'एवरस्माइल न्यू जर्सी' एक अच्छी हास्य फिल्म थी. यह फिल्म चलतेफिरते दंतचिकित्सक की कहानी है जो अपनी मोटरसाइकिल पर घूमता फिरता हुआ लोगों के दांतों का मुफ्त इलाज करता है. पेंटागोनिया (आयरलैंड) की विशाल मैदानी और निर्जन दृश्यावलियां इस दिलचस्प कहानी की पृष्ठभूमि है.

फिल्म समारोह निदेशालय पिछले कई वर्षों से कोशिश करता आ रहा है कि पाकिस्तान भी हमारे इस समारोह में शामिल हो परंतु उसे सफलता नहीं मिल रही है. अभी पाकिस्तान के साथ हमारे सांस्कृतिक संबंध अच्छे बने हुए हैं फिर भी अधिकारीगण पाकिस्तान की कोई भी फिल्म क्यों नहीं ला पा रहे हैं? इस

दक्षिण कोरिया की फिल्म 'रूस्टर': दैहिक संबंधों पर आधारित फिल्म.

शरिता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्कृष्ट तमिल फिल्म 'संध्या रागम' का एक दृश्य.

संबंध में एक सवाल के जवाब में सूचना प्रसारण राज्य मंत्री सुबोधकांत सहाय ने कहा, "हम कोशिश कर रहे हैं कि 'सार्क' देशों का फिल्म समारोह आयोजित किया जा सके." उन्होंने यह बात ठीक उस ढंग से कही जैसे आज तक अन्य नेता कहते आए हैं.

श्रीलंका एक छोटा सा देश है परंतु वहां जो फिल्में बनती हैं वे तकनीक की दृष्टि से भले ही कुछ कमजोर हों परंतु उस का कथानक व प्रस्तुतीकरण बहुत ही बढ़िया होता है. 'द मेंशन' एक ऐसी ही फिल्म है जो पारिवारिक तनाव को दर्शाती है. फिल्म के दो मुख्य पात्र सायरिल और निर्मला अपनी कोठी में सुखमय जीवन व्यतीत कर रहे हैं. उन के यहां विदेश से संपत के आ जाने से परिवार के वातावरण में नाटकीय परिवर्तन आ जाता है. संपत और घर की नौकरानी लीला के बीच पुराने संबंध फिर ताजे हो जाते हैं जिस से परिवार की परेशानियां बढ़ जाती हैं. अपने पति की मौन सहमति से निर्मला संपत को लीला के आकर्षण से मुक्त कराती है.

श्रीलंका की फिल्मों में भारतीयता की झलक जगहजगह देखने को मिलती है. उन की फिल्मों में भी लगभग वैसी ही पारिवारिक समस्याएं दिखाई जाती हैं जैसी भारतीय फिल्मों में दिखाई जाती हैं.

फिल्म समारोह में पुनरावलोकन खंड के अंतर्गत दक्षिण कोरिया की 17 फिल्में दिखाई गईं. इन फिल्मों में ज्यादातर फिल्में ऐसी थीं जिन में महिलाओं की दुर्दशा का ही चित्रण किया गया है. फिल्म 'टिकट' में देह व्यापार को दर्शाया गया है तो 'मा निम' नौकर से गर्भ धारण कर संतान पैदा करने वाली स्त्री की दास्तान है. 'द ब्लेजिंग सन' में एक पति का नौकरानी के साथ संबंध और अंततः उस का परेशानी भरा जीवन दिखाया गया है.

विदेशी फिल्मों का मद्रास के कई सिनेमाघरों में प्रदर्शन भी किया गया. सिनेमाघरों पर भीड़ अपेक्षाकृत काफी कम थी. स्थानीय लोगों की रुचि ज्यादातर तमिल या अन्य क्षेत्रीय भाषाओं की फिल्में देखने में थी.

इस समारोह में पिछले समारोहों की अपेक्षा 'गरम' फिल्मों का अपेक्षाकृत अभाव ही रहा. फिल्में सेक्सी हो या न हों, इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता. फिल्म तो उच्च कोटि की होनी चाहिए. मगर लगता है निदेशालय के अधिकारीगण शायद मजबूर थे. कारण, अगर अच्छी व श्रेष्ठ फिल्मों का ही चुनाव किया जाता तो शायद 10-15 फिल्में ही बच पातीं. समारोह में कुछ तो दिखाना था न.

शुक्र है कि इस समारोह की समापन फिल्म के रूप में भारतीय फिल्म 'शाखा प्रोशाखा' को चुना गया. सत्यजित रे की यह फिल्म एक उत्कृष्ट फिल्म है, जिस में 'काम ही सेवा है' और 'ईमानदारी परम धर्म है' का संदेश दिया गया है. अगर फिल्म समारोह के आयोजनकर्ता भी सत्यजित रे के इस संदेश को अपनाएं तो कोई वजह नहीं कि समारोह उत्कृष्ट न हो. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नेलकटर आदि भी कमरे में ही रखें.

इधर उधर

राजीव गांधी : विदेश नीति से नाखुश

भूतपूर्व प्रधान मंत्री और कांग्रेस अध्यक्ष राजीव गांधी चंद्रशेखर सरकार की विदेश नीति से न केवल परेशान हैं वरन नाराज भी हैं. उन्हें लगता है कि उन के समर्थन पर टिकी सरकार उन की ही परंपरागत पुरानी विदेश नीति को धता बता रही है.

खाड़ी युद्ध के बारे में संसद में विपक्षी और सहयोगी दलों के नेताओं की बैठक में राजीव गांधी ने चंद्रशेखर सरकार की विदेश नीति को आड़े हाथों लिया और कहा कि हमारी नीति वर्षों से इराक और फिलस्तीनी मुक्ति संगठन के समर्थन की रही है, परंतु जनता दल (स) सरकार कुवैत से इराकी सेनाओं की वापसी और फिलस्तीनी समस्या को उस से अलग रखने की बात कह कर खाड़ी मामले में अमरीकी नीति का समर्थन कर रही है.

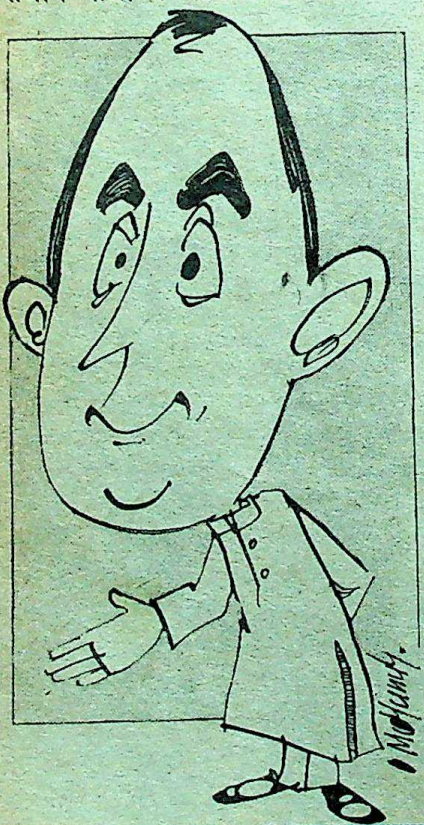

प्रधान मंत्री चंद्रशेखर ने अपने जवाब में कहा कि मैं तो विदेश नीति और विदेशी मामलों को कुछ ज्यादा समझता नहीं हूं, जो मुझे राष्ट्रीय हित में समझ में आ रहा है वह मैं कर रहा हूं. इस मुखर बातचीत के बाद भी सरकार ने खाड़ी युद्ध के बारे में अपने पुराने वक्तव्य को वापस लेने अथवा उस में परिवर्तन करने का कोई आश्वासन नहीं दिया.

इस के बाद अगले दिन कांग्रेस कार्यसमिति की विशेष बैठक हुई जिस में विदेश नीति में किए जा रहे परिवर्तन पर गरमागरम बहस हुई और सदस्यों ने राजीव गांधी से इस बारे में कड़ा रुख अपनाने का भी आग्रह किया और बाद में राजीव गांधी द्वारा प्रधान मंत्री को लिखे गए पत्र का अनुमोदन कर दिया.

प्रधान मंत्री चंद्रशेखर ने विदेश मंत्री विद्याचरण शुक्ल और उपमंत्री दिग्विजय सिंह को गुटनिरपेक्ष आंदोलन को सक्रिय बनाने के लिए प्रमुख निर्गुट देशों की यात्रा पर भेज कर राजीव गांधी को संतुष्ट करने का प्रयास किया है.

राजीव आडवाणी : शिष्टाचार के दायरे में

भारतीय जनता पार्टी और लोकसभा में विपक्ष के नेता लालकृष्ण आडवाणी अपनी हिंदूपरक नीतियों और कार्यक्रमों के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

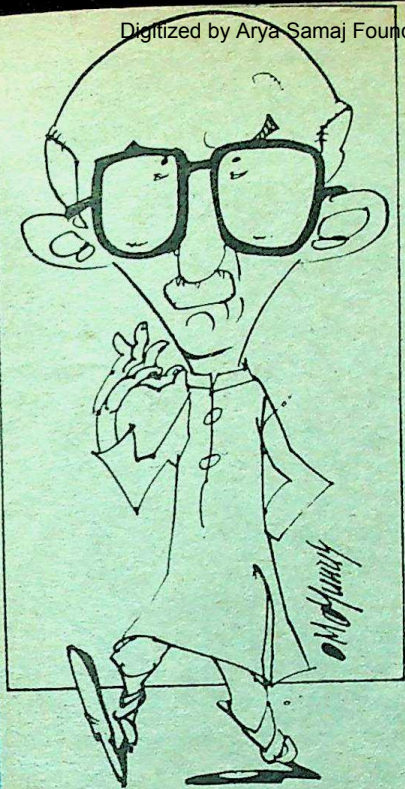

कारण वर्तमान संदर्भों में राष्ट्रीय राजनीति के केंद्रबिंदु बन गए हैं. इस के कारण कांग्रेस सहित विभिन्न राजनीतिक दलों में भाजपा के आकस्मिक उभार को ले कर आशंका पैदा होने लगी है. भाजपा की इस चुनौती का सामना करने के लिए इन दलों को अपनी चुनावी रणनीति की समीक्षा करनी पड़ रही है.

इस का खुलासा उस समय हुआ जब खाड़ी युद्ध के सिलसिले में प्रधान मंत्री आवास पर आयोजित बैठक में कांग्रेस (इ) के अध्यक्ष राजीव गांधी और लोकसभा में विपक्ष के नेता लालकृष्ण आडवाणी बैठक कक्ष में घुसते ही आमनेसामने पड़ गए. आडवाणी ने शिष्टाचार के नाते राजीव गांधी से पूछा, "क्या हाल है?" उन्होंने तपाक से गंभीर हो कर उत्तर दिया, "हमारी आंखें आप पर लगी हुई हैं." (वी आर वाचिंग यू). आडवाणी ने कहा, "क्या मतलब, यह हमारे लिए फख की बात है या उलाहना है?" राजीव गांधी ने मुसकराते हुए कहा, "नहीं, नहीं. हम सब आप को देख रहे हैं कि आप क्या करते हैं" यह कह कर वह बैठक के लिए आगे बढ़ गए. उन का यह गूढ़ इशारा शायद अयोध्या के मंदिर मसजिद विवाद की ओर था, जिस में भाजपा ने सक्रिय भूमिका अदा कर के उसे एक बड़ा राजनीतिक मुद्दा बना दिया है. इस के कारण कांग्रेस इस राजनीतिक असमंजस में पड़ गई है कि वह किधर जाए.

बजट अधिवेशन में विपक्ष का रवैया

दिल्ली स्थित विदेशी राजनयिक भारत के विदेश मंत्रालय को ले कर काफी असमंजस की स्थिति में हैं और वे समझ नहीं पा रहे हैं कि लोकसभा अध्यक्ष द्वारा दलबदल कानून के तहत अयोग्य घोषित विदेश मंत्री विद्याचरण शुक्ल अपने राजनयिक दायित्व को कैसे अंजाम दे सकने में सफल होंगे, विशेषकर अपनी विदेश यात्राओं के दौर में.

खाड़ी युद्ध शुरू होने के बाद अनेक देशों के राजनयिकों ने प्रमुख विपक्षी नेताओं से मुलाकात की है. ऐसी ही एक मुलाकात में एक वरिष्ठ राजनयिक अपनी इस बात को कहने से रोक नहीं सका कि ऐसी स्थिति में कोई विदेश मंत्री पूर्ण विश्वास और अधिकार के साथ अपने को प्रकट करने में कैसे सक्षम हो सकता है.

इतना ही नहीं, संसद में विपक्षी दल भी इस स्थिति से प्रसन्न नहीं हैं. उन का कहना है कि संविधान के साथ इस प्रकार की धोखाधड़ी को चलने नहीं दिया जा सकता. उन्होंने संकेत दिया कि फरवरी में शुरू होने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नेलकटर आदि भी कमर में ही रखें.

इधर उधर

वाले संसद के बजट अधिवेशन में इन मंत्रियों और सरकार को सदन की नाराजगी का सामना करना पड़ेगा. जनता दल (स) के नेता और मंत्री भी इस मामले को ले कर अलगअलग राय रखते हैं.

देवीलाल की नाराजगी

उपप्रधान मंत्री देवीलाल की प्रधान मंत्री चंद्रशेखर से नाराजगी बढ़ रही है क्योंकि प्रधान मंत्री उन के कई मामलों को तरजीह नहीं दे रहे हैं. वह इन दिनों प्रधान मंत्री से तीन बातें कह रहे हैं—उन का पहला आग्रह यह है कि हरिजन नेता और उन के सहयोगी चांदराम को कैबिनेट में शामिल कर के पिछला आश्वासन पूरा करना चाहिए. दूसरे, हरियाणा ग्रीन ब्रिगेड के

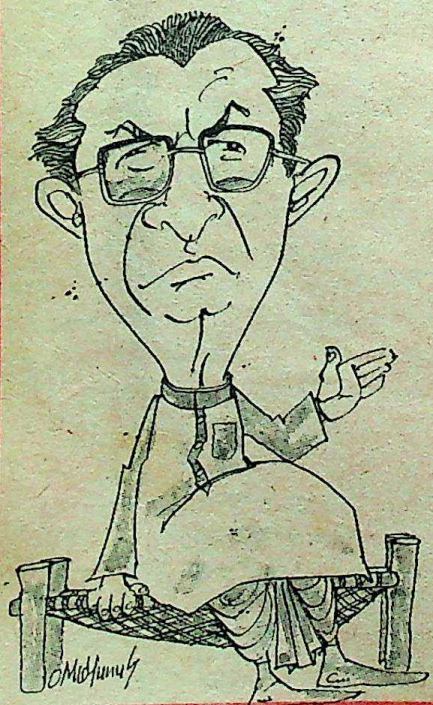

सक्रिय नेता जयप्रकाश को उपमंत्री के बजाय कैबिनेट मंत्री बनाया जाए. इस संबंध में सैयद मोदी कांड में संचार राज्य मंत्री संजय सिंह के खिलाफ सी.बी.आई. द्वारा अपील दायर किए जाने के बाद उन्हें और भी आसानी हो गई है. जयप्रकाश संचार और पेट्रोलियम मंत्रालय में उपमंत्री हैं. तीसरी मांग अपने बड़े पुत्र ओमप्रकाश चौटाला को पुनः हरियाणा का मुख्य मंत्री बनाने की है.

इन मामलों में चांदराम और चौटाला प्रधान मंत्री की चुप्पी से काफी परेशान हैं और वे इस के लिए देवीलाल पर लगातार दबाव बनाए हुए हैं. जानकारों का कहना है कि चंद्रशेखर ने खाड़ी संकट और हरियाणा की तनावपूर्ण राजनीतिक स्थिति का हवाला दे कर दोनों मामलों को फिलहाल टाल दिया है. इस से देवीलाल नाखुश जरूर हैं लेकिन प्रधान मंत्री ने अभी तो इस नाराजगी को सहन करने का ही फैसला किया है.

दूसरी ओर देवीलाल के छोटे पुत्र और राज्य सभा सदस्य रणजीतसिंह भी इसी प्रकार कुछ पाने के लिए उतावले हैं लेकिन उन्हें इस बात से काफी संतोष है कि ओमप्रकाश चौटाला हरियाणा के मुख्य मंत्री नहीं बनाए जा रहे हैं.

कांग्रेस की सब से बड़ी समस्या

राजीव गांधी के नेतृत्व में कांग्रेस की आज सब से बड़ी समस्या पार्टी की भीतरी संवादहीनता है. पार्टी का उच्च कमान या पार्टी का नेतृत्व राजीव गांधी के पर्यायवाची शब्द हैं. पार्टी का उच्च कमान किसी खास मामले पर क्या सोचता है अथवा उस का क्या रुख है इस की जानकारी खुद राजीव गांधी के अलावा किसी अन्य नेता को होना बड़ा ही मुशकिल है. यहां तक कि उन के वर्षों से नजदीकी सलाहकार भी सिर खुजलाते रह जाते हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हाल ही में महाराष्ट्र के मुख्य मंत्री शरद पवार और उत्तर प्रदेश के मुख्य मंत्री मुलायमसिंह यादव को हटाने का प्रच्छन्न रूप से अभियान चलाया गया. महाराष्ट्र अभियान के सूत्रधार आर.के. धवन थे जबकि उत्तर प्रदेश के भूतपूर्व मुख्य मंत्री नारायणदत्त तिवारी मुलायमसिंह से निबट रहे थे. परंतु इन राज्यों में शतरंज की चालें कौन चल रहा है और किस ओर चली जा रही हैं, किसी को कुछ पता नहीं था.

पार्टी की भीतरी उठकपटक की सूंघ लेने के लिए पत्रकार और पार्टी के नेता दोनों ही परेशान थे. वे उलटे पत्रकारों से पूछते थे कि आखिर क्या हो रहा है.

पार्टी अध्यक्ष गांधी के पुराने राजनीतिक सलाहकार माखनलाल फोतेदार काफी उद्विग्न थे. उन का कहना था कि क्या हो रहा है, उन्हें कुछ भी पता नहीं है. राजीव गांधी जो बोलते हैं या किसी से कुछ कहते हैं उसी को पार्टी की लाइन मान कर चलने लगते हैं. राज्य सभा में कांग्रेस दल के नेता शिवशंकर, लोकसभा में पार्टी के वरिष्ठ सदस्य दिनेशसिंह भी यही कह कर छुटकारा पा लेते थे कि उन्हें कोई जानकारी नहीं है. दिनेशसिंह का मत रहा है कि यदि उत्तर प्रदेश कांग्रेस मुलायमसिंह सरकार से समर्थन वापस लेना चाहती है तो उसे इजाजत दी जानी चाहिए. लेकिन अंततः राजीव गांधी ने मुलायमसिंह को बचा लिया. शरद पवार भी बच गए. इन दोनों राज्यों में राजनीतिक तूफान आया और चला भी गया, लेकिन पार्टी के नेता आज भी सिर खुजलाते हैं कि यह तूफान क्यों और कैसे आया और कैसे चला गया.

कमल मुरारका की कसक

उद्योगपति एवं प्रधान मंत्री कार्यालय में राज्य मंत्री कमल मुरारका इन दिनों अजीब परेशानी में हैं. उन्हें लगता है कि जनता दल (स) सरकार में कुरसियां बहुत हैं लेकिन उन पर बैठने वाले उपयुक्त लोगों की कमी है. फिर भी उन्हें प्रधान मंत्री कार्यालय में फाइलों को पढ़ने और प्रधान मंत्री को उन के बारे में बताने की दिनरात मुंशीगीरी करनी पड़ रही है. काम का बोझ इतना है कि मंत्री के रूप में लोगों से मिलना और सरकारी काम से यात्राएं करना दूभर हो गया है.

इस के विपरीत सुबोधकांत सहाय पिछली सरकार में गृह राज्य मंत्री थे परंतु जनता दल (स) की सरकार में आ कर सूचना और प्रसारण मंत्रालय हासिल कर के उन की सत्ता दुगनी हो गई है. इसी तरह से वाणिज्य मंत्री सुब्रह्मण्यम स्वामी को दोदो महत्त्वपूर्ण मंत्रालयों का दायित्व संभालने के योग्य नहीं समझा जा रहा है जबकि अन्य लोग बेहतर स्थिति में हैं. प्रधान मंत्री चंद्रशेखर ने शायद उन की इस भीतरी कसक को भांप कर उन्हें अपने अधीन उद्योग मंत्रालय का काम इसी रूप में रह कर देखने का दायित्व सौंप दिया है.

फिर भी उन की निगाह सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय अथवा वाणिज्य मंत्रालय पर लगी हुई है. परंतु प्रधान मंत्री के साथ अपने पुराने संबंधों को देखते हुए वह कुछ कह भी नहीं पा रहे हैं.

प्रधान मंत्री की दरियादिली

प्रधान मंत्री चंद्रशेखर पुराने दोस्तबाश हैं. सरकारी सीमाओं और तौरतरीकों के बावजूद वह अपनी पुरानी दोस्ती का निर्वाह जरूर करते हैं. प्रधान मंत्री बनने के बाद भी वह न तो इस दोस्ती से परहेज करते हैं और न ही नकारते हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नेलकटर आदि भी कमरे में ही रखें.

बातों का भी ध्यान रखें :

घर रात्रि भोजन पर उपस्थित थे. यहां पर विशेष आयोजन नहीं था. मात्र घरेलू और पारिवारिक भोजन था, जिस में उन्होंने अपनी पसंद की चीजों को मांग कर भी खाया. कुछ पत्रकार इस अवसर पर जरूर उपस्थित थे लेकिन उन की ओर से पत्रकार के नाते कोई सवालजवाब नहीं हुए. केवल भोजन था, घर के हालचाल की पूछताछ थी और थी पत्नीबच्चों के साथ घरेलू बातचीत.

इधर उधर

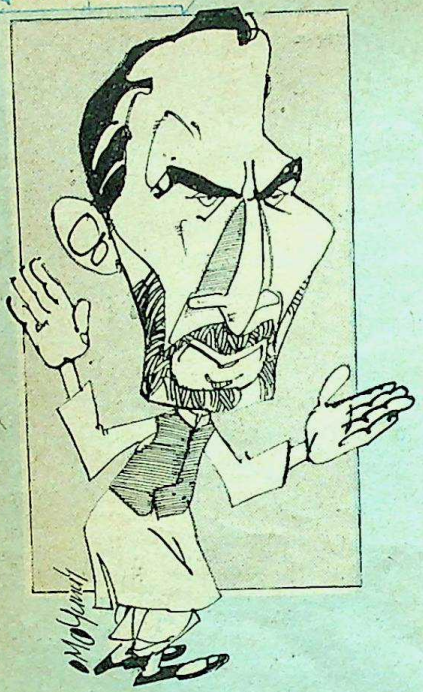

करीब 30 वर्ष के अपने सरकारी पदविहीन राजनीतिक जीवन में अनेक सामाजिक और राजनीतिक कार्यकर्ता, प्रोफेसर, लेखक और पत्रकार उन के मित्र बने हैं. प्रधान मंत्री की कुरसी पर बैठने के बाद भी वह इन पुराने दोस्तों को नहीं भूले हैं और तमाम सरकारी व्यस्तता के बाद भी इन लोगों से दरियादिली के साथ मिलते हैं.

चंद्रशेखर शायद देश के पहले प्रधान मंत्री हैं जो विभिन्न संस्थाओं में सेवारत पत्रकार दोस्तों के घर बिना किसी हिचक के भोजन आमंत्रण पर जा रहे हैं. अब तक वह दिल्ली में पी.टी. आई. के दो और यूनीवार्त्ता के एक तथा भाषाई दैनिक के एक पत्रकार के घर अपनी उपस्थिति से सम्मानित कर चुके हैं. शायद वह इस बारे में एक रिकार्ड भी कायम करेंगे.

हाल ही में चंद्रशेखर पत्रकारों की नवनिर्मित कालोनी समाचार एपार्टमेंट्स में रह रहे यूनीवार्त्ता के समाचार संपादक के

रामकृष्ण हेगड़े की बेचैनी

योजना आयोग के भूतपूर्व उपाध्यक्ष और जनता दल के नेता रामकृष्ण हेगड़े एक बार फिर राजनीति की मुख्य धारा में शामिल होने के लिए बेचैन हैं. कर्नाटक जनता पार्टी का जनता दल (स) में हाल ही में विलय होने के बाद उन के राजनीतिक दुश्मन देव गौड़ा ने उन्हें चारा फेंका है और प्रधान मंत्री चंद्रशेखर से इस बारे में पेशकश की है. उन का मानना है कि देवीलाल और जनता दल के अध्यक्ष सोमप्पा रायप्पा बोम्मई के रहते उन के लिए जनता दल के दरवाजे बंद हैं. ऐसी स्थिति में कर्नाटक में जनता दल (स) के लिए काफी उपयोगी हो सकते हैं परंतु वहां भी वाणिज्य मंत्री सुब्रह्मण्यम स्वामी उन के किसी भी राजनीतिक पुनर्वास का विरोध कर रहे हैं. आखिर उन्हीं के लगातार संघर्षों का परिणाम है कि हेगड़े को रेप कांड और भ्रष्टाचार के आरोपों के कारण न केवल कर्नाटक के मुख्य मंत्री का पद वरन योजना आयोग के उपाध्यक्ष का पद छोड़ना पड़ा था.

हेगड़े भी जनता दल में अपनी कुछ शर्तों के साथ ही पाला बदलना चाहते हैं. उन का कहना है कि इस के लिए पहले कुलदीप आयोग द्वारा उन के विरुद्ध की गई जांच की सिफारिशों को निरस्त किया जाए, परंतु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरकार कुछ भी मदद करने को तैयार नहीं है. अतः मामला चला भी लेकिन बीच में ही अटक गया क्योंकि प्रधान मंत्री चंद्रशेखर का कहना है कि इस में फिलहाल ज्यादा कुछ नहीं किया जा सकता है. शायद यह इस बात का भी संकेत है कि हेगड़े को अभी राजनीतिक बनवास कुछ और समय झेलना होगा. यही बात उन्हें परेशान किए हुए है.

चमकता सोना

हरियाणा के ताऊ और उपप्रधान मंत्री देवीलाल को हाल ही में ख्यात या कुख्यात मेहम की जनसभा में उन के सम्मान में 'सोने' का मुकट पहनाया गया और राजदंड के रूप में चांदी की 'ठोस' लंबी छड़ी भेंट की गई. यह उन का अनोखा सम्मान उन के तथा उन के बड़े पुत्र ओमप्रकाश चौटाला के विरोधियों को एक करारे जवाब के रूप में था.

उपहारस्वरूप प्राप्त सोनेचांदी पर केंद्र सरकार के राजस्व अधिकारियों की भी निगाह गई और तलाश हुई कि कहीं यह नियमकानून का उल्लंघन तो नहीं है. छानबीन के दौरान पता चला कि सोने या चमकने वाला मुकट सोने का नहीं था. चांदी के मुकट पर सोने के पानी की कारीगरी की गई थी. इसी प्रकार चांदी की छड़ी भी ठोस नहीं थी वरन लकड़ी की छड़ी पर चांदी की पत्ती चढ़ाई गई थी.

60 लाख रुपए से भरी अटैची

असम में सेना के उल्फा विरोधी अभियान में हथियारों के अलावा उन के द्वारा लोगों से वसूला गया धन भी बड़ी मात्रा में हाथ लगा है. यह धन ऐसे लोगों और स्थानों से मिला है जिस के बारे में आमतौर से कोई संदेह नहीं किया जा सकता है.

पिछले दिनों इसी अभियान के दौरान पिछली सरकार में रहे उच्च पदाधिकारी की कार से एक बड़ी अटैची बरामद की गई जिस में 60 लाख रुपए की नकदी थी.

संबंधित नेता से इस बारे में पूछताछ हुई तो उन्होंने साफ कहा कि यह राशि और अटैची उन की नहीं है. उन की कार में शायद यह अटैची किसी व्यक्ति द्वारा उन्हें फंसाने के लिए रखी गई है.

बजरंग ब्रिगेड: प्रशिक्षित वानर सैनिक

भारतीय सेना के पास प्रशिक्षित वानर ब्रिगेड है जिस का असम के जंगलों में उग्रवादियों के खिलाफ पहली बार प्रयोग किया गया है. इस की पुष्टि सैनिक अधिकारियों द्वारा की गई है.

इस वानर ब्रिगेड में ऐसे प्रशिक्षित बंदर हैं जिन्होंने असम तथा अन्य पड़ोसी राज्यों के घने जंगलों में 'उल्फा' शिविरों का पता लगाने में मदद की. उल्फा उग्रवादियों ने शिविरों को जाने वाले रास्तों में माइन बिछा रखी थी जिन्हें लांघ कर पेड़ों के रास्ते से वानर सैनिक भीतर घुसे थे.

ये वानर सैनिक वरदी धारण करते हैं. उन्हें बंदूक चलाने का भी अभ्यास है. इलेक्ट्रोनिक उपकरणों के माध्यम से ये संदेश भेजना भी जानते हैं. इन वानर सैनिकों के खानेपीने तथा सोने आदि की व्यवस्था पुरुष जवानों जैसी ही है. यह ब्रिगेड इस अभियान में काफी उपयोगी साबित हुआ है. इसी कारण इस अभियान का नाम भी आपरेशन बजरंग रखा गया था.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नेलकटर आदि भी कमरे में ही रखें

बातों का भी ध्यान रखें

खाड़ी युद्ध

(पृष्ठ 26 का शेषांश)

भारत के हित भी बहुत कुछ अमरीका और पश्चिमी देशों के साथ बंध जाएंगे.

यदि समझौते की किन्हीं परिस्थितियों में राष्ट्रपति सद्दाम हुसैन और इराक अपराजित अवस्था में ही युद्ध से बाहर निकल आते हैं तो भी खाड़ी में तनाव और अस्थिरता का दौर बने रहने की संभावना बनी रहेगी क्योंकि उस स्थिति में इराक, अमरीका और खाड़ी के उस के समर्थक देशों का मूलतः विरोधी रहेगा और नहीं चाहेगा कि इन मुसलिम देशों में शेखों की पारिवारिक सुलतानशाही चलती रहे. इस का अर्थ यह होगा कि इराक से खाड़ी देशों में लोकतंत्रीय बदलाव की लहरों की शुरुआत होगी, जिस के कारण इन देशों में ... सकती है.

खाड़ी युद्ध दुनिया के इतिहास का एक ऐसा मोड़ है जहां से खाड़ी और पश्चिम एशिया के देशों में परिवर्तन की नई किरणें फूटेंगी. युद्ध का फैसला कुछ भी हो, इराक की खंडहरनुमा जमीन पर विजयी या पराजित, जीवित अथवा मृत राष्ट्रपति सद्दाम हुसैन का प्रभा मंडल और साया उन के व्यक्तित्व से बड़ा होगा जो मुसलिम देशों के जनमानस को आने वाले अनेक वर्षों तक प्रभावित करेगा और वर्तमान शासकों की नींद हराम करता रहेगा. परंतु सद्दाम हुसैन दुनिया के देशों में कभी भी इस आरोप से मुक्त नहीं हो सकेंगे कि उन्होंने अपनी अंधी महत्त्वाकांक्षा और अदूरदृष्टि से इराक और उस की जनता को बेकार में युद्ध में तबाह कर दिया, जिस से उसे बचाया जा सकता था. ●

युद्ध में भाग ले रहे बमवर्षक व प्रक्षेपास्त्र

खाड़ी युद्ध में फ्रांस निर्मित मिराज–2000 और जगुआर, अमरीका के एफ-15, एफ-16 तथा उस का अति आधुनिक सुधरा रूप एफ-15 ई भाग ले रहे हैं.

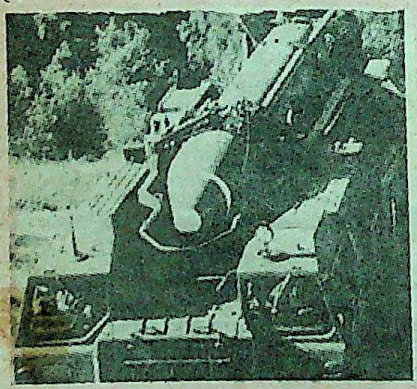

संयुक्त सेनाओं के आधुनिक विमानों और उपकरणों के जवाब में इराकी सेना सोवियत निर्मित स्कड मिसाइलों और उस की सुधरी और उन्नत किस्मों का उपयोग कर रही है. ईरान इराक युद्ध में इन का काफी उपयोग किया गया था. इस के बाद स्वयं इराक ने स्कड मिसाइल की नई किस्म विकसित कर ली है जिस का उपयोग इस युद्ध में किया जा रहा है. अल हुसैन के नाम से पहचानी जाने वाली इस मिसाइल की लंबाई 40 फुट है और यह 400 मील तक की मार कर सकती है. स्कड बी मिसाइल की लंबाई 37 फुट है और यह 187 मील तक मार कर सकती है.

इन के अलावा इराक के पास फ्राग और एक्जोसेट नामक मिसाइलें हैं जो 45 मील की दूरी तक मार करने की क्षमता रखती हैं. लड़ाकू विमानों में इस के पास सोवियत संघ द्वारा दिए गए भिन्न श्रेणी के कई विमान हैं जिन का ये पंक्तियां लिखे जाने तक संयुक्त सेना के खिलाफ प्रयोग नहीं किया गया था.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चंचल छाया

★★★★ अति उत्तम ★★★ उत्तम ★★ मध्यम ★ साधारण ○ बेकार

★★ सनम बेवफा

निर्मातानिर्देशक : सावनकुमार
संगीत : महेश किशोर
मुख्य कलाकार : सलमान खान, चांदनी, कंचन, प्राण, डैनी, पुनीत इस्सर और दीना पाठक.

फिल्म 'सनम बेवफा' प्रेम कहानी पर बनी एक ऐसी फिल्म है, जिस में ताजगी है. हालांकि फिल्म का विषय पुराना और जानापहचाना है, जिस में दो खानदानों की दुश्मनी के साथसाथ प्रेम कहानी भी चलती है. फिर भी निर्देशक सावनकुमार ने इस पुराने विषय को बेहद खूबसूरती से फिल्मा कर उस में नयापन पैदा कर दिया है. फिल्म का सब से सबल पक्ष इस का गीतसंगीत है. इस के अलावा फिल्म का छायांकन भी बेहद खूबसूरत है.

फतह खान (प्राण) और शेर खान (डैनी) के परिवारों में आपसी दुश्मनी है. रुखसार (चांदनी) फतहखान की बेटी है तो सलमान (सलमान खान) शेर खान का बेटा. दोनों आपस में प्रेम करते हैं, परंतु उन के परिवार वालों की दुश्मनी आड़े आ जाती है. फतहखान मजबूर हो कर अपनी बेटी की शादी सलमान के साथ कर तो देता है, परंतु मेहर में एक भारी रकम लिखवा लेता है. इसे शेरखान अपनी बेइज्जती समझता है और अगले ही दिन मेहर की रकम के साथ फतहखान की बेटी को वापस भेज देता है. दोनों परिवारों में दुश्मनी को और हवा मिलती है. अंततः रुखसार के बेटा पैदा होने पर दोनों पक्षों को अपनी गलती का अहसास होता है और सलमान व रुखसार का मिलन होता है.

फिल्म की कहानी मुसलिम परिवेश को ध्यान में रख कर लिखी गई है और पात्रों ने इस परिवेश को पूरी तरह जिया भी है. पात्रों के पहनावे, बोलचाल, रीतिरिवाज आदि से कहीं भी परिवेश में फर्क नहीं आ पाया है. निर्देशक सावनकुमार ने फिल्म का प्रस्तुतीकरण इस बखूबी से किया है कि कहीं भी बोरियत नहीं होती. लगभग हर 15-20 मिनट के बाद एक गाना आ जाता है जो दर्शकों को सुकून देता है.

गीत लिखने और फिल्माने में सावनकुमार को अच्छाखासा अनुभव है. उस की हर फिल्म में सातआठ गीत अवश्य होते हैं और सारे ही हिट होते हैं. इस फिल्म में भी चारपांच गीत हिट हैं और काफी पहले ही प्रसिद्ध हो चुके हैं. 'मुझे अल्लाह की कसम' वाले गीत में निर्देशक ने एक खूबसूरत सेट लगाया है. गुलाबी और हलकी रोशनी कर के इस सेट को काफी आकर्षक बनाया गया है.

फिल्म के संवाद अच्छे हैं. कहींकहीं तो तुर्कीबतुर्की बोले गए संवाद फिल्म में जोश पैदा कर देते हैं. फिल्म का छायांकन भी अच्छा है. फिल्म की अधिकांश शूटिंग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिल्म 'सनम बेवफा' के एक दृश्य में सलमान खान और चांदनी : अच्छा अभिनय.

मनाली में की गई है. छायाकार ने प्राकृतिक सुंदरता को कैद करने में कोई कसर नहीं छोड़ी.

निर्देशक ने फिल्म में थोड़ी सी मारधाड़ भी डाल दी है, खासतौर से शराब की भट्ठी वाले दृश्य में. इस से बचा जा सकता था.

अभिनय की दृष्टि से सलमान खान और नई अभिनेत्री चांदनी का काम अच्छा है. 'मैं ने प्यार किया' में सफलता पाने के बाद सलमान खान ने यह सिद्ध कर दिया है कि प्रेम प्रधान फिल्मों के लिए यह कलाकार फिट है. नई अभिनेत्री चांदनी को पिछले वर्ष ही बतौर नायिका चुना गया था. यह अभिनेत्री दिल्ली की रहने वाली है. अपनी पहली ही फिल्म में उस ने अपनी प्रतिभा सिद्ध कर दी है. सहनायिका कंचन की भी पहली फिल्म है, परंतु कैमरा अधिकतर चांदनी पर ही केंद्रित रहा, इसलिए कंचन की प्रतिभा निखर कर सामने नहीं आ पाई. प्राण और डैनी ने परंपरागत अभिनय ही किया है. अन्य कलाकार साधारण हैं.

★ सौगंध

निर्माता : अशोक अदनानी
निर्देशक : राज सिप्पी
संगीत : आनंद मिलिंद
मुख्य कलाकार : राखी, अक्षयकुमार, शांतिप्रिया, पंकज धीर, रूपा गांगुली, मयूर, अमिता नांगिया, कंवलजीत, आलोका और मुकेश खन्ना.

लगता है फिल्म निर्माताओं के पास अब केवल दो ही विषय रह गए हैं इंतकाम और प्रेम. ज्यादातर फिल्में इन्हीं विषयों पर ही बन रही हैं. फिल्म 'सौगंध' में भी इंतकाम और प्रेम का मिश्रण है. ऐसे मिश्रण कई और निर्माता पहले भी दर्शकों को पिला चुके हैं.

अब तक हिंदी फिल्मों में जान से मार देने या जिंदा जला देने की ही सौगंध खाई जाती रही है लेकिन फिल्म 'सौगंध' में घमंडी के घमंड को चूरचूर करने की सौगंध खाई गई है. फिल्म में इंतकाम प्रेम पर हावी हो गया है.

जमींदार चौधरी सारंग (मुकेश खन्ना) की बहन चांद (अमिता नांगिया) एक किसान के बेटे शिवा (मयूर) से प्रेम करती है. चौधरी सारंग शिव के पूरे परिवार के साथसाथ अपनी बेटी को भी मार डालता है. संयोग से शिवा की गर्भवती भाभी गंगा (राखी) बच जाती है. वह सारंग को चेतावनी देती है कि उस की कोख से जन्म लेने वाला बेटा ही चौधरी का दामाद बनेगा. वक्त गुजरता है. गंगा एक बेटे को जन्म देती है और चौधरी के घर बेटी का जन्म होता है. चौधरी अपनी बेटी चांद (शांति प्रिया) को बेटे की तरह पालता है तथा उसे कठोर बनाता है. उधर गंगा अपने बेटे शिवा (अक्षयकुमार) को चौधरी से लड़ने को तैयार करती है. शिवा चांद को अपने प्रेम में जकड़ लेता है. जब चौधरी सारंग को शिवा और चांद के प्यार का पता चलता है तो वह बौखला जाता है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह चांद को शादी चौधरी रणवीर सिंह (पंकज धीर) से तय कर देता है, लेकिन परिस्थितियां इस प्रकार बनती हैं कि चांद शिवा को अपना लेती है. चौधरी रणवीर सिंह मारा जाता है तथा चौधरी सारंग का सिर झुक जाता है.

फिल्म की कहानी घिसीपिटी ही है. निर्माता ने अपनी इस फिल्म में ज्यादातर 'महाभारत' के कलाकारों को लिया है. मुकेश खन्ना 'महाभारत' में भीष्मपितामह की भूमिका निभा चुके हैं तथा पंकज धीर कर्ण की, मयूर अभिमन्यु की तो रूपा गांगुली द्रौपदी की. आलोका मुखर्जी ने सुभ्रदा की भूमिका अदा की थी. फिल्म में नायक और नायिका नए हैं. नायिका दक्षिण भारत की है. अपनी पहली फिल्म में दोनों ही कोई विशेष प्रभाव नहीं छोड़ पाए हैं.

फिल्म के निर्देशन में कई कमियां हैं जो साफ झलकती हैं. फिल्म में निर्देशक औरतों को सजावट की वस्तु दिखाना चाहता है. इस के अलावा फिल्म में काली देवी के आगे बलि चढ़ा कर दर्शकों को अंधविश्वासों की ओर धकेला गया है. फिल्म में खलनायक चौधरी रणवीर सिंह बारबार नायिका से बलात्कार करने की कोशिश करता है. इस से क्या निर्देशक की फिल्म में सेक्स डालने की मंशा जाहिर नहीं होती. फिल्म में मारधाड़ भी बहुत अधिक डाली गई है. दरअसल प्रेम कहानी तो इंतकाम को सहारा ही देती है.

फिल्म के संवाद और पटकथा भी इकबाल दुर्रानी ने लिखी है. पटकथा में कई झोल हैं.जगहजगह नाटकीयता झलकती है. गीत समीर ने लिखे हैं जिन्हें आनंद मिलिंद ने संगीत दिया है. दो गीत 'लैला को भूल जाएंगे' और 'तेरी बांहों में जीना है' अच्छे बन पड़े हैं. फिल्म का छायांकन जरूर अच्छा है.

अभिनय की दृष्टि से राखी को छोड़ कर कोई कलाकार प्रभावित नहीं करता. हास्य कलाकार पेंटल दर्शकों को हंसा पाने में असफल रहा है.

निर्मातानिर्देशक : शोमू मुखर्जी
संगीत : भप्पी लाहिरी
मुख्य कलाकार : विनोद खन्ना, श्रीदेवी, जैकी श्राफ, पूनम ढिल्लों, मुनमुन सेन, सईद जाफरी, ओम शिवपुरी, तथा महेश आनंद.

'पत्थर के इनसान' इंतकाम की नींव पर आधारित एक ऐसी फिल्म है, जिस में एक साजिश के तहत एक पति अपनी पत्नी की हत्या करने के लिए तरहतरह की योजनाएं बनाता है. अंततः असलियत मालूम होने पर उस का हृदय परिवर्तन हो जाता है. बमों के धमाकों, धुआंधार गोलीबारी और आग के शोलों से भरी इस फिल्म की गति काफी तेज है. फिल्म पूर्ण रूप से व्यावसायिक है, कहां क्या हो रहा, क्यों हो रहा है, सोचने की कोई आवश्यकता नहीं.

फिल्म की कहानी इस तरह है. सीता (पूनम ढिल्लों) और लता (श्रीदेवी) दो बहने हैं. लता नृत्य को सर्वश्रेष्ठ मानती है तो सीता संगीत को. एक मुकाबले में हार जाने पर सीता आत्महत्या करने दौड़ पड़ती है. उस की गाड़ी के नीचे अर्जुन (विनोद खन्ना) की बहन दम तोड़ देती है. अर्जुन इस का दोषी लता को समझ बैठता है और बदला लेने की कसम खाता है. उधर सीता के आत्महत्या कर लेने से लता की दिमागी हालत खराब हो जाती है.

एक डाक्टर (ओम शिवपुरी) एक षड्यंत्र रचता है. वह अर्जुन के जरिए लता के पिता की जायदाद हड़पना चाहता है. वह अर्जुन को लता के करीब लाता है. अर्जुन उस से शादी कर लेता है. अर्जुन द्वारा तीन बार मारने की कोशिश के बावजूद भी लता बच जाती है. इंस्पेक्टर करण (जैकी श्राफ) अर्जुन को रंगे हाथों पकड़ने में नाकामयाब रहता है. एक दिन जब अर्जुन को असलियत मालूम होती है कि लता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नेलकटर आदि भी कमरे में हैं तो इन्हें

बेकुसूर है तो उस का हृदय परिवर्तन हो जाता है. यह जान कर डाक्टर और उस के गुंडे लता और अर्जुन दोनों को मारने की कोशिश करते हैं, परंतु अर्जुन डाक्टर को मार डालता है. इस लड़ाई में करण भी मारा जाता है.

यह फिल्म एक अच्छी मनोवैज्ञानिक फिल्म बन सकती थी, अगर इस में से षड्यंत्र वाला भाग काट दिया जाता.

निर्देशक ने पूरा ध्यान क्लाइमेक्स पर ही लगाया है. क्लाइमेक्स सेट पर पेट्रोल बमों के धमाके, मोटरसाइकिलों की दौड़, हेलीकाप्टर द्वारा पीछा, नृत्य, कैबरे, साथ ही 'यम्मां यम्मां चुम्मा दो' जैसा गीत, सभी कुछ तो है इस फिल्म में.

फिल्म का निर्देशन कुछ हद तक ठीक है. निर्देशक ने फिल्म में एक पत्नी को पति की पूजा करते हुए दिखाया है जबकि वह जानती है कि उस का पति उस की जान लेना चाहता है (यह बात उस ने अंत में स्पष्ट कर दी है), फिर भी उस ने पत्नी के चेहरे पर खौफ या भय के चिह्न नहीं आने दिए हैं.

फिल्म के संवाद साधारण स्तर के हैं तथा गीतसंगीत थोड़ा बहुत अच्छा है. अभिनय की दृष्टि से श्रीदेवी आकर्षक तो है ही लेकिन अन्य कई फिल्मों की अपेक्षा इस फिल्म में उस का अभिनय कमजोर ही है. विनोद खन्ना एक कातिल के रूप में नहीं जम पाया है. जैकी श्राफ तथा अन्य कलाकार साधारण रहे हैं. फिल्म का छायांकन अच्छा है.

○ खिलाफ

निर्माता : अनिल तारिक
निर्देशक : राजीव नागपाल
संगीत : लक्ष्मीकांत प्यारेलाल
मुख्य कलाकार : चंकी पांडे, माधुरी दीक्षित, महेश आनंद, नादिरा, अनुपम खेर, अरुणा ईरानी और दीना पाठक.

प्रेम कहानी पर बनाई गई फिल्म 'खिलाफ' कई पूर्व प्रदर्शित फिल्मों का मिश्रण है. 'दिल', 'बाबी', 'आशिकी' आदि फिल्मों की झलक इस में देखी जा सकती है. लगता है निर्माता ने बिना सोचेसमझे ही इस फिल्म का निर्माण कर डाला है. कहीं कोई नयापन नहीं लगता. तकनीकी दृष्टि से भी फिल्म साधारण ही है.

फिल्म की कहानी इतनी सी है कि श्वेता (माधुरी दीक्षित) एक अमीर बाप राणा रंजीत सिंह (अनुपम खेर) की बेटी है. रानी साहिबा (नादिरा) अपने बेटे कुंवर भानुप्रताप सिंह (महेश आनंद) की शादी श्वेता से कराना चाहती हैं ताकि वह उस की दौलत हथिया सके परंतु श्वेता विकी (चंकी पांडे) से प्रेम करती है. राणा रंजीत सिंह को यह गवारा नहीं होता. बेटी बगावत कर देती है और राणा साहब विकी को गोली मार देते हैं.

विकी मर जाता है और श्वेता भी आत्महत्या कर लेती है.

फिल्म की यह कहानी दुखांत है और दर्शकों पर अपना असर नहीं छोड़ती. कहानी की कई घटनाएं भी बासी लगती हैं मसलन विकी और भानुप्रताप का मुक्केबाजी करना फिल्म 'दिल' की हूबहू नकल है.

फिल्म के संवाद मदन जोशी ने लिखे हैं जो साधारण स्तर के हैं. चंकी पांडे पूरी फिल्म में चीखचीख कर बोला है. लगता है जैसे कोई नौटंकी कर रहा है. माधुरी दीक्षित के अभिनय में भी बनावटीपन झलकता है.

फिल्म का निर्देशन कमजोर है. लगता है निर्देशक फिल्म फिल्माते समय आंखें मूंदे बैठा था. फिल्म की गति भी काफी धीमी है.

फिल्म में अगर कुछ अच्छा है तो दो गीत, जिन्हें लक्ष्मीकांत प्यारेलाल ने अच्छी धुनें दी हैं.

फिल्म का छायांकन भी कुछ हद तक अच्छा है. छायाकार ने कई जगह कैमरे की गति को धीमा कर के अच्छा प्रयोग किया है. ●

शांता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यक्तिगत विज्ञापन

वैवाहिक विज्ञापन

वर चाहिए

27/157, कुमावत, सुंदर, सुशील, एलएल.बी., तलाकशुदा कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 152, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुशवाहा, 23½ वर्षीया, 155 सें.मी., एम.ए. (भूगोल), मेधावी, गृहकार्यदक्ष, सुशील, आकर्षक, प्रतिष्ठित परिवारीय कन्या हेतु सजातीय, सेवारत, सुयोग्य वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 153, सरिता, नई दिल्ली-110055.

दो बच्चों की विधवा मां, 26 वर्षीया, एम.ए., बी.एड., सुंदर युवतीयार्थ जैन वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 154, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सरयूपारीय ब्राह्मण, 30/152, एम.एससी., एम.एड., गौरांग, पूर्वोत्तर उत्तरप्रदेशीय, परियोजना अधिकारी, 3,000/-, शिक्षित परिवारीय कन्यार्थ सुयोग्य वर. लिखें: वि.नं. 155, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कूर्मि क्षत्रिय, 20, 157, एम.ए., गेहुआं रंग, स्वस्थ कन्यार्थ सुयोग्य, सजातीय वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 156, सरिता, नई दिल्ली-110055.

यू.पी. सम्मानित ब्राह्मण परिवार, 38, 145, 3,500/-, पीएच.डी. (साइंस), आकर्षक, प्रतिभावान, सुशील, गोरी, सरकारी सेवारत, रीढ़ की हड्डी में सूक्ष्म दोष, कन्या हेतु संभ्रांत, उच्च शिक्षित, उदार, सुयोग्य वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 157, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माहेश्वरी, 22 वर्षीया, 165 सें.मी., ग्रेजुएट, होम साइंस आनर्स, डिप्लोमा बिजनेस मैनेजमेंट, कंप्यूटर .मास्टर कोर्स में संलग्न, सुंदर, स्वस्थ, गृहकार्यदक्ष, गोत्र लिमांस कन्या हेतु सजातीय, सुयोग्य वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 158, सरिता, नई दिल्ली-110055.

बंबईवासी, 38 वर्षीया, उच्च शिक्षित, अविवाहित, एग्जीक्यूटिव पद पर कार्यरत, गुजराती, सुपरिचित शाही परिवार से संबंधित हेतु शिक्षित, सुस्थापित वर. जाति व उम्र बंधन नहीं. तलाकशुदा एवं विधुर भी लिखें: वि.नं. 159, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24, 150, शर्मा (छिवारी), बी.एससी., गौरवर्णीय, सुंदर, शाकाहारी परिवार, बचपन से अग्रज (स्टेट बैंक में सेवारत) के साथ, कन्या हेतु लिखें: वि.नं. 226, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26 वर्षीया, 152 सें.मी., कुमाउंनी ब्राह्मण (पांडे), एम.ए., बी.एड., सुंदर, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु कुमाउंनी, गढ़वाली वर चाहिए, पिता बैंक अधिकारी. लिखें: वि.नं. 227, सरिता, नई दिल्ली-110055.

धीवी, 23, 160, एम.ए. (इंगलिश), सांवली, सुंदर कन्या हेतु व्यवसायी अथवा सरकारी सेवारत, सजातीय, सुयोग्य वर चाहिए. शीघ्र उत्तम विवाह. लिखें: वि.नं. 228, सरिता, नई दिल्ली-110055.

पाल क्षत्रिय, 22/160, सुंदर, सुशील, स्मार्ट, स्टाफ नर्स कन्या हेतु आकर्षक, सेवारत वर चाहिए. दहेज नहीं. लिखें: वि.नं. 246, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26 वर्षीया, हिंदू नाई, एम.ए. (अंगरेजी), बी.एड. (अध्ययनरत), सुंदर कन्यार्थ सजातीय, सेवारत वर चाहिए. दहेज नहीं. लिखें: वि.नं. 247, सरिता, नई दिल्ली-110055.

प्रतिष्ठित सनाढ्य ब्राह्मण, मध्य प्रदेश निवासी, 22 वर्षीया, 170 सें.मी. ऊंचाई, सुंदर, साफ रंग, इकहरा बदन, गृहकार्य में दक्ष, विज्ञान स्नातक कन्या हेतु सुयोग्य व सेवारत ब्राह्मण वर चाहिए. पिता वरिष्ठ अधिकारी. लिखें: वि.नं. 248, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सुंदर, गोरी, राजपूत ठाकुर, 33, 165, 5000/-, अधिकारी एवं 31, 155, 2,500/-, राष्ट्रीय बैंकों में कार्यरत बहनों हेतु सुयोग्य वर चाहिए. शीघ्र उत्तम विवाह. लिखें: वि.नं. 249, सरिता, नई दिल्ली-110055.

पाल क्षत्रिय, 28/157, स्नातक, गोरी, सुंदर कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. जातिबंधन नहीं. पाल क्षत्रिय को प्राथमिकता. लिखें: वि.नं. 250, सरिता, नई दिल्ली-110055.

20/158, कश्यप राजपूत (कहार), बी.ए., गौरवर्ण, सुंदर, सुशील कन्या हेतु सुयोग्य, सजातीय वर चाहिए. पिता राजपत्रित अधिकारी. लिखें: वि.नं. 251, सरिता, नई दिल्ली-110055.

पासी, 23 वर्षीया, 160 सें.मी., 65 कि.ग्रा., ग्रेजुएट, सेवारत कन्या हेतु सजातीय, सुयोग्य वर चाहिए. पिता मध्य प्रदेश में आई.ए.ए. अधिकारी. लिखें: वि.नं. 252, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माहेश्वरी, 29, 148 सें.मी., बी.ए. (आनर्स), इंगलिश लिट., सुंदर, गोरी, गृहकार्यदक्ष, तलाकशुदा (पांच वर्षीया पुत्री) हेतु माहेश्वरी, अग्रवाल, जैन, सुयोग्य वर चाहिए. विधुर एवं तलाकशुदा स्वीकार्य. लिखें: वि.नं. 253, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कोरी, 24, 150, सुंदर, गृहकार्यदक्ष, एम.ए. अध्ययनरत कन्या हेतु सजातीय वर चाहिए. विवाह शीघ्र. लिखें: वि.नं. 254, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सुंदर, सुशील, स्वर्णकार, 27 वर्षीया, 157 सें.मी., गेहुआं, एम.ए., बी.एड., कन्या हेतु सेवारत या व्यवसायी वर चाहिए. आर्य परिवार जातिबंधन मुक्त. लिखें: वि.नं. 255, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गढ़वाली ब्राह्मण कन्या, एम.ए., सुशील,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वस्थ, सुंदर, प्रतिष्ठित परिवार, हेतु राजकीय सेवारत, सुयोग्य, स्वस्थ, पोस्टग्रेजुएट, गढ़वाली ब्राह्मण वर चाहिए. उत्तम विवाह. लिखें: वि.नं. 256, सरिता, नई दिल्ली-110055.

प्रतिष्ठित, संपन्न, कायस्थ परिवारीय, 27 वर्षीया, 157, स्लिम, स्मार्ट, एडवोकेट कन्यार्थ डाक्टर, इंजीनियर, अधिकारी वर चाहिए. शीघ्र उत्तम विवाह. जातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 257, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26 वर्षीया, धोबी, बी.ए. पास, 160 सें.मी., गेहुआं रंग, सुंदर, सुशील, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु सुयोग्य, सजातीय वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 258, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सम्मानित माहेश्वरी परिवारीय, 25, 158 सें.मी., स्लिम, सुंदर, गोरी, मेधावी छात्रा, एम.एससी., पीएच.डी. (अध्ययनरत), विशेष योग्यता संगीत, गृहकार्यनिपुण कन्या हेतु आकर्षक, उच्च शिक्षित, सुस्थापित, सजातीय अथवा अग्रवाल वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 259, सरिता, नई दिल्ली-110055.

32 वर्षीया, स्मार्ट, गोंड जातीय, सरकारी सेवारत कन्या हेतु सजातीय, सुयोग्य वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 260, सरिता, नई दिल्ली-110055.

22 वर्षीया, 160 सें.मी., महेश्वरी, कानवेंट शिक्षित, गोरी, स्मार्ट, स्लिम, गृहकार्य रुचि, बी.ए. (मनोविज्ञान) आनर्स, कंप्यूटर डिप्लोमा, एम.ए. अध्ययनरत, इकलौती कन्या हेतु सुयोग्य डिग्री होल्डर इंगलिश मीडियम महेश्वरी वर चाहिए. पूर्ण विवरण सहित लिखें: वि.नं. 261, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अग्रवाल, गोयल गोत्र, 28/160, मंगली, एस.एस.सी. अगरेजी माध्यम, गृहकार्यदक्ष कन्यार्थ सुयोग्य वर. लिखें: वि.नं. 262, सरिता, नई दिल्ली-110055.

उत्तर प्रदेश पर्वतीय, 22 व 21 वर्षीया, स्नातकोत्तर व स्नातक, लंबी, अत्यंत सुंदर ब्राह्मण कन्याओं हेतु वर चाहिए. अभिभावक राजपत्रित अधिकारी. लिखें: वि.नं. 263, सरिता, नई दिल्ली-110055.

21, 150 सें.मी., कला स्नातक, कान्यकुब्ज ब्राह्मण, गौरवर्ण, सुशील, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु सेवारत, सुयोग्य, सजातीय वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 264, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अहिरवार, 23 वर्षीया, 153 सें.मी., बी.ए., सुंदर, गौरवर्ण, गृहकार्यदक्ष, पिता अधिकारी, हेतु योग्य वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 265, सरिता, नई दिल्ली-110055.

23/161½, एम.ए. अगरेजी, सुंदर, गृहकार्यदक्ष, स्लिम, सुशील, प्रतिष्ठित, माहेश्वरी परिवारीय कन्या हेतु इंजीनियर, सी.ए., एम.बी.ए. अथवा अधिकारी वर चाहिए. उत्तम विवाह. लिखें: वि.नं. 266, सरिता, नई दिल्ली-110055.

धानुक, 24/160, एम.ए., बी.एड., शासकीय सेवारत, सुंदर कन्या हेतु वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 267, सरिता, नई दिल्ली-110055.

33 वर्षीया, पासी, अध्यापिका, दिल्ली निवासी हेतु योग्य वर चाहिए. जातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 268, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सैनी (माली), 22/155, एम.ए., गोरी, इकहरा बदन, मांगलिक कन्या हेतु स्वजातीय/सुयोग्य वर चाहिए. पिता केंद्रीय सेवा में राजपत्रित अधिकारी. शीघ्र उत्तम विवाह. पूर्ण विवरण दें. लिखें: वि.नं. 269, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सुंदर, स्मार्ट, थोड़ी सी भारी, राजपूत कुशवाहा, गोरी, 26/160, एम.ए., बी.एड. कन्या हेतु उपयुक्त वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 270, सरिता, नई दिल्ली-110055.

पासी कन्या, 24, 160 सें.मी., एम.बी.बी.एस. हेतु डाक्टर, इंजीनियर, सुयोग्य अधिकारी, व्यवसायी, सजातीय वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 271, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कश्यप (प्रजापति), 25, 160, एम.ए., बी.एड., स्मार्ट, सुंदर, सुशील कन्यार्थ दहेज रहित, सुयोग्य वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 272, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27 वर्षीया, गौड़ ब्राह्मण, बी.एससी. होम साइंस, मोंटेसरी कोर्स, गृहकार्यदक्ष, गौरवर्ण, सुंदर, सुशील कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 273, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कश्यप (कहार), 35, 162 सें.मी. एवं 26, 150 सें.मी., गृहकार्यदक्ष, सुंदर, केंद्रीय विद्यालय अध्यापिका एवं एकाउंटेंट, एम.ए., बी.एड. कन्याओं, प्रतिष्ठित परिवारीय हेतु सरकारी एवं व्यवसायरत वर चाहिए. शादी शीघ्र सामर्थ्यानुसार, प्राथमिकता बाथम, धुरिया, मल्लाह, निषाद, केवट आदि. लिखें: वि.नं. 274, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26/162, स्नातक, स्टेनो, ब्यूटीशियन (पार्ट टाइम), प्राइवेट सर्विस, सुंदर, जाटव कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. दहेज, जातिबंधन नहीं. सादा विवाह. लिखें: वि.नं. 275, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कायस्थ, 22, 159, बी.एससी., स्नातकोत्तर, कंप्यूटर डिप्लोमा अध्ययनरत, स्लिम, आकर्षक, प्रतिष्ठित पारिवारीय कन्या हेतु दिल्लीवासी, उत्तरभारतीय, सुयोग्य वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 276, सरिता, नई दिल्ली-110055.

इंदौर निवासी, जिझौतिया ब्राह्मण, 24 वर्षीया, 150 सें.मी., सुंदर, गृहकार्यदक्ष, एम.ए., डिजाइनिंग डिप्लोमा, कन्या हेतु सुयोग्य ब्राह्मण वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 277, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जाटव, प्रतिष्ठित परिवार, स्नातकोत्तर पुत्री, 25/160, हेतु डाक्टर, इंजीनियर, अधिकारी वर,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

110055.

बंसल, 30/160, नौवीं पास, सुंदर, गृहकार्य-कुशल हेतु बारोजगार वर चाहिए निस्संतान विधुर भी स्वीकार्य. लिखें: वि.नं. 279, सरिता, नई दिल्ली-110055.

बंसल, 26, 156, पीएच.डी., कन्या हेतु सजातीय वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 280, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25 वर्षीया, बी.एससी., एम.ए., यादव कन्या हेतु शासकीय सेवारत, सजातीय वर चाहिए. विवाह शीघ्र. लिखें: वि.नं. 281, सरिता, नई दिल्ली-110055.

21/160 सें.मी., पंजाबी, अग्रवाल, मांगलिक, एम.कम., कानवेंट शिक्षित, सुंदर कन्या हेतु सुयोग्य, व्यवसायरत वर चाहिए. पूर्ण विवरण शीघ्र लिखें: वि.नं. 282, सरिता, नई दिल्ली-110055.

मध्यप्रदेशीय, संभ्रांत, कश्यप, रायकवार, ग्रेजुएट, 22/157, कन्यार्थ सजातीय, वरीयता तुराह, धुरिया, सौंधिया वर को. शीघ्र विवाह. लिखें: वि.नं. 283, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अग्रवाल, बंसल, 22/152, स्लिम, बी.ए., सुशील, गृहकार्यदक्ष, गेहुआं रंग, हेतु सजातीय, आत्मनिर्भर, शिक्षित, दिल्लीवासी वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 284, सरिता, नई दिल्ली-110055.

30 वर्षीया, जादौन, राजपूत, निस्संतान, तलाकशुदा, राजकीय सेवारत हेतु 33-35 वर्षीय, विधुर, तलाकशुदा, सजातीय, सेवारत वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 285, सरिता, नई दिल्ली-110055.

पासी, अनुसूचित जाति, 27, 161, ग्रेजुएट, अविवाहिता, गेहुआं रंग, आकर्षक, गृहकार्यदक्ष, कर्मठ, सुशील, घरेलू कन्यार्थ वास्तविक दहेजविरोधी, कार्यरत वर. जातिबंधन नहीं. शीघ्र विवाह. लिखें: वि.नं. 286, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सोनकर, 26, एम.ए., एम.एड., गोरी कन्या हेतु सेवारत वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 287, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सरयूपारीण ब्राहमण, 23/150 सें.मी., स्नातक, आकर्षक कन्यार्थ सुव्यवस्थित वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 288, सरिता, नई दिल्ली-110055.

23/155, ब्राह्मण, बैंक कर्मचारी, गोरी, सुंदर, एक कान से थोड़ा ऊंचा सुनती है, हेतु योग्य वर चाहिए. दिल्लीवासी को प्राथमिकता. लिखें: वि.नं. 289, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28/157, दुआ, मैट्रिक, गेहुआं रंग, गृहकार्यदक्ष, तलाकशुदा, अकेली, दिल्ली निवासी हेतु सुयोग्य वर. निस्संतान, 35 वर्षीय, तलाकशुदा भी स्वीकार्य. लिखें: वि.नं. 290, सरिता, नई दिल्ली-110055.

पंजाबी, 35, स्लिम, हिंदी भाषी, सुशिक्षित, एक बच्ची 5 वर्ष, ससुराल में सताने से तलाक, मध्य प्रदेश निवासी हेतु स्वावलंबी, खुले विचारों वाला वर चाहिए. [illegible] स्वीकार्य. लिखें: वि.नं. 291, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सनाढ्य, 23/152, गौरवर्ण, एम.ए., बी.एड. हेतु सजातीय, सेवारत, सुयोग्य, शाकाहारी उत्तर-प्रदेशीय वर. शीघ्र विवाह. लिखें: वि.नं. 292, सरिता, नई दिल्ली-110055.

एम.डी. फाइनल, 26 वर्षीया, 155 सें.मी., कन्या हेतु कुमाउंनी ब्राह्मण/ब्राह्मण, स्नातकोत्तर मेडिको/इंजीनियर, भारतीय प्रशासनिक अथवा समकक्ष सेवा अधिकारी वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 293, सरिता, नई दिल्ली-110055.

21/167 सें.मी., गौड़ ब्राह्मण, डाक्टर परिवार की बी.एससी., बी.एड., स्लिम, स्मार्ट, गोरा रंग, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु सजातीय, राजपत्रित, डाक्टर, इंजीनियर, ए क्लास आफिसर वर चाहिए. अतिशीघ्र व उत्तम विवाह. प्रथम बार पूर्ण विवरण भेजें. लिखें: वि.नं. 294, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28 वर्षीया, 160 सें.मी., एम.ए., लेडी पुलिस आफीसर, चौधरी (राजपूत), कानूनन तलाकशुदा (1½ वर्षीय बेटे) हेतु फोर्स या केंद्रीय सर्विस वाला वर चाहिए. शादी शीघ्र व सादा. लिखें: वि.नं. 295, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26/150/1,600/-, माहेश्वरी, बी.कम., कंप्यूटर, सर्टीफिकेट, स्टेनोग्राफी, दिल्ली कार्यरत, सुंदर कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. (सोमानी, बांगड़ छोड़ कर) दहेज अनिच्छुक संपर्क करें. लिखें: वि.नं. 296, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27 वर्षीया, राजपूत (उत्तरप्रदेशीय), एम.ए., बी.एड., कानवेंट अध्यापिका, भाई प्रथम श्रेणी अधिकारी, गृहकार्यदक्ष, गौरवर्ण, सुंदर कन्या हेतु सुयोग्य, सेवारत वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 297, सरिता, नई दिल्ली-110055.

यादव, 23 वर्षीया, 155 सें.मी., एम.एससी. (रसायन विज्ञान), एम.एड., राजकीय विद्यालय में लेक्चरर (उ.प्र.), आकर्षक, स्मार्ट कन्या हेतु डाक्टर, इंजीनियर, बैंक अधिकारी या अन्य समकक्ष वर चाहिए. शीघ्र शादी. लिखें: वि.नं. 298, सरिता, नई दिल्ली-110055.

31 वर्षीया, एम.ए., गुप्ता (वैश्य), उ.प्र. निवासी, कंप्यूटर प्रोफेशनल, मातापिता सहित अमरीका बसे, निस्संतान, निर्दोष, तलाकशुदा कन्यार्थ सुयोग्य, सजातीय वर चाहिए. पूर्ण विवरण सहित लिखें: Sushil K. Bansal, 6106, Walnut Street Temple Hills, M.D. 20748 USA

23 वर्षीया, क्रिश्चियन, गौरवर्ण, इंटर, सिलाई, ट्रेनिंग, कन्या हेतु आत्मनिर्भर, संतानअयोग्य वर चाहिए. कोई बंधन नहीं. हिंदी में लिखें: वि.नं. 299, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25 वर्षीया, एम.ए., बी.एड., 157, हिंदू सैनी,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लकटर आदि भी कमरे में ही रखें। [illegible] बातों का भी ध्यान रखें।

सुशील एवं गृहकार्यपुर्ण कन्या हेतु [illegible] चाहिए. लिखें: वि.नं. 300, सरिता, नई दिल्ली-110055.

वधू चाहिए

25, 168, विधुर, निस्संतान, निर्व्यसनी, बी.ए. अध्ययनरत, घरेलू आय 1,600/-, 1,05,000/- बैंक बैलेंस, लाखों की चलअचल संपत्ति हेतु सुंदर, चरित्रवान कन्या. दहेज, जाति नहीं, सर्विस/बिजनेस नियोजित करा सकें या घरजंवाई को प्राथमिकता. लिखें: वि. नं.200, सरिता, नई दिल्ली-110055.

खूबसूरत, गोरी, गरीब, अनाथ लड़की स्वयं पत्रव्यवहार करे, बिना खर्चे की शादी, बी.ए. 28 वर्षीय, 179 सें.मी., 3,400/-, स्टेट बैंक, स्मार्ट, हिंदू युवक. विधवा, तलाकशुदा स्वीकार्य. लिखें: वि. नं.207, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मी क्षत्रीय (बिहार), 26, 165, 4,000/-, बी.ए., निजी भवन स्वव्यवसायरतार्थ, शिक्षित, गृहव्यवहारकुशल कन्या चाहिए. लिखें: वि. नं.208, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कूर्मि क्षत्रिय, 23/176 सें.मी., सांवला रंग, स्मार्ट, ग्रेजुएट, आकर्षक व्यक्तित्व, लखनऊ प्रतिष्ठित परिवारीय (निजी कार एवं अन्य संपत्तियां, आटो एजेंसी मालिक, आय प्रतिमाह पांच अंकीय), युवक हेतु सुंदर, गोरी, स्मार्ट वधू चाहिए. सजातीय को प्राथमिकता. पिता प्रथम श्रेणी राजपत्रित अधिकारी. पूर्ण विवरण सहित लिखें: वि. नं.209, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सिंधी, 23/158, मैट्रिक, हैंडसम, स्मार्ट वर हेतु सिंधी कन्या चाहिए. दहेज नहीं. लिखें: वि. नं.210, सरिता, नई दिल्ली-110055.

42 वर्षीय, आई.ए.एस., अविवाहित, अपना निजी व्यवसाय, सुपरिचित परिवार से संबंधित हेतु स्मार्ट, शिक्षित वधू चाहिए. कोई भी जाति, विधवा और तलाकशुदा भी लिखें: वि. नं.211, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27 वर्षीय, व्यवसायरत, चौरसिया, युवक, शिक्षित, सुंदर, स्वस्थ, मासिक आय 5,000/- रु. प्रतिमाह, हेतु शिक्षित, सुशील, सुंदर वधू चाहिए. लिखें: वि. नं.301, सरिता, नई दिल्ली-110055.

हिंदू (नाई), 25, 168, 11वीं, 6,000/-, ब्यूटी पार्लर/सैलून व्यवसायी, अपना मकान (दिल्लीवासी) हेतु योग्य, सुशील, गृहकार्यदक्ष, सजातीय कन्या चाहिए. लिखें: वि. नं.302, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27/175, एम.बी.ए., कर चुके, एम.सी.ए. अंतिम सेमिस्टर में अध्ययनरत, प्रतिष्ठित परिवार के सुंदर माहेश्वरी युवक हेतु अति सुंदर, शिक्षित, गृहकार्यदक्ष, माहेश्वरी/अग्रवाल कन्या चाहिए. प्रथम [illegible] दिल्ली-110055.

माहेश्वरी, 35, 165 सें.मी., कानूनन तलाकशुदा, निस्संतान, निजी व्यवसाय, मासिक आय पांच अंकीय, प्रतिष्ठित परिवारीय युवक हेतु सुसंस्कारित, गृहकार्य-दक्ष, माहेश्वरी या अग्रवाल वधू चाहिए. निस्संतान, विधवा भी स्वीकार्य दहेजबंधन नहीं. पूर्ण विवरण लिखें: वि. नं.304, सरिता, नई दिल्ली-110055.

23½, 180, 10,000/-, एम.ए., निजी व्यवसाय, ओसवाल, जैन युवक हेतु सुंदर कन्या चाहिए. लिखें: वि. नं.305, सरिता, नई दिल्ली-110055.

राजपूत, 28, बी.ए., पक्की सर्विस,वेतन 2,400/- प्रतिमाह, सहारनपुर निवासी युवक हेतु सुंदर, शिक्षित, गोरी, गरीब कन्या चाहिए. जाति/दहेजबंधन नहीं. लिखें: वि. नं.306, सरिता, नई दिल्ली-110055.

34, 162, 3,000/-, केंद्रीय सेवारत, पंजाबी युवक हेतु वधू चाहिए. जातिबंधन नहीं. निस्संतान, तलाकशुदा, विधवा स्वीकार्य. लिखें: वि. नं.307, सरिता, नई दिल्ली-110055.

23 वर्षीय, 160 सें.मी., एस.एस.सी. पास, निजी व्यवसाय, मासिक आय पांच अंकों में, सूरत स्थित, जैन ओसवाल, मूकबधिर युवक हेतु कन्या चाहिए. जातिबंधन नहीं. लिखें: वि. नं.308, सरिता, नई दिल्ली-110055.

प्रतिष्ठित माथुर वैश्य परिवार (माहिक), 24 वर्षीय/170 सें.मी., गौरवर्ण, स्मार्ट, एम.ए. म.प्र., निवासी, निजी प्रतिष्ठान, कई मकान, मासिक आय 5 अंकों में, हेतु स्लिम, लंबी, गौरवर्ण वधू चाहिए. उपजाति, जातिबंधन नहीं. विज्ञापन मात्र योग्य चयन हेतु. लिखें: वि. नं.309, सरिता, नई दिल्ली-110055.

33 वर्षीय, 158 सें.मी., नेत्रहीन, राजपुरोहित, एम.ए., बी.एड., राजकीय सेवारत अध्यापक, मासिक आय 2,100/-, 4 लाख की निजी अचल संपत्ति युवक हेतु वधू चाहिए. विधवा भी स्वीकार्य, जातिबंधन नहीं. लिखें: वि. नं.310, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26 वर्षीय, 168 सें.मी., 2,000/-, सरकारी सेवारत, कुमावत नवयुवक हेतु 18-23 वर्षीया, सुच्चरित्र तथा सुंदर, राजपूत कन्या चाहिए. दहेज नहीं. लिखें: वि. नं.311, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कोरी, 26/170, गौरवर्णीय, स्वस्थ, सुंदर, एम.काम., एलएल.बी., निजी व्यवसाय, प्रतिष्ठित परिवार, हेतु सुंदर, सुशील, गोरी, स्नातक, गृहकार्यदक्ष, संभ्रांत परिवारीय, सजातीय कन्या चाहिए. शीघ्र विवाह. लिखें: वि. नं.312, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कोली, 24, इंजीनियर, आई.आई.टी. और एम.बी.ए., आई.आई.एम., कंप्यूटर प्रतिष्ठान में सेवारत युवक हेतु सजातीय, ग्रेजुएट कन्या चाहिए.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अग्रवाल, 29/160 सें.मी., स्मार्ट, इंजीनियर (गोल्ड मेडलिस्ट), राजपत्रित अधिकारी, 3,500/-, गौरवर्ण युवक हेतु सुंदर, सुशिक्षित वधू चाहिए. विज्ञापन उत्तम चयन हेतु. पूर्ण विवरण सहित लिखें: वि. नं.314, सरिता, नई दिल्ली-110055.

बीसा अग्रवाल, गर्ग गोत्रीय, संभ्रांत परिवार 28, 166, बी.काम., गौरवर्ण, स्मार्ट, सुशील, शाकाहारी, निजी संपत्ति, निजी व्यवसाय (उच्च आय वर्गीय) युवक के लिए सजातीय, सुंदर, सुशील, गृहकार्यदक्ष, स्लिम एवं आकर्षक वधू चाहिए. विज्ञापन उत्तम चयन हेतु. पूर्ण विवरण सहित लिखें: वि. नं.315, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कश्यप (दुशाद), 23 वर्षीय, दुबलापतला, सरकारी नौकरी, छोटा साधारण परिवार, कुल आय 2,500/-, हेतु गोरी, अति सुंदर, कामचलाऊ, पढ़ीलिखी, गृहकार्यदक्ष वधू चाहिए. जाति व दहेजबंधन नहीं. विवाह रजिस्ट्री से, शीघ्र लिखें: वि. नं.316, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सक्सेना, 26/168, इंजीनियर, एन.टी.पी.सी., आकर्षक युवक हेतु सुंदर, शिक्षित, पारिवारिक कन्या चाहिए. लिखें: वि. नं.317, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28/163 सें.मी./2,500/-, आंशिक विकलांग युवक हेतु वधू चाहिए. जातिबंधन नहीं. तलाकशुदा, विधवा भी मान्य. लिखें: वि. नं.318, सरिता, नई दिल्ली-110055.

बालमीकि, 33/157/3,500/-, बी.काम., बैंक कर्मचारी युवक हेतु सुशिक्षित वधू चाहिए. कोई बंधन नहीं. लिखें: वि. नं.319, सरिता, नई दिल्ली-110055.

रजक, 24, 169, एम.ए., गोरा, स्मार्ट, एम.सी.डी. सेवारत युवक हेतु सरकारी सेवारत वधू चाहिए. लिखें: वि. नं.320, सरिता, नई दिल्ली-110055.

ओसवाल (बीसा), श्वेतांबर, जैन, इंजीनियर, 27, 174 सें.मी., 6,000/- मासिक, हेतु लंबी, गोरी, गुणवान, 22-24 वर्षीया, सजातीय वधू चाहिए. लिखें: वि. नं.321, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुमाऊंनी राजपूत 31/165/3,500/-, बैंक क्लर्क हेतु रूपवतीगुणवती वधू चाहिए. दहेज मांग नहीं. प्रथम बार में जन्मपत्री एवं पूर्ण विवरण सहित लिखें: वि. नं.322, सरिता, नई दिल्ली-110055.

महरोत्रा, 29, एम.काम., उ.प्र. शासन सेवारत युवकार्थ सुंदर, गृहकार्यदक्ष, मधुर स्वभावी, सजातीय वधू चाहिए. लिखें: वि. नं.323, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27½, 173, राजपूत, स्वस्थ युवक, सिविल इंजीनियरिंग, ग्रेजुएट, केंद्रीय सेवारत जूनियर इंजीनियर हेतु घरेलू, लंबी, सुंदर, शिक्षित, सुशील वधू चाहिए. जातिबंधन नहीं लिखें: वि. नं.324.

माहेश्वरी, 27/170/3,000/-, सुंदर, एम.काम., पीएच.डी. अध्ययनरत, सरकारी सेवारत युवक हेतु शिक्षित, सुंदर वधू चाहिए. शीघ्र विवाह. लिखें: वि. नं.325, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुशवाहा, 26/160/8,000/-, एडवोकेट, झांसी, हेतु सरकारी कार्यरत, सुंदर, सुशिक्षित, सुशील, गृहकार्य में दक्ष, सजातीय वधू चाहिए. पिता वरिष्ठ एवं ख्याति प्राप्त एडवोकेट हैं. वर उन का एकमात्र पुत्र उत्तराधिकारी है. विवरण सहित लिखें: वि. नं.326, सरिता, नई दिल्ली-110055.

यादव, 29,165, पशुपालन विभाग (नैनीताल) में सेवारत, राजपत्रित अधिकारी हेतु सुयोग्य कन्या चाहिए. दहेजबंधन नहीं. लिखें: वि. नं.327, सरिता, नई दिल्ली-110055.

हैदराबाद निवासी, माहेश्वरी, 30 वर्षीय, 172 बी.काम., निजी व्यवसाय के लिए सुंदर, सजातीय, गृहकार्य में दक्ष कन्या चाहिए. दहेजबंधन नहीं. लिखें: वि. नं.328, सरिता, नई दिल्ली-110055.

31/165/2,200/-, सनाढ्य ब्राह्मण, बी.एस.सी., बी.एड., एलएल.बी., एम.एससी. (अध्ययनरत), सीनियर टीचर हेतु सजातीय वधू चाहिए. उपजाति, दहेजबंधन नहीं. उच्च शिक्षा प्राप्त/सेवारत को प्राथमिकता. लिखें: वि. नं.329, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अग्रवाल, बैंक अधिकारी, 40 (पूर्वपत्नी स्वर्गवासी), हेतु विधवा, तलाकशुदा (निस्संतान) अथवा संतानोत्पत्ति असमर्थ पत्नी चाहिए. गरीब परिवार का प्रस्ताव भी स्वीकार्य. दहेज जातिबंधन नहीं. लिखें: वि. नं.330, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27, माहेश्वरी, स्नातक, सुंदर, स्वस्थ, दिल्ली-वासी, मारवाड़ी, लाखों की अचल संपत्तिशाली, शाकाहारी, व्यापारिक परिवार के युवक हेतु अति सुंदर, गौरवर्ण, आकर्षक, गृहकार्यनिपुण कन्या चाहिए. दहेज नहीं, मध्यम, गरीब परिवारिक कन्या भी सुयोग्यता, सुंदरतावश मान्य. राजस्थानवासी को प्राथमिकता. विस्तृत विवरण लिखें: वि. नं.331, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सिख, अविवाहित, 27 वर्षीय, यू.ए.ई. में सुव्यवस्थित युवक हेतु पंजाबी कन्या से पत्राचार आमंत्रित. फोटो सहित लिखें: MR BALDEV SINGH P.O. BOX-8705, MUSSAFAH ABU-DHABI

बीसा अग्रवाल, गर्ग, 22/168 सें.मी., गौरवर्ण, अंडर ग्रेजुएट, थोक दवा व्यवसाय से मासिक आय पांच अंकीय, एकमात्र पुत्र हेतु सजातीय, सुंदर एवं गृहकार्यदक्ष वधू चाहिए. लिखें: वि. नं.332, सरिता, नई दिल्ली-110055.

29/175, सें.मी., कुर्मि क्षत्रिय असिस्टेंट प्रोफेसर (इलेक्ट्रानिक इंजीनियरिंग) आंशिक विकलांग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(केवल दाहिना हाथ का उगालया) हेतु सुंदर, सुशिक्षित कन्या चाहिए. जातिबंधन नहीं. शीघ्र लिखें: वि. नं.333, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जायसवाल, 25/180, प्रतिष्ठित परिवार का युवक, ए क्लास मेडिकल कंपनी में मेडिकल रिप्रेजेंटेटिव हेतु योग्य, सुंदर वधू चाहिए. पूर्ण विवरण भेजें लिखें: वि. नं.334, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गुजराती, 37 वर्षीय, अविवाहित मैट्रिक, व्यवसायी, उच्च साहित्य प्रेमी व प्रगतिशील विचारों के आकर्षक नवयुवक हेतु शिक्षित, मधुर स्वभाव की, संकीर्ण विचारों से मुक्त, आधुनिक, आकर्षक जीवनसंगिनी चाहिए. जाति व दहेज नहीं. गरीब व बेसहारा को प्राथमिकता. लिखें: वि. नं.335, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जाटव, 29, 165 सें.मी., एम.ए., 3,200/-, बैंक कैशियर, प्रतिष्ठित परिवार, नास्तिक, बौद्धिष्ट विचारधारा, समाजसेवी, म.प्र. में कार्यरत, दहेज, विरोधी युवक हेतु सुयोग्य वधू चाहिए. कोई बंधन नहीं. प्राथमिकता सिविल मैरिज. लिखें: वि. नं.336, सरिता, नई दिल्ली-110055.

पंजाबी, मैढ़ राजपूत, स्वर्णकार, 29, 180, 2,200/-, अध्यापक हेतु सजातीय, खत्री वधू चाहिए. लिखें: वि. नं.337, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गुप्ता/वैश्य, मांगलिक, 25/178, बी.एससी., व्यवसायरत, स्मार्ट, आय पांच अंकों में, हेतु सुयोग्य वधू चाहिए. कुंडली सहित लिखें: वि. नं.338, सरिता, नई दिल्ली-110055.

40 वर्षीय, गौड़ ब्राह्मण, निजी कार्य करने में सक्षम, चलने में असमर्थ, निजी व्यवसाय, हेतु विधवा, बेसहारा, आंशिक रूप से विकलांग लेकिन कार्य करने में सक्षम, बांझ जीवनसंगिनी चाहिए. लिखें: वि. नं.339, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जांगिड़ (ब्राह्मण) 28, 171, अंडर ग्रेजुएट, स्वस्थ, सुंदर, आय चार अंकीय, निजी व्यापार, हेतु सुंदर, गृहकार्यदक्ष, शिक्षित कन्या चाहिए. लिखें: वि. नं.340, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25 वर्षीय, बंगाली, साइंस ग्रेजुएट, व्यवसायरत युवक हेतु वधू चाहिए. दहेज, जातिबंधन नहीं. लिखें: वि. नं.341, सरिता, नई दिल्ली-110055.

मंगलीक, पंजाबी खत्री, 26 वर्षीय, 157 सें.मी., एम.एससी., अपना व्यवसाय, हेतु सुंदर, स्लिम, सुशिक्षित, सुशील, मंगली कन्या चाहिए. दहेजबंधन नहीं. लिखें: वि. नं.342, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27 वर्षीय, 183 सें.मी., गौरवर्ण, स्वस्थ, एम.बी.बी.एस., म.प्र. शासन मेडिकल आफीसर, कान्यकुब्ज युवक हेतु सजातीय, अति सुंदर, योग्य कन्या चाहिए. मेडिको को वरीयता. लिखें: वि. नं.343, सरिता, नई दिल्ली-110055.

म.प्र. निवासी, 28, 159, 50 कि.ग्रा., जांगड़ा पोरवाल, (वैष्णव वैश्य), शासकीय सेवा, 1,900/-, दहेजावरोध हेतु [illegible] भाषाभाषी, निरोग, निर्दोष वधू. वधू सिर्फ पहने हुए वस्त्रों में ही स्वीकार्य होगी. शादी सिर्फ कोर्ट मैरिज. जाति/धर्मबंधन नहीं. विज्ञापन बेहतर चयन हेतु संपूर्ण विवरण प्रथम बार में अपेक्षित. लिखें: वि. नं.344, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गढ़वाली (कोल राजपूत/तेल भंडारी) 30, 168 सें.मी., इंटर, 2,000/-, सेना में लिपिक, स्वस्थ, सुंदर, रंग गोरा, युवक हेतु सेवारत वधू चाहिए. तलाकशुदा, विधवा, असहाय, सामान्य विकलांग, एक बच्चे सहित स्वीकार्य. घरजंवाई रहना स्वीकार्य. गढ़वाली/कुमाऊंनी को प्राथमिकता. जातिबंधन नहीं. पूर्ण विवरण सहित शीघ्र लिखे. सादा विवाह. लिखें: वि. नं.345, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25, 160 सें.मी., कूर्मि क्षत्रिय, एम.काम., मेडिकल रिप्रेजेंटेटिव, 2,500/- मासिक, हेतु सुंदर, स्नातक कन्या. किसी भी क्षत्रियवंशीय कन्या ग्राह्य. लिखें: वि. नं.346, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26, 170, 4,000/-, एम.काम., सी.ए., आई.आई.बी., स्टेट बैंक कार्यरत, विश्नोई (वैश्य) युवक हेतु सुंदर, स्लिम, सुसंस्कृत वधू चाहिए. उपजाति दहेजबंधन नहीं. लिखें: वि. नं.347, सरिता, नई दिल्ली-110055.

बंबई निवासी, डाक्टर, माहेश्वरी परिवार के 30 वर्षीय, एम.डी. पुत्र, ऊंचाई 168 सें.मी., के लिए सुशिक्षित, सुंदर एवं सुशील लड़की चाहिए. इंजीनियर, डाक्टर, चार्टर्ड एकाउंटेंट व अन्य तकनीकी शिक्षा प्राप्त लड़की के लिए प्राथमिकता. जातिबंधन नहीं. लिखें: वि. नं.348, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जायसवाल/कलवार, 26/165, एम.काम., सी.ए., बैंक सेवारत हेतु ग्रेजुएट, गोरी, सुंदर, वधू चाहिए. लिखें: वि. नं.349, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मी क्षत्रिय, 24 वर्षीय, थल सेना में कमीशंड आफीसर हेतु सुंदर, कान्वेंट एजुकेटिड, मार्डन वधू चाहिए. लिखें: वि. नं.350, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24 वर्षीय, उत्तरप्रदेश निवासी (कश्यप कहार), सेवारत, प्रथम श्रेणी मैकेनिकल स्नातक इंजीनियर हेतु 20-22 वर्षीया, स्वजातीय, प्रतिष्ठित परिवारीय, सुशिक्षित, लंबी, सुंदर वधू चाहिए. पिता सेवानिवृत्त प्रथम श्रेणी राजपत्रित अधिकारी, अग्रज केमिकल इंजीनियर हैं. लिखें: वि. नं.351, सरिता, नई दिल्ली-110055.

30 वर्षीय, 175 सें.मी., महाराष्ट्रीयन ब्राह्मण, डाक्टर, एम.एस. (नेत्र), सेवारत हेतु डाक्टर वधू चाहिए. लिखें: वि. नं.352, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27 वर्षीय, 168 सें.मी., सरकारी पदाधिकारी, संपन्न परिवार, हेतु सुंदर, सुशील सुशिक्षित, संभ्रांत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नं.353, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25/170/2,500/-, अरोड़ा बैंक कार्यरत, सहारनपुर निवासी युवक हेतु वधू चाहिए. लिखें: वि. नं.354, सरिता, नई दिल्ली-110055.

30/155/2,800/-, दृष्टिहीन, एम.ए., बी.एड. (संस्कृत), टी.जी.टी., सरकारी अध्यापक हेतु शिक्षित, घरेलू, नेत्रवान, सुयोग्य वधू चाहिए. लिखें: वि. नं.355, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सिंधी 31 वर्षीय, बी.ए., सरकारी सेवारत, तलाकशुदा विकलांग (बाईं टांग दाहिनी टांग से छोटी) युवक हेतु स्वस्थ वधू चाहिए. जाति एवं दहेजबंधन नहीं. मासिक आय 2,000/-, लिखें: वि. नं.356, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माहेश्वरी, 26/165, बी.काम., स्मार्ट, सिलिगुड़ी में निजी व्यवसाय, मकान, अच्छी आय, हेतु सुशिक्षित, गृहकार्यदक्ष, सुंदर वधू चाहिए. शीघ्र विवाह लिखें: वि. नं.357, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28/156/1,800/-, सरकारी सेवारत, टेक्नीशियन हेतु सुंदर सुशील, सुशिक्षित, कश्यप (कहार) वधू चाहिए. दहेज नहीं. लिखें: वि. नं.358, सरिता, नई दिल्ली-110055.

50, अधिकारी, 176, 60, 6,500/-, अकेला, तलाकशुदा, निर्व्यसनी, संपत्तिवान, दिल्लीवासी, स्वस्थ, दायित्वमुक्त हेतु वधू. कोई बंधन नहीं. लिखें: वि. नं.359, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मी क्षत्रिय, 26/170 सें.मी., एम.ए., स्मार्ट युवक, अपना व्यवसाय/पिता यूनिवर्सिटी प्रोफेसर, अंकल रिटायर्ड आर्मी अफसर, प्रोपर्टी यू.पी. व एच.पी. में, युवक हेतु ग्रेजुएट, सुंदर, सुशील, लंबी, स्लिम, गौरवर्ण, 23 वर्ष से कम उम्र, संभ्रांत परिवारीय वधू चाहिए. बुंदेल खंड निवासी को वरीयता. लिखें: वि. नं.360, सरिता, नई दिल्ली-110055.

34, 165, गोयल, अग्रवाल, शिक्षित, आकर्षक, निर्व्यसनी, निजी व्यवसाय, निस्संतान तलाकशुदा हेतु युवती चाहिए. लिखें: वि. नं.361, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जाटव (अ.जा.), 26 वर्षीय, 168 सें.मी., 4,000/-, सहायक अधिशासी अभियंता, सरकारी सेवारत, उ.प्र. निवासी हेतु सुंदर, सुशिक्षित कन्या चाहिए. लिखें: वि.नं. 362, सरिता, नई दिल्ली-110055.

30 वर्षीय, यू.ए.ई. में सुस्थापित, सिख युवक शीघ्र भारत आ रहे हेतु विवाहार्थ पत्राचार आमंत्रित. जातिबंधन नहीं लिखें: MANJIT SINGH. P.O. BOX-2380. OLD PALACE. ABU-DHABI UAE.

नेत्रहीन राजस्थानी ब्राह्मण 25, 170, 2,500/-, बी.ए. एम.बी.आई., लखनऊ में स्टेनोग्राफर हेतु शिक्षित, गृहकार्यदक्ष, घरेलू कन्या चाहिए. जाति बंधन नहीं. लिखें: वि. नं.363, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जीवनसंगिनी चाहिए, क्रिश्चियन, 59, 173, विधुर हेतु. हाल ही में केंद्रीय सरकार के उच्च पद से सेवानिवृत हुए हैं. निजी मकान, कोई बंधन नहीं. लिखें: वि. नं.364, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माहेश्वरी, 26, 168 सें.मी., 2,800/- उ.प्र. सरकार के उपक्रम में कार्यरत डिप्लोमा इंजीनियर हेतु सुंदर, सुशिक्षित, माहेश्वरी/अग्रवाल, अन्य वैश्य कन्या चाहिए. पूर्ण विवरण सहित लिखें: वि. नं.365, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26, 173, गोयल, बी.ए., एलएल.बी., निजी व्यवसाय (हौजरी), मासिक आय 5,000/-, सहारनपुर निवासी युवक हेतु लंबी, गौरवर्णीय, सुंदर, सुयोग्य, गृहकार्यदक्ष, सजातीय वधू चाहिए. लिखें: वि. नं.366, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सुसभ्य, खूबसूरत, उम्र 18 से 20, सरकारी सेवारत चाहिए. चुस्त, 27, 170, बी.ए., 1,950/-, आर्मी क्लर्क, क्षत्रिय, तलाकशुदा हेतु, वरीयता केवल यू.पी., केरल गर्ल. लिखें: वि. नं.367, सरिता, नई दिल्ली-110055.

साहू, उ.प्र. निवासी, 28 वर्षीय, 5,000/- मासिक, 160 सें.मी., ग्रेजुएट, क्लाथ मर्चेंट, युवक हेतु सुंदर, सजातीय कन्या चाहिए. दहेजबंधन नहीं. लिखें: वि. नं.368, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25 वर्षीय, स्वस्थ, सुंदर, व्यवसायरत, गौड़ ब्राह्मण (शांडिल्य), भवन, कार, आधुनिक सुविधा-संपन्न युवक हेतु सुयोग्य वधू अपेक्षित. न्यूनतम शिक्षा मैट्रिक. विवाह शीघ्र. लिखें: वि. नं.369, सरिता, नई दिल्ली-110055.

निषाद (केवट), 26, 170 सें.मी., एम.ए., एअरफोर्स में अफसर के पद पर नियुक्त हेतु सुशिक्षित वधू चाहिए. जातिबंधन नहीं, सेवारत को वरीयता. लिखें: वि. नं.370, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26, 151, 3,500/-, चौरसिया, म.प्र. निवासी, अर्ध शासकीय सेवारत, सुशिक्षित हेतु सुंदर, सुशिक्षित वधू चाहिए. लिखें: वि. नं.371, सरिता, नई दिल्ली-110055.

मारीशस देश का युवक, 38 कुंआरा, एम.ए., सरकारी सेवारत, मासिक 5,535/-, हेतु ग्रेजुएट कन्या चाहिए. दहेज, जातिबंधन नहीं. लिखें: With Address P.S. C/o Jawahar Lal Muthoora, Malherbes Street, Curepipe, MAURITIUS.

27 वर्षीय, 168 सें.मी., पंजाबी मैट्रिक, निजी व्यवसाय, आय चार अंकीय, संतान उत्पन्न करने में असमर्थ युवक हेतु वधू चाहिए. लिखें: वि. नं.372, सरिता, नई दिल्ली-110055.

क्रिश्चियन, सुंदर, लंबे, धार्मिक, बी.काम., 32, अपना छोटा बिजनेस, युवक हेतु सुंदर, पढ़ीलिखी, सादे विचारों वाली कन्या चाहिए भारत और विदेश में फोटो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सहित लिखें: MRS K. VITTAL, 3601, WIS-AVENUE N.W. WASHINGTON. D.C.-D.C. 20016. USA.

37 वर्षीय, अविवाहित गौड़ ब्राह्मण, गाजियाबाद में निजी मकान, हेतु वधू चाहिए. निस्संतान विधवा, तलाकशुदा भी विचारणीय, दहेज नहीं, शीघ्र विवाह हेतु लिखें: वि. नं.373, सरिता, नई दिल्ली-110055.

वरवधू चाहिए

कश्यप धीवर, 23, 145, ग्रेजुएट, सुंदर हेतु उच्च सेवारत एवं 27, 170, गोरा, वायु सेना में कार्यरत हेतु गोरी, सुंदर, ग्रेजुएट वरवधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 374, सरिता, नई दिल्ली-110055.

दिगंबर जैन खंडेलवाल, 25, 165, बी.एससी., पारिवारिक, व्यापाररत, हेतु सजातीय वधू एवं बहन 21, 157, बी.ए., सुंदर, सुशील, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु सजातीय वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 375, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कहार (धुरिया), 28, 24 वर्षीया, सांवला रंग, मैट्रिक, सिलाईबुनाई, गृहकार्य में दक्ष हेतु वर, 34 वर्षीय, एम.एससी., राष्ट्रीयकृत बैंक में कार्यरत हेतु शिक्षित, सुंदर वधू हेतु पूर्ण विवरण सहित स्वाजातीय जन लिखें: वि.नं. 376, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सुंदर, सुशील, इंटर अध्ययनरत, चमार, 22, 145, गृहकार्यदक्ष कन्यार्थ सुयोग्य वर एवं नेत्र चिकित्सक, 31, 155, 5,000/-, एम.बी.बी.एस., डी.ओ.एम.एस., हेतु मेडिको वधू, शीघ्र विवाह. लिखें: वि.नं. 377, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गोद विज्ञापन

20-14 वर्षीया, खत्री, शिक्षित लड़कियों को गोद लेने इच्छुक प्रतिष्ठित निस्संतान परिवार लिखें: वि.नं. 378, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सुसंपन्न जायसवाल दंपती हेतु सुंदर, स्वस्थ, 4 वर्ष तक का लड़का गोद देने के इच्छुक हैं. लिखें: वि.नं. 379, सरिता, नई दिल्ली-110055.

महिला आठ साल की बालिका गोद लेना चाहती है. लिखें: वि.नं. 380, सरिता, नई दिल्ली-110055.

रिक्त स्थान

अंगरेज़ी टाइपिस्ट, जिस को हिंदी, अगरेजी अनुवाद करने का अच्छा अनुभव होना अनिवार्य है. अवकाशप्राप्त को प्राथमिकता, वेतन योग्यता के ऊपर निर्भर, संपूर्ण विवरण सहित लिखें: वि.नं. 381, सरिता, नई दिल्ली-110055.

दिल्ली स्थित एकाकी अधिकारी हेतु समस्त गृहकार्य के लिए अकेली, शिक्षित, विश्वसनीय महिला (30-35) चाहिए. पारिवारिक सदस्यता, सम्मान व आधुनिक सुविधाएं उपलब्ध. आकर्षक वेतन. लिखें: वि.नं. 382, सरिता, नई दिल्ली-110055.

देशविदेश हेतु सपारिश्रमिक संवाददाता चाहिए. आवेदन करें: व्यवस्थापक, श्री साहित्य संदेश, राष्ट्रीय हिंदी मासिक, पुलिस लाइन, मोतिहारी (बिहार).

कलाकार चाहिए : ड्रामा और वीडियो फिल्म हेतु शास्त्रीय और पाश्चात्य वादक, शास्त्रीय और पाश्चात्य डांसर, गायकगायिका, एनाउंसर. अंतिम तिथि 25 मार्च. लिखें: नारायण ड्रामा कंपनी, खम्हारडीह, गाताडीह, जि. रायगढ़ (म.प्र.) 496 445.

सामाजिक चेतना

सामाजिक चेतना से संपन्न युवकयुवतियों को सामाजिक कार्यों में सहभागिता के लिए विचारविमर्श हेतु मंच 'आस्था'. संपर्क : शैलेंद्र, 72- बी, देवीपथ, जयपुर.

मेडिकल

प्लास्टिक/कासमेटिक शल्य चिकित्सा केंद्र, 11-ए/6, पुराना राजेंद्र नगर, नई दिल्ली. कासमेटिक शल्य चिकित्सा हेतु कृपया संपर्क करें. दूरभाष 585802

अमरीका प्रशिक्षित कासमेटिक सर्जन द्वारा संचालित कासमेटिक सर्जरी सेंटर, एफ-12, ईस्ट आफ कैलाश, नई दिल्ली. दूरभाष 6444511, 6444588.

व्यवसाय

PURCHASE of Pin-Lace (CLUNY-LACE) items all over India. Write to Box 5412, G.P.O., Bangalore-560001.

अमरीकन ज्ञान पर अपना नाम, पता, 1,000 उत्तम क्वालिटी गोंद लगे लेबिल छपवा सकते हैं, जिन के बाईं ओर सुनहरे बार्डर, शुल्क रु 60, वी.पी.पी. द्वारा (डाक खर्च अलग), कुलदीप सिंह, 32, दी मान, अमृतसर-143017.

स्वतंत्र लेखन

लेखकोपयोगी साहित्य मुफ्त मंगाएं. तारिका प्रकाशन, अंबाला छावनी (हरियाणा).

लेखकोपयोगी साहित्य मंगाइए, सैन्नी अशेष, पांवटा साहिब, (हिमाचल प्रदेश) 173025.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

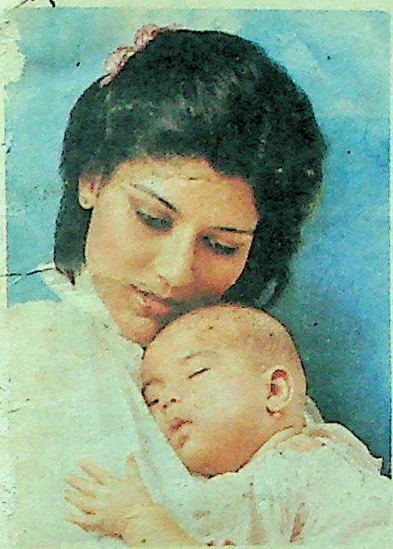

"अपने नन्हे की
कोमल त्वचा
के लिए मुझे
सिर्फ़ जॉन्सन्स
बेबी सोप पर
भरोसा है."

किसी और साबुन में नहीं
जॉन्सन्स बेबी ऑइल के गुण

जॉन्सन एण्ड जॉन्सन

शिशु लालन-पालन में वर्षों की निपुणता

Ogilvy&Mather 7764/HN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

BPL

बेजोड़ उत्तम तस्वीरें
बी पी एल-टी वी & वीडियो

बी पी एल. नाम ही गारंटी का.

अधिकृत बी पी एल विक्रेता के यहां
टी वी और वीडियो प्रदर्शन फ़िल्म देखिए.

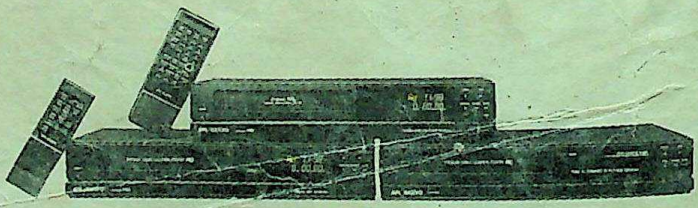

BPL
IN PURSUIT OF PERFECTION

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरिता

शिक्षा विशेषांक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"पहले मैं सोचता था अपना घर बनाने के लिए अमीर होना ज़रूरी है।"

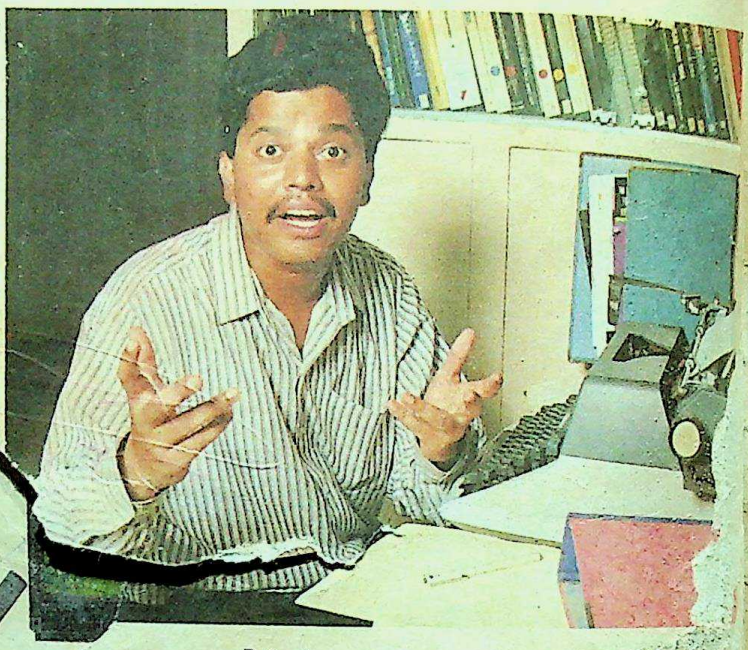

लेकिन तब मैंने गृह ऋण खाता स्कीम का नाम ही नहीं सुना था।"

जी हाँ, इनकी तरह आप भी गृह ऋण खाता स्कीम की मदद से अपना घर बना सकते हैं चाहे आज आपके पास पर्याप्त राशि न भी हो।

गृह ऋण खाता स्कीम बचत से जुड़ी एक विशेष योजना है जो आपको गृह ऋण लेने योग्य बनाती है। यह स्कीम इतनी आसान और सुविधाजनक है कि इससे वेतन-भोगी, दिहाड़ी पर काम करने वाले मज़दूर, व्यावसायिक, व्यापारी तथा किसान को भी फ़ायदा हो सकता है। इसके अतिरिक्त इस स्कीम में कर छूट का आकर्षण भी है।

गृह ऋण खाता स्कीम एक राष्ट्रीय योजना है। देश-भर में किसी भी राष्ट्रीयकृत बैंक या कई अन्य अधिसूचित बैंकों की नज़दीकी शाखा से सम्पर्क कीजिए, और आज ही अपना गृह ऋण खाता खोलिए।

राष्ट्रीय आवास बैंक
NATIONAL HOUSING BANK
(भारतीय रिज़र्व बैंक के पूर्ण स्वामित्व में)
हिन्दुस्तान टाइम्स हाऊस,
18-20, कस्तूरबा गांधी मार्ग,
नई दिल्ली- 110 001.
बॉम्बे लाइफ बिल्डिंग,
45, वीर नरीमन रोड, फोर्ट,

हमारा लक्ष्य : सबके लिए आवास

Chaitra-D NHB 1690 HIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरिता

सामाजिक व पारिवारिक पुनर्निर्माण की पाक्षिक पत्रिका

संपादक व प्रकाशक : विश्वनाथ अंक : 862 मार्च (द्वितीय) 1991

कथा साहित्य

154 अथ से इति तक
बेटी को सही राह पर लाने वाला पिता

164 दुखवा कासे कहूं
अत्याचारी शासकों की घिनौनी कारगुजारियां

176 हैप्पी बर्थ डे टू यू
अंगरेजों की देन

36 प्रति पुरुष
एहसानों के नीचे दबा युवक

14 मेहनत का फल
लड़के को ढाढ़स देने वाली मां

48 21वीं शताब्दी
देश की गाड़ी उलटी दिशा की ओर

2 मृगतृष्णा
विदेश में सहारे का भ्रम

टेढ़ेमेढ़े रास्ते
शादीशुदा अधेड़ का उच्छृंखल मन

[illegible]

[illegible] अस्थिरता
[illegible]श को खा रही है

25 असम में दो नए हिंसक आंदोलन
[illegible]वादी गुटों का जन्म

3[illegible] [illegible]दिर मसजिद विवाद
[illegible]खर हल क्या है

52 [illegible]चा स्कूल जाने से कतराता है?
क[illegible] जान कर निवारण करने का सुझाव

58 बस्ते का बोझ
और भी समस्याएं हैं नन्हेमुन्नों की

70 अम्मां, मुझे पढ़ने तो दो
पढ़ाई के दौरान बाधा न डालने की सलाह

76 घर में पढ़ाई का माहौल
किस तरह बनाएं

89 बच्चों को विदेशी पुस्तकें न दें
शंकालु मानसिकता का खतरा

94 शिक्षा का माध्यम
पांचवीं तक मातृभाषा में हो

98 सरकारी स्कूल
समस्या शिक्षकों के अनुशासन की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

105 ट्यूशन
किस का उद्धार?
113 आधुनिक शिक्षा और सफलता
छात्रों के लिए उपयोगी सुझाव
117 सहशिक्षा कितनी सार्थक
पश्चिमी देशों की नकल
120 अनूप कुमार मालती
अभिभावक शिक्षक संघ के सचिव से भेंट
124 प्राथमिक शिक्षा का गिरता स्तर
सुधार की संभावनाएं
145 साड़ी में फाल कैसे लगाएं?
साड़ी की हिफाजत के तरीके

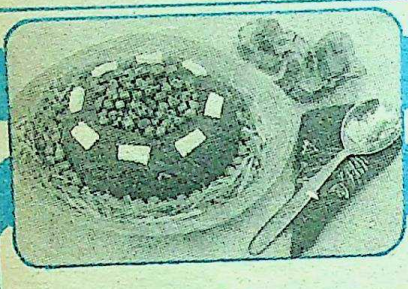

स्तंभ

35 ये पति
109 नए पकवान
163 दिनदहाड़े
175 इन्हें भी आजमाइए
180 इधर उधर
183 चंचल छाया
6 आप के पत्र
15 सरित प्रवाह

कविताएं

12 पंजाब
131 पल एक का परिचय
147 दिल धड़कने लगता है
179 ये दिन

संपादकीय, विज्ञापन व प्रकाशन कार्यालय :
दिल्ली प्रेस भवन, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.
दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन लि. के लिए विश्वनाथ द्वारा प्रकाशित तथा दिल्ली प्रेस समाचार पत्र प्रा.लि. साहिबाबाद [illegible] मुद्रित
अन्य कार्यालय : अहमदाबाद-503, नारायण चैंबर्स, आश्रम रोड, अहमदाबाद-380009. बंगलौर : 302-बी, 'ए' ब्लीस कारनर एपार्टमेंट्स, 3, ब्लीस रोड, बंगलौर-560001. बंबई : 79-ए, मेनल चैंबर्स, नरीमन पाइंट, बंबई-400021. कलकत्ता : तीसरी मंजिल, पोद्दार पाइंट, 113, पार्क स्ट्रीट, कलकत्ता-700016. मद्रास : 14, पहली मंजिल, सीसंस कॉम्प्लेक्स, 150/82, मांटीअथ रोड, मद्रास-600008. सिकंदराबाद : 122, पहली मंजिल, चिनाय ट्रेड सेंटर लेन, 116, पार्कलेन, सिकंदराबाद-500003.
© दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन लि. बिना आज्ञा कोई रचना किसी प्रकार उद्धृत नहीं की जानी चाहिए.
सरिता में प्रकाशित कथा साहित्य में नाम, स्थान, घटनाएं व संस्थाएं काल्पनिक हैं और वास्तविक व्यक्तियों, संस्थाओं से उन की किसी भी प्रकार की समानता संयोग मात्र है.
वैवाहिक विज्ञापन विभाग : एम-12, कनाट सरकस, नई दिल्ली-11001.
वार्षिक मूल्य केवल ड्राफ्ट/मनीआर्डर द्वारा ही 'सरिता' के नाम से ई-3, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-110055. को ही भेजें.
चैक व वी.पी.पी. स्वीकार नहीं किए जाते.
मूल्य : विदेशों में (समुद्री डाक से) 300 रु., (हवाई डाक से) 675 रु.

मूल्य : एक प्रति 7.00 रुपए. वार्षिक 168 रुपए.
वायसवा अधिभार 50 पैसे प्रति.
सिल्चर, डिब्रूगढ़, अगरतल्ला, तेजपुर, इंफाल, पोर्ट ब्लेयर, अकारस और नेपाल में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालय
गुरुकुल विश्वविद्यालय
हरिद्वार

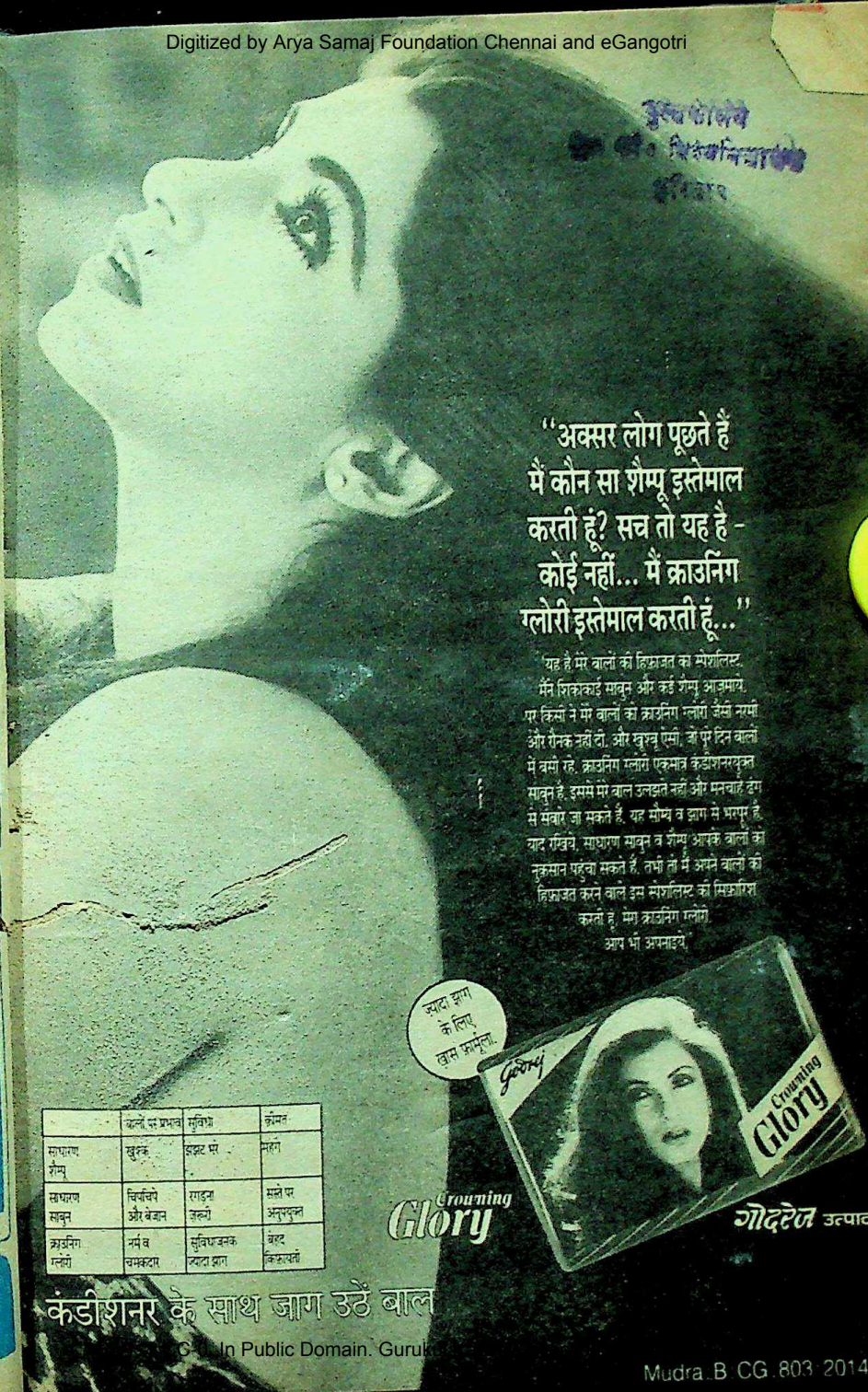

	बालों पर प्रभाव	सुविधा	कीमत
साधारण शैम्पू	खुश्क	झट्ट घर	महंगा
साधारण साबुन	चिपचिपे और बेजान	रगड़ना ज़रूरी	मलने पर अनुपयुक्त
क्राउनिंग ग्लोरी	नर्म व चमकदार	सुविधाजनक ज्यादा झाग	बेहद किफायती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Mudra.B CG.803 2014 HN

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आप के पत्र

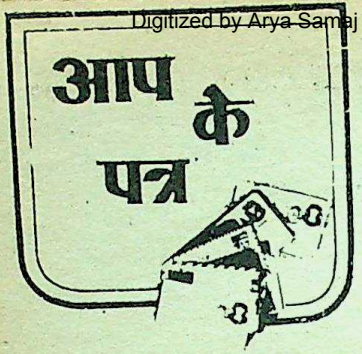

सरिता प्रवाह/फरवरी/प्रथम

इराक युद्ध के भारत पर दुष्प्रभाव पर आप के विचार पढ़े.

वास्तव में हमारे यहां नेताओं और नौकरशाहों द्वारा सैकड़ों लिटर तेल व्यर्थ में फूंक दिया जाता है. मंत्री कहीं दौरे पर जाते हैं तो उन के पीछे कारोंजीपों का काफिला चलता है. कहीं बाढ़ आई हो तो हवाई सर्वेक्षण के नाम पर सैकड़ों लिटर पेट्रोल जला डालेंगे.

अभी हाल में भारतीय जनता पार्टी, जनता दल और जनता दल (स) के राष्ट्रीय अधिवेशन हुए हैं. इन सम्मेलनों में हजारों कार्यकर्ता विभिन्न साधनों द्वारा सम्मेलनों में आए, इस से भी तेल की व्यर्थ बरबादी हुई.

खाड़ी युद्ध के कारण पैदा हुए संकट को ध्यान में रख कर इन दलों को अपने अधिवेशन या तो स्थगित कर देने चाहिए थे या सिर्फ केंद्र तथा राज्य स्तर के पदाधिकारियों तक सीमित कर देने चाहिए थे. जब देश के इन महत्त्वपूर्ण दलों द्वारा ही ऐसे कार्य किए जाते हैं तो फिर आम जनता से कैसे उम्मीद की जाए कि वह तेल की बचत करे. —गिरीशकुमार भावसार

*

सद्दाम हुसैन के बारे में आप के विचारों से मैं पूर्णतया सहमत हूं किंतु अमरीका एवं मित्र देशों के बारे में आप के विचारों से असहमत हूं.

प्रत्यक्ष रूप से अमरीका और उस के मित्र राष्ट्र कुवैत को इराकी चंगुल से निकालने के लिए युद्ध में भाग ले रहे हैं लेकिन उन का असली मकसद अरब राष्ट्रों पर प्रभुत्व जमाने के साथसाथ इराक को तबाह करना है, अब तक हुए युद्ध से यह बात बहुत हद तक स्पष्ट हो चुकी है. जिस के स्वयं के चेहरे पर कालिख (फिलिस्तीन मुद्दे पर) पुती हो, उसे दूसरों के चेहरे साफ करने का क्या नैतिक अधिकार है? अमरीका को पहले अपनी छवि स्वच्छ रखनी होगी, तब ही उसे शांतिदूत बनने का अधिकार होगा.

—विनोद तोलानी 'चीकू'

*

खाड़ी युद्ध पर संपादकीय विचार सटीक लगे.

एक तरफ जहां साम्राज्यवाद व उपनिवेशवाद का अंत हो रहा है वहीं दूसरी तरफ इराक ने कुवैत पर कब्जा कर के इस अमानवीय नीति का वृक्ष रोपा दिया है. यह सत्य है कि यदि इराक के इस प्रथम कदम पर रोक न लगाई जाती तो वह अपना दूसरा कदम शीघ्र ही सऊदी अरब पर आक्रमण के रूप में रखता.

अमरीका ने चाहे किसी भी स्वार्थ के वशीभूत युद्ध का रास्ता चुना हो लेकिन मानवीय मूल्यों की रक्षा के रूप में अच्छी पहल की है. कुवैत का कर्ज लौटाने के स्थान पर उस पर कब्जा कर लेने की इराकी नीति अंतर्राष्ट्रीय व्यापार की परंपराओं तथा व्यवस्थाओं को ताक पर रखना नहीं है तो और क्या है?

अपनी धार्मिक कट्टरता का परिचय सद्दाम हुसैन ने युद्ध के रूप में दे ही दिया है. विश्व शांति के आधारभूत कानून उन के लिए कोई महत्त्व नहीं रखते. उन के अपने कानून हैं, जिन के तहत वह मानवीय मूल्यों तथा विश्व शांति कानूनों का उल्लंघन करना अपना जन्मसिद्ध अधिकार समझते हैं.

भारत ने इस ओर से अपनी आंखें बंद कर ली हैं. यह समय अपनी विदेश नीति दिखाने का नहीं बल्कि विश्व की शांति तथा अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था को सर्वमान्य व पुख्ता बनाने का है. गलत को गलत तथा सही को सही कहना हमारी विशेषता रही है जिसे हमें निभाना चाहिए. ऐसी स्थिति में चुप रहना साम्राज्यवादी प्रवृत्ति को बल देना है तथा अपने देश को महत्त्वहीन सिद्ध करना है. —सुनील यादव

*

इराक का कुवैत पर कब्जा तो निर्विवाद रूप से निंदनीय है ही, पर भारत को इस से सबक लेना चाहिए.

पाकिस्तान ने भारत के कश्मीर क्षेत्र में अवैध कब्जा कर रखा है और सैकड़ों प्रशिक्षित आतंकवादी भेज कर भारत को लगातार तोड़ने की कोशिश कर रहा है, पर सिवाय गीदड़ भभकियां देने के, भारत में मुंहतोड़ जवाब देने का साहस नहीं है.

चीन ने भारत की सैकड़ों वर्गमील जमीन दबा रखी है, पर यहां तो भारत में गीदड़ भभकी देने की भी हिम्मत नहीं होती क्योंकि [illegible] है. उलटे चीन से अंतरंग संबंध स्थापित करने के नएनए प्रयत्न किए जा रहे हैं.

भारत का पक्ष सही होने पर भी उस में अपने अधिकारों के लिए लड़ने का साहस नहीं है. दूसरी ओर इराक गलत होते हुए भी अपनी प्रतिष्ठा के लिए सारे विश्व से भिड़ गया है.

ऐसे कायरों की तरह जीने से अच्छा तो नष्ट हो जाना है, जिस से आने वाली पीढ़ियां अपने भारतीय होने पर गर्व कर सकें. —आशुतोषकुमार दुबे

*

कैसेट आपसी सौहार्द के लिए खतरा है

लेख 'कैसेट डिमांड अयोध्या कांड' (फरवरी/प्रथम) में लेखक ने वास्तविकता को उजागर किया है. ये कैसेट आपसी सौहार्द एवं भाईचारे के लिए खतरा हैं.

इन कैसेटों में अयोध्या कांड को गलत ढंग से पेश

सरिता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मस्ती ने बनाया हमें मर्ज़ी का मालिक

मस्ती – भारत का एक बेहतरीन लग्जरी कॉण्डोम। जापानी मशीनों पर अत्यंत आधुनिक तरीके से बना। संपूर्ण सुरक्षा के लिए इलैक्ट्रॉनिक तरीके से जाँचा हुआ। अतिरिक्त आनंद के लिए 0.03 मिलीमीटर महीन मस्ती सिलिकॉन तेल की चिकनाई से युक्त है, जो कि पूरी दुनिया में उत्तम मानी जाती है। मस्ती केवल कॉण्डोम नहीं, एक बेहतर एहसास है।

Contract.PSI.22563 HIN A

MASTI

एक बेहतर एहसास

विपणक : परिवार कल्याण विभाग, भारत सरकार, पी एम एम पी के अन्तर्गत पॉपुलेशन सर्विसेज इन्टरनैशनल, इंडिया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किया गया है. इस से धार्मिक जनता में धार्मिक उन्माद फैलने का खतरा है. —सजयकुमार गुप्ता 'विद्यार्थी

*

आरक्षण राजनीतिक स्टंट है

लेख 'पिछड़े वर्ग में सामाजिक चेतना' (फरवरी/प्रथम) सटीक एवं तर्कसंगत लगा.

यह सच है कि आज जातिभेद समाप्त कराने के लिए सामाजिक चेतना की नितांत आवश्यकता है. आरक्षण के विषय में यही कहा जा सकता है कि सत्ता में बने रहने के लिए कोई भी पार्टी किसी न किसी तरह वोट बटोरने के लिए प्रयासरत रहती है.

सरिता के लेखक

कुमुद भटनागर :

कहानी 'प्रतिपुरुष' की लेखिका कुमुद भटनागर की विभिन्न पत्रिकाओं में लगभग सौ कहानियां सामाजिक तथा मनोवैज्ञानिक विषयों पर प्रकाशित हो चुकी हैं.

जगतसिंह बिष्ट :

व्यंग्य 'हैप्पी बर्थ डे टू यू' के लेखक जगतसिंह बिष्ट के हिंदी व अंगरेजी में सामाजिक व व्यावहारिक विषयों पर हास्यव्यंग्य कई पत्रपत्रिकाओं में प्रकाशित हुए हैं.

अनिता होलानी :

लेख 'बस्ते का बोझ ही नहीं और भी समस्याएं हैं नन्हेमुन्नों की' की लेखिका अनिता होलानी महिलाओं और बच्चों के कल्याण तथा गृह प्रबंध संबंधी विषयों पर लिखती हैं.

बद्रीनारायण सिंह :

कविता 'पल एक का परिचय' के रचयिता बद्रीनारायण सिंह कविता, कहानी, नाटक व विज्ञान से संबंधित विषयों पर हिंदी, बंगाली और अंगरेजी में लिखते हैं.

पिछड़े वर्ग को ऐसे उपकारों का मोहताज न रह कर स्वयं कुछ ऐसे कार्य कर दिखाने चाहिए जिस से समाज में उन लोगों को सबक मिले जो ऊंचनीच का भेद कर समाज व राष्ट्र को बांटने पर तुले हुए हैं.

हम आशा करते हैं कि यह पत्रिका उन लोगों में सामाजिक चेतना का नया बीजारोपण करेगी जो ऊंचनीच, जातिभेद को अंधविश्वास एवं अन्य कई कारणों से मानते हैं एवं समाज के बीच खाई खोदते हैं.

—हेमंत शास्त्री

*

यह सच है कि सरकार पिछड़ों को नौकरियों में आरक्षण दिला कर उन की पिछड़ेपन की समस्या को पूरी तरह हल नहीं कर सकती.

पिछड़े वर्ग की स्थिति सुधारने के लिए रोजगार संबंधी अन्य प्रयास भी किए जाने चाहिए. लेखक का यह मानना ठीक नहीं लगता कि पिछड़े लोग अपने बच्चों को शिक्षा नहीं दिलाना चाहते. यह सोचना भूल होगी कि पिछड़ों को समाज में बराबरी का दरजा मिल रहा है. गांवों में आज भी पिछड़ों को बेगार करने को बाध्य किया जाता है. वे अपने बच्चों को स्कूल न भेज सकें इस के लिए सवर्णों द्वारा हर तरह के प्रयास किए जाते हैं.

इतना ही नहीं सवर्ण शिक्षक यह भी प्रयास करते हैं कि पिछड़े वर्ग के बालक अच्छी शिक्षा प्राप्त न कर सकें. शायद यही कारण है कि ग्रामीण क्षेत्रों के शासकीय विद्यालयों में पढ़ाईलिखाई बिलकुल नहीं होती. सवर्ण बच्चे निकट के कसबों में स्थित निजी स्कूलों में शिक्षा प्राप्त कर लेते हैं जबकि पिछड़े वर्ग के बालक अच्छी शिक्षा भी नहीं पा सकते. उन का समय ऐसे ही बरबाद होता है. —चरणदास प्रजापति

*

आज समाज या किसी भी क्षेत्र में फैला अंधविश्वास, रूढ़िवादिता या पिछड़ापन केवल लोगों में फैली संकुचित भावना और [illegible] मानसिकता के कारण है. इस के लिए समाज के [illegible] आगे आ कर मार्ग प्रशस्त करने के लिए प्रयास करने चाहिए. तभी पिछड़े वर्ग में जागृति आ सकेगी.

—दिनेश प्रजापति

*

अच्छी परंतु अप्रत्याशित कहानी

कहानी 'आत्मीयता का रिश्ता' (फरवरी/प्रथम) अच्छी लगी पर उस का अंत अस्वाभाविक एवं अप्रत्याशित है.

वस्तुतः सरोज व शेखर की ही शादी होनी चाहिए थी अन्यथा समधिन का समधी के घर में स्थायी रूप से जा कर रहना समझ में न आने वाली तथा अनुपयुक्त बात है.

इसी अंक में प्रकाशित कहानी 'मेरा अंश' भी अच्छी है. कम से कम 'सरिता' को तो मोटे अक्षरों में यह सूचना प्रकाशित करनी चाहिए कि गर्भाधान न होने के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

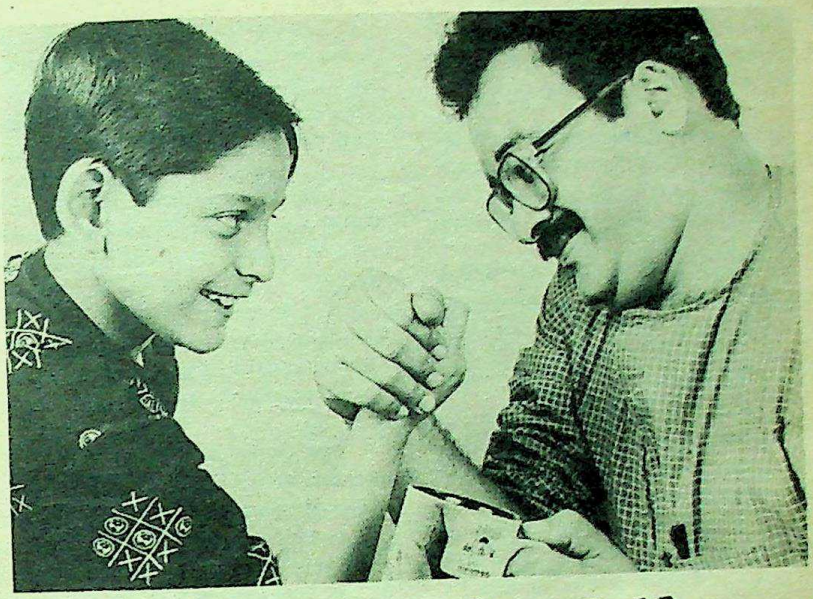

रिटायर होने के बाद, मैं अपने बेटे पर बोझ कभी नहीं बनूंगा.

एल आइ सी की जीवन धारा
यही मेरे जीवनपर्यंत पेंशन की गारंटी है.

जीवन बीमा की [illegible] धारा पेंशन योजना अर्थात वृद्धावस्था में आते [illegible] जीवन धारा आपके लिए रिटायर होने से बहुत पहले ही जीवन भर की मासिक आय का इंतजाम करती है. यह योजना इस तरह काम करती है.

यदि आप 35 वर्ष के है और 59 वर्ष की उम्र तक हर माह रु. 500 के प्रीमियम चुकाते जाएं तो 60 वर्ष की उम्र से कम से कम रु. 5,595/- की मासिक पेंशन आपको जीवनभर मिलती रहेगी.

जीवन धारा के लाभों पर ज़रा गौर कीजिए.

- **प्रत्येक वर्ष के प्रारंभ में (हर माह के लिए) बाद की तारीखों वाले 12 चैक पहले से ही दिए जाते हैं.**
- **रु. 40,000/- की वार्षिक भुगतान राशि आयकर अधिनियम की धारा 80 सीसीए के अंतर्गत करयोग्य आय राशि में से 100% घटाई जा सकेगी.**
- **अतिरिक्त बोनस. एक बार मासिक आय शुरू होने के समय तथा फिर एक बार पॉलिसीधारक की मृत्यु होने पर उसके कानूनी उत्तराधिकारी को देय प्रिंसिपल राशि के अतिरिक्त भी दिया जाएगा.**

मुफ्त जानकारी तथा अधिक जानकारी के लिए अपने नज़दीकी एल आइ सी कार्यालय या किसी भी एल आइ सी एजेंट या विकास अधिकारी से संपर्क कीजिए. हम सहर्ष आपकी सहायता करेंगे.

भारतीय जीवन बीमा निगम

CLARION-C-LIC-11-HIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिए या केवल लड़कियां पैदा होते रहने के लिए मात्र पुरुष ही जिम्मेदार हैं. फिर संतान न होने पर पति द्वारा दूसरे विवाह की धौंस सर्वथा बेमानी एवं गैरकानूनी है. संतान तो महिला को भी चाहिए न, अतः पत्नी भी तो कह सकती है कि चूंकि उस का पति उसे संतान नहीं दे पा रहा है, वह दूसरे पुरुष से शादी करेगी. समाज में बदलाव तभी आएगा. —सुमन गर्ग

*

कहानी 'आत्मीयता का रिश्ता' में विधवा और विधुर का संबंध एक नए ढंग से प्रस्तुत किया गया है. शुरू में ऐसा लग रहा था कि शेखर और सरोज विवाह करेंगे लेकिन लेखक ने दोनों के बच्चों की शादी से नया संबंध प्रस्तुत किया है.

'मेरा अंश' कहानी भी अच्छी लगी. आशा है आप इसी प्रकार की शिक्षाप्रद कहानियां प्रकाशित करते रहेंगे. —पूरण मर्दा 'प्रवीण'

*

प्रशसनीय पहलू

सरिता सिगरेट, शराब, लाटरी, धोखाधड़ी, जैसी सामाजिक बुराइयों व बोगस संस्थानों के भ्रामक विज्ञापन प्रकाशित नहीं करती, पत्रिका का यह एक प्रशंसनीय पहलू है. जहां तक मैं सोचता हूं, सामाजिक बुराइयों के खिलाफ जनचेतना जागृत करने वाली यह हिंदी की एकमात्र राष्ट्रीय पत्रिका है. इस के चाहने वालों को इस पर बड़ा फख्र होना चाहिए. पाठक वर्ग यह आशा रखता है कि यह पत्रिका अपनी गरिमा को बदस्तूर जारी रखते हुए दिशाहीन समाज में नवचेतना जागृत करती रहेगी. —नलिन खोईवाल

*

सरकारी ढोल की पोल

कहानी 'सरकारी होटल' (जनवरी/प्रथम) पसंद आई. साथ ही इस बात का आश्चर्य हुआ कि यह कहानी आज से 20 साल पहले लिखी गई, लेकिन लगता है जैसे यह कहानी आज के माहौल पर लिखी गई हो.

क्या 20 साल पहले भी इस तरह का भ्रष्टाचार का माहौल हमारे देश में था? अगर था तो यह हमारे समाज के लिए शर्म की बात है कि 20 साल बाद भी हमारे देश से भ्रष्टाचार खत्म होने की बजाय बढ़ा ही है. —प्रवीण गुप्ता

*

कोई भी पाठक चाहे किसी भी संप्रदाय से ताल्लुक क्यों न रखता हो, यदि उसे तनिक भी अपने धर्म की आलोचना दिखती है तो वह बिना कुछ और जाने ही सर्वप्रथम या तो लेखक पर या फिर उस छापने वाली पत्रिका या पत्र पर बिफर पड़ता है, लेकिन यह उचित नहीं है.

सचाई यह है कि हिंदूधर्म में अनेक खामियां रही हैं जिन का प्रभाव वह आज तक झेलता आ रहा है. हिंदू वर्ग ऊंचनीच, जातिपांति, गरीबअमीर जैसी बातों के कारण खंडखंड है. इन्हीं कारणों से अंबेडकर के नेतृत्व महजारा हिंदू बाद बन. हजारा लोगा ना सिख और अन्य धर्मों को अपनाया है? क्या यह हिंदू समाज की कुनीति नहीं है, लेकिन कितने लोग इस बात को गंभीरतापूर्वक सोचते हैं?

पत्रिका का गुणदोष विवेचन स्वयं पाठक करता है. यदि उसे जीवन की वास्तविकता सरिता में मिलती रही तो वह कभी अप्रभावशाली नहीं हो सकेगी और यदि प्रचारप्रसार का माध्यम होती है तो स्वाभाविक है पाठक इस से विमुख होगा. —बृजेशकुमार अचल

*

शिक्षा का माध्यम हमारी अपनी भाषाएं और हिंदी हो, तभी जा कर देश के छात्रों के साथ,देश के युवा वर्ग के साथ, देश के करोड़ों लोगों के साथ न्याय हो सकता है.

अंगरेजी ज्ञानार्जन के लिए पढ़ी जा सकती है, एक अनिवार्य विषय या माध्यम के रूप में नहीं. अंगरेजी हमारी शिक्षा और संस्कृति का माध्यम नहीं हो सकती. देश की सांस्कृतिक परंपराओं से अंगरेजी का कोई संबंध नहीं.

अंगरेजी के कारण हिंदी और भारतीय भाषाओं का आपस में कोई टकराव नहीं है, अंगरेजी इन के लिए बाधक बन रही है.

शिक्षा में माध्यम का मुद्दा मंडल आयोग की रिपोर्ट की तरह कम महत्त्वपूर्ण नहीं है, भले ही यह भी इतना ही विवादास्पद क्यों न हो. राजनीतिक पार्टियां इसे भूल चुकी हैं, सरकार इसे भुलाना चाहती है (त्रिभाषा फार्मूला इस का उदाहरण है).

—मनोज मेहरा

*

महावीर की गरिमा को आंच

तीर्थंकर महावीर ने कभी भी नहीं कहा कि णमोकारमंत्र का अखंड पाठ चलाया जाए या णमोकार मंत्र से पाप धुल जाते हैं अथवा णमोकार मंत्र से मोक्ष मिलता है.

लेकिन आज अधिकतर जैन आचार्य ऐसा कह कर महावीर की गरिमा को आंच पहुंचा रहे हैं. एक जैन आचार्य ने मेरठ में णमोकार मंत्र का चौबीसों घंटे अखंड पाठ चलाया, जिस में णमोकार मंत्र को 7,70,70,770 बार बोला गया. दूरदूर से लोग मेरठ गए और अपना कीमती समय नष्ट कर आए. क्या मिला? क्या बदल गया?

अगर णमोकार मंत्र से मोक्ष मिलता तो महावीर को महल छोड़ने की क्या आवश्यकता थी? णमोकार मंत्र से पाप धुले या न धुले पर ऐसा कहने से अपराध जरूर बढ़ेंगे.

णमोकार मंत्र एक नमस्कार है और नमस्कार एक ही बार किया जाता है. णमोकार मंत्र को बढ़ाचढ़ा कर अपनी महिमा बढ़ाने वाले जैन आचार्य महावीर की महिमा घटा रहे हैं, फिर भी खेद की बात है कि बहुत जैन उन के साथ हैं. —ओम जैन ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूसरे सारे डाई एक तरफ,

गोदरेज शैम्पू-आधारित

हेयर डाई दूसरी तरफ...

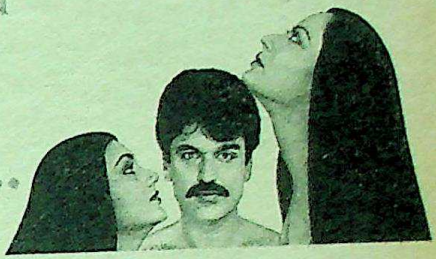

फिर भी,

गोदरेज हेयर डाई

इस्तेमाल

करने वाले

ज़्यादा ही होंगे!

इन ३ ख़ास कारणों से:

१ गोदरेज शैम्पू-आधारित हेयर डाई बालों को कुदरती रंग व छवि देता है. **बाल इतने स्वाभाविक काले हो जाते हैं कि कोई जान ही न सके, जब तक आप खुद न बताएँ.**

२ गोदरेज शैम्पू-आधारित हेयर डाई इस्तेमाल में आसान और सुविधाजनक है जबकि अन्य हेयर डाई में यह विशेषता नहीं. **जी हां, आसान इतना बालों में शैम्पू करने जितना.**

३ आप गोदरेज शैम्पू-आधारित हेयर डाई की क्वालिटी पर भरोसा कर सकते हैं. **क्वॉलिटी जिसपर आप भरोसा करें. यही गोदरेज का वादा है.**

Godrej शैम्पू-आधारित हेयर डाई

दो रंगों में उपलब्ध: कुदरती काला और गहरा भूरा.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरा देश भारत फनां हो गया है,
हर चेहरा यहां लहूलुहां हो गया है.

जो बोया था आतंक का पौधा कभी,
रफ्तारफ्ता वो अब तो जवां हो गया है.

शोर बरपा है रुदन का चारों तरफ,
मुसकराहट का नामोनिशां खो गया है.

नोचें जाते हैं कलियां व फूल यहां,
कांटों पे खुदा मेहरबां हो गया है.

—मदन गोपाल बंसल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साक्षात्कार व नौकरी में सफलता पाने के उत्सुक युवाओं के लिए उपयोगी अंक

साक्षात्कार व सेवा विशेषांक

मुक्ता

अप्रैल (प्रथम) 1991

इस विशेषांक की सामग्री आप को साक्षात्कार और नौकरियों में सफलता के नए मार्ग बताएगी ताकि आप सुखद व स्थिर भविष्य का निर्माण कर सकें.

प्रमुख आकर्षण

- साक्षात्कार में जाते समय क्या पहनें, कैसा दिखें, कैसा मेकअप करें, कैसे बाल संवारें तथा हाथ पैरों के सौंदर्य के साथ साक्षात्कार लेने वाले को कैसे संतुष्ट करें. विस्तृत जानकारी.
- नौकरी के लिए आवेदन करना एक कला है. जानिए आप भी उस कला को जो नियोक्ता को आकर्षित कर सके.
- योजनाबद्ध ढंग से कार्य कर अपने कैरियर को सफलता की ओर ले जाने के तौरतरीके.
- गंभीर विषयों की गंभीरता को आसान करने के सफल तौरतरीके. साथ में कुछ अनुभवी व्यक्तियों के विचार.
- नौकरी मिलने के बाद क्याक्या करें और कैसे करें कि अधिकारी व सहयोगी आप से खुश रहें.
- पढ़ाई खत्म करने से ले कर रोजगार मिलने तक के लंबे व कठिन समय को कैसे बिताएं.
- बैंक की सेवा अन्य नौकरियों से कुछ बेहतर है. बैंक सेवा में सफलता के नए नुस्खे.

इस के अतिरिक्त मनोरंजक व ज्ञानवर्द्धक कहानियां, सामयिक लेख, मन को गुदगुदाने वाली कविताएं तथा सभी स्थायी स्तंभ.

अपनी प्रति आज ही सुरक्षित कराएं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शैक्षिक सुधारों की आवश्यकता

शैक्षिक संस्थानों में अनुशासन की भावना उत्पन्न करने के लिए और जनता के धन की बरबादी को रोकने के लिए:

● छात्र संघों की सदस्यता अनिवार्य नहीं होनी चाहिए. छात्र यदि चाहें तो स्वेच्छा से इस के सदस्य बनें.

● छात्र संघों के लिए चंदा स्वयं छात्रों द्वारा इकट्ठा किया जाना चाहिए. छात्र संघों के चुनावों की व्यवस्था भी विश्वविद्यालय अथवा कालिज के अधिकारियों की सहायता अथवा हस्तक्षेप के बिना स्वयं छात्रों द्वारा की जानी चाहिए.

● छात्रों/अध्यापकों के प्रदर्शनों या हड़तालों के कारण जितने दिन कालिज/विश्वविद्यालय बंद रहें, उतने दिनों का वेतन अध्यापकों को नहीं दिया जाना चाहिए.

अध्यापक कारखानों के प्रबंधक नहीं हैं जो मजदूरों की हड़ताल रोक नहीं सकते या रोकने की उन की कोई जिम्मेदारी नहीं होती. और इसलिए हड़ताल के दिनों का भी उन्हें पूरा वेतन मिलता है.

अध्यापकों का कर्तव्य है कि वह छात्रों को शिक्षा दें, उन की सहायता करें और उन के चरित्र का निर्माण करें तथा उन के आचरण को सुधारें. यदि छात्र दुर्व्यवहार करते हैं तो इस का मुख्य कारण यह है कि अध्यापक उन को शिक्षा देने और उन का मार्गदर्शन करने में असफल रहे हैं. वैसे भी छात्रों की अधिकतर हड़तालें और प्रदर्शन स्वयं अध्यापकों द्वारा अपने निजी उद्देश्यों की पूर्ति के लिए कराए जाते हैं.

● शिक्षा पर जो खर्च आता है, वह सारा खर्च अथवा उस का अधिकांश स्वयं छात्रों को उठाना चाहिए. अभी वे कुल खर्च का केवल 5% ही वहन करते हैं. प्राथमिक कक्षाओं से ऊपर की कक्षाओं की शिक्षा वित्तीय दृष्टि से आत्मनिर्भर होनी चाहिए. दुनिया के सब से अधिक गरीब देशों में जिस देश का नंबर तीसरा है, उस के भूखे और गरीब लोग उन छात्रों की ऐयाशी के लिए धन क्यों दें जो कक्षाओं में बैठते नहीं और जो उन सुविधाओं का दुरुपयोग कर रहे हैं जिन पर भारी खर्च किया जाता है.

जो छात्र वास्तव में गरीब हैं और शिक्षा को गंभीरतापूर्वक लेते हैं, उन को छात्रवृत्ति दी जा सकती है या उन्हें ऋण दिया जा सकता है जिसे वे बाद में चुका दें.

● अध्यापकों को अब उच्चतम श्रेणी के सरकारी अफसरों जितना वेतन मिलता है. इसलिए आवश्यक है कि इस वेतन के बदले पूरा काम करें. कालिजों व विश्वविद्यालयों में अध्यापक वर्ष में छः महीने, सप्ताह में 2/3 दिन और एक दिन में 2/3 घंटे ही काम करते हैं. यह गरीब देश के धन और श्रम का दुरुपयोग है.

कालिजों और विश्वविद्यालयों में काम के दिन और दिनों के घंटे 25% से 40% तक बढ़ने चाहिए. छुट्टियां कुल मिला कर 4 महीने से अधिक नहीं होनी चाहिए. अध्यापकों को हर तीसरे वर्ष एक परीक्षा पास करने पर बाध्य किया जाए जिस में उन के विषय के अद्यतन ज्ञान का परीक्षण हो. आजकल अधिकांश अध्यापक सिवाय कोर्स की पुस्तकों के, कुछ पढ़ते ही नहीं और वर्षों पहले तैयार किए नोट्स के आधार पर विद्यार्थियों को पढ़ाते रहते हैं. यह परीक्षा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा व्यवस्थित की जानी चाहिए.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत प्रवाह

भारत सरकार का वार्षिक बजट अनुमानित आयव्यय का ब्योरा हर वर्ष 28 फरवरी को संसद में पेश होता है. देश इस बजट की बड़ी उत्सुकता और घबराहट से प्रतीक्षा करता है क्योंकि अगले वर्ष की सारी अर्थव्यवस्था, उद्योगव्यापार, व्यक्तिगत आय और खर्च इसी बजट पर निर्भर करते हैं. हर वर्ष वैयक्तिक और व्यापारिक करों में हेरफेर होती है. कहीं किसी जगह छूट मिलती है, कहीं बोझ बढ़ता है. इस के प्रभाव से कई उद्योग मर जाते हैं, कुछ पनप जाते हैं. कुछ लोगों को राहत मिलती है कुछ और दब जाते हैं. भारत का अंतर्राष्ट्रीय व्यापार भी काफी लंबाचौड़ा है. इस प्रकार आयातनिर्यात पर नए टैक्स और छूट, नए प्रतिबंध और सहूलतें भी अन्य देशों के भारत से व्यापार को प्रभावित करती हैं. अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष से कर्ज मिलने न मिलने का प्रश्न भी इसी बजट पर कुछ हद तक निर्भर करता है.

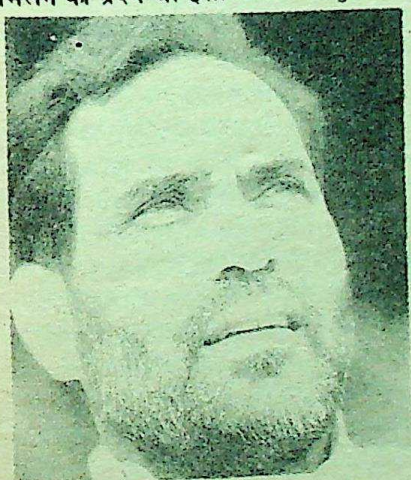

इस दृष्टि से 28 फरवरी को बजट न पेश कर के चंद्रशेखर सरकार ने अपनी कमजोरी या मजबूरी प्रकट की है. समाचारों के अनुसार वित्त मंत्री यशवंत सिन्हा ने, कहा जाता है, बड़ी मेहनत से बहुत समय लगा कर यह बजट तैयार किया था और इस के न पेश किए जाने पर वह त्यागपत्र भी देने की सोच रहे थे. ऐसा तो कुछ नहीं हुआ. पर जब सब जानते हैं कि चंद्रशेखर अपने केवल 54 सदस्यों पर सरकार चला रहे और राजीव गांधी का आदेश मानना उन की मजबूरी थी. पर जब इस मजबूरी का राजीव गांधी ने नाजायज फायदा उठाना शुरू किया तो अंत में 6 मार्च को चंद्रशेखर ने तंग आ कर प्रधान मंत्री पद से इस्तीफा देना ज्यादा बेहतर समझा.

*

फारस की खाड़ी की लड़ाई बिलकुल मित्र राष्ट्रों की कार्यसूची के अनुसार 28 फरवरी को अमरीकी राष्ट्रपति जार्ज बुश की युद्धबंद घोषणा से समाप्त हो गई. इराक का तानाशाह सद्दाम हुसैन, जो 2 अगस्त 1990 को शेर की तरह दहाड़ते हुए नन्हे से कुवैत में बिना किसी रुकावट के घुस गया था, 28 फरवरी को पिटे हुए गीदड़ की तरह अपनी मांद में घुसे बैठा रहा.

जहां वह कुवैत के बाद सारे पश्चिम एशिया पर अपना इराकी परचम फहराने की शेखी मार रहा था, वहां इराक एक खंडहर बन कर रह गया है, जिसे अपनी पूर्ववत स्थिति में आने में बरसों लग जाएंगे. गनीमत यही है कि सद्दाम हुसैन को हिटलर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की तरह अपने बंकर में जहर खा कर आत्महत्या नहीं करनी पड़ी. पर इन पक्तियों के लिखते समय तक वह प्रत्यक्ष रूप से कहीं दिखाई नहीं पड़ा है. सारी लड़ाई में कहीं वह बाहर नजर नहीं आया, केवल टीवी पर अपने बंकर में कमांडरों के साथ मेज पर बैठा अवश्य दिखाई दिया.

सद्दाम हुसैन भले ही कुछ देशों के मुसलमानों का कुछ समय के लिए हीरो बन गया, पर वास्तव में वह एक क्रूर तानाशाह है जो संसार का सर्वेसर्वा होने के ख्वाब देख रहा था. पर अब, अपने जीवन के लिए भी अपने दुश्मनों की दया पर निर्भर है.

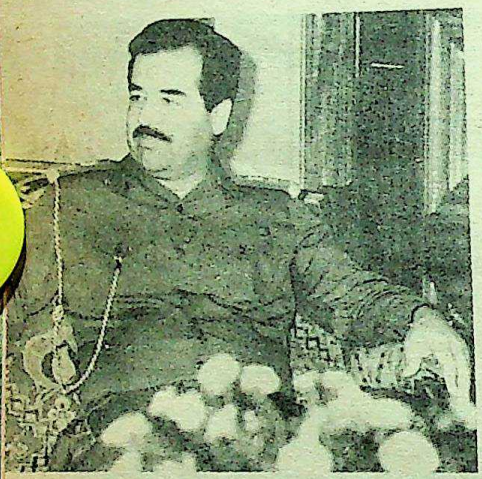

अभी तक इराक के कितने नागरिक व कितने सिपाही हलाक हुए, इस का ब्योरा नहीं दिया गया है, पर जब 1,75,000 सैनिकों के कैदी होने की बात जाहिर हो गई है तो कई लाख इराकी नागरिक व सैनिक अवश्य मारे व जख्मी हो गए होंगे. जहां तक संपत्ति का सवाल है, वह तो हजारोंअरबों की कीमत की इस लड़ाई में नष्ट हुई होगी.

2 अगस्त 1990 से 15 जनवरी 1991 तक संसार के सारे देशों ने सद्दाम हुसैन से अनुनयविनय की, भाईचारे की सलाह दी, और लड़ाई में उन के पछाड़े जाने की संभावना का जिक्र भी किया और कहा कि कुवैत से वापस लौट जाओ, पर वह जनाब तो कुछ सुनने को तैयार ही नहीं थे. उन्हें अल्लाह का आदेश जो आया हुआ था कि कुवैत पर कब्जा करो, जीत तुम्हारी ही होगी—जैसे पहले भी अल्लाह ने उन्हें ईरान से भिड़ जाने को कहा था, जहां पांच लाख से अधिक इराकी और इतने ही ईरानी मार डाले गए.

वैसे ईरान के तानाशाह आयतुल्लाह खुमैनी को भी अल्लाह का फरमान शायद मिला था कि इराक से लड़ जाओ, मैं तुम्हारे साथ हूं. दोनों ओर से अल्लाह ही तो लड़ रहा था, परंतु कुवैत में अल्लाह केवल सद्दाम हुसैन के साथ था, मुकाबले में तो काफिरों का गिरोह था, जिस में अल्लाह की मरजी के खिलाफ अल्लाह के पवित्र स्थान काबा, मक्कामदीना के रखवाले सऊदी अरब के बादशाह भी बेवकूफी से शामिल थे. सद्दाम हुसैन के अनुसार यह मित्र राष्ट्रों से लड़ाई मानव के इतिहास की 'सब लड़ाइयों की अम्मां' साबित होनी थी, पर जो हुआ वह सब को मालूम ही है.

2 अगस्त के बाद जब सद्दाम हुसैन ने कड़ाकेदार शब्दों में कुवैत से हटने से इनकार किया और दावा किया कि वह अमरीकी कुत्तों को सबक सिखा कर रहेगा कि इसलामी फौज से लड़ाई करने में क्या मजा चखना पड़ता है, तो वह अपने ईरान से युद्ध के अनुभव पर ही चीखपुकार कर रहा था. उस के दिमाग में अमरीका की वियतनाम से तीखी और शर्मनाक हार और वापसी के चित्र थे. वह सोच रहा था कि अमरीकी अपने सैनिकों को मरते हुए नहीं देख सकेंगे और थोड़ी देर बड़बड़ा कर चुपचाप, दुम दबा कर लौट जाएंगे.

पर वियतनाम और इराक में बड़ा अंतर है. वियतनाम जंगलों से पटा पड़ा है, जहां एक बाहर की फौज का लड़ना बड़ा कठिन काम था. हवाई ताकत वहां बेकार थी. जमीनी लड़ाई में वियतनामियों को जम कर लड़ाई लड़ने की आवश्यकता ही नहीं थी. वे छापामार लड़ाई, गुरिल्ला युद्ध में माहिर थे, जिस में अमरीकी या कोई अन्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी जंगलों के कारण जीत नहीं सकता.

पर इराक तो सपाट, वृक्षविहीन, रेगिस्तान है, यहां हवाई ताकत निर्णयात्मक लड़ाई लड़ सकती है, दोनों ओर से दोनों एकदूसरे को देख कर निशाना लगा सकते हैं. जीतने की संभावना उसी को हो सकती थी, जिस के पास अधिक हवाई और नवीनतम मिसाइल, बम और गोलाबारूद की ताकत हो.

*

अमरीकी कमांडरों ने यह लड़ाई बड़ी सूझ-बूझ और कौशल से लड़ी. जब 5½ महीने की लगातार कोशिशों के बावजूद सद्दाम हुसैन टस से मस नहीं हुआ, और राष्ट्रपति बुश के 15 जनवरी को कुवैत से हट जाने की चेतावनी को झिड़क कर रद्दी की टोकरी में फेंक दिया गया तो अमरीकी सेनापति ने इराक पर भारी हवाई हमले शुरू किए, जिस में इराक की वायु सेना या तो नष्ट हो गई या ईरान भाग गई. इस प्रकार आकाश में मित्र राष्ट्र पूरी तरह हावी हो गए. अब सद्दाम हुसैन के पास केवल स्कड मिसाइलें ही बचीं, जिन से वह दुश्मन को डरा सकता था, मार सकता था. उस की स्कड से हमला कर के इजराइल को लड़ाई में कूद पड़ने को विवश करने की चाल भी अमरीकी कूटनीति के कारण सफल नहीं हुई और सभी स्कड मिसाइलों को अमरीकी पेट्रियट मिसाइलों ने आकाश ही में धर दबोचा.

जब हवाई मार से इराक की शक्ति लगभग समाप्त हो गई और कुवैत में जमे अपने सैनिकों को रसद और गोलाबारूद पहुंचाना असंभव हो गया तो मित्र राष्ट्रों ने एक बार फिर सद्दाम हुसैन को मौका दिया कि वह कुवैत को खाली कर दे. इस समय सोवियत रूस के राष्ट्रपति गोरबाचौफ ने भी सद्दाम हुसैन से काफी अनुनयविनय की कि वह हट जाए. पर जो आदमी पागल हो जाए उस का क्या किया जाए? सद्दाम हुसैन बराबर धमकियां देता रहा कि वह लड़ाई अंतिम इराकी (केवल एक को छोड़ कर) तक लड़ता रहेगा और इन काफिरों के सारे इरादे नष्ट कर देगा.

परंतु अल्लाह मियां के उस के पीठ पीछे होते हुए भी जब मित्र राष्ट्र की सेना सऊदी अरब से इराक में घुस गई और कुवैत में तैनात इराकी विशिष्ट सैनिकों की फौज को घेर लिया तो सद्दाम हुसैन को अपनी फौजों को पीछे हटने की घोषणा करनी पड़ी और 28 फरवरी को जार्ज बुश ने लड़ाई बंद कर दी.

इस प्रकार 1990 के एक नए हिटलरी स्वप्न देखने वाले तानाशाह को मुंह की खानी पड़ी, जिस की कीमत का अंदाजा अभी लगाना कठिन है.

*

संसार के अन्य देशों के मार्क्सवादियों की तरह भारत में भी अनेक रूसीचीनी चरणचुंबनकारियों ने इराक द्वारा कुवैत पर कब्जा हटवाने के अमरीका के नेतृत्व में मित्र राष्ट्रों के प्रयासों की लगातार भर्त्सना की. पर इस अंध रूसचीन भक्ति में वे भुला बैठे कि इस लड़ाई में स्वयं रूस व चीन अमरीका के साथ थे, और जो कुछ हुआ, राष्ट्र संघ के सारे प्रस्तावों से ले कर इराक पर हमले और कुवैत की आजादी तक रूसचीन मित्र राष्ट्रों के साथ रहे.

हमारे इन तथाकथित बुद्धिजीवियों के दिमाग में पश्चिमी जनतांत्रिक देशों के विरुद्ध इतना जहर समाया हुआ है कि वे रूस व चीन के हर कदम की मुक्त कंठ से सराहना करते हैं, और अमरीका, ब्रिटेन व फ्रांस की तीव्र भर्त्सना. रूस पूर्वी यूरोप/चेकोस्लोवाकिया, पोलैंड, हंगरी, लैटिविया लिथुआनिया पर कब्जा कर ले, अफगानिस्तान को हवाई व मैदानी बमबारी से नष्ट कर के लाखों अफगान नागरिक मार डाले, चीन भारत पर हमला करे और हजारों वर्गमील भारतीय जमीन पर कब्जा कर ले, तिब्बत को गुलाम बना डाले, पर ये लोग चूं नहीं करेंगे, उलटे सराहना करेंगे कि वाह, क्या बढ़िया काम किया है. पर यदि कम्यूनिस्ट उत्तरी कोरिया दक्षिण कोरिया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर चढ़ाई करे, उसने वियतनाम पर धावा बोले, इराक कुवैत पर कब्जा कर ले और अमरीका इन धावों से सहायता मांगने वाले देशों को बचाने का प्रयत्न करे तो वह घोर साम्राज्यवादी हो गया!

ऐसे ही एक महाशय हैं राजीव गांधी, जिन से देश के पांच वर्ष तक प्रधान मंत्री बने रहने और फिर दोबारा सत्ता में आने की कोशिश करने के कारण ज्यादा बुद्धिमानी की अपेक्षा की जा सकती है. जब से इराक पर हवाई हमले शुरू हुए, यह महाशय बराबर अमरीका की भर्त्सना में लगे हैं और बराबर प्रधान मंत्री चंद्रशेखर को चुटकियां काट रहे हैं कि तुम लड़ाई क्यों नहीं रुकवा देते ताकि सद्दाम हुसैन का दबदबा कायम रहे. राजीव गांधी के दबाव में आ कर ही भारत द्वारा अमरीकी वायुयानों को तेल देना बंद किया गया, जबकि भारत का कर्तव्य था कि वह इस लड़ाई में मित्र राष्ट्रों की हर तरह से सहायता करता.

इस के बाद जब चंद्रशेखर ने और कुछ करने से इनकार किया तो राजीव महाशय स्वयं बिना बुलाए, मास्को जा पहुंचे ताकि गोरबाचौफ की सहायता से लड़ाई बंद कराने का सेहरा अपने सिर बांध सकें. इस के बाद तेहरान पहुंचे और वहां से बगदाद जाने का प्रोग्राम बनाया, पर सद्दाम हुसैन ने झिड़क दिया तो बेचारे बजाय बगदाद पहुंचने के नई दिल्ली अपना सा मुंह ले कर वापस आ गए.

इस पर जब संसद में कांग्रेसी सांसदों ने चंद्रशेखर को इराक युद्ध में बीचबचाव न करने पर लानत दी तो चंद्रशेखर को अंत में यह कहना पड़ा कि कुछ बेवकूफ लोग वहां धंसने की कोशिश करते हैं, जहां फरिश्ते भी नहीं जाना चाहते.

यह राजीव गांधी के मान न मान मैं तेरा मेहमान और अपना बड़प्पन जताने की बचकाना कोशिशों पर खासा व्यंग्य था.

*

राजीव गांधी को, और अनेक बुद्धिजीवियों व भारतीय विदेश मंत्रालय के अधिकारियों को जवाहरलाल नेहरू की गुटनिरपेक्ष (पर वास्तव में रूस समर्थक और अमरीका विरोधी) नीति पर बड़ा नाज है. पर असलियत यह है कि जवाहरलाल की समाजवादी और रूसभक्ति की नीति ने स्वतंत्रता के बाद के भारत को बहुत बड़ी हानि पहुंचाई है. जहां इन पिछले 40-45 वर्षों में जरमनी, जापान, दक्षिण कोरिया, तायवान, सिंगापुर अभूतपूर्व आर्थिक समृद्धि व औद्योगिक शिखरों पर पहुंच गए, भारत अभी भी संसार के सब से गरीब देशों में है, और लगातार सारे संसार में भीख का कटोरा लिए घूम रहा है.

इसी नीति के कारण उसे पाकिस्तान से तीन लड़ाइयां लड़नी पड़ीं और अपनी राष्ट्रीय आय का बहुत बड़ा भाग लड़ाई के सामान पर खर्च करना पड़ा, जिस का लाभ केवल रूस को हुआ, जिस ने लड़ाई का सामान भारत को बेचा. यदि भारत ने अमरीका से बैर नहीं बांधा होता तो कशमीर की समस्या भी नहीं होती. क्योंकि फिर अमरीका को पाकिस्तान की पीठ थपथपाने की जरूरत नहीं होती और भारत को पूरी आर्थिक व औद्योगिक सहायता भी मिलती, जिस से देश धनवान और शक्तिशाली बन जाता.

आज यह अंधे को भी दिखाई दे रहा है कि जिस देश ने भी रूस से मित्रता की, वह बीमार, गरीब और कमजोर है—स्वयं रूस भी आज अमरीका, जरमनी, ब्रिटेन, जापान इत्यादि से सहायता मांग रहा है. इस के विपरीत जिन देशों ने अमरीका से मित्रता की, वे समृद्ध हैं, शक्तिशाली हैं. भारत में लोगों के पास बुद्धि है, हुनर है, मेहनत करने की प्रवृत्ति है. जहांजहां भी भारतीय बाहर गए हैं, वे समृद्ध बन गए और वहां के निवासियों की जलन के शिकार बने हैं. जब वे बाहर जा कर समृद्ध बन सकते थे तो क्या अपने देश में धनदौलत की वर्षा नहीं कर सकते थे. पर सरकार पर कब्जा जवाहरलाल नेहरू जैसे लोगों का रहा और नतीजा सब के सामने है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्तर प्रदेश के मुख्य मंत्री मुलायमसिंह यादव ने व्यापारउद्योग के क्षेत्र में अपने नाम के विरुद्ध कई हिम्मत वाले 'सख्त' काम किए हैं.

सब से पहला महत्त्वपूर्ण कदम उन्होंने जो उठाया था वह था सारे राज्य में नगरपालिकाओं द्वारा लगाई जा रही चुंगी को हटाने का.

इस प्रकार की चुंगी को देश भर में हटाने की बात पहले कई दशकों से चल रही है. केंद्रीय सरकार इस के लिए राजी है और राज्य सरकारों से बराबर कहती रही है कि यह चुंगी की वसूली बड़ी लागत वाली आय है और जल्दी से जल्दी हटाई जानी चाहिए. इस से मालसामान घंटों और कहींकहीं कई दिनों तक ट्रकों में भरा खड़ा रहता है जिस से भाड़ा बढ़ जाता है. इस के अतिरिक्त चुंगी पर तैनात सरकारी अफसर व कर्मचारी जितना पैसा नगरपालिकाओं के लिए वसूल करते हैं उस से कई गुना अपनी जेबों में भरते हैं. यह सब लागत मालसामान पर पड़ती है और अंततः ग्राहक को देनी पड़ती है.

परंतु कोई राज्य सरकार इसे हटाने को तैयार नहीं थी क्योंकि इस से नगरपालिकाओं की आय (जितनी भी थी) कम हो जाती और राज्य सरकारों के पास नगरपालिकाओं को देने के लिए न तो इच्छा होती है, न धन ही.

मुलायमसिंह यादव ने इस गुत्थी को सुलझाया बिक्रीकर पर अधिभार लगा कर. उन्होंने पता कर चुंगी से सारी नगरपालिकाओं की कुल आय को जोड़ कर जितना धन बनता था, उतने का बिक्रीकर पर अधिभार लगा दिया. इस से सरकारी खर्च तो कुछ भी नहीं बढ़ा और उद्यमी, व्यापारी, ट्रक मालिकों को बहुत बड़ी सुविधा हो गई और अंतिम रूप से ग्राहक को भी होगी.

दूसरा काम मुलायमसिंह ने जो किया है वह है घाटा देने वाली सरकारी कंपनियों का निजीकरण करना. उन्होंने वायदा किया था कि जो भी सरकारी कंपनियां वर्ष में 10 करोड़ रुपए से अधिक का घाटा देती होंगी उन को या तो बंद कर दिया जाएगा या निजी उद्यमियों को बेच दिया जाएगा.

इस दिशा में उत्तर प्रदेश सीमेंट कारपोरेशन का निजीकरण महत्त्वपूर्ण कदम है.

यह सरकारी कंपनी लगातार घाटे में चल रही थी—सन 1972 में स्थापित की गई इस कंपनी का मूलधन 68 करोड़ रुपए था. और अब तक घाटा 87 करोड़ रुपए हो चुका है. इस वर्ष के प्रथम 7 महीनों में ही घाटा 17 करोड़ हो गया था जबकि नागरिक क्षेत्र में सीमेंट कंपनियां बड़ा मुनाफा कमा रही हैं.

यह कंपनी डालमिया इंडस्ट्रीज को बेची गई है. इस के 51% शेयर डालमिया के होंगे और 49% राज्य सरकार के. 100 रुपए प्रत्येक की कीमत के 51% शेयर 75 रुपए प्रति शेयर के हिसाब से बेचे गए हैं. यह रकम दो वर्ष में चुकता की जाएगी. नए प्रबंधकों ने वायदा किया है कि मजदूरों की कोई छंटनी नहीं की जाएगी.

समाजवाद के भूत ने भारतीय अर्थव्यवस्था को बहुत धक्का पहुंचाया है. अगर इस भूत को देवता समझ कर गले न लगाया गया होता तो भारत की आज जैसी गरीबी और भुखमरी नहीं होती और जरमनीजापान की तरह भारत एक अमीर देश होता.

आज तो 1,00,000 करोड़ रुपए की लागत से लगाए सरकारी कारखाने पूंजी पर न केवल कोई मुनाफा ही नहीं देते, उलटे अरबों रुपए हर वर्ष खा जाते हैं. यदि कुछ संस्थान मुनाफे में चलते भी हैं तो वे एकाधिकार वाले खनिज तेल के हैं और पेट्रोलडीजल जैसे सामान को मनमाने दामों पर बेच कर घोर मुनाफाखोरी कर रहे हैं. जनसाधारण को सस्ते दामों पर बढ़िया सेवा, जिस को पाने के लिए समाजवादी ढांचा अपना लुभावना पक्ष पेश करता है, वह तो कभी मिली ही नहीं, न कभी मिल सकती है. सारे संसार का यही अनुभव रहा है, समाजवाद के स्वर्ग सोवियत रूस में भी.●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजनीतिक अस्थिरता देश को खा रही है

लेख ● सुरेंद्र द्विवेदी

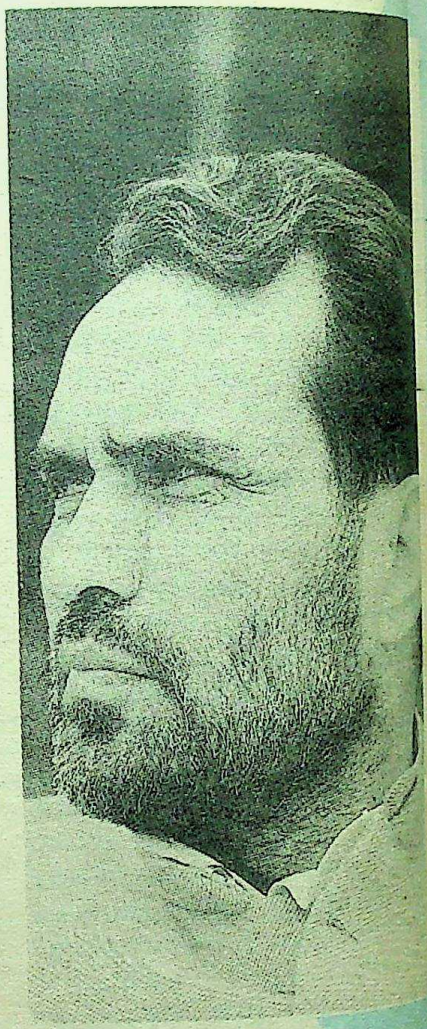

भारतीय राजनीति एक अरसे के बाद अस्थिरता की ओर बढ़ रही है. यह अस्थिरता की बीमारी पहले राज्यों तक ही सीमित थी जो अब केंद्र सरकार को भी प्रभावित कर रही है. पंडित नेहरू और इंदिरा गांधी वर्षों तक देश के प्रधान मंत्री बने रहे थे. राजीव गांधी को पांच वर्ष में मैदान छोड़ कर बाहर जाना पड़ा. विश्वनाथ प्रताप सिंह के नेतृत्व में बनी विपक्ष की उत्तराधिकारी सरकार 11 महीने में ही चली गई. और उस के बाद तोड़फोड़ के आधार पर बनी चंद्रशेखर सरकार तो चार महीने में ही खिसक गई.

केंद्र में इतनी तेजी से हो रहे राजनीतिक परिवर्तन देश के प्रशासनिक और आर्थिक तंत्र को बुरी तरह से प्रभावित कर रहे हैं. इस से लोगों के मन में आशंका घर कर रही है कि क्या बहुदलीय संसदीय प्रणाली भारत की भूमि और जलवायु के लिए उपयुक्त नहीं है.

जोड़तोड़ और दलबदल के आधार पर बनी अल्पसंख्यक सरकार का गठन स्वयं में लोकतंत्र का एक विकृत रूप था. ऐसी सरकार के गठन से लोकतांत्रिक प्रतिष्ठा नहीं बढ़ी है, क्योंकि उस की सर्वोच्च संप्रभुता मुख्य समर्थक दल कांग्रेस के राजनीतिक प्रभाव से आच्छादित या तिरोहित रही है तथा उसे बहुत सारे काम इस बाह्य दलीय शक्ति के दबाव में करने पड़े जो शायद वह स्वंय स्वतंत्र होने की स्थिति में करने के लिए तैयार नहीं होती.

जिस पार्टी की सरकार स्वतंत्र रूप से अपना बजट पेश नहीं कर सकती अथवा जरूरत के अनुसार मंत्रिमंडल का विस्तार नहीं कर सकती वह देश को सक्षम और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उभरते लक्ष्य हैं जो हमारी राजनीतिक व्यवस्था के समक्ष प्रश्नचिह्न खड़े कर करे हैं.

विश्वनाथ प्रताप सिंह की सरकार के पतन के बाद राष्ट्रपति आर. वेंकट रमन ने केंद्र में एक मजबूत और सक्षम सरकार की स्थापना के उद्देश्य से राष्ट्रीय सरकार बनाने का सुझाव दिया था, परंतु विभिन्न राजनीतिक दलों के बीच गहरे आपसी मतभेद होने के कारण यह साकार नहीं हो सका. अतः चंद्रशेखर के नेतृत्व में लंगड़ीलूली सरकार को शपथ दिलाना एक मजबूरी बन गई थी.

देश की विषम परिस्थितियों और वर्तमान सरकार की कमजोरी का एहसास करते हुए राष्ट्रपति ने एक बार पुनः गणतंत्र दिवस के अपने राष्ट्रीय संदेश में केंद्र में मिलीजुली सरकार बनाए जाने की वकालत की थी. उन का इशारा इस ओर था कि अब मिलीजुली सरकारों का समय आ गया है. अतः सरकार के समर्थक दलों को सरकार में शामिल होने से नहीं हिचकना चाहिए.

वर्तमान राजनीतिक गतिरोध को दूर करने के लिए भारतीय जनता पार्टी के अटलबिहारी वाजपेयी और जनता दल के अध्यक्ष एस.आर. बोम्मई ने केंद्र में राष्ट्रीय सरकार का फिर से सुझाव दिया है जबकि भाजपा के दूसरे नेता लालकृष्ण आडवाणी ने मजबूत और स्थिर शासनतंत्र के लिए राष्ट्रपति प्रणाली की बात कही है. कांग्रेस के मुखर नेता पहले से ही राष्ट्रपति प्रणाली की वकालत करते रहे हैं.

विभिन्न राजनीतिक क्षेत्रों से उभर रहे इन सुझावों से लगता है कि देश की जटिल समस्याओं के सामने 40 वर्ष पुरानी संसदीय प्रणाली अपर्याप्त साबित हो रही है क्योंकि इस प्रणाली के रहते सीमावर्ती राज्यों में राजनीतिक महत्त्वाकांक्षा को ले कर अलगाववादी भावना और भ्रष्टाचार बढ़ा है. राजनीति का अपराधीकरण हुआ और लोकतांत्रिक व्यवस्था पर धनबल और भुजबल का असर महसूस होने लगा है. इस

जनता दल के विभाजन के बाद बनी अल्पमत चंद्रशेखर सरकार स्थिर प्रशासन देने में असमर्थ रही है जिस से शासन तंत्र ही ढीला नहीं हुआ अपितु एक प्रकार से सत्ता शून्यता की स्थिति उत्पन्न हो गई है. ऐसी स्थिति में आवश्यकता इस बात की है कि संसदीय प्रणाली में परिवर्तन कर राजनीतिक अस्थिरता के इस दौर को समाप्त किया जाए अन्यथा आंतरिक और बाह्य संकटों से घिरे इस देश के टुकड़े होने में देर नहीं लगेगी.

भूतपूर्व प्रधान मंत्री विश्वनाथ प्रताप सिंह : इन की हठधर्मी से ही जनता दल के टुकड़े हुए.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाजपा नेता लालकृष्ण आडवाणी : मजबूत और स्थिर शासनतंत्र के लिए राष्ट्रपति प्रणाली अपनाने का सुझाव.

के अलावा राजनीतिक मूल्यों का ह्रास होने के कारण पार्टी को तोड़ कर सरकार को गिराना और बनाना कोई बड़ी बात नहीं रह गई है अर्थात वर्तमान संसदीय प्रणाली में घुन लग गया है जिस को दूर करना आज की चुनौती बन गई है.

हमारे संविधान निर्माताओं ने वर्तमान संसदीय प्रणाली ब्रिटेन से उधार ली है, परंतु लोकतांत्रिक व्यवस्था को संचालित करने के लिए जिन राजनीतिक मूल्यों की जरूरत होती है उन को हमारी प्रणाली तेजी से खोती जा रही है. ब्रिटेन में भूतपूर्व प्रधान मंत्री मारग्रेट थैचर और भारत के भूतपूर्व प्रधान मंत्री विश्वनाथ प्रताप सिंह की सरकारों का पतन पिछले वर्ष लगभग एक साथ ही हुआ था लेकिन दोनों ही परिवर्तनों में जमीनआसमान का अंतर देखने में आया. विरोध होने की स्थिति में श्रीमती थैचर ने शालीनता से त्यागपत्र दे दिया. पार्टी में कोई बिखराव नहीं किया और न ही वहां के विपक्ष ने सत्तारूढ पार्टी के आंतरिक संकट से फायदा उठाने की कोशिश की.

लेकिन भारत में यह स्थिति बिलकुल विपरीत थी. विश्वनाथ प्रताप सिंह ने त्यागपत्र देने के बजाय पार्टी को टूटने दिया और विपक्ष ने भी सत्तारूढ दल के विघटन को बढ़ावा देने के लिए अन्त में घी डालने का काम किया. इस का परिणाम यह हुआ कि केंद्र में वैध और मान्य सत्ता का अभाव हो गया और एक प्रकार की तदर्थ सरकार पर संकटपूर्ण स्थिति से निबटने की जिम्मेदारी आ गई. आज प्रधान मंत्री चंद्रशेखर भी यह महसूस करते हैं कि चुनौतियों का सामना करने के लिए केंद्र में आम सहमति या व्यापक आधार वाली सरकार की जरूरत है.

भारत जैसे बड़े देश की एकता और अखंडता तथा उस के आर्थिक एवं सामाजिक विकास के लिए केंद्र में स्थिर, प्रभावी और सक्षम सरकार की जरूरत है जो जन आकांक्षाओं के प्रति उन्मुख हो, परंतु वह दबाव और राजनीतिक कुप्रवृत्तियों से मुक्त रह सके. कई बार लोगों के मन में यह आशंका पैदा हुई है कि यदि देश में यथाशीघ्र दो दलीय प्रणाली विकसित नहीं हो सकी तो देश में राजनीतिक अस्थिरता का लंबा दौर चल सकता है क्योंकि अब तक सत्तारूढ रही कांग्रेस शायद अब एकछत्र सरकार प्रदान करने की स्थिति में नहीं रह गई है.

ऐसी स्थिति में केंद्र में मिलीजुली सरकारों का युग शुरू हो गया जो राजनीतिक अस्थिरता में योगदान करने में अधिक सक्षम समझी गईं. इटली तथा कुछ अन्य यूरोपीय देशों ने इस के कारण राजनीतिक अस्थिरता को लंबे समय तक अनुभव किया है और वहां कुछ महीनों में ही सरकारें बदलती रही हैं.

सरकार समर्थक दल कांग्रेस द्वारा लगातार चंद्रशेखर सरकार की बेलाग आलोचना करने के कारण भी सरकार की विश्वसनीयता समाप्त हो रही थी जिस से लोगों के मन में यह भावना घर कर रही थी कि वर्तमान सरकार नई सरकार के लिए केवल विराम बिंदु है और चुनाव होने की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्थिति में इस प्रकार का राजनीतिक गतिरोध बना रहेगा.

केंद्र में इस प्रकार के राजनीतिक गतिरोध का मुख्य कारण यह रहा है कि लोकसभा में सब से बड़ी पार्टी कांग्रेस न तो चंद्रशेखर के नेतृत्व वाली सरकार में शामिल होना चाहती थी और न ही तत्काल चुनाव करा कर वर्तमान राजनीतिक गतिरोध को दूर करने के लिए उत्सुक थी क्योंकि उसे अभी चुनाव में पर्याप्त जन समर्थन प्राप्त होने के बारे में संदेह रहा. इस के अलावा, लोकसभा के अधिकतर सांसद अपने कार्यकाल को बीच में ही समाप्त कर के चुनाव नहीं चाहते रहे. परिणाम यह हुआ कि एक अपंग सरकार कुरसी पर आसीन रही और अब यह (6 मार्च को) अपना इस्तीफा मंजूर होने के बाद भी तब तक काम चलाती रहेगी जब तक कि कोई दूसरी सरकार बाकायदा सत्ता संभाल नहीं लेती.

इस दौरान यह आशंका बनी रहेगी कि चुनाव होने के बाद भी किसी दल को स्पष्ट बहुमत नहीं मिल सकेगा और फिर से किसी दूसरे समीकरणों के आधार पर मिलीजुली सरकार बनाने की जरूरत पड़ सकती है.

संसदीय प्रणाली का दोष

वर्तमान संसदीय प्रणाली का यह दोष भी उभर कर आया है कि पिछले चार दशकों में दलों की संख्या के साथसाथ आम जनता की राजनीतिक चेतना तो बढ़ी है परंतु समान शक्ति वाले दो दलों का विकास नहीं हो सका है जो एकदूसरे का विकल्प बन सकें. इस संबंध में गैरकांग्रेसी दलों के पिछले 20 वर्षों से चले आ रहे प्रयास सफल नहीं हो सके हैं. इस का स्वाभाविक नतीजा देश में राजनीतिक फिसलन के रूप में दिखाई पड़ा है, जिसे आज संपूर्ण देश झेल रहा है.

राजनीतिक फिसलन और अस्थिरता के परिणाम देश के सामने हैं. बहुसंख्यक समाज में अगड़े और पिछड़े के नाम पर जातीय खाई पैदा हुई है. राम जन्मभूमि और बाबरी मसजिद विवाद ने बहुसंख्यक और अल्पसंख्यक वर्ग का ध्रुवीकरण कर दिया है. सुनीति में वोटबैंक पकड़ने की आकांक्षा ने सामाजिक विभेद को जन्म दिया है.

खर्च और आय में तुलना

आर्थिक क्षेत्र की स्थिति और भी बदतर हो गई है. देश में सरकारी खर्च और आय में भारी असंतुलन पैदा हो गया है. बढ़े हुए खर्चों को पूरा करने के लिए विदेशी ऋण और करेंसी नोटों की छपाई का सहारा लेना पड़ रहा है, जिस के कारण मुद्रास्फीति और महंगाई बढ़ी है. रुपए की कीमत घट कर करीब 10 पैसे रह गई है और विदेशी मुद्रा के सामने भारतीय रुपए का लगातार अवमूल्यन हो रहा है.

बजट घाटा करीब 13 हजार करोड़ रुपए तक पहुंच गया है ऐसी स्थिति में बढ़ती कीमतों को रोकना सरकार के लिए कठिन हो गया है. इतना ही नहीं राजनीतिक अस्थिरता के कारण उत्पादशुल्क और

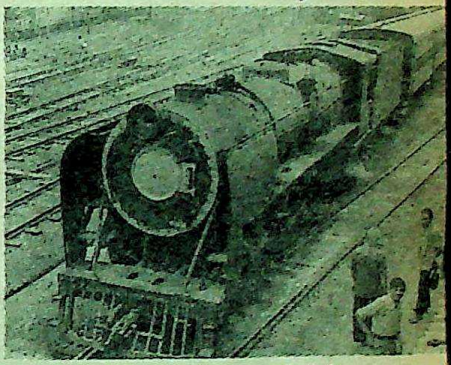

रेलवे के वर्तमान घाटे को पूरा करने के लिए यात्री किराए और मालभाड़े की दरों में बढ़ोतरी करना सरकार की मजबूरी बन गई है.

सीमा शुल्क की वसूली में गिरावट आई है तथा रेलवे अपने आर्थिक लक्ष्यों को पूरा करने में सफल नहीं हो सका है.

निर्यात में अपेक्षानुसार वृद्धि न होने और खाड़ी युद्ध के कारण तेल के बिल का बोझ बढ़ने से देश के सामने विदेशी मुद्रा भंडार की कठिन समस्या पैदा हो गई है. पिछले दिसंबर में विदेशी मुद्रा भंडार घट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर तीन हजार करोड़ रुपए से दिए जा रहा था, जिस के कारण जरूरी खाद्य तेलों का आयात करना भी कठिन हो रहा है.

अतिरिक्त बोझ

सरकार के सामने वर्तमान आर्थिक संकट से निबटने के लिए एक ही रास्ता रह गया है कि वह अगले बजट में जनता पर और कर भार बढ़ाए. रेलवे के वर्तमान घाटे को पूरा करने के लिए यात्री किराए और माल भाड़े की दरों में बढ़ोतरी करना सरकार की मजबूरी हो गई है. विदेशी मुद्रा की कमी को पूरा करने के लिए सरकार को अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष से दूसरा ऋण लेना जरूरी हो गया है. इस के साथ ही सकल राष्ट्रीय उत्पाद में गिरावट आने का खतरा पैदा हो गया है.

तदर्थ और अस्थिर सरकार होने का असर सब से ज्यादा हमारी अंतर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठा पर पड़ा है. गुटनिरपेक्ष आंदोलन में, जिस का भारत इस के जन्म से नेता रहा है, देश की भूमिका बेअसर हो गई है. खाड़ी युद्ध के दौरान अंतर्राष्ट्रीय रंगमंच पर वर्तमान नेतृत्व देश की भूमिका को उभारने में असफल रहा है. इस दौर में हमारी निष्क्रियता और विदेश नीति की अस्पष्टता ही हमारी उपलब्धि रही है.

भारत जैसे बड़े और लोकतांत्रिक देश की अखंडता, राजनीतिक स्थिरता, आर्थिक विकास और क्षेत्रीय शक्ति के रूप में उभरने के लिए जरूरी है कि केंद्र में स्थिर और मजबूत सरकार हो. देशगत परिस्थितियों के कारण यदि वर्तमान संसदीय प्रणाली यह अपेक्षित दायित्व निभाने में सफल नहीं होती है तो देश को एक बार फिर इस संबंध में नए सिरे से सोचने की जरूरत पड़ सकती है. चार दशक पूर्व संविधान निर्माताओं को शायद यह आभास नहीं रहा होगा कि राजनीतिक दांवपेंच और जीवन मूल्यों के ह्रास के कारण ऐसी अनपेक्षित और बदतर स्थिति पैदा हो सकती है.

संसद और राज्य विधान सभाओं में राजनीतिक दांवपेंच, हंगामा और विधायी कामकाज के प्रति उदासीनता की जो प्रवृत्ति बढ़ी है, उस से लगता है कि राजनीतिक दल लोकतंत्र रूपी भद्र महिला के कपड़े फाड़ने में लगे हुए हैं, जिस के कारण उस का सम्मानित आवरण ही चिथड़ेचिथड़े हो रहा है.

वर्तमान प्रणाली में सुधार

देश की बढ़ती हुई समस्याओं के सामने संसदीय प्रणाली की उभरती अक्षमता लोगों के मन में यह प्रश्न खड़ा कर रही है कि क्या अब वह समय नहीं आ गया कि जब शासन व्यवस्था को सक्षम और प्रभावी बनाने के लिए और लोकतंत्र की वर्तमान प्रणाली में देश की समस्याओं और आवश्यकताओं को देखते हुए सुधार और परिवर्तन किया जाए.

केंद्र को मजबूत बनाने तथा जन आकांक्षाओं को प्रतिबिंबित करने के लिए जनवरी 1950 में लागू भारतीय संविधान में 60 से अधिक संशोधन किए जा चुके हैं तथा दलबदल को नियंत्रित करने का प्रयास किया गया है लेकिन इन प्रयत्नों के बावजूद हमारी प्रणाली स्थिरता पैदा करने, राजनीति में बेहतर लोगों को खींचने तथा संसद और विधान सभाओं के गिरते स्तर को रोकने में सफल नहीं हो पा रही है. यह ऐसी स्थिति है जिस को ले कर सभी के चेहरों पर चिंता की रेखाएं खिंच रही हैं.

वैसे तीसरी दुनिया के अनेक देशों को इस प्रणाली के संबंध में इसी प्रकार के अनुभव हुए हैं और इन देशों ने अपनी आवश्यकता और जन आकांक्षाओं के अनुरूप लोकतंत्र के कई रूप विकसित किए हैं तथा चुनाव प्रणाली में जरूरी परिवर्तन भी कर दिए हैं. भारत में ऐसा कुछ किया जा सकता है जिस से देश के प्रधान मंत्री की कुरसी राजनीतिक थपेड़ों से बारबार न हिलती रहे वरन देश के व्यापक हित में स्थिरता को बढ़ावा मिले. इस मामले में देशव्यापी बहस की जरूरत है. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

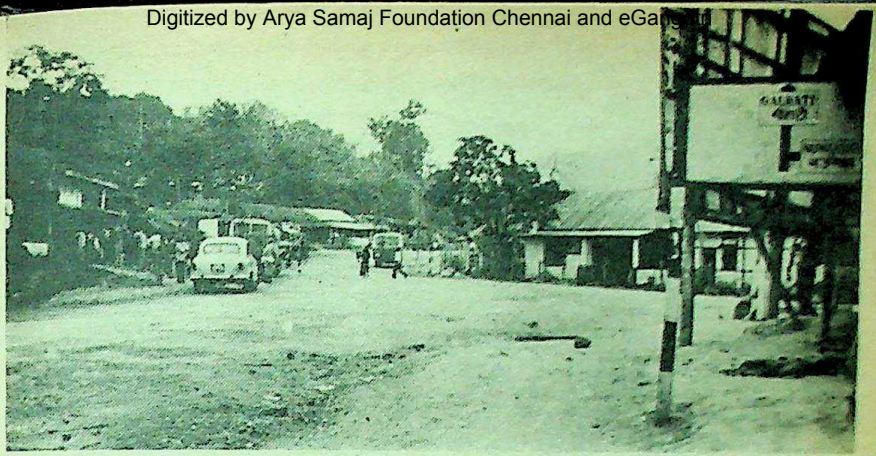

असम में उभरते दो नए हिंसक आंदोलन

लेख ● महेंद्रसिंह चिलवाल

लगभग सात लाख की आबादी वाले स्वायत्तशासी जिले कार्बी आंग्लांग को स्वायत्तशासी राज्य बनाने की मांग पिछले चार सालों से ए.एस.डी.सी. (आटोनोमस स्टेट डिमांड कमेटी) कर रही है. 2 जून 1986 को 12 घंटे के बंद की घोषणा के साथ शुरू हुआ यह आंदोलन धीरेधीरे जनसमर्थन हासिल करता रहा है.

किंतु कार्बी आंग्लांग को स्वायत्तशासी राज्य बनाने की मांग को ले कर चल रहा शांतिपूर्ण आंदोलन अब धीरेधीरे हिंसा की राह पकड़ने लगा है. लोगों में यह भावना घर करती जा रही है कि हिंसा का सहारा लिए बिना वे अनसुने रहेंगे. आंदोलनकारियों की मांग है कि कार्बी आंग्लांग तथा उत्तरी कछार के पहाड़ी जिलों को मिला कर एक स्वायत्तशासी राज्य गठित किया जाए.

स्वायत्तशासी राज्य की मांग का मुख्य आधार यह है कि 1969 में असम पुनर्गठन अधिनियम पास होने के समय खासी और जयंतिया पहाड़ियों से जुड़ी हुई मिकिर और उत्तरी कछार पहाड़ियों को असम के नेताओं के इस आश्वासन पर मेघालय में नहीं मिलने दिया गया था कि इन पहाड़ियों को वास्तविक स्वायत्त शासन दिया जाएगा. इस वादे को पूरा करने के लिए दो स्वायत्त जिला परिषदों का गठन किया गया. साथ ही संविधान के अनुच्छेद 244 (क) के तहत यह प्रावधान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पीपल्स पार्टी तथा लिबरेशन फ्रंट के नेतृत्व में पृथक सालाला राज्य की मांग व स्वायत्तशासी राज्य मांग समिति तथा पीपल्स गार्ड की पृथक कार्बी आंग्लांगलैंड की मांग की समस्या निरंतर उग्र होती जा रही है. यदि केंद्र व राज्य सरकारों ने इस समस्या को गंभीरता से नहीं लिया तो उल्फा व बोड़ो समस्याओं की तरह यह भी गले की हड्डी बन जाएगी.

रखा गया कि जब भी जिले के लोग चाहेंगे, स्वायत्तशासी राज्य गठित कर दिया जाएगा. इसी आधार पर स्वायत्तशासी राज्य मांग समिति (ए.एस.डी.सी.) इन जिलों को मिला कर स्वायत्तशासी राज्य बनाने की मांग कर रही है. यह स्वायत्तशासी राज्य असम के भीतर ही एक राज्य होगा, लेकिन इस की अपनी विधान सभा होगी. बजट, योजना आदि भी यही विधान सभा तय करेगी.

ब्रिटिश शासनकाल में पूर्वोत्तर भारत में 'आंशिक रूप से अलग किया हुआ' (पार्शली सेक्लूडिड) कहे जाने वाले पहाड़ी इलाकों में आने वाला कार्बी आंग्लांग क्षेत्र 1946 से ही स्वायत्तशासी जिला रहा है. 1960 में जब तत्कालीन असम सरकार ने असमिया भाषा को राज्य के लिए अनिवार्य घोषित कर दिया, उस के बाद अनेक पृथक राज्यों की मांग उठी पर इस जिले के लोगों का झुकाव असम की ओर ही रहा.

सन 1969 में संविधान के 22वें संशोधन के तहत जनजातियों के अधिकारों की सुरक्षा को ध्यान में रख कर स्वायत्त राज्य का दर्जा प्राप्त कर सकने की व्यवस्था की गई. यह व्यवस्था केवल असम के कार्बी आंग्लांग तथा उत्तरी कछार के लिए थी. कार्बी आंग्लांग के समक्ष 1969 में यह विकल्प भी प्रस्तुत किया गया था कि वह चाहे तो मेघालय में शामिल हो सकता है, परंतु कार्बी आंग्लांग ने अपनी स्वायत्त जिला परिषद में दखलअंदाजी नहीं किए जाने की गारंटी मिलने पर असम में ही रहने की इच्छा प्रकट की, लेकिन इस के बाद कांग्रेस और असम गण परिषद की सरकारों ने इस परिषद में हस्तक्षेप शुरू कर दिया. स्वायत्तशासी होने के बावजूद इस जिले का बजट असम सरकार बनाती है. इसी प्रकार नियुक्तियों तथा पदस्थापन के मामले में और विकास योजनाओं में भी जिला परिषद को कोई अधिकार प्राप्त नहीं है.

इस क्षेत्र को पहले मिकिर पहाड़ी जिला कहा जाता था और कार्बी लोगों को मिकिर, जिस का अर्थ होता है नंगा. कार्बी जनजाति द्वारा आज एक संगठित रूप में स्वायत्त राज्य बनाने के पीछे उन की यह आहत भावना भी काम कर रही है. पिछले चार वर्षों से आंदोलन का नेतृत्व कर रही 'स्वायत्तशासी राज्य मांग समिति' ने अनेक शांतिपूर्ण धरनों, प्रदर्शनों सहित बंद का सफल आयोजन किया है. इस के साथ ही केंद्र तथा राज्य सरकार से संपर्क स्थापित करने के क्रम में 18 मई 1987 को समिति के कुछ लोग तत्कालीन प्रधान मंत्री राजीव गांधी से मिले. उन्होंने इन की मांगों को जायज मानते हुए आश्वासन दिया कि वह इस संबंध में गृह मंत्री से सलाह लेंगे. लेकिन यह आश्वासन कोरा आश्वासन ही बना रहा.

मांग समिति के नेतृत्व में चार वर्ष से शांतिपूर्ण ढंग से चल रहे इस आंदोलन को जनता का समर्थन प्राप्त है. जनवरी 1989 में हुए जिला परिषद के चुनावों में उस ने परिषद की 26 सीटों में से 22 पर कब्जा कर लिया है. कार्बी आंग्लांग को स्वायत्तशासी राज्य बनाए जाने का विरोध भी किया जाता रहा है. विरोधियों द्वारा पहला तर्क यह दिया जाता है कि मेघालय को भी 1970 में असम के अंतर्गत स्वायत्त राज्य बनाया गया था, किंतु दो वर्ष बाद उसे अलग राज्य का दर्जा देना पड़ा. यदि कार्बी आंग्लांग को स्वायत्तशासी राज्य का दर्जा दे दिया गया तो उसे भी अलग राज्य बनाना पड़ सकता है.

दूसरा तर्क यह है कि चूंकि जिले की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

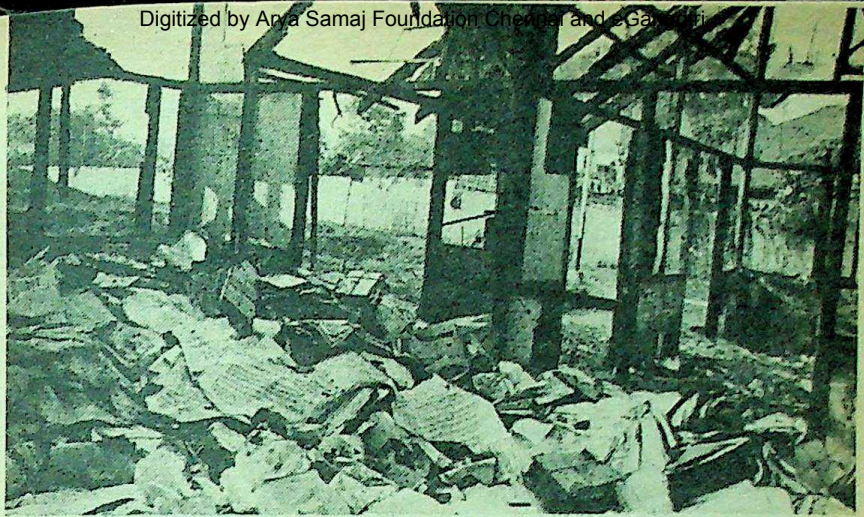

लगभग 40% आबादी गैरकार्बी है, अतः स्वायत्तशासी राज्य बनने से गैरकार्बी लोगों पर अत्याचार हो सकता है.

कार्बी आंग्लांग की यूनाईटिड पीपल्स कानफ्रेंस (यू.पी.सी.) का मत है कि आंदोलन में आई तेजी का कारण जिले के विकास कार्यों में असफलता है. वह इस के लिए मांग समिति को जिम्मेदार मानती है.

कारण जो भी हो, मांग समिति अपना आंदोलन तेज किए जा रही है. 14-15 अगस्त 1988 को सौ घंटे का बंद तथा धरने के आंदोलन के दौरान पुलिस ने कठोरता से इसे दबाने का प्रयास किया. मांग समिति के कार्यकर्ता पुलिस पर आंदोलनकारियों को बुरी तरह पीटने तथा औरतों के कपड़े फाड़ने व बेइज्जत करने का आरोप लगाते हैं.

5 मार्च 1990 को समिति ने असम के मुख्य मंत्री को अपनी मांगों पर वार्त्ता हेतु एक माह का समय दिया, किंतु मुख्य मंत्री ने इस ओर ध्यान देने की जरूरत महसूस नहीं की. तत्पश्चात प्रधान मंत्री विश्वनाथ प्रताप सिंह को इस के लिए एक माह का समय दिया गया. उस की तिथि भी 4 मई को समाप्त हो गई. इस उपेक्षा से आंदोलन-कारियों में बहुत अधिक नाराजगी है.

उग्रवादियों के मन में यह भावना घर कर गई है कि जब तक वे हिंसा का सहारा नहीं लेंगे, तब तक सरकार उन की मांगों पर ध्यान नहीं देगी.

उन्होंने 4 मई से 108 घंटे के बंद का आह्वान किया.

इस से जाहिर है कि वे धीरेधीरे उग्र रूप अपनाने पर विवश हो रहे थे. उन लोगों ने 'पीपल्स गार्ड' नामक एक सुरक्षा दस्ता भी तैयार कर लिया है, जो पारंपरिक व आधुनिक हथियारों से लैस है.

15 अप्रैल 1990 को कार्बी आंग्लांग के जिला मुख्यालय डीफू में स्वायत्तशासी राज्य मांग समिति ने एक सम्मेलन किया था. इस बैठक में आंदोलन को तेज करने व मांगें मनवाने के लिए अन्य तरीके अपनाने की भी चर्चा की गई. इसी बैठक में दीपेंद्र रोंग्पी को पीपल्स गार्ड का नेता चुना गया.

सरकार जिस तरह उल्फा व बोड़ो उग्रवादियों से बातचीत करने को व्यग्र दिखती है, उस से इन के मन में यह भावना बलवती होती जा रही है कि जब तक वे हिंसा का सहारा नहीं लेंगे, तब तक सरकार उन की मांगों पर ध्यान नहीं देगी.

असम की दूसरी उभरती हुई समस्या है पृथक सोनाली राज्य (बराकलैंड) की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

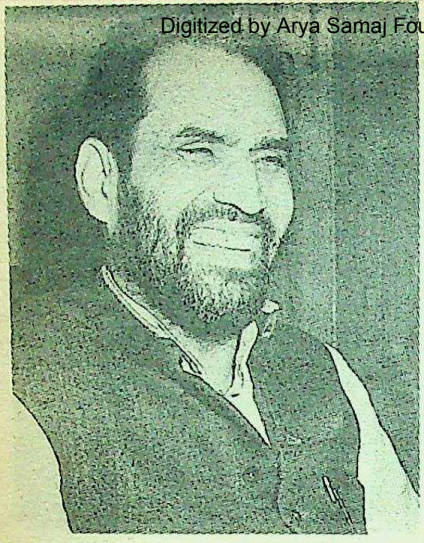

मांग, जो धीरेधीरे जोर पकड़ती जा रही है. कछार, करीमगंज तथा हाइलाकांदी जिलों को मिला कर बराक घाटी में पृथक 'सोनाली राज्य' का प्रस्ताव किया जा रहा है. इस आंदोलन का नेतृत्व लोकतांत्रिक तथा शांतिपूर्ण तरीकों में विश्वास रखने वाली बराक वैली पीपुल्स पार्टी (बी.वी.पी.पी.) करती रही है, लेकिन अब 'बराक लिबरेशन फ्रंट' नामक संगठन उग्रवादी रुख अपनाए हुए है.

अगप सरकार से क्षुब्ध बी.वी.पी.पी. के अध्यक्ष सिकंदर अली लस्कर का कहना है, "असम का उपनिवेश बन कर रह गई है बराक घाटी. अगप सरकार अंगरेजों से भी ज्यादा शोषण कर रही है. इस शोषण से मुक्ति के लिए हम हर तरह का बलिदान देने को तैयार हैं, लेकिन शोषण का यह सिलसिला अब खत्म हो कर ही रहेगा. हम में से एक भी बचा तो वह भी अंत तक आजादी ही मांगेगा."

15 अगस्त 1987 को यह पार्टी अस्तित्व में आई थी. तब से इस ने पृथक सोनाली राज्य के लिए आंदोलन चला रखा है. इस के लिए कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षित किया जा रहा है. गत वर्ष 28 फरवरी को इस ने बंद का आह्वान किया था. बंद की सफलता से क्षेत्र में इस पार्टी के प्रभाव का पता चला. आंदोलन के अगले चरण में इस ने 15 अगस्त को 72 घंटे के बराक घाटी बंद की घोषणा की. उस ने अगप सरकार को चेतावनी दी कि अगर उन की मांगें पूरी नहीं की गईं तो सरकार को कर नहीं दिया जाएगा और बराक की वन संपदा तथा तेल को बाहर ले जाने पर रोक लगा दी जाएगी.

पार्टी के सचिव रविदास का कहना है कि राज्य सरकार को बराक से एक अरब रुपए का राजस्व प्राप्त होता है, लेकिन सरकार विकास कार्य पर एक करोड़ भी खर्च नहीं करती. विकास विभागों को जो राशि दी जाती है, उस का बड़ा हिस्सा बिना खर्च किए ही लौटा दिया जाता है, जिस का प्रत्यक्ष उदाहरण यहां के खराब रास्ते, पुल व हस्पताल आदि हैं.

पृथक सोनाली राज्य की मांग के समर्थन में बी.वी.पी.पी. का कहना है कि जब पूर्वोत्तर में सात राज्य बन सकते हैं तो आठवां क्यों नहीं? बराक से कम जनसंख्या वाले मिजोरम, अरुणाचल प्रदेश, त्रिपुरा, मेघालय जैसे छोटे राज्य हो सकते हैं तो बराक क्यों नहीं?

बराक वैली पीपल्स पार्टी जहां एक ओर लोकतांत्रिक तथा शांतिपूर्ण ढंग से आंदोलन चला रही है, वहीं दूसरी ओर बराक घाटी लिबरेशन फ्रंट नामक उग्रवादी संगठन 'बराकलैंड' की मांग में हथियारबंद लड़ाई की मुद्रा में सामने आया है. गौरतलब है कि बराक वैली पीपुल्स पार्टी अपने आंदोलन की मूल शक्ति विपुल जनसमर्थन को मानती है, जबकि बराक घाटी लिबरेशन फ्रंट उल्फा की तर्ज पर काम कर रहा है.

अपने क्षेत्र की समस्या से बेखबर विधायकों की चेतना उस समय लौटी, जब उन से त्यागपत्र की मांग की गई और उन्हें जनमत अपने विरुद्ध जाता दिखाई दिया.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तब हड़बड़ा कर उग्रवादियों ने मुख्य मंत्री प्रफुल्लकुमार महंत से भेंट कर उन्हें आगाह किया कि अगर बराक के विकास की परियोजनाएं शुरू नहीं की गईं तो अलगाववादी ताकतों को बल मिलेगा.

पीपल्स पार्टी तथा लिबरेशन फ्रंट के नेतृत्व में पृथक सोनाली राज्य की मांग व स्वायत्तशासी राज्य मांग समिति तथा पीपल्स गार्ड की पृथक कार्बी आंग्लागलैंड की मांग की उग्र होती समस्या को यदि केंद्र व राज्य सरकारों ने गंभीरता से नहीं लिया तो ये समस्याएं भी उल्फा व बोड़ो समस्याओं की तरह इन दोनों सरकारों के गले की हड्डी बन जाएंगी. इतना तो तय है कि आने वाले चुनावों में ये उभरते उग्रवादी आंदोलन असम गण परिषद को खासी परेशानी में डालेंगे.

राष्ट्रपति शासन के बाद की स्थिति

असम में राष्ट्रपति शासन लागू किए जाने के बाद प्रतिबंधित 'उल्फा' व 'बोड़ो' उग्रवादियों को पकड़ने के लिए जोरदार अभियान चलाया जा रहा है, लेकिन सेना के लिए तो 'आपरेशन बजरंग' हताशाजनक ही रहा. उसे तैयारी के लिए न सिर्फ 24 घंटे अल्पावधि ही मिली बल्कि आपरेशन की भनक उग्रवादी संगठनों तक पहुंच जाना भी उस के लिए रहस्य बना रहा.

उल्फा के कमांडर इन चीफ परेश बरुआ ने 17 नवंबर को अपने सदस्यों के नाम एक परिपत्र जारी कर 19 नवंबर तक अपने शिविर खाली कर देने का आदेश दिया. सेना 28 नवंबर को वहां पहुंची तो बड़ा शिकार हाथ से निकल कर दूर जा चुका था. फिर भी 47 उल्फा शिविरों का सफाया कर देना सेना की उपलब्धि ही है. ऐसे प्रत्येक शिविर में 150 उग्रवादी रह सकते थे.

अनेक सूत्रों से यह बात भी सामने आ चुकी है कि प्रफुल्लकुमार महंत के कुछ सहयोगी उग्रवादी संगठनों के साथ साठगांठ किए रहे तथा उन की सरकार बस नाम भर के लिए अपने दायित्व का निर्वाह करती रही. उग्रवादियों की हरकतों से वैसे तो समूचा राज्य ही आतंकित रहा है, लेकिन उद्योगव्यवसाय में लगे हुए गैरअसमी तथा चाय बगान के उद्योगपतियों पर तो कहर ही बरपा हो गया था.

प्रधान मंत्री चंद्रशेखर ने अप्रैल, मई तक चुनाव कराने का संकेत अवश्य दिया है, लेकिन राज्यपाल श्री ठाकुर का कहना है कि जब तक उग्रवादियों की बेजा हरकतों पर काबू नहीं पा लिया जाता, तब तक चुनाव कराने की बात सोची भी नहीं जा सकती. इस समय असम में अशांत क्षेत्र कानून लागू है तथा इस के अंतर्गत सशस्त्र सैन्यबल को उग्रवादियों के खिलाफ कड़ी काररवाई करने, उन से जम कर मोरचा लेने की छूट भी मिली हुई है.

लेकिन क्या राष्ट्रपति शासन राज्य की समस्याओं का इलाज है? राष्ट्रपति शासन से सिर्फ इतनी अपेक्षा रखनी चाहिए कि उग्रवादियों को खत्म किया जा सके. स्थिति सामान्य बना कर और सभी वर्गों को राहत व विश्वास का एहसास करा कर चुनाव कराए जाने चाहिए.

राष्ट्रपति शासन की निरंतरता स्थिति को किस कदर उलझा सकती है, यह पंजाब और कशमीर से स्पष्ट है. पंजाब में प्रशासनिक सख्ती के कारण जैसी राजनीतिक दुविधाएं आ खड़ी हुई हैं, वैसा असम में नहीं होने देना चाहिए. इसलिए लक्ष्य यही हो कि असम में विधान सभा चुनाव जल्दी से जल्दी कराए जाएं. असम गण परिषद को विश्वास में रखने की भी केंद्र को कोशिश करनी चाहिए. गण परिषद को अकाली दल बनने देने की चूक नहीं होनी चाहिए.

भूतपूर्व मुख्य मंत्री प्रफुल्लकुमार महंत का यह कहना है कि राज्य की जनता को उस के मौलिक अधिकारों से वंचित किया जा रहा है, सही प्रतीत नहीं होता. यदि उन की सरकार ने इन दोनों संगठनों पर काबू पाने की कोशिशें की होतीं तो केंद्र को राष्ट्रपति शासन लागू करने के लिए कदम नहीं उठाना पड़ता. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

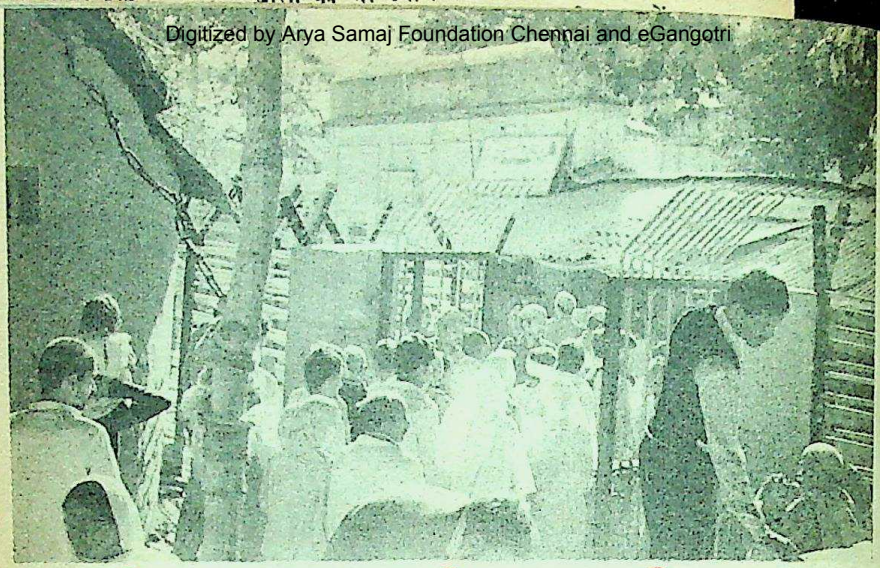

मंदिर मसजिद विवाद

लेख ● जमील बनारसी

देश के लिए परेशानी की बात है कि सांप्रदायिक दंगे रुक ही नहीं रहे हैं और न ही सांप्रदायिक उन्माद ही कम हो रहा है. यह ठीक है कि यह उन्माद स्वयं थक कर कभी सुस्ताने लगता है और फिर उठ खड़ा होता है और खास तौर से हिंदुओं तथा मुसलमानों को लीलने लगता है. मेरे बापदादा ने भी यही देखा था, मैं भी देखता रहा हूं, और मेरे बच्चे भी देख रहे हैं.

हिंसा में गुंडे और बदमाश भी मरते हैं. लेकिन सब से ज्यादा मौतें निर्दोष इनसानों की होती हैं. और इन इनसानों की मौत और उन का बहा हुआ खून न धर्म के काम में आता है न देश के, क्योंकि दंगे किसी भी समस्या का हल नहीं खोजते.

हिंदू, मुसलिम, सिख, इसाई या बौद्ध धर्म बड़ा है या और कोई धर्म, यह सिद्ध करने के लिए दंगों की जरूरत नहीं पड़ती है. अगर यह सिद्ध करना ही है तो इस के लिए बौद्धिक ईमानदारी की आवश्यकता है. यह ईमानदारी राजनीतिबाजों में तो है ही नहीं. जो अपनेआप को धर्म के ठेकेदार मानते हैं, अगर उन में भी होती तब शायद यह समस्या उत्पन्न ही नहीं होती.

आज की सांप्रदायिक परिस्थिति के लिए एक मुंह से धार्मिक कट्टरता को ही दोषी ठहराया जा रहा है. कट्टरता एक ऐसा सड़कछाप शब्द है जो पश्चिम की देन है. कोई भी व्यक्ति अपने धर्म में गहरी आस्था रखता हो उसे कट्टर कहते हैं. परंतु लोग यह भूल रहे हैं कि कोई भी व्यक्ति हिंदू मुसलिम, सिख, इसाई या बौद्ध हो, यदि वह अपने धर्म का कट्टर अनुयायी होगा तो धर्म के नाम पर खूनखराबा कर ही नहीं सकता क्योंकि श्रीराम, हजरत मुहम्मद, ईसा मसीह, गौतम बुद्ध वगैरह ने कभी भी अपनी प्रतिष्ठा के लिए इनसान को इनसान का खून बहाने का उपदेश नहीं दिया. कोई भी धर्म इनसान की रक्षा करने के लिए होता है, परंतु इतिहास गवाह है कि समयसमय पर धर्म की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राम जन्म [illegible] कोई उत्साह बढ़ा हो या नहीं, मुसलमानों में एक अनावश्यक भय और अविश्वास पैदा हो गया है. यह भय कट्टर धार्मिक मुसलमानों में ही नहीं, अपनी रोजीरोटी के प्रति चिंतित आम गरीब मुसलमान में भी है और यह देश की एकता और प्रगति के लिए ठीक नहीं.

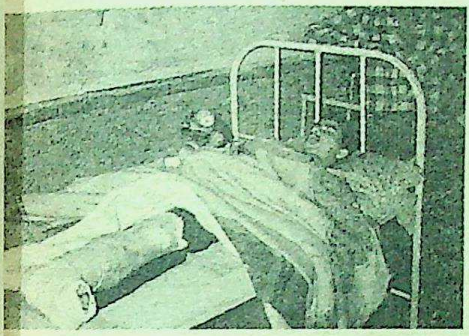

धर्म की रक्षा का अर्थ आज एकदूसरे का खून बहाना ही माना जाने लगा है.

रक्षा के लिए इनसानों ने ही अपना खून बहाया, क्या यही कट्टरता है?

30 अक्तूबर को अयोध्या में हुए विनाश का असर यह हुआ कि माहौल धीरेधीरे उसी तरह की दहशत में बदल गया जिस तरह की दहशत का शिकार 'आपरेशन ब्लू स्टार' के समय सिख समुदाय हो गया था. इसे मुसलिम मनोविज्ञान पर एक प्रहार कहा जा सकता है.

22 दिसंबर 1958 को जब एक भीड़ द्वारा बाबरी मसजिद पर कब्जा जमा लिया गया था, तब इस घटना ने उत्तर प्रदेश के बाहर किसी को भी उत्तेजित नहीं किया था. असल में छठे दशक के दौरान मुसलमान धार्मिक तो थे लेकिन मसजिद की सुरक्षा को ले कर इतने उद्वेलित नहीं हुआ करते थे.

लेकिन नौवें दशक में हालात बदल चुके थे. क्या आप जानते हैं कि इस स्थिति के लिए 'शाहबानो केस जिम्मेदार है? नहीं इस के लिए जिम्मेदार है 1986 में जिलाधीश के आदेश पर मसजिद पर पड़ा ताला खुलवाया जाना. 'दंड प्रक्रिया संहिता' की धारा 145 को नजर में रखा जाए तो जिलाधीश का आदेश सरासर गलत था.

इस आदेश के खिलाफ अपील की गई तो अपील अदालत ने यथास्थिति बनाए रखने के आदेश जारी नहीं किए. यह बात और अचंभे में डालने वाली थी. लेकिन मुसलिम समुदाय का सरकार व न्यायालय पर से विश्वास उठने सा लगा और इसी

रामशिला पूजन के लिए एकत्र ईंटें : अयोध्या विवाद में हिंसा की शुरुआत यहीं से हुई.

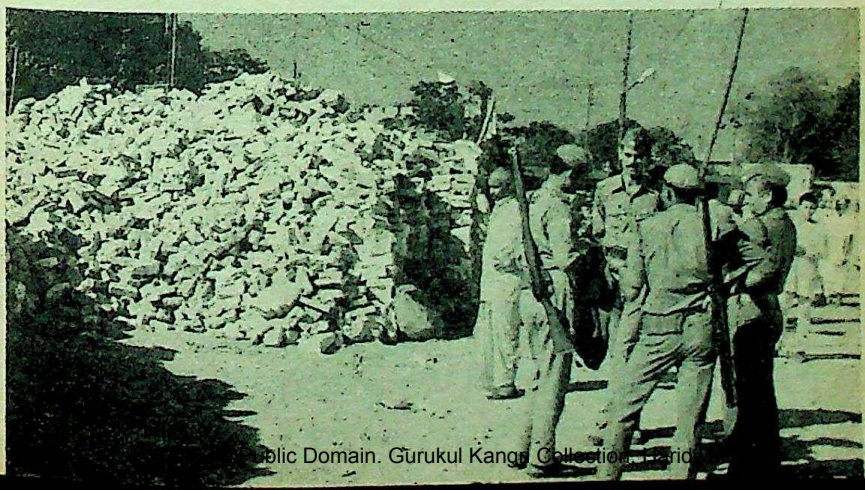

Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

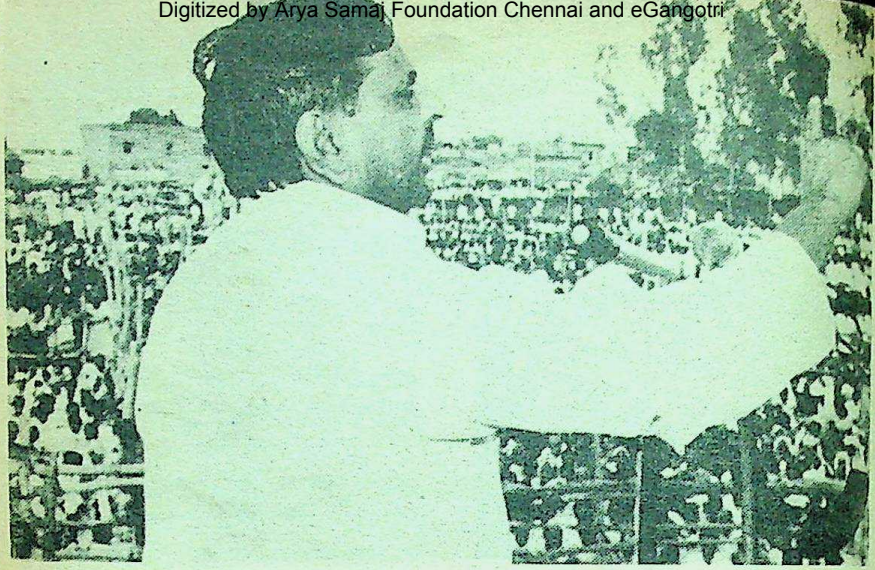

मुलायमसिंह यादव के उत्तेजक भाषणों से उत्तर प्रदेश के कई शहरों में दहशत का माहौल बना.

विश्वास के साथ निराशा सी छाने लगी. उन्हें लगने लगा कि जब नेहरू खानदान का एक व्यक्ति ऐसा कर सकता है तो दूसरे से क्या उम्मीद की जा सकती है.

श्रीमती इंदिरा गांधी ने भी अपने प्रधान मंत्री काल में इस समस्या को सुलझाने की कभी कोशिश नहीं की. विश्व हिंदू परिषद के नेताओं ने जब 1984 में विवादित भूमि का सवाल उन के सामने रखा तो उन्होंने विश्व हिंदू परिषद के नेताओं से कहा कि हिंदुओं को विवादित स्थल सौंपने का हमारे पास एक ही रास्ता है और वह यह कि आप लोग बहुत बड़े पैमाने पर जनांदोलन करें ताकि जनता से मैं कह सकूं कि विवादित भूमि को सिवाय हिंदुओं को सौंपने के मेरे पास कोई रास्ता नहीं था. अगर इंदिरा गांधी इस मामले को गंभीरता से लेतीं और सूझबूझ से काम करातीं तो उन के बाद वाली सरकार को न यह समस्या विरासत में मिलती और न ही विवादित स्थल का मामला आज इतना विकराल रूप लेता.

1989 में राजीव गांधी की सरकार ने अयोध्या स्थित विवादास्पद स्थल पर शिलान्यास करवा कर मुसलिम समुदाय की हताशा को बढ़ाने का ही काम किया. रथयात्रा विश्वनाथ प्रताप सिंह की सरकार को ले डूबी है. इस की गति ने मसजिद को नुकसान पहुंचाया.

मुलायमसिंह यादव के उत्तेजक भाषणों से उत्तर प्रदेश के विभिन्न शहरों में भड़के दंगों ने मुलायमसिंह के प्रयत्नों को भी धो डाला. विश्वनाथप्रताप सिंह को सत्ता से हटाए जाने और मुलायमसिंह के पंगु हो जाने के बाद अब बाबरी मसजिद के मामले में मुसलिम सोच काफी असहाय सा हो गया है.

प्रधान मंत्री बनने से लगभग दस दिन पहले चंद्रशेखर ने एक बयान में कहा था कि कोई भी व्यक्ति राम जन्मभूमि के वास्तविक स्थल का दावा नहीं कर सकता क्योंकि अयोध्या में कोई ऐसा मंदिर नहीं है जो कि एक हजार वर्ष से पहले का बना हो. और सरयू की बाढ़ में पता नहीं कितनी बार अयोध्या उजड़ी और बसी. इसलिए जन्मभूमि का निश्चित रूप से कहीं भी दावा नहीं किया जा सकता.

उल्लेखनीय है कि प्रधान मंत्री बनने के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाद चंद्रशेखर ने 11 नवंबर को दूरदर्शन पर एक बयान में कहा था कि 'मंदिर मसजिद विवाद भावनात्मक है जिसे कोर्ट में नहीं सुलझाया जा सकता.' चंद्रशेखर के इस बयान ने सारी अटकलों पर पानी फेर दिया. यह भाजपा की विजय का सूचक था क्योंकि वह इस मसले को कानून की परिधि से बाहर निकाल कर पीटना चाहती है.

अयोध्या में डायनामाइट के साथ शिवसेना के युवक के पकड़े जाने से अब यह बात पूरी तरह से स्पष्ट हो गई है कि रामभक्तों का सत्याग्रह अराजक तत्त्वों के हाथों में चला गया. यह कार्य रामभक्तों का नहीं राष्ट्रद्रोहियों का है.

अगर ऐसे देशद्रोही अपनी योजना में सफल हो जाते तो बाबरी मसजिद ध्वस्त होने के साथसाथ हजारों की संख्या में सैनिक मारे जाते तथा मसजिद में रखी रामलला की मूर्ति निश्चित रूप से नष्ट हो जाती. यह

इंदिरा गांधी ने अपने शासनकाल में मंदिर मसजिद विवाद को सुलझाने की कोशिश नहीं की.

एक बड़ा षड्यंत्र था जिस का उद्देश्य कार सेवा या रामभक्ति नहीं बल्कि हिंदू मुसलिम एकता को खंडित कर देश को सांप्रदायिकता की आग में झोंकना था.

एक सप्ताह में ही 250 से भी अधिक लोग मारे गए. समूचे शहर के शहर हिंसा की ज्वाला में झुलस गए. इतिहास गवाह है कि इस धरती पर जितना नरसंहार धर्म के नाम पर हुआ है उतना किसी अन्य बात पर नहीं. मंदिर या मसजिद से उठने वाली यह आग इनसानियत के समूचे कलेवर को ही जला कर राख कर देगी. इसलिए ईश्वर अल्लाह के नाम पर यह रक्तपात बंद हो.

आज का हर आदमी चाहे वह हिंदू हो

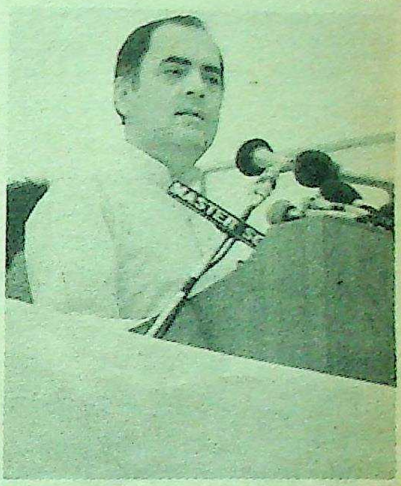

राजीव गांधी सरकार ने विवादित स्थल पर शिलान्यास करवा कर मुसलिम समाज की हताशा को ही बढ़ाया.

या मुसलमान अधिकांशतः अपनेआप को सांप्रदायिकता से मुक्त नहीं कर पा रहा है. इस के चलते हमारे सभी मूल मुद्दे, जैसे गरीबी, अशिक्षा, अंधविश्वास, बेरोजगारी, दहेज और सामाजिक पिछड़ापन एकदम से दब गए हैं. काश हमारे इन धार्मिक नेताओं ने इतना संघर्ष जीवनस्तर को ऊंचा उठाने के लिए किया होता, पर करते क्यों? इस से इतनी लोकप्रियता थोड़े ही मिलती कि चुनाव के लिए वोट बैंक तैयार हो.

आज देश में रहने वाला हर मुसलमान तमाम धार्मिक दंगों के बाद महसूस करता है कि उस की अपनी जिंदगी खतरे में है, न कि मजहब इसलाम खतरे में है. इस समय मुसलिम भय व आशंकाओं से ग्रस्त है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मंदिर मसजिद विवाद ने देश के तमाम मुसलमानों को परेशान कर रखा है. इन्हें इन बातों का खौफ है कि आज भारतीय जनता पार्टी और विश्व हिंदू परिषद मंदिर मसजिद विवाद के कारण तथा धार्मिक उन्माद फैला कर देश में एक नई राजनीतिक शक्ति बन कर उभरी है. अगर विवादित भूमि पर मंदिर का निर्माण हो गया तो इन की शक्ति इतनी अधिक बढ़ जाएगी कि ये भारतीय राजनीति पर हमेशा के लिए हावी हो जाएंगे तथा आने वाले दिनों में इन्हीं की सरकारें होंगी.

इन के शासन काल में वोट बैंकों को बरकरार रखने के लिए खुल कर हिंदू कार्डों का प्रयोग किया जाएगा. ऐसी परिस्थिति में मुसलिम हितों की रक्षा की कल्पना भी नहीं की जा सकती.

हिंदू राष्ट्र का खौफ

भारतीय मुसलमानों को खासतौर से एक बात परेशान किए है वह है हिंदूराष्ट्र. भारतीय जनता पार्टी सत्तासीन हो गई तो इस का पहला काम होगा भारत को हिंदू राष्ट्र घोषित करना. आज मुसलमानों को कुछ व्यक्तिगत मामलों में इन के धार्मिक उसूलों के आधार पर न्याय मिलता है. यह है 'मुसलिम पर्सनल ला.' हिंदू राष्ट्र में निश्चित ही यह 'पर्सनल ला' समाप्त हो जाएगा और स्वाभाविक रूप से यहां के कानून सरीअत के साथ छेड़छाड़ करेंगे, जिस से मुसलिम भावनाएं आहत होंगी.

मंदिर मसजिद विवाद के हल के लिए विभिन्न मुसलमानों की राय जानने के बाद इस की चर्चा करने के लिए मुसलमानों को तीन वर्गों में बांटा जा सकता है. पहला कट्टरपंथी मुसलमान वर्ग, दूसरा बुद्धिजीवी मुसलमान वर्ग, तीसरा आम मुसलमान.

आम मुसलमानों में मंदिर का हौआ खड़ा है. ये हर कीमत पर मसजिद को हासिल करना चाहते हैं. मसजिद के लिए करने मारने को तैयार हैं. परंतु ये इस के दूरगामी परिणामों से या तो अनभिज्ञ हैं या परवाह नहीं करते. साधारणतया ये जजबाती लोग हैं.

कट्टरपंथी वर्ग किसी भी कीमत पर मसजिद को जाने नहीं देना चाहता. इन का ऐसा सोच है कि अगर मसजिद हिंदुओं के हक में चली गई तो विश्व हिंदू परिषद एवं भारतीय जनता पार्टी का हौसला बुलंद होगा. कल ज्ञानवापी (वाराणसी) एवं मथुरा की मसजिदों पर धावा बोल कर उन्हें हासिल कर लेंगे. इस के बाद एक नए सिलसिले की शुरुआत हो जाएगी, मुसलमानों से उन की मसजिदें छीनने की. जहां कहीं भी हिंदू बाहुल्य क्षेत्र में मुसलमानों की इबादतगाहें होंगी, सांप्रदायिक हिंदू वहां के हिंदुओं को उकसा कर इबादतगाह हथियाने की कोशिश करेंगे.

इसलिए मुसलमानों का यह वर्ग चाहता है कि मसजिद विश्व हिंदू परिषद के हाथ न जाने पाए. भले ही सरकार इसे राष्ट्रीय स्मारक ही क्यों न घोषित कर दे. इस वर्ग का ऐसा विश्वास है कि साक्षियों के आधार पर हमारी जीत होगी. यह वर्ग अदालत के फैसले को मानने के लिए तैयार है.

बुद्धिजीवी वर्ग महसूस करने लगा है कि मसजिद को ले कर मारामारी करने से क्या फायदा. वह यह सोचता है कि अगर मसजिद मुसलमानों को सौंप दी गई तो बहुसंख्यक हिंदू उग्र हो जाएंगे और हिंसा पर उतारू हो जाएंगे. पूरा देश हिंदू मुसलिम हिंसा की आग में जल उठेगा.

अगर मसजिद हिंदुओं को दे दी गई तो मुसलमानों को सिवाय खामोशी की चादर ओढ़ लेने के दूसरा चारा नहीं रहेगा. इसलिए उन्हें यह पक्के तौर पर आश्वासन दे दिया जाए कि यदि मुसलमानों के अन्य धार्मिक स्थलों पर वे अधिकार नहीं चाहेंगे तो ये तीन बिंदुओं पर सुलह करने के लिए राजी हैं. पहला, मसजिद में मूर्ति रखी जा चुकी है. दूसरा, 40 वर्षों से वहां नमाज नहीं हुई, और तीसरा, नमाज और पूजा एक साथ संभव नहीं है." ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ये पति

अपने जन्मदिन पर मैं ने पति को घर जल्दी आने को कहा. लेकिन रोज की तरह वह उस दिन भी घर देर से आए. मैं गुस्से से गरम हो उन्हें अनापशनाप कहने लगी. उन्होंने बड़े शांत भाव से ठंडा खाना निकाला और मेरे सिर पर खाने की थाली रख दी.

मैं आगबबूला हो चिल्लाई, "यह क्या कर रहे हो?"

वह बोले, "खाना ठंडा हो गया है. गरम करने के लिए ईंधन की बचत कर रहा हूं." —लक्ष्मी हरिपाल सिंह

*

मेरी भाभी को कोई भी नई चीज खरीदने के बाद उसे अपनी सहेलियों को दिखाने की आदत थी. एक दिन उन की किसी सहेली का फोन आया. बातोंबातों में भाभी ने बताया कि वह कुछ नई साड़ियां खरीद कर लाई हैं.

सहेली ने पूछा, "कैसी हैं." तो वह आदतन बोलीं, "तुम चाहो तो मैं दिखा दूं." भैया जो पास ही बैठे थे, तपाक से बोले; "हां, हां, क्यों नहीं. तुम्हारी सहेली फोन पर साड़ियां अवश्य देख लेगी."—सुनील गुप्ता

*

मेरे जीजाजी बड़े हाजिरजवाब इनसान हैं. दीवाली पर जीजाजी दीदी और अपनी छोटी बेटी मुन्नी को हमारे घर छोड़ने आए और कह गए कि दोचार दिन बाद इन्हें लेने आ जाएंगे. लेकिन किसी कारणवश वह काफी दिनों तक नहीं आ पाए.

दीदी ने जीजाजी को फोन किया और कहने लगीं, "मुन्नी बहुत परेशान है, जल्दी आइए."

इस के जवाब में जीजाजी ने उधर से पूछा, "किस की मुन्नी, मेरी या मेरी सास की?" —मंजू सिंघल

*

मेरे पिताजी काफी मजाकिया और सादगीपसंद हैं. उन्हें अगर कहीं जाना होता है तो वह जिस हुलिए में बैठे होते हैं, जाने को तैयार हो जाते हैं. मां उन से हमेशा इस बात पर झगड़ती हैं.

एक बार हम नानी के यहां गए. मां हमारे पुराने फ्रिज के बारे में जो कि खराब हो गया था, कहने लगीं, "वह फटीचर तो था, पर आराम बहुत देता था."

इस पर पिताजी बोले, "बिलकुल मेरी तरह. मैं भी तो फटीचर हूं पर आराम बहुत देता हूं." —हिना सिद्दीकी

*

मेरे जीजाजी काफी मजाकिया हैं. एक दिन भोजन के बाद उन्होंने जबरदस्ती अपना पेट फुलाया और कहने लगे, "देखो, मैं ने कितना खाना खा लिया."

यह बात सुन दीदी बोली, "रहने दीजिए. इस से बड़ा पेट तो मैं बिना खाए फुला सकती हूं."

इस पर जीजाजी ने कहा, "इस में तो तुम औरतों को ही महारत हासिल है. हम मर्द यहीं तो मार खा जाते हैं."

—प्रकाश राव ●

इस स्तंभ के लिए अपने तथा अपने संबंधियों के अनुभव भेजिए. प्रत्येक प्रकाशित अनुभव पर 50 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. अपने अनुभव इस पते पर भेजें. संपादकीय विभाग, सरिता, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रातःपुरुष

कहानी ● कुमुद भटनागर

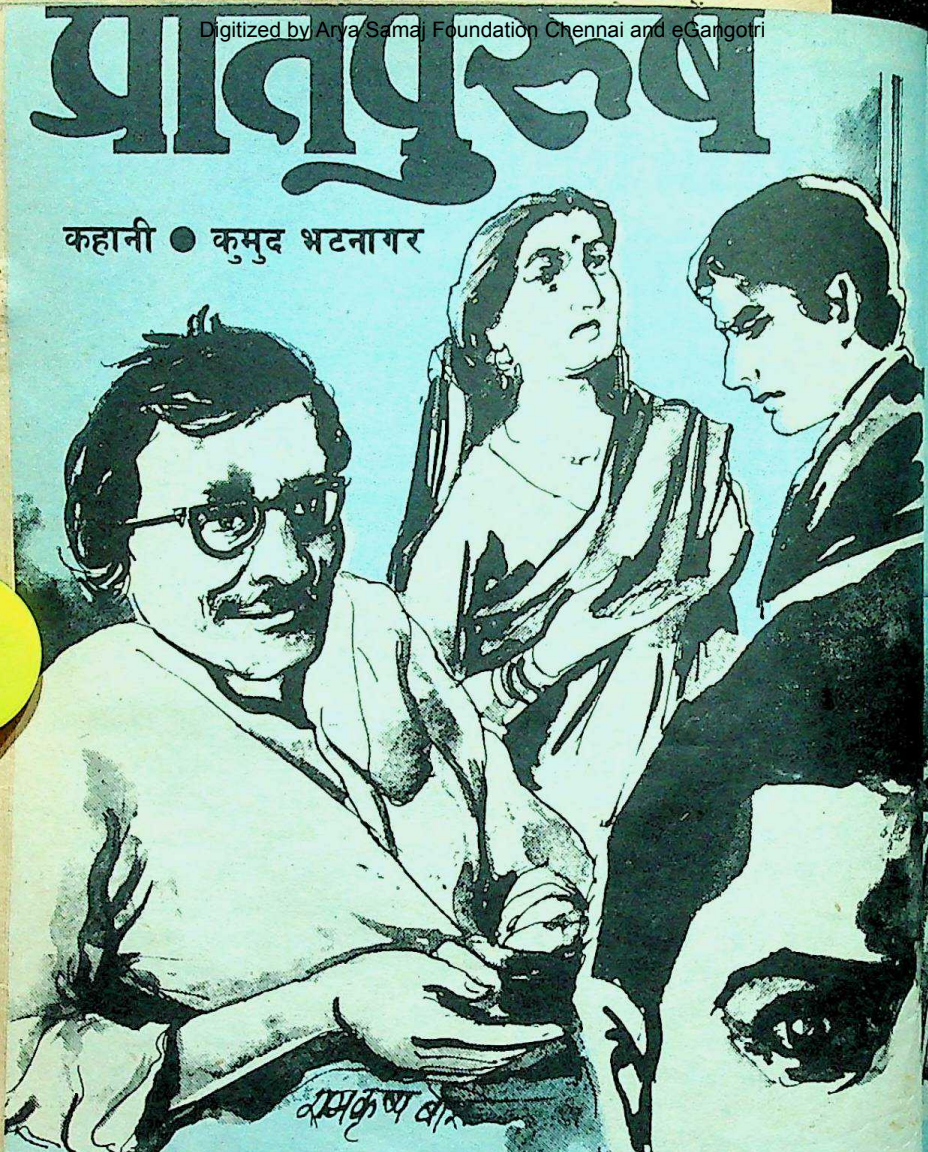

जब भी मां 'भगवान जाने' कहतीं, चंदन समझ जाता कि वह उसी के विषय में बात कर रही हैं. वह चुपचाप पिछले दरवाजे से जा कर बालकनी में खड़ा हो गया. उस का अंदाजा सही था, उसी की चर्चा हो रही थी.

पिताजी कह रहे थे, "तुम ठीक ही कह रही हो, न जाने यह लड़का चाहता क्या है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"चाहने के लिए है भी क्या?" मां ने झुंझलाए स्वर में पूछा.

"क्या नहीं है इस के पास? बढ़िया से बढ़िया कपड़े, जूते, घड़ी और अब तो नई मोटर साइकिल भी मिल गई है. और न जाने क्या चाहिए इसे? जब देखो, भन्नाया सा चिढ़ाचिढ़ा रहता है.

"सामने वाले सुमेरचंद का लड़का है न सुधीर, गिनेचुने कपड़े होंगे बेचारे के पास...साइकिल तक नहीं है. चप्पल फटफटाता घूमता है. मगर कैसे खिलाखिला रहता है, हमेशा हंसता मुसकराता..."

चंदन ने चीख कर कहना चाहा, 'सुधीर के गिनेचुने कपड़े या चप्पलें उस के अपने बाप के पैसों की और खुद के पसंद की होंगी, मेरी तरह छोटी बूआ की दिलवाई हुई नहीं. भले ही मेरे पास सब कुछ है, मगर क्या एक चीज भी मेरी अपनी पसंद की है? मैं तो यह भी नहीं जानता कि दुकान में जा कर पसंद कर के चीज कैसे खरीदते हैं.'

लेकिन उस ने चुप रहना ही उचित समझा. छोटी बूआ के सामने अगर पिताजी ने कह दिया, 'छोटी, तेरा लाड़ला कहता है कि उसे मालूम ही नहीं कि खरीदारी कैसे करते हैं,' तो छोटी बूआ हंसते हुए झट सौ का नोट उसे पकड़ा देंगी, 'ऐसी बात है तो ले भई, यह शौक भी पूरा कर ले.'

तब वह क्या छोटी बूआ को बता सकेगा कि उस का शौक कहां पूरा हो पाएगा? सारा समय तो इसी बात का खयाल

छोटी बूआ के कहने पर चंदन शेखर के दफ्तर गया तो जरूर लेकिन वहां उन की बात सुन कर वह अचकचा सा गया.

बूआजी और फूफाजी के एहसानों से दब कर चंदन ने अपनी आकांक्षाओं और अपेक्षाओं का बलिदान कर दिया था, लेकिन अपने बीमार भाई प्रकाश की सगाई का बूआ का फैसला सुन आखिरकार उस का मन विद्रोह कर ही उठा.

सरिता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होगा कि खरीदारी में रुपए ज्यादा न हो जाए. 10 रुपए भी ऊपर हो गए तो मां और पिताजी तो देने से रहे. वैसे होंगे ही नहीं उन के पास.

चंदन चुपचाप अंदर के कमरे में जा कर कपड़े बदलने लगा.

"खाना लगाऊं, चंदन?" मां ने पूछा.

"हां, मां."

खाने से चंदन को कोई शिकायत नहीं थी. खाना तो पिताजी की कमाई से मां बनाती थीं. उस पर तो चंदन का पूरा हक था. टीवी भी वह शौक से देखता क्योंकि वह भी पिताजी ने स्वयं ही किस्तों में खरीदा था. खाना खाते हुए और टीवी देखते हुए वह सहज होता और थोड़ाबहुत हंसबोल भी लेता. लेकिन टीवी देखते हुए हंसनेबोलने की फुरसत ही किसे होती है?

वैसे चंदन चिड़चिड़ा या बददिमाग नहीं था. उसे तो बस जिंदगी से शिकायत थी कि उसे पिताजी जैसे आकांक्षाहीन व्यक्ति के यहां क्यों पैदा किया? या पैदा कर भी दिया तो छोटी जैसी अमीर और ममतामयी महिला को उस की बूआ क्यों बनाया?

छोटी बूआ सचमुच रूपसी थीं. उन का अपूर्व रूपरंग देख कर ही शहर के जानेमाने शेयर दलाल सेठ मुल्कराज उस मध्यमवर्ग के परिवार की लड़की को अपने इकलौते बेटे शेखर के लिए ब्याह कर ले गए थे.

संपन्न घर में जाने के बावजूद भी बूआ अपने अभावग्रस्त मायके को भूली नहीं थीं और उन की भरपूर सहायता किया करती थीं. ससुराल में पैसे की कोई कमी नहीं थी और न ही किसी को यह पूछने की फुरसत कि वह पैसा कहां खर्च करती हैं.

चंदन के पिता महत्त्वाकांक्षी नहीं थे. जब से छोटी उन के परिवार के मनोरंजन और इसी किस्म की अतिरिक्त जरूरतों का खयाल रखने लगी थीं, वह अपनी जिम्मेदारियों के प्रति और भी उदासीन हो गए थे. वह जबतब 'छोटी, तेरी भाभी [illegible] देखने की जिद कर रही है' या 'फलां चीज की फरमाइश कर रही है' कहने से ही समस्या का हल हो जाता था. चंदन की मां को भी इस व्यवस्था से कुछ एतराज नहीं था. एतराज तो खैर चंदन को भी अभी कुछ अरसे पहले तक नहीं था.

जन्म से ही अपने से दो वर्ष पहले जन्मे प्रकाश के कपड़े वह पहन रहा था. उस के खिलौनों से खेलता रहा था. फिर बीचबीच में बूआ नए कपड़े और खिलौने भी दिलवाती रहती थीं. पढ़ाई में चंदन मेधावी था. प्रकाश से अच्छे अंक ही लाता था. लेकिन दोनों में कोई स्पर्धा नहीं थी, बल्कि प्रकाश उसे बढ़ावा ही देता था.

"अगर इंजीनियर बनना चाहता है तो और ज्यादा मेहनत कर. मुझे तो खैर, शेयर दलाल ही बनना है, सो मेरा काम तो सामान्य मेहनत करने से भी चल जाएगा." प्रकाश अकसर कहता.

12वीं में चंदन ने बहुत मेहनत की थी. अच्छे अंक आने की उम्मीद थी और वह इंजीनियरिंग के लिए कई विश्वविद्यालयों की प्रवेश परीक्षा की तैयारी कर रहा था.

तभी एक दिन छोटी बूआ आईं, "चंदन, तू कई रोज से आया नहीं, तेरे फूफाजी तुझे याद कर रहे थे."

चंदन चौंक पड़ा क्योंकि फूफाजी से तो उस की कभीकभार ही मुलाकात होती थी. लेकिन शेखर जब भी मिलता था, बड़े प्यार और अपनत्व से.

"जरूर आऊंगा, बूआजी." चंदन उत्साह से बोला.

"फूफाजी के दफ्तर ही चले जाना."

"अच्छी बात है, वहीं चला जाऊंगा."

जब से प्रकाश ने उसे अपनी नई मोटर साइकिल दी थी, चंदन को कहीं भी आनेजाने की सुविधा हो गई थी.

कुछ दिनों से प्रकाश की तबीयत में अजीब सी अस्थिरता, एक अजीब सा भटकाव आ गया था. कोई भी चीज लेता और दोचार रोज बाद उसे छोड़ देता. जिद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

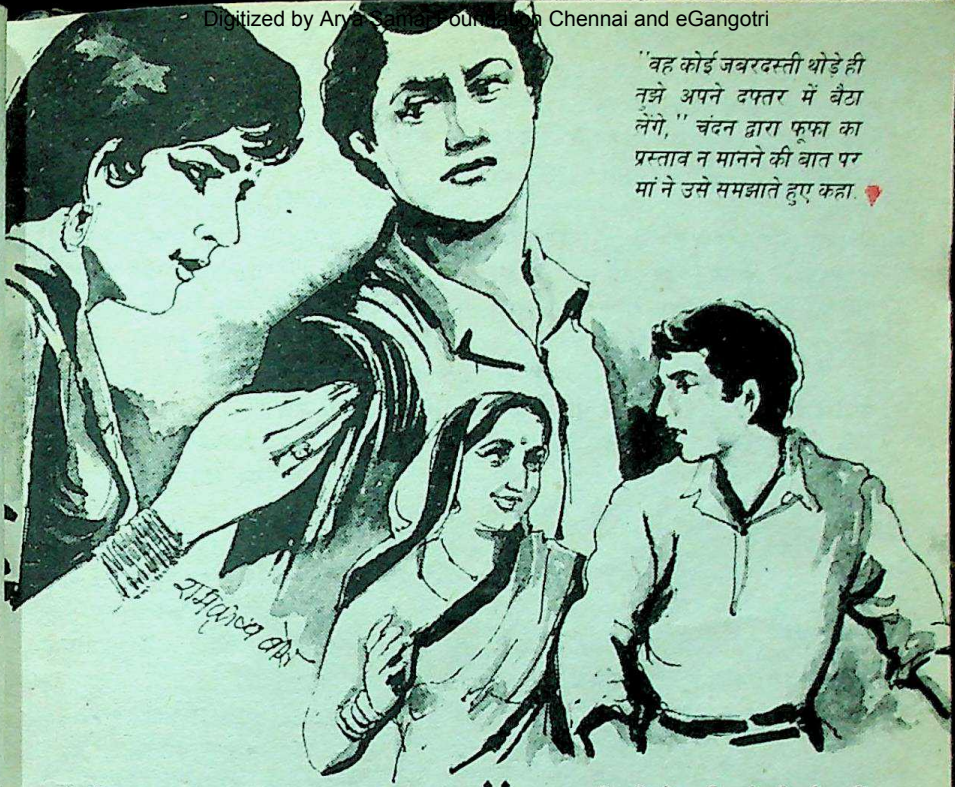

"वह कोई जबरदस्ती थोड़े ही तुझे अपने दफ्तर में बैठा लेंगे," चंदन द्वारा फूफा का प्रस्ताव न मानने की बात पर मां ने उसे समझाते हुए कहा.

कर के मोटर साइकिल ली और एक सप्ताह चलाने के बाद चंदन को दे दी, "तू चला यार, मेरा सिर दर्द करने लगता है, इस की रफ्तार और शोर से."

शेखर बहुत व्यस्त था. लेकिन चंदन को देखते ही उस ने अपने सहायक से कहा कि वह कुछ देर चंदन से एकांत में बात करना चाहेगा.

"और कहो चंदन, क्या चल रहा है आजकल?"

"रुड़की और आई. आई. टी. की प्रवेश परीक्षाओं की तैयारी कर रहा हूं, फूफाजी."

"अरे छोड़ो, बरखुरदार, किन बेकार के चक्करों में वक्त जाया कर रहे हो."

"मेरी तैयारी बड़ी जोरदार है, फूफाजी. मुझे पूरा भरोसा है कि मेरा दाखिला जरूर हो जाएगा." चंदन उत्साह से बोला.

"बात सिर्फ प्रवेश मिलने ही की नहीं है, चंदन. उस के बाद भी बहुत अड़चनें आएंगी. एक तो इंजीनियरिंग की पढ़ाई और किताबें बेहद महंगी हैं. खैर, उस समस्या का भी हल हो जाएगा, मगर उस के बाद नौकरी का क्या करोगे? आजकल तो तगड़ी सिफारिश का जमाना है और इस क्षेत्र में हम लोगों की कोई जानपहचान नहीं है." शेखर ने इस भाव से कहा, जैसे कह रहा हो कि हमारे सिवा तो तुम्हारा और कोई है नहीं.

"फिर?" चंदन ने शेखर की ओर प्रश्न उछाला.

"फिर क्या? इंजीनियरिंग वगैरह का चक्कर छोड़ो. गणित, वाणिज्य ले कर बी.ए. करो और मेरा हाथ बंटाओ यानी यह दफ्तर संभालो."

"जी." चंदन अचकचा गया.

"ऐसा है चंदन, प्रकाश यह पुश्तैनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धंधा अपनाना नहीं चाहता. सारा दिन दफ्तर में बैठने से उस का दम घुटता है. सो वह आयातनिर्यात का काम करना चाहता है, जिस में घूमना ज्यादा और दफ्तर में बैठने का काम कम है. वैसे आयातनिर्यात का काम भी बढ़िया है, लेकिन एक ही समस्या है," शेखर गहरी सांस ले कर बोला, "दशकों से जमाजमाया अपना शेयर का काम भी बंद नहीं कर सकता, इसलिए इसे तुम्हारे सिपुर्द करना चाहता हूं. बोलो संभालोगे?"

"आप चिंता मत कीजिए, फूफाजी, प्रकाश आजकल बड़ी अस्थिर मनःस्थिति में है. कुछ दिनों में जब ठीक हो जाएगा तो नया काम शुरू करने की जगह अपना पुश्तैनी काम ही संभाल लेगा." चंदन ने आश्वासन सा दिया.

"कोई बात नहीं," शेखर हंसा, "इस दफ्तर में तुम दोनों के लिए जगह और काम है. इंजीनियर बन कर जितना तुम एक साल में कमाओगे, उतना बस बी.ए. कर के यहां कुछ महीनों में कमाया करोगे."

"वह तो ठीक है, फूफाजी... लेकिन..."

"लेकिनवेकिन कुछ नहीं, बरखुरदार. बी.ए. करने तक भी रुकने की जरूरत नहीं है. जब भी पढ़ाई से फुरसत मिले, यहां चले आया करो, ताकि धीरेधीरे काम समझ कर उस में रुचि ले सको." इतना कह कर शेखर ने फाइल उठा ली, जिस का मतलब था कि मुलाकात का समय खत्म. फूफाजी ने अपना फैसला सुना दिया था और उसे वह मानना ही था.

चंदन कमरे से बाहर आ गया. शेखर का दफ्तर भव्य था, पर चंदन को कुछ आकर्षित नहीं कर सका. उस का मन एक अजीब वितृष्णा और विद्रोह से भर गया. माना कि बूआ और फूफाजी के उस पर बहुत एहसान थे, मगर उस का यह मतलब तो नहीं कि उन सब का बदला वह अपनी आकांक्षाओं, अपेक्षाओं का बलिदान कर के चुकाए?

चंदन को पूरी उम्मीद थी कि उस के पिताजी कभी नहीं चाहेंगे कि उन का बेटा इज्जतदार अफसर बनने की जगह मात्र शेयर दलाल बन कर रह जाए.

मगर पिताजी तो फूफा का प्रस्ताव सुन कर उछल पड़े, "अरे वाह, क्या बात है बेटे समझ ले, तेरी लाटरी खुल गई. 'मुल्कराज एंड कंपनी' जैसी साख किसी दूसरे शेयर दलाल की नहीं है इस शहर में. लाखों का व्यवसाय तुझे बैठेबिठाए मिल रहा है. और क्या चाहिए तुझे?"

"मुझे यह दलाली का धंधा नहीं करना, मैं इंजीनियर बनूंगा." चंदन दबे स्वर में बोला.

"मालूम है, जितनी तनख्वाह इंजीनियर को मिलती है, उस से ज्यादा शेखर पेट्रोल का बिल देता है हर महीने."

"देते होंगे. लेकिन मुझे इंजीनियर बनने का शौक है."

"शौक?" पिताजी व्यंग्यपूर्वक हंसे "शौक बड़े आदमियों के बेटे पालते हैं, हम जैसे मध्यमवर्ग के लोगों के बेटेबेटियां नहीं. फूफा के दिए सुनहरे मौके का फायदा उठा लो... फिर अपने बच्चों के शौक जरूर पूरा कर सकोगे."

पिताजी से बात करना बेकार था. उस ने मां से बात की, "मैं अगर फूफाजी का प्रस्ताव न मानूं तो?"

"तो क्या? वह कोई जबरदस्ती थोड़े ही तुझे अपने दफ्तर में बैठा लेंगे." मां संयत स्वर में बोलीं, "हां, इस के बाद उन से किसी किस्म की मदद लेने या मांगने का मुंह नहीं रहेगा. तेरे पिताजी तो तेरी इंजीनियरिंग की पढ़ाई का तो क्या, शायद कालिज की पढ़ाई का खर्चा भी न झेल पाएं." मां बेटे कहे ही बहुत कुछ कह गई थीं.

चंदन ने रुड़की और आई.आई.टी. की प्रवेश परीक्षाओं की तैयारी बंद कर दी और फूफा के दफ्तर जाने लगा. परीक्षा का परिणाम आने पर फूफा ने शहर के सब से बढ़िया वाणिज्य कालिज में उस का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

CLARION/BZP32/173 HIN

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसीलिए मैं उन्हें नियमित रूप से झंडु स्पेशल च्यवनप्राश देती हूँ. सचमुच यह स्पेशल है. शुद्ध हरा आँवला, पीपली, वंशसालोचन, कुंडकोल, लौंग, जावंत्री, इलायची और अकलकरा जैसी जड़ी-बूटियाँ. सब को शुद्ध देसी घी में बनाया गया है. मेरा बाज़ार का आना-जाना तो रोज़ ही लगा रहता है, मैं जानती हूँ कि अच्छी और उम्दा दर्जे की चीज़ें हमेशा कुछ महँगी ही मिलती हैं. फिर, जब क्वालिटी की बात हो तो हर कोई झंडु को जानता है और उस पर भरोसा करता है.

मैं, अपने बच्चों को झंडु स्पेशल च्यवनप्राश बारहों महीने देती हूँ. इसीलिए उनमें छोटी-मोटी बीमारियों का मुक़ाबला करने की शक्ति आ गई है. ख़ास तौर से खाँसी और जुकाम.

हाँ, थोड़ी सी परेशानी मुझे ज़रूर है. इसमें मिले तत्त्व इतने ताज़ा और शुद्ध हैं कि इसका स्वाद भी कमाल है. बच्चों का बस चले तो वे इसे दिनभर खाते रहें. हर दो-चार दिन बाद मुझे बोतल कहीं दूसरी जगह छिपाकर रखनी पड़ती है. क़ीमती है न!"

"बच्चों की पढ़ाई या सेहत का मामला हो तो मैं समझौता कभी नहीं करती..."

क़ीमती ही सही

झंडु स्पेशल च्यवनप्राश.

असली च्यवनप्राश

अब १ किलो के आकर्षक पॉलीजार में भी उपलब्ध.

CLARION/BZP/32/173 HIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दाखिला करवाया. छोटी बूआ ने सलाह दी कि मुझे प्रकाश की गृहस्थी संभालनी है के अनुरूप कपड़े, जूते दिलवाने शुरू कर दिए और जेबखर्च के लिए भी खुले पैसे देने लगीं, ताकि वह अभिजात्य वर्ग के लड़कों में उठबैठ सके. लेकिन चंदन फिर भी खुश नहीं था. उसे लगता था, इस सौदे में वह बुरी तरह ठगा गया है, बल्कि बिक गया है.

समय गुजरता गया, प्रकाश का आयातनिर्यात का काम खूब चल निकला. मां और पिताजी को पूरा विश्वास हो गया कि अब शेखर के कारोबार का एकछत्र उत्तराधिकारी चंदन ही होगा.

चंदन भी दलाली के गुर समझता जा रहा था और उसे उस में रुचि भी आने लगी थी. तभी प्रकाश अचानक बीमार पड़ गया. चंदन बी.ए. की परीक्षा दे चुका था और नियमित रूप से शेखर के साथ बैठने वाला था कि शेखर ने कहा, "प्रकाश को डाक्टर ने कुछ सप्ताह का आराम बताया है, सो तुम फिलहाल उस के काम की देखभाल करो. यहां तो मैं संभाल ही रहा हूं."

कठपुतली की तरह इधर से उधर भेजे जाने में चंदन बहुत तिलमिलाया, मगर करता भी क्या, लाचारी थी.

अनेक परीक्षणों के बाद पता चला कि प्रकाश के हृदय में एक विकार था, जिस की वजह से वह बेचैन और अस्थिर रहता था.

डाक्टरों ने कहा था, "हम चंद महीने इन्हें दवा दे कर देखेंगे, अगर उस से आराम न आया तो आपरेशन कर देंगे."

इस बीच अपनी कुशाग्र बुद्धि से चंदन ने प्रकाश के व्यापार को और भी बढ़ा दिया था. छोटी बूआ अकसर कहतीं, "यह आयातनिर्यात का काम भागदौड़ का है, इसे तो प्रकाश तू अब चंदन को ही सौंप दे और खुद दफ्तर की कुरसी पर बैठ."

"सुना है, प्रकाश के काम को तू ने खूब बढ़ा दिया है?" एक दिन मां ने पूछा.

"और भी बढ़ा सकता हूं, मां, और संभाल भी सकता हूं, मगर मुझे पता तो चले कि मुझे प्रकाश की गृहस्थी संभालनी है फूफाजी की. मेरा भविष्य इस तरह अधर कब तक लटकता रहेगा, मां? कब तक छोटी बूआ और फूफाजी के इशारों पर नाचना होगा?"

"क्या मालूम बेटा... शायद आजीव ही." मां धीरे से बोलीं.

धीरेधीरे प्रकाश की हालत सुधर लगी. प्रकाश काम पर जाना चाहत था, लेकिन छोटी बूआ जाने नहीं देत थीं.

"सोच रही हूं, प्रकाश की सगा कर दूं." एक दिन छोटी बूआ बोलीं, "घर खाली पड़ापड़ा ऊब जाता है. सगाई हो जाएगी तो उस लड़की से फोन पर बा करने से, घूमनेफिरने से इस का दिल लग रहेगा."

"वह तो ठीक है, छोटी बीबी, लेकि आपरेशन का फैसला हो जाता तभी शाद या सगाई की बात करतीं तो ठीक रहता.

"शादी तो खैर आपरेशन के बाद ज डाक्टर कहेंगे, तभी करेंगे. सगाई करने क्या हर्ज है?"

"और तो कुछ नहीं," मां हिचकिचा "बस, जरा आपरेशन के नाम से ही कलेज कांप जाता है."

"वह तो है, मगर भाभी, सगाई कर में क्या परेशानी है?"

"पराई लड़की की जिंदगी का सवा है, छोटी बीबी..."

"उस की फिक्र तुम क्यों करती हो मां. अगर छोटी बूआ प्रकाश की शादी करना चाहें तो कर सकती हैं क्योंकि उस की पत्नी विधवा नहीं रहेगी. उस को सधव बनाने के लिए छोटी बूआ के पास या 'प्रतिपुरुष' जो है. हां, उस से शादी करने बाद मैं विवाहित, विधुर या परित्यक्त कहलाऊंगा, यह मैं नहीं जानता." चंद व्यंग्यपूर्वक बोला, "और हो सकता है, मु आजन्म शादी ही न करने दी जाए क्योंकि जाने कब मुझे 'प्रतिपुरुष' बनना पड़े."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ZOOOOOOOOOOOM to the top with...

Ask for ZOOM by name

Zoom ballpens are available in 5 attractive colour combinations
New look ballpens for the young and the young at heart.

camlin – ZOOM, the write choice of today's generation.

APEX 445

पहला प्रभाव बेहद महत्त्वपूर्ण आखरी छाप उतनी ही.

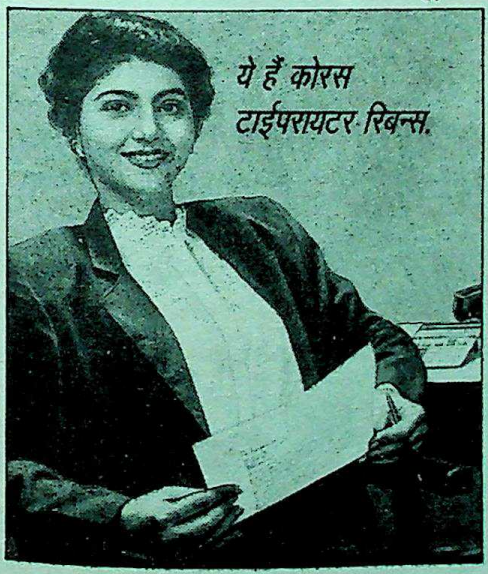

टाईप किया हुआ 200 वाँ पत्र उतना ही साफ़ और सुस्पष्ट होता है, जितना कि पहला.

वजह यह कि बार बार सुस्पष्ट, बिना धब्बे के छापे देने के लिये कोरस सुपर फाइन कॉटन फॅब्रिक तथा आधुनिक स्याही की तकनीक इस्तेमाल करते हैं.

हरेक जरूरत के लिये: पर्माक्लिन सिल्क, सुपरफाइन कॉटन, नायलॉन. आधुनिक ब्लिस्टर पॅक में. संस्थाओं के लिये कमाल बचत करनेवाले रोल्स में.

सभी स्टेशनरी स्टोर्स में उपलब्ध

कोरस (इंडिया) लि. बम्बई 400 018

AKA/454/Hin

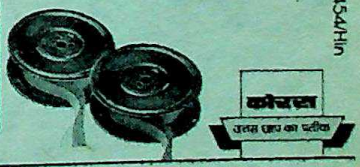

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महंगाई का फल

कहानी ● सुरेशचंद्र सिन्हा

सरिता, बीस साल पहले, मार्च (द्वितीय) 1971

पांचवीं पास कर के चुन्नू छठी में दाखिल हो गया. जब उस के पिताजी ने पास के हायर सेकंडरी स्कूल में उस का नाम लिखवाया तो वह फूला नहीं समाया. नए बस्ते में नईनई किताबें और नईनई कापियां ले कर जब वह स्कूल जाता तो उस के मन में बड़ीबड़ी बातें आतीं. 'खूब मन लगा

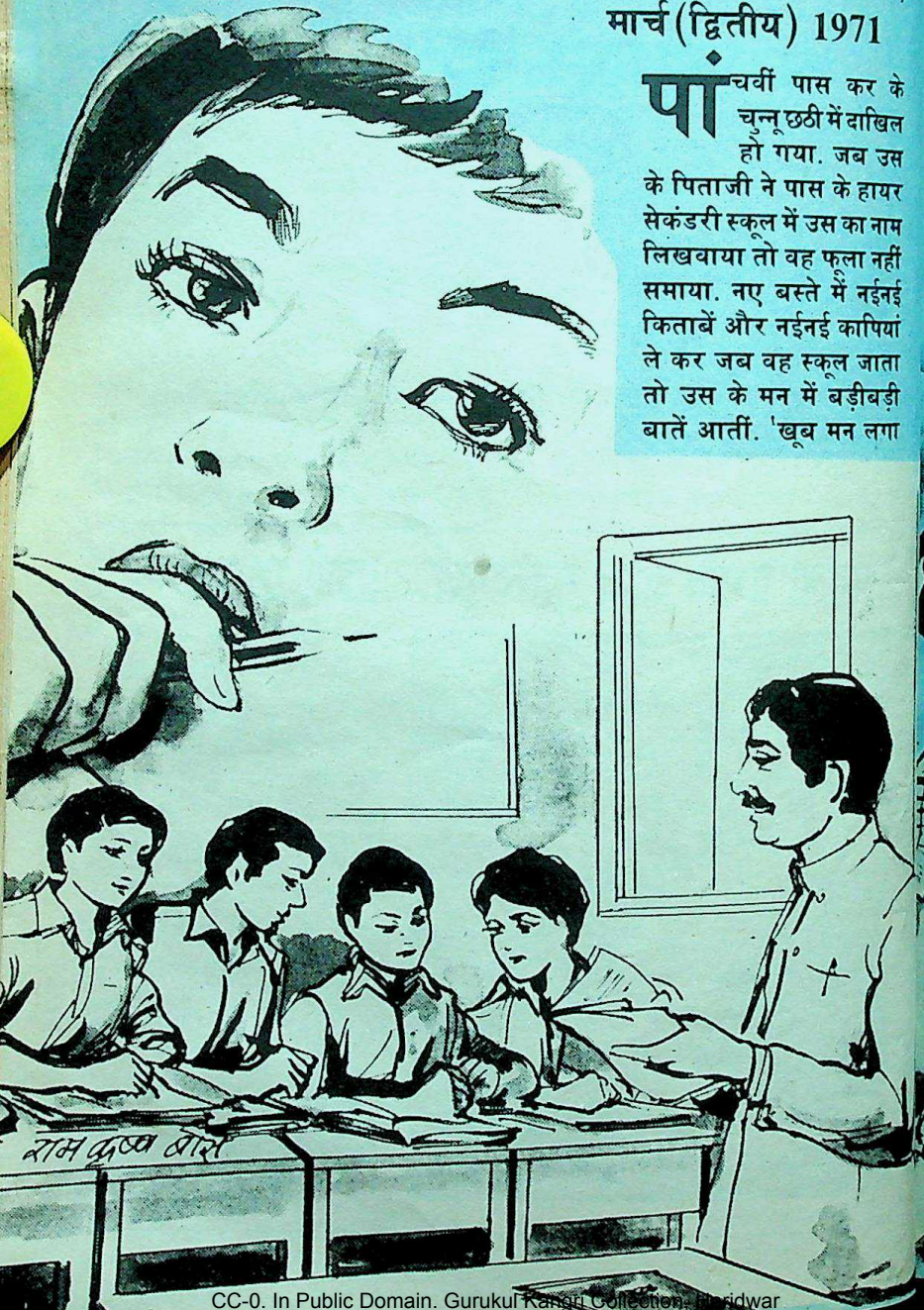

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर पढ़ूंगा, किताबों को बिलकुल गंदा नहीं करूंगा और कापियों पर खूब साफसाफ लिखूंगा.'

पर छोटी सी उमर और ढेर सारे विषय, कभीकभी उस का दिमाग चकरा जाता. दो विषय उसे बहुत कठिन लगते. एक तो गणित और दूसरा संस्कृत. और किसी विषय में उसे इतनी परेशानी नहीं होती.

गणित का पीरियड सब से पहले होता था जिस में हाजिरी बोली जाती थी. इस घंटे में जो लड़का हाजिर नहीं होता था उस पर जुर्माना हो जाता और देर से पहुंचने पर उसे पीछे के बेंच पर खड़ा कर दिया जाता.

एक दिन देर से आने के कारण चुन्नू को भी पीछे के बेंच पर खड़ा हो जाना पड़ा.

"क्या हुआ अगर फेल हो गए तो. तुम तो राजा बेटा हो और राजा बेटा कभी घबराया नहीं करता." मां ने चुन्नू को समझाते हुए कहा.

संस्कृत का विषय चुन्नू को बड़ा कठिन लगता. उस का घोटा लगाना भी उस के बस की बात नहीं थी और वह परीक्षा में फेल होता गया. उदास चुन्नू को उस की मां ने मेहनतकश मकड़ी की एक ऐसी कहानी सुनाई जिस से प्रेरणा पा कर वह आखिर अपनी मेहनत का फल पाने में सफल हो गया.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साथी लड़के उसे खड़े देख कर हंस रहे थे. उसे बहुत गुस्सा आया पर चुपचाप सिर नीचा किए खड़ा रहा.

तभी मास्टर साहब ने एक सवाल पूछा, "अगर एक नाव नदी को 15 मिनट में पार करती है तो तीन नावें उस नदी को कितनी देर में पार करेंगी?"

सभी लड़के सिर झुकाए बैठे रहे. किसी ने उत्तर नहीं दिया. क्लास एकदम शांत हो गई मानो क्लास में एक भी लड़का नहीं हो. मास्टर साहब की नजर घूमतीघूमती चुन्नू पर जा टिकी. वह बोले, "चुन्नू! तुम बताओ."

बेचारा चुन्नू चक्कर में फंस गया. घबराहट के मारे उस का चेहरा लाल हो गया. समझ में नहीं आया कि क्या जवाब दे. कुछ देर वह सोचता रहा. फिर खुजलाते हुए बोला, "सर, नदी की चौड़ाई कितनी है?"

अब तो मास्टर साहब चक्कर में आ गए, बोले, "नदी की चौड़ाई कितनी ही हो इस से प्रश्न में कोई अंतर नहीं पड़ता."

"तो फिर," चुन्नू बोला, "तीन क्या छः नावें भी हों तो समय में कोई अंतर नहीं पड़ेगा."

"वह कैसे?" मास्टर साहब ने फिर पूछा.

चुन्नू बोला, "सर! अगर आप क्लास में कोई प्रश्न हल करने के लिए देते हैं और उस प्रश्न को हल करने में 15 मिनट लगते हैं तो अगर क्लास के सारे के सारे 45 लड़के भी उस सवाल को हल करने में लग जाएं तो 15 मिनट से कम नहीं लगेंगे."

चुन्नू के जवाब से मास्टर साहब बहुत खुश हुए. उन्होंने कहा, "ठीक है, अब तुम बैठ जाओ."

उस दिन तो क्लास में उस की धाक जम गई. लेकिन गणित उसे पहाड़ जैसा लगता. अब जब गणित का घंटा टल जाता तो उसे लगता जैसे बहुत बड़ा खतरा टल गया हो. वह चैन की सांस लेता.

अंगरेजी, हिंदी, विज्ञान, इतिहास और भूगोल की बातें उसे बहुत ही मनोरंजक लगतीं. इन विषयों को वह खूब चाव से पढ़ता. लेकिन जब आखिरी सातवां घंटा संस्कृत का आता तो जैसे उसे बुखार चढ़ जाता. वह डरताडरता क्लास में घुसता.

पंडितजी कहते, "रटो, घोटा लगाओ." लेकिन ये रटने और घोटा लगाने वाली बात चुन्नू के बस से बाहर थी. नतीजा हुआ कि वह तिमाही परीक्षा में फेल हो गया. उसे बहुत दुख हुआ.

अब वह उदासउदास रहने लगा. उसे न खाना अच्छा लगता, न खेलना. उस के मातापिता ने भी उसे काफी समझायाबुझाया पर उस के मन में जो हीनभावना घर कर चुकी थी, वह नहीं निकली.

और वह छमाही परीक्षा में भी गोल हो गया.

अब वह क्लास के साथियों के बीच बैठने से कतराता तथा मास्टर साहब को देख कर शर्म से आंखें झुका लेता. घर में भी वह अधिकतर गुमसुम बैठा रहता. उस का नन्हा सा दिल टूट गया था.

एक शाम वह चुपचाप बाहर बरामदे में पैर लटकाए बैठा था. तभी उस की मां आ गई. उन्होंने पूछा, "क्यों चुन्नू, इस तरह अकेला क्यों बैठा है?"

वह कुछ बोला नहीं लेकिन उस की आंखों में आंसू भर आए.

मां ने देख लिया. वह जैसे सब कुछ समझ गईं. उन्होंने समझाते हुए कहा, "क्या हुआ अगर फेल हो गए तो? तुम तो एक राजा बेटा हो न और राजा बेटा कभी घबराया नहीं करते."

मां की बात सुन कर उसे लगा जैसे वह फफक कर रो देगा. वह मां से चिपक गया.

मां ने दुलारते हुए कहा, "चुन्नू! तुम ने अंगरेजी की वह कविता तो पढ़ी होगी जिस में एक मकड़ी छत पर बने अपने जाले से नीचे गिर पड़ती है?"

"ऊं... हूं..." चुन्नू ने आंसू पोंछते हुए कहा.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चुन्नू की मेहनत आखिर रंग लाई और वह कक्षा का सब से अच्छा लड़का बन गया.

"तो सुनो," मां ने कहानी शुरू की. "एक बार एक मकड़ी छत पर बने अपने जाले से जमीन पर गिर पड़ी. उसे बहुत जोर की चोट लगी. वह कुछ देर तक उदास बैठी रही. फिर उस ने नजर उठा कर अपने जाले की ओर देखा, जो बहुत दूर था. वह कुछ देर तक सोच में पड़ी रही कि वह इतनी दूर कैसे जाए? लेकिन फिर हिम्मत कर वह दीवार पर चढ़ने लगी. कुछ ही दूर गई होगी कि फिर गिर पड़ी. लेकिन इस बार वह सुस्ताई नहीं, उसी झोंक में दीवार पर चढ़ने लगी. पर कुछ और दूर जा कर गिर पड़ी. ऊपर चढ़ी फिर गिरी. चढ़ी फिर गिरी. वह परेशान हो गई लेकिन हिम्मत नहीं हारी और अंत में वह अपने जाले तक पहुंच गई."

न जाने क्यों, यह कहानी सुन कर चुन्नू को पहले तो हंसी आई और फिर जैसे उस का खोया हुआ विश्वास लौट आया.

उस ने घर पर पढ़ने का एक नियम बना लिया और उसी के अनुसार पढ़ने लगा. सुबह चार बजे उठता और बिछावन पर ही संस्कृत याद करने लगता. जो चीज उस की समझ में नहीं आती, उसे मां या पिताजी से पूछ लेता. गणित के कठिन प्रश्न जो उस से हल नहीं होते थे उसे वह स्कूल में मास्टर साहब से बेहिचक पूछ लेता. कुछ ही दिनों में गणित और संस्कृत जैसे कठिन विषय भी उस के लिए आसान हो गए.

और अब वह अपने क्लास का सब से अच्छा लड़का बन गया. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हम 21वीं, माफ कीजिए 16वीं शताब्दी में जा रहे हैं

पांच वर्ष पहले चारों ओर शोर था कि हमारा देश 21वीं शताब्दी में जाने की तैयारी कर रहा है. उस की तैयारियां शुरू भी हो गई थीं और कुछ का कहना था कि हम पहुंच भी गए हैं. परंतु पिछले दो वर्षों से इस के बारे में कुछ नहीं सुना तो हम ने सोचा कि इक्कीसवीं सदी में पहुंचने की तैयारियां शायद पूरी हो गई हैं लेकिन यह हमारा भ्रम ही था. वास्तव में वे तैयारियां अब पुनः प्रारंभ होने जा रही हैं, ऐसा कुछ लोगों का

व्यंग्य ● राजेंद्र अग्रवाल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

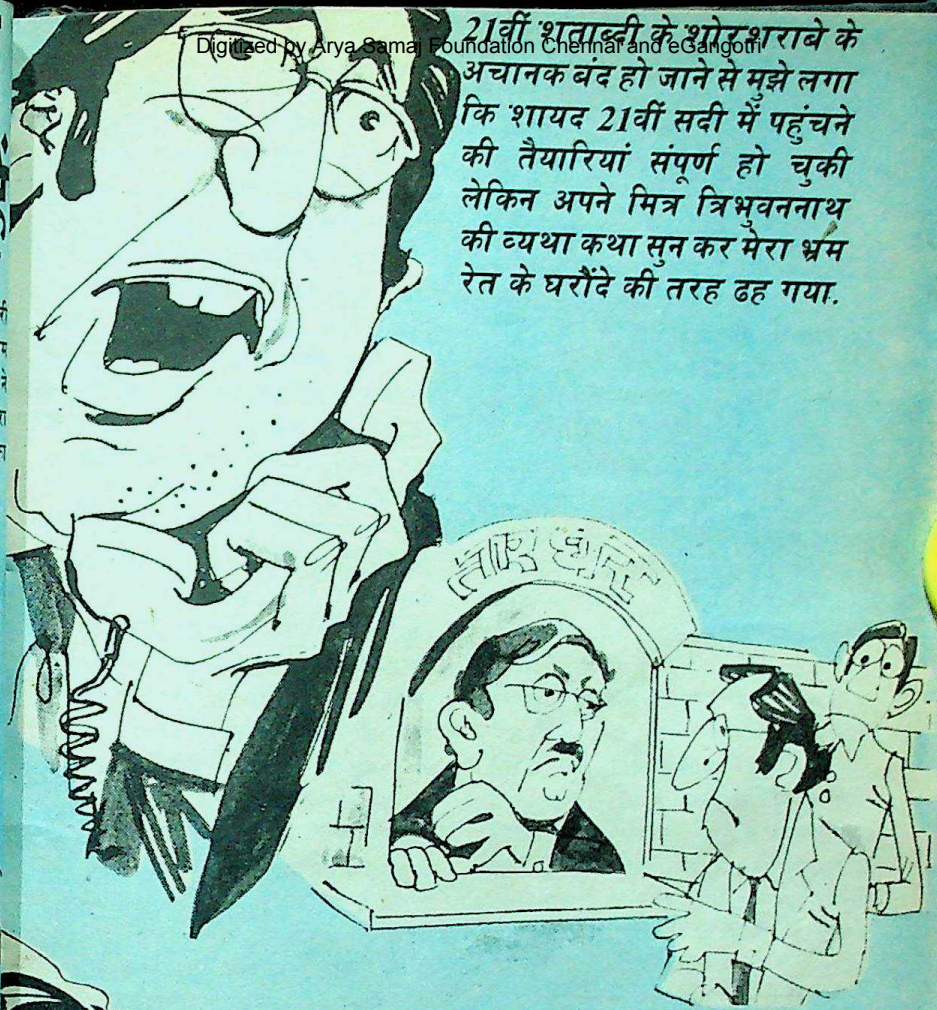

21वीं शताब्दी के शोरशराबे के अचानक बंद हो जाने से मुझे लगा कि शायद 21वीं सदी में पहुंचने की तैयारियां संपूर्ण हो चुकी लेकिन अपने मित्र त्रिभुवननाथ की व्यथा कथा सुन कर मेरा भ्रम रेत के घरौंदे की तरह ढह गया.

अनुमान है. इक्कीसवीं सदी में पहुंचने की कल्पना वैसी ही सुखद है, जैसे गरम हवा से उड़ने वाले गुब्बारे में बैठे व्यक्ति की.

हम इस पर विचार कर ही रहे थे कि हमारे पुराने मित्र त्रिभुवननाथ आ पहुंचे. वह बहुत दुखी और परेशान नजर आ रहे थे. पूछने पर जो व्यथा उन्होंने सुनाई, वह आप को भी सुना देते हैं.

त्रिभुवननाथ के एक स्वजन का स्थानांतरण उन के इच्छित स्थान पर हो गया था. उन्हें इस के लिए बहुत भागदौड़ करनी पड़ी थी और बड़ीबड़ी सिफारिशें करानी पड़ी थीं. अतः इस महत्त्वपूर्ण परिणाम की सूचना उन्हें अपने स्वजन को शीघ्र से शीघ्र देनी थी. वह त्रिभुवननाथ के शहर से 250 किलोमीटर दूर दूसरे नगर में रहते थे. सोचा कि चलो टेलीफोन कर दिया जाए. अतः ट्रंककाल 'बुक' कराने के लिए टेलीफोन किया तो एक्सचेंज में कोई टेलीफोन ही नहीं उठा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहा था. टेलीफोन एक्सचेंज के बड़े अधिकारी से संपर्क करने का प्रयास किया, किंतु यह भी विफल रहा.

जिस स्थान पर सूचना भिजवानी थी, वह एस.टी.डी. पर नहीं था. अतः यह शस्त्र भी बेकार हुआ. फिर सोचा, तार द्वारा ही सूचित कर दें. अतः तारघर पहुंचे. वहां खिड़की पर लंबी कतार न देख कर आश्चर्य हुआ. जब पूछताछ की तो पता लगा कि तार नहीं लिए जा रहे, 'क्यों नहीं लिए जा रहे?' यह तो किसी भी सरकारी कार्यालय में बताया ही नहीं जाता.

जब अक्तूबर के अंतिम सप्ताह में अचानक दूर से आनेजाने वाली रेलें बंद कर दी गईं तो भी इस का कारण कोई नहीं बताया गया.

त्रिभुवननाथ ने सोचा कि लगे हाथ टेलीफोन एक्सचेंज में भी व्यक्तिगत रूप से पता लगाया जाए कि सब ठीकठाक तो है और मौका लग जाए तो वहां से टेलीफोन भी कर लिया जाए. टेलीफोन एक्सचेंज जा कर ज्ञात हुआ कि आप देश के किसी भी भाग से टेलीफोन द्वारा संपर्क नहीं कर पाएंगे क्योंकि विभाग के कर्मचारी कामबंदी हड़ताल पर हैं. फिर विचार आया कि पत्र द्वारा यदि सूचित कर दिया जाए तो कैसा रहेगा. तुरंत ही पता लगा कि आजकल पत्र 10 से 15 दिनों में ही गंतव्य स्थान पर पहुंचता है. तब भी इस बात की गारंटी नहीं कि पत्र पाने वाले को मिल ही जाए.

यदि आप ने दो रुपए अधिक खर्च कर के यह सुनिश्चित कर भी लिया कि पत्र आप ने डाक विभाग को सौंप दिया है तो भी वह पाने वाले को मिल ही जाएगा, इस की जिम्मेदारी भी विभाग की नहीं है. किसी ने सुझाव दिया कि सात रुपए खर्च कर दीजिए, तब तो विभाग की जिम्मेदारी आ जाती है. तभी दूसरे साथी ने सावधान किया कि पत्र तब भी पाने वाले को ही मिले, यह आवश्यक नहीं है. उस पावती रसीद पर किसी के भी हस्ताक्षर होने चाहिए, बस विभाग की जिम्मेदारी पूरी हो जाती है.

बड़े असमंजस में पड़े हमारे मित्र.

सोचतेसोचते वह इस निष्कर्ष पर पहुं कि स्वयं ही जा कर यह सूचना आते हैं. जिस स्थान पर सूचना पहुंचानी वहां रेलवे स्टेशन नहीं था. अतः कुछ दू बस से तय करनी होती थी. बस की बात में आते ही उन के सामने समस्या आ गई पिछले सात दिनों से बसों की चक्का जा हड़ताल चल रही है.

फिर असमंजस की स्थिति आ ग किसी ने सुझाव दिया कि आप जहां तक रे जाती है, वहां तक तो रेल से चले जाएं औ आगे 30 किलोमीटर के टुकड़े को किसी ट्र या ट्रैक्टर पर बैठ कर पार कर लें.

त्रिभुवननाथ इसी परेशानी में मेरे पा आए थे कि इस कठिन समस्या का निवार कैसे हो, मैं ने चुटकी ली, "आप भी 3 किलोमीटर की 'पदयात्रा' कर लीजिए आजकल तो लोग 'पदयात्रा' से सर्वोच्च स्थान प्राप्त कर लेते हैं...आप यह छोटा स लक्ष्य भी नहीं पा सकते."

वह कहने लगे, "क्यों ठिठोली कर हो, यह काम तो बड़े लोगों का ही है, हम जै साधारण लोग तो यह सोच भी नहीं सकते.

हम सोचने लगे कि आजकल सा विश्व में भागमभाग मची है. लोगों का दाव है कि 24 घंटे में सारे संसार का चक्कर का कर आ सकते हैं. फिर हमारे मित्र बेचा 250 किलोमीटर तक जाना तो दूर रहा व संपर्क भी नहीं कर सकते. क्या हम सोलह सदी में जी रहे हैं? जब लोग तीर्थ यात्रा प निकलते थे तो परिवार वाले इस विश्वास उन्हें विदा करते थे कि पता नहीं वाप मिलना हो या नहीं. तब यदि वे लोग सकुश वापस आ जाते थे तो समारोह मनाया जा था.

ऐसा लगता है कि देश की गाड़ी उल 'गीयर' में चल गई है, जहां गीयर बदल समय वह 'रिवर्स' में लग गया है इक्कसवीं सदी के बजाय सोलहवीं शता में गाड़ी ले जा रहा है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिक्षा

छात्रों और अभिभावकों की पहली चिंता

बच्चों के उज्ज्वल भविष्य के लिए आवश्यक है अच्छी शिक्षा.

शिक्षा के विषय पर सही सलाह और सही दृष्टिकोण बनाने वाले लेख जो आप के विचारों को नई दिशा देंगे...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्कूल जाने से कतराता क्यों है आप का बच्चा?

लेख ● प्रभा शर्मा

अधिकतर बच्चे स्कूल जाने के नाम से ही रोने लगते हैं. यहां तक कि वह बच्चा भी जो घर से बाहर जाने का नाम सुनते ही प्रसन्न हो जाता है, स्कूल जाने की बात से ही रोने और मचलने लगता है. बच्चों के मन में स्कूल की छवि अत्यंत अनाकर्षक होती है. उन के लिए स्कूल वह स्थान नहीं जहां उन्हें किसी भी प्रकार की प्रसन्नता प्राप्त हो सके. यही कारण है कि प्रारंभ से ही बच्चा स्कूल जाने के नाम से कतराने लगता है.

आजकल जगहजगह छोटे नर्सरी विद्यालय दिखाई पड़ते हैं जहां ढाई से तीन वर्ष तक के बच्चे को दाखिला दिया जाता है. हर मातापिता की स्वाभाविक इच्छा होती है कि उन के बच्चे को अच्छी शिक्षा मिले. विख्यात स्कूलों में बच्चे को दाखिला मिलना इतना सहज नहीं है. यहां प्रवेश पाने के लिए न केवल बच्चे अपितु मातापिता को भी अनेक प्रकार की परीक्षा देनी पड़ती है. इन्हीं में सफलता प्राप्त करने के उद्देश्य से अभिभावक छोटी सी उम्र से ही बालक को उम्र से अधिक ज्ञान दे देना चाहते हैं तथा उन्हें तैयारी के लिए छोटेछोटे स्कूलों में भेजने लगते हैं.

बढ़ती उम्र के बच्चे अकसर उत्सुकतावश शैतानियां करते हैं. मातापिता उन की स्वाभाविक शैतानियों को उन की व्यवहारहीनता समझने लगते हैं. तीनचार साल के बच्चे से ही बड़ों जैसे व्यवहार की उम्मीद करने लगते हैं. परिणामतः उसे सभ्य बनाने तथा उस में व्यावहारिक गुण उत्पन्न करने के नाम पर स्कूल में दाखिला दिला दिया जाता है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाहर से शानदार व आकर्षक दिखाई देने वाले छोटेछोटे नर्सरी स्कूलों में अभिभावकों को आकर्षित करने के लिए अनेक साजसामान होते हैं. परंतु ढाईतीन साल के बच्चे के लिए वहां कोई आकर्षण नहीं होता है. वहां जो तरहतरह के मानसिक विकास में सहायक खेल उपलब्ध होते हैं वे भी केवल दिखावे के लिए सकलित होते हैं. बच्चों के अनुपात में उन की संख्या कम होने के कारण उन का लाभ अधिकांश स्कूलों में बच्चों को नहीं मिल पाता. जिस उम्र में बच्चा अपने

विद्यालय जाने के नाम से ही बच्चे के रोनेचिल्लाने से निश्चय ही आप परेशान हो जाती होंगी लेकिन चिंता की कोई बात नहीं. बच्चे की परेशानी का कारण जानिए और उस का निवारण कीजिए. तब आप का बच्चा विद्यालय जाने से नहीं कतराएगा.

मन की बात को भी ठीक प्रकार से बता नहीं पाता है उस उम्र में उस के नन्हेनन्हे हाथों में कापीपेंसिल पकड़ा दी जाती है.

बच्चे का नैसर्गिक विकास यहां पहुंचते ही अवरुद्ध हो जाता है. अनजाने माहौल में बच्चा वैसे ही सहमा रहता है. वह अध्यापिका से अपने मन की बात तक कहने में कतराता है. परिणामस्वरूप बचपन से ही उस के स्वभाव में अनेक विषमताएं जन्म ले लेती हैं.

भागना, दौड़ना, चिल्लाना, हर वस्तु के विषय में पूछना, हर वस्तु को छूना बालक का स्वभाव है. हर बालक इस विकास की प्रक्रिया से गुजरता है. इस अवधि में अनुशासन के नाम पर बच्चे को स्कूल में मौन बैठा दिया जाएगा या ज्ञान के नाम पर उसे अक्षर माला सिखानी प्रारंभ कर दी जाएगी तो उस की उत्सुकता वहीं दम तोड़ देगी. उस की जिज्ञासा शांत नहीं होती तथा उसे व्यक्तिगत तौर पर जितनी जानकारी किसी भी बड़े से मिलनी चाहिए वह स्कूल जाने से नहीं मिल पाती, इसी लिए विरोधस्वरूप बच्चा घर आ कर भी सहज नहीं रहता. प्रतिक्रिया यह होती है कि वह बहाने ढूंढ़ कर जिद करने लगता है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आजकल प्रतियोगिता का दौर है. न केवल अच्छी नौकरी पाने के लिए वरन अच्छे स्कूलों में दाखिला पाने के लिए भी बालकों को प्रतियोगिता से गुजरना पड़ता है. यही कारण है कि शहरों में ही नहीं कसबों में भी अंगरेजी माध्यम विद्यालयों के प्रति अभिभावकों का झुकाव बढ़ रहा है. बच्चा जिस उम्र में अपनी मातृभाषा में भी अपने मन की बात सही तौर पर व्यक्त नहीं कर पाता उस उम्र में उसे न केवल घर वरन छोटेछोटे विद्यालयों में भी अंगरेजी बोलने, सुनने को मजबूर किया जाता है. बड़े बच्चे तो भविष्य व आधुनिकता की मांग को समझ कर उन परिस्थितियों से समझौता कर सकते हैं पर तीनचार साल के बच्चे से इस सब की उम्मीद करना कठिन है. इसी दबाव से बच्चा मानसिक कुंठाओं का शिकार होने लगता है तथा शिक्षा के प्रति उस के मन में कोई आकर्षण नहीं रहता.

व्यावहारिक शिक्षा

तीनचार साल की उम्र से ही बालक की व्यावहारिक शिक्षा आरंभ की जा सकती है. परंतु यह शिक्षा खेल व कहानियों के माध्यम से होनी चाहिए. यह शिक्षा पूरी तरह मौखिक होनी चाहिए. बच्चे पर शिक्षा को लादना ठीक नहीं. इस से उस का मानसिक विकास ठीक प्रकार से नहीं हो पाता.

स्कूल में बच्चे को जब तक अपनी स्वाभाविक प्रवृत्ति के अनुरूप माहौल नहीं मिलेगा, वह स्कूल के प्रति आकर्षित नहीं होगा. जब तक उस के मन में आकर्षण नहीं जगेगा वह ठीक प्रकार से कोई भी ज्ञानार्जन नहीं कर सकता. बालक मन उन सब अभावों को अनुभव करता है, केवल अभिव्यक्ति के अभाव में कुछ बता नहीं पाता. ऐसी स्थिति में कुछ चारा न पा कर वह स्कूल जाने के नाम से ही रोने व न जाने की जिद करने लगता है. ऐसी स्थिति में यदि उसे वहां छोड़ भी आया जाए तो वहां भी रोना जारी रखता है. खानापीना कम कर देता है. चारपांच घंटों में बच्चा जहां घर में काफी कुछ खा लेता है वह कठिन मानसिक तनाव से गुजरने के कारण स्कूल के चारपांच घंटों में कुछ भी नहीं खाता. अपना खाना घर वापस ले आता है. समय के साथसाथ कमजोर व चिड़चिड़ा होने लगता है.

ऐसी स्थिति में मातापिता को चाहिए कि वे बालक को जबरदस्ती स्कूल न भेजें उस की इच्छाओं को समझें, उस से उस के स्कूल के बारे में जितना हो सके बातें करें उस की स्कूल के प्रति अनिच्छा का कारण जानें. संभव हो तो उस के मन में विद्यालय के प्रति आकर्षण जगाएं तथा बिना किसी खास कारण के बहुत छोटी आयु के बच्चे को स्कूल न भेजें.

आजकल कामकाजी महिलाएं अपने जीवन में अत्यधिक व्यस्त होने के कारण दोढ़ाई साल के बच्चे को ही छोटेछोटे स्कूलों में भेजने लगती हैं. यह उन के लिए तो सुविधाजनक है पर बच्चे का बचपन उस से छीन कर आप उस के प्रति कितना न्याय कर रहे हैं यह विचारणीय है.

शिक्षा का स्तर

सभी विद्यालयों में शिक्षा का स्तर समान रखने की दिशा में भी समुचित प्रयास होना चाहिए ताकि बालकों को विद्यालयों में प्रवेश पाने के लिए संघर्ष न करना पड़े. यदि सभी विद्यालयों में शिक्षा का स्तर समान होगा तो अभिभावक भी तीनचार साल के छोटे से बच्चे पर आवश्यकता से अधिक ज्ञान थोपने का प्रयत्न नहीं करेंगे.

आज शिक्षा का स्तर दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है. कुछ वर्षों पूर्व जो अंक अच्छे समझे जाते थे उन्हीं अंकों को आज निम्न समझा जाता है. यदि शिक्षा नीति में कुछ परिवर्तन आए तो शिक्षा बालकों पर बोझ नहीं बनेगी.

आज की शिक्षा प्रणाली में पहली कक्षा में पढ़ने वाले छात्र को जहां अपनी मातृभाषा के अलावा अन्य भाषा भी सीखनी होती है वहीं उसे अन्य भाषा के माध्यम से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

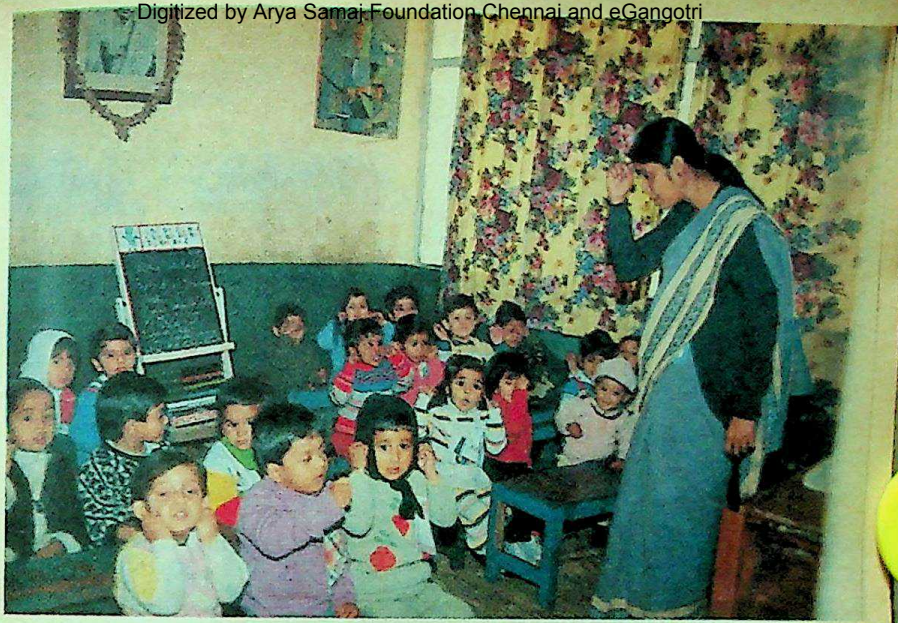

शिक्षिकाओं को बच्चों की जिज्ञासा को शांत करना चाहिए ताकि शिक्षा के प्रति उन का आकर्षण बढ़ सके.

विषयों का ज्ञान कराना कितना तर्कसंगत है यह विचारणीय है. जिस अंगरेजी भाषा को उस स्तर पर बच्चा ठीक प्रकार से समझ भी नहीं पाता उस के माध्यम से दिए जाने वाले ज्ञान को वह कितना ग्रहण करता होगा इस का सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है. यही कारण है कि बच्चे की शिक्षा में कोई रुचि उत्पन्न नहीं होती और वह विद्यालय जाना ही नहीं चाहता.

प्रारंभिक शिक्षा मातृभाषा के माध्यम से हो यह अत्यंत आवश्यक है, तभी बच्चा सहज ज्ञान प्राप्त कर सकेगा. भाषा उस के ज्ञानार्जन में आड़े नहीं आएगी. ऐसे में शिक्षा बालक के लिए बोझिल नहीं होगी.

परीक्षा प्रणाली के कारण भी बालक पर शिक्षा का तनाव बना रहता है. प्रगति के इस दौर में हर अभिभावक की आकांक्षा होती है कि उस का बच्चा अत्यधिक अंक प्राप्त करे. इसी कारण जहां स्कूल में अध्यापक बालक पर ज्ञान थोपने में लगे रहते हैं वहीं मातापिता बच्चे को रटने पर मजबूर करते हैं.

आज स्थिति यह है कि पहली, दूसरी कक्षा में पढ़ने वाले छःसात साल के बच्चे को भी खेलने का वक्त नहीं मिल पाता. इस दौड़ से हम क्या हासिल करेंगे यह विचारणीय है. हम अपनी भावी पीढ़ी को बचपन से ही तनाव क्यों दे रहे हैं? इस प्रश्न पर न केवल अभिभावकों अपितु नीति निर्धारकों को भी सोचना चाहिए.

अभिभावकों को चाहिए कि वे बालक की रुचि व रुझान को समझें. उस की भावनाओं का आदर करें. उस की क्षमताओं को पहचानें ताकि उन का सही मार्गदर्शन कर सकें. छोटी उम्र में बच्चे को ऐसे स्कूल में दाखिल कराएं जहां उस का सहज विकास हो सके. जहां बालक को उस की आरंभिक शिक्षा खेल, कथा तथा मौखिक रूप से दी जाती हो. जहां शिक्षा के अलावा अन्य रोचक मनोरंजक गतिविधियों पर बल दिया जाता हो ताकि बच्चा स्कूल जाने को लालायित रहे. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

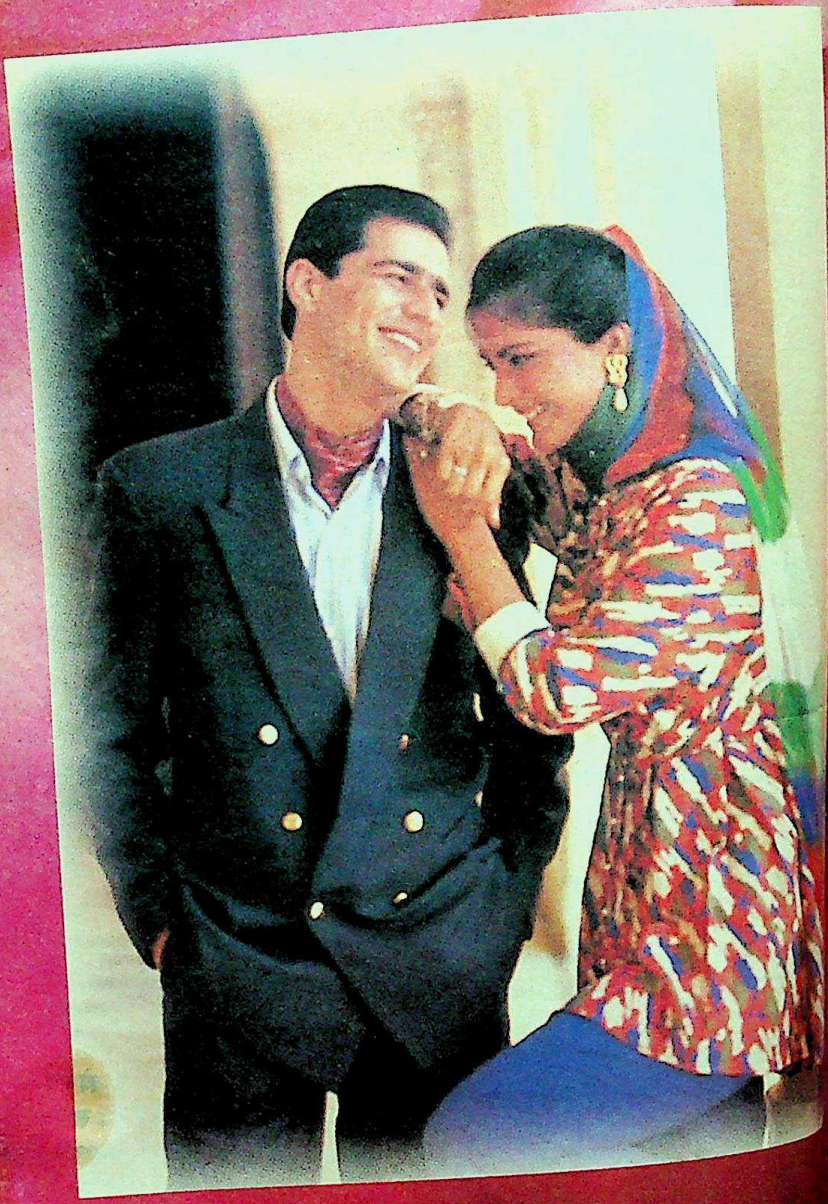

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंदाज़ हो तो
जे सी टी

JCT FABRICS

ublic Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बस्ते का बोझ ही नहीं और भी समस्याएं हैं नन्हेमुन्नों की

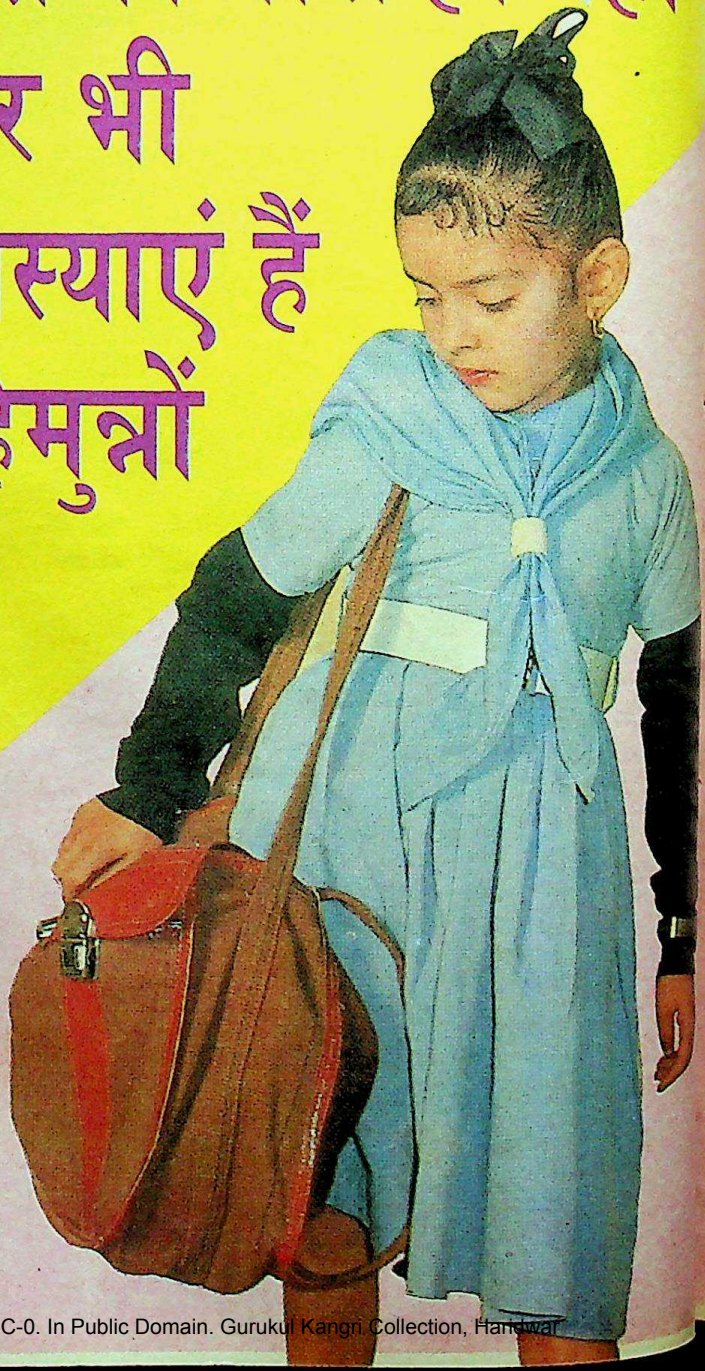

लेख ● अनिता होलानी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[illegible] स्कूल भेजने की अभिभावक की चाह उस की अपरिपक्व उम्र पर भारीभरकम बस्ते का ऐसा बोझ डाल देती है जो उस के लिए शारीरिक एवं मानसिक रूप से भी कष्टदायक होती है. अभिभावकों को चाहिए कि वे नन्हेमुन्नों की भी समस्याओं को समझें और उन के निराकरण के लिए स्वयं कदम उठाएं.

आजकल सभी अभिभावक पढ़ाई के बोझ तले अपने बच्चों को दबता देख बड़े चिंतित हैं. उन्हें लगता है कि उन के बच्चों का बचपन छीना जा रहा है. पर क्या यह भी सच नहीं कि आज अभिभावक की आकांक्षाएं बढ़ गई हैं. वे अपने बच्चों को जल्द से जल्द होनहार और सफल व्यक्ति के रूप में देखना चाहते हैं. तीन साल की आयु के बाद एक दिन भी बच्चे को घर में बिठाए रखने में वे डरते हैं कि कहीं हमारा बच्चा एक विशेष उम्र के पड़ाव पर अपनी ही उम्र के दूसरे बच्चों से योग्यता में पीछे न रह जाए. अतः दाखिले के समय दोचार महीने कमज्यादा होने पर भी जन्मतिथि बदलवा कर बच्चे को स्कूल में दाखिल करा ही दिया जाता है.

बच्चों के हाथ से दूध भरी बोतल तो छूटती नहीं कि कंधों पर पुस्तकों से भरा बस्ता लद जाता है. सभी माताएं चाहती हैं कि उन का बच्चा पढ़ाई में अव्वल रहे. प्रारंभिक शिक्षा के दौर में भी आजकल की साप्ताहिक और मासिक परीक्षाएं तो नन्हेमुन्नों की नींद ही हराम कर देती हैं.

नन्हों को खुद तो कोई होश रहता नहीं पर उन की मांएं उन्हें सवेरे पांच बजे ही उठा देती हैं, "बेटा उठो, जल्दी से उठ कर थोड़ा पढ़ लो. तुम्हारा इम्तिहान है न?" बच्चा इतनी सुबह 'हां हूं' करता करवट बदल लेता है. कुछ क्षण और निकले नहीं कि बच्चे की मां नाराज हो जाती है, "अब उठो भी, नहीं तो जांच परीक्षा में फेल हो जाओगे. पढ़ोगेलिखोगे नहीं तो क्या मजदूर बनना है." बेचारा बच्चा अपने भविष्य के प्रति चिंतित हो उठने को मजबूर हो जाता है. तीन साल की उम्र से शुरू यह चिंता का सिलसिला आजीवन उस का पीछा करता रहता है.

इस के विपरीत कुछ मातापिता ऐसे होते हैं जो स्कूल में अपने बच्चे को दाखिल सिर्फ आनाजाना सीखने के लिए कराते हैं. जब बच्चा कुछकुछ सीखने लगता हैं तो उन्हें लगता है कि कुछ और सीख जाए तो पास हो कर अगली कक्षा में चला जाएगा, क्यों एक साल व्यर्थ ही बरबाद हो. सो वे अपने बच्चों को जबरदस्ती बैठा कर पढ़ाने लगते हैं.

उपर्युक्त दोनों बातों में समानता यह है कि मातापिता अपने बच्चों को जल्द से जल्द स्कूल में दाखिल कराना चाहते हैं, कुछ आनाजाना सिखाने के लिए तो कुछ लिखनापढ़ना सिखाने के लिए. हां एक बात है, कहता तो कोई नहीं है पर चाहते सब हैं कि हमें हमारे लिए भी काफी वक्त मिले.

चलिए हमारे यहां पुरुष को तो अनिवार्यतः कमाने के लिए जाना ही होता है. अतः उस के लिए बच्चों को दिनभर संभालने की नौबत नहीं आती, पर अब बदलते परिवेश में जब स्त्री भी अपना अस्तित्व बनाना चाहती है तो उसे भी बच्चों से अलग कुछ वक्त चाहिए. अतः बच्चों को स्कूल में डाल कर कम से कम चारपांच घंटे तो उन से छुट्टी पाई जा सकती है, अन्यथा बच्चों के घर रहते हुए तो उन की तोड़ाफोड़ी, पकड़धकड़ और कभी मासूम और कभी बचकाने सवालों का जवाब देते रहो.

यानी कुल मिला कर बात यह रही कि अभिभावक तीन साल की उम्र के बाद बच्चे को घर में बैठने नहीं देते और प्रचलित शिक्षा पद्धति का पाठ्यक्रम उन्हें उठने नहीं देता. कितना भी पढ़ोपढ़ाओ बच्चे का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठ्यक्रम पूरा ही नहीं होता. मतलब, आज के बच्चे पर उस की सामर्थ्य से अधिक मानसिक और शारीरिक बोझ डाल दिया गया है.

कुछ बच्चे तो इस तीन साल की उम्र में भी यह बोझ बखूबी खींच लेते हैं पर कुछ इस बोझ तले खुद ही दब जाते हैं. ऐसे बच्चे जिन के लिए पढ़ाई का यह बोझ कष्टदायक होता है, स्कूल जाने में आनाकानी करते हैं. कई बच्चों को इस नन्ही सी उम्र में न तो ठीक से बोलना आता है और न उन्हें टट्टीपेशाब का ही होश रहता है. ऐसे में हकला कर बोलने पर या कपड़े खराब होने पर उन्हें अपने साथियों के उपहास का पात्र होना पड़ता है, जिस से वे स्कूल जाने में कतराने लगते हैं. जोर दिए जाने पर कभी वे सुस्त पड़ जाते हैं और कभीकभी तो बीमार ही पड़ जाते हैं.

आजकल के बच्चे ज्यादा चिड़चिड़े व भयग्रस्त दिखते हैं. मनोवैज्ञानिकों का कहना है कि शारीरिक और मानसिक बोझ ही इस का मूल कारण है. उन का कहना है कि बच्चों की शारीरिक और मानसिक क्षमता तथा आयु के अनुसार उन की परिपक्वता को समझ कर ही उन्हें स्कूल भेजना चाहिए. छोटी सी उम्र में पढ़ाई व प्रतियोगिता के लिए उन्हें तैयार करने में हमारा अति उत्साह उन्हें निरुत्साहित व उदासीन भी कर सकता है. इन सब सोचविचार के बीच यह सवाल उलझा रह जाता है कि बच्चों को स्कूल कब भेजा जाए?

गुरुकुल के जमाने की बात तो खैर छोड़ दें जब सातआठ वर्ष के बालक को तब तक के लिए गुरु के सिपुर्द कर दिया जाता था जब तक की उस की शिक्षा पूरी न हो जाए, वह तो खैर अब संभव नहीं. स्वस्थ खुली जगह मिलती ही कहां है. पर हां, पीछे मुड़ कर तीनचार दशक पहले के तौरतरीकों को देखें तो कह सकते हैं कि उस समय एक अलिखित सा नियम था कि बच्चा पांच वर्ष का होने के पश्चात ही विद्यालय में प्रवेश करे.

उस समय ये नर्सरी, के.जी. और प्रेप जैसे झंझट भी नहीं थे. सीधे कक्षा एक से दाखिला शुरू होता था. इन पांच सालों बच्चा घर पर ही अपने दादादादी, नानान के साथ बैठ कर जानेअनजाने कोई कवि श्लोक, कहानी कंठस्थ कर लेता. उच्चा स्वतः ही साफ हो जाता. दादीनानी कहानियां सुन कर उस का शिक्षण प्रा होता.

मानसिक व शारीरिक विकास

कभी बच्चा पानी पर लकीर खींच कभी बालू का घर बनाता, कभी पेड़ प चढ़ता तो कभी तालाब में डुब लगाता. कभी गाय को चारा खिलाता कभी फूल तोड़ लाता. इन सब गतिविधि के दौरान स्वतः ही उस का मानसिक शारीरिक विकास सहज हो जाता.

वैसे आज का बच्चा पहले की अपे अधिक चतुर व समझदार दिखाई देता इस का सीधा सा कारण है उस वातावरण, उस का माहौल. आज के नन को पाठ्यक्रम के अलावा संचार माध्यम जै टीवी, रेडियो, टेलीफोन और बाहर निकल के लिए वाहन सुविधा का उपलब्ध होना. सुविधाओं के रहते बच्चों को आज विभि विषयों के संपर्क में आने का भरपूर मौ मिलता है. इस से उन का सामान्य ज्ञान पह की पीढ़ियों के बच्चों से बेहतर होना आश्चर्य की बात नहीं.

लेकिन खेलखेल में हंसते, गाते कु सीख लेना दूसरी बात है और कक्षा अनिवार्य रूप से सजा के डर से कुछ सीख की कोशिश करना अलग बात है. इ अनिवार्य रूप से सीखनेसिखाने के कारण आज अनेक बच्चे कुंठाग्रस्त पाए जाते हैं

नीले अंबर के नीचे, हरी दूब के ऊप सूरज की सुनहरी किरणों से बच्चे न ज क्याक्या सीख सकते हैं. चिंतक औ अन्वेषक भी हो सकते हैं, पर अगर हम उ समयसारणी के बंधन में बांध कर विशे विषय ही पढ़ाना चाहेंगे तो विद्यार्थी औ गुरु दोनों ही असफल होंगे. इसलि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नया हेयर एंड केयर ज़ोरदार डबल रोल में

नया हेयर एंड केयर, जो डबल रोल निभाए, दोहरे फ़ायदे पहुंचाए. पहले रोल में : इसका विटामिन युक्त खास फ़ॉर्मूला बालों की जड़ों में समाकर उन्हें पूरा पोषण दे. दूसरे रोल में : ये बालों को सजे-संवरे बनाए और इसकी भीनी-भीनी महक हर कहीं आपकी रौनक़ बढ़ाए. अनब्रेकेबल पैक में.

एक तीर दो शिकार... सिर्फ़ स्टाईल नहीं, पोषण भी.

पॅराशुट और सफ़ोला के निर्माता मेरिको का एक उत्कृष्ट उत्पादन

नया
MARICO'S
HAIR & CARE
NOURISHING
NON-STICKY HAIR OIL

LINTAS MIL HC G 143 1118 HI

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

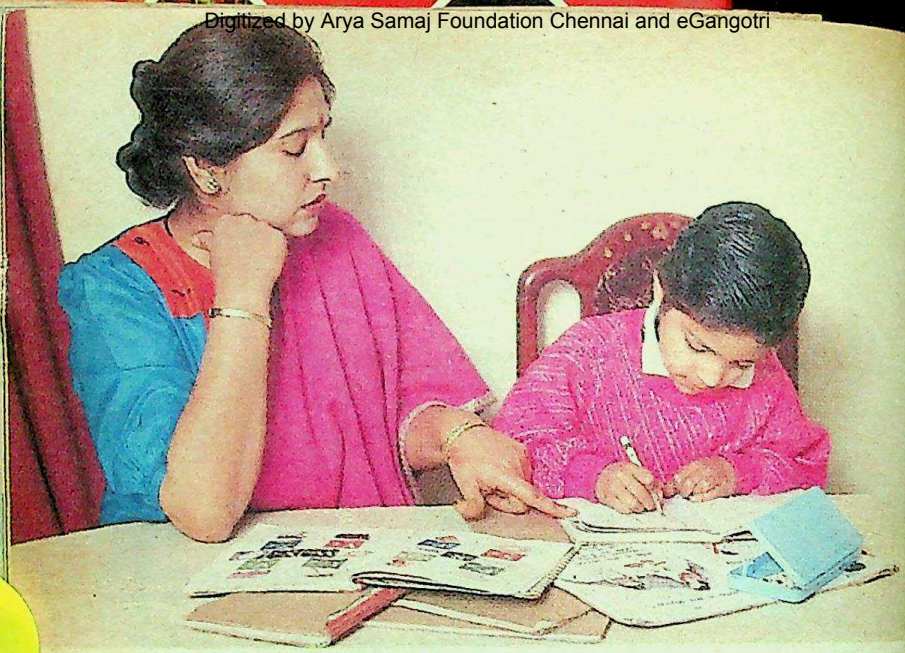

छोटी सी उम्र में बच्चे को पढ़नेपढ़ाने का अति उत्साह उसे निरुत्साहित भी कर सकता है.

पाठशालाओं का ध्येय होना चाहिए कि बच्चे को संपूर्ण व्यक्तित्व के विकास का मौका मिले, न कि सिर्फ गिनती, पहाड़े और कविताएं रटने का.

बच्चों की शिक्षा को ले कर ही एक आम समस्या है उन के लिए उपयुक्त स्कूल ढूंढ़ने की. आजकल हर महल्ले में आकर्षक अंगरेजी नाम वाले नर्सरी स्कूल दिख जाएंगे. जिस किसी के पास एकदो कमरे खाली हों या खाली कर सकता हो, वही नर्सरी स्कूल खोलने पर आमादा दिखता है. घर बैठे इस से अच्छा और क्या रोजगार मिल सकता है. साथ ही मजे की बात यह कि घर का कोई भी सदस्य जरूरत पड़े कक्षा संभाल लेता है. सिर्फ एक श्यामपट्ट और कुछ चार्टनक्शे ही इन स्कूलों के लिए पर्याप्त हैं. न बच्चों के लिए कोई खेल का मैदान होता है, न ढंग से बैठने की व्यवस्था. ऐसे स्कूल या तो घर के ही सदस्य मिल कर चला लेते हैं या एकआध अड़ोसपड़ोस की महिलाएं अपना फालतू वक्त इन स्कूलों में दे कर अपने लिए कुछ कमा लेती हैं.

इन नन्हेमुन्नों को पढ़ाने के लिए यहां किसी विशेष योग्यता के प्रमाण की जरूरत नहीं होती. एम.ए., एम.एससी. पास महिला हमारे देश में नर्सरी से ले महाविद्यालय तक में पढ़ाने के लिए योग्य मानी जाती है. कई बार ये पो ग्रेजुएट महिलाएं महाविद्यालयों में आव पत्र दे कर नियुक्ति के इंतजार का यह स नर्सरी स्कूलों में काम कर के काट देती

ऐसे शिक्षकों को यह तो मालूम होत कि क्या पढ़ाना है पर इस बात से वे अनभि रहती हैं कि कैसे पढ़ाना है. उन की डांट से बच्चा डर जाता है. रात को बिन भिगोना या स्कूल जाने में आनाकानी क आज बहुधा सुनने में आता है. बच्चे स्वास्थ्य पर इस तरह की पढ़ाई का प्रति असर ही हो रहा है और हम अब भी चेत रहे हैं.

खैर, जब तक नर्सरी की पढ़ाई बात होती है, बच्चों को आमतौर पर मह के ही किसी नर्सरी स्कूल में डाल दिया है जहां से अभिभावक खुद ही बच्चों आते हैं, छोड़ आते हैं. पर जैसे ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai

हर क़दम, हर कहीं...

जवां ज़िंदगी, उमंगोंभरी.

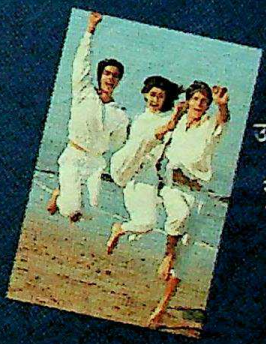

नया मारवल वाइट और पिंक.
जवां दिलों की जवां
उमंगों के साथ. नर्म-मुलायम छुअन
नई-नई महक. हर पल. हर क़दम
आपके साथ.

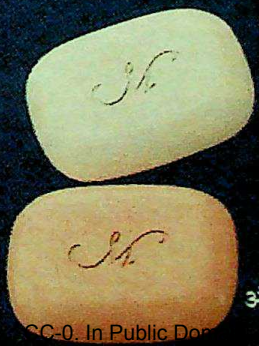

गोदरेज

मारवल वाइट और पिंक
अंतर्राष्ट्रीय क्वॉलिटी-अल्ट्रा लक्ज़री साबुन

CC-0. In Public Dom

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहली, दूसरी या तीसरी कक्षा में आता है, अच्छे स्कूल में दाखिला अनिवार्य समझा जाता है. पहले तो दाखिला ही आजकल बड़ी मुशकिल से मिलता है और मिल जाए तो जरूरी नहीं कि स्कूल पास ही हो. तब प्रश्न उपस्थित होता है कि बच्चों के आनेजाने की व्यवस्था कैसे हो?

कुछ स्कूलों की तो अपनी बसें होती हैं जो फिर भी गनीमत है. छोटे स्कूल रिकशा और डब्बेनुमा गाड़ियों द्वारा विद्यार्थियों के आनेजाने की व्यवस्था करते हैं और एक छोटे से असुरक्षित रिकशे पर कई बार आठआठ बच्चों को लटके देखा जा सकता है. ऐसे में जरा सी 'सावधानी हटी और दुर्घटना घटी' वाला नारा चरितार्थ हो जाता है. इस के अलावा स्वयं अभिभावक भी मिल कर ऐसी व्यवस्था कर लेते हैं. अब दोष किसे दिया जाए?

जीवन चक्र की परिचालिका

बाह्य और अंतःस्थित सभी प्रकार के जीवन चक्रों की मूल परिचालिका शक्ति है विश्व मानव की सामूहिक अज्ञात चेतना.

—इलाचंद्र जोशी

ये तो थी समस्याएं बच्चों को दाखिला दिलाने की उम्र की, उन के स्कूल की, उन के आनेजाने की व्यवस्था की, पर इन सब से बड़ी एक समस्या है दाखिले की यानी प्रवेश परीक्षा की. हर बच्चे के लिए अनिवार्य प्रारंभिक शिक्षा पर तो जोर दिया जाता है पर दाखिला कितनों को मिलता है. प्रवेश के लिए भरे जाने वाला प्रार्थनापत्र ही सब से बड़ा रोड़ा है, जिस में मांबाप की शिक्षा और आर्थिक स्तर की जानकारी ली जाती है.

या तो मातापिता शिक्षित हों ताकि बच्चों को घर पर संभाल सकें या उन का आर्थिक स्तर दृढ़ हो ताकि वे ट्यूटर लगवा सकें, ऐसा स्कूल को विश्वास हो जाना चाहिए. यानी कोई गरीब पेट काट कर अगर पैसे बचा कर अपने बच्चे को अ स्कूल में दाखिल भी कराना चाहे तो गरीब निरक्षर के बच्चों को साक्षरता मौका मिलना मुशकिल ही है.

प्रवेश पत्र भरने के बाद आता है साक्षात्कार का. दाखिला चाहने नन्हेमुन्नों को अपना नाम, मांबाप का अपनी गलीमहल्ले का नाम वगैरहवगै जानना आवश्यक हो गया है, अन्यथा प साफ. कक्षा एकदो से ऊपर के लिए बच्चों को बाकायदा लिखित परीक्षा भी होती है. बेचारा सामान्य या औसत बच्चा बौखला ही जाता है.

एक छोटे से बच्चे को हम इस तरह कसौटी पर नहीं कस सकते. कितने साधारण छात्रों की प्रतिभा बाद में प्रस्फुटित होती है. ऐसे छात्रों को परीक्षा कसौटी पर कस कर अगर अच्छी शिक्षा वंचित कर दिया जाए तो देश और समा दोनों के लिए यह गलत है.

सारी समस्याएं तो हम ने समझ लीं इन का निराकरण कैसे हो? निराकर दुष्कर जरूर है पर असंभव नहीं. कीजिए, बच्चे के पैदल चल सकने स्वाभाविक आयु एक वर्ष मानी जाती है अगर बच्चा 10 महीने में चलने लग जाए 14 महीने में चलना शुरू करे तो अस्वाभाविक नहीं माना जाता. जिस त शारीरिक वृद्धि और विकास में व्यक्ति अंतर रहता है उसी तरह मानसिक विक में भी.

यदि आप का बच्चा पढ़ाई और अ प्रतियोगिताओं में अव्वल स्थान न ले पाए आप उस को रातदिन पढ़नेपढ़ाने की, र की कोशिश मत कीजिए. इस तरह से हम अपनी आकांक्षाओं और तनावों को ब पर लाद देंगे. इस से बच्चों का विक स्वाभाविक और संपूर्ण नहीं हो सकता. ब के स्वाभाविक विकास के लिए अभिभाव व शिक्षक दोनों का योगदान बहुत महत्व होता है. बच्चों के शिक्षक से मिल समस्या का हल निकाला जाना चाहिए.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत की नं. 1 संपूर्ण आटोमैटिक वाशिंग मशीन

V-NA-811

आरामदायी सुविधाओं के साथ उत्कृष्टता भी.

अब सिर्फ हल्के से **फेदर टच** कंट्रोल पैनल पर लगा बटन दबाइए और चाहे तो बेफिक्र खरीदारी के लिए जाइए। संपूर्ण आटोमैटिक वीडिओकोन वाशिंग मशीन आप के कपड़े, परदे, चादरें, छोटी दालीनें, गालीचे आदि धो देगी, उन्हें सुखाएगी और आप की उपस्थिति में अपने आप बंद भी हो जाएगी। यह है माइक्रो कम्प्यूटर पर आधारित **अत्याधुनिक** तकनीक का चमत्कार। वाशिंग मशीन तकनीक में विश्व के सब से अग्रणी निर्माताओं के साथ तकनीकी सहयोग से निर्मित इसमें वे सभी खूबियां हैं जिनकी आप एक विश्व स्तर के उत्पादन से अपेक्षा करते हैं। सर्वश्रेष्ठ **'पल्सेटर वाश'** जिसकी बदौलत गर्म पानी की जरुरत नहीं पड़ती तथा आपके कपड़ों की आयु बढ़ती है। इसके अलावा दूसरी विशेषताएं भी है जैसे बेआवाज और सुलभ कार्यप्रणाली, कपड़ों के अनुसार वाश प्रोग्राम्स में चुनाव की सुविधा, फेदर टच कंट्रोल पैनल, फैब्रिक साफ्टनर और ब्लीच के इस्तेमाल की खास सुविधा। संपूर्ण आटोमैटिक वीडिओकोन वाशिंग मशीन दो वर्ष की वारंटी तथा देशभर में फैले विश्वसनीय बिक्री पश्चात सेवा केंद्रों से सुसज्जित है।

वीडिओकोन

वा शिं ग म शी न्स

SJAS 91002-HN

नेशनल ब्राण्ड नाम की मालिक मात्सुशिता इलेक्ट्रिक इंडस्ट्रियल कं., जापान के साथ तकनीकी सहयोग से निर्मित.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिन का हर पल संवारे – मेरा कॉम्पैक्ट !

९.५५: दरवाज़े पर कौन है? अरे ये लोग आ पहुँचे!

१२.५०: दो जोड़ी सैण्डल ख़रीद कर भी मन नहीं माना, एक और हैण्डबैग ख़रीद डाला.

४.१०: ओह, पेस्ट्री! मगर इसमें तो कैलरीज़ ही कैलरीज़ हैं. चलो, कल से शुरू करेंगे अपनी डाइटिंग

७.४८: वहाँ प्रोग्राम शुरू होने में सिर्फ़ बारह मिनट हैं, और मैं हूँ कि यहाँ...

पल भर में चेहरे पर निखार, लॅक्मे कॉम्पैक्ट की बदौलत. चाहे आप घर में हों या बाहर जाने की तैयारी में. शॉपिंग पर जाने की जल्दी हो या चाय पर. कार में हों या लिफ़्ट में... यह महीन, रेशम सा फ़ेस पाउडर आपके रंगरूप से मिलते-जुलते पांच शेड्स में मिलता है. रोम-छिद्रों को बन्द किये बिना, कुदरती निखार लाता है, ख़ूबसूरती प्रदान करता है. इसलिये, अब साधारण पाउडर को अपने चेहरे से दूर रखिये, लॅक्मे कॉम्पैक्ट अपनाइये.

लॅक्मे कॉम्पैक्ट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेख • प्रभा सरस

दिनभर घर में घुसी रहने वा
शशी को आज घूमने
चाहत जागी. मेरे स्कूल
आते ही उस ने प्रश्न किया, "फुर
में हो क्या?"

"हां, हूं तो, क्या मौ
टाकीज चलना है?" मैं ने चुट
ली. "नहीं, शालिनी के घर
शशी का जवाब था.

"अच्छा तो मैडम
अपनी ही कालोनी में घूम
है. तीन बज रहे हैं. च
चलते हैं. रास्ता भी तो प
ही मिनट का है."

अम्मां

पढ़ते बच्चे को बीचबीच में छोटेमोटे कार्यों के लिए उठाना उस के किशोर मन पर अतिरिक्त दबाव डालना है जो उसे विद्रोही बना सकता है. इसलिए उस की पढ़ाई के प्रति रुचि व इच्छाओं का ध्यान रख कर उस की सामर्थ्य के अनुसार ही कार्य करवाना चाहिए.

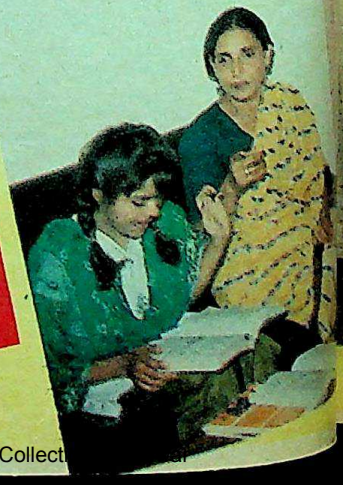

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collect

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुझे पढ़ने तो दो

शालिनी का मायाजाल का कमरा कई प्रकार के उपन्यासों से शोभायमान हो रहा था. मनोज, मीनाक्षी, माथुर, कपिल, राकेश, रानू और भी पता नहीं कौनकौन से लेखकों की कृतियां वहां बेतरतीबी से पड़ी थीं. सोफा, मेज, दीवान सभी पर कोई न कोई पुस्तक पड़ी थी. मेज पर एक ओर अभ्यास पुस्तिका खुली पड़ी थी. सीसा, रबड़, स्केल सभी कुछ यथावत लगा हुआ था जैसे कोई अभीअभी चित्र बनातेबनाते उठ कर गया हो.

शालिनी ने बड़ी गरमजोशी से स्वागत किया, हाथ में रखे उपन्यास के पढ़े गए हिस्से को मोड़ कर वहीं से पुकार उठीं.

"बेटी जया, दो प्याले चाय और तैयार कर लेना."

फिर बताने लगीं, "अजय कितना अच्छा लिखता है, मैं तो इन उपन्यासों को पढ़ने में घर के सारे काम भूल जाती हूं. भूल क्या जाती हूं उपन्यास समाप्ति तक किनारा कर लेती हूं. सिर दुखने को आया पर पुस्तक छोड़ी नहीं गई. जया पढ़ाई कर रही थी. उसे चाय बनाने भेजा ही था कि आप दोनों आ गईं."

मैं ने कहा, "तो हम लोगों ने आप का जायका बिगाड़ दिया, पर यह तो बताओ, अजय की पुस्तक का क्या नाम है?"

उन का शैतान शरारती छोटू वहीं बैठा चित्रकथा पढ़ रहा था. मां से पहले ही वह बोल उठा, "मौसीजी, पुस्तक का नाम है 'पति परमेश्वर.' मां 'पति परमेश्वर' पढ़ने में इतनी मग्न हैं कि पिताजी से रोज लड़ाई होती है. मैं कब से विज्ञान का पाठ समझाने के लिए कह रहा हूं, पर मां पुस्तक छोड़ ही नहीं रही हैं. मैं अब इसे छिपा देता हूं. जब तक मां मेरा पाठ पूरा नहीं कराएंगी तब तक पुस्तक नहीं मिलेगी."

छोटू पुस्तक ले कर भागा. जया चाय ले कर पहुंची.

शशी ने पूछा, "जया, किस कक्षा में हो?"

बड़ा मायूस, उदास सा उत्तर था, "11 वीं."

प्रत्येक कार्य के लिए अपनी किशोरवय लड़की को ही कहना ठीक नहीं. इस से घर में अशांति और पारिवारिक कलह का जन्म हो सकता है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह चाय [illegible] बनाने लगी.

इधरउधर की पर्याप्त चर्चा के बाद बात टीवी, फिल्म और पढ़ाई पर आ गई. शालिनी ने व्यस्तता का रोना रोया, "दिन भर घर के काम से फुरसत नहीं मिलती. हमारे बच्चे जरा भी नहीं पढ़ते." लोग कहते हैं कि टीवी पढ़ाई में असली बाधक है, पर मैं ने इस घर में अनुभव किया कि बच्चों की पढ़ाई में 'बीवी' अधिक व्यवधान डाल रही है.

ऐसे कई घर मिलेंगे आप को, पर मैं ने इस घर में देखा कि समय जैसे अनमोल धन का कैसा दुरुपयोग हो रहा है. मां सारहीन पुस्तकों में डूबी है, पिता बाहर के कर्मक्षेत्र में मस्त हैं, घर के हर बड़ेछोटे काम के लिए जया की पुकार हो रही है. जया दो पंक्ति लिख भी नहीं पाई कि कुकर लगाने जा रही है. एक पाठ पढ़ भी नहीं पाई कि पानी का गिलास मांगा जा रहा है. गृहकार्य अधूरा ही है, दादी की तीमारदारी में जया को ही दौड़ना है.

हम सही ढंग से आत्मविश्लेषण करें तो पाते हैं कि हमारे पास समय की कमी नहीं है. समयाभाव की बातें करते हैं, वह है हमारा आलस्य. सही मायने में हम समय का उपयोग करना नहीं चाहते. समय अनमोल धन है, समय के बाल सामने की ओर होते हैं, इन्हें कस कर पकड़े रहना चाहिए. लहरें और समय कभी किसी की प्रतीक्षा नहीं करते. हम ऐसे अनमोल समय का महत्त्व नहीं समझते. मनुष्य एक बार समय की कीमत समझ ले तो सफलता उस के कदम चूमेगी.

विद्यार्थी जीवन में तो कार्यों के अनुसार समय विभाजन की सब से अधिक आवश्यकता है. यदि अपना समय नियोजित कर लें, समय सारणी तैयार कर लें और उन पर दृढ़ता से आचरण करें तो व्यस्ततम जीवन के बीच भी निश्चितता आ सकती है. शालिनी जिस तन्मयता से पुस्तक पढ़ती है, काश, उसी तन्मयता से घर के काम में भी रुचि लेती, अपने बच्चों की पढ़ाई के संदर्भ में इस गुण का निरूपण करती!

जया और रुचि दो बहनें हैं. उन का बड़ा भाई हर्ष है जो दादी का परम दुलारा है. जया बहुत सीधी, रुचि बहुत तेज है. जया का 11वीं में दूसरा वर्ष है, रुचि पढ़ाई में तेज है. शाला के अन्य कार्यक्रमों में खूब हिस्सा लेती है. खेलकूद, नाटक, भाषण, पिकनिक सब जगह उस की उपस्थिति अनिवार्य है. रुचि अपनी प्रत्येक इच्छा को सर्वोपरि मान कर पूरा करती है. उस के इस स्वभाव के कारण घर के सब सदस्य उसे उद्दंड कहते हैं. लड़केलड़की में भेद करने वाली दादी अम्मा घर में विराजमान हैं, जिन की भावनाओं का प्रभाव रुचि पर तो नहीं, जया के मन पर अतिरिक्त वजन डालता है.

उस दिन की ही घटना को ले लें. जया स्कूल के काम में व्यस्त थी. उस ने हर्ष से कहा, "भैया, जरा जूठे बरतन बाहर कर दो. काम वाली आ गई है. मां को तो पड़ोस से फुरसत नहीं, मुझे अभी बहुत लिखना है."

जया द्वारा हर्ष को सौंपा गया काम दादी को माला जपने के बीच में ही सुनाई दे गया. राम नाम लेना छोड़ जोर से चिल्लाई, "क्यों री जया, तू जरा उठ कर बरतन नहीं निकाल सकती. क्या यह हर्ष के करने का काम है?"

हर्ष अपनी बहन की व्यस्तता देख कर सहर्ष जा रहा था. दादी का प्रश्रय मिलते ही उस का अहं आड़े आ गया. आज सीधीसादी दब्बू जया भी अड़ गई, "क्यों दादी, वह लड़का है इसलिए बरतन नहीं निकालेगा? आप का यह कैसा न्याय है? भैया और मुझ में भेद क्यों? आप हर्ष भैया को इतना सिर क्यों चढ़ाती हैं?"

जया की मुखरता ने आग में घी का काम किया. दादी का पारा सातवें आसमान पर जा पहुंचा. उन के विचार तो आज भी 18 वीं सदी के थे. औरत की चूड़ी और गुलामी की बेड़ी की खनक उन्हें समान लगती थी.

किशोरावस्था बड़ी नाजुक होती है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

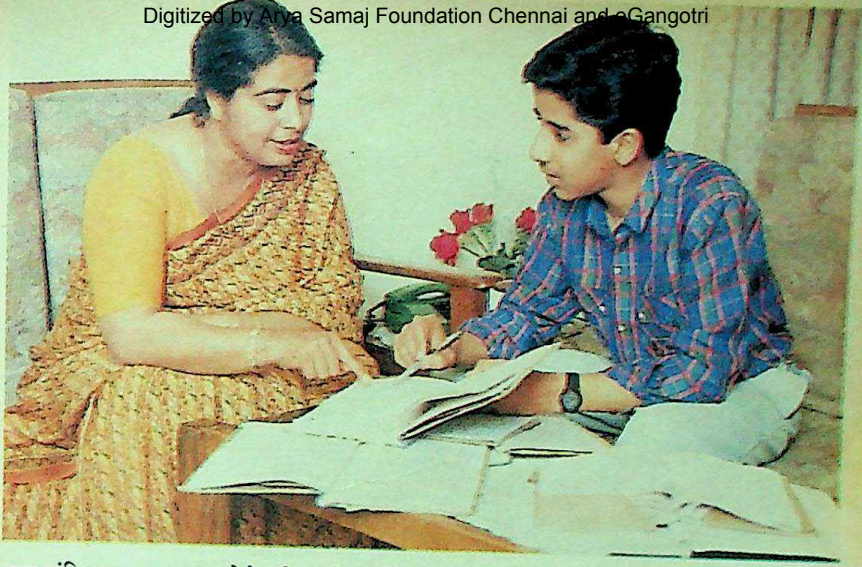

बच्चे की पढ़ाई की ही नहीं अपितु उस की हर समस्या का समाधान हमउम्र बन कर करें तभी आप के बच्चे का सर्वांगीण विकास संभव होगा.

वयःसंधि का यह काल वैसे ही कई प्रश्नों, समस्याओं को जन्म देता है. यदि परिवार का व्यवहार उस समय किशोर पर बोझिलता लादे तो उस के अंदर होते परिवर्तन, शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, उस की भावनाओं का संतुलन बिगाड़ देंगे.

बातबात पर उस का आत्मसम्मान आहत होता है, आड़े आता है. छोटी सी डांट उसे बड़ी लगती है. रोष भरे स्वर, कटु वचन उसे चुभते हैं. सहनशीलता की सीमा चुक जाने पर उत्तरप्रतिउत्तर, सवालजवाब होने लगते हैं और परिवार में अशांति का वातावरण बन जाता है.

अब आप का बेटा समझदार हो गया, बेटी सयानी हो गई तो आप का बच्चों के साथ रिश्ता परिवर्तित हो गया. आप सदा ही अपने बच्चों के मातापिता मत बने रहिए, बेटे के दोस्त बनिए, बेटी की सहेली बनिए. आप प्रेम और धैर्य के साथ अपने किशोर बच्चों को यौवन की दहलीज पर लाइए. उन की हर छोटीबड़ी समस्या का समाधान हमउम्र बन कर कीजिए. आप अपना अनुभव बता कर उन्हें समझाइए. इस तरह आप अपने घर को अशांति और पारिवारिक कलह से बचा सकते हैं.

इस युग में प्रत्येक परिवार को बेटेबेटी का अंतर भूलना होगा. आप की बेटी आप के बेटे से किसी बात में पीछे नहीं है.

आप का बच्चा परिवार का सम्मानित सदस्य है. उस की इच्छाओं का ध्यान रखना, उस की पढ़ाई में सहयोग देना, उस के सामर्थ्य के अनुसार ही काम करवाना आप का कर्तव्य है.

आप जया की मां की तरह उसे पढ़ाई के बीच परेशान न करें. बच्चों का सीधापन, कमजोरी या दब्बूपन उस की उद्दंडता में परिवर्तित न हो जाए. उन की उम्र के अनुसार ही उन्हें स्वाभाविक रूप से काम में रुचि लेने दें. उन की प्रगति में बाधक न बनें. उन्हें कुंठाग्रस्त न होने दें. आजकल तो जया की सहनशीलता जवाब देने लगी है. वह पिछले वर्ष की पुनरावृत्ति नहीं चाहती. उसे इस वर्ष अच्छे अंक लाना है. अम्मां द्वारा समयसमय पर काम थोपने पर वह खीज कर कह उठती है, "अम्मां, मुझे पढ़ने तो दो."●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आयुष्मान भव!

संतुलित आहार. संतुलित पकाने का तेल. स्वस्थ जीवन.

संतुलित आहार - स्वस्थ जीवन का आधार.

आप सदा से यही तो सुनते और देखते आए हैं. आपके रोज़ाना के भोजन में कार्बोहायड्रेट, प्रोटीन, फ़ैट खनिज, विटामिन, क्षार और हरी सब्जियों की सही मात्रा अवश्य होनी चाहिए. आहार में यदि ऐसा संतु हो तो शरीर की पेशियों के पुर्ननिर्माण और शरीर की प्रतिरोधक शक्ति बढ़ाने वाले तत्त्व आपको पर्याप्त मात्रा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में मिलते रहते हैं.

पकाने का तेल हो संतुलित, तो हृदय रहे स्वस्थ.

जिस तरह अच्छी सेहत के लिए संतुलित आहार ज़रूरी है, उसी तरह स्वस्थ हृदय के लिए भी चाहिए ऐसा पकाने का तेल जिसमें मौजूद हो घटकों की सही-संतुलित मात्रा यानी पूफ़ा (पॉलिअनसैचुरेटेड फ़ैटी एसिड), मूफ़ा (मोनो-अनसैचुरेटेड फ़ैटी एसिड) और सैचुरेटेड फ़ैट (मक्खन, घी आदि) का सही अनुपात. क्योंकि आपके हृदय में हो रही अच्छे और बुरे कोलेस्ट्रॉल की इस लड़ाई में पूफ़ा और मूफ़ा एक निर्णायक भूमिका निभाते हैं. हाल ही में की गई खोज-बीन से साबित हुआ है कि यदि पूफ़ा अधिक मात्रा में हो तो यह ***अंधाधुंध*** बुरे कोलेस्ट्रॉल का तो सफ़ाया करता ही है, ***साथ ही*** अच्छे कोलेस्ट्रॉल को भी बचने नहीं देता.

पोस्टमेन शुद्ध रिफ़ाइन्ड मूंगफली का तेल है.

सूरजमुखी और करडी जैसे बीज से बने तेल पूफ़ा-आधारित हैं.

जबकि पोस्टमेन मूफ़ा - आधारित तेल है.

और मूफ़ा ***केवल*** बुरे कोलेस्ट्रॉल को ख़त्म करके, ***अच्छे कोलेस्ट्रॉल को रखता है सही-सलामत.*** इस तरह धमनियों में रक्त की रुकावट दूर करके, दिल के दौरे का ख़तरा भी कम करता है. यानी ४५% मूफ़ा, ३२% पूफ़ा और १८% सैचुरेटेड फ़ैट मिश्रण युक्त ***पोस्टमेन है एक बिल्कुल सही संतुलन***-जो आपके हृदय की देखभाल करे, आपको दे दीर्घायु का आशीर्वाद!

स्वाद से मालामाल,
रखे सेहत का ख़्याल.

पोस्टमेन

...स्वाभाविक.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेख ● सरल जैन

ऐसे बनाइए घर में पढ़ाई का माहौल

कड़ाके की ठंड, दिसंबर का महीन
ऊपर से घरघर छमाही परीक्षा
तैयारी करते बच्चे, सचम
करेला, ऊपर से नीम चढ़ा.

एक दिन मेहमान घर आए हुए
वीसीआर पंचम स्वर में चालू था. मे
बिटिया अपने कमरे में बैठी पढ़ने
असफल प्रयास कर रही थी. जब सहन
हुआ तो चली आई और खीजी आवाज
बोली, "अम्मां क्या आप धीमी आवाज
वीसीआर नहीं चला सकतीं? मे
पढ़ाई में खलल हो रहा है और क

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए मातापिता को चाहिए कि वे घर में बच्चों के लिए पढ़ाई का उचित माहौल तैयार करें ताकि उन का पढ़ाई में भरपूर मन लग सके. इस के लिए पढ़ाई से संबंधित उपकरण इकट्ठे करने की आवश्यकता नहीं, अपितु कुछ बातों का ध्यान रखने की है.

मेरी छमाही परीक्षा का पहला परचा है."

कुछ देर तो मैं सोच न पाई कि क्या करूं, क्या न करूं. मेहमानों की खुशी का खयाल करूं या फिर अपनी बेटी के हितों का ध्यान रखूं. लेकिन कुछ ही क्षणों में मुझ में आत्मबल जागा और मैं ने मेहमानों से नम्रतापूर्वक याचना की कि समय अधिक हो रहा है और चूंकि दूसरे ही दिन मेरी बेटी की छमाही परीक्षा का पहला परचा है इसलिए मैं टीवी बंद कर रही हूं. वे अगर चाहें तो किसी दूसरे दिन आ कर फिल्म का शेष भाग देख लें. और इस तरह कर्तव्य के आगे खुशी की आहुति मैं ने दे डाली.

उस के बाद मैं ने एक निर्णय यह भी लिया कि जब तक मेरी बेटी की वार्षिक परीक्षा नहीं हो जाती, मैं महत्त्वपूर्ण धारावाहिक एवं समाचारों के अलावा दूसरे कार्यक्रम नहीं देखूंगी.

इस सत्य से कदापि इनकार नहीं किया जा सकता कि टीवी, वीसीआर, टेप-रिकार्डर, ग्रामोफोन आदि चालू रहने पर कम ही बच्चों का पढ़ाई में मन लगता है. कितनी भी धीमी आवाज में उन्हें क्यों न सुना जाए, आवाज तो बच्चों के कान में जाती ही है और तब पढ़ाई में बाधा पड़ने के साथसाथ वे खीजते भी रहते हैं कि वे कार्यक्रम देखसुन नहीं पा रहे हैं.

छुट्टियों के दिनों में टीवी, वीसीआर दिन भर चलता रहे तो कोई बात नहीं,

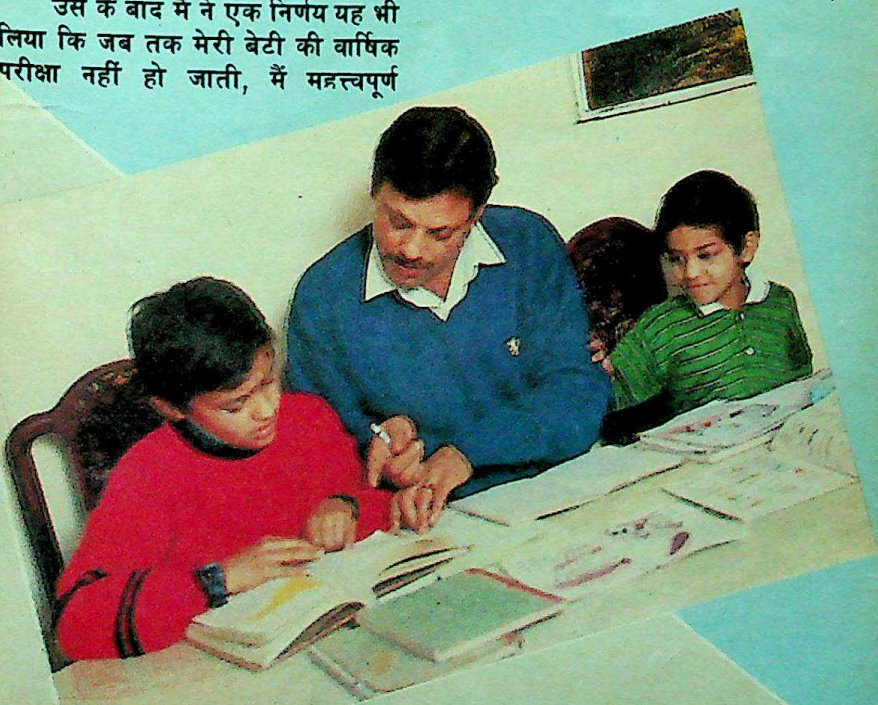

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेकिन बाकी दिनों में तो बच्चों की पढ़ाई एवं हितों का ध्यान रखते हुए इन उपकरणों का कम ही प्रयोग करना चाहिए. आजकल किताबों का बोझ, पाठ्यक्रम की बढ़ती लंबाई, परचों का क्लिष्ट होना, पाठ्यक्रम का बदल जाना आदि अनेक ऐसे कारण हैं जिन से पढ़ने वाले बालक एवं बालिकाएं तो परेशान होते ही हैं, कहींकहीं तो पढ़ाने वाले शिक्षक भी चक्कर में आ जाते हैं. ऐसी स्थिति में विद्यार्थियों में एकाग्रता उत्पन्न करने के लिए स्वस्थ माहौल का निर्माण होने की नितांत आवश्यकता है.

चूंकि टीवी का बच्चों पर गहरा प्रभाव पड़ता है, इसलिए मैं ने इस विषय में कई बच्चों से चर्चा की. बच्चों का बहुमत यही था कि उन्हें पढ़ाई में प्रेरणा मिले, ऐसे धारावाहिक भी दूरदर्शन वालों को तैयार करने चाहिए और यह मत केवल बच्चों का ही नहीं, अभिभावकों का भी था.

पाठशालाओं एवं स्कूलों, कालिजों में तो बच्चे पढ़ने जाते ही हैं. अतः वहां की संस्कृति का बच्चों पर प्रभाव पड़ना स्वाभाविक ही है. मगर मनन तो वे घर में ही करते हैं. किसी भी विषय को याद उन्हें घर पर ही करना होता है. कभीकभी तो घर में अतिरिक्त समझने की आवश्यकता भी पड़ जाती है.

ऐसी परिस्थितियों में मांबाप एवं अभिभावकों का कर्तव्य बन जाता है कि वे बच्चों के लिए पढ़ाई का उचित माहौल तैयार करें ताकि उन का पढ़ाई में भरपूर मन लग सके. इस के लिए उन्हें नीरस से नीरस विषय को भी सरस बना कर बच्चों को समझाना चाहिए.

अगर स्कूल से घर लौटने पर बच्चा खिचाखिचा रहता हो, खुशखुश न लौटता हो, आते ही निर्ममता से बस्ता फेंक कर बिना जूतामोजा उतारे हताश सा बिस्तर पर लेट जाता हो, स्कूल के बारे में चर्चा करने पर नाराज हो जाता हो, आप को किसी भी कारणवश घर में न पा कर और भी ज्यादा उत्तेजित एवं क्रोधित हो जाता हो तो समझ जाना चाहिए कि बच्चा स्कूली माहौल में ठीक से सामंजस्य नहीं बैठा पाया है. उस का स्कूल एवं कक्षा में मन नहीं लग रहा है.

इस के पीछे कारण कुछ भी हो सकता है, जैसे पढ़ाई में मन न लगना, कक्षा के अन्य छात्रों के साथ ठीक से पटरी न बैठना, अन्य बालकों द्वारा चिढ़ाया या अपमानित किया जाना, बारबार कक्षा में शिक्षक से डांट पड़ना या सजा मिलना, मारापीटा जाना आदि.

इस के लिए जरूरी होता है कि बीचबीच में अभिभावक स्कूल जा कर बच्चे के कक्षा अध्यापक एवं प्राचार्य से मिल कर बच्चे के बारे में विस्तृत चर्चा करें. उस की प्रगति पुस्तिका पर विशेष ध्यान दें और जहां कमी हो, उसे दूर करने की कोशिश करें. पढ़ाई के अलावा उस की आदतों की भी जानकारी लें और यह भी देखें कि कहीं वह गलत संगत में तो नहीं रहता, कक्षा में ज्यादातर प्रश्नों का जवाब दे पाता है या नहीं. पढ़ाई के अलावा अन्य गतिविधियों में भी भाग लेता है या नहीं, कक्षा में खुश रहता है या नहीं आदि. और तब एक विशेष निर्णय पर पहुंचें कि आप को अपने बच्चों पर कितना अतिरिक्त ध्यान देने की आवश्यकता है.

गृहकार्य में सहायता

अगर बच्चे की मां पढ़ीलिखी है तो नित्य समय निकाल कर बच्चे को पढ़ाए एवं गृहकार्य करने में सहायता दे. लेकिन इस का मतलब यह नहीं कि माता स्वयं गृहकार्य करने बैठ जाए, बल्कि उसे कुछ इस प्रकार समझाए कि बच्चा स्वयं रुचि ले कर सुगमता से अपना पूरा गृहकार्य कर सके.

कभीकभी बच्चों के मित्रों या सहेलियों को घर बुलाएं एवं स्कूली माहौल की जानकारी लें. बातोंबातों में यह भी जानकारी लेने की कोशिश करें कि आप का बच्चा स्कूल में खुश रहता है या नहीं. कक्षा में वह होशियार बच्चों में गिना जाता है या कमजोरों में.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बच्चों को पुरस्कार प्राप्त करने पर उस की प्रशंसा करें. इस से वह हमेशा अव्वल आने के लिए और अधिक मेहनत करेगा.

कक्षा का कार्य वह कक्षा में ही कर लेता है या घर पर आ कर पूरा करता है. और उस की सहपाठियों से दोस्ती है या अकसर अनबन होती रहती है. इस से पढ़ाई के साथसाथ उस का चरित्र एवं व्यक्तित्व निर्माण करने में आप को मदद मिलेगी.

बढ़ती उम्र में जब 'गदह पचीसी' आ जाती है, तब अकसर बच्चों का मन पढ़ाई में नहीं लगता. ख्वाबों की दुनिया में विचरण करने में उन्हें मजा आने लगता है. मांबाप, बड़ेबूढ़े उन्हें दुश्मन से लगने लगते हैं. खयाली पुलाव पकाने में उन्हें मजा आता है. चोरीचोरी वे 'कोक शास्त्र' समझ लेना चाहते हैं. उन्हें वे मित्र एवं सहेलियां अच्छे लगते हैं जो उन्हें आश्चर्यजनक बातें समझाते हैं या फिर शरीर के भूगोल एवं शारीरिक क्रियाओं के बारे में गुप्त जानकारी देते हैं, भले ही उन का स्वयं का ज्ञान अधकचरा हो.

यह एक कटु सत्य है कि हर एक के जीवन में एक ऐसा समय आता है, जब उन के मस्तिष्क में हलचल सी मच जाती है. वे जीवन के समस्त रहस्य को एकबारगी समझ लेना चाहते हैं, जबकि मांबाप उन्हें भोले बच्चे ही समझते हैं.

तब टकराहट होती है नई और पुरानी पीढ़ी के सोच में, जबकि आज की परिस्थिति में निहायत जरूरी होता है कि किशोर होते बच्चों को कलात्मक ढंग से प्राकृतिक अथवा नैसर्गिक क्रियाओं के बारे में जानकारी दें. यौन भावनाओं के अच्छे एवं बुरे पहलू के बारे में विस्तार से ज्ञानार्जन कराएं. रोचक माहौल उत्पन्न कर के नईनई बातों के प्रति उन में रुचि उत्पन्न कर के उन का ध्यान दूषित यौन भावनाओं से हटा कर प्रेरक प्रसंगों की ओर ले जाने का सार्थक प्रयास कर सकते हैं.

यह सच है कि हर समय तो हर बच्चे का पढ़ाई में मन नहीं लग सकता. तब खेलकूद, चित्रकारी, बागवानी, गृह सज्जा, सामाजिक कार्य, सांस्कृतिक कार्यक्रम, परिचर्चा, वादविवाद आदि में रुचियां उत्पन्न कराएं. नृत्य एवं संगीत भी जीवन से जुड़े सत्य हैं. इन से भी उन्हें परिचित कराएं. प्रतियोगिताओं में, प्रतियोगी परीक्षाओं में भाग लेने को कहें ताकि उन में खेल भावना विकसित हो और असफलता का हंसतेहंसते सामना कर सकें. वे हार कर भी उतने ही उत्साहित रह सकें जितना कि कोई जीत कर होता है. लेकिन हमेशा मन में जीतने की इच्छा तीव्र बनी रहे.

आप भी जीतने पर, प्रथम स्थान प्राप्त करने पर अपने बच्चों की भूरिभूरि प्रशंसा करें ताकि उन्हें जीतने का मजा द्विगुणित होता महसूस हो और इस तरह प्रेरित हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर हमेशा अव्वल नंबर हासिल करने की कोशिश करें और इसे आदत का अंग बना डालें.

जब प्रतियोगी भावना उन में विकसित हो जाए, तो उन्हें पढ़ने का रोचक मसाला नाश्ते की तरह प्लेट में रख कर पेश करें, जैसे सामान्य ज्ञान की किताबें, विज्ञान की रोचक पुस्तकें, अन्य प्रामाणिक सारगर्भित ज्ञानवर्धक पुस्तकें आदि. स्वस्थ पत्रपत्रिकाएं भी इसी श्रेणी में आती हैं.

जब बच्चों को पढ़ने में आनंद आने लगे तो धीरे से पाठ्य पुस्तकें पढ़ने की प्रेरणा दें. हो सके तो खेल ही खेल में किसी क्लिष्ट विषय का एक अध्याय भी समझा दें. कभीकभी प्रश्नोत्तर ही याद कर के सुनाने की फरमाइश करें या हंसीहंसी में आप उन की लिखित या मौखिक परीक्षा लें.

मासिक परीक्षा की रिपोर्ट ध्यान से देखें. जिस किसी विषय में कमजोरी नजर आए, उसे दूर करने का जरिया निकालें. इस से समय पर बच्चों को पाठ्यक्रम समझने, हल करने एवं याद करने में मदद मिलेगी. इस तरह वे वार्षिक परीक्षा की पर्याप्त तैयारी कर सकेंगे.

कई बार ऐसा भी होता है कि शिक्षक बच्चों को कुंजियां या गाइड खरीदने की सलाह दे बैठते हैं. यह गलत है. अपनी बला गाइड पुस्तकों की मदद से टालना कहां का न्याय है. इस से बच्चे भ्रमित भी हो जाते हैं. अगर बच्चे स्कूल से आ कर गाइड खरीदने की मांग करें तो उन्हें प्यार से समझाइए कि गाइड खरीदना अक्लमंदी का काम नहीं. उन से पूछें कि वे गाइड क्यों खरीदना चाह रहे हैं—महज देखादेखी, अध्यापक के कहने पर या फिर विषय समझ में न आने के कारण. जो विषय उन्हें समझ न आ रहा हो उसे समझाने का भरसक प्रयास करें.

बच्चे पिता से मार्गदर्शन पा कर खुश होते हैं. तब उन्हें पिता के साथ घनिष्ठता का बोध होता है. उन्हें लगता है कि वे भी घर के महत्त्वपूर्ण सदस्य हैं तभी तो पिता उन पर भी ध्यान देने लगे हैं, उन की पढ़ाई में दिलचस्पी लेने लगे हैं. उन के चरित्र एवं भविष्य की उन्हें चिंता है. और इतनी सी सहानुभूति उन्हें समझदार बनाने में बड़ी भूमिका निभाती है.

अगर बच्चे खुश रहें तो अपनी किलकारियों से घर में रोचकता उत्पन्न कर देते हैं. घर का पर्यावरण आनंदमय हो उठता है, जिस की सुरभि से बड़ों का मन भी प्रफुल्लित हो उठता है और इस तरह घर में खुशहाली का माहौल बन जाता है, जो दूसरों के लिए भी उदाहरण बन सकता है.

जब दो सहेलियां आपस में मिलती हैं तो अकसर पति एवं बच्चों की चर्चा करती हैं. बच्चों के सामने ही अगर उन की बात बतानी हो तो आप उन की प्रशंसात्मक चर्चा ही करें. बच्चों के सामने अगर बच्चों की आलोचना की जाए तो वे अपराध बोध महसूस करने लगते हैं. स्वयं तो दुखी एवं पीड़ित होते ही हैं, आप को भी परेशान करने की नीयत से जिद्दी भी हो जाते हैं और जबतब आप को दुखी करने के लिए उलटेसीधे कार्य भी करने लगते हैं. अतः सावधानी निहायत जरूरी है.

दूसरों के सामने प्रशंसा करें

दूसरे के सामने अपनी प्रशंसा सुन कर बच्चे अवश्य ही उत्साहित एवं प्रेरित होते हैं और आप को अधिक सुख पहुंचाने की दृष्टि से आप के मनोनुकूल कार्य करने लगते हैं. वे चिंता एवं तनावों से मुक्त हो कर पढ़ाई में अधिक मन लगाते हैं ताकि उन का परीक्षाफल अच्छा रहे और वे आप का और अधिक लाड़दुलार प्राप्त कर सकें.

मगर जरूरत से ज्यादा प्रशंसा भी न करें. अन्यथा कभीकभी बच्चे घमंडी हो जाते हैं. यह भी घातक स्थिति होती है.

कभीकभी ऐसा भी हो सकता है कि आप की सहेली के बच्चे ज्यादा होशियार और सलीकेदार हों तब बातों ही बातों में कारण जानने की कोशिश कीजिए और फिर अपने बच्चों के सामने सहेली के बच्चों की प्रशंसा कीजिए. साथ ही समझाते हुए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपनी त्वचा पर जो आप देख न पायें

लॅक्मे के क्लेन्ज़रों को वो सब नज़र आये.

आपके रोमछिद्रों में गहरे तक जो धूल और मैल छिपा है, उसे साफ़ करना साबुन के बस में नहीं. इस मैल और बासी मेकप से छुटकारा पाने के लिये आपकी त्वचा को ज़रूरत है लॅक्मे क्लेन्ज़रों की – हर रोज़ फिर अपनी त्वचा पर देखिये स्वच्छता की खूबसूरत झलक! सामान्य या सूखी त्वचा के लिये लॅक्मे डीप पोर क्लीन्जिंग मिल्क और तैलीय त्वचा के लिये नया लॅक्मे एक्टिव क्लेन्ज़र.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बच्चों में चित्रकारी, बागवानी, गृहसज्जा, खेलकूद आदि रुचियों को विकसित करने में मदद कीजिए ताकि वह खाली समय का सदुपयोग कर सकें

कारण बताइए कि वे इतने होशियार क्यों हैं. उन के होशियार होने का रहस्य क्या है. और तब बातोंबातों में उन्हें निशाना बनाते हुए समझाइए कि ऐसा कुछ करने से वे भी उतने ही होशियार, समझदार और सलीकेदार हो सकते हैं. अगर आप के बच्चे आप को प्यार करते हैं, आप की बातों को महत्त्व देते हैं तो निश्चित रूप से आप की सलाह का लाभ उठाएंगे.

ऐसी बात भी नहीं कि सिर्फ बच्चों को ही सलाह की जरूरत होती है, कभीकभी गृहिणियों को, बच्चों के मातापिता को भी सलाह की जरूरत होती है. आधुनिक मातापिता अकसर आया या नौकर की देखरेख में बच्चों को छोड़ कर कहीं भी चले जाते हैं. जब बच्चों को स्कूल से लौटने पर मां के दुलार की जरूरत होती है तब पता चलता है कि आधुनिक मम्मी किसी किटी पार्टी में गई हैं या फिर खरीदारी करने या फिर सहेलियों के साथ सैरसपाटे पर गई हैं. इस का बच्चों के कोमल मस्तिष्क पर बुरा असर पड़ता है.

इसी प्रकार कई परिवारों में पिता का जरूरत से ज्यादा कठोर रुख रहता है. घर में सभी सदस्य उन से बात करने में भय खाते हैं तो बच्चों की क्या बिसात. जब बच्चे चाहते हैं कि वे पिता के साथ मनोरंजन करें, आत्मीयता के कुछ क्षण बिताएं तो पता चलता है कि पिता तो किसी क्लब में गए हुए हैं तब मां की खीज और पिता की उपेक्षा उन के लिए असह्य हो जाती है. यह उपेक्षा उन के मन में घृणा के बीज बो देती है. तब वह प्यार एवं सहानुभूति की खोज में कभीकभी बुरी संगत में पड़ जाता है, बुरी आदतों का भी शिकार हो जाता है.

बच्चों को गुमराह करने वाले लोगों की संसार में कमी नहीं होती. मौका पाते ही कोई भी आप के बच्चों को बिगाड़ सकता है. अतः मातापिता को चाहिए कि वे अपने बच्चों को उचित संरक्षण दें, समयसमय पर उन्हें उचित मार्गदर्शन दे कर प्रेरित एवं उत्साहित करते रहें. बच्चों को अच्छे व्यक्तित्व का धनी बनाने के लिए उन के सामने स्वयं उदाहरण बनना अत्यंत आवश्यक है.

गृहिणियों को भी बच्चों के हित में स्वयं पर पूरा नियंत्रण रखना चाहिए. बच्चों को चरित्रवान बनाने से पहले उन्हें भी तो एक अच्छे एवं दृढ़ चरित्र का मालिक होना चाहिए. अगर आप चाहती हैं कि आप के बच्चे सवेरे जल्दी उठ कर पढ़ाई करें तो आप को पहले स्वयं उठ कर उन्हें प्यार से उठा कर उन के हाथमुंह धुलाना होगा, फिर गरमगरम चाय, दूध आदि दे कर पढ़ने के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहना होगा. धीरेधीरे उन्हें स्वयं जल्दी उठने व पढ़ने की आदत पड़ जाएगी.

बच्चे बड़ों की नकल करते हैं. इसी क्रम में अगर आप चाहते हैं कि आप के बच्चों की लिखावट सुंदर एवं साफसुथरी हो तो पहले आप को स्वयं अपनी लिखावट सुंदर एवं आकर्षक बनानी होगी. पढ़ाई में अच्छी लिखवाट का काफी महत्त्व होता है.

इसी तरह बच्चों के पढ़ने का कमरा स्वच्छ, हवादार, नमीरहित एवं आकर्षक होना चाहिए, ताकि वहां उन का मन देर तक लगे. समयसमय पर बच्चों को भी स्वच्छता का महत्त्व समझाना चाहिए ताकि पढ़ाई करते समय वे कमरे को गंदा न करें. इस के लिए उन के कमरे में आप कचरापेटी अवश्य रखें ताकि कचरा फेंकने के लिए उन्हें उठ कर बारबार बाहर न जाना पड़े क्योंकि इस से पढ़ाई में ध्यान बंटता है.

रोशनी का पढ़ाई से गहरा संबंध होता है. अगर बच्चों का कमरा जरूरत से ज्यादा रोशनी वाला हो तो गहरे रंग के परदे खिड़की, दरवाजों पर लगाएं, किंतु कमरा ठीक रोशनी वाला है तो हलके पीले रंग के छींटदार परदे लगाएं.

इसी प्रकार रात में पढ़ाई करने के लिए भी कमरे में उचित रोशनी की कृत्रिम व्यवस्था करें. वैसे तो बच्चों को कुरसी में बैठ कर ही पढ़ने की आदत डलवाएं. मरकरी लाइट हमेशा कुरसी के पीछे की ओर होनी चाहिए ताकि आंखों पर सीधी रोशनी की किरणें न पड़ें. एक समस्या मच्छरों की भी होती है. अतः आप मच्छरों से बचाव की उचित व्यवस्था करें. जैसे समयसमय पर मच्छरमार दवाई छिड़कें, मच्छर भगाने के उपकरणों, साधनों का इस्तेमाल करें.

पढ़ाई में व्यवधान

जब बच्चे पढ़ाई कर रहे हों और मेहमान घर पर आ जाएं तो जोरजोर से वार्तालाप न करें, न ही जोरजोर से ठहाके लगाएं. मेहमानों को भी जोर से बात करने पर टोकें, नम्रतापूर्वक समझा दें कि आप बच्चे पढ़ाई कर रहे हैं.

सब से महत्त्वपूर्ण एवं ध्यान में रख की बात यह है कि उन्हें दिनभर पढ़ने को कहें. छुट्टी के दिन बच्चों के साथ पिकनि आदि का प्रोग्राम बनाइए. इस से नीरस दूर होती है.

दिन में एक बार बैठ कर उस के सा गपशप अवश्य कीजिए और रस ले क सुनिए कि वह क्या सुनाना चाहता है. बात ही बातों में उस के मन की थाह ले लीजि उस का कोमल मन हलकाफुलका हो जाएगा, तब वह मन लगा कर पढ़ाई करेग जो कुछ भी वह पढ़ेगा उसे शीघ्र ही याद हो जाएगा.

अकसर बच्चे का मनपसंद खाना बन कर उसे खिलाएं. इस से भी उसे लगता है कि उस की मां उसे अत्यधिक प्यार करत है, तब वह मां की खातिर पढ़ाई में ज्यादा मन लगाता है.

स्कूल जाते समय कपड़े आदि चुनने उस की मदद करें और कभीकभी यह भी बताएं कि किस परिधान में वह ज्याद आकर्षक लगता है. थोड़ी सी सलाह उ काफी सुखानुभूति देती है. वह जो बात आईने के सामने घंटों खड़े रहने के बाद भी समझ नहीं पाता, आप की सलाह से फौरन समझ जाता है. यह भी एक रोचक सत्य है कि हर कोई दूसरों की नजरों में सुंदर आकर्षक एवं स्मार्ट लगना चाहता है. अपने बच्चे का व्यक्तित्व बनाने में आप भी गुरु का काम करें.

अकसर बच्चों से उत्साहवर्धक ज्ञानवर्धक चर्चा करें. कभीकभी प्रेरक लोगों की प्रेरणास्पद जीवनियां उन्हें सुनाएं. जीवन में कठिनाइयों से किस तरह से दोचार होना चाहिए, यह भी समझाएं, संघर्ष करना सिखाएं. वे आप से प्रेरित होंगे. तब उन्हें घर में शांति महसूस होगी, घर वालों से, आप से अपनापन महसूस होगा और तब अपनी खातिर, आप की खातिर मनोयोग से पढ़ाई भी करेंगे.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्यारा रसना
मम्मी की
किटी पार्टी में

प्यारा रसना
नवरात्रि में

प्यारा रसना
पापा की
प्रमोशन पार्टी में

प्यारा रसना
मेरी फैंसी ड्रेस
पार्टी में

प्यारा रसना
दीदी की
शादी में

प्यारा रसना
मेरे
जन्मदिन पर

ऑरेंज पाइनेपल [illegible] गुलाब कटला [illegible] केसर इलायची गेंदा (ज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्यारा रसना
मेरी गुड़िया की
पार्टी में

रसना पीने के ढेर
सारे मौके और भी
हैं. इस पेज में इतनी
जगह कहाँ है कि
उन सबको गिनाऊँ!

प्यारा रसना
और
मज़े के दिन

आइ लव यू रसना

पहला
IS 12019
ISI
प्रमाणित
सॉफ्ट ड्रिंक
कॉन्सेंट्रेट
इसमें
बी.वी.ओ. नहीं है

...यची ■ ...ोडा (जल जीरा) ■ टूटी फ्रूटी ■ मैंगो राइप

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

झुलसाती गरमी में भी
ठंडक का अहसास जगाए

सरिता

पर्यटन विशेषांक

अप्रैल (प्रथम) 1991

घर बैठे ही देश भर के 40 से अधिक पर्वतीय पर्यटन स्थलों की जानकारी

सरिता पर्यटन विशेषांक पर्यटन का मजा दोगुना करे, सटीक व सही जानकारी दे तथा पर्यटन कार्यक्रम बनाने में सहयोग दे. तभी तो हर वर्ष लाखों लोग सरिता पर्यटन विशेषांक पढ़ने के बाद ही अपना पर्यटन कार्यक्रम बनाते हैं. हरिद्वार, मसूरी, ऋषिकेश, बदरीनाथ, केदारनाथ, गंगोत्री, यमुनोत्री, नैनीताल, रानीखेत, कौसानी, आगरा, खजुराहो, माउंट आबू, पचमढ़ी, जम्मू, शिमला, कुल्लू, मनाली, डलहौजी, चंबा, धर्मशाला, अजंताएलोरा, बंबई, कोणार्क, पुरी, मद्रास, ऊटी, कोडाइकनाल, मैसूर, दार्जिलिंग आदि पर्यटन स्थलों पर जाने, रहने, खानेपीने, घूमने की संपूर्ण जानकारी रंगीन चित्रों सहित.

इन के अतिरिक्त संपूर्ण परिवार का मनोरंजन करने वाली 8 कहानियां, कई अन्य लेख, मर्मस्पर्शी कविताएं, फिल्म समीक्षाएं तथा सभी स्थायी स्तंभ.

पर्यटन में आप का हमसफर पर्यटन विशेषांक

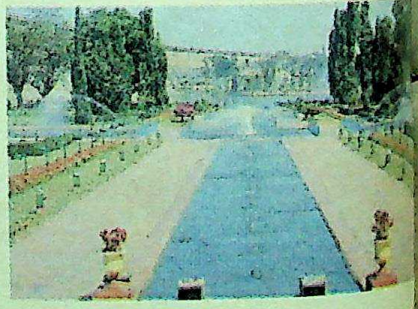

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

लेख ● समोदर अग्रवाल
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विदेशी पुस्तकों को पढ़ने से बच्चे अंगरेजियत, अनास्थावादी तथा शंकालु मानसिकता के शिकार ही नहीं बन रहे अपितु उधार की सभ्यता, संस्कृति और भावनात्मक परिवेश में जी रहे हैं. उन्हें इस स्थिति से बचाने के लिए यह जरूरी है कि उन्हें विदेशी नहीं, रोचक देशी पुस्तकें उपलब्ध कराई जाएं.

बच्चों को विदेशी पुस्तकें न दें

अंगरेजियत को हम कोई बुरी चीज नहीं मानते, पर जब उस से भारतीयता को आंच आने लगे तो हमारा चौंकना स्वाभाविक होता है. 'चाचा' जैसे स्नेहपूर्ण और परम आत्मीय संबोधनों को जब 'अंकल' जैसे रूखे और बेमानी संबोधनों में बदला जाने लगे तो यह सोचना जरूरी हो जाता है कि आखिर यह क्यों हो रहा है?

इस के कई कारण हो सकते हैं. लेकिन एक बड़ी वजह यह है कि अपने यहां ऐसी बाल पुस्तकों के प्रकाशन, विक्रय और पठनपाठन की परंपरा का न पैदा होना, जो बच्चों के

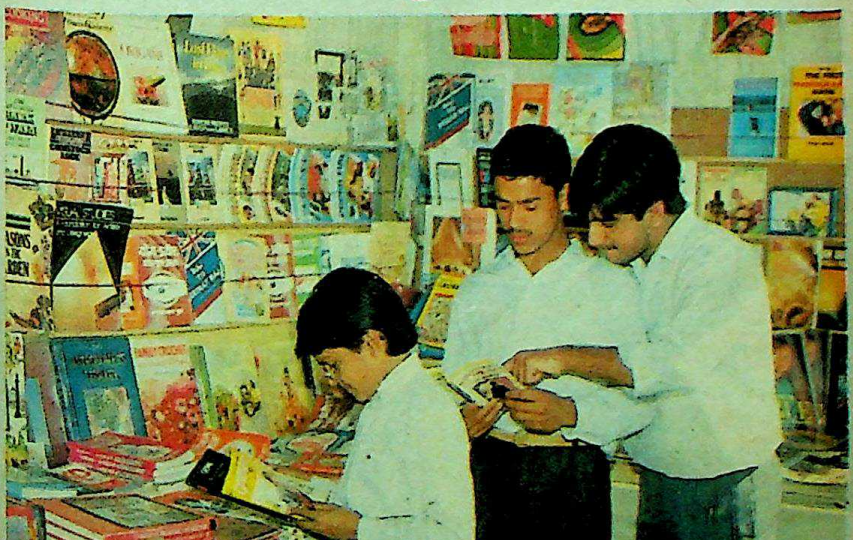

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संस्कारों को सजातेसंवारते हुए उन में आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टि पैदा करे, परंतु साथ ही उन्हें भारतीयता के नजदीक भी रखे. इसी का यह नतीजा है कि हमारे बच्चे अंगरेजी में लिखी विदेशी पुस्तकों की ओर लपकते हैं और वे उधार की सभ्यता, संस्कृति और भावनात्मक परिवेश में जीने लगे हैं.

पुस्तक विक्रेताओं की दुकानों और पुस्तक मेलों में अंगरेजी का बाल साहित्य अधिक बिकता है. यह साहित्य न तो भारतीय जीवन दृष्टि को व्यक्त करता है, न भारतीय इतिहास या समाज का परिचय देता है. इस में न तो हमारी अपनी कमजोरी झलकती है और न ही हमारी ताकत. इन चटकीली पुस्तकों को बेचने वालों का वास्ता भी बिक्री के ग्राफ से होता है, पाठक पर पड़ने वाले संस्कार से नहीं.

देश की वास्तविकता और अस्मिता को प्रतिबिंबित करती हुई ऐसी पुस्तकें अपने यहां भी छपनी चाहिए फिर चाहे वे हिंदी और भारत की अन्य भाषाओं के अलावा अंगरेजी में भी क्यों न हों. इस से शायद हम अपने बच्चों को उस सांस्कृतिक खतरे से बचा सकें, जिस की गंभीरता का आभास हमें अभी नहीं है.

25-30 साल पहले शायद नेहरूजी की प्रेरणा से बच्चों के लिए किताबों के प्रकाशन का एक दौर चला था. उस समय अंगरेजी, हिंदी, बंगला, मलयालम, मराठी और कुछ दूसरी भाषाओं में बच्चों के लिए सैकड़ों पुस्तकें नेशनल बुक ट्रस्ट, चिल्ड्रन बुक ट्रस्ट, भारत सरकार के प्रकाशन विभाग, अकादमियों और निजी प्रकाशकों ने छापीं, पर इन में ज्यादातर पुस्तकें उपयोगी वर्ग की हो कर रह गईं. उन में वह बात नहीं आ पाई, जिस की वजह से देश के बच्चे इनिड ब्लाइटन, केरोलाइन कीन और अल्फ्रेड हिचकाक की ओर मुड़ते हैं.

अब तो वह दौर भी उतार पर है और अपने यहां छपने वाली 20,000 किताबों में बाल पुस्तकों की संख्या कुछ सौ से ऊपर नहीं पहुंच पाती है. यह कहना शायद अतिरंजना न हो कि 'नेन्सी ड्यू' या 'हार्डी बायज' जैसा एक भी स्वदेशी चरित्र हम गढ़ नहीं पाए हैं. इसी लिए देश के ढाई लाख स्कूली पुस्तकालयों में कई करोड़ स्कूली बच्चों के लिए आयातित पुस्तकों की भरमार है.

रूप सज्जा की दृष्टि से ये आयातित पुस्तकें मुख्यतः दो प्रकार की हैं. आकर्षक मोटी जिल्दों से सजी कईकई जिल्दों वाली संदर्भ और ज्ञान विज्ञान की पुस्तकें और पेपरबैक में प्रकाशित सुलभ बाल उपन्यास और बाल कहानियां. इन में रंगीन चित्रों से मंडित परीकथाएं भी हैं और मशीनों, अंतरिक्ष यानों और कंप्यूटरों से संबधित आधुनिक ज्ञानवर्धक, सूचनापूर्ण अन्य किताबें भी.

वास्तविक माहौल से दूर

जो बात हम यहां जोर दे कर कहना चाहते हैं, वह यह है कि इन पुस्तकों में सब कुछ तो है, पर 'भारत' नहीं है. पात्रों के नाम विदेशी, स्थान विदेशी, अनुभव विदेशी. जाहिर है कि इन पुस्तकों को पढ़ने वाला भारतीय बच्चा एक भीतरी अजनबीपन का शिकार हो कर अपने वास्तविक माहौल से अकेला पड़ जाता है. वह जो कुछ इन किताबों में देखता है, उसे अपने परिवेश में न पा कर अनास्थावादी मानसिकता का शिकार भी हो जाता है.

कहां हैं, इन किताबों में अपने देश के पक्षी, फूल, नदियां, पहाड़ और शहर? अपने देश के गांव, जंगल और आसमान? अपने देश की रंगारंग बोलियां और कपड़े? देश के मधुर व्यंजन और खानपान? अपने संबंधों के दायरे और उन दायरों में घटित होते हमारे खट्टेमीठे अनुभवों का ऊंचानीचा तानाबाना?

अगर उन में ये नहीं है तो क्या अपने बच्चों को ये किताबें पढ़ाना उन्हें एक परदेसी भावना में बंदी बना देना न हुआ? क्या उन्हें अपने से काट देना न हुआ? यहां हम एक बार फिर कह दें कि हम अंगरेजी भाषा में लिखी पुस्तकों का विरोध नहीं कर रहे, हम सिर्फ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

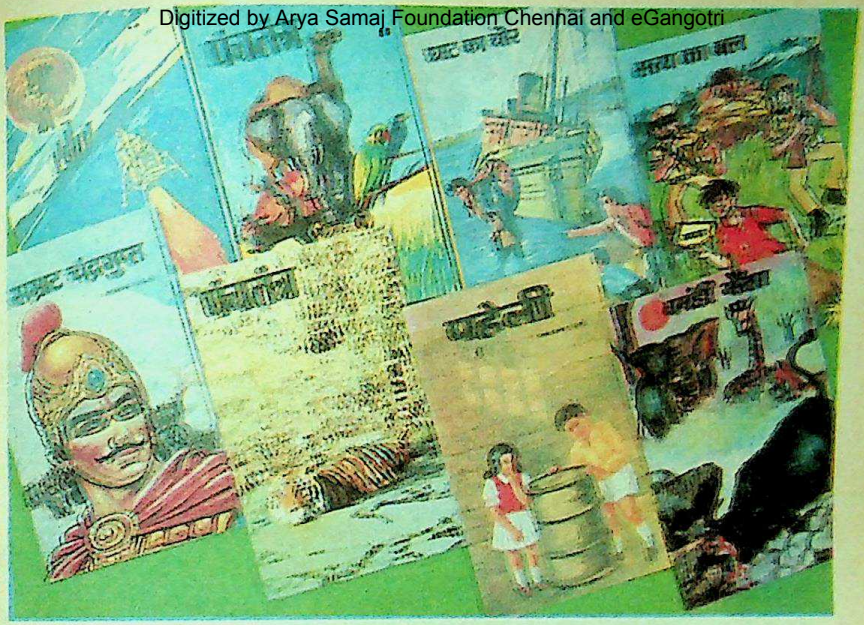

यह कह रहे हैं कि जिन पुस्तकों में अपने देश और परिवेश की पहचान न हो और जिन्हें पढ़ कर सांसों में ऐसी हवा रचनेबसने लगे जो अपनी नहीं है तो ऐसी पुस्तकों की हमें जरूरत क्या है?

इन पुस्तकों के आयात और विक्रय के पक्ष में इन के कुछ रचनात्मक गुण ही पेश किए जा सकते हैं. इन से बच्चे बोलचाल की स्वाभाविक अंगरेजी तो सीखते ही हैं (जिस का विरोध हम नहीं करते), बाल मनोविज्ञान की बारीकियों से भरी कहानियां पढ़ कर खुश भी होते हैं.

हिंदी या किसी अन्य भारतीय भाषा के मुहावरे में ढली 'इंडियन अंगरेजी' से बचने की शक्ति भी शायद इन्हीं पुस्तकों के जरिए उन में पैदा होती है. बालकों के शौक, शरारत और बाल सुलभ मासूमियत की भी एक पूरी दुनिया इन पुस्तकों में होती है. साहसिकता, जिज्ञासा, कल्पनाशीलता जैसी खूबियों को भी ये किताबें उजागर करती हैं. 'हम भी कुछ हैं या हम भी कुछ कर सकते हैं' का आत्मविश्वास भी ये उन में जगाती हैं.

लेकिन भारतीय बच्चों में भावनात्मक स्थिरता पैदा करने में ये किताबें लगभग पूरी तरह से विफल रही हैं और जिस तरह के पारिवारिक अथवा स्कूली जीवन का चित्र ये पेश करती हैं, वह हमारे लिए झूठ या नकली है. इस कारण इन्हें पढ़ कर कच्चे मन से पाठकपाठिकाओं का मन अपनेआप से उचटता है और वे अपने हर अनुभव को शंका की नजर से देखने की मानसिकता ले कर बड़े होने को विवश हो जाते हैं.

कभीकभी तो वे अपने घर में उसी तरह के मातापिता और भाईबहन और स्कूल में उसी तरह के अध्यापक और सहपाठी तलाशने लगते हैं जो इन पुस्तकों में हैं और उन्हें न पा कर खीजते और परेशान होते हैं. अपने देश में बच्चों के संस्कारों से सरोकार रखने वाली पुस्तकें छापने वाले प्रकाशन संस्थानों की कोई बहुत कमी नहीं है, पर उन की नीतियां सही नहीं हैं.

हिंदी तथा क्षेत्रीय भाषाओं में ऐसी पुस्तकें लिखी जाएं जो सच का सुख भी दें और कल्पना का आनंद भी, तभी बच्चे विदेशी पुस्तकों का मोह त्याग पाएंगे. ▲

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इतिहास और विज्ञान की पुस्तकें और चुने हुए लोगों की जीवनियां छाप कर वे धन्य हो लेते हैं. स्कूली पाठ्यक्रमों में लगने और पैसा देने वाली किताबें भी वे बड़े चाव से छापते हैं. भूगोल, गणित और भाषा सिखाने वाली पुस्तकों की भरमार रहती है. इन से बच्चे इतिहास तथा ज्ञानविज्ञान तो सीखते हैं, पर उन में उन्हें अपनी तसवीर नहीं दिखाई देती.

वे क्या जानना चाहते हैं, क्या करना चाहते हैं, क्या कहना चाहते हैं, इस की कोई झलक उन्हें इन में नहीं मिलती. सब से बड़ी मुशकिल शायद यही है और इसी के चलते उन्हें आयातित किताबों से नाता जोड़ना पड़ता है. हितोपदेश या पंचतंत्र की कथाएं साबित करती हैं कि पहले हमारे यहां यह कमी नहीं थी और अपने ही देश के पशुपक्षियों के जरिए उन्हें बहुत कुछ सिखापढ़ा दिया जाता था.

स्वतंत्र साहित्यिक परंपरा

जरूरत इस बात की है कि मनोवैज्ञानिक दृष्टि से लिखी गई सैकड़ों ऐसी कथाकहानी और कला की पुस्तकें हमारे परिवारों और स्कूलों में पहुंचें, जो बच्चों के अपने ही जीवन, अपनी ही कमजोरियों, मजबूरियों और अपनी ही आकांक्षाओं का आईना हों.

उन में उन की नाराजगी और खुशी, विद्रोह और समर्पण सब कुछ उसी रूप में हो, जिस रूप में वह वास्तव में घटता है. वे ऐसी लिखी जाएं कि सच का सुख भी दें और कल्पना का आनंद भी. यह काम न आसान है, न छोटा और यह तभी हो सकता है जब देश के बड़े लेखक भी अपनी पूरी सूझबूझ और सर्जनात्मक प्रतिभा के साथ बच्चों और किशोरों के लिए ऐसे लेखन की एक स्वतंत्र साहित्यिक परंपरा का निर्माण करें.

लेकिन अभी ऐसा नहीं हो रहा है और बाल पाठक अच्छी कहानी और कविता से लगभग पूरी तरह से वंचित हो रहा है. इसलिए वह अच्छे संस्कारों की बुनियादी जरूरत से भी वंचित है. इस के विपरीत बारबार सुनाई जाने वाली परीकथाओं, दादीनानी की कहानियों और अदलबदल कर छपने वाली चित्रकथाओं के जरिए उन्हें जो कुछ मिल रहा है, वह उस के मन को मायावी दुनिया में अटका कर यथार्थ से दूर ले जाता है.

दूसरी ओर बहुत से बच्चे हिंदी में छपी इन पुस्तकों के मामूलीपन से जल्दी ही ऊब कर अंगरेजी के रास्ते पर चलने को मजबूर हो जाते हैं. वे हिंदी किताबों और पत्रपत्रिकाओं को दूसरे या तीसरे दर्जे की चीजें समझते हुए यह स्थायी धारणा बना लेते हैं कि हिंदी में कभी कुछ अच्छा हो ही नहीं सकता.

सच पूछिए तो हिंदी में या शायद किसी भी भारतीय भाषा में बच्चों के लिए किताबों का खयाल अभी कोई तार्किक रूप ले कर उभरा नहीं है. हम उन के लिए अच्छे खिलौनों, अच्छे खानपान और दवादारू की जरूरत को तो धीरेधीरे समझने लगे हैं, पर कुछ नया लिखने या छापने की बात से कतराते हैं.

कहानी, कविता या नाटकों की इक्कीदुक्की किताबें छपती भी हैं तो वे बहुत कम इस लायक होती हैं कि अपनी पहचान बना सकें. साथ ही वे यह धारणा भी ले कर चलती हैं कि बच्चे सही राह पर नहीं हैं और उपदेश देने लग जाती हैं. कुल मिला कर यह सब वैसा ही हो कर रह जाता है, जिसे दार्शनिकों ने 'अंधेरे कमरे में गैरमौजूद काली बिल्ली को खोजना' कहा है.

इधर कुछ वर्षों से हमारी बाल पत्रिकाएं भी विदेशी कहानियां और विदेशी नाटक छापने लगी हैं. वे ऐसा करने को मजबूर शायद इसलिए हैं कि अपने देश के लेखक बच्चों के लिए लिखना पसंद नहीं करते. जो लिखते भी हैं (अंगरेजी लेखक आर.के. नारायण और रस्किन बांड जैसे) वे अपनी किताबें विदेशों में छपवाना ही ज्यादा श्रेयस्कर समझते हैं. क्या इस स्थिति को बदलने की चेष्टा नहीं की जा सकती?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीवन के रंग अजीब...

शुक्र है बोरोलीन करीब

बोरोलीन

खुशबूदार ऐन्टिसेप्टिक क्रीम

सूखी त्वचा और साधारण कटने-छिलने पर अनोखा असर

जी डी फार्मास्युटिकल्स
कलकत्ता ७०००५३

साठ साल पहले अव्वल
आज भी अव्वल

बोरोलीन प्रसाधन सामग्री नहीं

Response 1075

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिनोंदिन बच्चों में रटने की प्रवृति के बढ़ने का एकमात्र कारण है—अंगरेजी भाषा का बोझ लाद देना और बच्चे से उस भाषा में एकदम पारंगत हो जाने की आशा करना. नए ज्ञान के साथ नई भाषा को सीखने का बोझ उस के कोमल मस्तिष्क पर दुष्प्रभाव डालता है तो फिर क्यों न पांचवीं कक्षा तक शिक्षा का माध्यम मातृभाषा हो.

पड़ोस की बच्ची कुछ काम से हमारे घर आई थी. मैं ने उस से कहा, "बहुत दिनों से दिखाई नहीं दी. आजकल तो गरमी की छुट्टियां हैं, दिन में इधर खेलने आ जाया करो, मुझे अच्छा लगता है." तो वह उत्तर में बोली, "मौसी आने को तो मेरा मन भी करता है पर क्या करूं, पढ़ना ही इतना होता है, खेलने का समय ही नहीं मिलता."

सोच सकते हैं उस बच्ची की उम्र क्या होगी? अभी उसे पांच साल पूरे करने में दो महीने बाकी हैं, और वह पिछले महीने ही पहली कक्षा में आई है. यदि हम पहली कक्षा

लेख ● उषा वधवा

शिक्षा का माध्यम पांचवीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में पढ़ने वाले बच्चे को भी खेलने का समय नहीं देते, वह भी गरमी की छुट्टियों में तो निश्चय ही हमारी शिक्षा नीति में कहीं कोई गहरी भूल है और हम अपने बच्चों के प्रति देश के भावी नागरिकों के प्रति, एक संगीन जुर्म कर रहे हैं.

आखिर क्या कारण है हमारे बच्चों के कंधों पर इस अतिरिक्त बोझ का? क्यों बच्चों को पूरा दिन अपनी पुस्तकों पर झुके ही बिताना पड़ता है? यदि गौर किया जाए तो पाएंगे कि अंगरेजी माध्यम के तथाकथित पब्लिक स्कूलों में पढ़ने वाले बच्चों के साथ ही यह समस्या कुछ अधिक है. इस का मुख्य कारण यही है कि बच्चों की शिक्षा का माध्यम एक ऐसी भाषा है जो उन के लिए नई और अजनबी है. यदि बच्चों की प्रारंभिक शिक्षा का माध्यम अंगरेजी न हो कर, उन की अपनी समझ में आने वाली मातृभाषा में हो तो उन का बोझ आधा हो जाए.

बच्चे को स्कूल में डालते ही उसे गिनती अथवा नर्सरी गीत सिखाए जाते हैं. वे अंगरेजी में ही होते हैं, एक ऐसी भाषा में जिस का एक भी शब्द वह समझ नहीं पाता. वह हर आने जाने वाले के सम्मुख तोते की तरह 'जैक एंड जिल' दोहरा तो देता है पर उस कविता का क्या आशय है, वह क्या बोल रहा है, यह उसे नहीं पता होता. अभी तक

तक मातृभाषा में हो

उस ने घर के सदस्यों के साथ, रिश्तेदारों, मेहमानों के साथी, बाजार में दुकानदार के साथ, राह चलते साथी के साथ हिंदी में अथवा अपनी मातृभाषा में बात की होती है.

घर में यदि उस ने अपनी मातृभाषा बोली, सुनी हो तो भी बाहर संगीसाथियों के साथ, राहबाजार में अतिथियों के साथ हिंदी बोली होती है, अतः उस का व्यावहारिक ज्ञान उसे होता ही है. पर स्कूल में घुसते ही उस के कोमल मस्तिष्क पर आवश्यकता से एकदम दोगुना बोझ डाल दिया जाता है, एक नए ज्ञान का बोझ. चाहे वह गिनती हो, कविता हो, कोई विषय हो, इस का बोझ तो उस पर है ही पर जो चीज एकदम गैरजरूरी है वह है एक नई भाषा सीखने का बोझ. तिस पर मुसीबत यह कि ये दोनों काम एक साथ उस पर लाद दिए जाते हैं. वह स्वयं को एक नितांत अजनबी भाषा के मध्य पाता है और फिर यह आशा की जाती है कि वह उस का सही व्याकरण एकदम से जान ले, स्वयं को उस में अभिव्यक्त करने में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुशल हो जाए, रातोंरात.

यदि आप का पूरा पाठ्यक्रम कल से लेटिन या ग्रीक में बदल दिया जाए तो आप उसे निभा पाएंगे क्या? ठीक ऐसा ही खेल उस अर्द्धविकसित मस्तिष्क के साथ खेला जाता है. इस पर भी हम मातापिता अपेक्षा यह करते हैं कि वह कक्षा में बहुत अच्छे नंबर लेता रहे.

एकमात्र विकल्प

बच्चे जब एक नई भाषा में अपनी शिक्षा की शुरुआत करते हैं तो उन्हें एक हानि यह भी होती है कि उन में रटने की प्रवृत्ति पैदा हो जाती है. जिस बात को वे समझ नहीं पाते उसे रट कर याद रखना ही उन के लिए एकमात्र विकल्प रह जाता है, जो उन के पूरे स्कूली जीवन में चलता है. आठवीं, दसवीं कक्षा के बच्चों को लेख, प्रश्नोत्तर आदि रट कर याद करते अकसर देखा जाता है. घर में प्रयोग में न आने के कारण अंगरेजी को वे सहज रूप में नहीं ले पाते. अतः रटना उन के लिए अनिवार्य हो जाता है.

रट कर पास होने और भाषा को न समझ पाने से एक प्रमुख हानि यह भी होती है कि बच्चे की कल्पनाशक्ति का विकास नहीं हो पाता. जो बच्चा रटीरटाई, नर्सरी की कविता सुना रहा है, उसे समझ नहीं पा रहा है तो उस की कल्पनाशक्ति कुंठित होगी ही.

बच्चा जब समझ में आने वाली भाषा में कहानी कहेगा, सुनेगा तो वह स्वयं को उन पात्रों का ही एक अंश मानेगा. परियों, राक्षस कैसे हो सकते हैं, अंधेरी गुफा में जंगली जानवर का सामना होने पर कैसा महसूस हो सकता है इत्यादि स्थितियों को वह अपनी कल्पनाशक्ति से जीवंत करेगा, जबकि अंगरेजी में पढ़ी कहानी, कविता में वह सिर्फ शब्द ध्वनि ही महसूस कर सकेगा.

कल्पनाशक्ति का विकास बच्चे की शिक्षा का मुख्य अंग होना चाहिए. यह उस के व्यक्तित्व के निखार के लिए अत्यंत आवश्यक है. पर अजनबी भाषा में ऐसा नहीं हो पाता, हो ही नहीं सकता.

विदेशी भाषा में ज्ञान सिखा कर हम उन कोमल मस्तिष्कों पर जबरदस्ती ही अतिरिक्त बोझ डाल देते हैं, एक ऐसा बोझ जिस से आसानी से बचा जा सकता है. इस अतिरिक्त बोझ के परिणामस्वरूप ही बच्चों को पढ़ाई के नाम से अरुचि होने लगती है. वे पढ़ाई को हौआ मानने लगते हैं.

इस के अतिरिक्त, बच्चे की शिक्षा सहज ग्राह्य भाषा में न होने के कारण वह स्वयं को किसी भी भाषा में ठीक से अभिव्यक्त नहीं कर पाता. बोलचाल की भाषा का उसे साहित्यिक ज्ञान नहीं हो पाता और स्कूल में पढ़ी भाषा वहीं स्कूल तक सीमित रह जाती है. प्रतिदिन के प्रयोग में न आने के कारण उस में प्रवाह नहीं आ पाता.

पब्लिक स्कूल में अंगरेजी भाषा में पढ़े बच्चों के साथ एक हास्यास्पद स्थिति पैदा हो जाती है. वे बोलते समय हिंदी में सरलता से स्वयं को अभिव्यक्त कर सकते हैं पर ज्यों ही उन्हें कुछ लिखना हो चाहे वह अपने सहोदर अथवा मातापिता के लिए पत्र ही क्यों न हो, तब वे अंगरेजी में लिखने में ही सहजता महसूस कर पाते हैं.

व्यावहारिक यह रहेगा कि हम बच्चों की प्रारंभिक शिक्षा, उन की समझ में आने वाली भाषा हिंदी में ही दें जिस से उन के कोमल, विकसित हो रहे मस्तिष्क पर बोझ सिर्फ ज्ञान अर्जन का रहे, भाषा सीखने का नहीं.

आप के विचार
प्रतियोगिता

छोटे बच्चों पर शिक्षा का दोहरा भार कम करने में अंगरेजी को प्राथमिक कक्षाओं से हटाना कितना व्यावहारिक है, विषय पर पाठकों के विचार आमंत्रित हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरकारी स्कूल

समस्या सुविधाओं की नहीं शिक्षकों के अनुशासन की

लेख ● इंदु जैन

प्राचीन काल में हमारे देश में शिक्षा के लिए गुरुकुलों की व्यवस्था थी. उस परंपरागत गुरुकुल व्यवस्था में शिक्षक और विद्यार्थी में परस्पर घनिष्ठ एवं निकटतम संबंध हुआ करते थे. अंगरेजी शिक्षा व्यवस्था प्रारंभ होने से पूर्व तक पाठशालाओं तथा मकतबों में भी यह घनिष्ठता काफी हद तक मौजूद थी. लेकिन जब लार्ड मैकाले ने ब्रिटिश राज के दौरान इस देश में अंगरेजी शिक्षा प्रणाली की नींव डाली उस समय अंगरेजी शिक्षा का लक्ष्य सरकारी कर्मचारी तैयार करना था. तब से ले कर आज तक सरकारी विद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों ने इसी लक्ष्य को सामने रख कर ही शिक्षा पद्धति का निर्धारण किया है.

समयसमय पर विद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों के नियमों में, पाठ्यक्रम में और पढ़ाने की शैली में परिवर्तन होता गया परंतु उन का लक्ष्य नहीं बदला. शायद यही कारण है कि आज हमारे विद्यालयों में शिक्षक और विद्यार्थी के संबंध मात्र औपचारिक हो गए हैं. विद्यार्थी शिक्षक की सेवाओं के लिए शुल्क यानी फीस देता है तथा शिक्षक दिन में कुछ घंटे पढ़ाने के बदले वेतन लेता है. इस के अतिरिक्त इन दोनों में और कोई संपर्क नहीं होता.

वर्तमान समय में मुख्य रूप से चार

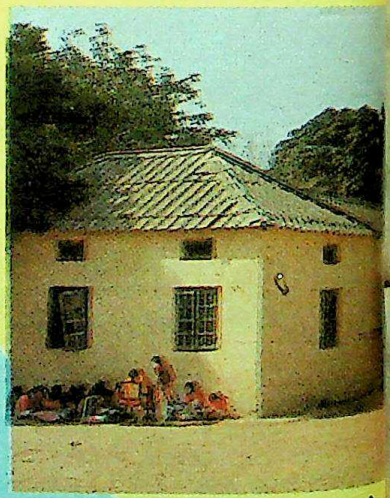

पब्लिक स्कूलों की भांति यदि सरकारी विद्यालयों के शिक्षक भी दृढ़ता से काम लें तो सरकारी विद्यालयों का स्तर भी ऊंचा उठ सकता है.

प्रकार के विद्यालय दृष्टिगोचर होते हैं 1.सरकारी स्कूल, 2. सरकारी अनुदान प्राप्त स्कूल, 3. पब्लिक स्कूल. 4. नवोदय स्कूल. यहां हमारी चर्चा का विषय सि-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरकारी स्कूल है. 96% बच्चे सरकारी स्कूलों में ही शिक्षा प्राप्त करते हैं. ये विद्यालय पूरी तरह से सरकारी खर्च पर निर्भर करते हैं. सरकार एक विद्यालय पर करीब 12 लाख रुपए प्रतिवर्ष खर्च देती है, फिर भी इन विद्यालयों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों को वर्तमान की ही नहीं, भविष्य की भी अनेक समस्याओं से जूझना पड़ता है.

एक कड़वा सत्य यह भी है कि सरकारी विद्यालयों में पढ़े हुए विद्यार्थी हर क्षेत्र में, चाहे वह शिक्षा अथवा खेल का ही क्यों न हो, पिछड़े हुए हैं. इन विद्यालयों में पढ़ने वाले छात्रों में से सिर्फ 2-3% छात्र ही डाक्टर, इंजीनियर, वैज्ञानिक, भारतीय प्रशासनिक सेवा अथवा औद्योगिक संस्थानों में उच्च पदाधिकारी बन पाते हैं. वह भी विद्यार्थी स्वयं की अपनी मेहनत तथा पारिवारिक सहयोग से. किंतु पब्लिक स्कूल में शिक्षित छात्रों का प्रतिशत सरकारी विद्यालयों के छात्रों की अपेक्षा कहीं अधिक है.

इस संबंध में सरकारी स्कूल, झंडेवालान (नई दिल्ली) के मुख्याध्यापक श्री सक्सेना का कहना है, "पब्लिक स्कूल तथा सरकारी स्कूल की तुलना करना एकदम बेमानी सा लगता है क्योंकि पब्लिक स्कूलों में बच्चे बड़ेबड़े व्यावसायिकों, मंत्रियों, अफसरों तथा स्वयं शिक्षकों के भी जाते हैं. उन के घर का वातावरण भी स्वस्थ तथा शिक्षित होता है. मुख्य बात यह है कि इन की पहुंच ऊपर तक होती है. इसलिए यही उच्च पदों पर आसीन हो जाते हैं.

"इस के विपरीत सरकारी विद्यालयों में बच्चे निम्नवर्ग तथा निम्न मध्यमवर्ग से आते है जिन में से अधिकांश छात्रों के घर का वातावरण पढ़ाई के लिए अनुकूल नहीं होता.

पब्लिक स्कूलों की अपेक्षा सरकारी विद्यालयों में पढ़े हुए विद्यार्थी हर क्षेत्र में, चाहे वह शिक्षा अथवा खेल का ही क्यों न हो, पिछड़े हुए हैं. इस का कारण सरकारी विद्यालयों में सुविधाओं की कमी नहीं अपितु अध्यापकों की शिक्षण के प्रति लापरवाही तथा शिक्षा के माध्यम एवं स्तर में अंतर है. जब तक इन कारणों को दूर नहीं किया जाता तब तक सरकारी विद्यालय हेय बने रहेंगे.

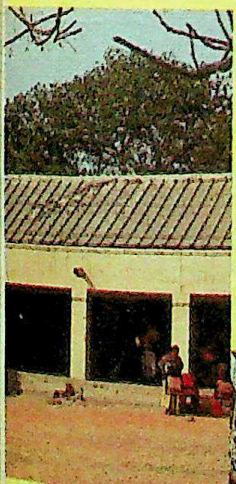

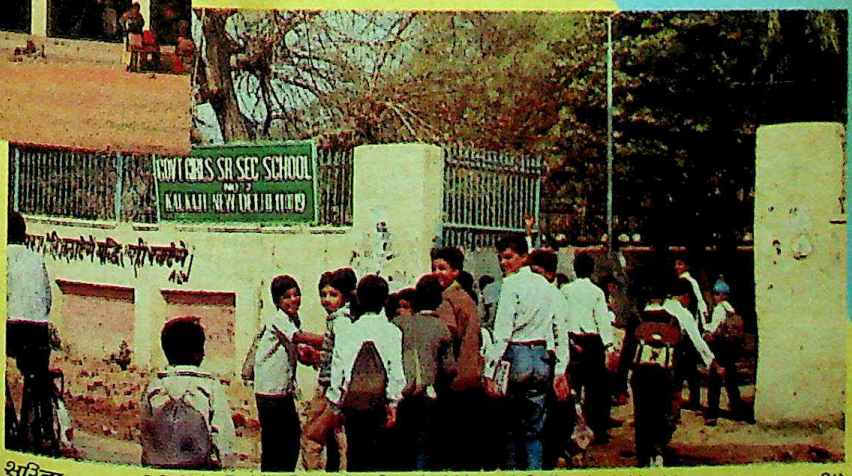

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ बच्चे जिन में वास्तव में पढ़ाई की लगन होती है, जीवन में अपनी मेहनत के बल पर कुछ बनने में सफल हो जाते हैं.

"दूसरा कारण यह है कि कुशाग्रबुद्धि बच्चे तो प्रवेश परीक्षा के जरिए पब्लिक स्कूलों में प्रवेश पा जाते हैं. वहां अनुत्तीर्ण हुए बच्चों को सरकारी स्कूलों में प्रवेश दिला दिया जाता है क्योंकि यहां किसी प्रकार की प्रतियोगिता नहीं होती, सब को शिक्षा का समान अधिकार प्राप्त होता है.

"तीसरे पब्लिक स्कूलों में जब अभिभावक मोटी शुल्क देते हैं तो उन की पढ़ाई पर भी पूरा ध्यान देते हैं, उन की ट्यूशन लगवाते हैं क्योंकि उन में पैसे खर्च करने की सामर्थ्य होती है."

इस का सीधा सा अर्थ यह भी लगाया जा सकता है कि सरकार जो एक स्कूल पर 12 लाख रुपए प्रतिवर्ष खर्च कर रही है, वह तो बेकार ही जा रहा है. यदि इस रुपए को औद्योगिक अथवा किसी अन्य विकास कार्य में लगाया जाए तो देश में काफी प्रगति हो सकती है.

इस कथन पर श्री ओ. पी. शर्मा ने प्रकाश डालते हुए कहा, "सरकारी स्कूल सुविधाओं के मामले में पब्लिक स्कूलों से किसी भी प्रकार से कम नहीं हैं.यहां पर भी हर तरह की सुविधाएं उपलब्ध हैं. प्रश्न सिर्फ इन के इस्तेमाल का है. सरकारी स्कूल के अध्यापक पब्लिक स्कूल के अध्यापकों की अपेक्षा कहीं अधिक योग्य तथा शिक्षित होते हैं परंतु इन स्कूलों में छात्र अधिकांशतः निम्न वर्ग के होते हैं. ये जिस वातावरण में रहते हैं वहां ये सुविधाएं ज्यादा मायने नहीं रखतीं. इस वर्ग के लड़केलड़कियों का शुल्क चूंकि माफ कर दिया जाता है इसलिए इन का उद्देश्य भविष्य संवारना बना नहीं होता बल्कि वे सरकारी प्रचार से आकर्षित हो कर अथवा 10 या 12 वीं कक्षा का प्रमाणपत्र लेने के उद्देश्य से स्कूल आते हैं."

निष्कर्ष के तौर पर यह कहा जा सकता है कि सरकारी विद्यालयों का मुख्य उद्देश्य सिर्फ शिक्षा देना है, न कि बुद्धिजीवी वर्ग तैयार करना. बुद्धिजीवी तैयार करने का कार्य तो कानवेंट स्कूलों को सौंपा गया है.

कानवेंट स्कूलों के समान सरकारी विद्यालयों में आवश्यक सुविधाओं के नाम पर विद्यार्थियों को पुस्तकालय, खेलकूद का सामान, प्रयोगशाला, पीने का पानी, प्रत्येक कक्षा में चारचार पंखे मुहैया कराए जाते हैं. इतनी सुविधा होने के बावजूद सरकारी विद्यालयों के छात्र कानवेंट स्कूल के छात्रों की अपेक्षा पिछड़े हुए क्यों हैं? यह जानने के लिए कई सरकारी विद्यालयों का दौरा किया तथा विभिन्न विभागों के अध्यक्षों तथा विद्यार्थियों से बातचीत की.

पुस्तकालय

किसी भी विद्यालय में पुस्तकालय प्रमुख भूमिका रखता है. यह वह स्थान है जहां किसी भी छात्र से बिना भेदभाव पुस्तकों का आदानप्रदान किया जाता है. एक पुस्तकालय अध्यक्ष के अनुसार, "हमारे यहां 7000 पुस्तकें हैं.विद्यार्थियों के पढ़ने के लिए अलग कमरा है, जहां प्रतिदिन के अखबार एवं पत्रिकाएं पड़ी रहती हैं. विद्यार्थियों के पढ़ने के लिए बिलकुल मनाही नहीं है." जरूरतमंद विद्यार्थियों का कहना था कि 'हमारे पुस्तकालय में पाठ्यपुस्तकें कम, कहानियों की पुस्तकें अधिक होती हैं. सप्ताह में एक पीरियड पुस्तकालय के लिए होता है. अब बताइए 30 मिनट में हम कितने अखबार तथा पत्रिकाएं पढ़ सकते हैं? एक तो काम की पुस्तकें कम होती हैं और जो होती हैं उन्हें अध्यापक अपने बच्चों के लिए ले जाते हैं.'

विज्ञान की प्रयोगशालाएं भी आधुनिक उपकरणों से सुसज्जित होती हैं, परंतु इन प्रयोगशालाओं में प्रयोग करने के लिए सिर्फ 11 वीं तथा 12 वीं कक्षा के विज्ञान के विद्यार्थियों को ही जाने की आज्ञा होती है. 9 वीं तथा 10 वीं कक्षा के विद्यार्थियों ने बताया कि उन को प्रयोगशाला में बहुत कम ले जाया जाता है. अधिकांश प्रयोग मौखिक रूप से अध्यापक कक्षा में ही समझा देते हैं. शायद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

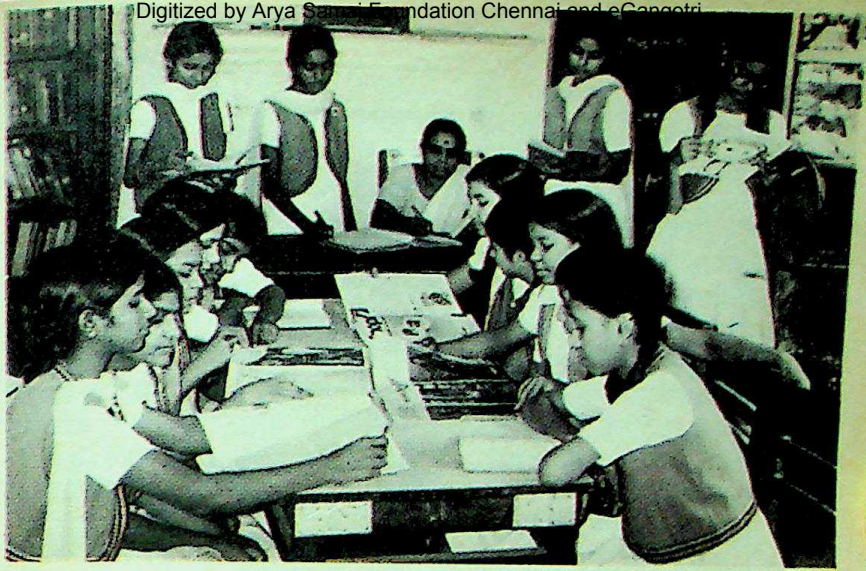

सरकारी विद्यालयों के पुस्तकालय में अधिकांशतः काम की पुस्तकें होती ही नहीं.

यही कारण है कि विज्ञान के क्षेत्र में सरकारी विद्यालयों के छात्र पिछड़े हुए हैं.

सरकार खेलों के विकास पर बहुत जोर दे रही है तथा इस के लिए सरकारी सहायता भी दी जा रही है. स्कूलों में हर प्रकार के खेल का सारा सामान उपलब्ध होता है.लेकिन यह सामान सिर्फ स्टोर में ही रहता है अथवा कभीकभार दिखावे के लिए विद्यार्थियों को दे दिया जाता है. परंतु वास्तव में खेल के घंटे में लड़के इधरउधर भागते रहते हैं तथा लड़कियां सर्दियों में धूप सेकती रहती हैं और अध्यापक स्टाफ रूम में बैठे गप्पें मारते रहते हैं. यह दृश्य किसी एक स्कूल का नहीं बल्कि अधिकांश सरकारी स्कूलों का यही हाल है.

सरकारी विद्यालयों में अनुशासन की कमी होती है. बहुत कम अध्यापक अपने कार्य के प्रति गंभीर होते हैं, जो छात्रों को पढ़ाना सिर्फ मजबूरी नहीं बल्कि अपना कर्तव्य समझते हैं. छात्र भी कम उद्दंड नहीं होते.

छात्राएं तो सिर्फ बातें ही करती हैं. लेकिन कुछ बड़ी कक्षाओं के दादा किस्म के छात्र स्कूल से भाग कर फिल्में देखते हैं. उन की उपस्थिति कम हो जाने पर वे अध्यापकों को डरातेधमकाते हैं कि उन की उपस्थिति पूरी की जाए तथा इस की सूचना उन के अभिभावकों को न दी जाए, नहीं तो 'अंजाम बुरा होगा' अथवा 'हम देख लेंगे.'

सरकारी विद्यालयों तथा उन में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के प्रति भी सरकार का रवैया उपेक्षापूर्ण है क्योंकि सरकार ने एकतरफ तो हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाया है तथा उस के प्रसार के लिए सरकारी विद्यालयों को चुना है. दूसरी तरफ कामकाज की भाषा अंगरेजी बनाई गई है तथा प्रशासन कुकुरमुत्तों के समान उगने वाले कानवेंट स्कूलों को मान्यता प्रदान करता जा रहा है. यह सरकार का परस्पर विरोधी एवं भेदभावपूर्ण रवैया नहीं तो और क्या है?

यदि सरकार प्रतिवर्ष सरकारी विद्यालयों के ऊपर व्यय होने वाले करोड़ों रुपए राशि का सही प्रतिफल प्राप्त करना चाहती है तो उसे वर्तमान शिक्षा के ढांचे में परिवर्तन कर व्यावसायिक शिक्षा को प्रोत्साहन देना होगा तथा साथ ही अंगरेजी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाषा को समाप्त कर हिंदी भाषा को बढ़ावा देना होगा अथवा सरकारी विद्यालयों में भी अंगरेजी माध्यम से शिक्षा देनी आरंभ करनी होगी ताकि सभी विद्यार्थी रोजगार के समान अवसर प्राप्त कर सकें.

दिल्ली, बंबई जैसे महानगरों में कुकुरमुत्तों की तरह बढ़ने वाले कानवेंट स्कूलों ने उच्च व उच्च मध्यमवर्ग तथा निम्न मध्यम व निम्नवर्ग के बीच कभी न पाट सकने वाली एक ऐसी खाई पैदा कर दी है जिस ने विद्यार्थियों को दो वर्गों में विभाजित कर दिया है. एक वर्ग, कानवेंट के पढ़ेलिखे वे छात्र जो फर्राटेदार अंगरेजी बोलते हैं. दूसरे वर्ग में वे छात्र आते हैं जो सरकारी स्कूलों में हिंदी माध्यम से पढ़ कर निकले हैं और अंगरेजी न बोल सकने के कारण हीन भावना के शिकार होते हैं. इस का मुख्य कारण कानवेंट स्कूलों में छात्रों को प्रदान की जाने वाली सुखसुविधाओं के अलावा रोजगार के क्षेत्र में दी जाने वाली प्राथमिकताएं हैं.

आमतौर पर लोगों में यह धारणा घर कर चुकी है कि कानवेंट स्कूलों में प्रदान की जाने वाली सुविधाओं का सरकारी स्कूलों में सर्वथा अभाव रहता है. इस पक्षपातपूर्ण रवैए के कारण हर मातापिता आज अपने बच्चों को कानवेंट स्कूल में भेजने का सपना संजोते हैं ताकि वे भी फर्राटेदार अंगरेजी बोल सकें तथा हर क्षेत्र में अग्रणी रहें. परंतु जब वे दाखिले के साथ कानवेंट स्कूल को जाने वाली दानदक्षिणा देने में स्वयं को असमर्थ पाते है तो उन्हें मजबूरन सरकारी स्कूलों का मुंह देखना पड़ता है तथा उन अभिभावकों के सपने ताश के पत्तों के समान बिखर जाते हैं.

कानवेंट की मांग

आखिर क्या कारण हैं कि सरकारी स्कूलों की अपेक्षा कानवेंट स्कूलों की मांग दिनोंदिन बढ़ती जा रही है तथा हर गलीमहल्ले में भिन्नभिन्न नामों से कानवेंट स्कूल जन्म ले रहे हैं? ऐसे ही कुछ प्रश्नों को ले कर विभिन्न आयु वर्ग के अनेक छात्रछात्राओं से बात की गई.

इस संबंध में 16 वर्षीय निशीत के विचार काफी उग्र हैं. वह कहता है कि 'स्कूल चाहे कोई भी हो, कानवेंट अथवा सरकारी, बस पढ़ने वाले छात्र में लगन होनी चाहिए. दोनों स्कूलों में अंतर सिर्फ यही है कि कानवेंट स्कूल में पढ़ कर वह जरा जल्दी अंगरेजी बोलना सीख जाता है जबकि सरकारी स्कूल में छठी कक्षा से अंगरेजी का प्रथम अध्याय ए बी सी आरंभ होता है. सरकार की गलत नीतियों का ही परिणाम है कि आज मातृभाषा हिंदी के बजाय अंगरेजी को प्राथमिकता देने की वजह से कानवेंट स्कूलों को बढ़ावा मिल रहा है. विदेशी भाषा अंगरेजी बोल कर लोग समझते हैं कि समाज में उन की इज्जत तथा मान बढ़ेगा. इस के विपरीत अपनी मातृभाषा बोलने से शान पर धब्बा लग जाएगा. आज हम कहीं भी चले जाएं स्वयं को सभ्य दिखाने का दिखावा करने के लिए लोग खिचड़ी अंगरेजी बोलते दिखाई दे ही जाते हैं. मैं या मेरे हमउम्र दोस्त तो हिंदी को ही बढ़ावा देते हैं.'

निशीत ने सरकारी स्कूल में पढ़ने की वजह से कानवेंट स्कूल में होने वाली परेशानियों का वर्णन करते हुए कहा, "अंगरेजी में तो वही गिटपिट कर सकता है जहां आरंभ से ही अंगरेजी बोलने के लिए मजबूर किया जाता है. यही नहीं, कई कानवेंट स्कूल तो ऐसे भी हैं जहां अगर कोई छात्र भूल से भी हिंदी का एक शब्द भी बोल दे तो उसे जुर्माना देना पड़ता है. जिस देश में मातृभाषा को इतनी हेय दृष्टि से देखा जाता हो उस देश के नागरिक भला अपनी मातृभाषा से क्या प्यार करेंगे?"

अंत में निशीत का कहना है: "अंगरेजी के बिना हम अपना भविष्य अंधकारमय पाते हैं क्योंकि आज भी भारत में एक क्लर्क को भी अंगरेजी का ज्ञान होना आवश्यक है. शायद यही कारण है कि कानवेंट स्कूल महंगे होने के बावजूद अच्छे माने जाते हैं."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

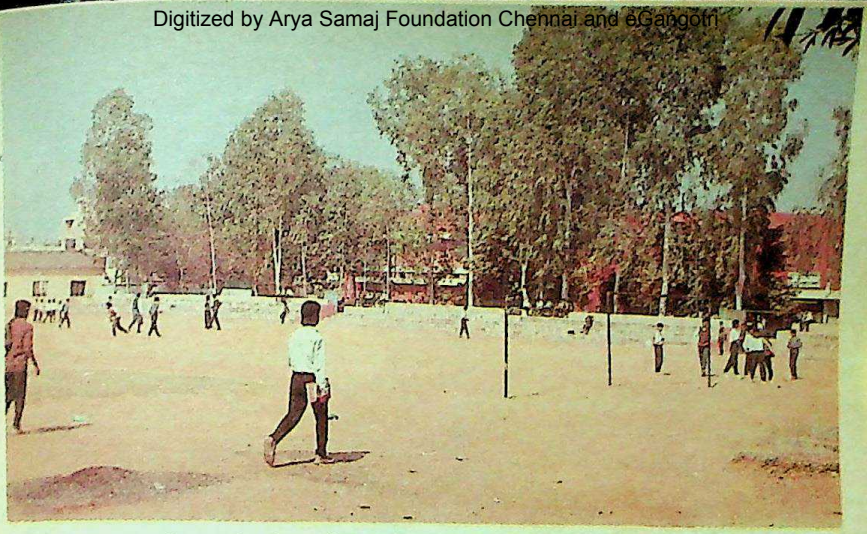

सरकारी विद्यालयों में अनुशासन की कमी होने के कारण छात्र इधरउधर घूमते रहते हैं.

खालसा कालिज की रश्मि जौहरी के विचार काफी सटीक हैं. उस का कहना है, "कानवेंट स्कूल तथा सरकारी स्कूलों के विद्यार्थियों के मुकाबले में मात्र फर्राटेदार अंगरेजी बोल सकने के कारण बाजी मार ले जाता है. सरकारी स्कूलों में आवश्यक सुविधाएं जैसे प्रयोगशाला, खेल के सामान का सर्वथा अभाव रहता है जिस का परिणाम छात्रों को भोगना पड़ता है. उच्च पदों के लिए भी अंगरेजी पढ़ेलिखे, चुस्तदुरुस्त नवयुवकों को ही प्राथमिकता दी जाती है. इस से सरकारी स्कूलों के पढ़े छात्रों की प्रतिभा दब कर रह जाती है. वह छात्र बेशक सभी विषयों में अव्वल हो परंतु अंगरेजी न बोल सकने के कारण मात खा जाता है.

"साल में सिर्फ एक दिन को हिंदी दिवस के रूप में मना कर सरकार मातृभाषा का प्रसार नहीं कर सकती. यदि देश के नौजवानों की शक्ति का भरपूर इस्तेमाल करना है तो अंगरेजी की अनिवार्यता को हटा कर मातृभाषा को रोजगार की भाषा बनाना होगा. अंगरेजी सिर्फ जनसंपर्क की भाषा होनी चाहिए."

17 वर्षीय हिमांशु गुप्ता का इस संबंध में कहना है, "कानवेंट और सरकारी स्कूलों में वैसे तो सुविधाओं के मामले में कोई खास अंतर नहीं होता. अंतर है तो सिर्फ माध्यम का. कानवेंट स्कूलों में जहां शिक्षा आरंभ से ही अंगरेजी माध्यम से दी जाती है वहीं सरकारी स्कूलों में शिक्षा का माध्यम हिंदी होता है, जो हमारे भविष्य के साथ खिलवाड़ कर रहा है. माना अंगरेजी को अंतर्राष्ट्रीय सम्मान दिया गया है लेकिन इस का अर्थ यह कदापि नहीं लगाना चाहिए कि अंतर्राष्ट्रीय भाषा को सम्मान देने के चक्कर में हम अपनी मातृभाषा को एक विदेशी भाषा के तलवे चाटने पर मजबूर कर दें.

"अंगरेजी के बोझ से हम इस कदर दब चुके हैं कि बाहर निकलना बेहद दुष्कर हो गया है. बड़ेबड़े वैज्ञानिक, इंजीनियर, डाक्टर यहां तक कि खिलाड़ी भी कानवेंट स्कूलों की ही देन होते हैं. इस के दो मुख्य कारण हैं. एक तो कानवेंट स्कूलों को ही प्राथमिकता दी जाती है, दूसरे उच्च शिक्षा का माध्यम अंगरेजी है. इन दोनों ही कसौटियों पर सरकारी स्कूल के छात्र खरे नहीं उतर पाते."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

KIWI

क्लीन बोउल

दमदार!
असरदार!
करे चमत्कार!

किवी क्लीन बोउल को किसी भी प्रकार के टॉयलेट बोउल में बस छिड़किए और देखिए इसका कमाल! पानी बुदबुदाए और एकदम नीला हो जाए। यह अन्य पाउडरों की तरह न जमे न इकट्ठा हो। दुनिया-भर में जानामाना, इस्तेमाल में आसान किवी क्लीन बोउल जल्द असर दिखाए और हमेशा रखे आपके टॉयलेट बोउल को किवी चमक से भरपूर।

HTA 9194 E

दमदार, असरदार टॉयलेट क्लीनिंग पाउडर
यह उत्पादन KIWI का!

निगमांश ने भी इस बात पर बेहद खेद प्रकट किया, "अंगरेजी के चलते हम अपना भविष्य अंधकारमय पाते हैं. बेशक हम अंगरेजी में कितनी भी मेहनत कर लें हमारे ऊपर सरकारी स्कूल की छाप तो रहेगी ही."

इन छात्रों के अलावा सरकारी स्कूल के मुख्याध्यापक ने भी इस बात को स्वीकार किया है कि कानवेंट स्कूलों ने बहुत से छात्रों में हीन भावना पैदा कर दी है. इस संबंध में श्री सक्सेना का मत है, "सरकारी स्कूल सुविधाओं के मामले में कानवेंट स्कूलों से किसी भी प्रकार से कम नहीं हैं. प्रश्न सिर्फ इन सुविधाओं के इस्तेमाल का है. सरकारी स्कूलों में छात्र अधिकतर अनुसूचित जाति व निम्न वर्ग से आते हैं. ये छात्र जिस माहौल में रहते हैं वहां ये सुविधाएं ज्यादा मायने नहीं रखतीं.

"सरकारी स्कूलों का उद्देश्य तो सिर्फ इस वर्ग को शिक्षित करना है ताकि सरकारी फाइलों में शिक्षितों की संख्या के आंकड़े दर्ज हो सकें, परंतु अफसोस तो इस बात का है कि बुद्धिजीवी वर्ग तैयार करने का दायित्व तो कानवेंट स्कूलों पर छोड़ दिया गया है. सरकारी स्कूलों में पढ़ने वाले छात्रों के उच्च पदों पर पहुंचने में अंगरेजी एक बड़ी बाधा बनी हुई है. सरकारी स्कूल में पढ़ने वालों छात्रों की अंगरेजी बहुत कमजोर होती है जबकि किसी भी नौकरी के लिए आवेदन देते समय और साक्षात्कार के समय अंगरेजी को प्रमुखता दी जाती है. इस से अधिकांश छात्र इस शर्त को पूरा करने में असमर्थ रहते हैं तथा अंगरेजी के पक्षधर स्थान पा जाते हैं.

"यद्यपि हिंदी में काम करने तथा हिंदी के प्रसार को बढ़ाने के लिए आंदोलन छिड़ा हुआ है, हिंदी दिवस मनाया जाता है, भाषण दिए जाते हैं, लेकिन यह सब दिखावा है. जब तक मंत्रालयों में सारा काम अंगरेजी में होगा, हमारे राष्ट्रपति, प्रधान मंत्री अंगरेजी में भाषण देते रहेंगे तब तक स्वयं को अंगरेजी की दासता से मुक्त कराना संभव नहीं है." ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ट्यूशन: किस का उद्धार

लेख ● अनिता होलानी

शिक्षा का ध्येय है छात्रों का शारीरिक, मानसिक, नैतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक विकास करते हुए उन्हें सर्वांगीण उन्नति के लायक बनाना. इस के द्वारा उन की रुचियों, मनोवृत्तियों और व्यवहार में परिष्कार ला कर उन के व्यक्तित्व का निर्माण किया जाता है. यही शिक्षा का वास्तविक साध्य है और परीक्षा उस साध्य तक पहुंचने का एक रास्ता. किंतु छात्र अपने वास्तविक साध्य को भूल कर उस के स्थान पर साधन यानी परीक्षा को ही सब कुछ मान बैठा है. इसी लिए परीक्षा को पास कर डिगरी प्राप्त करने के लिए वह हर संभव प्रयास करता है. इस का कारण भी है क्योंकि डिगरी या प्रमाणपत्र ही छात्र को उच्च पद दिला सकते हैं.

परीक्षा पास करने के लिए कुछ लोग पैसे का इस्तेमाल करते हैं तो कुछ अन्य गलत और भ्रष्ट तरीकों से परीक्षा पास करने की सोचते हैं. सब से ज्यादा प्रचलित तरीका है ट्यूशन की दौड़. बड़े तो क्या आज कक्षा एक या दो के छात्रों के लिए भी ट्यूशन आम बात हो गई है. तिमाही परीक्षा के बाद जब बच्चे का प्रगतिपत्र अभिभावक के पास पहुंचता है कि बच्चा फलांफलां विषय में कमजोर है अतः ध्यान देने की जरूरत है तो साथ ही उसे ट्यूशन पढ़वाने के लिए भी इशारा कर दिया जाता है. वह भी शाला के विषय शिक्षक से ही अन्यथा उस के फेल होने पर जिम्मेदारी अभिभावक की ही होगी.

इस भागदौड़ की जिंदगी में वैसे ही अभिभावक के पास समय नहीं होता. फिर वे यह भी सोचते हैं कि इतनी महंगी शिक्षा दी जा रही है, यदि बच्चा फेल हो गया तो समय

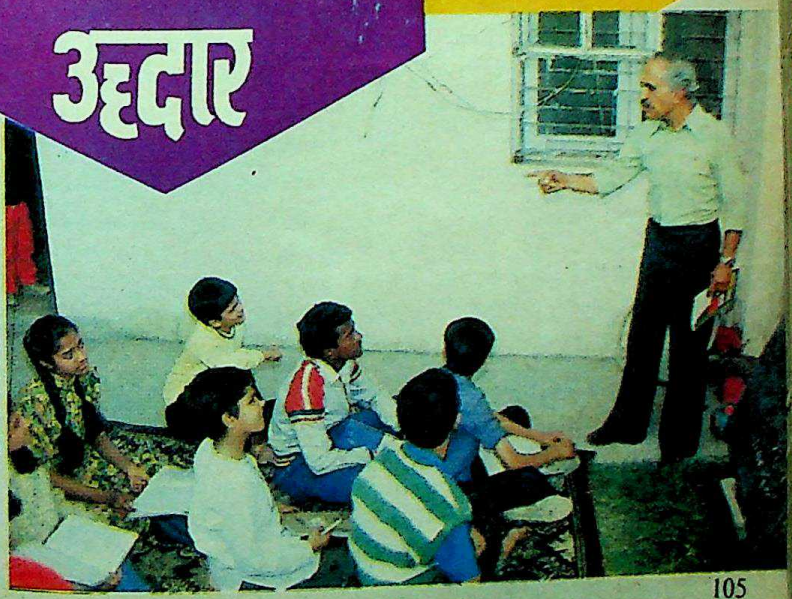

ट्यूशन का अर्थ अब बौद्धिक विकास नहीं बल्कि परीक्षा में आने वाले प्रश्नों को रटवाना है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यदि आप या बच्चा पढ़ाई में किसी विषय में कमजोर है तो अवश्य ट्यूशन लगाइए, वह भी अपने घर पर. लेकिन दूसरों की देखादेखी और परीक्षा में पास करवाने के लिए ट्यूशन लगाना ठीक नहीं. इस से आप के बच्चे का उद्धार नहीं बल्कि उस का नुकसान ही होता है.

और धन दोनों की बरबादी होगी, अतः ट्यूशन लगवा ही दिया जाता है. ऐसे ट्यूशन पढ़ाने शिक्षक छात्र के घर नहीं आता बल्कि छात्र शिक्षक के घर जाते हैं. जब ढेर सारे बच्चों को पढ़ाना हो तो बेचारा शिक्षक किसकिस के घर दौड़ेगा. अतः 10-15 या 20-20 बच्चों का समूह बना दिया जाता है जो शिक्षक के घर या स्कूल की ही कक्षा में एकत्र हो जाते हैं और एकएक घंटे बाद समूह बदलते रहते हैं.

ऐसे ही ट्यूशन 'मास ट्यूशन' का एक मजेदार वाकेआ मुझे जयपुर में देखने को मिला. हम जयपुर अपने रिश्तेदार के यहां गए हुए थे. शाम का वक्त रहा होगा जब गूंजती सी आवाज की भनक पड़ी. खिड़की से झांक कर देखा तो बगल में टैंट वगैरह तने थे. मैं ने सोचा कोई शादीवादी होगी, पर लाउडस्पीकर से आती आवाज से कुछ समझ नहीं आ रहा था. न तो फिल्मी गीत, लोक गीत थे, न भजनप्रवचन. आखिर जिन के यहां गए थे उन्हीं से पूछा तो उन्होंने हंसते हुए बताया कि बगल में तो ट्यूशन की कक्षा चल रही है. पढ़ने वाले छात्र इतने हैं कि पीछे बैठे छात्रों को ढंग से सुनाई नहीं पड़ता इसी लिए पड़ोसी प्रोफेसर साहब ने अपने लान में ऐसी व्यवस्था कर रखी है.

ऐसे ही हमारे एक भाई साहब कालिज में व्याख्याता हैं. उन के यहां जब कभी जाइए बाहर छात्रों के स्कूटर, लूना व साइकिलों की कतार लगी रहती है. उन्होंने घर के ही एक बड़े कमरे में एक बड़ी मेज और छोटीछोटी स्टूलों की व्यवस्था कर रखी है. यानी ट्यूशन पढ़ाने का काम जोरशोर से चलता रहता है, पर देखिए, इतनी व्यस्तता के बावजूद वह भाई साहब हमारे साथ चाय भी पी जाते हैं व गप्पें भी लगा जाते हैं.

पहली बार ऐसा जान कर बड़ा अजीब सा लगा, पर इस से भी ज्यादा अचरज हुआ मुझे यह जान कर कि भाई साहब पांच बजे उठते हैं और पांच बजे से ही ट्यूशन शुरू कर देते हैं. फिर भला आदमी निवृत्त कब होता होगा? उन्हीं ट्यूशनों के बीच वह निवृत्त भी हो लेते हैं, दूध भी ले आते हैं और नाश्तापानी भी कर जाते हैं.

अब भाई साहब तो भाई साहब हैं, उन से तो मैं खुद नहीं कह पाई, पर यह सोचने को जरूर विवश हो गई कि आने वाले कल का क्या होगा. छात्र तो छात्र शिक्षक भी अपनी जिम्मेदारी व मूल्यों को ताक पर रख बैठे हैं.

पैसे की अंधी दौड़ में अधिकाधिक कमाने के लिए शिक्षक औसत से नीचे तथा कमजोर छात्रों को पास कराने तथा बेहतर छात्रों को उच्च श्रेणी दिलाने का ठेका लेते भी नजर आते हैं. प्रथम श्रेणी के लिए 2,000 रुपए, द्वितीय के लिए 1,000 रुपए तथा सिर्फ पास कराने के लिए छात्र की स्थिति को देखते हुए अलगअलग रकमें वसूल की जाती हैं. नैतिकता के सारे नियमों को भूल कर शिक्षक अपने ट्यूशन वाले छात्रों को पास कराने तथा उच्च श्रेणी दिलाने की दौड़धूप में लग जाते हैं. इस प्रकार शिक्षा की धंधेबाजी शुरू हो जाती है.

ऐसे शिक्षक जो फलां श्रेणी में उत्तीर्ण कराने का वादा करते हैं, पढ़ाई की ओर तो कम लेकिन इस बात का पता लगाने में अधिक समय व्यतीत करते हैं कि कौन सा परीक्षा पत्र किस शिक्षक के पास है. नहीं तो धंधा कैसे चलेगा, उन की साख कैसे जमेगी?

ट्यूशन का यह बाजार तो सितंबर, अक्तूबर में शुरू होता है तो जनवरी, फरवरी व मार्च तक अपने पूरे जोर पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिक्षिका के घर ट्यूशन पढ़ने न भेजें. पढ़ाई के साथसाथ अपनी घरेलू जिम्मेदारियों को निबटाने के चक्कर में वह आप के बच्चे पर उचित ध्यान नहीं दे पाएगी.

पहुंच जाता है. ऐसे ही मौसम में मैं अपनी एक परिचित शिक्षिका से मिली. मैं ने शिकायत की, "आप बहुत दिनों से घर की तरफ नहीं आईं?" उन्होंने कहा, "बस कुछ दिन की और बात है, कमाई का मौसम चल रहा है न, सुबहशाम ट्यूशन के कारण निकलने का मौका ही नहीं मिलता."

मेरी वह परिचिता सुबह 11 बजे स्कूल जाने के पहले कक्षा 1-2 के छात्रों को पढ़ाती हैं और स्कूल से चार बजे लौट कर कक्षा 3-4 के बच्चों को पढ़ाती हैं. इसी बीच घर के कामों को संभालतेसंभालते खीज जाती हैं तो गालीथप्पड़ भी ट्यूशन पढ़ने वाले बच्चों को ही मिलते हैं.फिर भी बेचारे बच्चे 'पास' होने के लिए उन के पास आते हैं.

मानो परीक्षा संपूर्ण शिक्षा पर इस कदर हावी हो गई है कि शिक्षण संस्था का प्रत्येक कार्य उस से प्रभावित हुए बगैर नहीं रहता. शिक्षक इस तरह की शिक्षण विधियों का प्रयोग करते हैं कि अधिक से अधिक संख्या में छात्र उत्तीर्ण हो सकें.

छात्र भी उतना ही जानना चाहता है जितना परीक्षा पास करने में सहायक हो. इस के लिए तरहतरह की 'अजय माला' 'गोल्डन गाइड' व गेस पेपर बता दिए जाते हैं जिस में से छात्र प्रश्नउत्तर रटरटा कर परीक्षा पास करने के लिए हफ्ते, दो हफ्ते में ही तैयार हो जाते हैं. पाठ्यक्रम में निर्धारित पुस्तकें वैसे ही अनछुई सुंदर अवस्था में पड़ी रहती हैं, कौन उन्हें पढ़नेसमझने की किल्लत करे.

चूंकि परीक्षाफल ही शिक्षक की योग्यता और उस की भावी तरक्की का निर्धारण करता है, अतः शिक्षक भी किसी भी तरह अपने विषय में उत्तम परीक्षाफल देने का प्रयास करता है. फिर छात्र की बुद्धि तथा अन्य मानसिक योग्यताओं के विकास की तरफ उस का ध्यान नहीं रहता.

एक ही दिन में एक छात्र को आप एक नहीं अनेक ट्यूशन पढ़ते देख सकते हैं. सब विषयों के लिए अलगअलग ट्यूशन की कक्षाएं लगती हैं. कुछ ट्यूशन कक्षाएं तो जैसे सचमुच लोगों को ठगने के लिए ही चल पड़ती हैं और मजा यह कि लोग ठगे जाने में भी आनंदित होते रहते हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे पास ही एक सुंदर सी मैडम अंगरेजी की कोचिंग कक्षाएं लेती हैं. वह स्पीकिंग इंगलिश और ग्रामर इंगलिश की अलगअलग ट्यूशन देती हैं. कोई पूछे मैडम से कि बिना ग्रामर के वह कैसे 'स्पीक' करना सिखाएंगी और अगर बच्चे को 'स्पीक' करना आ गया है तो ग्रामर तो स्वतः ही आ जाएगी.

एक ही भाषा को बोलने और लिखने के लिए अलगअलग क्लास लेना या तो शिक्षक के दिमागी दिवालियापन का नमूना है या फिर छात्रों को मूर्ख बनाने का.

लेकिन छात्र, वे तो मूर्ख बनते ही रहते हैं. मांबाप ट्यूशन लगवा कर सोचते हैं कि बच्चा बड़ी मेहनत कर रहा है अतः बेफिक्र हो जाते हैं. लेकिन हकीकत कुछ और ही होती है. छात्र यह जानते हुए भी कि वह कुछ सीख नहीं रहा है, सीखने जाता रहता है क्योंकि इसी बहाने उसे घर से घंटे दो घंटे निकलने का सुरक्षित बहाना मिल जाता है.

फिर ट्यूशन कक्षाओं क्लास में पढ़ाई हो, न हो,साथी तो होते ही हैं. आजकल तो लड़केलड़कियां सभी ट्यूशन पढ़ने के लिए आते हैं. अब ट्यूशन से पढ़ाई से नजदीकी हो न हो, लड़केलड़कियों में आपसी नजदीकी तो हो ही जाती है.

साथ ही आजकल तो ट्यूशन पढ़ना एक प्रतिष्ठा का प्रतीक भी हो गया है. कौन कितनी फीस लेने वाले गुरु के पास पढ़ता है यह तथ्य छात्र को अपने साथियों के बीच रोब गांठने का मौका तो दे ही देता है.

सारी शिक्षा व्यवस्था ऐसी लचर हो गई है कि आदमी को पैर पर खड़ा करने लायक बनाना तो दूर की बात है, उसे बैसाखी बनने में भी असमर्थ है. ऐसी स्थिति के लिए सारा दोष छात्रों और शिक्षकों के सिर नहीं मढ़ा जा सकता. वास्तव में अब शिक्षा को व्यवसायपरक बनाने की जरूरत है ताकि छात्र जीविका अर्जन कर जीवन संघर्ष का सामना करने योग्य बन सकें.

परीक्षा पद्धति में ऐसा सुधार होना चाहिए कि छात्र की सफलता का आधार केवल वार्षिक परीक्षा न हो बल्कि पूरे वर्ष प्रतिदिन उन के द्वारा किए गए कार्य का अवलोकन हो. मूल्यांकन केवल शैक्षिक उपलब्धियों का ही न हो वरन उन के व्यक्तित्व, व्यवहार, मनोवृत्ति व चरित्र आदि सब बातों का हो.

अंत में, प्रमाणपत्र और डिगरियों को ही छात्रों की योग्यता का एकमात्र आधार मान कर उन की रुचि, योग्यता, अनुभव व व्यवहार आदि को ध्यान में रख कर विभिन्न धंधों, नौकरियों एवं व्यवसायों में उन्हें प्रवेश दिया जाए.

खोखली हुई है साक्षरता की पक्षधरता

निरक्षरता उन्मूलन के लिए किए जा रहे अनेक प्रयासों के बावजूद संपूर्ण विश्व में अभी यह समस्या ज्यों की त्यों बनी हुई है. इसी लिए विश्व में निरक्षर वयस्क लोगों की संख्या में निरंतर वृद्धि हो रही है.

अमरीका के 'क्लीयरिंग हाउस आन डेवलपमेंट कम्यूनिकेशन' द्वारा प्रकाशित एक रिपोर्ट में इस का रहस्योद्घाटन करते हुए बताया गया है कि कुछ ही वर्षों के बाद विश्व में निरक्षर लोगों की संख्या 96 करोड़ से बढ़ कर एक अरब हो जाएगी. इन में महिलाएं अधिक हैं. विश्व की तीन महिलाओं में से एक महिला न तो पढ़ सकती है और न लिख सकती है. पुरुषों में यह स्थिति पांच में से एक के साथ है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्कूली बच्चों के लिए पौष्टिक नाश्ते

गाजर के छल्ले

सामग्री : 1 किलो गाजर, 25 ग्राम मक्खन, 2 अंडे, 50 ग्राम पनीर, स्वादानुसार नमक, ½ चम्मच काली मिर्च,2 नीबू,1 चम्मच मक्खन या घी, 250 ग्राम हरे मटर के दाने (नमकीन पानी में उबले हुए), चुटकी भर जायफल पाउडर.

विधि: गाजर को अच्छी तरह धो कर उसे बारीक कद्दूकस कर लें और फिर उसे कुकर में गलने तक पका लें. फिर उसे कलछी मार कर आंच पर रख कर उस का पानी अच्छी तरह सुखाएं. पानी सूखने पर उस में मक्खन डाल दें. अंडा और पनीर भी फेंट कर उस में डाल दें. फिर उस में नमक, काली मिर्च, जायफल मिला दें तथा नीबू का रस भी डाल दें. अब गाजर के मिश्रण को गोल सांचे में डाल दें. जमने पर उसे एक प्लेट में उलट दें. बीच की खाली जगह में नमकीन पानी में उबले मटर सजा लें. आप चाहें तो मटर में स्वादानुसार अन्य मसाले भी डाल सकती हैं.

गाजर के छल्ले

स्वास्थ्यवर्धक व स्वादिष्ट दलिया

सामग्री : 250 ग्राम दलिया, 500 ग्राम दूध, 100 ग्राम खोया (भुना हुआ), ½ कलछी घी, 10 दाने बादाम, 10 दाने पिस्ता, 50 ग्राम किशमिश, 10 दाने काजू, थोड़ा इलायची दाना बुरकने के लिए.

विधि: कुकर में आधी कलछी घी डाल कर उस में गेहूं का मोटा दलिया (साफ किया हुआ) डाल कर आंच पर रख कर भूनें और बादामी कर लें. यदि घी न भी डालना चाहें तो बिना घी के ही किसी मोटे पैंदे के बरतन में कलछी से हिलहिला कर भून लें. भुन जाने पर इस में एक गिलास पानी डाल कर कुकर बंद कर दें और इसे गलने तक पकाएं. गलने पर इस में चीनी व दूध डाल दें. इस के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

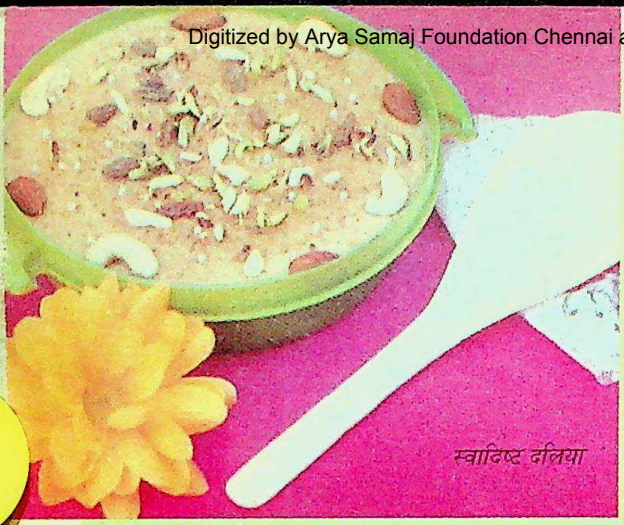

स्वादिष्ट दलिया

साथ ही इस में भुना खोया मिला दें. खोए को अच्छी तरह मिला दें और ऊपर से कटा बादाम, पिस्ता, किशमिश, काजू व इलायची दाना बुरक दें और नाश्ते में गरमगरम परोसें.

सिका हुआ पालक

सामग्री : 250 ग्राम हरा पालक, स्वादानुसार नमक, 50 ग्राम मक्खन, 1 प्याज बारीक कटा, 25 ग्राम मैदा, 100 मिलीलिटर दूध, चुटकी भर जायफल पिसा हुआ, ½ चम्मच काली मिर्च पिसी हुई, 4 अंडे, 50 ग्राम पनीर, 1 चम्मच मक्खन, ¼ चम्मच लाल मिर्च.

विधिः पालक को अच्छी तरह धो कर उसे बारीक काट लें. फिर इसे नमक में डाल कर उबाल लें. दो सीटी लगाने के पश्चात पालक को ठंडा कर लें. ठंडा हो पर उसे मिक्सी में एक बारीक पीस लें. अब एक सासपैन में बारीक कटा प्या डाल कर उसे भून लें. फिर उस मैदा डाल कर अच्छी तरह भू लें. मैदा भुनने पर इस में दू मिला दें और पिसा पालक भी इ मिश्रण में मिला दें. अब चा अंडे एक बाउल में फोड़ कर फें लें और इस में नमक, लाल मि और काली मिर्च डाल दें और इ फेंटे अंडों को पालक के मिश्रण मिला कर आंच से नीचे उतार ले अब आप तीन या चार कटोरि के अंदर घी या मक्खन लगा कर नीचे ए कागज रख कर उस में पालक और अंडे क मिश्रण डाल कर इन्हें 30 मिनट के लिए त ओवन में रखें. जब वह मिश्रण सारा सू जाए, पक जाए तो ओवन से बाहर निक लें और कद्दूकस किया हुआ पनीर ऊप बुरक दें.

प्याज और पनीर के छल्ले

सामग्री : 200 ग्राम पनीर, 2

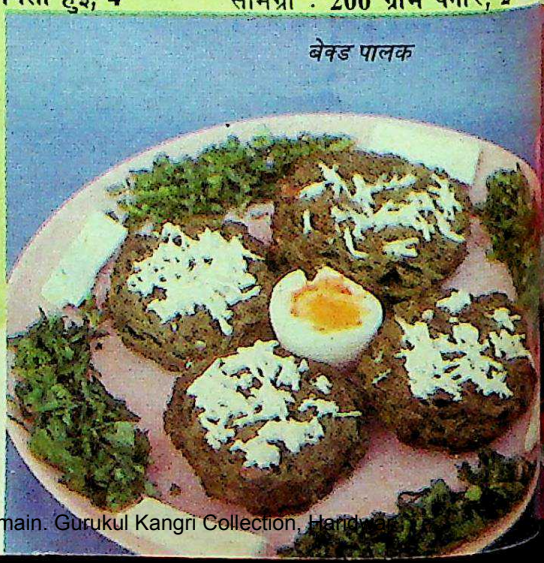

बेक्ड पालक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्याज कटे हुए, ½ चम्मच हलदी, स्वादानुसार नमक, मिर्च, 1 डबलरोटी बिना कटी हुई, 1 अंडा, 2 चम्मच मक्खन, सजाने को गाजर, मूली, हरे पत्ते सलाद के.

विधि: प्याज को बारीक-बारीक काट लें. एक कड़ाही में एक चम्मच मक्खन डाल कर उस में पनीर का चूरा कर के डाल दें और ऊपर से हलदी, नमक, मिर्च डाल कर उसे हिलाती रहें. अब इसे आंच से नीचे उतार लें. बिना कटी डबलरोटी की लंबाई में तह उतार लें या काट लें और इसे हलका सा गीला कर लें. अंडे को फोड़ कर अच्छी तरह फेंट लें. इस फेंटे अंडे को ब्रुश से डबलरोटी के कटे लंबे हिस्से पर लगाएं और अब इस पर पनीर और प्याज का मिश्रण डाल दें और उसे लंबाई में ही रोल कर लें. इसी प्रकार डबलरोटी की एक तह और काट कर यही विधि दोहराएं. फिर उन्हें एक के ऊपर एक रख कर दबा दें ताकि वह एक चपटे रोल का आकार ले ले.अब एक अंडा फोड़ कर फेंट लें. उस में नमक, काली मिर्च मिला लें. वह गोल वाला मिश्रण इस में लपेट लें और एक चम्मच मक्खन तवे पर डाल कर इसे तल लें. दूसरी तरफ पलट कर फिर दूसरा चम्मच मक्खन का डाल कर तल लें. फिर उसे आंच से नीचे उतार लें. उसे प्लेट में रख कर बीचबीच में फूल की तरह काट लें. इसे ऊपर से लाल गाजर, मूली और सलाद के पत्तों से सजा दें.

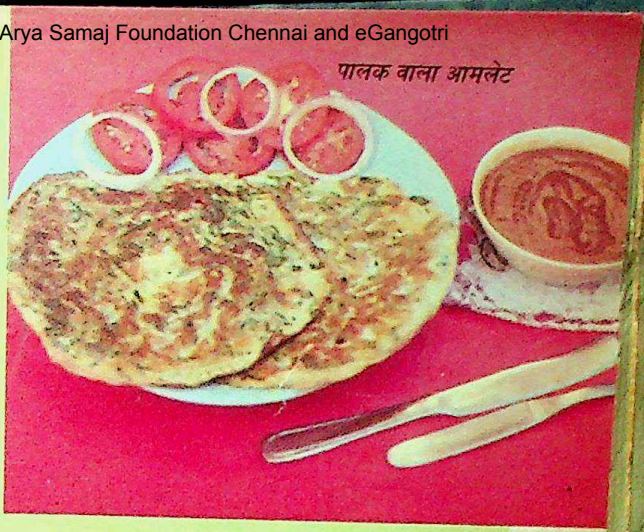
पालक वाला आमलेट

पालक वाला आमलेट

सामग्री : 4 अंडे, 200 ग्राम पालक, 4 हरी मिर्च, 1 प्याज, 1 टमाटर, स्वादानुसार नमक, ½ चम्मच लाल मिर्च, ½ चम्मच काली मिर्च, तलने को घी.

विधि: एक भगोने में चारों अंडे फोड़ लें. और उन्हें अच्छी तरह फेंट लें. पालक को साफ कर के अच्छी तरह धो लें और बारीकबारीक काट लें. हरी मिर्चों को धो कर बारीक काट लें. प्याज और टमाटर को भी बारीकबारीक काट लें. यह सब कटा सामान फेंटे हुए अंडों के मिश्रण में डाल दें और ऊपर से इस में नमक, लाल मिर्च,

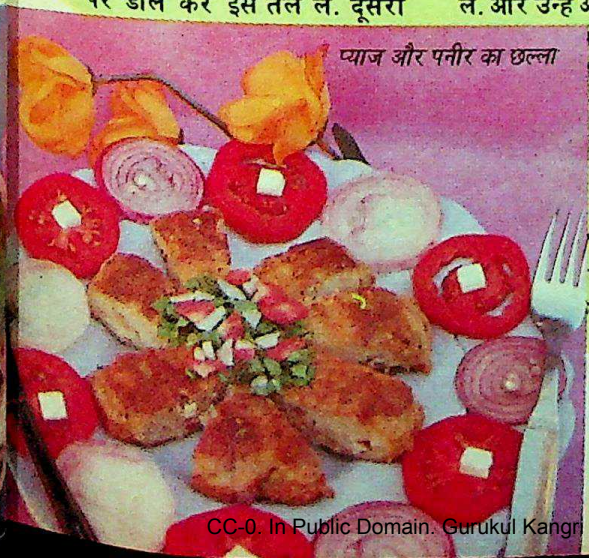
प्याज और पनीर का छल्ला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काली मिर्च सब मिला दें. तवे को आंच पर रख कर उस पर थोड़ा घी छोड़ दें. गरम होने पर कलछी से अंडे का मिश्रण डाल दें और गोलाई में फैला दें. एक तरफ से पक जाने पर दूसरी तरफ बदल दें. एक चम्मच घी दूसरी तरफ भी डाल दें.

आमलेट तैयार है. इसे टमाटर की चटनी के साथ नाश्ते में परोसें.

इस स्तंभ में पाठिकाओं के व्यंजन प्रकाशित किए जाते हैं. व्यंजन किसी पत्रिका या पुस्तक से न लिए गए हों और उस में प्रेषक की मौलिकता हो. प्रत्येक प्रकाशित व्यंजन पर पुरस्कार दिया जाता है. पता है : नए पकवान, सरिता, नई दिल्ली-110055.

प्रोटीनयुक्त भुजिया टोस्ट

सामग्री : 250 ग्राम पालक, 250 ग्राम बथुआ, 250 ग्राम चौलाई, 50 ग्राम अदरक, 2 प्याज, 2 टमाटर, 3 बड़े चम्मच टमाटर की सास, 6 तुरियां लहसुन, 100 ग्राम पनीर, 1 कलछी घी, स्वादानुसार नमक, लाल व काली मिर्च, ½-½ चम्मच सूखा धनिया व हलदी, 50 ग्राम मूंगफली, 1 बड़ी डबलरोटी.

विधिः सर्वप्रथम पालक, बथुआ, चौलाई को साफ कर के धो लें और बारीकबारीक काट कर आधा प्याला पानी डाल कर इन्हें कुकर में उबलने रख दें. एक या दो सीटी आने पर इन्हें आंच से उतार लें और एक तरफ रख लें. अब प्याज, अदरक और लहसुन को मिक्सी में बारीक पीस और एक कलछी घी कड़ाही में डाल कर इन्हें भून लें.

यह सब बादामी होने पर इसमें कद्दूकस किए दो टमाटर डाल दें और मिला कर अच्छी तरह भून लें. अब इस में मूंगफली के दाने भी थोड़े दरदरे पीस कर डाल दें और थोड़ा भूनें. यह सब भुन जाने पर इसमें नमक, लाल मिर्च, काली मिर्च, हलदी आदि डाल दें. अब इस में पालक, बथुआ व चौलाई का मिश्रण डाल दें और भूने हुए मसालों को कलछी से खूब अच्छी तरह से हिला कर भूनें.

आप की प्रोटीनयुक्त भुजिया तैयार है.

डबलरोटी के स्लाइस को गोल आकार में काटें व उन्हें एक तरफ से ग्रिल में सेंकें. बिना सिकी तरफ चम्मच से टमाटर की सास लगाएं फिर उस पर भुजिया फैला दें. थोड़ी उठी हुई शक्ल में फिर उस पर कद्दूकस किया पनीर फैला दें. पुनः 10 मिनट ग्रिल में रखें. ऊपर सतह पर उंगली से गड्ढा कर के सास भरें. गरम गरम पेश करें.

—उर्मिला कपूर

पौष्टिक भुजिया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

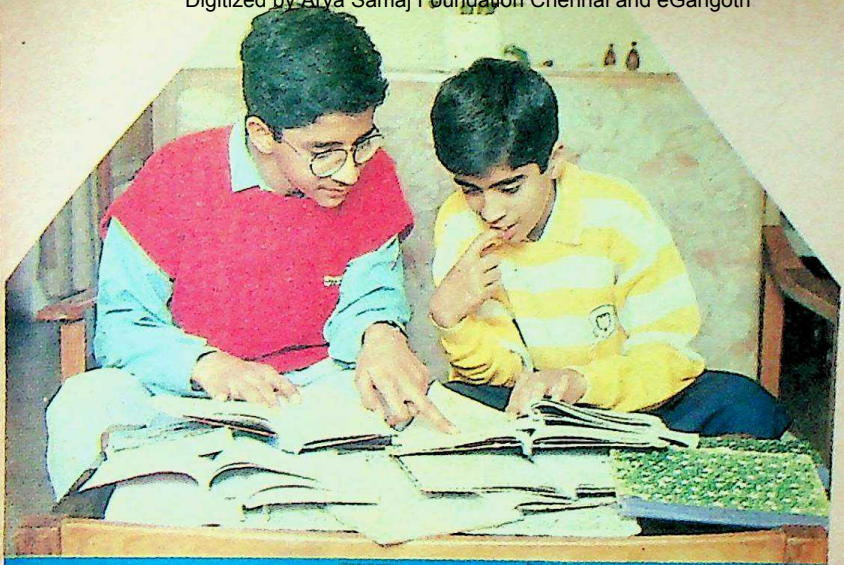

आधुनिक शिक्षा और सफलता

लेख ● डा. मीरा दीक्षित

जब बच्चा पहलेपहल शिशु कक्षा में पढ़ने जाता है, तब पढ़ाई की शुरुआत रंगीन किताबों, चार्ट, मनकों आदि से होती है. मनोवैज्ञानिकों के अनुसार, इतने बड़े बच्चों के दिमाग का बायां भाग ज्यादा सक्रिय और कल्पनाशील होता है. किंतु साल भर तक शिशु कक्षा में जाने के बाद ही मातापिता को हड़बड़ाहट होने लगती है. बच्चे को ज्यादा से ज्यादा प्रतिभाशाली, होशियार और असाधारण विद्वान बनाने की लालसा जोर मारने लगती है. इसे वे बच्चों की नींव मजबूत करना समझते हैं. घर से ही बच्चों को डांटनेफटकारने, समझाने, अनुशासित करने का सिलसिला शुरू हो जाता है. फिर कलम, दवात को बंदूक और बारूद बना कर बच्चे की रचनात्मकता और मौलिकता के खिलाफ शिक्षक, लंबाचौड़ा पाठ्यक्रम और किताबों का गधाभर बोझ सब एकजुट हो जाते हैं.

मैं आज भी सोचती हूं कि 24 दिनों की दीवाली की छुट्टियां, जिन का हम उत्सुकतापूर्वक इंतजार करते थे कभी ऐसी नहीं गुजरीं, जब हम गणित पूरा करने के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्तमान शिक्षा प्रणाली के बोझ से विद्यार्थी तो जूझ ही रहा है, अभिभावक भी अपनी आकांक्षाओं को पूरी करने के लिए अपने बच्चे को सदा पढ़ने के लिए मजबूर करते रहते हैं. लेकिन प्रायः सफलता हाथ नहीं लगती. विद्यार्थी और अभिभावकों के लिए प्रस्तुत हैं कुछ उपाय, जिन्हें अपनाने पर सफलता आप के कदम चूमेगी.

आतंक से एक दिन के लिए भी मुक्त हो सके हों. अब स्थिति बदतर है. कम से कम समय में ज्यादा से ज्यादा ज्ञान बच्चे को देना है. अंकों और प्रतिशत की मारामारी है. बच्चे को वास्तव में क्या आता है? उस में किस प्रकार की प्रतिभा है? किसी को यह जानने की न फुरसत है न इच्छा और न ही आधुनिक शिक्षा पद्धति में यह जानने का कोई उपाय है. व्यावहारिक ज्ञान की तो कोई कीमत ही नहीं.

औसत बच्चों का तो कोई भविष्य ही नहीं है. जाहिर है, इस बात का दबाव अभिभावकों पर भी रहता है और बच्चों पर भी. वे बिना समझे रट्टू तोते के समान रटते हैं, बिना चबाए निगलते हैं, फिर बिना पचाए प्रश्नपत्रों पर इस ज्ञान की उलटी कर देते हैं. परिणाम यह होता है कि परीक्षा के समय उन्होंने क्या पढ़ा, बाद में याद ही नहीं रहता.

सब से बुनियादी आवश्यकता यह है कि इस स्थिति से जूझने के लिए अभिभावक बच्चों का साथ दें. किसी भी परिस्थिति में धीरज से काम लेने की आदत धीरेधीरे डालनी पड़ेगी. बच्चे के विकास में और शिक्षा में सहयोग देने के लिए सब से पहले खुद धीरज रखना सीखना होगा. इस के लिए निम्न बातें आवश्यक हैं:

● बच्चों की मौलिकता, सोचवि[illegible] की शक्ति, अभिव्यक्ति क्षमता [illegible] रचनात्मकता को प्रोत्साहित किया जा[illegible]

● बच्चे द्वारा कुछ भी नया करने[illegible] उसे प्रशंसा के दो शब्द बोल कर [illegible] शाबाशी की थपकी से अवश्य सम्मा[illegible] किया जाए. इस से उसे प्रोत्साहन मि[illegible] और उस का आत्मविश्वास बढ़ेगा, जो [illegible] की प्रगति में सहायक होगा. बिना प्रशंसा [illegible] बच्चे को अपना सारा कियाधरा परि[illegible] बेकार लगता है. वह अपने को ठगा गया [illegible] महसूस करता है.

● शिक्षा प्रणाली को ले कर रोते र[illegible] से काम नहीं बनता. इस प्रणाली से बच्चे [illegible] व्यवहार, ज्ञान और बुद्धि न परख कर, [illegible] का धैर्य, परिश्रम और स्मरणशक्ति ती[illegible] ही परखे जाते हैं. इस परीक्षा प्रणाली [illegible] आवश्यकता को देखते हुए हमें अपने बच्[illegible] को लगनशील, परिश्रमी, धैर्यवान [illegible] एकाग्रचित्त बनाना होगा.

● हमें बच्चों में आगे बढ़ने [illegible] परीक्षाओं में सही अंकों से सफल होने [illegible] लिए लगन और इच्छा उत्पन्न कर[illegible] चाहिए.

इस में सफल होने के लिए निम्न बा[illegible] का ध्यान रखें:

● बच्चे को दिनरात भाषण न दें. [illegible] भाषण उसे रट जाएंगे और उस पर अ[illegible] नहीं करेंगे.

● उस के सामने अपनी तारीफ कर [illegible] उसे प्रेरणा देने का प्रयत्न हरगिज न क[illegible] आप आत्मप्रशंसा में लीन रहेंगे तो [illegible] खीजेगा. शायद वह आप की बातों [illegible] विश्वास ही न करे.

● उस के सामने उस के सहपाठियों [illegible] तारीफ कर के यदि आप उसे प्रेरणा देने [illegible] तो भी अवांछित परिणाम सामने आएं[illegible] एक तो वह अपने साथी से ईर्ष्या करने ल[illegible] और दूसरे अपना आत्मविश्वास भी [illegible] बैठेगा. ये दोनों ही स्थितियां उस की प्रग[illegible] में बाधक होंगी.

● बच्चे को ट्यूशन दे कर या साथ [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

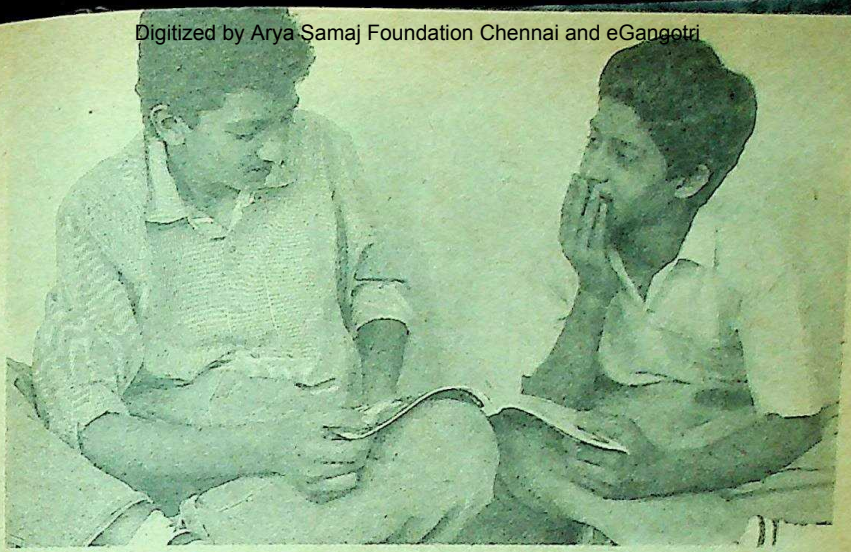

दो विद्यार्थी आपस में मिल कर पढ़ें, एकदूसरे से सवालजवाब करें, एकदूसरे का लिखा हुआ जांचे तो पढ़ाई में अधिक मन लगेगा.

कर पढ़ाते हुए उसे परमुखापेक्षी बनाना ठीक नहीं. केवल उसे यह महसूस होना चाहिए कि जरूरत के समय आप सदा उस के साथ हैं, उसे उपलब्ध हैं. उस के तनाव, दबाव, हताशा के समय उसे विश्वास होना चाहिए कि आप मौजूद हैं, सदा उसे तसल्ली, सहयोग, सहारा और धीरज देने के लिए.

बच्चों को भी अपने अभिभावक और शिक्षकों से खुल कर अपनी कठिनाइयां बतानी चाहिए. वे जो कह रहे हैं, उसे उन के नजरिए से समझने का प्रयत्न करना चाहिए.

● बच्चों को मालूम रहे कि कोई भी परीक्षा हो, मेहनत तो विद्यार्थी को स्वयं ही करनी पड़ती है. जहां नौवीं कक्षा से विषय चुनने की छूट होती है, वहां बच्चे के आठवीं के नंबर देख कर उसे विज्ञान देने, न देने का निश्चय किया जाता है, न कि रुचि देख कर.

दसवीं तक भी कहींकहीं सारे विषय पढ़ने पड़ते हैं, जैसे केंद्रीय बोर्ड में इंटर में भी विज्ञान के विद्यार्थी प्राणीशास्त्र और गणित साथ ले सकते हैं. कामर्स और एकाउंटेंसी वगैरह में भी विज्ञान के विद्यार्थी मेहनत करने की आदत के कारण खप जाते हैं और सफल भी होते हैं. प्रशासनिक सेवाओं में भी विज्ञान के विद्यार्थी और इंजीनियर वगैरह काफी संख्या में चुने जाते हैं. अतः मेहनत का तो कोई विकल्प है ही नहीं.

विद्यार्थी स्वयं भी विषय को रुचिकर बनाते हुए इन उपायों को आजमा सकते हैं:

● दो विद्यार्थी मिल कर पढ़ें. एकदूसरे से सवाल पूछें, जवाब लिख कर देखें, एकदूसरे का लिखा हुआ जांचें. साथ पढ़ने से मन ज्यादा लगता है.

● किसी किताब में कोई विशेष भाग अच्छे ढंग से समझाया जाता है तो किसी किताब में कोई अन्य. अतः कई किताबों से देख कर पढ़ें और सब के अच्छे मुद्दे मिला कर अपने ठोस नोट्स तैयार करें.

● 'प्वाइंट्स' बनाने की और नुक्ते दर नुक्ते विषय समेटने की आदत सदा काम आती है. वकालत, प्रवक्ता, अध्यापक वगैरह का पेशा अपनाने पर यह आदत बड़े काम आती है. प्वाइंट्स संक्षिप्त रूप से विषय को समेटे रहते हैं, जल्दी याद होते हैं और देर तक याद रहते हैं.

● पुराने सालों के प्रश्नपत्र एकएक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टिप्पणी समेत याद करें, अथवा लिखें.

● अपने विषय को मनोरंजक बनाने के लिए व्यावहारिक उदाहरण ढूंढ़ें. मनोरंजक संक्षिप्त रूप बनाएं.

● पढ़ाई को स्कूल से बाहर आते ही भूलने की कोशिश न करें बल्कि मन ही मन विश्लेषण करें कि आप ने क्या पढ़ा है.

● इस उम्र में दिवास्वप्न देखने की आदत भी होती है. मैं इस आदत पर काबू न पा सकी तो मैं ने कल्पना करनी शुरू कर दी कि मैं बोर्ड पर सूत्र हल कर रही हूं या चित्र बना रही हूं. जहां भी संदेह होता या सही याद न आता, मैं तुरंत पुस्तक से मिलाती कि सही क्या है.

● सब से मुख्य बात यह याद रखनी है कि श्रेणी सुधारने के लिए स्नातक और स्नातकोत्तर इम्तहान दिए जा सकते हैं, हाई स्कूल और इंटर के नहीं. यह सोचना कि हाई स्कूल में श्रेणी ले ली है, अभी क्या जरूरी है, यह ठीक नहीं. यदि शुरू से ही श्रेणी प्राप्त करने का प्रयत्न करते रहे तो प्रतियोगिता की आदत बनती है. इस से परिश्रम करने की आदत बनती है. श्रेणी मिलनी आसान रहती है. अतः 12-13 वर्ष की आयु से ही ऐसा परिश्रम करने की आदत डालें जैसे बोर्ड की परीक्षा की तैयारी कर रहे हों.

इस समय जो प्रमाणपत्र गले पड़ जाता है, वह सारी उम्र आप के गले में लटका रहता है.

● हर जगह सर्वश्रेष्ठ का चुनाव होता है, अतः कोशिश यही होनी चाहिए कि आप कहीं न कहीं सर्वश्रेष्ठ सिद्ध हों. आप ने देखा होगा कि पढ़ाई में योग्य विद्यार्थी प्रायः कई क्षेत्रों में आगे होते हैं. ऐसा इसलिए नहीं होता कि वे विशेष प्रतिभाशाली होते हैं बल्कि वे समय की कीमत जानते हैं. वे लगनशील, परिश्रमी, एकाग्रचित तथा धैर्यवान होते हैं.

● विद्यार्थी खुद भी सोचें और जानने की कोशिश करें कि वे चौबीस घंटों में से किस समय ज्यादा से ज्यादा पढ़ सकते हैं, ज्यादा से ज्यादा मन लगा सकते हैं और ज्यादा से ज्यादा याद रख सकते हैं. किस तरीके से अच्छा परिणाम पा सकते हैं. इस विषय में मातापिता और साथियों के अनुभवों से फायदा उठाएं.

● मातापिता को अपनी तकलीफें, अड़चनें, संशय बताएं. वे हर हालत में उन्हें दूर करने का प्रयत्न करेंगे. शिक्षक भी बेहिचक शंकाओं को पूछने वाले छात्रों से आमतौर पर खुश रहते हैं. उन की समस्याएं हल कर के उन्हें प्रसन्नता मिलती है और मातापिता शिक्षक और विद्यार्थी मिल कर इस परीक्षा रूपी वैतरणी को आसानी से पार कर सकते हैं.

छात्रों को इतना तो याद रखना ही होगा कि भले ही उन का मुंह पानी में डुबा दिया जाए, लेकिन पानी वे तभी पिएंगे, जब पीना चाहेंगे. भविष्य तो छात्र का ही संवरना है और वह उसे खुद ही संवारना होगा. ●

विश्व बाल साहित्य

विश्व बाल पुस्तकें

आप के बच्चों के लिए अति आवश्यक

• मनोरंजक
• ज्ञानवर्द्धक
• मार्गदर्शक

आकर्षक रंगीन चित्रों में चीकू, चुंचू, पप्पू, पिंटू और मोती भी.
350 से अधिक हिंदी और अंग्रेजी की पुस्तकें
उपहार के लिए सब से उत्तम

दिल्ली बुक कंपनी,
एम-12, कनाट सरकस, नई दिल्ली-110001
फोन : 3321313

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

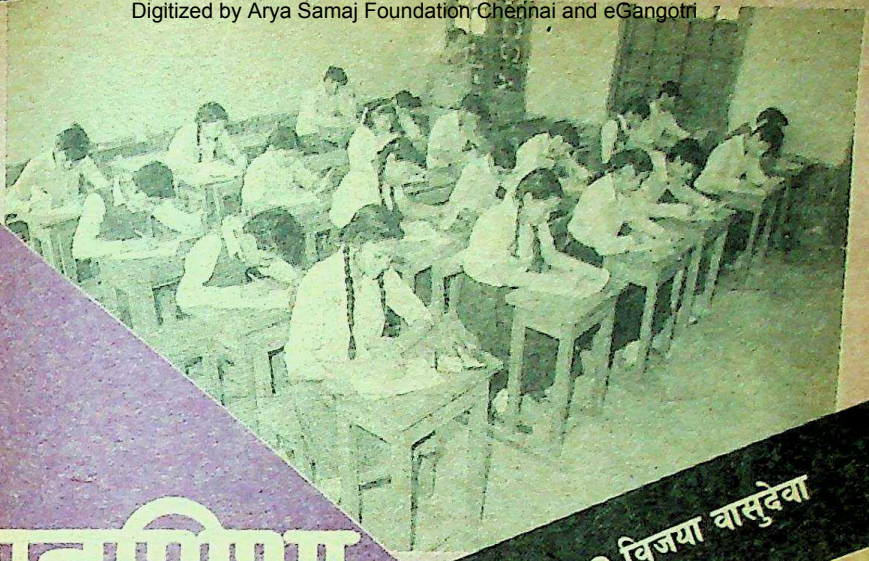

सहशिक्षा कितनी सार्थक

लेख ● विजया वासुदेवा

लड़के तथा लड़कियों के लालनपालन में अंतर केवल पारिवारिक व सामाजिक रूप में ही नहीं होता अपितु प्राकृतिक रूप से भी लड़कियां न केवल शारीरिक रूप से भिन्न होती हैं बल्कि मानसिक रूप से भी उन के सोचनेसमझने की प्रक्रिया लड़कों से अलग होती है.

बचपन से सहशिक्षा के वातावरण में पले बच्चे पुरुष और नारी के व्यवहार के प्रति सहज धारणा रखते हैं, जबकि बचपन से केवल लड़कों अथवा लड़कियों के स्कूल में पढ़ने वाले बच्चों की मानसिकता एकदूसरे को सहज रूप में स्वीकार करने की नहीं होती. मनोवैज्ञानिक रूप से इस का प्रभाव दो तरीके का होता है युवकयुवतियां एकदूसरे के प्रति अति आकर्षण महसूस करते हैं अथवा पूरी तरह से उदासीन हो

पश्चिमी देशों की देखादेखी अपने देश में भी सहशिक्षा का बोलबाला जोर पकड़ रहा है. लेकिन इसे अपनाने से पूर्व इस के परिणाम जान लेने चाहिए अन्यथा हमारे देश को भी वही दुष्परिणाम भुगतने पड़ेंगे जो इस समय पश्चिमी देश भुगत रहे हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाते हैं. दोनों ही स्थितियां विद्यार्थियों के उचित विकास में मनोवैज्ञानिक रूप से बाधा व कुंठा उपस्थित करती हैं.

किशोरों में अपना पौरुष प्रदर्शन करने की प्रवृत्ति प्रबल होती है. लड़कियों का ध्यान अपनी तरफ आकर्षित करने के लिए वे पढ़ाई के समय अधिक शरारतें करेंगे, अपनी उपस्थिति महसूस करवाने की दृष्टि से विचित्र लहजे में बातचीत करेंगे अथवा ऐसे कपड़े पहनेंगे, जिस से वे कक्षा के अन्य विद्यार्थियों से अलग दिखाई दें.

यह पल दो पल का मनोरंजन शुरू में अन्य विद्यार्थियों को अच्छा लगता है, लेकिन पढ़ाई की एकाग्रता भी इस से भंग होती है. धनी परिवारों के विद्यार्थियों के लिए पढ़ाई का विशेष महत्त्व नहीं होता, किंतु जिन विद्यार्थियों का ध्येय जीवन में कुछ बनना हो, उन को ऐसी शरारतों का मूल्य चुकाना पड़ता है.

योगी मध्यमवर्गीय परिवार का सब से बड़ा बेटा था. वह एक प्रतिभाशाली युवक था. एक बार कालिज में लड़कों ने लड़कियों की उपस्थिति में उसे जूते पहन कर पेड़ पर चढ़ने की चुनौती दे दी. अब लड़कियों को प्रभावित करने का ऐसा मौका भला वह कैसे चूकता? सो योगी ने पेड़ पर चढ़ना शुरू किया कि अचानक जूता फिसल गया और वह पीठ के बल नीचे आ गिरा. रीढ़ में चोट लगने के कारण अब वह झुकने में लाचार हो गया. तेज गति के कारण कार और मोटरसाइकिल की दुर्घटनाएं तो आम बात हो गई हैं. केवल कुछ कर दिखाने का जोश इन युवकयुवतियों को किसी भी पल मुसीबत में डाल सकता है.

जो युवतियां महिला कालिजों में पढ़ती हैं, वे अपनी साजसंभाल, फैशन आदि के प्रति उतनी सजग नहीं होतीं, जितनी कि सहशिक्षा वाले कालिज में पढ़ने वाली युवतियां.

दीप्ति बता रही थी, "हमारे कालिज के 'कामन रूम' में आप लड़कियों को मेकअप करते और बाल संवारते देखें तो हैरान हो जाएंगी. ऐसा लगता है, यह कालिज का कामन रूम नहीं, नाटक मंडली का 'ग्रीन रूम' है. जो घर से सीधीसादी आती हैं, वे भी कालिज में आ कर पहले अपना रूप संवारेंगी, फिर कक्षा में जाएंगी." ऐसे में कितने छात्र पढ़ाई को गंभीरता से लेंगे, आप स्वयं अनुमान लगा लें. मातापिता व शिक्षकों का डर और लिहाज वाली बात अब बहुत कम रह गई है. आज की पीढ़ी का कथन है, "शिक्षकों की रोजीरोटी हमारी फीस से चल रही है, हम तो उन के अन्नदाता हैं." भले ही यह छिछोरी बात मजाक के रूप में कही जाती है, किंतु इस से विद्यार्थियों की मानसिकता स्पष्ट रूप से दिखाई देती है.

सहशिक्षा की उपयोगिता तभी है, यदि बचपन से ही लड़के-लड़कियां एकसंग पढ़ते हों. सामाजिक रूप से भी संबंधों में खुलापन

बचपन से सहशिक्षा के वातावरण में पले बच्चे, पुरुष और नारी के व्यवहार के प्रति सहज धारणा रखते हैं इसलिए सहशिक्षा शुरू की जाए तो बचपन से ही अन्यथा नहीं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

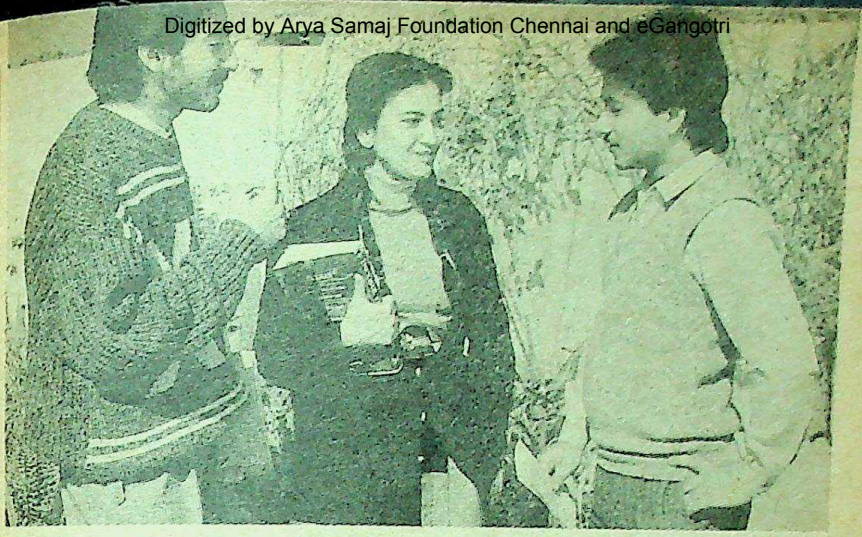

हमारे समाज में पुरुषों का नजरिया नारियों के प्रति बीमार मानसिकता वाला ही है. ऐसी स्थिति में विश्वविद्यालय स्तर पर सहशिक्षा प्रभावी नहीं होगी.

हो तथा उचितअनुचित की मर्यादा के संस्कार घरपरिवार से ही बच्चों के जीवन में गहरी छाप लिए हुए हों, किंतु ऐसी स्थिति सहज, स्वाभाविक रूप से सुलभ नहीं है. मातापिता अपनीअपनी जिंदगी में इतने व्यस्त हैं कि उन के पास बच्चों के लिए भी समय नहीं है. अपनी बेटियों की स्वतंत्रता पर तो हम नियंत्रण रखना चाहते हैं, लेकिन लड़कों को पूरी तरह खुली छूट दे देते हैं. इस प्रकार अधिकतर लड़के उच्छृंखल हो जाते हैं. कुछ भी हो जाए 'दोष तो लड़की का ही माना जाएगा' जैसी हमारी मानसिकता लड़कों को निरंकुश बनाने में बहुत हद तक दोषी है.

समाज में टीवी और वीडियो से जहां बच्चों में जागरूकता आई है, वहां इन्होंने उन के समक्ष बहुत कुछ गोपनीय भी सहज सुलभ कर दिया है. अब समाजशास्त्रियों ने यौन शिक्षा का जो नारा दिया है, वह अनेक विकृतियों को जन्म देगा, इस में संदेह नहीं है. जहां मातापिता दोनों ही नौकरी कर रहे हों, वहां उन की अनुपस्थिति में बच्चे समय व सुविधा का किस तरह दुरुपयोग करेंगे, कहा नहीं जा सकता.

इसी तरह की स्थितियों से आज से 20 वर्ष पहले अमरीका गुजरा था. वहां की भावनात्मक असुरक्षा ने जिस पीढ़ी को जन्म दिया है, वह हमारे समक्ष बहुत सुखद चित्र प्रस्तुत नहीं करती है. वहां नशीले पदार्थों का सेवन करने वालों के आंकड़े निरंतर बढ़ रहे हैं. अविवाहित मातृत्व भी सामाजिक अस्थिरता पैदा कर रहा है.

भारतीय समाज के मूल्य, जीवन दर्शन, विचारधारा बिलकुल भिन्न है. 'पश्चिमी देशों में होने वाले परिवर्तन हमें अपने देश में भी अपनाने चाहिए' यह बात तर्क की कसौटी पर खरी नहीं उतरती. सहशिक्षा के प्रसार के साथसाथ हमें यह विचार भी ध्यान में रखना होगा कि भारत लंबी गुलामी के दौर से गुजरा है, जिस काल में औरत का व्यक्तित्व परदे तक ही सीमित था. इसलिए पुरुषों का नजरिया नारियों के प्रति अभी भी बीमार मानसिकता वाला ही है. ऐसी स्थिति में सहशिक्षा विश्वविद्यालय के स्तर पर प्रभावशाली नहीं हो सकती. इस के लिए हमें बच्चों को प्रारंभ से ही सहशिक्षा के माहौल में पढ़ने का अवसर देना होगा.●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मौजूदा शिक्षा पद्धति ने समाज को दो भागों में बांट रखा है..."

अनूपकुमार साहनी

भेंटवार्त्ता ● जगदीश चावला

भारतीय संविधान के अंतर्गत 'शिक्षा' केंद्र तथा राज्यों का विषय है. राज्य सरकारें शिक्षा प्रणाली की व्यवस्था में जो भी सुधार करना चाहें, कर सकती हैं. तथापि अब तक का आम अनुभव यही है कि शिक्षा का स्तर गिरता जा रहा है तथा इस क्षेत्र में भी कुछ ऐसे दलाल पैदा हो गए हैं जो शिक्षार्थी को परीक्षा में पास करवाने से ले कर उन्हें जाली डिगरियां तक दिलवाने का काम भी करते हैं. जिन छात्रों के पास शिक्षा की उच्चतम डिगरियां हैं, उन में से भी अधिकांश को नौकरियां या रोजगार के अवसर सुलभ नहीं हैं. इस प्रकार वर्तमान शिक्षा प्रणाली रोजगारोन्मुख न होने से हताशा की जन्मदात्री बन रही हैं.

वर्तमान शिक्षा प्रणाली से संबंधित कुछ सवालों को ले कर इस प्रतिनिधि ने एक अनुभवी शिक्षाविद तथा राष्ट्रीय स्तर की संस्था 'भारतीय अभिभावक शिक्षक संघ' के मुख्य सचिव अनूपकुमार साहनी से जो बातचीत की, उस के प्रमुख अंश यहां प्रस्तुत हैं:

प्रश्न : साहनी साहब, क्या आप वर्तमान शिक्षा प्रणाली से संतुष्ट हैं, यदि नहीं तो क्यों?

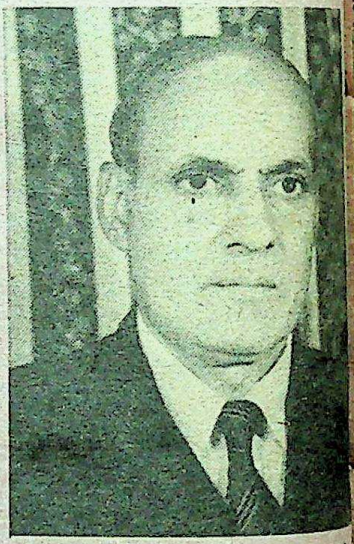

उत्तर : वर्तमान शिक्षा प्रणाली से शायद ही कोई संतुष्ट होगा. वैसे इस बा मेरी अपनी धारणा यह है कि मौजूदा शि पद्धति ने सारे समाज को दो भागों में रखा है. बड़े सरकारी अफसरों, उद्योगपतियों व अधिकार संपन्न राजनी बाजों की संतानें यदि अंगरेजी माध्य स्कूलों में शिक्षा पाती हैं तो शेष जन बच्चे उन साधारण स्कूलों में पढ़ते हैं, बैठने और पढ़ाने के बुनियादी साधन उपलब्ध नहीं हैं. शिक्षा की यही दो नीति समाज में असंतुलन और भेदभाव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर रही है. अतः यह [illegible] कहीं होगा कि अब शिक्षा प्रणाली को भी आमूल परिवर्तनों की जरूरत है. वैसे भी इस दोहरी शिक्षा नीति के रहते हमारा यह कहना कोई अर्थ नहीं रखता कि हम एक समतामूलक समाज के अंग हैं.

प्रश्न : तो आप की समझ में इस दोहरी शिक्षा प्रणाली के लिए दोषी कौन है?

उत्तर : इस के लिए मैं उन्हें ही दोषी मानता हूं जो इस व्यवस्था के नीति निर्धारक हैं. आज तक शिक्षा के मामले को ले कर जितने भी आयोग बने हैं व उन की रिपोर्टें प्रकाश में आई हैं, उन में तकरीबन सभी आयोगों ने माना है कि बच्चों को प्रारंभिक शिक्षा उन की अपनी मातृभाषा में दी जाए तो बेहतर होगा. लेकिन विडंबना यह है कि निहित स्वार्थों के कारण इस ओर किसी ने ध्यान तक नहीं दिया और नतीजे सामने हैं. दोषी तो प्रशासन व्यवस्था की वह अंगरेजीदां लाबी भी है जो चाहती है कि यह शैक्षणिक भेद बना रहे ताकि उन के बच्चों को मैकाले की योजना के अनुसार आसानी से

भारतीय अभिभावक संघ का स्वरूप मजदूर यूनियनों की तरह नहीं है बल्कि इस में अभिभावक और शिक्षक दोनों मिल कर ही बच्चों की समस्याओं पर विचार करते हैं.

प्रश्न : लेकिन 1986 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति की समीक्षा के लिए आचार्य राममूर्ति की अध्यक्षता में बनाई गई समिति ने जो 'मैकाले की शिक्षा पद्धति' को हमेशा के लिए विदा करने की सिफारिश की है?

उत्तर : इस में शक नहीं कि आचार्य राममूर्ति की अध्यक्षता में नियुक्त समिति ने बहस के लिए जो परिप्रेक्ष्य पत्र तैयार किया है, उस में मैकाले की शिक्षा पद्धति को विदा करने का आह्वान किया गया है और कुछ सिफारिशें भी की गई हैं. जैसे शिक्षा और व्यावसायिक शिक्षा में फर्क मिटाया जाए, पड़ोसी स्कूल व्यवस्था लागू की जाए,

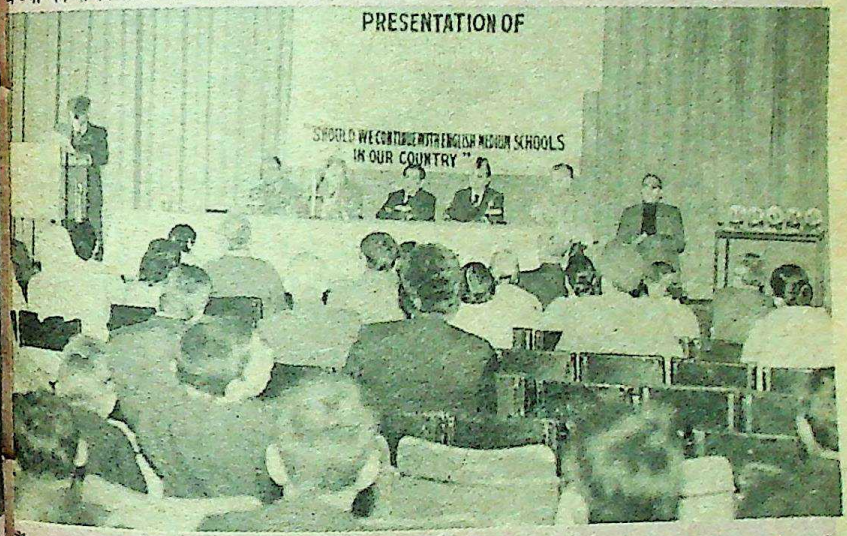

शिक्षा प्रणाली के निरंतर गिरते स्तर को देख कर इस में सुधार लाने की मांग देश में चारों ओर से उठ रही है. शिक्षा प्रणाली के दोषों को दूर करने में भारतीय अभिभावक शिक्षक संघ की भूमिका के संदर्भ में प्रस्तुत हैं इस संघ के मुख्य सचिव अनूपकुमार साहनी के विचार.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्षेत्रीय भाषाओं में शिक्षा देने के प्रबंध किए जाएं तथा शिक्षा पर सकल राष्ट्रीय आय का न्यूनतम 6% खर्च हो, आदिआदि. लेकिन देखना यह है कि मौजूदा सरकार इन सिफारिशों को लागू कैसे करती है क्योंकि इस सरकार में भी मैकाले के कुछ एजेंट विद्यमान हैं जो नहीं चाहते कि मौजूदा शिक्षा व्यवस्था का कोई ठोस, व्यावहारिक और साहसिक विकल्प बने, जबकि राममूर्ति समिति का परिप्रेक्ष्य पत्र कई क्रांतिकारी परिवर्तनों का हिमायती है.

प्रश्न : आज अधिकांशतः अंगरेजी माध्यम के स्कूल 'क्वालिटी एजूकेशन' देने का दावा करते हैं, तो क्या वास्तव में वहां ऐसी शिक्षा पद्धति का परिवेश है जो अन्य स्कूलों में नहीं है?

उत्तर : अंगरेजी माध्यम वाले स्कूलों में साधनों की कमी भले ही न हो, लेकिन यह कहना कि यहां का शैक्षणिक माहौल दूसरे स्कूलों से बेहतर है, सही नहीं है. इस के दो कारण हैं. पहला कारण तो यह है कि ये स्कूल 'नेबरहुड' यानी पड़ोसी स्कूल नहीं हैं जैसा कि अमरीका, रूस तथा अन्य पश्चिमी देशों में हैं. दूसरे, ज्यादातर अभिभावक इस कुंठा से भी ग्रस्त हैं कि अंगरेजी माध्यम का स्कूल, भले ही वह घर से कई कोस की दूरी पर हो, पड़ोसी स्कूल की अवधारणा से कहीं बेहतर है. जबकि व्यक्तिगत अनुभव के आधार पर मैं यह कह सकता हूं कि बच्चों को दूर के स्कूलों में पढ़ाने वाले मातापिता या अभिभावक भी तब तक आशंकित और चिंतित ही रहते हैं जब तक कि उन का बच्चा सहीसलामत घर नहीं लौट आता.

प्रश्न : 'पड़ोसी स्कूल' का विचार मूलतः कोठारी आयोग का है, लेकिन मौजूदा परिस्थितियों में यह विचार पनपने की अपेक्षा और गहरे दफन हुआ है. इस बारे में आप की क्या राय है?

उत्तर : पड़ोसी स्कूल का विचार गलत नहीं है, लेकिन यह ठीक है कि कुकरमुत्तों की तरह तेजी से फैलते पब्लिक स्कूलों ने तथा सरकारी स्कूलों में शिक्षा के गिरते स्तर ने इस अच्छे विचार को आज गौण बना दि[illegible] है.

प्रश्न : आप इस बात से कहां [illegible] सहमत हैं कि जो अभिभावक अपने ब[illegible] को निजी स्कूलों में भेजने की हैसियत [illegible] रखते, वे ही पड़ोस के स्कूल को ज्य[illegible] वरीयता देते हैं?

उत्तर : आप का कहना ठीक है, लेकि[illegible] यह पूर्ण सत्य नहीं है. पुराने आई. ए. ए[illegible] अफसरों या ऊंचे पदों पर बैठे व्यक्तियों [illegible] पूछें तो उन में से कोई विरला ही होगा जि[illegible] ने अंगरेजी माध्यम स्कूल से शिक्षादीक्षा [illegible] होगी. तो क्या उन सब को अयोग्य ठहरा[illegible] उचित होगा जिन्होंने किसी अंगरे[illegible] माध्यम स्कूल से शिक्षा न ली हो? कौन न[illegible] जानता कि आज अंगरेजी माध्यम के [illegible] स्कूल प्राइवेट नर्सिंगहोम की तरह मुनाफे [illegible] ध्यान में रख कर चलाए जा रहे हैं. चूंकि यहां पूंजी निवेश में लाभ ही लाभ है लिहाजा कई बड़े पूंजीपति भी अपने होटल[illegible] को बंद कर के शैक्षणिक दुकानें खोल रहे हैं. दूसरे, यह भी ठीक है कि जब तक सरकारी स्थानीय निकायों और सहायता प्राप्त स्कूल[illegible] की गुणवत्ता में अपेक्षित सुधार नहीं होग[illegible] तब तक ये भी सही अर्थों में पड़ोसी स्कू[illegible] नहीं बन सकते.

बस्ते का बढ़ता बोझ

प्रश्न : वर्तमान शिक्षा प्रणाली ने बच्चों के बस्तों का भार इतना ज्यादा बढ़ा दिया है कि बच्चे उस बोझ को उठा ही नहीं सकते. यह कहां तक व्यावहारिक है?

उत्तर : आप बस्ते की बात करते हैं. मुझे तो यह डर है कि इन भारी होते बस्तों को उठाने के लिए किसी अतिरिक्त बोझ ढोने वाले की भी जरूरत पड़ सकती है. लेकिन मैं ऐसे बोझ को उठाने का समर्थक नहीं हूं. अंगरेजी माध्यम स्कूलों में भले ही बच्चों के बस्ते उन के अभिभावक या नौकरचाकर उठा कर लाएं, लेकिन यह भी उसी बुराई जैसा है जैसे किसी स्कूली बच्चे के लिए घर में हर विषय का एक अलग [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

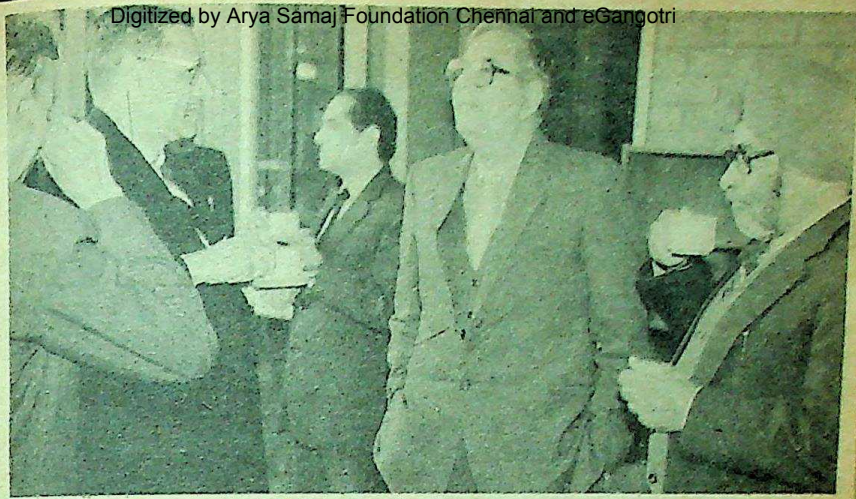

समयसमय पर अभिभावक व शिक्षक आपस में मिलबैठ कर बच्चे की रुचिअरुचि एवं क्रियाकलापों की बेबाक समीक्षा कर उस की दिशा निर्धारित करने में भूमिका निभा सकते हैं.

ट्यूटर लगा देना. जब घर में विभिन्न विषयों के ट्यूटर लगा कर ही बच्चों को पढ़ाना हो तो फिर इस में स्कूल का क्या योगदान रहा? इसी लिए मैं जोर दे कर कहता हूं कि बच्चे के सर्वांगीण विकास के साथसाथ उसे अपने पैरों पर खुद खड़ा होना भी सिखलाएं.

प्रश्न : अब तक आप का अभिभावक शिक्षक संघ कितने स्कूलों में कार्यरत है और यह किनकिन समस्याओं का कैसे निबटारा करता है?

उत्तर : अब तक तकरीबन 22,000 स्कूलों में अभिभावक शिक्षक संघ की स्थापना हो चुकी है. हमारे संघ का स्वरूप मजदूर यूनियनों की तरह नहीं है बल्कि इस में अभिभावक और शिक्षक दोनों मिल कर ही बच्चों की समस्याओं पर विचार करते हैं और उन का रचनात्मक तथा मनोवैज्ञानिक हल निकालते हैं.

प्रश्न : आज के संदर्भ में जब कोई छात्र या छात्रा परीक्षा में फेल हो जाए तो आप इस का दोष किसे देंगे, शिक्षक को, अभिभावक को या विद्यार्थी को?

उत्तर : यह एक टेढ़ा सवाल है. सामान्यतः मातापिता या अभिभावक अपने बच्चों को स्कूलों में प्रवेश दिला कर निश्चित हो जाते हैं

मैं ने खुद देखा है कि कई अभिभावक प्रधानाचार्य द्वारा या अभिभावक शिक्षक संघ की बैठक में बुलाए जाने पर हाजिर नहीं होते और बाद में वे अपने बच्चों के दोषों के लिए विद्यालय पर ही गुस्सा उतारते हैं, लेकिन यह गलत है. कोई भी स्कूली बच्चा यदि कोई गलत आचरण करता है, चोरी करता है या स्मैक पीता है तो इस में उसे सुधारने की जिम्मेदारी मातापिता व शिक्षक दोनों की होनी चाहिए. इस के लिए जरूरी है कि समयसमय पर मातापिता व शिक्षक आपस में मिलबैठ कर बच्चे की रुचिअरुचि व अन्य क्रियाकलापों की बेबाक समीक्षा करें और जहां लगे कि बच्चा अब नियंत्रण से बाहर जा रहा है तो वहां उसे ऐसी मनोवैज्ञानिक खुराक दें कि बच्चा गलत संगत या गलत राह पर जा ही न सके. हर शिक्षित बच्चे को संस्कारित और स्वावलंबी बनाने के लिए हमेशा यह याद रखना चाहिए कि–

कमाले बुजदिली पस्त होना अपनी आंखों में,
वरना कौन कतरा है जो दरिया बन नहीं सकता. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राथमिक शिक्षा का गिरता स्त

लेख ● चिरोंजीलाल श्रीवास्तव

आज शिक्षा के गिरते स्तर पर देश का हर बुद्धिजीवी चिंतित है. अगर प्राथमिक शिक्षा के स्तर का मूल्यांकन किया जाए तो निश्चय ही स्थिति बड़ी भयावह है. यही कारण है कि आज आम आदमी भी वर्तमान शिक्षा जगत की आलोचना और अतीत शिक्षा जगत का गुणगान करता नहीं थकता है. प्रश्न यह है कि प्राथमिक शिक्षा के इस गिरते स्तर के लिए जिम्मेदार कौन है?

सही तो यह है कि संख्यात्मक विकास के साथ गुणात्मक विकास का ह्रास होता ही है. स्वतंत्रता के बाद शिक्षा प्रसार पर जितना जोर दिया गया उतना उस की गुणवत्ता पर नहीं दिया गया. यह संभव भी नहीं था. परंतु स्वतंत्रता के 44 वर्ष बाद भी प्राथमिक शिक्षा का स्तर न सुधरना एक विचारणीय विषय है. शिक्षा के इस गिरते स्तर के लिए अकसर लोग शिक्षक वर्ग को ही जिम्मेदार ठहराते हैं. लेकिन इस के लिए मात्र शिक्षक को दोष देना उस के साथ अन्याय होगा.

इस के लिए जिम्मेदार है भारत की सामाजिक व्यवस्था, सरकार और कुछ अंशों में शिक्षक स्वयं भी. भारत गांवों का देश है. गांवों से हट कर शिक्षा का मूल्यांकन नहीं किया जा सकता है. (शहरों में कुछ निजी संस्थाएं शिक्षा का स्तर बनाए हुए हैं.) ग्रामों में सदैव तथाकथित सवर्णों (उच्च वर्ण) की सत्ता रही है. स्वतंत्रता के पूर्व इन सवर्णों ने शूद्रों, दलितों और अधिकांश पिछड़ी जाति के लोगों के बच्चों को स्कूल के दर्शन नहीं करने दिए. फलतः 90% जनता अनपढ़ रही.

देश की प्रगति और समृद्धि के लिए हर नागरिक का शिक्षित होना अनिवार्य है. इसलिए भारतीय संविधान के अनुच्छेद 45 में 6-14 वर्ष आयु वर्ग के बच्चों को अनिवार्य और निःशुल्क शिक्षा का प्रावधान रखा गया. इस लक्ष्य प्राप्ति की अवधि 10 वर्ष

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्तर और सुधार की संभावनाएं

प्राथमिक शिक्षा के निरंतर गिरते स्तर के लिए अकसर शिक्षकों को जिम्मेदार ठहराया जाता है. लेकिन इस के लिए केवल शिक्षक ही नहीं अपितु सरकार एवं दोषपूर्ण शिक्षा नीतियां भी उत्तरदायी हैं. आवश्यकता इस बात की है कि उन कारणों का निवारण किया जाए जिन की वजह से प्राथमिक शिक्षा का स्तर पतन के गर्त में समा रहा है.

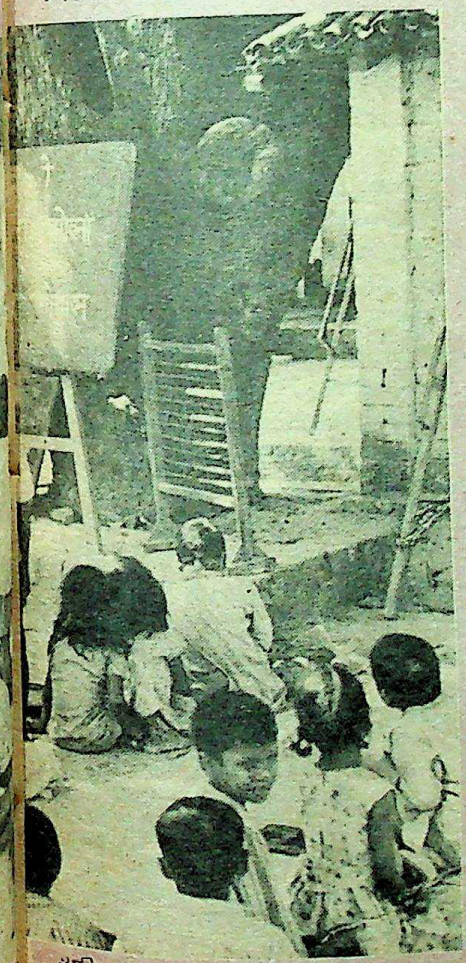

रखी गई थी. (परंतु लक्ष्य अभी तक पूरा नहीं हुआ.)

लक्ष्य की ओर बढ़ने के लिए राज्य सरकारों ने हर शहर और हर बड़े गांव में शालाएं खोल दीं. हरिजन और आदिवासी बच्चों को शाला में प्रवेश देने के लिए विशेष प्रयास किए गए. हरिजन और आदिवासियों के लिए यह एक बहुत बड़ी क्रांति थी. परंतु धनिक सवर्ण सदैव हर प्रकार की क्रांति और परिवर्तन के प्रति शंकालु रहे हैं. उन का स्वार्थ यथास्थिति में ही निहित है.

यही कारण रहा कि सवर्णों विशेष कर ब्राह्मणों ने शिक्षा की इस क्रांति का यह कह कर विरोध किया कि शिक्षा से लड़के और खासकर लड़कियां बिगड़ जाएंगी. उन को इस में ब्राह्मणीय शिक्षा के खंडहरों का नामोनिशान मिटने का भय था. उन को यह भी भय था कि शिक्षा प्रसार से शिक्षा पर जिन उच्चवर्णों का आधिपत्य है वह समाप्त हो जाएगा. परिणाम होगा हुजूर और मजूर (मजदूर) के अंतर की समाप्ति. प्रभावशाली धनी वर्ग मजदूर को कभी हुजूर नहीं बनने देना चाहता था. अतः उस ने शिक्षा के हर कदम पर अड़ंगा डाला.

मेरा जीवन ग्रामीण शालाओं में ही बीता है. मैं ने ग्रामों के उच्चवर्णीय पटेलों को शिक्षकों से यह कहते सुना है, "मास्टर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहब, इन गरीबों (विशेषकर हरिजनों) के बच्चों को पढ़ा कर आप हमारे हरवाहे (हाली) और चरवाहे कम मत करो. पढ़ा कर इन मूर्खों के दिमाग मत सड़ाओ. आप तो तनख्वाह लो और आराम करो."

ऐसी संकीर्ण मनोवृत्ति के लोगों ने एक ओर तो शिक्षा के लोकव्यापीकरण में बाधा डाली और दूसरी ओर शिक्षकों को कर्तव्यच्युत करने की कोशिश की. अशिक्षित होने के कारण गरीब वर्ग के लोग चेतनाशून्य रहे. उन्होंने शिक्षा के महत्त्व को नहीं समझा. इस का परिणाम यह हुआ कि जनता में अपने बच्चों को शिक्षित करने की जो ललक होनी चाहिए थी, वह नहीं हो सकी, बल्कि शिक्षा के प्रति जनता उदासीन ही रही.

प्रारंभ से ही हमारी शिक्षा का संपूर्ण वातावरण उत्साहहीन, प्रेरणाहीन और बुझाबुझा सा औपचारिक हो कर रह गया. अभिभावकों के चेतनाशून्य, अनपढ़ और गरीब होने के कारण शाला में प्रवेश पाने वाले छात्रों की पढ़ाई भी गौण ही रही. उन का मुख्य लक्ष्य अपने मातापिता के कार्यों में हाथ बंटाना रहा.

इधर संख्यात्मक वृद्धि के कारण शिक्षक बच्चों पर व्यक्तिगत ध्यान नहीं दे पाते हैं. जिन शालाओं में पांच कक्षाएं और 150-200 बच्चे हों तथा एक या दो शिक्षक हों वहां व्यक्तिगत ध्यान देना संभव भी नहीं है.

प्राथमिक कक्षाओं के पाठ्यक्रम निर्माता ऐसे शिक्षाशास्त्री होते हैं, जिन का ग्रामीण वातावरण से कोई संबंध नहीं रहता है. विदेशी शिक्षाशास्त्रियों के शिक्षा सिद्धांतों को आधार मान कर वातानुकूलित कक्षों में बैठ कर पाठ्यक्रम बना दिया जाता है. कुल मिला कर हमारा समूचा पाठ्यक्रम आयातित होता है.

पाठ्यक्रम बनाते समय बच्चों की आयु, मानसिक स्तर, ग्रामीण परिवेश, बहु-संख्यक समाज की आर्थिक स्थिति, शाला भवनों की कमी, शिक्षा उपकरण, बच्चों की संख्या और शिक्षक छात्र अनुपात पर बिलकुल ध्यान नहीं दिया जाता है. पाठ्यक्रम बनाने में अनुभवी शिक्षकों के अनुभव का कभी उपयोग नहीं किया जाता है.

शिक्षकों के लिए ऐसा पाठ्यक्रम बड़े अधिकारियों का 'हुक्मनामा' मात्र होता है. इस हुक्मनामा के अनुसार राज्य का पाठ्यपुस्तक निगम पुस्तकें तैयार कर देता है. परिणाम यह होता है कि इन पाठ्यपुस्तकों का वजन बच्चे से ज्यादा होता है. ये पुस्तकें भी तब प्राप्त होती हैं जब आधा सत्र निकल जाता है.

प्राथमिक कक्षाओं का पाठ्यक्रम भी इतने उच्च स्तर का होता है कि सामान्य बुद्धि के बच्चे उस को एक वर्ष में पूरा कर ही नहीं सकते. उदाहरणार्थ, कक्षा के गणित विषय में प्रारंभिक क्रियाओं से ले कर ब्याज, अनुपात व समानुपात, औसत, दशमलव भिन्नें, सैकड़ा प्रतिसैकड़ा, क्षेत्रफल आदि के इतने जटिल प्रश्न पाठ्यपुस्तकों में दिए गए हैं कि सामान्य स्तर का हाईस्कूल का छात्र भी उन को हल नहीं कर सकता है.

हिंदीकरण के नाम पर विज्ञान विषय तो ऐसा लगता है मानो हम संस्कृत भाषा की कोई गद्य की पुस्तक पढ़ रहे हैं. छोटेछोटे बच्चों की पूरी शक्ति और समय विज्ञान में मेरुरज्जु, गुरुत्वाकर्षण, अपद्रव्य, विलेय, विलयन, विलायक, क्वथनांक, संवहन आदि सैकड़ों कठिन शब्दों को रटने और समझने में ही बीत जाता है. क्या हम बच्चों को सरल शब्दों में इन चीजों की जानकारी नहीं दे सकते? क्या इन जबड़ातोड़ शब्दों की जानकारी बड़ी कक्षाओं में नहीं दी जा सकती है?

इतिहास विषय में भी सिंधु घाटी की सभ्यता से ले कर श्रीमती इंदिरा गांधी तक का पूरा पाठ्यक्रम हम प्राथमिक कक्षाओं में ही समाप्त करा देना चाहते हैं. यही स्थिति अन्य विषयों की है.

आज देश की 40% प्राथमिक शालाओं के पास भवन नहीं है. जो शाला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भवन बने हैं वे इतने अपर्याप्त हैं कि बच्चे बैठ ही नहीं सकते हैं. कहींकहीं तो एक ही कमरे में दोदो शिक्षक बैठते हैं और तीनचार कक्षाएं लगती हैं. भ्रष्टाचार का यह हाल है कि शाला भवनों का मूल्यांकन हो जाता है परंतु गिरने के डर से उन में कक्षाएं नहीं लगती हैं. जो शालाएं पटेलों के दालानों में लगती हैं वहां पटेल साहब या किसी पड़ोसी के घर कोई कार्यक्रम हुआ तो शिक्षक दालान खाली करने के लिए बाध्य हो जाता है. साल में कई कार्य दिवस इस प्रकार बेकार चले जाते हैं.

अधिकांश शालाओं में शिक्षण सहायक सामग्री तो क्या बैठने के लिए टाट पट्टियां भी उपलब्ध नहीं हैं. देश की लगभग 3 लाख शालाओं में श्यामपट्ट तक नहीं हैं. शाला के रजिस्टर कागजपत्र आदि रखने के लिए एक पेटी तक नहीं है. 60% प्राथमिक शालाओं में छात्रों के लिए पीने के पानी की व्यवस्था भी नहीं है. जब बच्चा पानी पीने अपने घर जाता है तो वह कम से कम 30 मिनट में लौटता है. इस का अर्थ है 10 माह में लगभग 144 शिक्षा घंटों की हानि.

शिक्षकों की नियुक्ति एवं स्थानांतरण में प्रशासकों द्वारा जो अनियमितताएं बरती

शाला भवन, टाट पट्टियां, श्याम पट्ट तथा अन्य आवश्यक वस्तुओं के अभाव में शिक्षण कार्य उचित ढंग से नहीं चल सकता. जब तक इस ओर ध्यान नहीं दिया जाएगा, शिक्षा में सुधार होना कठिन है.

जाती हैं वे किसी से छिपी नहीं हैं. यह ठीक है कि कौन व्यक्ति शिक्षक पद के योग्य है, इस का पैमाना शासन के पास नहीं है. परंतु योग्य और जरूरतमंद का चुनाव तो किया ही जा सकता है. लेकिन यह शिक्षा जगत की विडंबना है कि शिक्षक पद पर केवल उन्हीं प्रत्याशियों का चुनाव हो पाता है जिन के पास नेताओं का छल एवं पैसे का बल होता है. स्पष्ट है, जो केवल जेब खर्च के लिए नौकरी करने के इच्छुक होते हैं, वे ही शिक्षक बन पाते हैं, चाहे वे कितने ही अयोग्य क्यों न हों.

मध्य प्रदेश में ऐसे कई धनी और प्रभावशाली शिक्षक हैं जो केवल वेतन के दिन वेतन केंद्रों पर जाते हैं और पूरा वेतन प्राप्त करते हैं तथा शालाओं में अपनी ओर से 150-200 रुपए माहवार का 'स्थानापन्न शिक्षक' नियुक्त कर देते हैं. किसी की हिम्मत नहीं होती है कि ऐसे शिक्षकों पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उंगली भी उठा सकें क्योंकि ऐसे शिक्षक अपना पूरा समय नेतागीरी में लगाते हैं. ऐसे लोगों का ईमानदारी और अपने कर्तव्य के प्रति निष्ठा से कोई सरोकार नहीं होता.

नियुक्ति के स्थान के मामले में भी भेदभाव बरता जाता है. जो सुविधासंपन्न होते हैं उन की नियुक्ति सुविधाजनक स्थानों पर होती है. जिन के पास 'विशेष प्रयास' की गुंजाइश नहीं है, योग्य होते हुए भी उन की नियुक्ति दूरदराज ग्रामीण अंचलों में होती है.

इस पक्षपात का परिणाम यह होता है कि योग्य और निष्ठावान व्यक्ति को नियुक्ति के दिन से ही कुंठा रोग घेर लेता है. इस कुंठा रोग का प्रभाव उस की कार्यक्षमता और लगन पर अवश्य पड़ता है और समाज उस से जो लाभ ले सकता था वह नहीं ले पाता है.

शिक्षक के स्थानांतरण का तो और भी बुरा हाल है. तबादले अकसर विभाग और शिक्षकों की आवश्यकता के आधार पर किए जाते हैं. परंतु आज शिक्षकों के तबादले केवल राजनीतिक आधार पर होते हैं. केवल सत्ता पार्टी के सांसदों और विधायकों की सूची के अनुसार ही स्थानांतरण होते हैं. कभीकभी तो स्थानांतरण करने वाला अधिकारी शिक्षक से स्पष्ट कह देता है कि अमुक मंत्री या नेता से सिफारिश करा कर लाओ तभी स्थानांतरण पर विचार किया जा सकता है.

फिर सिफारिश के लिए इस 'राष्ट्रनिर्माता' को छुटभैया नेताओं से ले कर बड़े नेताओं तक के तलवे चाटने पड़ते हैं. बड़े नेताओं तक पहुंचने के लिए उसे सभी भ्रष्ट सीढ़ियां पार करनी होती हैं. बड़े नेता की सिफारिश के साथ उस को भेंटपूजा भी करनी पड़ती है अन्यथा चाहे उस के बच्चे उच्च शिक्षा से वंचित रहें या उस के घर का कोई सदस्य असाध्य रोग से पीड़ित हो, उस का स्थानांतरण नहीं हो सकता है.

बेचारा शिक्षक अपना पूरा सेवा काल इस भ्रष्ट व्यवस्था को कोसता हुआ निकालता है. शिक्षक को सब से अधिक दुख तो तब होता है जब स्थानीय असुविधाओं के कारण वह अपने बच्चों को उच्च शिक्षा दिलाने में असमर्थ रहता है.

अधिकारी वर्ग शिक्षक से आत्मीय संबंध तो क्या परिचयात्मक संबंध भी नहीं बनाना चाहता है. विभागीय अधिकारियों द्वारा जितना अपमान शिक्षक का होता है उतना और किसी का नहीं होता. जब शिक्षक अपने लंबित मामलों के संबंध में अधिकारियों से मिलने जाता है तो वे उस से मिलना तक पसंद नहीं करते हैं. अगर मिलने का अवसर भी दिया तो उन का बात करने का ढंग इतना बेहूदा होता है कि शिक्षक अपमान का घूंट पी कर रह जाता है.

अधिकांश ग्रामीण शिक्षकों के संबंध में यह शिकायत सुनी जाती है कि वे हफ्तों शाला से गायब रहते हैं. निश्चय ही शिक्षक जैसे व्यक्ति का शाला से गायब रहना अपने पद की गरिमा के विपरीत है. लेकिन इस के लिए भी शासन और समाज ही अधिक दोषी है. नियुक्ति या स्थानांतरण करते समय शासन यह कभी नहीं सोचता कि शिक्षक की सेवाओं का अधिकतम लाभ किस स्थान पर लिया जा सकता है.

अगर शिक्षक स्थानीय नहीं है तो गांव वाले सदैव उसे बाहरी व्यक्ति समझते हैं. शिक्षक ग्रामवासियों में अपनत्व की भावना नहीं देखता है. अधिकांश गांवों में तो शिक्षकों (विशेषकर हरिजन आदिवासी शिक्षकों) को रहने के लिए किराए पर भी मकान नहीं मिलते हैं. अगर मिलते भी हैं तो ऐसे कि जहां लोग अपना गधा बांधना भी पसंद नहीं करेंगे. ऐसा व्यवहार शिक्षक की कर्तव्य निष्ठा पर चोट पहुंचाता है.

अगर शिक्षा में गुणात्मक विकास लाना है तो मात्र शिक्षक की आलोचना से काम नहीं चलेगा. शासन को अपनी खामियां दूर कर बुनियादी सुधार लागू करने ही पड़ेंगे.

सर्वप्रथम प्राथमिक शिक्षा का पाठ्यक्रम नपातुला होना चाहिए. पांचछः वर्ष का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

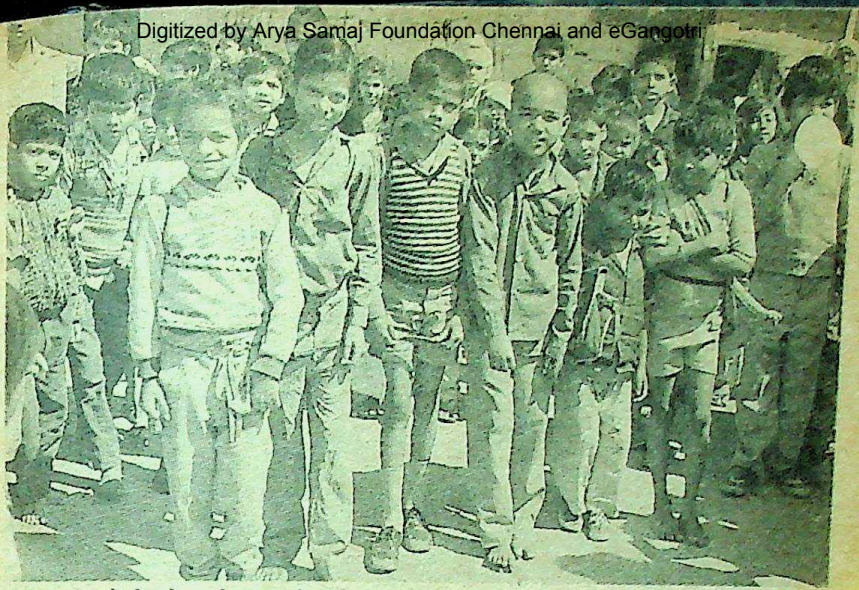

जनगणना, मतदाता सूची तैयार करना आदि सर्वेक्षण कार्यों में प्राथमिक शाला के शिक्षकों को लगा दिए जाने के कारण शिक्षण कार्य ठप्प रहता है. परिणामस्वरूप अव्यवस्था हो जाना स्वाभाविक ही है.

बच्चा एक कोरी स्लेट की तरह होता है. उस को वर्ण अंक और मात्राएं सीखने तथा बोलने में समय लगता है. इसलिए सामान्य छात्रों के लिए पहली कक्षा का पाठ्यक्रम दो वर्ष का रखा जाए.

पहली और दूसरी कक्षा ही आगे की कक्षा की नींव होती है. इसलिए इन कक्षाओं में केवल मातृभाषा और गणित विषय ही पढ़ाया जाए और जब बच्चा पूरा पाठ्यक्रम आत्मसात कर ले तभी उसे आगे की कक्षा में भेजा जाए.

प्रारंभिक कक्षाओं की वार्षिक परीक्षाओं में परीक्षाफल के प्रतिशत पर प्रतिबंध नहीं होना चाहिए.

खेद का विषय है कि हमारे शिक्षाशास्त्रियों ने प्राथमिक शिक्षा को कभी महत्त्व नहीं दिया है. साक्षरता का अधिक प्रतिशत बताने के लालच से कई राज्य सरकारों ने तो कक्षा 1 से 3 तक अनिवार्य कक्षोन्नति का नियम लागू कर दिया है, चाहे बच्चे की वार्षिक उपस्थिति नगण्य ही क्यों न हो. इस का परिणाम यह हुआ है कि कक्षा 4 और 5 में अध्ययनरत कई छात्र वर्णमाला के अक्षर और गिनती के अंक भी नहीं पहचान पाते हैं.

शिक्षा के स्तर के लिए यह नीति बहुत ही घातक सिद्ध हुई है. जब किसी भवन की नींव ही कमजोर हो तो भवन का कमजोर होना भी स्वाभाविक है. अनिवार्य कक्षोन्नति की अपेक्षा प्राथमिक कक्षाओं के पूरे पाठ्यक्रम को कक्षावार और विषयवार इकाइयों में विभक्त कर सतत मूल्यांकन के आधार पर कक्षोन्नति की जा सकती है, परंतु इस में समय सीमा का बंधन नहीं होना चाहिए. एक सत्र में कक्षोन्नति की अनिवार्यता के कारण सतत मूल्यांकन की प्रणाली निरर्थक सिद्ध हुई है.

पाठ्यपुस्तकों के निर्माण पर राज्यों के पाठ्यपुस्तक निगमों का एकाधिकार है. शिक्षण सत्र प्रारंभ होते ही अधिकांश विषयों की पाठ्यपुस्तकें छात्रों को प्राप्त नहीं हो पाती हैं जिस के कारण छात्रों की पढ़ाई का नुकसान होता है. इस नुकसान से बचने के लिए शासन को चाहिए कि वह शिक्षण सत्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रारंभ होते ही सब विषयों की पाठ्यपुस्तकें छात्रों को उपलब्ध करा दे.

शिक्षा प्रसार के लिए शालाएं खोलना जितना अनिवार्य है उतना ही अनिवार्य उपयुक्त शाला भवन बनवाना भी है. शाला भवन के अभाव में पूरे समय तक कक्षाओं का लगना संभव नहीं है. निजी दालानों में, मंदिरों में या पेड़ों के नीचे शिक्षक स्वतंत्रता तथा तन्मयता के साथ शिक्षण कार्य नहीं कर सकते.

छात्रों को बैठने के लिए पर्याप्त स्थान के साथसाथ पर्याप्त टाटपट्टियां भी होनी चाहिए. इस समय देश की 1.65 लाख प्राथमिक शालाएं एक शिक्षकीय हैं. क्या पांच कक्षाओं को अकेला एक शिक्षक संतोषजनक रूप से पढ़ा सकता है? एक शाला में कम से कम तीन शिक्षकों का होना अनिवार्य है.

बच्चों को पीने के लिए पानी की व्यवस्था प्रत्येक शाला में होनी चाहिए ताकि उन का समय पानी पीने के लिए बाहर आने जाने में नष्ट न हो. शालाओं में श्यामपट्ट चार्ट, नक्शे, चाक आदि अनिवार्य शिक्षण सामग्री समय पर उपलब्ध कराई जाए.

शालाओं में सामग्री उपलब्ध न करा पाने का कारण प्रशासन सदैव धनाभाव बताता है. पर देखने में यह आता है कि शिक्षण संस्थाओं पर खर्च करने के लिए जो बजट आता है उस का अधिकांश भाग अधिकारियों के कार्यालयों की साजसज्जा में खर्च होता है. कीमती फर्श, कालीन, परदे, सनमाइकायुक्त मेजें, पंखे, कीमती कुरसियां आदि ऐशोआराम की सामग्री शालाओं के बजट में से ही खरीदी जाती हैं. जबकि शिक्षण संस्थाओं को घड़ी जैसी अनिवार्य वस्तु भी प्रदान नहीं की जाती है.

शिक्षा विभाग की कोई भी योजना या नीति तभी सफल हो सकती है जब कि शिक्षक चाहें. शासन शिक्षकों से तभी सहयोग ले सकता है जबकि वह हर क्षेत्र में उन की पदगरिमा और हितों को ध्यान में रखे. इस के लिए शिक्षकों के चयन, नियुक्ति और स्थानांतरण को युक्तिसंगत बनाने के साथसाथ इन मामलों में निष्पक्ष और स्वस्थ दृष्टिकोण अपनाना होगा ताकि वे कुंठाग्रस्त न हों. पक्षपात और भ्रष्टाचार के बाणों से शिक्षा मंदिर के पुजारी का हृदय न भेदा जाए अन्यथा शिक्षा का स्तर तो क्या राष्ट्रीय चरित्र भी गर्त में चला जाएगा.

शिक्षण सत्र के बीच में शिक्षण संस्थाओं में लंबा अवकाश देने का कोई औचित्य नहीं है. छुट्टियों के मामले में शिक्षा विभाग बदनाम है. ग्रीष्मावकाश के बाद जुलाई में शालाएं खुलती हैं. जुलाई, अगस्त और सितंबर वर्षा के महीने होने से शिक्षण संस्थाओं में समुचित रूप से पढ़ाई नहीं हो पाती है.

वर्षा के बाद ही शालाओं में दशहरा से दीपावली तक शरदकालीन अवकाश शुरू हो जाता है. इस अवकाश का अर्थ है, छात्रों का बस्ता खुलते ही बस्ता बंद करा देना. इसी प्रकार 25 दिसंबर से 31 दिसंबर तक शीतकालीन अवकाश (बड़े दिन की छुट्टियां) का प्रचलन अभी तक है. बीच सत्र में लंबा अवकाश करने से छात्रों की पढ़ाई का तारतम्य टूट जाता है. उन अवकाशों को बंद कर, बदले में शिक्षकों को साल में 15 दिन का अर्जित अवकाश दिया जाए ताकि वे सुविधा व आवश्यकतानुसार छुट्टी ले सकें या उन के बदले नकद राशि ले सकें.

भारतीय संविधान ने तो नागरिकों के 'शोषण से मुक्ति' के मूल अधिकार के तहत देश में बेगार प्रथा बंद कर दी है. लेकिन शासन ने शिक्षक को 'बेगारी' की श्रेणी में ले लिया है. पशु गणना, जन गणना, बाल गणना, आवासहीनों का सर्वेक्षण, गरीबी रेखा से नीचे के लोगों की गणना, मतदाता सूची तैयार करना जैसे कामों के लिए प्राथमिक शाला के शिक्षकों को ही पकड़ा जाता है.

अगर प्राथमिक शिक्षा का स्तर सुधारना है तो देश के शिक्षाशास्त्रियों और शासन को इन बुनियादी सुधारों की ओर ध्यान देना ही पड़ेगा. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पल एक का परिचय

दो दिल में, पल एक का परिचय,
जीवन के मधु क्षण का संचय.

दो नयनों से छलकी हाला,
(दो) युग नयनों की शीतल ज्वाला
दो नयन झुके, दो चकित रहे,
बस! एक निमिष का यह विनिमय,
दो दिल में, पल एक का परिचय.

पल एक दिलों का स्पंदन
क्षण भर निश्श्वासों का बंधन,
यह एक निमिष की, चिर स्मृति.
युग कवि जीवन का, अमर पय,
दो दिल में, पल एक का परिचय.

अधरों पर लाली की थिरकन,
पल एक दिलों का यह सिहरन
दो दिल की टीस! बस एक निमिष,
दे मौन आमंत्रण, दो नयन झुक सविनय,
दो दिल में, पल एक का परिचय.

—बद्रीनारायण सिंह 'पहाड़ी'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मृगतृष्णा

कहानी ● रेनु जोगी

रात्रि के आठ बजने में मात्र कुछ ही मिनट शेष थे. असंख्य प्रकाश पुंजों की चकाचौंध, अव्यवस्थित यातायात और मद्रास महानगर के कोलाहल से मैं बौखला गई. मद्रास सेंट्रल स्टेशन से एगमोर छोटी लाइन के स्टेशन आने में अनावश्यक रूप से देर हो गई थी. इधर मदुरै की ट्रेन छूटने का समय हो रहा था. मद्रास की उमस भरी भीषण गरमी और निरर्थक भागदौड़ के कारण मैं थक कर चूर हो गई थी.

प्रथम श्रेणी के आरक्षित डब्बे में पहुंच कर मैं ने चैन की सांस ली. नारी सुलभ जिज्ञासावश मैं ने एक नजर अपने सहयात्रियों को देखा तो मेरे सुखद आश्चर्य की सीमा न रही. कुछ चेहरे ऐसे होते हैं जो जीवन भर के लिए मन व आंखों में बस जाते हैं. वह चिर-परिचित कमनीय सुदर्शन चेहरा था बचपन की मेरी सर्वाधिक प्रिय सहेली मीनाक्षी का, जो इतने वर्षों के अंतराल के पश्चात भी उतना ही कमनीय, आकर्षक और स्निग्ध था. अनायास मेरे मानसपटल पर 14 वर्ष पूर्व का समय चलचित्र सा घूम गया था.

मध्य प्रदेश के बुंदेलखंड क्षेत्र में एक छोटा सा जिला है दमोह. विस्मृत अतीत की अनेकानेक स्मृतियों की अदृश्य डोर से बंधे इस शहर से मेरा अपनापन होना स्वाभाविक ही तो है. बाल्यकाल से युवावस्था तक के पड़ाव तक की सुमधुर यात्रा की मेरी हमसफर मीनाक्षी, जिसे मैं प्यार से मनु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहती थी, की गलियों से जुड़ा हुआ है यह शहर.

किसी ने सच ही कहा है कि शैशवास्था की निस्स्वार्थ और निर्दोष धरती में प्रस्फुटित मित्रता के पौधे की जड़ों की पकड़ बहुत गहरी होती है, जिन्हें सहज ही आमूल नष्ट नहीं किया जा सकता.

उन दिनों मेरे पिता शासकीय बहुउद्देशीय उच्चतर माध्यमिक शाला के प्राचार्य थे. पुत्रमोह की दुर्लभ मृगतृष्णा के पीछे भटकते हुए हमारा परिवार निरंतर बढ़ता ही गया. पांच कन्याओं का पिता होने के कारण वह समय से पहले ही वृद्ध दिखाई देने लगे थे. सीमित आमदनी में इतनी बड़ी गृहस्थी का बोझ ढोते हुए वह निढाल से हो गए थे.

सिविल लाइंस में हमारे सरकारी मकान के पास ही लोक निर्माण विभाग के कार्यपालन अभियंता विनयमोहन रहते थे. वह महज संयोग था कि उन की इकलौती

पिता की असामयिक मौत और मां की विक्षिप्तता ने चुलबुली मीनाक्षी को तोड़ कर रख दिया था. ऐसे में अमरीका से मामा का बुलावा उसे डूबते को तिनके का सहारा लगा. लेकिन वहां पहुंच कर उसे लगा कि जिसे वह सहारा मान रही थी वह सहारा नहीं एक मृगतृष्णा थी.

बेटी मीनाक्षी और मैं एक ही कक्षा में पढ़ती थीं. कक्षा में एकदूसरे के प्रतिद्वंद्वी होने के बावजूद मनु मेरी एकमात्र अंतरंग सहेली बन गई. व्यक्तित्व, स्वभाव एवं रुचि में हम दोनों सर्वथा विपरीत थीं. वह थी आधुनिक, अल्हड़ व शोख और मैं शांत, संकोची, परंपरागत बेड़ियों में जकड़ी हुई.

आर्थिक, सामाजिक तथा प्रांतीय विषमता को तिलांजलि दे कर हम आत्मीयता एवं मैत्री के अटूट सूत्र में बंध गईं. उस के घर में ऐशोआराम एवं विलासिता की प्रत्येक वस्तु उपलब्ध थी. कई बार अपनी साधारण वेशभूषा और रहनसहन के कारण मेरे हृदय में क्षणिक कलुषता घुल जाती थी तो मनु उसे सहज

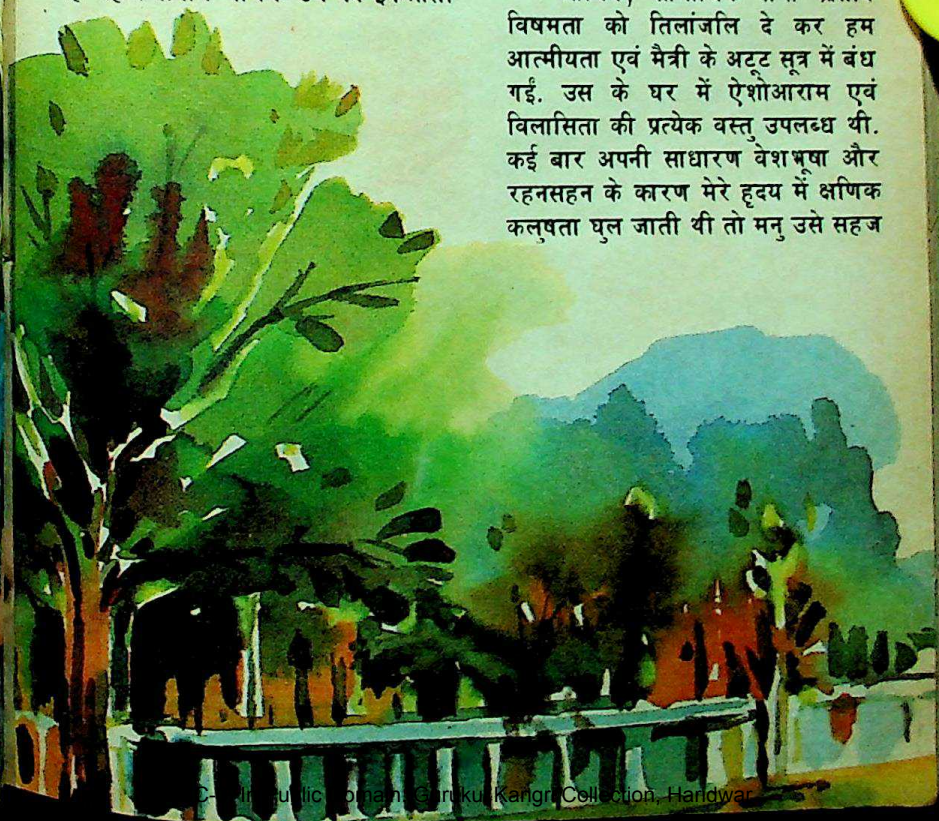

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्नेह और अपनेपन से धोपोंछ देती.

हायर सेकंडरी की परीक्षा में उत्तीर्ण होने के बाद मनु ने लखनऊ के सुप्रसिद्ध आई.टी. कालिज में दाखिला ले लिया तो मैं एकदम अकेली पड़ गई. मैं अधीरतापूर्वक उस की छुट्टियों की प्रतीक्षा करती क्योंकि न जाने कितनी मजेदार और रसीली खबरों का भंडार होता था उस के पास. उस का हंसमुख चेहरा, अनूठा हासपरिहास मुझे उस के विलक्षण व्यक्तित्व की नित्य नई झांकियां दिखाता रहता.

समय मानो पंख लगा कर उड़ रहा था. इसी दौरान मनु का जबलपुर मेडिकल कालिज में चयन हो गया. इधर बी.ए. फाइनल की परीक्षा देने के तत्काल बाद मेरा विवाह रेल विभाग में कार्यरत दिनेश से हो गया, जो उन दिनों कटनी जंकशन में नियुक्त थे.

त्योहारों के स्थान पर मैं हमेशा गरमियों की छुट्टियों में ही मायके आना पसंद करती थी क्योंकि इन्हीं दिनों मनु को भी एक माह का अवकाश मिलता था. संध्या के समय सामने मैं और मनु घर से बाहर दूर तक घूमने चल पड़तीं. कभी बेलाताल की परिक्रमा करते तो कभी टेकरी पर बने विश्राम भवन के बाग में बैठ कर लंबी गपशप.

मेडिकल कालिज के अंतिम वर्ष की परीक्षा देते ही विनय मसूरी की लालबहादुर शास्त्री अकादमी में जा कर सजातीय आई.ए.एस. दामाद की मुंहमांगी बोली लगा कर मनु की शादी तय कर आए. इतने योग्य वर से मनु की मंगनी की बात सुन कर मुझे उस से हलकी सी नारी सुलभ ईर्ष्या हुई. किंतु तब मैं नहीं जानती थी कि कुछ ही दिनों के बाद वह क्षणिक द्वेष अथाह सहानुभूति में बदल जाएगा.

उन दिनों संपूर्ण जिले में अकाल पड़ने पर विनयमोहन के निर्देशन में बड़े जोरशोर से सूखा राहत कार्य चल रहे थे. लोक निर्माण विभाग के वरिष्ठ मंत्री के गृह जिले में पदस्थ होने के कारण वह मंत्रीजी के कृपापात्र भी थे. अप्रत्यक्ष तौर पर तो यही लगता था कि इस से स्वयं विनयमोहन के परिवार को सब से अधिक राहत मिल रही थी.

तभी समय ने पलटा खाया और शासन के नेतृत्व में परिवर्तन होते ही विनयमोहन को राहत कांड के घपलों के कारण नौकरी से पदमुक्त कर दिया गया. यही अपमान और क्षोभ उन की असामयिक मृत्यु का कारण बन गया. इस के साथ ही मनु के परिवार की खुशियों पर मानों वज्रपात हो गया. मनु की मां विक्षिप्त सी हो गई. छोटा भाई कालिज के प्रथम वर्ष में पढ़ रहा था. अतः उस का उत्तरदायित्व भी मनु के अबोध कंधों पर आ पड़ा.

इधर मनु का परिवार जबलपुर में अपने निजी बंगले में स्थानांतरित हो गया. वह आलीशान अट्टालिका अब उन के लिए सब से बड़ा सिरदर्द बन बैठी थी. यह वही चर्चित भव्य कोठी थी जिस का निर्माण दिल्ली के सुप्रसिद्ध वास्तुविद से नकशा बनवा कर विनयमोहन ने बड़ी रुचि और लगन से किया था. एक ईमानदार इंजीनियर के पास इतनी धनराशि कहां से आई? ट्रक भरभर कर सीमेंट, लोहे की छड़ें और श्वेत संगमरमर की विशालतम शिलाएं कहां से आईं? इन्हीं सब प्रश्नों के उत्तर ने उन के सुयश, कर्मठता और योग्यता को शून्य में विलीन कर दिया था.

इसी बीच मेरे प्रथम पुत्र राकेश के अन्नप्राशन समारोह में जब दमोह से मां पिताजी सपरिवार आए तो उन से पता चला कि मीनाक्षी का आई.ए. अफसर से तय किया गया रिश्ता लड़के वालों की ओर से टूट गया है.

तभी ट्रेन की सीटी के तीखे स्वर से मेरे विचारों की शृंखला टूटी. मैं ने एक पल में ही मनु को पहचान लिया था. किंतु वह अब भी मुझ से अपरिचित बनी चुपचाप खिड़की के बाहर रेलवे स्टेशन की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Samaj Foundation Chennai and eGangotri

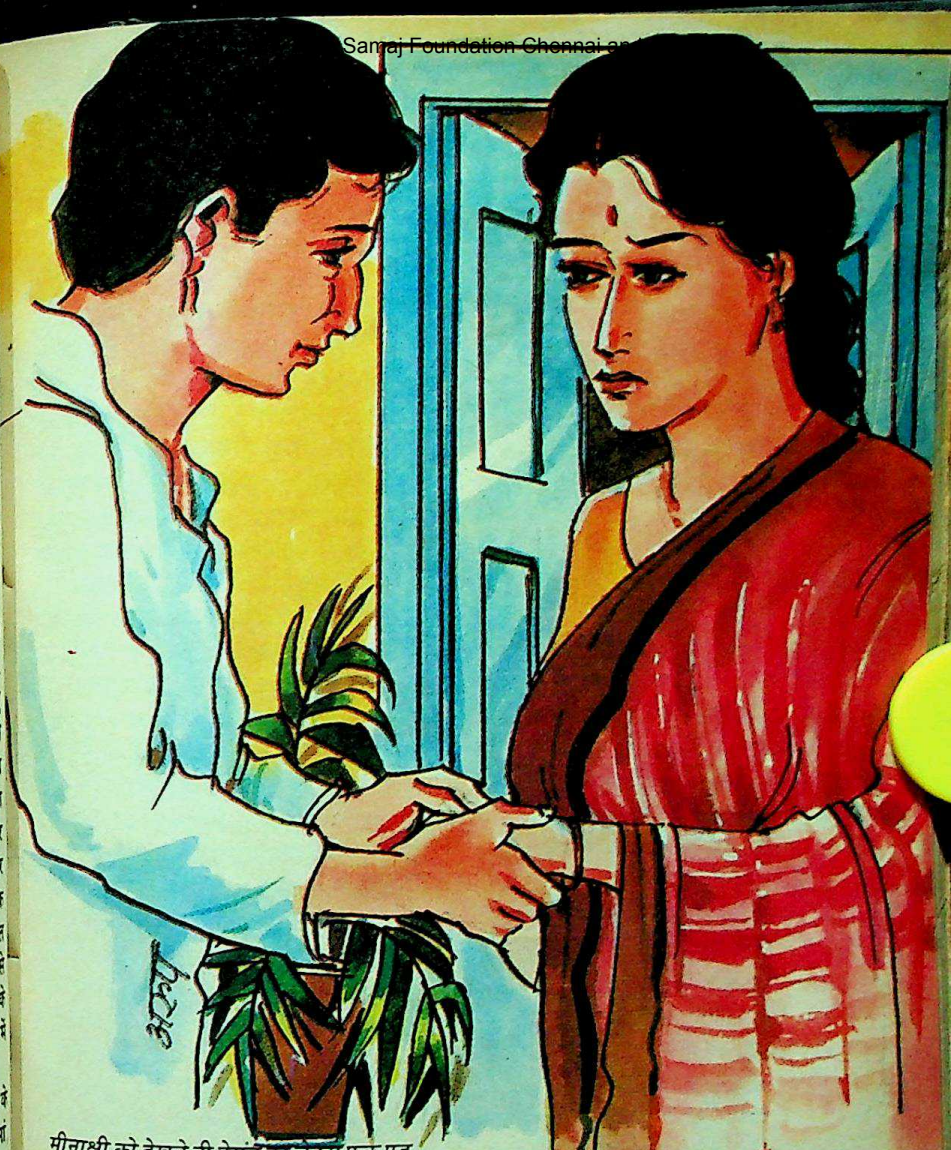

मीनाक्षी को देखते ही हेमंत का चेहरा फक पड़ गया था. वह मीनाक्षी का हाथ पकड़ कर सिर्फ यही कह सका, "विवियन हस्पताल में मेरी सहायिका है. हम सिर्फ अच्छे दोस्त हैं."

चहलपहल को देख रही थी. उस की आंखों में एक मूक वेदना और गहरी उदासी झलक रही थी.

"मनु." मैं ने उस की ओर देखते हुए धीरे से कहा, "मनु, पहचाना मुझे?"

प्रश्नवाचक दृष्टि डाल कर मनु कुछ क्षण तक मुझे ध्यानपूर्वक देखती रही. तभी एक सुखद आश्चर्य की अनुभूति कौंध गई उस के चेहरे पर, "अरे ललिता, तुम कितनी बदल गई हो? तुम्हें तो पहचानना भी मुशकिल हो रहा है."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"कैसी हो मनु? इतने दिन कहां रही... अब कहां जा रही हो?" एक श्वास में ही मैं ने उस पर प्रश्नों की बौछार सी कर दी.

"बस जीवन जी रही हूं लल्ली..." मनु का स्वर उदास और बुझा हुआ था. मानो उस की जीवनधारा का अब कोई किनारा शेष नहीं था.

"मैं ने तुम्हें कई बार याद किया पर तुम्हारा कहीं कोई पताठिकाना नहीं मिला. चलो, संयोग से एक बार फिर तुम से मुलाकात हो गई." मैं ने पुलकित हो कर कहा.

वैसे सच तो यह था कि मनु ने 14 वर्ष पहले जो भारतवर्ष की दहलीज से बाहर कदम रखा तो अब वह दूसरी ओर संभवतः आखिरी बार अपने देश लौट रही थी. निस्संदेह उस के लिए ये 14 वर्ष अत्यंत कष्टप्रद थे. एक दशक पूर्व उस की मां की रक्त कैंसर से मृत्यु हो गई थी. तभी वह एक माह के लिए भारत आई थी. इस के बाद यहां उस का अपना बचा ही कौन था जिस के लिए वह यहां आती.

मनु की बातों को सुनने में मुझे बचपन से ही बहुत आनंद आता था. उस ने अमरीका प्रवास का वृत्तांत इस प्रकार बताया.

पिताजी की आकस्मिक मृत्यु के बाद हमारा परिवार टूट कर बिखर सा गया था. सुनील से मेरी सगाई टूटने का समाचार भी तुम्हें मिल ही गया होगा. कहते हैं, डूबते को तिनके का सहारा पर्याप्त होता है. इस अथाह विपदा में मेरे प्रवासी मामाजी के अमरीका जाने के प्रस्ताव ने मुझे यथार्थ की कटुता और अपमान के दलदल से उबार दिया. उन दिनों मात्र आठ डालर की पूंजी साथ ले कर मैं उस अज्ञात देश की ओर चल पड़ी.

वहां पहुंच कर मालूम हुआ कि मामाजी को अप्रवासी वीजा मिलने में वैधानिक कठिनाई हो रही थी. इसलिए उन्होंने विवश हो कर अपने से आयु में लगभग 10 वर्ष बड़ी परित्यक्ता विदेशी स्त्री से अमरीकी नागरिकता प्राप्त करने के लोभ में शादी की थी. भारतीय संस्कारों के अनुसार वह ससुराल पक्ष वाले वधू का इच्छानुसार नाम बदल देते हैं. किंतु यहां मामा का नामकरण 'जयंत' से 'जान' और फिर 'जो' हो गया. हां, मामी का नाम यथावत कैथरीन मूर रहा.

मामाजी जितने ही मृदुभाषी, उदार और सज्जन थे, मामी उतनी ही दबंग, कर्कशा और स्पष्टवादी थीं. मैं ने वहां पार्कलैंड हस्पताल में स्त्री रोग विषय में 'रेसीडेंसी' करना प्रारंभ किया ही था कि मामी ने एक दिन मुझ पर अपनी एकांतता में हस्तक्षेप करने का आरोप लगा कर मुझे अपने घर से बेदखल कर दिया. बेचारे मामा बिना प्रतिरोध किए चुपचाप खड़े देखते रहे. किंतु उन की आंखों में मूक क्षमायाचना और विवशता के भाव मैं ने पढ़ लिए थे. आखिरकार वह मामी को कैसे समझाते कि हमारे ननिहाल में हमेशा तीनचार पीढ़ी के सदस्य एक साथ सहर्ष रहते हैं. 'रेसीडेंसी' करते समय सामान्य सा वेतन मिलने लगा था. अतः मुझे विशेष असुविधा तो नहीं हुई किंतु इतने अप्रत्याशित ढंग से घर से निकाले जाने का दुख अवश्य लगा.

पार्कलैंड हस्पताल के पास ही मैं ने एक छोटा फ्लैट किराए पर ले लिया. सीमित आमदनी के कारण मैं ने एक पुरानी कार भी खरीद ली. फ्लैट का किराया और कार की किश्त भरने के बाद मेरे पास शेष राशि नहीं के बराबर ही बचती थी. अतः मैं ने अपने फ्लैट में एक साथी को रखने का विचार किया ताकि किराया आधाआधा बांटा जा सके.

अखबार के विज्ञापन के माध्यम से एक लड़की मिल गई. जूडी वेजर नाम था उस का. अत्यंत आधुनिक और फैशनपरस्त. हमेशा बड़ी और महंगी दुकानों से खरीदारी करने का शौक था उस को. उस की दिनचर्या के बारे में मुझे विशेष जानकारी नहीं मिल पाई थी क्योंकि मैं रातदिन हस्पताल में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यस्तता की बेड़ियों में जकड़ी रहती थी. थोड़ी फुरसत मिलने पर पल भर दम ले पाती थी. इधर दो दिन से जूडी घर नहीं आई थी पर अमरीका में इस बात पर चिंता करना निरर्थक था.

तीसरे दिन सुबह हस्पताल जाने के लिए मैं फ्लैट से निकली तो बाहर अमरीका खुफिया विभाग के अफसर खड़े थे. उन्होंने अपना परिचयपत्र दिखा तटस्थ हो कर कहा, "आप को गिरफ्तार किया जाता है."

मुझे काटो तो खून नहीं. आरोप पढ़ने पर धीरेधीरे वस्तुस्थिति समझ आने लगी. मुझ पर जालसाजी के आरोप लगाए गए थे. जिन महंगी दुकानों से जूडी खरीदारी करती थी, उन्हें बिना मेरी जानकारी के मेरी चेकबुक से स्वयं हस्ताक्षर कर के भुगतान करती थी. मेरे बैंक में उतने अधिक पैसे नहीं होने से चेक लौट गए. जूडी ने डाक में से 'स्मरण पत्र' भी गायब कर दिए. अतः हार कर दुकान के मालिक को खुफिया विभाग में रिपोर्ट दर्ज करानी पड़ी.

इस के साथ ही दो दिन पूर्व 'बीमा' के किन्हीं कागजों में जरूरी हस्ताक्षर कराने के बहाने जूडी ने मेरी कार भी बेच दी. कचहरी में लिखाई विशेषज्ञ की रिपोर्ट मेरे पक्ष में आने पर ही मेरी न्यायिक हिरासत से बाइज्जत रिहाई हुई. जूडी पर लगे आरोप सही पाए गए इसलिए सजा से बचने के लिए उस ने अपनेआप को मानसिक रोगी घोषित कर दिया और वह किसी मनोविकार के चिकित्सा केंद्र में भरती हो गई.

परदेश में इस अचानक आई विपदा से मुझे एक बार फिर अपने मामा की याद आई. फोन करने पर पता चला कि वह ह्यूस्टन शहर छोड़ कर कैलिफोर्निया चले गए हैं. जूडी मेरे पत्र और संदेश भी गायब कर देती थी ताकि सभी मित्रों और संबंधियों से मेरा नाता ही टूट जाए.

इसी बीच मेरा छोटा भाई मनीष बी.ए. पास कर लेने पर मेरे पास अमरीका

जजबात

बिखरी जुल्फों को
जो उस ने कस के समेटा,
मेरे भड़के हुए जजबातों को
किनारा मिल गया.

—रजनी मल्होत्रा 'राही'

आ गया. भारत में सभी को यह लगता है कि अमरीका देश खुशहाली, सुअवसरों और संपन्नता का प्रतीक है. काश, वे वहां के नित नए संघर्ष और समस्याओं का प्रत्यक्ष अनुभव करते तो समझ जाते कि यह केवल उन की मृगतृष्णा है, जो दूर से मनोरम एवं स्वप्निल लगती है, किंतु यथार्थ में वह कितनी व्यर्थ और कृत्रिम है.

मनीष नौकरी की तलाश में भटकता रहा, किंतु कुछ हाथ न लगा. अंत में एक बहुत बड़े गोदाम में सामान ढोने का काम मिल गया बेचारे को. कुछ न कुछ तो उसे करना ही था. एक दिन देर रात वह घर लौटा तो उस का हुलिया देख कर मैं दंग रह गई. देखते ही मैं समझ गई कि वह नशीली दवाओं के शिकंजे में आ चुका है. निराशा और क्रोध से मेरा सिर घूम गया.

क्या आशाएं थीं हम सब की और क्या हो रहा था, कुछ समझ में नहीं आ रहा था. मैं ने उत्तेजित हो कर ऊंचे स्वर में कहा, "मेरे घर से अभी इसी वक्त निकल जाओ. मेरा दुख कम करने के बजाय मेरे ऊपर मुसीबतों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का पहाड़ क्यों लाद रहे हो?'' इतना कह कर मैं ने उसे नशे की हालत में ही फ्लैट से बाहर निकाल दरवाजा बंद कर दिया. उस के बाद से मनीष आज तक नहीं मिला. पता नहीं, वह जीवित भी है या नहीं?

उन्हीं दिनों मेरी पहचान डाक्टर हेमंत से हुई, जो मेरे ही हस्पताल में 'न्यूरोलाजी' में रेसीडेंसी के अंतिम वर्ष में थे. धीरेधीरे हमारा परिचय प्रेम में परिणत हो गया. बीते हुए दिनों का अवसाद व संघर्ष एक दुखद सपने की भांति लगने लगा. भविष्य के सुनहरे दिनों की परिकल्पना में मन डूब सा गया.

इधर हेमंत की न्यूरोलाजी की रेसीडेंसी समाप्त हो गई. उस की शिकागो शहर के एक प्रतिष्ठित मेडिकल कालिज में सहायक प्रोफेसर के पद पर नियुक्ति हो गई. वह शिकागोवासी हो गया और मैं ह्यूस्टन शहर में फिर से एकदम अकेली और उदास रह गई. मैं अपनी दिनचर्या में पुनः व्यस्त हो गई, किंतु हेमंत की कमी खलती रहती. उस के साथ बीता समय, उस की उन्मुक्त हंसी एवं उस का सुदर्शन व्यक्तित्व रहरह कर आंखों के सामने तैर जाता और मन में टीस सी उभर जाती. घंटों फोन पर बात करने और पत्र लिखने पर भी मन नहीं भरता था.

नए वर्ष पर कड़ाके की ठंड पड़ रही थी. पूरे शहर में भीषण हिमपात होने के कारण सन्नाटा सा छा गया था. मात्र टीवी पर नए वर्ष की चहलपहल एवं रौनक देखी जा सकती थी. संयोग से उस दिन मेरी ड्यूटी भी थी. तभी हेमंत का फोन आया कि उसे मेरी बहुत याद आ रही है... काश, हम दोनों साथ होते... शादी कब करोगी? तुम्हारे बिना हर पल निरर्थक है... आदिआदि.

भावावेश में आ कर मैं ने हेमंत को आश्चर्यचकित करने की योजना बनाई. अपनी ड्यूटी राबर्ट से आननफानन बदल कर मैं टैक्सी से एयरपोर्ट पहुंच जब शिकागो के लिए रवाना हुई, तब मुझे यह कदापि आभास नहीं था कि उस सांघातिक अपमान को झेलने में स्वयं अपनेआप को न्यौत रही हूं.

डाक्टर हेमंत के फ्लैट का पता मेरे पास था. अतः उसे ढूंढ़ने में विशेष असुविधा नहीं हुई. द्वार की घंटी बजा मैं मन ही मन खुशी से उतावली हो रही थी. पहले किसी ने प्रत्युत्तर नहीं दिया, अतः मैं ने दोबारा बटन दबाया. अंदर से किसी नारी का तीखा स्वर उभरा, ''कौन?''

मैं अपना परिचय किस नाम से दूं, यह सोच ही रही थी कि दरवाजा आधा खुल गया. मेरे समक्ष एक श्वेतवसना युवती खड़ी थी, अर्द्धनग्न, सुनहरे केश और विलासिता में डूबी रूपसज्जा.

'कौन हो सकती है यह भला?' मैं आश्चर्य से उसे देख रही थी कि शयनकक्ष से हेमंत का अस्फुट सा मदालस स्वर उभरा, ''विवियन प्रिये, कौन आया है बाहर?''

इस प्रश्न का उत्तर विवियन ने नहीं, मैं ने दिया था. हेमंत के अस्तव्यस्त शयनकक्ष का अच्छी तरह मुआयना करने के बाद, ''हेमंत, विदेश में रह कर भी मैं अपने भारतीय परिवेश और नैतिकता को नहीं भूली हूं. स्त्री पुरुष के सब अपराध माफ कर सकती है, किंतु बेवफाई नहीं.''

मुझे देखते ही हेमंत का चेहरा रक्तशून्य हो गया. वह हक्काबक्का एकटक मेरी ओर देख रहा था. फिर एक पल में स्थिति को संभालते हुए बड़े लाड़ से लपक कर उस ने मेरे दोनों हाथ पकड़ लिए. ''डार्लिंग, विवियन हस्पताल में मेरी सहायिका हैं. हम सिर्फ अच्छे मित्र हैं.''

उस स्पर्श की घृणा से मेरा सर्वांग कांप गया. मैं ने हेमंत की बांहों को जोर से झटक दिया, ''अपनी व्यर्थ दलीलों को अपने पास ही रहने दो. मैत्री की किन सीमाओं को तुम दोनों लांघ चुके हो, यह तुम स्वयं अच्छी तरह जानते हो. आज से मेरा तुम से कोई संबंध नहीं है.'' ईर्ष्या, द्वेष, अवहेलना और क्रोध से भरी मैं तत्काल एयरपोर्ट के लिए रवाना हो गई.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रसीडेंसी समाप्त होते ही मैं ने डाक्टरी में ही निजी चिकित्सालय खोल लिया, जो दिन दूनी रात चौगुनी उन्नति करने लगा. मैं ने फ्लैट त्याग कर चार शयनकक्ष वाला स्वतंत्र घर ले लिया और एक कार खरीद ली.

ह्यूस्टन शहर में कम से कम 20 हजार भारतीय मूल के प्रवासी रहते हैं. 'इंडियन एसोसिएशन संस्था' के द्वारा दशहरा, दीपावली, होली आदि त्योहारों पर विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम होते रहते हैं. ऐसे ही औपचारिक कार्यक्रम में एक दिन मेरी भेंट रवींद्र से हुई. वह इलेक्ट्रानिक इंजीनियर थे और कंप्यूटर बनाने की एक प्रसिद्ध कंपनी में कार्यरत थे.

एक दिन रवींद्र ने मुझे रात के भोजन के लिए सुप्रसिद्ध रेस्तरां में आमंत्रित किया व एकांत में विवाह का प्रस्ताव रख, वहीं उत्तर मांगा. हेमंत के विश्वासघात का बदला लेने का इस से अच्छा अवसर नहीं मिल सकता था, यह सोच कर तथा रवींद्र के सद्चरित्र से प्रभावित हो कर मैं ने हामी भर दी.

हनीमून के लिए हवाई द्वीप की राजधानी होनोलुलु गए, जिस का पूरा खर्च मैं ने ही वहन किया. कुछ सप्ताह तो हंसतेखेलते बीत गए, किंतु फिर रवींद्र के मन में शनैःशनैः अपनी आर्थिक स्थिति को ले कर हीनता की भावना उभरने लगी. कई बार उस का मासिक वेतन मेरी दोचार दिन की कमाई के बराबर होता था.

कुछ माह बाद रवींद्र ने निजी व्यवसाय आरंभ करने की महत्त्वाकांक्षा के कारण अच्छीखासी नौकरी को तिलांजलि दे दी. मेरी जमानत पर बैंक से एक लाख डालर का कर्ज भी स्वीकृत हो गया. दिन भर घर में बैठ कर रवि व्यापार की रूपरेखा बनाते. इधर वह छोटीछोटी बातों पर खीज जाते थे. विनोदी स्वभाव धीरेधीरे उत्तेजना, असंतुलन और चिड़चिड़ाहट में परिवर्तित होने लगा. सहिष्णु बनी मैं उन की मानसिक स्थिति को समझने का पूरा प्रयास और सहयोग भी कर रही थी.

तभी मेरे किसी हितैषी ने मुझे सलाह दी कि संतान उत्पन्न होने के पश्चात

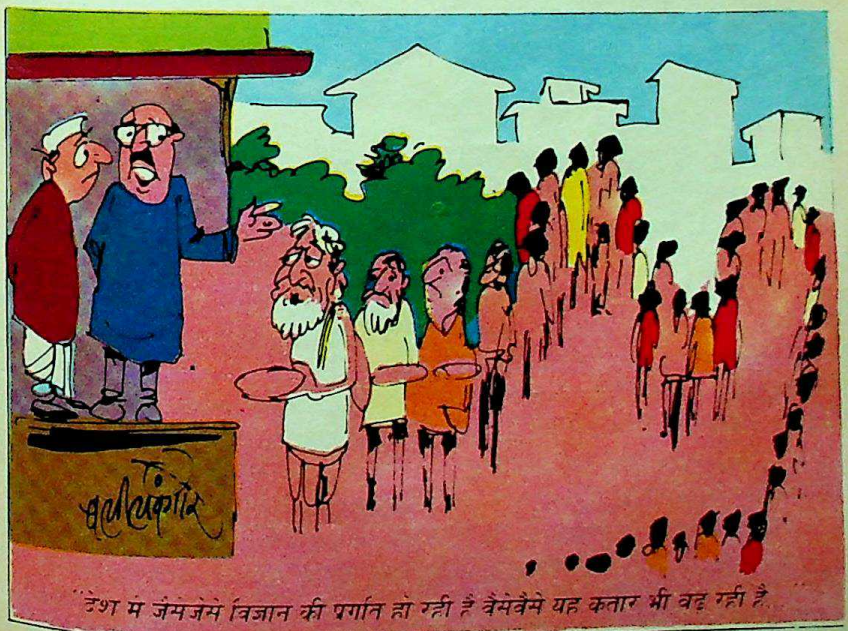

"देश में जैसेजैसे विज्ञान की प्रगति हो रही है वैसेवैसे यह कतार भी बढ़ रही है."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अकसर गृहकलह की आग स्वतः शांत हो जाती है. मेरे गर्भवती होने का समाचार सुनते ही रवींद्र बौखला गए. विवाह सूत्र में बंधने के पूर्व ही मैं ने रवींद्र को हेमंत के बारे में सब कुछ सचसच बता दिया था ताकि बाद में किसी प्रकार का विवाद अथवा कटुता उत्पन्न न हो. हीनता की भावना ने उन के मन में कुंठा और संदेह के अंकुर प्रस्फुटित कर दिए थे, अतः उन्होंने बिना कुछ सोचेसमझे मुझ पर यह निराधार आरोप लगाया कि गर्भस्थ शिशु के पिता हेमंत हैं.

यह सुन मैं स्तब्ध रह गई. शक ऐसा रोग है, जिस का कोई इलाज नहीं है. मेरा प्रत्येक तर्क निरर्थक था उन के लिए. रवींद्र ने इच्छा व्यक्त की कि मैं गर्भपात करा दूं, किंतु मैं इस के लिए तैयार नहीं हुई. अपनी अवज्ञा होते देख वह न सिर्फ क्रोधित हुए बल्कि मुझे प्रताड़ित करते हुए जान से मारने की धमकी देने लगे. उन का वहशीपन जब सभ्यता की समस्त सीमाओं को लांघ गया तो अंततः मैं ने उन्हें तलाक देने का निश्चय कर लिया.

अमरीका के तलाक संबंधी विधि कानून के अनुसार मुझे अपनी आधी संपत्ति रवींद्र को वैधानिक तौर पर देनी पड़ी. किंतु गृहकलह से बचाव और शांति के लिए किया गया यह सौदा सस्ता ही था मेरे लिए, किंतु मेरे अंतःकरण का दावानल मेरी खुशियां और आकांक्षाओं को जला कर भस्म कर गया था.

मेरी लाड़ली बेटी मयूरी के जन्म पर भी रवींद्र नहीं आए. शायद वह गुमनाम अंधेरों में खो गए थे और उसी के साथ बैंक में जमानत की एक लाख डालर की राशि भी. एक बार मयूरी को प्रत्यक्ष देख लेने के बाद उन के मन का निर्मूल संदेह हमेशा के लिए दूर हो जाता क्योंकि मयूरी ने अपने पिता के नाकनक्श विरासत में पाए थे.

हस्पताल में मेरी सहकर्मी डाक्टर मर्लिन को मेरे जीवन के घटनाक्रमों की पूर्ण जानकारी थी. एक दिन वह मुझे कॉफी पीने या कुछ खाने पिलाने ले गई. "डाक्टर, कहते हैं जैसा देश वैसा वेश. तुम कई वर्षों से अमरीका में रह रही हो, इसलिए अपनी विचारधारा और संस्कारों को यहां के रंग में रंग डालो. तुम किसी उपयुक्त व्यक्ति से पुनः शादी कर लो."

"हां, तुम्हारे सुझाव के बारे में विचार करूंगी." कह कर मैं ने स्वीकृति की मुद्रा में सिर हिला दिया, किंतु मेरा मन इस दलील को स्वीकार नहीं कर सका. भारतीय संस्कृति की जड़ें मेरी रगरग में बसी थीं. एक बार जुए में अपना सर्वस्व हार कर सब कुछ गंवा चुकी थी, अतः दूसरी बार दांव लगाने में हिचकिचाहट होना स्वाभाविक ही था.

इधर हेमंत के पुनः फोन व पत्र आने लगे थे. 'वेलनटाइंस' के उपलक्ष्य में उस ने एक अत्यंत संवेदनशील बधाई का कार्ड भी भेजा. अप्रत्यक्ष तौर पर कई अवसरों पर हेमंत ने यह दर्शाया कि वह मुझ से विवाह करने के इच्छुक हैं. दूध का जला छाछ भी फूंकफूंक कर पीता है, इसलिए मैं ने हेमंत से कई पहलुओं के विषय में स्पष्टतापूर्वक उस की राय जाननी चाही. "हेमंत, तुम तो जानते ही हो कि अब मैं अकेली नहीं हूं. मयूरी की जिम्मेदारी भी तुम्हें उठानी होगी."

हेमंत खामोश हो कर सुन रहे थे.

"चुप क्यों हो गए?"

"मेरी राय है कि विवाह के बाद तुम अपना और मयूरी का खर्च वहन करना और मैं अपना. हां, यदि हमारा बच्चा होगा तो हम दोनों उस का खर्च आधाआधा बांट लेंगे."

इस बेतुके प्रस्ताव को सुन कर मैं अवाक रह गई. "हेमंत मैं जिस हाल में हूं, उसी में खुश और संतुष्ट हूं. पति परिवार का स्वामी होता है, इसलिए परिवार की देखभाल व सुरक्षा करना उस का कर्तव्य है, किंतु तुम से ऐसी आशा करना व्यर्थ है."

"अरे, तुम तो मेरी बात का बुरा मान गई," हेमंत ने सहज हो कर कहा.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चंपक

मौजमस्ती के रंग
चंपक के
संग

छुट्टी विशेषांक

मई (प्रथम) • मई (द्वितीय) • जून (प्रथम)
जून (द्वितीय) 1991

हर बार से अलग

- कई कहानियां
- मनोरंजन की ढेर सारी सामग्री
- इनामी प्रतियोगिताएं
- साथ ही सभी स्थायी स्तंभ

अपने नन्हेमुन्नों को छुट्टियों का सही अर्थ समझाएं.
उन्हें चंपक के चारों छुट्टी विशेषांक अवश्य पढ़ाएं.

चंपक

ज्ञान भी बढ़ाए, इंसान भी बनाए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"बात स्वाभिमान की है! तुम्हारी शर्तों पर हमारा विवाह असंभव जान पड़ता है. विवाह को आर्थिक समझौता मत बनाओ, हेमंत." मैं ने दृढ़तापूर्वक प्रत्युत्तर दिया.

मैं ने यह सब कह तो दिया किंतु वास्तविकता यह थी कि मैं हेमंत को अभी भी प्यार करती थी. हेमंत के लगातार विवाह करने के आग्रह को मैं मान भी जाती, किंतु कुदरत ने एक बार फिर मुझे विश्वासघात और तिरस्कार से बचा लिया.

देर रात एक पार्टी से लौटते हुए एक भयावह कार दुर्घटना में हेमंत और डाक्टर विवियन की मृत्यु का शोक समाचार सुन कर मैं हतप्रभ अवश्य रह गई, किंतु

ढोंग

घरों के भीतर अंधकार है,
धर्म के नाम पर ढोंग की पूजा है और
शील तथा आचार के नाम पर
रूढ़ियों की. —जयशंकरप्रसाद

मेरी आंखें नम नहीं हुईं. परिस्थितियों के आकस्मिक आघात और हेमंत की निरंतर बेवफाई ने मुझे शायद पत्थर बना दिया था.

नित नई समस्याएं ही तो मनुष्य को जीवित रहने की प्रेरणा देती हैं. मैं नए सिरे से अपने व्यवसाय में जुट गई और एक दुखद स्वप्न की भांति विगत अंतराल को भूलने की व्यर्थ चेष्टा करने लगी. अब मेरे उपेक्षा, नैराश्य और उत्पीड़न से भरे जीवन की एकमात्र डोर बंधी थी अपनी बेटी मयूरी के सुखदुख से.

इसी मध्य एक गंभीर व दुखद हादसा घटित हो गया, जिस ने मेरा जीवन ही बदल दिया. मेरी एक परिचित मरीज की तीसरी प्रसूति के बाद अत्यधिक रक्तस्राव होने के कारण मृत्यु हो गई. मरीज को लगभग 50 ताजे रक्त की बोतलें एवं विभिन्न आपातकालीन औषधियां देने के बाद भी मैं उसे मौत के मुंह से नहीं लौटा पाई. मरी महिला के पति ने मुझ पर लापरवाही मुकदमा दायर कर 10 लाख डालर राशि की क्षतिपूर्ति चाही. चिकित्सा विशेषज्ञों की राय के विरुद्ध न्यायालय मुझे पांच लाख डालर हरजाना देने आदेश दिया.

मैं ने शेयर बाजार एवं जमीन में पैसा निवेश किया था. पेट्रोल के भावों अवमूल्यन के कारण ट्रैक्सस प्रांत अर्थव्यवस्था चरमरा चुकी थी. अतः शेयर तथा जमीन आधे से भी कम दाम में बेचने बाद मुझे अंततः अपना घर, कार आदि बेच कर स्वयं को दिवालिया घोषित करना पड़

ये सब विपदाएं तो एक सीमा तक सहनीय थीं. असहनीय था, स्वयं मेरी अपनी पुत्री द्वारा दिया गया अप्रत्याशित अवसाद एवं अपमान. मयूरी कैशोर्य की नाजुक उम्र की दहलीज पर कदम रख चुकी थी. वह पूरी तरह से विदेशी सभ्यता और संस्कृति का प्रतीक बन गई थी. चंचल, शोख एकदम मुंहफट. उस का उन्मुक्त आचरण शायद मेरे अत्यधिक लाड़प्यार का ही परिणाम था. कुछ दिनों से 'डेटिंग' की अनुमति चाह रही थी वह मुझ से, किंतु मैं ने साफ इनकार कर दिया था.

एक दिन मैं हस्पताल से थकीमांदी शाम को घर लौट कर काफी पी रही थी कि तभी मयूरी भी घर आई. वह बहुत कमजोर, परेशान और थकी हुई दिख रही थी.

"क्या बात है मयूरी? तबीयत ठीक नहीं है क्या?" मैं ने चिंतित हो कर पूछा.

"हां मां, मुझे वह रोग हो गया था जो कुंआरी लड़कियों के लिए घातक है." मयूरी ने बिना किसी झिझक के उत्तर दिया.

"क्या कह रही हो?" मेरा स्वर आशंकित हो उठा.

"अभी सरकारी हस्पताल से गर्भपात करा कर सीधा घर ही आ रही हूं." अपूर्व साहस से निडर हो कर मयूरी ने उत्तर दिया.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुक्ता

पाक्षिक

युवाओं की अनूठी व अकेली पत्रिका

देश के युवा राष्ट्र निर्माण के आधार हैं. हमारा यह आधार जितना ही मजबूत होगा हम उतना ही सुखद, संपन्न व शक्तिशाली राष्ट्र की कल्पना कर सकते हैं.

युवाओं को मजबूत आधार देने तथा युवाओं को सही राह दिखाने में मुक्ता सदा ही अग्रणी पत्रिका रही है.

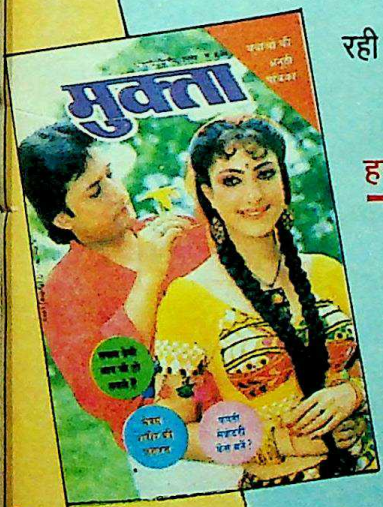

हर अंक में

राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय समस्याओं पर विचारोत्तेजक लेख, बेरोजगारी में स्वरोजगार की प्रेरणा, प्रतियोगिता में सफलता के नुस्खे, सफल उद्योगपति बनने के आसान तौरतरीके. इस के साथ साथ युवाओं के मनोरंजन के लिए कहानियां, प्रेम रस में डूबी कविताएं, फैशन, फिल्म व खेल पर विशेष सामग्री.

हर अंक में ढेरों पठनीय सामग्री

आज ही से नियमित खरीदें.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"बेटी, तुम्हें यह मुंह कहते और करते तुझे लाज नहीं आई...." असीम क्रोध, शोक और विवशता ने मुझे उन्मत कर दिया था. जिस लाड़ली बेटी को अभी तक मैं ने फूल की छड़ी से भी नहीं छुआ था, उस दिन उस पर उपालंभों और तमाचों की झड़ी लगा दी थी. मेरे धैर्य का बांध टूट चुका था, जिस के आवेग के सामने मैं असहाय थी. सहसा मेरा स्वर वज्र जैसा कठोर और निष्ठुर हो गया, "कौन है वह? तुम से शादी करेगा?"

"नहीं."

"आखिर क्यों?" मैं ने अधीर हो कर पूछा.

"उसे सामाजिक बंधन पसंद नहीं हैं मां, वह सिर्फ उन्मुक्त प्यार चाहता है."

मानमर्यादा को तिलांजलि दे कर मयूरी अविवेक के अंधे कुएं में जा गिर चुकी थी, यह मैं अच्छी तरह समझ गई. इस के बाद स्वदेश लौटने के त्वरित निर्णय लेने में मैं ने विलंब नहीं किया क्योंकि विदेश में मेरी प्रतिष्ठा व मानसिक शांति लुट चुकी थी.

मैं ने कितने अरमानों से पालापोसा था मयूरी को. बड़ी हो कर डाक्टर बनेगी. मेरी पुत्री, मेरा नाम उज्ज्वल करेगी, मेरा सहारा बनेगी. इस सुनहरी कल्पना के जाल बुन कर मैं ने एकाकी नीरस वर्षों को असीम संयम और साहस से काट दिया था.

यह सही है कि आधुनिकता हमारे जीवन में आई है, मगर दिल की गहराई में हमारे संस्कार रचेबसे हैं. तमाम पाश्चात्य मूल्यों की छाया पड़ने के बावजूद भारतीय संस्कृति के अपने प्रतिमान हैं. यही कारण है कि मयूरी और मात्र आठ डालर की मूल पूंजी साथ ले कर मैं तत्काल भारत लौट आई.

स्वदेश आते ही मैं ने पिताजी द्वारा निर्मित वह आलीशान अट्टालिका मिट्टी के मोल बेच कर उस की समस्त राशि एक समाज सेवी न्यास द्वारा संचालित एक अनाथालय को दान कर दी. वैसे भी उस का एकमात्र वारिस स्वयं अनाथ हो कर न कहां भटक रहा था.

कहते हुए मीना ने ठंडी सांस "लल्ली, नारी जीवन की सब से बड़ी त्रा यही है कि वह जहां जाती है, उस इतिहास उस से पहले वहां पहुंच जाता यही कारण है कि मयूरी को आंध्र प्रदे मदन पल्ली के पास ऋषिवैली स्कूल छात्रावास में दाखिल कर मैं स्वयं दक्षि भारत के मदुरै जिले के ओडनहत्रम ना छोटे से स्थान में मिशन हस्पताल में नौक करने जा रही हूं.

"सच कहूं तो मैं अपना अतीत भु कर नए सिरे से जीवन प्रारंभ करना चाह हूं. लौट के बुद्धू घर को आए, है न...?" कह कर मनु मुसकराने की लाख चेष्टा क पर भी हंस नहीं पाई और हम दोनों की आ सजल हो उठीं.

ट्रेन मदुरै स्टेशन पहुंच चुकी थी. पू रात बातों में ही कट गई. पतों आदानप्रदान कर और नियमित पत्रव्यवह का वादा कर हम गंतव्य मार्ग पर चल प

घरगृहस्थी की व्यस्तता के तानोंब में उलझ जाने से कई वर्षों तक न मैं ने मनु पत्र लिखा और न ही उस ने. मनु के सा उस संक्षिप्त आकस्मिक भेंट और अ दृढ़निश्चयी सखी के एकएक शब्द स्मृति को मैं कई वर्षों के बाद भी आज त हृदय में संजोए हुए हूं.

आज अचानक डाक में आए विवाह एक निमंत्रणपत्र ने मुझे चौंका दिया. उसे कर मुझे न सिर्फ हार्दिक प्रसन्नता हुई बल्कि शांति की अनुभूति भी हुई. डाक्टर मयू का विवाह अरुणकुमार, आई.ए.एस. साथ हो रहा था. दर्शनाभिलाषी शीर्षक नीचे डाक्टर मीनाक्षी और उस के मनीष का नाम पढ़ कर मुझे सहसा मानो स्वयंसिद्धा मनु के निस्स्वार्थ प्रायश्चि के निर्णय को प्रकृति ने स्वीकार कर अंत उस की मृगतृष्णा को संतृप्त कर दि था.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेख ● तृप्ति वर्मा

साड़ी में फाल कैसे लगाएं ?

साड़ी फाल आप की साड़ी की एक उपयोगी जरूरत है. फाल की वजह से साड़ी को पहनना काफी सुविधाजनक हो जाता है. आजकल हर साड़ी पहनने वाली महिला अपनी साड़ी में फाल तो लगा लेती है, मगर फाल लगाने का सही ढंग पता न होने से उन्हें बहुत सी मुसीबतों का सामना करना पड़ता है.

रेणु की शादी जब पक्की हुई तो उस ने सर्वप्रथम अपनी सहेली दीपा की मदद से जल्दीजल्दी अपनी तमाम साड़ियों में फाल लगा लिया. इस काम से उसे शादी के बाद काफी सुविधा हुई. ससुराल में उसे पति, सास या ननद के साथ जब कहीं बाहर जाना पड़ता तो फौरन वह अपनी फाल लगी एक नई साड़ी निकाल कर पहन लेती.

मगर कुछ समय के बाद जब उस ने अपनी साड़ियों को धोना शुरू किया तो परेशान हो उठी. उस के अधिकांश साड़ी फाल कच्चे रंगों के निकले और धोने के बाद न केवल सिकुड़ गए बल्कि रंग कच्चा होने से साड़ियों को भी बदरंग कर दिया. इस से एक से एक सुंदर और कीमती साड़ियों का नाश हो गया.

दरअसल शादी की तैयारियों की जल्दबाजी में रेणु यह बात भूल गई थी कि साड़ी फाल खरीदते और लगाते समय भी किसी किस्म की देखपरख और सावधानी की आवश्यकता होती है. फलतः इस भूल का परिणाम उसे बहुत महंगा पड़ा.

अपनी साड़ी के लिए फाल खरीदते समय आप दो महत्त्वपूर्ण बातों का ध्यान रखें. फाल सदैव किसी विश्वसनीय कंपनी का ही खरीदें. यदि आप की साड़ी सूती है तो सूती फाल ही उपयुक्त होगा, किंतु सिल्क एवं अन्य कीमती साड़ियों के लिए उत्तम क्वालिटी के सिंथेटिक या रूबिया फाल का ही चयन करें.

इस के साथ ही फाल का रंग साड़ी के रंग से पूरी तरह मेल खाता हुआ होना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाहिए. यहाँ भी एक अच्छा ध्यान रखना होगा. यदि आप की साड़ी का बार्डर एवं ऊपरी हिस्सा लगभग एक ही रंग का है, जैसे फीरोजी रंग का है तो आप फाल भी फीरोजी रंग का ही खरीदेंगी. किंतु मान लीजिए कि आप की साड़ी का रंग गुलाबी है और बार्डर नेवीब्लू रंग का है तो आप को नेवीब्लू फाल ही लेना होगा. किंतु अगर साड़ी का रंग और बार्डर का रंग विपरीत हो तथा बार्डर मात्र डेढ़दो इंच चौड़ा हो तो ऐसी स्थिति में फाल साड़ी के रंग का ही खरीदें.

आजकल अनगिनत रंगों के फैलाव, बिखराव से बनी डिजाइन वाली साड़ियों का भी काफी फैशन है. इस तरह की साड़ियों के लिए फाल खरीदते समय आप यह देखें कि साड़ी में कौन सा रंग सब से अधिक प्रभावी और आधारभूत रंग के रूप में है.

फाल खरीदने के बाद उसे साबुन या डिटर्जेंट पाउडर से एक या दो बार भली प्रकार साफ करें. फाल यदि कच्चे रंग का होगा तो साबुन से उस का अतिरिक्त रंग निकल जाएगा, जिस से आप की साड़ी के बदरंग होने की कोई गुंजाइश नहीं रहेगी. फिर धुले हुए फाल को सुखा कर अच्छी तरह इस्तरी कर लीजिए.

साड़ी में फाल लगाने के लिए आप जो धागा लेंगी, वह साड़ी के रंग से मेल खाता हुआ और अच्छी क्वालिटी का होना चाहिए. साड़ी फाल के साथ जो धागा मिलता है, वह आमतौर पर जरूरत से कम और घटिया किस्म का होता है. अतः बेहतर होगा कि आप उसे इस्तेमाल न करें. फाल लगाने के लिए सूई भी महीन होनी चाहिए.

साड़ी के आंचल के दूसरी तरफ वाले निचले हिस्से पर किनारे की तरफ से 10 इंच जगह छोड़ कर फाल लगाना शुरू करें. निचले किनारे पर दोहरे धागे से टांके लगाएं. टांके छोटेबड़े होने चाहिए. अंदर फाल की तरफ वाला टांका बड़ा और ऊपर साड़ी पर दिखने वाला टांका छोटा हो. लगभग 10-12 इंच तक छोटेबड़े टांके द्वारा गोलाई करने के बाद एक बार बखिया यानी इतना साइड टांका लगाएं क्योंकि कभी पायल, बिछुए या किसी अन्य चीज में जाने से अप्रत्याशित रूप से टांके खुलते जाते हैं और फाल साड़ी से अलग हो है. हर 10-12 इंच के बाद एक बार साइड टांका लगा देने से सिलाई मजबूत जाती है और फाल इतनी आसानी से से अलग नहीं होता.

फाल के ऊपरी भाग की सिलाई समय पहले किसी समतल सतह पर को फैला कर बड़ेबड़े कच्चे टांकों द्वारा को साड़ी में टांक लें. यदि कोई सिक वगैरह हो न तो अब इन टांकों के बाद हिस्से की तरह छोटेबड़े टांके लगाएं कच्चे टांकों वाले धागे को साड़ी से खींच अलग कर लें.

यदि आप की साड़ी का रंग बार्डर रंग से अलग हो, यानी अगर साड़ी का गुलाबी और बार्डर का रंग नेवीब्लू हो फाल भी आप ने नेवीब्लू ही खरीदा हो अब यदि बार्डर की चौड़ाई फाल की चौ से अधिक है तो आप दोनों किनारों पर की टंकाई नेवीब्लू रंग से ही करेंगी.

लेकिन अगर बार्डर की चौड़ाई इंच हो और फाल की चौड़ाई पांच अर्थात बार्डर से ज्यादा हो तो ऐसी हालत दो बातें हो सकती हैं. आप साड़ी के गुल रंग से मेल खाते गुलाबी धागे द्वारा फाल ऊपरी किनारे पर टांके लगाएं या फिर स में फाल लगाने से पूर्व ही कैंची से काट फाल की चौड़ाई एक इंच कम कर दें. कटे हुए किनारे को लगभग सेंटीमीटर अंदर की तरफ मोड़ कर नेवी रंग के धागे से ही दोनों किनारों पर लगाएं.

यदि बार्डर साड़ी के रंग से अलग और एकडेढ़ इंच ही चौड़ा हो तो ऐसी हा में फाल टांकने के लिए दो रंगों के धागे प्रयोग अनिवार्य है.

फाल लगाने के पश्चात साड़ी आंचल एवं दूसरे किनारे को भी हेमिंग मोड़ कर फाल लगाएं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिल धड़कने लगता है

यूं न देख कर मुसकराओ, मुझे शर्म आती है,
एक ख्वाब दिल के अंदर पलने लगता है.
मन ख्यालों में, उलझने लगता है.

चूड़ियां यूं न खनखनाओ,
पायल यूं न छमछमाओ,
तेज गति से चलता हुआ मुसाफिर
अचानक ठहरने लगता है.

न इस तरह तुम अपने आंचल को उड़ाओ,
न यूं लो तुम अंगड़ाइयां
दूर होती हैं तनहाइयां,
मन मेरा बहकने लगता है.

अपने नैनों के कटार
तुम यूं न मुझ पर चलाओ,
कोमल दिल मेरा कहीं घायल न हो जाए,
यह सोच कर डर लगने लगता है.

अब और करीब न आओ,
तुम जरा ठहर जाओ
तुम छुओ और मैं कहीं मर न जाऊं,
इस खयाल से दिल धड़कने लगता है.

—राजेशकुमार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टेढ़ेमेढ़े रास्ते

कहानी ● सुरेशकुमार गोयल

कांता काफी दिनों से भारतीय समाज की सभा अपने घर में करवाने की सोच रही थी परंतु टालती रही क्योंकि सभा करवाना आसान काम तो है नहीं, सब जानपहचान वालों को बुलाना पड़ता है कम से कम 70-80 लोग जमा हो जाते हैं. उन सब के लिए खाना बनाना और ऊपर से चायनाश्ते का प्रबंध भी करना पड़ता है. घर की अच्छी तरह से सफाई भी करनी पड़ती है.

साल में दो बार तो उन की बारी आ ही जाती. वैसे यह जरूरी नहीं था, पर उसे अच्छा लगता था. इस बहाने हिंदी में बतियाने का अवसर मिलता था और भारत की खबरें मिलती थीं. कभीकभार भारत से आने वाले किसी विशिष्ट व्यक्ति से भी मुलाकात हो जाती थी.

पहले तो सभा आयोजित कराने में कांता को काफी परेशानी होती थी क्योंकि घर का तहखाना अच्छी तरह से नहीं बना था इसलिए सभा घर की पहली मंजिल पर ही करवानी पड़ती थी.इस कारण सारा घर अस्तव्यस्त हो जाता था.इस साल ही उस ने 12 हजार डालर खर्च कर के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तहखाना बनवा लिया था. रवि का यही कमरा का विचार था. सोचा, इसी बहाने तहखाने का उदघाटन भी हो जाएगा. सभा का समय इतवार को 10 बजे का रखा जाता था.

शनिवार को कांता सवेरे से ही रवि के साथ घर की सफाई करने में लग गई. तहखाने को बिलकुल साफ किया गया. ऊपर भी सफाई कर दी गई थी. वैसे कोई ऊपर बैठने वाला नहीं है परंतु जब इतने सारे लोग आ रहे हों तो घर को गंदा भी तो नहीं रखा जा सकता. वैसे तहखाने में कालीन बिछा हुआ था परंतु इतवार की सुबह चादरें बिछाने का काम कांता ने रवि पर छोड़ रखा था.

दोपहर के 12 बज गए सफाई करतेकरते. खाने में तो कुछ बनाना ही नहीं था. बस जल्दी से सैंडविच बना ली और वही खा ली. दो साल का बाबी जरा भी तंग नहीं करता था. मां के इशारे पर ही नाचता था. खाने के बाद कांता अगले दिन के खाने की तैयारी करने लगी. मटरपनीर की सब्जी के लिए पनीर तो उस ने दो दिन पहले ही तैयार कर लिया था. छिली हुई मटर का उस के फ्रीजर में पांच पाउंड का पैकेट रखा हुआ था.

कांता आलूगोभी की सब्जी बनाने की

कुछ समय के लिए रवि और कांता के मधुर संबंधों के बीच रेणू दीवार बन कर खड़ी हो गई थी. लेकिन जल्द ही यह दीवार गिर गई और वे जीवन के इन टेढ़ेमेढ़े रास्तों में भटकने से बच गए.

सोच रही थी. छोले तो एक दिन पहले के ही भीगे रखे हुए थे. उस ने सब से पहले छोले प्रेशर कुकर में चढ़ा दिए. रायते के लिए बूंदी का पैकेट भी खरीद लाई थी. उस ने

रेणू मटरपनीर का भगौना ले कर तहखाने में जाने लगी तो रवि ने मुसकराते हुए कहा, "हमारे तहखाने में घुसने की फीस देनी पड़ती है."

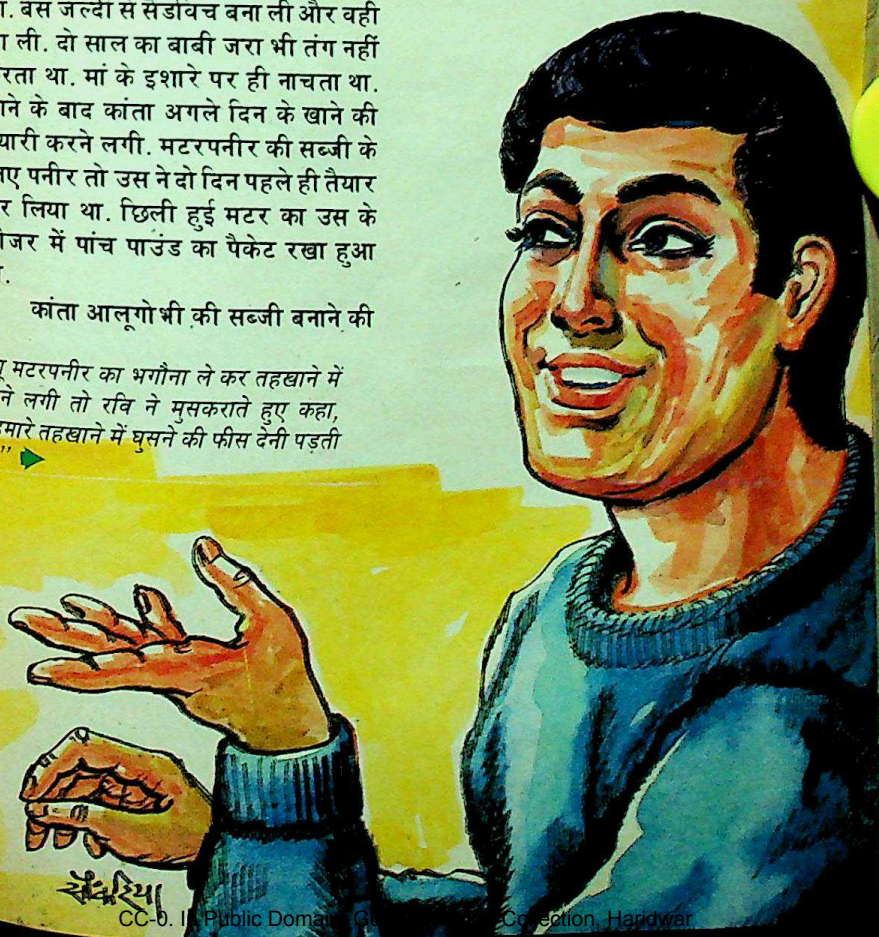

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बादाम की बरफी भी बना रखी थी. पूरी बनाना तो उस ने पिछले साल से ही छोड़ दिया था. भारतीय दुकान से पांच पैकेट कुलचों के ले आई थी.

कांता सब से पहले प्याज काटने लगी. मटरपनीर और आलूगोभी बिना प्याज के अच्छे भी नहीं लगते. उसे हमेशा ही प्याज काटने का काम बहुत ही कठिन लगता. उस की आंखों से पानी बेतहाशा बहने लगता था. एकदो बार रवि ने जिद कर के प्याज काटने का काम अपने ऊपर ले लिया परंतु उस की हालत तो कांता से भी अधिक बदतर हो जाती थी.

प्याज काट कर उस ने एक बड़े भगौने में प्याज भूनने के लिए रख दिए. फिर वह आलू और गोभी काटने में लग गई. प्याज भूनने का काम रवि के जिम्मे कर दिया. प्याज भुनने के कुछ देर बाद ही आलू और गोभी कट कर तैयार हो गए. कांता ने एक दूसरा भगौना निकाला. उस में आधे भुने हुए प्याज डाले और पहले आलूमटर और फिर आलूगोभी की सब्जी तैयार कर ली.

छोले तो कभी के गल चुके थे और अब तो प्रेशर कुकर भी ठंडा हो गया था. प्रेशर कुकर में ही मसाले डाल कर उन को भी स्टोव पर चढ़ा दिया. कांता के स्टोव के चारों डब्बों में खाना तैयार हो रहा था, कल के लिए.

रवि ने सलाद तैयार कर दिया था. कम से कम कांता को यह काम तो उस ने कभी नहीं करने दिया. पांच बजे तक सभी सब्जियां तैयार हो गई थीं. खाना तैयार होने के बाद कांता ने इतमीनान से स्नान किया.

खाना खाने के बाद रवि नहाने चला गया और कांता एक हिंदी की फिल्म लाने वीडियो स्टोर पर चली गई. रात सोने से पहले ही कांता ने तहखाने में बिछाने के लिए चादरें निकाल दीं.

रेणू की कांता से काफी सालों से दोस्ती थी. हमेशा ही रेणू कांता के यहां आ कर काम में हाथ बंटा देती थी. उस का पति तो हफ्ते में तीनचार दिन अपने दफ्तर के काम से बाहर ही रहता था. कभीकभी तो पूरा हफ्ता ही घर से बाहर निकाल देता. कोई बालबच्चा तो था नहीं इसलिए रेणू ऊबने लगती. दिन में एकाध बार दोनों फोन पर बातें करती ही थीं, खरीदारी भी दोनों साथसाथ करतीं.

सवेरे सात बजे का अलार्म सुन कर पतिपत्नी उठ गए. कांता तो रसोई में पुलाव बनाने लगी. रवि ने दही को रायते के लिए मथ दिया. नहाने से पहले रवि तहखाने में जा कर चादरें बिछा आया. फिर नहाने चला गया.

ठीक नौ बजे ही रेणू आ गई. आते ही बोली, "अरे, तू अभी तक तैयार नहीं हुई कांता"

"मैं क्या, अभी तक बाबी भी तैयार नहीं हुआ है." कांता बोली.

"ठीक है, तू बाबी को तैयार कर के खुद तैयार हो जा, तब तक मैं बाकी का सारा काम संभाल लेती हूं." रेणू बोली.

"सहेली हो तो बस तेरे जैसी." कांता रसोई का काम रेणू के ऊपर छोड़ कर तैयार होने लगी.

रेणू ने स्टोव के अंदर से मटरपनीर वाला भगौना निकाला और उसे तहखाने में ले जाने लगी. तहखाने की सीढ़ियां उतरी ही थी कि रवि मिल गया, "तो जनाब यहां छिपे बैठे हैं. कहां पर रखा है स्टोव?" रेणू ने पूछा.

रवि ने स्टोव की ओर संकेत कर दिया. फिर मुसकराते हुए बोला, "हमारे तहखाने में घुसने की फीस देनी पड़ती है."

"क्या फीस देनी पड़ती है?" रेणू ने इतरा कर पूछा. इस से पहले कि रेणू कुछ कहती, रवि ने उसे अपनी बांहों में भींच लिया. रेणू ने तनिक भी विरोध नहीं किया. उसे रवि हमेशा ही अच्छा लगता था परंतु उसे इस बात का एहसास नहीं था कि कांता जैसी पत्नी के होते हुए भी वह उस के बारे में ऐसी भावनाएं रखता है.

"अब छोड़िए भी." रेणू ने रवि से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विनय की ओर ऊपर दूसरी डोगी लेने चली गई.

लौटने पर रेणू ने ही कहा, "अपनी फीस नहीं वसूल करेंगे आप?" रवि के निमंत्रण का रेणू ने उत्तर दे दिया था.

साढ़े नौ बज गए थे. रवि ने टेप रिकार्डर चालू कर दिया. रेणू ने ऊपर कांता के पास जाने से पहले रवि पर नजर डाली. "जरा अपने चेहरे को अच्छी तरह से साबुन से धो डालिए ताकि सारी लिपिस्टिक हट जाए, नहीं तो तुम्हारे साथसाथ मेरी भी शामत आ जाएगी."

रेणू की बात सुन कर रवि तहखाने के स्नानघर में अपना मुंह धोने चला गया. रेणू ऊपर जा कर कांता का हाथ बंटाने लगी.

सभी लोग ठीक समय पर आ गए. दोचार भाषणों के बाद तहखाने का उदघाटन हुआ. खाना खा कर आखिरी मेहमान भी तीन बजे तक चला गया. केवल रेणू ही रह गई.

रवि ने रेणू को बाहुपाश में जकड़ने की कोशिश की परंतु वह उस की पकड़ में नहीं आई, तेजी से परे हट गई.

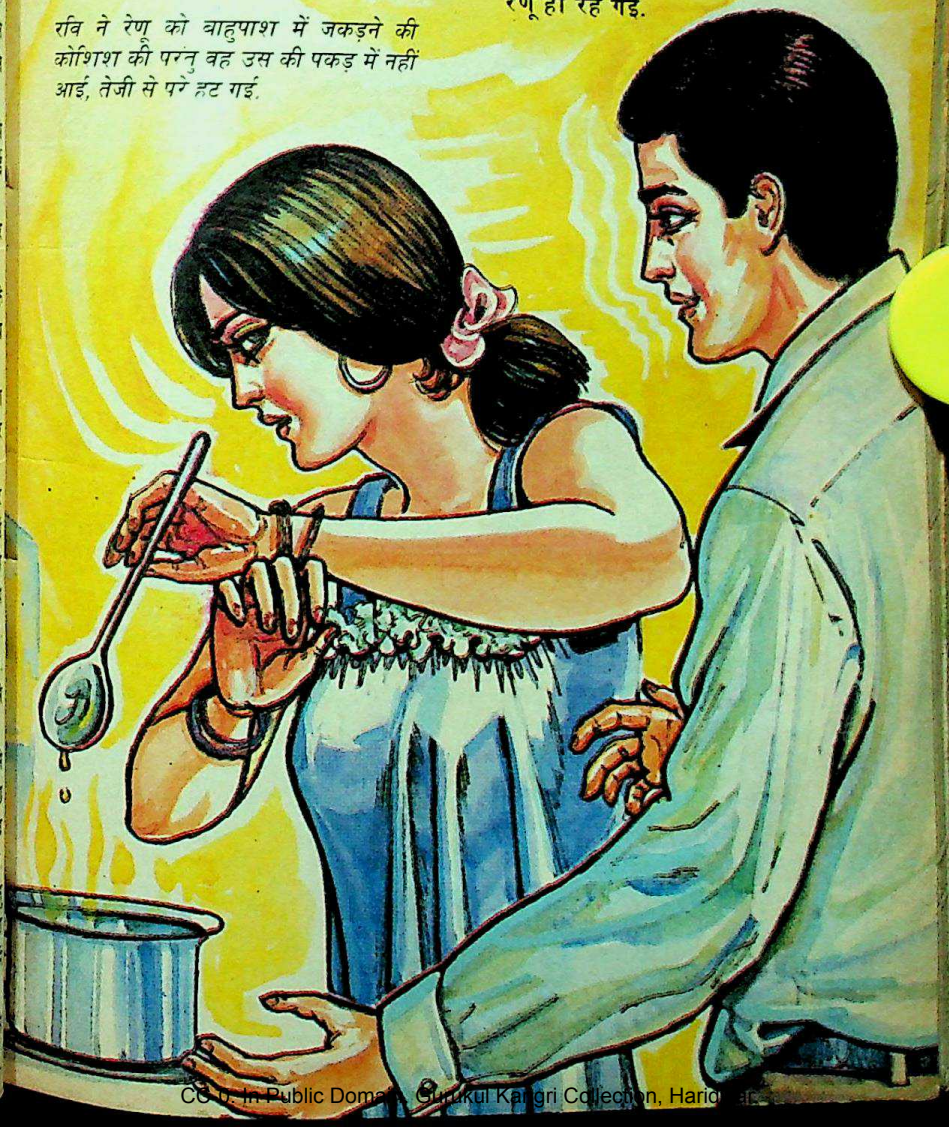

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अब तुम दोनों बैठो, मैं नाश्ता बना कर लाती हूं. फिर चाय पी कर चार बजे घर चली जाऊंगी." रेणू बोली.

"क्यों, चार बजे जा कर क्या करेगी? शिव तो घर पर नहीं है. कब आएगा न्यूयार्क से?" कांता ने कहा, "शाम का खाना खा कर ही घर जाना."

"बुधवार की शाम को आएंगे." कह कर रेणू रसोई में चली गई.

"देखा, मेरी सहेली मेरा कितना खयाल रखती है. तुम्हारे दोस्तों की तरह नहीं है कि खापी कर खिसक लिए." कांता ने रवि को चिढ़ाया.

"हां, तुम ठीक ही कहती हो." रवि बोला, उसे अचानक सवेरे की मुलाकात याद आ गई. मन ही मन उस ने सोचा, 'अगर मेरे दोस्त तुम्हारी सहेली की तरह हों तो सालों का सिर नहीं तोड़ दूं.'

रेणू चाय बना कर ले आई. तीनों इतमीनान से चाय पीने लगे. तभी द्वार की घंटी बजी. रेणू दरवाजा खोलने के लिए उठ खड़ी हुई, "शायद शिव आया होगा?"

दरवाजे पर शिव ही था, रेणू का पति. शिव के साथ रेणू कमरे में आ गई.

"क्षमा कीजिएगा, मैं सभा में नहीं आ पाया... मेरी कमी रेणू ने पूरी कर दी होगी." शिव ने कहा. फिर रवि और शिव बातें करने लगे. कांता और रेणू रसोई में चली गईं, शिव के लिए खाना लाने के लिए. कुछ ही देर में कांता शिव के लिए खाना ले आई. रेणू ने एक छोटी मेज ला कर शिव के सामने रख दी. शिव वहीं खाना खाने लगा.

"इस बार आप कुछ थकेथके से लग रहे हैं?" रेणू ने चिंतित स्वर में कहा.

"हां, काम और कार का सफर थका ही देता है. इस बार मैं ने मुख्यालय में जा कर कह ही दिया कि मुझे दफ्तर में ही काम चाहिए, रोजरोज का सफर अब मेरे बस का नहीं है." शिव बोला.

रेणू उसे प्यार भरी नजरों से देख रही थी. रवि सोचने लगा, 'इस समय की रेणू और सवेरे की रेणू क्या एक ही है?' रेणू के जिस्म की गरमी और अधरों की मिठास अभी तक उस के दिमाग में ताजा थी.

शिव ने खाना खा लिया. वह तो रवि से बातें करने के मूड में था परंतु रेणू को घर जाने की जल्दी हो रही थी. रवि भी उन दोनों को रोकने की कोशिश कर रहा था. आखिर कांता ने ही कहा, "आप समझ क्यों नहीं रहे हैं? शिव भाई साहब कई दिनों बाद वापस आए हैं. रेणू जल्दी घर जाना चाहती है तो जाने दीजिए."

शिव और रेणू चले गए. कांता काफी थक गई थी. रवि कुछ देर तक टेलीविजन देखते हुए रेणू के बारे में ही सोचता रहा. उस ने मन में सोचा, 'रेणू और कांता में कितना अंतर है. कांता हमेशा थकीथकी सी रहती है. जब से बाबी हुआ है, तब से कांता के पास तो शायद उस के लिए न तो समय ही है और न ही पत्नी का सुख देने की इच्छा. निकटतम क्षणों में कभीकभी उसे ऐसा लगता था, जैसे कि वह किसी बेजान गुड़िया के साथ प्यार के मधुर क्षणों को व्यर्थ कर रहा है.'

रवि और रेणू की मुलाकात कभीकभी पार्टियों में हो ही जाती थी पर जहां इतने लोग होते हैं, एकांत में मिलना संभव नहीं होता. कभीकभी निगाहों ही निगाहों में उन के बीच कुछ अर्थहीन, कुछ अर्थपूर्ण बातें होती थीं पर कभी उदघाटन के दिन जैसा मौका हाथ नहीं लगा.

रवि को फिर से सभा करवाने की जल्दी थी. पतिपत्नी ने सभा की तैयारी बड़े चाव से की परंतु रवि का उत्साह बिलकुल ही ठंडा हो गया, शिव और रेणू को एक दिन पहले टोरांटो जाना पड़ गया. शिव के एक मित्र की एक दुर्घटना में मृत्यु हो गई थी, इस कारण वे दोनों चले गए थे.

एक दिन कांता काफी खुश नजर आ रही थी. वह रेणू के साथ खरीदारी कर के आई थी. रवि के आते ही उस ने बताया, "रेणू मां बनने वाली है... आज ही उसे डाक्टर ने बताया है."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रवि ने पूछा, "शादी के कितने साल बाद मां बन रही है?"

"शायद चारपांच साल तो हो ही गए होंगे. अभी उस ने शिव को तो बताया भी नहीं है. सुनिए, खाने के बाद मुझे बाजार से कुछ सामान और लाना है. रास्ते में रेणू को कुछ पैसे भी देने है, मैं ने सवेरे उधार लिए थे. शिव तो बाहर गया हुआ है. उस को थोड़ा साथ भी हो जाएगा." कांता बोलती जा रही थी, बिना रवि के उत्तर की प्रतीक्षा किए ही.

खाने के बाद कांता और रवि खरीदारी करने गए. लौटते समय रेणू के घर रुके. रेणू कांता और रवि को देख कर काफी प्रसन्न थी. कुछ देर बातें करने के बाद रेणू चाय बनाने के लिए उठने लगी.

"अब तुम को उठने की जरूरत नहीं है. मैं चाय बना कर लाती हूं." कांता के जिद करने पर भी रेणू न मानी और रसोई में चली गई.

कांता स्नानघर में चली गई. रवि को इस से अच्छा मौका कब मिलता, वह तीर की तरह रसोई में आया. "बधाई हो रेणू." उस की आवाज कांप सी गई. फिर उस ने रेणू को अपने बाहुपाश में जकड़ने की कोशिश की परंतु रेणू उस की पकड़ में नहीं आई, वह तेजी से परे हट गई.

रवि बुरी तरह खिसिया गया. उस ने एक निगाह रेणू की ओर डाली और वापस बैठक में आ गया. स्नानघर से आ कर कांता रेणू के पास रसोई में आ गई. चाय पी गई परंतु रवि कुछ न बोला.वह जल्दी से जल्दी रेणू के घर से निकलना चाहता था.

कार में रवि अपने ही खयालों में खोया हुआ था. मन ही मन उसे अपनेआप पर क्रोध आ रहा था. उसे लगा कि उस ने कांता के साथ विश्वासघात किया है. कांता के विश्वास का उस ने यह बदला दिया कि वह उस की ही सहेली के साथ प्रेमव्यवहार करने की सोचने लगा. उस के विचारों की कड़ियों को कांता ने ही झकझोर दिया, "रेणू के घर से लौटने में देरी हो गई. कल सवेरे हमें जाना है, रमेश के यहां, उन की दुकान का उदघाटन है. शायद रेणू भी आएगी."

"तुम अकेली ही चली जाना. मैं इन उदघाटनों में बोर हो जाता हूं." रवि ने रूखाई से उत्तर दिया, "सवेरेसवेरे कौन उठ कर तैयार हो?"

"आठ तो बज जाएंगे परंतु मुझे तो मदद करने के लिए उन के यहां आठ बजे पहुंचना है." कांता बोली.

"आठ बजे जाओगी तुम?" रवि चौंका. "अच्छा बाबा, मैं भी तैयार हो जाऊंगा और तुम्हारे साथ चला चलूंगा."

घर आ गया था. दोनों कार से उतर कर घर के अंदर आ गए.

"आप को इतनी जल्दी तैयार हो कर जाने की आवश्यकता नहीं है. उन की दुकान घर से पांच सौ मीटर दूर ही तो होगी, मैं पैदल ही चली जाऊंगी." कांता ने कहा.

"मैं अपनी कांता के लिए क्या इतना भी नहीं कर सकता." रवि ने कांता को अपनी बांहों में समेट कर चूम लिया. रवि को ऐसा लगा कि पिछले कुछ महीनों से रेणू उस के और कांता के बीच एक दीवार बन कर आ गई थी. वह मन ही मन बड़ा आश्वस्त हुआ.

बाबी को गोद में ले कर वह उसे सुलाने चला गया. उस ने उसी क्षण निश्चय किया कि वह घर के कामों में कांता की और अधिक सहायता किया करेगा ताकि वह उस को जीवन के इन टेढ़ेमेढ़े रास्तों में भटकने से रोक सके. ●

सच्चरित्रता

बहुत विद्वान होने से मनुष्य आत्मिक गौरव प्राप्त नहीं कर सकता. इस के लिए सच्चरित्र होना परम आवश्यक है. चरित्र के सामने विद्वत्ता का मूल्य बहुत कम है.

—प्रेमचंद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ से इति तक

कहानी ● शकुंतला शर्मा

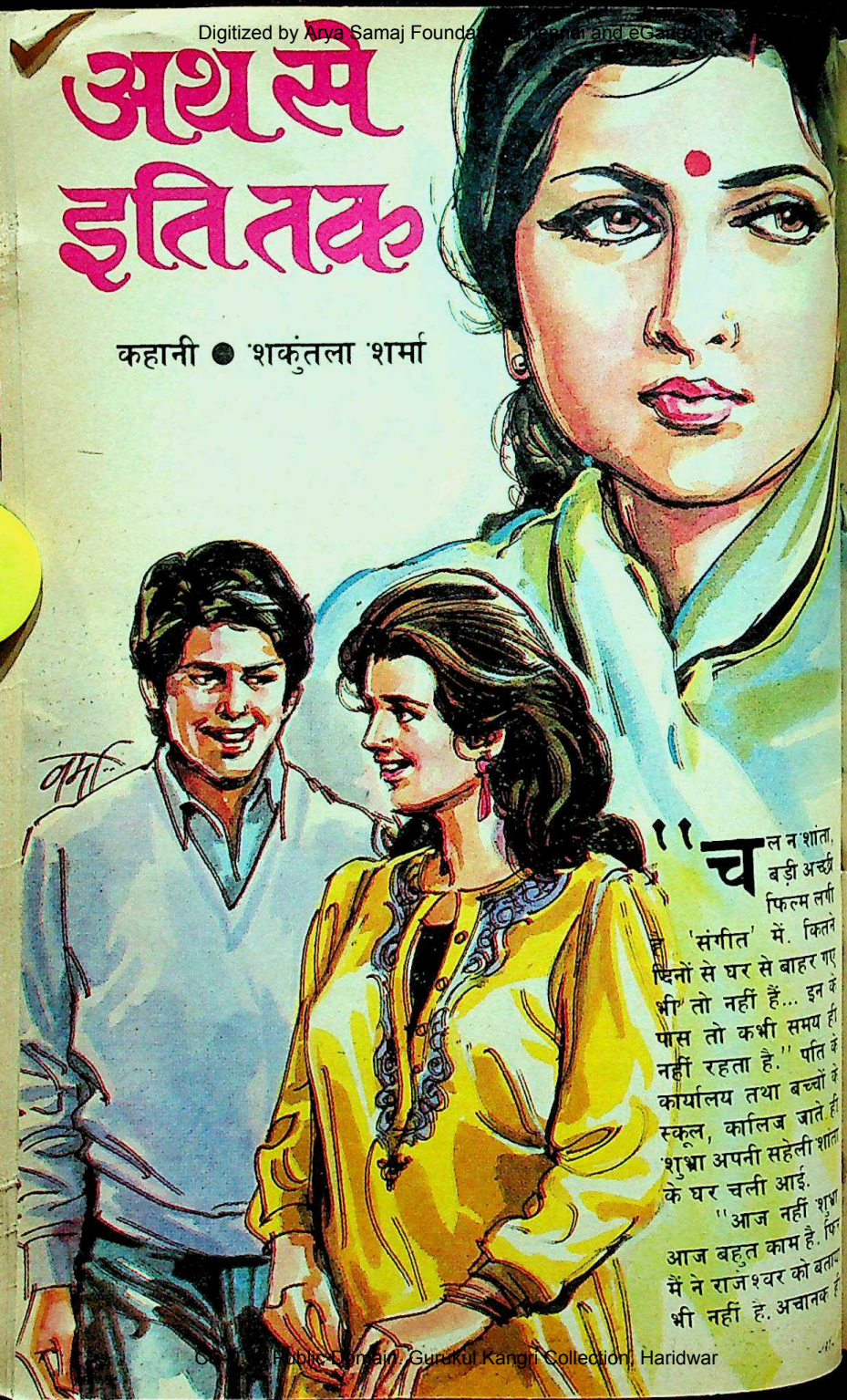

"चल न शांता, बड़ी अच्छी फिल्म लगी है 'संगीत' में. कितने दिनों से घर से बाहर गए भी तो नहीं हैं... इन के पास तो कभी समय ही नहीं रहता है." पति के कार्यालय तथा बच्चों के स्कूल, कालिज जाते ही शुभ्रा अपनी सहेली शांता के घर चली आई.

"आज नहीं शुभ्रा, आज बहुत काम है. फिर मैं ने राजेश्वर को बताया भी नहीं है. अचानक ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिना बताए चली गईं तो आप क्या समझ बैठें." शांता ने टालने का प्रयत्न किया.

"लो सुनो, अरे शादी को 20 वर्ष बीत गए, अब भी और कुछ समझने की गुंजाइश है? लो, फोन उठाओ और बता दो भाईसाहब को कि तुम आज मेरे साथ फिल्म देखने जा रही हो."

"तुम नहीं मानने वाली... चल आज तेरी बात मान ही लेती हूं, तुम भी क्या याद करोगी." शांता निर्णयात्मक स्वर में बोली.

निर्णय लेने भर की देर थी, फिर तो शांता ने झटपट पति को फोन किया. बेटी प्रांजलि के नाम पत्र लिख कर खाने की मेज पर फूलदान के नीचे दबा दिया और आननफानन में तैयार हो कर घर की चाबी पड़ोस में देते हुए दोनों सहेलियां बाहर सड़क पर आ गईं.

"अकेले घूमनेफिरने का मजा ही कुछ और है. पति व बच्चों के साथ तो सदा ही जाते हैं, पर यह सब बड़ा रूढ़िवादी लगता है. अब देखो, केवल हम दोनों और यह स्वतंत्रता का अहसास, मानो हर आनेजाने

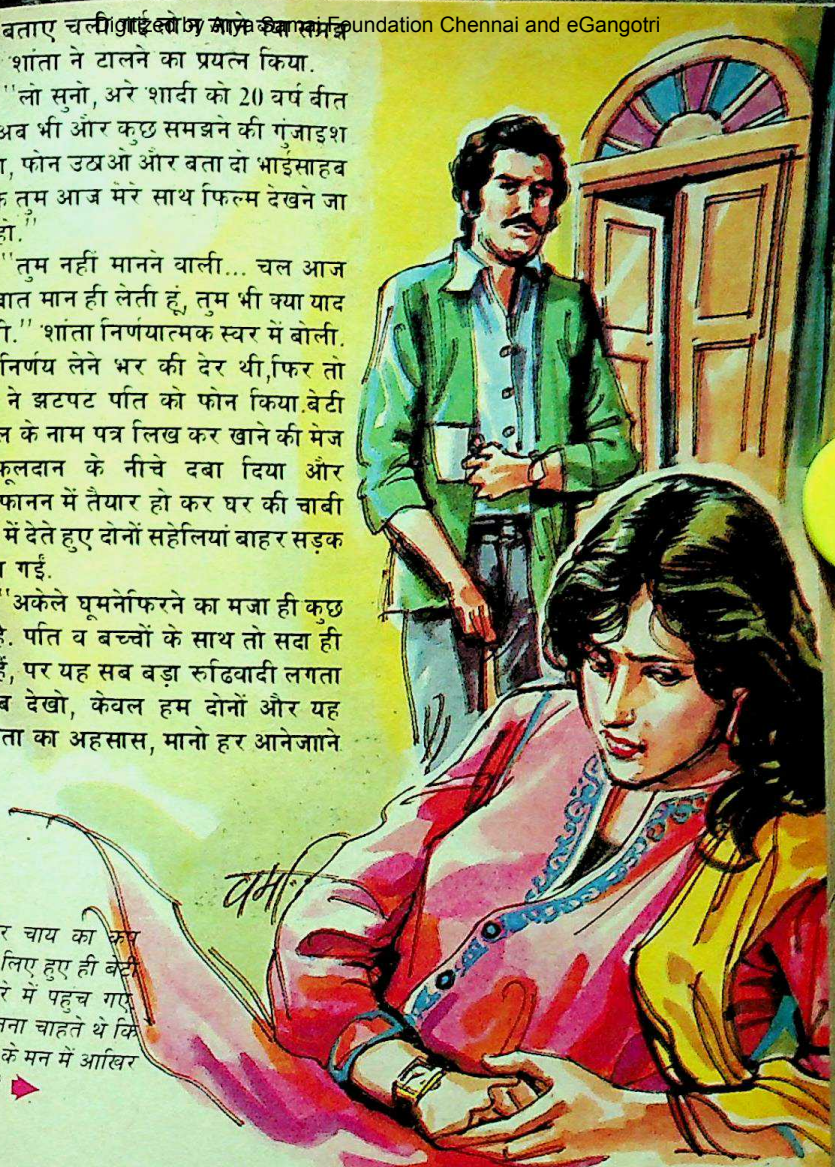

राजेश्वर चाय का कप हाथ में लिए हुए ही बेटी के कमरे में पहुंच गए. वह जानना चाहते थे कि प्रांजलि के मन में आखिर है क्या?

सिनेमाघर के बाहर अपनी बेटी प्रांजलि को किसी युवक के साथ देख शांता सकपका गई थी. इतना ही नहीं, बेटी के विद्रोही स्वर ने राजेश्वर को भी चौंका दिया था. वह समझ नहीं पा रहा था कि प्रांजलि ने यह कदम क्यों उठाया और जब समझा तो खुद ही ग्लानि से भर गया.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाले की निगाह हमें सहला रही हो." शुभ्रा चहकते हुए बोली.

"पता नहीं, मेरी तो इतनी उलटी-सीधी बातें सोचने की आदत ही नहीं है." शांता ने मुसकरा कर टालने का प्रयत्न किया.

"अच्छा शांता, क्या ऐसा नहीं हो सकता कि कुछ समय के लिए हमारी किशोरावस्था हमें वापस मिल जाए. फिर वही पंखों पर उड़ते से हलकेफुलके दिन, सपनीली पलकें लिए झुकीझुकी आंखें..." शुभ्रा अपनी ही रौ में बोलती चली गई.

"शुभ्रा हम सड़क पर हैं. माना कि तुझे कविता कहने का बड़ा शौक है, पर कुछ तो शर्म किया कर...अब हम किशोरियां नहीं, अब हम किशोरियों की माताएं हैं. कोई ऐसी बातें सुनेगा तो क्या सोचेगा?" शांता ने उसे चुप कराने के लिए कहा.

"बड़ी मूर्ख हो शांता, तुम तो किशोरावस्था में भी दादीअम्मां की तरह उपदेश झाड़ा करती थीं, अब तो फिर भी आयु हो गई, पर एक राज की बात बताऊं?"

"क्या?"

"कोई कह नहीं सकता कि तेरी 17-18 वर्ष की बेटी है." शुभ्रा मुसकराई.

"शुभ्रा, तू कभी बड़ी नहीं होगी, यह हमारी आयु है, ऐसी बातें करने की?"

"लो भला हमारी आयु को क्या हुआ है... विदेशों में तो हमारे बराबर की स्त्रियां रास रचाती घूमती हैं." शुभ्रा ने शरारत भरा उत्तर दिया.

इस से पहले कि शांता कोई उत्तर दे पाती, आटोरिकशा एक झटके के साथ रुका और दोनों सहेलियां वास्तविकता की धरती पर लौट आईं.

टिकट खरीदने के लिए लंबी कतार लगी थी. शुभ्रा लपक कर वहां खड़ी हो गई और शांता कुछ दूर खड़ी हो कर उस की प्रतीक्षा करने लगी. रंगबिरंगे कपड़े पहने युवकयुवतियों और स्त्रीपुरुषों को शांता बड़े ध्यान से देख रही थी. ऐसे अवसरों पर ही तो नए फैशन, परिधानों आदि का जायजा लिया जा सकता है.

तभी फिल्म का शो खत्म हुआ. शांता भीड़ से बचने के लिए एक ओर को हटी तो तभी भीड़ में जाते एक जोड़े को देख कर मानो उसे सांप सूंघ गया. क्या दो व्यक्तियों की शक्ल, आकार, चालढाल इतने अधिक मेल खा सकते हैं? युवती बिलकुल उस की बेटी प्रांजलि जैसी लग रही थी. 'कहीं यह प्रांजलि ही तो नहीं?' एक क्षण को यह विचार मस्तिष्क में कौंधा, पर दूसरे ही क्षण उस ने उसे झटक दिया. प्रांजलि भला इस समय यहां क्या कर रही होगी? वह तो कालिज में होगी. वह युवती कुछ दूर चली गई थी और अपने पुरुष मित्र की किसी बात पर खिलखिला कर हंस रही थी. शांता कुछ देर के लिए उसे घूर कर देखती रही, 'नहीं, उस की निगाहें इतना धोखा नहीं खा सकतीं, क्या वह अपनी बेटी को नहीं पहचान सकती?'

पर तभी उसे खयाल आया कि प्रांजलि आज स्कर्टब्लाउज पहन कर गई थी और यह युवती तो नीले रंग के चूड़ीदार पाजामेकुरते में थी. शांता ने राहत की सांस ली, पर दूसरे ही क्षण उसे याद आया कि ऐसा ही चूड़ीदार पाजामाकुरता प्रांजलि के पास भी है. संशय दूर करने के लिए उस ने उस युवती को पुकारने के लिए मुंह खोला ही था कि शुभ्रा के वहां होने के अहसास ने उस के मुंह पर मानो ताला जड़ दिया. शुभ्रा लाख उस की सहेली थी, पर अपनी बेटी के संबंध में शांता किसी तरह का खतरा नहीं उठा सकती थी. प्रांजलि के संबंध में कोई ऐसीवैसी बात शुभ्रा को पता चले और फिर यह आम चर्चा का विषय बन जाए, यह वह कभी सहन नहीं कर सकती थी. अतः वह चुपचाप खड़ी रह गई.

"क्या बात है शांता, तबीयत खराब है क्या?" तभी शुभ्रा टिकट ले कर आ गई.

"पता नहीं शुभ्रा, कुछ अजीब सा लग रहा है. चक्कर आ रहा है. लगता है, अब मैं अधिक समय खड़ी नहीं रह सकूंगी." शांता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'विवाह क्या कोई हंसीखेल है कि आज साथ फिल्म देखी और कल विवाह कर लिया?'' राजेश्वर ने बेटी प्रांजलि से प्रश्न किया.

किसी प्रकार बोली. सचमुच उस का गला सूख रहा था तथा नेत्रों के सम्मुख अंधेरा छा रहा था.

''गरमी भी तो कैसी पड़ रही है... चल कुछ ठंडा पीते हैं...'' कहती शुभ्रा उसे शीतल पेय की दुकान की ओर खींच ले गई.

शीतल पेय पी कर शांता को कुछ राहत अवश्य मिली, किंतु मन अब भी ठिकाने पर नहीं था. कुछ देर पहले के हंसीठहाके उदासी में बदल गए थे. फिल्म देखते हुए भी उस की निगाह में प्रांजलि ही घूम रही थी. किसी प्रकार फिल्म समाप्त हुई तो उस ने राहत की सांस ली. अब उसे घर पहुंचने की जल्दी थी लेकिन शुभ्रा तो बाहर ही खाने का निश्चय कर के आई थी. पर शांता की दशा देख कर शुभ्रा ने भी अपना विचार बदल दिया और दोनों सहेलियां घर पहुंच गईं.

शांता घर पहुंची तो देखा, प्रांजलि अभी घर नहीं लौटी थी. उस की घबराहट की तो कोई सीमा ही नहीं थी. सोचने लगी, 'लगभग तीन घंटे पहले प्रांजलि को देखा था, न जाने किस आवारा के साथ घूम रही थी? लगता है, यह लड़की तो हमें कहीं का न छोड़ेगी.' सोचते हुए शांता तो रोने को हो आई.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब और कुछ न सूझा तो शांता पति का फोन नंबर मिलाने लगी. लेकिन तभी द्वार की घंटी बज उठी. वह लपक कर द्वार तक पहुंची. घबराहट से उस का हृदय तेजी से धड़क रहा था. दरवाजा खोला तो सामने खड़ी प्रांजलि को देख कर उस की जान में जान आई, पर इस बात पर तो वह हैरान रह गई कि प्रांजलि तो वही स्कर्टब्लाउज पहने थी, जो वह सुबह पहन कर गई थी. फिर वह नीले चूड़ीदार पाजामेकुरते वाली लड़की? क्या यह संभव नही कि उस ने प्रांजलि जैसी शक्लसूरत की किसी अन्य लड़की को देखा हो.

"क्या बात है, मां? इस तरह रास्ता रोक कर क्यों खड़ी हो? मुझे अंदर तो आने दो."

"अंदर? हांहां, आओ, तुम्हारा ही तो घर है." शांता वहां से हटते हुए बोली, पर प्रांजलि के अंदर आते ही उस ने शीघ्रता से बेटी के कंधे पर लटकता बैग उतारा और सारा सामान उलट दिया.

नीला चूड़ीदार पाजामाकुरता बैग से बाहर पड़ा शांता का मुंह चिढ़ा रहा था. प्रांजलि भी मां के इस व्यवहार पर स्तब्ध खड़ी थी.

"इस तरह छिपा कर यह कपड़े ले जाने की क्या आवश्यकता थी?" शांता का स्वर आवश्यकता से अधिक तीखा था.

"मैं क्यों छिपा कर ले जाने लगी?" प्रांजलि अब तक संभल चुकी थी. "पहले से ही रखा होगा."

"तुम अब भी झूठ बोले जा रही हो, प्रांजलि. कालिज छोड़कर किस के साथ फिल्म देख रही थी, 'संगीत' में? वह तो शुभ्रा मेरे साथ थी और मै नहीं चाहती थी कि उस के सामने कोई तमाशा खड़ा हो, नहीं तो यह प्रश्न मैं तुम से वहीं करती." शांता गुस्से से चीखी.

"वहीं पूछ लेना था, मां. शुभ्रा चाची तो बिलकुल घर जैसी हैं. फिर एक दिन तो सब को पता चलना ही है."

"आप कितनी बुरी तरह बेशर्मी से बात करते तुम्हें शर्म नहीं आती?"

"मैं ने ऐसा क्या किया है, मां? सुबो और मैं एकदूसरे को प्यार करते हैं और विवाह करना चाहते हैं... साथसाथ फिल्म देखने चले गए तो क्या हो गया?"

"शर्म नहीं आती, ऐसा कहते? तुम क्या समझती हो कि तुम मनमानी करती रहोगी और हम चुपचाप देखते रहेंगे? आज से तुम्हारा घर से निकलना बंद... बंद कर यह कालिज जाना भी, बहुत हो गई पढ़ाई." शांता ने मानो आज्ञापत्र जारी कर दिया.

प्रांजलि पैर पटकती अपने कमरे में चली गई और स्तंभित शांता वहीं बैठ कर फूटफूट कर रो पड़ी.

शांता के पति राजेश्वर ने जब घर में प्रवेश किया, तब घर का वातावरण अत्यंत बोझिल था. प्रांजलि अपने कमरे में मुंह फुलाए बैठी थी और शांता बदहवास सी अपने कमरे में.

"क्या बात है? सब कुशल तो है? फिल्म अच्छी नहीं लगी क्या?" वह शांता की अस्तव्यस्त दशा देख कर बोले.

"यह मुझ से क्या पूछते हो, पूछो अपनी लाड़ली बेटी से. मैं तो केवल शुभ्रा का साथ देने के लिए ही सिनेमाघर में बैठी रही, नहीं तो इतना होश किसे था कि फिल्म अच्छी है या बुरी." शांता का स्वर भर्रा गया.

"बात क्या है, शांता? तुम तो बहुत परेशान लग रही हो."

फिर तो शांता ने अथ से इति तक पूरी बात बता दी और यह एलान भी कर दिया कि अब प्रांजलि का घर से बाहर निकलना बंद और कालिज जाने की भी उसे कोई आवश्यकता नहीं.

"इतनी सी बात में घर सिर पर उठाने की क्या बात है, शांता? लाओ, एक प्याला चाय तो पिलाओ. फिर सोचेंगे कि समस्या क्या है?" राजेश्वर घर के वातावरण को सामान्य करने का प्रयत्न करते हुए बोले.

फिर वह चाय पीतेपीते ही बेटी से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कमरे में पहुंचे, "क्या बात है, प्रांजलि? तुम दोनों तो ऐसे मुंह फुलाए बैठी हो कि मेरी तो समझ में कुछ नहीं आ रहा."

"मैं सुबोध के साथ फिल्म देखने गई थी. वहां मां ने मुझे देख लिया. तभी से वह परेशान हैं और मुझे बुराभला कहे जा रही हैं." प्रांजलि सहमे स्वर में बोली.

"यह सुबोध कौन है?" राजेश्वर ने पूछा.

"मेरे कालिज में बी. एससी. अंतिम वर्ष का छात्र है. हम दोनों एकदूसरे को बहुत चाहते हैं और विवाह करना चाहते हैं." प्रांजलि ने पुनः पूरी बात दोहरा दी.

"देखो बेटी, अपने मित्र के साथ फिल्म देखने में कोई बुराई नहीं है, लेकिन जब भी कोई काम चोरीछिपे किया जाए तो वह अवश्य ही बुरा कहलाता है. यदि तुम फिल्म देखने जाना चाहती थीं तो हम लोगों को सूचित कर के भी जा सकती थीं."

"जी." प्रांजलि ने अपना सिर नीचे झुका लिया.

"रही विवाह की बात तो यह क्या कोई हंसीखेल है कि आज साथ फिल्म देखी और कल विवाह कर लिया?" उन्होंने बेटी से प्रश्न किया.

"हम दोनों एकदूसरे को बहुत अच्छी तरह से जानते हैं." प्रांजलि का उत्तर था.

"अच्छा?" राजेश्वर व्यंग्य से मुसकराए, "अच्छा बताओ, सुबोध के कितने भाईबहन हैं.?"

"शायद तीन."

"शायद...अच्छा, वह किस धर्म व जाति का है?"

"धर्म तो शायद हिंदू है, जाति मुझे नहीं मालूम." प्रांजलि बोली.

"उस के मातापिता आधुनिक हैं या पुरातनपंथी?"

"पता नहीं."

"वे लोग क्या तुम्हें पुत्रवधू के रूप में स्वीकार करेंगे?"

"कह नहीं सकती."

चले आइए

अश्क बन कर नयन में चले आइए,
चाहे गम का हो रूप अब ढले आइए,
जिंदगी बन गई आग का एक पेड़
थोड़ी देर छांव बन कर चले आइए

—शंभु सिंह मनहर

"अभी वह बी. एससी. कर रहा है, व्यवस्थित होने में उसे तीनचार वर्ष लग जाएंगे. ऐसे में विवाह के चक्कर में पड़ कर क्या तुम अपना और उस का भविष्य दांव पर नहीं लगाओगी?"

"आप कहना क्या चाहते हैं, पिताजी?" प्रांजलि रुंधे स्वर में बोली.

"यही कि तुम तो स्वयं वैज्ञानिक बनना चाहती हो, उस का क्या होगा?"

"आप की कोई भी बात मुझे अपने निश्चय से नहीं डिगा सकती." प्रांजलि दृढ़ स्वर में बोली.

"मुझे प्रसन्नता है कि तुम इतनी बड़ी हो गई हो कि अपने लिए स्वयं निर्णय ले सकती हो और वैसे भी हमें क्या चाहिए? केवल तुम्हारी खुशी, पर जल्दबाजी में कोई भी ऐसा निर्णय तुम ले लो कि जीवन भर पछताना पड़े, यह भी मैं नहीं चाहूंगा." कहकर राजेश्वर कमरे से बाहर निकल गए. वह अचानक ही बेहद गंभीर हो उठे थे.

पति को इतनी गंभीर मुद्रा में देख कर शांता का भी कुछ कहनेसुनने या पूछने का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहस नहीं हो पा रहा था.

उधर अपने कमरे में प्रांजलि स्तब्ध बैठी थी. पिता ने इतना रूखा व्यवहार उस से पहले कभी नहीं किया था. किंतु उस से भी अधिक चिंता उसे सुबोध को ले कर थी. वह तो सोचती थी कि सुबोध के संबंध में वह बहुत कुछ जानती है, पर कहां? वह तो अपने पिता के आधे प्रश्नों का भी उत्तर नहीं दे सकी थी. सुबोध से संबंधित कितनी ही बातें न कभी उस ने सोची थीं, न ही सुबोध ने बताई थीं. पढ़ाई में सदा सब से आगे रहने वाली प्रांजलि अब पढ़ाई की ओर से बिलकुल उदासीन हो कर सुबोधमयी हो उठी थी. उस का मन बेहद ग्लानि से भर उठा.

दूसरे दिन राजेश्वर जल्दी ही कार्यालय से लौट आए. शांता मन ही मन मुसकराई कि चलो, बेटी की चिंता में इतना परिवर्तन तो हुआ, पर वह तो चाय का प्याला ले कर प्रांजलि के कमरे में ऐसे घुसे कि वहीं रम गए. नाराजगी दिखाने के लिए शांता बेटी से बात नहीं कर रही थी इसलिए उस के कमरे में भी जाना नहीं चाहती थी. किंतु पितापुत्री बातों में ऐसे खोए कि उस की सुध ही भूल गए. पढ़ाई, कालिज, पत्रपत्रिकाओं एवं और भी न जाने कितनी ही बातें दोनों करते रहे, पर सुबोध का उस चर्चा में कहीं नामोनिशान न था.

अब तक घर का हर सदस्य अपने ही दायरे में घूम रहा था. शांता की अपनी सहेलियां थीं, रुचियां थीं, वीडियो फिल्में थीं. प्रांजलि के मित्रों का अपना अलग संसार था.

जीवन के रंगीन सपने, भविष्य की रूपरेखा, पौप संगीत, फिल्मी सितारे तथा खेल जगत के प्रसिद्ध खिलाड़ियों के झूठेसच्चे किस्से उन की गपशप का आवश्यक अंग होते थे. राजेश्वर का कार्यालय था, मित्र थे तथा मन में उन्नति की महत्त्वाकांक्षा थी. प्रांजलि के स्कूल छोड़ कर कालिज में जाते ही दोनों ने उस के प्रति कर्तव्य की इतिश्री समझ ली थी.

संपूर्ण परिवार

सरिता

स्वास्थ्य विशेषांक

मई (प्रथम) 1991

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर सुबोध वाली घटना ने उन्हें सोते से जगा दिया था. अब कार्यालय से छूटते ही राजेश्वर घर भागने की ताक में रहते. न मित्रमंडली उन्हें खींच पाती, न कोई अन्य आकर्षण. तब उन्होंने अनुभव किया कि कितने लंबे समय से उन्होंने या शांता ने प्रांजलि से ढंग से बात भी नहीं की थी. उस के पास कितना कुछ कहनेसुनने को था, पर अभी भी संशय की दीवार बीच में थी. सुबोध का प्रसंग बीच में आते ही वह बात का रुख मोड़ देती या फिर चुप हो जाती.

एक दिन शांता, राजेश्वर तथा प्रांजलि पिकनिक पर गए थे. वहां से लौट कर राजेश्वर अपनेआप में खोए बैठे थे कि शांता के स्वर ने उन्हें चौंका दिया, "क्या सोच रहे हैं?"

"कुछ नहीं... यों ही... मैं सोच रहा था कि क्या हम ने प्रांजलि को बहुत उपेक्षित नहीं कर दिया था. क्या इसी कारण वह सुबोध के प्रति आकर्षित नहीं हो गई थी?"

"मैं नहीं मानती यह बात. क्या नहीं दिया हम ने उसे, कौन सी सुविधा नहीं दी? आप यह सोचते हैं कि आप की मीठी बातों में आ कर उस का मन सुबोध की ओर से हट जाएगा? क्यों सुबोध की बात आते ही वह चुप हो जाती है? क्या आज तक उस ने सुबोध से संबंधित एक भी बात आप को बताई है? मुझे तो ऐसा लगता है कि वह कालिज में छिप कर अवश्य उस से मिलती है. मैं ने कहा था कि उस की पढ़ाई छुड़ा कर घर बिठा लो, पर मेरी बात सुनता ही कौन है."

"उसे विद्रोही बनाने का यत्न मत करो, शांता. पशु को बांधा जा सकता है, मनुष्य को नहीं. मैं तो केवल यह प्रयत्न कर रहा हूं कि किसी प्रकार वह यह समझ सके कि क्या सही है और क्या गलत. फिर भी यदि वह कुछ ऐसावैसा कर लेती है तो मैं यही समझूंगा कि मेरे प्रयत्न में ही कोई कमी रह गई थी."

"जैसी आप की मरजी, पर कहे देती हूं, एक दिन सिर पर हाथ रख कर रोना

स्वास्थ्य के लिए

स्वास्थ्य संबंधी
अनूठी जानकारी सरल शब्दों में
विशेषज्ञ डाक्टरों द्वारा लिखे गए लेख

• हृदय रोग • सिरदर्द • मस्तिष्क कैंसर • कब्ज • मोटापा • अर्थराइटिस • मानसिक तनाव • जुकाम • आंखें स्वस्थ कैसे रखें • दांतों की बीमारियां • नारी को सौंदर्य प्रदान करने वाले आसन • योनिस्राव तथा कई अन्य स्वास्थ्य संबंधी लेख

अपनी प्रति खरीदना न भूलें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पड़ेगा." शांता गरम हो उठी.

"देखता हूं, मांबेटी के बीच अब भी तलवारें खिची हुई हैं. शांता, प्रांजलि की मित्र बनने का प्रयत्न करो, जिस से कि वह अपनी अंतरंग बातें भी तुम से कर सके." राजेश्वर ने पत्नी को समझाया.

"अंतरंग बातें? मुझ से तो वह सीधे मुंह बात ही नहीं करती." शांता व्यंग्यात्मक स्वर में बोली.

दूसरे दिन प्रांजलि घर लौटी तो बहुत उद्विग्न थी.

"क्या बात है प्रांजलि, बहुत उदास हो? क्या हुआ?" शांता ने प्रश्न किया.

"कुछ नहीं मां, मुझे अकेला छोड़ दो."

चरित्र बल

जगत को जिस वस्तु की आवश्यकता है, वह है चरित्र. संसार को ऐसे लोग चाहिए, जिन का जीवन स्वार्थहीन ज्वलंत प्रेम का उदाहरण हो. वह प्रेम एकएक शब्द को वज्र के समान प्रतिभाशाली बना देगा.

—विवेकानंद

कहती हुई पैर पटकती प्रांजलि अपने कक्ष में जा कर फूटफूट कर रो पड़ी.

"प्रांजलि कहां है?" कुछ ही देर में राजेश्वर ने घर में प्रवेश किया.

"अंदर है, अपने कमरे में. न जाने क्या बात है, कुछ बताती ही नहीं. मुझे तो बहुत डर लग रहा है." शांता ने धीरे से कहा.

"क्या बात है प्रांजलि?" वह तुरंत ही प्रांजलि के पास जा पहुंचे.

"यह सुबोध अपनेआप को समझता क्या है?" उस ने आंसुओं से भरा चेहरा ऊपर उठाया. "आज मेरी सहेलियों के सामने कहने लगा कि मैं ने उस के मातापिता से कहा है कि वह मुझ से विवाह करेगा और यह कि वह मेरी तरह विवाह को ही अंतिम लक्ष्य नहीं मानता. उस के सामने [illegible] भविष्य है. कुछ बन जाने के बाद ही [illegible] विवाह जैसी फालतू बातों के संबंध में सो[illegible] सकता है. फिर कहने लगा कि आजक[illegible] लड़कियों के साथ जरा घूमेफिरे, एक[illegible] फिल्में देखीं तो वे विवाह के सपने देख[illegible] लगती हैं." प्रांजलि गुस्से से बोली.

"उस का इतना साहस? फिर तुम [illegible] कुछ कहा नहीं?"

"मैं ने कहा कि वह स्वयं को समझ[illegible] क्या है? केवल उस के सामने ही भविष्य [illegible] प्रश्न है, मेरे सामने नहीं? मैं उस से कह[illegible] अधिक परिश्रम कर के उसे ऐसा मुंहतो[illegible] उत्तर दूंगी कि वह सदा याद रखेगा."

"लेकिन तुम तो कह रही थी कि तु[illegible] उस के बिना नहीं रह सकतीं." राजेश्व[illegible] मुसकराए.

"पिताजी, उस की बात मत कीजि[illegible] वह सब तो केवल बचपना था. उस ने मे[illegible] मित्रों के सामने मुझे बुरा भला कहा... न [illegible] वे सब क्या सोचते होंगे."

"दूसरे क्या सोचते हैं, यह सब भू[illegible] कर यदि तुम पढ़ाई में जुट जाओगी [illegible] अवश्य ही अपने प्रति उन के विचारों [illegible] परिवर्तन ला सकोगी."

राजेश्वर पत्नी की ओर मुड़े, "शां[illegible] चलो चाय के साथ कुछ गरमागरम बना [illegible] तब तक प्रांजलि भी हाथमुंह धो कर आ[illegible] है."

शांता ने आंखों ही आंखों में प्रश्न कि[illegible] कि यह सब कैसे हुआ तो वह केवल मुसक[illegible] दिए. वह कैसे बताते कि सुबोध [illegible] मातापिता को संपूर्ण प्रकरण की जानक[illegible] वही दे कर आए थे.

राजेश्वर ने अब निश्चय कर लिया [illegible] कि वह भविष्य में कभी प्रांजलि के स[illegible] संवादहीन की स्थिति नहीं आने देंगे.

जब तीन वर्ष बाद बी. एससी. [illegible] प्रांजलि विश्वविद्यालय में प्रथम आई [illegible] शांता ने भी स्वीकार किया कि उस के [illegible] के प्रयत्न सफल हुए हैं. प्रांजलि तो पिता [illegible] पूर्ण रूप से ऋणी हो गई थी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिनदहाड़े

मैं परिवार सहित आगरा घूमने गया था. वहां हम ने ताजमहल पर एक स्टुडियो के फोटोग्राफर से तसवीरें खिंचवाईं और कुछ रुपए अग्रिम राशि के तौर पर जमा करा दिए. फोटोग्राफर ने पंद्रह दिनों के अंदर तसवीरें भेज देने का वादा भी किया. महीना बीत जाने के बाद भी कोई तसवीर नहीं आई तो हम ने स्टुडियो के पते पर दो पत्र डाले, लेकिन दोनों पत्र वापस आ गए. उस पर लिखा था कि पता गलत है.

जबकि फोटोग्राफर ने बाकायदा हमें रसीद भी दी थी जिस पर उस की दुकान का नाम 'उपकार स्टुडियो' लिखा था तथा यह भी कि वह सरकार से मान्यताप्राप्त फोटोग्राफर है. —अशोक डालमियां

*

मैं बस से हरिद्वार जा रहा था. बस में भीड़ को देख कर अंदर घुसने की हिम्मत नहीं हो रही थी. तभी एक युवक ने चरणस्पर्श करते हुए कहा, "चाचाजी, आप यहां..."

मैं ने उसे न पहचानते हुए भी सदभावनावश उत्तर दिया. उस ने कहा, "लाओ, आप की अटैची मैं ऊपर रख देता हूं. आप अंदर घुसने की कोशिश करें."

मुझे उस का सुझाव ठीक लगा. मैं ने एक चेन और ताला देते हुए उसे लगा देने को कहा.

वह अटैची ले कर ऊपर चढ़ गया. थोड़ी देर बाद चाबी मुझे वापस दे दी. काफी दूर जाने पर मैं अपनी अटैची देखने ऊपर चढ़ा तो वहां मेरी अटैची नहीं थी. नकली भतीजा हमदर्दी दिखा, चाचा को चकमा दे गया था. —कृष्णलाल दीवान

हम मुंबई गए थे. खरीदारी के लिए बाजार में निकले. एक दुकान पर किसी कपड़े का मूल्य पूछने पर दुकानदार ने 5-5 रुपए मीटर बताया. सस्ता देख कर हम ने काफी कपड़े कटवा लिए. जब हम मूल्य चुकाने लगे तो वह बोला, "आप बहुत कम पैसे दे रहे हैं."

मैं ने कहा, "आप के हिसाब से तो हम पैसा पूरा दे रहे हैं."

वह बोला, "मैं ने आप को 5-5 यानी 55 रुपए मीटर कहा था, पांच रुपए मीटर नहीं. "हम ने आपत्ति की तो वह झगड़ने लगा और तुरंत उस के कई साथी जमा हो गए. हार कर हमें 55 रुपए की दर से भुगतान करना पड़ा. —रजनीश शर्मा

*

एक दिन हमारे घर पर एक व्यक्ति आया और बोला, "मैं आप के अखबार वाले का छोटा भाई हूं. वह आ नहीं सका. उस ने मुझे पिछले महीने के अखबार का बिल लेने भेजा है."

हम ने उसे पैसे दे दिए. अगले दिन अखबार वाला आ कर पैसे मांगने आया.

मैं ने कहा, "वह तो तुम्हारा छोटा भाई ले गया."

उस ने कहा, "मेरा कोई भाई है ही नहीं."

तब हमें पता चला कि हम ठगे जा चुके हैं.

—मंजु सपरा ●

इस स्तंभ के लिए अपने तथा अपने सर्वाधियों के अनुभव भेजिए. प्रत्येक प्रकाशित अनुभव पर 50 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. अपने अनुभव इस पते पर भेजें. संपादकीय विभाग, सरिता, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी ● प्रभात त्यागी

दुखवा कासे कहूं

मैं भाग्यवादी नहीं हूं, न ही बनना चाहती हूं क्योंकि प्रत्येक भाग्यवादी केवल 'सौभाग्य' को महत्त्व प्रदान कर 'दुर्भाग्य' को अपने पास फटकने नहीं देना चाहता. भला बताइए, क्या संसार में संभव है? तकदीर में यदि सारी ताकत तो धरती में बिना बीज डाले ही फसल लहलहाती मिलती. सोने, लोहे और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घिनौनी कारगुजारियों ने कश्मीर के सौंदर्य को कलंकित कर दिया था. उन शासकों के लौहमर्षक कांडों को देखसुन कश्मीर की धरती खून के आंसू रोती रही, लेकिन उस का दुखदर्द सुनने वाला कोई नहीं था.

मुझे आशा थी कि चक्रवर्मन योग्य शासक सिद्ध होगा, पर वह एक डोम की बेटी के साथ गुलछर्रे उड़ाने लगा.

की खदानों में मेहनत बिना हाथ बढ़ा कर इन्हें जब चाहा, प्राप्त कर लिया जाता. सब लोग तब बिना तकलीफ उठाए सफलता की चोटी पर जमे दिखाई देते. मैं सोचती हूं और आप भी मुझ से सहमत होंगे कि इन्हें संभव बनाने का एक ही तरीका है, वह है कठोर परिश्रम, कर्मठता या लगन.

मैं भी कहां बहक गई? मैं तो आप को बताना चाह रही थी कि जीवन में कई बार बड़ी अजीबोगरीब बातें घट जाती हैं. अनबूझ संयोग भी इन्हें कहा जा सकता है. कश्मीर के युवराज उन्मत्तावंती का जब नामकरण किया गया तो किसी ने सोचा भी न होगा कि नाम के अनुरूप ही वह उच्छृंखल और अनुशासनहीन बन जाएगा. क्या पालने में ही उस की मुखाकृति व क्रियाकलापों से उस का भविष्य पढ़ लिया गया? पर शब्दों की भूलभुलैया में आप को उलझाने से क्या लाभ? वैसे भी शब्दों का कद मेरी कहानी की तुलना में बहुत छोटा है...

मैं कश्मीर का दिल आप के मुखातिब हूं. अरूप, धर्मविहीन व जातिहीन लोगों ने मुझे कई नाम दिए. समयसमय पर हिंदू, मुसलिम और बौद्ध कई प्रकार के ठप्पे मुझ पर लगाए गए. किंतु श्रीनगर के पास आज की बुर्ज होम बस्ती क्षेत्र में आदिम संस्कृति के नव पाषाण युग की मैं गवाह हूं. अंतेश्वर शिव ने मुझे ही अपने त्रिशूल से वैरिनाग में वितस्ता (गौरी-पार्वती) के रूप में उत्पन्न किया. पुराना धिष्ठान, हारवन मार्तंड और अमरनाथ में मैं पली, विकसित हुई.

आर्य संस्कृति की जन्मस्थली सिंधु ने मुझे ताकत दी, मेरा रूप निखारा, झेलम के रूप में मेरी ही कगार पर हीदसमीज में सिकंदर व पौरष (पुरू अथवा पोरस) में निर्णायक युद्ध हुआ. हुष्कपुर में मेरी ही धूल को ह्वानचांग ने अपने माथे पर लगा कर अपने को धन्य माना. शायरों व कवियों ने मेरी पांच खासियत गिनाईं—मैं आगौही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यानी शान व आगोश हूं [illegible]
तहजीब मेरा कलसका है. मेरे पांव [illegible]
वाले ऊंचे मकान मूक स्वर में मेरी पहचान बताते हैं. नर्म, नाजुक केसर की भीनी भीनी खुशबू सिर्फ मैं दुनिया को देती हूं.

मेरा बर्फीला आबेहयात मुझे जन्नत होने का फख्र हासिल करता है और मेरे अमृत जैसे शरबती अंगूर तो दुनिया भर में और कहीं नहीं मिल सकते. पर आज तो अपने बदनुमा दाग मैं आप को दिखा रही हूं. सचमुच हसीन वादियों, आसमान को छूती सफेद पहाड़ी चोटियों, जवान दरख्तों, बेतहाशा खिलखिलाते झरनों, इठलाती नदियों, नूरानी चांदनी और गरमाती धूप के आगोश से नहीं बल्कि इनसानों से ही कोई जगह 'जन्नत' या 'दोजख' बनती है.

कशमीर के दुर्दिनों की दास्तां कर्कोट वंश के ललितापीड से प्रारंभ होती है. 810 ईसवी में वह यहां का शासक था. इंद्रियलोलुप यह शासक एक कलवार कन्या जयादेवी के हाथों लुट गया. विपत्तियों के भंवर में पड़ी अपनी जनता को उबारने की अपेक्षा जया की घुंघराली जुल्फों के खम संवारने की लालसा उस में अधिक थी.

जया के गुलाबी लबों और कमल नयनों ने उसे पागल बना दिया था. उस की घनेरी पलकों में वह समाता गया. नगर के रास्तों व खेतों के ऊबड़खाबड़ खड्डों को पाटने की जगह जया के गालों में पड़ने वाले गड्डों को ताकना उस का प्रिय शगल बन गया था.

धीरेधीरे जया के भाइयों ने कशमीर के ऊंचे पदों को हथियाना प्रारंभ कर दिया. जया के सब से बड़े भाई उत्पल की ताकत इतनी अधिक बढ़ गई कि उस के बेटे अवंतीवर्मन ने ललितापीड को हटा कर गद्दी प्राप्त कर ली. वह उत्पल वंश का सब से महान शासक सिद्ध हुआ. मैं 28 वर्षों के उस के शासन काल में हर्षित, आश्वस्त हो कर खिलखिलाती गई.

पर अवंती का बेटा शंकरवर्मन अयोग्य होने के साथ प्रजापीड़क भी था. उस ने अपने खर्च के लिए दान में दी गई सारी राज्य के 64 देवालयों की संपत्ति, स[illegible] आभूषण व रत्न भंडार हथिया कर [illegible] धूलधूसरित कर दिया. उसी के समय [illegible] नैतिकता का अवमूल्यन प्रारंभ हुआ [illegible] उस की हत्या से कशमीर का कण[illegible] अनवरत रक्तमय होता गया.

शंकरवर्मन की रानी सुगंध का चरि[illegible] अत्यधिक दुर्गंधमय था. वह आठों प[illegible] अपने मंत्री प्रभाकरदेव की गलबहियों [illegible] आनंदित रहती थी. दिखावे के लिए उस[illegible] अपने बेटे गोपालवर्मन को 902 ईसवी [illegible] गद्दी पर बैठा कर स्वयं उस की संरक्षिका [illegible] पद प्राप्त किया.

जब गोपाल ने अपनी मां [illegible] गतिविधियों का प्रतिरोध किया तो उस [illegible] हत्या कर दी गई. अब सुगंध राज्य [illegible] वास्तविक कर्ताधर्ता बन गई. [illegible] प्रभाकरदेव के विरोधी मंत्रियों, तंत्रियों [illegible] शक्ति बढ़ जाने के कारण प्रभाकर[illegible] कशमीर से कहीं भाग गया.

गोपाल का छोटा भाई संयुक्त केवल [illegible] दिन शासक रह सका. तंत्रियों [illegible] उस की हत्या कर दी. सुगंध अब दूर के [illegible] रिश्तेदार निर्जीतवर्मन (पंगु) को गद्दी [illegible] बैठाना चाहती थी, पर तंत्रियों ने पंगु के [illegible] पर्था को कशमीर का राजा बनाया. सु[illegible] अपने विरोधियों से बचने के लिए कश[illegible] से जैसे ही भागी, उसे पकड़ कर बंदीगृ[illegible] ठूंस दिया गया. अचानक ही एक दिन [illegible] उस की हत्या कर दी गई.

तंत्री सैनिकों की इन दिनों तूती [illegible] रही थी. वे कालासफेद जो चाहा, कर [illegible] थे. अंतःपुर की रानियों में अपने बेटों को [illegible] पर बैठाने के लिए जबरदस्त होड़ लग [illegible] थी. तंत्री उन से असीमित रुपया प्राप्त [illegible] उन के सम्मान से खेल कर राजगद्दी [illegible] दावेदारों को बदलते रहे.

'तू चल मैं आया' के नियम के अनु[illegible] राजाओं के बदले जाने से राज्य [illegible] अराजकता व्याप्त हो गई. जनता निर[illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थी. और मैं? मेरी तो सुनता ही कौन? हत्याओं की प्रतिदिन की घटनाओं से मेरा कपकण खून के आंसू रोता रहा.

निर्जीतवर्मन (पंगु) और उस के बेटे पर्था में खूब ठनी. तंत्री आनंद लेते रहे. अंत में 921 ईसवी में पर्था को परास्त कर, पंगु को कशमीर की गद्दी मिल गई. उस ने अपने छोटे बेटे चक्रवर्मन को अपना उत्तराधिकारी घोषित कर दिया.

पर उस से इच्छित धन प्राप्त न होने पर तंत्रियों ने शंकर व शंभू नामक दो मंत्रियों को शासक बनाने का वचन दे दिया. शंभू ने शंकर की हत्या करा कर स्वयं गद्दी प्राप्त कर ली. इसी समय चक्रवर्मन ने बड़ी बहादुरी से शंभू को परास्त कर स्वयं शासन प्राप्त कर लिया.

मुझे आशा हुई कि चक्रवर्मन अब योग्य शासक सिद्ध होगा, पर वह एक डोम की बेटी

"मत भूलो कि हम ने तुम्हें गद्दीनशीं किया है तो कल तुम्हें गद्दी से उतार भी सकते हैं. समझे." जीवा ने तन कर उन्मत से कहा.

'हंसा' के साथ गुलछर्रे उड़ाने लगा. उकता कर चक्रवर्मन को शासक बनने में सहायता देने वाले दमार सैनिकों ने पामपुर में उस के अस्थायी निवास को घेर लिया. उस के शिविर में हंसारानी की गोद में ही चक्र की हत्या कर दी गई. तब पर्था के बेटे उन्मत्तावंती को 937 ईसवी में कशमीर का शासक घोषित कर पतन की पूरी तैयारियां कर ली गईं.

उन्मत्तावंती में कोई भी कुलीनवर्गीय गुण न था. शालीनता उस में थी नहीं. जबकि गाली दिए बिना वह बात नहीं कर सकता था. जब उसे सिंहासनारूढ़ किया जा रहा था, तभी एक सभासद ने आ कर उस के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गले में पुष्पहार डाल कर उस के पैर छूलिए. वह उसे धक्का दे कर बोला, "मुझे तलुवा चाटने का कोई काम पसंद नहीं है, समझे." वह स्वयं उठ कर उस व्यक्ति को धक्के देता हुआ बाहर ले गया तथा पुनः अपनी गद्दी पर आ कर खिलखिलाने लगा.

सारी सभा को सांप सूंघ गया. उन्मत्तावंती की अविवेकी बुद्धि पर मंत्री पर्वतगुप्त की बाछें खिल गईं. वह समझ गया कि राजा को सरलता से बरगलाया जा सकता है.

उन्मत्त का पिता पर्था अभी जीवित था. परिवार के सदस्यों सहित वह जयेंद्रविहार मठ में संन्यासी जीवन व्यतीत कर रहा था. पर्वतगुप्त ने नए शासक को सर्वप्रथम उसी के विरूद्ध भड़काया. एक दिन अचानक उन्मत्तावंती के सैनिकों ने मठ को जा कर घेर लिया. उन्मत्त के सौतेले भाई सूरसेन सहित पर्था के सारे लड़कों को पकड़ लिया गया.

"इन सब को ले जा कर बंदीगृह में डाल दो. भूखेप्यासे ये अपनेआप ही वहां मर जाएंगे." उन्मत्तावंती ने आदेश दिया.

"बेटा उन्मत, तुझे क्या हो गया है...अपने ही भाइयों को तू बंदी बना रहा है? इन बेचारों का दोष क्या है?" उस की मां ने कहा.

"मां, तू बीच में मत बोल. इन का यह दोष क्या कम है कि कशमीर की गद्दी के ये विरोधी दावेदार हैं? घसीटते हुए ले जाओ इन्हें..."

"अरे निर्दयी, कुछ तो कुदरत से भय कर." पर्था चीखा.

उन्मत्त आग्नेय नेत्रों से अपने पिता को ताकता रहा. उस के संकेत पर दो सैनिकों ने पूर्व सम्राट को पकड़ने का प्रयास किया.

"नमकहरामों, भूलो मत कि मैं तुम्हारा सम्राट था. अपने दूषित हाथों से मुझे स्पर्श मत करो. चलो, जहां चलना है. मैं स्वयं ही चल रहा हूं."

पीछे से आ कर जैसे ही उन्मत्त ने पिता

"निर्लज्ज, अपनी लाज का तो ध्यान रख." कहतेकहते उस ने उन्मत्त के हाथों को झटक दिया.

"सैनिकों, सिर्फ पिताजी को नगर में ले चलो." उस का आदेश था. किंतु उस की मां रूकी नहीं. वह दौड़ कर अपने पति के साथ चलने लगी. नगर में पर्था व रानी को सैनिकों से घिरा देख कर बड़ी संख्या में नगर निवासी एकत्रित हो गए. वे हाथ जोड़ कर सम्राट पर्था का सम्मान कर रहे थे.

गजराज पर आरूढ़ उन्मत्त क्रोध से कांप उठा. वह हाथी से उतर कर पर्था से जा कर बोला, "पिताजी, अब आप की इस राज्य को कोई आवश्यकता नहीं रही है." कहतेकहते उस ने स्वयं कटार निकाल कर पिता की छाती में भोंक दी. रक्त की धार उस के मुख पर पड़ी. फिर भी वह अट्टहास करता रहा.

उस की मां अपने विक्षिप्त बेटे को एक ओर कर पति को संभालने आगे बढ़ी पर पति के धराशायी हो जाने पर उस आघात को सह न पाने के कारण वह भी उस के शव के पास गिर कर समाप्त हो गई.

सारी जनता पाषाण प्रतिमाएं बनी मौन खड़ी रही. मेरा हृदय चीत्कार कर उठा.

उन्मत्तावंती में उस काल के शासकों के सारे दोष भरे हुए थे. उस ने अपने अंतःपुर में एक से एक खूबसूरत युवतियां एकत्रित कर ली थीं.

एक संध्या को वह नगरभ्रमण हेतु अश्वारूढ़ हो कर निकला. साथ में एक गजराज भी था.

"सम्राट, इसी भवन में रहती है वह..." पर्वतगुप्त फुसफुसाया.

"वह कौन?"

"सकीना हुजूर." साथ में चलता एक सेवक बोला, "'जन्नत की हूरें' भी उस के आगे पानी भरती हैं, सम्राट. अब आप को क्या बखान करूं, उस का? मिसरी की डली शहद से पगी हुई है वह. शरीर की चंपई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रंगत, चेहरे पर बेमिसाल कसाव, शीशे की तरह चमकतादमकता प्रत्येक अंग. कोंसरनाग जैसा चट्टानी यौवन, लिद्दर चश्मे जैसा निर्मल हृदय, सुर्ख सेब जैसे गाल जिन में तनिक स्पर्श से खून उभर आए. दूज के चांद जैसी पतली भौएं, सिंधु की तरह नीली गहरी आंखें और डूबते सूरज से उधार लिए गए गुलाबी रंग वाले लरजते लब... किसकिस को गिनाऊं."

"तो अक्ल के दुश्मनों, आज तक तुम ने हमें उस के विषय में क्यों नहीं बताया? और उसे हमारे सामने पेश क्यों नहीं किया गया?"

"श्रीमान, इस का बाप एक ही हरामुद्दहर (दुष्टात्मा) है. उस के आगे अच्छेअच्छे फत्तेखां दुम दबा बैठते हैं..."

"तो उस हरामतोश (नमकहराम) को जा कर कह दो कि सम्राट उन्मत्तावंती उस की बेटी को चाहते हैं."

"और जैसे वह आप के आदेश पर अपनी बेटी को तश्तरी में रख कर पेश कर कहेगा, 'लीजिए, नोश फरमाइए.' हुजूरे-आला, सकीना को पाने के लिए हमें कोई जुगत भिड़नी होगी..."

"उन्मत्तावंती ने आज तक अक्ल का नहीं ताकत का ही प्रयोग करना सीखा है. महावत, इस बीच वाले मकान को छोड़ कर इस के बांएदाएं सब मकानों पर हाथी हूलो. चिंता मत करो, जो भी सामने आए, बिना झिझक उसे हाथी के नीचे कुचल दो...समझ गए?"

"हुजूर," सेवक भयातुर हो कर बोला, "क्या कर रहे हैं, राजधानी में हंगामा बरपा हो जाएगा..."

"तुम चुपचाप खड़े तमाशा देखो."

हाथी के पैरों के नीचे मकान ऐसे गिरने लगे, जैसे वे कागज या ताश के बने हों. घबरा कर लोग गिरते मकानों से निकलनिकल कर भागे. सेवक दुल्लक के इशारे पर घबराई हुई सकीना को सेवकों ने

जमीर

हर इनसान अपने
जमीर के लिए लड़ता है,
जमीर ही तो है
जो हमें जिंदा रखता है.

—बीना जैन

अंतःपुर में पहुंचा दिया. सकीना का पिता और उस के सात पड़ोसी मकानों में ही दब कर मर गए. जब तक लोगों की भीड़ आ कर खड़ी होती, उन्मत्तावंती बहुत दूर पहुंच चुका था. जनता की कई चतुर दृष्टियों से उस का करतब छिपा न था, पर सदैव की भांति जनता मौन रही.

किसी भी शासक की श्रेष्ठता राज्य विस्तार, शासन सुदृढ़ता अथवा जन कल्याण से परखी जाती है. किंतु कई बार शासक का चरित्र भी उसे महान बना देता है. जैसे सम्राट अशोक व अवंती शासक भोज अपने 'धम्म' व सांस्कृतिक उपलब्धियों के कारण महान बन गए. जबकि उन दोनों के कालों में उन के शासन का पतन आरंभ हो गया था. उन्मत्तावंती तो शासन की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति करने में भी असफल था.

मेरी छाती पर लगे कालेकाले घावों से अभी खून का रिसना बंद भी न हुआ था कि उन्मत्तावंती की नई करतूतों ने मेरी पीड़ा को कई गुना बढ़ा डाला.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नर्तकों व लोकगीतकारों, स्त्रीपुरुष कलाकारों का एक समूह एक दिन उन्मत्त के सभा मंडल में प्रविष्ट हो गया. समूह के नेता ने अपनी कला के प्रदर्शन की अनुमति मांगी, 'चांडल चौकड़ी' के प्रधान पर्वतगुप्त ने सम्राट के कानों में कुछ फूंक दिया. क्रूरता की प्रतिमूर्ति विहंस उठी. "हम तुम्हें मुंहमांगा पुरस्कार देंगे कलाकारों."

यह बात सुन कर कलाकार प्रसन्न हो उठे. किसी बड़े पुरस्कार की कामना से वे आश्वस्त थे.

"पर हमारा एक अनुरोध है." 'शैतान' का स्वर अत्यंत मधुर था.

"आदेश दीजिए."

"हम चाहते हैं कि तुम सब स्त्रीपुरुष निर्वसन नृत्य प्रस्तुत करो..."

युवतियां लाज से गड़ गईं. पुरुष कलाकारों की दृष्टि इस कुत्सित प्रस्ताव से झुकी रहीं.

"क्यों, सम्राट की आज्ञा की अवहेलना करोगे?" प्रधान मंत्री पर्वतगुप्त ने प्रश्न किया.

"हम क्षमा चाहते हैं श्रीमान..."

दल नेता का कथन समाप्त भी नहीं हुआ था कि उन्मत्त दहाड़ा, "हमारी अवज्ञा करने वाले इन दुस्साहसियों को बंदीगृह में डाल कर इन के हाथपैर काट डालो."

"क्षमा सम्राट, हम क्षमा योग्य हैं..."

उन्मत्त खिलखिलाया, "जब इन के हाथपैर काटे जाएं, हमें अवश्य आमंत्रित किया जाए. इन की चीखचिल्लाहटों से हमें विशेष प्रसन्नता होगी."

"तेरी हठधर्मी का यह प्रत्युत्तर है. दुष्ट." युवतियों ने अचानक ही कंचुकियों से निकाल कर कटारें उस की ओर फेंकी पर सावधान सम्राट तब तक सिंहासन के पीछे जा छिपा था.

जैसे ही सेवक युवतियों को पकड़ने दौड़े, पुरुष कलाकारों ने तुरतफुरत सारंगियों, तानपूरों व तबलों में छिपे घातक धनुषबाण व अन्य अस्त्रशस्त्रों से अपने भागने का मार्ग बना लिया. अकर्मण्य सेवक मुंह बाए खड़े रह गए.

कई वर्षों में यह पहला अवसर था, जब मेरे होंठों पर खुशी की लहर दौड़ी पर उन्मत्तावंती की गतिविधियां पूर्ववत फिर प्रारंभ हो गई.

कश्मीर पर जहां प्रकृति ने मुक्त हाथों से सौंदर्य लुटाया है, वहीं सामान्य नागरिकों के जीवन में कष्टों का अंबार भी लगा दिया है. अतिवृष्टि और लंबी कड़कड़ाती बर्फीली ठंड के कारण यहां के लोग कृषि या उद्योगधंधे अपनाने में असमर्थ हैं. इसी लिए हस्तकला उद्योग यहां के व्यक्तियों के जीवनयापन का प्रमुख साधन है.

कला के विकास के नाम पर उन्मत्त राज्य के नगरों का सप्ताह में तीन दिन भ्रमण करता था. वास्तव में उस का व पर्वतगुप्त का लक्ष्य नईनई युवतियों की खोज करना अधिक था. अवंतिपुर (वंतपोर), ललितपुर (लाटपुर), पदमपुर (पामपुर) और वाराह-मूल (बारामूला) में उन के दूषित पैर पड़ चुके थे. इन नगरों में इन की बेजां हरकतों से त्राहित्राहि मच गई.

एक दिन पर्वतगुप्त ने कहा, "सम्राट, आइए, आज आप को परिहासपुर ले चलता हूं. यह जगह बहुत प्राचीन है, इसी लिए यहां का अछूता सौंदर्य आप को अभिभूत कर देगा." उन दोनों को आता देख कर ही लोग परिहासपुर से भाग लिए. विशेषकर युवतियां तो अपनेआप को बचाने के लिए खेतों में ही जा छिपीं.

पर वहां एक अत्यंत दरिद्र परिवार था. एकांत में उस घर के सारे सदस्य पाषाण प्रतिमाएं गढ़ने का कार्य करते थे.

"सम्राट," पर्वतगुप्त बोला, "इन कलाकारों की मूर्तिकला बेजोड़ है. बारीक खुदाई, प्रतिमाओं का शरीर सौष्ठव व स्त्रीपुरुष प्रतिमाओं के मुख के भावों का चित्रण ये लोग बड़ी कुशलता से करते हैं."

"अरेअरे, तुम हमें देख कर भाग क्यों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रही हो?" उन्मत्त की विवेकशीलता भड़क उठी, "मैं क्या कोई हिंसक पशु हूं जो तुम्हें निगल जाऊंगा...?"

"सम्राट, मेरी पुत्रवधू के आजकल में ही बच्चा होने वाला है. जा बेटी, अपनी भाभी को भीतर छोड़ आ." बूढ़ी अम्मां ने चतुराई से युवतियों को भीतर भेजना चाहा.

"नहीं ठहरो, क्यों बूढ़े, मैं जैसी चाहूं, वैसी मूर्तियां गढ़ सकेगा?"

"प्रजापति, मेरा तो काम ही मूर्तियां गढ़ना है. आप की आज्ञा सिरमाथे पर."

"पर्वतगुप्त इसे समझाओ कि हमें कैसी मूर्तियां चाहिए"

"इन दोनों युवतियों की मुखाकृति वाली मूर्तियां सम्राट को पुरुष युगल सहित ऐसे शृंगार रस में चाहिए कि दर्शक फड़क उठें. जैसे, आलिंगन, चुंबन और..."

"घर में क्या तेरी मां, बहनें नहीं हैं. उन के सामने रख सकेगा क्या तू यही प्रस्ताव? हमें गरीब समझ कर तू हमारा अपमान करने आया है? निकल जाओ घर से, नहीं तो मुओं के सिर पर झाड़ू ही झाड़ू बरसा दूंगी." गर्भवती युवती जीवा तन कर बोली.

"अरे बेटी, जरा होश तो कर कि तू किस से बातें कर रही है?" बेचारे ससुर ने समझाते हुए कहा, "बेटी, तू भीतर जा...हम बड़ों की बातों में तुम दोनों का क्या काम?"

"नहीं अम्मां...बापू, आप जानते नहीं हैं कि इन दोनों शैतानों ने लोगों का जीना दूभर कर रखा है. इन्हें देख कर औरतों के तो प्राण ही सूख जाते हैं. तुम हमारे राजा हो, पर हम तुम्हारे गुलाम नहीं हैं. मत भूलो कि हम ने तुम्हें गद्दीनशीं किया है तो कल तुम्हें गद्दी से उतार भी सकते हैं, समझे?"

उन्मत्तावंती का पहली बार किसी ने शब्दों में प्रतिरोध किया था. वह एक बार को इस शाब्दिक आक्रमण से सकपका गया.

"पर्वतगुप्त, तुम्हारी उस सिंधु नदी को बांधने की योजना का क्या हुआ?" उन्मत्त का प्रश्न पहेली की तरह उलझा हुआ था.

"सम्राट, वह शीघ्र प्रारंभ होने वाली है."

"तो ठीक है. इस पूरे परिवार को पत्थर तोड़ने और उन्हें ढोने के काम में लगा दो. बदले में इन्हें एक पैसा भी मत देना. तब इन्हें पता लगेगा कि मैं इन का मालिक हूं या नहीं."

"मैं आप से रहम की भीख मांगती हूं, श्रीमान मेरी बहू के कहे का आप बुरा न मानें. इस नादान की ओर से मैं क्षमा चाहती हूं. बचपने में यह जो कुछ कह बैठी है, उसे भूल कर इस की हालत पर तरस खाइए और कम से कम इसे बेगार से मुक्त रखें."

उन्मत्तावंती अपने शिकार की ओर निहारता रहा जैसे हिंसक पशु अपने सामने खड़े मेमने या हिरन को उस पर टूटने से पूर्व परखता है. अचानक उस ने अपनी तलवार निकाली और जीवा का पेट चीर कर गर्भ के बच्चे को बाहर निकाल डाला.

जीवा ठहरी हुई आंखों से अपने मृत बच्चे के साथ सहन में धरती पर पड़ी थी. रक्त का परनाला बह रहा था. 'शैतान' उन्मत्त हंस रहा था. इस वीभत्स कांड को देख कर पर्वतगुप्त की आंखें भी औरों की भांति फटी हुई थीं. रुदन के स्वर तीव्र होने से पूर्व ही उस ने उन्मत्त का हाथ पकड़ा और वे दोनों भाग खड़े हुए.

मैं बेसुध हो गई, उन्मत्त के इस जघन्य कृत्य को देख कर. लेकिन कई बार जो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समस्या व्यक्ति के लिए भयंकर हो जाती है, प्रकृति उसे निमिष मात्र में ही हल कर देती है. पितृ व मातृ हंता, विक्षिप्त उन्मत्त अपने शासन काल के दो वर्ष पूर्ण करने से पूर्व ही क्षय रोग से पीड़ित हो कर तड़पतड़प कर मृत्यु का ग्रास बन गया.

मृत्यु से पूर्व वह सूरवर्मन नामक एक बच्चे को अपना उत्तराधिकारी बना गया. इस बच्चे को उस की उपपत्नियों ने न जाने कहां से ढूंढ़ कर उन्मत्तवंती का पुत्र बता दिया था. नए सेनापति कमलवर्धन को उन्मत्त व अब एक अपरिचित बच्चे द्वारा कशमीर की गद्दी का दुरुपयोग बिलकुल रास नहीं आ रहा था. उस ने सर्वप्रथम दुष्ट तंत्रियों को सेना की सहायता से परास्त कर उन्हें कशमीर से भगाया, जिन्होंने कशमीर में रुपयों के बदले कई अयोग्य शासक बैठाए थे.

वह स्वयं कशमीर का शासक नहीं बना अपितु ब्राह्मणों व पुरोहितों का एक मंडल बना कर किसी भी योग्य शासक के चयन का अनुरोध किया. जनता ने भी हजारों, लाखों की संख्या में राजमहल के सम्मुख धरना दे कर केवल 'योग्यतम' व्यक्ति को शासक चुनने पर बल दिया. बहुत सोचसमझ कर निष्कासित प्रभाकर-देव के बेटे यशकार को कशमीर की गद्दी सौंपने का निश्चय किया गया.

यशकार वास्तव में न्यायवादी, अनुशासनप्रिय व योग्य शासक सिद्ध हुआ. कशमीर में उस ने पुनः सुव्यवस्था स्थापित कर दी. किंतु चारित्रिक निर्बलता उस में भी थी. एक भ्रष्ट युवती लल्ल ने उसे अपने रूपजाल में फंसा कर शासन पर शनैशनैः अपना वर्चस्व स्थापित कर लिया. लल्ल एक साथ, अस्तबल के एक निम्न कर्मचारी व यशकार दोनों को प्रेम में पारंगत बनाती रही.

किसी शासक की निर्बलता जनता के लिए दुखदायी बन जाती है. यदि उस में बौद्धिक दिवालियापन भी हो तो जनता के दुख में वृद्धि हो जाती है. दुष्ट पर्वतगुप्त इन दिनों शांत था, पर अभी भी उस की टकटकी गद्दी पर लगी हुई थी. उस ने लल्ल के साथ मिल कर यशकार को विश्वास दिला दिया कि उस का बेटा संग्रामसिंह वास्तव में उस का बेटा नहीं है. उन दोनों की चाल में पड़ कर यशकार ने अपने बड़े भाई की हत्या पहले ही करा दी थी. अब उस ने संग्राम के स्थान पर अपने भतीजे वर्नाट को अपना युवराज घोषित कर दिया.

पक्षाघात के कारण एक दिन यशकार एक बौद्ध मठ में धराशायी हो गया. उस के आदेशानुसार वर्नाट को राजा घोषित कर दिया गया. पर जब एक दिन का शासक वर्नाट अपने चाचा से मिलने तक नहीं आया तो पर्वतगुप्त के कहने पर यशकार ने उस कृतघ्न भतीजे के स्थान पर संग्राम को ही कशमीर की गद्दी सौंप दी.

यशकार के हाथपैर उस दिन के बाद उठे ही नहीं. वह उठनेबैठने में भी अ[illegible] असमर्थ था. इसी अवस्था में पर्वतगुप्त [illegible] अन्य मंत्रियों को यशकार की अंटी में 250[illegible] स्वर्ण मुहरें होने का ज्ञान हो गया. उन सब [illegible] वे मुहरें छीन कर आपस में उन का बंटवारा कर लिया. उन की आपस की लूट के समय ही असहाय यशकार धरती पर पड़ा पीड़ा [illegible] चीखताचिल्लाता इस संसार से कूच कर गया.

धूर्ताधिराज पर्वतगुप्त इसी अवस्था की तलाश में था. वह कशमीर की गद्दी [illegible] नहीं यशकार की रानी सुमुखि गौरी को [illegible] हथियाना चाहता था. इस लक्ष्य के लिए उ[illegible] ने सर्वप्रथम संग्रामसिंह से निजात पाने [illegible] निश्चय किया.

एक दिन भरे दरबार में वह अपने स[illegible] पांच सैनिकों सहित जा कर खड़ा हो ग[illegible] सब के देखतेदेखते उस ने संग्राम को [illegible] कर धरती पर गिरा दिया. 15 वर्षीय सं[illegible] चीखाचिल्लाया पर किसी के भी कानों में [illegible] तक नहीं रेंगी.

राजसभा के सदस्य दर्शक बने अ[illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोटपोट होते देखते रहे. पर्वतगुप्त संग्राम को घसीटते हुए और फिर पालकी में बैठा कर वितस्ता के तट पर ले गया. उस ने उस के हाथपैर बांध रखे थे और मुख में कपड़ा ठूंस रखा था. संग्राम की आंखों में याचना थी. जीवन दान की अनुनय थी, पर दुराचारी अप्रभावित रहा. उस ने एक भारी पत्थर संग्राम के पैरों में बांध कर उसे जल समाधि दे दी.

व्याकुल संग्राम को जीवन के लिए छटपटाता देख कर मैं दहल गई. संसार के इतिहास में किसी शासक का ऐसा भयावह अंत भी शायद ही हुआ हो. मेरे अंतर्मन के घावों की टीस के साथ मेरी आकुलता की कोई सीमा नहीं थी.

संग्राम की हत्या कर कुकर्मी पर्वतगुप्त ने राजगद्दी हथिया ली. उस ने यशकार की रानी को अपनी रानी बन जाने की धमकी दे दी. गौरी चरित्रवान ही नहीं चतुर भी थी. अपने पति यशकार का स्मृतिचिह्न 'यशकार स्वामी देवालय' अभी अपूर्ण पड़ा था. उसे पूर्ण कराने हेतु वह बोली, "जिस दिन तुम मेरे पति का देवालय पूर्ण कराओगे, उसी दिन मैं तुम्हें अपना पति स्वीकार कर लूंगी."

पथभ्रष्ट पर्वतगुप्त उस की बातों में आ गया. उस ने तीव्र गति से मंदिर का निर्माण प्रारंभ कराया. इस बीच गुप्त रूप से गौरी पर्वतगुप्त के विरुद्ध जनमानस बनाती रही. मंदिर के शिलान्यास के ही समय सारी जनता के सम्मुख गौरी ने पर्वतगुप्त के घिनौने प्रस्ताव का वर्णन करते हुए कहा, "देशवासियों, आप ही निर्णय लीजिए कि आप के पूर्व सम्राट का हत्यारा और एक विधवा स्त्री के सम्मान को कुत्सित दृष्टि से ताकने वाला यह निकृष्ट प्राणी क्या शासक बने रहने योग्य है?"

"नहीं, कभी नहीं."

कशमीर की जनता अब जाग उठी थी. उन्होंने देवालय से छिप कर भागने का प्रयत्न करते पर्वतगुप्त को पकड़ लिया. 50 वर्षों का दबा हुआ ज्वालामुखी एक ही दिन में फट पड़ा. पत्थरों की मार से ही जनता ने पर्वतगुप्त को मार डाला. जनता का क्रोध शांत हो जाने पर गौरी ने संयत शब्दों में घोषणा की, "पर्वतगुप्त का बेटा क्षेमगुप्त देश का भावी शासक होगा." जनता ने एक स्वर से गौरी के प्रस्ताव का हर्षोल्लास सहित अनुमोदन किया.

मैं यदि उस पल शरीर धारण कर सकती तो इस प्रस्ताव का डट कर विरोध करती. उन्हें ज्ञात ही न था कि क्षेमगुप्त के रूप में वे एक अत्यंत विलासी और अयोग्य शासक का चयन कर रहे हैं. 950 से 958 ईसवी के आठ वर्षों में क्षेमगुप्त के शासन काल का प्रत्येक दिवस अशांति व अव्यवस्था की ही कहानी सुनाता रहा.

इस काल की एक ही महत्त्वपूर्ण घटना थी, क्षेमगुप्त का लोहरवंशीय दिद्दा से विवाह. विवाह के साथ ही राज्य की सारी शक्तियां दिद्दा के हाथों में सिमट गईं. वह उसे 'ताक धिन' की धुन पर इस प्रकार नचाती थी कि लोगों ने अपने सम्राट को

नौ की गुड़िया, 90 का लहंगा

हाल ही में दिल्ली में एक विशेष न्यायालय के न्यायाधीश बी.बी. गुप्त ने एक ऐसे मुकदमे का फैसला सुनाया है, जो 35 वर्ष पहले चार व्यक्तियों पर ठोंका गया था. मात्र 18 हजार रुपए की धोखाधड़ी के आरोप में चले इस लंबे मुकद्दमे पर लगभग एक करोड़ रुपए खर्च हो गए. मगर अभियोजन पक्ष ने इसे वापस नहीं लिया. इस मुकदमे की अवधि में 74 गवाहों में से केवल 12 का परीक्षण हो सका. 16 गवाहों का निधन हो गया. 16 गवाहों का पता नहीं चला और 20 गवाह पेश नहीं किए जा सके. इस मुकद्दमे में चारों व्यक्तियों को आरोप मुक्त घोषित किया गया है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

'दिद्दाखेम' कहना ही प्रारंभ कर दिया.

अपने विलासी, सुरप्रिय पति की उदारता और कमजोरी का दिद्दा ने भरपूर लाभ उठाया. यद्यपि उस में साहस, चातुर्य व ओजस्विता कूटकूट कर भरी हुई थी पर पति की निर्बलता से वह क्रूर और वासनाओं की दास बन गई.

एकएक कर तीन पौत्रों के नाम पर राज्य संचालन कर वह उन तीनों की हत्यारिणी भी बन गई. 980 ईसवी में वह स्वयं शासिका बन बैठी. एक निम्नस्तरीय व्यक्ति तुंग को अपना प्रधान मंत्री नियुक्त कर वह राजमहल में विलास लीला चलाती रही. किंतु प्रशासन की बारीकियों से परिचित होने के कारण राज्य प्रशासन पर उस की पकड़ मजबूत रही.

अपने भतीजे संग्रामराज द्वितीय को [illegible] के लिए बंद कर दिया तो उस का मस्तक तुंग की छाती पर टिका हुआ था. उस के एक हाथ में तुंग की खुरदरी हथेली थी और उस का दूसरा हाथ तुंग की गरदन को लपेटे हुए था.

इस अशोभनीय दृश्य को देखने के बाद स्वयं मेरा सिर शर्म से झुक गया. केवल यह तथ्य बता कर ही मैं मौन हो जाती हूं कि दिद्दा के लोहर वंश के बाद से कश्मीर में सरपट गति से हिंदू शासन का पतन हुआ. दुर्बुद्धि शासकों की बड़ी संख्या से और आशा भी क्या की जा सकती थी?

मैं दुखी हूं, संतप्त हूं, पीड़ा मेरी नसनस को आबद्ध किए हुए है. मेरी केवल एक ही कामना है कि प्रकृति किसी देश को चाहे कुछ न दे, पर अयोग्य शासक तो वह भूल कर भी उत्पन्न न करे... ●

हिंदी

गुलामों
गंवारों
जाहिलों
की भाषा है न?

तभी तो आप

- हिंदी की बोलचाल में और हर वाक्य में दो तीन शब्द अंगरेजी के जरूर रखते हैं. हर दूसरा वाक्य अंगरेजी का बोलते हैं.
- अपने नाम का संक्षिप्तीकरण अंगरेजी अक्षरों में करते हैं बी.पी. शर्मा, एस.एन. वर्मा, के.एम. गुप्ता, आई.एम. दास.....
- अपने सांस्कृतिक, सामाजिक, पारिवारिक और निजी उत्सवों एवं सम्मेलनों के निमंत्रण पत्र अंगरेजी में छपवाते हैं, चाहे आप और आप के आमंत्रित अंगरेजी के चार वाक्य भी सही रूप में न लिख सकें और न समझ सकें.
- अपना निजी पारिवारिक पत्रव्यवहार अंगरेजी में करते हैं.

अंगरेजी साहबों की भाषा है. आप पूरी नहीं बोललिख सकते तो आधीअधूरी ही सही, साहबी कुछ तो दिखाई देगी ही!

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन्हें भी आजमाइए

● खिड़कियों पर चमक लाने के लिए सिरके में कपड़ा भिगो कर रगड़िए. उन में चमक आ जाएगी.

● यदि कपड़े के जूतों का रंग फीका पड़ गया हो तो जूतों पर तारपीन का तेल मलिए, जूतों में चमक आ जाएगी.

● बरतनों में प्याज की बदबू दूर करने के लिए उन्हें नमक मिले पानी से धोएं.

● पुरानी पुस्तकों की धूल को सूखी डबलरोटी के टुकड़े से साफ कीजिए. आप की पुस्तकें एकदम नई दिखाई देंगी.

● यदि प्रेशर कुकर की बाहरी चमक बरकरार रखना चाहते हैं तो इसे बाहर से नीबू व आटे की भूसी या सर्फ व नरम कपड़े से साफ करें. भीतर नीबू के छिलके व पानी डाल कर उबालें, फिर कपड़े व हाथ से रगड़ कर साफ करें.

● ब्रेड को अगर दूध में गीला कर के तला जाए तो इस से तेल भी कम लगता है और ब्रेड भी स्वादिष्ट लगती है.

● अगर फ्रिज में रखे केले काले पड़ गए हों तो उन्हें फेंकिए मत. फ्रीजर में रख दें और अपने बच्चों को पेप्सी कोला की तरह दें तो वे हंसतेहंसते खा जाएंगे.

● रंगरोगन का डब्बा आप के पास हो तो उसे उलटा रखिए, नहीं तो रंग की परत जम जाएगी और रंग खराब हो जाएगा.

● पेंटिंग करने का ब्रुश लंबे समय तक चलेगा, अगर आप उसे उपयोग में लाने से पहले अलसी के तेल में रात भर डुबो दें.

● उबली हुई सब्जियों का पानी तथा चावल का मांड फेंकिए मत, आप उस का खाना बनाने में उपयोग करें. इस से भोजन की पौष्टिकता बढ़ जाती है.

● रोटी बनाने के आटे में जरा सा चावल का आटा मिला दिया जाए तो रोटियां सुंदर और सुपाच्य हो जाती हैं.

● सील वाली जगह, खास कर रसोई में तिलचट्टे (क्राकोच) हो जाते हैं. अतः थोड़ा सा बोरिक पाउडर ले कर उस में जरा सी चीनी, दूध मिला कर रात में कागज पर बिछा दें. इसे कीड़े खा कर मर जाते हैं. सुबह बच्चों के उठने से पहले उन्हें साफ कर दें.

● काफी समय तक प्रयोग न करने से थर्मस में एक खास तरह की दुर्गंध आने लगती है. इसे दूर करने के लिए उस में खट्टी छाछ भर कर साफ करें.

● छोटे बच्चों को कड़वी दवा पिलाने के पहले उन्हें बर्फ चूसने को दें. इस से दवा की कड़वाहट कम हो जाएगी.

● सेब को उबालना हो तो पानी में नीबू की दोतीन बूंदें डाल दें. इस से वह काला नहीं होगा.

● पानतंबाकू खाने वाले लोगों को भोजन के तुरंत बाद दांतों पर नमक रगड़ कर कुल्ले करने चाहिए. इस से उन के दांतों पर दाग नहीं पड़ेंगे.

● लोहे, पीतल के बरतन साफ करने के लिए उन्हें तारपीन के तेल में सनी राख से रगड़ें.

● मधुमक्खी काट ले तो डंक लगे स्थान पर तुरंत प्याज का छिलका घिस कर लगा दें. आराम मिलता है.

● जल जाने पर तुरंत शहद लगा देने से फफोले नहीं पड़ते.

—माया शर्मा ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैप्पी बर्थ डे टू यू

व्यंग्य ● जगतसिंह बिष्ट

जब कोई मुझे अपने बेटे या बेटी के जन्मदिन के अवसर पर आमंत्रित करता है तो मुझे कोई खुशी नहीं होती. इस तरह के निमंत्रण को मैं एक अपरिहार्य किल्लत के रूप में स्वीकार करता हूं. हर महीने पांचसात ऐसे अवसर आ ही जाते हैं. कभी दफ्तर के किसी साथी के घर में, तो कभी महल्लेपड़ोस में सालगिरह का जश्न मनाया जाता है.

यों ही हमारे देश में भांतिभांति के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तीजत्योहारों की लंबी परंपरा है जिन में तरहतरह से पैसे बरबाद करने की सुनहरी संभावनाएं हमें मिलती रहती हैं. दीवाली के मौके पर उल्लू की सवारी करने वाली लक्ष्मीजी की पूजा के बहाने आप को रातरात भर जुआ खेलने की पूरी छूट है. होली के दिन जी भर कर भंग का सेवन कर के आप पड़ोसन के रंग खेलने के बहाने साल भर की दबी कुंठाओं की सार्वजनिक निकासी बेझिझक कर सकते हैं.

मेरा तीन वर्षीय बेटा लगातार ललचाई नजरों से केक को ताकता रहता है और मुझ से पूछता जाता है, "पिताजी, केक कब कटेगा? हमें जल्दी दिला दो न."

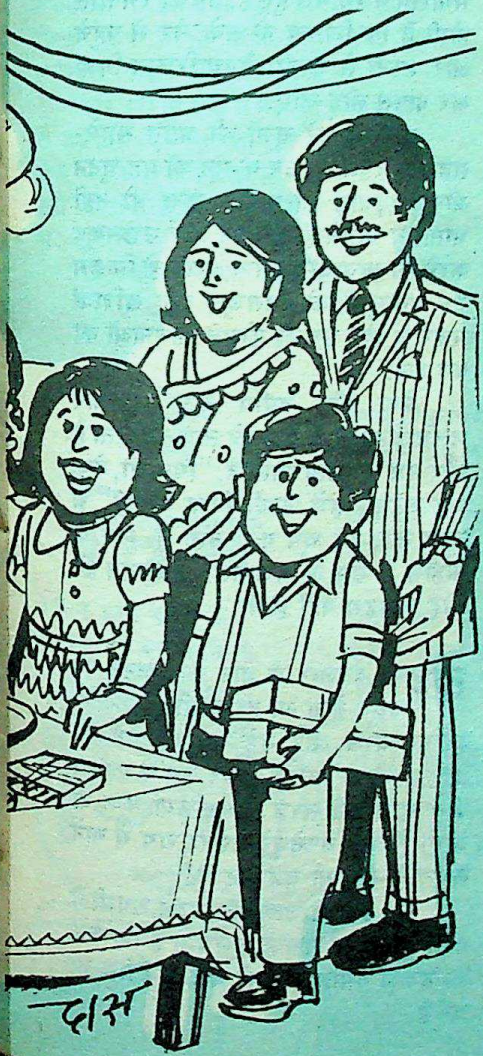

जन्माष्टमी या रामनवमी पर, जो कि क्रमशः श्रीकृष्ण और श्रीराम के हैप्पी बर्थडे हैं, आप उपवास का ढोंग कर के कशमीर के सेब और भुसावल के केले ठूंसठूंस कर खाने के बाद भी धार्मिक होने की सुखद अनुभूति प्राप्त कर सकते हैं. त्योहारों की फेहरिस्त आगे कितनी लंबी है, यह आप सभी जानते होंगे.

इस 'इंपोर्टेड' बर्थडे संस्कृति ने

अंगरेजों ने जातेजाते हमारे लिए अनेक परेशानियां खड़ी कर दीं, उन में से एक परेशानी उन की बर्थ डे संस्कृति भी है. जिस ने मेरी जेब पर ही चपत नहीं लगाई बल्कि मेरी गृहस्थी की छोटीछोटी खुशियां भी हर ली हैं.

बचीखुची कसर भी पूरी कर दी है. इतने ज्यादा खुशी के मौके आ कर मेरा दरवाजा खटखटाने लगे हैं कि इन में मेरी गृहस्थी की खुशियां कहीं खो कर रह गई हैं. ये अंगरेज भी जातेजाते हमारे लिए कई परेशानियां खड़ी कर गए.

बर्थडे संस्कृति को भी अंगरेज हमारे बीच किसी षड्यंत्र के तहत छोड़ गए. हर बर्थडे मेरे बनेबनाए बजट को एक चपत लगा जाता है. मैं यह सोच कर तसल्ली कर लेता हूं कि अपना बजट तो मामूली रूप से बिगड़ रहा है लेकिन जिस बेवकूफ ने (क्षमा चाहूंगा) मुझे आमंत्रित किया है, उस का तो दोतीन महीने के लिए बंटाधार सुनिश्चित है.

मुझे यह देख कर खुशी होती है कि ऐसे मूर्ख बहुतायत में उपलब्ध हैं जो सब कुछ जानतेसमझते हुए भी पैसा, वक्त और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शक्ति फ़ुजूल खर्च यदि हो तो तैयार हो जाते हैं. मैं, ऐन वक्त पर, सजधज कर पहुंच जाता हूं और यह सोच कर उस बेचारे पर तरस खाता हूं कि बेचारा पिछले दोतीन दिनों से जूतियां घिस रहा होगा. अपनी तो सिर्फ शाम बरबाद होती है, उस का दोतीन दिन बाद तक का खुमार 'ग़ारंटीड' होता है.

पिछले कई बरसों से एक गलती मैं करता आ रहा हूं. जो समय मुझे बताया जाता है, ठीक उसी समय पर पहुंचने का गुनाह मैं अकसर करता हूं. तब तक वहां कोई दूसरा बुद्धिमान पहुंचने की गलती नहीं करता. बच्चे के पिताजी अपने लाल को तैयार कर रहे होते हैं और अम्मांजी बाथरूम में नहा रही होती हैं. मेरे मन में खयाल आता है कि अंगरेज, इन भलेमानसों को बर्थडे संस्कृति के साथसाथ 'पंक्चु-ऐलिटी' (समयबद्धता) की सीख क्यों नहीं दे गए?

अपनी गलती पर मैं लगभग एक घंटे तक शर्मिंदा होता रहता हूं. फिर लोग धीरेधीरे आना शुरू करते हैं. ज्यादातर लोग देर से पहुंचने में अपनी शान समझते हैं. मेरा बस चले तो समय दे कर खुद नहाने चले जाने वालों और देर से आ कर सब का समय बरबाद करने वालों पर मुकदमा दायर कर दूं लेकिन यह सोच कर चुप हूं कि इस में भी समय ही बरबाद होगा.

देखतेदेखते उस सुसज्जित घर में इतने सामाजिक प्राणी इकट्ठे हो जाते हैं कि वह घर मुर्गीखाने में परिवर्तित हो जाता है, जिस में पंख फड़फड़ाने को भी जगह नहीं बचती. धीरेधीरे वह मुर्गीखाना एक मिनीबस की शक्ल ले लेता है जिस में भीड़भाड़ का यह आलम होता है कि लोग हर दिशा में मुंह कर के बैठे, अधबैठे, खड़े और अधखड़े रहते हैं.

इतना सब देखने के बाद भी मेजबान को यह अहसास नहीं होता कि उस ने इतने ज्यादा जीव एकत्रित कर के कोई गलती की है. उस की सूरत मुसकराहट से भरी रहती है और निगाहें पधारने वाले मेहमानों के हाथों में पकड़े हुए पैकट को तोलती रहती हैं. यह तो उपहार लाने वाला ही जानता है कि मूल्यों की राजनीति की तरह तोहफे के मूल्य भी कितने दुखदायी होते जा रहे हैं.

माहौल में सब तरफ आडंबर ही आडंबर होता है. सजेधजे मातापिता एकदूसरे से 'हैल्लो हाय' करने की रस्म अदा करते हैं. बर्थडे ब्वाय (या गर्ल) की दीर्घायु की मन से कामना शायद ही कोई करता हो. लगता है, सब लोग किसी मजबूरी में समारोह में शामिल हुए हैं. उन की रणनीति होती है कि जितना हो सके, देर से पहुंचे और जल्दी से जल्दी औपचारिकता निभा कर वापस लौट जाएं.

बच्चे बेचारे चूजों की भांति सहमे-सहमे से रहते हैं. उन के मन को यह घुटन और भीड़भाड़ का माहौल जरा भी नहीं भाता. वे चाहते हैं खुलापन और उछलकूद करने की आजादी. कितना अच्छा हो कि हम उन नन्हेमुन्नों को मिलजुल कर खुशियां मनाने दें और उन की कोमल भावनाओं की कद्र करें.

मेरा तीन वर्षीय बेटा लगातार ललचाई नजरों से केक को ताकता रहता है और मुझ से पूछता जाता है, "पिताजी, केक कब कटेगा? हमें जल्दी दिला दो न?" मैं डपट कर उसे चुप करा देता हूं. वहां के माहौल में उस के जजबात के सम्मान की कोई गुंजाइश नहीं होती.

काफी इंतजार के बाद केक कटने की मधुर बेला आ ही जाती है. केक के इर्दगिर्द बच्चे और बड़े मधुमक्खियों की तरह इकट्ठे हो जाते हैं. फिर उम्र के फालतू बीते सालों की तरह मोमबत्तियां फूंक दी जाती हैं और बच्चेबूढ़े बेसुरी राग में गाने लगते हैं—"हैप्पी बर्थडे टू यू."

मेरे बेटे की उत्सुकता बढ़ने लगती है क्योंकि उसे आभास होने लगता है कि केक का टुकड़ा नसीब होने की घड़ी नजदीक आ गई है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेकिन अभी उस के मासूम दिल को दुखी करने के लिए छोटा सा नाटक शेष होता है.

सर्वप्रथम केक का एक बड़ा टुकड़ा बर्थडे ब्वाय (या गर्ल) के मुंह में डाला जाता है. फिर उस की विशेष रूप से सजीसंवरी माताश्री के मुंह में एक टुकड़ा डाला जाता है, जिसे वह कुशलतापूर्वक लिपस्टिक की रक्षा करते हुए खा लेती हैं. तीसरा टुकड़ा उस के पूज्य पिताजी के लिए होता है जो तंबाकू से सड़े दांतों का सार्वजनिक प्रदर्शन करते हुए उसे खाने का उपक्रम करते हैं. अन्य नजदीकी रिश्तेदारों को भी इसी तरह खिला कर बाकी उपस्थित लोगों की सरेआम खिल्ली उड़ाई जाती है.

इस पूरी प्रक्रिया में मेरा लाड़ला अधीर हो उठता है. एक बार तो तंग आ कर उस ने बीच में ही बाज की तरह झपट कर बर्थडे बेबी के पापा से केक का टुकड़ा छीन लिया था.

खासखास लोगों के फोटो भी इस दौरान खिंचते रहते हैं. पहली फोटो बर्थडे बेबी की केक के साथ. दूसरी मम्मीपापा के साथ. तीसरी दादादादी (या नानानानी) के साथ. चौथी दफ्तर के गंजे हाकिम और उस की तगड़ी बीवी के साथ. पांचवीं भीड़भाड़ के बीच गिद्ध भोजन करते हुए हमारी. खानेपीने के बाद लोग खिसकने लगते हैं. जब सब चले जाते हैं तो मम्मीपापा गिफ्ट पैकेट की सुंदर पन्नियों को नोचने में व्यस्त हो जाते हैं. फिर यह तुलना की जाती है कि फला को हम ने क्या दिया था और उन्होंने हमें क्या लौटाया.

सुबह होतेहोते यह समझ में आ जाता है कि जितना खर्च किया है और जितनी उम्मीद की थी, उस के अनुरूप उपहार नहीं आए. यह भी मालूम पड़ जाता है कि बर्थडे मनाना कितने घाटे का सौदा रहा.

और तब यह निर्णय लिया जाता है कि अगले साल बर्थडे सादे ढंग से मनाएंगे और सिर्फ आसपड़ोस के बच्चों को बुलाएंगे. तथास्तु! आमीन! ●

बच्चों का कोना

ये दिन

ये दिन आगे बढ़ने के,
ये दिन जी भर पढ़ने के.

चित्र बनाओ मेहनत के,
ये दिन ऊंचे चढ़ने के.

याद करे तुम को दुनिया,
ये दिन मंजिल गढ़ने के.

अपने सिर पर चमकीला,
ये दिन सेहरा मढ़ने के.

इतिहासों में अपना नाम,
ये दिन हंस कर जड़ने के.

सुस्ती से औ' आलस से,
ये दिन पलपल लड़ने के.

छुट्टी की छुट्टी कर दो,
ये दिन नहीं अकड़ने के.

—घमंडीलाल अग्रवाल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संचार उपमंत्री को लगाम

हरियाणा ग्रीन ब्रिगेड के नेता और संचार उपमंत्री जयप्रकाश इन दिनों काफी दुखी हैं. कारण संचार राज्य मंत्री डा. संजय सिंह ने उन के टेलीफोन बांटने पर लगाम लगा दी है. इस के जवाब में उन्होंने डा. संजय को हटाने और स्वयं को संचार मंत्री बनाने के लिए उपप्रधान मंत्री देवीलाल पर जोर डालना शुरू कर दिया है.

दिल्ली के कुछ व्यापारियों [illegible] टेलीफोन की जरूरत थी. इस के लि[illegible] उन्होंने संचार उपमंत्री जयप्रकाश [illegible] अभिनंदन करने का रास्ता निकाला. मंच [illegible] उन का जोरदार स्वागत किया गया. इ[illegible] बीच व्यापारियों ने एकएक कर के टेलीफो[illegible] के लिए उन के सामने प्रार्थनापत्र पेश क[illegible] दिए. उपमंत्री महोदय ने तुरंत अप[illegible] हस्ताक्षर कर के करीब दो दर्जन व्यापारि[illegible] को कृतार्थ कर दिया.

इस आयोजन से दोनों तरफ के लो[illegible] प्रसन्न थे, लेकिन जब इन नए टेलीफोनों [illegible] फाइल संजय सिंह के पास पहुंची तो उन्हों[illegible] अपनी स्वीकृति देने से इनकार कर दि[illegible] अब व्यापारी हैं कि मंत्री महोदय [illegible] अभिनंदन भी किया और टेलीफोन भी न[illegible] मिले.

आतंकवादियों के विरुद्ध सिख समुदाय

किस्सा पंजाब के आतंकवादियों द्वा[illegible] राजस्थान नहर का पानी बंद क[illegible] संबंधी धमकी का है. इन उग्रवादियों [illegible] सरकारी कर्मचारियों को राजस्थान के लि[illegible] नहर में पानी न छोड़ने का फरमान [illegible] किया था.

इस धमकी को ले कर राजस्थान [illegible] प्रभावित इलाकों में बेचैनी फैल गई. सरक[illegible] भी चिंतित हुई. स्थिति से निबटने के लि[illegible] राज्य के मुख्य मंत्री भैरोंसिंह शेखावत [illegible] गंगानगर क्षेत्र का दौरा किया. इस क्षेत्र [illegible] बहुसंख्यक सिख आबादी काफी उत्तेजि[illegible] थी. सिख प्रतिनिधियों ने एक साथ मिल [illegible] आश्वासन दिया कि इस से डरने की [illegible] जरूरत नहीं है. इस इलाके की [illegible] बिरादरी इन आतंकवादियों का स[illegible] करेगी और सुरक्षा बलों को केवल ह[illegible] पीछे रखा जाए.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

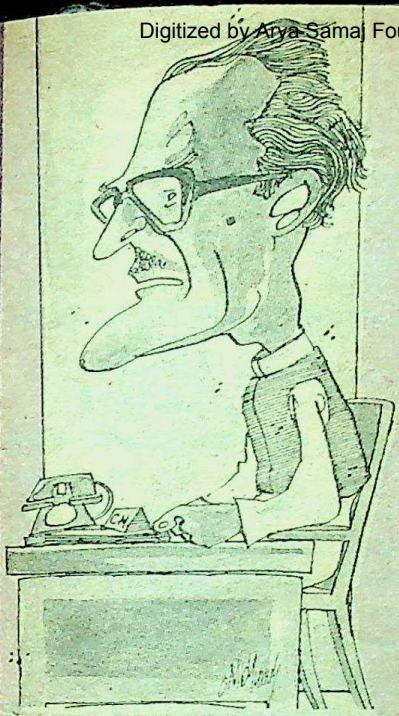

यह चुनौतीपूर्ण संदेश किसी प्रकार आतंकवादियों को भी मिल गया. धमकियों के बाद भी नहर को पानी जारी है और आतंकवादी अपने फरमान को लागू करने के लिए उत्सुक नहीं दिखाई पड़ते हैं. इस से मुख्य मंत्री आश्वस्त हैं.

किस्से राजनीतिक दूल्हादुलहन के

भारतीय जनता पार्टी के जयपुर महा अधिवेशन के अवसर पर नगर में निकाले गए बड़े जुलूस में अलगअलग रथों में सवार भाजपा नेताओं अटलबिहारी वाजपेयी, लालकृष्ण आडवाणी और पार्टी के नए अध्यक्ष डा. मुरलीमनोहर जोशी का रंग, गुलाल और मालाओं से दूल्हों जैसा स्वागत किया गया. अविवाहित वाजपेयी इस स्वागत से काफी विभोर हो गए और वह जनसभा में भाषण करते समय दूल्हा और बरात की बात नहीं भूल सके. उन्हें सरकारी बरात की याद आ ही गई.

अपने भाषण की शुरुआत करते हुए वाजपेयी ने कहा कि आजकल शादीबरात का मौसम है, परंतु इन सब में चंद्रशेखर की सरकारी बरात अपने किस्म की अनोखी है. इस बरात में दूल्हा एक नहीं अनेक हैं, वरन जद (स) के सभी 54 सदस्य दूल्हे हैं जो मंत्रीपद रूपी दुलहन को प्राप्त करने के लिए उचकउचक कर देख रहे हैं परंतु उन्हें अपना रूपरंग दिखाई नहीं पड़ रहा है.

पार्टी की लोकसभा सदस्या एवं गेरुआ वस्त्रधारिणी साधवी उमा भारती इस में पीछे नहीं रहीं. उन्होंने झट से दूसरी कहानी पेश कर दी. ऊंट और ऊंटनी की शादी का आयोजन था. शादी, बरात में संगीत होना ही चाहिए. इस के लिए गधों को मधुर संगीत प्रस्तुत करने के लिए आमंत्रित किया गया. गधों की टोली ने अपने स्वर में दूल्हा और दुलहन के सौंदर्य की प्रशंसा में 'अहो रूपम् अहो रूपम्' के स्वर निकाले. ऊंट और ऊंटनी ने गदगद हो कर उन के संगीत की प्रशंसा की 'अहो ध्वनि, अहो ध्वनि' कह कर जवाब दिया. कु. उमा भारती ने कहा कि ऐसा ही कुछ राग चंद्रशेखर सरकार और उस की समर्थक कांग्रेस के बीच अलापा जा रहा है.

शादी का रंग फीका

हथियारों के अंतर्राष्ट्रीय सौदागर अदनान खगोशी की दिल्ली यात्रा और राजनेताओं के साथ विवादास्पद रात्रिभोज ने उद्योगपति धीरू अंबानी के पुत्र अनिल अंबानी और फिल्म नायिका टीना मुनीम की चर्चित शादी का रंग फीका कर दिया. डा.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जे. के. जैन का रात्रिभोज के बाद भड़के राजनीतिक विवाद से कई दलों के नेताओं और केंद्र सरकार के मंत्रियों ने शादी के स्वागत समारोह में शामिल होने का ही विचार छोड़ दिया.

प्रधान मंत्री चंद्रशेखर और भूतपूर्व प्रधान मंत्री राजीव गांधी सहित कई मंत्रियों को औपचारिक रूप से आमंत्रित किया गया था परंतु इन में से कोई भी शादी में शामिल होने के लिए मुंबई नहीं गया. उन्होंने केवल शादी की शुभकामनाएं भेज कर ही औपचारिकता पूरी कर ली, जबकि आशा यह थी कि बड़ी संख्या में राजनेता शादी के अवसर पर वहां दिखाई देंगे.

नवंबर में जिस समय विश्वनाथ प्रताप सिंह की सरकार का पतन हो रहा था उस समय अंबानी के रिलायंस उद्योग समूह ने काफी रुचि दिखाई थी और चंद्रशेखर सरकार को गद्दीनसीन करने में काफी कुछ मदद की थी. राजधानी के एक शानदार होटल में स्वयं अनिल अंबानी मौजूद थे और जनता दल (स) के अनेक नेताओं का वहां आनाजाना रहता था परंतु आज वही लोग शादी के समय वहां से नदारद थे.

लोगों का अनुमान था कि अनिल अंबानी के शादी समारोह में औद्योगिक घराने की राजनीतिक शक्ति का प्रदर्शन हो सकेगा लेकिन ऐसा कुछ नहीं हुआ. राजनीतिक दृष्टि से एक फीकी शादी हो गई.

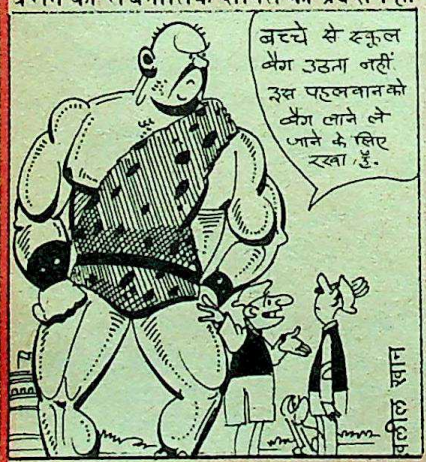

कांग्रेस (इ) के एक पुराने नेता ने कहा कि अंबानी परिवार की यह शादी काफी सीमित ढंग से आयोजित की गई, शायद इसी लिए उन्हें भी कोई आमंत्रण नहीं मिला.

न्यायाधीशों की नियुक्तियां दूध में पानी

दूध से तालाब भरने की कहानी पुरानी है. सभी को एक लोटा दूध तालाब में डालना था. कुछ लोग अधिक चतुर निकले. उन्होंने सोचा कि यदि हम दूध की जगह पानी डाल देंगे तो कोई अंतर नहीं पड़ेगा और कोई जान भी नहीं सकेगा. ऐसा ही कुछ चंडीगढ़ उच्च न्यायालय के न्यायाधीशों की नियुक्ति के बारे में हुआ है.

चंडीगढ़ उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश ने हाल ही में रिक्त स्थानों को भरने के लिए सात नामों की सिफारिश की थी. विधि मंत्रालय में इस सूची में दो नाम और जोड़ दिए गए. प्रधान मंत्री कार्यालय से राष्ट्रपति भवन जातेजाते इस सूची में दो नाम और जुड़ जाने से इन की संख्या 11 हो गई.

इस बीच मुख्य न्यायाधीश को बढ़ती हुई सूची के बारे में पता चल गया. उन्होंने केंद्र सरकार को साफ तौर से लिखा कि केवल सात स्थान रिक्त हैं, उस के लिए उतने ही नामों की सिफारिश मेरे द्वारा की गई है. बाकी चार के लिए रिक्त स्थान अथवा पद नहीं हैं. अतः उन की नियुक्ति नहीं की जा सकती है. मुख्य न्यायाधीश के इस रुख से फाइल और न्यायाधीशों की नियुक्तियां राष्ट्रपति भवन में अटक गई हैं. लोगों को हैरानी है कि उच्च स्तर पर भी दूध में पानी मिलाने का काम किया जा रहा है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चंचल छाया

★★★★ अति उत्तम ★★★ उत्तम ★★ मध्यम ★ साधारण ○ बेकार

★ मेयर साहब

निर्माता: डी. रामानायडू
निर्देशक: सुरेश कृष्ण
संगीत: इलायाराजा
मुख्य कलाकार: कमल हासन, विजयशांति, चरणराज, श्रीविद्या, जयललिता और जानकी.

अब तक जितनी भी राजनीतिक फिल्में बनी हैं, उन में से अधिकतर दक्षिण भारत के निर्मातानिर्देशकों ने ही बनाई हैं. राजनीतिक षड्यंत्रों का परदाफाश करने में ये निर्मातानिर्देशक बिलकुल भी नहीं झिझकते. फिल्म 'मेयर साहब' भी राजनीतिक षड्यंत्र का परदाफाश करती है. मेयर साहब की भूमिका में अभिनेता कमल हासन ने गजब का अभिनय किया है. पर अन्य कमियों के कारण यह प्रभावहीन बन कर रह गई है.

मूलतः तेलगू भाषा की इस फिल्म को हिंदी में डब कर के प्रदर्शित किया गया है, और डबिंग का दोष साफ नजर आता है. इस के अलावा फिल्म के उत्तरार्ध में कुछ फार्मूले ठूंसे गए हैं, जिस से फिल्म में रुकावट पैदा होती है. अगर इन कमियों पर ध्यान दिया जाता तो निस्संदेह यह एक उत्कृष्ट फिल्म बन सकती थी.

फिल्म में रायुडू (कमल हासन) नाम का एक मेयर है जो तमाम भ्रष्ट कार्यों में लिप्त है तथा अपनी पत्नी जानकी (श्रीविद्या) को छोड़ कर अपनी सेक्रेटरी वीना (जयललिता) के प्रेम में फंसा हुआ है. रायुडू वीना के पति को मारना चाहता है, पर खुद मारा जाता है. उधर रायुडू के हमशक्ल एक युवक चंदू (कमल हासन की दूसरी भूमिका) को पैसे का लालच दे कर उस से रायुडू का अभिनय कराया जाता है ताकि एक सौदे पर हस्ताक्षर न हो जाएं.

फिल्म का निर्देशन काफी अच्छा है. धीमी गति की होते हुए भी फिल्म बोर नहीं करती.

हां, बीचबीच में एकाध गीत आ जाने की वजह से फिल्म में व्यवधान जरूर पड़ता है. वैसे इस फिल्म में गीतों की जरूरत ही नहीं थी.

इस फिल्म में कमल हासन ने दोहरी भूमिका निभाई है. अभिनय की दृष्टि से उस ने कोई कमी नहीं आने दी है. इस से पहले भी वह कई फिल्मों में दोहरी और तिहरी भूमिकाएं कर चुका है. 'नायकन', 'पुष्पक' और 'अप्पू राजा' जैसी फिल्मों में वह अपनी प्रतिभा दिखा चुका है. इस फिल्म में नकली टेढ़ेमेढ़े दांत लगा कर तथा तोंद बढ़ा कर उस ने अभिनय के नए आयाम स्थापित किए हैं. 'विजयशांति' खोजी पत्रकार के रूप में नहीं जमी है. चरणराज का काम ठीक है.

अन्य कलाकार साधारण हैं. फिल्म की कमी इस का छायांकन व डबिंग है, जिस के कारण यह हिंदी में प्रबुद्ध दर्शक को भी अच्छी नहीं लगेगी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निर्मात्री : सती शौरी
निर्देशक : अनिल शर्मा
संगीत : भप्पी लाहिरी
मुख्य कलाकार : धर्मेंद्र, विनोद खन्ना, रजनीकांत, जयप्रदा, श्रीदेवी, स्वप्ना, कुलभूषण खरबंदा, सदाशिव अमरापुरकर.

'हुकूमत' से ले कर 'ऐलाने जंग' तक अपनी हर फिल्म में निर्देशक अनिल शर्मा ने आतंकवाद को ही दर्शाया है. उस की नई फिल्म 'फरिश्ते' भी आतंकवाद की पृष्ठभूमि पर लिखी गई है. फिल्म का विषय जरूर पुराना और बासी है. लेकिन लंबेचौड़े सेट लगा कर, भीड़ इकट्ठी कर तथा नामीगिरामी कलाकारों को भर कर फिल्म के स्वरूप को भव्यता प्रदान करने की कोशिश की गई है. इस फिल्म को निर्देशक फिल्म 'शोले' की तरह भव्य बनाना चाहता था परंतु फिल्म 'शोले' का मुकाबला करने में असफल रही है. जिन दर्शकों ने 'शोले' फिल्म देखी होगी, उन्हें याद होगा कि उस फिल्म की पटकथा में जान थी, दर्शकों को बांधे रखने की क्षमता थी. सिर्फ अत्यधिक हिंसा डाल देने या पटाखों की आवाज भरने से ही कोई फिल्म 'शोले' जैसी नहीं बन सकती. 'फरिश्ते' की कहानी पर हिंसा पूरी तरह से हावी हो गई है. फिल्म दर्शकों के सिर के ऊपर से हो कर गुजर जाती है.

फिल्म की कहानी एक आतंकवादी राजा जयचंद (सदाशिव अमरापुरकर) से शुरू होती है जिस का एक बस्ती में आतंक व्याप्त है. वह बस्ती से तिरंगा झंडा उतार कर अपना झंडा फहरा देता है. पुलिस अफसर अर्जुन सिंह (रजनीकांत) राजा जयचंद को चुनौती देता है और उस का झंडा उतार कर तिरंगा झंडा फहरा देता है. राजा जयचंद के आदमी अर्जुन को मार डालते हैं. अर्जुन की पत्नी गायत्री (स्वप्ना) पागल हो जाती है. धीरू (धर्मेंद्र) और वीरू (विनोद खन्ना) सजायाफ्ता हैं और गुंडागर्दी करते

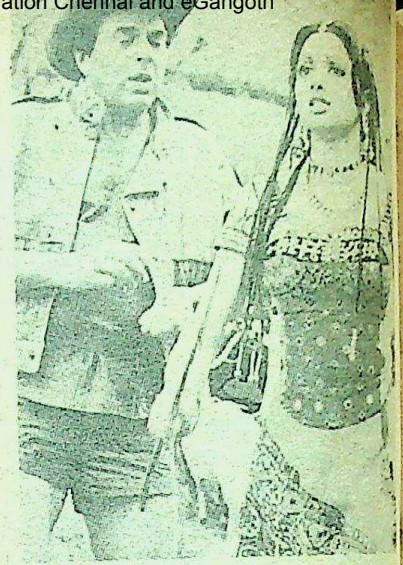

फिल्म 'फरिश्ते' के एक दृश्य में धर्मेंद्र और श्रीदेवी: मारधाड़ और रोमांस.

रहते हैं. राजा जयचंद के आदमियों की नजर उन पर पड़ती है तो वे उन्हें पैसे का लालच दे कर बस्ती में कमांडो बना कर भेजते हैं ताकि वे खुल कर बस्ती वालों पर अत्याचार कर सकें. बस्ती में पहुंच कर धीरू और वीरू को जब राजा जयचंद के अत्याचारों का पता चलता है तो उन का हृदय परिवर्तन हो जाता है. वे अब बस्ती वालों का साथ देते हैं. बस्ती की एक लड़की रसभरी (श्रीदेवी) वीरू से प्रेम करने लगती है. उसी के जरिए वीरू और धीरू को अपनी मुंहबोली बहन और इंस्पेक्टर अर्जुन की पत्नी गायत्री का भी पता चल जाता है. अपनी बहन की दशा देख कर उन का खून खौल उठता है और वे राजा जयचंद को मार कर बस्ती में फैले आतंक को खत्म कर देते हैं.

फिल्म जगहजगह नाटकीयता का शिकार हुई है. शुरू के भाग में धर्मेंद्र और विनोद खन्ना ने जम कर ओवरएक्टिंग की है. धर्मेंद्र ने कई जगह द्विअर्थी संवादों का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रयोग कर फिल्म को सस्ते स्तर का बना दिया है. इस के अलावा कामुक नृत्य तथा अंग प्रदर्शन भी फिल्म के सस्तेपन को दर्शाते हैं.

वैसे फिल्म तकनीकी दृष्टि से अच्छी बनी है. छायाकार ने कैमरे का अच्छा उपयोग किया है. काफी अरसे बाद इस फिल्म में कशमीर दिखाया गया है लेकिन कशमीर की खूबसूरत वादियां नहीं बल्कि ऊंचेऊंचे पहाड़ और पहाड़ों में छिपे आतंकवादियों के अड्डे ही दिखाए गए हैं. ऐसे दृश्य निर्देशक अपनी पिछली फिल्म 'ऐलाने जंग' में भी दिखा चुका है. हो सकता है वही दृश्य कुछ रद्दोबदल के साथ इस फिल्म में दिखा दिए गए हों. फिल्म के गीत आनंद बख्शी ने लिखे हैं पर कोई विशेष प्रभाव नहीं छोड़ते. हां, किसी अन्य का लिखा गीत 'झंडा ऊंचा रहे हमारा' जरूर प्रभावित करता है.

श्रीदेवी ने ग्लैमर पैदा करने की कोशिश की है. जयप्रदा की भूमिका छोटी थी अतः इसे कुछ करने का मौका ही नहीं मिला. सदाशिव अमरापुरकर आतंकवादी कम, एक बैंड मास्टर ज्यादा लगता है. अन्य कलाकार साधारण हैं.

○ दीवाने

निर्माताः इंदरजीत शर्मा और वीना
निर्देशकः चंदर शर्मा
संगीतः उषा खन्ना
मुख्य कलाकार : शेखर सुमन, अनुराधा पटेल, चंदर शर्मा, स्वप्ना, अर्चना पूर्णसिंह, सुप्रिया पाठक, आशीष चानना, काजल किरण और अनुपम खेर.

'दीवाने' कम बजट की एक हलकी-फुलकी फिल्म है, जिस में छात्रों के दो गुटों के टकराव की कहानी है. यह फिल्म तीनचार साल पहले बनी थी लेकिन किसी वजह से प्रदर्शित नहीं हो सकी. फिल्म में जितने भी कलाकार भरे गए हैं, उन में सिर्फ अनुपम खेर को छोड़ कर कोई भी कलाकार अनुभवी नहीं है.

फिल्म की कहानी में कालिज छात्रों के दो दलों का टकराव दिखाया गया है. एक दल है दिनेश (राजन सिप्पी) और उस के चमचों का. दिनेश कालिज का गुंडा है और नशीली दवाएं बेचता है. दूसरा दल है, उमेश (शेखर सुमन) और उस के साथियों का. दिनेश कालिज के प्राध्यापक फारुकी (अनुपम खेर) को भी पिटवा देता है. वह चैरिटी शो के कंपाउंड में बम भी लगा देता है ताकि फारुकी, विनोद (आशीष) तथा उस के साथी मारे जाएं लेकिन उस की योजना असफल कर दी जाती है. दिनेश और उस के साथियों को उन के किए की सजा मिलती है.

पटकथा भी बेहद कमजोर है, निर्देशन तो बेकार है ही. अगर यह कहा जाए कि फिल्म नशीली दवाओं के खिलाफ कोई संदेश देती है तो बेमानी है. बस, एक जगह प्राध्यापक के मुंह से नशीली दवाओं के खिलाफ भाषण दिला दिया गया है.

अभिनय की दृष्टि से अनुपम खेर को छोड़ कर सभी कलाकारों ने निराश किया है. एक लाइन में कहना हो तो कह सकते हैं कि यह फिल्म नौसिखियों की फिल्म है.

○ पत्थर के फूल

निर्माता : जी.पी. सिप्पी
निर्देशक : अनंत बालानी
संगीत : राम लक्ष्मण
मुख्य कलाकार : सलमान खान, रवीना टंडन, किरनकुमार, मनोहर सिंह, रीमा लागू, विनोद मेहरा और गोगा कपूर

प्रेम कहानियों पर हाल ही में जितनी भी फिल्में प्रदर्शित हुई हैं, 'पत्थर के फूल' उन सब से कमजोर फिल्म है. सलमान खान, जिस ने 'मैं ने प्यार किया' में पर्याप्त सफलता प्राप्त की थी, इस फिल्म के जरिए धड़धड़ाता हुआ नीचे आ गिरा है. दर्शकों को इस फिल्म के निर्माता जी.पी. सिप्पी, जिन्होंने कभी 'शोले' फिल्म बनाई थी, से बड़ी आशाएं थीं परंतु उन आशाओं पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

पाना फिर गया है. फिल्म का मुख्य आकर्षण दो गीत हैं जो पहले ही काफी बज चुके हैं. वैसे ये दोनों गीत सुनने में ही ज्यादा मधुर लगते हैं.

सूरज (सलमान खान) और किरन (रवीना टंडन) पहली नजर में ही प्यार कर बैठते हैं. सूरज का पिता विजय वर्मा (विनोद मेहरा) पुलिस अफसर है तो किरन का पिता बलराज खन्ना (मनोहर सिंह) एक तस्करों के गिरोह का मुखिया. विजय वर्मा को जब बलराज खन्ना पर शक होता है तो बलराज खन्ना सूरज के पिता को मरवा देता है. पिता की मृत्यु के बाद सूरज पुलिस में भरती हो जाता है और बलराज खन्ना को बेनकाब करना चाहता है. उस की इस बात से चिढ़ कर किरन उस से नफरत करने लगती है परंतु वास्तविकता पता चलने पर वह सूरज का साथ देती है. बलराज खन्ना का साथी (गोगा कपूर) किरन को अगवा कर लेता है और सूरज को मारने का आदेश दे देता है परंतु सूरज उसे मार कर किरन को छुड़ा लेता है. बलराज खन्ना प्रायश्चित करता है.

प्रेम कहानी होते हुए भी फिल्म में तस्करों की एक और कहानी डाल दी गई है. फिल्म की गति काफी धीमी है, जिस से दर्शकों को बोरियत होने लगती है. फिल्म का निर्देशन कमजोर है. दरअसल पटकथा ही बिखरी हुई है.

फिल्म में कहीं कोई हास्य नहीं है, न ही कोई सेट लगाया गया है. ज्यादातर शूटिंग बाहर ही की गई है. छायाकार ने बारबार क्लोजअप (नायिका के) देने की कोशिश की है. लगता है जैसे वह उस से माडलिंग करा रहा हो. फिल्म के गीत देव कोहली और रवींद्र रावल ने लिखे हैं. सिर्फ दो गीतों में संगीतकार ने मेहनत की है.

अभिनय की दृष्टि से सलमान खान कमजोर रहा है. नायिका रवीना टंडन की यह पहली फिल्म है. देखने में तो वह आकर्षक है परंतु उस के अभिनय में अभी हिचकिचाहट झलकती है. मनोहर सिंह इस बार प्रभावशाली नहीं है.

○ विष्णु देवा

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निर्माता: शाकिर नूरानी और शकील नूरानी
निर्देशक: के. पप्पू
संगीत: राजेश रोशन
मुख्य कलाकार: सनी देओल, आदित्य पंचोली, नीलम, संगीता बिजलानी, डैनी, आलोकनाथ.

फिल्म 'विष्णु देवा' का निर्देशक के. पप्पू एक जानामाना फार्मूला टाइप मारधाड़ निर्देशक है. फिल्म की कहानी बचपन में दो भाइयों के बिछुड़ने तथा एक के अपराधी और दूसरे के पुलिस अफसर बनने की है जो काफी घिसपिट चुकी है.

विष्णु (सनी देओल) और देवा (आदित्य पंचोली) दो भाई हैं. बचपन में शमशेर सिंह (डैनी) उन के पिता को मार डालता है. विष्णु शमशेर सिंह के भाई को मार डालता है. उसे 14 वर्ष की सजा हो जाती है. इसी गम में उस की मां भी मर जाती है. विष्णु के भाई देवा को एक जज पालता है. बड़ा हो कर देवा पुलिस अफसर बनता है. उधर जेल से छूटने पर विष्णु शमशेर की तलाश में लग जाता है. पता लग जाने पर वह उसे हर बार मात देता है. अंत में विष्णु को अपने भाई देवा का पता चल जाता है. दोनों भाई मिल कर शमशेर सिंह को खत्म कर डालते हैं.

फिल्म का निर्देशन सामान्य है, कोई विशेष बात नहीं है. फिल्म का संपादन जरूर अच्छा है, फिल्म में कसाव है, गति है.

फिल्म का छायांकन साधारण है. फिल्म के गीत अनजान ने लिखे हैं. संगीतकार राजेश रोशन ने दोतीन गीतों में जरूर अच्छा संगीत दिया है.

अभिनय की दृष्टि से सनी देओल के अभिनय में पहले से सुधार हुआ है. नीलम फिल्म 'शोले' की बासंती की तरह बोलती है. हालांकि उसे ज्यादा मौका नहीं मिला है, फिर भी वह ठीक है. आदित्य पंचोली तथा अन्य कलाकार साधारण हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वैवाहिक विज्ञापन

वर चाहिए

28 वर्षीया, 152 सें.मी., एम.ए., बी.एड., पासी, रंग साफ, गेहुआं कन्या हेतु शिक्षित व्यवसायी या सरकारी सेवारत वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 423, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गर्ग, बीसा अग्रवाल, सुंदर, 21 वर्षीया, बी.ए., उ.प्र. निवासी, संपन्न व्यावसायिक परिवार की कन्या हेतु सुयोग्य एवं सुशिक्षित वर चाहिए, उत्तम विवाह, पूर्ण विवरण सहित लिखें: वि.नं. 439, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मी क्षत्रिय, संभ्रांत परिवार, सुंदर, स्मार्ट, 26/165, एम.एससी., कंप्यूटर डिप्लोमा, कानवेंट शिक्षित, दिल्ली जायदाद स्वामिनी हेतु उच्च शिक्षित वर चाहिए. जातिबंधन नहीं, शीघ्र विवाह. लिखें: वि.नं. 440, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सिंधी, 23/158,20/157, मैट्रिक, स्मार्ट, सर्वगुण कन्याओं हेतु दहेजविरोधी सिंधी वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 441, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27/155, स्वच्छवर्णा, ग्रेजुएट, घरेलू, आकर्षक, कायस्थ कन्यार्थ सर्विस/व्यवसायरत सेहतमंद वर. पिता पेंशनर, चाचागण उच्चाधिकारी. दहेजमुक्त फौरन सुविवाह. उपजातीय/विधुर/तलाकशुदा भी लिखें: वि.नं. 442, सरिता, नई दिल्ली-110055.

यादव, उत्तरप्रदेशीय, 27½, 164, एम.ए., बी.एड. स्वस्थ, सुंदर, सुशील, गौरवर्ण, गृहकार्यदक्ष कन्यार्थ सुयोग्य, स्वावलंबी वर. शीघ्र साधारण विवाह. सविवरण लिखें: वि.नं. 518, सरिता, नई दिल्ली-110055.

हैहय क्षत्रिय, 30/158, एम.ए., बी.एड., गेहुआं रंग, शिक्षकीय कार्यरत, कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 538, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24/153, बी.ई., इलेक्ट्रानिक्स, सुरुचिपूर्ण व्यक्तित्व, गेहुआं रंग, सुंदर, हैहय क्षत्रिय कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. पूर्ण विवरण. लिखें: वि.नं. 539, सरिता, नई दिल्ली-110055.

21/160 सें.मी., पंजाबी, अग्रवाल, मांगलिक, एम.काम., कानवेंट शिक्षित, सुंदर कन्या हेतु सुयोग्य, व्यवसायरत वर चाहिए. पूर्ण विवरण शीघ्र लिखें: वि.नं. 540, सरिता, नई दिल्ली-110055.

मध्यप्रदेशीय संभ्रांत, कश्यप, रायकवार, ग्रेजुएट, 22/157, कन्यार्थ सजातीय वरीयता, तुराह, धुरिया, सौंधिया वर को, शीघ्र विवाह. लिखें: वि.नं. 541, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अग्रवाल बंसल, 22/152, स्लिम, बी.ए., सुशील, गृहकार्यदक्ष, गेहुआं रंग हेतु सजातीय, आत्मनिर्भर, शिक्षित, दिल्लीवासी वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 542, सरिता, नई दिल्ली-110055.

30 वर्षीया, जादौन राजपूत, निस्संतान, तलाकशुदा, राजकीय सेवारत हेतु 33, 35 वर्षीय, विधुर, तलाकशुदा, सजातीय, सेवारत वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 543, सरिता, नई दिल्ली-110055.

पासी, अनुसूचित जाति, 27, 161, ग्रेजुएट, अविवाहिता, गेहुआं रंग, आकर्षक, गृहकार्यदक्ष, कर्मठ, सुशील, घरेलू कन्यार्थ वास्तविक दहेजविरोधी, कार्यरत वर. जातिबंधन नहीं, शीघ्र विवाह. लिखें: वि.नं. 544, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सोनकर, 26, एम.ए., एम.एड., गोरी कन्या हेतु सेवारत वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 545, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सरयूपारीण ब्राह्मण, 23/150 सें.मी., स्नातक, आकर्षक कन्यार्थ, सुव्यवस्थित वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 546, सरिता, नई दिल्ली-110055.

प्रतिष्ठित समृद्ध, गुप्ता परिवारीय, 27 वर्षीया, सुंदर, सुयोग्य, विधवा (एक लड़का 4 वर्षीय), एम.ए., प्राइवेट कंपनी में फैशन डिजाइनर हेतु उच्च विचार वैश्य योग्य वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 547, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माथुर कायस्थ, 25/157, बी.ए., गेहुआं कन्यार्थ माथुर वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 548, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28, 163, 3,000/-, एम.एससी., बी.एड., आकर्षक, गृहकार्यदक्ष, सुसंस्कृत ब्राह्मण कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 549, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माहेश्वरी संभ्रांत परिवारीय, एम.ए., 23, 155, 'प्रभाकर', घरेलू कुकिंग, टेक्सटाइल में डिप्लोमा, खूबसूरत कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 550, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सुंदर, गोरी, गृहकार्यदक्ष, 26 वर्षीया, पर्सनल मैनेजमेंट में पोस्टग्रेजुएट कर रही श्रीवास्तव कायस्थ, संभ्रांत परिवार की लड़की, शादी के डेढ़ साल बाद विधवा हेतु उदार व्यक्तित्व, सुशिक्षित, अधिकारी पद पर सेवारत वर चाहिए. विधुर, संतान सहित भी स्वीकार्य है. लिखें: वि.नं. 551, सरिता, नई दिल्ली-110055.

शाकाहारी, सरकारी कार्यरत वर, 20 वर्षीया, पर्वतीय आर्य, गोरी कन्या हेतु दहेजहीन, नशाहीन सौम्य. लिखें: वि.नं. 552, सरिता, नई दिल्ली-110055.

प्रतिष्ठित वैश्य (तुरहा), कश्यप गोत्र, बी.काम., प्रथम वर्ष आनर्स, स्वस्थ, सुंदर, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु सजातीय, डाक्टर, इंजीनियर, एकाउंटेंट या पढ़ने वाले विद्यार्थी, उच्चाधिकारी, उच्च श्रेणी व्यवसायी वर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाहिए, जन्मतिथि संपूर्ण विवरण लिखें: वि.नं. 553, सरिता, नई दिल्ली-110055.

पासी कन्या, 24, 160 सें.मी., एम.बी.बी.एस., हेतु डाक्टर, इंजीनियर, सुयोग्य अधिकारी, व्यवसायी, सजातीय वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 554, सरिता, नई दिल्ली-110055.

22 वर्षीया, बी.ए., बी.एड., गौरवर्ण, गृहकार्य निपुण, 163 सें.मी., सुंदर, स्लिम कन्या हेतु आर्मी आफीसर, इंजीनियर, सजातीय शर्मा (बढ़ई) वर चाहिए. भाई इंजीनियर, पिता आर्मी आफीसर. विज्ञापन उत्तम चयन हेतु. लिखें: वि.नं. 555, सरिता, नई दिल्ली-110055.

परिहार राजपूत, 23 वर्षीया, 153 सें.मी., सुंदर, सुशील, सांवली, बी.काम. कन्या हेतु कार्यरत राजपूत वर चाहिए. प्राथमिकता उत्तरप्रदेशीय निवासी. लिखें: वि.नं. 556, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुशवाहा, 29/152, एम.ए., एलएल.बी., सुंदर, स्लिम, गृहकार्यदक्ष कन्यार्थ सुयोग्य वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 557, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26, 150 सें.मी., वार्ष्णेय, गेहुआं, आकर्षक, स्नातक, केंद्रीय सेवारत हेतु सुशिक्षित, सुस्थापित वर चाहिए. जातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 558, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कायस्थ, 27, 155 सें.मी., गेहुआं रंग, एम.एससी., लेक्चरर, 3,000/-, राजस्थान निवासी हेतु सुयोग्य, सुस्थापित वर चाहिए, उपजातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 559, सरिता, नई दिल्ली-110055.

यादव, 22 वर्षीया, 145 सें.मी., एम.एससी., बी.एड., रंग साफ, सुंदर, मधुर स्वभाव, पूर्वी उत्तर प्रदेश के प्रतिष्ठित यादव परिवार की कन्या हेतु इंजीनियर, डाक्टर या उच्च अधिकारी सुयोग्य एवं सजातीय वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 560, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गौड़ ब्राह्मण कन्या, 28/160, एम.ए., बी.एड. हेतु उपयुक्त वर. लिखें: वि.नं. 561, सरिता, नई दिल्ली-110055.

बिहार निवासी, 27 वर्षीया, भट्ट ब्राह्मण, लेडीअसिस्टेंट सर्जन, बिहार में सरकारी सेवारत, गोरी आकर्षक व्यक्तित्व वाली कन्या हेतु मेडिको/इंजीनियर/राजपत्रित कर्मचारी वर की आवश्यकता है. उपजातीयबधन नहीं, बिहार निवासी को प्राथमिकता. लिखें: वि.नं. 562, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28, 155, अग्रवाल एरन, हायर सेकंडरी, सिलाई डिप्लोमा, गुजरात निवासी कन्या हेतु सरकारी कार्यरत, व्यावसायिक सजातीय वर चाहिए. शीघ्र उत्तम विवाह. लिखें: वि.नं. 563, सरिता, नई दिल्ली-110055.

23, 158, कूर्मि क्षत्रिय, एम.एससी., प्रथम श्रेणी कैरियर, बी.एड. अध्ययनरत, गोरी, सुंदर, सुशील, गृहकार्यदक्ष, आकर्षक कन्या हेतु सजातीय, उच्च शिक्षित, राजपत्रित अधिकारी, इंजीनियर, डाक्टर सेवारत वर चाहिए. शीघ्र उत्तम विवाह. पूर्ण विवरण सहित लिखें: वि.नं. 564, सरिता, नई दिल्ली-110055.

23 वर्षीया, कुर्मी क्षत्रिय, एम.एससी., शिक्षिका कन्यार्थ स्वजातीय, आकर्षक, सुस्थापित अधिकारी शासकीय अथवा तत्सम सेवारत वर चाहिए. पूर्ण जानकारी लिखें: वि.नं. 565, सरिता, नई दिल्ली-110055.

152/25, गृहकार्यदक्ष, कश्यप राजपूत (कहार), मैट्रिक, गौरवर्ण, संपन्न परिवार की कन्या हेतु कार्यरत सजातीय वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 566, सरिता, नई दिल्ली-110055.

पांचाल ब्राह्मण (मैथिल), भारद्वाज गोत्रीय, 22/155, गौरवर्ण, सुंदर, एम.एससी., मैरिट, अध्ययनरत, मध्यप्रदेशीय प्रतिष्ठित संपन्न परिवार कन्या हेतु ब्राह्मण, अधिकारी वर चाहिए. उत्तम चयन हेतु जातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 567, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुमांऊनी साह (ठुलधरिया), 22, 152, कानवेंट शिक्षित, ग्रेजुएट, पेरामेडिको कंप्यूटर डिप्लोमा, सुंदर, सौम्य, गृहकार्यदक्ष, गोरी कन्या हेतु डाक्टर, इंजीनियर, सी.ए., उच्च व्यवसायी, राजपत्रित अधिकारी वर चाहिए. शीघ्र एवं उत्तम विवाह. लिखें: वि.नं. 568, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माहेश्वरी, 152 सें.मी., 31 वर्षीया (पति की मृत्यु, बच्चे साथ) हेतु स्वावलंबी, आत्मनिर्भर वर चाहिए. केवल माहेश्वरी. लिखें: वि.नं. 569, सरिता, नई दिल्ली-110055.

यादव, 25 वर्षीया, 152 सें.मी., एम.एससी., प्रथम श्रेणी, कानवेंट पढ़ी हेतु वर. उपजातिबंधन नहीं. प्रथम बार सविवरण कुंडली सहित लिखें: वि.नं. 570, सरिता, नई दिल्ली-110055.

मध्यप्रदेशीय, भोपाल निवासी, प्रतिष्ठित सनाढ्य ब्राह्मण परिवारीय, सुसंस्कृत, गृहकार्यदक्ष, आकर्षक, स्नातकोत्तर कन्या, 25/155, हेतु सजातीय, सुयोग्य, सेवारत/व्यवसाय में सुस्थापित वर के प्रस्ताव आमंत्रित (उपजातिबंधन नहीं), विज्ञापन उत्तम चयन हेतु. लिखें: वि.नं. 571, सरिता, नई दिल्ली-110055.

बिहार निवासी, हरियाणा राजकीय सेवारत, कछवाहा राजपूत, 22 वर्षीया, 168 सें.मी., बी.ए. अंतिम वर्ष, गृहकार्यकुशल कन्या हेतु सजातीय, सरकारी/अर्धसरकारी अधिकारी स्तर का वर चाहिए. बिहार एवं पूर्वीय उत्तरप्रदेशीय को वरीयता. लिखें: वि.नं. 572, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुशवाहा, 27½, 163, एम.एससी., बी.एड., गौरवर्ण, गृहकार्यदक्ष, आकर्षक, राजपत्रिताधिकारी की पुत्री हेतु डाक्टर, इंजीनियर, कार्यरत, व्यवसायी वर चाहिए. सविवरण लिखें: वि.नं. 573, सरिता, नई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चौहान राजपूत, 21, 165 सें.मी., इंजीनियर, गोरी, आकर्षक, स्लिम, स्मार्ट, घरेलू कन्या हेतु वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 574, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कायस्थ, 28/152, सांवली, तीखे नयननक्श, गृहकार्यदक्ष, प्रथम श्रेणी, एम.ए., एल.एल.बी., कन्यार्थ उपयुक्त वर चाहिए, वरीयता अधिवक्ता/प्रवक्ता. लिखें: वि.नं. 575, सरिता, नई दिल्ली-110055.

राजपूत क्षत्रिय, 27, 160, खूबसूरत, सेवारत, कानवेंट शिक्षित, बी.ए., डिप्लोमा सेक्रीटेरियल प्रैक्टिस, आदर्श परिवार से संबंधित, पूर्वी उत्तर-प्रदेशीय, अब कलकत्ता निवासी कन्या हेतु सुयोग्य, सजातीय वर, पिता व्यवसायी. लिखें: वि.नं. 576, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अग्रवाल मित्तल, 24½, 150 सें.मी., बी.एससी., एम.ए., गौरवर्ण, सुंदर, संपन्न, शिक्षित परिवार (पिता वरिष्ठ शासकीय चिकित्सक), मध्य प्रदेश निवासी कन्यार्थ सजातीय वर चाहिए. इंजीनियर, डाक्टर, सी.ए., उच्च व्यवसायी को प्रार्थामकता. लिखें: वि.नं. 577, सरिता, नई दिल्ली-110055.

23/155, ब्राह्मण, बैंक कर्मचारी, गोरी, सुंदर, एक कान से थोड़ा ऊंचा सुनती है, हेतु योग्य वर चाहिए. दिल्लीवासी को प्रार्थामिकता. लिखें: वि.नं. 578, सरिता, नई दिल्ली-110055.

यादव, 31, 152, ग्रेजुएट, गोरी, घरेलू, कानपुरवासी कन्या हेतु सुयोग्य, सेवारत वर चाहिए. दहेजरहित साधारण विवाह. लिखें: वि.नं. 579, सरिता, नई दिल्ली-110055.

31 वर्षीया, बी.ए., बी.एड., तलाकशुदा, बंगाली कायस्थ, कानवेंट टीचर हेतु कानूनन विवाह योग्य व्यक्ति. अभिभावक से स्वयं पत्राचार करें, कोई बंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 580, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सिंघल (वैश्य), गृहकार्यदक्ष, प्रतिष्ठित परिवार, उत्तर प्रदेश, सुंदर, आकर्षक, एम.ए. अंगरेजी अध्ययनरत, 21/154/42 हेतु उत्तम व्यापारी, सरकारी कर्मचारी वर. उत्तम विवाह. लिखें: वि.नं. 581, सरिता, नई दिल्ली-110055.

21½ वर्षीया, 162 सें.मी., गोरी, सुंदर, अ.जा., एम.बी.बी.एस. अंतिम वर्ष कन्या हेतु प्रथम वर्ग अधिकारी वर चाहिए. उ.प्र. अहिरवार संभ्रांत परिवार के पोस्ट ग्रेजुएट डाक्टर को प्रार्थमिकता. लिखें: वि.नं. 582, सरिता, नई दिल्ली-110055.

ब्राह्मण, एम.ए., शिक्षारत, सुशील, गौरवर्ण, 19 वर्षीया, सुंदर कन्या हेतु सुशिक्षित वर चाहिए. दहेजप्रेमी क्षमा करें. लिखें: वि.नं. 583, सरिता, नई दिल्ली-110055.

यादव, 25, 154, ग्रेजुएट, व्यावसायिक योग्यता [illegible], गोरी, स्मार्ट, घरेलू कन्या हेतु सुयोग्य सेवारत वर चाहिए. जाति, दहेजबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 584, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कायस्थ, 26 एवं 25 वर्षीया, टेक्सटाइल मैनेजमेंट में ग्रेजुएट एवं ग्रेजुएट व्यावसायिक योग्यता क्रमशः, सेवारत, मध्यम बनावट, बंबई में जन्मी एवं शिक्षित, पिता केंद्रीय सरकार प्रथम श्रेणी अधिकारी, आदर्श परिवारीय कन्याओं हेतु योग्यता प्राप्त स्वस्थ, सुयोग्य वर चाहिए. जातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 585, सरिता, नई दिल्ली-110055.

पंजाबी कश्यप राजपूत (मेहरा), 24/154, गेहुआं, साफ रंग, सुशील, एम.ए., बी.एड. कन्यार्थ सुयोग्य वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 586, सरिता, नई दिल्ली-110055.

साहूवैश्य, 23/160, एम.ए., बी.एड., सुंदर, आकर्षक, गौरवर्ण, पतली, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. हाथों और पैरों में कुछ सफेद दाग (अंगुलियों पर नहीं), सफेद दाग वालों को वरीयता. जातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 587, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कश्यप, राजपूत, मल्लाह, कहार, धीवर, 22/160, सुंदर, स्नातक, दिल्लीवासी, गवर्नमेंट स्टेनोग्राफर एवं गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु सुंदर, सरकारी सेवारत या व्यवसायी वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 588, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26, 157 सें.मी., सुंदर, बनिया, दिल्लीवासी कन्यार्थ वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 589, सरिता, नई दिल्ली-110055.

प्रतिष्ठित एवं सुशिक्षित, दिल्ली, माहेश्वरी परिवारीय, अत्यंत सुंदर, गौरवर्ण, स्लिम, 22/160, प्रतिभाशाली, पोस्ट ग्रेजुएट, बहुराष्ट्रीय बैंक में असिस्टेंट मैनेजर नियुक्त कन्यार्थ सुयोग्य वर. लिखें: वि.नं. 590, सरिता, नई दिल्ली-110055.

वधू चाहिए

गुजराती जैन, इंजीनियर, 27/165 सें.मी., मध्य प्रदेश कार्यरत हेतु सुंदर, सुशील, गृहकार्य में निपुण, स्नातक वधू चाहिए. शीघ्र लिखें: वि.नं. 488, सरिता, नई दिल्ली-110055.

बीसा अग्रवाल, बिहार निवासी, मंगल गोत्र, प्रतिष्ठित परिवार, 26, 170, स्मार्ट, बी.काम., सुव्यवस्थित, निजी व्यवसाय, मकान, वाहन, आय पांच अंकीय, युवक हेतु सुंदर, सुशिक्षित वधू चाहिए. विज्ञापन उत्तम चयनार्थ. लिखें: वि.नं. 489, सरिता, नई दिल्ली-110055.

मध्य प्रदेश निवासी, उच्च शिक्षित, सुसंपन्न, महाराष्ट्रियन हटकर मराठा परिवार के गौरवर्ण, स्मार्ट, एम.बी.बी.एस. युवक, मेडिकल आफिसर, 28 वर्षीय, 165 सें.मी. हेतु सुयोग्य वधू चाहिए. कोई बंधन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं. लिखें: वि.नं. 490, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मि क्षत्रिय, केंद्रीय प्रतिष्ठान इंजीनियर, 27/178/7,000/- हेतु सुशिक्षित वधू. लिखें: वि.नं. 491, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अग्रवाल (कंसल), 26/157/4000/-, बी.एससी., बंगलौर स्थित युवक हेतु गोरी, सुंदर, सुयोग्य कन्या चाहिए. लिखें: वि.नं. 492, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26/167/2,000/-, खोरवाल, दिल्ली प्रशासन, कार्यरत युवक हेतु सुंदर, सुयोग्य, कार्यरत, दहेज-रहित वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 493, सरिता, नई दिल्ली-110055.

33, 180 सें.मी., गैर जट सिख (पगड़ीधारी), राष्ट्रीयकृत बैंक सेवारत, सेक्सुअल कमजोरी महसूस करते युवक हेतु समान वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 494, सरिता, नई दिल्ली-110055.

33/180, उच्च शिक्षित, आकर्षक, ब्राह्मणार्थ, सुकार्य नियोजक/घरदामादेच्छु परिवारी पतली सुवधू. लिखें: वि.नं. 498, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जट सिख (क्लीन सेवन), 28, 167 सें.मी., 2,750/-, जूनियर इंजीनियर, (रक्षा) सेवारत युवक हेतु वधू, प्राथमिकता मिलिट्री नर्स, बंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 499, सरिता, नई दिल्ली-110055.

धानुक, बिहार निवासी, 25/175/3,000/-, गोरा, स्मार्ट, कार्यरत, विद्युत अभियंतार्थ स्नातक, सुंदर, सुशील, गृहकार्यदक्ष सजातीय कन्या चाहिए. लिखें: वि.नं. 500, सरिता, नई दिल्ली-110055.

30, (लखनऊ), सरकारी सेवारत, लिपिक, घरजंवाई बनना चाहता है, धर्म पूछने वाले न लिखें. लिखें: वि.नं. 501, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सिंधी, मांगलिक, 25/170 सें.मी., एम.क्रम., फिल्म प्रतिष्ठित व्यवसायी हेतु सजातीय, सुयोग्य वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 591, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माहेश्वरी, 27½, 169 सें.मी., बी.ई. (सिविल), पी.डब्लू.डी. कार्यरत युवक हेतु सुशिक्षित, सुंदर, माहेश्वरी/अग्रवाल/जैन वधू चाहिए. शीघ्र विवाह. लिखें: वि.नं. 592, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27 वर्षीय, 168 सें.मी., सरकारी पदाधिकारी, संपन्न परिवार हेतु सुंदर, सुशील, सुशिक्षित, संभ्रांत परिवारीय कन्या चाहिए. जातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 593, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25/170/2,500/- अरोड़ा, बैंक कार्यरत, सहारनपुर निवासी युवक हेतु वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 594, सरिता, नई दिल्ली-110055.

30/155/2,800/-, दृष्टिहीन, एम.ए., बी.एड. (संस्कृत), टी.जी.टी., सरकारी अध्यापक हेतु शिक्षित, घरलू, नेत्रवान, सुयोग्य वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 595, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सिंधी, 31 वर्षीय, बी.ए., सरकारी सेवारत, तलाकशुदा विकलांग (पोलियो दाहिनी टांग से छोटी), युवक हेतु स्वस्थ वधू चाहिए. जाति एवं दहेजबंधन नहीं. मासिक आय 2,000/-. लिखें: वि.नं. 596, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माहेश्वरी, 26/165, बी.क्रम., स्मार्ट, सिलिगुड़ी में निजी व्यवसाय, मकान, अच्छी आय, हेतु सुशिक्षित, गृहकार्यदक्ष, सुंदर वधू चाहिए, शीघ्र विवाह. लिखें: वि.नं. 597, सरिता, नई दिल्ली-110055.

37 वर्षीय, अविवाहित, गौड़ ब्राह्मण, गाजियाबाद में निजी मकान, हेतु वधू चाहिए. निस्संतान विधवा, तलाकशुदा भी विचारणीय, दहेज नहीं, शीघ्र विवाह. लिखें: वि.नं. 598, सरिता, नई दिल्ली-110055.

खटीक, इंजीनियर (इलेक्ट्रोनिक्स), 24/178, तलाकशुदा हेतु वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 599, सरिता, नई दिल्ली-110055.

बौद्धधर्मीय, विधुर, 39/163/3,700/-, दो संतान (10-6), गजेटेड आफिसर हेतु वधू चाहिए. जातिबंधन नहीं. विधवा, तलाकशुदा स्वीकार्य. लिखें: वि.नं. 600, सरिता, नई दिल्ली-110055.

धीमान, गुरसिख, 28, 172, 4,000/-, तीन महीने बाद तलाक, निजी व्यवसाय, मुरादाबाद, युवक हेतु गृहकार्यदक्ष वधू चाहिए. विवाह दहेज रहित, जातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 601, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अग्रवाल गोयल, 22 ½, 179 सें.मी., एम.ए. अंगरेजी अध्ययनरत, स्मार्ट, सुंदर, परिवारीय, इकलौता पुत्र, मासिक आय 15,000/-, निजी कोठी, प्रतिष्ठित परिवारीय, सुंदर, लंबी, गोरी, सुशील, शिक्षित कन्या चाहिए. विज्ञापन उत्तम चयनार्थ. लिखें: वि.नं. 602, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माहेश्वरी, एम.क्रम., 29, 170 सें.मी., स्मार्ट, इलेक्ट्रोनिक्स व्यवसायी हेतु वधू चाहिए, कुंडली सहित, लिखें: वि.नं. 603, सरिता, नई दिल्ली-110055.

नौसेना, 2,000/-/24/171, हेतु कुमाऊंनी अंगरेजी/हिंदी भाषी, 165-170 सें.मी., 12वीं/अधिक शिक्षित, अति सुंदर वधू चाहिए. जाति दहेजबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 604, सरिता, नई दिल्ली-110055.

तेली (साहू), 25, 170, इंटरमीडिएट, स्मार्ट, गवर्नमेंट रजिस्टर्ड कांट्रेक्टर, मासिक आय पांच अंकों में, निजी मकान, मारुती कार, परिवार में केवल चार (चार बहनें एम.ए., बड़ा भाई एक्जीक्यूटिव इंजीनियर, सभी शादीशुदा) हेतु शिक्षित, संपन्न, स्वजातीय, सुंदर, लंबी कन्या चाहिए. लिखें: वि.नं. 605, सरिता, नई दिल्ली-110055.

इंदौर निवासी, कान्यकुब्ज ब्राह्मण, सुवर्ण,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिल्ली-110055.

38/173, गुरसिख, इंजीनियर क्लास-1, केंद्रीय सेवारत, जयपुर हेतु मेडिको, आर्किटेक्ट वधू. लिखें: वि.नं. 647, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25. 175, बी.एससी., पंजाबी सचदेवा, मांगलिक, सुशील, इकहरा, कपड़ा व्यवसायी युवक हेतु सुशील, सुशिक्षित, सहृदय, मांगलिक, इकहरी वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 648, सरिता, नई दिल्ली-110055.

163, 1,800/-, 28 वर्षीय, 8 चश्माधारी, दुबलापतला, नेपाल के साधारण परिवार हेतु जीवनसाथी चाहिए. असहाय भी सोचसमझ कर पत्र लिखें: वि.नं. 649, सरिता, नई दिल्ली-110055.

30, 165 सें.मी., बीसा अग्रवाल (गोयल), बी.काम., देहली निवासी, व्यावसायिक, सुंदर, आकर्षक, मासिक आय पांच अंकीय युवक हेतु सजातीय, ग्रेजुएट, सुंदर, गृहकार्यदक्ष वधू चाहिए. दहेज नहीं. लिखें: वि.नं. 650, सरिता, नई दिल्ली-110055.

शाकाहारी, सदाचारी, सुनियोजित परिवार संचालन के लिए उत्तर बिहारवासी, उच्च वेतनभोगी, स्वस्थ, ब्राह्मण, विधुर को सुशिक्षित, व्यवहार-कुशल, लगभग पचास वर्षीया गृहलक्ष्मी चाहिए. सविस्तार लिखें: वि.नं. 651, सरिता, नई दिल्ली-110055.

नेत्रहीन, राजस्थानी ब्राह्मण, 25/170/2,500/-, बी.ए., एस.बी.आई. लखनऊ में स्टेनोग्राफर हेतु शिक्षित, गृहकार्यदक्ष, घरेलू कन्या चाहिए. जाति, धर्मबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 652, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सनाढ्य ब्राह्मण, (पश्चिम उ.प्र. निवासी), 25/170/3,500/-, डेसू इंसपेक्टर हेतु सुंदर, गोरी, लंबी वधू चाहिए. स्थानीय कार्यरत को वरीयता. लिखें: वि.नं. 653, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25 वर्षीय, 172 सें.मी., सुंदर, मे.ई. अंतिम वर्ष हेतु सुंदर, सुशील, गोरी, ग्रेजुएट कन्या चाहिए. अ.जा., उ.प्र. निवासी, अहिरवार, संभ्रांत परिवार को प्राथमिकता. लिखें: वि.नं. 654, सरिता, नई दिल्ली-110055.

35, पोस्ट ग्रेजुएट, राजपूत, बैंक सेवारत हेतु वधू चाहिए, जातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 655, सरिता, नई दिल्ली-110055.

विधुर, 180 सें.मी., 35 वर्षीय, मंगल गोत्र, पोस्ट ग्रेजुएट, रंग गेहुआं, आकर्षक, स्मार्ट, व्यापारी, मासिक आय 4 अंकों में, साथ में 6½ वर्षीय पुत्र 1, विधवा, तलाकशुदा भी विचारणीय. लिखें: वि.नं. 656, सरिता, नई दिल्ली-110055.

40 वर्षीय, स्मार्ट, आकर्षक युवक हेतु प्रगतिशील विचारों वाली वधू चाहिए. सेवारत वरीयता. धर्म, जाति व दहेजबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 657, सरिता, नई दिल्ली-110055.

देहली डिग्री, अविवाहित कुंआरा, 38, 170, केंद्रीय सेवारत, द्वितीय श्रेणी राजपत्रित अधिकारी हेतु सुंदर वधू चाहिए. जाति, दहेजबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 658, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कश्यप राजपूत, मल्लाह, कहार, धीवर, 26/168, सुंदर, कमीशन एजेंसी, अपना व्यवसाय, मासिक आय 5,000/- और अधिक, दिल्लीवासी हेतु सुशिक्षित, सुंदर, गृहकार्यदक्ष वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 659, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गुप्ता (अयोध्यावासी वैश्य), 27, 175 सें.मी., स्टेट बैंक सेवारत हेतु योग्य एवं सुंदर वधू चाहिए. संपूर्ण विवरण सहित लिखें: वि.नं. 660, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अग्रवाल गोत्र मंगल, 24, 160, हायर सेकंड्री, साड़ी व्यापारी, संयुक्त परिवारीय, आकर्षक व्यक्तित्व, सुंदर युवक हेतु अति सुंदर, शिक्षित, गृहकार्यदक्ष कन्या चाहिए. लिखें: वि.नं. 661, सरिता, नई दिल्ली-110055.

वरवधू चाहिए

स्वर्णकार, 27, 157, गेहुआं, सुंदर, एम.ए., बी.एड. कन्या हेतु सेवारत या व्यवसायी वर एवं 36, 33, कार्यरत, शिक्षित युवकों हेतु सुशिक्षित, परिवारीय वधू. आर्य परिवार, जातिबंधन मुक्त. लिखें: वि.नं. 662, सरिता, नई दिल्ली-110055.

राजपूत भाई, 27, 1,800/-, कैमिस्ट, सरकारी सेवारत, बहन एम.ए., सांवली, मध्यम कद, आकर्षक हेतु वरवधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 663, सरिता, नई दिल्ली-110055.

बैंक, पी.ओ., स्नातकोत्तर (गणित), टाण्टा आर्य गोरे युवक, 165/26/3,500/-, हेतु वधू तथा बी.एससी., डिप्लोमा सिलाईकढ़ाई, गोरी कन्या 150/22 हेतु सुयोग्य वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 664, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कायस्थ (व. बिहारवासी), 27/152 सें.मी., एम.ए., सांवली कन्या हेतु वर एवं 34/165 सें.मी., केंद्रीय सेवा, 3,000/-, स्मार्ट भाई हेतु कन्या चाहिए. लिखें: वि.नं. 665, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कान्यकुब्ज ब्राह्मण, जूनियर इंजीनियर, 27/177/3,500/-, हेतु सुशील, पतली, लंबी, कम से कम स्नातक या जूनियर इंजीनियर वधू चाहिए. एम.ए., बी.एड., 23/168, गेहुआं, पब्लिक स्कूल नियुक्त पुत्री हेतु सुस्थापित लंबा वर चाहिए. इंजीनियर परिवार, पिता संयुक्त निदेशक. लिखें: वि.नं. 666, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सरयूपारीण प्रतिष्ठित ब्राह्मण, अमरीका निवासी परिवार के बाह्य एवं आंतरिक गुणों व सौंदर्य से परिपूर्ण, भारत स्थित कन्याओं 26, 24, 20 वर्षीया हेतु सजातीय, दहेजविरोधी, सुयोग्य, आत्मनिर्भर वर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व दहेजावरोधी सावधपूर्ण, पी.एच.डी. वैज्ञानिक हेतु कन्या (हाईस्कूल विज्ञान) अवश्यमेव हैं, वेद सनातन सनातन आदर्शों को प्राथमिकता. लिखें: Dr. Pandey 102, MAPLE ST. LEXINGTON MA 02173 U.S.A.

गोद विज्ञापन

स्वस्थ, सांवला, 8 वर्षीय, क्षत्रिय लड़का गोद देना है. 10,000/- अर्थिक मदद करने वाले लिखें: वि.नं. 667, सरिता, नई दिल्ली-110055.

मेडिकल

प्लास्टिक/कासमेटिक शल्य चिकित्सा व चेहरे के गड्ढे, चेचक दागों को सूई द्वारा स्थायी भरना/ अत्यधिक चर्बी सक्शन द्वारा निकालना. केंद्र-11-ए/6, पुराना राजेंद्र नगर, नई दिल्ली. दूरभाष : 585802.

अमरीका प्रशिक्षित कासमेटिक सर्जन द्वारा संचालित कासमेटिक सर्जरी सेंटर, एफ-12, ईस्ट ओक कैलाश, नई दिल्ली. दूरभाष: 6444588.

व्यवसाय

अमरीकन ज्ञान पर अपना नाम, पता, 1,000 उत्तम क्वालिटी गोंद लगे लेबिल छपवा सकते हैं, जिन के चारों ओर सुनहरे बार्डर, शुल्क रु. 60/-, वी.पी.पी. द्वारा (डाक खर्च अलग), कुलदीप सिंह, 32, वी मार्ग, अमृतसर-143017.

हर जगह पायोनियर स्लिप के आर्डर हेतु एजेंट चाहिए. लिखें: वि.नं. 670, सरिता, नई दिल्ली-110055.

स्वतंत्र लेखन

लेखकोपयोगी साहित्य मंगाइए. सैन्नी अशेष, पांवटा साहिब (हिमाचल प्रदेश)-173 025.

लेखकोपयोगी साहित्य मुफ्त मंगाएं. तारिका प्रकाशन, अंबाला छावनी (हरियाणा).

विज्ञापनदाताओं के लिए सूचना

1. सरिता में वैवाहिक व गोद विज्ञापनों की दर 5.00 रु. प्रति शब्द है. अंगरेजी पाक्षिक वूमंस ईरा में 3.50 रु. प्रति शब्द. यदि सरिता के साथसाथ वही विज्ञापन वमूंस ईरा में भी प्रकाशित कराया जाए तो उस के लिए केवल 1.50 रु. अतिरिक्त यानी 7.00 रु. प्रति शब्द होगा.

अन्य व्यक्तिगत व व्यावसायिक विज्ञापनों की दर सरिता में 9.00 रु. प्रति शब्द है तथा वूमंस ईरा में 5.00 रु. प्रति शब्द. यदि सरिता के साथसाथ वही विज्ञापन वूमंस ईरा में भी प्रकाशित कराया जाए तो उस के लिए केवल 2.00 रु. अतिरिक्त यानी 11.50 रु. प्रति शब्द होगा.

विशेष छूट : यदि एक ही विज्ञापन दो लगातार अंकों में प्रकाशित कराया जाए तो तीसरे अंक में विज्ञापन मुफ्त में छपेगा. केवल 20 रु. डाक व्यय के अतिरिक्त देने होंगे, यानी डाक खर्च कुल 60 रु. एवं पंजीकृत डाक व्यय रु. 150/- होगा.

धनराशि अग्रिम आने पर ही विज्ञापन प्रकाशित किया जा सकेगा.

2. मूल विज्ञापन के साथ लिखें : "वि.नं. सरिता, नई दिल्ली-110055." इन 6 शब्दों का मूल्य आवश्यक है. "फोटो सहित" शब्द वाले व विज्ञापनदाता के निजी पते वाले विज्ञापन स्वीकार नहीं किए जाते. पर विदेशों में पत्रव्यवहार करने वाले विज्ञापनों में निजी पते छापे जाते हैं ताकि पत्रव्यवहार तुरंत हो सके. इन में बाक्स नं. की सुविधा उपलब्ध नहीं है.

मुख्य व्यक्तिगत विज्ञापन कार्यालय :

सरिता, एम 12, कनाट सरकस, नई दिल्ली-110001.

* 79-ए, मित्तल चैंबर्स, नरीमन पाइंट, **बंबई**-400021. फोन : 2022409.
* 14, पहली मंजिल, सीसंस कंप्लैक्स, 150/82, मांटियथ रोड, **मद्रास**-600008. फोन : 868138.
* तीसरी मंजिल, पोद्दार पाइंट, 113, पार्क स्ट्रीट, **कलकत्ता**-700016. फोन : 298981.
* 302-बी, 'ए' विंग, क्वींस कार्नर अपार्टमेंट, 3, क्वींस रोड, **बंगलौर**-560001. फोन : 258091.
* 503, नारायण चैंबर्स, आश्रम रोड, **अहमदाबाद**-380009. फोन : 77845.
* 122, चिनाए ट्रेड सेंटर, 116, पार्क लेन, **सिकंदराबाद**-500003. फोन : 831576.
* 111, आशियाना टावर, प्रदर्शनी रोड, **पटना**-800001. फोन : 55286.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

CLARION/BZP/32/173 HIN

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसीलिए मैं उन्हें नियमित रूप से झंडु स्पेशल च्यवनप्राश देती हूँ. सचमुच यह स्पेशल है. शुद्ध हरा आँवला, पीपली, वंशसालोचन, कुंडकोल, लौंग, जावंत्री, इलायची और अकलकरा जैसी जड़ी-बूटियाँ. सब को शुद्ध देसी घी में बनाया गया है. मेरा बाज़ार का आना-जाना तो रोज़ ही लगा रहता है, मैं जानती हूँ कि अच्छी और उम्दा दर्जे की चीज़ें हमेशा कुछ महँगी ही मिलती हैं. फिर, जब क्वालिटी की बात हो तो हर कोई झंडु को जानता है और उस पर भरोसा करता है.

मैं, अपने बच्चों को झंडु स्पेशल च्यवनप्राश बारहों महीने देती हूँ. इसीलिए उनमें छोटी-मोटी बीमारियों का मुक़ाबला करने की शक्ति आ गई है. ख़ास तौर से खाँसी और जुकाम.

हाँ, थोड़ी सी परेशानी मुझे ज़रूर है. इसमें मिले तत्त्व इतने ताज़ा और शुद्ध हैं कि इसका स्वाद भी कमाल है. बच्चों का बस चले तो वे इसे दिनभर खाते रहें. हर दो-चार दिन बाद मुझे बोतल कहीं दूसरी जगह छिपाकर रखनी पड़ती है. क़ीमती है न!"

"बच्चों की पढ़ाई या सेहत का मामला हो तो मैं समझौता कभी नहीं करती..."

क़ीमती ही सही

झंडु स्पेशल च्यवनप्राश.

असली च्यवनप्राश

अब १ किलो के आकर्षक पॉलीजार में भी उपलब्ध.

CLARION/BZP/32/173 HIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

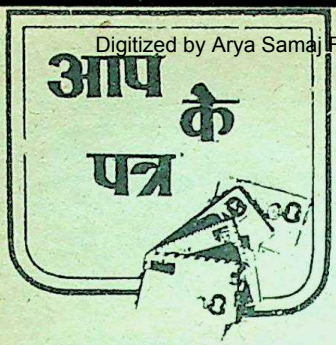

सरित प्रवाह/फरवरी/द्वितीय

खाड़ी युद्ध पर संपादकीय विचार और इसी विषय पर प्रकाशित दो लेख पढ़े. इन में विभिन्न दृष्टिकोणों से द्वितीय विश्व युद्ध के बाद की सब से भयंकर घटना पर प्रकाश डाला गया है. पर भारत पर इस से होने वाले प्रभाव पर गंभीरता से विचार नहीं किया गया है.

तेल की बढ़ती कीमतें, मध्य पश्चिम एशिया में काम करने वाले लाखों भारतीयों का वापस आना व उस से होने वाली विदेशी मुद्रा की हानि और उन देशों को किए जाने वाले निर्यात से होने वाली आय की हानि से तो सभी परिचित हैं परंतु सब से बड़ी बात जो भारत के हित में नहीं है, वह है मुसलमानों, विशेषकर भारतीय मुसलमानों का धर्मांध होना. विश्व के सभी देशों के मुसलमान चाहे वे अमरीका या इंगलैंड के हों, चाहे भारत या पाकिस्तान के, सभी इराकी राष्ट्रपति सद्दाम हुसैन के समर्थक हैं. इस संबंध में जो जिहाद का नारा लगा है, वह भारत के हित में नहीं है. स्मरण रहे कि 1921 के खिलाफत आंदोलन के बाद जो देशव्यापी दंगे हुए थे, वे भी इसी कारण से हुए थे.

भारतीय नेताओं से यह अनुरोध है कि वे 'वोटों की राजनीति' छोड़ कर खाड़ी युद्ध के संबंध में एक राष्ट्रीय नीति निर्धारित करें ताकि विपरीत स्थिति में उस का सफलतापूर्वक सामना किया जा सके.

—विद्यासागर

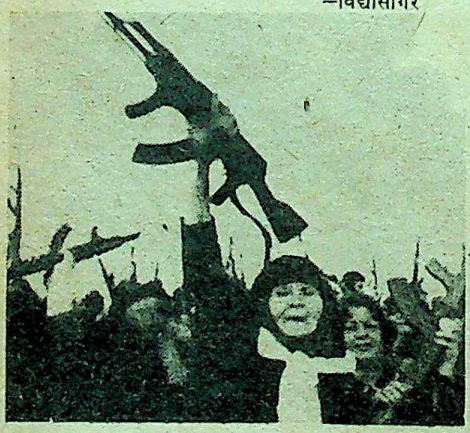

आप ने पेशावर प्रदर्शनकारियों पर [illegible] गई है. [illegible] और उन को समर्थन [illegible] वालों को ईरान इराक युद्ध की दुहाई दे कर अच्छी तरह झकझोरा है.

इंदिरा गांधी द्वारा श्रीलंका पर प्रभुत्व [illegible] करने की कुचेष्टा निंदनीय थी. राजीव गांधी [illegible] राजनीति पर आप ने जो कुछ लिखा है उतना करने [illegible] वह शायद सक्षम ही नहीं हैं. राष्ट्रीय मोरचे को आप [illegible] राजीव कांग्रेस का प्रतिद्वंद्वी कहा है, यह सही नहीं [illegible] शत्रु अवश्य कहा जा सकता है. राष्ट्रीय मोरचा अब [illegible] तक इस स्थिति तक नहीं पहुंच सका है कि उसे [illegible] का प्रतिद्वंद्वी माना जा सके.

—ध्रुवकु[illegible]

*

राजीव गांधी पर अभिव्यक्त संपादकीय विचार से मैं पूर्णतया सहमत हूं.

जवाहरलाल नेहरू, इंदिरा गांधी के बाद राजीव गांधी ने भी कांग्रेस को अपनी पैतृक संपत्ति ही माना है. राजीव गांधी फिर से पुरानी गलतियों को दोहरा रहे हैं. जिस प्रकार बंदर बूढ़ा होने के बाद भी कलाबाजी खाना नहीं भूलता, इसी प्रकार राजीव गांधी सत्ता से बाहर होने के बाद भी अपनी पुरानी आदतों को नहीं छोड़ पा रहे हैं. लेकिन इस बार उन का मुकाबला किसी ऐसे [illegible] नेता से नहीं है, शरद पवार से है. तीनों कांग्रेसी मुख्य मंत्रियों में पवार ही ऐसे मुख्य मंत्री हैं जो पूर्ण बहुमत न मिलने पर भी मुख्य मंत्री बन गए. पवार से इस्तीफा मांगने पर पवार ने जवाबी हमले में तुरंत ही अपने निर्दलीय समर्थकों से बयान दिलवा दिया कि 'उन का समर्थन शरद पवार को है न कि कांग्रेस को', आखिर इस बार तो राजीव गांधी को मुंह की खानी पड़ी.

—गिरीशकुमार भाव[illegible]

*

सरित प्रवाह के अंतर्गत पृष्ठ 16 पर आप ने लिखा है कि नवंबर 1990 में हुए आम चुनावों में कांग्रेस छह प्रदेशों (सिर्फ तीन राज्यों को छोड़ कर) में हार गई. इस संदर्भ में गौर तलब है कि आम चुनाव नवंबर 1989 में हुए थे न कि नवंबर 1990 में.

—गौतम [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीवन के रंग अजीब...

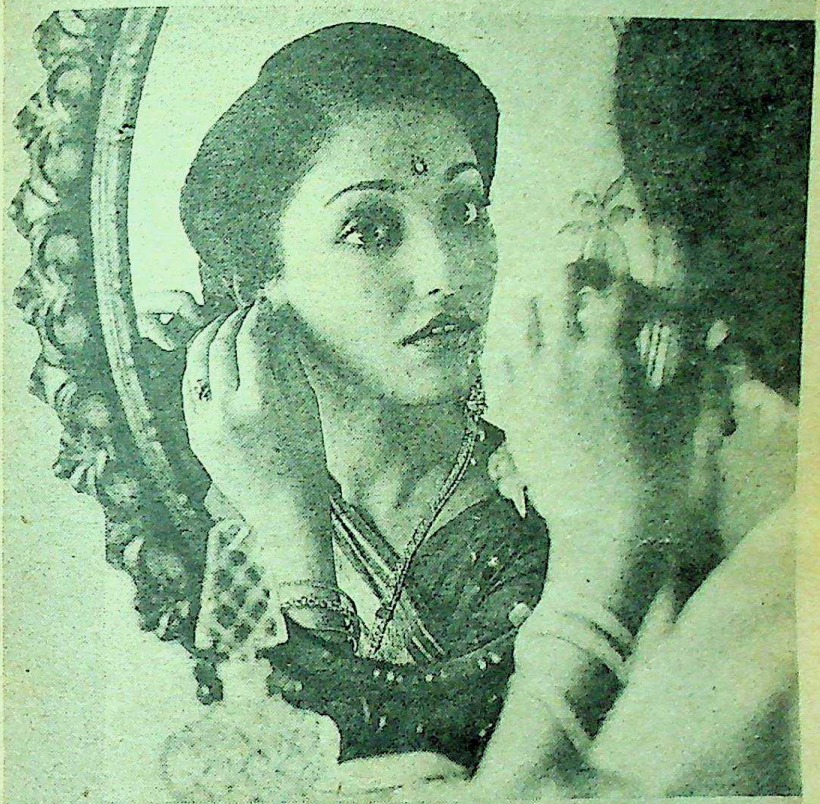

शुक्र है बोरोलीन करीब

बोरोलीन

खुशबूदार ऐन्टिसेप्टिक क्रीम

सूखी त्वचा और साधारण कटने-छिलने पर अनोखा असर

जी डी फार्मास्यूटिकल्स

कलकत्ता ७०००१३

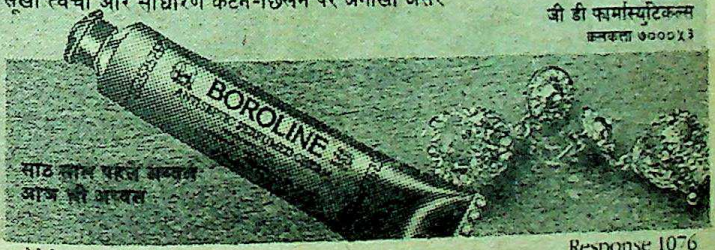

साठ साल पहले अब्बा
आज भी अव्वल

बोरोलीन प्रसाधन सामग्री नहीं

Response 1076

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इराक की बरबादी का जिम्मेदार: सद्दाम हुसैन

लेख 'सद्दाम हुसैन की कहानी, करीम की जुबानी' (फरवरी/द्वितीय) पढ़ा. सद्दाम हुसैन इतने विकृत, जिद्दी, हठधर्मी, क्रूर, नासमझ व्यक्तित्व का स्वामी है, सोचा भी न था.

हालांकि सद्दाम का कुवैत पर कब्जा करना किसी के गले नहीं उतर रहा था, फिर भी लोग अमरीका की दादागिरी के खिलाफ उस के प्रति थोड़ी बहुत सहानुभूति रखने लगे थे. सद्दाम का चरित्र बहुत कुछ 'रामायण' के रावण से मिलताजुलता है. उसे जो भी अच्छी, नैतिक व फायदे की सलाह देता, रावण उसी का वैरी हो जाता, ठीक उसी प्रकार सद्दाम भी उन लोगों को जान से मारता चला गया जिन्होंने उसे नेक सलाह देने का प्रयास किया.

करीम का बताया वृतांत अगर सही है तो इराकी निश्चित रूप से इस यमदूत से पीछा छूटने की प्रतीक्षा कर रहे होंगे. अपनी मूर्खतापूर्ण व बेहूदी नीतियों के कारण उस ने अच्छेभले सुखसमृद्धि से परिपूर्ण इराक को न केवल नेस्तनाबूद करा दिया बल्कि आम जनता के लिए कठिनाइयों का अंबार भी लगा दिया. अच्छा हो यदि सद्दाम हुसैन अब अपनी राजगद्दी मानसम्मान से किसी और को सौंप दें. —इद्रसिंह धिगान

*

दोष बेटी का ही नहीं, मांबाप का भी

लेख 'बेटी बहन पर अत्याचार: मायके वाले क्या कर? (फरवरी/द्वितीय) ने जान कितने [illegible] परिवारों को जोड़ा. यह एक उपयोगी लेख है जो आज के समाज के संदर्भ में खरा उतरता है.

यह सच है कि लड़की के मांबाप का लड़की के ससुराल में हस्तक्षेप नुकसानदायक साबित होता है. [illegible] लड़की तो नासमझ होती ही है जो ससुराल की एक [illegible] घटना, बात मायके तक पहुंचाती है परंतु उस में [illegible] ज्यादा नासमझी वे मातापिता करते हैं जो लड़की [illegible] बात सुन कर फौरन आवेश में आ जाते हैं और बेटी [illegible] ससुराल वालों से झगड़ा कर बैठते हैं. ऐसे में लड़की [illegible] भी अपने मांबाप से शह मिलती है और वह अपने [illegible] साससुर की बेइज्जती करने में भी नहीं हिचकिचा[illegible] और अपना घर बरबाद कर लेती है.

लड़की के मांबाप को सभी बातें ध्यान में रख[illegible] चाहिए. यदि लड़की के मांबाप बेटी का पक्ष न ले [illegible] उसे समझाएंगे या डांटेंगे तो ससुराल वालों के हृदय [illegible] उन के प्रति हमेशा के लिए विश्वास व इज्जत [illegible] जाएगी. आज देखा जाए तो लड़की के परिवार [illegible] बिखरने में मांबाप का हस्तक्षेप ही मुख्य कारण [illegible] है. —संजीवकुमार गो[illegible]

*

पुत्री की खुशी के लिए पिता का त्याग

कहानी 'इंद्रधनुष' (फरवरी/द्वितीय) शिक्षा[illegible] लगी. पिता ने अपनी पुत्री की खुशी के लिए अपने [illegible] प्रस्तुत कर एक उदाहरण प्रस्तुत किया है. जब सभी [illegible]

संपूर्ण परिवार के स्व[illegible]

सरिता

स्वास्थ्य विशेषांक

मई (प्रथम) 1991 अं[illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खून लाल होता है तो फिर इस देश में जातिबंधन कैसा?

इसी अंक में प्रकाशित लेख 'होली पर मर्यादाओं का उल्लंघन न करें' भी आज के नवयुवकों व नवयुवतियों के दिशा बोध के लिए सटीक है.

—मीरा साहू

*

संग्रहणीय अंक

सरिता का होली विशेषांक (फरवरी/द्वितीय) आकर्षक साजसज्जा से परिपूर्ण था. आवरण पृष्ठ देख कर ही मन पुलकित हो उठा. सभी रचनाएं उत्कृष्ट थीं. कविताओं के संदर्भ में तो यह अंक अनूठा है. यह अंक संग्रहणीय साबित हुआ. —विनोदकुमार गुप्ता

*

रोचक समाचार

'इधरउधर' (फरवरी/द्वितीय) का एक समाचार, 'साठ लाख रुपए से भारी अटैची', बहुत रोचक लगा. अच्छा होता यदि उस के अंत में सूरदास की यह पंक्ति जोड़ दी जाती—'ग्वाल बाल सब बैर पड़े हैं बरबस मुख लपटायो.' —मनोरमा सक्सेना

*

हड़ताल की मानसिकता

लेख 'वर्ष 1990: शोक सभा और हड़तालों के नाम' (फरवरी/प्रथम) पढ़ा.

बुद्धिजीवी वर्ग का प्रतिनिधित्व करने वाले वकील व जज जब मौजमस्ती के लिए शोक सभा/

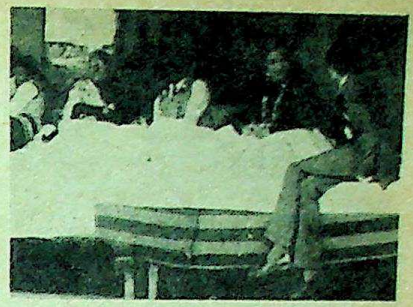

हड़ताल को माध्यम बना लें तो मन दुखी हो उठता है. ऐसे में अपनी विचार शक्ति व वादकारियों के दुखों से द्रवित कुछ वकीलों, जजों ने अपनी मृत्यु पर अवकाश न करने की वसीयत की है जो सराहनीय है.

आज 18 उच्च न्यायालयों में करीब 15 लाख मुकदमे लंबित पड़े है. न्याय का अर्थ ही बदल गया हो तो न्याय दिलाने वालों के अन्याय पर, उन की हड़ताली प्रवृत्ति पर आंसू बहाने का मन करता है. देश में प्रति व्यक्ति हजारों का कर्ज है, ऐसे में हड़ताल, तालाबंदी क्या उचित है?

हड़तालों से प्रभावित लोगों की क्षतिपूर्ति का जिम्मेदार कौन है? निस्संदेह हम नहीं, लेकिन हड़ताल हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है, यह सोच बदलने की आवश्यकता है. —हरीश सनवाल ●

स्वास्थ्य के लिए

स्वास्थ्य संबंधी
अनूठी जानकारी सरल शब्दों में
विशेषज्ञ डाक्टरों द्वारा लिखे गए लेख

• हृदय रोग • सिरदर्द • मस्तिष्क कैंसर • कब्ज • मोटापा • अर्थराइटिस • मानसिक तनाव • जुकाम • आंखें स्वस्थ कैसे रखें • दांतों की बीमारियां • नारी को सौंदर्य प्रदान करने वाले आसन • योनिस्राव तथा कई अन्य स्वास्थ्य संबंधी लेख

अपनी प्रति खरीदना न भूलें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वप्न तुम्हारे हैं

यादों की कसक न मिटाना
यही तो जीने के सहारे हैं.
राह दिखा के छोड़ न जाना,
याद रहे कि हम तुम्हारे हैं.
अधरों के गीत न चुराना,
यह गीत तुम से ही प्यारे हैं.
पिछली रात नैनों में न आना,
वहां भी स्वप्न तुम्हारे हैं.
बांहों के बंधन कभी न छुड़ाना,
यह जीवन नदिया के किनारे हैं.
प्रणय सुगंध से सांसों को महकाना,
यही जीवन बसंत के नजारे हैं.
साथसाथ चल कर ही जीवन बिताना,
हर कदम पर फिर तो बहारें हैं.

—अर्चना भटनागर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

याद रखिए, संतुलित पौष्टिक आहार के बिना, आपके शिशु को वज़न बढ़ाने के लिए ज़रूरी प्रोटीन नहीं मिल पाते.

"तभी तो मैं अपने शिशु को सेरेलॅक देती हूँ."

अपने डॉक्टर से पूछिए. वह आपको दो महत्वपूर्ण बातें बताएंगे. एक तो यह कि प्रोटीन से शिशु की मांसपेशियों तथा तन्तुओं के विकास और रक्त बनाने में मदद मिलती है. और दूसरा प्रोटीन की सही मात्रा पाने के लिए शिशु को चाहिए पौष्टिक संतुलित आहार–हर बार. हर दिन. दिन-प्रतिदिन.

ज्यादातर माताओं के लिए साधारण आहार में ऐसा संतुलन रख पाना आसान नहीं होता.

इसका समाधान?

सेरेलॅक. क्योंकि सेरेलॅक दूध और गेहूँ से बनता है जिनमें प्रोटीन उचित मात्रा में होते हैं. इसमें कार्बोहाइड्रेट, फ़ैट, विटामिन, मिनरल, आयरन और कैल्शियम भी उचित अनुपात में होते हैं. इसीलिए यह शिशुओं को 4 महीने से देने के लिए पौष्टिक संतुलित ठोस आहार है जब सिर्फ़ दूध काफ़ी नहीं होता. और सेरेलॅक का स्वाद शिशुओं को बहुत भाता है.

तो आज से ही अपने शिशु को संतुलित पौष्टिक सेरेलॅक के पूरे खाने दीजिए. और जब शिशु 6 महीने का हो जाए तो उसे व्हीट-एप्पल, व्हीट-ऑरेंज और व्हीट-वैजीटेबल का अतिरिक्त खाना दीजिए.

कृपया पैक पर दिए गए निर्देशों का पालन कीजिए.

मुफ़्त सेरेलॅक बेबी केयर बुक
लिखिए सेरेलॅक, पोस्ट बैग न. 21, नई दिल्ली -110 029.

नेस्ले का एक उत्कृष्ट उत्पादन

अपने शिशु को दीजिए. सेरेलॅक [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुझे शिकायत है

इन प्रकाशित शिकायतों को काट कर संबंधित व्यक्तियों को भेजिए या उपयुक्त स्थान पर चिपकाइए ताकि इन्हें पढ़ने वाले अपनी त्रुटियों को पहचान कर उन्हें दूर कर सकें.

आप अपनी शिकायतें इस पते पर भेजें :

सरिता, ई-3, झंडेवाला एस्टेट,
नई दिल्ली-110055.

मुझे शिकायत है उन महिलाओं से जो घर, बाहर यहां तक कि मंदिर में भी घरपरिवार की कहानियां ले कर बैठ जाती हैं, जिस से अन्य व्यक्तियों को असुविधा होती है.

पवनकुमार जैन

मुझे शिकायत है उन लोगों से जो टेलीफोन पर डाक्टर से व्यर्थ की लंबी बातें कर के समय बरबाद करते हैं, बिना यह सोचे कि कितने ही मरीज डाक्टर की प्रतीक्षा कर रहे होंगे.

विजयकुमार बजाज

मुझे शिकायत है उन कालिज के विद्यार्थियों से जो विश्वविद्यालय में लगी प्रवेश की लिस्ट फाड़ देते हैं जिस से अन्य छात्रों को कठिनाई का सामना करना पड़ता है.

अब्दुल हादी सिद्दीकी

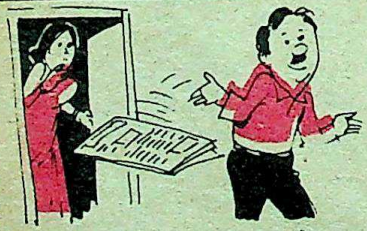

मुझे शिकायत है उन पड़ोसियों से जो वस्तुएं मांगमांग कर ले जाते हैं और वापस करते समय बिना शुक्रिया किए घर के बाहर फेंक कर चलते बनते हैं.

प्रेम नारायण

मुझे शिकायत है, ऐसे वाहन चालकों से जो बिना 'साइलेंसर' के गाड़ी चलाते हैं जिस से वाहन की तेज आवाज के कारण अन्य लोगों को असुविधा होती है.

सुनील कोठारी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब न जुएं हैं
न जुओं वाली कंघी!

पुरानी बेअसर आदत टूटी! नयी असरदार आदत आयी! मेडिकर संडे के संडे. बालों में कोमल झाग संडे के संडे. तो जूं भला बालों में कैसे टिक सकती हैं? हर हफ़्ते मेडिकर लगाने से जुएं बालों में रह ही नहीं सकतीं. रहते हैं तो सिर्फ साफ़, धुले-धुले, जूं-रहित बाल. और आपके मन में एक भरोसा. तो अब आप मान गयीं ना कि मेडिकर बहुत सरल है. बिल्कुल सुरक्षित है और बेहद असरदार भी!

मेडिकर...संडे के संडे.
तभी तो जुएं नहीं हैं!

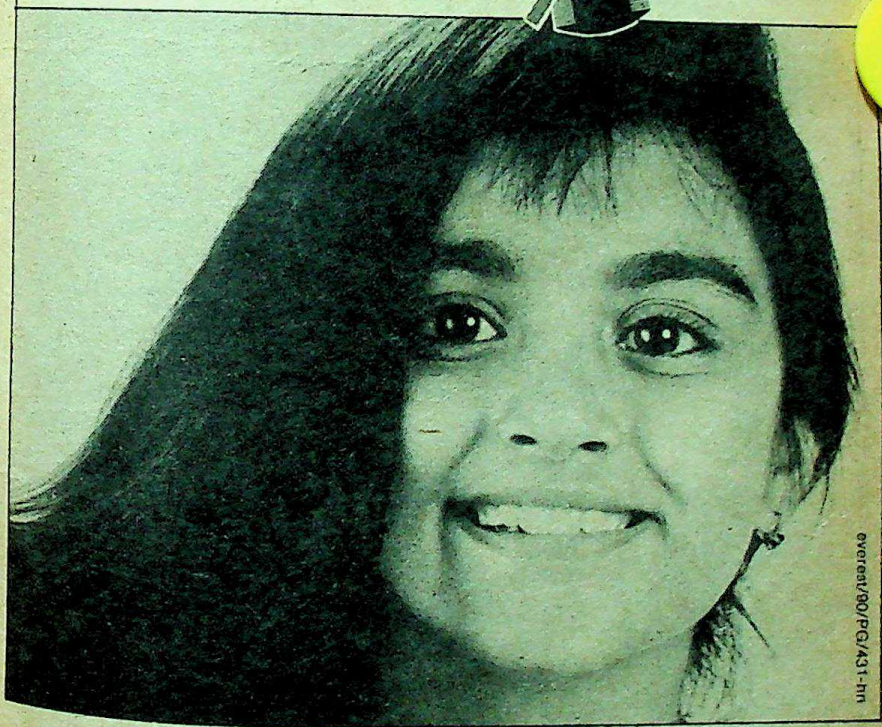

everest/90/PG/431-hn

जुओं की समस्या के बारे में अधिक जानकारी के लिए इस पते पर लिखें (डाक सेवा मुफ़्त):
मेडिकर, प्रॉक्टर एण्ड गैम्बल इंडिया लिमिटेड, पी.ओ. बॉक्स 1919 बंबई- 400 001

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

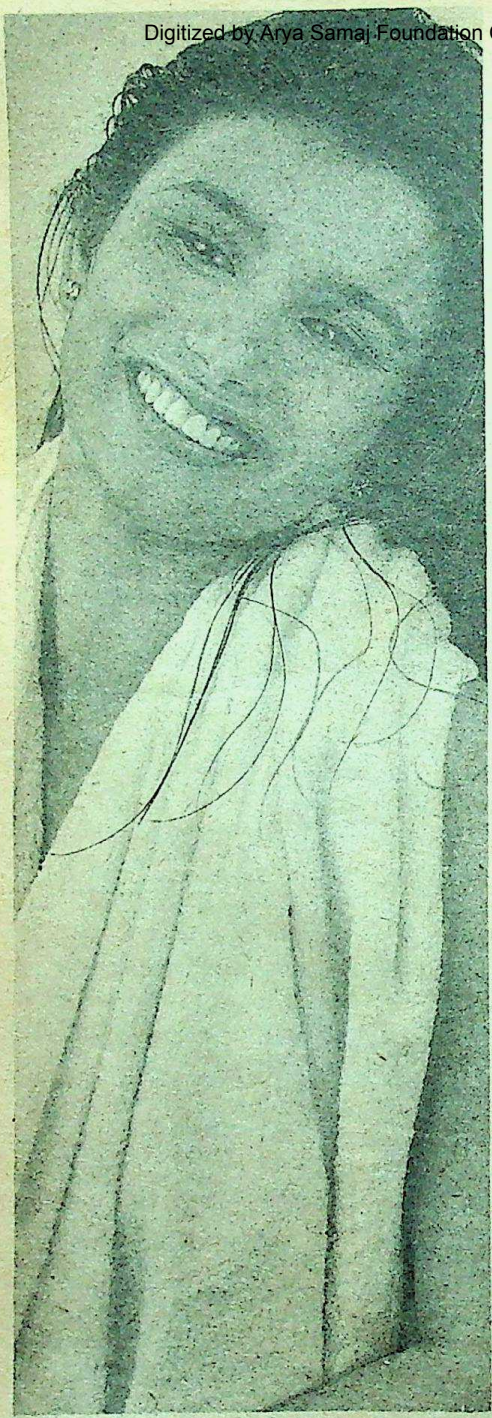

नीको वह कर दिखाता है जिसके बारे में बाकी साबुन बोलने से भी कतराते हैं

नीको में है टी सी सी, जो नहाने के बाद आपके शरीर पर एक अनोखी सुरक्षित परत बन कर छा जाती है.

नीको अधिक तेलों को धो डालता है ताकि मुँहासें पैदा ही न हों.

नीको शरीर की दुर्गंध को दूर करता है, ताकि आप सबके बीच पूरे आत्मविश्वास से उठें-बैठें.

नीको उन कीटाणुओं को हटाता है, जो त्वचा में इन्फेक्शन पैदा करते हैं.

नीको धूल और अन्य पदार्थ हटाता है, ताकि त्वचा पर झाइयाँ न हों.

नीको से नहाइये, लोग आपकी त्वचा के बारे में बोलते नहीं थकेंगे.

नीको®

आपकी त्वचा का रखवाला साबुन.

PARKE-DAVIS

पार्क-डेविस (इंडिया) लिमिटेड, साकी नाका, बम्बई-४०० ०७२.

® पार्क-डेविस एंड कंपनी, यू.एस.ए. का रजिस्टर्ड ट्रेड मार्क लाइसेंस उपयोगकर्ता: पार्क-डेविस (इंडिया) लिमिटेड.

Contract.PD.85.89.Hi

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शरित प्रवाह

राष्ट्रपति रामास्वामी वेंकटरमन ने 13 मार्च 1991 को लोकसभा भंग कर के मई में नए चुनाव कराए जाने की घोषणा कर दी है. ये मध्यावधि चुनाव, अभी इस समय, राजीव गांधी की बेसब्री, बेवकूफी और बेईमानी के कारण ताबड़तोड़ हो रहे हैं. अन्यथा तो चंद्रशेखर जनता दल की सरकार बनाते समय, नवंबर 1990 में, राष्ट्रपति को राजीव गांधी द्वारा दिए गए आश्वासन के अनुसार ये चुनाव नवंबर 1991 में होने थे—राजीव गांधी ने कम से कम एक वर्ष तक चंद्रशेखर को प्रधान मंत्री बनाए रखने का वायदा किया था, अन्यथा तो चंद्रशेखर अपने 54 लोकसभा सदस्यों के बलबूते पर तो सरकार बना ही नहीं सकते थे.

उस समय, और शायद आज भी, कांग्रेस चुनावों के लिए तैयार नहीं थी. उसे लोकसभा में उस समय भी, और आज भी, भीतर से लोकसभा में बहुमत प्राप्त होने का विश्वास नहीं था. जनमत संग्रह करने वाली संस्थाओं ने बता दिया था कि अभी जनता कांग्रेस के पक्ष में नहीं है. अन्यथा विश्वनाथ प्रताप सिंह के पक्ष में विश्वास प्रस्ताव पास न होने और उन के इस्तीफे के साथसाथ ही चुनाव हो जाने आवश्यक थे.

राजीव गांधी का सोचविचार यह था कि चंद्रशेखर अपने 54 सदस्यों की सरकार तो बना लेंगे, पर उन की नकेल कांग्रेस के हाथ में रहेगी, राजीव गांधी जो चाहेंगे वह चंद्रशेखर से करा लेंगे.

प्रारंभ में तो मामला ठीक चला, पर शीघ्र ही जब चंद्रशेखर पर ज्यादा दबाव पड़ने लगे तो मामला धीरेधीरे पेचीदा होता गया. प्रशासन के कामों मे हर रोज 10 जनपथ (राजीव गांधी के निवास स्थान) से आदेश आने लगे. इस व्यक्ति को वहां लगाओ, उस व्यक्ति को हटाओ, अमरीकी हवाई जहाजों को खाड़ी युद्ध में गैर आयुध सामान ले जाते हुए भी भारत की जमीन पर तेल नहीं भरने दो, तमिलनाडु की करुणानिधि सरकार को बरखास्त करो, बजट को 28 फरवरी को पेश नहीं करो, क्योंकि इस में नए, भारी टैक्स लगाए जाने से तमिलनाडु में विधान सभा चुनावों में कांग्रेस के हार जाने का अंदेशा था, इत्यादि.

इस बीच चंद्रशेखर इन बिना मरजी के काम करते हुए भी अपने अन्य कामों से जनता को प्रभावित करते रहे. 1977 के बाद चंद्रशेखर की जनमानस में छवि एक विध्वंसक, सत्तालोलुप, निष्क्रिय व्यक्ति की अधिक थी, काम करने वाले, दृढ़ और साफ कहने वाले व्यक्ति की कम. पर राजीव गांधी और विश्वनाथ प्रताप सिंह के शासन को देखते हुए उस से मुकाबला करते हुए लोगों को लगा कि चंद्रशेखर में प्रधान मंत्री बन कर काम करने की क्षमता है और वह देश का शासन अपने दोनों प्रतिद्वंद्वियों से अच्छा चला सकते हैं.

इस से कांग्रेस का आसन डोलना शुरू हो गया. कांग्रेसियों को लगने लगा कि बजाय रस्सी का फंदा चंद्रशेखर के गले में और सिरा राजीव गांधी के हाथों में होने के मामला उलटा पड़ने लगा है. लोग चंद्रशेखर की गलतियों का बोझ कांग्रेस पर डाल रहे हैं, अच्छे कामों का सेहरा चंद्रशेखर के सिर पर रख रहे हैं. उन को लगने लगा कि यदि इसी प्रकार घटनाचक्र चलता रहा तो नवंबर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

1991 में, जब तक राजीव गांधी ने चंद्रशेखर को प्रधान मंत्री बनाए रखने का वायदा किया था, चंद्रशेखर चुनावों में जीत जाएंगे और कांग्रेस हार जाएगी.

फलस्वरूप हरियाणा पुलिस के दो सिपाहियों द्वारा राजीव गांधी के घर पर नजर रखने के आरोप में राजीव गांधी ने चंद्रशेखर को नीचा दिखाने का फैसला कर लिया और लोकसभा में राष्ट्रपति के अभिभाषण पर धन्यवाद के प्रस्ताव पर बहस में बैठक का बहिष्कार कर दिया, जिस से सरकार द्वारा पेश किए गए प्रस्ताव पास न होने के कारण सरकार हार जाए, और फिर चंद्रशेखर दौड़ेदौड़े राजीव के पांव पड़ कर सार्वजनिक रूप से माफी मांगें.

पर चंद्रशेखर राजीव की इस रणनीति को भांप गए और उन्होंने प्रस्ताव पर मतदान होने से पहले ही अपने इस्तीफे का एलान कर दिया और राष्ट्रपति से लोकसभा के नए चुनाव कराने की सिफारिश कर दी.

अब तो कांग्रेस बड़ी परेशानी में पड़ गई. वह न चाहते हुए भी चुनावों की मांग का समर्थन करने लगी. विश्वनाथ प्रताप सिंह वाला जनता दल और भारतीय जनता पार्टी दोनों तो पहले ही से नए चुनावों के लिए नारे लगा ही रहे थे, क्योंकि उन का चुनावों में कुछ बिगड़ना नहीं था. उलटे उन्हें कुछ अधिक मिलने की आशा ही थी.

अंततः राष्ट्रपति को काफी अरसे तक विभिन्न व्यक्तियों व हितबद्ध पक्षों से सलाहमशवरा कर के, लोकसभा के जून तक के लिए लेखा अनुदान पास करा कर लोकसभा को न चाहते हुए भी भंग करना पड़ा.

*

राष्ट्रपति और लगभग अधिकांश देशवासी इस समय चुनावों के पक्ष में नहीं थे क्योंकि इन चुनावों पर 4,000 करोड़ रुपए खर्च होने का अनुमान है, और साथ ही विशाल पैमाने पर दंगाफसाद और हिंसा की आशंका भी.

चुनाव आयोग के अनुसार इस चुनाव पर सरकारी खर्च 1,000 करोड़ रुपए होगा जो जनता पर टैक्स लगा कर या फालतू फर्जी नोट छाप कर वसूल किया जाएगा. पर इस के अलावा हर उम्मीदवार भी मतदाताओं की संख्या के अनुसार अपने चुनाव प्रचार पर अंधाधुंध खर्च करेगा, क्योंकि राजनीतिबाजों के लिए यह जीवनमरण का प्रश्न होता है. इसलिए न इस चुनाव में पैसे की कमी आड़े आएगी, न मारपीट व हिंसा.

राजनीतिबाज जो खर्च करेगा, वह भी उस की जेब से नहीं, जनता की जेब से आएगा. कुछ थोड़ा सा मतदाताओं के चंदे से प्राप्त किया जाएगा. अधिकांश उद्योग व व्यापार से खुशामद, धमकी या लालच दे कर वसूल किया जाएगा. उद्योग व व्यापार भी अपनी जेब से यह धन नहीं दे सकते. वे भी अपनी चीजों व सेवाओं के मूल्य बढ़ा कर राजनीतिबाजों के ब्लैकमेल को पूरा करेंगे. अंततः सारा भार गरीब लोगों पर पड़ेगा, जिन को इन चुनावों में किसी पार्टी के जीतने या हारने से कोई फर्क नहीं पड़ने वाला है क्योंकि अब साबित हो गया है कि सब राजनीतिबाज, चाहें किसी भी दल के हों, केवल अपना स्वार्थ, अपनी हलवापूरी व सत्ता का लाभ उठाने के लिए करते हैं, जनता की सेवा का जमाना अब लद गया.

जनता को बेवकूफ बनाने के लिए कोई मंदिर का प्रश्न उठाता है तो कोई जाति पर का. कोई नीची जातियों का तो कोई स्थायी, काम करने वाली सरकार का नारा लगाता है. किसी की किसी सिद्धांत में आस्था नहीं रही है. ध्येय केवल एक है—कुरसी और थैली.

*

उत्तर प्रदेश के मुख्य मंत्री मुलायमसिंह यादव ने जनता से टैक्सों द्वारा जबरन वसूल किया पैसा नष्ट करने वाले सरकारी उद्योगों के विरुद्ध अपनी मुहिम में दोतीन भारी हानि उठाती हुई सरकारी कंपनियों को निजी उद्योगपतियों के हाथ बेच दिया था.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वैसे इन के अभी भी 49% शेयर राज्य सरकार के रहेंगे. इन में से एक उत्तर प्रदेश सीमेंट कारपोरेशन है, जिसे डालमिया उद्योग को चलाने के लिए दिया गया है. अब जब सारा मामला तय हो गया तो कारपोरेशन के अधिकारी संघ ने इलाहाबाद हाईकोर्ट में याचिका दायर कर के कंपनी का हस्तांतरण स्थगित करा लिया है, इस आधार पर कि सरकार ने यह काररवाई बिना पहले नोटिस दिए की है.

न्यायालय को तो खैर मामले की सुनवाई करनी ही थी, सो स्थगन आदेश देना ही था. पर असली बात तो सरकारी अधिकारियों व कर्मचारियों द्वारा काम न कर के पैसा बनाने और जनता का धन हड़पने की विशाल इच्छा का है.

लगभग हर सरकारी उद्योग, जहां वह एकाधिकार में नहीं है, और अधिकांश एकाधिकार वाले क्षेत्र में भी, घाटे में चलता है क्योंकि सरकारी कर्मचारी के लिए काम करना हराम है—रघुपति राघव राजा राम, पूरा पैसा जीरो काम. और कामचोरी के साथ रिश्वतखोरी और सरकारी यानी जनता का पैसा हड़प करने का. इसी लिए ये लोग न उद्योग चलाते हैं, न चलने देते हैं.

उत्तर प्रदेश सरकार को डट कर सीमेंट कारपोरेशन के कर्मचारियों की याचिका का विरोध करना चाहिए और कारपोरेशन को आगे किसी प्रकार का धन देने से मना कर देना चाहिए. अगर कर्मचारियों के वेतन भत्तों के लिए पैसा न रहे तो वे भुगतें. जनता क्यों इन सफेद हाथियों को पाले रहे?

*

उपभोक्ता संरक्षण कानून के अंतर्गत जिला, राज्य व केंद्रीय स्तर पर अदालतें (उपभोक्ता शिकायत समाधान मंच) स्थापित की गई हैं. इन का गठन इसलिए किया गया है कि यदि उपभोक्ता को माल विक्रेता से कोई शिकायत हो तो यहां उस का अतिशीघ्र और बिना किसी झंझट के निबटारा हो सके.

वैसे हर व्यक्ति को अधिकार है कि यदि उसे किसी अन्य नागरिक या संस्था के विरुद्ध कोई शिकायत हो तो वह साधारण अदालतों में जा सकता है. पर अदालती कार्यविधि इतनी पेचीदा, महंगी और समय नष्ट करने वाली हो गई है कि वहां जाना एक दुस्साहस का काम बन गया है. हर अदालत में हजारों मुकदमे जमा, अनिर्णीत पड़े हैं और आजकल तो तारीखें छः महीने क्या साल तक की पड़ने लगी हैं. हजारों मुकदमे 20-25 साल से बिना फैसला सुनाए लटक रहे हैं.

इस प्रक्रिया में वादी को कोई लाभ नहीं होता, लाभ केवल वकीलों, अदालती अमले और (मुंबई व अन्यत्र के भी कई उच्च न्यायालयों के जजों के कारनामे खुल जाने के आधार पर) न्यायाधीशों को होता है.

पर अब लगता है उपभोक्ता अदालतें भी इस चक्कर में फंस गई हैं, जबकि कानूनी प्रावधान यह है कि शिकायत का फैसला तीन महीने में हो जाए. एक समाचार के अनुसार दिल्ली की जिला उपभोक्ता अदालत में शिकायत दर्ज कराने के बाद पहली सुनवाई 8 महीने बाद होने लगी है. अन्यत्र भी फैसलों में दो तीन वर्ष लग जाते हैं.

इन अदालतों में कोई फीस नहीं लगती. वकील करना भी कानूनन जरूरी नहीं है. केवल साधारण कागज पर एक पत्र लिखने से मुकदमा दर्ज हो जाता है, और विक्रेता को नोटिस चला जाता है. पर यहां भी धीरेधीरे श्रम अदालतों, फौजदारी व दीवानी अदालतों की तरह काम होने लगा है. खरीदार तो एक पत्र लिख कर घर बैठ सकता है, पर विक्रेता को अपना धंधा बंद कर के आना पड़ता है तो वह वकील को अपना पक्ष सौंपता है. जब एक तरफ वकील खड़ा हो जाए तो दूसरे पक्ष को भी वकील लगाना पड़ता है और फिर धीरेधीरे साधारण कानूनी प्रक्रिया चलने लगती है. गवाही और सुबूत पर निर्णय किए जाने आवश्यक हो जाते हैं. पर जहां तक देर लगने का कारण है वह इतनी कानूनी प्रक्रिया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं है जितनी न्यायाधीशों की कमी और मुकदमों का अंबार.

हमारे देश में राजनीतिबाजों, विधायकों, नौकरशाहों और सार्वजनिक आंदोलनकारियों की धारणा है कि समाज की हर बुराई या कमी केवल कानून बना देने से तत्काल मिट सकती है. इसलिए हर रोज विभिन्न विधान सभाओं व संसद में हर छोटीबड़ी परेशानी (वास्तविक व काल्पनिक दोनों) के लिए धड़ाधड़ टकसाल के सिक्के ढलने की तरह, कानून बना दिए जाते हैं. बनते समय इन कानूनों को न देखा जाता है, न परखा जाता है कि इन के प्रावधानों का क्या नतीजा होगा, कौन इन पर जनसाधारण से अमल कराएगा, इन को अमल कराने पर क्या खर्च होगा और वह खर्च कहां से आएगा. इन कानूनों की भाषा अधिकतर जटिल और गलत होती है, इसलिए अदालतों का अधिकांश समय और करोड़ों रुपए, हर रोज देश में इसी बात पर खर्च हो जाते हैं कि कानूनी प्रावधानों का अभिप्राय, उद्देश्य क्या है. सही अभिप्राय समझने के लिए सर्वोच्च न्यायालय तक पहुंचना पड़ता है जहां मुकदमा 20 वर्ष से पहले निबटाया नहीं जाता.

जहां तक अमल कराने में खर्च का प्रश्न है, हर कानून हर वर्ष कम से कम 5,000 मुकदमों को जन्म देता है (अन्यथा कानून की जरूरत ही क्या है?) पर अमल कराने वाला अमला और अदालतें इस के अनुपात से नहीं बनाई जातीं. मुकदमे वही पुलिस दायर करती है जो पहले ही से पिछले मुकदमों के बोझ से दबी पड़ी है, वही अदालतें मुकदमे सुनती हैं जहां पहले ही से मुकदमों का अंबार लगा है. फलस्वरूप अनिर्णीत मुकदमों की कतार लगातार लंबी बनती जाती है.

उपभोक्ता कानून के अंतर्गत भी मुख्य न्यायाधीश जिला सत्र न्यायाधीश या उसी श्रेणी का होता है, और बाकी के सदस्य भी प्रायः सरकारी अफसर होते हैं जो यहांवहां से लाए जाते हैं. इन अदालतों के लिए कोई नई भरती नहीं हुई है, न नए भवन बने हैं, न नया स्टाफ आया है.

*

इस के अतिरिक्त उपभोक्ता कानून का लोगों ने दुरुपयोग भी शुरू कर दिया है, जैसा श्रम कानूनों का होने लगा है. क्योंकि यहां कोई फीस नहीं लगती. हर व्यक्ति अपनी झूठी शिकायतें लिख कर भेजने को प्रोत्साहित है. पर शिकायत झूठी साबित होने पर उसे दंड दिए जाने का कोई प्रावधान नहीं है. इसलिए बेबुनियाद शिकायतें भी इन अदालतों में जमा हो रही हैं.

अभी पिछले दिनों अजमेर, राजस्थान की एक महिला ने, जो एक वकील की पत्नी हैं, 'सरिता' की सहयोगी पत्रिका 'मुक्ता' पर इसलिए उपभोक्ता अदालत में दावा दायर कराया कि 'मुक्ता' के 'लघु उद्योग विशेषांक' से, जिस की कीमत केवल 6 रुपए थी, उस का 1 लाख का नुकसान हुआ क्योंकि उसे इस विशेषांक से कोई धंधा चलाने की प्रेरणा नहीं मिली. स्पष्टतः मुकदमा झूठा और केवल रुपया ऐंठने के लिए चलाया गया था. समझा गया कि वकील तो घर का ही है, 'मुक्ता' का कार्यालय दिल्ली में है, चलो, कुछ न कुछ तो झड़ ही जाएगा. मुकदमा दो वर्ष चला और अंत में खारिज हो गया. अब 'मुक्ता' पर वकील की पत्नी पर ब्लैकमेल, रुपया ऐंठने व हरजाने का दावा दायर किया है.

इसी प्रकार देश भर में अन्यत्र भी झूठे मुकदमे दायर होने लगे हैं जिन से उपभोक्ता कानून का सारा उद्देश्य नष्ट होने की संभावना है.

आज आवश्यकता है कि कानून देखभाल कर, सोचविचार कर बनाए जाएं, हर नए कानून के लिए नई अदालतें स्थापित की जाएं और यदि यह संभव नहीं हो तो कानून नहीं बनाया जाए क्योंकि एक मुर्दा कानून कानून न होने से भी बदतर है. आज देश में कानून की अवहेलना का जो वातावरण बन गया है वह इसी कारण है.

सामाजिक बुराइयां केवल कानून

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बनाने से ही नहीं [illegible] बाल्यावस्था बालविवाह, दहेज, छुआछूत, भीख मांगना, वेश्यावृत्ति, माल में मिलावट इत्यादि सैकड़ों व्याधियां कभी की समाप्त हो गई होतीं.

*

भारत के विदेशी मुद्राकोष का बुरा हाल है. वह लगभग समाप्त हो गया है और विदेशी कर्ज बराबर बढ़ता जा रहा है. नौबत यहां तक आ पहुंची है कि अब ऋण अदायगी तो दूर, उस पर ब्याज देना भी असंभव होता जा रहा है.

इस दशा का मूल कारण सरकार द्वारा अपना खर्च हर तरफ से बिना रोकटोक के बढ़ा लेना और छोटीबड़ी चीज या काम के लिए विदेशी कर्ज का सहारा लेना है. जब शहरों की नालियां बनाने, बच्चों के स्कूल खोलने और नहरों के किनारे खेती करने वालों को सस्ते दामों पर खाना दिलवाने, शहरों में बस सेवाएं चलाने, नई रेल लाइनें बिछाने आदि के लिए विदेशी कर्ज लिया जाए तो हालत आज जैसी होती ही है. सरकारी उद्योगों में तो अधिकांश पूंजी विदेशी कर्ज ले कर लगाई गई है, और ये उद्योग कोई निर्यात नहीं करते जिस से कर्ज और ब्याज की अदायगी की जाए.

इस विदेशी कर्ज को, और देश में बढ़ती कीमतों को रोकने का एक ही उपाय है, और वह है सरकारी खर्च में कमी करना. पर प्रधान मंत्री चंद्रशेखर कहते हैं कि यह संभव नहीं है क्योंकि 90% सरकारी खर्च सरकारी अफसरों व नौकरों पर खर्च होता है और कानूनी तौर पर इन सरकारी नौकरों की नौकरियों, उन के वेतन और सुविधाओं पर हाथ नहीं लगाया जा सकता. अधिकांश सरकारी उद्योग कर्मचारियों की अधिकता, कामचोरी की बीमारी से पीड़ित हैं, पर उन्हें हटाया नहीं जा सकता – कानून और कर्मचारी आंदोलनों के कारण.

अब यदि देश को जीवित रखना है तो ऐसे कर्मचारी कानूनों को बदलने की आवश्यकता है जो सरकार को अनावश्यक कर्मचारी रखने पर मजबूर करते हों. सरकारी (या निजी क्षेत्र में भी) कर्मचारियों की कामचोरी का सब से बड़ा कारण उन की नौकरी की सुरक्षा है. जब तक आदमी को नौकरी बचाने की चिंता न हो तब तक वह ठीक काम क्यों करे? जब मुफ्त की तनख्वाह, सुविधाएं मिलें तो क्यों काम किया जाए?

*

इराक का तानाशाह सद्दाम हुसैन इराक के लिए एक महाविध्वंसकारी साबित हुआ है. बजाय तेल से प्राप्त सारा धन लड़ाइयों में खर्च करने और अपने लाखों नागरिकों को मौत के मुंह में झोंकने के वह अपने देश को एक शक्तिशाली औद्योगिक व आर्थिक रूप से संपन्न देश बना सकता था, उस ने कुवैत का भी पूरी तरह नष्टीकरण किया. वहां से हटते समय उस ने कुवैत के 800 तेल के कुओं में आग लगा दी जिन से अरबों रुपए का तेल रोज जल रहा है और उन से जो बराबर धुआं निकल रहा है वह न केवल कुवैत के बल्कि आसपास के क्षेत्र के वातावरण को भी दूषित कर रहा है. जो तेल रोज बेकार जल रहा है वह लगभग उतना है जितना भारत एक वर्ष में बाहर से खरीद रहा है.

खनिज तेल, जहां से वह निकलता है, उसी देश की संपदा नहीं, वह संसार भर की थाती है. इस मायने में कि विश्व में खनिज तेल का भंडार सीमित है और उसे यदि बेकार नष्ट कर दिया जाएगा तो वह दिन जल्दी आ जाएगा जब तेल किसी भी मूल्य पर उपलब्ध नहीं होगा.

आज खनिज तेल केवल मोटरगाड़ियां चलाने, रोशनी व बिजली उत्पन्न करने के लिए ही नहीं, हजारों पदार्थों के काम आता है – दवाइयों में, तरहतरह के पलास्टिकों में, कपड़े में, मशीनों के चलने में, यातायात में. इस को बेकार, खीज या गुस्से में जला कर नष्ट करना सारी मानव जाति के प्रति एक घोर अपराध है, और बेकुसूर, नन्हे से कुवैत पर आक्रमण कर के उस पर कब्जा जमाने और लूटने का संगीन जुर्म तो है ही. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्थिरता की तलाश में

लेख ● सुरेंद्र द्विवेदी

नौवीं लोकसभा अपना निर्धारित कार्यकाल समाप्त किए बिना ही 15 महीने के भीतर ही भंग कर दी गई है और राष्ट्रपति ने नई लोकसभा के चनाव कराने को कहा है.
नवंबर 1989

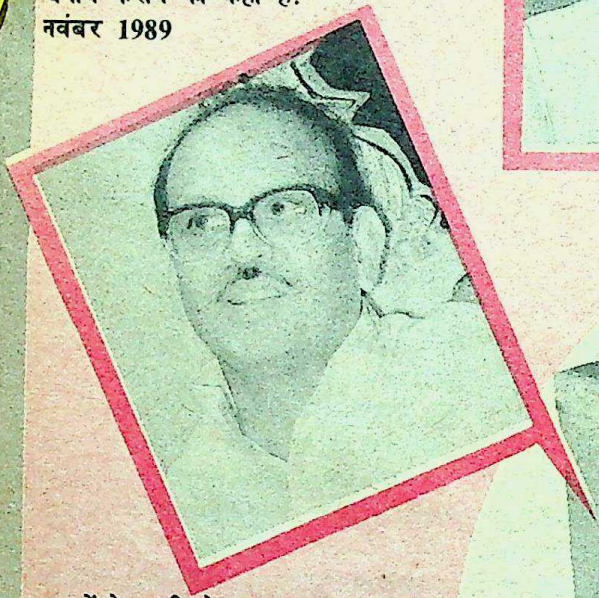

चुनावों से जन्मी लोकसभा द्वारा सक्षम और स्थिर सरकारें न दिए जा सकने के कारण देश छोटे समय में ही मध्यावधि चुनाव की चपेट में आ गया है. भयानक आर्थिक संकट के दौर में एक नहीं दोदो सरकारों के पतन के बाद राजनीतिक स्थिरता की तलाश में नए चुनाव इस अपेक्षा के साथ कराए जा रहे हैं कि जिस मोरचे पर राजनीतिक दल और उन के नेता असफल रहे हैं, देश का आम मतदाता स्पष्ट राय दे कर केंद्र में मजबूत और सक्षम सरकार देने में सफल हो सकेगा.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मध्यावधि चुनाव

पिछला चुनाव पूरी तौर से भ्रष्टाचार और गैरकांग्रेसवाद के आधार पर लड़ा गया था जिस में विपक्षी दलों के आपसी विलय और चुनावी तालमेल के कारण कांग्रेस सत्ता से बाहर तो हो गई थी लेकिन देश का आम मतदाता किसी एक पार्टी के पक्ष में स्पष्ट

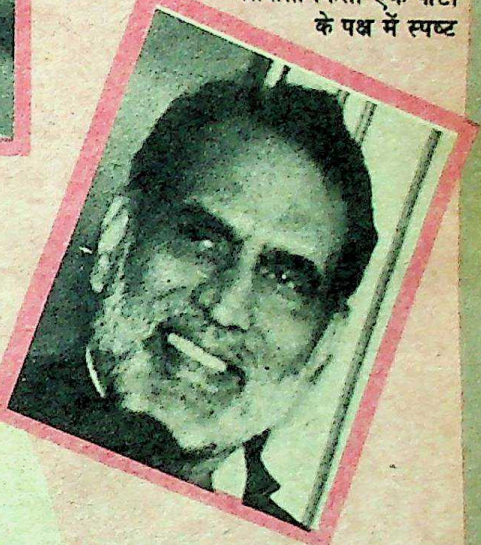

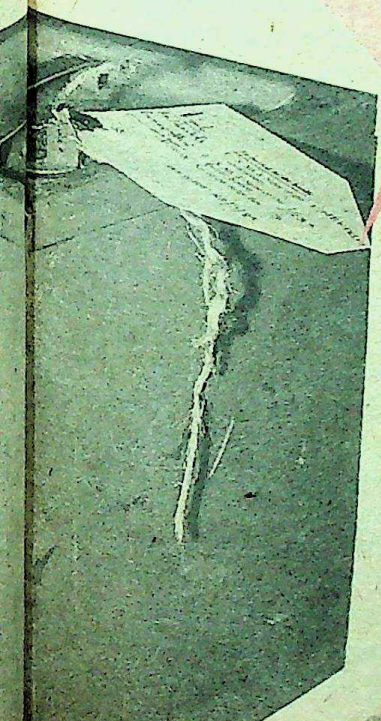

पिछले पंद्रह महीनों में दो सरकारें बदलने के बावजूद देश मध्यावधि चुनाव के कगार पर आ खड़ा हुआ है. और अब यह उम्मीद की जा रही है कि मध्यावधि चुनाव देश को एक बार फिर स्थायी सरकार चुन कर देगा. लेकिन प्रश्न यह है कि क्या मंडल, मंदिरमसजिद की मानसिकता से ग्रस्त भारतीय समाज इस उम्मीद पर खरा उतर पाएगा?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राय देने में असफल रहा था. परिणामस्वरूप एक ऐसी अल्पसंख्यक सरकार ने जन्म लिया जो बाह्य समर्थन पर टिकी थी. आंतरिक टकराव के कारण यह अल्पसंख्यक सरकार 11 महीने में ही चली गई. उस के स्थान पर जोड़तोड़ से बनी अति अल्पसंख्यक चंद्रशेखर सरकार सत्तारूढ हुई जिस का चार महीने में ही अवसान हो गया. इस की परिणति इस नए चुनाव में हुई है.

पिछले 15 महीनों के दौरान देश के सामाजिक और राजनीतिक जीवन में इतना उथलपुथल हुआ है कि पुराने गठबंधन तथा समीकरण बदल गए हैं. बदली हुई स्थितियों में राजनीतिक दलों ने अपने नए धरातल खोजने और बनाने का प्रयास किया है. एक प्रकार से भारतीय राजनीति संक्रमण के दौर में पहुंच गई है जहां से उसे एक निश्चित स्वरूप प्राप्त करने में अभी और समय लग सकता है. अतः आगामी चुनाव सन 1989 और 1980 के चुनावों से अलग हट कर हो सकते हैं.

ऐसी स्थिति में लोगों के मन में यह स्वाभाविक प्रश्न गूंज रहा है कि क्या बदली हुई वास्तविकताओं के बीच अगला चुनाव स्पष्ट जनादेश देने में सफल होगा या पिछले चुनाव का इतिहास दोहराया जाएगा और एक बार फिर त्रिशंकु लोकसभा जन्म लेगी.

मई 1991 के लोकसभा चुनाव बहुत कुछ 1980 के मध्यावधि चुनाव जैसी पृष्ठभूमि में हो रहे हैं. उस समय जनता पार्टी का विभाजन होने के बाद मोरारजी भाई देसाई की सरकार ढाई वर्ष में गिर गई थी और कांग्रेस के समर्थन पर बनी चरणसिंह सरकार संसद का सामना किए बिना ही कुछ ही दिनों में चल बसी थी. उन्हीं की कार्यवाहक सरकार की देखरेख में नए चुनाव कराए गए थे, जैसी कि इस समय चंद्रशेखर सरकार की स्थिति है.

जनता पार्टी के बिखराव के बाद 1980 के मध्यावधि चुनाव के लिए गैरकांग्रेसवाद का नारा गौण बन गया था और विभाजित विपक्ष के कारण इंतजार में बैठी श्रीमती इंदिरा गांधी इस चुनाव में जीत कर पुनः सत्ता के शिखर पर पहुंच गई थीं. उस समय जनता पार्टी में बिखराव के कारण चुनाव लाभ श्रीमती गांधी को मिला था परन्तु विभाजित विपक्ष उस समय कांग्रेस के मध्यमार्गी वैधानिक धारा के आसपास घूम रहा था क्योंकि मोरारजी भाई देसाई, जगजीवनराम, चौ. चरणसिंह और चंद्रशेखर जैसे उस के नेता कांग्रेस की पृष्ठभूमि से ही आए थे. उस समय नवगठित भारतीय जनता पार्टी ने गांधीवादी समाजवाद में आस्था प्रकट की थी. परंतु सन 1990 में विपक्षी दलों के बिखराव ने वैचारिक और सैद्धांतिक आधार को पकड़ कर अपनी जमीन तैयार कर ली है.

राजनीतिक व सामाजिक ध्रुवीकरण

पिछले 15 महीनों के राजनीतिक घटनाक्रम के परिणामस्वरूप अगले चुनाव के लिए मंडल और मंदिर महत्त्वपूर्ण योजकतत्त्व बन कर उभरे हैं. इन के कारण राजनीतिक और सामाजिक ध्रुवीकरण को बढ़ावा मिला है. इसी ध्रुवीकरण को राजनीतिक पार्टियों ने अपने मूल धरातल के रूप में ग्रहण कर लिया है.

तत्कालीन प्रधान मंत्री विश्वनाथ प्रताप सिंह ने मंडल आयोग की सिफारिशों के अनुसार पिछड़ी जातियों को सरकारी सेवाओं में आरक्षण देने की घोषणा कर के अपने विरोधियों के खिलाफ इसे एक टाइम बम के रूप में उपयोग किया था. इस के माध्यम से इन्होंने देश की पिछड़ी जातियों, हरिजनों और मुसलिम समुदाय को एक राजनीतिक मंच पर ला कर खड़ा करने का प्रयास किया है और बदली राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में बिखरे दलितवाद को नया रूप प्रदान कर दिया है. वास्तव में विश्वनाथ प्रताप सिंह का मंडलवाद बहुतसे तमिलनाडु के पुराने द्रविड़ मुन्नेत्र कषगम की पिछड़े वर्ग की राजनीति से मेल खाता है जिस के चलते तमिलनाडु में सवर्ण समुदाय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

11 मास तक भी सरकार न चला सकने वाला राष्ट्रीय मोर्चा क्या मंडल आयोग के आधार पर स्पष्ट बहुमत ले पाएगा?

राजनीतिक और सामाजिक सत्ता से बाहर हो गए.

मंडलवाद की अवधारणा सवर्ण विरोधी है और उस का मानना है कि 85% पिछड़े वर्ग हरिजनों तथा मुसलिम समुदायों पर 15% स्वर्णों की सत्ता एक लोकतांत्रिक विकृति है. अतः सामाजिक न्याय के लिए इन को सत्ता में भागीदार बनाना जरूरी है. विश्वनाथ प्रताप सिंह ने मंडलवाद को इस ढंग से परिभाषित किया कि चार दशकों से सत्तारूढ कांग्रेस का परंपरागत सामाजिक आधार ही खिसक गया, और भारतीय जनता पार्टी की सवर्ण आधारित हिंदू एकता की कल्पना पर राजनीतिक हमला बोल दिया गया.

भारतीय जनता पार्टी ने इस का जवाब विश्व हिंदू परिषद के राम जन्मभूमि मंदिर के आंदोलन में सीधे कूद कर दिया. पार्टी नेता लालकृष्ण आडवाणी ने सोमनाथ से अयोध्या तक की 10 हजार किलोमीटर की यात्रा का अभियान छेड़ा. इस दौरान उमड़ी भीड़ ने आडवाणी और भाजपा को न केवल नया जनाधार प्रदान कर दिया, मंडल और राम के इसी टकराव में विश्वनाथ प्रताप सिंह की सरकार भी चलती बनी.

इस के बाद राम भाजपा की राजनीति का एक महत्त्वपूर्ण मुद्दा बन गया. इस का आभास उस के जयपुर अधिवेशन में स्वीकृत राम और रोटी के नारे से मिलता है. भाजपा ने प्रखर हिंदूवादी पहचान प्रकट कर के अपनी राजनीति को देश के बहुसंख्यक समाज के साथ जोड़ दिया है. इस के साथ ही उस ने धर्मनिरपेक्षता और अल्पसंख्यकवाद के नाम पर हो रहे हिंदू हितों की उपेक्षा के मामलों को बेलाग ढंग से उठाया है. चुनाव के दौरान इस नए ध्रुवीकरण के और भी साफ होने की संभावना है. कांग्रेस इस स्पष्ट ध्रुवीकरण के बीच असहाय स्थिति में खड़ी दिखाई पड़ रही है क्योंकि उस के परंपरागत जनाधार के इन दोनों के बीच बंटने का खतरा उत्पन्न हो गया है. कांग्रेस के सामने ऐसी राजनीतिक लाचारी की स्थिति पहली बार ही पैदा हुई है.

देश के लोकतांत्रिक इतिहास में यह पहला मौका है जब कांग्रेस और गैरकांग्रेस के आधार पर चुनाव होने के बजाय कांग्रेस, जनता दल (सहयोगी दलों सहित) और भाजपा के बीच तिकोना संघर्ष होगा. अतः अगले चुनाव में इस आधार पर आकलन करना सही नहीं होगा कि कांग्रेसी विरोधी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मतों का विभाजन कितना और कैसे हो रहा है. सन 1980 के चुनाव में विभाजित विपक्ष के कारण कांग्रेस ने 42.5% वोट पा कर 353 सीटें हासिल की थीं लेकिन 1989 में जब विपक्ष ने मिल कर कांग्रेस का मुकाबला किया था तो वह 39.7% वोट पा कर भी 194 सीटें ही प्राप्त कर सका था.

बदली हुई परिस्थितियों में मतों के विभाजन का सिद्धांत शायद इस रूप में काम नहीं कर सकेगा. इस के बजाय मंडल विरोधी मतों का बटंवारा होने से जनता दल को और मंदिर विरोधी मतों के बंटने से भाजपा को लाभ मिलने की अधिक संभावना होगी. लेकिन अभी यह कहना कठिन है कि इस चुनाव में वोटों के विभाजन का सिद्धांत कितना और किस ढंग से काम करेगा.

केरल में हाल के जिला परिषदों के चुनाव में मंडलवाद ने कुछ निर्णायक भूमिका निभाई है. मंडल के नाम पर हुए जातीय ध्रुवीकरण के कारण कांग्रेस बुरी तरह पराजित हो गई जबकि 1989 के लोकसभा चुनाव में उस ने 20 में से 17 सीटें जीती थीं. ताजा चुनावों में 'वामपंथी गठबंधन' ने बेहतर समर्थन मिलने के कारण 14 में 12 जिला परिषदों पर कब्जा कर लिया और कांग्रेस मात्र एक जिला परिषद में ही जीत सकी है.

मंडल के असर से कांग्रेस के मुसलिम लीग के साथ पुराने संबंध टूट गए हैं. यदि मुसलिम समुदाय का यह कांग्रेस विरोधी रुख लोकसभा चुनाव में उभरता है तो यह उस के लिए खतरनाक संकेत होगा. वैसे मुसलिम समुदाय अपने हित में देश की मंडल प्रेरित आरक्षण लाबी के साथ जुड़ रहा है.

लोकसभा चुनाव में सत्ता के प्रमुख दावेदारों के चुनावी मुद्दे साफ हैं. जनता दल के अपने राष्ट्रीय मोरचे और वामपंथी दलों के साथ मुख्य राजनीतिक मुद्दे होंगे. मंडल आयोग की सिफारिशों के अनुसार पिछड़ी जातियों के लिए आरक्षण और बाबरी मसजिद विवाद जबकि भाजपा राममंदिर के निर्माण और नकली धर्मनिरपेक्षता के मुद्दे को पूरी तौर से उभारेगी.

कांग्रेस किसी खास राजनीतिक मुद्दे के बजाय पिछली दो सरकारों की विफलताओं और राजनीतिक स्थायित्व को अपने चुनाव अभियान में तरजीह देगी. आठवें दशक में जनता पार्टी की टूटफूट और थोड़े समय में ही उन की सरकार के पतन का मनोवैज्ञानिक लाभ कांग्रेस को मिला था और श्रीमती गांधी तीन वर्ष बाद ही धमाके के साथ पुनः सत्ता में लौट आई थीं. राजीव गांधी भी अपनी मां के इस कमाल को सवा साल में दोहरा कर सत्ता में वापस लौटना चाहेंगे.

भावात्मक मुद्दों पर चुनाव होगा

परंतु सन 1980 की और आज की सामाजिक मनःस्थिति में काफी अंतर दिखाई पड़ रहा है. जनता पार्टी के प्रयोग के विफल होने पर लोगों के मन में काफी निराशा पैदा हुई थी इस से राजनीतिक दल भी नहीं बचे थे. इस कारण विपक्षी दलों को पुनः एक मंच पर इकट्ठा होने में 10 वर्ष लग गए थे. इस बार जनता दल सरकार आरक्षण और मंदिर जैसे भावात्मक मुद्दों पर टूटी है जिस का राजनीतिक परीक्षण लोकसभा चुनाव में होना है. फिर भी राजनीतिक स्थायित्व के नाम पर कांग्रेस और राजीव गांधी को चुनावी लाभ मिलने की संभावना है क्योंकि आर्थिक संकट के दौर में आम जनता राजनीतिक अस्थिरता को देश के लिए अधिक घातक समझती है परंतु मंडल और मंदिर जैसे भावात्मक मुद्दों के बीच स्थिरता का मुद्दा कितने मतदाताओं को कितना और कहां तक प्रभावित करेगा, अभी कहना कठिन है.

इस के अलावा कांग्रेस और उस के नेता राजीव गांधी समय की हीनभावना से ग्रस्त हैं. राजीव गांधी चुनाव के समय हर हालत में अपने को कुरसी पर देखना चाहते थे जिस से चुनाव के लिए सरकारी सुविधाएं प्राप्त हो सकें. इस के लिए उन्होंने परदे के पीछे एड़ीचोटी के प्रयास भी किए लेकिन विपक्ष

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

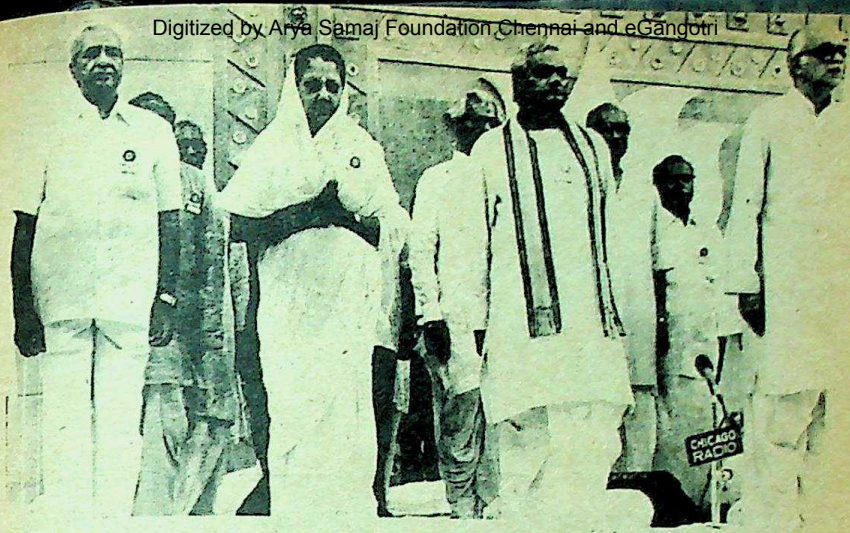

मध्यावधि चुनावों में 'राम' भारतीय जनता पार्टी की राजनीति का मुख्य मुद्दा होगा.

ने उन के राजनीतिक दांवपेंच को सफल नहीं होने दिया. इस प्रकार तीनों प्रमुख दल समान रूप से सत्ता के बिना ही चुनाव मैदान में उतर रहे हैं.

तीन प्रमुख दलों के अलावा काम-चलाऊ प्रधान मंत्री चंद्रशेखर की पार्टी जनता दल (स) भी चुनाव मैदान में है परंतु वह मुख्य चुनाव संघर्ष से बाहर है क्योंकि उसे स्पष्ट जनाधार प्राप्त नहीं है.

ऊपरी तौर से अगला चुनाव राष्ट्रीय स्तर पर तिकोना ही होगा क्योंकि तीनों प्रमुख दल कांग्रेस, भाजपा और जनता दल अपनीअपनी जीत का दावा करते हैं, फिर भी विभिन्न राज्यों में संगठनात्मक अपील और मजबूती के आधार पर दो दलों के बीच संघर्ष होगा.

दक्षिण भारत के तमिलनाडु और आंध्र प्रदेश राज्यों में कांग्रेस का सीधा मुकाबला द्रविड़ मुन्नेत्र कषगम और तेलगू देशम से होगा जबकि कर्नाटक में कांग्रेस और जनता दल की टक्कर होगी. केरल में वामपंथी गठबंधन कांग्रेसी मोरचे से टक्कर लेगा. इन राज्यों में जद और भाजपा की उपस्थिति नगण्य होगी परंतु महाराष्ट्र में भाजपा शिवसेना गठबंधन और कांग्रेस का मुकाबला होगा. उड़ीसा में कांग्रेस और जनता दल भिड़ेंगे जबकि पश्चिम बंगाल में वामपंथी मोरचा और कांग्रेस के बीच फैसला होगा.

परंतु चुनाव का वास्तविक फैसला गुजरात सहित आठ हिंदी राज्यों में होगा जहां पर तीनों प्रमुख दल सत्ता के दावेदार हैं. पिछले चुनाव में कांग्रेस की इन राज्यों में भारी पराजय हुई थी जबकि उसे दक्षिणी राज्यों से अधिक सीटें मिली थीं. इस बार के चुनाव में ये आठें राज्य मंडल और मंदिर के बीच उपजे संघर्ष का युद्धक्षेत्र होंगे, जहां कांग्रेस इस भावनात्मक विवाद में हासिए पर जा सकती है. लोकसभा की आधी यानी करीब 250 सीटें इन्हीं राज्यों से चुनी जाती हैं. राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में राष्ट्रीय मोरचा दलों और वामपंथी गठबंधन के साथ जनता दल का पलड़ा भारी दिखाई पड़ता है परंतु इस सब के बीच लोगों के मन में यह आशंका पैदा हो रही है कि कहीं किसी एक दल को स्पष्ट बहुमत प्राप्त न हो सकने के कारण एक बार फिर त्रिशंकु लोकसभा न हो जाए और मिलीजुली सरकार का बनाना अनिवार्य राजनीतिक मजबूरी बन जाए ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शून्यकाल का शून्यालाप

इस स्तंभ में कुछ ऐसे प्रश्न पूछे जाते हैं जो सचमुच पूछे नहीं जाते, पर पूछे जाने चाहिए. यहां प्रस्तुत हैं इस प्रकार के कुछ महत्त्वपूर्ण प्रश्न और उन के संभावित उत्तर.

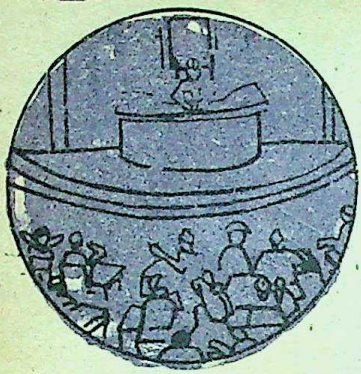

राजीव गांधी मास्को क्यों गए? राष्ट्रीय सरकार क्या होती है?

तथा अन्य प्रश्न...

सदस्य : असम समस्या हल करने के लिए आप क्या कर रहे हैं?

मंत्री : किस समस्या की बात कर रहे हैं आप? पहले एक समस्या थी विदेशियों के घुस आने की. जैसे ही आंदोलनकारियों को सत्ता मिली, वह समस्या भुला दी गई. फिर बोड़ो समस्या सामने आई. वह वार्त्ताओं के दौर में उलझा दी गई. फिर 'उल्फा' समस्या पैदा हुई. उसे हल करने के लिए हम ने कर्फ्यू लगाने की शैली अपनाई अर्थात राष्ट्रपति राज लागू कर दिया.

सदस्य : फिर भी यदि समस्या हल न हुई तो?

मंत्री : हमारे पास दूरदर्शन है. आप ने देखा होगा कि हर सप्ताह पंजाब पर एक दो धारावाहिक और टेलीफिल्म दिखाते रहते हैं. असम पर भी एक धारावाहिक प्रसारित करवा देंगे.

सदस्य : पंजाब और कशमीर का क्या हाल है?

मंत्री : आजकल फारूक अब्दुल्ला भारत के पक्ष में बयान दे रहे हैं. इस से लगता है कि वहां हालात सुधर रहे हैं. वैसे उन की मरजी यह बताई जाती है कि कशमीर के मुख्य मंत्री को प्रधान मंत्री कहा जाए. कशमीर में तो नहीं, यह हम ने पंजाब में आजमाया है. अब वहां गवर्नर नहीं, गवर्नर जनरल है. (पंजाब के गवर्नर जनरल ओमप्रकाश मल्होत्रा).

सदस्य : क्या यह सच है कि राजीव गांधी सत्ता पाने से डर रहे हैं?

मंत्री : आजकल राजीव गांधी सत्ताधारी की तरह ही व्यवहार कर रहे हैं. खाड़ी में युद्ध शुरू हुआ तो न देश का प्रधान मंत्री विदेश यात्रा पर गया, न कोई और उन्हें यह स्थिति पसंद नहीं आई. उन्होंने पत्र लिख दिया. उन के पत्र ने विदेश मंत्री, विदेश सचिव आदि को विदेश यात्रा भत्ता कमाने का मौका दे दिया.

यह ठीक है कि वह प्रधान मंत्री नहीं कहलाते, पर मुख्य मंत्रियों को पहले की तरह लुढ़का रहे हैं. कर्नाटक और आंध्र के मुख्य मंत्री तो उन्होंने बदल ही दिए. महाराष्ट्र के शरद पवार के पौधे को हिला कर देख लिया कि इस की जड़ें कितनी गहरी हैं.

सदस्य : अमरीकी विमानों को ईंधन की सुविधा दे कर क्या आप अमरीका के समर्थक नहीं बन गए हैं?

मंत्री : वे भोले लोग अब भी यह समझते हैं कि रूस और अमरीका दो पार्टी हैं. अमरीका का विरोध करेंगे तो रूस खुश होगा. हालत यह है कि खाड़ी का मामला हो या लिथुआनिया का, रूस अपनी चमड़ी बचाता फिर रहा है. अब अमरीका का विरोध करने का साहस उस में नहीं है.

हम तटस्थ हैं. अगर अमरीकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विमानों को ईंधन मुहैया तो उधर इजराइल का विरोध भी करते हैं. पाकिस्तान भी तो ऐसा ही कर रहा है. अमरीका को अपनी फौज दे दी और सड़कों पर बुश का पुतला जला कर अरब समर्थक भी बन गया.

सदस्य : क्या दोनों महाशक्तियों के मिलन के कारण गुटनिरपेक्ष आंदोलन अर्थहीन नहीं हो गया है?

मंत्री : एक अंतर्राष्ट्रीय संगठन की अध्यक्षता का पुरस्कार पाने के अलावा हमें उस से क्याक्या लाभ मिले हैं? जब भी कोई संकट आया मदद रूस या अमरीका ने ही दी है. गुटनिरपेक्ष होने का अर्थ है—जब भी जिस से लाभ मिले, ले लो.

सदस्य : क्या भारतीय जनता पार्टी का 'राम और रोटी' का नारा सफल होगा?

मंत्री : धर्म का मामला बड़ा विचित्र होता है. जब मुकाबला धर्मात्माओं के बीच हो तो कट्टरता बढ़ती जाती है. अगर कोई द्विविधा सामने आ गई तो नई कहावत बन जाएगी—रोटी मिली न राम.

सदस्य : भाजपा मंत्रिमंडलों का भविष्य?

मंत्री : अभी इंका उन मंत्रिमंडलों को ढाहने में लगी है, जहां उन्हें सत्ता की कुछ उम्मीद है. भारतीय जनता पार्टी और जनता दल के बीच दो मुकाबले हो चुके हैं. राजस्थान में अपनी सरकार बचाने के लिए भैरोंसिंह शेखावत ने जनता दल को विभाजित करवा दिया था. इस का बदला बिहार में लिया गया. वहां भाजपा विधायक दल के दो टुकड़े हो गए. लालूप्रसाद और भैरोंसिंह दोनों बच गए.

सदस्य : खाड़ी युद्ध के कारण कुछ वस्तुओं की मांग बढ़ गई है. हम यहां से क्या भेज रहे हैं?

मंत्री : हमें नैतिकता का बुखार बड़ी जल्दी चढ़ता है. युद्ध के कारण वहां कुछ वस्तुओं की मांग बढ़ी है और लोग भिजवा रहे हैं. इंडोनेशिया ने ताबूत भिजवाने में बाजी मारी है. सऊदी अरब ने जूट की बोरियां हम से मांगी हैं. पता नहीं हम भेज सकेंगे या नहीं क्योंकि पश्चिम बंगाल की वामपंथी सरकार के नेताओं में अनोखी नैतिकता जाग गई है. वे कहते हैं कि पटसन की बोरी भेजने से अमरीका और उस के साथी देशों को युद्ध में सहायता मिलेगी, इसलिए बंगाल के किसानों और व्यापारियों का गला नैतिकता के नाम घोंट दिया जाना चाहिए. हालांकि दुनिया भर में युद्धरत देशों के पास कम्यूनिस्ट देशों के हथियार हैं, आतंकवादियों के हाथों में रूसी, चीनी बंदूकें और चेकोस्लोवाकिया की पिस्तौलें हैं.

सदस्य : राजीव गांधी मास्को क्यों गए?

मंत्री : जब कहीं युद्ध होता है और शांति प्रयास शुरू होते हैं, भारतीय नेताओं के पांवों में विदेश यात्रा के लिए खुजली शुरू हो जाती है. कुछ साल पहले जब अफगानिस्तान से रूसी फौजें हटने के लिए समझौता हो रहा था और भारत को कोई पूछ नहीं रहा था तब प्रधान मंत्री राजीव गांधी ने पाकिस्तान के तत्कालीन राष्ट्रपति जिया उल हक को विचारविमर्श के लिए भारत आने का निमंत्रण दिया था. जिया उल हक ने इसे ठुकरा दिया था. इसलिए इस बार सोवियत संघ के शांति प्रयासों के संबंध में विचारविमर्श के लिए राजीव गांधी ने गोरबाचौफ को भारत आने का बुलावा देने की हिम्मत नहीं की. बिन बुलाए ही वह बरात में शामिल होने के लिए मास्को चले गए. अफसोस कि अमरीका के अड़ंगे ने शादी नहीं होने दी. फलतः राजीव गांधी और गुटनिरपेक्ष देश के विदेश मंत्री 'न घर के न घाट के' की स्थिति में पड़े रह गए.

सदस्य : राष्ट्रीय सरकार क्या होती है?

मंत्री : ऐसे नेताओं की सरकार, जिन्हें अपनी पार्टी के द्वारा सत्ता पाने की उम्मीद न हो. वैसे बसंत साठे और अटलबिहारी वाजपेयी जैसे नेताओं के विचार में राष्ट्रीय सरकार का विभिन्न दलों की सरकार, अर्थात राष्ट्र के विभिन्न राजनीतिक दलों का एक जगह बैठ जाना.—गोविंद शर्मा ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रीय कृषिनीति की असली कसौटी

लेख • भानुप्रताप सिंह

जनता दल ने यह वादा किया था कि वह एक राष्ट्रीय कृषि नीति घोषित करेगी, जो कृषकों के प्रति अधिक न्यायपूर्ण होगी और कृषि उत्पादन बढ़ाने में अधिक सहायक होगी. भूतपूर्व प्रधान मंत्री विश्वनाथ प्रताप सिंह के नेतृत्व में जो जनता दल सरकार 11 महीने सत्तासीन रही, वह अपने नेक इरादों का ही इजहार करती रही, नीति निर्धारित करने में पूर्णतया विफल रही. जो अब सत्तासीन हैं, वे भी उसी वादे से बंधे हैं और नई सरकार में उप प्रधान मंत्री तथा कृषि मंत्री के पद पर भी वही व्यक्ति आसीन हैं, जो पहले इन पदों पर थे. किंतु 14 महीने का समय बीतने के बाद भी नई कृषि नीति की घोषणा नहीं हो सकी है. इस विलंब का कारण क्या है?

कारण यही है कि कोई न्यायोचित कृषि नीति तब तक बन ही नहीं सकती, जब तक कि संपूर्ण ग्रामीण समाज के प्रति अभी तक जो गैरबराबरी का व्यवहार होता रहा है, उसे समाप्त करने का दृढ़ निश्चय नहीं किया जाता, परंतु देश के निहित स्वार्थ इतने प्रबल हैं कि उन की सहमति के बिना, देश के नेताओं में गैरबराबरी का व्यवहार समाप्त करने का साहस नहीं है. वे केवल शब्दाडंबर द्वारा किसानों को भुलावे में रखना चाहते हैं.

किसी भी जनसमूह की जीवन दशा का सब से विश्वसनीय संकेत उन की कुल मृत्यु दर, शिशु मृत्यु दर, साक्षरता दर तथा संपूरक आहारों की खपत माने जाते हैं. आगे

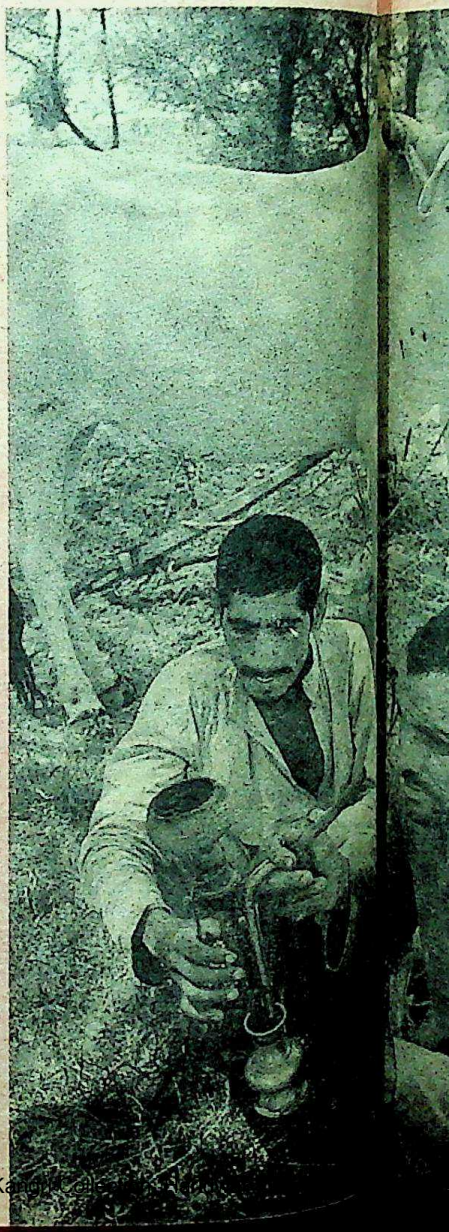

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कृषि प्रधान देश होते हुए भी भारत के किसानों के साथ गैरबराबरी का व्यवहार व सरकारी मूल्य नीति के दोषपूर्ण होने का परिणाम ही किसानों की दुर्दशा है. जिसे दूर करने के लिए अंतर्देशीय उपनिवेशवाद की ओर बढ़ते कदमों को रोक, ग्रामीण व शहरी विषमताओं की दूरी को कम करने के लिए कदम उठाना निहायत जरूरी है.

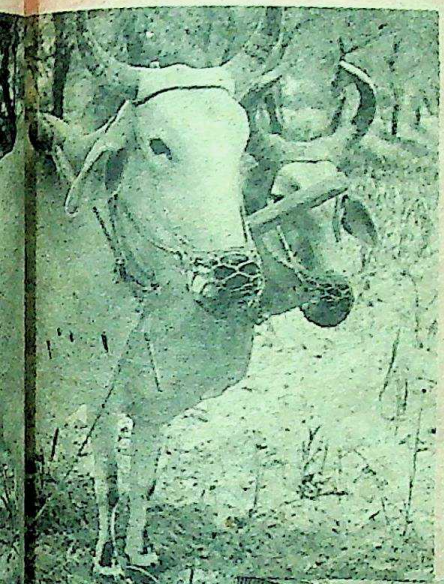

तालिका में गांवों और शहरों में कुल मृत्यु दर, शिशु मृत्यु दर तथा साक्षरता दर के आंकड़े प्रस्तुत हैं:

	गांव	शहर
कुल मृत्यु दर प्रति हजार	11.9	7.3
कुल शिशु मृत्यु दर प्रति हजार	105	62
साक्षरता दर प्रति सैकड़ा (1981)	29.6	57.6

किसानों की दुर्दशा संयोग की बात नहीं है, वह देश के शासकों द्वारा लिए गए निर्णयों का परिणाम है (बाएं).

शासकों ने आम आदमी को मिलने वाले हिस्से में कटौती कर के उसे शहरी ठाटबाट को बढ़ाने में व्यय किया, जिस का लाभ विशिष्ट वर्ग के लोगों को ही मिला (नीचे).

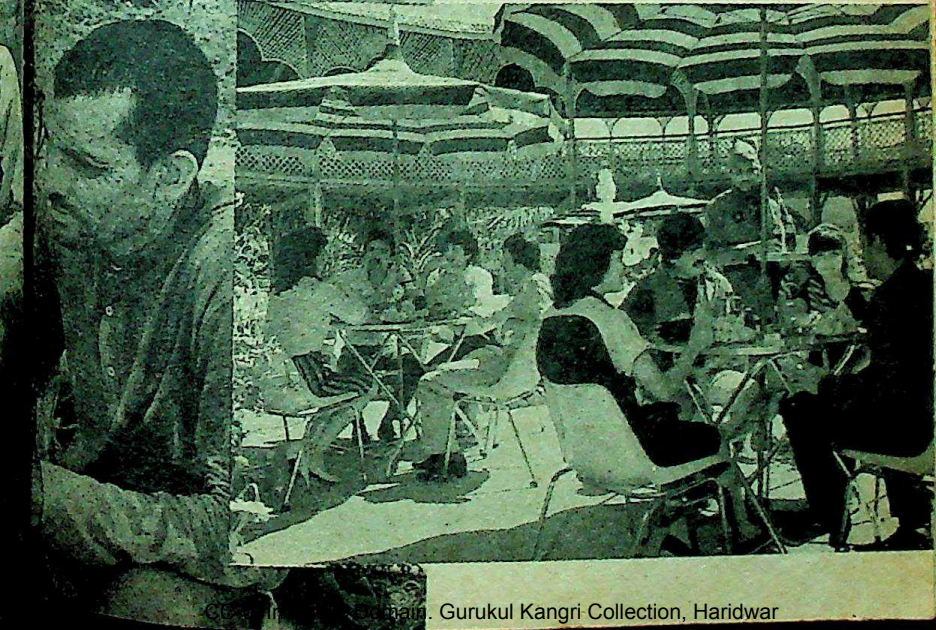

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जहां तक संपूरक आहारों की खपत का प्रश्न है, उस के आंकड़े भी आगे दिए गए हैं, जिन से स्पष्ट है कि औसत ग्रामीण की खपत करने की क्षमता उतनी भी नहीं है, जितनी शहरों के सब से कमजोर वर्ग मलिन बस्तियों के निवासियों की है.

स्वस्थ रहने के लिए संपूरक आहारों की न्यूनतम आवश्यकता

100 प्रतिशत की तुलना में औसत ग्रामीण और मलिन बस्तियों के निवासियों को वास्तव में उपलब्ध मात्राएं (प्रतिशत में)

	मलिन बस्ती निवासी	ग्रामीण निवासी
दूध	28.7%	46.3%
चीनी, गुड़	63.3%	60.0%
तेल, घी	30.0%	22.5%
फल	86.7%	50.0%

ग्रामीणों की गरीबी का मूल कारण यहां की पिछड़ी हुई कृषि है. यद्यपि भारतीय कृषि में विकास की अद्भुत संभावनाएं हैं, उस की उत्पादकता (उत्पादन प्रति हेक्टेयर) विकसित देशों की तुलना में लगभग एकतिहाई और विश्व की तुलना में दोतिहाई है. प्रश्न उठता है कि कृषि संभावनाओं और उपलब्धियों में इतना बड़ा अंतर क्यों है? इस का स्पष्ट कारण है: कृषि की अवहेलना और कृषकों के साथ अनुचित व्यवहार.

प्रायः सकल राष्ट्रीय आय की वृद्धि दर के आंकड़े प्रस्तुत कर यह दावा किया जाता है कि देश पहले की तुलना में अधिक तेजी से प्रगति कर रहा है. यह बात पूरी अर्थव्यवस्था के लिए सच हो सकती है परंतु यदि विश्लेषण कर के देखा जाए कि राष्ट्रीय आय का कितना अंश किस को मिला तो नतीजा यह निकलता है कि देश की प्रगति का अधिकांश लाभ संगठित वर्गों के लोगों को ही मिला है, और उन में से भी सत्ता के जो जितना निकट है, वह उतना ही लाभान्वित हुआ है. जहां तक कृषकों का संबंध है, उन की वास्तविक आय (क्रय शक्ति) बढ़ने के बजाय घटी है.

प्रश्न उठता है कि क्या स्वराज्य की लड़ाई राष्ट्र के ऊपर के 15% लोगों के लाभ

देश की प्रगति का अधिकांश लाभ संगठित वर्गों के लोगों को ही मिला है.

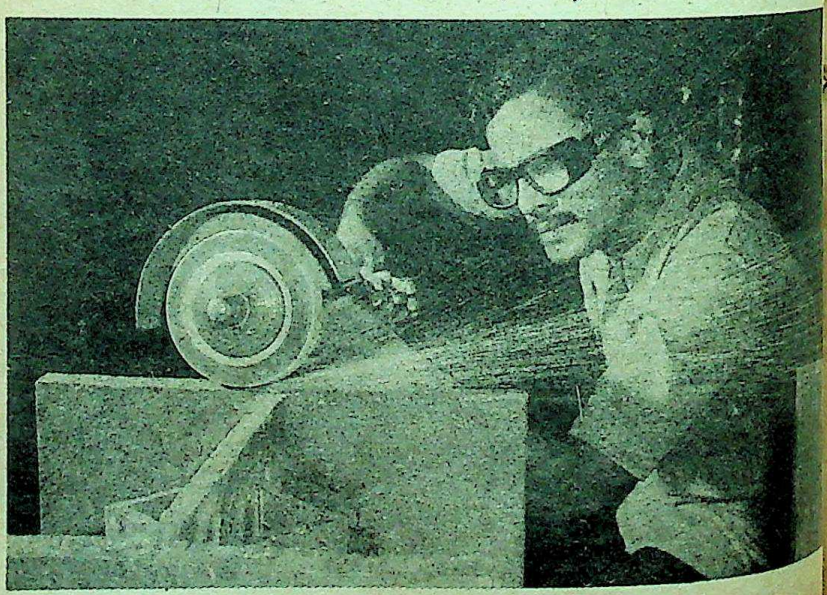

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समान नागरिकता और समान अवसर जैसे संवैधानिक वादे गाँवों की पृष्ठ भूमि में पूरी तरह खोखले साबित हुए हैं. दरिद्रता गांवों का चरित्र मान लिया गया है.

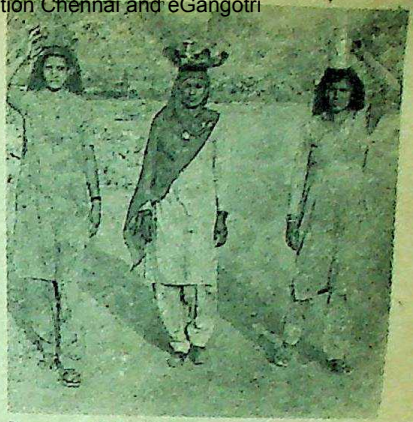

के लिए ही लड़ी गई थी? उन निदेशक सिद्धांतों का क्या हुआ, जो हमारे संविधान में अंकित हैं और जिन में बारंबार समान नागरिकता और समान अवसर के वादे किए गए हैं?

किसानों की दुर्दशा संयोग की बात नहीं है. वह देश के शासकों द्वारा लिए गए निर्णयों का फल है. वैसे तो प्रत्येक कार्यक्रम का कुछ न कुछ प्रभाव एक दूसरे पर पड़ता है, परंतु आम आदमी को राहत पहुंचाने के लिए कृषि एवं ग्रामीण विकास, सिंचाई, शिक्षा और चिकित्सा पर अधिक व्यय किया जाना चाहिए था, परंतु हुआ ठीक इस का उलटा, जैसा कि नीचे की तालिका में देखा जा सकता है. उपर्युक्त चारों मदों पर प्रथम योजना में हुए व्यय की (कुल योजना व्यय के प्रतिशत के रूप में) तुलना सातवीं योजना में इन्हीं चारों मदों पर व्यय से (कुल योजना व्यय के प्रतिशत के रूप में) की गई है:

मदें	प्रथम योजना व्यय (प्रतिशत में)	सातवीं योजना व्यय (प्रतिशत में)
कृषि एवं ग्रामीण विकास	14.8	10.9
सिंचाई	22.2	9.4
शिक्षा	7.6	3.5
चिकित्सा एवं परिवार नियोजन	5.0	3.7
	49.6	27.5

यद्यपि उपर्युक्त चारों मदों पर व्यय की रकमों में काफी वृद्धि हुई है, परंतु प्रतिशत के रूप में भारी गिरावट आई है. शासकों की नीयत प्रतिशत के आंकड़ों में ही देखी जा सकती है. प्रतिशत में स्पष्ट गिरावट को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि स्वराज्य से मिलने वाली खुशहाली में आम आदमी का हिस्सा बहुत कम कर दिया गया है. आम आदमी को राहत पहुंचाने वाली योजनाओं पर व्यय (प्रतिशत के रूप में) कम कर के उस का प्रयोग सरकारी उद्यमों तथा शहरी ठाटबाट को बढ़ाने पर किया गया है, जिस का लाभ विशिष्ट वर्ग के लोगों को ही मिला है.

गांवों में बसने वाले लोग एक निम्न कोटि के प्राणी माने जाते हैं. उन का दरिद्र, निरक्षर एवं फटेहाल होना एक स्वाभाविक चरित्र मान लिया गया है. उन के प्रति कभीकभी दोचार शब्द सहानुभूति में कह देना, कहने वालों की उदारता का परिचायक माना जाता है, परंतु गांव वालों को अन्य नागरिकों के समकक्ष खड़ा करने की बात पूर्णतया अव्यावहारिक समझी जाती है. अपने देश के समाजवादी नेताओं ने शहरी समाज की विषमताओं का तो दूरबीन एवं खुर्दबीन से सूक्ष्म अध्ययन किया है, परंतु जहां तक गांवों में व्याप्त एवं शहरों और गांवों के बीच बढ़ती हुई विषमताओं का प्रश्न है, उन्होंने गांधीजी के तीन बंदरों की नीति अपना ली है, अर्थात उसे न देखेंगे, न उस के बारे में बोलेंगे, और न सुनेंगे.

अब आइए देखें कि आखिर अपने देश में विषमता निरंतर बढ़ती क्यों जा रही है? इसे जानने के लिए यह समझना आवश्यक है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि आय के स्रोत क्या हैं, और उन स्रोतों तक किस की कितनी पहुंच है? आय के मुख्य स्रोत भूमि और कलकारखाने माने जाते रहे हैं. परंतु उन से कम महत्त्वपूर्ण नहीं है—पूंजी, नई तकनीक, सहायक सेवाएं, जैसे संस्थागत ऋण, बिजली, संचार एवं विपणन की सुविधाएं. स्वास्थ्य सेवाएं भी महत्त्वपूर्ण हैं, क्योंकि कोई रुग्ण व्यक्ति, उसे अन्य चाहे जितनी सुविधाएं प्राप्त हों, उन्नति नहीं कर सकता. नई तकनीक का प्रयोग निरक्षर नहीं कर सकते हैं, अतः शिक्षा का प्रसार भी खुशहाली के लिए अनिवार्य रूप से आवश्यक है.

संक्षेप में कहा जा सकता है कि जिस समुदाय की जितनी पहुंच खेतों, कारखानों के अतिरिक्त संस्थागत ऋण, बिजली, संचार, विपणन, शिक्षा एवं चिकित्सीय सुविधाओं तक होगी, उसे उतना ही संपन्न होने का अवसर मिलेगा. कृषि/ग्रामीण क्षेत्र और कृषिइतर/नगरीय क्षेत्र के बीच आय तथा संसाधनों का वितरण कितना असमान रहा है, इसे निम्नलिखित तालिका में दर्शाया गया है:

	कृषि/ ग्रामीण क्षेत्र	शेष/ नगरीय क्षेत्र
कर्मियों की संख्या (1981)	66.5%	33.5%
सकल राष्ट्रीय आय में औसत योगदान (1980-81 से 85-86 तक)	33.6%	66.4%
सकल पूंजी विनिर्माण में अंश (1980-81 से 87-88 तक)	12.8%	87.2%
सातवीं योजना में व्यय	21.7%	78.3%
अनुसंधान पर व्यय	11.7%	88.3%
बिजली खपत में अंश (1986-87)	20.7%	79.3%
सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों से ऋण (जून 1986)	15.7%	84.3%
शिक्षा पर व्यय	36.0%	64.0%

किसी समुदाय की खुशहाली इस बात पर भी निर्भर करती है कि उसे अपनी उपजाई वस्तुओं के मूल्य कैसे मिलते हैं. यदि सरकारी मूल्य नीति किसी समुदाय के प्रति अन्यायपूर्ण हो तो वह समुदाय कभी पनप नहीं सकता. मूल्य या उजरत न्यायपूर्ण है या नहीं, इसे जानने के लिए इस की तुलना कर्मियों के जीवननिर्वाह के व्यय से करनी चाहिए. नीचे की तालिका में तुलनात्मक आंकड़े दिए गए हैं:

	1970-71	1988-89
कृषि कर्मियों का जीवन निर्वाह व्यय सूचकांक	100	377.1
गेहूं का सरकारी क्रय मूल्य सूचकांक (जिस पर कृषि कर्मियों की आय निर्भर करती है)	100	227.6
औद्योगिक क्षेत्र के कर्मियों का जीवन निर्वाह व्यय सूचकांक	100	431.7
सार्वजनिक क्षेत्र के कर्मियों की औसत उजरत का सूचकांक	100	715.8

उपर्युक्त आंकड़ों से देखा जा सकता है कि जब कि गेहूं का क्रय मूल्य सूचकांक कृषि कर्मियों के जीवन निर्वाह व्यय सूचकांक से बहुत पीछे रखा गया है, सार्वजनिक क्षेत्र के कर्मियों की औसत उजरत को उन के जीवन निर्वाह व्यय की तुलना में कहीं अधिक तेजी से बढ़ाया गया है. यह देश के कर्णधारों के दोहरे मापदंड का परिचायक है.

सच तो यह है कि स्वराज्य गांवों तक पहुंचा ही नहीं. वह लंदन के आकाश से गिर कर दिल्ली के खजूर में अटक गया है. अंतर केवल इतना ही हुआ है कि पहले अंगरेज पूरे भारत को अपना उपनिवेश मान कर उस का शोषण करते थे, अब शहरों के चालाक लोग, जो सत्तासीन हैं, गांवों को अपना उपनिवेश मानते हैं. पहले अंगरेज, सामंतों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

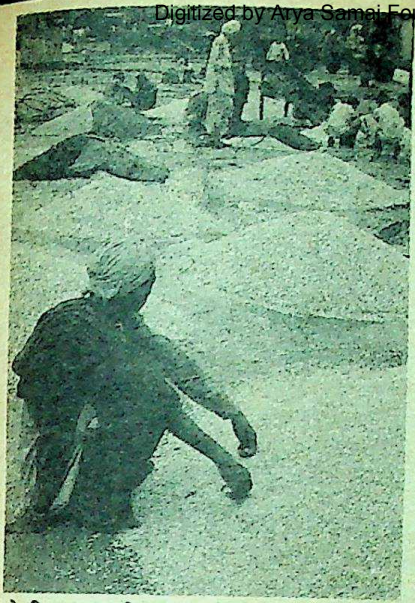

से मिल कर किसानों का शोषण करते थे, अब राजनीतिबाज उद्योगपतियों से मिल कर उन का शोषण करते हैं.

उपनिवेशवाद की दो पहचान थी— सस्ते कच्चे माल के बदले में महंगा औद्योगिक उत्पाद बेच कर कच्चा माल पैदा करने वालों का शोषण करना और उन के साथ निम्न श्रेणी के नागरिकों जैसा व्यवहार करना. ये दोनों ही बातें आज गांवों और शहरों के संबंधों में देखी जा सकती हैं. कृषि उपज के निम्नस्तरीय मूल्यों में गांव वालों का संगठित शोषण, तथा उन के लिए की गई शिक्षा, चिकित्सा, विद्युत आपूर्ति की दुर्दशा में उन की उपेक्षा देखी जा सकती है.

यदि वर्तमान शासकों का उपनिवेशवादी रवैया नहीं है तो क्या कारण है कि गांव और शहर वालों के बीच आमदनियों, सुविधाओं एवं उन्नति के अवसरों में विषमता बढ़ते रहने के बावजूद उन्हें कम करने की दिशा में कोई ठोस कदम नहीं उठाए गए. अनेक असुविधाओं के कारण शहरों के मध्य श्रेणी के लोग भी, जब तक कि कोई मजबूरी न हो, गांवों में एक रात भी गुजारने को तैयार नहीं होते. इस का प्रमाण

सरकारी मूल्य नीति के पक्षपातपूर्ण रवैए के कारण ही कृषकों का जीवन निर्वाह व्यय शहरी लोगों की तुलना में बहुत कम है.

यह है कि गांवों में स्थित चिकित्सालयों, बैंकों, यहां तक कि कृषि अनुसंधान संस्थाओं में भी कोई योग्य व्यक्ति काम करने को तैयार नहीं है. अधिकांश ग्रामीण चिकित्सालय बिना योग्य डाक्टरों के चल रहे हैं.

देश के समाजवादी नेताओं को गांवों में व्याप्त गरीबी का कारण भी ग्रामीण समाज की संरचना में ही दिखाई देता है, जबकि वास्तविकता यह है कि गांवों की गरीबी का अब मुख्य कारण देश के अभिजात्य वर्गों द्वारा गांव वालों का संगठित शोषण है. ग्रामीण क्षेत्र के पुराने शोषक और शोषण के ढंग समाप्त हो चुके हैं, उन के स्थान पर अब शोषण की नई विधियों का आविष्कार हुआ है, जिन का संचालन स्वयं भारत सरकार करती है.

मुख्य रूप से शोषण की नई विधि किसानों द्वारा पैदा की गई और उन के द्वारा खरीदी गई वस्तुओं के मूल्यों के बीच भारी अंतर पैदा करना है. इस बढ़ते हुए अंतर के कारण, कृषकों के उत्पादन का लाभ निचुड़ कर शहरी समाज को ठीक वैसे ही पहुंचता है, जैसे उपनिवेशवाद में गुलाम देशों का लाभ शासक देशों को मिलता था.

हमारे नए प्रभुओं ने पिछले शासकों से 'फूट डालो और राज करो' का पाठ पढ़ रखा है. ये लोग गांवों में फूट डालने में सिद्धहस्त हो चुके हैं. ये ही गांव की जनता को विभिन्न वर्गों और जातियों में बांटते हैं. किसी को बड़ा किसान, किसी को छोटा, सीमांत किसान या भूमिहीन कहते हैं, और उन्हें ही अनुसूचित जाति, पिछड़ी जाति या ऊंची जाति में विभक्त कर उन से भिन्नभिन्न ढंग से व्यवहार करते हैं.

असलियत यह है कि गांव में रहने वाले सभी शोषित वर्ग के हैं. उन में बड़े से बड़े की आर्थिक दशा भारत सरकार के निम्न श्रेणी कर्मचारियों से बेहतर नहीं है. गांवों में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्तमान लूटपाट गांवों पर आधारित है न कि भूस्वामित्व पर. भूमि देश की अन्य किसी संपत्ति की तुलना में सब से अधिक समतापूर्ण ढंग से वितरित है.

हमारे नेतागण जब कभी अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में भाग लेने जाते हैं, तब विकासशील देशों की बढ़ती गरीबी और कर्जदारी के लिए व्यापार असंतुलन को दोषी ठहराते हैं. वे कहते हैं कि विकसित देशों द्वारा विकासशील देशों का कच्चा माल कम कीमत पर खरीदा जाता है, जब कि वे स्वयं अपना तैयार माल विकासशील देशों को बहुत महंगे मूल्यों पर बेचते हैं. वे प्रायः विकासशील देशों की ओर से एक 'नई अंतर्राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था' की मांग करते हैं जिस में विकसित और विकासशील देशों के बीच संबंध अधिक न्यायसंगत हों. किंतु वे इस पर ध्यान नहीं देते कि जो कुछ अक्षरशः लागू है, यदि हम 'विकासशील देशों' के स्थान पर 'गांवों' और 'विकसित देशों' के स्थान पर 'शहरों' शब्द का प्रयोग करें.

> **दीनता**
>
> दीनता उस मानसिक दुर्बलता को कहते हैं, जो मनुष्य को दूसरे की दया पर जीने का प्रलोभन देती है.
>
> —हजारीप्रसाद द्विवेदी

गांवों की गरीबी और कर्जदारी बढ़ रही है, उस का भी कारण व्यापारिक असंतुलन है. असंतुलन का कारण यह नहीं कि गांव वाले कम परिश्रमी हैं, या उन की उपजाई वस्तुएं कम उपयोगी हैं. असंतुलन का कारण यह है कि शहर वाले, गांव वालों पर वैसे ही छाए हुए हैं जैसे विकसित देश विकासशील देशों पर. वे एक ऐसी अर्थव्यवस्था स्थापित करने में सफल हैं, जो न्यायसंगत नहीं है, और जिस के अंतर्गत गांव वालों को अपनी उपज शहर वालों के लिए तरहतरह के प्रतिबंध लगा कर सस्ते दामों पर बेचने पर मजबूर किया जाता है, जबकि शहर वाले अपनी निर्मित वस्तुओं को गांव वालों को मुंहमांगे मूल्यों पर बेच सकते हैं.

हमारे नेतागण जिन तर्कों पर एक नई अंतर्राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था की मांग करते हैं, ठीक उन्हीं तर्कों पर उन से यह मांग की जा सकती है कि वे देश के अंदर पहले एक 'नई राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था' स्थापित करें, जो गांवों और शहरों के बीच अधिक संतुलित और न्यायसंगत हो.

देश के संविधान में भारत को समाजवादी गणतंत्र घोषित किया गया है, परंतु समाजवादी गणतंत्र के आदर्शों की ओर अग्रसर होने के बजाय हम एक अंतर्देशीय उपनिवेशवाद की ओर बढ़ रहे हैं.

स्वराज्य का सार है, शोषण से मुक्ति तथा उन्नति के लिए समान अवसरों की व्यवस्था. अतः नई कृषि नीति की असली कसौटी यह होगी कि क्या उस के फलस्वरूप कृषकों का शोषण समाप्त होता है और ग्रामीणों को उन्नति के लिए समान अवसर मिलते हैं?

दूसरे शब्दों में, क्या किसानों को अन्य उत्पादकों की भांति अपनी उपज पूरे देश में निर्बाध रूप से बेचने की आजादी दी जाएगी? और यदि नहीं तो क्या सरकार कृषि पदार्थों के क्रय मूल्य समता सिद्धांत के अनुसार निश्चित करेगी? यदि दो विकल्पों—खुला बाजार या समता मूल्य पर खरीदारी—में से किसी एक को भी सरकार लागू नहीं करती तो यह समझना चाहिए कि शोषण का युग समाप्त नहीं हुआ है.

क्या ग्रामीण क्षेत्रों में विद्यालयों, चिकित्सालयों तथा अन्य विकास कार्यों पर होने वाले व्यय, कुल सरकारी व्यय में ग्रामीणों की जनसंख्या का उसी अनुपात में होंगे जो कुल जनसंख्या में होगा?

क्या कृषि क्षेत्र को वे सभी सुविधाएं और रिआयतें मिलेंगी जो आज औद्योगिक क्षेत्र को मिल रही हैं?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनभावक वेश भूषा आप भी अपनाये.

जी हां, फैशन मेकर के सीधे टांके के अलावा 21 अनूठे सजावटी टांकों के साथ अपनी अदा को और भी अनोखा बनाइये. इसी से बटन टांकिये, काज बनाइये, स्वचालित ढंग से इसके जिपर फुट से जिप लगाइये, डेनिम, फलालेन या सूती, ऊन, हर चीज पर. दोहरी सुई (ट्विन नीडल) वाली सिलाई, मोनोग्राम, डिजाइन. सबके सब बिल्कुल स्वचालित ढंग से. कपड़े हों, नेपकिन या कुछ और. सीधी सिलाई हो, स्मोकिंग, इलास्टिक की सिलाई, मोड़कर हेमिंग... याने जो चाहें-जैसा चाहे.. कल्पना की हर उड़ान इसी से पूरी कर लें.

आप भी फैशन मेकर ले आइये. और हां, दूसरों से प्रशंसा सुनने की आदत भी डाल लीजिये.

आज ही अपने निकट के सिंगर शोरूम या अधिकृत डीलर के यहां आइये. हमें आप ही का इंतजार है.

देश की कोई भी अन्य सिलाई मशीन 21 तरह के सजावटी टांके स्वचालित ढंग से नहीं लगा पाती है.

SINGER
MERRITT

SINGER
Fashion Maker
AUTOMATIC SEWING MACHINE

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संवैधानिक चेतावनी !

इस फूड प्रोसेसर का सिर्फ़ एक प्रदर्शन देखते ही अपनी मिक्सी को भूल जायेंगे आप

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आटा नीडिंग

आज के तेजी से बदलते ज़माने में पुराने ज़माने की मिक्सी या किचन मशीन का क्या काम. ● आपको चाहिये सिंगर का बेहतरीन और बहुउपयोगी फ़ूड प्रोसेसर. ● इसके एक ही जार को जैसा चाहें वैसा उपयोग में लायें. यह आटा गुंथने मसाला पीसने, कीमा बनाने और कतरने-छीलने के हर तरह के काम में माहिर है. बस ब्लेड बदलिये और 18 अलग-अलग ढंग से इसे काम में लाइये. ● अन्य किचन मशीनें क्या करेंगी इसका मुकाबला? उनके साथ तो इतने ज़्यादा अटैचमेन्टस होते हैं कि उन्हें रखने के लिये ही आलमारी का एक पूरा खाना चाहिये. ● सिंगर का फ़ूड प्रोसेसर तो है ही बहुउपयोगी, और यह जगह भी बहुत कम घेरता है. किसी भी कोने में रखा जा सकता है. ● सिंगर फ़ूड प्रोसेसर के मोटर की ताकत भी ज़बरदस्त है और इसके ब्लेड विशेष रूप से अंतर्राष्ट्रीय डिज़ाइन और बनावट के अनुसार बनाये जाते हैं, जिससे खाना पकाने, जूस निकालने का हर काम बिल्कुल आसान और सुविधाजनक हो जाता है. ● इसके साथ ही आता है एक अतिरिक्त स्टील ग्राइंडर जार, तरल पदार्थों के लिये एक ब्लेन्डर जार और अगर चाहें तो एक जूसर अटैचमेन्ट भी. ● अब तो आप भी जान गये कि मिक्सी और किचन मशीनें क्यों पुरानी पड़ गई हैं. ● इसके मुफ़्त प्रदर्शन के लिये हमें आज ही बुलाइये. ● पर हां, ध्यान रखियेगा, फिर कहीं आपको अपनी मिक्सी और किचन मशीन बेकार न लगने लगे. ● सिंगर की किसी भी दुकान अथवा अधिकृत विक्रेता के यहां आज ही आइये, हमें आपका इंतजार है.

ग्रेडिंग

जूसिंग

ग्राइंडिंग
सेराल एंड फ्लोज़

मसाला ग्राइंडिंग

स्लाइसिंग

SINGER
MERRITT

पॉप-अप टोस्टर

सैंडविच टोस्टर

स्टे-आयरन

मिक्सी

राइस कूकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खीर लजीज

भारतीय भोजन में खीर एक महत्त्वपूर्ण स्थान रखती है. भोजन का असली आनंद मिष्ठान्न से ही आता है. शुभ अवसर पर तो मुंह मीठा करवाने की रस्म हमेशा से ही चली आ रही है. किसी भी दावत का आयोजन बिना मीठे व्यंजन के संपूर्ण नहीं लगता. अधिकतर चावल की खीर का चलन तो है ही, प्रस्तुत है खीर के कुछ नए स्वाद :

गाजर की खीर

सामग्री : ½ किलोग्राम गाजर, 2½ लिटर दूध, 6 छोटी इलायची, रुचिअनुसार मेवा, 250 ग्राम चीनी, 1 बड़ा चम्मच घी

विधि : गाजर को छील कर अच्छी तरह से धोपोंछ कर कद्दूकस कर लें. गाजर को भारी तले के पतीले में धीमी आंच पर कढ़ने दें. कड़ाही में घी गरम करें और इसमें कद्दूकस की गई गाजरों को अच्छी तरह भून लें. अब इस में चीनी मिला दें. गाजर पानी छोड़ देगी. इसे तेज आंच पर रख सूखने तक भूनती जाएं. दूध जब उबल कर गाढ़ा हो जाए तो गाजर के मिश्रण को उसमें मिला दें और गाढ़ा होने तक पकने दें. पूरी तरह खीर तैयार होने पर मेवा डाल दें और इलायची का पाउडर डाल कर ढक दें. गाजर खीर स्वादिष्ट होने के साथसाथ पौष्टिक भी बहुत होती है.

गाजर की खीर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शकरकंद की खीर

सामग्री : 500 ग्राम शकरकंद, 2 लिटर दूध, 200 ग्राम चीनी, इच्छानुसार किशमिश व चिरौंजी.

विधि : शकरकंद को नर्म होने तक उबाल लें. इस का छिलका छील कर इस के गूदे को छलनी में से निकाल लें ताकि इस में रेशे न रहें.

दूध को 15-20 मिनट तक तेज आंच पर उबालें. इस में शकरकंद का गूदा मिला कर हिलाती रहें जिस से गांठ न बने. जब दूध में यह अच्छी तरह घुलमिल जाए तो धीमी आंच पर अच्छी तरह गाढ़ा होने तक पकाएं. गाढ़ा होने पर चीनी डालें और एकदो उबाल आने के बाद किशमिश व चिरौंजी मिला दें.

विशेष : इस खीर में सुगंध (केवड़ा या इलायची आदि) न डालें क्योंकि इस की अपनी सुगंध बहुत प्रलोभनीय होती है.

आलू की खीर

सामग्री : 600 ग्राम आलू, 2 लिटर दूध, 300 ग्राम चीनी, 50 ग्राम दालचीनी, इच्छानुसार किशमिश, थोड़ा पिस्ता बारीक कटा हुआ सजावट के लिए, तलने के लिए घी.

विधि : दूध को उबाल कर गाढ़ा होने दें. आलू को धो कर छील लें. इसे कद्दूकस कर के घी में मध्यम आंच पर तल लें और कागज पर रख दें जिस से अतिरिक्त घी सूख जाए. अब इसे उबलते हुए दूध में डालें और गाढ़ा होने तक पकने दें. दालचीनी को बारीक पीस कर पाउडर बना कर पकी खीर में चीनी के साथ डाल कर धीमी आंच पर पकने दें. किशमिश डाल कर खीर आंच से उतार लें. परोसने से पहले बारीक कटे पिस्तों से सजा दें. इस खीर का रंग गहरा सुनहरी, हरे पिस्ते से सजा बहुत सुंदर लगता है. स्वाद तो लाजवाब है ही.

कद्दू की खीर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कद्दू की खीर

सामग्री : ½ किलोग्राम पका कद्दू, 250 ग्राम चीनी, 2 लिटर दूध, 1 छोटा चम्मच केवड़ा जल या 10 बूंदें केवड़ा एसेंस, 20 बादाम भिगो कर छिलका उतार कर बारीक कटे हुए.

विधि : कद्दू को छील कर कद्दूकस कर लें. दूध को गाढ़ा कर लें. यदि दूध अधिक न हो तो डब्बाबंद गाढ़ा दूध या खोया मिला कर गाढ़ा कर लें.

कसे हुए कद्दू को चीनी के साथ मिला कर कड़ाही में अच्छी तरह भूनें. जब नमी पूरी तरह सूख जाए तो इसे गाढ़े किए गए दूध में मिला कर पकने दें. जब खीर गाढ़ी हो जाए तो कटे हुए बादाम मिला कर केवड़े की सुगंध मिला कर परोसें. यह खीर पौष्टिक होने के साथसाथ सुपाच्य भी है. विशेष रूप से गरमियों में इसे फ्रिज में ठंडा कर के भी परोसा जा सकता है.

घीया की खीर

सामग्री : 1 घीया मध्यम आकार की लिटर दूध, रुचि अनुसार किशमिश, क हुआ ½ प्याला नारियल, चुटकी भर केस 5 इलायची बड़ी पाउडर कर के, 200 ग्रा चीनी, सजावट के लिए टूटीफ्रूटी.

विधि : घीया का छिलका उतार क बीज निकाल दें और चीनी मिला कर कड़ा में पकने रखें. दूध को उबाल कर गाढ़ा क जब घीया अच्छी तरह गल जाए तो इसे द में मिला कर पकने दें. खीर गाढ़ी होने प इस में कसा हुआ नारियल, किशमिश डा कर फिर इलायची का पाउडर व केसर डा कर धीमी आंच पर 10 मिनट तक पकने दे परोसने से पहले टूटीफ्रूटी से सजा दें.

पनीर की खीर

सामग्री : 200 ग्राम पनीर, 2½ लिटर दूध, 300 ग्राम चीनी, स्वादानुसार केव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केसर या इलायची, 1 छोटा चम्मच कार्नफ्लोर.

विधि : दूध को उबालें. गाढ़ा करने के लिए कार्नफ्लोर घोल कर दूध में मिला दें और कढ़ने दें.

पनीर को छोटेछोटे चौकोर टुकड़ों में काटें और नेपकिन में लपेट कर पानी सुखा दें. गाढ़े हुए दूध में चीनी डालें. 10 मिनट उबलने के बाद इस में पनीर के टुकड़े डाल कर हलकी आंच पर 20 मिनट तक उबलने दें. उस के बाद सुगंध (केवड़ा, इलायची या केसर) डाल कर ढक्कन लगा कर आंच से हटा दें.

विशेष : ध्यान रखें कि पनीर ताजा ही हो. —विजया वासुदेवा

फल माधुरी

सामग्रीः 250 ग्राम दूध, 250 ग्राम शकरकंदी, 4 बड़े चम्मच चीनी, दो केले, 1 बड़ा सेब, 1 संतरा, 100 ग्राम अंगूर, थोड़ी सी लाल चेरी.

विधिः मीठी, मोटी व बिना रेशे वाली शकरकंदी उबालने के बाद छील कर मथ लें. दूध गरम कर के उस में चीनी घोल लें. दूध, शकरकंदी व चीनी को मिक्सी में अच्छी तरह से घोट दें. इस मिश्रण को फ्रिज में ठंडा होने के लिए रख दें. केले व सेब छील कर काट लें. संतरे की फांके छील कर बीज निकाल दें, मगर फांके न टूटने दें. अंगूरों का एकएक दाना अलग कर लें. संतरों को चाहें तो गोल आकार में भी काट सकते हैं. इन फलों को इस तरह से तैयार कर के फ्रिज में ठंडा होने को रख दें. इस फल माधुरी को खाना खाने के बाद जब पेश करें, उसी समय छोटीछोटी कटोरियों में फलों को सजा कर उपर से शकरकंदी व दूध का मिश्रण डाल दें. उस के उपर लाल चेरी रख दें. यह फल माधुरी एक स्वादिष्ट 'स्वीट डिश' का काम देगी. —उर्मिल कपूर ●

फल माधुरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुष्प सज्जा के पुष्पों को ताजा कैसे रखें ?

लेख ● पूनम सिंह

विगत वर्षों में पुष्प सजाने की कला अत्यधिक लोकप्रिय हुई है और आज यह गृह सज्जा का एक अभिन्न अंग बन चुकी है. वास्तव में किसी भी कक्ष में उचित आकार के फूलदान में सुंदर पत्तियों के साथ सही किस्म के खूबसूरत और ताजा पुष्प लगा देने से उस में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अकसर पुष्प सज्जा के पुष्पों को जल्द मुरझाया देख कर गृहिणियां उदास हो उठती हैं. लेकिन परेशान होने की कोई बात नहीं. निम्न तरीकों को अपनाइए और पुष्पों को लंबे समय तक ताजा रखिए.

पुष्पों की टहनियों के निचले 15 सें.मी. वाले भाग से सभी पत्तियां निकाल दें, पुष्प ताजा बने रहेंगे.

अनोखा निखार आ जाता है.

लेकिन पुष्प सज्जा में रुचि रखने वाले व्यक्तियों के सामने सब से बड़ी समस्या यह रहती है कि पुष्पों को लंबी अवधि तक ताजा कैसे रखा जाए. इस हेतु अनेक ऐसे उपाय हैं, जिन्हें अपना कर उन्हें अधिक समय तक ताजा रखा जा सकता है.

● पुष्पों को हमेशा सूर्योदय से पूर्व या सायंकाल के समय पौधे से काटें क्योंकि सूर्य के प्रकाश में काटने से वे शीघ्र ही मुरझा जाते हैं.

● पुष्पों की टहनियों को किसी तेज धार वाले सरौते, चाकू या सेकेटियर से काटें ताकि उन के वाहनी ऊतकों (टिशू) को किसी भी प्रकार की क्षति न पहुंचे. क्षतिग्रस्त ऊतकों के कारण टहनियां ठीक से पानी नहीं ग्रहण कर पाती हैं और पुष्प शीघ्र ही कुम्हला जाते हैं.

● पुष्पों को सदैव लंबी टहनियों सहित काटें क्योंकि उन की टहनियां जितनी अधिक लंबी होंगी, पुष्प उतने अधिक समय तक ताजे रहेंगे.

● काटने के पश्चात टहनियों को तुरंत 4 सें.मी. तक ठंडे पानी में डुबो दें. यदि पुष्पों को थोड़ी देर के पश्चात उपयोग में लाना हो तो उन्हें पानी वाले बरतन सहित किसी ठंडे स्थान पर रख दें.

● यदि टहनियां बहुत ही कमजोर हों तो काटने के पश्चात उन्हें तुरंत टिशू पेपर

यदि टहनियां बहुत ही कमजोर हों तो काटने के पश्चात उन्हें तुरंत टिशू पेपर में लपेट दें अन्यथा हवा लगने पर वे मुरझा जाएंगी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में लपेट दें, अन्यथा हवा लगने पर वे मुरझा जाएंगी.

● पुष्पों की टहनियों के निचले 15 सें.मी. वाले भाग से सभी पत्तियां निकाल दें ताकि वाष्पोत्सर्जन तथा श्वसन क्रिया कम से कम हो तथा पुष्प ताजा बने रहें.

● पुष्प सज्जा करने से पहले पात्र को अच्छी तरह से धोएं और उस में स्वच्छ तथा ताजा पानी भरें. पात्र में कम से कम इतना पानी अवश्य होना चाहिए कि कटी हुई टहनियों के खुले हुए भाग उस में डूब जाएं.

● पात्र को कक्ष में ऐसे स्थान पर रखें, जहां पर धूप या पंखे की हवा न पहुंचती हो.

● रात्रि में पुष्पों के पात्र को ओस में रख देने से भी पुष्पों की ताजगी बनी रहती है.

● कटे हुए पुष्पों को लंबी अवधि तक ताजा रखने के लिए 50^0-60^0 फारेनहाइट तापमान सब से अधिक उपयुक्त होता है.

● पुष्पों को पौधे से काटने के लिए एक उपयुक्त समय होता है. उस समय काटे गए पुष्प अधिक समय तक ताजा रहते हैं. कुछ महत्त्वपूर्ण पुष्पों को काटने का उपयुक्त समय नीचे दिया जा रहा है:

कार्नेशन: पंखुडियां खुलने के तुरंत पश्चात.

गुलदाउदी तथा जीनिया: जब पुष्पों के बीच का रंग लुप्त हो जाए.

डेहलिया: जब पुष्पों की पंखुडियां पूरी तरह से खुल जाएं.

गुलाब: यदि तुरंत पात्र में लगाना हो तो उस समय जब कली का कसाव कुछ ढीला पड़ जाए. यदि देर से रखना हो तो उस समय जब कली पूर्णतः कसी हुई हो.

कैंडी टफ्ट: जब तीनचौथाई पुष्प खिल चुके हों.

एस्टर, लिली: जब पंखुड़ियां आधी खिल चुकी हों.

स्वीटपी तथा ग्लैडियोला: नीचे के पुष्प खिलते ही.

● पात्र का पानी शुद्ध रखने से भी पुष्प ताजा बने रहते हैं. इस हेतु दो लिटर पानी में एस्पिरिन की एक गोली मिला देनी चाहिए.

● पात्र के पानी में एक चम्मच चारकोल का चूरा मिला कर भी पुष्पों के टिकाऊपन बढ़ाया जा सकता है.

● पात्र के पानी में 2 बड़े चम्मच सिरका तथा 2 बड़े चम्मच गन्ने का रस मिला देने पर वे परिरक्षक का कार्य करते हैं और पुष्प को ताजा रखते हैं.

● कंपोजिटी कुल के पुष्पों जैसे गेंदा आदि को अधिक समय तक ताजा बनाए रखने के लिए पानी में एक चम्मच चीनी घोल देनी चाहिए.

● फूलदार टहनी के कटे हुए भाग को पिघले हुए मोम में डुबो कर भी पुष्पों को कई दिनों तक ताजा रखा जा सकता है.

● पौपी, नीरियम, पोइन सेटिया आदि पुष्पों की टहनियों के कटे हुए भाग को 15 सेकेंड तक मोमबत्ती की लौ में जला कर भी पुष्पों की ताजगी लंबी अवधि तक बरकरार रखी जा सकती है.

● कुछ पौधों से लेटेक्स (दूधिया पदार्थ) निकलता है. ऐसे पौधों की टहनियों के कटे हुए भाग को एक मिनट तक उबलते पानी में डुबो दें ताकि उस की लेटेक्स वाहिनियां बंद हो जाएं तथा पुष्प ताजा बने रहें.

● पौपी जैसे पुष्पों, जिन की पंखुडियां जल्दी गिर जाती हैं, के मध्य में पिघली हुई जिलेटिन की कुछ बूंदें डाल देने से पुष्प काफी दिनों तक टिके रहते हैं.

● दो चम्मच गंधक के तेजाब (सल्फ्यूरिक एसिड) के 6% घोल को एक लिटर पानी में मिला देने से जीवाणु पनप नहीं पाते हैं और पुष्प ताजा बने रहते हैं.

● गुलाब, सेवती और कार्नेशन के पुष्पों को अधिक समय तक ताजा रखने के लिए एक लिटर पानी में 1 ग्राम फिटकरी, 1 ग्राम सोडियम हाइपोक्लोराइड, ¼ ग्राम फैरिक आक्साइड तथा 10 ग्राम चीनी का घोल बना कर उसे पात्रों में भर देना चाहिए.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Sa

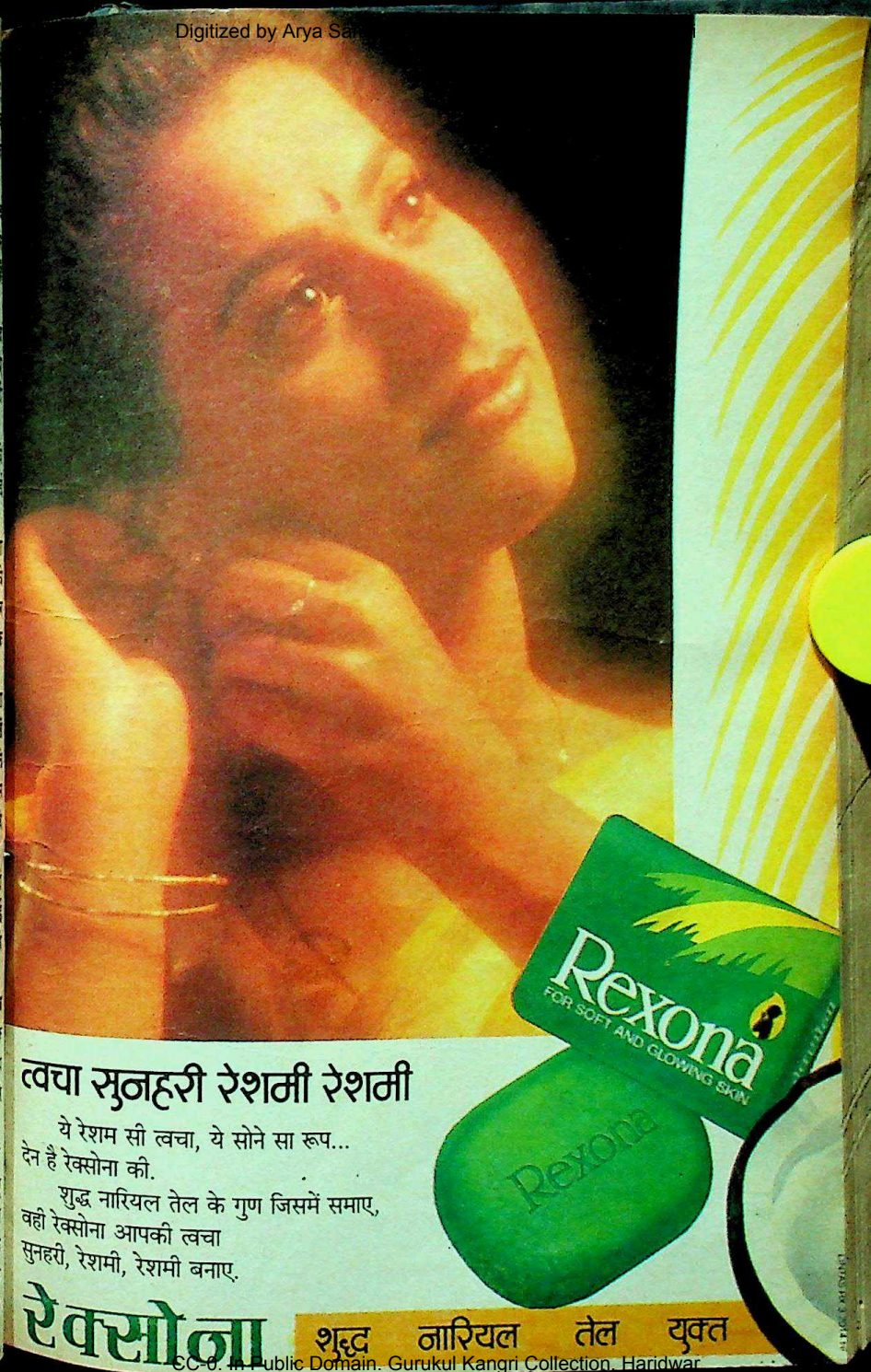

त्वचा सुनहरी रेशमी रेशमी

ये रेशम सी त्वचा, ये सोने सा रूप...
देन है रेक्सोना की.

शुद्ध नारियल तेल के गुण जिसमें समाए,
वही रेक्सोना आपकी त्वचा
सुनहरी, रेशमी, रेशमी बनाए.

रेक्सोना शुद्ध नारियल तेल युक्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

1. जम्मू का रघुनाथ मंदिर : कृष्णलीलाओं के भव्य चित्रांकन के लिए प्रसिद्ध.
2. कुल्लू का दशहरा देखने लायक है.
3. हिमालयी चोटियों से घिरा भरमौर मंदिरों के कारण प्रसिद्ध है.

सर्दियों
पर्यटक
ले सकत
डलहौज
दृश्य.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

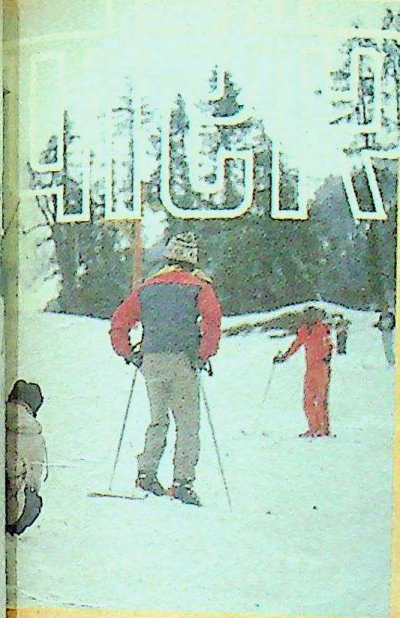

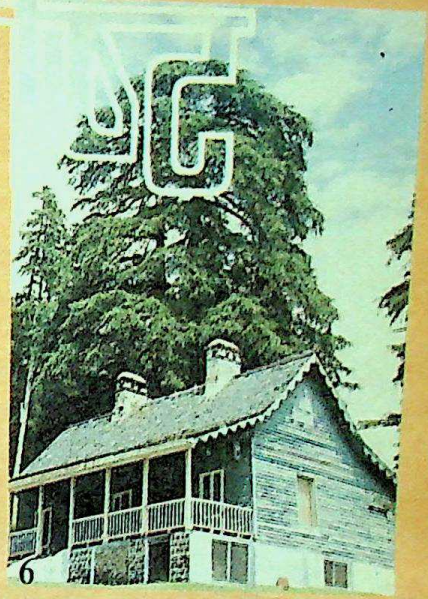

6

6. खजियार में बनी कुटीरों में रहने का अपना अलग ही आनंद है.

7. चंबा शहर के मध्य स्थित चौगान. यहां वर्ष भर मेला सा लगा रहता है.

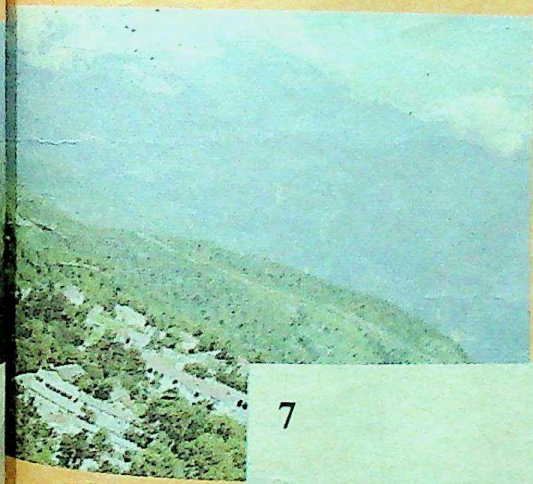

7

सर्दियों में कुफरी मे पर्यटक स्कीइंग का मजा ले सकते हैं.

डलहौजी का विहंगम दृश्य.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

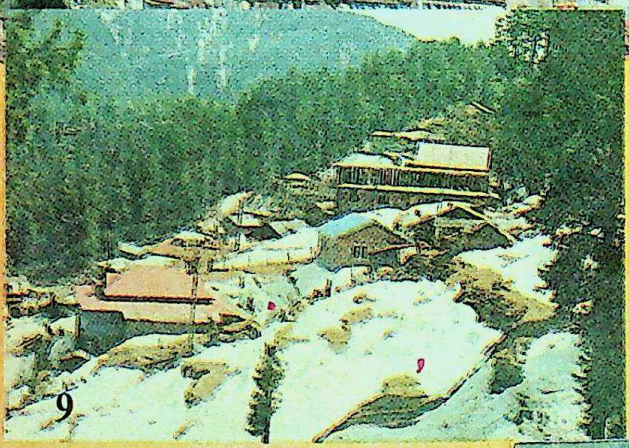

9

8. हिमाच्छादित पर्वतों
कारण शिमला मनमोह
लगता है.

9. बर्फ में ढके नारकंडा
मकान सुंदर लगते हैं.

10. ब्रजेश्वरी मंदिर कांग
का सर्वाधिक खूबसू
मंदिर है.

11. शिमला के माल रोड
घूमने का मजा ही
और है.

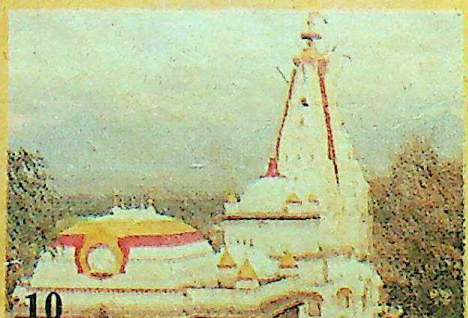

10

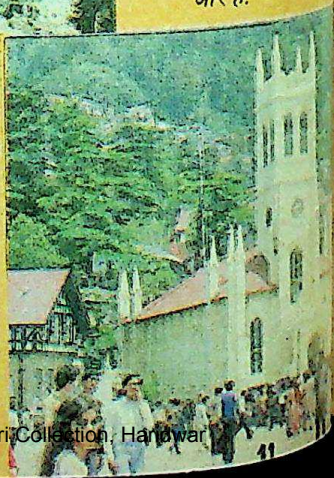

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जम्मू

तवी नदी के तट पर बसा जम्मू चारों ओर से ऐतिहासिक इमारतों, दुर्गम पहाड़ों तथा कलात्मक मंदिरों से घिरा हुआ है. मंदिरों की अधिकता के कारण इसे 'मंदिरों का शहर' भी कहा जाता है. ये मंदिर यहां के निवासियों की अगाध श्रद्धा एवं भक्ति के प्रतीक हैं. वैष्णों देवी की प्रसिद्ध गुफा तथा मंदिर यहां से मात्र 27 मील दूर है. इसलिए यहां साल के एकदो महीनों को छोड़ सैलानियों के झुंड सदा देखने को मिलते हैं.

जम्मू के अपने अस्तित्व में आने की कहानी काफी रोचक है. ऐसा कहा जाता है कि राजा जंबूलोचन अपने राज्य की नई राजधानी बनाने के लिए जगह की तलाश कर रहे थे. एक बार वह शिकार खेलते हुए इस प्रदेश में आए. अचानक उन की नजर एक बाघ और बकरी पर पड़ी जो एक साथ, एक ही घाट पर पानी पी रहे थे. इस दृश्य से प्रभावित हो उन्होंने इस प्रदेश को अपना नाम दे, अपनी राजधानी घोषित कर दिया.

कैसे जाएं?

जम्मू पहुंचने के लिए यातायात के साधनों की समुचित व्यवस्था है. वायुमार्ग से जाने वाले पर्यटकों के लिए इंडियन एअरलाइंस के विमान प्रतिदिन इसे दिल्ली, चंडीगढ़, अमृतसर तथा श्रीनगर से जोड़ते हैं.

रेल मार्ग द्वारा भी जम्मू भारत के प्रमुख नगरों से जुड़ा हुआ है. दिल्ली से जम्मू मेल, शालीमार एक्सप्रेस, हिमसागर एक्सप्रेस, नवयुग एक्सप्रेस, हपाजम्मू एक्सप्रेस, बंबई जम्मू एक्सप्रेस, कलकत्ता से हिमगिरि एक्सप्रेस, सियालदह एक्सप्रेस, गोरखपुर से गोरखपुर जम्मूतवी एक्सप्रेस, गुवाहाटी से लोहित एक्सप्रेस, मद्रास से मद्रास जम्मूतवी एक्सप्रेस गाड़ियां नियमित चलती हैं.

सड़क मार्ग द्वारा जम्मू दिल्ली, चंडीगढ़, अमृतसर, पठानकोट आदि जगहों से जुड़ा हुआ है. यहां से विभिन्न राज्य परिवहन की बसें जम्मू तक जाती हैं. शहर के अंदर घूमने के लिए टैक्सी, स्कूटर रिकशा, मैटाडोर तथा मिनी बसों की पर्याप्त व्यवस्था है. टैक्सी तथा आटोरिकशा यहां मीटर से किराया नहीं ले कर दूरी के मुताबिक पैसे लेते हैं.

क्या देखें?

रघुनाथ मंदिर : यह रघुनाथ बाजार में स्थित है. 1835 में राजा गुलाबसिंह द्वारा निर्मित रघुनाथ मंदिर को उन के पुत्र महाराजा रणवीर सिंह ने 1860 ई. में पूरा करवाया था. मंदिर की दीवारों पर रामकथा से संबंधित अनेक देवीदेवताओं के चित्र बने हैं. राम का एक मंदिर पुरानी मंडी में भी है, जिसे महाराजा रणवीरसिंह की रानी ने 1888 ई. में बनवाया था. यह मंदिर राम और कृष्ण लीलाओं के भव्य चित्रांकन के लिए प्रसिद्ध है.

रणवीरेश्वर मंदिर : परेड ग्राउंड के निकट बना यह एक शिव मंदिर है. इसे महाराजा रणवीर सिंह ने 1883 ई. में बनवाया था. इस मंदिर में 15 से 38 सेंटीमीटर के 12 पारदर्शी शिवलिंग हैं.

बाहु किला : तवी नदी के बाएं तट पर स्थित, जम्मू की प्राचीनता का परिचायक यह किला लगभग 3,000 वर्ष पुराना है. इस का निर्माण राजा बाहुलोचन ने करवाया था. शायद इसी कारण इसे 'बाहु किला' के नाम से पुकारा जाता है. कालांतर में डोगरा राजाओं ने इस का पुनरुद्धार किया था. किले में काली देवी का एक मंदिर और सुंदर बगीचा है. हाल ही में यहां एक आधुनिक ढंग का जलपानगृह भी खोला गया है.

अमर महल पैलेस : बाहु किले से कुछ ही दूर अमर महल पैलेस राजा अमरसिंह के लिए बनवाया गया था. इस महल का नकशा फ्रांसीसी वास्तुकार द्वारा तैयार किया गया था. इस में अब पुस्तकालय और कुछ दुर्लभ चित्र हैं.

डोगरा आर्ट गैलरी : गांधी भवन में स्थित इस कलात्मक संग्रहालय में 600 से अधिक महत्त्वपूर्ण कलाकृतियों का संग्रह है. इन में से अनेक दुर्लभ कलाकृतियां भी हैं. कलाकृतियों के अलावा यहां ऐतिहासिक अस्त्रशस्त्र एवं अन्य पुरातात्त्विक वस्तुओं का भी संग्रह है.

जम्मू से श्रीनगर बसों से जाया जा सकता है. इंडियन एअरलाइंस की हवाई सेवा भी उपलब्ध है. पिछले कुछ वर्षों से आतंकवादी गतिविधियों के कारण पर्यटकों का श्रीनगर जाना लगभग बंद सा हो गया है. अभी स्थिति में सुधार नहीं हुआ है. अतः पर्यटकों को यही सलाह दी जाती है कि श्रीनगर तथा उस के आसपास के पर्यटन स्थल वे तभी देखें जब हालात सुधर जाएं.

जम्मू

कहां ठहरें?

एशिया जम्मू तवी, नेहरू मार्केट, फोन: 43930; जम्मू अशोक, अमर महल के सामने, फोन : 43127, 43864; प्रीमियर, वीर मार्ग, फोन : 43234, 43436; कास्मोपोलिटन, वीर मार्ग, फोन : 47169, 47561; मानसर, डेनिश गेट, फोन : 46161; कासमो होटल, फोन : 5520.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुल्लूमनाली

यों तो 'धरती का स्वर्ग' कशमीर को कहा जाता है लेकिन कशमीर घाटी जैसी प्राकृतिक सुंदरता यदि कहीं और देखनी हो तो पर्वतों के बीच उन की गोद में समुद्र सतह से 1,219 मीटर की ऊंचाई में बसी, व्यास के दोनों ओर फैली 80 कि.मी. लंबी तथा 2 कि.मी. चौड़ी कुल्लू की घाटी का जवाब नहीं. इस के पर्वतों में एक ओर चीड़ की सुगंध बसी है तो दसूरी ओर बर्फ से ढकी हुई पहाड़ियों पर चमचमाती सूर्य की किरणें बड़ी ही प्यारी लगती हैं. एक ओर इस के चारागाहों में जवाकुसुम, गुलाब और पुष्पी के पुष्प बिछे रहते हैं तो दूसरी ओर इस के जल में मछलियां उछलती हैं. यहां सब के लिए कुछ न कुछ है—पर्वतारोहियों के लिए, कलाकारों के लिए, खेल प्रेमियों के लिए, पूजाअर्चना करने वालों के लिए. इसी लिए तो इसे 'हिमालय की गोद में स्वर्ग' की उपमा दी गई है.

कब जाएं?

कुल्लुमनाली जाने के लिए बेहतरीन समय है—अप्रैल से जून व सितंबर से नवंबर. गर्मियों में यहां का अधिकतम व न्यूनतम तापमान 31 व 18 डिगरी सेल्सियस रहता है, इसलिए गरमियों में अपने साथ हलके ऊनी कपड़े तथा जाड़ों में भारी ऊनी कपड़ों का रखना जरूरी है.

कैसे जाएं?

काफी उंचाई पर बसे होने के बावजूद भी कुल्लूमनाली सड़क, रेल तथा वायु मार्ग से जुड़ा हुआ है.

सड़क द्वारा कुल्लू जाने के लिए दो रास्ते प्रयोग किए जा सकते हैं. एक तो पठानकोट, पालमपुर, जोगिंदरनगर व मंडी के रास्ते जाया जा सकता है या फिर शिमला बिलासपुर तथा मंडी होते हुए कुल्लू पहुंचा जा सकता है. इस मार्ग पर हिमाचल प्रदेश, पंजाब तथा हरियाणा परिवहन निगम की बसें, प्राइवेट टूरिस्ट बसें, टैक्सी आदि नियमित रूप से आतीजाती रहती हैं.

रेल से कुल्लूमनाली जाने के लिए उत्तर रेलवे का अंतिम स्टेशन पठानकोट है. दिल्ली से पठानकोट तक शाने-ए-पंजाब जाती है. यहां पहुंच कर रेल द्वारा ही अगर आगे यात्रा करनी हो तो जोगिंदरनगर (अंतिम रेलवे स्टेशन) तक छोटी लाइन की ट्रेन द्वारा जाया जा सकता है. यहां से सड़क मार्ग से कुल्लूमनाली पहुंचा जा सकता है.

—कुल्लू वायुदूत सेवाओं द्वारा दिल्ली, शिमला तथा चंडीगढ़ से जुड़ा हुआ है. यह सेवा कुल्लू से 10 किलोमीटर दूर भुंतर हवाई अड्डे तक ही उपलब्ध हैं. यहां से बसों व टैक्सियों द्वारा कुल्लू आयाजाया जा सकता है. वैसे वायुदूत की इस सेवा का कोई भरोसा नहीं. जब मर्जी हो उड़ान रद्द कर दी जाती है.

क्या देखें?

बिजली महादेव मंदिर : कुल्लू से 11 किलोमीटर की दूरी पर 2,435 मीटर की ऊंचाई पर स्थित इस मंदिर यहां के निवासियों का महत्त्वपूर्ण धार्मिक स्थल है. बिजली महादेव का 60 फुट ऊंचा दंड घाटी में 1 कि.मी. ऊंचाई पर चढ़ते ही आंखों में चमकने लगता है. यहां से संपूर्ण कुल्लू घाटी का अवलोकन किया जा सकता है. इस मंदिर पर सूर्य की किरणें पड़ते ही यह चांदी की तरह चमकने लगता है.

रायसन : 1,433 मीटर की ऊंचाई पर, कुल्लू से 16 किलोमीटर दूरी पर स्थित रायसन कैंपिंग के लिए एक आदर्श स्थल है. यहां आए दिन युवाओं की रैलियां और शिविर आयोजित होते रहते हैं. इसलिए

कुल्लूमनाली

कहां ठहरें?

***दौलत होटल**, धालपुर, फोन : 358; **नवीन गेस्ट हाउस**, अखरा बाजार, फोन : 228; **सपन रिसौर्ट**, कुल्लू मनाली हाइवे, फोन : 38; **इंपायर होटल**, कुल्लू घाटी, फोन : 97; **ग्रासलैंड होटल**, टूरिस्ट ब्यूरो के सामने, मनाली, फोन : 122; **ग्रीनफील्ड होटल**, मनाली; **होली डे होम इंटरनेशनल**, मनाली; **मेफेयर गेस्ट हाउस**, मनाली; **माउंट व्यू होटल**, मनाली; **न्यू होप गेस्ट हाउस**, मनाली, फोन : 78.*

हिमाचल प्रदेश पर्यटन विकास निगम ने यहां अपने एक होटल और छोटेछोटे झोपड़ीनुमा मकान बना रखे हैं, जिन में उचित किराया दे कर ठहरा जा सकता है.

नग्गर : 300 मीटर की ऊंचाई पर स्थित इस स्थान से उत्तरपश्चिम कुल्लू घाटी का सौंदर्यपूर्ण दृश्य देखा जा सकता है. नग्गर को 1,400 वर्षों तक कुल्लू के राजाओं की राजधानी रहने का गौरव प्राप्त है. यहां से कुछ ही दूरी पर रूस के पेंटर और मूर्तिकार निकोलस रोरिक के नाम पर रोरिक आर्ट गैलरी है. यह मूर्तिकार यहां के शांत वातावरण में कभी आ कर रहा था. इस के अलावा ढेरों मंदिर हैं, जिन में विष्णु, त्रिपुर सुंदरी देवी, कृष्ण आदि देखने के लायक हैं. चंदेरखानी दर्रे की ओर ट्रैकिंग करने वालों के लिए यह आधार स्थल है. यहां हिमाचल पर्यटन के 'होटल कोसल' जो कभी नग्गर का किला था, में ठहरा जा सकता है.

मणिकरन : कुल्लू से 45 किलोमीटर दूर मणिकरन गरम पानी के झरनों के लिए प्रसिद्ध है. इस का पानी इतना गर्म होता है कि इस में चावलदाल आदि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पनपाया जा सकता है. यह सिखों तथा हिंदुओं का धार्मिक स्थान भी है. यहां पर एक ही स्थान पर एक गुरुद्वारा तथा एक मंदिर बना हुआ है. ऐसा कहा जाता है कि पार्वती के कान के खोए हुए बुंदे यहीं मिले थे.

कटरेन : यहां से 20 किलोमीटर दूरी पर स्थित कैटरेन कुल्लू का सब से चौड़ा और रमणीय स्थल है. यहां चारों ओर सेबों के बाग तथा एक फल शोधक कारखाना भी है. यहां से 2 किलोमीटर पर मछलियों का एक फार्म है, जहां विभिन्न जातियों की मछलियों का अच्छा संग्रह है. यह स्थान मधुमक्खियों के पालन के लिए भी प्रसिद्ध है.

ब्रजेश्वर महादेव मंदिर : कुल्लू से 15 किलोमीटर दूर बजौरा में ब्रजेश्वर महादेव का मंदिर स्थित है. पिरामिडनुमा इस मंदिर की उत्तम शिल्पकला ने इस के पत्थरों को जीवंत बना दिया है. उत्कीर्णता का यह एक अद्वितीय नमूना है, जो 9 वीं शताब्दी में बनाया गया था.

कसोल : पार्वती नदी के किनारे कुल्लू से 42 किलोमीटर दूर यह पिकनिक व छुट्टियां बिताने का बेहतरीन स्थान है. यहां नदी का जल इतना स्वच्छ है कि नदी की सतह साफ नजर आती है. यह स्थान एक विशेष प्रकार की मछली ट्राउट के शिकार के लिए प्रसिद्ध है.

इन के अलावा रघुनाथजी मंदिर, वैष्णो देवी मंदिर, जगन्नाथी मंदिर, आदि भी यदि समय हो तो देखे जा सकते हैं.

खरीदारी : कुल्लू घाटी के हाथ करघा से बुने शाल, चादरें, टोपी, चप्पल, शहद, फल आदि अखारा बाजार स्थित विभिन्न दुकानों तथा सरकारी एंपोरियमों से खरीदे जा सकते हैं.

मनाली

कुल्लू से उत्तर की ओर समुद्र सतह से 6,000 फुट की ऊंचाई पर स्थित एक ऐसा स्थान जहां झरझर करते प्रपातों का जल नीचे फूलों से बनी धरती और चारागाहों की ओर बहता रहता है, जहां की हवा ताजी और ठंड की सनक लिए होती है, जहां का वातावरण शांत है और लगता है जैसे समय यहां स्थिर हो गया हो—यही मनाली है.

मनाली पहुंचने के लिए दिल्ली, चंडीगढ़, शिमला, धर्मशाला आदि जगहों से सीधी बस सेवा उपलब्ध है. रेल द्वारा चंडीगढ़ या पठानकोट उतर कर जाया जा सकता है. यहां का निकटतम हवाई अड्डा 50 किलोमीटर दूर भुंतर में स्थित है. यहां उतर कर बस या टैक्सी द्वारा मनाली पहुंचा जा सकता है.

क्या देखें?

हिडिंबा देवी मंदिर : 1553 में पैगोडा शैली में बना भीम की पत्नी हिडिंबा का डूंगरी मंदिर ऐतिहासिक वास्तुकला का एक सुंदरतम नमूना है. इस मंदिर के चारों तरफ घने देवदार के वृक्ष हैं. इस में चार स्तरीय

मनाली में रोमांचक खेल

कुल्लूमनाली की भौगोलिक बनावट तथा मनोहारी चोटियां शीतकालीन रोमांचक खेलों के लिए देशविदेश में काफी लोकप्रिय हैं. हिमपात के दौरान यहां की सुषमा देखते ही बनती है. हिमाच्छादित पर्वत शिखर सूर्योदय के समय चमचमाने लगते हैं. संध्या के समय वे केसरिया बाना पहन कर मानो शांति और त्याग का उपदेश देते हैं.

ऐसे ही हिमाविल पर्वतों एवं घाटियों में हिमाचल पर्वतारोहण संस्थान की ओर से प्रति वर्ष ट्रेकिंग, स्कीइंग, स्केटिंग आदि रोमांचक खेलों का आयोजन किया जाता है. मनाली में स्केटिंग के लिए देश की प्रायः सर्वोत्तम ढलानें हैं.

मनाली, सोलंग नाला, बिजली महादेव, लग घाटी, खराहल घाटी, नग्गर आदि क्षेत्रों में हिमपात होते ही रोमांचक खेल प्रेमियों का आना शुरू हो जाता है. गत वर्ष से यहां हिमाचल प्रदेश सरकार तथा मैसर्स हैली स्कीइंग (पर्यटन) लि. के सहयोग से हैली स्कीइंग की भी सुविधा है. इस रोमांचक खेल में स्की धावक हैलीकाप्टर की सहायता से उच्च पर्वत शृंखलाओं पर जाता है और वहां से नए परिपथों की खोज करता हुआ नीचे उतरता है.

रोमांचक क्रीडाओं के संदर्भ में ही नहीं, पहाड़ों पर जमी बर्फ वहां सुरक्षित जल भंडार, अधिक पैदावार, रोग विनाश एवं पर्यावरण के संदर्भों में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पैगोडा आकार की छत है तथा द्वार पर चित्र उत्कीर्ण हैं.

तिब्बती मठ : यह मठ तिब्बत बाजार के ठीक पीछे एक सुंदर व रमणीक स्थल पर बना हुआ है. यह मठ कालीन बनाने वालों के लिए प्रसिद्ध है. यहां से लोग कालीन तथा अन्य हस्तशिल्प वस्तुओं की खरीदारी करते हैं.

जगत सुख : यह एक समय में दस पुश्तों तक कुल्लू राजाओं की राजधानी था. यह स्थान पुराने मंदिरों, जिन में गायत्री देवी, देवी शेरावाली आदि के लिए प्रसिद्ध है. शिकारा शैली में बना शिव मंदिर देखने लायक है.

वशिष्ठ : व्यास के बाएं किनारे पर स्थित यह एक छोटा सा गांव है. यह अपने गरम झरनों के लिए प्रसिद्ध है और यहां पुरुषों तथा स्त्रियों के लिए हमामी स्नानागार की अलगअलग व्यवस्था है. इसी के पास पिरामिड टाइप पत्थरों से बना मंदिर दर्शनीय है.

सोलंग घाटी : मनाली और कोठी के बीच स्थित सुंदर घाटी सोलंग में ग्लेशियर तथा बर्फ से ढके पहाड़ों में नयनाभिराम तथा स्तब्धकारी दृश्य देखने को मिलते हैं. यहां पर स्कीइंग की पूरी सुविधा है. यहां हर साल जाड़ों में 'दि इंस्टीट्यूट आफ माउंटेनियरिंग एंड स्लाइड स्पोर्ट्स' द्वारा वार्षिक खेलोत्सव का आयोजन किया जाता है.

रोहतांग दर्रा : मनाली से 51 किलोमीटर दूर समुद्रतट से 4,112 मीटर की ऊंचाई पर रोहतांग लाहौल स्पीति का द्वार है. यह स्थान बर्फीली पहाड़ियों का अवलोकन करने के लिए सब से उपयुक्त है. यह दर्रा जून से सितंबर तक आम पर्यटकों के लिए खुला रहता है. पर्वतारोहियों के लिए यह कभी भी बंद नहीं रहता.

अत्यधिक हिमपात में रोहतांग दर्रा बंद हो जाने के कारण लाहौल स्पीति और कुल्लूमनाली के मध्य आवागमन प्रायः बंद रहता है. ऐसी परिस्थितियों में कुल्लू से लाहौल स्पीति के लिए सप्ताह में दो बार हवाई उड़ानें हैं, जिन में यात्रियों को रियायती किराया देना पड़ता है.

हाल ही में सरकार ने रोहतांग दर्रे के नीचे से लगभग सात किलोमीटर लंबी एक सुरंग बनाने की योजना बनाई है. इस से वर्ष भर लाहौल स्पीति एवं कुल्लूमनाली के बीच यातायात जारी रह सकेगा.

डलहौजी

यों तो हिमाचल प्रदेश का कोनाकोना ही प्रकृति की आश्चर्यजनक छटा से भरा पड़ा है लेकिन डलहौजी एक ऐसा पर्यटन स्थल है जो न केवल एक लंबी सैर के लिए ही उपयुक्त है बल्कि यहां की स्वच्छ हवा भी अत्यंत स्वास्थ्यवर्धक है. यह रमणीक, प्रकृति की गोद में फलतीफूलती सैरगाह देश और विदेश में प्रसिद्ध और लोकप्रिय है.

डलहौजी का नामकरण लार्ड डलहौजी के नाम पर हुआ है. लार्ड डलहौजी ब्रिटिश शासन के दौरान 10वें गवर्नर जनरल थे जिन्होंने इस पद पर 1848 से 1856 तक कार्य किया. इसी मध्य इन्होंने चंबा के सुदूर पहाड़ों के मध्य एक एकांत स्वास्थ्यवर्धक निवास स्थान अर्थात सेनेटोरियम की स्थापना का कार्यभार संभाला और डलहौजी को इस के लिए सर्वोत्तम माना. इन्हीं दृष्टि से चंबा के राजा के साथ इस स्थान को ले कर एक समझौता हुआ और 1854 में लार्ड डलहौजी ने यहां सेनेटोरियम की स्थापना की. तभी से ले कर यह स्थान देशविदेश में एकांत सैरगाह के लिए लोकप्रिय है, जहां प्रति वर्ष हजारों सैलानी इस की स्वास्थ्यवर्धक जलवायु एवं सुंदरता का आनंद लेते हैं. 1954 में पंडित जवाहरलाल नेहरू ने यहां डलहौजी के वार्षिक समारोह में भाग लिया था और कहा था कि शायद ही ऐसा सुंदर और स्वच्छ हवाओं से युक्त सपूर्तिकारक स्थल अन्यत्र कहीं होगा.

कैसे जाएं?

डलहौजी दिल्ली से 563 कि.मी, चंडीगढ़ से 350 कि.मी. और पठानकोट से 80 कि.मी. दूर समुद्रतल से 2,036 मीटर की ऊंचाई पर बसा है. अब तो कांगड़ा में गग्गल हवाई पट्टी के निर्माण से यहां का भ्रमण और भी सुखद हो गया है. जो लोग इस लंबी थकान देने वाली यात्रा से बचना चाहते हों वे दिल्ली से वायुदूत सेवा द्वारा कांगड़ा और तत्पश्चात केवल 1.5 कि.मी. का सफर अपने वाहन या फिर बस द्वारा कर सकते हैं. पठानकोट तक रेल से भी सफर किया जा सकता है.

क्या देखें?

पंजपुला: डलहौजी महान क्रांतिकारी सरदार अजीत सिंह से भी जुड़ा है जिन्होंने अपने जीवन की आखरी सांसें यहां व्यतीत की थीं. उन की स्मृति में डलहौजी से 2 कि.मी. दूर एक स्मारक बनाया गया है जो उन की यादों को ताजा कर देता है. यह स्थान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

कहां ठहरें?

कुमार गेस्ट हाउस, फोन : 98; हेम कुंड होटल, फोन: 98; किंग होटल, फोन: 111; ग्रांड व्यू होटल, फोन : 23, 94; गोलरी होटल, गीतांजली होटल, बस स्टैंड के पास, फोन : 55; फेयर व्यू होटल, द माल, फोन : 106; न्यू मेट्रो होटल, बस स्टैंड के पास, फोन : 133; स्प्रिंग होटल, द माल, फोन: 112.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंजपुला नाम से जाना जाता है. यहां एक सुंदर झरना भी है जहां पांच छोटेछोटे पलों के मध्य से पानी बह रहा है. पंजपुला रोड पर ही नेताजी सुभाष चंद्र बोस एक प्राकृतिक चश्मे पर सैर हेतु जाया करते थे. वह 1937 में चार महीनों तक यहां रहे. उन्हीं के नाम पर इस चश्मे को अब सुभाष बावड़ी के नाम से जाना जाता है. पंजपुला में हिमाचल प्रदेश पर्यटन विकास निगम का सुंदर कैफेटेरिया पर्यटकों की सेवा कर रहा है.

बकरोटा: डलहौजी से 5 कि.मी. दूर बकरोटा पहाड़ी स्थित है. यह पहाड़ी अपने सुंदर परिवेश और जंगलों के लिए प्रसिद्ध है.

डाइनकुंड: 10 किलोमीटर की दूरी पर डाइनकुंड नामक भ्रमणीय स्थल अति रमणीक है जहां से ब्यास, रावी और चनाब नदियों को देखा जा सकता है.

कालाटोप: डलहौजी से 8 कि.मी. दूर कालाटोप पहाड़ी है. यहां से चारों ओर फैले विशालकाय पर्वतों व घाटी का विशाल परिदृष्य दिखाई देता है. यहां पर स्थित वन्य विश्राम स्थल में रात्रि पड़ाव की सुविधा उपलब्ध है.

डलहौजी में पर्यटकों की सुविधा हेतु पर्यटन विकास निगम हि.प्र. द्वारा बेहतरीन आवास एवं जलपान सुविधाएं अपने होटल गीतांजलि में उपलब्ध करवाई गई हैं. पर्यटन संबंधी जानकारी के लिए पर्यटक सूचना केंद्र भी खोला गया है जहां क्षेत्रीय प्रबंधक बैठते हैं (दूरभाष : 36).इस के अतिरिक्त कई प्राइवेट होटल तथा लोक निर्माण विभाग का विश्राम गृह और एक यूथ होस्टल भी है. डलहौजी में ढंडी सड़क और गर्म सड़क में भ्रमण का अपना ही आनंद हैं. गांधी चौक में खड़े हो कर इधरउधर के मनोहारी परिदृष्य देखे जा सकते हैं. खरीदारी के लिए तिब्बतन बाजार अति लोकप्रिय हैं. —एस.आर. हरनोट

खजियार

डलहौजीचंबा मार्ग के मध्य, चारों ओर से घने वनों के मध्य एक ऐसा रमणीक स्थल है जहां प्रवेश करते ही आप अपना सर्वस्व इस की छटा पर निछावर कर देंगे. यहां का प्राकृतिक सौंदर्य अनूठा है, अनुपम है. समुद्रतल से 1,890 मीटर पर बसा यह मनोहारी स्थल डलहौजी से 22 कि.मी.दूर है. यह रास्ता घने देवदार के जंगल में से गुजरता है और ऐसा लगता है मानो आप आकाशगंगा से चले जा रहे हों.

देवदार के जंगलों के मध्य 1.5 किलोमीटर और एक किलोमीटर लंबाचौड़ा तश्तरीनुमा मैदान अपने आप में अद्वितीय आकर्षण लिए हुए है. इस के मध्य प्राकृतिक झील है जो इस के सौंदर्य को चार चांद लगाए है. लेकिन इस समय बिना उचित देखरेख के यह झील अपना अस्तित्व खोती जा रही है. झील में पानी की जगह दलदल भर गया है, लेकिन स्थानीय अंधविश्वासी लोग इसे देव प्रकोप ही मानते हैं.

चंबा

जब कभी आप मैदानों की गरमी और आपाधापी से दूर कहीं एकांत पहाड़ी पर्यटन स्थलों में अपने परिवार के साथ अवकाश व्यतीत करना चाहें और आपके मन में पहाड़ों के बीच एक लंबी सैर का विचार आए तो चंबा से बेहतर और कौन सी जगह हो सकती है.

समुद्रतल से यह स्थान 726 मीटर की ऊंचाई पर स्थित डलहौजी से 44 कि.मी. तथा पठानकोट से 122 कि.मी. की दूरी पर है. बताया जाता है कि 920 ई० में राजा साहिल वर्मा ने इस शहर को बसाया था और अपनी प्रिय पुत्री राजकुमारी चंपावती के नाम पर इस का नामकरण किया.

कब जाएं?

यों तो चंबा पर्यटन के लिए आप अपनी सुविधानुसार कभी भी कार्यक्रम बना सकते हैं, किंतु यहां का मुख्य आकर्षण वसंत पंचमी और दशहरे का है. इन अवसरों पर यहां की लोक संस्कृति की झलक देखी

चंबा
कहां ठहरें?
अखंड चंदी होटल, कालिज रोड, फोन: 2371; चंपक होटल, हिमाचल लाज, जनता लाज, कृष्णा लाज, टूरिस्ट इन, ठाकुर लाज.

जा सकती है. अक्तूबर से फरवरी तक चंबा की सैर के दौरान भारी ऊनी वस्त्र ले जाने चाहिए.

कैसे जाएं?

चंबा का निकटतम रेलवे स्टेशन पठानकोट है, जो देश के अन्य प्रमुख नगरों से जुड़ा हुआ है. पठानकोट से चंबा तक बस टैक्सी आदि से यात्रा की जा सकती है. दिल्ली, पठानकोट, शिमला, डलहौजी आदि स्थानों से चंबा के लिए प्रतिदिन बसें उपलब्ध रहती हैं.

क्या देखें?

चौगान: शहर के मध्य एक सार्वजनिक विहार स्थल है जिसे चौगान कहा जाता है. यह यहां की सभी प्रकार की गतिविधियों के आयोजन का केंद्र है. वर्ष भर यहां मेले लगे रहते हैं. मिंजर और सूही का मेला बहुत प्रसिद्ध हैं.

लक्ष्मीनारायण मंदिर : शहर के मध्य कई प्राचीन मंदिर हैं जो अपनी भव्यता और स्थापत्य कला के लिए मशहूर हैं. लक्ष्मीनारायण मंदिर समूह 8वीं और 10वीं शताब्दी में निर्मित किए गए हैं. यह 6 मंदिरों का समूह पुरातात्विक दृष्टि से अति महत्त्वपूर्ण है. इस के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहां ठहरें?

बी. मेहरा होटल, कोतवाली बाजार, फोन : 2256; हिल व्यू होटल, कोतवाली बाजार रामसिंह होटल, कोतवाली बाजार; रोज होटल, कोतवाली बाजार, फोन : 2417; शिमला होटल, कोतवाली बाजार, फोन : 2650; सन एंड स्नो होटल, कोतवाली बाजार, फोन : 2423.

कब जाएं?

धर्मशाला पर्यटन के लिए उचित समय मार्च से जून और सितंबर से नवंबर तक रहता है.

कैसे जाएं?

हाल ही में गग्गल में हवाई अड्डा बन जाने से धर्मशाला तक वायुमार्ग की सेवाएं भी उपलब्ध हो गई हैं. गग्गल और धर्मशाला के बीच मात्र 13 किलोमीटर की दूरी है.

रेल मार्ग से जाने वाले पर्यटकों को 90 किलोमीटर दूर पठानकोट पर उतरना पड़ेगा. पठानकोट देश के अन्य प्रमुख नगरों से एक्सप्रेस रेलगाड़ियों द्वारा जुड़ा है. पठानकोट जोगिंदरनगर ब्रांच लाइन पर स्थित है कांगड़ा. अतः पठानकोट से ब्रांच लाइन का सफर करते हुए कांगड़ा पहुंचा जा सकता है.

सड़क मार्ग से धर्मशाला राष्ट्रीय राज मार्ग संख्या 1 ए, 1 और 21 के द्वारा पठानकोट, जालंधर और मंडी से जुड़ा है. अतः यहां पठानकोट, जम्मू, दिल्ली, चंडीगढ़, ऊधमपुर, होशियारपुर, देहरादून, हरिद्वार, अमृतसर, लुधियाना, कुल्लू, मनाली, शिमला, चंबा डलहौजी, भरमौर आदि स्थानों से बस द्वारा भी पहुंचा जा सकता है. दिल्ली, शिमला, मनाली और पठानकोट से शिमला के लिए भी डीलक्स बसें उपलब्ध हैं.

क्या देखें?

मेकलाडगंज: सड़क के रास्ते मेकलाडगंज लगभग 10 किलोमीटर दूर है. किंतु यदि आप पैदल ही जाना चाहें तो मात्र तीन किलोमीटर चलना पड़ेगा. यह धर्मशाला का नया दर्शनीय स्थल है. 19वीं शती में पंजाब के तत्कालीन राज्यपाल डी. मेकलाड ने इसे बसाया था. उन के ही नाम पर इसे मेकलाडगंज कहा गया. यहां के बौद्ध मंदिरों में आधुनिक वास्तुशिल्प के दर्शन होते हैं.

भगसुनाथ मंदिर: यह पुरातन मंदिर के रूप में भी जाना जाता है. यह मेकलाडगंज के समीप ही बना है. इस में भगसुनाथ की मूर्ति स्थापित है. यहां एक जलकुंड तथा स्वच्छ जल का एक निर्झर भी है. यह एक मनोरम पिकनिक स्थल भी है.

सेंट जोंस चर्च: यह चर्च मेकलाडगंज और फारसिट गंज के बीच वनीय क्षेत्र में स्थित है. यह भारत के [illegible] धर्मशाला में ही मरा था और यहीं 1863 में दफ्ना[illegible] गया था. चर्च में आकर्षक शीशों की खिड़कियां लगी [illegible]

कुणाल पथरी: कोतवाली बाजार से मात्र [illegible] किलोमीटर की दूरी पर है कुणाल पथरी. यहां स्थानी[illegible] देवता का एक मंदिर है. यह धर्मशाला का निकटत[illegible] पिकनिक स्थल है.

वार मेमोरियल: मातृभूमि की रक्षा में शहीद [illegible] सैनिकों की स्मृति में बना यह स्मारक नगर में प्रवे[illegible] स्थल के निकट ही है. यहां प्रकृति की रमणीयता देख[illegible] ही बनती है.

डलहौजी: यह 11 किलोमीटर दूर है. इस [illegible] आसपास खड़े फर के वृक्ष इस की सुंदरता में चार चां[illegible] लगा देते हैं. यह ट्रैकिंग की भी उत्तम जगह है.

क्या खरीदें?

सन 1966 में तिब्बत पर चीन द्वारा कब्जा कर लेने पर अनेक तिब्बती शरणार्थी आ कर धर्मशाला में बस गए थे. यहां उन की बढ़ती संख्या ने उन की [illegible] अलग बस्ती भी बना दी है. अतः यहां तिब्बती हस्तशिल्प की चीजें अच्छी मिलती हैं, जिन्हें तिब्बती हस्तशिल्प केंद्र, कोतवाली बाजार और मेकलाडगंज से खरीदा जा सकता है.

शिमला

जब भागदौड़ की जिंदगी से बच कर दूर, बहुत दू[illegible] किसी मनोरम और शांत रमणीय स्थान में कु[illegible] दिन घूमफिर कर व्यतीत करने की योजना आप बना[illegible] हैं, तो आप के मानस पटल पर एक के बाद दूसरे अंत[illegible] पर्यटन स्थलों के नाम अंकित होने लगते हैं. आइए, [illegible] आप को सैर कराते हैं खूबसूरत पर्यटन स्थलों की. [illegible] फिर तैयार हो जाइए और सब से पहले चलि[illegible] शिमला, जिसे 'पर्वतीय नगरों की रानी' कहा जाता है.

समुद्र की सतह से 7262 फुट की ऊंचाई प[illegible] स्थित शिमला पर्वतीय स्थलों, काफी ऊंचाई से गिरने वाली जलधाराओं तथा हिमाच्छादित पर्वतों के कारण अत्यंत मनमोहक लगता है. हिमाचल प्रदेश की राजधानी बने इस शहर का नामकरण यहां स्थि[illegible] श्यामला देवी के मंदिर के नाम पर हुआ है. पहले इ[illegible] नगर का नाम 'श्यामला' ही था, मगर कालांतर में इ[illegible] का अपभ्रंश 'शिमला' ही प्रयोग में आने लगा.

पहले शिमला नेपाल महाराज के अधीन था, मगर बाद में अंग्रेजों ने युद्ध कर के इस पर अप[illegible] अधिकार जमा लिया. सन 1819 में लेफ्टिनेंट रोस को यह स्थान काफी भाया. बस, फिर क्या था? उस ने अपने लिए यहीं आननफानन में एक छोटा सा घर बनवाया. आप को यह जान कर हैरत होगी कि वह इस पूरे क्षे[illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का पहला घर था. सन 1821 में ऐडवर्ड गैरेट ने यहां एक कोठी बनवाई. उस के बाद तो यहां अनेक मकान बनाए गए. और फिर यह एक शहर बन गया, वह भी ऐसा कि इस का नाम करोड़ों लोगों के दिलोदिमाग में अच्छी तरह रचबस गया.

सन 1840 से 1939 तक शिमला भारत तथा पंजाब प्रांत की ग्रीष्मकालीन राजधानी रहा. द्वितीय विश्वयुद्ध के समय कुछ प्रमुख विभागों को छोड़ कर शेष सभी विभागों के मुख्य कार्यालय शिमला में ही रहे. सन 1947 से 1953 तक यह पूर्वी पंजाब की राजधानी रहा. सन 1966 में पंजाब और हरियाणा को जब अलगअलग राज्य घोषित किया गया, तब इसे हिमाचल प्रदेश की राजधानी बना दिया गया.

शिमला

कहां ठहरें?

होटल अंबर, राम बाजार, फोन: 4774; गुलमर्ग होटल, द माल, फोन 3168/69; हिमलैंड होटल, सर्कुलर रोड, फोन: 3596/7; हिम व्यू होटल, नारकंडा; मरीना होटल, द माल, फोन: 3557, 5591; सम्राट होटल, द माल, फोन: 4172; ओबेराय क्लार्क, द माल, फोन: 6091; हर्ष होटल, चौड़ा मैदान, द माल, फोन: 3016/7; कुफरी होली डे रिसौर्ट, फोन: 8, 300, 341/342; एशिया द डान, महावीर घाटी, फोन: 5858, 6464.

कैसे जाएं?

दिल्ली से 590 कि.मी., कलकत्ता से 2031 कि.मी., बंबई से 2132 कि.मी., अमृतसर से 741 कि.मी. और चंडीगढ़ से 117 कि.मी. दूर स्थित इस मनोहारी पर्वतीय नगर तक आप मुख्यतः सड़क मार्ग या रेलमार्ग से ही जा सकते हैं. दिल्ली, जम्मू, चंडीगढ़, अमृतसर तथा कालका से शिमला तक बसें जाती हैं. रेलमार्ग से यहां पहुंचने के लिए आप को उत्तर रेलवे के कालका स्टेशन पर गाड़ी बदलनी पड़ेगी. यहां से प्रस्थान करने वाली छोटी लाइन की रेलगाड़ी, जो डीजल से चलती है, 103 छोटीछोटी सुरंगों से हो कर शिमला पहुंचती है. अतः इस से यात्रा करने पर आप को अलग ही आनंद आएगा. मनभावन प्राकृतिक दृश्यों का अवलोकन करते हुए साढ़े पांच घंटे की यह यात्रा कब पूरी हो गई, आप को पता ही नहीं चलेगा. वायुमार्ग से जाने वाले पर्यटक चंडीगढ़, जो अनेक प्रमुख शहरों से वायुमार्ग से सीधे जुड़ा हुआ है, तक ही वायुयान से जा सकते हैं. उस के बाद वे रेल, बस या कार से शिमला पहुंच सकते हैं.

दिल्ली से शिमला जाने के लिए प्रत्येक सोमवार और गुरुवार को हिमाचल प्रदेश पर्यटन विकास निगम की बसें चलती हैं. वैसे, दिल्ली के अंतर्राज्यीय बस अड्डे से भी शिमला जाने के लिए हिमाचल प्रदेश पथ परिवहन निगम और हरियाणा पथ परिवहन निगम की बसें चलती हैं. वहां से वापस लौटने में भी आप को दिक्कत नहीं होगी, क्योंकि शिमला से दिल्ली, चंडीगढ़, अंबाला, कालका, कुल्लू, मनाली, अमृतसर, कसौली, चैल, धर्मशाला आदि के लिए अनेक बसें चलती हैं.

कब जाएं?

शिमला हर मौसम में अपने अलग ही रंग में रंगा रहता है. वस्तुतः यह एक विस्तृत कैनवास है, जिस पर प्रकृति ने अपनी तूलिका से हजारों रंग बिखेर दिए हैं. मादक चाल चलती प्रदूषणरहित नदियां, भव्य पर्वत शिखर, शांत घाटियां और मृदुभाषी लोग—यही है इस पर्यटन स्थल का वास्तविक चित्र. इसे देखने के लिए आप यहां कभी भी आ सकते हैं, अत्यधिक सर्दी के दिनों को छोड़ कर, क्योंकि तब भीषण हिमपात के कारण पर्यटन का मजा किरकिरा हो जाता है. मगर इस के बावजूद कुछ पर्यटक उस समय अर्थात दिसंबरजनवरी में भी चारों तरफ बिछी बर्फ की चादर देखने और स्कीइंग का आनंद लेने के लिए यहां आते हैं. आप भी उस समय आ सकते हैं, लेकिन भरपूर ऊनी कपड़े ले कर. सितंबरअक्तूबर में भी यहां पर्यटकों की विशेष गहमागहमी रहती है, क्योंकि यहां का शरदोत्सव देखते ही बनता है. वैसे, यहां घूमने के लिए सब से उपयुक्त समय रहता है अप्रैल से जून तक.

यहां के दर्शनीय स्थलों का अवलोकन करने के लिए हिमाचल प्रदेश पर्यटन विकास निगम की बसों की सेवा आप ले सकते हैं. ये बसें सुबह दस बजे से संध्या पांच बजे तक पर्यटकों को विभिन्न स्थानों पर घुमाती हैं. बेहतर यही होगा कि आप यहां (शिमला) पहुंचते ही

शिमला : रेल सेवाएं

शिमला-कालका : 10.55, 13.10, 16.50, 17.45
कालका-शिमला : 6.30, 6.45, 7.15, 11.50
नई दिल्ली-कालका (हिमालयन क्वीन) 6.15, (कालका मेल) दिल्ली : 22.50
कालका-नई दिल्ली (हिमालयन क्वीन) 16.35, (कालका मेल) दिल्ली : 23.30

नोट : शिमला में माल रोड पर रेलवे का आरक्षण काउंटर है, जहां से पर्यटक अग्रिम आरक्षण करा सकते हैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन में आरक्षण करा लें. वैसे, घूमने के लिए यहां भाड़े पर अन्य वाहन भी उपलब्ध रहते हैं

क्या देखें?

अभी तक आप प्राथमिक आवश्यक बातों की जानकारी ले रहे थे. अब आइए, देखने चलें दर्शनीय स्थलों को. यहां के दर्शनीय स्थलों में रिज, माल, जाखू हिल, प्रास्पेक्ट हिल, चाडविक जलप्रपात, राज्य संग्रहालय, तारादेवी मंदिर, क्रेगनानो, कुफरी, रामपुर, मशोबरा आदि प्रमुख हैं. रिज और माल में गर्मी के दिनों में शाम को शीतल हवा और ठंड के दिनों में दोपहर में गुनगुनी धूप से मन तरोताजा हो जाता है. ऐसे समय में मनोरम दृश्यों का अवलोकन करते रहने और मूंगफली खाते रहने का आनंद ही कुछ और है. यहां ठंड के मौसम में आप 'आइस स्केटिंग' कर सकते हैं. 'रोलर स्केटिंग' तो यहां पर किसी भी मौसम में किया जा सकता है.

कि.मी. दूर स्थित है. 87 मीटर की ऊंचाई से झाड़ियों के बीच गिरने वाले इस जलप्रपात के इर्दगिर्द प्राकृतिक दृश्य देखते ही बनते हैं. यहां लोग पिकनिक मनाते हैं.

प्रास्पेक्ट हिल: आप कल्पना कीजिए कि जब एक स्थान पर एक ही साथ आप को सूर्यास्त और चंद्रोदय का दृश्य दिखाई पड़ेगा, तब आप को कितनी सुखद अनुभूति होगी. निश्चित रूप से यह अनुभूति आप प्राप्त करना चाहेंगे. तो फिर अवश्य चलिए प्रास्पेक्ट हिल पर. शिमला से मात्र 5 कि.मी. की दूरी पर स्थित 2,145 मीटर ऊंची इस पहाड़ी पर आप बालूगंज से 15 मिनट की चढ़ाई के बाद पहुंच सकते हैं. इस के शिखर पर कामना देवी का एक मंदिर है. यहां से शिमला, जतोग, समरहिल, तारादेवी और सोलन का नयनाभिराम दृश्य आप को दिखेगा. यदि आप यहां पूर्णिमा के आसपास आएंगे तो और अच्छा रहेगा.

शिमला : प्रमुख बस सेवाएं

शिमला से दिल्ली : (साधारण) 6.00, 19.30. (डीलक्स व सेमी डीलक्स) 8.20, 11.00, 19.30, 19.45. पठानकोट : 5.00, 16.30. जम्मू : 6.00. हरिद्वार (सा.) 5.10, 17.15, 19.30. देहरादून : (सा.) 5.10, 17.15. धर्मशाला : (सा.)5.00, 8.20, (डी.) 9.40. डलहौजी : (सा.) 18.30. मनाली : (डी.) 9.15, 10.30. कुल्लू (डी.)12.00.

शिमला को दिल्ली से : (डी.) 8.20. हरिद्वार से : (सा.) 22.00. पठानकोट से : (सा.) 16.30. जम्मू से : (सा.) 16.00. पठानकोट से : (सेमी डी.) 9.00, 17.30. धर्मशाला से : (सा.) 5.00.

नोट : 1. हिमाचल प्रदेश पर्यटन विकास निगम पर्यटन मौसम के दौरान प्रति सप्ताह शुक्रवार और शनिवार को शिमला और दिल्ली के बीच वातानुकूलित बसें चलाता है. शिमला से यह बस 9 बजे प्रातः चलती है.
2. दिल्ली जाने वाली सभी बसें चंडीगढ़ हो कर जाती हैं.
3. हिमाचल प्रदेश पर्यटन विकास निगम पर्यटन मौसम में शिमला से मनाली तक प्रातः 8 बजे नियमित डीलक्स बसें चलाता है.
4. यदि पर्यटक समूह में हिमाचल प्रदेश के अन्य स्थानों की सैर के लिए दिल्ली और चंडीगढ़ से डीलक्स बसें किराए पर लेना चाहें तो वहां स्थित पर्यटन सूचना केंद्रों से संपर्क कर सकते हैं.

जाखू हिल: शिमला की सब से ऊंची इस पहाड़ी के शिखर पर एक हनुमान मंदिर है. यहां से आप संपूर्ण शिमला का विहंगम दृश्य देख सकते हैं. मेघरहित आकाश रहने पर यहां से सूर्योदय और सूर्यास्त के साथसाथ हिमाच्छादित पर्वत श्रृंखलाओं को भी देखने का लुत्फ उठाया जा सकता है. हां, यह संभव है कि यहां पर आप को कुछ बंदर मिलें, जो आप की जेबें भी टटोल लेंगे. अतः बेहतर यही होगा कि आप इन्हें छेड़ें नहीं, कुछ खाद्य पदार्थ दे दें. इन्हें खाते हुए देख कर आप को मजा तो आएगा ही, आप उन से पिंड भी छुड़ा लेंगे.

तारादेवी मंदिर: शिमला से 8 कि.मी. ही दूर है तारादेवी नामक स्थान. वस्तुतः यहां एक पहाड़ी है, जिस पर तारादेवी का एक भव्य मंदिर है. यहां स्काउट का मुख्यालय भी है. इस स्थान पर आप रेलगाड़ी और बस—दोनों से जा सकते हैं.

चाडविक: चाडविक जलप्रपात शिमला से 7

क्योंकि तब एक साथ सूर्यास्त और चंद्रोदय का दृश्य देख कर आप और अधिक पुलकित होंगे.

वाइल्ड फ्लावर: इतने स्थानों पर घूम लेने के बाद भी कुछ और दर्शनीय स्थान बच जाते हैं, जहां न जाना आंतरिक हर्ष अर्जित करने के दौर से गुजरने से वंचित रह जाने के समान होगा. इन में प्रमुख है वाइल्ड फ्लावर हाल. शिमला से 13 कि.मी. दूर देवदार, चीड़ और ओक के वृक्षों से घिरा यह भव्य भवन अंग्रेजों के समय में वायसराय का निवास स्थान था. यहां से बद्रीनाथ तथा पीर पंजाल का मनभावन दृश्य देख कर आप मुग्ध रह जाएंगे. यहां विभिन्न पक्षियों की मीठी आवाजें पर्यटकों को बांध लेती हैं. यहां पर्यटन विभाग द्वारा बनाए गए लकड़ी के छोटेछोटे मकान, जिन में शयनकक्ष के अतिरिक्त स्नानघर और रसोईघर भी है, में आप ठहर सकते हैं.

ग्लेन: शिमला से 4 कि.मी. दूर स्थित ग्लेन भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक प्रमुख पर्यटन स्थल है. राज्य विधानसभा भवन के पास ढलान पर स्थित इस स्थान पर पिकनिक मनाने का भरपूर मजा लूटने के लिए गर्मी के दिनों में काफी संख्या में लोग आते हैं.

राज्य संग्रहालय: शिमला में ही माल रोड पर चौड़े मैदान के पास राज्य संग्रहालय है. संपूर्ण हिमाचल प्रदेश की कला और संस्कृति के क्षेत्र की विरासत यहां पर मूर्तिशिल्प, परिधानों, आभूषणों और कलाकृतियों के रूप में संग्रहीत हैं.

आसपास के दर्शनीय स्थल

कुफरी: कुफरी शिमला का एक और प्रमुख पर्यटन स्थल है. शिमला से 16 कि.मी. दूर स्थित यह स्थान जनवरीफरवरी में स्कीइंग के लिए काफी उपयुक्त है. इस मनभावन स्थान पर जंगली भैंसे से जुती बर्फगाड़ी पर सवारी करने का आनंद कुछ अलग ही होता है. यहां प्रति वर्ष फरवरी में खेलोत्सव मनाया जाता है, जो काफी रोचक होता है. यहां ठहरने के लिए एक होटल के अतिरिक्त एक विश्रामगृह भी है.

मशोबरा: शिमला से 13 कि.मी. दूर सुरम्य जंगलों से घिरा है मशोबरा, जिस की रमणीयता का अनुमान सिर्फ इसी बात से आप लगा सकते हैं कि यहां जो एक बार पहुंच जाता है, वह जल्दी जाना नहीं चाहता है. 2,150 मीटर की ऊंचाई पर स्थित इस स्थान पर वह प्रसिद्ध 'रिट्रीट बिल्डिंग' है, जिस में अपने अंतिम समय व्यतीत करने की अभिलाषा इंदिरा गांधी ने प्रकट की थी.

नालदेहरा: प्राकृतिक सौंदर्य बिखेरने में अन्य पर्यटन स्थलों से होड़ लेता नालदेहरा शिमला से 22 कि.मी. दूर स्थित है. यहां भारत का नौ छिद्रों वाला सब से पुराना गोल्फ मैदान है. इस के पास ही नागदेव का एक प्राचीन मंदिर है, जो एक साफ नाले में स्थित है. चूंकि यहां की बोली में 'मंदिर' को 'देहरा' कहा जाता है, इसलिए नाले में स्थित इस मंदिर के ही कारण इस स्थान का नाम 'नालदेहरा' (नाले में स्थित मंदिर) पड़ा है. देवदार और चीड़ के वृक्षों से घिरे टीले वाले इस स्थान को सतलज नदी की अल्हड़ धारा ने और अधिक रमणीय बना दिया है. इस शांत और चित्ताकर्षक स्थान पर प्रायः फिल्मों की शूटिंग होती रहती है. यहां जलपान गृह, गोल्फ क्लब, पर्यटन भवन और छोटेछोटे 'लौगहट' भी हैं.

चैल: यह मनोरम पर्यटन स्थल शिमला से 54 कि.मी. की दूरी पर स्थित है. सुगम सड़कों से जुड़े इस स्थान से दिन में हिमाच्छादित हिमालय और रात में जवाहरात से टंके मखमल की तरह बत्तियों से सुसज्जित शिमला और कसौली को देखने का अवर्णनीय आनंद आप उठा सकते हैं. यहां विश्व का सब से ऊंचा क्रिकेट मैदान भी है. यहां एक पुराने राजमहल में बने एक होटल में ठहरा जा सकता है.

यदि आप के पास समय हो, तो इन के अतिरिक्त कुछ और पर्यटन स्थलों को भी आप देख सकते हैं. जैसे चिलगांव (यहां संभवतः गर्म पानी का स्रोत है), नारकंडा, क्रेगनैनो आदि. इन स्थानों पर जाने के लिए शिमला से पर्यटन विभाग की डीलक्स बसें नियमित रूप से चलती हैं. इन बसों में एक गाइड भी होता है, जो पर्यटकों को यथास्थान आवश्यक जानकारी देता रहता है.

मसूरी

समुद्र तट से मात्र 2,006 मीटर की ऊंचाई पर बसे इस चित्ताकर्षक पर्यटन स्थल पर कैप्टन यंग नामक एक अंगरेज की प्रथम दृष्टि आज से लगभग 160 वर्ष पूर्व पड़ी थी. उसी समय वह इस पर मोहित हो गया था. कुछ ही दिनों के बाद उस ने यहां अपना एक घर बनवाया. उस समय का इस का सौंदर्य आज भी कमोबेश विद्यमान है. अब तो इसे 'दून घाटी का ताज' कहा जाने लगा है.

कैसे जाएं?

मसूरी तक पहुंचने के लिए सब से सुलभ साधन बस ही है. दिल्ली, सहारनपुर, देहरादून, हरिद्वार आदि से यहां के लिए नियमित रूप से बसें चलती हैं. यदि आप रेलमार्ग से चलते हैं, तो आप को देहरादून स्टेशन पर ही उतरना पड़ेगा और फिर बस या टैक्सी से यहां पहुंचना पड़ेगा. हवाई यात्रा करने वालों को भी देहरादून हवाईअड्डे पर उतरना पड़ेगा. वहां से मसूरी की 36 कि.मी. लंबी यात्रा कब पूरी हो गई, आप को पता ही नहीं चलेगा, क्योंकि रास्ते के नयनाभिराम दृश्यों को देखने में आप खो जाएंगे.

कब जाएं?

अपेक्षाकृत कम ऊंचाई पर स्थित होने के कारण यहां वर्ष के अधिकांश महीनों में घूमने लायक उपयुक्त समय रहता है. जुलाई और अगस्त में भारी वर्षा तथा नवंबर से फरवरी तक भीषण ठंड के कारण यहां पर्यटकों की संख्या कुछ कम हो जाती है. इन बातों को ध्यान में रखते हुए आप जब चाहें, यहां आ सकते हैं.

क्या देखें?

एक कहावत है—राजा के महल में मोतियों की कमी नहीं. यह कहावत मसूरी के लिए पूरी तरह चरितार्थ होती है. यहां आप जिधर घूमने निकल जाएंगे, उधर ही मनमोहक स्थान दिखेंगे. क्यों न इन में से कुछ प्रमुख स्थलों पर हम अपनी दृष्टि डालते चलें?

गनहिल: गनहिल वह पहाड़ी है, जिस पर अंग्रेजों के शासनकाल में रोज मध्याह्न 12 बजे एक गोला छोड़ा जाता था. इसी लिए इस का नाम 'गनहिल' पड़ा. माल रोड पर हाकमंस होटल के निकट लगे रज्जुमार्ग की ट्रॉली में बैठ कर 4 मिनट में 400 मीटर की दूरी तय कर आप यहां पहुंच सकते हैं. यहां से बंदरपूंछ, श्रीकांठ तथा गंगोत्तरी का सुंदर दृश्य दिखाई पड़ता है. दूर के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दृश्यों को ढंग से देखने के लिए पास ही भाड़े पर उपलब्ध दूरबीन का उपयोग आप कर सकते हैं.

हां, आप इस बात को अवश्य ध्यान में रखें कि आप यहां अपना कैमरा ही साथ लाएं ताकि यहां झुंड में खड़े पेशेवर छायाकारों से बच सकें. दरअसल यहां प्रायः ऐसा होता है कि छायाकार चित्रों को घर पर भेज देने की बात कह कर पर्यटकों से रुपए ले लेते हैं, मगर चित्र भेजते नहीं हैं. अगर उसी दिन चित्र मिल जाने की संभावना आप को दिखती है, तब भी बेहतर यही होगा कि अच्छी तरह घूम लेने के बाद ही निश्चित हो कर आप चित्र खिचवाएं. और लोगों की तरह आप भी यहां के पारंपरिक वेशभूषा में चित्र खिचवा सकते हैं.

मसूरी

कहां ठहरें?

***स्नो व्यू होटल**, लाइब्रेरी बाजार; **दीप होटल**, द माल, फोन : 2470; **माउंटेन व्यू होटल**, द माल, फोन : 2970; **होटल गैब्रीयल**, रोजइन स्टेट, माल रोड, फोन : 2201, 2848; **होटल अलका**, कुरली बाजार; **टूरिस्ट बंगला**, द माल; **दून व्यू होटल**, कुरली बाजार, फोन : 566; **हिल क्वीन होटल**, द माल, फोन : 2497; **पैराडाइज कांटीनेंटल**, द माल; **होटल नाज**, कुरली बाजार, फोन : 309; **नीलम इंटरनेशनल**, न्यू मार्केट, कुरली, फोन : 2495; **रौकसी होटल**, कुरली, फोन : 2741; **सेवाय होटल**, द माल, फोन : 2510; **वैली व्यू होटल**, द माल, फोन : 2324; **चालनट ग्रोव**, द माल;*

चाइल्डस लाजः मसूरी से 4 किलोमीटर दूर स्थित चाइल्डस लाज यहां की सब से ऊंची पहाड़ी है. यहां टट्टू द्वारा या पैदल भी पहुंचा जा सकता है. यहां एक प्रबल क्षमता वाली दूरबीन रखी हुई है, जिस से आप आसपास के प्राकृतिक मनोरम दृश्यों को बहुत ही अच्छे ढंग से देख सकते हैं.

म्यूनिसिपल गार्डनः बागबगीचों से घिरा यह दर्शनीय स्थल मसूरी से मात्र 4 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है. मसूरी के लाइब्रेरी चौक से सीधे चढ़ाव पर जाने वाली सड़क से आप यही हाथ से खींचे जाने वाले रिक्शे या टैक्सी से पहुंच सकते हैं. यहां नौका विहार के लिए एक कृत्रिम झील है, मगर इस का पानी प्रायः सूखा ही रहता है.

कैंप्टी फाल: मसूरी से 12 किलोमीटर दूर स्थित यह एक बहुत ही मनोहारी जलप्रपात है. पर्वतों से घिरे इस स्थान पर काफी [illegible] से सुंदर जलधारा गिरती है. यहां धूप में नहाने का अपना अलग ही आनंद है. यहां जलपान वगैरह के लिए एक कैफे भी है.

कैमल्स बैक रोडः 3 किलोमीटर लंबी यह सड़क कुलरी बाजार के रिक्शा स्टैंड से शुरू हो कर लाइब्रेरी रोड तक जाती है. यहां से सूर्यास्त का दृश्य देखने लायक होता है. यहां बड़ीबड़ी दुकानें तथा दोदो सिनेमाघर हैं. फिर भी यहां का माहौल काफी शांत लगता है. अगर आप घुड़सवारी के शौकीन हैं, तो यहां भाड़े पर उपलब्ध घोड़ों पर सवारी कर सकते हैं.

धनोल्टीः मसूरी से 24 किलोमीटर दूर मसूरीटेहरी मार्ग पर स्थित इस स्थान पर जब आप आएंगे, तो आप को असीम आनंद प्राप्त होगा. देवदार और चीड़ के लंबेलंबे वृक्षों से अपनी शोभा में वृद्धि कर रहे इस स्थान से हिमालय की मनोहारी सुषमा आप बहुत अच्छी तरह देख सकते हैं.

नागटिब्बाः मसूरी से 42 किलोमीटर दूर मसूरीटेहरी मार्ग पर चारों ओर घने जंगलों से घिरे इस स्थान पर प्रायः जंगली पशु विचरते रहते हैं. इन से सावधान रहते हुए इन्हें प्रत्यक्ष देखने का अवसर आप यहां प्राप्त कर सकते हैं. अगर आप शिकार के शौकीन हैं और इन जानवरों का शिकार करना चाहते हैं, तो अवश्य कीजिए, मगर यहां के क्षेत्रीय वन अधिकारी से अनुमति ले कर.

इन स्थानों के अतिरिक्त मसूरी के आसपास और कुछ और दर्शनीय स्थलों को आप देख सकते हैं, अगर आप के पास पर्याप्त समय हो. वे स्थान हैं, क्लाउड्स एंड, बेनोंग पहाड़ी आदि.

क्या खरीदें?

यदि आप मसूरी में खरीदारी करना चाहें, तो तिब्बती हस्तशिल्प की कुछ वस्तुएं खरीद सकते हैं. ये वस्तुएं प्रायः उचित मूल्य पर मिलती हैं.

देहरादून

दो पर्वतों के मध्य में स्थित होने के कारण 'दून' कहलाने वाला यह स्थान समुद्र तट से 2100 फुट ऊंचा है. इस रमणीक स्थान के उत्तर में हिमालय की अपत्यका, दक्षिण में शिवालिक पहाड़ियां, पूरब में गंगा और पश्चिम में यमुना है. यदि आप अंगरेज यात्री टी.जी. लौंगस्टाफ द्वारा भारत यात्रा पर लिखी गई पुस्तक को पढ़ेंगे, तो पाएंगे कि उस ने इसे 'प्राकृतिक सौंदर्य का धनी प्रदेश' बताया है. निस्संदेह यह बात पूरी तरह सही है. मगर हां, एक बात यह भी है कि सिर्फ पर्यटन स्थलों के कारण ही नहीं, बल्कि बड़े शैक्षणिक प्रतिष्ठानों और सैन्य अकादमी के कारण भी यह स्थान प्रसिद्ध है. इतना ही नहीं, पर्वतारोहण के लिए सर्वथा उपयुक्त स्थान होने के कारण भी इसे ख्याति मिली है.

कैसे जाएं?

आप दिल्ली से सीधे या हरिद्वार होते हुए बस से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यहां पहुंच सकते हैं. [illegible] हवाई जहाज द्वारा भी जा सकते हैं. हरिद्वार से सड़क मार्ग द्वारा मात्र डेढ़ घंटे में यहां पहुंचा जा सकता है.

कब जाएं?

यहां घूमने के लिए सब से उपयुक्त समय मार्च से जून तक होता है. जुलाई से सितंबर तक तीव्र वर्षा के कारण यहां पर्यटन का मजा थोड़ा किरकिरा हो जाता है. अतः इस अवधि में यहां न ही जाएं, तो ठीक रहेगा. हां, उस के बाद अर्थात अक्तूबर से दिसंबर तक भी वहां जाने का कार्यक्रम आप बेफिक्र हो कर बना सकते हैं, मगर भरपूर ऊनी कपड़ों के साथ.

क्या देखें?

तपोवन: देहरादूनरायपुर मार्ग पर देहरादून से 5 किलोमीटर दूर स्थित तपोवन एक अतीव मनोरम स्थल है. देहरादून से यहां के लिए अच्छी यातायात व्यवस्था है, मगर चार किलोमीटर तक ही. उस के बाद एक किलोमीटर पैदल चलना पड़ता है. कहा जाता है कि यहीं पर द्रोणाचार्य का आश्रम था और यहीं पर वह तप करते थे. चूंकि उस समय यह स्थान वन में था, इसी लिए इसे 'तपोवन' कहा जाने लगा. इन दिनों भी यहां दृश्य काफी मनभावन लगता है.

वन अनुसंधानशाला: देहरादून से 5 किलोमीटर दूर यह स्थान देहरादूनचकराता मार्ग पर स्थित है. इस भव्य स्थान पर कागज मिल और वनस्पति उद्यान के अतिरिक्त वाटिका में कुलांचे भरते हिरणों को भी आप देख सकते हैं.

गुच्चू पानी: देहरादून से 5 किलोमीटर दूर इस स्थान पर गुफाओं से एक झरना बहता है. गर्मी के दिनों में यहां पर रात तक लोगों की भीड़ रहती है. क्योंकि उन दिनों इस का ठंडा पानी काफी सुखदायक लगता है.

सहस्रधारा: जैसा कि नाम से ज्ञात होता है, इस स्थान पर हज़ारों जलधाराएं बहती हैं. पहले कभी ऐसा होता होगा, इन दिनों तो कुछ ही धाराएं गिरती हैं. फिर भी यहां का दृश्य मन को बांध लेने के लिए काफी होता है. यहां गंधमिश्रित जल के सोते भी हैं. लोगों का यह विश्वास है कि इस सोते के जल से उदर रोग तथा चर्म रोग का निवारण होता है.

पिकनिक के लिए सर्वथा उपयुक्त इस स्थान तक देहरादून से प्रायः सिटी बसें चलती रहती हैं. यहां पर्यटकों की सुविधा के लिए भोजनालय, रेस्तरां, बाथरूम तथा विश्रामगृह भी हैं.

लक्ष्मणसिद्ध: देहरादून से 12 किलोमीटर दूर देहरादूनऋषिकेश मार्ग पर स्थित यह रमणीक स्थल लोगों को काफी मोह लेता है. यहां आप किसी भी वाहन से पहुंच सकते हैं. यहां पर बड़ेबड़े पेड़ काफी अच्छे लगते हैं. हां, आप को एक सलाह, वह यह कि यहां रविवार को जाने से भरसक बचने का प्रयास करें, क्यों कि उस दिन आसपास के निवासी काफी संख्या में यहां छुट्टी मनाने पहुंच जाते हैं. तब भीड़ रहने पर घूमने का मजा थोड़ा किरकिरा हो जाता है.

देहरादून

कहां ठहरें?

होटल मीडो, रेलवे स्टेशन के निकट, फोन : 27088, 26870; प्रिंस, 1, हरिद्वार रोड, फोन : 7070—6678; रिलैक्स, 7, कोर्ट रोड, फोन : 27776, 26608; मधुबन, 97, राजपुर रोड, फोन : 24094—97; क्वालिटी, राजपुर रोड; प्रेसीडेंट, राजपुर रोड, फोन : 27802, 27083; प्रिया, 65/23, राजपुर रोड; निधि प्रा.लि., 74 सी, राजपुर रोड; दिनैक्स, 59, गांधी रोड; आकाशदीप 23/2 त्यागी रोड, फोन : 27278; पार्क व्यू, 17, राजपुर रोड;, एफ.आर.आई. गेस्ट हाउस, चकराता रोड; फील्ड हास्टल, यमुना कालोनी, फोन : 7061; लोक निर्माण विभाग का निरीक्षण भवन, सहस्रधारा तथा रायपुर रोड, फोन : 3830; सर्किट हाउस, न्यू कैंट रोड, फोन : 3573; दून व्यू, 26, राजपुर रोड;

नोट : लोक निर्माण विभाग के निरीक्षण भवनों तथा सर्किट हाउस में ठहरने से पूर्व आरक्षण करा लेना उचित रहेगा.

वाइल्ड लाइफ संचुरी: 450 वर्ग किलोमीटर में फैला यह वन्य जीव अभय वन देहरादून से 23 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है. दिन भर के वन्य प्राणियों को देखने के बाद थक चुके पर्यटकों के ठहरने के लिए कुछ विश्रामगृह भी हैं.

डाकपत्थर: देहरादून से 45 किलोमीटर दूर देहरादून चकराता मार्ग पर स्थित यह स्थान यमुना नदी पर बने बांध के कारण अधिक प्रसिद्ध है. यहां आजूबाजू में ही कई बागबगीचे भी हैं. यहां के दृश्य को कैमरे में कैद करने पर प्रतिबंध है.

कालसी : देहरादूनचकराता मार्ग पर देहरादून से 50 किलोमीटर दूर स्थित इस स्थान पर आप सम्राट अशोक द्वारा लिखवाए गए शिलालेखों को देख सकते हैं. एक बड़ी शिला पर पाली भाषा में लिखे इस शिलालेख की विशेषता यही है कि यह आप को तभी दिखाई पड़ेगा, जब आप इस पर पानी डालेंगे.

चकराता: देहरादून से 95 किलोमीटर दूर अर्थात कालसी से 45 किलोमीटर और आगे 7,000 फुट की ऊंचाई पर स्थित यह मनोरम स्थान देखे बिना यदि आप लौट आते हैं, तो बस समझ लीजिए कि देहरादून की आप की यात्रा अधूरी रह गई. स्वास्थ्य के लिए काफी लाभदायक इस स्थान से आप किसी दूरबीन के हिमाच्छादित पर्वत शिखरों को देख सकते हैं. यहां एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहुत ही सुंदर दृश्य प्राप्त भी है. यहां मृग, भालू तथा अन्य जानवर यों ही घूमते, दौड़ते दिख जाते हैं.

यहां लोगों को ले जाने के लिए देहरादून से अधिकांश प्राइवेट बसें ही चलती हैं. इन से यात्रा करने का भी अपना एक अलग आनंद है, क्योंकि आसपास के नयनाभिराम दृश्य देखते चलने का अवसर प्राप्त होता है. चकराता सैनिक छावनी क्षेत्र है, जिस में निश्चित समय पर (कुछकुछ घंटे बाद) खोले जाने वाले इन फाटकों को पार करते हुए देहरादून से चकराता पहुंचने पर लगभग चार घंटे लग जाते हैं. चूंकि वहां ठहरने का कोई प्रबंध नहीं है, अतः घूम कर यथासंभव उसी दिन लौट आएं. हां, गर्मी के दिनों में भी यहां जाते समय आप अपने साथ गर्म कपड़े अवश्य ले जाएं.

हरिद्वार

पहले 'कपिला' के नाम से ज्ञात इस स्थान को पौराणिक काल में 'मायापुरी' कहा जाता था. वैसे इस के कुछ और पुराने नाम हैं. जैसे—'गंगाद्वार', 'तपोवन' आदि. आप देखेंगे कि यहीं पर गंगा नदी पहाड़ों की गोद से उतर कर मैदानी भाग में बहना शुरू करती है. सच कहा जाए तो उत्तराखंड की प्राकृतिक सुषमा यहीं से बिखरी हुई दिखने लगती है. इसे देख कर चीनी यात्री ह्वेनसांग भी काफी मोहित और प्रभावित हुआ था और फिर उस ने अपनी यात्रा संस्मरण में यहां का उल्लेख किया था. बदरीनाथ, केदारनाथ, मसूरी, ऋषिकेश आदि 'पर्यटन स्थलों का द्वार' कहे जाने वाले इस स्थान पर आज भी प्राकृतिक दृश्य देखते ही बनता है.

गंगा तट पर बसे इस शहर के नाम पर आज अगर धब्बा लगा है, तो यहां के उन पंडों, होटल वालों, रिकशा वालों, बस वालों तथा कुलियों के कारण, जो पर्यटकों को ठगने की होड़ में लगे रहते हैं. यहां पर प्रतिदिन, विशेषकर गर्मी के दिनों में सूर्योदय के समय साफसुथरी गंगा में धीरेधीरे चल रहीं नौकाएं, तट पर नहा रहे अनगिनत लोग, आसपास हरेभरे पहाड़, कलकल बहती गंगा की जलधारा, निकट और दूर के मंदिरों से आती घंटों, शंखों की स्वरलहरी—कुल मिला कर एक बहुत ही सुखद और मनभावन वातावरण तैयार हो जाता है. पहाड़ों पर बसी बस्तियों के घरों से रात में छनछन कर आता धीमाधीमा प्रकाश भी काफी अच्छा लगता है.

कब जाएं?

बेहतर यही होगा कि पर्यटन के उद्देश्य से हरिद्वार जाने का कार्यक्रम आप अप्रैल के प्रथम सप्ताह से जून के द्वितीय सप्ताह तक और सितंबर के दूसरे सप्ताह से अक्तूबर के अंत तक के लिए ही बनाएं, क्योंकि जून के तीसरे सप्ताह से अगस्त के अंत तक वर्षा के कारण और नवंबर से मार्च तक ठंड के कारण घूमने का पूरा मजा नहीं मिल पाता है.

कैसे जाएं?

दिल्ली, बंबई, कलकत्ता, लखनऊ, पटना, वाराणसी, देहरादून, मथुरा, आगरा, नैनीताल आदि स्थानों से रेलगाड़ी द्वारा आप आसानी से हरिद्वार पहुंच सकते हैं. इतना ही नहीं, सड़क मार्ग से बस, टैक्सी आदि द्वारा भी इन शहरों से आप यहां आ सकते हैं.

जहां तक वायु मार्ग की बात है, यहां से लगभग 5 किलोमीटर दूर जौलीग्रांट (भानियांवाला) तक आप हवाई जहाज से आ सकते हैं. दरअसल यही हरिद्वार का निकटतम हवाई अड्डा है. दिल्ली और लखनऊ से यहां तक की 'वायुदूत' की सेवा का लाभ उठा कर यहां से फिर बस या टैक्सी द्वारा हरिद्वार पहुंचा जा सकता है.

क्या देखें?

हरिद्वार में अनेक दर्शनीय स्थल हैं. जैसे—हर की पैड़ी, भीमगोडा तालाब, भीमगोडा केनाल हेडवर्क्स, चंडी देवी मंदिर, मनसा देवी का मंदिर, सप्त सरोवर, मायापुरी, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय आदि.

हर की पैड़ी : यही हरिद्वार का वह प्रसिद्ध घाट है, जहां पर प्रत्येक 12 वर्षों के पश्चात कुंभ का मेला और प्रत्येक 6 वर्षों के पश्चात अर्धकुंभ का मेला

हरिद्वार

कहां ठहरें?

होटल गुरुदेव, स्टेशन रोड, फोन 101; होटल सम्राट, चित्रा सिनेमा के निकट; पनामा, जसराम रोड; वासदेव मद्रास, स्टेशन रोड के निकट; कैलाश, शिवमूर्ति, फोन 789; पुरोहित लाज, हर की पैड़ी.

लगता है. यहीं प्रतिदिन सूर्यास्त के समय लोग दीपों की माला गंगा नदी में प्रवाहित करते हैं. अंधेरा होने पर ये दीप काले मखमल पर टांके हुए मोती की तरह अत्यंत सुंदर दिखते हैं.

इस स्थान पर स्नान करने की अच्छी व्यवस्था है. यहां पर कुछ पंडों ने अपनीअपनी दुकानें खोल रखी हैं. वहां वे स्नानार्थियों का सामान अपने पास रख लेते हैं तथा स्नान कर के लौटने पर चंदन का टीका लगा कर पैसे लेते हैं और तब सामान वापस करते हैं. आप के लिए में यही अच्छा होगा कि इन लोगों के जाल से बचें, क्योंकि रखवाली के बहाने कीमती सामान को वे गायब भी कर देते हैं.

भीमगोडा तालाब : हरिद्वार से ढाई किलोमीटर दूर इस स्थान पर वन उपवन देखने लायक हैं. कहा जाता है कि हिमालय पर्वत पर जाते समय भीम ने इस तालाब का निर्माण करवाया था.

भीमगोडा केनाल हैडवर्क्स : शताब्दी पुल से आगे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डेढ़ किलोमीटर की दूरी पर स्थित इस स्थान पर गंगा नदी अपना रुख बदलती है. पहाड़ों के बीच बह रही गंगा के इस तट पर बनी सुंदर वाटिकाओं के पास जाने पर जल्दी लौटने का मन नहीं करता है.

चंडी देवी मंदिर : गंगा नदी के उस पार नील पर्वत पर बने इस मंदिर के पास ही गौरीशंकर महादेव तथा अंजना देवी के भी मंदिर हैं. यहां से 3 किलोमीटर पैदल चलने पर आप देखेंगे काफी दूर तक फैली पर्वतशृंखला को. यहां का दृश्य काफी सुंदर लगता है.

मनसा देवी मंदिर : हरिद्वार के पर्यटन कार्यालय से 3 किलोमीटर दूर बिल्व पर्वत पर स्थित इस मंदिर तक आप सर्पाकार सड़क से भी पैदल जा सकते हैं और 'रतन टाकीज' के पास से शुरू होने वाले रज्जुमार्ग से भी. प्रातः 8 बजे से 12 बजे तक और फिर 2 बजे से सायं 6 बजे तक चलायमान रहने वाले इस रज्जुमार्ग के बंद कक्ष से दूरदूर तक के क्षेत्र का विहंगम दृश्य देखने पर काफी अच्छा लगता है. अच्छा होगा कि अधिक आनंद लेने के लिए आप इस मंदिर तक जाएं पैदल और लौटें रज्जुमार्ग से.

सप्तर्षि आश्रम : हरिद्वार से लगभग 6 किलोमीटर दूर इस स्थान पर आप बस से पहुंच सकते हैं. प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर इस स्थान पर शीशे से बने मंदिर को देख कर आप मुग्ध हो जाएंगे. इस के पास में बहुत पहले गंगा नदी सात धाराओं में बहती थी, ऐसा कहा जाता है. वैसे, अब वे सभी धाराएं यहां दिखाई नहीं पड़तीं.

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय : अगर आप के पास समय हो तो इस विख्यात विश्वविद्यालय को भी देख सकते हैं. हरिद्वारज्वालापुर मार्ग पर स्वामी श्रद्धानंद द्वारा स्थापित इस शैक्षणिक प्रतिष्ठान में वेद मंदिर संग्रहालय तथा फार्मेसी भी है.

हरिद्वार के किसी भी दर्शनीय स्थल के बारे में अथवा किसी अन्य विषय से संबंधित विशेष जानकारी प्राप्त करने के लिए आप क्षेत्रीय पर्यटन कार्यालय, हरिद्वार से संपर्क कर सकते हैं.

ऋषिकेश

हराभरा और मनमोहक पर्यटन स्थल होने के कारण ऋषिकेश प्रति वर्ष असंख्य पर्यटकों को अपनी गोद में वर्णनातीत सुकून प्रदान करता है. शायद इसी लिए जब कोई यहां आता है, तो फिर जल्दी जाना नहीं चाहता. बहुत हद तक यह संभव है कि आप के साथ भी ऐसा ही हो.

समुद्रतट से 365 मीटर की ऊंचाई पर गंगा के दाएं तट पर स्थित यह रमणीय स्थान अपेक्षित शांति और भरपूर प्राकृतिक सौंदर्य पर्यटकों के सामने बांटता सा मालूम पड़ता है. तीन तरफ से हिमालय की पहाड़ियों से घिरा यह शहर लगभग 1,500 कि.मी. वर्ग में फैला हुआ है. वैसे इसे कहा तो जाता है 'गलियों वाला पुराना शहर', मगर हाल में महेश योगी के आश्रम के भी कारण यह अधिक चर्चित हुआ है. इस स्थान का विशेष महत्त्व इसलिए भी है कि, जैसा लोग मानते हैं, यहां की पर्यटन यात्रा पूरी करने के बाद ही बदरीनाथ, केदारनाथ, गंगोत्तरी और यमुनोत्तरी की पर्यटन यात्रा शुरू की जाती है.

ऋषिकेश

कहां ठहरें?

बसेरा, 1. घाट रोड, फोन : 767, 720; **फारेस्ट रेस्ट हाउस**, मुनि की रेती; **गिरवार**, 154; आशुतोष नगर, फोन : 1076; **इंद्रलोक होटल**, रेलवे रोड, फोन : 55516; **होटल कैशाल**, कैलाश गेट, मुनि की रेती, फोन : 1006; **मंदाकिनी इंटरनेशनल**, 63, हरिद्वार रोड, फोन : 781, 1081, 1281; **होटल नटराज**, देहरादून रोड, फोन : 1099, 1272; **न्यू टूरिस्ट लाज**, रेलवे स्टेशन के पास; **तपोवन होटल**, लक्ष्मण झूला के पास, फोन : 212; **होटल लक्ष्मण झूला**, लक्ष्मण झूला के पास, फोन : 442, 289; **टूरिस्ट ट्रेवल होम**, देहरादून रोड.

कब जाएं?

चूंकि बदरीनाथ, केदारनाथ आदि स्थानों की तरह यहां पर कुछ माह तक बर्फ नहीं जमती. अतः आप यहां किसी भी महीने में घूमने के लिए आ सकते हैं, लेकिन सुहाने मौसम का विशेष आनंद उठाने के लिए आप यहां मई या जून माह में ही आएं, तो श्रेयस्कर रहेगा. वैसे, सितंबरअक्तूबर में भी यहां की छटा बहुत बदली हुई नहीं होती है.

कैसे जाएं?

ऋषिकेश देश के सभी प्रमुख शहरों से रेलमार्ग, सड़कमार्ग तथा वायुमार्ग से जुड़ा हुआ है. यहां का निकटतम हवाईअड्डा देहरादून यहां से 16 किलोमीटर दूर है. दिल्ली से वायुदूत का विमान प्रतिदिन यहां आता है. दिल्ली, बंबई, कलकत्ता तथा अन्य प्रमुख शहरों से रेलगाड़ी या बस द्वारा भी आप यहां आ सकते हैं. हरिद्वार से प्रत्येक 15 मिनट के अंतराल पर यहां के लिए बसें चलती हैं. बेहतर यही होगा कि आप यहां बस या टैक्सी से ही आएं, क्योंकि तब आप मार्ग की प्राकृतिक सुषमा को भी अच्छी तरह से देख सकेंगे.

क्या देखें?

आइए, अब चल कर बारीबारी से देखते हैं ऋषिकेश के दर्शनीय स्थानों को.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लक्ष्मण झूला : यह लगभग 70 मीटर लंबा है. पुराने झूले पर लोगों के सवार होने पर या तेज हवा चलने पर यह थोड़ा हिलने लगता है, जिस से लोगों को थोड़ाबहुत झूले पर खड़े होने का एहसास होने लगता है. संभवतः इसी लिए इसे 'झूला' कहा गया है. गंगा नदी पर सामान्य दिनों में बहने वाली जलधारा से 150 मीटर की ऊंचाई पर लोहे के मोटेमोटे तारों से बने इस झूले पर से आसपास का काफी मनोरम दृश्य दिखलाई पड़ता है.

शिवानंद झूला : लक्ष्मण झूला की शैली में नवनिर्मित शिवानंद झूला भी ऋषिकेश का एक नवीन दर्शनीय झूला है. यह लक्ष्मण झूले से लगभग तीन किलोमीटर पहले पड़ता है. यह परमार्थ निकेतन, जो गंगा के उस पार पड़ता है, और ऋषिकेश को मिलाता है.

नरेंद्र नगर : बहुत पहले 'ओड़ायली' के नाम से जाना जाने वाला यह स्थान ऋषिकेश से 16 किलोमीटर दूर है. यहां का राजमहल तथा हवामहल देखने लायक है. यहां से सूर्यास्त का दृश्य भी बहुत सुंदर दिखता है.

गीता भवन : यहां आप लक्ष्मण झूला या नवनिर्मित रामपुल को पार कर के स्कूटर या टैक्सी के द्वारा आसानी से पहुंच सकते हैं तथा आधुनिक शिल्पकला और वास्तुकला के आधुनिक नमूने देख सकते हैं.

इन के अतिरिक्त भारत मंदिर, पुष्कर मंदिर, रघुनाथ मंदिर, स्वर्गाश्रम, ऋषिकुंड, त्रिवेणी घाट, बैराज पशुलोक तथा शिवानंद आश्रम भी दर्शनीय स्थल हैं.

क्या खरीदें?

गीता प्रेस की हस्तशिल्प की वस्तुएं, जैसे चादर, साड़ी, कुर्ते, तकियों के गिलाफ आदि काफी प्रसिद्ध हैं. इन्हें आप खरीद सकते हैं.

केदारनाथ

आप बदरीनाथ जाए और केदारनाथ न जाएं, तो शायद आप को भी संतोष की अनुभूति नहीं होगी. इसलिए तैयार हो जाइए और चल पड़िए केदारनाथ, जहां ऊंचेऊंचे हिमाच्छादित पर्वत, मेघाच्छादित आकाश, बल खाती मंदाकिनी नदी और शांत मंदाकिनी घाटी के नयनाभिराम दृश्य आप को मोहित कर लेंगे.

कब जाएं?

केदारनाथ जाने के लिए आप जब भी कार्यक्रम बनाएं, मेरा मई,जून या सितंबरअक्तूबर में ही बनाएं क्योंकि इन महीनों में वर्षा और हिमपात नहीं होने के कारण यहां का मौसम पर्यटन की दृष्टि से काफी अनुकूल रहता है. फिर भी आप यह न समझें कि इस समय में वर्षा नहीं पड़ती. बेहतर यह होगा कि इन महीनों में भी यहां आते समय ऊनी वस्त्र साथ में अवश्य रख लें.

कैसे जाएं?

केदारनाथ तक जाने के लिए आप बदरीनाथ, मसूरी, ऋषिकेश, नैनीताल आदि से नियमित चलने वाली बसों से गौरीकुंड तक जा सकते हैं. वहां से केदारनाथ तक की 14 किलोमीटर की दूरी घोड़े, टट्टू या कंडी द्वारा तय कर के आप केदारनाथ पहुंच जाएं. इस दूरी को तय करते समय एक ओर जहां कुछ परेशानी होती है, वहीं दूसरी ओर काफी हद तक अलग किस्म का आनंद बटोरने का अवसर भी मिलता है क्योंकि तीनों ओर पर्वतों की सुंदर शृंखला, छोटेछोटे वृक्ष और रंगबिरंगे पहाड़ी फूल काफी अच्छे लगते हैं.

केदारनाथ

कहां ठहरें?

बिड़ला गेस्ट हाउस, भारत सेवाश्रम संघ, नेपाल भवन, गुजरात भवन, भजन आश्रम, होटल हिमलोक, जे.के. हाउस, मंदिर कमेटी यात्री निवास आदि.

यदि किसी कारणवश केदारनाथ में स्थान उपलब्ध न हो सके तो गौरीकुंड के नए सुनील लाज, दीपक लाज, मंदिर कमेटी यात्री निवास और ऊखीमठ में लोक निर्माण विभाग के निरीक्षण भवन में भी ठहरा जा सकता है. गौरीकुंड व ऊखीमठ केदारनाथ पथ पर विशेष पड़ाव स्थल हैं.

क्या देखें?

केदारनाथ में बदरीनाथ की तरह अनेक दर्शनीय स्थान तो नहीं हैं. फिर भी जो हैं, वे सभी काफी सुंदर और मोहक हैं. आइए, चलते हैं हम उन स्थानों पर.

केदारनाथ मंदिर : तुषारमंडित हिमालय की गोद में स्थित इस मंदिर के आसपास का प्राकृतिक दृश्य देखते ही बनता है. इस मंदिर के मुख्य द्वार पर गणेश तथा अंदर दीवार पर माता कुंती और उन के पांच पांडवों के साथ द्रौपदी की मूर्ति है, जिस की शिल्पकला प्रशंसनीय है. प्रचलित धारणा के अनुसार यहां पर कोई शिवलिंग नहीं है. इस मंदिर के पीछे आदि शंकराचार्य का समाधिस्थल है.

मंदाकिनी घाटी : यह केदारनाथ मंदिर के पास स्थित है. शांतिप्रिय लोगों को विशेष रूप से पसंद है. गहन घाटी का प्राकृतिक दृश्य काफी मोहक है.

पंचगंगा : यह भी केदारनाथ मंदिर के पास ही है. यहां पहाड़ों से उतरती हुई चार नदियां—सरस्वती, मधुगंगा, स्वर्गद्वारी तथा क्षीरगंगा मंदाकिनी नदी में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

O&M 2983 HN

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

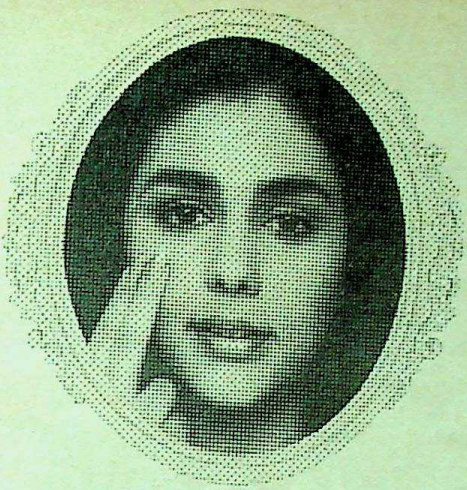

मुँहासे हटाए, रूखी-सूखी त्वचा में फिर वही चमक लाए

त्वचा को अगर कुदरत बिगाडे, तो अब कुदरत ही सँवारे.

घर के बाहर आपने कदम रखा नहीं कि धूप, धूल, हवा, मिट्टी, आपकी नाजुक त्वचा पर, जोर-जबरदस्ती दिखाने लगते हैं. नतीजा - कुछ ही दिनों में त्वचा कील, मुँहासों और रूखे-सूखेपन के सामने हार मान लेती है.

पर अब उसका साथ देने के लिए आ गई है फ़ेस टु फ़ेसः रंग-रूप सँवारने वाली नई आयुर्वेदिक क्रीम. ये त्वचा में वो सब कुछ बहुत हिफ़ाजत से लौटाती है जो कुदरत अनजाने में उससे छीन ले जाती है.

फ़ेस टु फ़ेस, १० ऐसे कोमल कुदरती पदार्थों से बनाई गई है जो त्वचा को आराम पहुँचाते हैं, रूखी त्वचा को सँवारकर उसमें पहले जैसी चमक लाते हैं.

भीनी-भीनी वाली इस नई आयुर्वेदिक कॉम्प्लेक्शन क्रीम में चिपचिपाहट बिल्कुल नहीं है. इसलिए ये लगते ही त्वचा में बिल्कुल एक-सी समा जाती है. तो इसे आप दिन में, मेक-अप से पहले या सोने के समय, कभी भी लगा सकती हैं.

कील, मुँहासों, उनसे पड़े दाग और रूखी-खुरदरी त्वचा पर फ़ेस टु फ़ेस, को लगातार लगाइए.

और फिर देखिए, कुछ ही दिनों में आपकी साफ़-सुथरी त्वचा कैसे जगमगा उठती है.

नई

फ़ेस टु फ़ेस

साफ़, खिली-खिली, जगमगाती त्वचा का बिल्कुल आयुर्वेदिक राज़.

OEM 2983 HN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

12

13

14

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

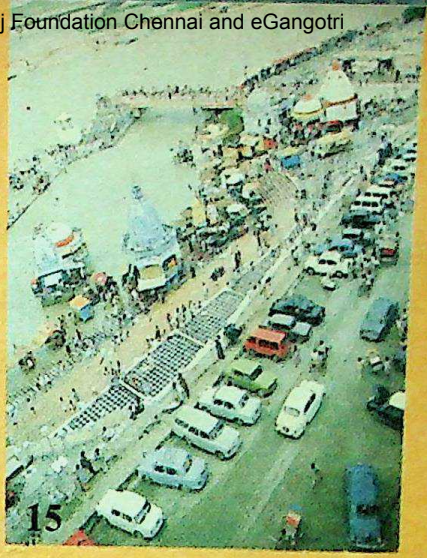

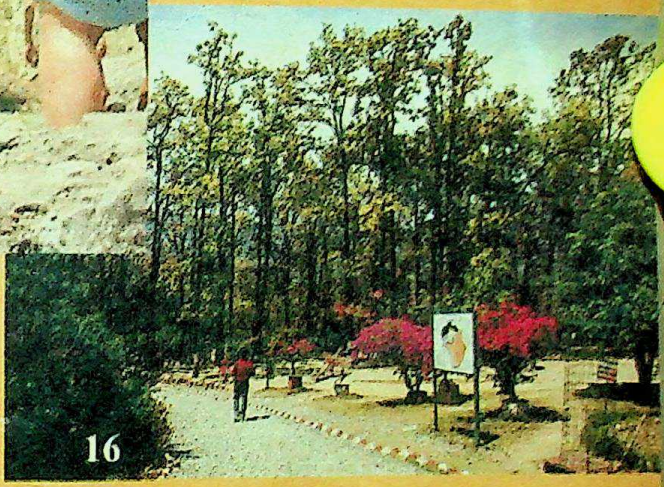

12. मसूरी के कैंप्टी फाल में नहाते पर्यटक.
13. मसूरी की कैमल्स बेक रोड पर काफी चहलपहल रहती है.
14. हराभरा, मनमोहक पर्यटन स्थल ऋषिकेश प्रतिवर्ष असंख्य पर्यटकों को आकर्षित करता है.
15. हर की पैड़ी पर हर वक्त नहाने वालों का तांता लगा रहता है.
16. देहरादून के मालसी डियर पार्क में हिरणों को विचरण करते हुए देखा जा सकता है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिलती हैं. इस स्थान पर जलधारा का स्वर इतना तीव्र होता है कि आपस की बातचीत भी बहुत आसानी से सुनाई नहीं पड़ती है.

वासुकी ताल : केदारनाथ से 8 किलोमीटर दूर इस स्थान पर एक जलाशय है, जिसे 'वासुकी ताल' कहा जाता है. इस जलाशय से निकलने वाली जलधारा को 'वासुकीगंगा' या 'सोनगंगा' कहा जाता है. हालांकि इस का रास्ता थोड़ा कष्टकर है, मगर इस का अर्थ यह नहीं कि आप यहां जा ही नहीं सकते. आप यहां अवश्य जाइए और यहां के मनोहारी प्राकृतिक दृश्य को देखने का आनंद उठाइए.

इन स्थानों के अतिरिक्त गुप्तकाशी, भीमगुफा, मधुगंगा, क्षीरगंगा, स्नो व्यू, उदक कुंड, हंस कुंड तथा गांधी सरोवर भी यहां के दर्शनीय स्थान हैं.

बदरीनाथ

समुद्रतल से 10,380 फुट की ऊंचाई पर 'नर' और 'नारायण' नामक पर्वतश्रेणियों के मध्य अलकनंदा तथा ऋषिगंगा नदियों के संगम पर स्थित बदरीनाथ सैकड़ों वर्ष पूर्व की तरह आज भी हर किसी को सम्मोहित सा कर लेता है. इस पर्यटन स्थल के नाम के 'बदरी' का शाब्दिक अर्थ होता है—बेर. दरअसल बहुत पहले यहां पर बेर का एक बड़ा जंगल था. इसी लिए पहले इसे 'बदरीवन' कहा जाता था. 'बदरी' का एक और अर्थ 'बादल' भी होता है. चूंकि यहां पर आकाश में प्रायः बादल छाए रहते हैं, इसलिए भी इसे 'बदरीवन' अर्थात वह वन, जिस के ऊपर बादल छाए रहते हों, कहा जाता होगा. जब आदि शंकराचार्य ने सातवीं शताब्दी में यहां के एक कुंड के पास प्रतिमा स्थापित कर दी, तो इसे 'बदरीनाथ' कहा जाने लगा.

कब जाएं?

महाभारत, स्कंद पुराण आदि में भी उल्लिखित इस स्थान पर आप मध्य अप्रैल से मध्य जून तक ही जाएं. यदि बाद में जाना चाहें तो फिर सितंबर अथवा अक्तूबर में तैयार हों, क्योंकि जुलाई और अगस्त में भीषण वर्षा के कारण तथा नवंबर से मध्य अप्रैल तक हिमपात के कारण यहां घूमना आप के लिए अधिक कष्टसाध्य हो जाएगा.

कैसे जाएं?

बदरीनाथ का दर्शन लाभ अर्जित करने के लिए आप रेलगाड़ी, बस और हवाई जहाज से भी जा सकते हैं, लेकिन बेहतर यही होगा कि आप बस से ही जाएं, क्योंकि तभी आप पर्यटन का भरपूर आनंद ले सकेंगे. बस यात्रा पहले की अपेक्षा अब सुगम तो हो ही गई है, अधिक रोमांचकारी भी है. सहारनपुर, ऋषिकेश, कोटद्वार और हरिद्वार से यहां के लिए नियमित बसें चलती हैं (इन बसों के भाड़े तथा आरक्षण के संबंध में आप विस्तृत जानकारी गढ़वाल मंडल विकास निगम लि., 74/1, राजपुर रोड, देहरादून से प्राप्त कर सकते हैं). आप की बस ज्योंज्यों आगे बढ़ती जाएगी, त्यों-त्यों मौसम अधिक ठंडा होता जाएगा. रास्ते में कलकल करते झरनों के मधुर स्वर, दूरदूर तक फैली मनोहर पर्वत शृंखलाओं और सकरे चौड़े पहाड़ी रास्तों को देख कर आप का मन पुलकित हो जाएगा.

यदि आप रेलमार्ग से बदरीनाथ जाना चाहते हैं तो हरिद्वार या ऋषिकेश, जो यहां के निकट के रेलवे स्टेशन हैं, से रेलगाड़ी पकड़ सकते हैं. वैसे देहरादून से भी गाड़ी पकड़ी जा सकती है, मगर यहां से यह यात्रा थोड़ी कष्टसाध्य होती है. अगर आप चाहें, तो रेलमार्ग द्वारा कोटद्वार हो कर भी बदरीनाथ जा सकते हैं.

अगर बदरीनाथ में आप का कोई सहयात्री बुरी तरह अस्वस्थ हो, तो इस के लिए अधिक चिंतित होने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि यहां रामबाड़ा, गौरीकुंड आदि स्थानों में भाड़े पर डांडी या घोड़े की व्यवस्था आसानी से हो जाती है. यहां सामान ढोने के लिए काफी संख्या में कुली भी हैं. बेहतर यही होगा कि डांडियों, घोड़ों या कुलियों की सेवा लेने के पहले उन का भाव अवश्य तय कर लें.

क्या देखें?

अगर आप से कोई व्यक्ति यह कहता है कि बदरीनाथ में अमुकअमुक स्थान देखने लायक हैं, तो सच मानिए कि वह बात बहुत हद तक सही नहीं होगी, क्योंकि यहां शायद ऐसा कोई स्थान नहीं है, जिसे सिर्फ देखने की ही नहीं, बल्कि जी भर कर देखने की इच्छा आप में न जागे. इन में कुछ स्थान तो विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं.

बदरीनाथ मंदिर : बदरीनाथ का प्रमुख आकर्षण माने जाने वाले इस मंदिर को गढ़वाल नरेश ने बनवाया

बदरीनाथ

कहां ठहरें?

बदरीनाथ पर्यटन के दौरान पर्यटक प्रायः जोशीमठ (जो बदरीनाथ के रास्ते में पड़ता है) में ठहरना पसंद करते हैं.

जोशीमठ में निरीक्षण भवन, बिड़ला विश्राम गृह, यात्री निवास, होटल नीलकंठ, नंदादेवी, कामेत, गुरुद्वारा आदि में पर्यटकों के ठहरने की उचित व्यवस्था है.

वैसे बदरीनाथ में भी होटल देवलोक तथा मंदिर समिति की धर्मशाला, बिड़ला धर्मशाला, मोदी धर्मशाला, निरीक्षण भवन, डी.जी.बी.आर. का निरीक्षण भवन ठहरने के उचित स्थान हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

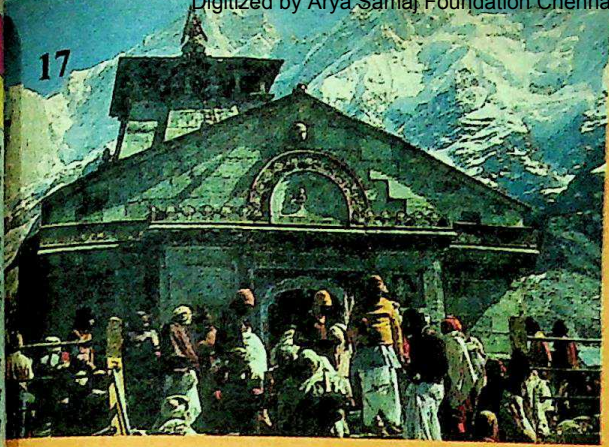

17. ऊंचेऊंचे पर्वतों से घिरा केदारनाथ का मंदिर.

18. गंगोत्तरी का मंदिर शिल्प कौशल में अद्वितीय है.

19. बदरीनाथ का मंदिर आज भी पर्यटकों को सम्मोहित सा करता है.

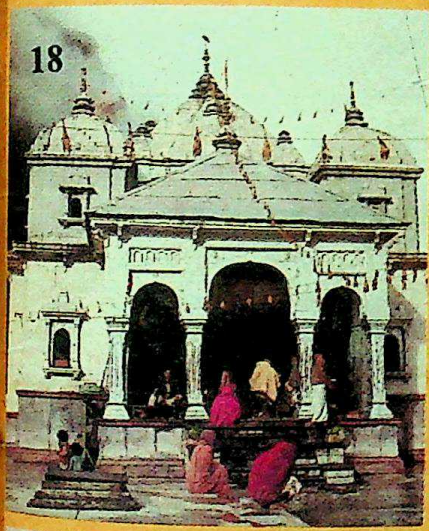

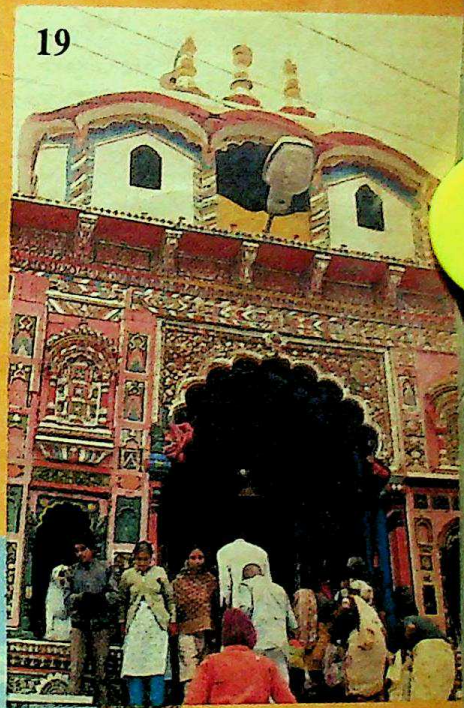

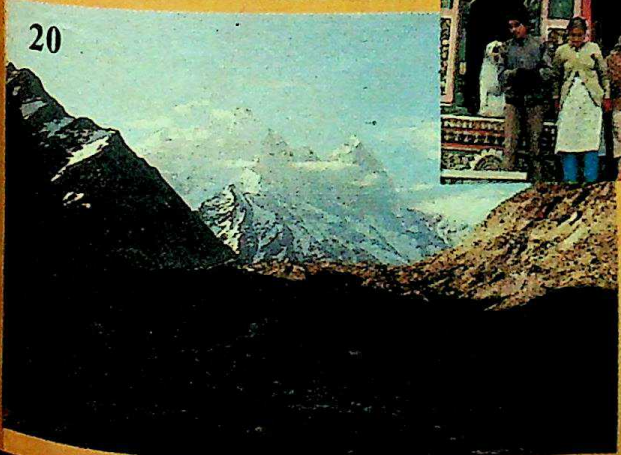

20. गंगोत्तरी के आस-पास चारों तरफ प्राकृतिक सुषमा बिखरी पड़ी हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था. अलकनंदा नदी के बाएं तट पर स्थित इस मंदिर की निर्माणकला बौद्ध निर्माणकला से प्रभावित दिखती है. 45 फुट ऊंचे प्रवेश द्वार वाले इस मंदिर पर महारानी लक्ष्मीबाई ने एक बार स्वर्णकलश चढ़ाया था.

वसुधारा: बदरीनाथ मंदिर से कुछ ही किलोमीटर दूर तथा भारतातिब्बत सीमा पर भारत के अंतिम गांव माना से 4.5 किलोमीटर पहले समुद्रतल से बारह हजार फुट की ऊंचाई पर स्थित इस स्थान पर लगभग 400 फुट ऊपर से जलप्रपात का जल तेजी से गिरता है. हवा के झोंके खा कर यह जलराशि जब असंख्य जलकणों में विभक्त हो जाती है, तब ऐसा लगता है कि घना कुहासा छाया हुआ है. यहां का दृश्य बहुत ही सुहाना दिखता है. इस ज़लप्रपात में बहुत कम लोग ही स्नान करते हैं, क्योंकि इस का जल बहुत ही शीतल है. कोलाहलरहित इस स्थान के आसपास कोई बस्ती नहीं है. हां, सिर्फ एक मंदिर है, जो वर्ष भर बंद रहता है.

पचतीर्थ: यह स्थान भी बदरीनाथ मंदिर के पास ही स्थित है. दरअसल यह नाम पांच झरनों—तप्तकुंड, नारदकुंड, प्रह्लादकुंड, कर्मधारा और ऋषिगंगा के नामों पर संयुक्त रूप से रखा गया है. इन में तप्तकुंड विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि इस का जल गर्म रहता है. यहां के ठंडे वातावरण में इस झरने के गर्म जल से स्नान करना बहुत ही सुखद लगता है.

हेमकुंड: अवर्णनीय सुंदर प्राकृतिक दृश्यों से भरपूर इस सरोवर की सृष्टि आसपास खड़े सात पर्वतों पर जमी बर्फ के पिघलने से हुई है. यद्यपि यहां काफी ठंड रहती है, तथापि यहां खड़े हो कर मनोरम दृश्यों को निहारते रहना बहुत अच्छा लगता है. यहीं पर एक भव्य गुरुद्वारा भी है.

रुद्रप्रयाग: पौराणिक नाम 'सूर्यप्रयाग' वाला यह स्थान बदरीनाथ से 158 किलोमीटर दूर है. अब यह धीरेधीरे एक आधुनिक नगर का रूप लेता जा रहा है. यहां सन 1918 में एक नरभक्षी चीता आया, जिस ने आठ वर्षों में लगभग 150 व्यक्तियों को उदरस्थ कर लिया.

जिम कार्बेट ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'मैन ईटर आफ इंडिया' में इस बात का उल्लेख किया है. उस के बाद से ही यह स्थान अधिक चर्चित हो गया.

इस अति रमणीय स्थान पर अलकनंदा नदी में तीव्र प्रवाह के कारण खड़ा हो कर नहाना किसी व्यक्ति के लिए कठिन होता है. स्थिति ऐसी है कि नहाने के लिए हाथ में लिए हुए लोटे को यदि जोर से नहीं पकड़ा जाए, तो वह भी बह सकता है. इस तीव्र प्रवाह में लोगों की सुविधा के लिए लोहे की जंजीर लगी हुई है.

इन के अतिरिक्त यहां के अन्य दर्शनीय स्थलों में प्रमुख हैं—पंचशिला, पंचधारा, शेषनेत्र, गणेशगुफा, भीमपुल, पांडुकेश्वर, देवप्रयाग, नंदप्रयाग, जोशीमठ, गोविंदघाट, व्यासगुफा, कर्णप्रयाग, धांगरिया, हनुमानचट्टी आदि.

गंगोत्तरी

गंगा नदी का जल सचमुच कितना स्वच्छ और स्वास्थ्यवर्द्धक है, अगर आप यह देखना चाहते हैं तो गंगोत्तरी अवश्य जाएं. यह वह स्थान है, जहां पहुंचने के बाद कुछ देर के लिए आप शायद यह भूल जाएंगे कि धूल, धुआं, भीड़, शोर और गंदगी से भी कोई संबंध भी है.

अत्यंत ऊंचे हिमाच्छादित पर्वतों से घिरा यह स्थान समुद्र तट से 3,140 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है. यह देवदार और चीड़ के विशाल वृक्षों के बीच में स्थान है, जहां गंगा नदी अवतरित होती हुई प्रतीत होती है. इस स्थान पर गंगा की चौड़ाई मात्र 20 मीटर है. यहां की प्राकृतिक सुषमा विदेशी पर्यटकों को भी काफी आकर्षित करती है.

कब जाएं?

गंगोत्तरी में नवंबर से अप्रैल तक काफी बर्फ जमी रहती है, जिस से यहां का मार्ग पूर्णतया अवरुद्ध रहता है, जुलाई से सितंबर तक अतिवृष्टि के कारण यहां जाना आप के लिए कष्टप्रद होगा अतः आप मई तथा जून माह में और फिर अक्तूबर माह में यहां घूमने के लिए जा सकते हैं. चूंकि इस अवधि में भी यहां काफी ठंड पड़ती है, अतः आप यहां जाते समय काफी गरम कपड़े अपने साथ अवश्य लेते जाएं.

गंगोत्तरी

कहां ठहरें?

धर्मशालाएं, फारेस्ट हाउस, जी. एम. वी. एन. रेस्ट हाउस, पी. डब्ल्यू. डी. निरीक्षण भवन, ट्रैवलर्स लाज, पी. डब्ल्यू. डी. लाग केबिन.

कैसे जाएं?

अगर आप रेलमार्ग से गंगोत्तरी जा रहे हैं, तो ऋषिकेश उतर जाइए क्योंकि यही गंगोत्तरी का निकटतम रेलवे स्टेशन है. इस के अतिरिक्त उत्तर प्रदेश पथ परिवहन निगम की बसें दिल्ली और हरिद्वार होती हुई ऋषिकेश तक नियमित रूप से जाती हैं. यहां से बस, मिनी बस, टैक्सी आदि द्वारा आप सुविधापूर्वक गंगोत्तरी पहुंच सकते हैं. अब यह मार्ग पूर्वापेक्षा काफी सुगम हो गया है. मसूरी, कोटद्वार तथा काठगोदाम से भी गंगोत्तरी के लिए बसें चलती हैं. ये सभी मार्ग ऋषिकेश से 83 किलोमीटर दूर देवप्रयाग नामक स्थान पर मिलते हैं. यहां से गंगोत्तरी की दूरी 165 किलोमीटर है. यह दूरी पहाड़ी रास्तों से होते हुए कुछ ही घंटों में ये बसें पार कर लेती हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अप्रैल 1991

सुमन सौरभ

ऐतिहासिक कथा विशेषांक

किशोरों की सचेतक पत्रिका

प्रमुख आकर्षण

मजेदार कहानियां

● सिकंदर की लड़ाइयां ● विश्वास की लाश ● कित्तूर की महारानी ● घमंडी सेनापति ● शहीद की अभिलाषा ● किशोरा गांव की ताजकुमारी ● यदि मेरे हाथ में बंदूक आ जाए ● जयमल पत्ता

ज्ञानवर्धक लेख

● एलागा जिस ने इतिहास में क्रूरतम मनोरंजन किया
● पर्यावरण संरक्षण : आवश्यकता है सामूहिक प्रयास की
● लेंडर पेस : विश्व का सर्वाधिक चर्चित किशोर टेनिस खिलाड़ी

नमूने की प्रति मुफ्त मंगाने के लिए इस कूपन के साथ एक रुपए का डाक टिकट भेजें :

सुमन सौरभ

ई- 3, झंडेवाला एस्टेट,
रानी झांसी रोड,
नई दिल्ली- 110055

नाम _____

पता _____

_____

पिनकोड ☐☐☐☐☐☐

अपनी प्रति आज ही खरीदें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

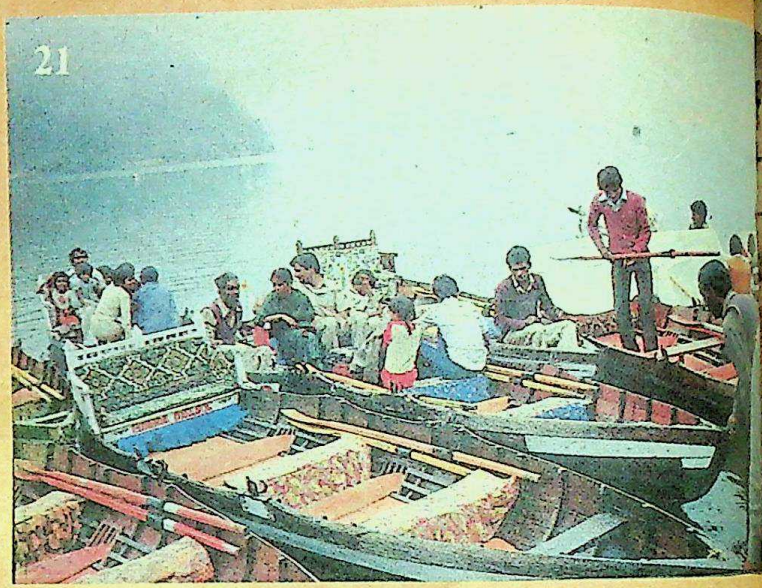

21. नैनीताल की नैनी झील में नौकायन का अपना अलग ही मजा है.

22. नैनीताल के आसपास के दर्शनीय स्थलों में भीमताल भी एक आकर्षक पर्यटन स्थल है.

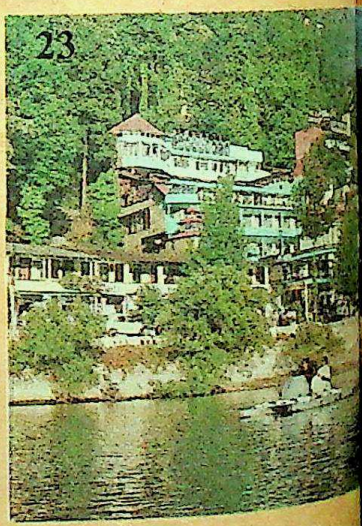

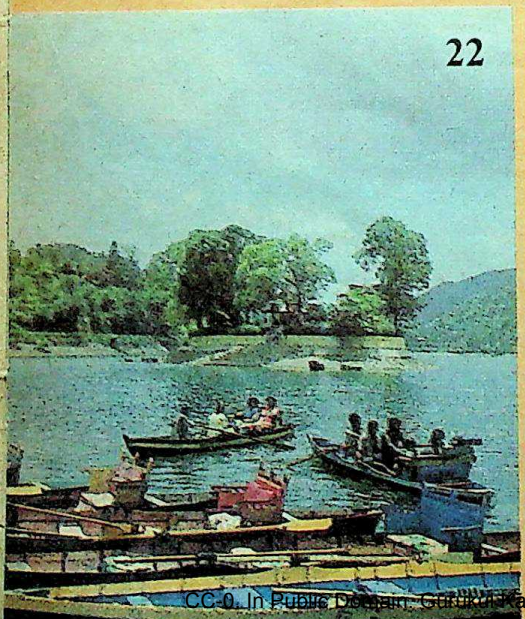

23. चारों ओर पहाड़ों से घिरी नैनी झील पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र है.

24. स्नोव्यू से रानीखेत और उस के [illegible] हिमालय का सुंदर दृश्य दिखाई देता है.

25. रानीखेत का गोल्फ का मैदान [illegible] मखमली घास के लिए प्रसिद्ध है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

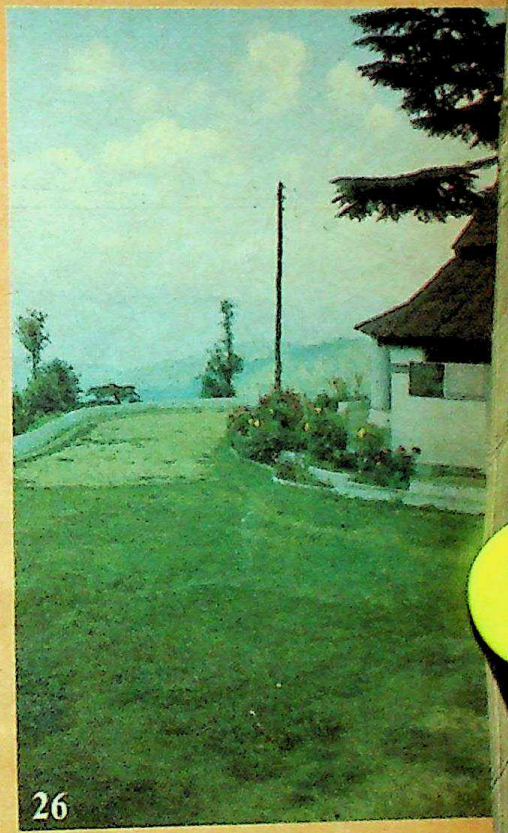

26

26. क्वैसानी से हिमालय की चोटियों को देखा जा सकता है.

25

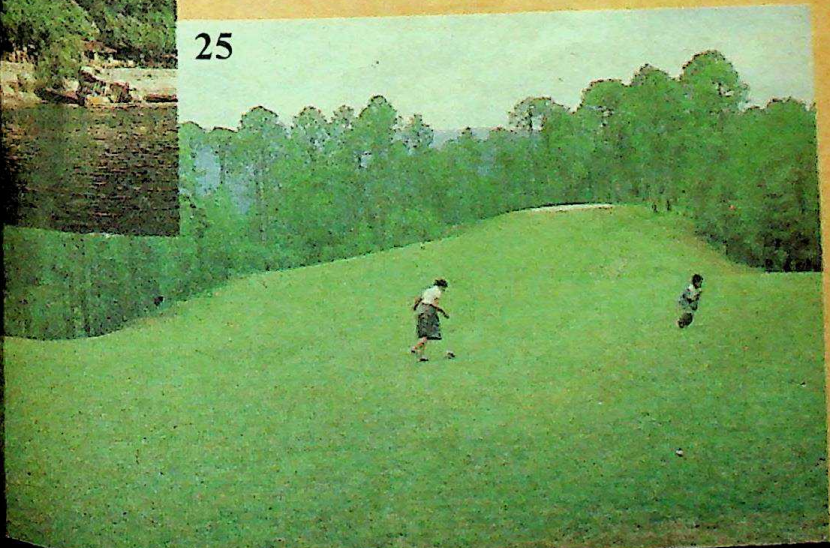

CC-0. In Public Domain. Gurukul K

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या देखें?

वैसे तो गंगोत्तरी में जगहजगह पर प्राकृतिक सौंदर्य बिखरा पड़ा है, जिसे यदि कई सप्ताह तक लगातार देखा जाए, तब भी शायद जी नहीं भरेगा. फिर भी, यहां कुछ ऐसे स्थान हैं, जो अपने महत्त्व के कारण विशेष रूप से दर्शनीय हैं.

गंगा मंदिर: अतीव रमणीक स्थान पर स्थित इस मंदिर के निर्माण के संबंध में कहा जाता है कि आदि शंकराचार्य ने यहां गंगा देवी की एक प्रतिमा स्थापित की थी और फिर 18वीं शताब्दी के प्रारंभ में गोरखा कमांडर अमर सिंह थापा ने यहां एक मंदिर बनवाया. बाद में जयपुर के महाराजा ने इस की मरम्मत करवाई. इन दिनों इस मंदिर की देखरेख यहां के पंडे कर रहे हैं.

भैरवनाथ का मंदिर: यह गंगा मंदिर के निकट ही स्थित है. यहां एक शिला है, जिसे 'भगीरथ शिला' कहा जाता है. कहा जाता है कि भगीरथ ने यहीं पर कठोर तपस्या की थी. इस मंदिर के आसपास का दृश्य काफी मनभावन लगता है.

रुद्र शिला: प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर यह स्थान भगीरथ शिला के समीपस्थ ही है. यहां से कम चौड़ाई, मगर तीव्र प्रवाह वाली गंगा को चट्टानों के बीच से बल खाते हुए गुजरते देखना बहुत ही अच्छा लगता है. पौराणिक कथाओं के अनुसार शिव ने यहीं अपने सिर पर गंगा को धारण किया था.

गोमुख: यह गंगा का उद्गम स्थल है. श्रीमुख पर्वत पर स्थित इस स्थान का नामकरण यहां के गाय के मुख जैसे आकार वाले एक कुंड के नाम पर हुआ है. काफी रमणीय और मनोहारी दिखने वाले इस स्थान पर एक ग्लेशियर बारहों महीने तैरता रहता है. कहा जाता है कि इसी ग्लेशियर की बर्फ के पिघलने से एक जलधारा बनती है, जो आगे चल कर गंगा कहलाती है.

यहां तक पहुंचने के लिए काफी कठिन रास्ते से हो कर जाना पड़ता है. इसलिए आम तौर पर यहां बहुत कम लोग ही जाते हैं. जो यहां पहुंचते भी हैं, वे यहां के नियम के अनुसार इस में न तो कपड़े धोते हैं और न ही स्नान करते हैं.

गौरीकुंड: रुद्रशिला से कुछ ही दूरी पर गंगा केदारगंगा के साथ मिल कर एक प्रपात के रूप में 15 किलोमीटर नीचे एक शिवलिंग के ऊपर गिरती है. यहां का भी प्राकृतिक दृश्य बहुत अच्छा लगता है. कुछ लोगों का यह कहना है कि गंगा का उद्गम स्थल यही है.

याद रखने योग्य बातें

गंगोत्तरी जाते समय आप अपने साथ भरपूर ऊनी कपड़े, कुछ सामान्य बीमारियों की दवाएं, पीने के लिए उबला हुआ पर्याप्त पानी, थर्मस आदि अवश्य ले जाएं. रोगों से बचने के लिए पानी, चाहे वह गंगोत्तरी का ही क्यों न हो, को उबाल कर ही पिएं. इतना ही नहीं, यहां पहुंचने के पहले हैजे का टीका अवश्य लगवा लें और उस का प्रमाणपत्र यात्रा के दौरान अपने पास सदैव सुरक्षित रखें.

यमुनोत्तरी

यमुनोत्तरी घूमे बिना शायद खुद आप को ही पर्यटन यात्रा, विशेषकर गंगोत्तरी तथा आसपास की, अधूरी लगेगी. इसलिए क्यों न लगे हाथ आप यमुनोत्तरी भी घूम ही लें.

यमुना नदी का उद्गम स्थल होने के कारण 'यमुनोत्तरी' कहा जाने वाला यह स्थान समुद्रतल से 3,322 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है. यहां के प्राकृतिक दृश्यों और गर्म पानी के कुंडों को आप कभी नहीं भूल पाएंगे.

कब जाएं?

यहां भी गंगोत्तरी वाला ही समय अर्थात मई का माह घूमने के लिए उपयुक्त रहता है, क्योंकि जुलाईअगस्त में भीषण वर्षा और नवंबर से अप्रैल तक कहर बरपाने की सीमा तक होने वाले हिमपात के कारण यहां घूमना संभव नहीं हो पाता. सितंबरअक्तूबर में भी आप यहां घूम सकते हैं, बशर्ते भारी ऊनी कपड़ों को धारण करने के बाद. वैसे, मई में भी यहां आने पर आप को हलके ही सही, ऊनी कपड़े तो पहनने ही पड़ेंगे.

कैसे जाएं?

यमुनोत्तरी जाने के लिए केदारनाथ, बदरीनाथ, ऋषिकेश, मसूरी, नैनीताल, गंगोत्तरी- इन में से किसी भी स्थान से आप बस पकड़ सकते हैं. ये सब हनुमानचट्टी, जो यमुनोत्तरी से 13 किलोमीटर पहले पड़ता है, तक ही जाती हैं. इस स्थान से यमुनोत्तरी के लिए आप यहां भाड़े पर मिलने वाले कंडी या ढोके में जा सकते हैं. फिर समूह में रहने पर पैदल भी प्रस्थान कर सकते हैं. पहाड़ों को काट कर बनाए गए इस मामूली असुविधा वाले मार्ग के क्षेत्र में कब वर्षा होने लगेगी, यह कहा नहीं जा सकता. अतः बेहतर यही होगा कि इस रास्ते में आप अपने साथ बरसाती भी अवश्य रखें.

हनुमानचट्टी से यमुनोत्तरी के मार्ग में आप किसी एक स्थान पर रात भर रुकना पड़ेगा. सुविधा की दृष्टि से जानकीबाई चट्टी, जिसे 'नारायणपुरी' भी कहा जाता है, इस के लिए उपयुक्त रहेगा. यहां यात्रियों के लिए यमुनोत्तरी पर्यटन का पड़ाव स्थल, यात्रीनिवास और लोकनिर्माण विभाग का निरीक्षण भवन है. यमुनोत्तरी में भी ठहरने के लिए धर्मशालाएं और पर्यटन विभाग के विश्रामगृह हैं.

क्या देखें?

यमुनोत्तरी में कितने मनोरम प्राकृतिक दृश्य देखने को मिलेंगे, इस का अनुमान तो आप हनुमानचट्टी से यमुनोत्तरी मार्ग में ही लगा सकते हैं. इस मार्ग में कदमकदम पर प्राकृतिक सौंदर्य आप का मन मोह लेगा. बर्फ से ढंके होने के कारण बिलकुल सफेद दिखने वाले गगनचुंबी पहाड़, मधुर संगीत का श्रवण सुख देने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करने वाले मोहक झरने, चट्टानों से टकराती यमुना नदी, पहाड़ों के ढलान पर सीढ़ीनुमा खेत, उन में काम करते सीधेसादे पहाड़ी लोग, स्थानस्थान पर खड़े चीड़ के विशाल वृक्ष तथा सूर्योदय के समय सिंदूरी आकाश और सुनहरे पहाड़ ये सब मिल कर एक नई और अकल्पित दुनिया का दृश्य उपस्थित करते हैं.

यमुनोत्तरी पहुंचने पर भी आप को अनेक दर्शनीय स्थल देखने को मिलेंगे. आइए, सब से पहले चल कर देखते हैं यमुना नदी का उद्गम स्थल.

यमुना नदी का उद्गम स्थल: सुंदर प्राकृतिक दृश्यों का धनी यह स्थान हनुमान गंगा तथा टोंस नदियों का भी जल निर्गम क्षेत्र है. अधिकांश समय बर्फ से ढंके रहने वाले इस स्थान पर ऊंचेऊंचे पर्वत दूर से आ रहे अपने प्रेमी पर्यटकों को मानो उचकउचक कर देखते रहते हैं.

यमुनोत्तरी

कहां ठहरें

फारेस्ट रेस्ट हाउस, हनुमान चट्टी; पी.डब्ल्यू.डी. इंस्पैक्शन बंगला, हनुमान चट्टी; टूरिस्ट बंगला हनुमान चट्टी; ट्रैवलर्स लाज जानकी चट्टी; पर्यटक आवास गृह जानकी चट्टी; धर्मशालाएं.

यमुनोत्तरी मंदिर: यमुनोत्तरी में यमुना देवी का मंदिर भी है. यहां पर गर्म पानी के कई सोते हैं. विभिन्न पर्वतों की गोद से निकलने वाले इन सोतों का गर्म पानी कई कुंडों में चला जाता है.

सूर्यकुंड: यमुनोत्तरी के विभिन्न कुंडों में अपना अलग स्थान रखने वाले सूर्यकुंड का पानी काफी गर्म रहता है- इतना गर्म कि अगर आप चाहें, तो इस में चावल की पोटली लटका कर कुछ देर में भात बना सकते हैं. अविश्वसनीय लगने वाला यह काम यहां पर पर्यटकगण अकसर करते रहते हैं. बच्चों को तो इस में कुछ अधिक ही आनंद मिलता है.

जानकीबाई कुंड: चूंकि इस कुंड का पानी हलका गर्म रहता है. अतः इस में स्नान करने पर काफी मजा आता है. कुछ लोगों की यह धारणा है कि इस कुंड में स्नान करने के बाद ही यमुना देवी के मंदिर में प्रवेश करना चाहिए.

हां, अंत में दो बातें अवश्य याद रखें. पहली यह कि यहां जाते समय आप कम-से-कम सामान अपने साथ रखें, मगर पर्याप्त गर्म कपड़े अवश्य रख लें. दूसरी यह कि यहां पहुंचने के पहले आप हैजे का टीका ले लें और उस का प्रमाणपत्र अपने पास अवश्य रखें.

नैनीताल

उत्तर में चीना, पश्चिम में देवपथ तथा दक्षिण में अयारपारा पर्वतश्रेणियों के बीच स्थित, आधुनिक सैरगाह के रूप में विकसित, समुद्रतल से 1,938 मीटर की ऊंचाई पर बसा हुआ झीलों का एक शहर, जिसे अंगरेजों के शासनकाल में ग्रीष्मकालीन राजधानी होने का गौरव प्राप्त था, आज नैनीताल के नाम से जाना जाता है. इस की खोज 18 नवंबर, 1841 में एक चीनी मिल के मालिक बैरन नामक अंगरेज द्वारा की गई थी. चारों ओर फैली हरियाली, तटवर्ती वनों के सुंदर पेड़, पर्वतीय स्थल की प्राकृतिक सुषमा, पहाड़ों पर बनी नागिन की तरह लहराती काली सड़कें, झीलों में रंगबिरंगी पालों से सुसज्जित नौकाएं व पेड़ों के झुरमुट के बीच बसे सुंदर छोटे मकान जिन में जलती रोशनी रात में आसमान में टिमटिमाते तारों का आभास कराती है, किसी भी यायावर का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट करने के लिए काफी है.

झीलों की अधिकता के कारण इसे पहले छकता कहा जाता था. छकता यानी 60 झीलों का क्षेत्र. धीरेधीरे प्राकृतिक विषमताओं के कारण झीलों की संख्या कम होती चली गई और बचेखुचे झील ताल में परिवर्तित होते चले गए. इन्हीं तालों और एक किनारे पर स्थित नैनादेवी के मंदिर के नाम पर इस का नाम नैनीताल हो गया.

कब जाएं?

हर पर्वतीय स्थान की तरह नैनीताल भी बरसात शुरू होने से पहले के चार महीने तथा बरसात बीत चुकने के बाद के दोएक महीने तक जाया जा सकता है. जाते समय गर्मियों में हलके ऊनी कपड़े तथा जाड़े में मोटे ऊनी कपड़े साथ रहने जरूरी हैं.

कैसे जाएं?

नैनीताल जाने के लिए उत्तर प्रदेश के सभी प्रमुख स्थानों से राज्य परिवहन की व पर्यटक बसें मिलती हैं. रेल द्वारा नैनीताल के सब से करीबी रेलवे स्टेशन काठगोदाम तक जाया जा सकता है. वहां से शेष 35 किलोमीटर का पहाड़ी रास्ता बस या टैक्सी द्वारा तय किया जा सकता है. सीजन के दिनों में निकटस्थ हवाई अड्डा पंतनगर हवाई जहाज द्वारा जाया जा सकता है. अपनी सुविधा के लिए यात्रा से पहले हवाई जहाज के समय किराया आदि की पूछताछ कर लेनी चाहिए. यहां पहुंच कर शेष 71 किलोमीटर की दूरी सड़क द्वारा तय कर नैनीताल पहुंचा जा सकता है.

क्या देखें?

नैनीताल में प्रवेश करते ही दर्शनीय स्थलों का सिलसिला शुरू हो जाता है. जिस ताल के किनारे आप उतरेंगे उसे तल्लीताल कहा जाता है. इस झील के दांई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नैनीताल

कहां ठहरें?

होटल अजंता, मल्लीताल, फोन : 2697; **अलका होटल**, द माल, फोन : 2220; **अल्पस होटल**, द माल, फोन : 2317; **अंबेसेडर होटल**, द माल, फोन : 2642; **होटल अनुपम**, मल्लीताल; **होटल अशोक**, तल्लीताल, फोन : 2180; **होटल सेंट्रल**, द माल; **ऐवरेस्ट होटल**, द माल; **ग्रांड होटल**, द माल, फोन : 2406; **गुरदीप होटल**, द माल, फोन : 2528; **होटल हिल व्यू**, तल्लीताल, फोन : 2361; **होटल हिमालय**, तल्लीताल, फोन : 2258; **होटल लाग हट**, नैनापीक, फोन : 2543; **होटल मेघदूत**, तल्लीताल, फोन: 2124; **न्यू भारत होटल**, तल्लीताल.

ओर ऊंचाइयों पर बने होटलों, बीचोबीच चौड़ी सड़क व बांई ओर सुरम्य पर्वतमालाओं की छवि देखते ही बनती है.

लैंड्स एंड: इस झील से चार किलोमीटर की दूरी पर समुद्रतल से 6,950 फुट की ऊंचाई पर स्थित पहाड़ की चोटी का अंतिम सिरा है, जिसे 'लैंड्स एंड' के नाम से जाना जाता है. यहां से घाटी एकदम सीधी गहराई में दिखाई देती है. यहां पर पांचछः सीधी खड़ी ऊंची चट्टानें हैं, जिन पर पर्वतारोहण क्लब पर्यटकों को पर्वतारोहण में भागीदारी का अवसर प्रदान करता है.

नैना पीक: नैना पीक झील से लगभग 4.5 किलोमीटर दूर सब से नजदीक व ऊंची चोटी है. यह समुद्र सतह से 8,568 फुट की ऊंचाई पर स्थित है, जहां सिर्फ घोड़े द्वारा या फिर पैदल पहुंचा जा सकता है. मौसम साफ रहने पर यहां से हिमालय बहुत ही सुंदर दिखाई देता है.

राजभवन: कई एकड़ भूभाग में फैला, गोल्फ के मैदान से घिरा 113 कमरों का एक दुमंजिला भवन है, जिसे राजभवन के नाम से जाना जाता है.

यह भवन उत्तर प्रदेश के अंगरेज गवर्नरों के लिए बनाया गया था.

स्नो व्यू: स्नो व्यू 7,450 फुट की ऊचाई पर झील से उत्तर की ओर ढाई किलोमीटर की चढ़ाई के उपरात पहुंचा जा सकता है. यहां से रानीखेत, हिमालय, कई गहरी घाटियों का रमणीय दृश्य आसानी से देखा जा सकता है.

वेधशाला: यहां से टेलीस्कोप द्वारा चंद्रमा तथा कई अन्य नक्षत्रों को दिखाए जाने की व्यवस्था है. यह स्थान हनुमानगढ़ से लगभग 1 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है.

अन्य दर्शनीय स्थल

इन के अलावा आसपास के स्थानों में प्रमुख भीमताल, जो नैनीताल से 15 किलोमीटर की दूरी स्थित है. सात ताल (20 किलोमीटर दूर), नौकुचिया ताल (19 किलोमीटर दूर), मालवा ताल (किलोमीटर की दूरी पर स्थित है), को भी देखा सकता है. इन स्थानों का सौंदर्यीकरण कर पर्यटकों सुविधाओं के लिए छोटेछोटे रेस्तरां, आवासीय के खूबसूरत रंगबिरंगे मकान, पानी के बीचोंबीच मछली पकड़ने के चबूतरे आदि बना दिए गए हैं प्रकृति प्रेमियों, नवविवाहित जोड़ों, एकांतप्रिय लेखकों रचनात्मक छायाकारों को बरबस यहां आने पर मजबूर कर देते हैं.

अलमोड़ा

प्रकृति की गोद में शांति से कुछ समय गुजार वालों के लिए घोड़े की नाल के आकार अर्धगोलाकार पर्वत शिखर पर स्थित अलमोड़ा प्रकृति से सीधा साक्षात्कार करने की सब से उपयुक्त जगह है.

यह एक ऐसी जगह है जो शहरी सभ्यता अब भी बिलकुल अछूती है. यहां बाजारों, मकानों रेस्तरांओं के माहौल में एकदम शुद्ध पहाड़ीपन है. का माहौल अपने इर्दगिर्द के अछूते प्राकृतिक सौंदर्य साम्य स्थापित करता हुआ कुछ इस तरह के आनंद अनुभूति देता है जिसे सिर्फ महसूस ही किया जा सकता है, बयान नहीं किया जा सकता.

अलमोड़ा का अपना एक खास ऐतिहासिक सांस्कृतिक व राजनीतिक महत्त्व भी है. इस अस्तित्व का वर्णन हमें स्कंद पुराण में भी मिलता ऐतिहासिक महत्त्व का पहला राजवंश कत्यूरी था दूसरा चंद्रवंशी था, जिस की पुष्टि इन राजवंशों राजाओं द्वारा बनवाए गए किले व महल भी करते जिन में से कइयों में आज भी जिले की कचहरियां दफ्तर तथा सरकारी खजाना विद्यमान राजनीतिक दृष्टिकोण से इसे कुमाऊं की संस्कृति प्राचीन केंद्र व राजधानी रह चुकने का गौरव प्राप्त

कैसे जाएं?

करीबकरीब नैनीताल के बराबर ही ऊंचा (1,646 मी.) पर स्थित अलमोड़ा के लिए दिल्ली सीधी बस सेवा है. वैसे उत्तर भारत के प्रमुख जैसे लखनऊ, आगरा, बरेली आदि से काठगोदाम अथवा हल्द्वानी तक रेल से जा कर बाद में बस अलमोड़ा पहुंचा जा सकता है. यहां का निकटतम हवाई अड्डा पंतनगर है, जहां के लिए वायुदूत की हवाई सेवाएं समयसमय पर लेकिन निश्चित रूप से नहीं चलाई जाती हैं. यहां पहुंच कर शेष 127 किलोमीटर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चंपक

मौजमस्ती के रंग
चंपक के
संग

छुट्टी विशेषांक

मई (प्रथम) • मई (द्वितीय) • जून (प्रथम)
जून (द्वितीय) 1991

हर बार से अलग

- कई कहानियां
- मनोरंजन की ढेर सारी सामग्री
- इनामी प्रतियोगिताएं
- साथ ही सभी स्थायी स्तंभ

अपने नन्हेमुन्नों को छुट्टियों का सही अर्थ समझाएं.
उन्हें चंपक के चारों छुट्टी विशेषांक अवश्य पढ़ाएं.

चंपक

ज्ञान भी बढ़ाए, इंसान भी बनाए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का सफर सड़क द्वारा तय किया जा सकता है.

कब जाएं?

घूमने का कार्यक्रम बारिश व सर्दियों के महीनों को छोड़ कर, हलके ऊनी कपड़ों के साथ कभी भी बनाया जा सकता है. गर्मियों में यहां का अधिकतम तापमान 28 डिग्री सेल्सियस तथा न्यूनतम 4 डिग्री सेल्सियस रहता है.

क्या देखें?

ब्राइट एंड कार्नर: पवित्र संस्कृति व प्रकृति का साम्य देखने के लिए 2 किलोमीटर की दूरी पर स्थित ब्राइट एंड कार्नर सब से उपयुक्त जगह है. यहां से सूर्योदय व सूर्यास्त के मनमोहक दृश्य आसानी से देखे जा सकते हैं.

सिमतोला: तीन किलोमीटर की दूरी पर स्थित सिमतोला चीड़ तथा देवदार जैसे वृक्षों से ढकी सुंदर पहाड़ियों को निहारने का एक आदर्श पिकनिक स्थल है.

कालीमठ: पांच किलोमीटर की दूरी पर कालीमठ है, जहां से अलमोड़ा शहर और उस के आसपास चारों ओर फैली पहाड़ियों का विहंगम दृश्य देखा जा सकता है.

अलमोड़ा

कहां ठहरें?

होटल अलका, फोन : 163; एंबेसडर, फोन : 118; अशोक, फोन : 66; कैलाश, मानसरोवर, नीलकंठ, फोन : 32; रंजना, फोन: 2301; हरिप्रसाद टमटा धर्मशाला, हरिनिवास, थाना बाजार.

कटारमल: मंदिरों की तो यहां भरमार है और प्रायः हर मंदिर अपने आप में पिकनिक स्थल भी है. यहां से 17 किलोमीटर की दूरी पर स्थित कटारमल का 800 वर्ष पुराना सूर्य मंदिर है. यह वास्तुकला एवं मूर्तिकला का अनूठा नमूना है. यह एक पहाड़ी पर स्थित है, जहां पहुंचने के लिए कोसी तक बस से जा कर शेष 4 किलोमीटर की यात्रा पैदल तय करनी पड़ती है.

जागेश्वर: यहां से 34 किलोमीटर दूर देवदार वृक्षों से ढकी एक मनोहर घाटी में जागेश्वर का अति प्राचीन मंदिर है. यह अत्यंत कलात्मक प्राचीन मूर्तियों व मंदिरों का एक विशाल समूह है.

जगन्नाथ का मंदिर:47 किलोमीटर की दूरी पर जगन्नाथ का मंदिर है, जहां शिव की एक मूर्ति रखी हुई है.

अलमोड़ा के ये दर्शनीय स्थल अपनी इन दोहरी विशेषताओं के कारण श्रद्धालुओं के साथसाथ अन्य सैलानियों के भी आकर्षण का केंद्र हैं.

रानीखेत

समुद्रतट से 1830 मीटर की ऊंचाई पर स्थित अति मनोरम पर्यटन स्थल के बारे में अमरीका सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश विलियम डगलस का यह कथन कि 'रानीखेत विश्व का उत्तम पर्यटन स्थल है'—अतिशयोक्तिपूर्ण नहीं नीदरलैंड के राजदूत वान पैलेंट ने तो यहां तक कहा कि 'जिस ने रानीखेत को नहीं देखा, उस ने भारत नहीं देखा.'

यहां के इस अप्रतिम प्राकृतिक सौंदर्य को आप अवश्य देखा होगा—भले ही आप को पता नहीं पाया हो कि यह रानीखेत का दृश्य है. चौंक गए और सोचने लगे कि कहां देखा है इसे? हां, ठीक समझा आप ने. अनेक फिल्मों में यहां का दृश्य आप ने देखा होगा. दरअसल यहां के सुंदर दृश्यों को कैमरे में कैद करने का लोभ फिल्म वाले भी संवरण नहीं कर पाते हैं.

रानीखेत के बारे में कहा जाता है कि 12वीं सदी में कत्यूरी नरेश सुधारदेव की विदुषी रानी पद्मिनी का यह अध्ययन तथा विश्राम क्षेत्र था. इसी लिए लोग इसे 'रानी क्षेत्र' कहते थे. कालांतर में इस नाम का अपभ्रंश 'रानीखेत' के रूप में हो गया और यही नाम प्रचलित आने लगा.

कई वर्षों तक अंगरेजी सेना की छावनी रहे इस क्षेत्र को एक उत्तम पर्यटन स्थल के रूप में विकसित करने में अंगरेजों ने भी अपने शासन काल में कोई योगदान दिया. उन के जाने के बाद भी इस क्षेत्र का विकास हुआ है. उसी विकास प्रक्रिया का यह परिणाम है कि सुनियोजित ढंग से बसाए गए इस स्थान पर आ यहां पर्यटक मानो खिंचे हुए चले जाते हैं. हिमाच्छादित पर्वतों तथा चीड़ और देवदार के हरेभरे घने जंगलों से छूती हुई आने वाली मिठास भरी हवा अपनी भागदौड़ की दैनिक जिंदगी से कुछ समय निकाल यहां घूमने आ पर्यटकों का रोमरोम पुलकित कर देने के लिए काफी होती है.

कब जाएं?

चौड़ी सड़कों तथा भव्य भवनों के कारण अन्य पर्वतीय पर्यटन स्थलों से भिन्न यह स्थान हालांकि भर घूमने लायक होता है, मगर गर्मी के दिनों में अर्थात् अप्रैल से मध्य जून तक यहां अधिक आनंद मिलता है. वैसे, यहां पर बरसात का दृश्य देखना भी काफी अच्छा लगता है. अगर आप चाहें, तो ठंड के दिनों में भी यहां आ कर घूम सकते हैं, मगर भरपूर ऊनी कपड़ों के साथ. उन दिनों यहां के हिमाच्छादित पर्वत धूप में ऐसे नजर हैं, मानो किसी महिला ने अपने बच्चे को गोद में कैद कर सफेद शाल ओढ़ ली हो और आसपास से विभिन्न फलों की आ रही सुगंध लेती हुई धूप का सेवन कर रही हो.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कैसे जाएं?

अगर आप रेलगाड़ी से रानीखेत जाना चाहते हैं, तो आप को काठगोदाम स्टेशन, जो रानीखेत से 84 किलोमीटर दूर है, पर ही उतर जाना पड़ेगा. वहां से बस अथवा टैक्सी से आप रानीखेत पहुंच सकते हैं.

दिल्ली, मेरठ, बरेली, मुरादाबाद, रामपुर आदि स्थानों से रानीखेत के लिए नियमित रूप से बसें चलती हैं.

अगर आप का मन हवाई जहाज से यात्रा करने का हो, तो आप पंतनगर, जो यहां का निकटतम हवाई अड्डा है, पर उतर जाएं. वहां से बस अथवा टैक्सी से आप यहां पहुंच सकते हैं.

क्या देखें?

यद्यपि रानीखेत में चारों तरफ वैसे ही दृश्य आप को मिलेंगे, जिन्हें काफी देर तक देखते रहने पर भी मन नहीं भरेगा. फिर भी यहां के कुछ स्थान विशेष रूप से दर्शनीय हैं. जैसे—रामजी वनस्पति संग्रहालय, खड़ा बाजार, चौबटिया, मजखाली, द्योलीखेत, कालिका मंदिर, शीतलाखेत, द्वाराहाट आदि.

रामजी वनस्पति संग्रहालय: सुप्रसिद्ध वनस्पति-शास्त्री रामजी लाल शाह द्वारा स्थापित इस संग्रहालय में जाने पर यहां के पौधों की पत्तियों की तरह आप का मन भी हराभरा हो जाएगा. यहां अनेक किस्म की वनस्पतियों और जड़ीबूटियों का बहुत अच्छा संग्रह आप देख सकेंगे. उत्तराखंड की वनस्पतियों पर रामजी लाल द्वारा ही तीन खंडों में तैयार अप्रकाशित पुस्तक 'फ्लोरा आफ रानीखेत येनसिस' की पांडुलिपि यहीं रखी हुई है, जिस से बहुत बड़ा लाभ वनस्पतिप्रेमी पर्यटक विशेष रूप से उठा सकते हैं.

खड़ा बाजार: यह रानीखेत का प्रमुख बाजार है. अंगरेजों द्वारा 'मेयो स्ट्रीट' कहे जाने वाले इस स्थान को कुछ लोग अब 'खड़ी बाजार' भी कहते हैं. ढाल पर बसे बाजार का यह नाम शायद इसलिए पड़ा है कि यह एक प्रकार से खड़ा अर्थात काफी उठा हुआ है. इस के सब से नीचे के मकान की समुद्रतट से ऊंचाई 5000 फुट और दूसरे छोर पर सब से ऊंचे मकान की समुद्र तट से ऊंचाई 6000 फुट है. यहां मोटरमार्ग के दोनों ओर दुकानें हैं, जो देखने पर काफी अच्छी लगती हैं.

चौबटिया: रानीखेत से लगभग 10 किलोमीटर दूर इस स्थान पर कुमाऊं मंडल की प्रसिद्ध राजकीय फल अनुसंधानशाला भी है. यहां फलों का बाग देखने पर मन बागबाग हो जाता है. यहां की किसी वाटिका में खड़े हो कर यदि आप हिमाच्छादित पर्वतशृंखला को देखेंगे, तो शायद उस दृश्य को कभी भूल नहीं पाएंगे. इस (चौबटिया) के पास ही में हैं तीन जलस्रोत, जिन का जल संगमरमर जैसा दिखता है. इन के मिलने से एक बड़ा नाला तैयार होता है, जो काफी नीचे गिरता है. यहां का भी दृश्य काफी अच्छा लगता है.

मजखाली: यह स्थान रानीखेत अलमोड़ा मार्ग पर रानीखेत से 13 किलोमीटर दूर है. यहां से बर्फीली पर्वतशृंखला को निकट से देख कर आप अभिभूत हो जाएंगे. यहां आसपास के हरेभरे क्षेत्र का भी दृश्य बहुत सुंदर दिखता है.

द्योलीखेत: रानीखेत अलमोड़ा मार्ग पर ही सड़क के किनारे द्योलीखेत नामक एक पर्वत चोटी है, जहां से हिमालय का बहुत ही मनोहारी दृश्य दृष्टिगत होता है. यहां का मैदान तीन तरफ से पर्वतों से घिरा है. इस के पास मुस्तैद रक्षक की तरह खड़े देवदार और चीड़ के वृक्ष यहां की सुंदरता में और अधिक श्रीवृद्धि करते हैं. यहां की इन तीनों पहाड़ियों के किनारों पर बना मोटरमार्ग भी अपनी कुछ ऐसी ही भूमिका निभाता है.

गोल्फ मैदान: द्योलीखेत के थोड़ा आगे ही सड़क के किनारे उपट नामक स्थान पर एक प्रसिद्ध गोल्फ मैदान है. हरे मखमल जैसी घास वाले इस मैदान के एक भाग में खिलाड़ियों का एक छोटा सा विश्रामगृह भी है. चीड़ के लंबेलंबे वृक्षों से घिरे इस अनुपम सुंदर स्थान पर प्रायः फिल्मों की शूटिंग होती रहती है.

शीतलाखेत: रानीखेत से 26 किलोमीटर दूर यह सुंदर स्थान एकांतप्रेमी पर्यटकों को असीम सुख प्रदान करता है. इस रमणीय स्थान पर गर्मी के दिनों स्काउट और गाइड के शिविर लगते हैं. आप यहां पिकनिक भी मना सकते हैं, क्योंकि इस के लिए यह बहुत ही उत्तम स्थान है.

द्वाराहाट: ऐतिहासिक दृष्टि से काफी महत्त्वपूर्ण यह स्थान रानीखेत से 32 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है. यहां आज से सैकड़ों वर्ष पूर्व कत्यूरी राजवंश का साम्राज्य था. उन्हीं दिनों की स्थापत्य कला की याद दिलाते कुछ मंदिर अभी यहां देखे जा सकते हैं. यहां कुबेर की विशालकाय प्रतिमा वाला मंदिर विशेष रूप से दर्शनीय है.

समय रहने पर इन स्थानों के अतिरिक्त आप यहां पहुंचने पर खैरना, तारीखेत, चिलियानोला, कालिका का टीला, मतरौंजखान, सौनी, वूनाशिरि, बुग्याल आदि स्थानों को भी देख सकते हैं.

क्या खरीदें?

रानीखेत पहुंचने पर आप यहां फल अवश्य

रानीखेत

कहां ठहरें?

वेस्ट व्यू होटल, महात्मा गांधी रोड, फोन : 61; जलनिगम रेस्ट हाउस, चिंगारी खल, फोन : 108; होटल मून, सदर बाजार, फोन : 2258, 2382; होटल अलका, फोन : 69; ऐवरेस्ट होटल, फोन : 115; होटल मेघदूत, फोन : 75; वाल्मीकि आश्रम, होटल प्रशांत, फोन : 115; होटल नटराज, फोन : 69; शिव मंदिर धर्मशाला.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

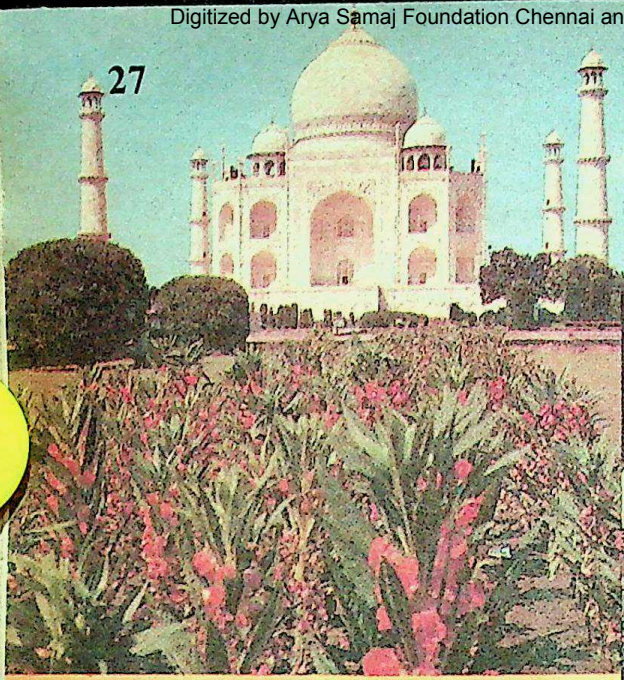

27. चमचमाते सफेद संग
से बना ताजमहल विश्
में प्रसिद्ध है.
28. आगरा का लाल
पर्यटकों के लिए सूर्यो
सूर्यास्त तक खुला रह

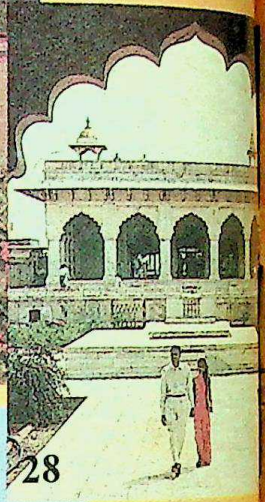

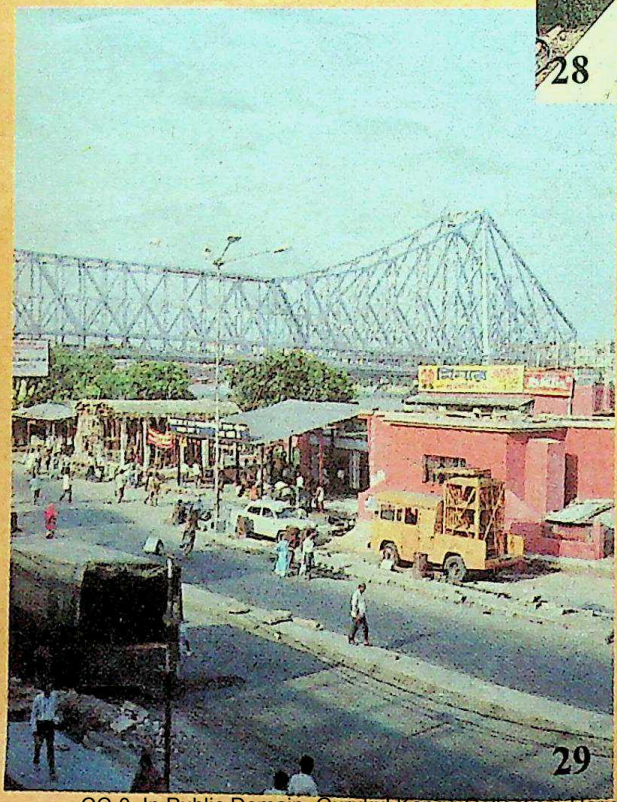

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

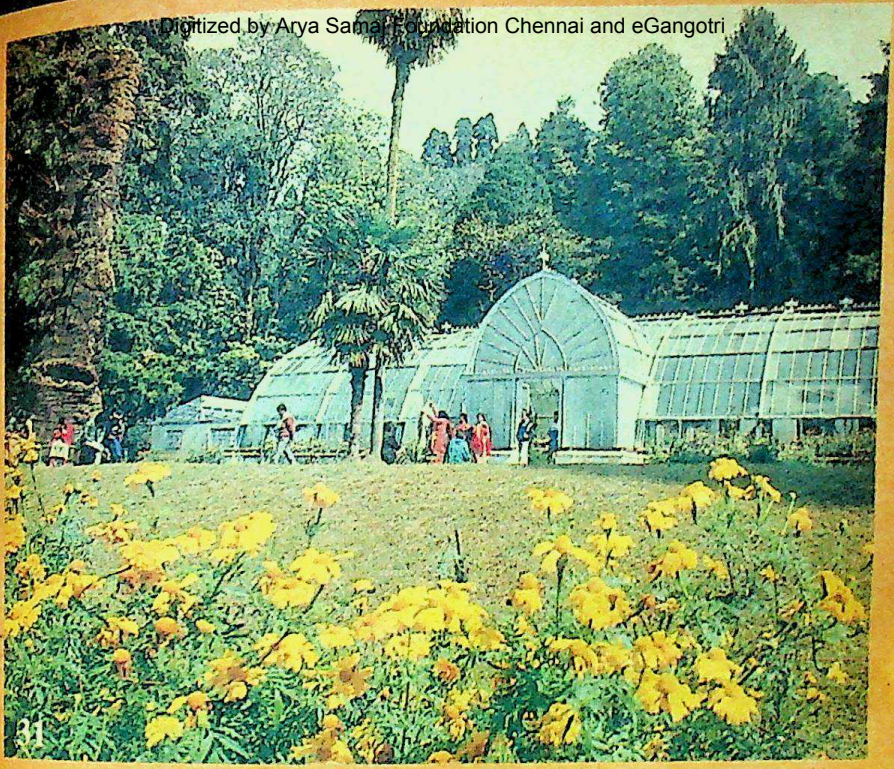

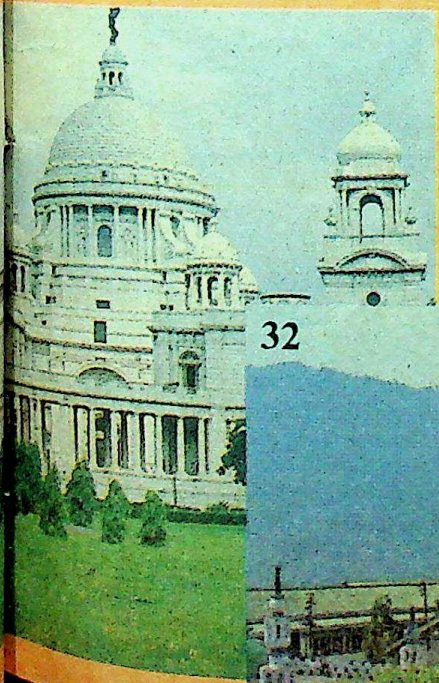

29. कलकत्ता का हावड़ा पुल अपनी अनोखी बनावट के कारण प्रसिद्ध है.
30. कलकत्ता का विक्टोरिया मेमोरियल ताजमहल से कुछ मिलताजुलता है.
31. दार्जिलिंग के वनस्पति उद्यान में सैकड़ों देशीविदेशी पौधों को देखा जा सकता है.
32. सिक्किम की राजधानी गंगतोक में रंगबिरंगे फूल अपनी मोहक छटा बिखेरते रहते हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खरीदें. अत्यंत स्वादिष्ट होने के कारण इन फलों को खाने का अपना अलग ही आनंद है. इन के अतिरिक्त आप यहां कुमाऊंनी कलाकृतियां भी खरीद सकते हैं. इन्हें आप किसी को उपहार में दे सकते हैं. इन से आप अपने बैठक कक्ष की शोभा बढ़ा सकते हैं.

कौसानी

उत्तर प्रदेश के कुमाऊं मंडल की कत्यूर घाटी और सोमेश्वर घाटी के मध्य एकदूसरे को काटती दो पर्वत शृंखलाओं के केंद्र में स्थित प्रसिद्ध पर्यटन स्थल कौसानी समुद्रतल से लगभग 1,950 मीटर ऊंचा है. इस के आसपास बिखरे विपुल प्राकृतिक सौंदर्य को देखने के लिए जब आप यहां के रिज पर खड़े होंगे, तब विभिन्न फूलों की सुगंध समेट कर तेज गति से आने वाली हवा आप का स्पर्श कर के आप के रोमरोम को पुलकित कर देगी.

कब जाएं?

पर्यटन की दृष्टि से कौसानी जाने का सर्वथा उपयुक्त समय अप्रैल के प्रथम सप्ताह से जून के द्वितीय सप्ताह तक होता है. वैसे, सितंबर और अक्तूबर में भी यहां घूमा जा सकता है, मगर पर्याप्त ऊनी कपड़ों को पहन कर ही. गर्मी के भी दिनों में यहां हलके ही सही, मगर गर्म कपड़े तो पहनने ही पड़ते हैं.

कैसे जाएं?

कौसानी तक रेलगाड़ी नहीं जाती है. अतः जब आप यहां पहुंचने के लिए रेलगाड़ी पर बैठें, तो काठगोदाम स्टेशन पर ही उतर जाएं, क्योंकि इस (कौसानी) का निकटतम रेलवे स्टेशन यही है. यहां से कौसानी की 142 किलोमीटर की दूरी उत्तर प्रदेश परिवहन निगम या कुमाऊं मोटर आनर्स यूनियन की बस से तय कर सकते हैं.

सड़क मार्ग से तो कौसानी देश के लगभग सभी प्रमुख शहरों से जुड़ा हुआ है. अलमोड़ा, बरेली, रानीखेत, नैनीताल आदि स्थानों से बस द्वारा आप यहां सीधे पहुंच सकते हैं.

अगर आप हवाई जहाज से यात्रा करने की इच्छा रखते हैं, तो फिलहाल यहां तक के लिए आप अपनी यह इच्छा त्याग दें, क्योंकि कौसानी के निकटतम हवाई अड्डा पंतनगर तक की विमानसेवा विश्वसनीय नहीं है. पंतनगर हवाई अड्डा से स्थानीय परिवहन व्यवस्था भी संतोषजनक नहीं है.

क्या देखें?

सूर्योदय और सूर्यास्तः अगर आप ने कौसानी में सूर्योदय और सूर्यास्त का नयनाभिराम दृश्य देख लिया तो समझ लीजिए कि पर्यटन का अधिकांश उद्देश्य पूरा कर लिया. यहां सुबह और शाम को सूर्य की रोशनी में रंग बदलते हिमाच्छादित पर्वत शिखर बहुत ही [illegible] लगते हैं.

पिंडारी ग्लेशियरः कौसानी से 58 किलोमीटर [illegible] पिंडारी ग्लेशियर का भी अप्रतिम प्राकृतिक सौंदर्य काफी अच्छा लगता है. यहां पर कुछ घंटे तक प्राकृतिक दृश्यों का अवलोकन किए बिना लोगों का मन नहीं भरता.

कौसानी पहुंचने पर आप इन के अतिरिक्त बागेश्वर मंदिर, वैद्यनाथ मंदिर आदि को भी देख सकते हैं.

कौसानी
कहां ठहरें?
अनासक्ति योग आश्रम, होटल हिमालय, पाइन व्यू, जिला परिषद डाक बंगला, फारेस्ट रेस्ट हाउस.

आगरा

'ताज नगरी' के रूप में विख्यात आगरा पर्यटन की दृष्टि से भारत के ही नहीं, विश्व के आकर्षण का प्रमुख केंद्र है. यह अपनी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि तथा मुगलकालीन गौरव की स्मृतियों को संजोए एक महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक पर्यटन स्थल है. यदि आप मुगलकालीन कला तथा संस्कृति में रुचि रखते हैं तो आगरा पर्यटन पर अवश्य जाएं.

पौराणिक परिप्रेक्ष्य में आगरा का संबंध महाभारत में उल्लिखित 'अग्रवन' से जोड़ा जाता है. पंद्रहवीं शती में सिकंदर लोदी और इब्राहिम लोदी ने आगरा को अपने साम्राज्य की राजधानी बनाया. सन 1526 में यह नगर मुगल साम्राज्य के संस्थापक बाबर के हाथ चला गया. तत्पश्चात यह मुगल साम्राज्य की राजधानी रहा.

मुगल काल में आगरा काफी विकसित हुआ. किला तथा अन्य कई इमारतें इस काल की देन हैं. इस काल में समग्र नगर चारदीवारी से घिरा था, जिस में 16 प्रवेश द्वार थे.

सन 1803 में आगरा ईस्ट इंडिया कंपनी के कब्जे में आ गया. उत्तरी भारत में अंग्रेजी राज्य के विस्तार के साथसाथ यह उत्तरीपश्चिमी सूबे की राजधानी बना गया, किंतु स्वातंत्र्योत्तर काल में यह उत्तर प्रदेश राज्य के विशिष्ट पर्यटन केंद्र के रूप में ही नहीं, प्रमुख शिक्षा तथा व्यापार केंद्र के रूप में भी विकसित हुआ है.

कब जाएं?

यों तो जुलाईअगस्त के बरसाती मौसम को छोड़ कर कभी भी आगरा का पर्यटन किया जा सकता है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आगरा

कहां ठहरें?

मुगल शेराटन, ताजगंज, फोन : 64708 (30 लाइनें); आगरा अशोक, 6-बी, माल रोड, फोन : 76223; क्लार्क शीराज, 54, ताज रोड, फोन : 72421—3; टूरिस्ट बंगला, दिल्ली गेट; गोवर्धन, दिल्ली गेट, फोन : 73313; इंपीरियल, एम.जी. रोड, फोन: 72500; मुमताज, फतेहाबाद रोड, फोन : 64771—6; चंद्रलोक, राजा की मंडी बाजार, फोन : 67277; धर्मलोक, राजा की मंडी बाजार, फोन : 67377; अग्रवाल पंचायती धर्मशाला, राजा की मंडी, रेलवे स्टेशन के सामने; गया प्रसाद बिहारीलाल धर्मशाला, आगरा सिटी, रेलवे स्टेशन के सामने; जानकी देवी धर्मशाला, मदनमोहन गेट; प्रताप चंद धर्मशाला, राजा की मंडी, रेलवे स्टेशन के निकट; टूरिस्ट गेस्ट हाउस, बालू गंज, फोन : 64961; सिंधी सेवक सभा, कला महल.

फिर भी आगरा पर्यटन के लिए अक्तूबर से मार्च तक का समय सर्वोत्तम माना जाता है. शीतकाल में आगरा पर्यटन पर जाते समय ऊनी वस्त्र साथ ले जाना न भूलें. यदि आप अप्रैल से जून के मध्य आगरा जाएं तो हलके सूती वस्त्रों से भी काम चल जाएगा. वैसे इन दिनों यहां गरमी और धूल भरी हवाओं के कारण पर्यटन का सारा आनंद फीका पड़ जाता है.

कैसे जाएं?

आगरा राष्ट्रीय राजमार्ग 2, 3 और 11 के संगम पर बसा है, अतः यहां पहुंचने के लिए देश के किसी भी भाग के पर्यटकों को अधिक असुविधा नहीं होगी. उत्तर भारत के पर्वतीय पर्यटन स्थलों की सैर करने निकले पर्यटक अपने यात्रा पथ में अधिक परिवर्तन किए बिना ही, आगरा पर्यटन कर सकते हैं. दिल्ली, जयपुर, लखनऊ, ग्वालियर, झांसी, हरिद्वार तथा अन्य महत्त्वपूर्ण स्थलों से आगरा के लिए नियमित बसें चलती हैं.

इंडियन एअरलाइंस ने आगरा को दिल्ली, बंबई, जयपुर, खजुराहो एवं वाराणसी से जोड़ रखा है. यहां का खेरिया हवाई अड्डा ताजगंज स्थित राज्य पर्यटन कार्यालय से लगभग नौ किलोमीटर दूर है. हवाई अड्डे से नगर तक जाने के लिए टैक्सियां मिल जाती हैं.

बंबई, मद्रास, कलकत्ता आदि स्थानों से दिल्ली की ओर जाने वाली अधिकतर रेलें आगरा हो कर ही जाती हैं. दिल्ली और भोपाल के मध्य चलने वाली ग्वालियर के मध्य चलने वाली ताज एक्सप्रेस इस क्षेत्र की विशिष्ट गाड़ियां हैं. दिल्ली से आगरा हो कर जाने वाली कुछ अन्य गाड़ियां हैं—जी.टी एक्सप्रेस (नई दिल्ली मद्रास), दादर एक्सप्रेस (बंबई अमृतसर), झेलम एक्सप्रेस (जम्मूतवी पुणे), उद्यान आभा तूफान एक्सप्रेस (नई दिल्ली कलकत्ता), आदि.

क्या देखें?

ताजमहल : जिस प्रकार फ्रांस में ईफेल टावर और आस्ट्रेलिया में सिडनी ओपेरा हाउस प्रतिनिधि इमारतें हैं, उसी प्रकार भारत में आगरा का ताजमहल है. यह मुगलकालीन कला का सर्वोत्तम नमूना है. 1653 में यमुना तट पर निर्मित इस ताजमहल का मुख्य वास्तुविद ईरान का उस्ताद ईसा था. इस के निर्माण में न केवल भारत के बल्कि मध्य एशिया के लगभग 20,000 कारीगरों का योगदान बताया जाता है. यह शाहजहां और मुमताज के अमर प्रेम का प्रतीक है.

चमचमाते सफेद संगमरमर से बने इस महल का मध्यवर्ती गुंबद 57 मीटर ऊंचा है. गुंबद के चारों ओर प्रत्येक किनारे पर एकएक पतली सफेद मीनार खड़ी है. गुंबद के ठीक नीचे शाहजहां और मुमताज की कब्रें हैं.

ताजमहल का वास्तुशिल्प जितना उच्च कोटि का है, उस से भी अधिक विशेषता है उस के संगमरमर की, जो सवा तीन सौ वर्षों से भी अधिक समय में जरा भी धूमिल नहीं पड़ा. ताजमहल में नाममात्र का प्रवेश शुल्क लगता है. चांदनी रातों में ताज पर्यटन का अपना अलग ही आनंद है. शरद पूर्णिमा के मध्य रात्रि तक यहां मेला सा जुड़ा रहता है. शारदीय पूर्णिमा में ताज का सौंदर्य और भी निखर आता है. शारदीय पूर्णिमा के अतिरिक्त अन्य पूर्णिमाओं में भी ताज का अद्भुत सौंदर्य देखते ही बनता है. इस वर्ष 29 अप्रैल, 28 मई, 27 जून, 26 जुलाई, 25 अगस्त, 24 सितंबर, 23 अक्तूबर, 22 नवंबर, 21 दिसंबर, और अगले वर्ष 20 जनवरी, 18 फरवरी, 18 मार्च और 16 मई को पूर्ण चंद्र होगा. इस में सामयिक बादलों का प्रभाव हो सकता है.

सामान्यतः पर्यटकों के लिए ताजमहल में सूर्योदय से ले कर सायं साढ़े सात बजे तक ही रहना संभव है. ताजमहल में केवल हलकेफुलके कैमरे फोटोग्राफी के लिए ले जाए जा सकते हैं, जिन की अनुमति प्रवेश द्वार से ली जा सकती है. फिल्म या वीडियो फिल्म की फोटोग्राफी करना यहां प्रतिबंधित है. इस के लिए पुरातत्त्व विभाग से अनुमति लेनी पड़ेगी.

लाल किला : राज्य पर्यटन कार्यालय, ताजगंज से लगभग 2 किलोमीटर दूर यमुना के किनारे मुगल बादशाह अकबर द्वारा 1565 में बनवाया गया किला आज भी एक जागरूक प्रहरी की भूमिका अदा करता है.

यह लाल बालू पत्थर का बना है. अबुल फजल के अनुसार किले में 500 इमारतें थीं. जाटों, मराठों और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नादिरशाह के हमलों आदि के कारण इस संख्या में कमी आती गई. वर्तमान काल में यहां दीवाने आम, दीवाने खास, मोती मसजिद, मच्छी भवन, नगीना मसजिद, शीश महल, खास महल, जहांगीर महल आदि दर्शनीय हैं.

संगमरमर से बनी मोती मसजिद के स्नानागार में शीशे की दीवारों के कारण एक लैंप के असंख्य प्रतिबिंब देख कर अचंभित रह जाना पड़ता है. किले का चमेली महल ताजमहल के सामने पड़ता है, जहां बैठ कर शाहजहां मुमताज महल के मकबरे को निहारता रहता था, ऐसा कहा जाता है. पर्यटकों के लिए यह किला प्रातः सूर्योदय से ले कर सूर्यास्त तक खुला रहता है.

ऐतमादुद्दौला : श्वेत संगमरमर का बना यह भव्य स्मारक 6 किलोमीटर की दूरी पर है. इसे जहांगीर की बेगम नूरजहां ने अपने पिता गयासुद्दीन बेग की स्मृति में बनवाया था. इस की रूपरेखा स्वयं नूरजहां ने बनवाई थी. उसे क्रियान्वित अन्य शिल्पकारों ने किया था. सन 1628 में बना यह भव्य स्मारक मुगलकालीन शिल्पकला का अद्भुत नमूना है. इस स्मारक में ही संभवतः प्रथम बार 'पिएतरा दुरा' तकनीक का प्रयोग किया गया था, जो बाद में ताजमहल के निर्माण में भी अपनाई गई. इस में चिकन का काम तथा संगमरमर के चिलमनों की शिल्पकारी देखते ही बनती है.

चिनी का रोजा : यह आकर्षक स्मारक रामबाग और ऐतमादुद्दौला के मध्य स्थित है. ताजगंज स्थित पर्यटन कार्यालय से यह दूरी लगभग 9 किलोमीटर है. यह अफजल खां की स्मृति में बनवाया गया था. अफजल खां जहांगीर का विद्वान कवि था, जो बाद में शाहजहां का प्रधान मंत्री बना था.

रामबाग : यह मुगलकाल का प्राचीनतम उद्यान है, जो 1526 में बाबर ने बनवाया था. यहां पिकनिक का आनंद उठाया जा सकता है.

दयालबाग : दयालबाग राधास्वामी संप्रदाय का मुख्यालय है. यहां संप्रदाय के गुरू की समाधि एवं आकर्षक स्मारक है. आगरा की नवीन दर्शनीय इमारतों में यह स्थान विशेष महत्त्व रखता है. यह शिक्षा का भी विशिष्ट केंद्र है.

सिकंदरा : पर्यटन कार्यालय से लगभग 12 किलोमीटर है सिकंदरा, जहां अकबर का मकबरा है. बताया जाता है, पहले यहां सिकंदर लोदी का किला था. संभवतः उसी के नाम पर यह स्थान सिकंदरा कहलाया. यह मकबरा लाल बालू पत्थर तथा सफेद संगमरमर से बना है.

ऊपर बने मकबरे के समान ही तहखाने में भी एक मकबरा है. आगरामथुरा मार्ग पर बना यह मकबरा स्वयं अकबर ने बनवाया था. बाद में उस के बेटे जहांगीर ने उसे पूरा कराया था. इस में हिंदूमुसलिम वास्तुकला का समन्वय परिलक्षित होता है.

फतेहपुर सीकरी

आगरा के दक्षिणपश्चिम में लगभग 37 कि मीटर दूर राजस्थान के अरावली पहा श्रृंखलाएं फैली हुई हैं, जिन की एक छोटी सी पह पर आलीशान महल और गढ़ बना हुआ है. यह स्थ फतेहपुर सीकरी के नाम से जाना जाता है.

कहा जाता है कि फतेहपुर सीकरी का नि सम्राट अकबर ने बनवाया था, किंतु आधुनिक शोधों अनुसार फतेहपुर सीकरी के आलीशान महल स सांगा की देन हैं. अस्तु, कुछ भी हो, पर्यटन की दृष्टि फतेहपुर सीकरी एक रम्य स्थल है.

आगरा से फतेहपुर सीकरी के लिए रा परिवहन निगम की नियमित बस सेवाएं उपलब्ध हैं बसें पावर हाउस के निकट स्थित बस अड्डे से चलती जिसे स्थानीय लोग केवल 'बिजलीघर' कहते तो इस के अतिरिक्त राज्य पर्यटन विकास निगम त राज्य परिवहन निगम की ओर से फतेहपुर सीकरी लिए 'टूरिस्ट टूरों' की भी व्यस्था है.

फतेहपुर सीकरी में गुलिश्तां टूरिस्ट कांप्लेक्स ठहरने के लिए एक अच्छा स्थान है. वैसे आगरा से सु फतेहपुर सीकरी जा कर शाम तक लौटा भी जा सक है.

यहां किले में दीवाने आम और दीवाने खास अष्टकोणीय स्तंभों पर बेहतरीन नक्काशी की गई किले में पंच महल, मरियम महल, हवा महल, बीरब महल, शेख सलीम चिश्ती का मकबरा, बुल दरवाजा, आदि का अपनाअपना महत्त्व एवं सौंदर्य है.

किले के समीप ही एक विशाल झील है, जि 'अनूप सागर' कहते हैं. इस झील की ओर किले का हाथी पोल नामक दरवाजा है, जिस के दोनों ओ हाथियों की बड़ीबड़ी मूर्तियां बनी हैं. दरवाजे पर मू पच्चीकारी और नक्काशी की गई है. दरवाजे के नि ही एक छतरी वाली सुंदर मीनार भी है, जिसे हि मीनार कहा जाता है. इस की समानता दीप स्तंभ से की जाती है.

कलकत्ता

'पूर्वी भारत का द्वार' कहलाने का गौरव प्रा करने वाला महानगर कलकत्ता न कि औद्योगिक और व्यावसायिक केंद्र होने के कारण, बल्कि शैक्षणिक, कलात्मक तथा सांस्कृतिक गतिविधियों भी एक प्रमुख केंद्र होने के कारण काफी प्रसिद्ध है. आ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कलकत्ता

कहां ठहरें?

एअर पोर्ट अशोक, कलकत्ता एअरपोर्ट, फोन : 57511; होटल अशोक, पी 24, डाक्सन लेन; हावड़ा, फोन : 664221, 664222; लिंडसे गेस्ट हाउस, 8 बी, लिंडसे स्ट्रीट, फोन : 246639; ब्राडवे, 27/ए, गणेश चंद्र एव, फोन : 263930; ब्लिस, 193/2 रास विहारी एवेन्यू, फोन : 461637; फ्लोरेंस, 53/1/3, हजारा रोड, फोन : 482248; हिंदुस्तान इंटर- नेशनल, 235/1 ए, जे.सी. बोस रोड, फोन : 442394; पार्क, 17, पार्क स्ट्रीट, फोन : 297336/941; मिनर्वा, 11, गणेशचंद एवेन्यू, फोन : 264505; सेवाय, 27, शशिभूषण डे स्ट्रीट, फोन : 273216; वाई.एम.सी.ए., 25, जवाहरलाल नेहरू रोड, फोन : 233504.

से 301 वर्ष पूर्व हुगली नदी के तट पर बसा यह शहर सन 1912 तक ब्रिटिश साम्राज्य की राजधानी रहा. हालांकि इन दिनों यह सिर्फ एक प्रदेश—पश्चिम बंगाल की राजधानी है, मगर हमारे राष्ट्र के विभिन्न क्षेत्रों की संस्कृतियों की झलकियां यहां पर न्यूनाधिक रूप में देखने को मिल जाती हैं, क्योंकि वहां के मूल निवासी यहां पर काफी संख्या में रहते हैं. पूर्व प्रधान मंत्री राजीव गांधी ने भले ही कभी इसे 'मृत शहर' कह दिया हो, मगर सुरुचिसंपन्न तथा जिंदादिल लोगों को आज भी यह शहर दौड़ता, खिलखिलाता तथा अभिवादनोपरांत मौन निमंत्रण देता हुआ प्रतीत होता है.

कब जाएं?

पर्यटन की दृष्टि से घूमने के लिए वर्ष के किसी भी माह में आप इस महानगर में पधार सकते हैं. फिर भी कभीकभी इस में 'किंतु' और 'परंतु' लग ही जाते हैं. जैसे—जून के तीसरे सप्ताह से अगस्त के तीसरे सप्ताह तक अधिक वर्षा के कारण यहां घूमने का भरपूर मजा नहीं मिल पाता है, जबकि सितंबर के अंत या अक्तूबर के प्रारंभ में अर्थात विजयादशमी के समय यहां आने पर भव्य सजावट, पूजा और प्रतिमा विसर्जन देखने का सुअवसर प्राप्त होता है. उन्हीं दिनों यहां आयोजित होने वाले पोलो मैच पुरानी कारों की रैली तथा धाकुरिया झील पर नौका विहार को भी तब आप देख सकते हैं. शीतकाल में भी यहां आना काफी सुखद लगता है, क्योंकि तब यहां विभिन्न उत्सवों को भी देखा जा सकता है.

कैसे जाएं?

चार प्रमुख महानगरों में से एक होने के कारण यह शहर देश के हर भाग से सड़क मार्ग, रेल मार्ग और वायु मार्ग से सीधे जुड़ा हुआ है. राष्ट्रीय उच्च मार्ग पर स्थित बड़े शहरों से बस द्वारा आप यहां अधिक आसानी से पहुंच सकते हैं. सभी मध्यम या बड़े शहरों से रेल मार्ग द्वारा भी कमोबेश सुविधाजनक ढंग से आप यहां पहुंच सकते हैं. चूंकि 'कलकत्ता' नामक कोई रेलवे स्टेशन नहीं है. अतः रेलगाड़ी द्वारा यहां पहुंचने के लिए उत्तर या उत्तरपूर्व से चलने वाले लोगों को सियालदह और शेष भागों से चलने वाले लोगों को हावड़ा ही उतरना पड़ता है.

देश के अनेक प्रमुख शहरों—यथा नई दिल्ली, बंबई, मद्रास, लखनऊ, पटना, भुवनेश्वर, हैदराबाद, जयपुर, गुवाहाटी, नागपुर, बंगलौर, विशाखापत्तनम, भोपाल, वाराणसी, गोरखपुर आदि से कलकत्ता पहुंचने के लिए इंडियन एअरलाइंस की सेवाओं का लाभ लिया जा सकता है. शिलांग, गुवाहाटी, रांची, राउरकेला, जमशेदपुर आदि शहरों से कलकत्ता के लिए वायुदूत के भी विमान उड़ानें भरते हैं.

विभिन्न देशों के प्रमुख शहरों, जैसे—रोम, लंदन, बैंकाक, हांगकांग, टोकियो, न्यूयार्क, मास्को, काठमांडू और ढाका से भी कलकत्ता के लिए विमान सेवाएं उपलब्ध हैं.

आप चाहे जहां से भी विमान द्वारा कलकत्ता के लिए चलें, आप को उतरना पड़ेगा अंतर्राष्ट्रीय दमदम हवाई अड्डे पर ही. वहां से बस या टैक्सी द्वारा आप कलकत्ता शहर में अपने होटल या धर्मशाला तक पहुंच सकते हैं.

क्या देखें?

विशेषताओं तथा महत्त्वों से भरे इस महानगर में घूमनेफिरने, देखने तथा अपने दिलोदिमाग में बसा लेने लायक अनेक स्थान हैं.

हावड़ा पुल : सन 1943 में हुगली नदी पर बनाया गया यह पुल हावड़ा को कलकत्ता से जोड़ता है. इसलिए कलकत्ता में कदम रखने के पूर्व यह आप को दिख ही जाएगा. विश्व का विशालतर और भारत का विशालतम माना जाने वाला यह पुल सदा वाहनों से भरे रहने के कारण दूर से या ऊंचाई से काफी अच्छा लगता है. अनोखी बनावट के कारण विश्व के विभिन्न पुलों में इस की गणना विशेष रूप से की जाती है. इसलिए भी इसे देखने के पश्चात आप का हृदय गर्व भाव से परिपूर्ण हो सकता है.

डलहौजी एस्क्वायर : कलकत्ता के केंद्र में स्थित इस स्थान का नामकरण बंगाल के तीन वीर सपूतों के नाम पर अब 'विनय बादल दिनेश बाग' कर दिया गया है. फिर भी इसे 'डलहौजी एस्क्वायर' के ही नाम से अधिक लोग जानते हैं. यहां ऐतिहासिक महत्त्व की कई इमारतें हैं. ये हैं—पर्यटन विभाग का कार्यालय, राजभवन, विधानसभा भवन, उच्च न्यायालय, मुख्य डाकघर, सचिवालय आदि. इन सभी के बीच में है 'लाल दीघी ताल', जो इस स्थान की सुंदरता को और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अधिक बढ़ा देता है.

चौरंगी : डलहौजी एस्क्वायर के बाजू में ही कालीघाट मार्ग पर स्थित चौरंगी कलकत्ता का एक भव्य बाजार है. यहां इटली के वास्तुकारों द्वारा निर्मित अनेक भव्य इमारतें तो हैं ही, 48 मीटर ऊंची एक आकर्षक मीनार भी है. इस स्थान पर दिन भर कितनी चहलपहल रहती है, इस का अनुमान आप इसी बात से लगा सकते हैं कि अनेक गगनचुंबी इमारतें, पांचसितारा होटल, चलचित्रगृह, कार्यालय, बड़ीबड़ी दुकानें आदि यहीं पर हैं.

भारतीय संग्रहालय : देश का सब से बड़ा यह संग्रहालय डलहौजी एस्क्वायर से दो किलोमीटर दूर स्थित है. सन 1875 में इटली शैली में निर्मित इस संग्रहालय को लोग 'जादूघर' भी कहते हैं. छुट्टियों के दिन तथा सोमवार को छोड़ शेष सभी दिन खुले रहने वाले इस संग्रहालय में भारत के प्राचीनकालीन, विशेषकर बुद्धकालीन तथा गुप्तकालीन हिंदू युग के शिल्प और वास्तुकला के दुर्लभ नमूनों के अतिरिक्त गांधार, सारनाथ, सांची, अमरावती, कंबोडिया आदि स्थानों से ला कर सुरक्षित रखी गई प्राचीन मूर्तियों को भी आप देख सकते हैं. इतना ही नहीं, यहां पर भूविज्ञान, प्राणीविज्ञान, वनस्पति विज्ञान, मानव विज्ञान से संबंधित अनेक रोचक और ज्ञानवर्द्धक चीजों को भी आप यहां पर देख सकते हैं.

विक्टोरिया मेमोरियल : लार्ड कर्जन द्वारा लगभग 75 लाख रुपए की लागत से संगमरमर के बने इस भव्य भवन का उद्घाटन सन 1912 में वेल्स के राजकुमार ने किया था. ताजमहल से कुछ हद तक मिलताजुलता दिखने वाला यह भवन डलहौजी स्क्वायर से 3 किलोमीटर दूर स्थित है. सोमवार तथा विभिन्न अवकाशदिवसों को छोड़ शेष सभी दिन खुला रहने वाले इस भवन का नाम 'विक्टोरिया मेमोरियल' इसी लिए पड़ा है क्योंकि यह महारानी विक्टोरिया का स्मारक है. यहां पर उन की वह मूर्ति भी है, जिसे प्रसिद्ध कलाकार सर थामस ब्रूक ने उन के बाल्यकाल में बनाई थी. इस के अतिरिक्त यहां पर लगभग 3,500 अनूठी कलाकृतियां भी संग्रहीत हैं, जिन्हें देखने के लिए आप को यहां की भिन्नभिन्न 25 कलादीर्घाओं में जाना पड़ेगा.

बिड़ला तारामंडल : विक्टोरिया मेमोरियल के पास ही में स्थित इस गुंबदनुमा भव्य गुलाबी भवन का आंतरिक व्यास 23 मीटर है. दक्षिणपूर्व एशिया में सब से बड़ा माने जाने वाले इस तारामंडल में एक साथ 500 व्यक्ति बैठ कर ग्रहनक्षत्रों के बारे में बहुत अच्छी जानकारी प्राप्त कर सकते हैं. सोमवार तथा अन्य महत्त्वपूर्ण अवकाशदिवसों को छोड़ कर शेष सभी दिन खुला रहने वाले इस तारामंडल के प्रत्येक प्रदर्शन (प्रतिदिन तीन प्रदर्शन होते हैं) में आप को कभी तारों से भरा स्वच्छ आकाश दिखेगा और तुरंत बाद उमड़तेघुमड़ते बादल दिखने लगेंगे.

चिड़ियाघर : डलहौजी स्क्वायर से चार किलोमीटर दूर 16 हेक्टेयर क्षेत्र में फैले हुए चिड़ियाघर को सन 1876 में वेल्स के राजकुमार ने खोला था. भारत के सब से बड़े इस चिड़ियाघर में विश्व के लगभग हर तरह के पशुपक्षी आप सुबह से शाम तक बहुत कम शुल्क का टिकट खरीद कर देख सकते हैं. यहां के हरेभरे पेड़पौधे आप का और अधिक मन मोह लेंगे.

भूमिगत रेलवे : भूमिगत रेलवे (मेट्रो रेलवे) को देखे बिना कलकत्ता से प्रस्थान करने पर एक बहुत बड़े सुखद अनुभूति अर्जित करने से वंचित रह जाने का मलाल आप को हो सकता है, क्योंकि संपूर्ण भारत में अद्वितीय इस रेलमार्ग की पूरी व्यवस्था को देखने और इस की रेलगाड़ी पर घूमने का अपना अलग ही आनंद है.

उपर्युक्त स्थानों के अतिरिक्त आप इन दर्शनीय स्थानों को भी देख सकते हैं—

राष्ट्रीय पुस्तकालय : यहां 10 लाख से अधिक पुस्तकें तथा असंख्य दुर्लभ पांडुलिपियां सुरक्षित रखी हुई हैं.

जैविक उद्यान : यहां 40,000 से अधिक भिन्नभिन्न किस्म के पेड़पौधे हैं. इन में एक बरगद का वह पेड़ भी है, जो एक हजार वर्ग फुट में फैला हुआ है.

जैन मंदिर : आज से सवा सौ वर्ष पहले डलहौजी स्क्वायर से सात किलोमीटर दूर यह भव्य मंदिर शीशे और पत्थरों से बने होने के कारण काफी आकर्षक लगता है.

समुद्र तट : यहां छोटीछोटी लहरों में खड़ा हो कर दूरदूर तक फैले समुद्र को देखना बहुत ही रोमांचक लगता है.

डायमंड हर्बर : कलकत्ता से 51 किलोमीटर दूर इस रमणीय स्थान पर पिकनिक मनाने के लिए आप सियालदह से रेलगाड़ी द्वारा जा सकते हैं.

क्या खरीदें?

वैसे तो मोलतोल के बाद आप को यहां अनेक उपयोगी चीजें अच्छी और सस्ती मिल जाएंगी, मगर यहां आप विशेष रूप से बंगाली मिठाइयां, मुर्शिदाबाद के रेशमी वस्त्र, हाथी दांत की सजावटी वस्तुएं, काष्ठकला की चीजें आदि खरीद सकते हैं.

शांतिनिकेतन

यद्यपि यह स्थान हावड़ा से 146 किलोमीटर दूर स्थित है, तथापि कलकत्ता ही नहीं, बल्कि पश्चिम बंगाल में पदार्पण करने वाले अधिकांश व्यक्ति यथासंभव यहां अवश्य आते हैं, क्योंकि उन के मन में इस विख्यात शिक्षा मंदिर के प्रति एक विशेष श्रद्धायुक्त आकर्षण भाव सदैव सुरक्षित रहता है. संभवतः इसी लिए इसे देख कर घर लौटने के बाद लोग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

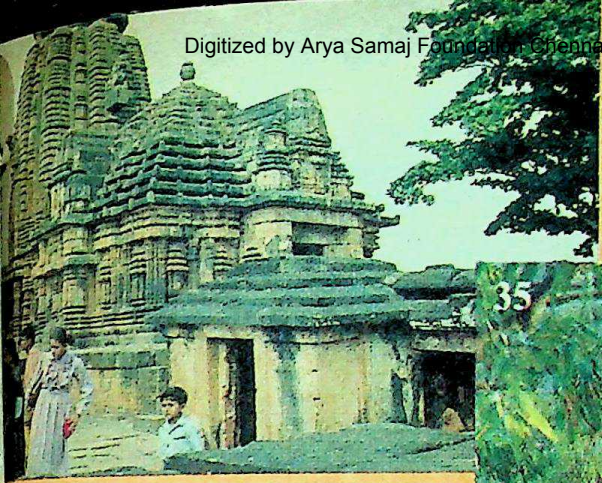

33. भुवनेश्वर के लिंगराज मंदिर की दीवारों पर अत्यंत सुंदर नक्काशी की गई है.

34. काफी पुराना होने के बावजूद भी कोणार्क के मंदिर का आकर्षण अक्षुण्ण है.

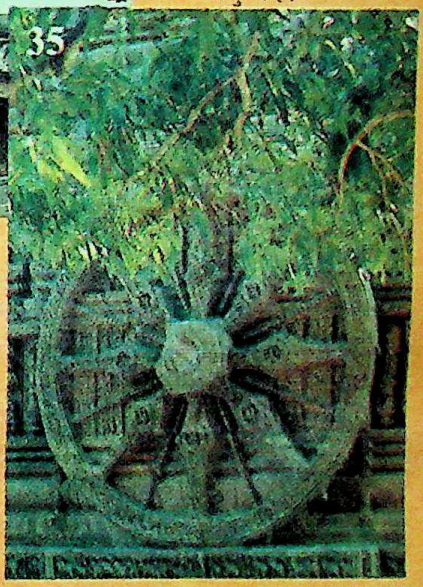

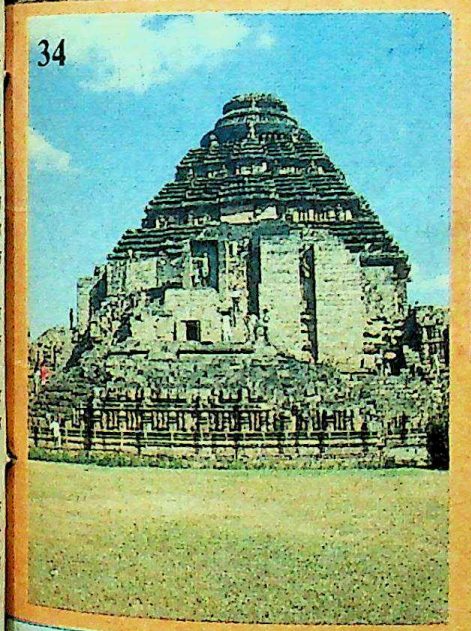

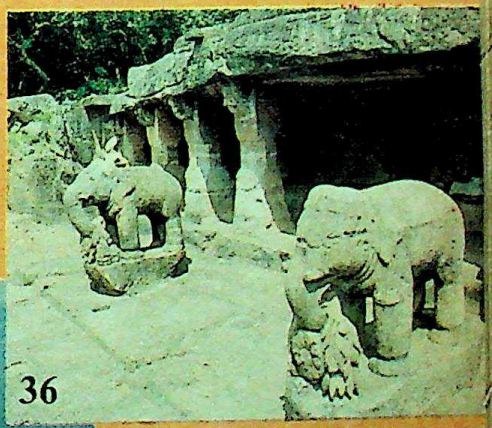

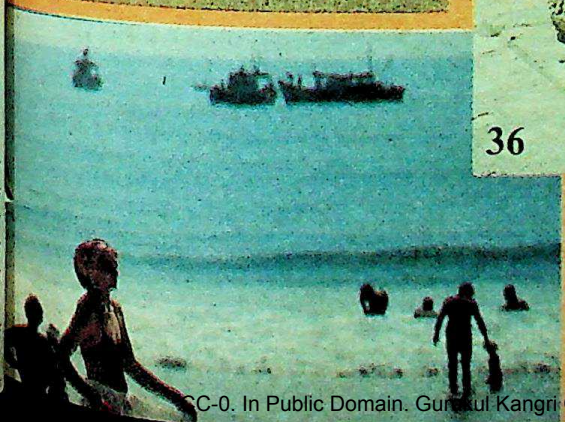

35. कोणार्क के सूर्य मंदिर में स्थापित रथ का पहिया.

36. भुवनेश्वर के नजदीक उदयगिरि की गुफाओं में जैन तीर्थंकरों की प्रतिमाएं.

37. पुरी का समुद्र तट विश्व के बहुत अच्छे समुद्र तटों में से एक माना जाता है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने मित्रों, परिजनों तथा परिचितों के सम्मुख इस का उल्लेख गर्व से करते हैं.

इस शैक्षणिक प्रतिष्ठान की स्थापना नोबेल पुरस्कार प्राप्त गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर ने सन 1901 में इस स्थान, जिसे पहले 'बोलपुर' के ही नाम से अधिक जाना जाता था, पर एक विद्यालय के रूप में की थी. कालांतर में यह 'विश्वभारती विश्वविद्यालय' बना. आज भी इस का यही नाम है, मगर अधिकांश लोग इसे 'शांतिनिकेतन' के ही नाम से जानते हैं. इस का विशेष महत्त्व अपनी पृथक पहचान के कारण है. यह ऐसा एकमात्र विश्वविद्यालय है, जहां उन्मुक्त गगन के नीचे हरीहरी घास पर शांत परिवेश में छात्रों को प्राध्यापक पढ़ाते हैं. यहां का यही वातावरण विश्व भर के शिक्षार्थियों के साथसाथ पर्यटकों को भी आकर्षित करता है.

शांतिनिकेतन में ठहरने के लिए अनेक स्थान हैं. जैसे–विश्वविद्यालय की अतिथिशाला, अंतर्राष्ट्रीय अतिथिशाला, लोकनिर्माण विभाग के निरीक्षण भवन, वन विभाग का विश्रामगृह, जिला परिषद का डाकबंगला, रेल विभाग का विश्रामगृह, शांतिनिकेतन पर्यटक लाज आदि.

यहां का वर्षामंगल (वर्षा ऋतु में), वसंतोत्सव (वसंत ऋतु में), पौषोत्सव अर्थात स्थापना दिवस (शीत ऋतु में), होलिकोत्सव आदि देखने लायक होते हैं.

दार्जिलिंग

बंगाल प्रदेश (पश्चिमी बंगाल) का यह पहाड़ी शहर समुद्र तल से 2,143 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है. इसे बंगाल की ग्रीष्मकालीन राजधानी होने का भी गौरव प्राप्त है. कहा जाता है कि पर्वतारोहण के लिए दार्जिलिंग से सुंदर स्थान कोई दूसरा नहीं है. यहां लगभग वर्ष भर देशीविदेशी पर्यटकों का तांता लगा रहता है.

दार्जिलिंग शहर की भौगोलिक स्थिति अत्यंत ही सुंदर है. शहर के किसी भी भाग से हिमालय की चोटियों की शृंखला देखी जा सकती है जो विश्व के किसी भी भाग से सुलभ नहीं है.

कैसे पहुंचे?

दार्जिलिंग पहुंचने के लिए पश्चिम बंगाल के सिलीगुड़ी एवं न्यू जलपाईगुड़ी रेलवे स्टेशनों तक देश के प्रत्येक भाग से रेलगाड़ियां मिलती हैं. यहां का निकटतम हवाई अड्डा सिलीगुड़ी शहर से 12 कि.मी. दूर बागडोगरा में है. बागडोगरा से दार्जिलिंग तक का सफर मात्र 3½ घंटे का है. अनेक टैक्सियां तथा बसें सुगमतापूर्वक उपलब्ध रहती हैं. सिलीगुड़ी रेलवे स्टेशन से छोटी रेलगाड़ी (खिलौना गाड़ी) भी चलती है, जो लगभग 7 घंटे में दार्जिलिंग पहुंचाती है. इस यात्रा करने का अपना अलग ही आनंद है.

दार्जिलिंग

कहां ठहरें?

होटल अग्रवाल, डा. एस.एम. रोड; होटल एंबेसेडर, 1 बी, चौरास्ता, फोन 2781; अनामिका होटल, 1 बी, गांधी रोड; एलाइस विला, एच.डी. लामा रोड, फोन 2381; अप्सरा होटल, 61, लाडेनला रोड; अशोका होटल, 26, राकविले रोड; ऐशिया होटल, 32, लाडेनला रोड; होटल ब्राउवे, 3 कूच बिहार रोड; कैपिटल होटल, 1 ए गांधी रोड, फोन: 2860; सेंट्रल होटल, रौबटसन रोड; डैफोडिल होटल, 7/1, रौकविले रोड; ड्रीमलैंड होटल, टूंग सूंग रोड; एंपरर होटल, 204, टूंग सूंग रोड; एवरग्रीन होटल, 1, बर्दवान रोड; कोसे होम, 18, नेहरू रोड, फोन: 2094.

क्या देखें?

माल रोड : यहां अनेक दर्शनीय स्थल हैं. माल रोड से हिमालय की गगनचुंबी चोटियों की ओर झूलते दार्जिलिंग शहर की प्राकृतिक छटा एवं हरियाली का दृश्य अद्वितीय लगता है. यहां पर दिन भर सैलानियों का तांता लगा रहता है.

पर्वतारोहण संस्थान : आगे बढ़ने पर जवाहर पर्वत पर हिमालय पर्वतारोहण संस्थान है, जिस में एवरेस्ट विजेताओं की विजयगाथा दुर्लभ चित्रों में दर्शाई गई है. यहां पर्वतारोहण से संबंधित समस्त जानकारी मिलती है.

पद्मजा नायडू जैविक उद्यान : थोड़ा और आगे बढ़ने पर पद्मजा नायडू जैविक उद्यान है, जिस में लाल चिड़िया, बर्फीली गाय (याक) तथा स्नो लिओपार्ड आदि दुर्लभ जंतु देखे जा सकते हैं.

लायड वानस्पतिक उद्यान : बस स्टैंड के नीचे है विश्वविख्यात लायड बोटेनिकल गार्डन है, जिस में अनेक देशीविदेशी दुर्लभ पेड़पौधे उगाए गए हैं. यहां हरबेरियम में दार्जिलिंग तथा सिक्किम व हिमालय के हजारों पौधों के 100 से भी अधिक वर्ष पुराने नमूने रखे हैं. यहां के हरित गृह की छटा अद्वितीय है.

नेचुरल हिस्ट्री म्यूजियम : शहर के मुख्य चौराहे से थोड़ी दूरी पर स्थित है यहां का नेचुरल हिस्ट्री म्यूजियम, जिस में इस क्षेत्र में पाए जाने वाले अनेक एवं दुर्लभ जीवों के नमूनों को देखा जा सकता है.

अन्य दर्शनीय स्थल :

इन के अतिरिक्त आवा आर्ट गैलरी, राजभवन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(गवर्नर हाउस) के पीछे स्थित 'द श्रवरी' नामक उद्यान, जहां से कंचनजंघा शृंखला तथा सिंगा घाटी का मनमोहक दृश्य दिखता है. रंजीत घाटी, रोपवे, लेवांग रेसकोर्स (विश्व में सब से ऊंचाई पर स्थित तथा सब से छोटा रेस कोर्स) आदि दर्शनीय हैं.

टाइगर हिल : दार्जिलिंग आने वाला प्रत्येक दर्शक यहां की प्रख्यात 'टाइगर हिल' से सूर्योदय देखने को लालायित होता है. यहां प्रातः 4 बजे से ही लोगों का तांता लग जाता है. एक अन्य मनमोहक दृश्य देखने को मिलता है, बतासिया लूप से मुड़ती हुई खिलौना गाड़ी का. यह इंजीनियरिंग का अद्वितीय नमूना है.

घूम : धार्मिक स्थानों में यहां से 8 कि.मी. दूर घूम में स्थित बौद्ध मंदिर, रेलवे स्टेशन के पास ही स्थित धी धाम मंदिर तथा दार्जिलिंग चौरस्ते के पास ही स्थित आबजर्वेटरी हिल प्रमुख हैं.

दार्जिलिंग की प्रसिद्धि में यहां की चाय का बड़ा योगदान है. यहां मीलों फैले चाय के बाग ऐसे दिखते हैं जैसे पहाड़ों पर हरा कालीन बिछा हो.

क्या खरीदें?

माल रोड स्थित दुकानों से विभिन्न कलात्मक सजावटी सामान मिलते हैं. इन में ड्रैगन की आकृति की लकड़ी, तांबे तथा कपड़े पर कलात्मक कृतियां प्रमुख रूप से पाई जाती हैं. मंजूठ्य बंगाल इंपोरियम से बंगाल के विभिन्न क्षेत्रों से निर्मित हस्तकला के नमूने तथा सिल्क धागों से निर्मित वस्तुएं ली जा सकती हैं. हेडेन हाल में स्थानीय महिलाओं द्वारा बनाए गए ऊनी तथा सूती कालीन, स्वेटर, शाल, बैग आदि भी उपलब्ध हैं. चौरास्ते के पास ही मुख्य बाजार है, जहां दैनिक जीवन की प्रत्येक वस्तुएं उपलब्ध रहती हैं. यहां पर स्थानीय खाद्य सामग्री तथा अनेक प्रकार के साग, कंदमूल आदि मिल जाते हैं.

—विद्या श्रीवास्तव

मिरिक

पर्यटन की दृष्टि से हमारे देश में अनेक पर्वतीय स्थल अपने नैसर्गिक सौंदर्य, अच्छी जलवायु व मनमोहक दृश्य के लिए प्रसिद्ध हैं लेकिन ऐसे भी कुछ स्थान हैं जिन के प्रति जनसाधारण का आकर्षण पर्याप्त जानकारी के अभाव में विकसित नहीं हुआ है. ऐसी ही एक पर्वतीय सैरगाह है—मिरिक. यह समुद्र तल से 5,800 फुट की ऊंचाई पर दार्जिलिंग और सिलीगुड़ी के बीच स्थित है.

मिरिक पहुंचने से पहले आप को बागडोगरा जाना होगा जो रेल, बस व वायुमार्ग से जुड़ा हुआ है. यह सेवा कलकत्ता से रोजाना उपलब्ध है. बागडोगरा से मिरिक की दूरी 55 किलोमीटर है, जो टैक्सी द्वारा करीब चारपांच घंटों में तय की जा सकती है.

यहां ठहरने के लिए जिला परिषद, सार्वजनिक निर्माण विभाग के डाक बंगले, यूथ होस्टल व होटल की समुचित व्यवस्था है.

मिरिक में देखने के लिए प्राकृतिक सौंदर्य के अलावा और कुछ नहीं है. इस का कुल क्षेत्रफल 335 एकड़ है, जिस में पांच एकड़ भूमि का एक समतल टुकड़ा है. ऐसा टुकड़ा दार्जिलिंग की पहाड़ियों में मुशकिल ही पाया जाता है. इस भूमि के पश्चिमी छोर पर एक प्राकृतिक झील है, जो बारहों महीने बरसाती पानी से भरी रहती है. इस झील पर करीब सवा किलोमीटर लंबा बांध भी बनाया गया है. इस पर पैदल आनेजाने के लिए एक पुल भी है. झील के आसपास सुंदर बाग का भी निर्माण कराया गया है.

मिरिक से मात्र दो किलोमीटर की दूरी पर संतरे का बहुत बड़ा बाग है. इसी के पास रानीटेदारा एक ऐसी जगह है, जहां से पहाड़ी व मैदानी क्षेत्र दोनों के दृश्यों का आनंद लिया जा सकता है. यहां खासकर पर्यटक सूर्योदय व सूर्यास्त दोनों देखने आते हैं. पूरे दार्जिलिंग क्षेत्र में यह अकेला स्थल है, जहां से सूर्य को अच्छी तरह प्रकृति से अठखेलियां करते देखा जा सकता है.

मिरिक के पास ही नेपाल की सीमा पर काफी बड़ा विदेशी सामान का बाजार है, जहां से खरीदारी की जा सकती है, लेकिन खरीदारी के बाद सीमा पर स्थित कस्टम आफिस में ड्यूटी दे कर रसीद ले लेनी चाहिए ताकि आगे आप को किसी परेशानी का सामना न करना पडे.

यहां के निवासी ग्रीष्म ऋतु का आगमन बड़ी धूमधाम से करते हैं क्योंकि इस छोटे से पर्वतीय क्षेत्र के निवासियों की रोजीरोटी पर्यटकों से ही जुड़ी हुई है, और पर्यटन के लिए यह स्थल ग्रीष्मऋतु में ही सर्वोत्तम है.

गंगतोक

'गंगतोक' का शाब्दिक अर्थ होता है—ऊंचा पहाड़. अपने नाम के इस अर्थ को चरितार्थ करने वाला यह स्थान विश्व की तीसरी ऊंची पर्वत चोटी कंचनजंघा की तलहटी में समुद्रतल से 1,525 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है. राष्ट्र के उत्तरीपूर्वी भाग में स्थित सिक्किम की राजधानी बने इस शहर की घाटी में बारहों महीने रंगबिरंगे मोहक फूल अपनी सुगंध तो बिखेरते ही रहते हैं, हरेभरे वृक्ष, घनी लताएं, दूरदूर तक बिछी कोमल हरी घास, सीढ़ीदार खेतों में झूमते धान के पौधे, आकाश में उमड़तेघुमड़ते बादल आदि भी इस स्थान की रमणीयता में और श्रीवृद्धि करते हैं. ऐसा लगता है कि प्रकृति ने काफी प्रसन्न हो कर यहां पर अवर्णनीय मोहक दृश्य उपस्थित कर दिया है. चूंकि यह स्थान भारतचीन सीमा के निकट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गंगतोक

कहां ठहरें?

होटल स्वागत, लाल बाजार रोड, फोन: 2991, 2038; होटल तिब्बत, पालजोर स्टेडियम रोड, फोन: 2523, 2568; होटल कर्मा, एम.जी. मार्ग; न्यू जयश्री होटल, शांति भवन, शेर ए पंजाब, वुडलैंड होटल, नूर खिल होटल, फोन: 2386, 2720; कंचन व्यू होटल, फोन: 496; डोमा होटल.

है, अतः सामरिक दृष्टि से भी इस का काफी महत्त्व है.

कब जाएं?

घूमनेफिरने के लिए आप जब भी गंगतोक जाने का कार्यक्रम बनाएं, तो मार्च के प्रथम सप्ताह से जून के प्रथम सप्ताह तक ही. अगर इस अवधि में नहीं, तो फिर अक्तूबर के तीसरे सप्ताह से नवंबर के अंतिम सप्ताह तक. यहां गर्मी के दिनों में हलके ऊनी कपड़े, मार्च माह में उस से कुछ अधिक और ठंड के दिनों में भारी ऊनी कपड़े पहनने पड़ते हैं.

कैसे जाएं?

रेल मार्ग, सड़क मार्ग तथा वायु मार्ग किसी से भी जा कर आप गंगतोक में कदम रख सकते हैं. अगर आप को रेल द्वारा दिल्ली, बंबई, लखनऊ, पटना, गुवाहाटी आदि प्रमुख नगरों से गंगतोक के लिए प्रस्थान करना है, तो आप इन स्थानों से सिलीगुड़ी अथवा न्यू जलपाईगुड़ी स्टेशन, जो गंगतोक से क्रमशः 114 तथा 125 किलोमीटर हैं, से किसी एक स्टेशन पर पहुंचें और फिर वहां से गंगतोक जाने वाली बस या टैक्सी में बैठ जाएं.

अगर आप बस से गंगतोक जाना चाहें, तब भी आप को असुविधा नहीं होगी. सिक्किम राष्ट्रीयकृत परिवहन की बसें अनेक प्रमुख स्थानों से गंगतोक तक जाती हैं. अधिक सुविधाजनक यात्रा के लिए आप दार्जिलिंग, कलिम्पोंग या सिलीगुड़ी से चलने वाली आरामदायक बस या टैक्सी से जा सकते हैं.

जिन सड़कों से ये वाहन गुजरते हैं, वे अक्तूबर से जून तक अधिक ठीक रहती हैं. इस रास्ते से कलिम्पोंग से गंगतोक तक जाने में 4 घंटे और दार्जिलिंग से गंगतोक तक जाने में 7 घंटे लगते हैं. दार्जिलिंग गंगतोक के लंबे मार्ग, जिस पर चलने वाली बसों में पहले ही आरक्षण करा लेना ठीक रहता है, में खानेपीने के लिए मुख्य रूप से एक स्थान रंगपो में ही व्यवस्था है. अतः बेहतर यही होगा कि इस मार्ग में खानेपीने का सामान अपने साथ पहले से ही ले कर चलें.

अगर आप वायुयान से यात्रा करने वाले हैं, तो दिल्ली, बंबई, कलकत्ता, मद्रास, पटना, लखनऊ आदि में से (अपनी सुविधानुसार) किसी एक स्थान से बागडोगरा, जो गंगतोक का निकटतम हवाई अड्डा है, तक हवाई जहाज से जा सकते हैं. कलकत्ता से बागडोगरा तक की दूरी 50 मिनट में तय करने के लिए इंडियन एअर लाइंस की नियमित उड़ानों का लाभ उठा कलकत्ता से ले सकते हैं. कलकत्ता से बागडोगरा तक की यात्रा आप 'वायुदूत' से भी तय कर सकते हैं. दिल्ली से भी बागडोगरा तक के लिए इंडियन एअरलाइंस के साथसाथ 'वायुदूत' की उड़ानें हैं.

बागडोगरा से गंगतोक तक के लिए सप्ताह में दो बार हेलीकाप्टर सेवा उपलब्ध हो जाती है. इस संबंध में विस्तृत जानकारी पर्यटन विभाग से आप प्राप्त कर सकते हैं. वैसे, अगर आप की जेब हवाई यात्रा के लिए अनुमति न दे या किसी कारणवश आप को यह सेवा उपलब्ध न हो सके, तो 124 कि.मी. की यह दूरी आप बस अथवा टैक्सी से तय कर सकते हैं.

क्या देखें?

जब आप बागडोगरा, सिलीगुड़ी या न्यू जलपाईगुड़ी से बस द्वारा गंगतोक जाएंगे, तभी रास्ते में आप को अनेक दर्शनीय स्थल दिखेंगे. उन रमणीय स्थानों के सुंदर प्राकृतिक दृश्यों को मुग्ध हो कर देखतेदेखते आप कब गंगतोक पहुंच जाएंगे, आप को पता ही नहीं चलेगा.

गंगतोक में तथा उस के आसपास के स्थानों में अनेक दर्शनीय स्थल हैं. इन में से अधिकांश स्थलों पर पर्यटकों के प्रवेश के लिए समय निर्धारित किया गया है.

हिरन उद्यान: यहां का शांत वातावरण और रमणीक दृश्य किसी भी व्यक्ति को मुग्ध कर देता है. सूर्य के प्रकाश में चमकती हिमाच्छादित पर्वत शृंखलाएं तथा हरीभरी घाटियां सुंदर दिखती हैं. यहां पर भांतिभांति के रंगीन फूलों के बीच में बुद्ध की एक स्वर्णजड़ित प्रतिमा है, जहां पर आप चित्र खींच सकते हैं. यहां पर आप तब और अधिक प्रफुल्लित हो जाएंगे, जब कस्तूरी मृगों तथा अन्य प्रजातियों के मृगों को चौकड़ी भरते हुए देखेंगे.

टसुक ला खांग: कई वर्ष तक चोग्याल राजाओं का मंदिर रह चुके इस स्थान पर आज भी बुद्ध की एक से बढ़ कर एक अनेक मूर्त्तियां लगी हुई हैं. इन में से एक जो बड़ी है, काफी सुंदर है. यहां के स्तंभों तथा दीवारों पर की गई पच्चीकारी, नक्काशी और चित्रकारी काफी अच्छी लगती है. स्थानस्थान पर की गई सजावट से यहां की भव्यता और बढ़ जाती है. चित्र खींचने के लिए प्रतिबंधित इस मंदिर के बाहर से दूरदूर तक फैले पहाड़ों का बहुत ही सुंदर दृश्य दिखाई पड़ता है.

कुटीर उद्योग संस्थान: प्रदेश सरकार द्वारा संचालित संपोषित इस स्थान का शो रूम रविवार सहित अन्य सरकारी अवकाश दिवसों को छोड़ कर शेष सभी दिन प्रातः 9.30 से अपराह्न 12.30 बजे तक तथा अपराह्न 1.30 से 3.30 बजे तक खुला रहता है. इसे देख कर यहां के जनजीवन में उपयोग में लाई जाने वाली चीजों के आकारप्रकार तथा रंगरूप के बारे में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहुत अच्छी जानकारी प्राप्त कर सकते हैं.

इस संस्थान में बनने वाली विभिन्न चीजों यथा–हस्तनिर्मित ऊनी कालीन, कंबल, शाल, सुंदर नक्काशी की हुई काष्ठ मेज, पहाड़ी लोगों के पारंपरिक वस्त्र आदि को आप यहां खरीद भी सकते हैं.

तिब्बती शोध संस्थान: रविवार सहित अन्य सरकारी अवकाश दिवसों को छोड़ कर शेष सभी दिन पूर्वाह्न 10 बजे से अपराह्न 4 बजे तक खुला रहने वाले इस संस्थान में बौद्ध साहित्य का बहुत अच्छा संग्रह है. इस के अतिरिक्त प्राचीन चित्र, तंखे, मूर्तियां आदि भी यहां संग्रहीत हैं. इन सब पर शोध करने के लिए देशविदेश के अनेक शोधार्थी यहां प्रायः आते रहते हैं. आप भी इन सारी चीजों को यहां पर देख सकते हैं.

इन स्थानों के अतिरिक्त आप यहां पेमायांगत्से मठ, रूमटेक मठ, एनचे मठ, आर्किड सेंचुरी, टाशी व्यू प्वाइंट आदि भी देख सकते हैं.

भुवनेश्वर

भुवनेश्वर की ख्याति सिर्फ इसी लिए नहीं है कि यह उड़ीसा की राजधानी है, बल्कि इसलिए भी है कि यह अपने राष्ट्र में ऐतिहासिक, आध्यात्मिक, स्थापत्य कला और वास्तुकला का एक महत्त्वपूर्ण केंद्र है. सदियों पूर्व कोटलिंग के नाम से जाना जाने वाला यह नगर 'मंदिरों, तालाबों और झीलों का शहर' ही कहा जाता है. यहां के मंदिरों में नागर शैली में बने अद्भुत शिल्प को देख कर तो कोई भी पर्यटक मुग्ध हो जाता है. दरअसल यहां पर कई सदी पूर्व 1000 से भी अधिक मंदिर थे. अब इन में से आधे ही बचे हैं. इन सभी का निर्माण नागर शैली में ही किया गया है.

भुवनेश्वर को दो भागों में बांट कर देखा जा सकता है. प्रथम–आधुनिक भुवनेश्वर और द्वितीय–प्राचीन भुवनेश्वर. आधुनिक भुवनेश्वर वह है, जो हाल के दशकों में राजधानी के रूप में निखर कर सामने आया है और प्राचीन भुवनेश्वर वह है, जो इस (आधुनिक भुवनेश्वर) से थोड़ा अलग दिखता है. प्राचीन भुवनेश्वर में ही उड़ीसा की संस्कृति सुरक्षित, संरक्षित देखने को मिलती है.

कब जाएं?

जून के तीसरे सप्ताह से अगस्त के तीसरे सप्ताह तक की अवधि को छोड़ कर आप किसी भी अवधि में पर्यटन के उद्देश्य से भुवनेश्वर आ सकते हैं. वैसे, बेहतर यही होगा कि आप अगस्त से मार्च तक ही यहां आएं.

कैसे जाएं?

उड़ीसा की राजधानी होने के कारण भुवनेश्वर देश के लगभग सभी प्रमुख नगरों से सड़क मार्ग, रेलमार्ग तथा वायुमार्ग से जुड़ा हुआ है. अपनी सुविधा के अनुसार इन में से किसी भी मार्ग से आप यहां पहुंच सकते हैं.

भुवनेश्वर : कहां ठहरें?

कोणार्क, 86 ए-1, गौतम नगर, फोन : 53330, 54330; कलिंग अशोक, गौतम नगर, फोन : 53318; प्राची, 6 जनपथ, फोन : 52689, 52728; स्वाति, 103, जनपथ, फोन : 54178/9; अनारकली, 110, खारवेल नगर, यूनिट III, फोन : 54031; जगपति 77, बुद्ध नगर; ओबेराय, नया पल्ली, सफारी, 721, रसूलगढ़, फोन : 53443, 54240.

क्या देखें?

चूंकि भुवनेश्वर में अनेक दर्शनीय स्थल हैं और सभी एकदूसरे से काफी दूर है. अतः आप के लिए अधिक सुविधाजनक यही होगा कि तिपहिया वाहनों या रिक्शों से घूमने के बजाए उड़ीसा पर्यटन विकास निगम की बस से ही आप घूम लें. वैसे, अगर आप की जेब हरी झंडी दिखा दे, तो आप टैक्सी से भी घूम सकते हैं. ये टैक्सी वाले भाड़े के रूप में लगभग 300 रुपए तो ले ही लेते हैं.

लिंगराज मंदिर: भुवनेश्वर मंदिर के भी नाम से ज्ञात इस मंदिर की बाहरी दीवारों पर अद्भुत शिल्पकला देखने को मिलती है. इन दीवारों पर अत्यंत सुंदर नक्काशी की गई है और कलात्मक ढंग से मूर्तियां बनाई गई हैं. मंदिर के अंदर ग्रेनाइट पत्थर से बना एक विशाल शिवलिंग है, जो स्थापत्य कला की दृष्टि से काफी अच्छा है.

बिंदुसागर झील: भुवनेश्वर की अन्य सभी झीलों से बड़ी यह झील लिंगराज मंदिर के उत्तर में ही स्थित है. 300 फुट लंबी और 700 फुट चौड़ी इस झील के चारों ओर पत्थर लगे हुए हैं. यहां का तथा आसपास का दृश्य देखते ही बनता है.

गुफाएं: भुवनेश्वर से 5 किलोमीटर दूर पश्चिमी उत्तरी भाग में दो पहाड़ियां है–खंडगिरि और उदयगिरि. इन की ऊंचाई क्रमशः 133 फुट और 118 फुट है. उड़ीसा के इतिहास का एक महत्त्वपूर्ण अध्याय अपने आप में संजोए इन पहाड़ियों में हजारों वर्ष पुरानी अनेक गुफाएं हैं. यहां पर जैन धर्म के 24 तीर्थंकरों की प्रतिमाएं एक ही पत्थर को काट कर बनाई गई हैं. उदयगिरि की कई गुफाओं के पास तो आंगन, बरामदे और कोठरियां भी हैं. इन गुफाओं तक पहुंचने के लिए ढालुआ रास्ता तो है ही, सीढ़ियां भी हैं.

शांति स्तूप: भुवनेश्वर से 10 किलोमीटर दूर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

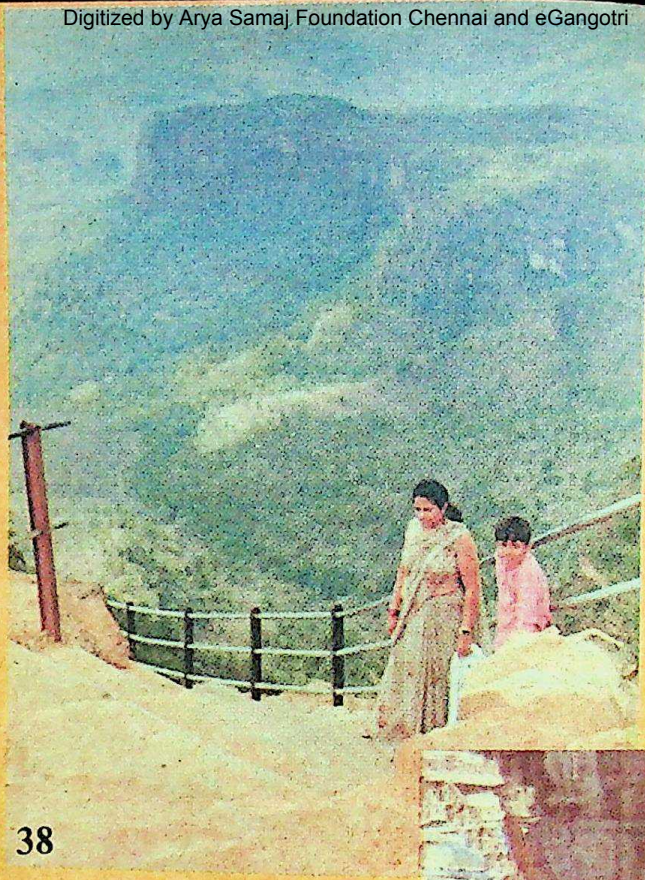

38

41

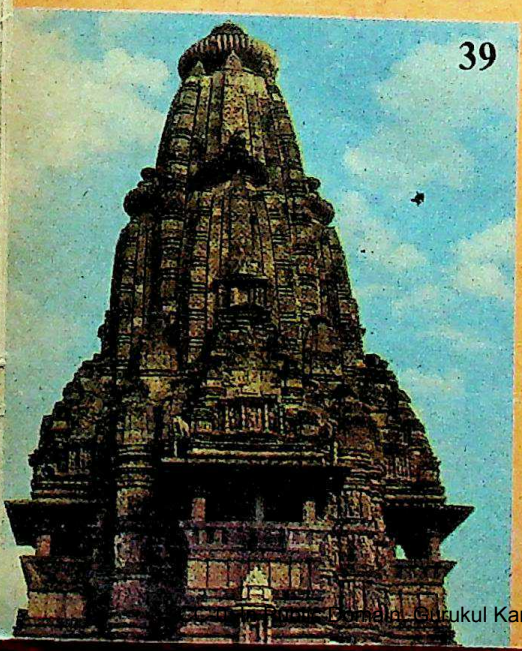

39

40

38. हरीभरी प्रकृति और झरनों के कारण पचमढ़ी देशीविदेशी पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र है.

39. खजुराहो का मंदिर : प्राचीन कलाकृतियों के कारण विश्व प्रसिद्ध.

40 दिलवाड़ा के जैन मंदिर : कलात्मक कृतियों से प्रेमाड़

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

41. चारों ओर पहाड़ों से घिरी माउंट आबू की नक्की झील अपनी अनुपम छटा बिखेरती है.
42. अजंता की मुख्य गुफा का कलात्मक द्वार.
43. एलोरा के प्राचीन मंदिरों का कलात्मक सौंदर्य आज भी देखते बनता है.
44. अजंता की गुफाओं की स्थापत्य कला बेजोड़ है.

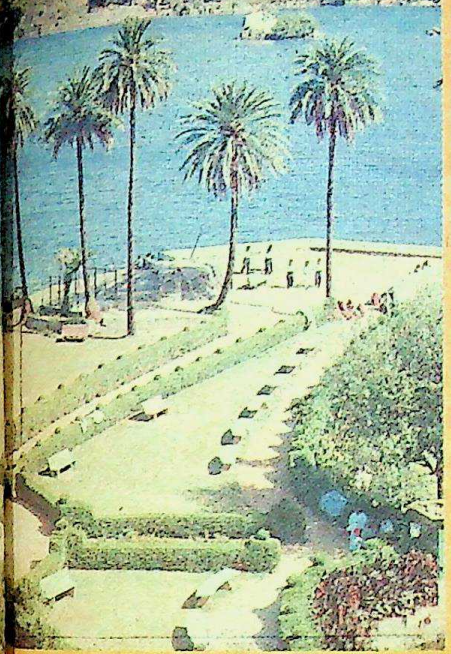

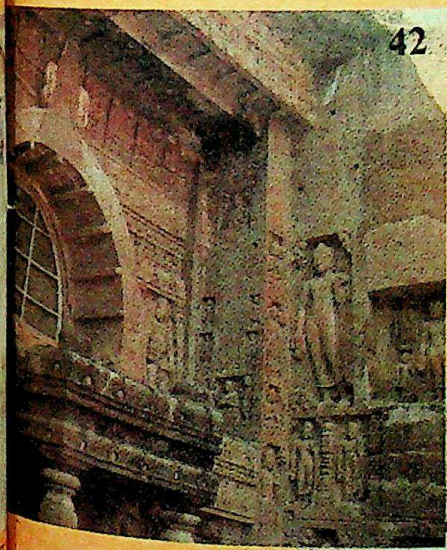

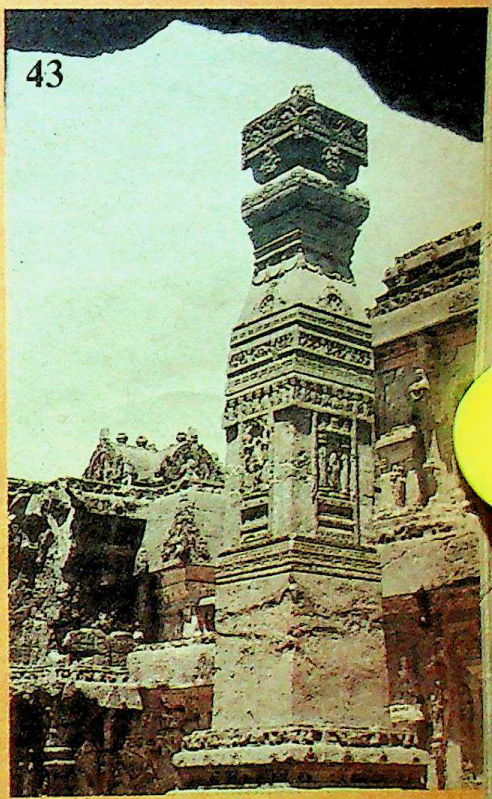

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धौली पहाड़ी पर स्थित इस भव्य स्तूप के चारों ओर बुद्ध की एकएक विशाल प्रतिमा लगाई गई है, जो इस स्थान को और अधिक भव्य बनाती है. सम्राट अशोक का हृदय परिवर्तन स्थल होने के कारण प्रसिद्ध इस स्थान तक जाने वाले मार्ग के दोनों ओर काजू के हरेभरे वृक्ष देख कर मन पुलकित हो जाता है. जब आप यहां से नीचे देखेंगे, तो दूरदूर तक नारियल के बाग दिखेंगे.

नंदन कानन पार्क: भुवनेश्वर से 12 किलोमीटर दूर 400 हेक्टेयर में फैले इस पार्क में जब आप पहुंचेंगे, तो रमणीय झील, समृद्ध चिड़ियाघर, नयनप्रिय जैविक उद्यान, अभयारण्य, बाल उद्यान आदि को देख कर आप अपने दैनिक जीवन की भागदौड़ और चिल्लपों को तो कुछ समय के लिए भूल ही जाएंगे. यहां पर अभयारण्य में घुमाने के लिए एक बस आप को सेवारत मिलेगी. अगर आप चाहें, तो इस की सेवा का लाभ उठा कर स्वच्छंद विचरण करते जंगली जानवरों को देख सकते हैं.

भुवनेश्वर में आप इन स्थानों के अतिरिक्त राज्य संग्रहालय, हाथी गुंपा, शिशुपाल गढ़ आदि को देख सकते हैं.

क्या खरीदें?

भुवनेश्वर में हस्तशिल्प तथा पाषाणशिल्प की वस्तुएं अच्छी और अपेक्षाकृत कम मूल्य पर मिलती हैं. अगर आप चाहें तो इन्हें खरीद सकते हैं.

पुरी

भुवनेश्वर से पुरी तक की 61 किलोमीटर की यात्रा आप रेलगाड़ी या बस या टैक्सी से कर सकते हैं. हां, हवाई यात्रा करने वाले पर्यटकों को थोड़ी निराशा होगी क्योंकि पुरी तक हवाई जहाज नहीं आता है. यहां का निकटतम हवाई अड्डा भुवनेश्वर ही है.

क्या देखें?

यद्यपि पुरी अधिक प्रसिद्ध है जगन्नाथ के मंदिर के ही कारण, लेकिन यहां पर देखने के लिए अनेक अन्य स्थान भी हैं. जैसे शिल्पकला से समृद्ध अनेक मंदिर, सदाबहार वन, हरीहरी पत्तियों और सुगंधित फूलों से भरे बाग, स्वच्छ जल वाली सुंदर झीलें और अपनी लहरों से प्रकृति का गीत गाने वाला समुद्र.

जगन्नाथ मंदिर: नगर के मध्य में काले पत्थरों से निर्मित 214 फुट ऊंचे इस भव्य मंदिर की एक प्रमुख विशेषता यह है कि इस में स्थापित जगन्नाथ, बलभद्र और सुभद्रा की मूर्तियां पत्थर की नहीं, बल्कि चंदन की हैं. शिल्पकला की दृष्टि से अत्युत्तम बने इस मंदिर के चार द्वार है. यहां प्रतिदिन एक हजार से भी अधिक रहने वाले व्यक्तियों का भोजन जिस रसोईघर में बनता है, उस के बारे में यह कहा जाता है कि यह भारत का सब से बड़ा रसोईघर है.

पुरी

कहां ठहरें?

बगाडिया धर्मशाला, ग्राट रोड; बगाला यात्री निवास, बस स्टैंड के पास; डूडवाला धर्मशाला, ग्राट रोड; गोयंका धर्मशाला, मोची साही; पुरी होटल, बीच रोड; होटल सी व्यू, बीच रोड; सी साई इन, पोडाखोरी स्क्वायर; सुभद्रा होटल, ग्राट रोड, फोन: 2383; सोनाली होटल, सी बीच, फोन: 2567; विक्टोरिया क्लब, बीच रोड, फोन: 2701/2; सागारिका होटल, बीच रोड; बे व्यू होटल, चक्रतीर्थ.

समुद्रतट: पुरी का समुद्रतट विश्व के बहुत अच्छे और रमणीय समुद्र तटों में से एक माना जाता है. यहां पर सूर्योदय और सूर्यास्त के समय सूर्य की किरणों का स्पर्श सुख अर्जित कर के आह्लादित होती लहरों को देखने का अपना अलग ही आनंद है. गरमी के दिनों में यहां स्नान करना और जाड़े के दिनों में धूप सेवन करना भी काफी सुखद लगता है.

पचतीर्थ: पुरी में पांच तालाब हैं—मार्कंडेय, चंदन, पार्वती, श्वेतगंगा और इंद्रद्युम्न. इन पांच तालाबों को 'पंचतीर्थ' कहा जाता है. यहां का तथा इन के आसपास का दृश्य अतीव मनोरम लगता है.

क्या खरीदें?

आप यहां पर कुछ प्रसिद्ध और अच्छी चीजें जैसे—सीपियों के खिलौने, किस्मकिस्म के शंख, सोप स्टोन से बनाई गई मूर्तियां, कलात्मक टोकरियां आदि खरीद सकते हैं.

कोणार्क

यदि हम 'आइने अकबरी' को प्रामाणिक समझें, तो यह माना जा सकता है कि सूर्यमंदिर का निर्माण 9वीं सदी में केसरी वंश के एक राजा ने करवाया था. कालांतर में गंगवंश के राजा नरेश सिंह 'देव' ने इसे नए रूप में बनवाया. उस का वही रूप आज विद्यमान दिखता है. तब 12 वर्षों में 12,000 कुशल कारीगरों के अथक परिश्रम से बने इस मंदिर में प्रयुक्त उत्तम पत्थर कहां से लाए गए होंगे, यह कहना भी किसी के लिए काफी कठिन होगा क्योंकि यहां के आसपास वाले बड़े क्षेत्र में कोई पहाड़ भी दिखाई नहीं पड़ता है. इस मंदिर को बनाने में कुल कितने रुपए लगे होंगे, इस का तो अनुमान लगाना भी कठिन होगा.

पहले चौकोर परकोटे से घिरे इस मंदिर का मुख्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वार पूरब की ओर था. अतः सूर्योदय होते ही सूर्य की पहली किरण इस मंदिर पर ही पड़ती थी.

काफी पुराना हो जाने के बावजूद अपना आकर्षण अक्षुण्ण रखने वाले इस मंदिर के गर्भगृह में पशुपक्षियों, देवों, किन्नरों, गंधर्वों, अप्सराओं आदि की विभिन्न मुद्राओं में ऐसी अनेक प्रतिमाएं हैं, जो शिल्पकला की दृष्टि से उच्च कोटि की मानी जाती हैं. इस मंदिर की जगती में बने 2.94 मीटर व्यास के 24 कलापूर्ण पहियों को वर्ष के 24 पखवारों का, इन पहियों में बनी 8-8 तीलियों को दिन के आठों प्रहरों का और इस जगती के अग्रभाग में बने सात घोड़ों को सप्ताह के सात दिवसों का प्रतीक माना जाता है. कुल मिला कर यह मंदिर अतीव आकर्षक और सुंदर दिखता है. इस के प्रत्येक भाग में अत्यंत दक्षता से परोसी गई कला को बारीकी से ध्यानपूर्वक देखने में पर्याप्त समय लग जाता है.

समुद्रतटः सूर्यमंदिर से तीन किलोमीटर की दूरी पर स्थित यह स्थान भी काफी मनोरम और रमणीय है. शहरी शोरगुल से दूर इस स्थान पर जब समुद्री लहरों का मोहक संगीत सुनने को मिलता है या फेनिल तरंगें देखने को मिलती हैं, तब कोई भी पर्यटक प्रफुल्लित हो उठता है. यहीं के रेतीले तट पर आप पिकनिक भी मना सकते हैं. हां, तब पास में पर्याप्त पेयजल अवश्य रहना चाहिए.

संग्रहालयः सूर्यमंदिर के पास ही में स्थित यह संग्रहालय भारतीय पुरातत्त्व विभाग द्वारा संचालित तथा संपोषित होता है. इस में संग्रहीत ऐतिहासिक तथा पुरातात्त्विक महत्त्व की अनेक वस्तुएं देखने लायक हैं.

क्या खरीदें?

कोणार्क में हाथ की बनी छतरी तथा दीवार सज्जा की वस्तुएं आप खरीद सकते हैं.

खजुराहो

मध्य प्रदेश के उत्तरमध्य क्षेत्र में स्थित टीलों से घिरा छोटा सा स्थान खजुराहो एक ऐसा प्रसिद्ध पर्यटन स्थल है, जहां आए बिना तो इस के प्रति आकर्षण रहता ही है, यहां आने पर वह आकर्षण और अधिक बढ़ जाता है. कभी काफी भव्य रहे इस बुंदेलयुगीन स्थान पर सन 950 से सन 1050 तक चंदेल राजाओं द्वारा बनवाए गए 85 मंदिरों में शेष बचे 22 मंदिरों को देखने पर आज भी लगता है कि लगभग 1,000 वर्ष पूर्व कुशल शिल्पियों द्वारा बनाई गई ये प्रतिमाएं अभी भी देशीविदेशी पर्यटकों के समक्ष भारतीय कला का यशोगान अपनी मौन भाषा में कर रही हैं.

उल्लेखनीय है कि इन मंदिरों की महत्ता को देखते हुए संयुक्त राष्ट्र संघ के शैक्षणिक, वैज्ञानिक तथा सांस्कृतिक संगठन 'यूनेस्को' ने हाल में इसे विश्व के प्रमुख स्मारकों में सम्मिलित कर लिया है. अब इस की देखरेख पर (यूनेस्को) प्रति वर्ष हजारों डालर खर्च करेगा.

इतिहासकारों के अनुसार 'खजुराहो' का प्राचीन नाम 'खर्जुरवाहक' था, मगर 11वीं शताब्दी में अलबरूनी ने इस का नाम 'कजुराहा' तथा 14वीं शताब्दी में इब्नबतूला ने इस का नाम 'काजुर' और फिर 'कर्जरा' रख दिया. वैसे, इस स्थान का मूल नाम 'खजुराहा' था, मगर बुंदेली बोली के प्रभाव से यह थोड़ा बदल कर 'खजुराहो' हो गया.

कब जाएं?

आप पर्यटन के उद्देश्य से खजुराहो वर्षा वाले महीनों को छोड़ कर वर्ष के किसी भी माह में पहुंच सकते हैं.

खजुराहो

कहां ठहरें?

होटल पायल, होटल चंदेला, फोन : 54, 94/95; होटल खजुराहो अशोक, फोन: 24; बाटिका होटल, जास ओबेराय, फोन : 66, 85, 86; होटल सनसेट व्यू, फोन: 77; टूरिस्ट बंगला, फोन : 64; टूरिस्ट विलेज, न्यू भारत लाज, फोन : 82; जैन लाज, फोन : 52.

कैसे जाएं?

चूंकि खजुराहो में कोई रेलवे स्टेशन है ही नहीं, इसलिए यहां तक कोई रेलगाड़ी नहीं जाती है. बंबई, कलकत्ता और बनारस की ओर से जाने वाले पर्यटकों के लिए सतना, जो बंबईइलाहाबाद मुख्य रेलमार्ग पर पड़ता है, यहां का निकटतम रेलवे स्टेशन है. यहां से बस या टैक्सी द्वारा आप खजुराहो पहुंच सकते हैं. वैसे, खजुराहो पहुंचने के तीन सड़क मार्ग हैं. पहला—झांसी हो कर, दूसरा-रीवां हो कर और तीसरा—सागर हो कर. सतना से खजुराहो तक की 120 किलोमीटर की यात्रा बस या टैक्सी से लगभग चार घंटे में आप तय कर सकते हैं. झांसी से खजुराहो के लिए प्रतिदिन छः बसें अपने निर्धारित समय पर चलती हैं. भोपाल से खजुराहो तक की रात्रिकालीन बस सेवा का लाभ उठा कर 11 घंटे में भोपाल से खजुराहो पहुंचा जा सकता है. जबलपुर और इंदौर से भी बसों द्वारा क्रमशः 10 घंटे और 16 घंटे में आप खजुराहो पहुंच सकते हैं.

वैसे, यह बात जान लेने योग्य है कि विभिन्न मार्गों से खजुराहो तक की बस यात्रा बहुत आरामदायक नहीं है. इसलिए अपनी यात्रा प्रारंभ करने से पूर्व यदि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आप अपनी मनःस्थिति इस के अनुरूप बना लेंगे, तो आप का मजा किरकिरा नहीं होगा.

विमान से यात्रा करने में सक्षम पर्यटकों के लिए एक महत्त्वपूर्ण बात. खजुराहो संभवतः संपूर्ण एशिया महाद्वीप का (क्षेत्र और आबादी के हिसाब से) एकमात्र ऐसा छोटा पर्यटन स्थल है, जहां पर बोइंग 737 की सेवा उपलब्ध है. दिल्ली और बनारस से भी यहां के लिए एअर इंडिया और वायुदूत की सेवाएं हैं. यानी आप विमान से यहां उतरें और बस से ज्यादा दूरी तय किए बिना दर्शनीय स्थलों पर चले जाएं.

क्या देखें?

खजुराहो का महत्त्व मुख्य रूप से प्राचीन कलापूर्ण मंदिरों के ही कारण है. यहां ऐसे अनेक मंदिर हैं. इन में प्रत्येक में अनगिनत प्रतिमाएं हैं और प्रत्येक प्रतिमा में कला की बारीकी झलकती है. इन सभी को बारीबारी से ध्यानपूर्वक देखने के लिए पर्याप्त समय चाहिए. इन मंदिरों को देखने के लिए प्रस्थान करने के पूर्व आप यह जान लें कि पर्यटन की दृष्टि से इन मंदिरों को तीन श्रेणियों में विभक्त किया गया है. वे हैं—पश्चिमी मंदिर समूह, पूर्वी मंदिर समूह और दक्षिणी मंदिर समूह.

पश्चिमी मंदिर समूहः संग्रहालय के पास ही में स्थित यह मंदिर समूह अन्य दोनों मंदिर समूहों से बड़ा है. यहां घूमने के लिए खरीदे गए टिकट पर ही आप संग्रहालय में भी प्रवेश कर सकते हैं.

इस मंदिर समूह के अंतर्गत कुल आठ मंदिर हैं. वे हैं—चौंसठ योगिनी मंदिर, कंदारिया मंदिर, लक्ष्मण मंदिर, मातंगेश्वर मंदिर, जगदंबा मंदिर, चित्रगुप्त मंदिर, विश्वनाथ मंदिर तथा पार्वती मंदिर. बलुआ पत्थरों तथा ग्रेनाइट से निर्मित इन मंदिरों की कलात्मकता की दृष्टि से अद्भुत प्रतिमाओं में मानवसुलभ भावों तथा भंगिमाओं का बहुत ही सुंदर तथा स्पष्ट प्रतिबिंबन होता है.

पूर्वी मंदिर समूहः पश्चिमी मंदिर समूह से लगभग 3 किलोमीटर दूर यह मंदिर समूह जैन मंदिरों के कारण विशेष रूप से प्रसिद्ध है. इस समूह के मंदिरों में आदिनाथ मंदिर, पारसनाथ मंदिर तथा शांतिनाथ मंदिर का विशेष महत्त्व है. यहां के अन्य मंदिरों में घंटाई मंदिर का विशेष महत्त्व है. घंटाई मंदिर तथा पारसनाथ मंदिर की दीवारों पर बनाई गई प्रतिमाएं कलात्मकता की दृष्टि से काफी उच्च कोटि की मानी जाती हैं.

दक्षिणी मंदिर समूहः खजुराहो गांव से लगभग 5 किलोमीटर दूर इस मंदिर समूह में मुख्यतः दो मंदिर हैं— नदी तट पर स्थित दूल्हादेव मंदिर तथा हवाई अड्डा के समीपस्थ चतुर्भुजनाथ मंदिर. दूल्हादेव मंदिर की दीवारों पर क्रीड़ारत स्त्रियों की प्रतिमाएं तथा चतुर्भुजनाथ मंदिर के अंदर विष्णु की विशाल प्रतिमा बनाई गई है.

उपर्युक्त समस्त मंदिरों की दीवारों पर बनाई गई क्रीड़ारत स्त्रियों तथा पुरुषों की प्रतिमा मूलतः कलाकारों के सौंदर्य बोध की परिचायक देख कर बच्चे (अगर आप के साथ हैं, तो) तरहतरह के सवाल पूछ सकते हैं. अतः श्रेयस्कर होगा कि आप अपने साथ बच्चों को यहां ले ही और यदि लाएं भी, तो पहले ही उनके संभावित के वैसे उत्तर अपने मन में तैयार रखें, जो टालमटोल वाला हो, मगर उन के लिए संतोषजनक हो.

खजुराहो में मंदिरों के अतिरिक्त कुछ दर्शनीय स्थल भी हैं.

स्नेह जल प्रपातः यह खजुराहो से किलोमीटर दूर है. इस की एक विशेषता यह है ऊंचाई से गिरने वाली इस की जलधारा ने यहां बहुरंगी पत्थरों को बहुत ही सुंदर रूप में काटा है यह कटाव संपूर्ण एशिया में अकेला है. यह पिकनिक मनाने के लिए बहुत ही अच्छा है.

पन्ना राष्ट्रीय उद्यानः खजुराहो के पास ही स्थित इस सुंदर उद्यान में भिन्नभिन्न प्रकार के जानवर देखे जा सकते हैं. इन में से कुछ जानवर प्रजातियों के भी हैं.

संग्रहालयः यहां अनेक ऐतिहासिक चीजें अतिरिक्त हाल के वर्षों की कुछ महत्त्वपूर्ण चीजें यहां संग्रहीत हैं. इसे देखने पर अतिरिक्त संतुष्टि मिलती है.

क्या खरीदें?

खजुराहो में आप मोम की बनी मूर्तियां खरीद सकते हैं.

पचमढ़ी

सतपुड़ा की सर्वोच्च पहाड़ी पर बसा पचमढ़ी सुहावने मौसम, हरीभरी प्रकृति एवं झरते झरनों के कारण देशीविदेशी पर्यटकों नवविवाहितों के आकर्षण का विशिष्ट केंद्र है. के अनुसार पचमढ़ी का प्राकृतिक सौंदर्य मामूली नहीं संभवतः यही कारण है कि यहां हर समय प्रकृति पर्यटकों का मेला सा लगा रहता है.

पचमढ़ी का नामकरण वहां स्थित पांडवों की गुफाओं पर आधारित है. कहा जाता है कि अज्ञातवास के दौरान पांचों पांडव पचमढ़ी आए थे और कुछ इन गुफाओं में रहे थे.

कब जाएं?

पचमढ़ी किसी भी मौसम में जाया जा सकता यहां हर मौसम की अपनी निराली ही छटा रहती जैसे, पावस में घुमड़ते बादलों की अठखेलियां तरहतरह के मनोहारी पक्षी, वसंत में वासंती हवा ग्रीष्म की तेज धूप के बीच ठंडी हवाओं के झोंके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पचमढ़ी

कहां ठहरें?

होली डे होम, बस स्टैंड के पास, फोन: 99; अमरक बंगला, धूपगढ़ रोड, फोन: 75; अमलतास बंगला, तहसील के पास, फोन: 98; पंचवटी हट, तहसील के पास; पंचवटी होली डे होम, तहसील के पास; सतपुड़ा फारेस्ट लाज, महादेव रोड, फोन: 97; सतुपड़ा रीट्रीट, महादेव रोड, फोन: 97.

को शांत करती हुई जल की बूंदें, यानी हर ऋतु अपने निजी व्यक्तित्व में उभरती चली आती है.

कैसे जाएं?

पचमढ़ी जाने के लिए मध्य रेलवे के बंबई हावड़ा (वाया इटारसी) मार्ग में पिपरिया नामक रेलवे स्टेशन पर उतर कर बस द्वारा 52 किलोमीटर का रास्ता तय करना होता है.

राज्य परिवहन की यात्री बसें प्रतिदिन पचमढ़ी के लिए नागपुर से प्रातः 10.00 बजे, इंदौर से रात्रि में 9 बजे चलती हैं. इस के अतिरिक्त भोपाल, होशंगाबाद, पिपरिया आदि स्थानों से भी अनेक बसें पचमढ़ी के लिए मिलती हैं. प्राइवेट टैक्सियां भी पिपरिया रेलवे स्टेशन पर पचमढ़ी के लिए उपलब्ध रहती हैं.

वायु मार्ग द्वारा पचमढ़ी पहुंचने के लिए भोपाल हवाई अड्डे पर उतरना होता है, जहां से पचमढ़ी तक 210 किलोमीटर लंबे सड़क मार्ग से जाना होता है. वैसे दूसरा हवाई अड्डा नागपुर भी है जो कि पचमढ़ी से सड़क के रास्ते 262 किलोमीटर दूर है.

क्या देखें?

पचमढ़ी में नदी, झरने, प्रपात, गुफाएं, भित्ति चित्र, विभिन्न जंगली जानवर आदि देखने को बहुत कुछ है. करीब 100 से अधिक दर्शनीय स्थल हैं जो पर्यटकों का मन मोह लेते हैं, जैसे महादेव, चौड़ागढ़, जमुना प्रपात, अप्सरा विहार, जलावतरण, जटाशंकर, धूपगढ़, वनश्री विहार, संगम, राजेंद्र गिरि, शासकीय उद्यान, युवक मनोरंजन केंद्र, तरण ताल, टायनम पूल आदि.

टायनम पूल : टायनम पूल में गरमियों में शाम के समय नवविवाहित जोड़ों, रमणियों एवं प्रकृति प्रेमियों को किलोल करते हुए देखा जा सकता है.

शासकीय उद्यान : शासकीय उद्यान में शाम को नएनए जोड़े, प्रेमीप्रेमिकाएं, रमणियां सैर करती हैं. इस उद्यान में फूलों से लदी डालियों के नीचे एवं वृक्षों की सघन छाया में सैलानियों को अनुपम सुख की अनुभूति होती है.

नागराज वसु : कहते हैं, नागराज वसु यहां से करीब 20 किलोमीटर दूर नागद्वारी नामक स्थान पर रहते थे. करीब 10 किलोमीटर के घेरे में यह नागद्वारी स्थित है, जहां आज भी नागपंचमी के अवसर पर मेला लगता है. नागद्वारी में 10 से 15 मीटर लंबे काले नाग (कोबरा) आज भी देखने को मिलते हैं. इन से बच कर रहना ही श्रेयस्कर है.

जल प्रपात : पचमढ़ी के प्रपातों और झरनों का तो कहना ही क्या है. इन की मनोरमता देखते ही बनती है. वर्षा ऋतु में तो इन प्रपातों की रमणीयता कई गुना बढ़ जाती है.

राष्ट्रीय उद्यान: सतपुड़ा, राष्ट्रीय उद्यान में शेर, तेंदुआ, बाईसन, हिरन, रीछ, सांभर आदि वन्य प्राणियों को स्वच्छंद विचरण करते हुए देखा जा सकता है. राष्ट्रीय उद्यान का आनंद लेने के लिए पर्यटकों को उद्यान के संचालक से संपर्क करना चाहिए.

हनीमून हट्स: क्षेत्र विकास प्राधिकरण ने नवविवाहित जोड़ों के लिए सुंदर केलि कुटियों का निर्माण किया है जो समस्त सुविधाओं से युक्त हैं. इन्हें किराए पर लेने के लिए क्षेत्र विकास प्राधिकरण से संपर्क किया जा सकता है.

पर्यटकों को घुमाने के लिए बहुत ही सस्ती दरों पर टैक्सियां, सस्ते दामों में शाकाहारी एवं मांसाहारी भोजन हेतु क्षेत्र विकास प्राधिकरण द्वारा संचालित रसोई का आनंद लिया जा सकता है. पर्यटकों की सुविधा के लिए राज्य पर्यटन निगम सम्मिलित यात्राएं भी संचालित करता है. इस संबंध में राज्य पर्यटन निगम, चौथी मंजिल, गंगोत्तरी भवन, भोपाल, फोन नं. 66091, 63552 से संपर्क स्थापित किया जा सकता है.

—भगवान किशोर साहू

माउंट आबू

पर्यटन की दृष्टि से राजस्थान अपना विशिष्ट स्थान रखता है. यहां विभिन्न रुचियों के पर्यटकों को अपनी रुचि के पर्यटन स्थलों का आनंद मिल सकता है. जहां एक ओर थार का रेगिस्तान पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करता है वहीं दूसरी ओर राजस्थान के विभिन्न नगरों में स्थित किले, महल, हवेलियां, मंदिर तथा मसजिद अपनी बेजोड़ स्थापत्य कला को प्रस्तुत करते हैं. राजस्थान में पर्यटकों के आकर्षण के लिए नहरें तथा बांध हैं तो पर्वतीय स्थल भी हैं.

माउंट आबू राजस्थान का एक महत्वपूर्ण पर्वतीय पर्यटन स्थल है. यहां पहाड़ी प्राकृतिक सौंदर्य के साथ स्थापत्य कला के बेजोड़ प्रतीक भी विद्यमान हैं. समुद्री तल से लगभग 1,219 मीटर ऊंचाई पर स्थित यह पर्यटन स्थल अरावली पर्वत सर्वाधिक ऊंचाई वाला क्षेत्र है. यहां से 15 कि.मी. दूरी पर गुरु शिखर है, जो समुद्री तल से 1,772 मीटर ऊंचाई पर स्थित है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

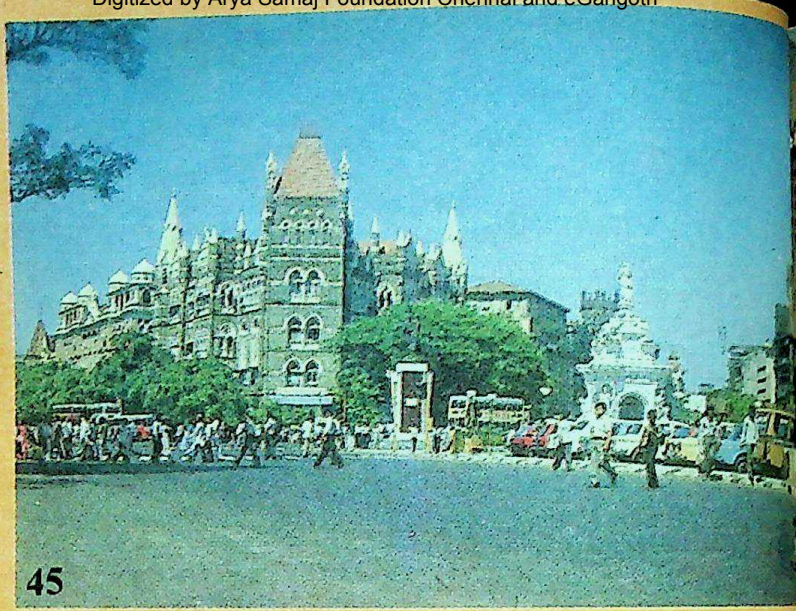

45

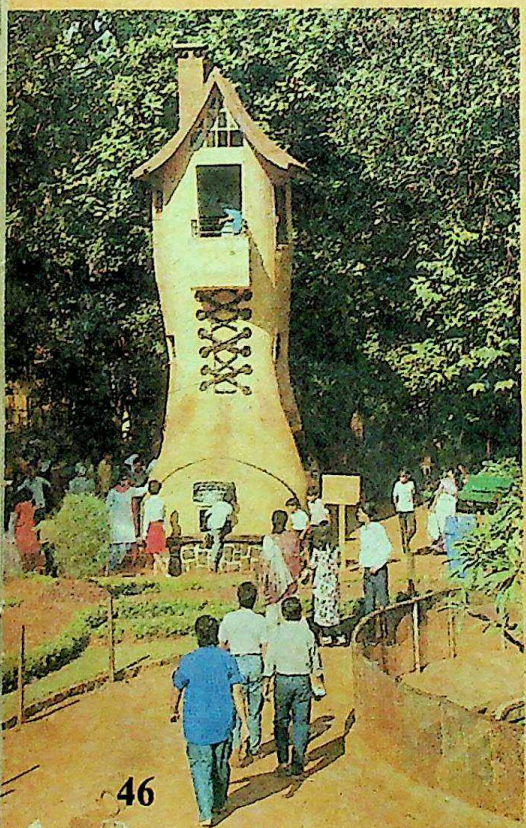

46

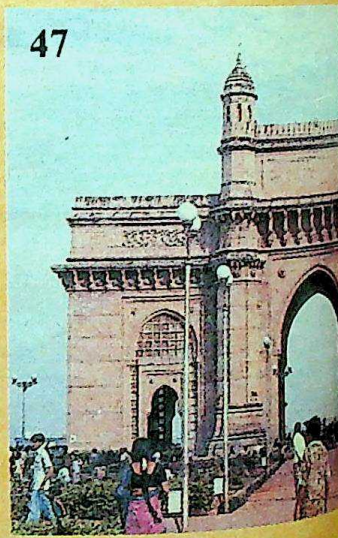

47

45. बंबई का फ्लोरा फाउंटेन काफी सुंदर है
46. बंबई के कमला नेहरू पार्क में बना बुढ़िया का बूट बच्चों के लिए विशेष आकर्षण का केंद्र है.
47. गेटवे आफ इंडिया में शाम के समय काफी चहलपहल रहती है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

48. आधुनिक वास्तुकला का सुंदर नमूना बंबई का विधान सभा भवन.

49. बंबई का एक भीड़भाड़ वाला व्यस्त बाजार.

49

50. बंबई की भीड़भाड़ से दूर शांत पर्यटन स्थल एलीफैंटा गुफाओं के कारण प्रसिद्ध है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कब जाएं?

25 वर्ग कि.मी. क्षेत्र में फैले माउंट आबू क्षेत्र में जुलाई से सितंबर के बीच वर्षा का मौसम रहता है. यहां वर्षा का औसत 177 सें.मी. है. यहां गर्मियों में अधिकतम 33.3 डिगरी सेल्सियस तथा न्यूनतम 28.3 डिगरी सेल्सियस तापक्रम रहता है. सर्दियों में यह क्रमशः 23.3 डिगरी सेल्सियस तथा 11.6 डिगरी सेल्सियस रहता है. इस पर्वतीय पर्यटन स्थल में पर्यटन के लिए सब से उपयुक्त समय मार्च से जून तथा सितंबर से दिसंबर तक रहता है.

कैसे जाएं?

राजस्थान का प्रमुख पर्वतीय पर्यटन स्थल होने के कारण आबू देश के अन्य प्रमुख नगरों तथा पर्यटन स्थलों से जुड़ा है. वायु मार्ग से यात्रा करने वाले पर्यटक उदयपुर हवाई अड्डे पर उतर कर कार, बस, टैक्सी अथवा रेल द्वारा आबू जा सकते हैं. आबू का निकटतम रेलवे स्टेशन आबू रोड रेलवे स्टेशन के नाम से जाना जाता है. रेलवे स्टेशन और आबू के मध्य 29 किलोमीटर की दूरी है, जिसे बस या टैक्सी द्वारा ही तय करना पड़ता है. उदयपुर, अहमदाबाद आदि नगरों से भी आबू के लिए नियमित बसें चलती हैं.

माउंट आबू

कहां ठहरें?

*हिल टोन, फोन : 137, 237; **पैलेस**, दिलवाड़ा रोड, फोन : 21, 23; **आबू इंटरनेशनल**, पोलो ग्राउंड, फोन : 177; **माउंट होटल**, दिलवाड़ा रोड, फोन : 55; **सम्राट इंटरनेशनल**, बस अड्डे के निकट, फोन: 73, 53; **सूर्य दर्शन**, टैक्सी स्टैंड के निकट, फोन : 65; **चाणक्य**, टैक्सी स्टैंड के निकट; **सवेरा प्लेस**, सनसैट रोड.*

क्या देखें?

दिलवाड़ा के मंदिर: माउंट आबू में पर्यटकों के सर्वाधिक आकर्षण का केंद्र दिलवाड़ा जैन मंदिर है. आबू से लगभग 5 कि.मी. दूरी पर दिलवाड़ा गांव में स्थित इस मंदिर में श्वेत संगमरमर पर सूक्ष्म कलात्मक खुदाई कर के विभिन्न आकृतियां बनाई गई हैं. यह मंदिर 48 कलात्मक स्तंभों से युक्त है. मंदिर के बाह्य प्रांगण में 52 देवालयों के विभिन्न जैन तीर्थंकरों की मूर्तियां हैं.

अचलगढ़: आबू के पास ही अचलगढ़ में चार जैन मंदिर स्थित हैं. इन मंदिरों में चौमुखाजी का मंदिर विशेष ख्याति प्राप्त है. यह मंदिर सोलहवीं शताब्दी में बनाया गया था. इस मंदिर में सर्वधातु की चौवह मूर्तियां स्थापित हैं. आबू से उत्तर की ओर अर्बुत देवी का मंदिर है. इस में दुर्गा की मूर्ति प्रतिस्थापित है. मंदिर विशाल शिला के नीचे स्थित है.

नक्की झील: आबू में ही चारों ओर पहाड़ों से घिरे क्षेत्र के बीच नक्की झील है. पहाड़ों से घिरी झील अपनी अनुपम छटा बिखेरती है. यहां पर नौकायन की सुविधा का लाभ उठा सकते हैं. इस के किनारे चौदहवीं शताब्दी में निर्मित रघुनाथजी मंदिर भी स्थित है. इस मंदिर की स्थापना रामानंद द्वारा की गई. इस मंदिर के पास ही दुलेश्वर महादेव मंदिर भी स्थित है.

टाड राक: नक्की झील के दक्षिण में मेंढक आकार की एक विशाल चट्टान है जो 'टाड राक' के रूप में विख्यात है. राजपुताना टेनिस कोर्ट के पास घूंघट निकाले स्त्री की आकृति लिए 'नन राक' स्थित है. इस के अतिरिक्त नंदी राक, बुलडाग राक व कैमल राक भी अपना आकर्षण लिए हुए हैं.

गोमुख: आबू से ही 9 कि.मी. दूरी पर प्राचीन गोमुख मंदिर स्थित है. यहां पत्थर से निर्मित गाय के मुख से निरंतर जलधारा बहती रहती है. बताया जाता है कि राजपूतों के वंशजों की उत्पत्ति यहीं हुई थी. इस के पास ही शिव के वाहन नंदी की संगमरमर की प्रतिमा है.

सनसेट पाइंट: आबू का सूर्यास्त बिंदु पर्यटकों के विशेष आकर्षण का केंद्र है. कस्बे के पश्चिमी क्षेत्र में विश्राम भवन जाने वाली सड़क द्वारा सनसेट पाइंट पर पहुंचा जा सकता है. यहां से सूर्यास्त दृश्य अत्यंत अनुपम छटा बिखेरता है. यहां पर सूर्य एक विशाल लाल पीले गोले के रूप में नीचे उतरता है. यहां पर सीमेंट तथा पत्थर के चबूतरे बनाए गए हैं, जिन पर बैठ कर पर्यटक सूर्यास्त के मनोरम दृश्य को देख कर अपनी स्मृतियों में संजो कर रख सकते हैं. माउंट आबू में इन सभी प्राकृतिक तथा कलात्मक पर्यटन स्थलों का आनंद लेते हुए गर्मियां बिताई जा सकती हैं.

क्या खरीदें?

यहां गोल्फ, तैराकी तथा नौका चलाना तैराकी की सुविधाएं उपलब्ध हैं. विभिन्न धर्मावलंबियों के लिए कई पूजा उपासना स्थल भी यहां विद्यमान हैं. यहां हस्त शिल्प की कलात्मक वस्तुएं जैसे खिलौने, सफेद पत्थर की विभिन्न आकृतियां, लकड़ी, पीतल तथा सफेद धातु की विभिन्न मूर्तियां आदि खरीदी जा सकती हैं.

—डा. अजय [illegible]

अजंताएलोरा

सुप्रसिद्ध कला मर्मज्ञ लिथैबी का यह कथन 'स्थापत्य सभ्यता का सांचा है,' भारत के प्रमुख पर्यटन स्थल अजंताएलोरा में स्पष्टतया चरितार्थ है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अजंता एलोरा

कहां ठहरें?

गेस्ट हाउस, फरदपुर; फारेस्ट रेस्ट हाउस, अशोक ट्रैवलर्स लाज, फोन : 26; कैलाश होटल, ऐलोरा; जिला परिषद निरीक्षण भवन, ऐलोरा.

है. यहां के मंदिरों की अद्भुत स्थापत्य कला ही तो प्रति वर्ष देशविदेश के असंख्य पर्यटकों को इस स्थान तक आने के लिए आकर्षितप्रेरित करती है. वे आकर्षित हों भी क्यों नहीं? डेढ़ हजार वर्ष व्यतीत हो जाने के बावजूद, आज भी अपने रंगों को पूर्ववत अक्षुण रखने वाली यहां की गुफाएं और मूर्तियां युगों से भारतीय शिल्पकला के एक अनूठे अध्याय की शाश्वत गाथा लोगों को सुना रही हैं.

कब जाएं?

वैसे, आप अजंताएलोरा में कभी भी जा सकते हैं मगर पर्यटन की दृष्टि से श्रेयस्कर यही होगा कि आप अक्तूबर के प्रथम सप्ताह से अप्रैल के अंतिम सप्ताह के बीच में ही यहां आएं.

कैसे जाएं?

महाराष्ट्र राज्य में स्थित 'अजंता' स्थान पर कोई रेलवे स्टेशन नहीं है. यहां का निकटतम रेलवे स्टेशन जलगांव है. यहां से अजंता की दूरी 58 किलोमीटर है. अजंता का निकटतम हवाई अड्डा यहां से 110 किलोमीटर दूर औरंगाबाद शहर में है. वहां से यहां तक की दूरी आप बस, टैक्सी आदि में से किसी से तय कर सकते हैं.

क्या देखें?

अजंता में 30 गुफाएं हैं. पहाड़ों को अंदर ही अंदर काट कर बनाई गई इन गुफाओं को दिशा के आधार पर दो भागों में विभक्त किया गया है. ये हैं—दक्षिणमुखी और पूर्वमुखी. गुफा संख्या 1 से 18 तक दक्षिणमुखी और गुफा संख्या 19 से 30 तक पूर्वमुखी हैं. शिल्प की दृष्टि से इन 30 गुफाओं को दो श्रेणियों में विभक्त किया गया है—चैत्य मंदिर और चैत्य विहार. इन में से पांच—गुफा संख्या 8,9,10,12 और 13 चैत्य मंदिर अर्थात बौद्ध धर्म की हीनयान शाखा से और शेष सभी 25 गुफाएं महायान शाखा से संबंधित हैं.

गुफा संख्या चार यहां की सब से बड़ी गुफा है. इस में 28 स्तंभ हैं. उल्लेखनीय है कि यदि गुफा संख्या 24 अपूर्ण नहीं होती, तो अजंता की सब से बड़ी गुफा होती.

कहा जाता है कि इन गुफाओं के भित्तिचित्रों को बनाते समय पहले खुरदरे पत्थर पर धवलित भूमि तैयार की गई थी. फिर गेरू की वर्तिका से आकार रेखा खींची गई थी. तत्पश्चात उन में यथोचित रंग भरे गए. इन गुफाओं की छतों में कमल इत्यादि के बहुत ही सुंदर चित्र बनाए गए हैं.

पर्यटकों के लिए पूर्वाह्न नौ बजे से अपराह्न पांच बजे तक खोली जाने वाली इन गुफाओं में प्रवेश करने के लिए आप को कुछ रुपए शुल्क के रूप में चुकाने पड़ेंगे. वैसे, शुक्रवार को आप इन में निस्शुल्क प्रवेश कर सकते हैं. इन गुफाओं में प्रायः प्रकाश का अभाव रहता है. यहां निर्धारित शुल्क दे कर आप प्रकाश की व्यवस्था करवा सकते हैं.

एलोरा

औरंगाबाद से एलोरा तक की 30 किलोमीटर की दूरी आप बस अथवा टैक्सी से तय कर सकते हैं और घूमफिर कर उसी दिन औरंगाबाद वापस लौट सकते हैं.

विशाल शिलाखंडों को काटछांट कर बनाए गए अद्भुत मंदिरों के कारण प्रसिद्ध इस स्थान पर हिंदू, बौद्ध तथा जैन धर्मों के कई (17 हिंदू धर्म के, 12 बौद्ध धर्म के तथा 7 जैन धर्म के) मंदिर हैं. एक हजार वर्षों से भी अधिक प्राचीन इन मंदिरों का कलात्मक सौंदर्य आज भी देखते ही बनता है. यहां के स्तंभों पर की गई उच्च कोटि की नक्काशी को देखने का अपना एक अलग सुख है. यहां की अनेक मूर्तियों तथा भित्तिचित्रों का महत्त्व तो जगत प्रसिद्ध है ही.

यहां के मंदिरों में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है कैलाश मंदिर. एक विशाल शिलाखंड को काट और तराश कर बनाया गया यह मंदिर 81 मीटर लंबा और 47 मीटर चौड़ा है. अत्यंत संतुलित और परिष्कृत शिल्प वाले इस मंदिर के निकट ही एक नदी है, जिस की धारा को मंदिर निर्माण के समय तत्कालीन वास्तुविदों ने इस तरह मोड़ दिया था कि उस का जल बूंदबूंद कर के इस मंदिर में स्थापित शिवलिंग पर गिरने लगा था. लगभग 1,200 वर्ष व्यतीत हो जाने के बावजूद यह आश्चर्यजनक स्थिति आज भी अक्षुण है. चूंकि इस मंदिर के आसपास का स्थान हरीभरी पत्तियों और घासों से ढका हुआ है, अतः यहां का दृश्य और अधिक मनमोहक लगता है.

बंबई

बंबई भारतवासियों के लिए स्वप्न प्रदेश है. यहां का तीव्र प्रगति से भागता जीवन, फिल्मों की चमकदमक और सौम्य सुखद मौसम पर्यटकों को सदैव आमंत्रित करता रहता है. यहां न तो झुलसा देने वाली लू है और न ही दांत बजाने वाली सर्दी.

महाराष्ट्र की राजधानी बंबई सात द्वीपों से मिल कर बनी है. इस का क्षेत्रफल लगभग 603 किलोमीटर है. भारत के हर धर्म और हर कोने के लोग यहां बड़ी सद्भावनापूर्वक रहते हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कैसे जाएं.?

भारत के हर भाग से आने वाली गाड़ी का अंतिम पड़ाव बंबई है. गाड़ियां दादर, वी.टी. या बंबई सेंट्रल पर रुकती हैं. वी.टी. मध्य रेलवे का स्टेशन है और बंबई सेंट्रल पश्चिम रेलवे का.

कब जाएं?

बरसात के चार महीने जून, जुलाई, अगस्त, सितंबर छोड़ कर किसी भी समय जाया जा सकता है. फिर भी बंबई घूमने का सब से अच्छा समय अक्तूबर से मार्च का है. इन दिनों मौसम सुहावना रहता है. दिसंबर, जनवरी में जाने पर भारी गरम कपड़े ले जाने की आवश्यकता नहीं.

क्या देखें?

देखने का सिलसिला वी.टी. स्टेशन पर उतरते ही शुरू हो जाता है. वी.टी. विक्टोरिया टर्मिनस भारत का सब से बड़ा रेलवे स्टेशन है. इस के दो भाग हैं. एक ओर देश के हर भाग के लिए गाड़ियां छूटती हैं और दूसरी ओर बंबई के उपनगरीय स्टेशनों के लिए लोकल गाड़ियां छूटती हैं.

बंबई का प्रमुख आकर्षण यहां के सागर तट हैं. दूर तक फैले सागर तट चांदी सी चमकती रेत से समृद्ध हैं. यहां लोग न केवल सांध्य भ्रमण के लिए आते हैं बल्कि सूर्य स्नान भी करते हैं.

बच्चों में सागर की उछलती, तटों से टकराती लहरों के प्रति आकर्षण अधिक होता है. यदि इन का आनंद लेना चाहें तो स्थानीय समाचारपत्र में ज्वार आने का समय देख कर किसी बीच या चौपाटी पर जाएं.

बंबई में प्रमुख सागर तट हैं गिरगांव चौपाटी, दादर चौपाटी, जुहू बीच, बरसोवा बीच, गोराई बीच, मार्वे बीच एवं मनारी बीच.

अन्य दर्शनीय स्थल

गेट वे आफ इंडिया: वी.टी. स्टेशन से बस या टैक्सी द्वारा गेट वे आफ इंडिया पहुंचा जा सकता है. इंगलैंड के राजा जार्ज पंचम और रानी मेरी की स्मृति में बना यह भारत का भव्य द्वार भारतीय शिल्प का उत्कृष्ट उदाहरण है. द्वार के सामने छत्रपति शिवाजी और स्वामी विवेकानंद की प्रतिमाएं हैं. यहां से स्टीमर से समुद्र की सैर भी की जा सकती है. गेट वे आफ इंडिया के सामने ताजमहल होटल की शानदार इमारत है.

प्रिंस आफ वेल्स म्यूजियम: गेट वे के पास ही प्रिंस आफ वेल्स म्यूजियम है. यह इमारत 16वीं शताब्दी की कलाकृति का सुंदर नमूना है. छोटेछोटे कई विभागों के अतिरिक्त इस के तीन प्रमुख विभाग हैं–कला, शिल्पकला एवं प्राकृतिक इतिहास. यह सोमवार को बंद रहता है. अन्य दिनों में सुबह 10 बजे से शाम 5 बजे तक खुला रहता है.

म्यूजियम से लगभग जुड़ी जहांगीर आर्ट गैलरी है. यहां समयसमय पर विविध कलात्मक प्रदर्शनियां आयोजित की जाती रहती हैं.

राजा बाई टावर: म्यूजियम से चंद कदमों की दूरी पर राजा बाई टावर है. यह टावर बंबई विश्वविद्यालय के परिसर में बना है. टावर पर ऊपर जाने के लिए घूमती हुई सीढ़ियां हैं. ऊपर से बंबई शहर का सुंदर दृश्य मन मोह लेता है.

गेट वे आफ इंडिया, म्यूजियम और राजा बाई टावर जाने के लिए 1,3,4,9,10,43,65,101,102, 123,124 आदि नं. की बसें हैं.

फ्लोरा फाउंटेन या हुतात्मा चौक: हुतात्मा चौक को बंबई शहर का हृदय कहा जाए तो अतिशयोक्ति न होगी. चारों ओर से ऊंचीऊंची इमारतों से घिरे इस चौक के बीच में एक फव्वारा है. पहले इसे फ्लोरा फाउंटेन कहा जाता था. यह संयुक्त महाराष्ट्र आंदोलन के शहीदों की स्मृति में बनाया गया था. हुतात्मा मराठी

बंबई : प्रमुख बस सेवाएं

बंबई से महाबलेश्वर : *5.45, 21.00.* ***औरंगाबाद :*** *20.15.* ***पंचगनी :*** *6.15, 7.00.* ***शोलापुर :*** *10.00, 20.00.* ***मनमाड :*** *13.30, 15.30.* ***रत्नागिरि :*** *5.00, 11.00, 12.30, 21.00, 21.15, 22.00.* ***मंगलौर :*** *6.00, 7.00, 7.30, 11.00, 12.00, 15.00, 20.00, 21.00 (24 घंटे का सफर).* ***बंगलौर :*** *8.00, 10.30, 14.00, 19.00 (24 घंटे का सफर).* ***शिरसी :*** *14.00, 16.00 (17 घंटे).* ***बीजापुर:*** *9.00, 22.30 (सवा ग्यारह घंटे).* ***हुब्ली:*** *16.30, 11.30 (14 घंटे).* ***बेलगाम :*** *5.30, 8.30, 15.30. (लग्जरी बसें). 19.15, 18.30, 21.30 (साढ़े तेरह घंटे).* ***हैदराबाद :*** *12.30, 13.00, 15.00, 16.00, 17.00, 21.00 (17 घंटे).* ***इंदौर :*** *5.00, 17.00 (16 घंटे). (लग्जरी बस) 20.00 (सवा चौदह घंटे).* ***उज्जैन :*** *16.00 (16 घंटे 45 मिनट).* ***सूरत :*** *7.00 (10 घंटे).* ***भावनगर:*** *16.50 (पौने सौलह घंटे).* ***अहमदाबाद :*** *18.00 (12 घंटे).* ***राजकोट :*** *16.45 (16 घंटे).*

नोट : 1. एस.टी. (स्टेट ट्रांसपोर्ट) की बसों का मुख्य केंद्र बंबई सेंट्रल रेलवे स्टेशन के सामने सड़क पार स्थित है.
2. पूना, महाबलेश्वर, पंचगनी, गोआ, नासिक आदि स्थानों के लिए एस.टी. के अतिरिक्त अन्य ट्रांसपोर्ट संस्थाओं की बसें भी मंत्रालय, दादर, कोलावा (म्यूजियम), बांद्रा (पश्चिम), शिव के चुने हुए स्थलों से आतीजाती हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

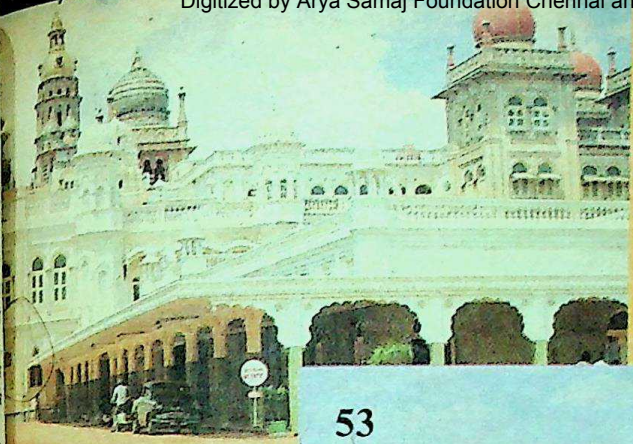

53. मखमली घास, रंग-बिरंगे फूलों तथा सतरंगे फव्वारों के कारण वृंदावन गार्डन लोकप्रिय है.

54. रात के समय वृंदावन गार्डन स्वप्नलोक सा दृश्य उपस्थित कर देता है.

53

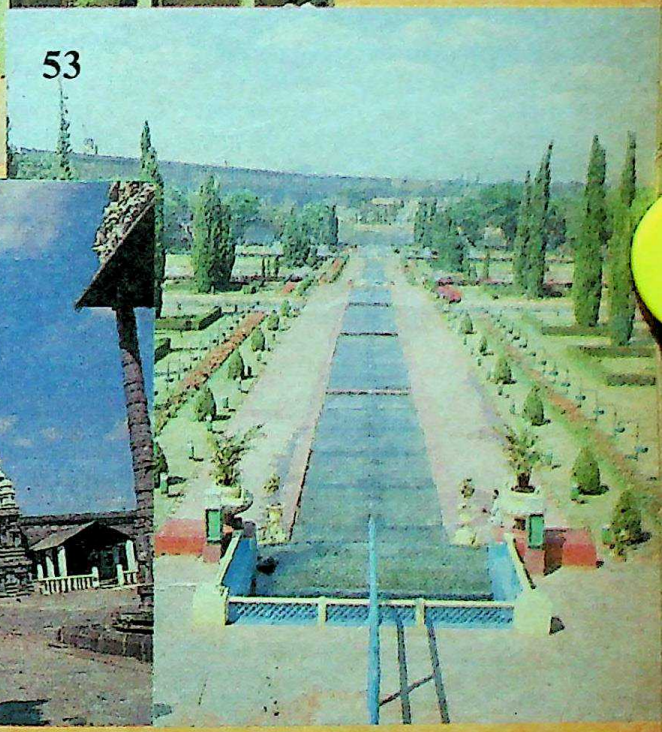

52

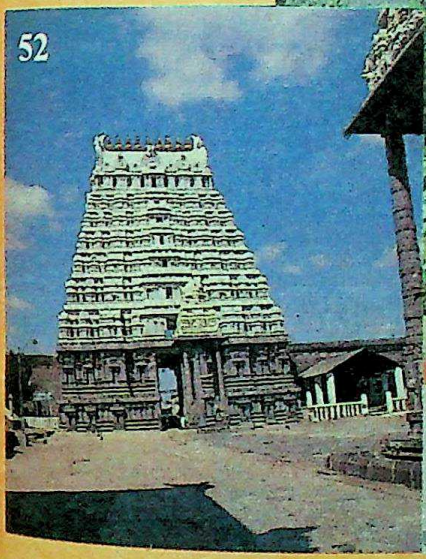

51. मैसूर का महाराजा पैलेस अपनी स्थापत्य कला तथा होयसाला शैली की नक्काशी के कारण प्रसिद्ध है.

52. मैसूर का चामुंडी मंदिर: दक्षिण भारतीय वास्तुकला का सुंदर नमूना.

54

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शब्द है जिस का अर्थ है शहीद. इसलिए इस का नाम हुतात्मा चौक पड़ा.

हुतात्मा चौक से वीर नरीमन सड़क चर्चगेट स्टेशन गई है. चर्चगेट पश्चिम रेलवे का अंतिम स्टेशन है. यहां से हर 3 मिनट पर उपनगरों के लिए गाड़ी छूटती हैं.

नरीमन प्वाइंट: चर्चगेट से बस या टैक्सी द्वारा नरीमन प्वाइंट जा सकते हैं. टैक्सी में भागीदारी की भी व्यवस्था है. नरीमन प्वाइंट समुद्र पाट कर तैयार की गई जमीन (रिक्लेमेशन ग्राउंड) है. यहां समुद्र का निराला रूप दिखता है. एक ओर अथाह समुद्र, दूसरी ओर 20 से 24 मंजिली इमारतें.

नरीमन प्वाइंट से बस, टैक्सी द्वारा या पैदल भी समुद्र के किनारे चलते हुए मैरीन ड्राइव पहुंचा जा सकता है. वैसे तो नरीमम प्वाइंट से चौपाटी तक समुद्र के किनारे की सड़क मैरीन ड्राइव कहलाती है, पर असली जगह मैरीन लाइंस स्टेशन के सामने फ्लाई ओवर ब्रिज के पास है. ज्वार के समय तट से टकराती लहरें मनमोहक होती हैं. नरीमन प्वाइंट से चौपाटी तक की जगह अर्धचंद्रकार है. रात में मालाबार हिल से इस की जगमगाती रोशनी हार के समान लगती है. इसलिए इसे क्वींस नेकलेस भी कहते हैं.

तारापोर वाला मछलीघर: यह मछलीघर मैरीन ड्राइव और चौपाटी के बीच चर्नीरोड स्टेशन के पास है. यहां विश्व भर की तरहतरह की मछलियां हैं. यहां समुद्री मछलियों के लिए पाइप लाइन द्वारा समुद्र का ताजा पानी लाया जाता है. यह सोमवार को बंद रहता है. अन्य दिनों सुबह 11 बजे से शाम 8 बजे तक खुला रहता है.

हैंगिंग गार्डन: यह बगीचा मालाबार पहाड़ी पर

बंबई

कहां ठहरें?

होटल ओबेराय टावर्स, नरीमन पाइंट, फोन : 2024343; प्रेसीडेंट, 90, कुफी पैराड, फोन : 4950808; कोलाबा; वि ताजमहल इंटरनेशनल, अपोलो बंदर, फोन: 2023366; एअरपोर्ट प्लाजा, 70-सी, नेहरू रोड, विले पार्ले (पूर्व), फोन : 6123390/91/92/93; दि एंबेसडर, वीर नरीमन रोड, चर्चगेट एक्सटेंशन; रिट्ज, 5, जमशेदजी टाटा रोड, फोन : 220141; अटलांटिक, 18 बी, जुहू तारा रोड, फोन : 6122440; बांबे इंटरनेशनल, 29, मरीन ड्राइव; हिल राय, 43, पोखनावाला रोड, फोन: 4930860; शालीमार, अगस्त क्रांति मार्ग, फोन : 8221311; हाली डे इन, बलराज साहनी मार्ग, फोन : 6204444; नटराज, नेताजी सुभाष रोड, फोन : 2044161; अपोलो, 22, लैंस डाउन रोड, कोलाबा, फोन : 2020223; सनवे, लिंकिंग रोड, फोन : 6201811; सम्राट, तृतीय रोड, खार रेलवे स्टेशन (प.) से आगे, फोन : 6496806/7/9; रिवेरा, जुहू रोड, फोन : 628122, 6299261.

बंबई से प्रमुख रेल सेवाएं

बंबई सेंट्रल नई दिल्ली : (राजधानी एक्स. 1,2,3,4,5,7) 17.00 (सवा सोलह घंटे), (फ्रंटियर मेल)21.00 (22 घंटे).
बंबई सेंट्रल-अमृतसर : (पश्चिम एक्स.) 11.30. (दादर अमृतसर एक्स.) 22.50.
बंबई सेंट्रल-जम्मू तवी : (बंबईजम्मू एक्स. 1,4,5,7,), 8.25
बंबई सेंट्रल-देहरादून : (देहरादून एक्स.) 22.15.
बंबई सेंट्रल-फीरोजपुर : (बंबई जनता एक्स.) 7.25.
बंबई सेंट्रल-इंदौर : (अवंतिका एक्स.) 8.00.
बंबई सेंट्रल-अहमदाबाद : (गुजरात एक्स.) 6.00.
बंबई वीटी-वाराणसी : (महानगरी एक्स.) 23.55, (दादर एक्स.) 6.40, (रत्नागिरि एक्स. 1,3,4,) 5.00
बंबई वीटी-फैजाबाद : (साकेत एक्स. 6) 5.00.
बंबई वीटी-लखनऊ : (पुष्पक एक्स.) 8.10.
बंबई वीटी-हावड़ा : (हावड़ा बंबई मेल.) 21.10.
दादर-गुवाहाटी : (दादर गुवाहाटी एक्स. 6.) 4.10.
दादर-मुजफ्फरपुर : (श्रमशक्ति एक्स. 7.) 4.10.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दक्षिण बंबई को जल आपूर्ति के लिए बनाई गई विशाल टंकी के ऊपर 3 फुट मिट्टी डाल कर बनाया गया है. इस में झाड़ियों को काट कर हाथी, जिराफ, मोर आदि पशु पक्षियों का रूप दिया गया है. अब इस का नाम फिरोज शाह मेहता गार्डन कर दिया गया है.

कमला नेहरू पार्क: हैंगिंग गार्डन के सामने ही कमला नेहरू पार्क है. इस के फूलपौधे और झरने दर्शनीय हैं. बच्चों के लिए विशेष आकर्षण बुढ़िया का बूट है. कमला नेहरू पार्क से चौपाटी से नरीमन प्वाइंट तक का विहंगम दृश्य दिखाई देता है.

चौपाटी, हैंगिंग गार्डन और कमला नेहरू पार्क तक जाने के लिए चर्नीरोड स्टेशन उतरें. स्टेशन के सामने कुछ कदमों की दूरी पर चौपाटी है. चौपाटी से 108 नं. की बस द्वारा हैंगिंग गार्डन जाया जा सकता है. 102,106,181 आदि बसों से भी यहां पहुचा जा सकता है.

महालक्ष्मी मंदिर: यह बंबई का प्रसिद्ध मंदिर है. इस में महालक्ष्मी, महाकाली और महासरस्वती की मूर्तियां हैं. मंदिर के पीछे सागर के किनारे पत्थर पड़े हैं. इन पत्थरों पर बैठ कर लोग पिकनिक भी मनाते हैं और सागर का आनंद भी लेते हैं.

हाजी अली की दरगाह: मंदिर के पास समुद्र में कुछ अंदर चल कर हाजी अली की दरगाह है. दरगाह तक जाने के लिए पक्का रास्ता है. ज्वार आने पर यह रास्ता बंद हो जाता है. दरगाह के चारों ओर लहराता समुद्र मनोरम प्रतीत होता है.

पास में ही महालक्ष्मी रेसकोर्स है. यहां रविवार और कुछ छुट्टी के दिनों में घोड़े दौड़ाए जाते हैं.

इन स्थानों तक पहुंचने के लिए 81 से 87 तक एवं 132,133 आदि नं. की बसों द्वारा जाया जा सकता है.

नेहरू तारागण (प्लेनेटोरियम): वरली में स्थित नेहरू तारांगण में भूत, वर्तमान और भविष्य के नक्षत्रों के बारे में जान सकते हैं. इस के प्रतिदिन तीन शो होते हैं, जिस में 4.30 बजे से हिंदी का शो होता है. यह सोमवार को बंद रहता है. इस में आप अलगअलग ग्रहों के अपनी जानकारी भी प्राप्त कर सकते हैं. महालक्ष्मी जाने वाली बसों से यहां पहुंचा जा सकता है.

जीजाबाई उद्यान: यह बंबई का प्रसिद्ध चिड़ियाघर है. विश्व भर के पशुपक्षी यहां हैं. लगभग 7 एकड़ भूमि में फैला यह उद्यान भायखला में है. यहां 1,3,5,9,65,126 आदि बसों द्वारा जाया जा सकता है. भायखला स्टेशन से टैक्सी द्वारा या पैदल भी पहुंचा जा सकता है.

उद्यान में ही विक्टोरिया अलबर्ट म्यूजियम भी है. इस में कला, प्राचीन वस्तु आदि के साथ पुरानी बंबई के इतिहास का भी विभाग है.

यह चिड़ियाघर सोमवार को बंद रहता है. अन्य दिनों सुबह 7 बजे से शाम 7 बजे तक खुला रहता है. यहां नौका विहार एवं घोड़े, हाथी, ऊंट की सवारी भी की जा सकती है.

शिवाजी पार्क: यह ऐतिहासिक पार्क दादर में है. मैदान के बीच में छत्रपति शिवाजी की प्रतिमा है. इस मैदान में बड़ीबड़ी सभाएं होती हैं. पास में दादर चौपाटी है, जहां संध्या के समय समुद्र का आनंद लिया जा सकता है. यहां पहुंचने के लिए 1,4,61,71,81, आदि बसों द्वारा या दादर स्टेशन उतर कर टैक्सी द्वारा जाया जा सकता है.

जुहू बीच: यह बंबई का प्रसिद्ध बीच है. दूर तक फैली नारियल और ताड़ के पेड़ों की कतारें मंत्रमुग्ध कर देती हैं. सांताक्रूज स्टेशन से आटो, बस या टैक्सी द्वारा यहां आया जा सकता है.

वरसोवा बीच: यों तो सभी बीच एक जैसे ही लगते हैं फिर भी सब का अपना अलग महत्त्व है. ऐसा ही एक महत्त्वपूर्ण बीच है वरसोवा. यह मछुआरों का बड़ा व्यावसायिक केंद्र है. अंधेरी स्टेशन से बस, टैक्सी या आटोरिकशा द्वारा यहां आया जा सकता है.

नेशनल पार्क: बोरीवली (पूर्व) स्टेशन के पास बहुत बड़े क्षेत्र में यह पार्क बनाया गया है. इस में तरहतरह के जानवर भी हैं. पार्क घुमाने के लिए ट्रेन भी चलती है. पार्क में पहाड़ी पर गांधी टेकरी है. यहां

बंबई के लिए प्रमुख रेल सेवाएं

नई दिल्ली-बंबई सेंट्रल : *(राजधानी एक्स.) 1,2,3,4,5,6 16.05, (फ्रंटियल मेल)* ***8.25***
अमृतसर-बंबई सेंट्रल : *(पश्चिम एक्स.)* ***15.00***
जम्मू तवी-बंबई सेंट्रल : *(बंबई जम्मू तवी एक्स. 2,3,5,6*
वाराणसी-बंबई वीटी : *(महानगरी एक्स.)* ***11.35*** *(दादर एक्स.)* ***10.45*** *(रत्नागिरि एक्स. 2,4,5)* ***17.45***
फैजाबाद-बंबई वीटी : *(साकेत एक्स. 7)* ***15.45***
लखनऊ-बंबई वीटी : *(पुष्पक एक्स.)* ***20.10***
हावड़ा-बंबई वीटी : *(हावड़ा बंबई मेल)* ***20.10***
गुवाहाटी-दादर : *(दादर गुवाहाटी एक्स.)* ***16.00***
मुजफ्फरपुर-दादर : *(श्रमशक्ति एक्स.)* ***9.15***

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

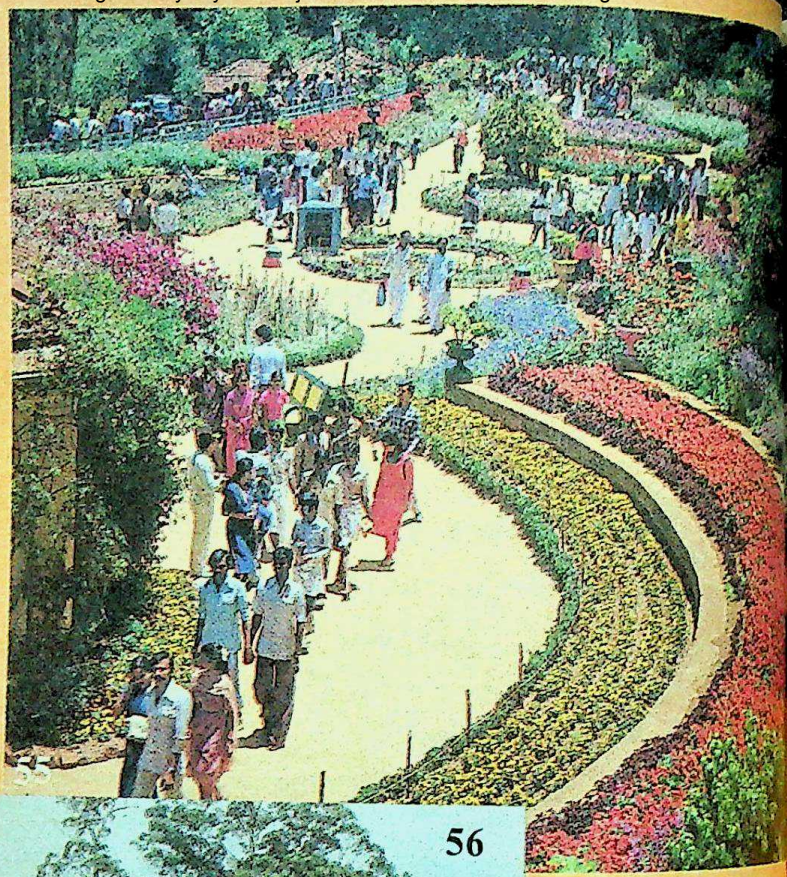

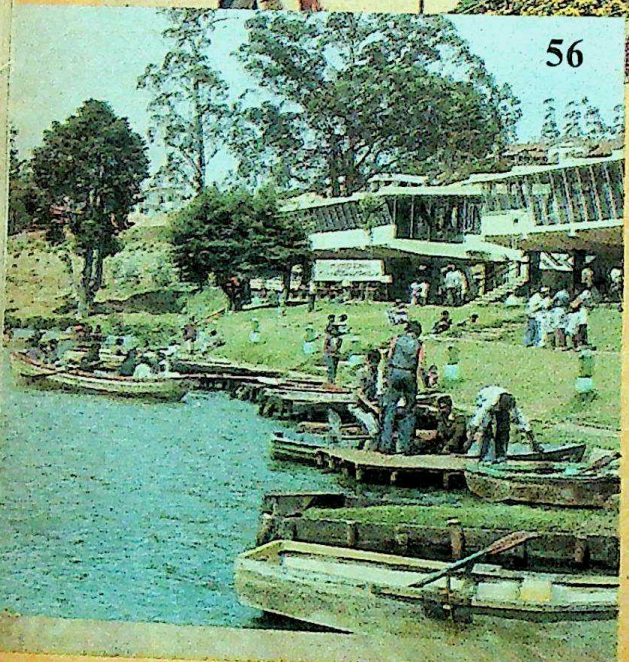

56

55. ऊटी का वनस्पति उद्य
रंगबिरंगे, सुगंधित फूलों
कारण प्रसिद्ध है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

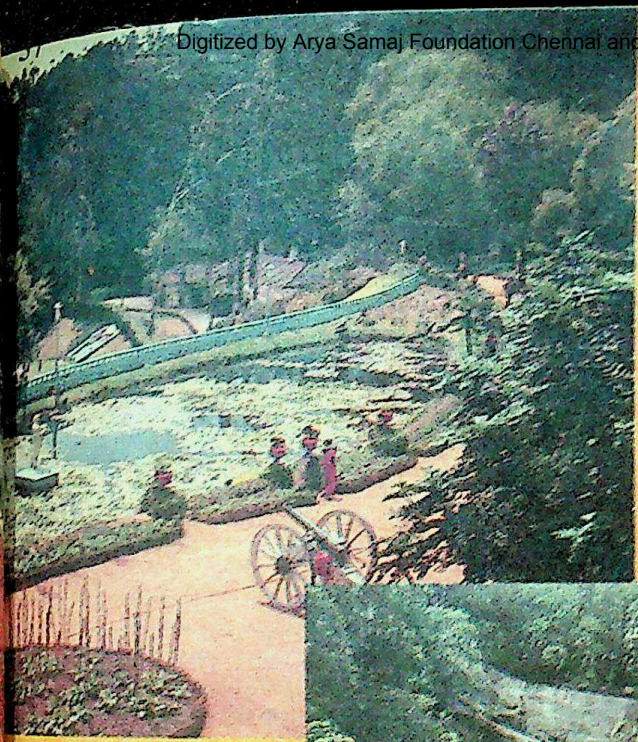

57. ऊटी के वनस्पति उद्यान में हजारों किस्म की वनस्पतियां देखी जा सकती हैं.

59. कोडाइकनाल का सिल्वर कास्केड फाल नयनाभिराम दृश्य उपस्थित करता है.

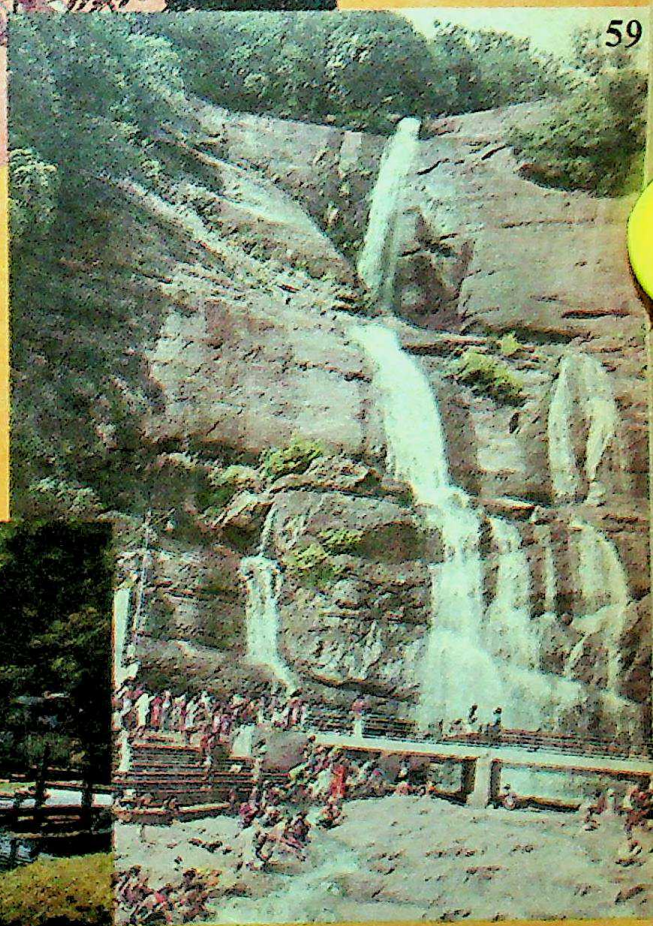

56. ऊटी झील में पर्यटक नौका विहार का आनंद ले सकते हैं.

58. कोडाइकनाल की सितारानुमा झील का निर्माण स्विटजरलैंड की झीलों के आधार पर किया गया है.

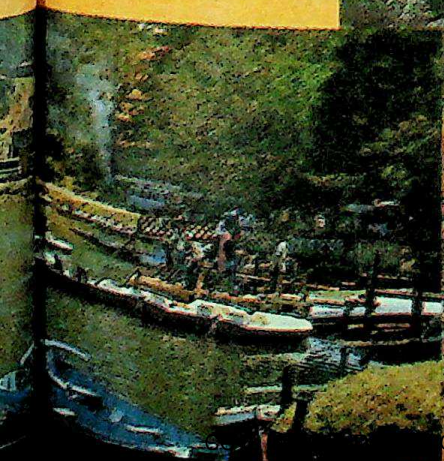

Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से उपनगर का विहंगम दृश्य दिखाई देता है.

कन्हेरी गुफाएं : बोरीवली स्टेशन से पूर्व की ओर लगभग 6-7 मील की दूरी पर कन्हेरी गुफाएं हैं. ये गुफाएं पहाड़ काट कर बनाई गई हैं और लगभग दो हजार वर्ष पुरानी हैं. ये भारतीय शिल्पकला का उत्कृष्ट नमूना हैं.

एसेल वर्ल्ड: बंबई में शहर गोराई द्वीप पर मनोरंजन का एक नया साधन बनाया गया है. इस में बच्चों तथा बड़ों सभी के लिए बहुत से आधुनिक झूले तथा अन्य मनोरंजक सामग्रियां हैं.

यहां पहुंचने के लिए बोरीवली पश्चिम से बस या आटो द्वारा गोराई खाड़ी तक जाइए. स्टीमर से पार कीजिए. खाड़ी के पार एसेल वर्ल्ड की फ्री बस सेवा मिलेगी जो आप को एसेल वर्ल्ड के प्रवेश द्वार तक छोड़ेगी.

एसेल वर्ल्ड मनोरंजन का महंगा साधन है. उस का प्रवेश शुल्क 90/- रु. प्रति व्यक्ति है किंतु अंदर आप बिना कोई शुल्क दिए सभी झूलों का जितनी देर चाहें आनंद ले सकते हैं.

अन्य आकर्षण:

टकसाल: वी.टी. स्टेशन के पास शहीद भगत सिंह रोड पर रिजर्व बैंक के सामने टकसाल है. यहां विभिन्न धातुएं गला कर सिक्के बनाए जाते हैं. यदि आप टकसाल देखना चाहें तो अधिकारियों की अनुमति ले कर मंगलवार या शुक्रवार को देख सकते हैं.

वानखेड़े एवं ब्रेबार्न स्टेडियम: चर्चगेट के पास स्थित इन दोनों स्टेडियमों में टैस्ट मैच होते हैं.

बसई का किला :इस किले का ऐतिहासिक महत्त्व है. 10वीं शताब्दी का यह किला अब खंडहरप्राय है किंतु विशाल क्षेत्र में फैले इस के भग्नावशेष अब भी दर्शनीय हैं. बसई रोड स्टेशन से उतर कर पश्चिम की ओर शहर जाने वाली बस द्वारा यहां पहुंचा जा सकता है.

ब्रजेश्वरी के गरम पानी के कुंड: यह स्थान ब्रजेश्वरी देवी के नाम पर प्रसिद्ध है. मंदिर से 3 कि.मी. की दूरी पर गरम पानी के 21 कुंड हैं. ये कुंड दोदो, तीनतीन के समूह में बने हैं. इन के जल में गंधक मिली होने के कारण चर्म, संधिवात आदि रोगों के लिए बहुत उपयोगी है. बसई रोड स्टेशन से राज्य परिवहन की बसों से यहां लगभग एक घंटे में पहुंचा जा सकता है.

प्रसिद्ध झीलें: बंबई शहर को पानी की आपूर्ति करने वाली पांचपांच प्रसिद्ध झीलें हैं—विहार, पवई, तुलसी, तानसा, और वैतरणा. इन के किनारों पर सुंदर पिकनिक स्थल बने हैं. रविवार तथा अन्य छुट्टी के दिनों में लोग यहां पिकनिक मनाने आते हैं.

मड आयलैंड: मड आयलैंड, मार्वे बीच, मनारी बीच भी यहां के प्रसिद्ध स्थान हैं, पर इन स्थानों को देखने के लिए पर्याप्त समय की आवश्यकता है.

क्या खरीदें

बंबई में हर दर्शनीय स्थल पर सुंदर आकर्षक वस्तुएं मिलेंगी. वी.टी. से गेट वे तक और वे से चर्चगेट तक फुटपाथ पर कपड़े, जूते, श्रृंगार का सामान, किताबें, कैमरा, सेंट तथाकथित विदेशी सामान हर चीज मिलती है कर ये दुकानदार दोगुनेचौगुने दाम मांगते हैं. इस की चीजों के लिए यहां एक 'चोर बाजार' है आप मोलभाव कर के सामान खरीद सकते हैं.

भारी खरीदारी के लिए मोहता मार्केट, मार्केट आदि प्रसिद्ध बाजार हैं जहां छोटी से छोटी बड़ी से बड़ी चीजें उचित मूल्य पर मिलती हैं.

बंबई महानगर है और पर्यटन स्थलों के दोष—ठगी और असामाजिक तत्त्वों की सक्रियता मुक्त नहीं है. अतः अपने सामान की सुरक्षा स्वयं और ठगी से बचें.

सीमित वित्तीय साधन तथा परिवेश में घूमने वाले पर्यटकों के लिए बस या ट्रेन द्वारा घूमना श्रेयस्कर है. यहां हर तीन मिनट उपनगरों के लिए गाड़ियां छूटती हैं. लोकल ट्रेन चढ़ते समय ध्यान रखें कि लाल धारियों वाले प्रथम श्रेणी के होते हैं. द्वितीय श्रेणी का टिकट ले प्रथम श्रेणी में यात्रा करने पर टिकट चेकर आप अनभिज्ञता को नकारता हुआ दंड वसूल कर के मानेगा.

टैक्सी द्वारा घूमना काफी मंहगा पड़ता है. उपनगर से आटो सेवा उपलब्ध है किंतु वी.टी. चर्चगेट से माहिम तक आटो नहीं चलते. बस लोकल में भीड़ अवश्य होती है, पर यहां अपेक्षाकृत अनुशासित है. —डा. पूनम चतुर्

एलीफैंटा

मुंबई के 'गेटवे आफ इंडिया' से मात्र नौ किलोमीटर पर स्थित एलीफैंटा टापू वर्षों से सैलानियों के आकर्षण का प्रमुख केंद्र बना हुआ है. चारों ओर समुद्र से घिरे इस टापू पर बनी गुफाएं तथा इस पर छाई मनोहर हरियाली पर्यटकों को खासतौर से अपनी ओर आकर्षित करती है. जहां एक ओर यह टापू पर्यटन का प्रमुख केंद्र है, वहीं दूसरी ओर इस का इतिहास आश्चर्यों से भरा हुआ है.

एलीफैंटा घूमने जाने वाले दर्शकों को इस के नाम पर भी आश्चर्य होता है, क्योंकि लोगों को यहां हाथी कहीं नजर नहीं आता. वास्तव में देखा जाए तो एलीफैंटा का इतिहास भी समय के गर्त में खो गया है लेकिन इतिहास के पन्नों को पलटने पर पता चलता है कि समुद्र के बीच एक टापू पर बौद्धों ने स्तूपों का निर्माण किया था. यह तीसरी सदी या उस से पहले की बात

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहले इस टापू का नाम 'पुरी' था, पर लगभग छठी शताब्दी के समय उसे 'धारा पुरी' के नाम से जाना जाने लगा. उस समय के शक्तिशाली साम्राज्य की यह राजधानी थी.

कैसे जाएं?

एलीफैंटा जाने के लिए मुंबई के गेटवे आफ इंडिया से स्टीमर की सेवा उपलब्ध है. यह स्टीमर एक घंटे में एलीफैंटा पहुंचाती है. स्टीमर से एलीफैंटा टापू के किनारे उतरने के बाद पहाड़ी पर पहुंचने के लिए 120 सीढ़ियां चढ़नी पड़ती हैं. सीढ़ियां चढ़ने में यदि किसी को परेशानी हो तो किराए की कुर्सियां मिलती हैं, जिन पर बिठा कर ऊपर ले जाया जाता है.

क्या देखें?

यहां की गुफाओं की कलाकृतियों को देख कर पर्यटक आश्चर्य में पड़ जाते हैं. शिव को समर्पित गुफा में शिवपार्वती के विवाह को चित्रित करने वाली कलाकृतियों में भावनात्मक, अंधकासुर वध की, क्रोध, विवशता, सिर्फ अंगूठे के दबाव से रावण के घमंड को चूर करने वाले शिव के चेहरे पर दिखने वाली निश्चलता, योगेश्वर की दृढ़ शांत मुद्रा आदि भाव 16वीं शताब्दी में पुर्तगालियों द्वारा तोड़फोड़ करने के बाद भी इन मूर्तियों में स्पष्ट झलकते हैं.

एलीफैंटा की गुफाएं और ढेरों मूर्तियां इतिहास की गवाह हैं. चालुक्य नरेश और पुलकेशिशन द्वितीय ने एक नौसैनिक युद्ध में मौर्यों को एलीफैंटा के पास ही हराया था. बाद में महाराष्ट्र कई हिंदू राजाओं के अधीन रहा. तदुपरांत यह गुजरात के सुलतानों के हाथों में होता हुआ 16वीं शताब्दी में पुर्तगालियों के अधिकार में गया.

पुर्तगालियों ने जब पहली बार इस टापू पर कदम रखा तो यहां उन्हें हाथी की एक विशालकाय मूर्ति दिखाई दी. पत्थर की इस मूर्ति को देख कर ही पुर्तगालियों ने इस टापू का नाम 'आइलैंड आफ द एलीफैंट' से रख दिया. वहीं कुछ दूर पर घोड़े की भी पत्थर की मूर्ति थी, लेकिन आज उस का कोई पता नहीं है.

पुर्तगालियों ने इस टापू पर एक किला भी बनवाया, जिस में दुश्मनों पर नजर रखने के लिए ऊंची मीनार भी थी. इस के माध्यम से वे शत्रुओं के आक्रमण से सचेत हो जाया करते थे. उन्होंने किले पर अपना झंडा भी लगाया था. पुर्तगालियों ने यहां की गुफाओं का उपयोग शत्रुओं पर आक्रमण करने के लिए किया होगा अथवा उन्होंने जानबूझ कर यहां की मूर्तियों को तोड़ा होगा, यह अभी भी निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता.

कालांतर में हाथी की वह विशालकाय मूर्ति गिर गई. अंगरेजों ने उसे ब्रिटिश संग्रहालय में रखने के लिए ले जाने की योजना बनाई, पर मूर्ति को उठा कर जहाज पर रखने वाली क्रेन टूट गई और उन की योजना धरी की धरी रह गई. बाद में इस मूर्ति को मुंबई के प्रिंस आफ वेल्स संग्रहालय में रखा गया.

एलीफैंटा शिव की त्रिमूर्ति के लिए विश्व प्रसिद्ध है. शंकर के भक्तगण शंकर में ही कर्ता (ब्रह्मा), पालक (विष्णु) और संहारक महेश ये तीनों रूप देखते हैं. इसी बात को ध्यान में रख कर इस मूर्ति का निर्माण कराया गया था.

एलीफैंटा की प्रमुख गुफा में शिव के अलावा पार्वती, गणेश, कार्तिकेय तथा नर्तक नर्तकियों की कई भावभंगिमाएं चित्रित की गई हैं. प्रमुख गुफा में शिव की स्तुति में उन के विभिन्न रूपों की कुल नौ मूर्तियां हैं, जिन्हें पैनल की संज्ञा दी गई है.

प्रमुख गुफा की छत खंभों पर टिकी है. ऐसा प्रतीत होता है कि इन खंभों पर गुफा की छत को ला कर रख दिया गया हो. गुफा के पश्चिम की ओर एलीफैंटा का प्रमुख केंद्रबिंदु है जहां एक विशाल 'शिवलिंग' स्थापित किया हुआ है. इस के चारों दरवाजों पर संरक्षक के रूप में 'द्वारपाल' स्तंभ खड़े हैं.

तीन ओर से खुलने वाली इस गुफा के पूर्वी और पश्चिमी प्रवेश द्वार की बगल में दो छोटे मंदिर हैं. यहां की मूर्तियां क्षतविक्षत स्थिति में हैं. आजकल उत्तर दिशा की ओर खुलने वाले द्वार का उपयोग होता है, पर शायद पहले लोग पूर्व के दरवाजे से आतेजाते रहे होंगे. क्योंकि इस दरवाजे से अंदर जाने पर सीधे 'शिवलिंग' के पास पहुंच जाते हैं.

एलीफैंटा में प्रमुख गुफा के अलावा छः अन्य गुफाएं भी हैं. गुफाओं के आगे पहाड़ी पर दो बड़ी तोपें रखी हुई हैं. इन तोपों के बिलकुल नीचे कमरे बने हुए हैं.

सीढ़ियां चढ़ने के बाद मुख्य गुफा घुमाने के लिए महाराष्ट्र पर्यटन विकास निगम की ओर से गाइड की व्यवस्था की गई है, जो 15-20 लोगों के समूह को मुख्य गुफा और नौ पैनलों के बारे में विस्तार से बताता है. इस के लिए महाराष्ट्र पर्यटन विकास निगम प्रति व्यक्ति 50 पैसे शुल्क वसूल करता है.

आज से कई वर्ष पहले एलीफैंटा घूमने वाले पर्यटकों को कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था. तब इस टापू पर होटल आदि की व्यवस्था नहीं थी. लेकिन आज यहां पर होटल और बीयर बार भी खुल चुके हैं. पर्यटकों को गेटवे आफ इंडिया से एलीफैंटा जानेआने के लिए डीलक्स स्टीमर का 40 रुपए का और सामान्य स्टीमर का 25 रुपए का टिकट लेना पड़ता है.

—राकेश दुबे

ऊटी

पर्यटन के क्षेत्र में तमिलनाडु प्रदेश के तीन मुख्य पर्वतीय स्थलों कोडाइकनाल, ऊटकमंड तथा यूरकोड में ऊटी निर्विवाद रूप से अपनी विशिष्ट पहचान बनाने में कामयाब रहा है. असीमित मात्रा में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

60

61

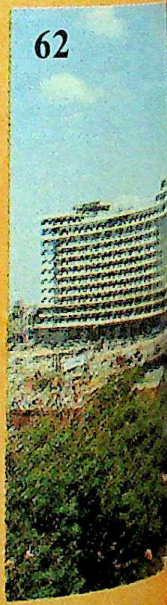

62

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

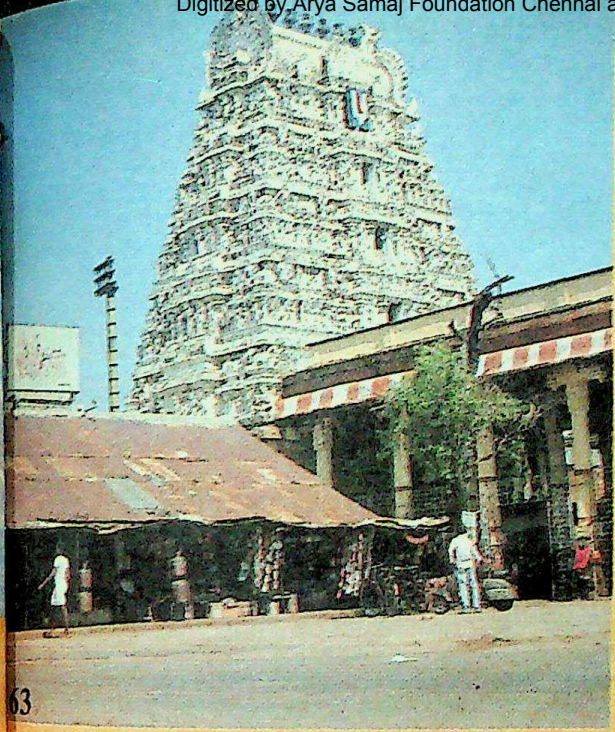

60. समुद्र किनारे बना महाबलीपुरमका 'शोर टेंपल' द्रविड़ भवन निर्माण शैली का अनूठा नमूना है.

61. महाबलीपुरम स्थित लाइट हाउस भी दर्शनीय है.

62. मद्रास का रेलवे स्टेशन.

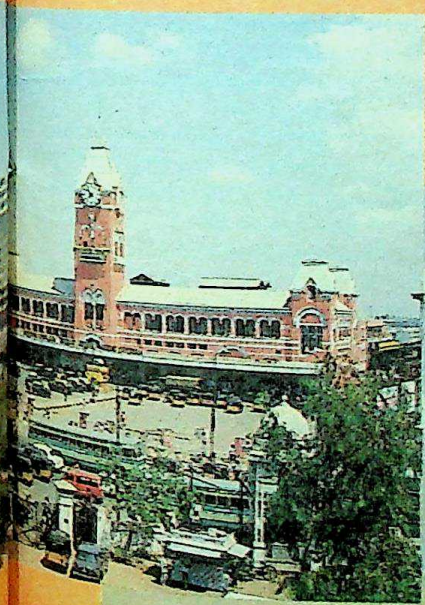

63. मद्रास स्थित पार्थसारथी मंदिर पर उत्कीर्ण शिल्पकारी देखने लायक है.

64. मद्रास का मरीना बीच विश्व का दूसरा सब से लंबा समुद्रतट है.

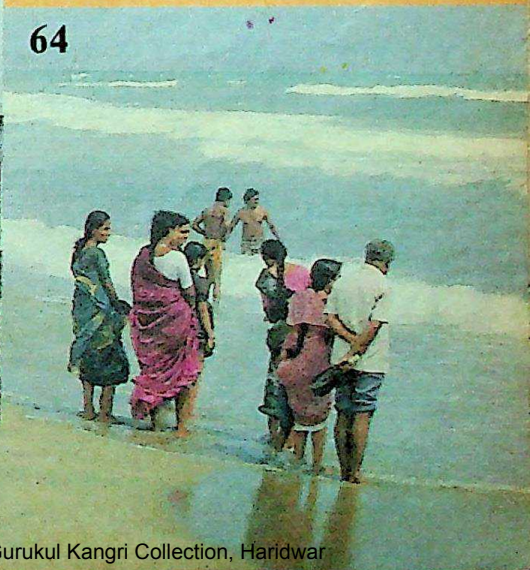

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकृति का नैसर्गिक सौंदर्य, बेपनाह खूबसूरत पर्वत शिखर के आसपास स्थित हराभरा सपाट मैदान, सीढ़ीदार चाय बागानों का मनोरम दृश्य, झील का शांत जल, यूकीलिप्टस के लंबेघने पेड़ों से छन कर आती हवा के ताजे झोंके किसी भी सैलानी को प्रकृति से रूबरू होने का समुचित अवसर प्रदान करते हैं. अपनी इस प्राकृतिक समृद्धता के कारण ही यह प्रतिवर्ष लाखों की तादाद में न केवल अपने देश के लोगों को आकर्षित करता रहा है अपितु विदेशियों के लिए भी पर्याप्त आकर्षण का केंद्र बना हुआ है.

ऊटी

कहां ठहरें?

होटल पैलेस, फर्न हिल; सेवाय होटल (ताज ग्रुप), फोन : 2572; होटल तमिलनाडु, फोन : 2543, 2544; यूथ होस्टल, फोन : 3665; फर्न हिल इंपीरियल, फोन : 2055, 3097, 3098; होटल देश प्रकाश, फोन : 2434, 2435; होटल वुडलैंड, फोन : 2551; होटल नटराज, फोन : 3556; होटल मौर्य सुदर्शन, फोन : 3828; नाहर टूरिस्ट होम, फोन : 2173; रतन टाटा आफिर्स होलि डे होम, फोन : 2216; रेलवे रिटायरिंग रूम, फोन : 2246; तमिलनाडु कोओपरेटिव गैस्ट हाउस, फोन : 2638; होटल माउंट व्यू, फोन : 2602.

नीलगिरि की पहाड़ियों में समुद्रतल से लगभग 2,240 मीटर की ऊंचाई पर बसा तथा 36 वर्ग किलोमीटर में फैला नगीने की तरह चमकने वाले इस क्षेत्र की खोज 1819 में कोयंबटूर के जिला कलक्टर जान सुलीवर ने की थी.

कैसे जाएं?

ऊटी का निकटतम मेन लाइन कार रेलवे स्टेशन मेट्टुपलायम है, जो कोयंबटूर तथा मद्रास से जुड़ा हुआ है. मेट्टुपलायम से छोटी लाइन द्वारा एक अनूठी रेलगाड़ी, जिस का इंजन आगे के बजाय पीछे लगा होता है, से ऊटी पहुंचा जा सकता है. यह रेल हरेभरे पर्वतीय वनों तथा चाय बागानों से हो कर जाती है. इस सफर के दौरान प्राकृतिक दृश्यावलियां एक अद्भुत आनंद का आभास दे जाती हैं.

ऊटी दक्षिण भारत के सभी प्रमुख नगरों से सड़क मार्ग द्वारा जुड़ा हुआ है. यहां बंगलौर, मैसूर, कोयंबटूर, कोटगिरि, कोन्नूर, मदुरै, कन्याकुमारी, मद्रास, पालघाट, तिरुचिरापल्ली आदि जगहों से बस द्वारा सीधा पहुंचा जा सकता है. यह यात्रा इ[illegible] रोमांचकारी होती है कि यात्री बस में ही बैठा [illegible] चाहता है. इस के अलावा टैक्सी या कार से भी यहां पहुंचा जा सकता है.

यहां का निकटतम हवाई अड्डा 88 किलो[illegible] दूर कोयंबटूर में स्थित है. यह मद्रास, बंगलौर [illegible] बंबई से इंडियन एअरलाइंस की नियमित उड़ा[illegible] जुड़ा हुआ है. यहां उतर कर बस या टैक्सी द्वारा [illegible] जाया जा सकता है.

कब जाएं?

पर्वतीय स्थलों की रानी ऊटी के दर्शन कभी [illegible] किए जा सकते हैं. लेकिन सुविधा व चहलपहल [illegible] देखते हुए अप्रैल से जून (पर्यटकों की संख्या सब [illegible] ज्यादा) तथा सितंबर से नवंबर के बीच का स[illegible] बेहतरीन कहा जा सकता है. गरमी के दिनों में हल्[illegible] ऊनी कपड़े तथा जाड़ों में भारी ऊनी कपड़ों का स[illegible] रहना आवश्यक है.

क्या देखें?

बोटैनिकल गार्डन : मुख्य शहर से आ[illegible] किलोमीटर की दूरी पर सुंदर तथा सुगंधित फूलों [illegible] एक उद्यान है, जिस की स्थापना 1947 में एक अंग्रे[illegible] लार्ड टवीडडेल ने की थी. आज यह उद्यान पर्यटकों [illegible] आकर्षण का प्रमुख केंद्र है. इस उद्यान के बीच में [illegible] सुंदर झील भी है, जिस में नौकाविहार का आ[illegible] पर्यटक उठाते हैं. मई माह में होने वाली पुष्प व फ[illegible] प्रदर्शनी यहां का मुख्य आकर्षण है. झील के पास [illegible] एक अति प्राचीन पेड़ का तना है जिस की उम्र 20 [illegible] वर्ष बताई जाती है. झील के किनारे ही होवार्ट पार्क [illegible] जहां मई मास में भव्य घुड़दौड़ का आयोजन कि[illegible] जाता है.

डोडाबेटा चोटी : डोडाबेटा तमिल का शब्द [illegible] तमिल में डोडा का अर्थ बड़ा व बेटा का अर्थ चो[illegible] अर्थात सब से बड़ी चोटी है. वाकई ऊटी से लगभग [illegible] किलोमीटर ऊटी कोटगिरि मार्ग पर 2,623 मी[illegible] ऊंची यह नीलगिरि की सब से ऊंची चोटी है. अ[illegible] आकाश कोहरारहित हो तो यहां से ऊटी के सा[illegible] कोयंबटूर के मैदानों व मैसूर के पठारों तक का विह[illegible] दृश्य देखा जा सकता है. चोटी पर खड़े हो कर दे[illegible] पर ऐसा लगता है कि नीले पर्वतों पर बसी ऊटी [illegible] की बहार लुटा रही है, जिसे अपनी स्मृति में भर [illegible] को जी चाहता है. यहां पहुंचने के लिए जीप, कार [illegible] मैटाडोर आसानी से उपलब्ध हो जाते हैं.

केटली घाटी : यह ऊटी कोन्नूर मार्ग पर [illegible] शहर से 8 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है. घाटी [illegible] स्थित छोटेछोटे गांव इस की सुंदरता को और बढ़ा [illegible] हैं. यहां एक सूई बनाने का कारखाना भी है, जिसे [illegible] अनुमति से देखा जा सकता है.

झील : मुख्य रेलवे स्टेशन से 3 किलोमीटर [illegible] दूरी पर एक अंगरेज अधिकारी सुलीवर द्वारा नि[illegible] कृत्रिम झील है, जिस के शांत जल को देख कर पर्य[illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रफुल्लित हुए बिना नहीं रह सकता है. यहां नौकायन की सुविधा सुबह 8 बजे से शाम के 6 बजे तक उपलब्ध है. झील के किनारे टट्टुओं की सवारी करना तथा छोटी खिलौनानुमा रेलगाड़ी पर चढ़ने का अपना एक अलग ही आनंद है. यह बच्चों के साथसाथ बड़ों में भी काफी लोकप्रिय है. मछली तथा ट्राउट के शिकार के लिए यह झील काफी प्रसिद्ध है. लेकिन इस के लिए पूर्व स्वीकृति लेना जरूरी होता है.

सेंट स्टीफंस गिरजाघर : यहां 19वीं शताब्दी का एक बहुत पुराना गिरजाघर भी है जिस का निर्माण तत्कालीन अंगरेज गवर्नर लुशिंगटन ने 1829 में करवाया था. इस गिरजे के अंदर ऊटी के संस्थापक जान सुलविन, उन की पत्नी व परिवार के अन्य सदस्यों की स्मृति में स्मारिकाएं रखी गई हैं.

कालहट्टी जलप्रपात : ऊटी से 14 किलोमीटर दूर कालहट्टी गांव में यह झरना पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र बना रहता है. 36 मीटर की ऊंचाई से नीचे गिरते इस झरने पर दृष्टिपात करने से मन करता है कि यूं ही एकटक इस वादी के प्राकृतिक सौंदर्य को निहारते रहें. पहले यहां तक पहुंचने के लिए 3 किलोमीटर पैदल चलना पड़ता था, लेकिन अब सड़क द्वारा यहां सीधे पहुंचा जा सकता है. यह पिकनिक मनाने, ट्रैकिंग करने का एक सुंदर स्थान है.

हिंदुस्तान फोटो फिल्म्स : ऊटी से 8 किलोमीटर वैनलाक डाउंस में स्थित हिंदुस्तान फोटो फिल्म्स फोटोग्राफी के सामान का उत्पादन करने वाला भारत में अपने ढंग का एकमात्र कारखाना है. यहां कंपनी ने एक माडल कमरा भी बनवाया है जहां आगंतुकों को इस उद्योग की जानकारी दी जाती है. यहां बस या टैक्सी द्वारा आसानी से पहुंच कर अनुमति ले कर देखा जा सकता है.

वन्य जीव अभयारण्य : ऊटी से 60 किलोमीटर दूर केरल और मैसूर राज्यों की सीमा पर 1,000 मीटर की ऊंचाई पर 324 वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र में फैला हुआ मुदुमलाई में वन्य जीवन का भी आनंद लिया जा सकता है. यहां हाथी के हौदे में आराम से बैठ कर वन्य प्राणियों जैसे जंगली सूअर, हिरण, लंगूर, शेर आदि की गतिविधियों को देखा जा सकता है. वैसे यहां का मुख्य आकर्षण इधरउधर स्वच्छंद घूमते हाथी हैं.

महाबलीपुरम

प्राचीन कलापूर्ण, ऐतिहासिक मंदिरों के कारण मद्रास से 58 किलोमीटर दक्षिण की ओर स्थित ममल्लापुरम या महाबलीपुरम दक्षिण भारत का एक महत्त्वपूर्ण पर्यटन स्थल बन गया है. प्राचीन काल में एक ओर यहां पल्लवों का वैभवशाली शासन रहा तो दूसरी ओर शंकराचार्य, रामानुजाचार्य, चाणक्य, दंडी और भारवि जैसे महापुरुषों ने इस नगर को अपने शानदार कार्यों से चमकाया. उस समय की अद्भुत वास्तुकला व शिल्पकला को देखने के लिए आज दुनिया भर के पर्यटक यहां आते हैं.

कैसे जाएं?

यहां का निकटतम हवाई अड्डा मद्रास का मीनाबक्कम मात्र 58 किलोमीटर है. यहां से तमिलनाडु पर्यटन विकास निगम की बसों, प्राइवेट बसों व टैक्सियों द्वारा सहज ही महाबलीपुरम तक पहुंचा जा सकता है. बस से प्रतिव्यक्ति लगभग 10 रुपए किराया लगता है.

रेलमार्ग से जाने वाले पार्यटकों के लिए चेंगलपट्टू रेलवे स्टेशन निकटतम स्टेशन है. यह दक्षिण रेलवे की मद्रास तिरुचि लाइन पर महाबलीपुरम से 30 किलोमीटर दूर है. कांचीपुरम व आरकोनम से भी यहां के लिए रेल सुविधाएं उपलब्ध हैं.

यहां पहुंचने के लिए बस द्वारा जाना सर्वश्रेष्ठ है. मद्रास तथा दक्षिण भारत के अन्य प्रमुख निकटवर्ती स्थानों से यहां के लिए नियमित बसें चलती हैं.

कहां ठहरें:

वैसे तो महाबलीपुरम में ठहरने का कोई औचित्य नहीं है लेकिन फिर भी पर्यटकों की सुविधा के लिए वहां पश्चिमी व पूर्वी सभ्यता के कई होटल हैं. इन में भारतीय पर्यटन विकास निगम का होटल टैंपल बे, बीच रिसोर्ट कौम्पेक्स (तमिलनाडु पर्यटन विकास निगम), यूथ होस्टल (तमिलनाडु पर्यटन विकास निगम), सिल्वर सैंडस, गोल्डन सन आदि आधुनिक सुखसुविधाओं से संपन्न होटल हैं. इन सारे होटलों के रेस्तराओं में शाकाहारी, मांसाहारी कौंटीनेंटल भोजन व जलपान की समुचित व्यवस्था है.

कब जाएं

महाबलीपुरम जुलाई, अगस्त (वर्षाकाल) को छोड़ वर्ष के शेष महीनों में कभी भी जाया जा सकता है. यहां का तापमान जाड़ों में भी कम से कम 20^0 सेल्सियस रहता है. इसलिए हलके सूती कपड़ों में आराम से घूमा जा सकता है.

क्या देखें?

गुफा मंदिर : यहां 9 गुफा मंदिर हैं जिन का निर्माण चट्टानों को काटकाट कर किया गया है. इस में कृष्ण गुफा मंदिर वास्तविक दृश्य के लिए उल्लेखनीय है. महिषासुर मर्दिनी गुफा मंदिर में एक तरफ विष्णु की लेटी हुई मुद्रा में पत्थर पर उकेरी हुई आकृति है. दूसरी तरफ दुर्गा काली का भैंसे के सिर वाले राक्षस महिषासुर से युद्ध का चित्र है. वराह गुफा मंदिर, त्रिमूर्ति गुफा मंदिर आदि भी दर्शनीय शिल्पकला के उदाहरण हैं.

बास रिलीफ : एक बहुत बड़े शिलाखंड पर तराशी गई भव्य मूर्तियां बास रिलीफ हैं. यह 27 मीटर लंबा, 9 मीटर चौड़ा है. यह विशाल ह्वेल मछली की पीठ के आकार की चट्टान समुद्र के सामने है. इस के मध्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में एक दरार है. इस के दोनों ओर कीर्यत तीनों लोक के निवासी देवी, देवताओं, जानवर और पक्षी पत्थर पर खुदे हैं. ये आकृतियां दरार की ओर चलती प्रतीत होती हैं.

पांच रथ : संख्या में पांच और आकार में रथ के समान होने के कारण सातवीं शताब्दी के इस शिल्प-कला को पांचरथ मंदिर कहा जाता है. इस की विशेषता यह है कि यह एक ही पत्थर का बना है. इन्हें पांच पांडवों का रथ भी कहते हैं. उत्तर में स्थित झोंपड़ीनुमा प्रथम रथ द्रोपदी का है. दूसरे अर्जुन के रथ में दक्षिणी भारत के मंदिरों की तरह पिरामिडनुमा छत है, तीसरा भीम के मंदिर की छत नीलगिरि अंचल में बसे तोड़ा आदिवासियों के घर की छत से मिलतीजुलती है. युधिष्ठिर के रथ का शिखर सब से ऊंचा है. आखिर में कुछ दूरी पर नकुल, सहदेव का रथ है. इस का आकार बौद्धों के चैत्य के समान दिखता है.

शोर टेंपल : द्रविड़ शैली में आठवीं शताब्दी का बना यह मंदिर भवन निर्माण कला के प्रथम परिवर्तन का उत्कृष्ट उदाहरण है. यह प्राचीन मंदिर लगातार काल, हवा, सूरज और समुद्र के थपेड़े खा कर भी अपनी जगह अचल है. इस मंदिर में दो पूजागृह हैं. पूर्व दिशा के रुख वाला पूजागृह शिव को तथा पश्चिम वाला दुर्गा को समर्पित है.

कृष्ण मंडप : इस मंडप में कृष्ण को गोवर्धन पर्वत उठाए हुए दिखाया गया है. इस मंडप के अन्य भवनों में गणेश रथ, वराह गुफा मंदिर, ओल्ड लाइट हाउस, कृष्ण की माखन गेंद, गोपियों की चरणवलायनकुटाई रथ, कोडिकल मंडप आदि भी दर्शनीय हैं.

इन के अलावा मूर्तिकला प्रशिक्षण विद्यालय, क्रोकोडायल बैंक, वेदनथंनगल स्थित जलपक्षी विहार, टाइगर गुफा (पिकनिक स्थल) आदि आसपास के दर्शनीय स्थलों को देखा जा सकता है.

मैसूर

भारत के दक्षिणी अंचल में दूर तक फैले पहाड़ों और जंगलों के बीच स्थित कर्नाटक के रत्न मैसूर में पर्यटकों के देखने के लिए यदि एक ओर प्राकृतिक मनमोहक दृश्य हैं तो दूसरी ओर सुनने के लिए इतिहास की बेमिसाल कहानियां भी हैं. पिछले पचास वर्षों से यहां का वृंदावन गार्डन और सैकड़ों वर्षों से यहां का भव्य महल पर्यटकों के आगमन से गूंजता रहा है. और ये ही यहां के प्राकृतिक सौंदर्य और आकर्षण का सब से बड़े प्रमाण हैं.

ऐसा कहा जाता है कि 'मैसूर' नाम महिषासुर के नाम पर पड़ा है. प्राचीन काल में यहां चोल, होयसाला तथा विजयनगर के राजाओं का शासन रहा. यह 1799 से 1831 तक कर्नाटक की राजधानी रह चुका है. इस [illegible] टीपू सुल्तान की कर्मभूमि होने का भी गौरव हासिल है. इसलिए यहां आज के प्राचीन, मध्य तथा आधुनिक भारत की सभ्यता-संस्कृति का मिलाजुला रूप आसानी से देखने को मिल जाता है.

कैसे जाएं?

मैसूर कर्नाटक के सभी प्रमुख स्थानों से मीटर गेज द्वारा जुड़ा हुआ है. बंगलौर, हसन तथा अरसिकरी से यहां के लिए सीधी रेल सेवाएं उपलब्ध हैं. सड़क मार्ग द्वारा मैसूर, बंगलौर, बांदीपुर, बेलूर, हेलीपेड, जाग फाल आदि जगहों से जुड़ा हुआ है. यहां टूरिस्ट बसें नियमित आतीजाती रहती हैं.

पहले मैसूर में हवाई अड्डा न होने के कारण बंगलौर जाना पड़ता था. वहां उतर कर रेल, बस या टैक्सी द्वारा मैसूर पहुंचा जा सकता था. लेकिन अब वायुदूत की हवाई सेवाओं ने मैसूर को बंगलौर, बेलारी, हैदराबाद तथा तिरुपति से सीधा जोड़ दिया है.

मोटे तौर पर बंगलौर को ही आरंभिक केंद्र मान कर यहां से मैसूर की यात्रा शुरू की जा सकती है.

मैसूर

कहां ठहरें?

अशोका होटल, धनवंतरि रोड, फोन : 21464; ***चक्रवर्ती होटल***, अशोक रोड, फोन : 26199; ***चामुंडी गेस्ट हाउस***, झांसी लक्ष्मीबाई रोड, फोन : 21152; ***गीता लाज***, उमा टाकीज के पास, फोन : 21711; ***आशीर्वाद होटल***, 3, नजरबाद रोड, फोन : 23210; ***आश्रय***, धनवंतरि रोड, फोन : 27088; ***कस्तूरी होटल***, लक्ष्मी विलास रोड, फोन : 25134; ***कल्पना लाज***, जयनमोहन पैलेस रोड; ***होटल इंद्रा***, विनोबा रोड, फोन : 26320; ***चालुक्य होटल***, राजकमल टाकीज रोड, फोन : 27197, 27374; ***भारती लाज***, कोतवाल रमैया स्ट्रीट, फोन : 22411.

क्या देखें?

महाराजा पैलेस : मैसूर का यह प्रसिद्ध राजमहल शहर के बीचोबीच चामराजा वाडियार चौक के ठीक सामने बना हुआ है. इस का पुनर्निर्माण पुराने किले की जगह पर (जो 1897 में आग में ध्वस्त हो चुका था) 1901 में करवाया गया था. आज यह पैलेस अपनी स्थापत्य कला, होयसाला शैली की नक्काशी तथा प्राचीन राजाओं के वैभव का जीवित रूप है. पुराने तलवारें, रत्नों से जड़ा सिंहासन, शीशे का फर्नीचर तथा प्रसिद्ध त्योहार दशहरा के भित्तिचित्रों [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सजासवरा पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र बना हुआ है. किले के अंदर चित्र खींचना मना है. यह किला सुबह 10.30 से शाम के 5.30 बजे तक किसी भी दिन देखा जा सकता है.

चामुंडी हिल : चामुंडी पर्वत मैसूर के प्रभा मंडल के समान है. इस का नाम यहां स्थित चामुंडेश्वरी देवी मंदिर के नाम पर पड़ा है. यह मंदिर दक्षिण भारतीय वास्तुकला का सुंदर नमूना है. यहां महिषासुर की विशाल मूर्ति देखने लायक है. इस का निर्माण 17वीं शताब्दी में दोधा सेना ने करवाया था. पहले यहां पैदल सिर्फ सीढ़ियों से ही जाया जा सकता था. लेकिन अब यहां चढ़ने के लिए बसें तथा टैक्सियां भी आसानी से उपलब्ध हैं. चामुंडी पहाड़ी के रास्ते में ही पांच मीटर ऊंची नंदी की विशाल मूर्ति है, जिसे एक ही पत्थर से तराश कर बनाया गया है. यहां ठहरने के लिए दो तीन होटल भी बने हैं.

श्रीरंगपट्टन : श्रीरंगपट्टन एक ऐतिहासिक स्थल है. आज से 200 वर्ष पूर्व यह हैदरअली तथा टीपू सुल्तान की राजधानी था. यहां टीपू सुल्तान की कबगाह के साथसाथ उस का महल, किला, मसजिद तथा भित्तिचित्र दर्शनीय हैं. कब्रगाह के साथ ही एक खूबसूरत उद्यान भी है, जहां बैठ कर सफर की थकान दूर की जा सकती है. इस किले के अंदर 19वीं सदी के एक यूरोपियन यात्री अब्बी दुबोस का गिरजाघर भी है.

म्यूजियम एवं आर्ट गैलरी : यहां जयचाम राजेंद्र आर्ट गैलरी भी है जिस का निर्माण 1861 में कृष्णराज वाडयार चतुर्थ के शासनकाल में करवाया गया था. इस का निर्माण सार्वजनिक उपयोग के लिए किया गया था. बाद में इसे आर्ट गैलरी में परिवर्तित कर दिया गया. अभी भी इस का एक हिस्सा सार्वजनिक काम के लिए उपयोग किया जाता है. इस गैलरी में राजा रवि वर्मा तथा अन्य भारतीय तथा पश्चिमी चित्रकारों के बनाए चित्रों का विशाल संग्रह है. इस के अलावा वाद्ययंत्रों, पश्चिमी शैली के सजावटी सामानों, कांच तथा लकड़ी के फरनीचरों, पत्थर की मूर्तियों का भी संग्रह देखने लायक है.

1979 में बनाया गया रेल म्यूजियम भी दर्शनीय है. इस में मैसूर के राजाओं के काल की रेलगाड़ियों के डब्बे, इंजन, सिगनल आदि संग्रहित किए गए हैं. यह सोमवार को छोड़ अन्य दिनों में सुबह 10 से शाम के 5 बजे तक पर्यटकों के लिए खुला रहता है.

वृंदावन गार्डन

हिंदी फिल्मों के दर्शकों के लिए वृंदावन गार्डन कोई नई जगह नहीं है. आए दिन हिंदी फिल्मों में हम युवा नायकनायिकाओं को सतरंगे फव्वारे के नीचे भीगते, रंगबिरंगे फूलों के पीछे छिपते, लंबेलंबे पेड़ों के आसपास आलिंगनबद्ध होते, हरी मखमली घास पर लोटते देखते हैं. उन का यह प्रेम अंदाज नकली हो सकता है लेकिन यह अधिकांशतया असली वृंदावन गार्डन में ही फलताफूलता है. हिंदी फिल्मों के प्रेम दृश्यों को आमतौर पर यहीं फिलमाया जाता है.

मैसूर से 19 किलोमीटर की दूरी पर कृष्णराज सागर बांध के निचले हिस्से में लगभग 20 एकड़ में यह हराभरा गार्डन निर्मित है. गार्डन के मुख्य द्वार से लगभग 3 मीटर चौड़ी एक जलधारा गिरती है जो कृत्रिम झरने का आभास दिलाती है. यह झरना गार्डन के बीच बनी एक कृत्रिम नहर में गिरता है और नहर कावेरी नदी में. इस नहर में नौकाविहार की भी व्यवस्था है.

नहर के दूसरे छोर पर संगीतमय फव्वारे लगे हैं जिन्हें हर रात विभिन्न रंग की रोशनियों से आलोकित किया जाता है. रात होते ही यह गार्डन स्वप्नलोक का सा दृश्य उपस्थित कर देता है जिस के कारण पर्यटकों को यहां से जाने की इच्छा नहीं होती है.

गार्डन में रहने के लिए कई अच्छेअच्छे होटल बने हैं. इस का प्रवेश शुल्क 4 रुपए है. लेकिन अगर आप स्थिरचित्र कैमरा साथ ले जाना चाहें तो 20 रुपए का टिकट तथा मूवी कैमरा के लिए 50 रुपए का टिकट प्रवेश शुल्क के साथ ही लेना होगा. आप यदि कार या जीप से जाते हैं तो एक निर्धारित शुल्क दे कर उसे गार्डन के अंदर भी ले जाया जा सकता है.

कोडाइकनाल

पर्वत विहार की अवधारणा अंगेजों की देन है और उन की इस अवधारणा की कसौटी पर आज कोडाइकनाल पूरी तरह खरा उतरा है. अच्छी जलवायु, प्रकृति प्रदत्त मनमोहक दृश्य, रहस्य का आवरण ओढ़े हरेभरे पठार, मदमस्त चाल से बहते झरनों ने संभवतः इसे देश का सर्वाधिक व्यस्त पर्यटन स्थल बना दिया है. साल भर सदाबहार मौसम रहने के कारण यहां पर्यटकों का तांता लगा रहता है. यहां की जलवायु की अपनी एक विशेषता है कि अन्य पर्यटन स्थलों की तरह यहां का तापमान कभी भी (जाड़ों में भी नहीं) इतना नीचे नहीं पहुंचता कि आप को भारी ऊनी कपड़ों की जरूरत महसूस हो.

पलानी पर्वतमाला की गोद में समुद्रतल से 7,000 फुट की ऊंचाई पर 212 वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र में दक्षिणी चोटी पर फैले इस क्षेत्र की खोज 1895 में टेलर, ग्रूजे तथा लारेंस नामक अंगरेजों ने की थी. इन के द्वारा निर्मित सेंट्रल हाउस, ईस्ट हाउस, जाफना हाउस आज भी इस बात के चिरसाक्षी हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कब जाएं?

भारत के अन्य पर्वतीय स्थलों की तुलना में यहां वर्ष में कभी भी जाया जा सकता है. लेकिन नवंबर तथा दिसंबर (बारिश का मौसम) के महीने को अगर छोड़ना चाहें तो छोड़ सकते हैं.

कैसे जाएं?

यहां का निकटतम हवाई अड्डा मदुरै 120 किलोमीटर दूर है. मदुरै से कोडाइकनाल बस, टैक्सी आदि द्वारा पहुंचा जा सकता है. यह दक्षिण भारत के अन्य प्रमुख नगरों जैसे पलानी, थेनी, डिंडीगुल, कोयंबटूर से सड़क मार्ग द्वारा जुड़ा हुआ है. यहां का निकटतम रेलवे स्टेशन कोडाइ रोड 80 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है. यहां के कोडाइकनाल पहुंचने के लिए बस व टैक्सी की समुचित व्यवस्था है.

क्या देखें?

कोडाइकनाल में देखने को इतना कुछ है कि ऊबने का सवाल ही नहीं उठता. यहां का पहला दर्शनीय तथा प्रमुख आकर्षण सितारानुमा झील है. इस का निर्माण सर वेरे लेवेनजे नामक अंगरेज ने स्विट्जरलैंड के झीलों के आधार पर करवाया था. झील के चारों ओर ढलावदार पहाड़ियों पर हरेभरे पेड़ों की पंक्तियां आह्लादकारी दृश्य प्रस्तुत करती हैं. इस झील में मछली पकड़ने तथा नौका विहार करने का भी आनंद उठाया जा सकता है.

कोकर्स वाक : कोडाइ तथा पेरूमल पहाड़ों के नीचे के मैदानी क्षेत्र का मनोरम दृश्य निहारने के लिए कोडाइकनाल से एक किलोमीटर की दूरी पर स्थित कोकर्स वाक एक रमणीय स्थल है.

टेलीस्कोप हाउस: वनों से ढकी ढलानों, विशाल चट्टानों तथा आकर्षक जलप्रपातों को देखने के लिए यहां शक्तिशाली दूरबीनें लगाई गई हैं. इस का प्रयोग करने के लिए एक रुपए का शुल्क देना पड़ता है.

पीलर राक : कोडाइकनाल से 7 किलोमीटर की दूरी पर 122 मीटर ऊंची, सीधी, सपाट एक चट्टान है जो पीलर राक के नाम से जानी जाती है. यह एक आदर्श पिकनिक स्थल भी है. इस के आसपास कई गुफाएं तथा नीचे बहते चश्मों के प्राकृतिक सौंदर्य को देखते ही पर्यटकों की सारी थकान दूर हो जाती है.

वेरजाम झील : यहां से 24 किलोमीटर दूर पहाड़ों की गोद में स्थित एक निर्मल तथा स्वच्छ पानी की झील है जो 'वेरिजाम' के नाम से जानी जाती है. पेरियाकुलम कसबे को पानी की आपूर्ति इसी झील से की जाती है. मत्स्य विभाग से पूर्व अनुमति ले कर यहां मछलियों का शिकार भी किया जा सकता है.

पेनुमल पीक : कोडाइकनाल से 20 किलोमीटर दूर, सदा कोहरे से ढकी रहने वाली चोटी 'पेनुमल पीक' है. मौसम साफ रहने पर यहां से पलानी घाटी का विहंगम दृश्य देखा जा सकता है.

ब्रायंट पार्क : झील के पश्चिम भाग में स्थित यह पार्क दुर्लभ फूलों की किस्मों के लिए प्रसिद्ध है. यहां कुरुंजी का एक फूल है जो बारह वर्षों में एक बार खिलता है. पिछली बार यह 1980 में खिला था और अब 1992 में इस के खिलने की बात कही जाती है.

सिल्वर कास्केड फाल : यह खूबसूरत जलप्रपात कोडाइ जाने के रास्ते में पड़ता है. दूर पर्वतों से निकल कर चट्टानों पर गिरते इस प्रपात का जल एक नयनाभिराम दृश्य उपस्थित करता है कि पर्यटक इस के आकर्षण में खो कर रह जाते हैं. यह स्थान कोडाइकनाल से लगभग 6 किलोमीटर की दूरी पर शेनबंगानूर के पास स्थित है.

संग्रहालय : शेनबंगानूर में स्थित पेड़पौधों तथा जंतुओं के अवशेषों का संग्रहालय अपनेआप में अनूठा है. यहां फूलों के हजारों किस्मों का संग्रह तो है ही, साथ ही साथ 300 किस्मों के पौधे उगाने की भी अच्छी व्यवस्था है.

इस के अलावा गोल्फ क्लब, वीयर, कोकर्स जलप्रपात, कुरुंजी अंडावार मंदिर, फेयरी जलप्रपात, डाक्टर्स डिलाइट आदि भी यहां के दर्शनीय स्थान हैं.

मद्रास

कहां ठहरें?

होटल अमर, अन्ना सलाई; होली डे होम, गोल्फलिंक रोड, फोन: 257; पार्क व्यू रेस्ट हाउस, अपर शोला रोड; स्टर्लिंग गेस्ट हाउस, अपर लेक रोड; कोहिनूर रेस्ट हाउस, चिट्टार रोड; डेसी बैंक ट्रैवलर्स बंगलो, अपर शोला रोड; यूथ होस्टल, फर्न हिल रोड.

मद्रास

भारत के दक्षिणी अंचल को प्रकृति ने अपने हर से संवारा है. इन में विशेषतौर पर तमिलनाडु की राजधानी मद्रास, जो बंगाल की खाड़ी के तट पर दूरदूर तक फैला हुआ है, अपनी ऐतिहासिक इमारतों, रमणीक उद्यानों व सुंदर समुद्रतटों के कारण पर्यटकों के बीच अपना विशिष्ट स्थान बनाने में पूरी तरह सफल उतरा है. समय के प्रत्येक परिवर्तन के साथसाथ इस के रूपरंग में परिवर्तन अवश्य हुआ लेकिन अपनी मूलभूत खूबियों को इस ने कभी अपने से अलग नहीं होने दिया. उत्तर भारत की तरह यह प्रदेश आपसी संघर्ष और विदेशी आक्रमण का विशेष केंद्र नहीं रहा. इस वजह से कला और संस्कृति का जितना विकास यहां हुआ उतना कहीं और नहीं हो सका. इस की नींव 16 अप्रैल ई. में ईस्ट इंडिया कंपनी के फ्रांसिस डे ने डाली थी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कैसे जाएं

भारत के सभी प्रमुख नगरों से मद्रास के लिए रेल सेवाएं उपलब्ध हैं. दिल्ली से जाने वालों के लिए जी.टी. एक्सप्रेस, तमिलनाडु एक्सप्रेस तथा हिमसागर एक्सप्रेस, बंबई से मद्रास मेल, लखनऊ से लखनऊ मद्रास एक्सप्रेस, वाराणसी से गंगा कावेरी एक्सप्रेस, कलकत्ता से मद्रास मेल, मद्रास-हावड़ा जनता एक्सप्रेस, कोरोमंडल एक्सप्रेस आदि प्रमुख रेलें हैं. ये दिल्ली से मद्रास तकरीबन 34 घंटे, बंबई से 27 घंटे तथा कलकत्ता से 27 घंटे लेती हैं. यहां दो रेलवे स्टेशन हैं मद्रास सेंट्रल तथा एडमोरा. मद्रास सेंट्रल से दूरस्थ स्थानों के लिए तथा एडमोरा से दक्षिण भारत के निकटवर्ती स्थानों के लिए रेलगाड़ियां आतीजाती हैं.

कोडाइकनाल

कहां ठहरें?

ब्लू स्टार इंटरनेशनल, 108, बाल टैक्स रोड, फोन: 300005; ब्लू डायमंड, पूनामली हाई रोड, फोन: 665981; गुरु होटल, 69, मार्शल रोड, फोन: 862002; होटल हैरीसंस, 154/155, विलेज रोड, फोन: 863339,863354; इंपाला कांटीनेंटल, 12, गांधी इर्विन रोड, फोन: 842578; इंपीरियल, 14, वहानेल्स रोड, फोन: 566176; मद्रास इंटरनेशनल, 693, माउंट रोड, फोन: 811811, 812584; न्यू विक्टोरिया होटल, 3, कीनेट लेन, फोन: 567738; पामग्रोव होटल, 5, कोडामबक्कम रोड, फोन: 471881 (10 लाइनें) क्वींस होटल, विलेज रोड, फोन: 82176 (6 लाइनें) पिकनिक होटल, 1132, पूनामलय हाई रोड, फोन: 39021; ताज कोरोमंडल होटल, 17, नूनगमबक्कम हाई रोड, फोन: 474849; सिल्वर स्टार्स, 5, पुराबक्कम हाई रोड, फोन: 664414; श्रीलेखा इंटरकांटीनेंटल, अन्ना सलाइ, फोन: 840081; टूरिस्ट होम, 21, गांधी इर्विन रोड, फोन: 567079.

दिल्ली से मद्रास जाने वाले पर्यटकों के लिए तमिलनाडु एक्सप्रेस अपेक्षाकृत अधिक सुविधाजनक है. इस में अपेक्षाकृत कम समय (लगभग 34 घंटे) लगता है.

सड़क द्वारा भी मद्रास देश के सभी प्रमुख शहरों से जुड़ा हुआ है लेकिन यात्रा आरामदायक नहीं कही जा सकती है. इस के निकटतम राज्यों व स्थानों जैसे बंगलौर, मैसूर, तंजौर, गोआ, पांडिचेरी आदि से इन राज्यों की टूरिस्ट तथा स्टेट ट्रांसपोर्ट कारपोरेशन की बसों तथा टैक्सियों द्वारा जाया जा सकता है.

अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा होने के कारण देश व विदेश से यहां के लिए सीधी विमान सेवाएं उपलब्ध हैं. यहां सिंगापुर एअरलाइंस, मलेशियन एअरलाइंस, नेपाल एअरलाइंस, एअर लंका आदि के विमान आतेजाते रहते हैं. देश में इंडियन एअरलाइंस तथा वायुदूत की सेवाएं बंबई, कलकत्ता, दिल्ली, लखनऊ, हैदराबाद, बंगलौर आदि जगहों से रोजाना उपलब्ध हैं.

कब जाएं?

मद्रास जाने का उपयुक्त समय नवंबर से मार्च तक है. वैसे तो पर्यटकों की भीड़ यहां बारहों महीने लगी रहती है लेकिन अप्रैल से जून तक बेहिसाब गर्मी व जुलाईअगस्त में वर्षा होने के कारण पर्यटन का आनंद नहीं उठाया जा सकता है. यहां के अधिकांश भागों में पूरे वर्ष भर गर्मी रहती है. इसलिए हलके सूती कपड़ों को साथ रखना पर्याप्त है. शहर के दर्शनीय स्थानों को देखने के लिए कंडक्टेड टूर के साथसाथ टैक्सियों, सिटी बस सेवाओं व आटोरिकशा का सहारा लिया जा सकता है.

क्या देखें?

मद्रास दर्शन के लिए स्थानीय ट्रेवल एजेंसियां प्रतिदिन प्रायः दो टूर कंडक्ट करती हैं, एक प्रातः 9 बजे से अपराह्न 2 बजे तक और दूसरा अपराह्न 2 बजे से सायं 7 बजे तक. इन का किराया प्रति टूर 40 रुपए है. इन के द्वारा मद्रास नगर के प्रमुख दर्शनीय स्थलों की सैर की जा सकती है. नेशनल ट्रेवल एजेंसी आदि मद्रास के निकटवर्ती दर्शनीय स्थलों के भ्रमण भी कराती हैं. इन का किराया 60 रुपए प्रति व्यक्ति है. इन टूरों से वी.जी.पी. गोल्डन बीच, फ्रोकेडायल बैंक, पाशीतीर्थम आदि की सैर की जा सकती है. इन टूरों की बसें प्रायः प्रातः 8 बजे मद्रास से चलती हैं और शाम 7 बजे लौटती हैं. इन टूरो के वीडियो कोचों में वीडियो का कोई अतिरिक्त शुल्क नहीं लगता. इन टूरों से मद्रास भ्रमण में एक ही खटकन है, समय की पाबंदी अन्यथा ये टूर अपेक्षाकृत सस्ते पड़ते हैं.

सेंट जार्ज फोर्ट : मद्रास के प्रमुख पर्यटन स्थलों में सेंट जार्ज फोर्ट का विशेष स्थान है. इसे 1640 ई. में ईस्ट इंडिया कंपनी के फ्रांसिस डे ने बनवाया था. 1653 में यह ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी का व्यापारिक केंद्र बन गया. 150 वर्षों तक यह किला राजनीतिक षड्यंत्रों और युद्धों का अड्डा बना रहा. इसे कई बार ब्रिटिश सेना ने अपने पास रखा और कई बार फ्रांसीसियों का इस पर कब्जा रहा. एक दिलचस्प बात यह है कि राबर्ट क्लाइव ने एक बार यहां ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी में पेरोल पर एक क्लर्क के रूप में काम किया था, जो बाद में भारत में ब्रिटिश साम्राज्य का संस्थापक और गवर्नर बना. किले में पुरानी सैनिक छावनी, अफसरों के मकान और दो ऐतिहासिक महत्त्व की इमारतें हैं. एक सेंट मेरी का गिरजाघर, जिस का निर्माण सन् 1680 में किया गया था. इस को अंगरेजों द्वारा निर्मित पूर्व का सब से पुराना गिरजाघर कहा जाता है. दूसरा राबर्ट क्लाइव का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मकान जो अब संग्रहालय बन गया है जिस में ईस्ट इंडिया कंपनी और भारत में ब्रिटिश राज्य संबंधी अनेक वस्तुएं सुरक्षित रखी हुई हैं.

इन दिनों इस किले में ही तमिलनाडु राज्य की विधानसभा और सचिवालय हैं और अब भी यह उसी तरह राजनीतिक गतिविधियों का अड्डा बना हुआ है, जैसा शताब्दियों पहले था.

अन्ना स्क्वेअर : मरीना बीच (तट) के उत्तरी भाग पर अन्ना स्क्वेअर एक खूबसूरत बगीचे के बीच में स्थित है. इस का प्रवेशद्वार दो विशाल हाथी दांतों के रूप में बनाया गया है. इस में एक विशाल स्मारक स्तंभ है और एक मशाल निरंतर जलती रहती है. यह स्क्वेअर तमिलनाडु के भूतपूर्व मुख्य मंत्री अन्नादुराई की समाधि पर बनाया गया है, जो यहां के निवासियों के लिए एक पवित्र स्थान है.

मरीना बीच (तट) : मद्रास का गौरव मरीना बीच विश्व का दूसरा सब से लंबा समुद्रतट है. इस के 200 से 300 गज चौड़े रेतीले तट पर अधिक भीड़भाड़ नहीं रहती है. इस का मुख्य कारण मेरीना तट पर शार्क मछलियों की बहुलता होना है. यहां तैरना भी खतरनाक है. इसलिए पर्यटकों की सुविधा के लिए अलग से स्वीमिंग पूल बनाया गया है. इस स्वीमिंग पूल के दक्षिण में एक मछलीघर भी है जिस में तरहतरह की देशीविदेशी मछलियां हैं.

स्नेक पार्क : यहां का सर्प उद्यान रोमुलसव्हटिकर नामक अमरीकी द्वारा गुइनडी डीयर पार्क में बनाया गया है. यहां भारतीय सांपों की 500 से अधिक किस्में रेंगती दिख जाएंगी. रेंगने वाले अन्य जानवरों में मगरमच्छ, घड़ियाल, छिपकली, गिरगिट आदि की भी भरमार है. यह पर्यटकों के लिए पूरे सप्ताह सुबह 9 बजे से शाम के 6 बजे तक खुला रहता है.

सरकारी संग्रहालय व आर्ट गैलरी : एडमोर रेलवे स्टेशन के निकट पैनथियन रोड पर आर्ट गैलरी गोथिया भवन में स्थित है. यहां के संग्रहालय में चोल काल की कांसे की मूर्तियां, द्रविड़ काल की पीतल की प्रतिमाएं तथा स्थापत्य काल के अद्भुत नमूने संग्रहीत कर रखे गए हैं. यह सरकारी छुट्टियों वाले दिनों को छोड़ अन्य दिनों में सुबह 8 बजे से शाम के 5 बजे तक खुला रहता है.

कालीश्वर मंदिर : मिलापोर स्थित कालीश्वर मंदिर एक दर्शनीय स्थल है. एक मिथक के अनुसार पार्वती ने संतान उत्पत्ति के लिए स्वयं को मोर के रूप में बदल कर शिव की उपासना की थी. इसी गाथा को मंदिर में चित्रित किया गया है. यह द्रविड़ शिल्पकला का सुंदरतम नमूना है.

पार्थसारथी मंदिर : तिरुपैलिकेनी स्थित इस वैष्णव मंदिर को 8वीं शताब्दी में एक पल्लव राजा ने बनवाया था. बाद में चोल, पांड्य व विजयनगर के राजाओं ने इस की समुचित देखभाल की. इस के देवालय की आंतरिक दीवारों पर मनोरंजक चित्रकारी की गई है. यह मंदिर विष्णु को समर्पित है.

थियोसोफिकल सोसायटी : अडयार स्थित थियोसोफिकल सोसायटी का मुख्यालय भी दर्शनीय स्थलों में महत्त्वपूर्ण है. इस की स्थापना डा. ऐनीबेसेंट ने की थी. इस के आंगन में जो तीन पीपल के विशाल वृक्ष हैं उसे देश के सब से पुराने व विशाल वृक्षों में रखा गया है लेकिन हाल ही में इन वृक्षों पर बिजली गिर जाने से इस का अधिकांश भाग सूख गया है.

अन्य दर्शनीय स्थल : मद्रास के अन्य दर्शनीय स्थलों में नुंगमबक्कम स्थित बतलुवरकोट्टम का स्मारक देखने लायक है. इस का एक सभा भवन एशिया के सब से बड़े सभा भवनों में से है. इस के अलावा रिपन भवन हिंदू, मुसलिम और यूरोपीय स्थापत्य कला का सुंदर नमूना है. यहां का चिड़ियाघर अपने ढंग का देश में सब से पुराना चिड़ियाघर है. 1,265 एकड़ में फैले इस चिड़ियाघर में 61 नस्ल की चिड़ियां, 28 तरह के जानवर तथा 8 नस्ल के रेंगने वाले जीव जंतुओं का देखने लायक जमघट है. मद्रास के निकट पाशी तीर्थम भी एक अच्छी सैरगाह है. यह एक पहाड़ी पर स्थित है. कहा जाता है कि यहां एक पक्षी का जोड़ा रोजाना आता है.

क्या खरीदें

पर्यटन के दौरान मद्रास में बनने वाली प्रमुख चीजों में गलीचा, हथकरघों से बुने वस्त्र, जरीदार साड़ियां, कांसे की चोल शैली की ठोस एवं खोखली मूर्तियां, शंख, सीपियां, लैंपशेड, राखदान, पेपरवेट, अगरबत्ती स्टैंड आदि खरीदे जा सकते हैं. इन चीजों की खरीदारी पुराने मद्रास स्थित पैरीन कार्नर तथा नए मद्रास स्थित अन्नासल्लाई या माउंट रोड पर की जा सकती है. अन्नासल्लाई में कामधेनु सुपर मार्केट, पूमपुहार, हैंडिक्राफ्ट एंपोरियम, वनविल कोओपटेक्स, हैंडलूम शाप आदि महत्त्वपूर्ण दुकानें हैं. अन्य बाजारों में एसप्लेनेड रोड, पोंडी बाजार, पानागल पार्क आदि हैं.

दिल्ली

यों तो दिल्ली एक ऐतिहासिक महानगर है, महाभारत काल से यह भारत की राजधानी का गौरव पाती रही है और न जाने कितनी बार उजड़ी और बसी है. किंतु एक पर्यटन स्थल के रूप में इस का विकास अधिक पुराना नहीं है. मुगलकालीन वास्तुकला के अभिन्न अंग फुहारों के कारण कभी दिल्ली को 'फुहारों का नगर' कहा गया था. किंतु आज यह उद्यानों का नगर बन गया है.

ब्रिटिश साम्राज्य ने दिल्ली की मुगलशाही नगर की कल्पना को लंबीलंबी वृक्षवीथिओं, शानदार लानयुक्त भवनों तथा रमणीक उद्यानों के रूप में नया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मोड़ दिया था. किंतु आज की दिल्ली अंगरेज वास्तुविद लुटनी तथा हर्बर्ट बेकर की कल्पनाओं से भी अधिक विकसित हो चुकी है. यहां दूरदूर तक फैले हरियाले मैदानों में तराशी हुई घास की सोंधीसोंधी सुगंध, लता मंडित खंडहरों, महराबों, बागबगीचों में रंगबिरंगे फूलों की बहार में पर्यटकों की सारी थकान दूर हो जाती है.

क्या देखें?

पुराना किला: लगभग डेढ़ वर्ग किलोमीटर में स्थित यह आयताकार किला मध्यकालीन भारतीय इतिहास के दो शासकों हुमायुं और शेरशाह सूरी द्वारा बनवाया गया था. पुरातत्त्वविदों के अनुसार हुमायूं ने इस किले की नींव रखी थी. बाद में शेरशाह सूरी ने इसे पूर्णता प्रदान की. नवीनतम शोधों ने इस धारणा का भी खंडन किया है कि महाभारत कालीन पांडवों ने इंद्रप्रस्थ में जिस किले का निर्माण कराया था, वह यही है.

किले के अंदर षड्भुजाकार एक द्विमंजिली मीनार है. जिसे 'शेर मंडल' या 'शेर मंजिल' कहते हैं. इस मीनार की सीढ़ियों से फिसल कर गिरने से हुमायूं की मृत्यु हुई थी. इस मीनार के अलावा किले में लाल व सफेद पत्थरों से बनी 'किलाएकुहना' नामक मसजिद दर्शनीय है. किले के एक भाग में पुरातात्त्विक संग्रहालय भी है. किले के भीतर और बाहर वृक्षादि लगा कर पुरातत्त्व व पर्यटन विभागों ने इसे एक पर्यटन स्थल के रूप में विकसित कर दिया है.

लाल किला: लाल पत्थरों का यह किला 1638 में शाहजहां ने बनवाया था. इस किले के तख्ते ताऊस को उठवा कर नादिरशाह तेहरान ले गया था. प्राचीन ही नहीं, आधुनिक इतिहास की दृष्टि से भी यह एक महत्त्वपूर्ण किला है. स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से प्रति वर्ष 15 अगस्त को भारत के प्रधान मंत्री इसी किले पर झंडा फहराते हैं. किले में शाही आवासों, विहारों के साथसाथ एक संग्रहालय भी देखने योग्य है, जहां मुगलकालीन हथियारों तथा अन्य महत्त्वपूर्ण वस्तुओं का संग्रह है.

कुतुबमीनार: महरौली स्थित कुतुबमीनार विश्व की सुंदरतम मीनारों में गिनी जाती है. मीनार की ऊंचाई 73 मीटर है. यह मीनार कुतुबुद्दीन ऐबक ने बनवाई थी. इस धारणा को कुछ वर्ष पूर्व खंडित कर दिया गया, जब मीनार के नीचे के भाग की खुदाई में हिंदू मूर्तियां प्राप्त हुईं. अब इतिहासकारों की मान्यता है कि इस मीनार को पृथ्वीराज चौहान के समय में बनवाया गया था. मीनार के पास ही पृथ्वीराज चौहान के किले के ध्वंसावशेष पड़े हैं. प्रारंभ में यह मीनार सात मंजिल की थी. किंतु समय के थपेड़े खाखा कर ऊपर की दो मंजिलें ढह गई हैं. शेष बची पांच मंजिलों में से प्रथम तीन मंजिलों तक ही पर्यटकों को चढ़ने की अनुमति है.

जामा मसजिद: विश्व की सब से बड़ी मसजिदों में गिनी जाने वाली जामा मसजिद शाहजहां द्वारा बनवाई गई संभवतः आखिरी इमारत है. यह मसजिद लाल किला के सामने बनी है. लाल बलुआ पत्थरों से बनी इमारत में तीन प्रवेश द्वार हैं. मसजिद के नमाज हाल में हजारों व्यक्ति एक साथ बैठ कर नमाज अदा करते हैं.

जंतरमंतर: यह प्राचीन कालीन समय मापक वेधशाला है, जिसे जयपुर नरेश सवाई जयसिंह ने

कहां ठहरें?

ओबेराय मैडन, फोन : 2525464; अशोका होटल, फोन : 600121, 600412; अशोक यात्री निवास, फोन : 3324511; होलीडे इन, फोन : 3314691; हयात रीजैंसी, फोन : 60991; मरीना होटल, फोन : 3324658; मेरीडियन होटल, फोन : 383960; कुतुब होटल, फोन : 660060; सिद्धार्थ कॉंटीनेंटल, फोन : 678800; ताज पैलेस, फोन : 3010404; द ओबेराय, फोन : 363030; बाबा होलीडे होम, फोन : 625319; ब्राडवे होटल, फोन : 273821; संतूर होटल, फोन : 545223; माउंट विला, फोन : 633550; रायल यार्क, फोन : 674000; एंबेसेडर, फोन : 690391; एकांत होटल, फोन : 522392; डिप्लोमेट होटल, फोन : 3010204; इंपीरियल होटल, फोन : 33253332; कनिष्क होटल, फोन : 3324422; जनपथ होटल, फोन : 3320070; मधुवन होटल, फोन : 640319; मेट्रो होटल, फोन : 3315481; नरूला होटल, फोन : 3322419; प्रेसीडेंट होटल, फोन : 277836; सम्राट होटल, फोन : 603030; ताजमहल होटल, फोन : 3016162; टूरिस्ट कैंप, फोन : 272898; विक्रम होटल, फोन : 6436451; मौर्या शेरेटन होटल, फोन : 3010101; योर्क होटल, फोन : 3323769; वुडस्टाक होटल, फोन : 619083; सोफिटल सूर्या होटल, फोन : 6835070; सोढी होटल, फोन : 6432381; सोबती होटल, फोन : 5729065; साऊथ इंडिया होटल, फोन : 5723651; सूर्या डिलक्स होटल, फोन : 532344; द नेस्ट, फोन : 526614, 512575; टूरिस्ट होलीडे होम, फोन : 618797; सरताज होटल, फोन : 663277; सत्कार होटल, फोन : 664572.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

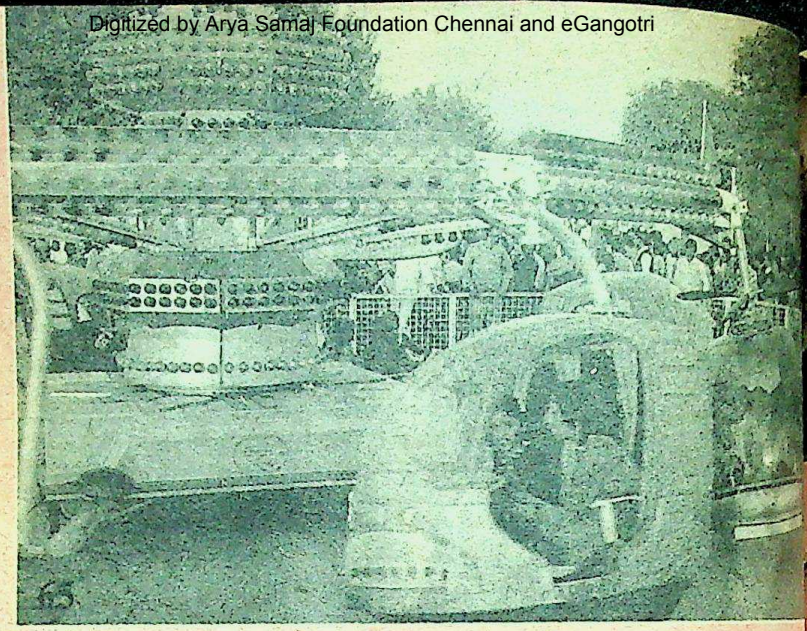

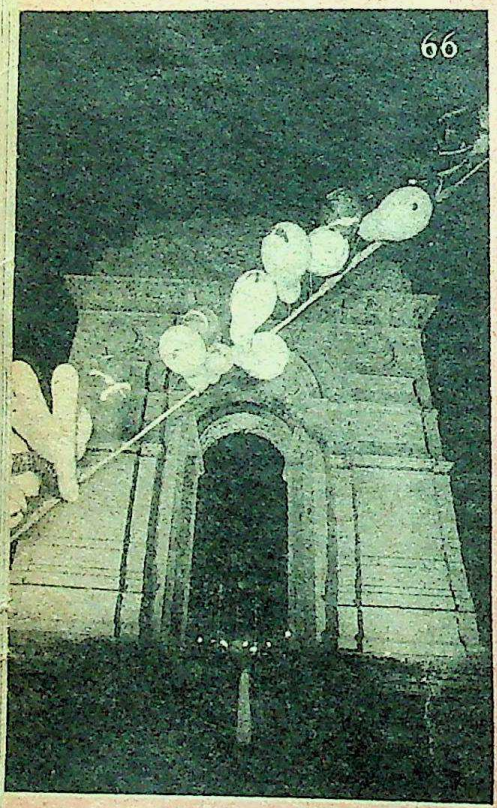

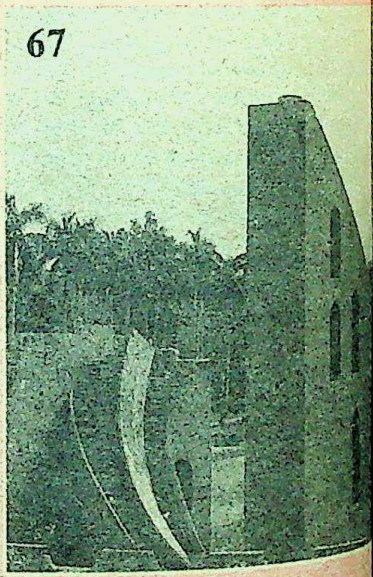

65. दिल्ली का अप्पू घर : डिजनीलैंड की तरह बने इस पार्क में मनोरंजन के कई साधन उपलब्ध हैं.

66. रात के समय जगमगाता इंडिया गेट बहुत सुंदर लगता है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

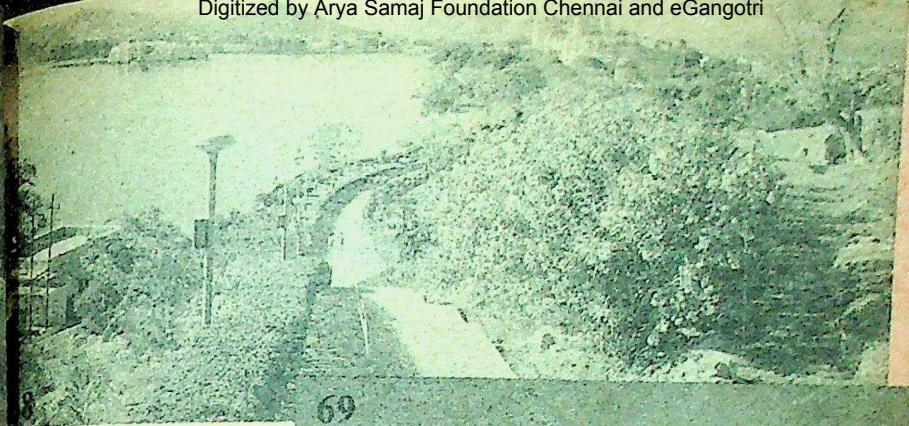

67. दिल्ली का जंतरमंतर: यह प्राचीन कालीन समय मापक वेधशाला है.

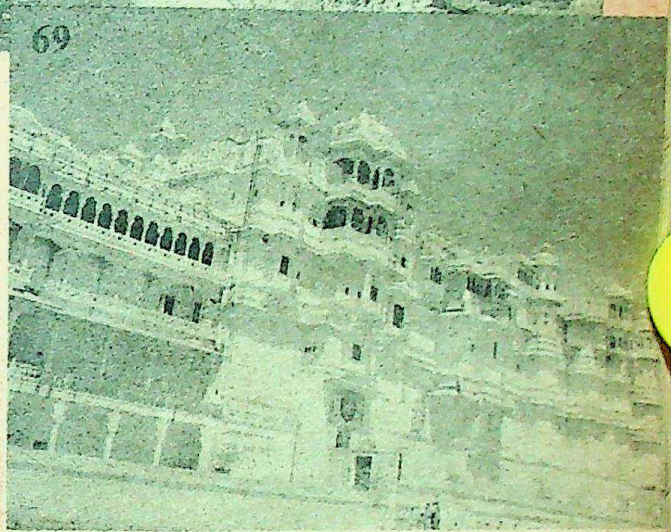

68. उदयपुर की फतहसागर झील तीन तरफ पहाड़ों से घिरी है.

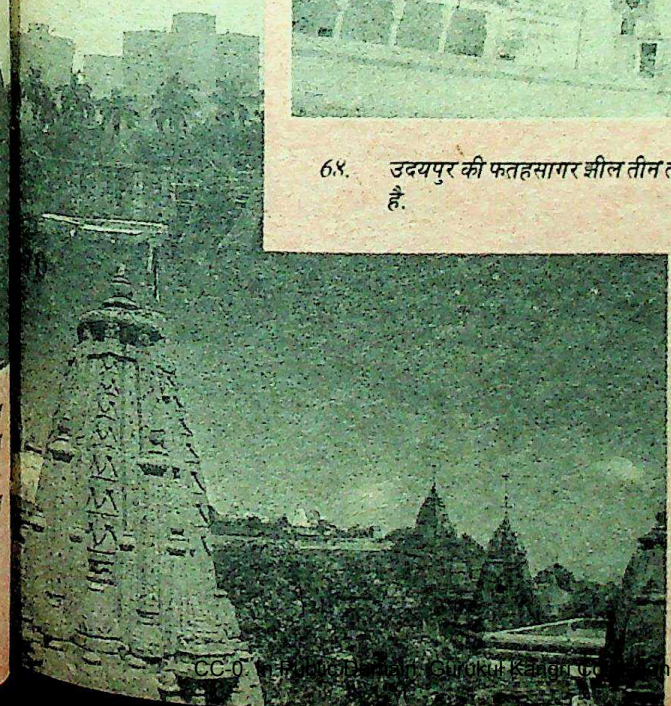

69. उदयसिंह द्वारा बनवाया गया महल काफी भव्य है.

70. पालिताना का मुख्य आकर्षण यहां के जैन मंदिर हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बनवाया था. इसे सूर्य घड़ी के नाम से भी जाना जाता है. साधारणतः देखने में यहां स्थित छहों स्तंभों में कोई खास बात नजर नहीं आती किंतु ग्रह, नक्षत्रों की गति, उन के आकार आदि से परिचित पर्यटक सहज ही स्तंभों की विशेषताओं से अवगत हो जाते हैं.

हुमायूं का मकबरा: 1565 में निर्मित हुमायूं का मकबरा फारसी भवन निर्माणकला का उत्तम उदाहरण है. यह काले, पीले और सफेद संगमरमर के पत्थरों से बना है. इस में हुमायूं, उस की हाजी बेगम और शाहजहां के बड़े बेटे दाराशिकोह की कब्रें हैं.

इंडिया गेट: प्रथम विश्व युद्ध में शहीद हुए सैनिकों की स्मृति में निर्मित इंडिया गेट पर प्रतिदिन हजारों पर्यटक अपने श्रद्धा सुमन चढ़ाने जाते हैं. यह 42 मीटर ऊंचा द्वार है, जिस की दीवारों पर 90,000 शहीद सैनिकों के नाम अंकित हैं. द्वार के केंद्र में एक 'अमर ज्योति' प्रज्ज्वलित है, जो भारत पाकिस्तान युद्ध में हुए शहीदों की याद में जलाई गई थी. इंडिया गेट के आसपास दूरदूर तक फैले घास के रमणीक मैदान हैं, जहां लोग पिकनिक का आनंद भी लेते हैं. इंडिया गेट के निकट ही बना बाल पार्क बच्चों के मनोरंजन के लिए एक उत्तम स्थान है.

राष्ट्रपति भवन: रायसीना पहाड़ी को काट और तराश कर बनाया गया राष्ट्रपति भवन पहले भारत के गवर्नर जनरल का निवास स्थान था. किंतु अब इस में वर्तमान भारत के राष्ट्रपति रहते हैं. शिल्प कला की दृष्टि से यह भवन अत्यंत आकर्षक है. राष्ट्रपति भवन के परिसर में मुगल गार्डन है. यह पर्यटकों के लिए केवल फरवरी में खोला जाता है. राष्ट्रपति भवन देखने के लिए सक्षम अधिकारियों से अनुमति लेना जरूरी है.

संसद भवन: इस गोलाकार इमारत का व्यास 171 मीटर है. यहां राज्य सभा और लोकसभा की बैठकें होती हैं. पर्यटक दर्शक दीर्घा से संसद की कार्रवाई देख सकते हैं. इस के लिए पूर्व अनुमति ले लेनी चाहिए.

कनाट प्लेस: कनाट प्लेस को दिल्ली का दिल कहा जाता है. कनाट प्लेस का रचना शिल्प देखते ही बनता है. प्रारंभ में यहां छः ब्लाक अंदर की ओर तथा छः ब्लाक बाहर की ओर बने थे. इन्हें क्रमशः कनाट प्लेस और कनाट सरकस कहते हैं. कनाट सरकस में 1021 तथा कनाट प्लेस में 585 खंभे हैं जो उन के गलियारों की छतों के आधार हैं. बाद में कनाट सरकस के बाहर की ओर बनी सड़क पार कर के अनेक उच्च अट्टालिकाएं बन गई हैं.

कनाट प्लेस के मध्य में एक सुंदर पार्क है, जहां मखमली घास, फुहारा, वृक्षों की आनंददायक छाया में पर्यटकों को काफी राहत मिलती है. यहां पालिका बाजार भी है. कनाट प्लेस में होटलों, रेस्तरांओं, एयरलाइंसों के बुकिंग कार्यालयों, ट्रेवल एजेंसियों, सिनेमाहालों, विविध व्यावसायिक दुकानों की भरमार है.

उपर्युक्त स्थलों के अतिरिक्त भी दिल्ली में अनेक पर्यटन स्थल हैं जिन्हें समय होने पर आप अवश्य देखें, जैसे—फीरोजशाह कोटला, हजरत निजामुद्दीन, सफदरजंग मकबरा, महात्मा गांधी का समाधि स्थल राजघाट, जवाहरलाल नेहरू का समाधि स्थल शांति वन, लालबहादुर शास्त्री का समाधि स्थल, विजय घाट, चरण सिंह का समाधि स्थल, किसान घाट, इंदिरा गांधी का समाधि स्थल शक्ति स्थल, लक्ष्मी नारायण मंदिर, चांदनी चौक.

इन के आलावा प्रगति मैदान और अप्पू घर भी दर्शनीय है जिसे देखे बगैर पर्यटन का मजा अधूरा रह जाता है. यहां मनोरंजन के बहुत से साधन हैं.

सूरज कुंड

दिल्ली आगरा मार्ग पर दक्षिण दिल्ली से लगभग आठ किलोमीटर की दूरी पर स्थित सूरजकुंड हरियाणा राज्य का रमणीक पर्यटन स्थल है. यद्यपि यहां पर्यटकों के ठहरने की समुचित व्यवस्था है, फिर भी यदि आप चाहें तो दिल्ली पर्यटन के दौरान दिल्ली में ठहर कर भी सूरजकुंड का पर्यटन कर सकते हैं. दिल्ली से सूरजकुंड के लिए बसें व टैक्सियां उपलब्ध रहती हैं.

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में बताया जाता है कि 10वीं सदी में यहां तोमर राजवंशीय राजा सूरजपाल ने एक तालाब एवं सूर्य मंदिर बनवाया था. कटावदार चट्टानों से घिरा यह तालाब उदीयमान सूर्य सा प्रतीत होने के कारण सूरज कुंड कहलाया. पिकनिक की दृष्टि से भी यह एक सुरम्य स्थल है, जहां प्रायः प्रतिदिन पिकनिक के लिए आए लोगों की चहलपहल बनी ही रहती है.

सूरजकुंड में प्रतिवर्ष एक फरवरी से 15 फरवरी तक देश की ग्राम्य संस्कृति एवं शिल्पकला को प्रोत्साहन देने के लिए एक हस्तशिल्प मेले का आयोजन किया जाता है, जिस में विभिन्न प्रदेशों की शिल्प कलाओं को देख कर आप मोहित हो जाएंगे. इस अवसर पर लोकसंस्कृति से संबद्ध अनेक रंगारंग कार्यक्रमों का भी आयोजन किया जाता है.

सूरजकुंड के निकटवर्ती दर्शनीय स्थलों में अनंगपाल का किला, तुगलकाबाद अशोक विहार आदि की भी सैर कर सकते हैं.

बड़खल झील

यदि आप प्राचीन कलात्मक इमारतें, मंदिर, संग्रहालय आदि देखदेख कर थक गए हों, कुछ मनोरंजन करना चाहते हों, एकांत में बैठ कर प्रकृति की सुरम्यता का आनंद लेना चाहते हों, अथवा पिकनिक का मूड हो रहा हो तो दिल्ली से लगभग 32 किलोमीटर दूर, मनोरम पिकनिक स्थल के रूप में विकसित है हरियाणा की बड़खल झील. दिल्ली और फरीदाबाद से बड़खल झील के लिए बसें, टैक्सियां आदि मिल जाती हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छोटीछोटी पहाड़ियों से घिरी यह झील चतुर्भुजाकार है. यहां नौका विहार का आनंद लिया जा सकता है. यहां मत्स्य शिकार की सुविधाएं भी उपलब्ध हैं, किंतु इस के लिए संबंधित अधिकारी से अनुमति ले लेनी चाहिए. मत्स्य शिकार संबंधी उपकरण यहां किराए पर प्राप्त किए जा सकते हैं.

बड़खल में एक स्वीमिंग पूल, कैफे एवं खरीदारी का केंद्र भी है. यहां पर्यटकों के ठहरने की भी व्यवस्था है.

उदयपुर

भारत पर्यटन में उदयपुर शहर का विशेष स्थान है. राजस्थान का यह नगर दूसरा कश्मीर कहा जाता है. खूबसूरत बगीचे, झीलों और फव्वारों के कारण इस का लुभावना प्राकृतिक स्वरूप है. अरावली की आकाश को छूती चोटियों से ऐसा लगता है मानो यह नगर पर्वत की गोद में बसा हो. मेवाड़ राज्य के महाराणा उदयसिंह ने इसे सन 1559 ई. में बसाया था. यह नगर पिछौला झील के किनारे होने से वर्ष भर सैलानियों को लुभाता है.

उदयपुर नगर कैसे बसाया गया, इस के पीछे हुई घटना के अनुसार एक बार महाराणा उदयसिंह शिकार खेलते हुए झील के किनारे तक पहुंच गए. उन के मन में विचार आया कि इस स्थान को अपनी राजधानी बनाना चाहिए. झील होने से दुश्मन के हमलों से ज्यादा सुरक्षित रह सकेंगे. यही सोच कर उन्होंने अपनी राजधानी चित्तौड़ से हटा कर यहां बना ली. उदयसिंह के नाम पर नई राजधानी उदयपुर कहलाई.

क्या देखें?

अनेक दर्शनीय स्थल यहां मन को लुभाते हैं. इन में स्थापत्य कला के ऐतिहासिक स्मारक भी हैं. दक्षिणी किनारे पर पिछौला झील में झांकता है राजमहल का प्रतिबिंब. यह संगमरमर और ग्रेनाइट पत्थर से बना है. रंगीन कांच के मोर एवं रंगीन कांच के पच्चीकारी का काम दर्शनीय है. महाराणा प्रताप कक्ष, बाड़ी महल, शंभु महल तथा विविध कक्ष और भित्ति चित्र महलों के आकर्षण हैं. महल करीब एक सौ फुट ऊंचे हैं.

महलों के समीप नगर का सब से बड़ा एवं प्रसिद्ध मंदिर जगदीश मंदिर है. इसे वर्ष 1651 में महाराणा जगत सिंह ने बनवाया था. मंदिर में विष्णु भगवान की लुभावनी प्रतिमा है. मंदिर की स्थापत्य कला एवं मूर्ति शिल्प बेजोड़ है.

पिछौला झील के मध्य जग मंदिर और जग निवास (लेक पैलेस) है. झील 4 कि.मी. लंबी तथा 3 कि.मी. चौड़ी है. गणगौर घाट पर तीन दिवसीय मेवाड़ उत्सव में हजारों विदेशी मेहमान भाग लेते हैं और यहां की सांस्कृतिक परंपराएं नजदीक से देखते हैं.

सपोकार फतहसागर झील तीन तरफ से पहाड़ों से घिरी है. झील के बीच में बना नेहरू पार्क अत्यंत रमणीक है. रात में विद्युत बल्बों के प्रकाश में जगमगाहट देखते ही बनती है. रंगबिरंगे फूल और फव्वारे मोहक हैं. झील में नौका विहार का अपना आनंद है. झील के दूसरी तरफ मोती मगरी और चेतक स्मारक बना है, समीप ही पुराने महलों के खंडहरों में इतिहास सांस लेता लगता है.

सहेलियों की बाड़ी अनेक प्रकार के फव्वारों के कारण विख्यात हैं. खूबसूरत मखमली लान एवं फूलों की महकती क्यारियां लुभावनी हैं. महाराणा सज्जनसिंह द्वारा बनाया गया गुलाब बाग भारत के शानदार बगीचों में से एक है. यहां चिड़ियाघर एवं बच्चों की रेलगाड़ी बच्चों के मुख्य आकर्षण हैं. दूध तलाई नामक स्थान पर बाग एवं गांधी उद्यान भी लुभावने हैं.

भारतीय लोककलामंडल संग्रहालय, माणिक्य लाल वर्मा आदिम जाति शोध संग्रहालय तथा आहड़ संग्रहालय विशेष रूप से दर्शनीय हैं.

उदयपुर के आसपास 20 कि. मी. पर श्री एकलिंगजी, 45 कि.मी. पर नाथद्वारा में श्रीनाथजी मंदिर, 112 कि.मी. पर चित्तौड़गढ़ का ऐतिहासिक दुर्ग, 40 कि.मी. पर हल्दीघाटी के साथसाथ राज

उदयपुर

कहां ठहरें?

*अलका होटल, शास्त्री सर्किल के सामने, फोन : 28611; **आनंद भवन**, फतेहसागर, फोन : 23256, 23257; **अप्सरा होटल**, सिटी स्टेशन रोड, फोन : 23400; **अशोक होटल**, शास्त्री सर्किल, फोन : 23925; **भगवती होटल**, गुलाब बाग के सामने; **चेतना होटल**, चेतक सर्किल, फोन : 4312; **फाउंटेन होटल**, 2, कुंभ मार्ग, सुखाड़िया सर्किल, फोन : 26646; **गार्डन होटल**, गुलाब बाग के सामने, फोन : 4032; **हिलटन होटल**, फतेह सागर, फोन : 23708; **कल्पना होटल**, टाउन हाल के सामने, फोन : 23785; **लेक पैलेस होटल**, पिचोला लेक, फोन : 23241; **लेक व्यू होटल**, चेतक सर्किल के समीप, फोन : 23640; **नटराज होटल**, बापू बाजार; **पायल होटल**, स्टेशन रोड, फोन : 4150; **प्रिंस होटल**, शास्त्री सर्किल, फोन : 4355.*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समंद, जय समंद तथा उदयसागर झीलें बनाई गयी है.

गणगौर एवं तीज यहां प्रमुखता से मनाए जाने वाले पर्व एवं मेले हैं. यहां परंपरागत लकड़ी के खिलौने, भित्ति चित्रों की पेंटिंग्स, छापों के वस्त्र तथा धातु एवं पत्थर की मूर्तियां मिलती हैं. बापू बाजार, सीटी मार्केट, चेतक सर्किल एवं हाथी पोल इन वस्तुओं के खरीदने के लिए प्रमुख बाजार हैं.

भारत के प्रमुख पर्यटन स्थल, आगरा, दिल्ली, जयपुर, अहमदाबाद, अजमेर आदि से हवाई जहाज, बस एवं रेल सेवाओं से उदयपुर जुड़ा है.

प्रभातकुमार सिंघल

चित्तौड़गढ़ दुर्ग

चित्तौड़गढ़ राजस्थान में अजमेर खंडवा रेलमार्ग पर भीलवाड़ा नगर से 60 किलोमीटर दूर है. यहां के रेलवे स्टेशन से करीब तीनचार किलोमीटर दूर उत्तरपूर्व में स्थित इस ऐतिहासिक दुर्ग के दर्शन दूर से ही हो जाते हैं.

इतिहासकारों के अनुसार इस किले का निर्माण मौर्यवंशीय राजा चित्रगुप्त ने सातवीं शताब्दी में कराया था और इसे अपने नाम पर चित्रकूट के रूप में बसाया. मेवाड़ के प्राचीन सिक्कों पर एक तरफ चित्रकूट नाम अंकित मिलता है. 738 ईसवी में गुहिल वंशज बप्पा रावल ने मौर्य वंश के अंतिम शासक मान मोरी को हरा कर इसे अपने अधिकार में कर लिया.

यों तो दुर्ग के ऊपर तक पहुंचने के लिए पक्का सड़क मार्ग बना हुआ है, लेकिन भारी वाहनों का प्रवेश निषेध होने के कारण तांगा, आटोरिकशा से वहां पहुंचा जा सकता है. ऊपर जाने के लिए मार्ग में सात दरवाजे बने हुए हैं, जो पाडन पोल, भैरों पोल, हनुमान पोल, गणेश पोल, जोड़ला पोल, लक्ष्मण पोल और राम पोल कहलाते हैं.

चित्तौड़गढ़ दुर्ग का प्रमुख आकर्षण है, 'विजय स्तंभ'. महाराणा कुंभा ने मालवा के सुलतान महमूद शाह खिलजी को परास्त कर अपनी ऐतिहासिक विजय की यादगार में 1448 में इस का निर्माण करवाया. 122 फुट ऊंचे और नौ मंजिले इस स्मारक को भारतीय स्थापत्य कला का उत्कृष्ट उदाहरण माना जा सकता है. विजय स्तंभ के भीतर 157 सीढ़ियां हैं. कहते हैं कि इस के निर्माण में सात साल का समय लगा.

लगभग विजय स्तंभ जैसा ही है 'कीर्ति स्तंभ'. यह 75 फीट ऊंचा और सात मंजिला है. कीर्ति स्तंभ का निर्माण 14वीं शताब्दी में दिगंबर जैन संप्रदाय के बगेरवाल महाजन सानाय के पुत्र जीजा ने करवाया था. स्तंभ के ऊपर जाने के लिए तंग नाल बनी है तथा 54 सीढ़ियां हैं. इस स्मारक में जैन तीर्थंकरों की अनेक मूर्तियां उकेरी गई हैं.

चित्तौड़गढ़ दुर्ग का एक और आकर्षण है, रानी पद्मिनी के महल. रावल रतन सिंह की रूपवती रानी पद्मिनी इन्हीं महलों में रहती थी. मरदाना महल के एक कमरे में विशाल दर्पण इस युक्ति से लगा है कि यहां से झील के मध्य बने जनाना महल की सीढ़ियों पर खड़े किसी भी व्यक्ति का स्पष्ट प्रतिबिंब दर्पण में नजर आता है. परंतु पीछे मुड़ कर देखने पर सीढ़ियों पर खड़े व्यक्ति को नहीं देखा जा सकता. अनुमान है कि अलाउद्दीन खिलजी ने यहीं खड़े हो कर रानी पद्मिनी का प्रतिबिंब देखा था.

पद्मिनी महलों में जो बगीचा है, वह सूख रहा है. फूलों के पौधे मुरझाए से लगते हैं. झील का पानी भी गंदलागंदला सा और काई युक्त है. महल की दीवारों से पलस्तर उखड़ रहा है.

वैसे तो इस दुर्ग में एक 'हिरन पार्क' भी है, लेकिन आजकल उस में हिरन नहीं रहे. कारण, सघन वन नहीं रहे और तापमान बढ़ जाने से इस पार्क में गरमी के दौरान रहना मुशकिल हो जाता है. अतः उन हिरनों को उदयपुर चिड़ियाघर भिजवा दिया.

एक बात और, इस लंबेचौड़े दुर्ग में एक भी होटल, ढाबा अथवा रेस्तरां नहीं है. हां, छोटीमोटी धाम की गुमटियां अवश्य हैं.

इस दुर्ग में पत्ता का स्मारक, तुलजा भवानी का मंदिर, बनवीर की दीवार, नवलखा भंडार, तोपखाना, भामाशाह हवेली, फतह प्रकाश, शृंगार चंवरी, कुंभा महल, सतबीस देवरा, कुंभश्याम मंदिर, मीरा मंदिर, विजय स्तंभ, महासती जौहरस्थल, गौमुख कुंड, कालिका मंदिर, सूर्य कुंड, पद्मिनी महल, जैन कीर्ति स्तंभ, रतन सिंह के महल और रतनेश्वर तालाब आदि अनेक दर्शनीय स्थल हैं, लेकिन इन में से अधिकतर की स्थिति 'पत्थरों के ढेर' जैसी होती जा रही है. अधिकतर स्मारक टूटेफूटे खंडहरों की शक्ल में दिखाई देंगे.

इस तरह यह कह सकते हैं कि कुछ तो काल के थपेड़े सहतेसहते यह दुर्ग खंडहर की शक्ल ले रहा है, कुछ उचित देखरेख के अभाव में यहां के स्मारक पत्थरों के ढेर बनते जा रहे हैं. अव्यवस्थाओं, असुविधाओं के कारण पर्यटक एक बार यहां आने के बाद दूसरी बार आने का नाम नहीं लेते.

-श्यामसुंदर जोशी

मांडू

मुगल सम्राट जहांगीर का मांडू के बारे में कहा गया यह वाक्य समीचीन प्रतीत होता है कि 'वर्षाऋतु के दिनों में सर्वत्र हरियाली तथा निर्मल आकाश के बीच मांडू जितना खूबसूरत प्रतीत होता है, उतना शायद किसी चित्रकार के द्वारा बनाया गया चित्र भी आकर्षक नहीं होगा.'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मांडू के ढहते हुए महलों के खंभे, मसजिदों तथा कब्रगाहों के आकर्षक रूप, सूर्य की लालिमा में प्रतिबिंबित स्तंभों का सिलसिला, चारों ओर पथरीली पहाड़ियों तथा मिट्टी के टीलों का अद्भुत समन्वय, आज भी बीते हुए युग की याद दिलाता है. पर्यटक वहां पहुंच कर मानसिक रूप से बरबस ही बीते हुए काल में पहुंच जाते हैं. मांडू देखने पर स्वतः ही यह जिज्ञासा उत्पन्न होती है कि प्राकृतिक सौंदर्य तथा ऐतिहासिक गरिमा की हर परिभाषा को पूरी करने के बावजूद भी यह सैलानियों को अपनी ओर आकर्षित कर पाने में पूरी तरह सफल क्यों नहीं हो पाया है.

समुद्रतल से 634 मीटर की ऊंचाई पर 46 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में विंध्याचल पर्वत के एक ऊंचे पठार पर बसा हुआ मांडू हिंदू तथा मुसलिम शासकों के बीच काफी समय तक झूलता रहा. इस की स्थापना 10वीं शताब्दी में राजा भोज ने की थी. इस के बाद इस के सौंदर्य को कभी मुगलों ने लूटा तो कभी अफगानों ने.

एक दंतकथा के अनुसार, मालवा के अंतिम सुलतान बाजबहादुर और रानी रूपमती का प्रेम यहीं परवान चढ़ा था. इन के प्रेम के स्मृति चिह्न आज भी यहां महलों तथा दीर्घा के रूप में विद्यमान हैं.अपनी इन विशेषताओं के कारण ही मांडू पर्यटकों के बीच धीरेधीरे लोकप्रियता प्राप्त करता जा रहा है.

कैसे जाएं?

आकर्षक किंतु उपेक्षित पर्यटन स्थल होने के कारण यहां के लिए रेल या वायु सेवा सीधी उपलब्ध नहीं है. मांडू का निकटतम हवाई अड्डा यहां से 100 किलोमीटर दूर इंदौर में स्थित है. इंदौर दिल्ली, बंबई, ग्वालियर, भोपाल, नागपुर आदि जगहों से इंडियन एयरलाइंस द्वारा जुड़ा हुआ है. इंदौर उतर कर बस द्वारा भी मांडू पहुंचा जा सकता है.

मांडू का निकटतम रेलवे स्टेशन भी इंदौर ही है. यहां उतर कर मांडू की यात्रा की जा सकती है. सड़क मार्ग द्वारा मांडू दिल्ली, भोपाल तथा मध्य प्रदेश के अन्य मुख्य शहरों जैसे धार, इंदौर, महौवा, रतलाम, उज्जैन आदि से जुड़ा हुआ है. यहां तक पहुंचने के लिए सड़क मार्ग का सहारा लेना सबसे उत्तम है.

क्या देखें?

जहाज महल : इस महल का निर्माण गयासुद्दीन खिलजी ने करवाया था. यह दो तालाबों, कपूर तालाब तथा मुंज तालाब, के बीच बना हुआ है. 109 मीटर दो मंजिला यह महल दो तालाबों के बीच स्थित होने के कारण पानी पर तैरता प्रतीत होता है और अपने नाम को सार्थक करता है. यह कभी गयासुद्दीन खिलजी का हरम था, जहां वह अपनी बीवियों तथा बांदियों के साथ मौजमस्ती के लिए रहा करता था.

हिंडोला महल : यह महल झूलता नहीं बल्कि अपनी बनावट के कारण झूलता हुआ प्रतीत होता है. जहाज महल से उत्तर की ओर स्थित इस महल में एक विशाल तथा भव्य सभागार व दीवाने ए खास है, जो खूबसूरत खिड़कियों से सजा हुआ है. यहां से एक रास्ता ऊपर की ओर जाता है, जिसे 'हाथी चढ़ाव' कहा जाता है. इस महल के निचले हिस्से में एक बहुत बड़ा कुआं है. इस का निर्माण पूरे महल को ठंडा रखने के लिए किया गया था.

होशंगशाह का मकबरा : अफगान वास्तुकला का उत्कृष्ट नमूना यह मकबरा 1432 में बनवाया गया था. यह संभवतः भारत में संगमरमर का बना सब से पहला मकबरा था. इस की खूबसूरती की चर्चा सुन कर ताजमहल बनवाने से पहले शाहजहां ने वास्तुकला की जानकारी रखने वाले चार व्यक्तियों को इस के अध्ययन के लिए भेजा था.

जामी मसजिद : अफगानी वास्तुकला का दूसरा अद्भुत नमूना है जामी मसजिद, जो होशंगशाह द्वारा 1450 में बनवाई गई थी. यह संभवतः सब से बड़ी और सुंदर मसजिदों में से एक है. इस के लंबेलंबे खंभे तथा विशालतम गुंबद देखने वालों को आश्चर्यचकित कर देते हैं.

अशर्फी महल : जामी मसजिद की ओर मुख किए अशर्फी महल होशंगशाह के उत्तराधिकारी महमूद-शाह खिलजी द्वारा बनवाया गया था. इस की बनावट को देख कर ऐसा समझा जाता है कि संभवतः यह बच्चों का स्कूल था. इसे बाद में मुहम्मद शाह मकबरे के रूप में तबदील कर दिया गया.

बाजबहादुर का महल : यह महल भव्यता, बनावट, सौंदर्य तथा कला के दृष्टिकोण से देखने लायक है. छठी शताब्दी के शुरू में इसे बाजबहादुर ने बनवाया था. यह महल बाजबहादुर तथा गायिका रूपमती, जो आगे चल कर उस की रानी बन गई थी, की स्मृतियां अपने में संजोए हुए है. इस की बालकनी में जा कर आसपास का सुंदर दृश्य देखा जा सकता है.

रूपमती दीर्घा : बाजबहादुर ने अपनी प्रिय रानी रूपमती के लिए विशेष तौर पर इस दीर्घा का निर्माण करवाया था. यहां से नर्मदा नदी किसी सफेद पतले धागे के समान दिखाई पड़ती है. एक किंवदंती के अनुसार, ऐसा कहा जाता है कि जब तक रानी रूपमती नर्मदा के दर्शन नहीं कर लेती थी, अन्नजल ग्रहण नहीं करती थी.

इन के अलावा हाथी महल, दरिया खान मकबरा, दाई का महल, दाई की 'चोटी बहन' का महल, जाली महल, नीलकंठ महल, नीलकंठ महादेव तथा 'इको पाइंट' आदि भी देखे जा सकते हैं.

द्वारिका

गुजरात के पश्चिमी सागर तट पर स्थित द्वारका पौराणिक, ऐतिहासिक एवं धार्मिक महत्त्व का पर्यटन स्थल है. कहा जाता है कि पुराणोल्लिखित कृष्ण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ने 17 जरासंध से पराजित होने पर मथुरा छोड़ कर द्वारका नगरी बसाई थी. पुराणों में इसे 'द्वारकावती' कहा गया है.

आठवीं शताब्दी में आदि शंकराचार्य ने सनातन धर्म के प्रचारप्रसार के लिए द्वारकापीठ की स्थापना की थी. तब से यह नगर भारत के चार धामों में गिना जाता है. संभवतः इसी कारण यहां प्राचीन काल से ही तीर्थाटन आदि के नाम पर अनेक पर्यटकों का आनाजाना रहा है.

कब जाएं?

मौसम कि दृष्टि से द्वारका भ्रमण के लिए नवंबर से मार्च तक का समय उपयुक्त है. किंतु यदि द्वारका का महोत्सवी सौंदर्य देखना हो तो कृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर द्वारका पर्यटन का कार्यक्रम बनाया जा सकता है.

कैसे जाएं?

द्वारका का निकटतम हवाई अड्डा जामनगर है. जामनगर से यहां तक रेल या बस मार्ग द्वारा पहुंचा जा सकता है. वैसे द्वारका अहमदाबाद, राजकोट, पोरबंदर आदि स्थानों से भी रेल व बस मार्गों द्वारा जुड़ा है.

कहां ठहरें?

द्वारका में ठहरने के लिए भारतीय शैली के होटलों की समुचित व्यवस्था है. गुरुप्रेरणा, मीरा, उत्तम गेस्ट हाउस, द्वारकापुरी गेस्ट हाउस आदि होटलों के अलावा बंसीधर लाज, कांता लाज, नीलेश लाज आदि में भी ठहरा जा सकता है. यहां अनेक धर्मशालाएं भी है. जिन में ठहरा जा कसता है.

द्वारिका

कहां ठहरें?

बंशीधर लाज; सर्किट हाउस; महालक्ष्मी लाज; मूरलीधर लाज; रेलवे रिटायरिंग रूम; ब्रज भवन लाज; पी.-डब्ल्यू.डी. रेस्ट हाउस; जिला परिषद रेस्ट हाउस; विश्रांति गृह; तोरण टूरिस्ट बंगला.

क्या देखें?

द्वारकाधीश मंदिर: द्वारकाधीश मंदिर द्वारका का मुख्य आकर्षण है. बताया जाता है कि इस कलात्मक मंदिर के हरि गृह का निर्माण अनिरुद्ध के पुत्र वज्रनाभ ने अपने बाबा कृष्ण की स्मृति में कराया था. मंदिर के हरि गृह में कृष्ण कि एक प्रतिमा भी प्रतिष्ठत है. मंदिर के पांच मंजिले शिखर 60 स्तंभों पर टिके हैं. मंदिर की शिल्प कला अनूठी है. पर्यटकों के लिए यह मंदिर प्रातः छः बजे से मध्याह्न साढ़े बारह बजे तक तथा सायं काल पांच बजे से रात्रि नौ बजे तक खुला रहता है.

भदकेश्वर मंदिर: अरब सागर के तट पर स्थित

सरिता पर्यटन सेवा

अतिरिक्त पर्यटन जानकारी

पर्यटन अंकों की तैयारी करते समय हम बहुत सी अतिरिक्त पर्यटन सामग्री भी जुटा लेते हैं जिसे प्रकाशित करना संभव नहीं होता. अगर आप को किसी स्थान विशेष की जानकारी चाहिए तो आप हमें लिखिए. अगर जानकारी हमारे पास हुई या प्राप्त करना संभव हुआ तो हम आप को भेजने का प्रयास करेंगे.

अपने पत्र के साथ निम्न कूपन व 24 सें.मी. × 10 सें.मी. का अपना पता लिखा लिफाफा भेजें जिस पर दो रुपए के टिकट लगे हों. यदि सामग्री उपलब्ध न होगी तो आप को उत्तर दे दिया जाएगा. कृपया स्मरण पत्र न भेजें.

नाम : _____ व्यवसाय _____

जिन स्थानों के बारे में जानकारी चाहिए उन के नाम : _____

किस तरह जाना चाहते हैं: रेल/हवाई जहाज/बस/ टैक्सी/कंडक्टेड टूर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह मंदिर लगभग 800 वर्ष पुराना है. तट पर सैलानियों की भीड़ लगी ही रहती है. यहां दूरदूर तक फैले सागर की लहरों की शोभा देखते ही बनती है.

रुक्मिणी मंदिर: लगभग 16 वर्ष पुराने इस मंदिर में कृष्ण की पटरानी रुक्मिणी की प्रतिमा प्रतिष्ठित है. कला तथा पुरातनता की दृष्टि से भी यह मंदिर दर्शनीय है.

द्वारका पीठ: आदि शंकराचार्य द्वारा स्थापित इस मठ का धार्मिक महत्त्व है. यहां सिद्ध नाथ, सावित्री देवी, भद्रकली तथा अन्य मंदिर देखने योग्य हैं.

वेद भवन: यों यह वैदिक संस्थान के रूप में अधिक प्रसिद्ध है किंतु यहां द्वारका के बालुई समुद्रतट की रमणीयता की दृष्टि से भी पर्यटकों के लिए एक विशेष आकर्षण है.

अन्य दर्शनीय स्थल

इन के अतिरिक्त यहां संग्रहालय, उद्यान, पार्क, बेट द्वारका, मीठापुर, ओखा, पिंढ़ारा वल्लभाचार्य बैठक आदि भी अच्छे दर्शनीय स्थल हैं.

पोरबंदर

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का जन्म स्थल होने के कारण पोरबंदर का पर्यटन के क्षेत्र में अपना अलग ही महत्त्व है. यह गुजरात का एक अनुपम सागर तट है. प्राचीन काल में यह सुदामापुरी के नाम से जाना जाता था. तदुपरांत लंबे समय तक यह व्यापारिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण रहा, क्योंकि यहां फारस की खाड़ी तथा अफ्रीका के लिए सीधा व्यापारिक मार्ग रहा था.

अहमदाबाद, राजकोट आदि नगरों से पोरबंदर के लिए रेल तथा बस सेवाएं उपलब्ध हैं. बंबई से सीधे पोरबंदर जाने के इच्छुक पर्यटक वायु मार्ग से भी जा सकते हैं. बंबई से पोरबंदर के लिए नियमित उड़ानें हैं, इस में समय भी कम लगता है, मात्र दो घंटे.

पोरबंदर में ठहरने के लिए टूरिस्ट बंगला, होटल, लाज आदि की पर्याप्त व्यवस्था है.

कीर्तिमंदिर यहां का मुख्य आकर्षण है. महात्मा गांधी से जुड़ी अनेक स्मृतियों से युक्त यह मंदिर उन का जन्म स्थान है. यहां एक छोटा सा कमरा है, जहां गांधीजी पैदा हुए थे. मंदिर में गांधीजी के वाङ्मय का अच्छा संग्रह है. यह गांधियन लाइब्रेरी के नाम से जाना जाता है. हाल में सूत कातने की व्यवस्था है. इन के साथ एक बालोद्यान तथा प्रार्थना हाल भी यहां है.

जिबीलि ब्रिज के द्वारा एक गंदली खाड़ी को पार कर के जाने पर नेहरू प्लैनिटेरियम तथा भारत मंदिर हैं. सागर तट पर स्थित हजूर पैलेस भी दर्शनीय है.

पालिताना

मंदिरों के नगर के रूप में विख्यात पालिताना गुजरात की शेत्रुंजय पहाड़ियों पर बसा अपूर्व नगर है. सामान्यतः इसे जैन तीर्थ माना जाता है. यहां 863 मंदिर है. यहां प्रतिवर्ष हजारों पर्यटक आते हैं और मंदिरों की कलात्मकता देख कर मुग्ध हो जाते हैं.

पालिताना के लिए हवाई मार्ग से जाने वाले पर्यटकों को भावनगर उतरना पड़ेगा यहां से पालिताना तक 56 किलोमीटर की दूरी है, जिसे टैक्सी, रेल या बस से तय किया जा सकता है.

यहां होटल सुमेरु, महावीर लाज पथिकाश्रम तथा साधारण धर्मशालाओं में ठहरने की समुचित व्यवस्था है.

पालिताना का मुख्य आकर्षण हैं यहां के जैन मंदिर, जिन में आदीश्वर का विशिष्ट स्थान है. आदीश्वर प्रथम तीर्थंकर थे. मंदिर का रचना विधान एवं कला विधान देखते ही बनता है. यह मंदिर प्रातः सात बजे से सायं सात बजे तक खुला रहता है. फिर भी प्रातः 9 बजे, 9.45 बजे 10.45 तथा सांय काल तीन बजे मंदिर भ्रमण के लिए जाने में अनोखा ही आनंद आता है.

पालिताना

कहां ठहरें?

पथिक आश्रम, फोन : 49; पी.डब्ल्यू.डी. रेडीमनी गेस्ट हाउस; होटल तोरण सुमेरन, फोन : 227.

इन समयों पर तथाकथित भगवान का स्नान, आभूषण आदि से सज्जा तथा पूजा के दृश्य देखने के लिए श्रद्धालुओं की भीड़ जमा हो जाती है.

अन्य प्रमुख मंदिरों में आदिनाथ, कुमारपाल, विमलशाह, चौमुख आदि उल्लेखनीय हैं.

मंदिरों के साथसाथ नगर की बहार भी पर्यटकों का मन मोह लेती है. शेत्रुंजय पहाड़ी के शिखरों से नगर का विहंगावलोकन किया जा सकता है. पहाड़ी के दक्षिण में कलकल निनाद करती हुई शेत्रुंजी नदी चांदी के रिबन सी लगती है.

शिखरस्थ मंदिरों को देखने के लिए आनंदजी कल्याणजी, ट्रस्ट के प्रबंधक अथवा हिल इंस्पेक्टर से विशेष अनुमति लेना जरूरी है, अन्यथा मंदिर में प्रवेश से आप को रोका जा सकता है.

कार्तिक पूर्णिमा, चैत्र पूर्णिमा, फागुन सुदी 13 और वैशाख सुदी 3 को यहां विशेष उत्सवों का भी आयोजन होता है. इन अवसरों पर हजारों व्यक्ति यहां आते हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्तरपूर्व भारत की यात्रा

सिलीगुड़ी को उत्तरपूर्व का प्रवेश द्वार कहा जाता है. यहां पहुंचने के दो मुख्य रास्ते हैं. एक इलाहाबाद व कलकत्ता से ट्रेन द्वारा और दूसरा, कलकत्ता से वायुयान द्वारा बागडोगरा पहुंच कर. यदि आप पूर्वी प्रदेशों को भी देखने के इच्छुक हैं तो आप को और आगे गुवाहाटी तक जाना होगा. कलकत्ता से गुवाहाटी तक हवाई यात्रा व रेल की प्रथम श्रेणी का खर्चा लगभग बराबर ही पड़ता है.

वायुयान द्वारा कलकत्ता से गुवाहाटी जाने का समय मात्र 50 मिनट है. कलकत्ता से ही अजवाल (मिजोरम), कोहिमा (नागालैंड), अगरतल्ला (त्रिपुरा), इंफाल (मणिपुर), सिल्चर व शिलांग के लिए वायु सेवाएं प्रतिदिन उपलब्ध हैं.

कलकत्ता से वायुयान द्वारा गुवाहाटी पहुंचने से हवाई स्थल पर ही 'मेघालय टूरिज्म डेवलपमेंट कारपोरेशन' की बस खड़ी मिलती है. यह बस चार घंटे में मेघालय की राजधानी शिलांग पहुंचाती है. यहां के लिए कलकत्ता स्थित रसल स्ट्रीट से मेघालय टूरिस्ट ब्यूरो द्वारा अग्रिम आरक्षण कराना जरूरी है.

शिलांग का दूसरा आकर्षण है, विश्व की सर्वाधिक वर्षा वाली जगह 'चेरापूंजी' जो यहां से मात्र 53 कि.मी. दूर है. बस सुबह आठ बजे यहां के लिए ले जाती है और शाम पांच बजे लौटा लाती है. यहां से आप संतरे का शहद खरीद कर ला सकते हैं.

शिलांग से मणिपुर, नागालैंड, मिजोरम जाने के लिए बस से यात्रा करनी पड़ती है. शिलांग से गुवाहाटी आने के लिए यातायात की कमी नहीं है. गुवाहाटी शिलांग की अपेक्षा गरम और सस्ता भी है.

गुवाहाटी में रह कर आप आगे की यात्रा आरंभ करने से पहले प्रख्यात कामाख्या मंदिर (10 कि.मी.), ब्रह्मपुत्र दर्शन एवं स्वाभाविक चिड़ियाघर देख सकते हैं. गुवाहाटी से आप यदि चाहें तो डिब्रूगढ़, कांजीरंगा वन व अरुणाचल प्रदेश तक जा सकते हैं. ट्रेनसेवा मात्र डिब्रूगढ़ तक उपलब्ध हो पाएगी या फिर आप एक रात का सफर कर के गुवाहाटी से सिलीगुड़ी पहुंच जाएं.

सिलीगुड़ी से आप अपने दो पड़ोसी देशों की यात्रा भी कर सकते हैं. ये देश हैं, भूटान व नेपाल.

सिलीगुड़ी से भूटान जाने के लिए भूटान गवर्नमेंट ट्रांसपोर्ट बस अड्डे से फुंटशोलिंग पहुंचना होगा. यह दूरी साढ़े तीन घंटे की है. फुंटशोलिंग को भूटान द्वार कहा जाता है.

फुंटशोलिंग में देखने के लिए एक गोंपा ही है. आगे की यात्रा की अनुमति के लिए एक रात यहां रुकना पड़ता है. फुंटशोलिंग में रुकने के लिए अच्छी सुविधायुक्त व सस्ते होटल हैं.

भूटान की राजधानी थिंफु पहुंचने के लिए एक दिन पहले बस में आरक्षण करवाना पड़ेगा एवं 'ट्रेडिंग हाउस' फुंटशोलिंग से अनुमति लेनी होगी. फुंटशोलिंग से थिंफु पहुंचने में छः घंटे लगते हैं. थिंफु से आप पारो व चिनाकुटी तक जा सकते हैं. ये तीनों स्थान अपनेआप में प्राकृतिक सौंदर्य समेटे हुए हैं. थिंफु में होटलों की कमी नहीं है. भूटान सुंदर डाक टिकटों के लिए विश्व विख्यात है. सिलीगुड़ी लौटते वक्त जलपादरा का उद्यान भी एक आकर्षण है, जिसे देखा जा सकता है.

सिलीगुड़ी से नेपाल जाने के लिए बेहतर यही होगा कि आप किसी बस एजेंसी से संपर्क न कर के सुर जीप द्वारा एक घंटे का सफर तय कर के काकरभिट्टा (सीमा क्षेत्र) पहुंच जाएं. काकरभिट्टा से नेपाली करेंसी चालू हो जाती है. वैसे समूचे नेपाल में भारतीय करेंसी धड़ल्ले से चलती है.

काकरभिट्टा से सभी बसें शाम पांच बजे काठमांडू के लिए रवाना होती हैं. यहीं पर काठमांडू की टिकट खरीदें तो सस्ती पड़ती हैं, लेकिन काठमांडू पहुंचने पर काफी निराशा होती है. यहां पशुपतिनाथ व स्वयंभू मंदिर भक्तपुर को छोड़ कर बाकी जगहों पर कोई आकर्षण नहीं है. पर्यटक हिमालय का सौंदर्य देखने पोखरा काकनी (26 कि.मी.), नगरकोट (32 कि.मी.) सागरमाथा (203 कि.मी.) जा सकते हैं.

काठमांडू में उबला पानी पीने की सलाह दी जाती है. कमजोर पाचन शक्ति वाले यहां उदर रोग से पीड़ित हो जाते हैं. काठमांडू में रुकने के लिए होटलों की कमी नहीं है. काठमांडू के आधुनिक भाग को छोड़ कर ठमेल बाजार व पुराना हिस्सा काफी गंदा है. सुपर मार्केट की दुकानों में कीमतें आसमान को छूती प्रतीत होती हैं. लोग फुटपाथ पर बिक रहे विदेशी सामान में ज्यादा रुचि लेते हैं.

लौटने, यानी भारत पहुंचने के कई और रास्ते हैं.ये हैं, जोगवानी, जलेस्वर, वीरगंज, कोदारी, सुनौली, काली द्वारा, नेपालगंज, कोइलावास और महेंद्र नगर. जिन्हें गोरखपुर, दिल्ली व बनारस की तरफ जाना है, उन्हें सुनौली पहुंच कर यहीं होटल में रात्रि विश्राम करना पड़ेगा. पटना की तरफ निकलने के लिए वीरगंज एवं बरेली, नैनीताल, देहरादून की तरफ जाने के लिए नेपालगंज आना पड़ता है.

इन सभी सीमा क्षेत्रों में कस्टम वालों का रवैया बड़ा खेदजनक होता है क्योंकि इन का मुख्य उद्देश्य कानून की आड़ में पर्यटकों से सामान छीनना ही होता है. भारत के काफी अंदर तक आप को अपने सामान की बारबार चैकिंग करवानी पड़ेगी और हर बार कस्टम व पुलिस वाले लूटते हैं. इस कारण आप की यात्रा का रहासहा आनंद भी समाप्त हो जाता है.

—अनूप घोष

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

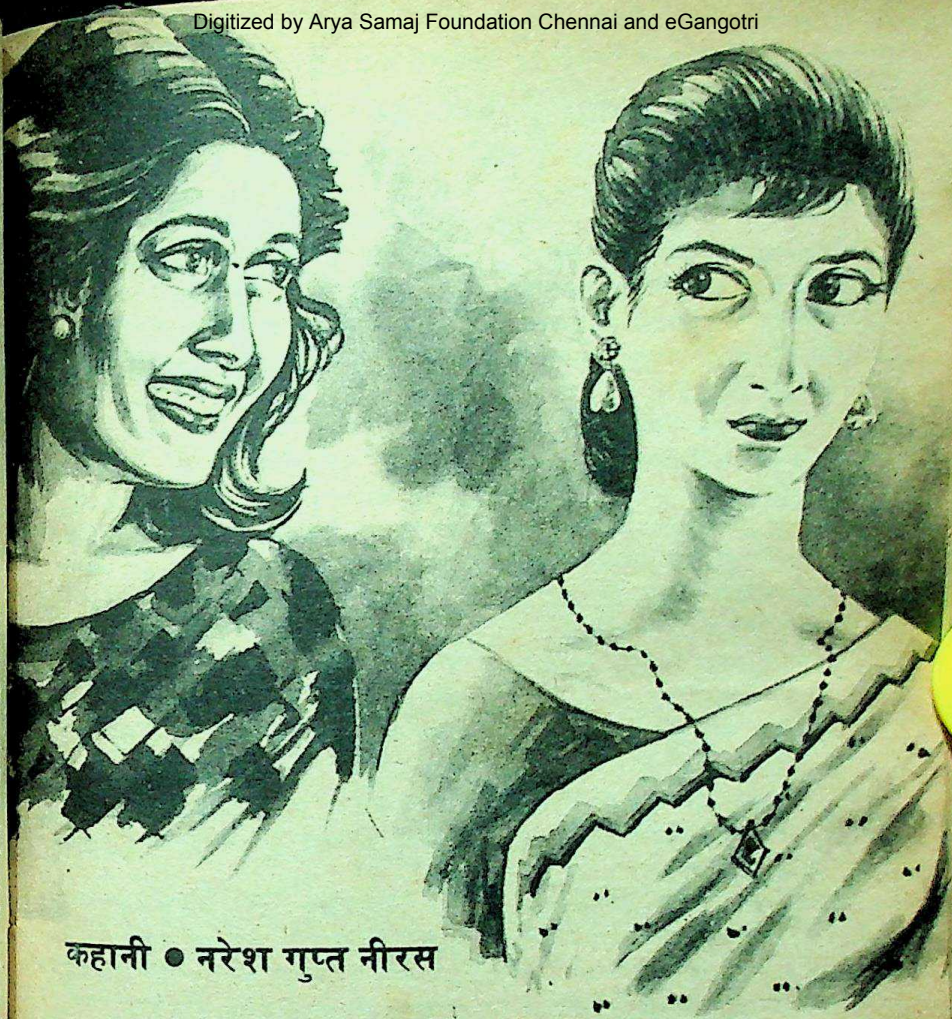

कहानी • नरेश गुप्त नीरस

जाले और घेरे

दरवाजे की घंटी बजी तो अलसाई सुरभि ने मन ही मन झुंझलाते हुए द्वार खोला. बाहर प्रीति खड़ी थी.

"अरी, आज इस समय कहां भूल पड़ी?" प्रीति का हाथ खींचते हुए सुरभि ने कहा.

"सुरभि, आज जो कुछ मैं तुम्हें सुनाने आई हूं, वह रुचिकर तो नहीं है, किंतु तुम्हारे जीवन से उस का सीधा संबंध है. मैं जानती हूं कि यह तुम्हारे आराम का समय है और इस समय तुम बहुत ही हलकेफुलके मूड में हो. फिर भी तुम्हें मेरी बात को गंभीरतापूर्वक सुनना होगा. कहीं यह न हो कि बाद में तुम्हें पछताना पड़े."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रीति के शकी स्वभाव ने उस के परिवार को तबाही के कगार पर खड़ा कर दिया था. लेकिन उस की सहेली सुरभि की सूझबूझ और एक भयावह दुर्घटना ने प्रीति के शक के घेरे तोड़ डाले और तब उसे एहसास हुआ कि वह स्वयं अपने ही बनाए जाले में उलझी हुई थी.

"ओफ्फोह, आते ही भाषण प्रारंभ. आ पलंग पर बैठते हैं. दो गिलास शरबत बना कर लाती हूं. फिर शरबत पीती जाना और अपनी बात कहती जाना." सुरभि ने अंगड़ाई लेते हुए कहा.

"जीवन की हर बात को हलकेफुलके ढंग से लेने से काम नहीं चलता. मैं तो डर रही हूं कि पूरी बात सुन कर शरबत तेरे गले से नीचे भी उतरेगा या नहीं."

"तू जरा ठहर, पहले शरबत पी लें, फिर बातें करेंगे. कहीं शरबत गले में अटक गया तो दुनिया नाम रख देगी, 'रक्तकंठा.' बेचारे शिव आज तक 'नीलकंठ' कहलाते हैं."

"रक्तकंठा का क्या अभिप्राय?" प्रीति ने प्रश्न किया.

"भई, शरबत का लाल रंग गले में अटक गया तो रक्तकंठा. विष का रंग था नीला. गले में अटका तो नीलकंठ."

"उफ, साहित्य बघारने से तुम बाज नहीं आती. न मालूम तुझे गंभीर रहना आता भी है या नहीं. कल यदि तुझे मेरी मृत्यु का समाचार मिले तो भी तू गंभीर हो सकेगी, इस में मुझे संदेह है." प्रीति ने झुंझला कर कहा.

"पहली बात तो यह है कि तू जल्दी मरने वाली नहीं है और यदि मर भी जाए तो गंभीर होने का प्रश्न ही कहां उठता है... सब को एक न एक दिन मरना ही है."

"अब ध्यान से सुन. कल तेरे पति एक बड़ी सजीधजी स्त्री के साथ हिमालय कैफे के एक केबिन में हंसहंस कर बतिया रहे थे. मुझे तो कुछ दाल में काला नजर आता है. मियां की लगाम खींच. कहीं गाड़ी पटरी से न उतर जाए. बैरे ने बताया कि वे अकसर वहां आते रहते हैं और काफी समय जमे रहते हैं."

सुरभि जोर से हंसने लगी, "अरी, तू वहां क्या करने गई थी? किस के साथ गई थी?"

प्रीति की समझ में नहीं आया कि सुरभि हंस क्यों रही है. जिस बात पर रोना चाहिए, यह उस पर भी हंसती है. फिर बोली, "प्रकाश मिल गया था... कहने लगा, चलो एक प्याला काफी पीते हैं."

"और यदि मेरे पति ने तुझे देख लिया होता और मुझ से आ कर कहते कि आज तुम्हारी सहेली एक आवारा से लड़के के साथ हिमालय कैफे में बैठी है तो क्या होता?"

"सुरभि, यह क्या कह रही है तू? प्रकाश आवारा है? मैं इतनी गिरी हूं क्या?"

"ओफ्फोह... प्रीति मैं ने कब कहा कि प्रकाश आवारा है. वह एक बहुत अच्छा कलाकार है. मैं उस की प्रशंसक हूं, किंतु लोग तो हुलिया और वेशभूषा देख कर ही किसी को विशेषण देते हैं. कहां तू मक्खन की डली, एकदम टिपटाप और कहां वह प्रकाश, सिगरेट पीपी कर काले पड़े होंठ, बिखरे बाल, ढीला सा कुरतापाजामा, बात करने का नाटकीय ढंग... फिर उस का और तेरा क्या संबंध?

"मैं जानती हूं, वह हमारा सहपाठी रहा है, हमारी पढ़ने में सहायता भी करता था, किंतु औरों को इस विषय में क्या मालूम. वैसे तू संध्या की बात कर रही है न? वह अभी स्थानांतरित हो कर उन के कार्यालय में आई है. यदाकदा उन के साथ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

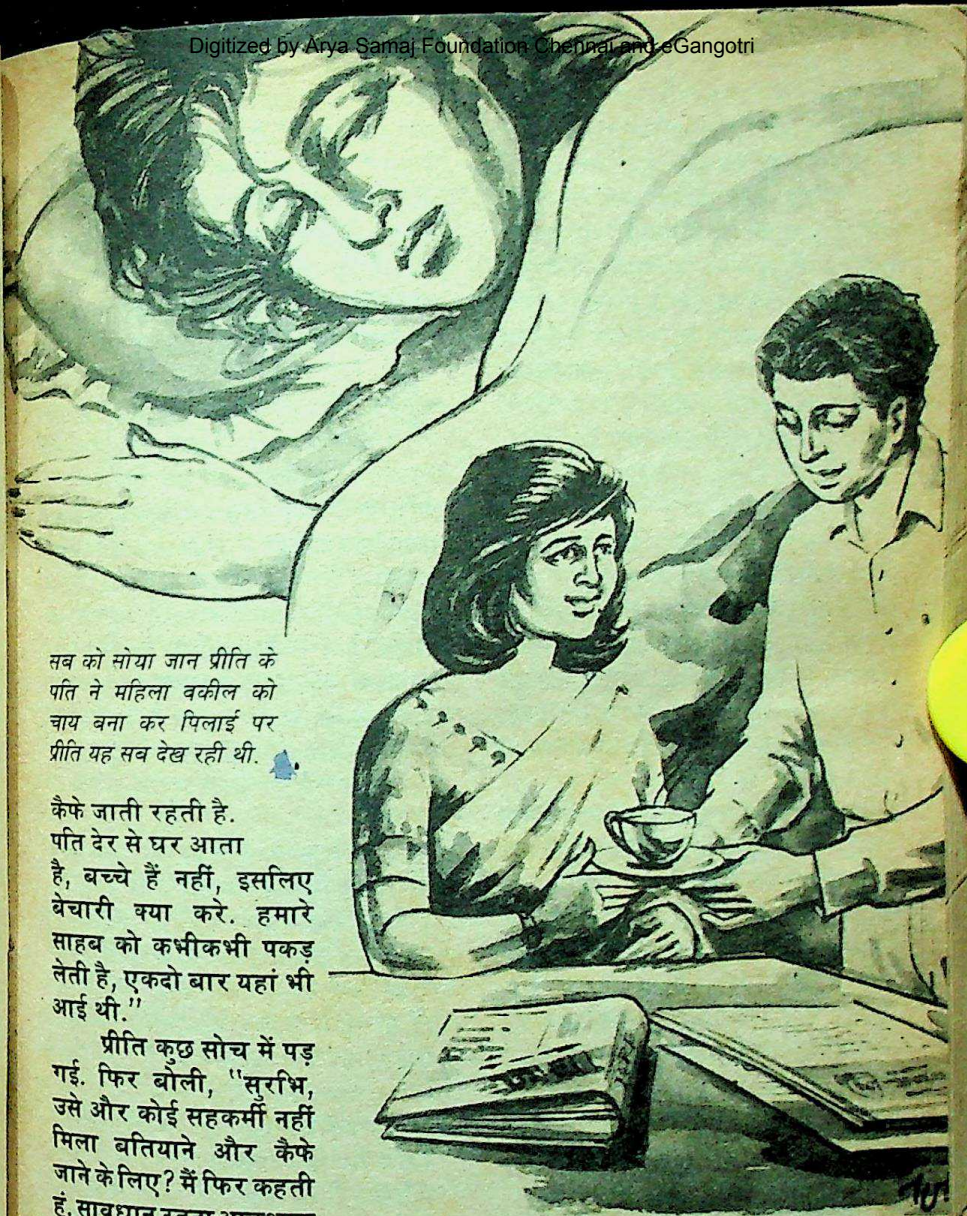

सब को सोया जान प्रीति के पति ने महिला वकील को चाय बना कर पिलाई पर प्रीति यह सब देख रही थी.

कैफे जाती रहती है. पति देर से घर आता है, बच्चे हैं नहीं, इसलिए बेचारी क्या करे. हमारे साहब को कभीकभी पकड़ लेती है, एकदो बार यहां भी आई थी."

प्रीति कुछ सोच में पड़ गई. फिर बोली, "सुरभि, उसे और कोई सहकर्मी नहीं मिला बतियाने और कैफे जाने के लिए? मैं फिर कहती हूं, सावधान रहना आवश्यक है. आगे तू जाने, तेरा काम. मैं अब चलती हूं."

तीनचार दिन ही व्यतीत हुए होंगे कि प्रीति एक दिन फिर आ धमकी. आते ही बोली, "तुझे अपने पति पर बड़ा विश्वास है न. उस दिन संध्या की बात को यों ही उड़ा दिया. अभी कुछ माह पूर्व अरुणा के संबंध में जो बातें उड़ी थीं उस के विषय में तुझे क्या कहना है?"

सुरभि ने मुसकराते हुए प्रीति का स्वागत किया, फिर बोली, "प्रीति, तू मुझे गलत समझ रही है. मैं ने कब कहा कि मेरे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहब दूध के धुले हैं. अरुणा बाली प्रीति मेरे कानों तक पहुंची थी. स्वयं तेरे जीजाजी ने ही बताई थी. उस के विषय में वह सफाई भी देते रहे. इस से पूर्व एक इला के साथ भी इन का नाम जुड़ा था.

"किंतु एक बात बता, आखिर महिलाएं इस विषय में क्या कर सकती हैं? दूसरी बात, तू ने बी. ए. में गोल्डस्मिथ के निबंध में पढ़ा होगा कि 'पुरुष इस बात में गौरव अनुभव करते हैं कि अनेक स्त्रियों के साथ उन का नाम जुड़े.' पुरुषों का स्वभाव भ्रमर जैसा होता है. किसी भी सुंदर स्त्री को देखेंगे तो उस पर मंडराने लगेंगे..."

प्रीति ने टोका, "तू इसे साधारण बात समझती है?"

"पहले तू यह बता कि स्त्रियों का शोषणकर्ता कौन है? क्या पुरुष? नहीं प्रीति, जो स्त्री यह जानते हुए भी कि वह जिस पुरुष से आंखें लड़ा रही है, वह किसी का पति है, किसी बच्चे का बाप है, क्या उस का ऐसा करना कुटिलता और अपराध नहीं है? क्या वह अपने ही वर्ग के एक सदस्य का शोषण नहीं कर रही?

"जब तक ये पति लोग केवल दंभ के लिए अथवा क्षणिक मानसिक संतुष्टि के लिए इधरउधर मुंह मारते हैं, तब तक तो कोई खतरा नहीं है, किंतु जब घर की व्यवस्था पर उस का कुप्रभाव पड़ने लगे तब चिंता अवश्य होती है. अभी तक ऐसा अवसर नहीं आया है. तुझे यह जान कर आश्चर्य होगा कि जब इला की बात हवा में तैर रही थी तो यह और अधिक ध्यान मेरी और देते. रात में जोर से बाहुपाश में आबद्ध कर के सोते और घर के कार्य में बिना मांगे ही सहयोग देते."

"अपनी इस गंदी आदत को छिपाने का यह अच्छा ढंग निकाला है पुरुषों ने." प्रीति ने कहा, "किंतु, फिर भी तुझे अपने पति की नकेल को खींच कर रखना है. यह तेरा ही जिगरा है कि तू यह सब सह लेती है, मैं ने तो अब तक अपने साहब को नाकों चने चबवा दिए होते. मुझे तुझ से [illegible] कई जगह हुए फरमाते फिरें तो कोई बात नहीं और यदि हम महिलाएं किसी से जरा मुक्त मन हो कर हंसबोल भी लें तो इन का पारा चढ़ जाता है. कितना अंतर है नारी और पुरुष की सामाजिक स्थिति में..."

"तू छोड़ समाजशास्त्र को... यह सब तो यों ही चलता रहता है और चलता रहेगा. आम की आइसक्रीम खा ले, अभी फ्रिज से लाती हूं."

प्रीति और सुरभि बचपन की सखियां हैं. कालिज की शिक्षा भी दोनों ने साथसाथ प्राप्त की थीं. बी. ए. करते ही प्रीति का विवाह मेरठ के एक वकील से हो गया, किंतु सुरभि का अध्ययन चलता रहा. इस बीच उस के परिवार वाले भी उस के लिए वर की खोज में लगे रहे. सुरभि का विवाह वे स्थानीय व्यक्ति से ही करना चाहते थे. अंत में उन का प्रयास सफल हुआ और सुरभि का विवाह एक प्रशासनिक सेवा के अधिकारी से हो गया. प्रीति जब भी मेरठ से दिल्ली आती तो सुरभि से अवश्य मिलती.

कई मास व्यतीत हो गए. इस बीच प्रीति और सुरभि की भेंट नहीं हो सकी. सुरभि ने सोचा, अवश्य ही वह नाराज हो गई है. उस ने दोतीन पत्र भी मेरठ के पते पर लिखे, किंतु उन का कोई उत्तर नहीं मिला. वह सोचने लगी, क्या हुआ प्रीति को? क्या कोई प्रसव आदि का चक्कर है? पर प्रीति तो कह रही थी कि उस के पति ने नसबंदी करवा ली है, फिर चक्कर क्या है? कहीं वह बीमार तो नहीं पड़ गई? सुरभि कुछ समझ नहीं पा रही थी. फिर सोचा, 'क्यों न प्रीति के मायके का एक चक्कर लगाया जाए.'

एक दिन सुरभि प्रीति के मायके पहुंच गई. "नमस्ते माताजी, नमस्ते भाभी, बहुत दिनों से प्रीति का समाचार नहीं मिला... सोचा, आप लोगों से मिलना भी हो जाएगा और उस का समाचार भी मिल जाएगा."

"आओ, बैठो चलो. सहेली के बहाने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हम से मिलने तो चली आई हो."

सुरभि ने महसूस किया कि प्रीति की मां के मुख पर उल्लास का कोई चिह्न न था. वह बुझीबुझी सी लग रही थीं.

सुरभि को अपनी ओर टकटकी लगाए देख कर मां ने कहा, "बेटी, तुम बैठ कर भाभी से बातें करो, मैं तुम्हारे लिए चाय भिजवाती हूं."

भाभी स्वयं ही सुरभि का हाथ पकड़ कर उसे अपने कमरे में ले गई, "दीदी, तुम्हारी सहेली का घर बरबाद हो रहा है और तुम ने उस की सुध भी नहीं ली?"

"मैं ने तो तीन पत्र भी मेरठ के पते पर लिखे थे, किंतु कोई उत्तर नहीं आया. पर प्रीति का घर कैसे बरबाद हो रहा है?"

"एक केस के सिलसिले में एक कनिष्ठ महिला वकील के साथ प्रीति के पति सहयोग दे रहे थे. पार्टी ने कम पैसों की दृष्टि से उस महिला वकील को किया था. महिला ने प्रीति के पति का सहयोग चाहा था. एक दिन वह महिला वकील घर आ पहुंची. दोनों रात के 11 बजे तक केस पर कार्य करते रहे.

"प्रीति के पति ने यह सोच कर कि घर के सभी सदस्य और नौकर सो गए होंगे, विदा करने से पूर्व उस महिला को स्वयं ही चाय बना कर पिलाई और चलते समय उस का कंधा थपथपा कर उस के जीतने की कामना भी की. प्रीति को आप जानती ही हैं, प्रारंभ से ही शक्की स्वभाव की है.

"उस समय भी वह जाग रही थी और अपने पति की गतिविधियों पर सतर्क दृष्टि रखे हुए थी. सुबह उठ कर पतिपत्नी में झगड़ा हुआ, किंतु घर वालों के कहने पर सुलह हो गई. एक दिन प्रीति को सूचना मिली कि उस के पति उसी महिला वकील के साथ एक रेस्तरां में बैठे काफी पी रहे थे और उन का हाथ उस महिला के कंधे पर था. फिर क्या था, प्रीति ने घर में वह बबाल मचाया कि घर वालों को अपने सम्मान की रक्षा करना कठिन हो गया.

"उस के पति ने यह तो स्वीकार किया कि वह उस महिला के साथ काफी पी रहे थे, किंतु उस का हाथ उस के कंधे पर था अथवा उन के किसी प्रकार के अनैतिक संबंध उस के साथ हैं, इस बात का उन्होंने कड़ा प्रतिरोध किया.

"लेकिन प्रीति को यह बात खटक गई. अब पतिपत्नी की बोलचाल तो बंद है ही, प्रीति ने मायके आना भी बंद कर दिया है. इधर उस के पति अधिकतर उस महिला वकील के साथ देखे जाने लगे हैं, किंतु उन के मित्रों का कहना है कि यह केवल प्रीति को जलाने की चेष्टा मात्र है, इस से अधिक कुछ नहीं है.

"आप के भैया भी मेरठ गए थे, किंतु वकील साहब ने कहा है कि यदि प्रीति घर के सब सदस्यों के सामने क्षमायाचना करे और भविष्य में इस प्रकार अभद्र व्यवहार न करने की प्रतिज्ञा करे तो समझौता हो सकता है.

"उधर प्रीति का कहना है कि क्षमा उस के पति को मांगनी चाहिए, न कि उसे. वह टूट जाएगी, तलाक ले लेगी, किंतु पति के आगे नहीं झुकेगी. आप उस की सहेली हैं,

विरोधाभास

वह सुविधा के बीच भी
अपने ढंग से जीते रहे,
खाने वाली जगह पर
रह कर भी
सिर्फ पीते रहे.

—सूर्यकुमार पांडेय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अतरंग है, [illegible] बात बन जाए."

सुरभि ने निःश्वास छोड़ते हुए कहा कि वह अवश्य ही इस विषय में कुछ करेगी. घर लौट कर उस ने प्रीति को एक पत्र लिखा.

प्रीति,

हृदय तंतुओं की उलझन को झटके दे दे कर अथवा खींचतान कर के सुलझाना शायद संभव नहीं होता. उन को तो भावना पूर्ण स्नेहिल उंगलियों से धीरेधीरे सहला कर ही किसी निष्कर्ष पर पहुंचा जा सकता है. न तो मैं बिखरी और न ही मेरा घर टूटा क्योंकि मैं ने इसी विधा का प्रयोग किया था. तू सिर्फ एक महिला को समझा न सकी जबकि मुझे तीनतीन महिलाओं को रास्ते पर लाना पड़ा था.

यदि शोर मचाने और अपनों की गलतियों का ढिंढोरा पीटने से समस्याएं हल हो सकतीं तो सभी राजनीतिक पार्टियां भी तो यही सब कुछ करती आ रही हैं. फिर देश सुधरता क्यों नहीं, टूटता क्यों जा रहा है? यदि तुम ने अपने पति से झगड़ा करने की बजाय उस महिला वकील से केवल इतना कहा होता, "बहन, मुझे तुम पर, तुम्हारे चरित्र पर पूर्ण विश्वास है, किंतु यह दुनिया वाले अफवाहें उड़ा कर कहीं तुम्हारे भविष्य को अंधकारमय न कर दें, इस के लिए तुम्हें सतर्क रहना होगा, तो वह महिला स्वयं ही तुम्हारे पति से दूर हो जाती.

तुम्हारी इच्छा हो तो मैं मेरठ आऊं और इस समस्या को सुलझाने की चेष्टा करूं, किंतु यह बात पहले ही स्पष्ट कर दूं कि क्षमा तो तुम्हें मांगनी ही होगी. नारी को कोमल कहा गया है, उस की उपमा लता से की गई है. लचकीलापन, नम्रता, झुकना आदि उस का स्वभाव है, दुर्गुण अथवा छोटापन नहीं. मैं विश्वास दिलाती हूं कि मैं सदैव तुम्हारे साथ हूं. तुम्हारा अपमान मेरा अपमान है, तुम्हारी हानि मेरी हानि. पत्र की प्रतीक्षा में

तुम्हारी सुरभि

जब 20 दिन तक भी प्रीति का उत्तर नहीं मिला तो सुरभि को परेशानी अनुभव होने लगी. सोचने लगी उग्र स्वभाव की यह अल्हड़ युवती कहीं कुछ गड़बड़ न कर बैठे. वह घर भी छोड़ सकती है और आत्महत्या भी कर सकती है. प्रीति ने निश्चय किया कि इतवार को प्रातः आठ बजे वह पति को ले कर मेरठ जाएगी. दो घंटे की यात्रा है, तीनचार घंटे वहां रुक कर सायंकाल तक लौटा जा सकता है. कुछ करना ही होगा, नहीं तो सब गड़बड़ हो जाएगा.

सुरभि मेरठ जाने की योजना बना ही रही थी कि दरवाजे की घंटी बजी. प्रीति के भैयाभाभी को द्वार पर देख कर वह आश्चर्य में पड़ गई. उसे लगा कि कुछ गड़बड़ है, कोई बुरी खबर है.

"ननदजी, हम मेरठ जा रहे हैं... प्रीति बहनजी दंगों की चपेट में घायल हो कर हस्पताल में पड़ी हैं." प्रीति की भाभी ने शीघ्रता से कहा.

"अरे, यह कैसे हो गया? कहां चोट लगी है उसे? दशा गंभीर तो नहीं है?" सुरभि ने घबरा कर पूछा.

"यह हमें तो ज्ञात नहीं है. आप को सूचना देना जरूरी समझा, इसलिए इधर से निकलते हुए मेरठ जा रहे हैं." और यह कह कर दोनों ही पलट कर कार में जा बैठे.

हड़बड़ी में नौकर को भेज कर सुरभि ने पति को बुला भेजा कि अभी मेरठ जाना होगा.

पति के आने पर उस ने सारी बात कह सुनाई तो वह बोले, "तुम जानती हो, मेरठ में कर्फ्यू लगा हुआ है. यह तो ज्ञात हो कि हमें जाना कहां होगा? प्रीति की ससुराल या सीधे हस्पताल. हस्पताल का अतापता कुछ मालूम है, उन से पूछा था?"

"मैं तो इतना घबरा गई थी कि हस्पताल का पता पूछने का ध्यान ही नहीं रहा. चलो, पहले प्रीति के घर ही चलेंगे."

"क्या हम कल तक प्रतीक्षा न कर लें? अभी 12 बजे हैं, प्रीति के भैयाभाभी शाम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तक लौट कर आ सकते हैं. पुत्र से सब बातें जान कर सुबह चल पड़ेंगे."

"नहीं, मुझे बहुत चिंता हो रही है."

"वह तो ठीक है, किंतु पहले उस की ससुराल, फिर हस्पताल, लौटने में देर हो सकती है. मेरठ के हालात ठीक नहीं हैं, जोखिम लेने वाली बात है."

"ठीक है... जैसा आप कहते हैं..."

रात को नौ बजे प्रीति के मायके से समाचार मिला कि वह नर्सिंग होम में भरती है. दशा गंभीर तो नहीं है, किंतु सारे शरीर पर चोटों के निशान हैं. दिमागी सदमे के कारण अभी एकदो दिन वहीं रहेगी.

प्रातः ही सुरभि अपने पति के साथ मेरठ के लिए निकल पड़ी. कर्फ्यू पास ले कर वह नर्सिंग होम पहुंचे. प्रीति बिस्तर पर लेटी थी और उस के पति कुरसी पर बैठे हुए कुछ पढ़ रहे थे.

सुरभि भावावेश में चिल्लाई, "प्रीति."

प्रीति ने आंखें खोल कर सुरभि की ओर देखा और दोनों लिपट कर रो पड़ीं.

"यह सब कैसे हुआ?" सुरभि के पति ने प्रश्न किया.

"प्रीति दर्जी की दुकान से अपने ब्लाउज लेने गई हुई थी कि एकदम भगदड़ मच गई. दंगा आरंभ हो गया. गुंडे इस की बालियां और चेन ले कर भागे. जातेजाते एक गुंडे ने इसे धक्का दे दिया, जिस से यह लोहे के पाइप से जा टकराई और घायल हो गई. वैसे चिंता की कोई बात नहीं है... शाम तक यहां से छुट्टी मिल जाएगी."

उधर सुरभि प्रीति से पूछ रही थी, "तुम ने न तो मेरे पत्र का उत्तर दिया, न ही यह बताया कि जीजाजी से समझौता हुआ या नहीं?"

"सुरभि, तेरे पत्र को पढ़ कर लगा कि मेरी ही ज्यादती है, मुझे क्षमायाचना करनी ही चाहिए, किंतु एक तो मेरा अभिमान आड़े आ रहा था और दूसरे मुझे समझ नहीं आ रहा था कि क्षमा मांगने के लिए कौन सा तरीका अपनाऊं."

"मूर्ख, मुझे पत्र लिख कर पूछ लेती."

तभी दोनों के पतियों ने कमरे में प्रवेश किया, बिना किसी भूमिका के सुरभि ने कहा, "जीजाजी, प्रीति के मन में पिछले दो सप्ताह से एक फांस चुभ रही है. वह आप से क्षमायाचना करना चाहती है, किंतु उसे शब्द नहीं मिल रहे हैं. उसे भय है कि कहीं आप उस के शब्दों को विधिसम्मत न मान कर उस की याचना को ठुकरा न दें."

अधिवक्ता महोदय ने अपनी पत्नी की ओर देखा और बोले, "पतिपत्नी के बीच क्या क्षमा की औपचारिकता की भी आवश्यकता होती है? पर संदेह के जाले को कैक्टस बना लेना और उस के कांटों से भयभीत हो कर अपने चारों ओर बाड़ बना लेना अक्लमंदी नहीं है. क्या पतिपत्नी का संबंध केवल शारीरिक शुद्धता तक ही सीमित होता है, मन, वचन और कर्म की शुद्धता तक नहीं? काश, प्रीति यह सब जान पाती."

"मैं अब सब जान गई हूं... मुझे क्षमा कर दीजिए." प्रीति ने हाथ जोड़ते हुए कहा.

सुरभि के पति ने अपनी पत्नी की कमर में हाथ डालते हुए कहा, "अच्छा भई, अब चलते हैं, फिर मिलेंगे." और दोनों मुसकान बिखेरते हुए कमरे से बाहर निकल आए.

देश और विदेश का अंतर

जब मैं विदेश में रहता हूं तो मेरा यह नियम है कि अपने देश की सरकार की आलोचना या उस पर प्रहार नहीं करता. जब मैं स्वदेश वापस आता हूं तो खोए समय की कमी पूरी कर लेता हूं.

—विस्टन चर्चिल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेख • शम्मी टंडन

क्या आप अकेली सफर कर रही हैं?

शीला शंकर अपने पति व छोटी सी बच्ची के साथ हमारे पड़ोस में रहा करती थीं. उन के पति सरकारी नौकरी करते थे. एक दिन उन्हें तार मिला कि माताजी सख्त बीमार हैं, फौरन पहुंचो.

पति दौरे पर गए हुए थे. चूंकि फौरन बुलाया गया था, अतः इंतजार करना उचित नहीं था. इसलिए शीला शंकर ने अकेले ही जाने की तैयारी कर ली. यह पहला मौका था, जब वह अकेले सफर कर रही थीं.

डरना स्वाभाविक था. वैसे भी एक साल की छोटी सी बच्ची के साथ अकेले सफर करना मजाक नहीं है, लेकिन जल्दी ही वह अन्य मुसाफिरों के साथ घुलमिल गईं. एक सहयात्री तो उन का खास खयाल रख रहा था. उन को जिस चीज की आवश्यकता होती, वह फौरन ले आता. ऐसा साथ पा कर शीला शंकर कुछ निश्चिंत सी हो गई थीं और यहीं वह धोखा खा गईं.

[illegible]शन पर जब गाड़ी रुकी तो उन का सहयात्री बच्ची को सैर करवाने के बहाने प्लेटफार्म पर ले गया. शीला शंकर ने भी कोई आपत्ति नहीं की. गाड़ी चल पड़ी लेकिन उस आदमी का कोई पता नहीं था. अब तो शीला शंकर के होश उड़ गए.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सफर शुरू करने से पहले कुछ बातों का ध्यान रखा जाए तो अकेली सफर कर रही युवतियों को रास्ते में किसी विपरीत परिस्थिति में घबराने की जरूरत न होगी. थोड़ी समझदारी एवं धैर्य से अकेले कहीं भी जाना कठिन नहीं.

रोकने के लिए जंजीर खींची. गाड़ी रुकी भी, लेकिन वह आदमी नहीं मिला. मिलता भी कैसे? वह तो बच्ची को ले कर चंपत हो गया था. शीला शंकर तो इस हादसे से वहीं बेहोश हो गईं. रेलवे पुलिस ने किसी प्रकार पता ढूंढ़ कर उन के पति हरिशंकर को तार भेजा. हरिशंकर पत्नी को घर तो ले गए लेकिन इस घटना ने शीला शंकर को पागल सा कर दिया.

एक जमाना था, जब महिलाएं सफर करना तो दूर, अकेली घर से बाहर भी नहीं निकलती थीं. यदि कभी सफर करने का मौका आता भी तो उन के अंगरक्षक के रूप में पति, पिता या पुत्र कोई न कोई जरूर साथ होता था.

लेकिन आज स्थिति दूसरी है. आज महिलाओं को किसी न किसी कारण से घर से बाहर निकलना ही पड़ता है. स्थानीय रेलगाड़ियों या बसों में सफर करना तो आम बात है. कई बार शहर से बाहर भी अकेले जाना पड़ता है क्योंकि संयुक्त परिवार टूटने के कारण सदस्यों की संख्या अपेक्षाकृत कम हो जाती है. अब पति रोजरोज तो दफ्तर से छुट्टी ले नहीं सकते. ऐसी स्थिति में यदि आवश्यकता आ पड़े तो स्त्रियों को अकेले ही सफर करना पड़ सकता है.

लेकिन यह आसान काम नहीं है. इस में कई झमेले हैं. आए दिन गुंडागर्दी की वारदातें भी बढ़ती जा रही हैं. अतः यह जरूरी है कि यात्रा में पूरी सावधानी बरती जाए ताकि कोई कठिनाई न आए. यदि कुछ बातों का ध्यान रखा जाए तो किसी भी अप्रिय घटना से बचा जा सकता है.

आरक्षण बहुत जरूरी है

यदि आप को अकेले सफर करना है तो यह सब से जरूरी है कि आप के पास सही टिकट हो और आप के लिए सीट या बर्थ बाकायदा आरक्षित हो. प्रतीक्षा सूची के भरोसे न रहें. सही टिकट न होने पर आप को कंडक्टर के पीछे भागना पड़ सकता है. जरूरी नहीं कि सभी कंडक्टर शालीनता से पेश आएं. अतः यह खतरा कभी मोल न लें. यदि आप का यात्रा कार्यक्रम अचानक ही बना हो तो जिस दर्जे की भी टिकट मिले, ले लें. यदि महिला डब्बा या पर्यटक शयनयान ही मिल जाए तो अच्छा है.

यदि आप कहीं परदेस में जा रही हैं तो यह जरूरी है कि आप के पास नकद पैसा

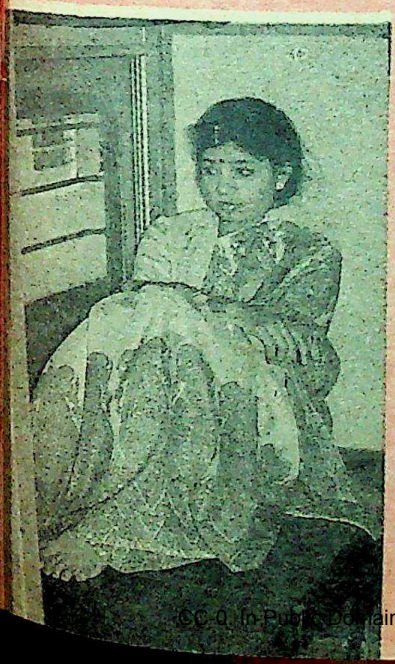

सफर पर जाने से पहले अपनी सीट का आरक्षण अवश्य करा लें अन्यथा रास्ते में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर्याप्त मात्रा में हो. वैसे भी थोड़ा फालतू पैसा तो साथ में लेना ही चाहिए क्योंकि क्या पता कब जरूरत पड़ जाए. पैसे के साथ यह भी स्वाभाविक है कि आप के पास एकआध आभूषण तो होंगे ही. इन सब की सारसंभाल बहुत सावधानी से करनी चाहिए.

जहां तक हो सके बड़ी रकम साथ न ले जाएं. इस के लिए आप चेक, यात्री चेक या साखपत्र का इस्तेमाल कर सकती हैं. किंतु यदि किसी कारणवश ऐसा नहीं हो सकता है तो पैसों को पूरी हिफाजत से रखें. हैंडबैग में ज्यादा पैसे न रखें क्योंकि टिकट या कोई और सामान निकालने के लिए हैंडबैग बारबार खोलना पड़ता है. ऐसी स्थिति में यदि किसी की नजर आप के धन पर गई तो लेने के देने पड़ सकते हैं. वैसे भी, यही ठीक रहेगा कि सारा पैसा अलगअलग कई जगहों पर रखा जाए.

दया और क्षमा

बुरों पर दया करना भलों पर अत्याचार है, और अत्याचारियों को क्षमा करना पीड़ितों पर अत्याचार है. —शेख सादी

उदाहरण के लिए, कुछ नोट अटैची की जेब में तो कुछ कपड़ों के बीच में, कुछ पर्स में तो कुछ हैंडबैग में. इसी तरह यदि आप कीमती सामान अलगअलग अटैचियों या बैगों में रखें तो बेहतर है.

कम सामान अधिक आराम

कुली आदि की समस्या तो दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है. आजकल कुली यात्रियों से मुंहमांगे दाम वसूल करते हैं. और यदि यात्री अकेली महिला हो तब तो वे और भी परेशान करते हैं. अतः सामान कम हुआ तो आप कुलियों की किटकिट से बच सकती हैं.

वैसे भी जरूरी नहीं कि आप के पति या [illegible] आप को स्टेशन पर लेने आ ही सकें. [illegible]ति में आप को अकेले ही गंतव्य पर पहुंचना होगा. अब यदि सामान कम हुआ तो आप उसे आसानी से संभाल सकेंगी, अन्यथा मुशकिल हो सकती है

अतः यदि आप को अकेले सफर करना है तो सामान पैक करते वक्त सावधानी से काम लें. ऐसे कपड़े उठाएं जो हलके हों व कम स्थान घेरें. उदाहरण के लिए सूती कपड़े, रेशमी कपड़ों से अधिक वजनी होते हैं. इसलिए ऐसे कपड़े न चुनें. इसी प्रकार बड़ेबड़े तौलिए एवं मोटी चादरें भी न लें.

इस के अलावा, यदि आप चाहती हैं कि आप को किसी अप्रिय घटना का सामना न करना पड़े तो निम्नलिखित बातों का विशेष ध्यान रखें :

सीट का चुनाव करते वक्त यह देख लें कि आप की सहयात्री कोई महिला या फिर दंपती हों. आमतौर पर दंपती के साथ सफर करने में कम खतरा रहता है क्योंकि वहां धोखा होने की संभावना अपेक्षाकृत कम होती है.

अनजाने शहर में रात के वक्त अकेले न घूमें, क्योंकि शहर में आया नया व्यक्ति दूर से ही पहचान में आ जाता है, विशेष रूप से गुंडे आदि की नजरें उसे अच्छी तरह पहचान लेती हैं.

किसी भी अपरिचित व्यक्ति पर विश्वास न करें और न ही अपना सामान उस के हवाले करें.

रास्ते में किसी अनजान व्यक्ति के हाथों से दी गई कोई वस्तु न खाएं. हो सकता है, उस में कोई मादक द्रव्य मिला हो, जिसे खा कर आप अपने होश खो बैठें और वह आप का सामान ले कर चंपत हो जाए.

अपनी जरूरत का सभी सामान साथ में ले जाएं. खानेपीने का सामान भी साथ में रखें ताकि आप को कुछ खरीदने के लिए उतरना न पड़े.

यदि सामान अधिक है तो उसे सामान के डब्बे में रखवा दें ताकि उस की देखभाल की चिंता न रहे.

यदि आप को बिलकुल अपरिचित शहर में जाना है और वहां कोई संबंधी आदि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अकेली महिला को देख कर कुली परेशान करते हैं. इसलिए जहां तक हो सके, सामान इतना ही ले कर चलें कि आवश्यकता पड़ने पर उसे आप स्वयं भी उठा सकें.

नहीं है तो स्वाभाविक है कि आप होटल में रुकेंगी. ऐसी अवस्था में समझदारी इसी बात में है कि होटल में कमरा पहले से ही आरक्षित करा लें. ताकि आप को होटल की तलाश में धक्के न खाने पड़ें. यदि आप टैक्सी वाले से यह कहेंगी कि वह आप को किसी होटल में ले चले तो वह आप की नासमझी का फायदा उठा कर आप को हानि भी पहुंचा सकता है.

होटल में रहते वक्त भी होशियारी से काम लें. कमरे के दरवाजे, खिड़कियां आदि ठीक तरह बंद कर के सोएं. यदि आप के पास कुछ कीमती सामान है तो उसे होटल के 'लाकर' में रखवा दें. लेकिन रसीद लेना न भूलें, अन्यथा धोखा हो सकता है.

यदि आप किसी नई जगह पर जा रही हैं तो कोशिश करें कि आप वहां दिन के समय ही पहुंचें, ताकि रात होने से पहले आप सुरक्षित स्थान पर हों. यदि आप को इस के लिए रात का सफर करना पड़े तो हिचकिचाएं नहीं क्योंकि गाड़ी में सुरक्षा की दृष्टि से खतरा नहीं होता, विशेष रूप से शयनयान में.

यदि किसी कारण आप रात को ही नए गंतव्य स्थान पर पहुंची हैं तो प्रतीक्षालय में रात गुजारिए क्योंकि रात के वक्त नई जगह पर अकेले टैक्सी या रिकशा में सामान के साथ सफर करना सुरक्षित नहीं है.

यदि आप अपने किसी परिचित व्यक्ति से मिलने पहली बार जा रही हैं तो संबंधित व्यक्ति का फोन नंबर (यदि हो) साथ रखें. हो सकता है कि वह आप को स्टेशन पर लेने न आ पाए. ऐसी स्थिति में अकेले धक्के खाने से अच्छा है कि आप फोन कर के उन्हें स्टेशन पर बुला लें और उन के साथ ही आगे जाएं.

यदि आप उपर्युक्त बातों का ध्यान रखेंगी तो आप की यात्रा शांति से गुजरेगी और आप अकेले भी सुरक्षित सफर कर सकेंगी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पति को ताने न मारें मायके की अमीरी के

"संजय, तुम्हें नया सूट सिलवाना ही पड़ेगा. तुम जानते नहीं, वहां कितने रिश्तेदार इकट्ठे होंगे. फिर पिताजी और भैया ही नहीं, जीजाजी वगैरह भी कितने टिपटाप रहते हैं, जरा यह तो सोचो. सब लोगों ने नए जोधपुरी और सफारी सिलवा लिए होंगे. ऐसे में अगर तुम पुराना सूट पहनोगे तो सब लोगों में मेरी कितनी बदनामी होगी. मैं चाहती हूं कि रिंकी की शादी में तुम किसी से पीछे न दिखो..." अपनी छोटी बहन की शादी में जाने के लिए तैयार संध्या ने संजय को मनाना शुरू कर दिया

हालांकि संजय का पहला गरम सूट [illegible] अभी दूसरी ठंड भी नहीं बीती थी.

किंतु संध्या को अपने मायके [illegible] रिश्तेदारों के आगे पति के पुराने सूट [illegible] शर्म आने लगी और अपने इस संकोच [illegible] वह यह भी भूल गई कि यह सब कह कर [illegible] अपने ही पति का अपमान कर रही है.

संजय ने सहजता से पत्नी को अपनी [illegible] समझानी चाही तो वह बजाय बात समझने के रोने

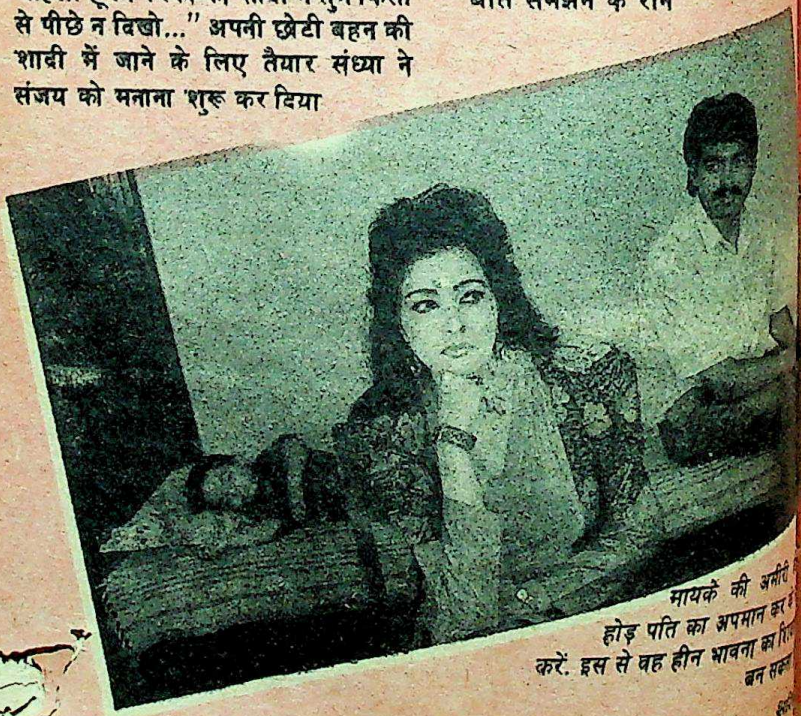

मायके की अमीरी [illegible] होड़ पति का अपमान कर [illegible] करें. इस से वह हीन भावना का [illegible] बन सकता [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेख ● सुरभि सक्सेना

लगी परिणामतः दोनों का मूड चौपट हो गया. इसी हुज्जत में दोनों ही जयपुर नहीं पहुंच पाए और संध्या की लाड़ली छोटी बहन की शादी बगैर उन के शामिल हुए ही संपन्न हो गई.

वास्तव में मायके की आर्थिक स्थिति से पति के आर्थिक स्तर की तुलना करना ही गलत है वरना संध्या की तरह से रोजरोज के झगड़ेझंझट तो दांपत्य जीवन में रहते ही हैं. इस के साथ ही पति भी हीनभावना से ग्रस्त हो जाता है. आवश्यक नहीं कि मायके जैसी ही स्थिति ससुराल की भी हो और सब से महत्त्वपूर्ण बात तो यह है कि आर्थिक स्थिति ही तो सब कुछ नहीं होती है.

कई बार गुणों और व्यक्तित्व का तालमेल अपनेआप में इतना संपूर्ण होता है कि अन्य सारी बातें गौण हो जाती हैं. ऊपरी चमकदमक में लिप्त संध्या ने जीजा वगैरह की संपन्नता का बखान तो कर डाला पति के आगे, किंतु यह भूल गई कि उस का पति भी एक पुरुष है. पत्नी के मुंह से अपनी हैसियत की सीमा सुन कर उसे कितना बुरा लगेगा.

नीरा का मायका बेहद संपन्न है और पति का घर उच्च मध्यमवर्गीय. यों नीरा के विवाह में उस के यहां बहुत सा दहेज मिल सकता था, किंतु यह राजेंद्र की इच्छा के प्रतिकूल होता. इसलिए शादी के पहले ही सामान्य रस्मोरिवाज और लेनदेन तय हो गया था.

राजेंद्र नहीं चाहता था कि वह सदैव के लिए अपनी ससुराल वालों के हाथों बिक

अपने पति को मायके की अमीरी के ताने न मारें. ऐसा करने से जहां एक ओर पति को मानसिक कष्ट होता है, वहीं दूसरी ओर कभीकभी हालात ऐसी करवट ले लेते हैं कि सारी ज़िंदगी अंगारों पर ही काटनी पड़ती है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाए. नीरा ने भी पति की इच्छा और उस के मन का ध्यान रखा. चाहे ससुराल में कैसा भी, कुछ भी रहा उस ने अपने मायके जा कर कुछ नहीं कहा और न ही किसी प्रकार की कोई मदद मांगी. इतना ही नहीं, अपने मायके के शादीब्याह में भी वह उसी सादगी से शामिल हुई, जैसी राजेंद्र की इच्छा देखी.

नीरा संध्या की तरह से नासमझ और पैसे की चमकदमक में रहने वाली औरत नहीं है. वह पति की इज्जत पैसों से नहीं, उस के गुणों और मानवीय मूल्यों के आधार पर करती है. वास्तव में नीरा जैसी समझ दांपत्य जीवन को एक बेहद सुदृढ़ आधार तो देती ही है, साथ ही पारिवारिक माहौल को भी स्वस्थ रखती है. बातबात में मायके की संपन्नता के गीत गाने वाली पत्नी अपनी जिंदगी के साथ किस तरह खिलवाड़ कर रही है, यह वह खुद नहीं समझ पाती.

आश्चर्य की बात तो यह है कि ऊंची डिगरियां हासिल करने के बाद भी पत्नियां इतनी संकुचित विचारधारा रखती हैं कि उन की पढ़ाईलिखाई पर तरस आने लगता है. दो बार एम.ए. कर चुकी कंदला शर्मा को जब मायके की संपन्नता के दौरे पड़ते हैं तो वह किसी को नहीं बख्शती. वह सास से ले कर जमादारिन तक को बताती है कि उस के मायके में रोज ही सुनार बैठा रहता है और आए दिन पार्टियां होती रहती हैं. यहां की तरह 10-20 किलो नहीं, देहराहून से सीधे साल भर के लिए चावल आता है.

अब मूर्ख कंदला को क्या सास समझाए और क्या जमादारिन कि "बड़े घर की बेटी, अब तो तुम्हारा घर यही है, यहां की बुराई कर के और मायके की तारीफ कर के तुम तो अपनी ही चादर खुद उठा रही हो. जहां साल भर का इकट्ठा चावल आता है, जहां आए दिन पार्टियां होती हैं और नित्य नए गहने गढ़वाए जाते हैं, वह तुम्हारे पिता का घर है. तुम्हारा वास्तविक घर तो यही है, जबकि तुम समझ रही हो कि मायके की अमीरी तुम्हारी अमीरी है.

32 वर्षीया दिव्या अग्रवाल जूट व्यापारी की बेटी और सरकारी संस्थान डाक्टर की पत्नी है. जाहिर है, मायके की संपन्नता के आगे उस की ससुराल कहीं नहीं टिकती. किंतु दिव्या अपनी समझदारी और गंभीरता से पूरा संतुलन बनाए रखती है. 10 वर्ष के दांपत्य जीवन में पति तो क्या, घर वालों तक को याद नहीं कि कभी उस ने मायके की संपन्नता और ससुराल की विपन्नता का बखान किया हो. शादी से पहले वाले स्वभाव और खर्चीली आदतों को उस ने एकदम बदल दिया ताकि ससुराल में सामंजस्य बिठाने में दिक्कत न आए.

शादी से पूर्व छानबीन कर लें

मायके के वैभव का बखान करने के कारण पत्नी न तो पति से सामंजस्य बिठा पाती है और न ही अन्य सदस्यों से, तब फिर रिश्तेदारों की तो बात ही और है. अपने के गर्व में चूर होने के कारण ही ऐसी स्थिति पैदा होती है. इसलिए बेहतर तो यही है कि मायके और ससुराल के आर्थिक स्तर का विवाह पूर्व ही लड़की और लड़की के घर वालों को भलीभांति जान लेना चाहिए ताकि बाद में ऐसी कोई दिक्कत पैदा न हो. अगर दिव्या जैसी समझ लड़की के पास है तो वह पति से भी बना लेगी और ससुराल से भी, चाहे फिर आर्थिक असमानता कितनी भी क्यों न हो.

दिशा आज एक तरह से एकाकी जीवन गुजार रही है. पति का घर छोड़े उसे 15 वर्ष के लगभग हो गए हैं और गए हुए उस की मां भी नहीं रहीं. लिहाजा अब वह एकदम अकेली है और कलकत्ता जैसे महानगर की भीड़ में डूबी जैसे खुद को भूल गई है. जिन भैयाभाभी के वैभव संपन्न घर को वह अपना मान अपनी खुद की दहलीज छोड़ आई थी, अब वही उस के लिए पराया हो गया है.

तब नईनई शादी हुई थी. दिशा में उस का बचपना ही था. वह मायके गई तो घर वालों ने भी नहीं समझाया. पैसे की ठसक में वह कोर्टकचहरी तक पहुंच गई. जब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अकेली निरुपाय रह गई तो पाया कि वह ही गलत थी, पति और ससुराल वाले एकदम सही थे. लेकिन अब किया ही क्या जा सकता था. उन के पीछे छूटे परिवार में उन की खाली जगह अब रिक्त नहीं थी.

एक बार उदास दिशा ने बताया, "संबंधों को समझना जरूरी होता है. पैसेवैसे तो आनीजानी चीज है. यह मैं आज समझ पाई हूं, जब कोई और रास्ता नहीं बचा है. आज सोचती हूं तो शर्म से गड़ जाती हूं. पैसे की निरर्थकता अब मेरी समझ में आई है. ऐन सुहाग के शगुन के रोज मैं ने सिर की सुनहरी चुन्नी उतार कर फेंक दी थी क्योंकि मेरे हिसाब से मेरे मायके में ऐसी चुन्नियां तो नाइन और दाइयों को त्योहारों पर दी जाती थीं."

हमारे पड़ोसी सेवानिवृत जिलाधीश हैं. उन की दो बेटियां हैं जिन में से बड़ी बेटी मेघना ससुराल वालों से लड़ कर स्थायी तौर पर रहने मायके चली आई है और दूसरी ने ससुराल में रहते हुए ही घर वालों की नाक में दम कर रखा है. कहना न होगा कि दोनों लड़कियों के साथ मुद्दा वही है, मायके की अमीरी का घमंड और पति पक्ष की आर्थिक दशा से असंतोष.

दूसरों के समक्ष मायके की अमीरी और पति की कमज़ोर आर्थिक स्थिति का बखान करने से पति का रोष दिलाने के सिवाय और कुछ हासिल नहीं होगा.

"हमारे यहां तो हर कमरे में कूलर है. आप लोगों की तरह से हमारे यहां एकएक पैसा दांत से नहीं पकड़ा जाता. हमारे यहां तो सुबह पूरा खाना बनता है, चटनी रायते समेत. आप लोगों जैसा हाल नहीं कि त्योहार पर ही ढंग से रसोई पकेगी." जैसी ऊलजलूल बातों से मेघना ने न केवल अपने मांबाप की नाक कटवाई बल्कि ससुराल वालों को भी मजाक का पात्र बना डाला.

छोटी शोभना ने भी बड़ी बहन के उदाहरण से तमीज नहीं सीखी बल्कि उस के ही आचरण को अपने व्यवहार में शामिल कर वैसा ही तमाशा खड़ा कर डाला.

"आप मुझे रोज शाम को घुमाने नहीं ले चलते... शादी के पहले हर इतवार को हम लोग 'वोल्गा' में डिनर करने जाते थे. जब से शादी हुई है होटल तो क्या, कॉफी हाउस तक का मुंह नहीं देखा है." शोभ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने पति विनय से शिकायत की.

"शोभना, तुम्हारे पिता को तो पता था कि मैं रिश्वत खाने वाली पोस्ट पर नहीं बैठा हूं. मेरी जितनी आमदनी है, तुम्हें मालूम ही है. उस के बाद भी काफी हाउस चलना चाहती हो तो चलो, 'वोल्गा' चल सकती हो तो चलो." विनय ने एकदम स्पष्ट और व्यावहारिक ढंग से समझाया तो शोभना और भड़क उठी. बात बजाय संवरने के धीरेधीरे बिगड़ती चली गई. हालांकि रह तो वे लोग साथ ही रहे हैं, किंतु उन के बीच कितना तनाव है, यह जरा सी देर में ही समझ में आ जाता है.

शोभना की तरह से ही मायके की अमीरी के गुणगान करकर के सबीना ने पति को इतना त्रस्त कर दिया कि वह घूसखोर बन गया क्योंकि सबीना को हर त्योहार पर सोने का कोई आभूषण चाहिए था.

ईंट का जवाब पत्थर से

महेंद्र की ससुराल वाले बहुत व्यवहारकुशल हैं. व्यक्तिगत तौर पर महेंद्र को उन से कोई भी शिकायत नहीं है, सिवाय इस के कि उस की पत्नी हर समय अपने मायके की संपन्नता का बखान करती रहती है. सिर्फ इसी कारण से महेंद्र ने अपनी ससुराल जाना छोड़ दिया है.

मायके की अमीरी के प्रदर्शन और बखानें करने से दोनों पक्षों के लोगों के रिश्तों में दरार आ जाती है. प्रकट में चाहे पत्नी के मायके वाले कुछ न कहें, किंतु पत्नी स्वयं इतना कह डालती है कि महेंद्र की तरह से ससुराल वालों से स्वतः ही घृणा हो जाती है. चूंकि महेंद्र तो अपनी लड़ाई खुद लड़ने में सक्षम था, इसलिए उस ने निर्मला को ईंट का जवाब पत्थर से भी दे डाला है, किंतु जो पति इतने सख्त स्वभाव के नहीं होते वे तो हीन भावना के शिकार हो सकते हैं. जब निरंतर पत्नी मायके की समृद्धि का राग अलापने बैठ जाएगी तो इस के अलावा [illegible]नशील आदमी कर भी क्या सकता है.

आप एक संपूर्ण दांपत्य जिए [illegible] बगैर किसी को भावनात्मक तक[illegible] पहुंचाए ससुराल में रहें तो इस के लिए [illegible] जान लेना आवश्यक है कि आप को [illegible] यह तय करना होगा कि आप का घर कौन [illegible] है, मायका या ससुराल? यह भी तय [illegible] लेना चाहिए कि क्या वास्तव में आप [illegible] शान के विरुद्ध हैं.

पति के घर की मर्यादा

अगर आप का उत्तर सकारात्मक [illegible] तब फिर आप पति के घर की मर्यादा [illegible] अपनी मर्यादा मानेंगी. उन्हें मायके [illegible] अमीरी का जबतब हवाला दे कर आ[illegible] करने के बजाय वही सब करेंगी, जिस से [illegible] के आत्मसम्मान को बल मिले.

आप अपना आदर्श समझदार नीरा [illegible] बनाइए, मूर्ख कंदला को नहीं. नीरा बन [illegible] जिंदगी को न केवल सम्मानजनक तरीके [illegible] जिया जा सकता है बल्कि पतिपक्ष को [illegible] मायके की प्रशंसा के जबरदस्त आघात [illegible] बचाया जा सकता है. अगर आप उन के [illegible] पराई हो कर भी अपनी हो जाती हैं, वे [illegible] फेरों के बाद आप को अपना बना लेते हैं, [illegible] फिर आप में भी तो उन के लिए अप[illegible] जागना चाहिए.

अगर वे आप के अपने हैं, आप उन [illegible] हैं, तब फिर उन लोगों के सामने मायके [illegible] अमीरी का ओछा दिखावा क्यों? आखि[illegible] आप के मुंह से आप के ससुराल वाले अ[illegible] अपमान सहन कर पाएंगे? निस्संदेह [illegible] प्रश्न का उत्तर आप भी यही देंगी कि [illegible] ससुराल में रह कर मायके की प्रशंसा, [illegible] की अमीरी का आलाप गलत है. आप [illegible] अपने परिजनों के साथ भावना[illegible] अत्याचार है.

याद रखिए, आप को उतने ही [illegible] पसारने चाहिए जितनी आप के पति [illegible] चादर है. मायके की स्थिति, वहां की [illegible] बस वहीं तक रहनी चाहिए. आप का स[illegible] तो यहीं है जहां आप हैं, जहां सात फेरों [illegible] रस्म आप को ले आई है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरे चांद कहां हो

हुई जा रही
सांझ सिंदूरी
विदा ले रहा सूरज,
बाट जोहता होगा उस की कोई
तय करनी है
उस को काफी दूरी.

रात अभी आएगी
तारे नभ में छिटकेंगे
और चांदनी की तलाश में
वे सब भटकेंगे.
किंतु चांदनी
आज नहीं आएगी,
उस के प्रियतम घर पर हैं
वह घर ही रह जाएगी.

मेरे चांद कहां हो तुम
आ जाओ
अमा निशा में डर लगता है
आ कर गले लगाओ!

—विश्वनाथ गुप्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी ● कुमुद भटनागर

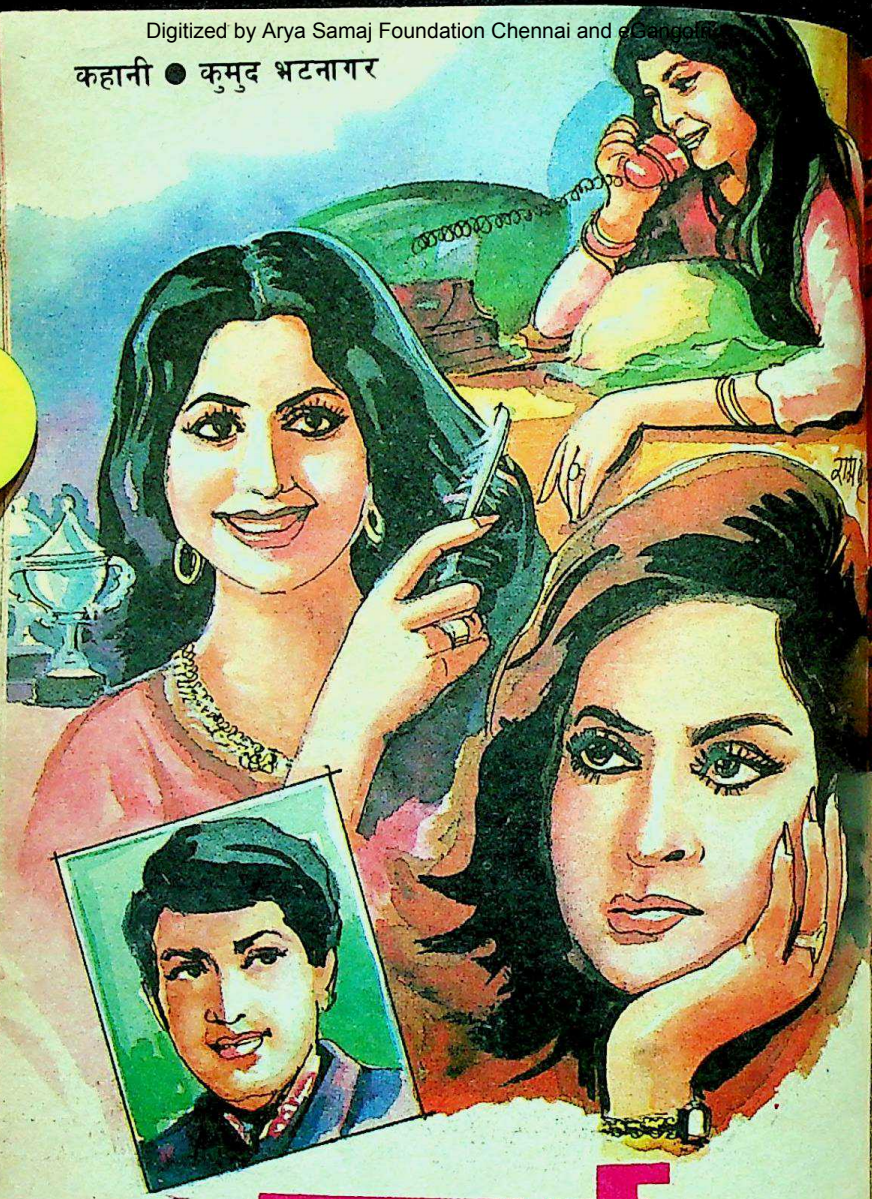

स्पर्धा

"तुम्हारे लिए एक बहुत बढ़िया खबर है." जतिन ने शरारत से मुसकरा कर कहा, "बूझो तो जानें."

"तुम्हें वह एक हजार वाली तरकीब मिल गई?" स्वाति ने उछल कर कहा.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chenn

"अरे, तरक्की तो जिंदगी की मामूली सी बात है, देरसवेर सभी को मिल जाती है. यह तो एक खास खबर है." जतिन रहस्यमय भाव से हंसा.

"तो फिर हमारी वह विश्वभ्रमण वाली लाटरी निकल आई होगी?"

"वह भी कोई खास खबर नहीं... क्योंकि लाटरी न भी निकले तो भी बंदा तुम्हें दुनिया की सैर करवा ही लाएगा. यह आखिरी अटकल है, सोच कर बोलना."

"भारत से कोई..?"

"मान गए, भई. इस बार तीर निशाने पर ही जा रहा है." जतिन मुसकराया, "मौली और शिव आ रहे हैं."

"सच? कब आ रहे हैं जीजाजी और मौली?" स्वाति ने उत्साह से पूछा, "कितने दिनों को?"

"एकदो महीने में आ ही जाना चाहिए, कम से कम तीन साल के लिए."

"तीन साल के लिए...क्या मतलब?"

मौली के आने की खबर सुन कर स्वाति जतिन से बोली, "मौली के आने की तो पक्की हो गई, मगर अपने जाने का क्या हुआ?"

शिव और जतिन अपनी पत्नियों मौली और स्वाति के व्यवहार से असंतुष्ट थे. लेकिन जतिन ने एक ऐसी योजना बनाई कि दोनों की पत्नियों में एक होड़ सी आरंभ हो गई. और इस होड़ से जो परिणाम निकले, उस ने सभी को चौंका दिया.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वाति ने चौंक कर पूछा.

"क्योंकि तुम्हारे जीजाजी को हमारी ही कंपनी में संपर्क विभाग का अध्यक्ष चुना गया है. आज ही उन्हें नियुक्तिपत्र और तीन साल का अनुबंध भेजा गया है." जतिन ने स्वाति के कंधे पकड़ कर कहा, "बोलो, है न खास खुशी की खबर."

लेकिन स्वाति के चेहरे पर खुशी और उत्साह की जगह परेशानी और उलझन झलक रही थी.

"मगर जीजाजी तो फौजी अफसर हैं...वह भला दूसरे मुल्क की नौकरी क्यों करने लगे?"

"उन की फौज की नौकरी की अवधि पूरी हो चुकी है और वह जब चाहें स्वेच्छा से पेंशन ले सकते हैं. हो सकता है, ले भी चुके हों. पिछली छुट्टियों में जब हम मिले थे तो शिव ने मुझ से कहा था कि वह भी किसी अच्छी नौकरी की तलाश में है. जब अपनी कंपनी में एक संपर्क अध्यक्ष रखने की बात चली तो मैं ने शिव का जिक्र किया. महानिदेशक को बात जंची. फिर भारत जाने पर वह शिव से मिले और बहुत प्रभावित हुए."

"यानी जीजाजी को यह नौकरी तुम्हारे कहने पर मिली है?"

"मिली तो अपनी योग्यता और प्रभावशाली व्यक्तित्व के बल पर है, मैं ने तो बस उन का नाम सुझाया था."

"मगर क्यों, जतिन? तुम्हें बेकार में उन का नाम सुझाने की क्या पड़ी थी? जहां चाहते, अपनेआप नौकरी ढूंढ़ लेते."

जतिन ने आश्चर्य से स्वाति की ओर देखा कि उसे क्या हो गया है? उस का तो खयाल था कि स्वाति खुशी से फूली नहीं समाएगी. बारबार उस से कहेगी कि वह कितना अच्छा है जो उस ने शिव और मौली को भी वहीं बुला लिया. अपनी हमउम्र बहन का नजदीक रहना किसे अच्छा नहीं लगता. वे लोग तो अपने देश से दूर शारजाह में रह रहे थे, जहां किसी अपने का आ जाना मरुस्थल में शीतल छाया मिलने के [illegible] था. लेकिन स्वाति यह सुनते ही इस [illegible] बौखला गई थी, जैसे मौली उस की [illegible] बहन न हो कर कोई अप्रिय व्यक्ति हो.

"बताओ न, तुम ने शिव का नाम [illegible] सुझाया?" स्वाति ने बहस करते हुए पूछा.

"क्योंकि वह मुझे इस पद के उपयुक्त [illegible] लगा था."

"मगर तुम्हें इस से फायदा [illegible] होगा?" स्वाति ने झल्लाए स्वर में पूछा.

जतिन ने चौंक कर स्वाति की [illegible] देखा. "कैसी बातें कर रही हो स्वाति? [illegible] कोई भी काम अपने ही फायदे के लिए कि[illegible] जाता है? वैसे शिव और मौली के यहां [illegible] से हमें तो फायदा ही रहेगा. परदेस में [illegible] अपना..."

"तुम्हें होगा फायदा, मेरा तो [illegible] मुशकिल हो जाएगा. सुखचैन सब खत्म." स्वाति ने रोंआसे स्वर में कहा और [illegible] पटकते हुए अंदर चली गई.

जतिन भी उस के पीछे गया [illegible] दरवाजा बंद करने से पहले ही स्वाति के [illegible] झकझोरते हुए बोला, "यह कैसी बहकी [illegible] बहकी बातें कर रही हो? अपनी सगी बहन [illegible] और उस के परिवार के आने से भी क[illegible] किसी का सुखचैन खत्म होता है?"

"किसी दूसरे का नहीं मालूम, मगर [illegible] मौली के यहां आते ही मेरा सुखी संसार [illegible] तहसनहस हो जाएगा." स्वाति ने सिसकियां [illegible] रोकते हुए कहा.

"तुम यह क्या कह रही हो, स्वाति? [illegible] सुनो, मैं और मौली हमउम्र होने की वजह [illegible] खुल कर हंसीमजाक कर लेते हैं, उसे ले [illegible] तुम्हें कोई शक है?" जतिन कुछ सोचते [illegible] बोला, "या फिर शिव के आक[illegible] व्यक्तित्व को देखते हुए खुद पर भरो[illegible] नहीं है?"

"छीछी... कैसी गंदी बातें कर [illegible] हो." स्वाति ने जतिन के होंठों पर हाथ [illegible] दिया.

"चलो, मामला बराबर हो गया." जतिन हंसा, "मैं गंदी बातें कर रहा हूं [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुम फालतू बातें कर रही हो."

"मैं फालतू बातें नहीं कर रही जतिन. सच कह रही हूं. मैं समझ नहीं पा रही कि तुम्हें समझाऊं कैसे? वैसे समझाने को अब रह भी क्या गया है क्योंकि जीजाजी को तो अब आने से रोका नहीं जा सकता. मेरा बनाबनाया सुखी संसार छिन्नभिन्न हो कर ही रहेगा." स्वाति व्यथित स्वर में बोली.

"अगर शिव को यहां आने से नहीं रोका जा सकता तो हमें भी तो यहां से जाने से नहीं रोका जा सकता? अगर तुम्हें उन लोगों के साथ रहने में परेशानी होगी तो हम कहीं और चले जाएंगे. लेकिन पहले यह तो पता चले कि परेशानी है क्या?" जतिन ने अधीरता से पूछा.

स्वाति ने गहरी सांस ली, "परेशानी समझो तो बहुत ज्यादा है और न समझो तो कुछ भी नहीं."

"अब जो भी है...कह डालो, यार," जतिन ने उकसाए स्वर में कहा, "पता तो चले कि बात क्या है?"

फिर स्वाति ने रुकरुक कर, मगर विस्तार से बताया कि सगी बहनें होते हुए भी उस में और मौली में कितनी असमानता थी. बचपन से ही मालविका पतली, लंबी, तीखे नैननक्शों की थी और स्वातिका गोलमटोल. मौली के खानेपहनने के मामले में बेहद नखरे थे, बोलती भी कम ही थी. इस के विपरीत स्वाति को जो मिला, पहन लिया, सब कुछ चटखारे ले कर खा लिया, जिस से चाहा बातचीत, छेड़छाड़, लड़ाई-झगड़ा कर लिया और अगले पल फिर सुलह कर ली. सो बचपन में मौली की अपेक्षा थुलथुल, मस्तमौला स्वाति को सब अधिक चाहते थे.

पढ़ाईलिखाई में दोनों ही तेज थीं. आठवीं कक्षा तक पहुंचतेपहुंचते मौली ने पढ़ाई के साथ खेलकूद, नाटकों और संगीत

एकांत मिलते ही जतिन ने शिव से कहा, "इन दोनों बहनों के साथ मुशकिल बस एक ही है कि एक तो हद से ज्यादा मस्त और बेपरवाह और दूसरी..."

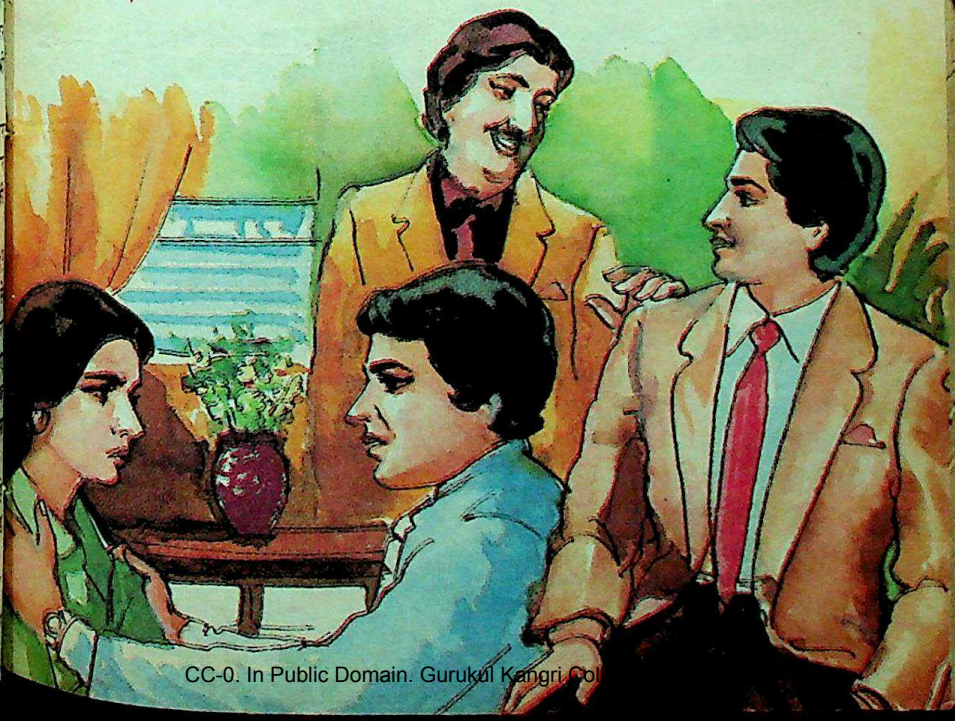

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Coll

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में भी धाक जमानी शुरू कर दी थी और शहर के सब से बढ़िया स्कूल में दाखिला ले लिया था, मगर सब के लाख कहने के बावजूद स्वाति ने उस स्कूल में जाने से इनकार कर दिया.

दूसरे स्कूल में जाते ही मौली के व्यक्तित्व में और भी निखार आ गया था. वह स्कूल की सब से श्रेष्ठ लड़की मानी जाने लगी थी. छुट्टियों में उस ने चित्रकला सीख ली थी. कालिज में भी शीघ्र ही मौली की धाक जम गई थी. अब उस का अधिकांश समय फोन पर बतियाते या शीशे के सामने इतराते गुजरता था. पर मां उसे कुछ नहीं कहती थीं बल्कि जब भी मौली बनसंवर कर निकलती थी तो मां की आंखें एक अजीब दर्प से दपदप करने लगती थीं. हर आनेवाले को मौली के बनाए गए चित्र, विभिन्न प्रतियोगिताओं में जीते गए कप, मैडल दिखाए जाते. लोगों की तारीफ से फूल कर मौली उन की खूब खातिर करती. स्वाभाविक था, मेहमान कहे बगैर न रहते "यदा रूप, तदा गुण."

इस रूप और गुण के बखान में किसी को स्वाति का ध्यान भी न रहता. स्वाति को इस से कोई फर्क नहीं पड़ता था. उस की अपनी सहेलियां, दोस्त थे, कामिक्स और उपन्यास थे. समय मौजमस्ती में कट रहा था और कटता भी रहता, अगर मां की तबीयत अचानक खराब न हो जाती. डाक्टर ने उन का आपरेशन तुरंत करवाने की सलाह दी.

"एक सप्ताह रूक नहीं सकते?" मां ने पूछा, "इस बीच मैं अपनी बहन या ननद को घर संभालने को बुला लूं."

"क्या जरूरत है? नौकर है, लड़कियां हैं, सब संभाल लेंगी. क्यों मौली..?डाक्टर ने पूछा.

"हां, डाक्टर साहब, कोई चिंता की बात नहीं है. आप जब भी उचित समझें, आपरेशन कर दीजिए." मौली बोली.

"लेकिन अकेली मौली क्याक्या करेगी?" मां ने चिंतित स्वर में पूछा.

"अकेली क्यों, स्वाति भी तो है."

"उसे कुछ नहीं आता, डाक्टर साहब, वह अभी बच्ची है." मां ने लाड़ से कहा.

"यह भी खूब रही. मौली से दो साल ही तो छोटी है. लेकिन रमा, लगता है, तुम अपनी लाड़ली बेटी की तरफ ध्यान नहीं देतीं. खाखा कर कितनी बेडौल और मोटी होती जा रही है."

मौली एकाएक खिलखिला कर हंस पड़ी थी, "क्योंकि यह ज्यादा हिलतीडुलती नहीं, सारा दिन पलंग पर पड़ी या तो फोन करती रहती है या किताबें पढ़ती रहती है."

"गलत बात है. तुम्हें स्वाति की तरफ ध्यान देना चाहिए, रमा." डाक्टर ने कहा.

उस के बाद मां और पिताजी ने स्वाति की ओर ध्यान देना शुरू किया तो स्वाति की तो जैसे आफत ही आ गई. वह क्या भी करती, उस का मुकाबला मौली से किया जाता और स्वाति मौली से मीलों दूर होती. मातापिता की मुंहलगी तो थी ही और स्कूल में निडर भी. एक दिन दबंग स्वर में बोल पड़ी, "यह देखिए कि काम ठीक हुआ है या नहीं. यह नहीं कि मौली जैसा नहीं हुआ है. मैं मौली का मुकाबला नहीं कर सकती. मालविका अपनी जगह, स्वातिका अपनी जगह."

कुछ देर तक तो मां और पिताजी सकपकाए से उस की ओर देखते रहे. फिर पिताजी धीरे से बोले, "यह भी ठीक कहती है. पांचों उंगलियां बराबर तो नहीं होतीं."

उस दिन से मां, पिताजी ने कभी भी उस की तुलना मौली से नहीं की, मगर फिर भी मौली जैसी प्रतिभाशाली लड़की की बहन होने का दंश तो उसे जबतब झेलना ही पड़ता था.

जब शारजाह में बसे जतिन का रिश्ता आया तो स्वाति ने मातापिता पर दबाव डाला कि वह यह प्रस्ताव मान लें. मां ने अंदाजा लगाया कि आरामतलब लड़की विदेश में मिलने वाली सुखसुविधाओं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लालच में शारजाह जाने को तैयार हो गई है. लेकिन स्वाति मौली से दूर रहना चाहती थी. उसे मौली से कोई ईर्ष्या नहीं थी, मगर भारत में रह कर मौली के मुकाबले से बचा नहीं जा सकता था और यह तुलना उस की गृहस्थी को कभी भी अशांत कर सकती थी.

जतिन धैर्य से सब सुनता रहा. फिर रहस्यमय ढंग से बोला. "एक राज की बात बताऊं, किसी ने तुम्हारी तुलना मौली से कर के मेरी जिंदगी को भी संवारा है."

"मैं बच्ची नहीं हूं, जिसे तुम यह झूठी तारीफ का झुनझुना बजा कर बहला लो," स्वाति चिढ़े स्वर में बोली.

"झूठी तारीफ नहीं, सच कह रहा हूं स्वाति. शिव ने एक बार कहा था, 'तेरी जिंदगी बढ़िया गुजर रही है यार. तेरी बीवी जिंदगी को बहुत सहजता और आराम से जीती है. न नित नए कपड़ों की फरमाइश, न घर सजाने के लिए नित नई चीजें खरीदना, न बढ़िया व्यंजन बनाने के लिए महंगी चीजें लाना और न ही सलीके की दुहाई देते हुए तेरे उठनेबैठने पर रोक लगाती है. सच कहता हूं जतिन. परेशान हो गया हूं अनुशासन और नियमों वाली सेना की नौकरी और बीवी के सलीकों से.' सचमुच ही शिव बेचारा तो पिस कर रह गया है."

स्वाति हंस पड़ी. लेकिन फिर गंभीर हो कर बोली, "कुछ भी हो, हर पार्टी में सुघड़ और सुंदर बीवी पाने के लिए बधाइयां तो शिव ही बटोरता है. यहां आ कर तो मौली और भी ज्यादा जलवे दिखाएगी. रंगरूप संवारने को अनगिनत सौंदय प्रसाधन, घर सजाने को बढ़िया सामान, खाना बनाने के अनेक उपकरण और देशदेश की चुनी गई खाद्य सामग्री उपलब्ध है. देखना, अब कैसे गजब ढाएंगी कर्नल शिवमोहन की पत्नी श्रीमती मालविका मोहन."

"मजा आएगा फिर तो."

"खाक मजा आएगा... मेरी भले ही किसी ने तारीफ न की हो, मगर बुराई भी नहीं की कभी. लेकिन मौली के यहां आते ही

बहाना

बेवक्त हंसने पर मेरे
लोग मुझे खुशनसीब कहते हैं,
उन्हें क्या मालूम
ये तो गमों को छुपाने का बहाना है.

—अंकिता श्रीवास्तव

सब मेरी तुलना उस से कर के सामने न सही, पीठ पीछे तो मेरा मजाक उड़ाएंगे ही..." स्वाति व्यथित स्वर में बोली.

स्वाति जो कह रही थी, वह किसी हद तक ठीक ही था. बहनों की तुलना करना लोगों के लिए स्वाभाविक ही होता है. फिर यहां तो दोनों बहनों का सामाजिक क्षेत्र भी सीमित ही होगा, उन्हीं लोगों में मौली उठेबैठेगी, जिन से अभी तक स्वाति की मित्रता है.

सो मौली की तुलना के सर्पदंश से स्वाति को बचाने के लिए जतिन को कुछ न कुछ तो करना ही होगा. यों उस ने कहने को तो स्वाति से कह दिया कि कहीं और चले जाएंगे और थोड़ी कोशिश के बाद लंदन या काबुल की बदली हो भी सकती थी. लेकिन लंदन या काबुल के सर्दमौसम में जाने को जतिन बिलकुल इच्छुक नहीं था.

शारजाह की गरमी तो वातानुकूलित घर, दफ्तर और गाड़ी में आसानी से झेली जा सकती थी. लेकिन धुंध और बर्फ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की एक अलग ही सर्द परेशानी होती है जो जतिन को बिलकुल पसंद नहीं थी. फिर शारजाह में वह हर तरह से खुश और संतुष्ट था. किसी तरह की कोई परेशानी नहीं थी. फिर नई जगह जाने का झंझट महज स्वाति की बचकानी जिद की वजह से वह क्यों मोल लेता?

लेकिन स्वाति का यों बिसूरना भी जतिन नहीं देख सकता था. माना कि स्वाति हद से ज्यादा लापरवाह थी. लेकिन फिर भी जैसी भी थी, अपनी जगह ठीक ही थी. जतिन को वह बहुत पसंद थी. उसे कभी स्वाति से कोई शिकायत नहीं हुई. उस का घरसंसार वह सुव्यवस्थित ढंग से चला रही थी. लेकिन फिर भी मौली के आने पर वह दुखी न रहे, इस के लिए तो कुछ करना ही होगा. बहुत सोचने के बाद जतिन को उपाय सूझ ही गया.

तभी मौली की चिट्ठी आ गई कि वह लोग अगले सप्ताह पहुंच रहे हैं.

"मौली के आने की तो पक्की हो गई, मगर अपने जाने का क्या हुआ?" स्वाति ने पूछा.

"जा तो कभी भी सकते हैं, मगर मुझे शक है कि लंदन या काबुल की बर्फ में तुम खुश नहीं रह सकोगी." जतिन बोला.

"मौली की योग्यता के साए से दूर मैं कहीं भी खुश रह सकती हूं."

"और अगर मैं ऐसा तरीका सुझाऊं, जिस से तुम्हें मौली की योग्यता के साए में जीने का मजा आ जाए तो?"

"वह कैसे हो सकता है?"

"मौली का मुकाबला कर के उसे चिढ़ाओ...मगर मेहनत से नहीं, अक्ल से."

"न बाबा न. मैं मौली का मुकाबला कभी नहीं कर सकती. मुझ से उस की तरह जानमारी नहीं की जाती."

"तो मैं क्या कह रहा हूं जानेमन, यही न कि उस का मुकाबला करो, मगर अक्ल से. जैसे मौली गुलाबजामुन जरूर बनाएगी, मगर घर में... वही गुलाबजामुन तुम भी बनाओ मगर पैकेट वाले मिश्रण से.."

"यानी सरल और बेहतर उप[illegible] स्वाति ताली बजा कर हंसी, "इस तरीके [illegible] तो मैं ईंट का जवाब पत्थर से दे सकती [illegible] ठीक है, अभी हम यहीं रहेंगे, देखते हैं, [illegible] होता है."

जतिन ने राहत की सांस ली. मन[illegible] 'अपनी मुसीबत तो फिलहाल टल ही [illegible] अब लगे हाथ शिव की परेशानी भी क[illegible] दूर कर दी जाए. सेना के अनुशासन से [illegible] छुटकारा पा ही गया है, अब बीवी [illegible] कायदेसलीके से भी उसे थोड़ी निजात दि[illegible] दी जाए.'

जतिन ने शिव का स्वागत करते [illegible] कहा, "आप को तो यहां कोई परेश[illegible] नहीं होगी बल्कि फौजी जिंदगी के ब[illegible] 'शायद थोड़ा चैन ही मिले." फिर वह मौ[illegible] की ओर मुड़ा. "लेकिन आप को जरूर [illegible] पर परेशानी होगी."

"मुझे क्या परेशानी हो सकती है?" मौली ने अपनी तराशी हुई भौएं चढ़ा [illegible] पूछा.

"क्योंकि यहां कोई भी घरेलू जिंद[illegible] या यारदोस्तों के बीच किसी किस्म [illegible] औपचारिकता या कायदेसलीके नहीं बरतत[illegible] यह शायद आप को पसंद न आए."

"मुझे दूसरों के जीने के ढंग से क्[illegible] लेनादेना? वह जैसे जी चाहें जीएं, हम अ[illegible] तरीके से रहेंगे." मौली ने लापरवाही [illegible] कहा.

"बस वही तो परेशानी है, यहां [illegible] कोई सब को अपने ही रंग में रंगना चाह[illegible] है."

"तो ठीक है...हम उन को अपने रंग [illegible] रंग देंगे." मौली दर्प से मुसकराई.

"यह तो खैर वक्त ही बताएगा [illegible] कौन किस का रंग पकड़ता है." जति[illegible] मुसकराया.

एकांत मिलते ही जतिन ने शिव [illegible] कहा, "इन दोनों बहनों के साथ मुशकि[illegible] बस एक ही है कि एक तो हद से ज्यादा म[illegible] और बेपरवाह और दूसरी..."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"जरूरत से ज्यादा सुघड़ और सलीकेदार?" शिव ने बात काटी.

"अगर दोनों ही थोड़ेथोड़े एकदूसरे के गुण ले लें तो बात बन जाए."

"सवाल ही नहीं उठता. स्वाति बहुत पहले ही कह चुकी है कि मालविका अपनी जगह और स्वातिका अपनी जगह. मौली भी कहती रहती है कि चीते के धब्बे नहीं बदले जाते. सो दोनों बहनों का इरादा अपनी आदतें बदलने का नहीं है." शिव ने बताया.

"लेकिन मैं दोनों की आदतें बदल सकता हूं, अगर आप मदद करें तो..."

"जरूर मदद करूंगा. बोलो, क्या करना होगा?"

"हमें दोनों बहनों में स्पर्धा पैदा करनी होगी. उस के लिए आप स्वाति की मौजमस्ती और लापरवाही की तारीफ कीजिए और मैं मौली के सलीके की. फिर देखिए, क्या होड़ लगती है, दोनों में एकदूसरे के मुकाबले की."

"मैं तो हमेशा ही स्वाति की प्रफुल्लता और बेफिक्री की तारीफ करता हूं. मगर अवसर पड़ने पर अब मौके, बेमौके कुछ ज्यादा ही कर दिया करूंगा. स्वाति के बारे में तो नहीं जानता, मगर मौली पर इस सब का कुछ असर नहीं होने वाला. फिर भी कोशिश कर के देख लेते हैं."

अगले सप्ताह से आए दिन जतिन का दोपहर का भोजन वापस आने लगा. पत्नी के पूछने पर वह कह देता, "शिव आज कटलेटस लाया था. उस के साथ वही खा लिए."

"मौली ने बहुत बढ़िया कीमे के परांठे भेजे थे.'

"शिव के साथ मुर्ग बिरयानी खा ली थी." अगले सप्ताह से जतिन ने खाना ले जाने से मना ही कर दिया, "शिव के साथ इतना ज्यादा खाना होता है कि अपने सैंडविच खाने की जरूरत ही नहीं पड़ती."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मगर रोज शिव का लाया खाना खाते हुए तुम्हें अच्छा लगता है?" स्वाति ने पूछा.

"लगता तो नहीं, मगर कर भी क्या सकता हूं? न तो शिव को अपने कमरे में आ कर खाना खाने से रोक सकता हूं, न ही उसे मेरी प्लेट में खाना डालने से और न ही अपने सैंडविच उस के गले में धकेल सकता हूं," जतिन बेबसी से बोला, "हां, यह हो सकता है कि एक सप्ताह खाना शिव लाए, दूसरे सप्ताह मैं ले जाऊं. लेकिन शिव का पेट सैंडविच से नहीं भरेगा."

"उस के लिए मैं सुबह उठ कर परांठे कबाब तो बनाने से रही." स्वाति ने साफ इनकार कर दिया, "उस वक्त तो बस सैंडविच ही बन सकते हैं."

मंगल विधान

वह व्यवस्था या वृत्ति जिस से लोक में मंगल का विधान होता है, 'अभ्युदय' की सिद्धि होती है, धर्म है.

—रामचंद्र शुक्ल

"वैसे जितनी देर सैंडविच बनाने में लगती है उतनी ही परांठा बनाने में." जतिन ने बताया, "मैं ने कहीं पढ़ा था..."

"और कबाब बनाने में?" स्वाति ने झल्ला कर पूछा."

"वह तो 'अलकरीम' से बनेबनाए लाती हो, बस सेंकने भर होंगे."

"अलकरीम से तो और भी कई चीजें मिल जाएंगी. ठीक है. अगले सप्ताह तुम खाना ले कर जाना."

इसी तरह शिव ने पहले स्वाति के यहां दी जाने वाली दावतों की तारीफ शुरू की.

"सोचा भी नहीं था कि स्वाति इतनी बढ़िया दावत कर सकती है. क्या मौजमस्ती का आलम था. मजाल है जो कोने में कोई चुपचाप खड़ा रह जाए, खींच कर उसे जब तक सब में शामिल कर के हंसा न दे, स्वाति को चैन नहीं. किस फुरती से हंसती खिलखिलाती हाल के एक कोने से दूसरे कोने में घूमती है. चेहरे पर थकान या तनाव की शिकन नहीं."

"थकान भला क्या होगी. सारा खाना तो होटल से मंगवा कर मेज पर धर देती है. जिस ने खाना है, खुद जा कर खा ले... स्वाति ने तो नहीं पूछना. उसे अपने हंसीमजाक से ही फुरसत नहीं."

"लोग दावत में खाना खाने नहीं, हंसनेबोलने आते हैं और जैसा हंसीखुशी का माहौल स्वाति बनाती है, उस के आगे तो 56 व्यंजन और सजावट, नफासत कोई अर्थ नहीं रखते."

शाम को भी शिव अकसर दफ्तर से लौटते हुए स्वाति के यहां से हो कर आता. घर आ कर पत्नी को सुनाते हुए कहता, "आज दिन भर काफी झिकझक की सो सिर भारी हो रहा था. थोड़ी देर स्वाति और बच्चों के साथ होहल्ला किया, सब ठीक हो गया."

एक रोज तबीयत थोड़ी ढीली होने की वजह से शिव दफ्तर नहीं गया. शाम को बोला, "चलो, जतिन के यहां चलते हैं... घर में पड़ापड़ा ऊब गया हूं."

"उन्हीं लोगों को यहां बुला लेते हैं." मौली बोली.

"लेकिन मेरी तबीयत तो हंगामा करने की हो रही है और वह तो यहां हो नहीं सकता." शिव बोला.

"क्यों नहीं हो सकता?" मौली ने भौंहें चढ़ाईं.

"क्योंकि तुम्हें यह सब पसंद नहीं है." शिव मुसकराया.

"सवाल पसंद ना पसंद का नहीं, सही तौरतरीके से रहने का है. लेकिन अगर तुम्हें स्वाति का तरीका पसंद है तो हम भी वही रवैया अपना लेते हैं." मौली हंसी, "मैं स्वाति को फोन कर देती हूं, वे सभी यहां आ जाएंगे और रात का खाना हमारे साथ खा लेंगे."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"फिर क्या फायदा, तुम तो हमारे साथ बैठोगी नहीं, रसोई में घुस जाओगी."

"नहीं, फ्रिज में बहुत कुछ है खाने को, वही निकाल दूंगी." कह कर मौली फोन करने चली गई.

उस ने थोड़ी देर बाद बताया, "बच्चों को स्वाति अभी भेज रही है, ड्राइवर के साथ. खुद वह जतिन के साथ बाद में आएगी."

"क्यों जतिन अभी दफ्तर से नहीं आया?" शिव ने पूछा.

"जतिन तो आ गया है, मगर स्वाति आज हैदराबादी बिरयानी बना रही है. बनने के बाद यहां ले कर आएगी."

"अरे छोड़ो... स्वाति और बिरयानी जैसी चीज पकाने की मेहनत करे. रास्ते में से अलकरीम से खरीद लाएगी."

"मैं ने भी यही कहा था, मगर जब स्वाति ने बताया कि वह कौनकौन से मसाले डाल रही है तो मानना ही पड़ा," मौली हंसी.

"उन लोगों के आने से पहले चलो, हम मेज लगा दें." बच्चे बोले.

"रहने दो अभी खाने के वक्त ही प्लेटें रख लेंगे. सब घर के ही तो लोग हैं... सजी हुई मेज के बगैर भी चलेगा." मौली ने लापरवाही से कहा.

बच्चे हैरानी से मौली को देख रहे थे. मगर शिव जतिन की योजना की सफलता पर मुसकरा रहा था. कोई पत्नी यह कभी सहन नहीं कर सकती कि उस का पति किसी दूसरी स्त्री के बनाए खाने की तारीफ करे या दिल बहलाने के लिए दूसरी स्त्री के घर जाए, भले ही वह उस की अपनी सगी बहन ही क्यों न हो. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नयन शर्मीले हो गए

तुम ने किया स्पर्श
नयन शर्मीले हो गए.

घिर आए सपनों
के बादल
भर लाए शीतल
जलगागर,
देह के मरुस्थल पर
सिमट गया
बांहों का सागर,
रस्मों के सारे बंधन
ढीले हो गए.
स्वप्न रंगीले हो गए.

मन के मौन निमंत्रण पर
पाहुन बन
आ पहुंचे
द्वारे पर साजन के पांव,
सौतन सा लगने लगा
बाबुल का गांव,
प्रियतम के आलिंगन से
प्रिय के अधर
रसीले हो गए.
प्रेमपंथ बर्फीले हो गए.

—मनोज सोनी 'मनु'

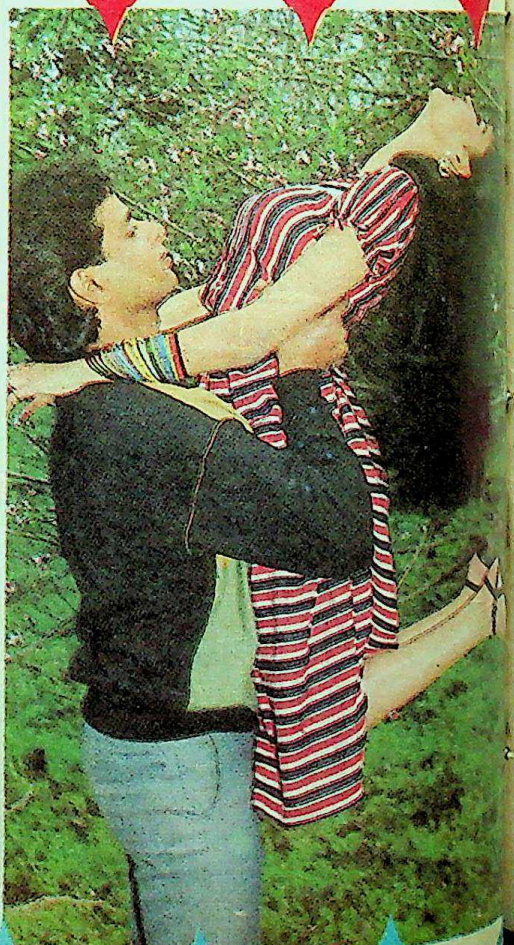

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

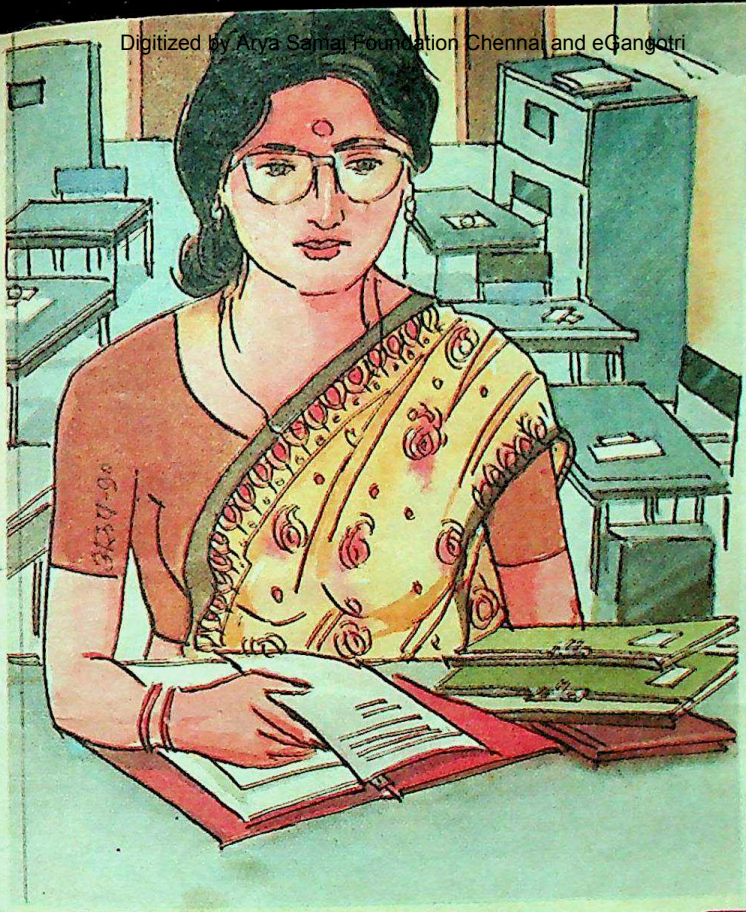

तृप्ति नहीं हारी

कहानी ● निर्मला सुरेंद्रन

पांच बज गए थे. दफ्तर पूरी तरह खाली हो चुका था. सिर्फ प्रबंधक अपनेआप को फाइलों में उलझाए बैठे थे. तृप्ति चाह कर भी अपनी कुरसी से हिल नहीं पा रही थी. घर जाने के खयाल मात्र से मन व्याकुल हो रहा था.

"तृप्ति, घर नहीं जाना है क्या?" फाइलों को एक ओर रखते हुए प्रबंधक ने प्रश्न किया तो तृप्ति को भी अपने सामान को बटोरते हुए उठना पड़ा.

बस के लिए कतार रोज की अपेक्षा अधिक लंबी थी. तृप्ति ने देखा, संजय कतार में सब से आगे था. उसे देख कर तृप्ति की धड़कन अनायास ही तेज होती चली गई.

कुछ माह पहले तक संजय तृप्ति को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संजय तृप्ति के पिता को खुदगर्ज इनसान समझता था इसी लिए उसे तृप्ति का शादी के बाद भी अपने पिता को पैसे भेजना अखरता था. लेकिन जब उन की मजबूरी का एहसास हुआ तो उस का दिल आत्मग्लानि से भर उठा.

पीछे खड़े देखता तो स्वयं भी उस के पास आ कर खड़ा हो जाता और कभीकभार जब तृप्ति आगे होती तो उसे खींचता हुआ पीछे अपने पास ले आता.

वही संजय, जिस के नाम का सिंदूर तृप्ति की मांग में चमक रहा था, कितना पराया लग रहा था. संजय ने एक बार भी मुड़ कर नहीं देखा. शायद उसे इस बात का पूरा आभास था कि तृप्ति वहीं कहीं पीछे खड़ी होगी.

बस आ गई थी और लोग चढ़ने लगे थे. तृप्ति जानबूझ कर बस की ओर नहीं देख रही थी. वह जबरदस्ती अपनी नजरें बस के पहिए से चिपकाए रही, जैसे इंतजार कर रही हो कि वह जल्दी से आगे बढ़ना शुरू कर दे. जैसे ही बस चली, अनायास ही तृप्ति की आंखें बस की ओर उठ गईं और संजय को वहीं खिड़की के पास बैठे अपनी ओर देखते पा कर झेंप कर झुक गईं.

सब कुछ सालों पहले जैसा ही था, कुछ बदला था तो बस में कतार से चढ़ने की पद्धति. पहलेपहल जब वरली के इसी कार्यालय में तृप्ति को नौकरी मिली थी, तब बस में इस तरह पंक्ति में चढ़ने की पद्धति नहीं थी.

'नीलकमल इस्टेट' की आठ मंजिलों वाली 10 इमारतों में अनेक कार्यालय थे, जिन में से अधिकांश कार्यालयों का समय एक ही था. जब पांच बजे छुट्टी होती तो बस स्टाप पर भीड़ बेतहाशा बढ़ जाती. तृप्ति को बस से दादर स्टेशन तक जाना होता और फिर दादर से वह जोगेश्वरी तक लोकल में जाती थी. वरली के उस बस स्टाप पर भीड़ इतनी ज्यादा होती कि तृप्ति को बस के लिए खड़ा रहना पड़ता.

इसी बस स्टाप पर पहली बार संजय से तृप्ति की नजरें टकराई थीं और वह अनोखे आकर्षण में वह बंध गई थी. संजय आकर्षक कदकाठी का सजीला नौजवान था बिलकुल वैसा ही, जैसा तृप्ति चाहती थी. वह अच्छी तरह जानती थी कि संजय को भी उस से लगाव है, पर दोनों में एक झिझक बनी हुई थी.

एक दिन रोज की ही तरह तृप्ति भीड़ को चीरते हुए बस में चढ़ने का प्रयास कर रही थी. एक पैर बस में रख कर वह दूसरा पैर रखने ही वाली थी कि कंडक्टर ने घंटी बजा दी. तृप्ति हड़बड़ा कर जल्दी से चढ़ने का प्रयास करने लगी, पर अपनेआप को संभाल न पाई. वह गिरने ही वाली थी कि 'संभल कर' कहते हुए पास खड़े व्यक्ति ने अपनी मजबूत बांहों से उसे संभाल लिया.

उस व्यक्ति पर नजर पड़ते ही तृप्ति के चेहरे पर लालिमा दौड़ गई. वह संजय था. संजय की बांहों के सुखद स्पर्श से रोमांचित तृप्ति को तब भी होश नहीं आया जब कंडक्टर ने टिकट के पैसे मांगे. उस दिन तृप्ति का टिकट भी संजय ने ही लिया था.

बस से उतरने के बाद दादर स्टेशन तक पहुंचने के लिए संजय भी तृप्ति के साथ चल रहा था.

"बस में बहुत भीड़ थी न?" संजय के प्रश्न से चौंकी थी तृप्ति.

"बस में चढ़ने का सलीका ही नहीं है लोगों में." कह कर तृप्ति चुप हो गई.

"आप को मैं रोज देखता हूं, क्या नाम है आप का?"

"तृप्ति."

"और मैं संजय." संजय ने स्वयं अपना परिचय दिया तो तृप्ति मुसकरा दी.

"आप महाराष्ट्रियन हैं न?"

तृप्ति ने 'हां' में सिर हिला दिया.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

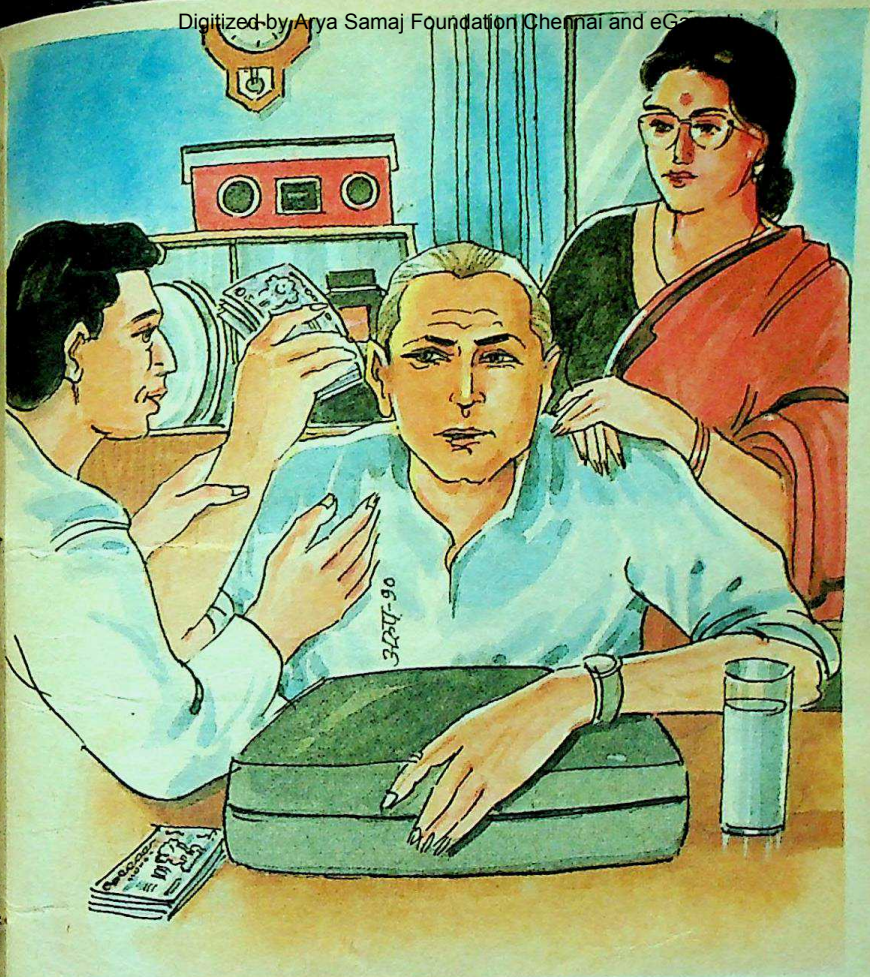

"मैं उत्तर प्रदेश का हूं... कहां काम करती हैं आप?"

"मैं 'सुजाता इलेक्ट्रोनिक्स' में स्टेनो हूं."

"और मैं 'अड़ूकिया कंपनी' में एकाउंटेंट."

तृप्ति फिर हंस पड़ी.

"बड़े ही रोमांटिक अंदाज में हमारी मुलाकात हुई है न?" संजय ने धीरे से तृप्ति के कान के पास आते हुए पूछा तो वह खिलखिला कर हंस दी.

इस के बाद संजय बस स्टाप पर तृप्ति के बिलकुल पास आ कर खड़ा हो जाता और

"नहीं पिताजी..." पिताजी को रुपए लौटाते हुए संजय बोला, "हमें इस तरह रुपए दे कर अपमानित न कीजिए."

बातों का सिलसिला शुरू कर देता. तृप्ति को संजय के बारे में इतना तो पता चल ही गया था कि वह साफ हृदय वाला बातूनी युवक है. उधर संजय उस के बारे में सब कुछ जल्दी से जल्दी जान लेना चाहता था. इसलिए जब भी तृप्ति से मिलता, प्रश्नों की झड़ी लगा देता और तृप्ति बिना किसी हिचक के अपने बारे में सब कुछ विस्तार से बताती चली जाती.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तृप्ति ने अपनी पूरी कहानी संजय को सुना दी थी कि कैसे पिताजी ने सेवानिवृत्त होने के बाद अपनी भविष्यनिधि और पेंशन की पूरी राशि को दीदी की शादी में खर्च कर दिया था और तृप्ति की पढ़ाई पूरी होने तक वह स्वयं 'पार्ट टाइम' नौकरी करने लगे थे.

तृप्ति को 17 वर्ष की छोटी उम्र में नौकरी के लिए निकलना पड़ा था. उसे नौकरी मिलते ही पिताजी ने नौकरी करना छोड़ दिया था.

"ओह... तो घर तुम चलाती हो?" तृप्ति की पूरी कहानी सुनने के बाद संजय ने पूछा था.

"हां, मेरे मातापिता मुझ पर पूरी तरह आश्रित हैं. मेरे अलावा उन का और कोई नहीं जो उन की आर्थिक सहायता करे."

"तृप्ति, तुम बड़ी बहादुर हो..." संजय ने उस की तारीफ की. वह गर्व से फूल गई.

संजय जैसा मित्र पा कर तृप्ति बड़ी प्रसन्न थी. अपने सुखदुख में वह हमेशा संजय को अपने करीब महसूस करती. संजय का अपनत्व भरा स्नेह पा कर तृप्ति निहाल हो गई थी.

उन का प्रेम बस और बस स्टाप की परिधि से निकल कर उद्यानों और समुद्रतट तक अपनी खुशबू फैलाने लगा. उन का काफी वक्त प्रणयभरी बातचीत में गुजर जाता, पर उन्हें यही लगता कि समय पंख लगा कर उड़ रहा है.

तृप्ति सोने के लिए बिस्तर पर लेटती तो संजय की बातों को याद करते हुए उसे लगता कि कभी न कभी वह जरूर शादी की बात करेगा. लेकिन तब क्या होगा? क्या वह संजय का प्रस्ताव स्वीकार कर पाएगी? शायद नहीं, क्योंकि मां और पिताजी को अकेले छोड़ कर वह अपनी गृहस्थी बसाने की कल्पना कर ही नहीं पाती थी.

वह अकसर सोचती, संजय कभी उस के सामने शादी का प्रस्ताव न ही रखे तो बेहतर होगा.

पर एक दिन जब संजय ने शादी का प्रस्ताव रख ही दिया तो तृप्ति की आंखें भर आईं. मायूस होते हुए वह इतना ही कह पाई, "मां और पिताजी को अकेले छोड़ना संभव नहीं."

"तो क्या तुम शादी नहीं करोगी?"

"पता नहीं. अब तक तो इस बारे में कभी सोचा ही नहीं. खैर, छोड़ो... कोई और बात करें." तृप्ति बात टालना चाहती थी.

"और क्या बात करें? तृप्ति, मैं आज तुम्हें यह बताना चाहता था कि मेरी खुशी के आगे मेरे मातापिता घुटने टेक चुके हैं." संजय एकदम गंभीर हो गया था.

उस दिन दोनों के बीच कोई बातचीत नहीं हुई. बस चुप्पी की चादर ओढ़े वे साथसाथ चलते रहे.

उसी दिन तृप्ति के लाख समझाने के बावजूद संजय जबरदस्ती उस के घर जा पहुंचा था और बिना किसी झिझक के तृप्ति के पिता से उस का हाथ मांग लिया था. तृप्ति स्तब्ध रह गई थी. संजय का अपने प्रति प्रेम देख कर उस की आंखों से गंगाजमुना बह चली थी.

पर तृप्ति के पिताजी ने संजय को कोई स्पष्ट जवाब नहीं दिया. वह बोले थे, "हम दोनों की भाषा और संस्कृति में फर्क है. मुझे नहीं लगता कि तुम दोनों में निभ पाएगी. मुझे इस विषय में गंभीरता से सोचना होगा."

तृप्ति के घर संजय की कोई खातिरदारी नहीं हुई. न किसी ने चाय का आग्रह किया, न कुछ देर और बैठने का अनुरोध. संजय जब उठ कर जाने लगा तो तृप्ति का मन हुआ कि बाहर तक उसे छोड़ने जाए, पर पिताजी के चेहरे पर कठोरता देख कर वह सहम गई.

संजय के जाने के बाद मां और पिताजी में देर तक बहस होती रही.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाहती थीं कि तृप्ति की शादी हो जाए, पर पिताजी कमाऊ बेटी की शादी करवा कर भूखों मरने के पक्ष में नहीं थे.

मां ने पिताजी की खुदगर्जी को खूब कोसा, बेटी की खुशियों की दुहाई दी, पर पिताजी टस से मस न हुए. यह देख कर तृप्ति का मन कसैला हो गया.

पहले तो मां और पिताजी के प्रति अपनी जिम्मेदारी को बखूबी जानने वाली तृप्ति स्वयं यह नहीं चाहती थी कि उस की शादी हो जाए. मां और पिताजी के प्रति अपने कर्तव्य से वह कभी विमुख नहीं हुई थी, पर उस दिन पिताजी का स्वार्थ देख कर वह दंग रह गई थी. यह तो सच ही था कि पिताजी भी मजबूर थे, पर जिस तरह मां से उन्होंने बहस की, उस से इतना तो स्पष्ट हो ही चुका था कि तृप्ति को वह पैसा कमाने वाली एक मशीन से ज्यादा कुछ नहीं समझते थे.

तृप्ति तो हमेशा यही सोचा करती थी कि जब पिताजी उस की शादी की बात चलाएंगे तब वह बड़े प्यार से उन्हें मना लेगी और कहेगी, "पिताजी, मुझे अपने साथ रहने दीजिए. आप ने बहुत तकलीफ उठाई है हम दोनों बहनों के लिए... अब मैं आप को थोड़ा सुख देना चाहती हूं..." पर इस घटना ने तृप्ति का हृदय परिवर्तित कर दिया.

तुरंत अपने निर्णय को बदलती हुई वह मां से बोली, "मां, मैं संजय से बात करूंगी. अगर वह मान गया तो तुम्हें हर महीने खर्च के पैसे देने की शर्त के साथ मैं उस से शादी कर लूंगी."

"वह कहां मानेगा पैसे देने की शर्त को? इस से तो अच्छा है कि तुम हम बूढ़ों को जहर खिला दो." पिताजी एकाएक चिल्लाए.

तृप्ति उठ कर चली गई और घंटों बिस्तर पर पड़ी रोती रही थी. तब मां ने आ कर समझाते हुए कहा था, "बेटी, मैं बड़ी दुखियारी मां हूं जो अपनी बेटी पर बोझ बन रही हूं... पर तू फिक्र न कर, अगर संजय हमें खर्चा देने की शर्त मान गया तो तुझे मैं अपने हाथों से दुलहन बनाऊंगी."

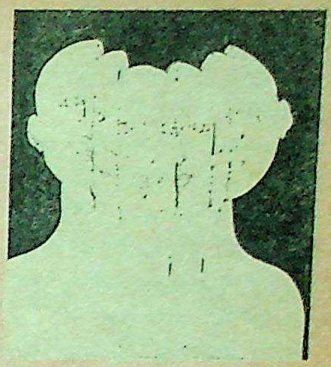

भ्रम

भ्रम भी लोग
कैसेकैसे पाल लेते हैं,
सांप की जगह
आदमी पाल लेते हैं.
—अरुण शंकर

अगले दिन बहुत ही संकोच के साथ तृप्ति ने संजय से कहा था, "संजय, पिताजी नहीं चाहते कि उन की कमाऊ बेटी की शादी हो. जाति और संस्कृति वाली बात तो महज बहानेबाजी है, पर मां तो यही चाहती हैं कि दीदी की तरह मैं भी अपना घर बसाऊं."

"पर तुम ने क्या सोचा है?" संजय के प्रश्न में उत्सुकता थी.

"मैं भी शादी करना चाहती हूं, पर मेरी एक शर्त है..."

"आप की हर शर्त सिरआंखों पर..." संजय खुशी से झूमता हुआ नाटकीय अंदाज में बोला, पर तृप्ति को हंसी नहीं आई. भावुक होती हुई बोली, "मजाक न करो संजय, मेरी बातों को गंभीरता से सुनो. मेरा वेतन एक हजार रुपए है और मैं मां को सात सौ रुपए हर महीने दिया करूंगी."

तृप्ति के पीछे खड़ी युवती ने जब उसे धक्का दिया तो उस की तंद्रा भंग हुई. बस आ गई थी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घर पहुंची तो देखा, संजय अकेला बैठा चाय की चुसकी ले रहा था. पहले ऐसा कभी नहीं होता था. 'सच, प्यार कितना बौना हो जाता है पैसे के सामने.' तृप्ति सोचने लगी.

जब संजय ने तृप्ति की इतनी बड़ी शर्त के लिए हामी भरी थी, तब शायद उसे पैसे की ताकत का पता नहीं होगा, पर निश्चय ही अब उसे ग्लानि भी होती होगी कि भावुकता में आ कर तृप्ति की इतनी बड़ी शर्त को वह मान कैसे गया.

तृप्ति वचनबद्ध थी, इसलिए बिना संजय की बेरुखी या खुशी की परवाह किए वह हर महीने मां को पैसे दे जाती. इसी बीच हर चीज के दाम बढ़ गए थे, पर मां, पिताजी ने कभी यह नहीं कहा कि उसे कुछ अधिक देना चाहिए. किसी भी तरह खींचातानी कर के मां घर चला ही लेती थी.

पिछले साल जब तृप्ति की मां चल बसी थीं, तब वह पिताजी को बिलकुल पैसे नहीं दे पाई थी. जीजाजी और दीदी ने किसी तरह तेरहवीं का पूरा खर्चा उठाया था.

तृप्ति को संतुष्टि थी कि दीदी और जीजाजी भी अपने कर्तव्य के प्रति जागरूक थे. मां के देहांत के बाद पहली बार संजय ने पैसे देने के विषय में अपनी बात कही. उस से पहले चाह कर भी वह तृप्ति को मना नहीं कर पाया था, इसे तृप्ति भी अच्छी तरह जानती थी.

"अब तो पिताजी अकेले हैं, फिर उन्हें सात सौ की जरूरत नहीं होगी. तुम पांच सौ दे दिया करो."

"नहीं संजय," तृप्ति उसे समझाती हुई बोली थी, "सात सौ से कम देने से काम नहीं चलेगा. मां के नहीं रहने से पिताजी अपने प्रति लापरवाह हो गए हैं. इसलिए मैं ने एक महरी को उन की देखभाल के लिए रख दिया है जो उन का खाना वगैरह भी बना दिया करेगी... उस का भी खर्च होगा न?" तृप्ति के इस तर्क ने संजय को चुप करा दिया था.

पर तृप्ति जानती थी कि उस के अंदर एक द्वंद्व चल रहा है. उस के बाद कई बार इस विषय पर संजय बोला, पर तृप्ति इस पर बहस करना ही नहीं चाहती थी, इसलिए उठ कर चली जाया करती. तृप्ति का मौन रहना संजय को खल जाता और अपनी बेचैनी कम करने के लिए वह सिगरेट पर सिगरेट फूंकता जाता.

तृप्ति को लगता, पिताजी को कम पैसे देने के स्थान पर अगर संजय यह कहता कि पिताजी भी उन के साथ रहा करें तो कोई समस्या रह ही नहीं जाती. इस से खर्च भी अपेक्षाकृत कम ही होता.

तृप्ति चाह कर भी पिताजी को कम पैसे देने के स्थान पर उन्हें साथ रखने वाली बात संजय से नहीं कह पाई क्योंकि उसे लगता था, संजय को बुरा लग गया तो लेने के देने पड़ जाएंगे. फिर उसे इस बात का भी डर रहता था कि कहीं संजय यह न समझ बैठे कि उस की पत्नी को सिर्फ अपने मायके की ही चिंता रहती है.

वैसे संजय एकदो बार व्यंग्य से यह कह चुका था कि तृप्ति शादी के बाद भी ससुराल की नहीं हो पाई. संजय की छोटी बहन की शादी में मां ने संजय से शादी के दो महीने पहले 10 हजार रुपए भिजवाने के लिए कहा था. पैसे न रहने के कारण संजय भेज नहीं पाया था, तब उस का छोटा भाई पैसे की मांग करते हुए आ गया था.

"मैं क्या करूं? मैं कुछ बचा ही नहीं पाता..." संजय ने कहा था.

"पर भैया, तुम दोनों ही कमाते हो... कुछ तो बचना चाहिए. मैं अकेला कमाता हूं, फिर भी मैं ने शादी के खर्चे के लिए बाबूजी को 10 हजार दिए हैं."

"तुम्हारी बात और है. वहां बनारस में यहां की अपेक्षा खर्च कम ही है. बंबई महंगा शहर है. घर का भाड़ा देने के बाद बचाने जैसा कुछ रह ही नहीं जाता और तुम्हें तो पता ही है, तुम्हारी भाभी का कमाना या न कमाना मेरे लिए कोई अर्थ नहीं रखता."

तृप्ति सुन कर हैरान रह गई. उसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कभी नहीं लगा था कि संजय ऐसे भी बोलेगा.

जैसेतैसे पांच हजार रुपए अपने भाई के हाथों संजय ने भिजवा दिए थे.

शादी में जाने की तृप्ति की बिलकुल इच्छा नहीं थी, पर संजय की जिद के आगे उस की एक न चली. शादी में गई तो वहां उस का कई बार अपमान हुआ. संजय की मां ने तो यहां तक कह दिया कि तृप्ति ने संजय को फांस लिया है.

तृप्ति तो खुद चुप्पी की चादर ओढ़े रही, पर उसे संजय से यह अपेक्षा अवश्य थी कि वह तृप्ति का पक्ष लेते हुए अपनी मां से कुछ कहे. किंतु संजय भी मौन ही था.

तृप्ति जब तक बनारस में रही, अंदर ही अंदर घुटती रही. कई बार उसे लगता कि संजय को झकझोरते हुए पूछ ही ले कि तुम तो सब कुछ जानते हो, फिर भी चुप क्यों हो लेकिन शादी की भीड़भाड़ में वह किसी भी तरह का बखेड़ा खड़ा नहीं करना चाहती थी.

बंबई लौटने के बाद उस ने संजय से इस बारे में पूछा तो बेरुखी से जवाब मिला, "मां कुछ गलत तो नहीं कहतीं. तुम्हारी तरह क्या सभी पत्नियां इसी तरह मायके वालों को पैसा देती हैं? उन्हें यह अजीब सा लगता होगा, इसलिए बोली होंगी."

कुछ दिनों के तनाव के बाद सब कुछ सामान्य होता गया.

अचानक एक दिन पिताजी ने आ कर बताया कि उन्हें अपनी पुश्तैनी जमीन को ले कर चल रहे एक मुकदमे के सिलसिले में गांव जाना होगा. पिताजी की हालत ऐसी नहीं थी कि वह अकेले जाएं. इसलिए तृप्ति ने संजय से पिताजी के साथ जाने का आग्रह किया. पता नहीं किस मनोदशा में था कि वह तुरंत मान गया.

पर जब लौटा तो काफी उत्तेजित था. बोला, "जानती हो, तुम्हारे पिताजी को जो जमीन मिली है, उस की कीमत 75 हजार रुपए के लगभग है. वह अभी लौटे नहीं हैं, जमीन बेच कर पैसे ले कर ही लौटेंगे."

तृप्ति चुप रही.

"अब तुम्हें पैसे देने की जरूरत नहीं होगी. उन्हें इतना पैसा तो मिलेगा ही, जिस से वह अपनी बचीखुची जिंदगी आराम से काट सकें."

"अगर पिताजी कहेंगे कि मुझे पैसे देने की जरूरत नहीं तो मैं देना बंद कर दूंगी."

"पर वह बोलेंगे क्यों? उन्हें तो पहले से ही पैसे का लालच रहा है. फैसला तो तुम्हें करना है."

"मैं मजबूर हूं, संजय. मैं ने पिताजी को वचन दिया था और मैं अपने वचन से मुंह नहीं मोड़ सकती."

"क्या तुम्हारी दीदी का कोई कर्तव्य नहीं अपने पिताजी के प्रति."

"दीदी... पर वह कहां से देंगी पैसे,

हास परिहास वाले व्यक्तियों में कार्यकुशलता अधिक

हंसी हमारे जीवन का एक बहुमूल्य और दुर्लभ गुण है. यह कुछ तो जन्मजात होता है और कुछ अर्जित. जिन में यह गुण होता है, वे उन व्यक्तियों की तुलना में अधिक कार्यकुशल होते हैं, जो जड़, गंभीर एवं अंतर्मुखी बने रहते हैं.

हाल ही में एक विज्ञापन कंपनी ने बड़े व्यापारिक प्रतिष्ठानों के प्रमुखों पर किए गए सर्वेक्षण से यह निष्कर्ष निकाला है कि विनोदप्रिय तथा हासपरिहास में रुचि रखने वाले व्यक्ति अपना कार्य अधिक अच्छे ढंग से व कुशलतापूर्वक करते हैं. ऐसे व्यक्ति अधिक सृजनशील तथा कल्पनाशील होते हैं तथा नए तौरतरीके अपनाने में अधिक रुचि रखते हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह तो कमाती नहीं है.

"नहीं कमाती हैं तो अब शुरू कर दें कमाना, पर वह क्यों तकलीफ उठाएंगी. पिताजी जीएं या मरें, उस की बला से. बेवकूफ तो तुम हो, जो हर झंझट को अपने सिर पर उठा लेती हो."

"मैं अपने पिताजी के बोझ को उठाने को कोई झंझट नहीं समझती. जैसे अपने मातापिता के प्रति तुम निष्ठावान हो, वैसे ही मैं भी हूं. मैं स्त्री हूं, पर असहाय नहीं और फिर मैं ने तुम्हें शादी के पहले ही बता दिया था कि मैं पैसे देती रहूंगी और तुम माने भी थे."

"वही तो गलती की थी. तुम्हारे पिताजी की खुदगर्जी को जान कर भी मैं अनजान बना रहा. तुम्हारी बात न मानी होती तो अब तक अपना घर बना लिया होता."

बचाव

झगड़े में धनी व्यक्ति अपने मुंह को बचाना चाहता है और निर्धन अपने कोट को. —रूसी लोकोक्ति

इस के बाद से संजय और तृप्ति के बीच एक गहरी चुप्पी ने स्थान ले लिया. तृप्ति को लगने लगा, संजय को अब सिर्फ पैसों का ही मोह रह गया है. संजय के प्रति पूर्णरूपेण समर्पित हृदय में एक उपेक्षा सी भर गई और अब तो तृप्ति संजय के प्रति काफी लापरवाह भी हो गई थी.

जैसेजैसे दिन व्यतीत हो रहे थे, दोनों के बीच फासला भी बढ़ता जा रहा था. तृप्ति का मन होता, संजय से एक बार पूछ ही ले कि आखिर वह क्या चाहता है? क्या उसे तलाक चाहिए? लेकिन वह ऐसा नहीं कर पाई. संजय के बिना स्वयं की कल्पना करना तृप्ति के लिए असंभव था.

कभीकभी जब संजय के प्रति मन में प्रेम का भाव अनायास ही उमड़ पड़ता तो तृप्ति, संजय के साथ कहीं ऐसी जगह भाग जाए, जहां दोनों के बीच पिताजी हाथ पसारे खड़े न हों. पर तृप्ति अपनी व्यथा किसी को न बता पाती. अंदर ही अंदर कुढ़ते रहने के अलावा और कोई चारा ही नहीं था.

आखिर पिताजी भी गांव से लौट आए और सूटकेस लिए सीधे तृप्ति के घर ही पहुंच गए. थकेमांदे सफर से लौटे पिताजी से कुछ भी कहने का तृप्ति का मन नहीं हुआ. बस सूटकेस अपने हाथ में ले कर उन्हें सोफे पर बैठा दिया.

"थक गया हूं तृप्ति, इसी लिए सीधे यहीं आ गया." हांफते से पिता के स्वर से वह पसीज गई थी, पर कुछ भी नहीं बोली. वहीं सोफे पर बैठे संजय के चेहरे का अनमना सा भाव तृप्ति की नजरों से छिपा न था. संजय के चेहरे का यही भाव तृप्ति के कुछ न बोल पाने का कारण भी था.

पिताजी के नहाने के लिए उस ने पानी गरम कर दिया और फिर अपनेआप को बेहद व्यस्त दिखाते हुए वह रसोई में उलझी रही. बीचबीच में कभी संजय का तो कभी पिताजी का स्वर उसे सुनाई दे देता.

अचानक खाने की मेज पर खाना लगाते तृप्ति के हाथ पिताजी की आवाज पर रुक गए.

पिताजी सूटकेस से रुपयों का बंडल संजय की ओर बढ़ाते हुए कह रहे थे, "तृप्ति के लिए कुछ करने की बड़ी आस थी, बेटे, पर क्या करता? बड़ी बेटी के विवाह पर ही सब खत्म हो गया, पर तुम्हारे जैसा समझदार दामाद पा कर मैं अपनेआप को धन्य मानता हूं..."

पिताजी की आवाज रुंध गई और उन की आंखें भर आईं. वह धीरे से बोले, "बेटे, अगर तुम ने तृप्ति को हमारी मदद के लिए मना कर दिया होता तो मैं और तृप्ति की मां तो..."

संजय धीरे से पिताजी के पास खिसक आया. उस ने उन के कंधों पर हाथ रख दिया. पिताजी ने रुपए संजय को दे दिए और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिंदी के उत्कृष्ट साहित्य

लेखक व पुस्तक का नाम	रुपए	लेखक व पुस्तक का नाम	रुपए
प्रेम चंद्र गोदान	25	राजेन्द्र सिंह बेदी प्रतिनिधि कहानियां	15
कान्तानाथ तुम्हारे नाम	20	अमरकांत प्रतिनिधि कहानियां	15
फणीश्वर रेणु मैला आंचल	25	जोगेन्द्र पाल प्रतिनिधि कहानियां	15
ममता कालिया बेघर	15	काशी नाथ सिंह प्रतिनिधि कहानियां	15
रमेशचंद्र शाह किस्सा गुलाम	25	मिथिलेश्वर प्रतिनिधि कहानियां	15
कृश्न चंदन एक करोड़ की बोतल	15	मन्नू भण्डारी प्रतिनिधि कहानियां	15
सुनील गंगोपाध्याय प्रेम नहीं स्नेह	8	हरिवंशराय बच्चन प्रतिनिधि कहानियां	15
बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय आनंद मठ	18	केदारनाथ सिंह प्रतिनिधि कहानियां	10
शशि प्रभा शास्त्री नावें	15	सर्वेश्वरदयाल सक्सेना प्रतिनिधि कहानियां	15
कृष्ण बलदेव वैद प्रतिनिधि कहानियां	15	फैज अहमद फैज प्रतिनिधि कहानियां	15
यशपाल प्रतिनिधि कहानियां	15	अमृता प्रीतम प्रतिनिधि कहानियां	15

प्राप्ति स्थल : दिल्ली बुक कंपनी, एम-12, कनाट सर्कस, नई दिल्ली-110001

वी.पी.पी. से मंगवाने पर आदेश की 20 प्रतिशत राशि मनीआर्डर/ड्राफ्ट/पोस्टल आर्डर द्वारा अग्रिम भेजें. डाक खर्च केवल रुपए 3.50. तीन या अधिक पुस्तकें लेने पर 5 प्रतिशत की छूट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बोले, "आज पहली बार लग रहा है कि मैं तृप्ति का पिता हूं वरना मैं तो पिता का कोई भी कर्तव्य नहीं निभा पाया था..."

तृप्ति ने देखा, संजय बेहद गंभीर हो गया था. पिताजी के इन शब्दों ने संजय को अंदर तक हिला दिया था. उसे पहली बार लग रहा था कि तृप्ति से कुछ मांगना पिताजी को कितना पीड़ित करता होगा. अपने अस्तित्व को कायम रखने के लिए बेटी के आगे हाथ पसारते हुए वह कितना तड़पे होंगे, इस का आभास संजय को अब हो रहा था. जिसे वह पिताजी का स्वार्थ समझ रहा था, वह स्वार्थ नहीं मजबूरी थी.

"नहीं पिताजी..." पिताजी को रुपए लौटाते हुए संजय बोला, "हमें इस तरह रुपए दे कर अपमानित न कीजिए."

"अपमान कैसा बेटे? क्या मैं तुम्हारा कोई नहीं? आखिर तृप्ति मेरी बेटी है. मेरी जमीनजायदाद पर तो उस का पूरा हक है न?"

"हां पिताजी, हक तो है, पर तृप्ति आप की अकेली बेटी नहीं है. क्या आप दीदी को भूल गए?"

"उस के लिए तो उस की शादी में जितना बन पड़ा, किया ही था. अगर कुछ कर पाया तो इसी बेचारी के लिए..."

"नहीं पिताजी, यह आप की जायदाद की राशि है, इसलिए इस पर दीदी का भी अधिकार है. आप दोनों को ही आधाआधा दें. वैसे भी हमें कोई कमी भी नहीं. हम दोनों कमाते हैं, पर दीदी की आर्थिक स्थिति हम से खराब है. उन्हें तो देना ही होगा." संजय ने अपने विचार पिताजी को बता दिए.

"बेटे, तुम्हारे जैसा दामाद पा कर मैं तो धन्य हो गया..." पिताजी अपनी बात को फिर से दोहराते हुए बोले और संजय के कंधे से लग गए.

तृप्ति की आंखें भर आईं. उस ने तो कल्पना भी नहीं की थी कि आज का दिन इतना सुंदर होगा. आज तो उसे अपना पुराना संजय वापस मिल गया था. वह रोतेरोते मुसकरा दी. ●

हिंदू समाज के पथभ्रष्टक तुलसीदास

संत कवियों की प्रशंसा की परंपरा चली तो आलोचकों ने तुलसी को हिंदी साहित्य का सूर्य और हिंदू समाज को स्थायी संबल देने वाला घोषित कर दिया. प्रशंसा की इस चकाचौंध में किसी ने यह सोचने की चेष्टा नहीं की कि तुलसी वास्तव में क्या थे? यह हिंदू समाज के पथ प्रदर्शक थे या पथभ्रष्टक?

हिंदू समाज को पथभ्रष्ट करने वाले इस संत कवि के साहित्यिक आडंबरों की पोल खोल कर उस की वास्तविकता पाठकों के सामने रखना ही इस पुस्तक का उद्देश्य है. आशा है इस से पाठकों को तुलसी साहित्य के बारे में एक नई दृष्टि से सोचने की प्रेरणा मिलेगी.

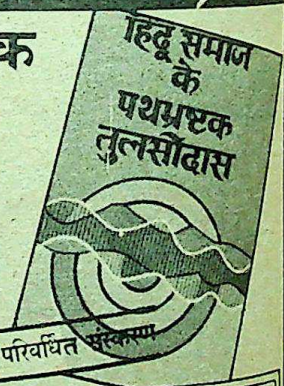

मूल्य 19 रुपए. पुस्तकालयों, विद्यार्थियों तथा अध्यापकों के लिए विशेष छूट केवल 10 रुपए. डाकखर्च 3 रुपए–वी.पी.पी. भेज कर लिए जाएंगे. रजिस्टर्ड डाक से डाक व्यय 5 रुपए. आदेश के साथ 10 रुपए अग्रिम भेजें.

दिल्ली बुक कंपनी एम - 12, कनाट सरकस, नई दिल्ली - 110001

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ये पत्नियां

मेरे पति, उन के दोस्त व उन की पत्नियां पिकनिक पर जाने का कार्यक्रम बना रहे थे. एक मित्र की पत्नी पांच महीनों से गर्भवती थी. अतः डाक्टर ने उन्हें अधिक घूमनेफिरने से मना किया था. फिर भी मित्रगण उन्हें पिकनिक पर ले जाना चाहते थे.

मित्र की पत्नी का तर्क था कि रास्ते में स्कूटर से जाने पर उन्हें तकलीफ होगी. इस पर साथियों का कहना था कि वे एक डाक्टर को भी साथ ले जाएंगे. इस पर वह बोलीं, "डाक्टर के साथ जाने से क्या झटके मुझे न लग कर उन्हें लगेंगे." —अरुणा पावडे

*

मेरे देवर भोजन में हमेशा कुछ न कुछ कमी निकाल कर देवरानी को डांटते रहते थे. एक दिन खाते वक्त दाल में कंकर आ गया तो वह गुस्सा करते हुए बोले, "आप की दोदो आंखें हैं, फिर भी कंकर नहीं दिखते."

देवरानी भी चुटकी लेते हुए बोली, "आप के 32 दांत हैं, क्या एक कंकर भी नहीं चबा सकते?" —मंजु रानी

*

एक दिन मेरा एक मित्र घर आया. मैं ने अपनी अनपढ़ पत्नी से चाय बनाने को कहा तो वह बोली, "घर में दूध नहीं है."

मित्र के जाने के बाद मैं ने पत्नी को बहुत डांटा और कहा, "मिल्क पाउडर से चाय बना देतीं. मित्र के सामने मेरी बेइज्जती करा दी, आगे कभी इस तरह चाय के लिए इनकार मत करना."

कुछ दिनों बाद एक दूसरे मित्र के आने पर मैं ने पुनः उसे चाय बना लाने को कहा. चाय पीते ही मैं ने थूक दिया और पत्नी से पूछा, "यह कौन सी चाय बना दी?"

यह सुन कर वह बड़े शांत भाव से बोली, "घर में न दूध था और न ही बेबी मिल्क पाउडर. मैं ने सोचा, आप नाराज होंगे, इसलिए टेलकम पाउडर से चाय बना लाई." —राजेश मगोत्रा

*

मेरी दीदी की शादी की बात एक जगह लगभग तय हो गई थी. दीदी के ससुर पेशे से वकील थे और सास अनपढ़ थी. हम बातचीत के सिलसिले में उन की बैठक में बैठे थे. तभी एक सज्जन तलाक की समस्या ले कर उन से मिलने आए. पूरी बात सुनते ही वकील साहब से पहले उन की पत्नी ने कहा, "देखो, मेरी मानो तो तलाक के चक्कर में मत पड़ो. थोड़ा तुम 'टायलेट' करो, थोड़ा तुम्हारी पत्नी 'टायलेट' करे. बस समस्या हल हो जाएगी."

पहले तो बात हमारी समझ में नहीं आई. लेकिन बात समझ में आते ही हम हंसी नहीं रोक पाए. दरअसल वह 'टालरेट' कहना चाह रही थीं. —अर्चना

*

मेरे भाई के मित्र अच्छे स्पिन गेंदबाज हैं. उन की नईनई शादी हुई तो उन्होंने एक दिन अपनी पत्नी से पूछा, "क्या मैं तुम्हारा पहला प्यार हूं?"

इस पर उन की पत्नी तपाक से बोली, "स्पिन गेंदबाज को नई गेंद कहां मिलती है?" —विनोदकुमार ●

इस स्तंभ के लिए अपने तथा अपने संबंधियों के अनुभव भेजिए. प्रत्येक प्रकाशित अनुभव पर 50 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. अपने अनुभव इस पते पर भेजें. संपादकीय विभाग, सरिता, ई-3, झंडेवाला ऐस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रास्ते कुछ कहते हैं

कहानी ● जयंती

'अपना बाजार' में अच्छीखासी भीड़ थी. जैसे ही मैं पैसे चुकाने गई, मुझे एक परिचित चेहरा दिखाई दिया. उस ने मुझे नहीं देखा था. वह बड़े ध्यान से रुपए गिन रही थी. मुझे विश्वास ही नहीं हुआ कि यह वैशाली ही है. सोचा, होनी तो वही चाहिए. वही चेहरा था. लेकिन शरीर थोड़ा भर गया था. बाल भी छोटे कटवा लिए थे. वैशाली मुझे देख चुकी थी. वहीं से वह चिल्लाई, "तृप्ति... तुम..."

वह वैशाली ही थी. पूरे 15 साल बाद हम दोनों मिल रही थीं. पास आने पर मैंने देखा, उस के बाल काफी सफेद हो चुके थे. चरबी की अतिरिक्त परतों में उस का चेहरा और भी गोलमटोल लगने लगा था.

"ऐसे क्या देख रही हो? बूढ़ी हो गई हूं न?" उस ने चुटकी ली.

"मैं ही कौन सी अब जवान हूं वैशाली." मैं ने हंस कर कहा.

हम दोनों पैसे चुकाने के बाद सामान ले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

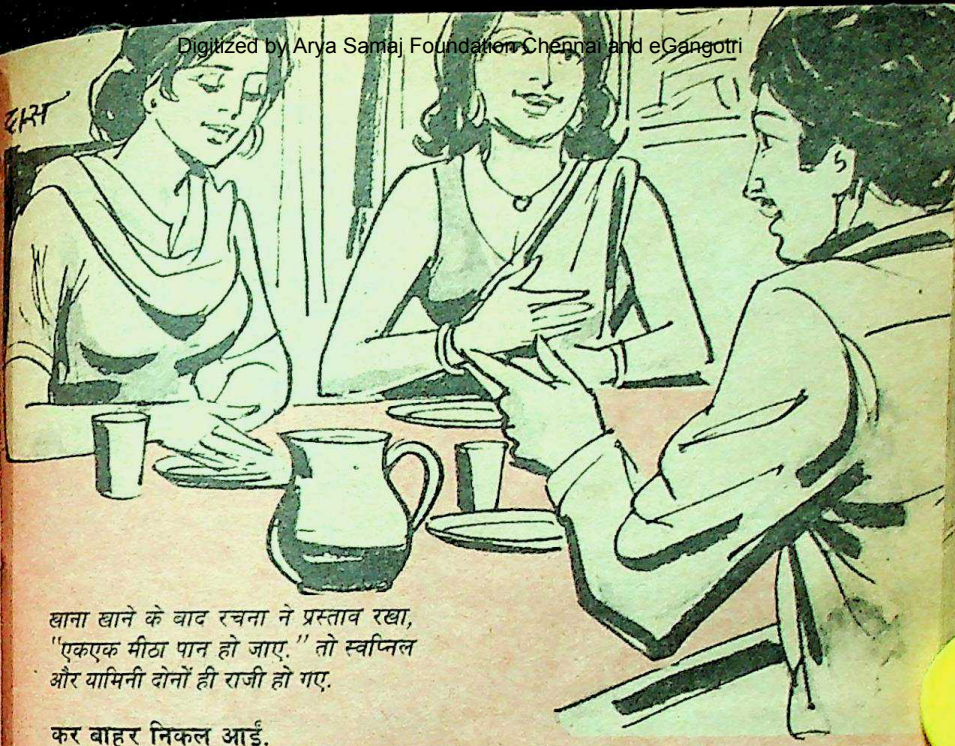

खाना खाने के बाद रचना ने प्रस्ताव रखा, "एकएक मीठा पान हो जाए." तो स्वप्निल और यामिनी दोनों ही राजी हो गए.

कर बाहर निकल आईं.

पहले वैशाली ने ही पूछा, "यामिनी कैसी है? क्या कर रही है वह?"

"हूं...एम.बी.बी.एस. कर रही है. आखिरी साल है."

"मेरा बेटा स्वप्निल भी तो डाक्टर ही है. बंबई हस्पताल में डाक्टर लगा है, पिछले दो महीने से. हस्पताल में ही क्वार्टर मिला हुआ है."

"इस का मतलब यह हुआ कि तुम स्थायी रूप से यहां आ गई हो. यह तो अच्छा हुआ. और जीजाजी..."

"सात साल पहले एक सड़क दुर्घटना में..." वह चुप हो गई. उस की आंखें नम हो आईं. वह संभल गई, "और तुम सुनाओ तृप्ति, कैसी कट रही है जिंदगी?"

"ठीक ही है...वैसी ही जैसी 15 साल पहले कट रही थी." मैं ने गहरी सांस ली.

"यह क्या बुढ़ियों जैसी बोलने लगी तुम...अच्छा यह बताओ, तुम रहती कहां हो? यहीं आसपास...?" उस ने पूछा.

"बस, दूसरी गली में. तुम खुद ही देख लेना. अभी तुम चल रही हो मेरे साथ..."

"अभी, लेकिन तृप्ति..."

"लेकिनवेकिन कुछ नहीं. बड़ी मुश-

वैशाली ने जब तृप्ति से उस की अपाहिज बेटी यामिनी की शादी अपने डाक्टर बेटे स्वप्निल से करने की बात कही तो उसे विश्वास ही नहीं हुआ पर वह खुश थी कि उस की बेटी का भविष्य सुधर जाएगा. लेकिन तभी एक ऐसी घटना हुई जिस ने न केवल तृप्ति की खुशियों को रौंद डाला वरन वैशाली को भी सकते में डाल दिया.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किल से हाथ आई हो, या तुम्हें जाने छोड़ ही दूंगी."

वह हंसते हुए मेरे साथ चलने लगी.

घर का दरवाजा खुला हुआ था. यामिनी घर आ चुकी थी. शायद वह अंदर चाय बना रही थी. मुझे देखते ही वह वहीं से बोली, "आप सही समय पर आ गईं मां, गरमागरम चाय तैयार है?"

"एक कप और बना लो बेटी, देखो तो कौन आया है?"

यामिनी रसोईघर से बाहर निकल आई. उस की बैसाखियों की 'ठकठक' सुन कर वैशाली चौंक गई.

"वैशाली, यही है मेरी बेटी यामिनी... याद है न, तुम ही ने रखा था इस का नाम..."

"हांहां." वैशाली चौंकती हुई सी बोली. अब भी उस की निगाहें यामिनी के पैरों से चिपकी हुई थीं.

"और यामिनी, यह हैं..."

"मां मैं जानती हूं इन्हें," मेरी बात खत्म होने से पहले यामिनी बोल उठी, "यह आप की कालिज की पक्की सहेली वैशाली मौसी हैं. है न... मां ने आप के बारे में कई बातें बताई हैं. आप दोनों किस तरह कालिज से छुट्टी मार कर फिल्म देखने जाती थीं.आप तो कई साल विदेश में भी रही हैं न?"

वैशाली ने 'हां' में सिर हिलाया. अभी भी वह सामान्य नहीं लग रही थी.

"जा बेटी, इन के लिए पानी ले आ."

यामिनी के अंदर जाते ही वैशाली कांपते स्वर में बोली, "तृप्ति, तेरी बेटी...यामिनी की टांग...क्या हो गया इसे?"

"दो साल पहले एक सड़क दुर्घटना में..."

यामिनी पानी ले आई थी. मैं चुप हो गई. उस के जाने के बाद मैं ने धीरे से कहा, "बाईं टांग घुटने से काट देनी पड़ी और कोई रास्ता भी नहीं था. साल बरबाद हो गया बेचारी का. किसी तरह मैं ने उसे एम.बी.बी.एस. पूरा करने के लिए उकसाया. अब ठीक है..."

"ओह, कितनी प्यारी लड़की है, और..."

"उस के सामने कुछ मत कहना वैशाली, उसे दया शब्द से ही नफरत है."

यामिनी चाय बना कर ले आई. वह बहुत सहजता से बोल रही थी. कुछ देर बाद वह उठ गई, "मां, मुझे रचना के घर जाना है. कुछ किताबें लेनी हैं उस से... मैं शाम को घर लौटूंगी."

यामिनी के जाते ही वैशाली ने पूछा, "यह अकेली चली तो जाएगी न?"

"हां, आदत हो गई है इसे. वैसे वह सारा काम अकेले ही करना पसंद करती है."

काफी देर तक वैशाली यामिनी के बारे में ही बातें करती रही. यामिनी को इस तरह देख कर उसे बहुत दुख पहुंचा था. जाते समय वह अपने घर का पता दे गई और कह कर गई, "इतवार को रात का खाना मेरे घर पर है. तुम जीजाजी और यामिनी को ले कर आ जाना."

वैशाली के जाने के बाद मैं देर तक उस के और अपने बारे में सोचती रही कि 15 साल बाद हम मिली भीं तो किस हाल में. उस के पति नहीं रहे और मेरी बेटी के साथ यह हादसा हो गया.

इतवार की शाम यामिनी को अपनी सहेली की शादी में जाना था, इसलिए मैं और मेरा पति विजय वैशाली के घर गए. छोटा सा लेकिन प्यारा सा घर था. स्वप्निल काफी आकर्षक और हंसमुख था. रसोई में वह अपनी मां की मदद कर रहा था.

वैशाली मुसकरा कर बोली, "स्वप्निल को मैं ने रसोई का सारा काम सिखा दिया है. मुझ से अच्छा खाना यह बनाता है."

"लेकिन आज का खाना मां ने ही बनाया है." वह तुरंत बोल पड़ा.

खाना खा कर स्वप्निल सब के लिए काफी बना लाया. वह और विजय बालकनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में बैठ कर काफी पीने लगे. वैशाली मुझे अंदर के कमरे में ले आई.

"तुम्हारा बेटा बड़ा प्यारा है." मैं ने कहा.

"शैलेश के गुजर जाने के बाद जैसे एकदम से बड़ा हो गया स्वप्निल. सच, लड़का मेरा बड़ा लायक है. मेरे कहे को कभी नहीं टालता." उस ने लंबी सांस ली.

अचानक उस ने मुझ से पूछा, "तृप्ति, तुम ने यामिनी की शादी के बारे में क्या सोचा है?"

"शादी?" मैं हड़बड़ा गई, "तुम तो जानती हो वैशाली, तब भी पूछ रही हो."

"इसी लिए तो पूछ रही हूं. स्वप्निल से चार साल छोटी है न वह...यानी 23 की होगी अभी."

वैशाली की बात सुन कर मैं गुस्से से आगबबूला हो कर बोली, "कोई अपाहिज नहीं है मेरी बेटी. उस का तो सपना कुछ और ही है..."

"तुम ही बताओ, यह जानते हुए भी कि उस की एक टांग कटी हुई है, शादी की बात चलाना सही होगा? फिर वह खुद भी इस बात को नहीं मानेगी. वह तो डाक्टर बन कर किसी गांव में जा कर क्लिनिक खोलना चाहती है?"

"यह सब तो कहने की बातें हैं. सिर्फ टांग ही सही नहीं है न, बाकी सब तो ठीक है. तुम खुद एक औरत हो. तुम उसे अच्छी तरह जान सकती हो. बताओ, तुम्हारी शादी किस उम्र में हुई थी?"

"पर...?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"परवर कुछ नहीं..." वह गंभीर स्वर में बोली, "मैं ने तय कर लिया है..."

"क्या?" मैं चौंक गई.

"मैं यामिनी को अपनी बहू बनाऊंगी." उस का स्वर दृढ़ था.

"यह क्या कह रही हो? तुम ने स्वप्निल से पूछा भी है या..."

"मैं ने तुम से कहा न कि वह मेरी बात कभी नहीं टालेगा."

मैं जड़ सी बैठी रही. वह प्यार से मेरा कंधा दबाते हुए बोली, "देख तृप्ति, स्वप्निल को भी एक डाक्टर पत्नी ही चाहिए. दोनों मिल कर क्लिनिक खोल सकते हैं. फिर जब मैं ही उस की सास रहूंगी तो चिंता की क्या बात है. यामिनी जैसे अपने घर में रहती है, वैसे यहां रहेगी."

मेरी समझ में नहीं आया कि क्या कहूं. वैसे यामिनी से बिना पूछे तो मैं कोई जवाब दे भी नहीं सकती थी.

"चलो भई, अब चला जाए." विजय ने वहीं से आवाज दी तो मैं उठ खड़ी हुई.

स्वप्निल हमें रिकशा स्टैंड तक छोड़ने आया. रिकशा में बैठने के बाद मैं ने विजय से कहा, "बड़ा सुशील लड़का है."

"हूं..." विजय ने सिर हिलाया.

"इस से अगर हमारी यामिनी की शादी हो जाए तो..."

"यह तुम क्या कह रही हो?" विजय घबरा से गए.

"यह मेरा नहीं, वैशाली का कहना है. उसी ने कहा..."

"पर क्या उस ने अपने बेटे से पूछ लिया है? और यामिनी...?"

"मैं बात करूंगी उस से. स्वप्निल जैसा लड़का कोई रोजरोज नहीं मिल जाता. और फिर यामिनी..." मैं चुप हो गई. विजय कुछ चिंतित से थे. घर पहुंचने तक और कोई बात नहीं हुई.

यामिनी सहेली की शादी से वापस आ चुकी थी. बरामदे में ही वह और रचना बैठ कर गप्पें लगा रही थीं. हमें देखते ही रचना उठ गई, "मैं चलती हूं यामिनी, तेरे मातापिता आ गए हैं."

हमें देख कर उस ने अभिवादन किया, फिर हंस कर बोली, "यामिनी का साथ देने के लिए रुक गई थी..."

"थोड़ी देर और रुक जाओ. चाचाजी तुम्हें छोड़ आएंगे." मैं ने कहा.

"न...न, आप भी तो अभी आए हैं. मैं चली जाऊंगी. बस 10 ही मिनट का तो रास्ता है." वह हाथ हिलाती हुई निकल गई. केसरिया रंग की साड़ी में वह बड़ी प्यारी लग रही थी. उस के सामने यामिनी अपने नीले सलवारकुरते में बिलकुल सादी लग रही थी.

मैं ने कमरे के अंदर आते हुए यामिनी से पूछ लिया, "तू ने साड़ी क्यों नहीं पहनी? हर मौके पर यही सलवार..."

"मां, साड़ी पहन कर चलने में मुझे असुविधा होती है." वह सपाट स्वर में बोली और बैसाखियां खटखटाती अंदर चली गई.

अचानक मुझे अपनी गलती का एहसास हुआ कि यह मैं ने क्या कह दिया. क्या मैं नहीं जानती कि साड़ी में उस की बैसाखियां फंसती हैं. मैं यह क्यों भूल गई कि मेरी बेटी सामान्य नहीं है. क्या उस की शादी की बात से ही मेरे दिमाग पर पत्थर पड़ गए हैं.

जब मैं उस के लिए दूध गरम कर के ले गई तो वह कपड़े बदल कर लेट चुकी थी. मैं ने प्यार से उस के बालों पर हाथ फेरा, "कैसी रही तेरी सहेली की शादी?"

"अच्छी रही..." उस ने धीरे से कहा.

दूध का गिलास हाथ में ले कर वह धीरेधीरे पीने लगी.

"तेरी सभी सहेलियों की शादी हो गई है न?" मैं ने बेमतलब का सवाल किया.

"सभी की तो नहीं... रचना की कहां हुई है. तुम क्यों पूछ रही हो मां?"

"बस ऐसे ही..." मैं चुप हो गई.

उस ने दूध खत्म कर गिलास मेरे हाथ में दे दिया और फिर लेट गई.

"यामिनी...बेटी, सच बता, क्या तेरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मन नहीं है शादी के लिए?"

"मां..." वह जोर से बोली और उठ बैठी, "यह अचानक तुम्हें हुआ क्या है?"

"कुछ नहीं. मैं तेरे मन की बात जानना चाहती हूं. बस." मैं धीरे से बोली.

"मैं किसी की दया नहीं चाहती मां... यह जानते हुए भी कि मैं लंगड़ी हूं, तुम यह सवाल क्यों पूछ रही हो?"

"नहीं यामिनी, दया नहीं. अगर कोई प्यार से तुझ से शादी करना चाहे तो?"

"नहीं मां, कोई मुझ से प्यार नहीं कर सकता. मैं जैसी हूं, ठीक हूं. मुझे किसी पर बोझ नहीं बनना." वह करवट बदल कर लेट गई.

मैं कमरे की बत्ती बुझा कर बाहर निकल आई. मुझे पता था कि यामिनी इतनी आसानी से शादी के लिए तैयार नहीं होगी. रहरह कर मेरी आंखों में स्वप्निल का हंसता हुआ चेहरा घूम जाता. लेकिन क्या वह दिल से यामिनी को स्वीकार कर पाएगा?

तीन दिन बाद ही वैशाली मेरे घर चली आई. दोपहर का वक्त था. खापी कर मैं सुस्ता रही थी. आते ही उस ने पूछा, "तुम ने यामिनी से बात की?"

"हां, की तो... पर वह तो सुनने को भी तैयार नहीं." मैं ने मायूस स्वर में कहा.

"एक बार वह स्वप्निल से मिल लेगी तो सब ठीक हो जाएगा."

"पर क्या तुम ने अपने बेटे से पूछ लिया है?"

"अरे, उस से क्या पूछना..." उस ने गर्व से कहा, "मैं ने तुम्हें बताया ही था कि मेरा कहा वह टाल ही नहीं सकता."

मैं सोचने लगी, काश! मैं भी अपनी बेटी के बारे में यह कह पाती.

वैशाली ने उत्साह से कहा, "इस इतवार को मैं स्वप्निल को तुम्हारे यहां भेजती हूं. वह यामिनी से मिल लेगा और यामिनी उस से."

कालिज से आने के बाद यामिनी हाल में बैठी चाय पी रही थी. इन दिनों

वजूद

बुझी हुई राख, रीते हुए पात्र,
डूबे हुए चांद, भूले हुए गीत,
बीते हुए क्षण सा
मेरा वजूद—तुम बिन.

—प्रीति व्यास

हस्पताल में भी उस की ड्यूटी लगी हुई थी. लेकिन बिना किसी शिकायत के वह रोज जाती. उस का यह आत्मविश्वास देख कर मुझे अच्छा भी लग रहा था.

मैं ने उस के पास बैठते हुए कहा, "यामिनी, इतवार को स्वप्निल को घर पर बुलाया है...वैशाली का बेटा."

उस ने नजरें उठाई. "वह भी तो डाक्टर है न?"

"हां...बचपन में तुम मिली हो उस से."

"मां..." यामिनी ने कुछ रुक कर पूछा, "इतवार को मैं रचना को भी बुला लूं? कई दिनों से कह रही है कि वह तुम्हारे हाथ का बना खाना खाना चाहती है. रचना रहेगी तो स्वप्निल भी बोर नहीं होगा."

"ठीक है, बुला लो." हालांकि मैं चाहती तो नहीं थी कि यामिनी और स्वप्निल के साथ कोई और भी हो. लेकिन रचना यामिनी की इतनी पक्की सहेली थी कि उस के कहने पर वह स्वप्निल से खुल कर बोल सकती थी. मैं ने तो यह भी सोचा हुआ था कि रचना को मैं सब बता दूंगी और कह दूंगी कि वही यामिनी को समझाए.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इतवार को सवेरे से मैं रसोई घर में जुटी हुई थी. यामिनी दो बार पूछ चुकी थी, "मां, ऐसा कौन सा मेहमान आने वाला है जिस के लिए तुम इतना कुछ बना रही हो?"

रचना जल्दी आ गई. वे दोनों अंदर के कमरे में बात कर रही थीं कि स्वप्निल भी आ गया. मैं ने इन तीनों का आपस में परिचय कराया और खाना लगाने चली गई.

मैं जब खाना खाने के लिए उन को बुलाने आई, तब वे तीनों अच्छी तरह हंसबोल रहे थे. रचना अपने किसी प्रोफेसर की नकल उतार रही थी और वे दोनों पेट पकड़ कर हंस रहे थे.

खाने के वक्त भी तीनों मस्ती करते रहे. हां, यह बात मेरे ध्यान में आई कि यामिनी से ज्यादा स्वप्निल से रचना बोल रही थी. वह कभी उचक कर यामिनी की प्लेट में सब्जी डाल देती, कभी स्वप्निल की तरफ पूरी उछाल देती तो कभी वहीं से चिल्ला कर कहती, "चाचीजी, इतना बढ़िया खाना मैं ने अपनी जिंदगी में कभी नहीं खाया."

खाना खाने के बाद रचना ने ही प्रस्ताव रखा, "एकएक मीठा पान हो जाए."

"बिलकुल..." स्वप्निल ने उस का समर्थन किया. यामिनी मुसकराती हुई बोली, "अगर कोई खिला दे तो खा लूंगी."

"ठीक है, मैं अभी ले आती हूं. चाचीजी भी तो खाएंगी न?" रचना एकदम से तैयार हो गई.

"रुकिए, मैं भी चलता हूं." स्वप्निल, भी उस के पीछे हो लिया.

मैं भगौना मेज पर से उठाती हुई बोली, "यामिनी, तू भी क्यों नहीं चली गई?"

"वे दोनों तो जल्दी से जा कर ले आएंगे मां. लेकिन मैं... और बाहर धूप भी तो कितनी है." यामिनी सहजता से बोली.

लगभग 15 मिनट बाद रचना और स्वप्निल पान ले कर लौटे. आधे घंटे तक तीनों कमरे में ही गप्पें मारते रहे. फिर रचना उठ गई, "अब मैं चलूंगी, यामिनी. शाम को पढ़ने घर आ जाना."

उसे उठता देख स्वप्निल भी उठ गया. "मां घर में अकेली होंगी...फिर शाम को डयूटी है मेरी."

वे दोनों चले गए. मैं कुछ खीझी सी यामिनी के ही कमरे में बैठी हुई थी. वह कमरे में आई तो मैं ने पूछ लिया, "स्वप्निल को क्यों जाने दिया? अगर रचना को जल्दी थी तो वह चली जाती."

यामिनी ने मुझे चौंक कर देखा, फिर बैठती हुई बोली, "वह खुद ही जाना चाहता था मां, और फिर मैं भी आराम करना चाहती थी."

मैं ने कुछ कहा नहीं. यामिनी आंखें बंद किए कुरसी पर बैठी थी. दुर्घटना के बाद से वह अपने रखरखाव पर बिलकुल ध्यान नहीं देती थी. पहले उसे सजनेसंवरने का कितना शौक था. अब अगर मैं कुछ कहूं तो वह उलट कर पूछती है, "क्या मुझे यह सब अच्छा लगेगा?"

सुबह ही मैं ने उस से कहा था कि वह अच्छे ढंग से तैयार हो जाए. सुन कर वह बेरुखी से बोली थी, "तैयार हो कर करना क्या है मां, मुझे यह सब अच्छा नहीं लगता. मैं जैसी हूं, वैसी ही रहूंगी."

रचना कितनी सजधज कर आई थी. बैंगनी रंग का सलवारकुरता, कानों में बड़ेबड़े बुंदे और माथे पर चमचमाती बिंदी.

एकाएक मैं ने उस से पूछा, "यामिनी, स्वप्निल कैसा लगा तुझे?"

उस ने धीरे से आंखें खोली, "कैसा यानी? जैसे दूसरे लोग लगते हैं, वैसा ही."

मैं नाराज हो गई, "यह क्या कह रही हो, क्या दूसरों में और स्वप्निल में कोई फर्क नहीं?"

वह संभल कर बैठ गई, "मां, मैं समझ नहीं पाई कि आप जानना क्या चाहती हैं? आप ही ने तो उस दिन कहा था कि स्वप्निल हंसमुख है, मिलनसार है...मैं इस में आगे क्या जोड़ूं?"

मैं कुछ देर चुप रही. फिर सीधे पूछा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिया, "मेरा मतलब था... कि क्या स्वप्निल से तुम शादी करोगी?"

"मां." एकदम तिलमिला कर वह उठ गई. बैसाखियां उठाते हुए उस ने कहा, "आप मेरी शादी के पीछे क्यों पड़ी हैं? क्यों किसी आदमी की जिंदगी बरबाद करना चाहती हैं?"

"यामिनी, जैसा तुम सोच रही हो, वैसा है नहीं...अगर वह खुद ही तुम से शादी करना चाहे तो...?"

वह व्यंग्य से हंसी और कमरे से बाहर निकलती हुई बोली, "कोई किसी लंगड़ी से शादी क्यों करेगा...सिर्फ दयावश न... लेकिन मुझे इस शब्द से ही घृणा है."

वह 'ठकठक' करती हुई चली गई.

अगले दिन दोपहर को वैशाली ने आते ही पूछा, "यामिनी कहां है?"

"वह तो कालिज गई है."

वैशाली मेरे पास आ कर बैठ गई और हाथ पकड़ कर बोली, "तृप्ति, यह रचना कौन है?"

"यामिनी की सहेली, क्यों?" मैं चौंक गई.

"क्या कल वह भी यहां थी?"

"हांहां. लेकिन तुम क्यों पूछ रही हो?" मैं ने उतावले स्वर में पूछा.

"कल जब से स्वप्निल तुम्हारे घर से लौटा है, उस की जुबान पर एक ही नाम है...रचना ऐसी है, रचना वैसी है. उस लड़के के पेट में कोई बात पचती भी तो नहीं." वैशाली गंभीर थी.

"लेकिन मुझे साफसाफ बताओ, हुआ क्या है?"

"देख तृप्ति, मैं ने स्वप्निल को यहां भेजा था यामिनी से मिलने, न कि उस की सहेली रचना से मेलजोल बढ़ाने. जब तुम जानती थी कि रचना खूबसूरत है, चुलबुली है, तब उसे बुलाने की क्या जरूरत थी? उस के सामने तुम्हारी बेटी दब सी गई."

"मैं क्या करती वैशाली, यामिनी ने ही कहा था कि..."

"वह तो नादान है." वह तेज स्वर में

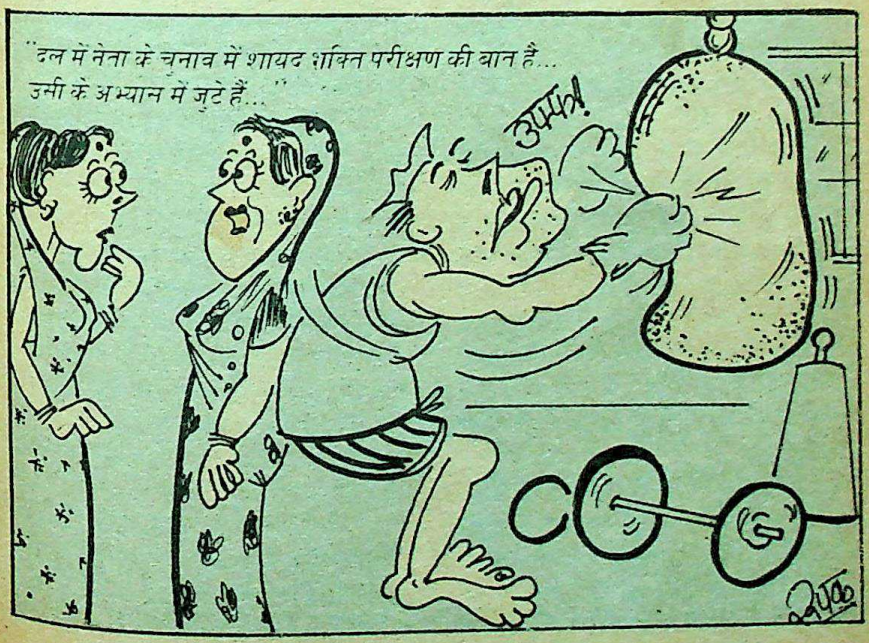

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बोली, "इस का मतलब यह तो नहीं कि तुम भी अपनी अक्ल उठा कर ताक पर रख दो. अच्छा, जो हुआ सो हुआ...आगे मैं संभाल लूंगी."

"वैशाली," मैं ने धीरे से पूछा, "क्या तुम ने स्वप्निल से बात की?"

"अभी तो नहीं की, पर आज कर लूंगी." फिर वह मुझे बैठ कर समझाने लगी कि मैं किस तरह यामिनी को समझाऊं.

जब से वैशाली ने मेरे मन में यामिनी की शादी की बात डाली थी, मैं उठतेजागते यही सोचने लगी थी. मैं ने विजय से कहा कि वह भी यामिनी को समझाए, पर उन्होंने जरा भी दिलचस्पी नहीं दिखाई. "तृप्ति, तुम तो जानती ही हो कि यामिनी क्या करना चाहती है? फिर उस की शादी के लिए इतनी उतावली क्यों हो रही हो?"

मैं ने कुछ गुस्से से कहा, "हाथ आया इतना बढ़िया लड़का ठुकराने में कौन सी बुद्धिमानी है? फिर वैशाली मेरी सहेली है, यामिनी वहां सुख से रहेगी."

"तुम यामिनी से सीधे क्यों नहीं पूछ लेतीं?"

"वह मेरी सुनती ही कहां है?" मैं ने भुनभुनाते हुए कहा.

उस दिन मैं ने सोच रखा था कि यामिनी से साफसाफ बात करूंगी, वह कालिज से थकीहारी लौटी और अपना स्टेथेस्कोप और बस्ता कमरे में पटक कर सीधे पिता के पास पहुंच गई.

"बात क्या है यामिनी, आज बहुत देर कर दी..." विजय ने अखबार से नजर उठाते हुए पूछा.

"पिताजी, आज हस्पताल में एक ऐसा केस आ गया था..." वह चुप हो गई.

"कैसा...?" विजय उत्सुक हो उठे.

"आप ने बलरामपुर गांव का नाम सुना है? वहां आज भी ढंग की चिकित्सा सुविधा उपलब्ध नहीं है. उन बेचारों को मामूली सी बीमारी के लिए भी दोढाई घंटे का सफर तय कर के शहर आना पड़ता है." यामिनी ने दुखी स्वर में कहा.

"क्या उस गांव का कोई रोगी हस्पताल में आया था?" विजय ने पूछा.

"हां, बेला नाम की 10 वर्षीया लड़की आई थी. उस की मौसी यहां रहती है इसलिए इलाज के लिए ले आई. पिछले दो साल से बेला बीमार है...अगर पहले ही उस का इलाज हो जाता तो बीमारी बढ़ती ही नहीं."

"क्या हो गया है उसे?"

"पिताजी, उसे टीबी है." यामिनी धीरे से बोली.

पितापुत्री चुपचाप बैठे रहे, अचानक यामिनी ने कहा, "पिताजी, मैं ने तय कर लिया है कि मैं बलरामपुर में ही क्लिनिक खोलूंगी."

मैं उन दोनों के लिए चाय ले कर आई थी. यामिनी की बात सुन कर मेरे कान खड़े हो गए. "यह तुम कहां जाने की बात कर रही हो?"

"बलरामपुर. एक छोटा सा गांव है मां, मैं वहीं क्लिनिक खोलूंगी. पिताजी ने पहले ही वादा कर रखा है कि जहां मैं चाहूं वहां क्लिनिक खुलवाने में मेरी मदद करेंगे. क्यों पिताजी?"

"तुम क्या अकेली जाओगी बलरामपुर...?" मैं ने सवाल किया.

"हां मां... रिटायर होने के बाद पिताजी के साथ तुम भी वहां आ जाना."

"दिमाग खराब हो गया है क्या? घर छोड़ कर तुम एक गांव में रहोगी? तुम्हारे पिता को रिटायर होने में अभी सातआठ साल और हैं, तब तक क्या तुम वहां अकेली रहोगी? हम तुम्हें रहने देंगे वहां?"

"इस में बुराई क्या है मां, मैं अकेली रह सकती हूं. मैं अपना काम खुद कर सकती हूं."

"यामिनी." मैं कठोर स्वर में बोली, "हम तुम्हें अकेले कहीं नहीं जाने देंगे. पहले तुम शादी कर लो, फिर जो जी में आए करना."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Foundation Chennai and eGangotri

"पिताजी, आप ही मां को समझाइए न. मैं अपने बल पर कुछ करना चाहती हूं. अगर आज किसी ने मुझ से शादी कर भी ली तो जिंदगी भर वह मुझे इस बात का एहसास दिलाता रहेगा कि उस ने दयावश मुझ से शादी की थी."

"यह सब तुम्हारे दिमाग का वहम है." मैं भड़क उठी.

"मां, आप मेरी शादी की बात करते समय यह क्यों भूल जाती हैं कि मैं...मैं लंगड़ी हूं?" इतना कह कर वह अंदर चली गई.

मैं कुछ परेशान सी बैठ गई. विजय ने मुझे समझाते हुए कहा, "तृप्ति, यामिनी को ले कर इतनी परेशान मत हुआ करो. अभी जैसा उस का मन है, वैसा कर लेने दो. वैसे वह ठीक ही तो कह रही है. अगर उसे समझदार जीवनसाथी नहीं मिला तो...?"

मुझे कोई उत्तर नहीं सूझा तो उठ कर रसोई में चली गई.

अगले दिन यामिनी सवेरे जल्दी ही उठ गई. सवेरे वह दोचार बार रसोईघर के भी चक्कर मार गई. मुझे ऐसा लगा, जैसे वह मुझ से कुछ कहना चाहती है.

विजय के दफ्तर जाने के बाद हम दोनों नाश्ता करने बैठीं. उस ने धीरे से कहा, "मां, आप पिछले कुछ दिनों से मेरी शादी की बात कर रही हैं न..."

मैं चौंक गई, "हां...तुम से मैं कह तो चुकी हूं."

"मां, मैं तो यह जानना चाहती हूं कि क्या वैशाली मौसी ने आप से गंभीरता से कहा है कि स्वप्निल...क्या वह स्वप्निल से पूछ चुकी हैं?"

"स्वप्निल से क्या पूछना है, वह तो अपनी मां की बात कभी टालता ही नहीं."

"ठीक है मां, अगर आप सब की यही मरजी है तो मैं तैयार हूं."

मैं एकटक यामिनी का चेहरा देखने लगी कि अचानक उसे क्या हुआ. कल तक तो यह नाक पर मक्खी नहीं बैठने देती थी.

यामिनी के कालेज जाने के बाद मैं ने फटाफट घर का काम निबटाया और वैशाली के घर पहुंच गई.

"वैशाली, यामिनी मान गई है." मैं ने जाते ही उसे खबर सुनाई.

"हूं." उस ने कहा, "अच्छा हुआ, अब मैं स्वप्निल से भी बात कर लूंगी."

मैं खुशीखुशी घर लौटी और मन ही मन योजना बनाने लगी कि यामिनी की शादी पर क्याक्या करूंगी.

यामिनी उन दिनों रोज शाम को रचना के घर पढ़ने जाया करती थी. उस के बरताव में तो मुझे कहीं से फर्क नजर नहीं आया और न ही उस ने अपने मुंह से फिर कभी शादी की बात कही. एक दिन रचना के घर से लौटतेलौटते उसे काफी देर हो गई. मुझे चिंता होने लगी थी. जैसे ही वह अंदर आई, मैं ने कुछ रोष से कहा, "अगर देर लगनी थी तो कह दिया होता...मैं यहां चिंता के मारे..."

"रास्ते में स्वप्निल मिल गया था मां." उस ने ठंडे स्वर में कहा, "हम लोग एक रेस्तरां में चाय पीने रुक गए थे, इसी लिए देर हो गई." वह अपनी किताबें उठाए कमरे में चली गई.

रात को खाने के समय मैं ने पूछा, "तो क्या कह रहा था स्वप्निल?"

"कुछ नहीं, ऐसे ही बातें करते रहे."

"ऐसे ही यानी..." मैं ने उस का चेहरा पढ़ने की कोशिश की.

सीखना

सर्वोत्तम बात है सीखना. पैसा खो सकता है, चोरी जा सकता है, सेहत और ताकत साथ छोड़ सकती है, लेकिन जो कुछ आप ने अपने मस्तिष्क में सहेज रखा है, वह हमेशा आप का ही बना रहता है.

—लूईस लामूर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"वही सब कुछ अब डाक्टरों का भविष्य क्या है...हस्पतालों में कैसी राजनीति चलती है, कैसे डाक्टर अपना ईमान बेचते हैं, वगैरह..."

"हूं, कब मिला था तुझे...यानी जाते समय या..."

"ओह मां, आप इतना क्यों पूछ रही हैं? आते समय...रचना और मैं सड़क पार की दुकान से चाकलेट खरीद रही थीं, वहीं स्वप्निल भी खड़ा था."

"तो क्या रचना भी आई थी तुम्हारे साथ?"

"हां..." उस ने सपाट स्वर में कहा.

मैं उस से और कुछ पूछ नहीं पाई. बारबार मेरे कानों में वैशाली का स्वर बज रहा था, 'रचना खूबसूरत है, चुलबुली है, तब उसे बुलाने की क्या जरूरत थी?'

वैशाली और मैं ने तय किया था कि गरमी की छुट्टियों में यामिनी की परीक्षा होते ही शादी कर देंगे. वैशाली ने स्वप्निल से बात कर ली थी. स्वप्निल ने पहले तो इनकार किया, फिर उस ने कहा कि वह यामिनी से खुद बात करेगा.

मैं रोज यामिनी का चेहरा देखती कि वह आज स्वप्निल के बारे में कुछ बताएगी, लेकिन उस के चेहरे पर तो कोई भाव ही नहीं आते थे.

जिस दिन मैं यामिनी के लिए जरी की साड़ी खरीदने जा रही थी, उस दिन मैं ने वैशाली को भी साथ ले लिया. रास्ते में मैं ने उस से पूछा, "वैशाली, मुझे कुछ खटका सा लग रहा है..."

"स्वप्निल ने तुम से साफसाफ 'हां' नहीं कहा है. शादी तो उसी को करनी है न?"

"तृप्ति, तुम भी न जाने क्याक्या सोचती रहती हो..." वैशाली हंसती हुई बोली, "तुम जैसा समझती हो स्वप्निल वैसा नहीं है. स्वप्निल को 'हां' या 'न' कहने की क्या जरूरत? मेरी 'हां' स्वप्निल की 'हां' है."

मैं ने चैन की सांस ली. दुकान पर जा कर मैं ने यामिनी के लिए दो भारी सा[illegible] खरीदीं. एक साड़ी वैशाली के लिए [illegible] खरीदी.

दुकान से निकल कर हम दोनों एक रेस्तरां में गईं. खानेपीने की चीजें मंगवाने के बाद मैं ने बातोंबातों में उस से कहा, "वैशाली, देखो, यामिनी से आज तक मैं ने घर का कोई ज्यादा काम नहीं करवाया. पढ़[illegible] तो वह करती भी थी लेकिन दुर्घटना के बाद..."

"अरे, यह क्या कह रही हो? मायके में तो सभी लड़कियां इसी तरह रहती हैं. ससुराल जा कर सब सीख जाती हैं." वह हंसते हुए बोली.

"वैशाली, कभी तुम्हारे मन में यह [illegible] नहीं आएगा कि तुम्हारी बहू की एक टां[illegible] ठीक नहीं...इस वजह से तुम दुखी तो नहीं होओगी?" मैं ने शंका व्यक्त की.

"अरे नहीं, जिस दिन मैं ने तुम्हारी बेटी को इस हाल में देखा था, उसी दिन मैं ने तय कर लिया था कि इसे अपनी बहू बनाऊंगी. तुम्हीं सोचो तृप्ति, क्या यामिनी की शादी आसानी से हो जाती? तुम्हारी बेटी मेरी भी तो बेटी है. मैं इस तरह तुम्हारा दुख बांटना चाहती हूं, जिस से यामिनी का भला हो जाए."

उस ने तो बड़े हलके अंदाज में यह बात कही थी पर मुझे चुभ गई. क्या मेरी लड़की इतनी गईगुजरी है कि कोई उस का भला करने के लिए उस से शादी करे? मेरे मन पर भारी बोझ सा आ पड़ा पर मैं ने किसी से कुछ कहा नहीं. धीरेधीरे मैं ने मन को समझा लिया कि जो भी हो, वैशाली मेरी सहेली है. मेरी बेटी को दुख तो हरगिज नहीं देगी. लेकिन अगर यह बात यामिनी को पता चल जाती तो वह निश्चित ही शादी से इनकार कर देती.

यामिनी की परीक्षा खत्म होने के बाद अगले दिन वह अपनी सहेली के साथ पिकनिक पर जाने वाली थी. उस के अनुरोध पर मैं सैंडविच बनाने के लिए टमाटर और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

CC-0. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by Siddhanta eGangotri Foundation, Chennai and eGangotri

मक्खन वगैरह ले कर दुकान से लौट रही थी. अचानक मेरी नजर बस स्टाप के समीप खड़े रचना और स्वप्निल पर पड़ी. वे दोनों कोई गंभीर बात कर रहे थे. मैं चौंक गई कि इन दोनों में इतनी दोस्ती कब से हो गई? मेरे देखतेदेखते वे दोनों मेरी निगाहों से ओझल हो गए. मुझे स्वप्निल का रचना के साथ इतनी शाम गए इस तरह घूमना बिलकुल पसंद नहीं आया. सोचने लगी, 'मेरी यामिनी भला कैसे खुश रह पाएगी इस के साथ?'

मैं भुनभुनाते हुए घर लौटी. बरामदे में ही यामिनी बैठी अपने नाखून साफ कर रही थी. मैं ने सब्जी का झोला एक तरफ पटक कर उस से पूछा, "स्वप्निल तुझे मिला था?"

उस ने सिर उठाया, "हां, अभीअभी तो वह और रचना यहां से गए हैं."

"क्या दोनों साथ ही आए थे?"

"हां मां..."

मैं ने घूर कर उसे देखा और गुस्से से कह दिया, "मुझे रचना का इस तरह स्वप्निल के साथ घूमना पसंद नहीं."

यामिनी मुसकराई, "ऐसा मत कहो मां, रचना भी मेरी अच्छी दोस्त है और स्वप्निल भी."

मैं चीखती हुई बोली, "यामिनी, तुम कुछ नहीं समझती...वह दोनों..."

"ऐसा ही सही मां, कभीकभी नासमझ बने रहने में ही फायदा होता है." कह कर यामिनी उठ गई.

मैं वहीं खड़ीखड़ी उस की बातों का मतलब निकालने की कोशिश करती रही.

मैं ने सोच लिया था कि अगले दिन वैशाली से साफसाफ बात करूंगी कि मेरी बेटी मेरे लिए कोई बोझ नहीं है.

अगले दिन सवेरे यामिनी पिकनिक पर चली गई. मैं ने झटपट घर का काम निबटाया क्योंकि मैं दोपहर होने से पहले ही वैशाली के घर जाना चाहती थी.

मैं ने अभी गैस पर कुकर चढ़ाया ही था कि दरवाजे की घंटी बजी. दरवाजा खोला तो वहां हांफती हुई वैशाली खड़ी थी.

सरिता

सरिता में विज्ञापन दीजिए
अपनी बिक्री बढ़ाइए

उच्च व मध्य वर्ग के 3,00,000 से भी अधिक धनी व समृद्ध परिवारों द्वारा खरीदी जाती है और इस के 80 लाख से भी अधिक पाठक हैं. यद्यपि 'सरिता' महिलाओं में विशेष रूप से लोकप्रिय है, पर परिवार का कोई भी सदस्य इसे पढ़े बिना नहीं छोड़ता.

यदि आप की निर्मित वस्तुएं एवं उत्पादन संपन्न परिवारों द्वारा खरीदे जाते हैं तो 'सरिता' में विज्ञापन दीजिए और बिक्री बढ़ाइए.

विज्ञापन दर अपेक्षाकृत कम व अन्य पत्रपत्रिकाओं से कहीं अधिक आकर्षक लिखें :

विज्ञापन व्यवस्थापक
सरिता रानी झांसी रोड. नई दिल्ली-55

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"क्या हुआ?" मैं ने हैरानगी से पूछा.

"अरे, पूछो मत...गजब हो गया." वह धम से सोफे पर बैठ गई.

"बता न..." मैं उत्सुकता के मारे मरी जा रही थी.

"तृप्ति, वह... वह... स्वप्निल ने रचना से शादी कर ली है."

"क्या?" मैं जैसे आसमान से गिरी.

वह धीरे से बोली, "मैं ने तो कभी सोचा भी नहीं था कि स्वप्निल ऐसा भी करेगा. उस ने जब मुझे बताया तो मुझे लगा कि मजाक कर रहा है."

"तो क्या स्वप्निल ने तुम्हें पहले ही सब कुछ बता दिया था?"

"हां, लेकिन..." उस ने होंठ काटे, "मैं ने सोचा, होगा तो वही जो मैं चाहती हूं पर उस ने..."

"यह तो गलत है वैशाली," मैं रोष से बोली, "तुम अपनी पसंद अपने बेटे पर कैसे थोप सकती हो? आखिर उस की जिंदगी है, उसे वह अपनी तरह से जीना चाहेगा. अगर ऐसी बात थी तो तुम्हें मुझे पहले ही बता देना चाहिए था...बेकार में..."

वैशाली ने मेरे हाथ पकड़ लिए, "मुझे गलत मत समझो तृप्ति, मैं तो तुम्हारी अपाहिज बेटी का उद्धार चाहती थी..."

"कोई अपाहिज नहीं है मेरी बेटी." मेरी आंखें चिनगारियां बरसाने लगीं, "उस का तो सपना कुछ और ही है. मैं ने ही उसे बड़ी मुशकिल से शादी के लिए राजी किया था..." मुझ से आगे कुछ बोला नहीं गया.

काफी देर तक हम दोनों खामोश बैठी रहीं. फिर वह उठती हुई बोली, "अब मैं चलती हूं. घर में पहली बार बहू आई है, कम से कम दूसरों को दिखाने के लिए तो कुछ करना ही होगा."

उस के जाने के बाद देर तक मैं परेशान रही कि अब यामिनी को कैसे समझाऊंगी. कैसे उस से कहूंगी कि उस का 'वर'-उस की सहेली ने हथिया लिया है.

शाम तक मैं यों ही भरीभरी बैठी रही. छः बजे के लगभग यामिनी [illegible] से थकीहारी लौटी.

मेरे गले में बांहें डाल कर वह [illegible] हुई बोली, "मां, बड़ा मजा आया."

मेरी आंखों से आंसू छलक पड़े. [illegible] चौंक कर बोली, "मां, क्या हुआ?"

मैं ने आंसू पोंछ लिए. फिर [illegible] होती हुई बोली, "यामिनी, तुझे [illegible] है...स्वप्निल ने रचना से शादी कर ली [illegible]

वह एक क्षण के लिए रुकी, [illegible] मुसकरा कर बोली, "मुझे पता है मां..."

"क्या...?"

"हां मां, मुझे तो बहुत पहले से [illegible] था."

"तो तू ने मुझे क्यों नहीं बताया?"

"आप बेकार दुखी होतीं."

"अरी पगली," मैं ने उसे झकझोर [illegible] "लेकिन तब मैं मन में कोई आस तो [illegible] पालती."

"मां," यामिनी का स्वर अचा[illegible] गंभीर हो गया, "आप ने जिस दिन मुझ[illegible] शादी की बात की थी, उस के अगले ही दि[illegible] मैं स्वप्निल से मिली थी. मैं ने उस से [illegible] कह दिया था कि सिर्फ दयावश वह मुझ[illegible] शादी न करे. बाद में मुझे पता चला [illegible] स्वप्निल और रचना एकदूसरे को..."

"तो उस ने वैशाली को यह सब [illegible] नहीं बताया?"

"मां, उस ने बताया था पर वैशा[illegible] मौसी की जिद थी कि वह उसी से शादी [illegible] जो उन्हें पसंद है. स्वप्निल ने उन्हें हर [illegible] से समझाया, पर...मेरे खयाल से उस ने [illegible] ही किया है."

"हूं." मैं ने ध्यान से यामिनी का चे[illegible] देखा, वहां किसी तरह की कोई शिका[illegible] नहीं थी. मेरा चेहरा अपनी तरफ घुमा [illegible] वह बोली, "मां, एक प्याला चाय बना दो[illegible] बड़ी थकान लग रही है."

वह बड़े आत्मविश्वास से उठी [illegible] बैसाखियों के सहारे अंदर चली गई. [illegible] आंखों की नमी धीरेधीरे सूखती जा [illegible] थी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लूडो की बाजी

कहानी • शशि उप्पल

सुबीर और अनु लूडो खेल रहे थे. सुबीर की लाल गोटियां थीं और अनु की नीली. पर पता नहीं क्या बात थी कि सुबीर की गोटियां बारबार अनु की गोटियों से पिट रही थीं. जैसे ही कोई लाल गोटी जरा सा आगे बढ़ती, नीली गोटी झट से आ कर उसे काट देती. जब लगातार पांचवीं बार ऐसा हुआ तो सुबीर चिढ़ गया. "तू हेराफेरी कर रहा है." वह अनु से बोला.

"वाह, मैं क्या कर रहा हूं... तुझे ठीक से खेलना ही नहीं आता, तभी तो हार रहा है. ले बच्चू, यह गई तेरी एक और गोटी." अनु ताली बजाता हुआ बोला.

सुबीर का धैर्य अब समाप्त हो गया. लाख कोशिश करने पर भी उस की आंखों में आंसू आ ही गए.

"रोंदू, रोंदू." अनु उसे अंगूठा दिखाता हुआ बोला, "यह ले, मेरी दूसरी गोटी भी पार हो गई. यह ले, अब फिर से आ गए छ :"

सुबीर उठ कर खड़ा हो गया, "मैं नहीं खेलता तेरे साथ, तू हेराफेरी करता है."

जीतती बाजी का ऐसा अंत होते देख कर अनु को भी क्रोध आ गया. उस ने सुबीर को एक घूंसा दे मारा.

अब घूंसा खा कर चुप रहने वाला सुबीर भी नहीं था. सो हो गई दोनों की जम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुबीर और अनु की लूडो की बाजी ने दोनों के बीच लड़ाई ही नहीं करवाई बल्कि दोनों घरों की बोलचाल भी बंद करवा दी थी पर एक दिन इसी लूडो की बाजी ने फिर से पासा पलट दिया.

कर हाथापाई. सुबीर ने अनु के बाल नोंचे तो अनु ने उस की कमीज फाड़ दी. दोनों गुत्थमगुत्था होते हुए कोने में पड़ी हुई मेज से जा टकराए. सुबीर की तो पीठ थी मेज की ओर, सो उसे अधिक चोट नहीं आई, पर अनु का सिर मेज के तीखे कोने पर जा लगा. उस के सिर में घाव हो गया और खून बहने लगा. खून देखते ही अनु चीखने लगा, "मां, मां, सुबीर मुझे मार रहा है."

खून देख कर अनु की मां घबरा गई, "क्या हुआ मेरे बच्चे?"

"मां, सुबीर ने मेरी लूडो फाड़ दी और मुझे मारा भी है. मां, सिर में बहुत दर्द हो रहा है." अनु सिसकता हुआ बोला.

यह सब सुन कर अनु की मां सुबीर पर बरस पड़ी, "जंगली कहीं का... मांबाप ने घर पर कुछ नहीं सिखाया क्या? खबरदार, इस ओर दोबारा कदम रखा तो..."

सुबीर को बहुत गुस्सा आया कि अपने बेटे को तो कुछ कहा नहीं और मुझे डांट दिया. वह गुस्से से बोला, "आप का बेटा जंगली है. आप भी जंगली हैं. सारी कालोनी वाले कहते हैं कि आप झगड़ालू हैं."

"बड़ों से बात करने तक की तमीज नहीं तुझे." अनु की मां अपनी निंदा सुन कर चीखीं और उन्होंने सुबीर के एक तमाचा दे मारा.

गाल पर हाथ रख कर सीधा सुबीर अपनी मां के पास गया. उस ने खूब बढ़ाचढ़ा कर सारा किस्सा सुनाया. सुन कर सुबीर की मां को भी क्रोध आ गया. उन्होंने भी अपने बेटे से कह दिया, "ऐसे लोगों के घर जाने की कोई आवश्यकता नहीं है."

इस के बाद दोनों घरों की बोलचाल बंद हो गई.

वार्षिक परीक्षाएं आने वाली थीं, सो सुबीर और अनु ने सारा समय पढ़ाईलिखाई में लगा दिया. पर इस के बाद जब छुट्टियां आरंभ हुईं तो दोनों ऊबने लगे. अनु अपनी मां के साथ लूडो खेलने का प्रयत्न करता पर वैसा मजा ही नहीं आता था, जो सुबीर के साथ खेलने में आता था.

सुबीर अपने पिताजी के साथ क्रिकेट खेलता तो उसे भी बिलकुल आनंद नहीं आता था. वह स्वयं ही जानबूझ कर जल्दी 'आउट' हो जाते, परंतु सुबीर का शतक अवश्य बनवा देते.

सुबीर और अनु दोनों ही अब पछताने लगे कि नाहक बात बढ़ाई.

एक दिन अनु ने देखा कि सुबीर दोनों घरों के बीच बनी बाड़ के पास बैठ कर कंचे खेल रहा है. अनु भी चुपचाप अपने कंचे ले कर अपनी बाड़ के पास बैठ कर खेलने लगा. कुछ देर दोनों चुपचाप खेलते रहे. फिर अनु ने देखा सुबीर का एक कंचा उस के बगीचे में आ गया है. उस ने कंचा उठा कर सुबीर को देते हुए कहा, "यह तुम्हारा है."

सुबीर भी बात करने का बहाना ढूंढ़ रहा था, तपाक से बोला, "कंचे खेलोगे?"

अनु ने एक क्षण इधरउधर देखा. मैदान साफ पा कर वह बाड़ में से निकल कर सुबीर के बगीचे में पहुंच गया. थोड़ी देर बाद जब सुबीर की मां ने पुकारा तो वह चुपचाप वहां से खिसक कर अपने बगीचे में आ गया.

यह तरीका दोनों को ठीक लगा. अब जब भी अवसर मिलता, दोनों एकसाथ खेलते. मित्र के साथ खेलने का आनंद ही कुछ और होता है. अब बस एक ही परेशानी थी कि उन्हें डरडर कर खेलना पड़ता था.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

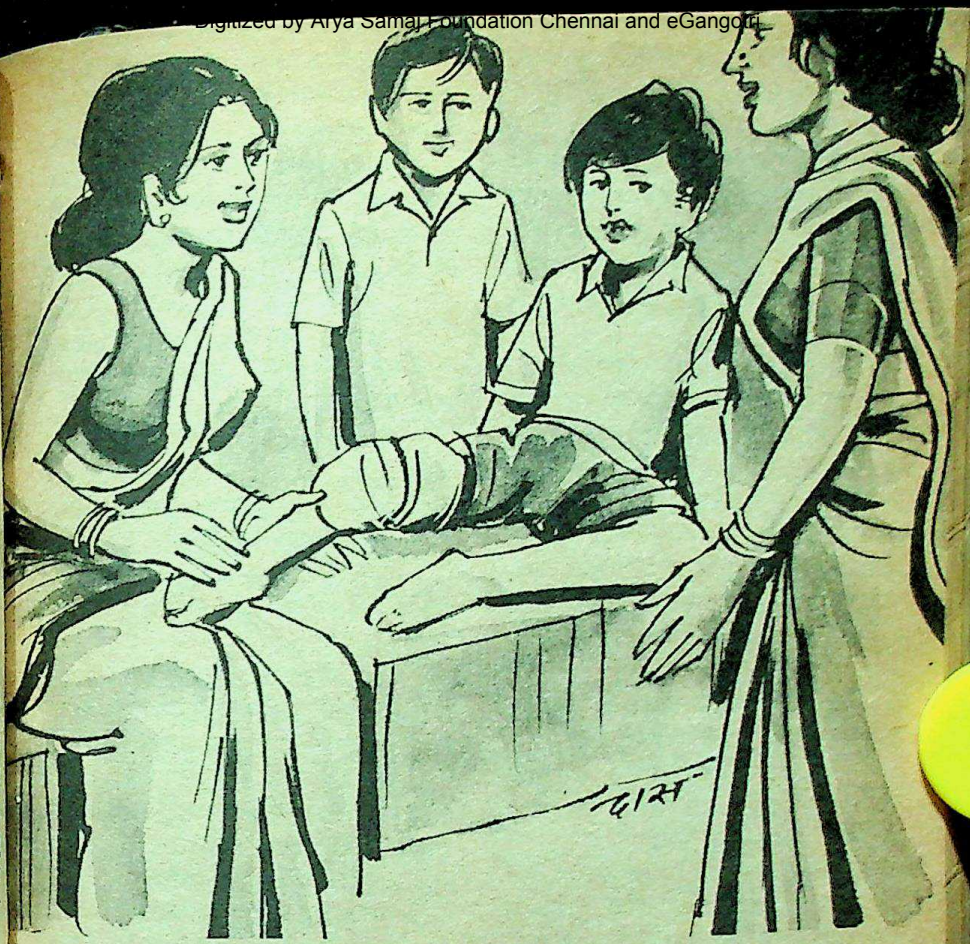

"कितना अच्छा हो, यदि हमारे मातापिता भी फिर से मित्र बन जाएं." एक दिन अनु बोला.

"पर यह कैसे संभव होगा, समझ में नहीं आता. मैं तो अपने मातापिता के सामने तेरा नाम लेने से भी डरता हूं." सुबीर उदास हो कर बोला.

एक दिन सुबह का समय था. सुबीर घर पर अकेला था. वह एक पुस्तक ले कर पेड़ पर चढ़ गया और पढ़ने लगा.

अचानक 'धड़ाम' की आवाज हुई. अनु ने आवाज सुनी तो वह तेजी से बाहर भागा. उस ने देखा कि सुबीर जमीन पर पड़ा कराह रहा है. वह तेजी से उस के पास गया और उसे खड़ा करने का प्रयत्न करने लगा.

"अनु, मेरी पीठ में जोर की चोट लगी है. बहुत दर्द हो रहा है." सुबीर दर्द से परेशान हो कर बोला.

अनु ने एक क्षण इधरउधर देखा, फिर जल्दी से बोला, "तुम हिलना मत, मैं सहायता के लिए अभी किसी को बुला कर लाता हूं."

अनु सीधा अपनी मां के पास गया

सुबीर की मां अनु की मां से मुसकरा कर बोलीं, "आप ने सुबीर की इतनी देखभाल की, उस के लिए बहुतबहुत धन्यवाद."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और बोला, "मां, जल्दी चलो. सुबीर को बहुत चोट लगी है. उस की मां भी घर पर नहीं है... उसे बहुत दर्द हो रहा है."

अनु की मां सुबीर को गोद में उठा कर अंदर ले गईं. फिर उस की टांगों और बांहों की खरोंचों को साफ कर उन पर दवा लगा दी. अभी वह उस की पीठ पर मरहम लगा ही रही थीं कि सुबीर की मां बाजार से लौट आईं.

सुबीर के इर्दगिर्द कई लोगों को देख कर वह घबरा गईं. अनु उन को देखते ही बोला, "चाचीजी, सुबीर को बहुत दर्द हो रहा है, इसे जल्दी से हस्पताल ले चलिए." उस की आंखों में आंसू तैर रहे थे.

सुबीर की मां अनु के सिर पर प्यार से हाथ फेरती हुई बोलीं, "अरे बेटा, रोते नहीं... सुबीर दोचार दिन में बिलकुल ठीक हो जाएगा. तुम इसे देखने आया करोगे न?"

अनु की आंखों में चमक आ गई. वह उत्सुकता से मां की ओर देखने लगा.

"हां, यह अवश्य आएगा. अनु पास रहेगा तो सुबीर भी अपना दर्द भूल जाएगा," अनु की मां बोलीं.

सुबीर की मां अनु की मां की बात सुन कर बहुत प्रसन्न हुईं. फिर बोलीं, "आप ने सुबीर की इतनी देखभाल की. उस के लिए बहुतबहुत धन्यवाद."

"सुबीर भी तो मेरा ही बेटा है... जैसा अनु वैसा सुबीर. अपने बेटे के लिए कुछ करने के लिए धन्यवाद कैसा." अनु की मां ने उत्तर दिया.

थोड़ी देर बाद अनु और सुबीर जब अकेले रह गए तो अनु बोला, "तू पुस्तक पढ़तापढ़ता सो गया था क्या, एकदम से गिर कैसे गया?"

"जानबूझ कर गिरा था."

"क्या?" अनु की आंखें आश्चर्य से फैल गईं. "जानता है, हड्डीपसली भी टूट सकती थी."

"जानता हूं." सुबीर गंभीरता से बोला, "पर मुझे उस का भी दुख न होता. अब हम सब फिर से मित्र बन गए हैं. तेरी मां ने मुझे कितना प्यार किया..."

"और तेरी मां ने मुझे... अब हम कभी झगड़ा नहीं करेंगे." अनु भी गंभीर हो कर बोला.

"हां, और क्या... खेल में हारजीत तो लगी ही रहती है. वास्तव में जीतने का मजा आता ही हारने के बाद है." सुबीर बोला.

अनु को अब हंसी आ गई, "बड़ी बुद्धिमानी की बातें कर रहा है. अब कभी हारने पर रोएगा तो नहीं?"

"नहीं." सुबीर भी हंसने लगा, "और न ही जीतने पर तुम्हें चिढ़ाऊंगा."

दोनों मित्र एक बार फिर मिल कर लूडो खेलने लगे.

मूषक संकट से छुटकारा या चूहों के प्रकोप से मुक्ति

चूहों को मारने व उन के प्रकोप से छुटकारा पाने के लिए लोग न जाने क्याक्या जतन करते हैं, लेकिन ये सारे जतन जब तमिलनाडु के बदनमेल्लयी गांव के किसानों के लिए कारगर साबित न हुए तो उन्होंने चूहों से मुक्ति पाने के लिए मुरला आदिवासियों की सहायता ली.

मुरला जाति के लोग चूहों के संबंध में काफी जानकारी रखते हैं और बिना कीटनाशक दवा का प्रयोग किए उन्हें पकड़ लेते हैं. वैसे चूहों के पकड़ने के लिए कॉडेड एंड टार्किराइड स्क्वेड नामक एक दस्ते का गठन किया गया है, जो अखिल भारतीय स्नेक कोचर्स कोआपरेटिव की एक शाखा है. इस दस्ते ने इस वर्ष 1,40,000 चूहे पकड़ कर 3300 किलो अनाज बचाया तथा चूहों के 73,000 बिलों को बंद कर दिया. यह दस्ता एक चूहा पकड़ने की कीमत दो रुपए लेता है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारी बेड़ियां

मेरे पड़ोस में एक दक्षिण भारतीय परिवार रहता है. उन के यहां यह रिवाज है कि गर्भवती महिला को पहले बच्चे के जन्म से पूर्व मायके भेज दिया जाता है.

पिछले दिनों जब पड़ोसी की बहू को बच्चा होना था तो उसे मायके भेज दिया गया. उस के मायके में एक भी हस्पताल न था. प्रसव पीड़ा के वक्त उस महिला की सांसें उखड़ने लगीं. बड़ी मुशकिल से शहर से डाक्टर बुलाया गया. काफी प्रयत्न के बाद डाक्टर ने महिला को बचा लिया लेकिन बच्चे को नहीं बचा सका.

—नरेंद्रकुमार भसीन

*

मेरे पड़ोसी के यहां अकसर देवी पूजा होती रहती है. पूजा के बाद थोड़ी थोड़ी भभूत (राख) सब को प्रसाद के तौर पर खाने को दी जाती थी.

उस की छोटी लड़की को राख खाने की आदत ही पड़ गई. लोगों के काफी मना करने पर वह यह कह कर बात टाल जाते कि देवी की भभूत ही तो खाती है, कुछ नहीं होगा.

कुछ दिनों बाद उस बच्ची को पेट की भयंकर बीमारी हो गई. —प्रवेंद्रपाल सिंह

*

एक दिन जयपुर जाते वक्त रेलगाड़ी में अचानक एक महिला बेहोश हो गई. मैं ने उस महिला को होश में लाने के उद्देश्य से उस के मुख पर पानी के छींटे मारने शुरू किए.

इस पर उस महिला के एक संबंधी ने मुझे टोका और मेरी जाति पूछी. पूरी तरह आश्वस्त हो जाने पर कि मैं जाति का ठाकुर ही हूं, उस ने मेरी बोतल का पानी स्वीकार किया.

—इकबाल सिंह

पड़ोस में रहने वाले अंधविश्वासी परिवार के बड़े लड़के को काफी भागदौड़ के बाद नौकरी मिली. लड़के के मातापिता ने यह मनौती मांगी कि लड़के की पहली तनख्वाह भगवान को चढ़ा देंगे.

कुछ दिनों बाद जब वह तनख्वाह ले कर आया तो सब ने उस की मरजी के खिलाफ सारी तनख्वाह भगवान को चढ़ा दी. अगले महीने उस की नौकरी किसी कारणवश छूट गई. ऐसी स्थिति में उसे सांत्वना देने के बजाय परिवार वालों ने यह कहा कि 'भगवान के नाम पर चढ़ावे के लिए तनख्वाह देने से आनाकानी करने पर ही यह सब कुछ हुआ है.'' —प्रभु. एन. शर्मा

*

मेरी सहेली का विवाह ऐसे परिवार में हुआ था जहां सास का अपने बेटेबहू पर पूरा अंकुश था. अपनी मां की इच्छा के खिलाफ वे कुछ भी नहीं कर सकते थे.

कुछ दिनों बाद जब मेरी सहेली गर्भवती हुई तो उस की सास ने कहा कि नौ महीने तक ऐसी स्त्री हमारे यहां घर से बाहर कदम नहीं रखती. यह बात जब उस के पति को पता चली तो उस ने इस भय से कि अब वह अपनी पत्नी को कहीं बाहर नहीं ले जा सकेगा, गर्भपात की गलत दवा खिला दी. परिणामस्वरूप उस की हालत बिगड़ गई और काफी उपचार के बाद ही ठीक हो पाई. —विनोद सक्सेना ●

इस स्तंभ के लिए अपने तथा अपने संबंधियों के अनुभव भेजिए. प्रत्येक प्रकाशित अनुभव पर 50 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. अपने अनुभव इस पते पर भेजें. संपादकीय विभाग, सरिता, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चित्रा

कहानी

●

अरुणा त्रिपाठी

रसोईघर की खटरपटर की ध्वनि से रमयंक को आशंका हुई कि शायद काम वाली बाई नहीं आई है तभी अलसाई, थकी मां झुंझलाहट बरतनों पर निकाल रही हैं.

"क्यों मां, आज फिर नहीं आई सीतम्मा?"

"अब क्यों आएगी, महारानी पगार जो ले गई है." क्रोध में उबलते रमा ने कहा और आगे बरतनों की उथपटकी के साथ बोल पड़ी, "आने दो सारी कसर निकाल लूंगी."

एक दिन बीता, दो दिन बीते. धीरेधीरे दिन खिसकने लगे पर सीतम्मा न लौटी. निश्चितता व आश्वस्तता इस बात की थी कि पगार देते समय दो रुपए उस के बाकी रह गए थे. चालाकी से रमा ने कह दिया था कि छुट्टे नहीं है. चारपांच दिन बाद ले लेना. जाहिर है चारपांच दिन ऊपर चढ़ जाएंगे तो दो रुपए देने में हर्ज क्या है, यह गुर पड़ोसन रूपाली ने बताया था.

"अरे, इन को कभी पूरी पगार महीने पूरे होते देना ही नहीं. इन का पैसा दबा रहेगा तो छोड़ कर कहां जाएगी."

रूपाली का बताया यह नुसखा बेकार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भोलाभाला चित्रा घर के कामकाज को जिस उत्साह से करती, उसे देख रमा हैरान रह जाती, छोटी उम्र की लड़की से काम करवा कर रमा को आत्मग्लानि भी होती. पर वह करती भी क्या. न जाने ऐसी कितनी लड़कियां हैं जो चित्रा की तरह का जीवन जी रही हैं.

होता नजर आने लगा जब दिन खिसकते गए और वह न लौटी. रमा सोचने लगी, 'अपना पैसा भला कौन छोड़ता है. नहींनहीं, वह आएगी जरूर. घरघर काम करने वाली साधारण स्त्री है वह.'

रमा खुद कितनी दुखी और क्रोधित हो जाया करती थी यदि उस का एक रुपया भी अधिक ले कर बाई बैठ जाती. उठते बैठते कोसती. अपनी सहृदयता, दयालुता व ईमानदारी के एवज में मिली धोखेबाजी, कृतघ्नभाव झूठ जब तक चार पड़ोसियों से कह भड़ास निकाल न देती, आक्रोश ठंडा न पड़ता. किंतु जब महीना फिसल गया वह न आई तो ठंडा पड़ा आक्रोश उन के अहं व अहंकार को फुफकार गया.

'भर दिए होंगे किसी ने कान. नवाबजादी अपना रुपया लेने तक नहीं आई. न आई तो न आए. क्या मैं अपने हाथों से काम नहीं कर सकती हूं. नहीं रखूंगी. सब के दिमाग सातवें आसमान पर हैं. जिस से पूछो वही हाथ चमका देती है जैसे मुफ्त में काम को बुलाती हूं. हुंह, जिसे देखो वही कहती है चादरें बहुत निकलती हैं. बड़ा सख्त काम है जैसे दूसरों के घर फूल की छड़ी फिरानी पड़ती हो. अरे, इन की कौम ही ऐसी है. क्या समझती हैं यह. चाहे जितना दे दो अपनी जाति दिखा ही देती हैं.''

विभिन्न कौमों के समाज में नवीन जन्मे थे. किस कौम की ओर संकेत था? क्या गरीबी भी एक कौम है? यदि हां, तो सब गरीब हैं. कोई मन से, कोई तन से, कोई धन से. गरीबी किसी जाति, समुदाय, समूह से बंधी तो नहीं.

कहने को तो कह गई रमा इन की कौम ऐसी है या जाति ऐसी है किंतु क्या गरीबी और जाति में संबंध स्थापित कर सकती थी? 'शारीरिक विकलांगता ही विकलांगता नहीं होती. संकीर्णता, ओछापन,

'कहीं वह इतमीनान से मेवे चुरा कर तो नहीं खा रही', शंकित हो कर रमा ने पुकारा, ''चित्रा.'' तो आवाज आई श...श...श... चित्रा होंठों पर उंगली रखे चुप रहने का संकेत दे रही थी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अधैर्य, मद, अहंकार, अशांति, क्रोध ये सब भी विकलांगता के ही लक्षण तो हैं. गरीबी अभिशाप है या अमीरी?

क्रोध में अंटशंट बकना तो पैसे वालों की फितरत है, एक नई अदा है. रमा की चिंता झुंझलाहट में परिणत होना भी स्वाभाविक था. आखिर क्यों नहीं टिकती काम वाली? पड़ोसी भी क्या सोचते होंगे, खैर, ये सब चादरों से भय खाती हैं. उस ने सोचा वह खुद धो लेगी, आखिर उन्हें डंडे से पीटना ही तो है, कौन बड़ा मुशकिल काम है. अब की बार उस ने चादर धोने की शर्त हटा दी.

किंतु समस्या मिलने की थी. जैसे ही इशारे से किसी को बुलाती वह दूर से ही हाथ हिला कर इनकार कर देती. बरसात के बादल अब तब गरज रहे थे. डर से अधीर मन हर आनेजाने वाले राहगीर में सिर्फ बाई को ढूंढ़ने लगा.

एक दिन एक टोकरी में इधरउधर टूटीफूटी सूखी लकड़ियां बीनते एक लड़की दिख गई. जिज्ञासा या लोभ जो कुछ भी कहें, रमा संवरण न कर सकी. चारों तरफ देखा कोई देख तो नहीं रहा. धीरे से उस लड़की को गुहार लगाई. साफसुथरी 12-14 के बीच की उम्र वाली स्वस्थ लड़की से रमा ने पूछा,

"काम करोगी?"

"मां से पूछ कर बताऊंगी."

रमा ने सोचा, 'बच्चा है कहीं भूल न जाए.' उसे ठहरने का संकेत दे अंदर गई और दो गले केले ले आई.

"लो यह खा लो."

केले लेते उस बच्ची के चेहरे पर संतोष का भाव देख कर रमा ने अपनी उदारता का अहसास दिलाने के स्वर में कहा,

"भूलना नहीं. कब लाओगी? अच्छे पैसे देती हूं. अगलबगल वालों से पांचदस ज्यादा."

केले खा चुकने के बाद उस लड़की ने पूरे विश्वास से कहा,

"जरूर बाई जरूर ले आऊंगी."

एक शाम सचमुच वह लड़की अपनी मां को ले कर आ गई. रमा अब की बार सतर्क थी. बहुत फूंकफूंक कर कदम रख रही थी. बड़ी मुशकिल से जो मिली थी. बड़ी कुशलता से अपने चेहरे के संतोष भाव को छिपाते हुए उस ने पूछा, "तुम करोगी या तुम्हारी बेटी?"

"मेरे पास तो समय नहीं है. यह चित्रा ही करेगी."

"कहीं और भी करती है यह?"

"कहीं नहीं."

रमा आश्वस्त हुई, 'चलो कहीं और नहीं करती तो अच्छा ही है. एक तो बच्ची है, दूसरे और घर भी पकड़े तो अवश्य उस का काम छोड़ देती.' उस के चेहरे की निश्चितता मुसकान में बदल गई.

"बहुत अच्छा. छोटी है, एक घर से ज्यादा बेचारी से क्या निबटेगा भला. तुम चिंता मत करना. तुम्हारी चित्रा का बड़ा खयाल रखूंगी. इस की उम्र क्या है?"

"बारह."

"क्या?" सहसा मुख से आश्चर्य फूट पड़ा किंतु गरज ने हांक लगाई और वह शांत पड़ गई. 'मूर्ख, बरसात सिर पर है. छींटें पहले से आ रही हैं. अगर इस सोचविचार में पड़ी कि बच्चों से काम लेना अपराध है तो बस... भावुकता में पड़ी तो घिसती रहोगी. जान है तो जहान है. दया, प्रेम, परोपकार में मत उलझ. अपना मतलब देख.'

रमा सहज होते हुए बोली, "हम इसे 50 रुपए देंगे. चूंकि बच्ची है इस से चादरेंवादरें तो धुलेंगी नहीं. वह मैं स्वयं...

"नहीं बाई, यह सब धो लेगी. यह छः महीना आप ही जैसे हिंदी घर में काम कर चुकी है. प्रोफेसर सिंह को तो जानती होंगी. यहां आप से दो पट्टी छोड़ रहते हैं."

"हांहां, मालूम है." रमा ने नाम सुन भर था. जानतीपहचानती न थी. चित्रा की मां जो कुछ कह रही थी वही चित्रा सुन रही थी या कुछ और. कुछ शंका हुई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'कहां तो चादरों के भय से भीमकाय हट्टीकट्टी औरतें काम करने से घबरातीं, कहां ये बाई कह रही है कि सब धो लेगी. वह ठीक तो सुन रही है या....' उस ने फिर दोहराया. "छोटी है इस से भारी चादरें क्या धुलेंगी, मैं धो लूंगी."

"बाई, यह डबलबेड की चादरें एक दिन में चारपांच धो डालती है. आप की तो सब सिंगल बेड की होंगी."

अब रमा को विश्वास हो गया कि उस ने ग़लत नहीं सुना था. लेकिन उसे आशंका हुई कि जरूर यह काम वाली यहां नई आई है. चटाई बिछा कर सोने वाले प्रदेश में चादरों का झंझट रहता ही नहीं, जिस के कारण कोई जल्दी काम नहीं पकड़ता वही यह हंसीखुशी चादरें धोने को भी तैयार है.

अनपढ़ चित्रा को किताबों में माथापच्ची करते देख रमा गुस्से में बोली, "अच्छा, बाच इस कहानी को." और उस की कुशाग्र बुद्धि देख वह दंग रह गई.

50 रुपए देने की बात पर भी कुछ नहीं बोली, जबकि उस ने इन की आदत से परिचित होने के कारण 10 रुपए कम ही बोले थे.

उस ने समाधान कर ही डाला. सच में वह छः माह पूर्व ही तमिलनाडु से आई थी. 'तो क्या वहां की स्थिति यहां से भी बदतर.. खैर, जाने दो. उसे क्या लेनादेना. अपने काम से मतलब रखो.'

दया भाव से या नौकरानी के भाग जाने के भय से या स्वयं की दृष्टि में बौना न दिखने के डर से रमा आधे कपड़े धो लेती, किंतु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नित्य ऐसा कपड़े धोते देख कर मुझ से चित्रा एक दिन बोली, "मां."

"क्या?" रमा ने मुड़ कर देखा और एक अपराध बोध की लहर बिजली की भांति उस के शरीर में दौड़ गई. शायद 'मां' शब्द के उच्चारण के कारण. रमा ने प्रश्नसूचक दृष्टि डाली तो वह बोली.

"आप रोजरोज कपड़े क्यों धोती हो? मैं इस से भी ज्यादा कपड़े धोती थी उस बाई के घर, उस के बाद अपने घर के."

"तेरी मां क्या करती है?" रमा के शब्दों में क्रोध था.

"वह तो बिस्कुट फैक्टरी जाती है न. मैं ही अपने घर का काम करती हूं."

"ओह." झुंझलाहट व गुस्सा शांत पड़ गया. हृदय द्रवित हो उठा.

"नहींनहीं, तुम्हारी उम्र की बच्ची के लिए इतना ही काम बहुत है."

चित्रा रमा के चेहरे पर फैले निश्चय को देख कर कहीं खो गई. वह बाई तो खाने में चावल मात्र देती थी, उसी में नमक मिला देती. यह तो अपने जैसा खाना देती है. जो खाती है वह देती है. उस के मन में कहीं कुछ खटक रहा था. मातृस्नेह देख छल कैसा? चित्रा ने बालसुलभ निर्मल मन की सुंदरता उजागर कर दी.

"मां, मैं 12 की नहीं हूं, मैं 14 साल की हूं. मेरी मां सब से उम्र दो साल कम बताती है."

हाय, इस भोलेपन पर तो रमा मोहित हो कर उस का मुंह ही ताकती रह गई. 'क्या फर्क पड़ता है 12 और 14 में. मूर्ख बच्ची न होती तो... कहां उस की बेटी इस से एक बरस बड़ी है. वह बीमार हो या थकीमांदी पर कभी हाथ बंटाने नहीं आती. वही दिनचर्या खायापीया, कपड़े फेंके, स्कूल, फिर वही खायापीया, पढ़ा और सो गए.'

'टका जिस के हाथ उसी की बड़ी जात' कहावत यदि सच न होती तो भला रमा इतनी विचलित होती. पहाड़ जैसा दिन यों तो काटे न कटता. सड़क पर चल रही मोटर गाड़ी की आवाज तक कानों में पड़ती. दोपहर ऐसा सन्नाटा कटता मानो पृथ्वी जनविहीन हो गई हो. किंतु जब से थोड़े से काजू, अखरोट व किशमिश कुतर कर धूप में सूखने रखे थे अनायास ही कभी धमरधमर की आवाज तो कभी भड़भड़ कूदने जैसा शब्द कानों में पड़ने लगा.

आखिर कितनी बार दौड़दौड़ कर छत पर जाती रमा. तीनचार चक्कर इसी भ्रम में लगा चुकी थी, कहीं छत पर तो नहीं. परंतु वहां तो कोई भी न था. किंतु शब्दों का आना उस के कानों में फिर भी बंद न हुआ. थुलथुल शरीर चढ़तेउतरते थक चुका था. फिर भी जी मान न रहा था.

लिखनापढ़ना छोड़ बगल के कमरे में झांक आई. 'मयंक तो पढ़ रहा है फिर छत पर कौन हो सकता है. चित्रा तो पिछवाड़े है. बरतनों की खटरपटर से पता चल रहा है.' रमा ने मन को समझाया, 'बेकार चिंतित है, सूखे मेवों में जान धरी है. कोई खा न ले इस कारण ही आवाजें सुनाई दे रही हैं.'

किंतु ज्यों ही पिछवाड़े बिलकुल शांति हो गई तो उस का मन सनका, "चित्रा कहां गई? जरूर ऊपर चुरा कर खा रही होगी."

"मयंक, मयंक." जोर से रमा ने बेटे को पुकारा, "बेटा जल्दी छत पर जा. देख, लगता है चित्रा काजू, अखरोट सब खाए जा रही है."

भागाभागा मयंक ऊपर गया, भागाभागा लौट आया. हांफते हुए बोला, "तुम भी क्या मां. वहां तो कोई नहीं है. फिर जरा सा खा भी लेगी चित्रा तो क्या हुआ." फिर निर्णायक स्वर में बोला, "अब मैं नहीं जाऊंगा."

"खुद को नसीब नहीं होते, उस को भला सूखे मेवे खिलाऊं?" रमा ने कहा और इस के साथ उस का मन ग्लानि से भर उठा. 'जरा सा खा भी लेगी तो क्या. कौन वह खरीद कर लाई है. बच्चा है खा ले तो खाने. अब बारबार दौड़ कर ऊपर नहीं भागेगी. मयंक तो जाने से रहा.'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किंतु यह उदारता व सहृदयता जो बेटे के धिक्कारने से उपजी थी पांचसात मिनट ही टिकी. 'हाय, बरतनों के धोने की आवाज अभी तक नहीं लौटी. कहीं वह धीरेधीरे सब न खा जाए. बाद में कह दे कौआ गिलहरी खा गए.' उस का जी नहीं माना. फिर दौड़ीदौड़ी छत पर गई. थाली में सजे मेवे संपूर्ण दिख रहे थे. वैसे भी चारछः दाने हर एक के उठा भी ले कोई तो भला पता कैसे चलता?

ऊपर चित्रा नहीं थी. पीछे बरतनों की आवाज भी नहीं. फिर वह गई कहां? कहीं इतमीनान से चुरा कर खा तो नहीं रही. यह सोच जिस गति से रमा चढ़ी थी ऊपर उसी गति से उतर कर पीछे भागी. बरतनों के पास तो सचमुच चित्रा न थी. मन की शंका मजबूत हो गई.

रमा ने पुकारा. पहले तो कोई उत्तर नहीं मिला, दोबारा 'चित्रा' बुलाया कि शब्द कानों में पड़े. "श-श-श". रमा का ध्यान उधर गया. चित्रा होंठों पर उंगली रख कर चुप रहने का संकेत दे रही थी और खुद पेड़ों के झुरमुट के पास बड़े सधे पांव और हाथ से तितली पकड़ने का प्रयत्न कर रही थी. रमा सोच क्या रही थी, 'कहां यह बेवकूफ...' अच्छीखासी कसरत कर डाली रमा ने. सांस नीचे बैठा तो बनावटी रोष से बोली,

"जल्दी बरतन धो कर अंदर चलो. झाड़ूबहारू करो. जाना है मुझे."

झूठ. जाना कहां था. यों ही कह दिया ताकि बरतन धो कर अंदर आ जाए चित्रा तो धुकुरपुकुर न लगी रहे. इस के बाहर रहते तो उसे अंदर चैन ही न पड़ रहा था.

इतना सुनना था कि कहीं जाना है, उस नटखट अल्हड़ ने सारा काम मिनटों में निबटा दिया. उस के जाने के बाद ही राहत मिली. सोफे पर धंसी कुछ क्षण सोचती रही रमा, 'यदि आधा घंटा या घंटे भर बाद यह फिर टपक पड़े और पूछ बैठे तो? फिर क्या उत्तर देगी.' क्षण भर को ग्लानि हुई किंतु फिर, 'हुंह, काम वाली के सामने क्या झेंपना कुछ भी कह देगी. सिरदर्द होने लगा, मन

कड़वा घूंट

घूंट कड़वा है जिंदगी का
पियूं तो कैसे?
कम करने के लिए
पानी मिलाऊं या आंसू.
—सैयद आशिया खातून

नहीं हुआ, फोन आ गया, वगैरहवगैरह.'

चित्रा को काम करते दो महीने गुजर गए. उस के चेहरे पर दूरदूर तक कहीं असंतोष या अप्रसन्नता की छाया न थी. वह दुगने उत्साह से काम करती. रमा भी आश्वस्त होती चली गई. 'यह टिक गई.' कभीकभी उसे अलसाया या काम धीरे करते देख डपट भी देने लगी.

"ठीक से कर. नहीं तो अगले महीने तेरी छुट्टी."

बदले में चित्रा डर जाती और डरेसहमे शशक की तरह रमा का मुंह ताकती. धीरेधीरे रमा उसे चादरें भी धोने को देने लगी.

'अरे, जब वह दूसरी जगह धोती ही थी फिर क्या फर्क पड़ता था.' मतलब यह कि आत्मग्लानि से बचने के लिए तर्क भी उस के सामने मौजूद थे. दूसरी नौकरानियों की अपेक्षा इसे छुटपुट खाने को भी तो देती रहती है.

लेकिन चित्रा मालकिन का विशेष

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ध्यान रखती थी. मजाल थी कि उस की बेटी को रमा या तरकारी काट रही हो, वह दौड़ कर अपना काम छोड़ आ जाती.

"मां, हटो. तुम्हारे हाथ में दर्द होने लगेगा. मैं कर देती हूं."

पास खड़ी रमा की बेटी हंसती, उपहास से. कैसी मूर्ख है. क्या इस का हाथ दर्द नहीं करेगा. और रमा भी उस के भोलेपन और सरलता पर फीकी सी हंसी हंस कर टाल देती.

एक दिन चित्रा रमा के पति के सारे जूते ले कर लगी चमकाने. रमा की निगाह पड़ी तो वह झेंप कर मुड़ गई. 'हाय, यह तो जूते पालिश कर रही है. जबकि दूसरी

> **दुख निवारण**
>
> दुख दूर करने के लिए सर्वोत्तम दवा यही है कि उस का चिंतन छोड़ दिया जाए क्योंकि चिंतन से वह सामने आता है और अधिकाधिक बढ़ता है. —वेदव्यास

बाईयां तो जूते हाथ से उठा कर रखती तक नहीं, पैर से हटा देतीं, नहीं तो वैसे ही झाड़ू से एक तरफ सरका देती हैं.'

जब वह सुबह आती सड़क के किनारे लगे पेड़ों से फूल तोड़ लाती. पिछवाड़े के दरवाजे से चित्रा इतनी मंदगति और शांत पदचाप से रसोईघर तक कैसे आती थी, रमा को बड़ा आश्चर्य होता. फिर बड़े धीमे स्वर में जिस में समुद्र की तह तक हिला देने का नाद मिश्रित होता, बोलती,

"मां."

और रमा जब चौंक कर उस की ओर देखती वह नटखट हंस रही होती. फूल का गुच्छा आगे बढ़ा देती और रमा कुछ क्षण शब्द के उच्चारण पर सहज न हो पाती. उस का संपूर्ण अस्तित्व ही मानो कांप उठता. रमा कभीकभी सोचती, 'कह दूं मां क्यों कहती हैं, बीबीजी कहा कर, सभी तो यही कहती हैं?' परंतु चित्रा की सरलता, चंचलता, स्वाभाविकता उस का मुंह बंद कर देती.

शुरूशुरू में रमा ने ध्यान नहीं दिया या वह स्वयं सतर्क थी, ठीकठाक बताना मुशकिल है किंतु जब वह टिक गई, उस को अलसाया, सुस्त देख रमा ने पूछा, "क्या बात है चित्रा, तुम्हारी आंखें इतनी थकी सी..."

"कुछ नहीं मां, सारी रात सोई नहीं."

"क्यों?"

"पिक्चर देखी."

"ओह." रमा के मुख से निकला. फिर जब उसे अकसर थकी, आंखें चढ़ी सी देखने लगी तो फिर शंका होना स्वाभाविक था. कहीं इसे ज्यादा काम तो नहीं पड़ रहा. रमा ने पूछा,

"चित्रा, आज फिर तुम..."

"मां, आज तो बिलकुल नहीं सोई. सुबह पांच बजे तक पिक्चर देखती रही." रमा की पेशानी सिकुड़ गई. बकतेझकते काम निबटा उसे डपटा, "जा घर, सो जा."

"नहीं मां, मैं इतनी जल्दी घर वापस नहीं जाऊंगी."

"भला क्यों?"

"मेरी अज्जी मुझे सोने नहीं देती. कपड़े धोने भेज देगी, फिर और कोई काम."

"ओह." फटी आंखों से रमा उसे निहारती, पशोपेश में पड़ गई. 'यदि उसे अपने घर में सोने देती है तो उस की मां दोतीन घंटे बाद आ टपकेगी और इतनी देर का हिसाब मांगेगी. यदि कहती है सो रही थी चित्रा तो उस की धुनाई करेगी. यदि कहती है काम कर रही थी तो काम छोड़ने की धमकी देगी.' इस द्विविधा से निकलने का सीधा सरल उपाय ही रमा ने अपनाया.

किंतु ज्यों वह गई रमा को यकायक खयाल आया, 'भला सुबह पांच बजे तक कौन सा थियेटर चलता है. अंतिम शो भी साढ़े 12 बजे खत्म हो जाता है. झूठ बोलती है.'

दूसरे दिन चित्रा आई. नित्य की भांति हाथों में छुटपुट फूलों के साथ खिले होंठ ले जब उस ने रमा को चिरपरिचित शब्द से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुकारा तो वह गिला शिकवा भूल बरबस मुसकरा पड़ी. लेकिन क्षण भर के मोह पाश से छूटते ही उस ने अपनी शंका जाहिर की, "ऐ चित्रा, तू मुझे उल्लू बनाती है. भला सुबह तक कौन सा पिक्चर हाल खुला रहता है?"

"पिक्चर हाल नहीं, मां." रमा की नादानी और नासमझी पर तरस खा कर बोली, "वह वी.सी.आर. जानती हैं आप के यहां नहीं हैं." फिर खुश हो कर बात का रुख बदल दिया, "उस बाई के घर है; तुम भी ले लो न मां."

क्या रमा पूछ रही थी, पहुंच कहां गई और वह भी थोड़ी देर के लिए अपने प्रश्न को भूल कर उस की राय पर केंद्रित हो झुंझलाने लगी.

'टेलीविजन ही कौन कम दुख देता है जो वी.सी.आर. ला कर अपने पैर पर कुल्हाड़ी मार लूं. परीक्षा के समय क्रिकेट मैच का प्रसारण तो कहीं विश्व कप नाक में दम किए है. चिंतनमनन तो दूर स्वस्थ पुस्तकों को पढ़ने का मोह भी इसी के चलते बच्चों में नहीं पनप रहा.'

फिर दूसरे देशों के खेलों के प्रसारण के औचित्य पर खीझ निकाल कर चित्रा को डांटा, "जा काम कर. खड़ीखड़ी मेरा मुंह क्या देख रही है."

चित्रा अधिक से अधिक समय रमा के घर बिता देना चाहती थी, शायद घर पर काम के बोझ से या रमा कुछ न कुछ पीएगी खाएगी तो थोड़ा बहुत उस को भी मिल जाएगा, इस कारण. दोपहर कभी आइस-क्रीम, कभी लस्सी, कभी कुछ परंतु रोजरोज देना भी तो अखरता था. रमा तो चाहती थी जल्द से जल्द काम निबटा भागे. उस के रहते तो वे लुकाछिपा कर दूसरों की तरह हरगिज न खा सकती थी. स्वयं चित्रा ने ही एक बार अचरज से पूछा था,

"मां, दूसरी बाई लोग तो कुछ न कुछ इधरउधर आंखें चुराचुरा खाया ही करती थीं. मुझे बड़ी हंसी आती थी. भला मुझ से डरने से क्या फायदा?" रमा के चेहरे का रंग फीका पड़ गया. वह दूसरी बीबियों से अलग थी क्या?

फिर जैसे किसी अपने से छोटी उम्र के बच्चे को समझाते. कहती,

"मां, मैं जब सुबह आती हूं न, भूखी थोड़े ही आती हूं. रात का बचाखुचा खापी बरतन मांज धो कर आती हूं."

'क्या बताना चाह रही थी चित्रा? क्या वह रमा के मन को पढ़ सकती थी? कहीं यह तो नहीं कह रही थी... जाने दो.' उस के शब्दों के गहरे अर्थों को नकार झुंझलाहट व आक्रोश उस ने अंतिम वाक्यों की आड़ में निकाला.

"तेरी मां पड़ेपड़े सोया करती है?"

"नहींनहीं, वह तो अंधेरे में ही काम पर निकल जाती है. स्टेशन पर जाना पड़ता है न उस को. चार मील..."

"और अज्जी?"

चित्रा फिर से हंस दी.

"वह तो शराब के नशे में धुत सोया करती है."

"क्या? तेरी अज्जी औरत हो कर पीती है." फिर फिक से हंसी.

"किसी से कहना नहीं मां, वह कभीकभी तीन बोतल पी जाती है. जब पी लेती है तब मुझे बहुत प्यार करती है, 'आ मधु, बेटा, बच्चा' सब कह दुलराती है. नशे में कभीकभी बहुत गाली बकती है. मेरी मां से खूब लड़ती है. मुझे कहती है किसी लड़के के साथ भाग जा."

"हाय, तेरी अज्जी इनसान है कि राक्षस. तेरी मां कुछ बोलती नहीं?"

मुंडी न में हिला दी. रमा ने फिर पूछा, "तेरा बाप?"

"उस को नहीं देखा मां. वह दूसरी औरत के साथ रहता है."

रमा को कुछ याद आया.

"तू तो कहती है यह अज्जी तेरी मां की मां है. हमारे में नानी कहते हैं फिर वह क्यों जुल्म करती है?"

उस अल्हड़ ने दोनों हाथ चमका दिए.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"पता नहीं मां."

रमा कोसने लगी अपने को. 'कैसी मूर्खा हूं? अरे, ससुराल से दुत्कारी लड़की का भला सम्मान होता है मैके में. बेचारी विरोध करे तो सिर रखने की जगह कहां तलाशे.'

"चित्रा, तेरी आंख आज फिर अलसाई लग रही है."

"कल फिर चार पिक्चर देखी."

उस दिन का छूटा संशय रमा ने आज दूर किया, "चार पिक्चर कहां?"

"अपने घर में." चित्रा बोली.

"तेरे घर में बिजली नहीं फिर पिक्चर...?" बात पूरी भी न होने पाई कि उस ने रमा की एकएक शंका का विधिवत उत्तर दे डाला. 'कैसे वीडियो पारलर वाला आ कर मैदान में लगा जाता है. सारे झुग्गीझोंपड़ी वाले इकट्ठा हो कर देख लेते हैं. हर परिवार दोदो रुपए मिलाता है और सब एक दिन में चारपांच पिक्चर देखते हैं.

अब रमा की समझ में आया. जनरेटर या बैटरी वीडियो वाला ले आता होगा. रमा ने कहा, "इतनी पिक्चर क्यों देखती है? आंखें कमजोर हो जाएंगी."

"क्या करूं मां." चित्रा के शब्दों में विवशता थी, "नहीं देखती हूं तो अज्जी डांटती है. कभीकभी वहीं बैठे सो जाती हूं तो जगा देती है. अज्जी कहती है पैसा क्यों नष्ट करती है? आखिर पैसा किसलिए भरा है?"

"च-च-च" क्षण भर को रमा का चेहरा गंभीर हो गया. फिर मानो उस की बातों पर विश्वास ही न हो रहा हो, उस ने कुरेदा, "चित्रा, तू तो कह रही थी तेरे घर में एक चादर तक नहीं है. तेरा छोटा भाई तक रात में ठंड खाता रहता है फिर खुले मैदान में तेरी अज्जी क्या ओढ़ती है."

"कुछ नहीं मां. गुडगुड गुडगुड कांपा करती है, देखा करती है."

रमा की हंसी छूट गई. पल भर ही रुकी होंठों पर शायद बुढ़िया का चसका जान. किंतु वह बुढ़िया कहां थी. 40-42 साल की ही तो उम्र थी. चित्रा की विवशता पर तरस खा कर रमा ने पूछा, "तेरी मां कुछ नहीं कहती?"

"उसे भी पिक्चर देखना अच्छा लगता है मां."

कितनी बेबस थी चित्रा. काम पर भी जाना जरूरी, रात पिक्चर देखना भी जरूरी. कैसी विचित्र शर्त जीने, खाने रहने की थी. कभीकभी भोली चित्रा की बातों की गंभीरता से डर भी लगता, कहीं यह लड़की सचमुच न घर से भाग जाए या कहीं आत्महत्या न कर ले.

कभी सीढ़ियों पर कूदा करती, कभी रेलिंग पर सरकती. भरी दोपहर में ऐसा करते देख रमा की बेटी हंस देती.

"मां, कितनी पागल है चित्रा, इतनी धूप में कूद रही है."

किंतु रमा न हंस सकी. उस का बचपना तो काम के मध्य खो जाता था, मगर थोड़े ही था. भला बेचारी की उम्र ही क्या थी. दो चोटी नहीं गूंथती थी. रमा के बच्चे कहने पर हंसती थी. कई महीनों बाद उस ने ही खोला था रहस्य अपने हंसने का.

"मैं बच्चा कहां हूं. बच्चा तो मेरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छोटा भाई है." जमीन से डेढ़ फुट ऊंचा हाथ कर बताते बोली, "मेरी मां तो मुझे बालों की दो चोटी नहीं बनाने देती. कहती है मैं बड़ी हो गई हूं. सच, मेरी झोंपड़ियों में मेरी आयु की कोई भी लड़की दो चोटी नहीं संवारती." सब हंसने लगे, "मां." अंतिम वाक्य ठोढ़ी पर हाथ रखते बोली.

रमा को दुख भी होता, सुन कर दया भी आती, पर कर क्या सकती थी? सिर्फ महसूस करना मात्र ही तो कर्तव्यबोध नहीं हो सकता. क.ख.ग. का अक्षर भी जिस लड़की को नहीं मालूम वह उन के घर समय निकाल कर या घर बुहारने के मध्य में किताबों को उलटपुलट कर देखा करती. फोटो देख कर पूरी कहानी बांच देती. बच्चों की मनुहार कर कहानी की किताबें मांग लेती और वे उसे पागल अनपढ़ समझ उस की ओर पढ़ी कहानियां कमोबेश फेंक सा देते. यह सिलसिला देख रमा भी एक दिन हंसे बिना न सह सकी थी.

"तुझे क ख ग आता नहीं, क्यों माथापच्ची करती है?"

किताब की ही ओर देखते चित्रा बोली, "आता है मां."

"खाक आता है." उस के मूर्खतापूर्ण उत्तर पर क्रोध आते ही आज्ञात्मक स्वर में बोली, "ला किताब. अच्छा बांच इस कहानी को,"

दंग रह गई रमा. थोड़ी देर को तो विश्वास ही न हो रहा था. ये कुशाग्रबुद्धि बच्चे यों ही फुटपाथों पर, सड़कों पर प्राइवेट फैक्टरियों व बिल्डिंगों में कार्यरत घरघर की चाकरी करते उद्देश्य-हीन जीवन काटने को बाध्य...

हर बाल दिवस पर दोहराया जाता है चौराहों पर, मैदानों में, स्कूलों में, यही देश के भविष्य हैं, ये बच्चे. बहुत कुछ निर्भर करता है कैसे ये बच्चे बढ़ कर जिम्मेदारी संभालते हैं एक मजबूत और स्थिर भारत की, जो हमारा स्वप्न है. इन से एक बड़ा भाग बनता है आबादी का, जिन्हें पूरा अधिकार है शिक्षा प्राप्त करने का. 1959 का घोषणापत्र जिन्हें देता है एक विशेष सुरक्षा कि वे लाभ उठाएं अपने अधिकारों का, बिना किसी भेदभाव, रंग भेद, भाषा, जाति व लिंग के. वह या उस का परिवार रोक नहीं सकता जिन्हें इन अधिकारों का लाभ उठने से. फिर क्या यह एक चित्रा की कहानी है? ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बच्चोंके मुखसे

मैं अपने छोटे भाई के साथ सिनेमाघर में फिल्म देख रहा था. मध्यांतर के बाद परदे पर सिनेमाघर की सुरक्षा के संबंध में कुछ विज्ञापन दिखाए जा रहे थे. उन में एक विज्ञापन था कि सिनेमाहाल में बीड़ीसिगरेट पीना मना है.

फिल्म शुरू होने पर इस के हीरो को सिगरेट पीता हुआ देख कर मेरा छः वर्षीय भाई बोला, "भैया, यहां तो सिगरेट पीना मना है, फिर यह सिगरेट कैसे पी रहा है?"

—आर.डी. चौधरी

*

मेरी मां ने आंगन में एक नया पौधा लगाया और मेरी तीन वर्षीया भतीजी को समझाते हुए कहा, "बेटी, इस पौधे को उखाड़ना नहीं." यह कह वह मिट्टी से सने हाथ धोने अंदर चली गईं. उन के पीछेपीछे भतीजी भी अंदर आई और वह पौधा जिसे उस ने उखाड़ कर हाथ में ले रखा था दिखाते हुए बोली, "यह पौधा, दादी?"

अपेक्षा के विरुद्ध मां भी उस के इस भोलेपन पर हंस पड़ीं.

—ज्योति अवस्थी 'तामोट'

*

एक दिन मैं ने अपनी पड़ोसिन के पांच वर्षीय पुत्र से पूछा, "बेटे, बहुत दिनों से तुम्हारी माताजी नहीं दिखीं."

वह बोला, "चाचीजी, आजकल मेरी मदर इन ला आई हुई हैं, इसलिए मां उन के साथ रहती हैं."

उस की बात सुन कर हम सब चौंके, लेकिन असलियत पता चलने पर हंस पड़े. दरअसल उस की दादीजी आई हुई थीं, जिन के लिए उस ने अपनी मां को यही बात कहते सुना था.

—अरुणा रस्तोगी

मैं ने अपने चार वर्षीय पुत्र का कोट एक बक्से में सहेज कर रख दिया था. एक दिन मैं ने सारे कपड़े बाहर निकाले तो वह कोट की तरफ इशारा करते हुए बोला, "मां, इसे कौन पहनेगा."

मैं ने कहा, "तुम्हारा आने वाला छोटा भैया."

वह बोला, "उसे जल्दी ले आइए, वे में आया तो उसे भी यह छोटा पड़ जाएगा."

—मंजू सिंह चौहान

*

मेरी सहेली की कुंआरी लड़की की आदत थी कि वह किसी को भी 'बेटा' कह कर बुलाने लगती. एक दिन उस ने मेरे पांच वर्षीय भाई को 'बेटा' कह कर पुकारा.

यह सुनते ही वह झट से बोला, "अम्मांजी, मेरे पिताजी कहां हैं?"

यह सुनते ही वह बुरी तरह झेंप गई.

—शिखा

*

हम लोग अपने चाचा के नवजात शिशु को देखने हस्पताल गए. उसे देख कर हम लोग आपस में बातें करने लगे कि इस की शक्ल तो मां पर गई है, कोई कहता पिताजी पर गई है.

तभी मेरी छः वर्षीया भानजी बोली, "नहीं, तुम ठीक से नहीं पहचान रहे हो. इस की शक्ल तो दादी से मिलती है क्योंकि उन के भी दांत नहीं हैं और इस के भी नहीं हैं."

—रमेशचंद राखेचा

इस स्तंभ के लिए आप अपने बच्चों, मित्रों व संबंधियों के बच्चों के मुख से कही गई बात भेज सकते हैं. प्रत्येक प्रकाशित संस्मरण पर 50 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. अपने संस्मरण इस पते पर भेजें. संपादकीय विभाग, सरिता, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ताजमहल

कहानी ● पूर्णिमा गुप्ता

कितने ही लोग पिछले दो दशकों में भारत से अमरीका आए मगर इन लोगों से आप एकएक कर के पूछें कि अमरीका कैसा देश है तो आप को अमरीका एक रंग बदलता घोड़ा नजर आएगा.

एक पार्टी में गपशप हो रही थी. एक युवती जो नईनई शादी कर के अमरीका पहुंची थी, न जाने किस बात पर चहक उठी, "आप लोग यहां आ कर बस गए मगर हम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अमरीका में रह रहे भारतीय नागरिकों का करुण दास्तान सुन मुझे अपना 'भारतीय' होना गाली सा लगने लगा था. इसी वजह से मैं अमरीकी सज्जन से लड़ने को आतुर भी हो गया पर उस की बात सुन कर मैं शर्म से जमीन में धंस गया.

कभी नहीं बसने वाले. अपना देश अपना ही होता है. दूसरे की चुपड़ी रोटी से तो अपनी रूखीसूखी ही अच्छी."

कोई उस से पूछे कि दूसरे की चुपड़ी कुछ साल खाना क्यों ठीक है? खैर, किसी ने कहा, "जब हम आए थे, तब हम भी बरसों तक यही सोचते थे. सच पूछो तो अब भी यही सोचते हैं, चाहे 20 साल हो गए यहां रहते हुए. इसी चक्कर में हम अभी तक यहां के नागरिक भी नहीं बने."

अब एक अमरीकी नागरिक बने भारतीय की बारी थी, "नागरिक बनो या न बनो. कभी हमारे जीते जी अमरीका का पतन होने लगा तो हमारा तंबू तुम से पहले ही उखड़ेगा. एक पैर यहां और एक पैर वहां रखा तो कभी बिना पतन के ही तुम्हारा पतन न हो जाए. धोबी का कुत्ता न घर का रहता है न घाट का."

हम लोग तो बात ही कर रहे थे कि नईनवेली महिला ने सिसकियां लेले कर जोर से रोना शुरु कर दिया. महफिल वहीं उखड़ गई. हम ने बीचबचाव करते हुए कहा, "सुषमाजी, मैं देखता हूं, आप को भारत जाने से कौन रोकता है? जिस दिन चाहें हमें बता दीजिएगा, हाथ की हाथ टिकट न कटाया तो हमें कह देना. आज तो देर हो चुकी है. कहिए तो पता करूं कल के जहाज में सीट बाकी है क्या?"

सब हंस पड़े. मुसकराहट को वह भी न रोक सकी. महफिल से रुखसत होने से पहले चलो कुछ तो जान आई, नहीं तो मेजबान साहिबा सोचतीं कि आज किन घनचक्करों को घर बुला लिया था.

हमारे एक सहकर्मी एक दिन हमारे पास आए और बोले, "दामोदरजी, क्या बताएं, हम ने जल्दी से यहां बस जाने के चक्कर में आते ही सीख लिया कि प्लास्टिक की पतरी देदे कर कल मिलने वाला पैसा आज ही खर्च कर लो. अब तो यह हालत हो गई है कि तनख्वाह से ब्याज की रकम भी कभी पूरी दे पाते हैं, कभी नहीं."

हम ने उन को सुझाव दिया कि 'फेडरल क्रेडिट काउंसलिंग सेंटर' चले जाओ. वे लोग आप की औकात के अनुसार आप से किस्तें ले कर आप के लेनदारों को देने लगेंगे. अकसर भविष्य का ब्याज भी वे सही समझते हैं तो माफ करा देते हैं. जब तक आप के लेनदारों को आप से मूल रकम भी मिलने की उम्मीद है, तब तक आप की कुर्की कोई नहीं कराने वाला."

हमें क्या मालूम था कि कर्ज लेना भी कोई मर्ज होता है. उन्होंने हमारी राय मान ली और उन के सारे क्रेडिट कार्ड फिर से कर्ज रहित हो गए. दो हफ्ते बाद वह आ कर उन्होंने हमें अपनी 20,000 डालर की कार दिखाई जो उन्होंने उन क्रेडिट कार्डों पर उधार ले कर ली थी. हमें पानी सिर से ऊपर चढ़ता नजर आया तो हम ने उन की कार की तारीफ में दो शब्द कहे और चले आए.

महीने भर बाद वह हम से फिर टकराए. फरमाने लगे, "दिवालिया मामलों के वकील ने सुझाव दिया है कि कुर्क हो जाओ. हमारा घर तो सुरक्षित है क्योंकि उस में हमारी लगी पूंजी 30,000 डालर से कम है. मगर नई कार, जेवर और घर की सजावट का कुछ कीमती सामान जब्त हो जाने का डर है. मै ने तय किया है कि बीवी को तलाक दे देता हूं. उस के पास यह सामान सुरक्षित रहेगा. दिवालिया होने के साल भर बाद हम पतिपत्नी फिर से शादी कर लेंगे."

"और तुम्हारी इज्जत का क्या होगा?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

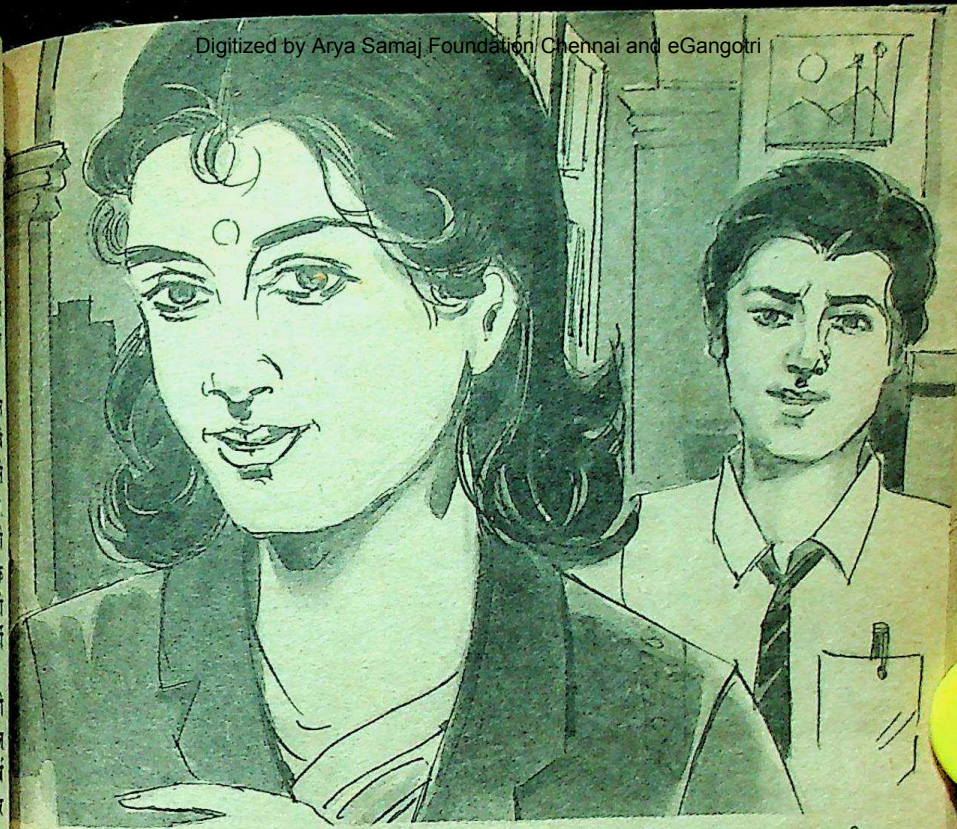

एक युवती न जाने किस बात पर चहक उठी, "अपना देश अपना ही होता है. दूसरे की चुपड़ी रोटी से अपनी रूखीसूखी ही अच्छी."

"अरे, तुम जानते नहीं? यहां की दुनिया में पैसा ही इज्जत है. जैसे भी हो,दोनों हाथों से बटोर लो. मेरी 50,000 की नौकरी तो पक्की है न. इज्जत फिर बन जाएगी. यहां कौन किस को जानता है? भारत जैसा थोड़े ही है कि एक बार सिर झुक गया तो उठना मुशकिल हो जाए."

हमारे पड़ोसी थे, उन को भी अमरीका की हवा लगी. उन को दोचार पदोन्नतियां जल्दीजल्दी क्या मिल गईं, वह तो बस लाट साहब बन गए. सर्वोच्च प्रबंधकों में पहुंचने के सपने देखने लगे.

एक दिन हम ने पूछा, "यह तुम दफ्तर से अकसर कहां जाते हो, जो सीधे घर नहीं आते?"

"अरे यार, क्या बताऊं, बड़े लोगों की बातें हैं. यहां प्रबंधक स्तर पर काम का इतना बोझ व तनाव होता है कि सब कंपनियों के अध्यक्ष, उपाध्यक्ष भी यही करते हैं."

"क्या करते हैं? कोई लड़कीवड़की के चक्कर में फंस गए क्या?"

"नहीं यार, वह मनश्चिकित्सक है न, बस उसी से मिलने जाता हूं. और बताऊं, यहां पागल लोग ही नहीं जाते ऐसे डाक्टरों के पास. बस समझ लो, सफल लोगों के चोंचले हैं."

अलगअलग समय पर हम ने इन से मनश्चिकित्सक के पास जाने के औचित्य को सिद्ध करने के लिए तरहतरह की दलीलें सुनीं.

"जो लोग मनश्चिकित्सक के पास जाते हैं, उन का दिमाग खराब होता है यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

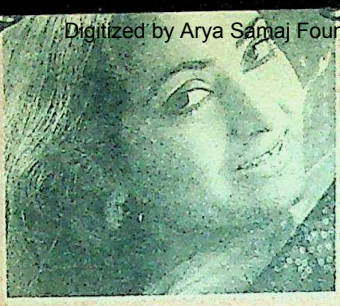

जुल्फ

खिड़कियों के गिरा परदे
तू अपनी जुल्फ तो मत खोल,
इस से दिन में रात होने का
हम को अंदेशा दीखे.

—श्रीराम मीना

जरूरी नहीं. दरअसल जिन लोगों को मनश्चिकित्सक की जरूरत सब से ज्यादा होती है वे तो उस के पास जाते ही नहीं. जाते वे लोग हैं जो अपने को सुधारना या अधिक सक्षम बनाना चाहते हैं, यानी अपने प्रति जागरूक लोग."

हमें लगा कि इन दोस्त के पास ज्यादा देर टिके तो हम भी कहीं अपने प्रति जागरूक न बन जाएं. हमारे पास इतने पैसे भी नहीं है, बेमौत मारे जाएंगे. हम ने उन से बहाना बना कर विदा ली.

लौट कर घर आए तो देखा कि श्रीमतीजी मिंक का बढ़िया कोट पहने खड़ी हैं. हम ने पूछा, "आप की लाटरी खुल गई क्या या यह कोट किसी टीवी के जुए में मिल गया? खैर, कहां की तैयारी है?"

वह बोलीं, "आज अमुक सज्जन के यहां रात्रिभोज पर जो जाना है. आप तो कभी कुछ ढंग की चीज खरीदवाने की हालत में होंगे नहीं. शीला ने सुझाव दिया कि पार्टी है तो एक अच्छा सा कोट खरीद लाओ. शाम को कुछ ही देर तो पहनना है फिर कल कोई नुक्स बता कर वापस कर देना."

हम अपनी बीवी और उन के नए कोट को संभालते, बचाते पार्टी के लिए चले. सारे रास्ते हमें यही डर बना रहा कि कहीं कोट का कुछ हो गया तो लेने के देने पड़ जाएंगे. दोस्त के घर हम पहुंचे ही थे कि एक आवाज कानों में आई, जो शायद एक देशी बीमा एजेंट से कही जा रही थीं, "डाक्टर ने न जाने क्याक्या जांच करने को कहा है. हजारों डालर लगेंगे, तुम मुझे अच्छी सी दांत की बीमा पालिसी दिलवा दो न, किसी पीछे की तारीख में."

हम को तो यही मालूम था कि बीमा किसी अनहोनी दुर्घटना के मुआवजे के लिए होता है, न कि पहले से किए गए खर्चे के पैसे दिलवाने के लिए. एजेंट साहब की आवाज फुसफुसाहट में बदल गई और दोनों ने तय किया कि फायदे में से एकतिहाई हिस्सा एजेंट का होगा.

हम पतिपत्नी लिफ्ट में वापस आ रहे थे तो किन्हीं अमरीकी सज्जन ने मेरी बीवी से पूछा, "आप लोग इंडिया से आए हैं?" मेरे मुंह में पहले से ही भारतीय नाम का दुरा जायका था. मुझे ऐसा लगा कि उन्होंने हमें भद्दी सी गाली दी हो.

मैं उन पर उबल पड़ा, "हम क्यों इंडिया से आए हैं? तुम आए होंगे इंडिया से या तुम्हारे बापदादा आए होंगे. हम तो यहीं पैदा हुए थे."

"तब भी आप साड़ी पहनना पसंद करती हैं?" उन्होंने शांत भाव से कहा.

लेकिन मैं ने झगड़े की बागडोर छोड़ी नहीं, "तो क्या आप से पूछ कर कपड़े पहना करें? जो जी चाहेगा, पहनेंगे."

वह लिफ्ट का दरवाजा खुलते ही तेजी से बाहर निकले. जातेजाते मुड़ कर हमारी तरफ देखते रहे. ओझल होने से पहले कह गए, "मैं तो बस यह कह रहा था कि मैं इंडिया गया था, वहां सब लोग बहुत मेहमाननवाज थे. ताजमहल सचमुच बहुत खूबसूरत है. मैं आप की संस्कृति की इज्जत करता हूं. आप की बीवी की साड़ी भी आकर्षक है और वह स्वयं भी."

और मुझे लगा कि मैं अपने सब साथियों की करनी का दोष अपने सिर से बांधे जमीन में धंसता जा रहा हूं. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

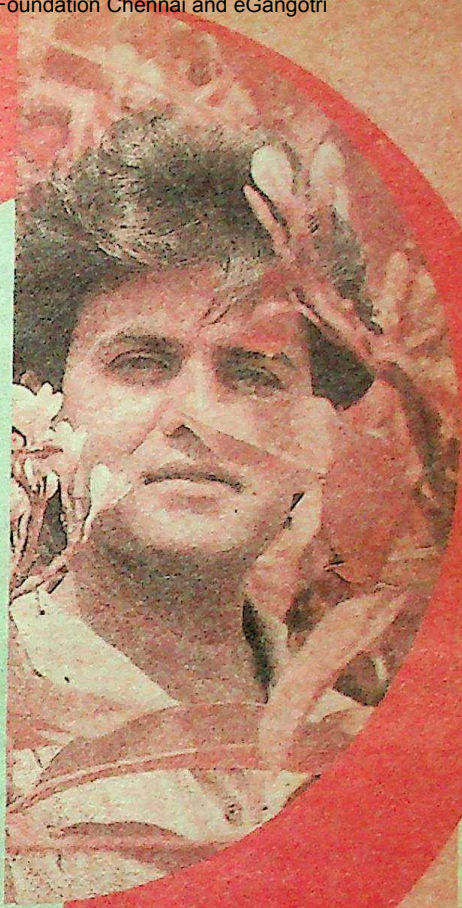

सजे हैं होंठ छलों से

सजे हैं होंठ छलों से
कैसे बयां करें...
अवरोध के दीवार हैं
विरोध के स्वर हैं
बढ़े जीवन कैसे आगे
कांटे हैं राह में...
सजे हैं होंठ छलों से...
जीवन के रंग खो गए
जीना है क्या करें
बावरे हैं मेरे नैन
तेरी चाह में...
सजे हैं होंठ छलों से...
कोई आगे है न कोई पीछे
जीवन रेगिस्तान है
हाथ खाली हैं मगर
गीत है बांह में...
सजे हैं होंठ छलों से...
सोचता हूं आखिरी गीत
आज लिखूं मैं
फिर मुझे क्या मिलेगा वो
जो चाहता हूं मैं
सजे हैं होंठ छलों से...

कोई छलता है मुझे
दिन के उजाले में
जल रहा है दीप आज
गम के प्याले में...
सजे हैं होंठ छलों से...

—दीपक 'हिंदुस्तानी'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्योतिपुंज

कहानी ● साधना राकेश

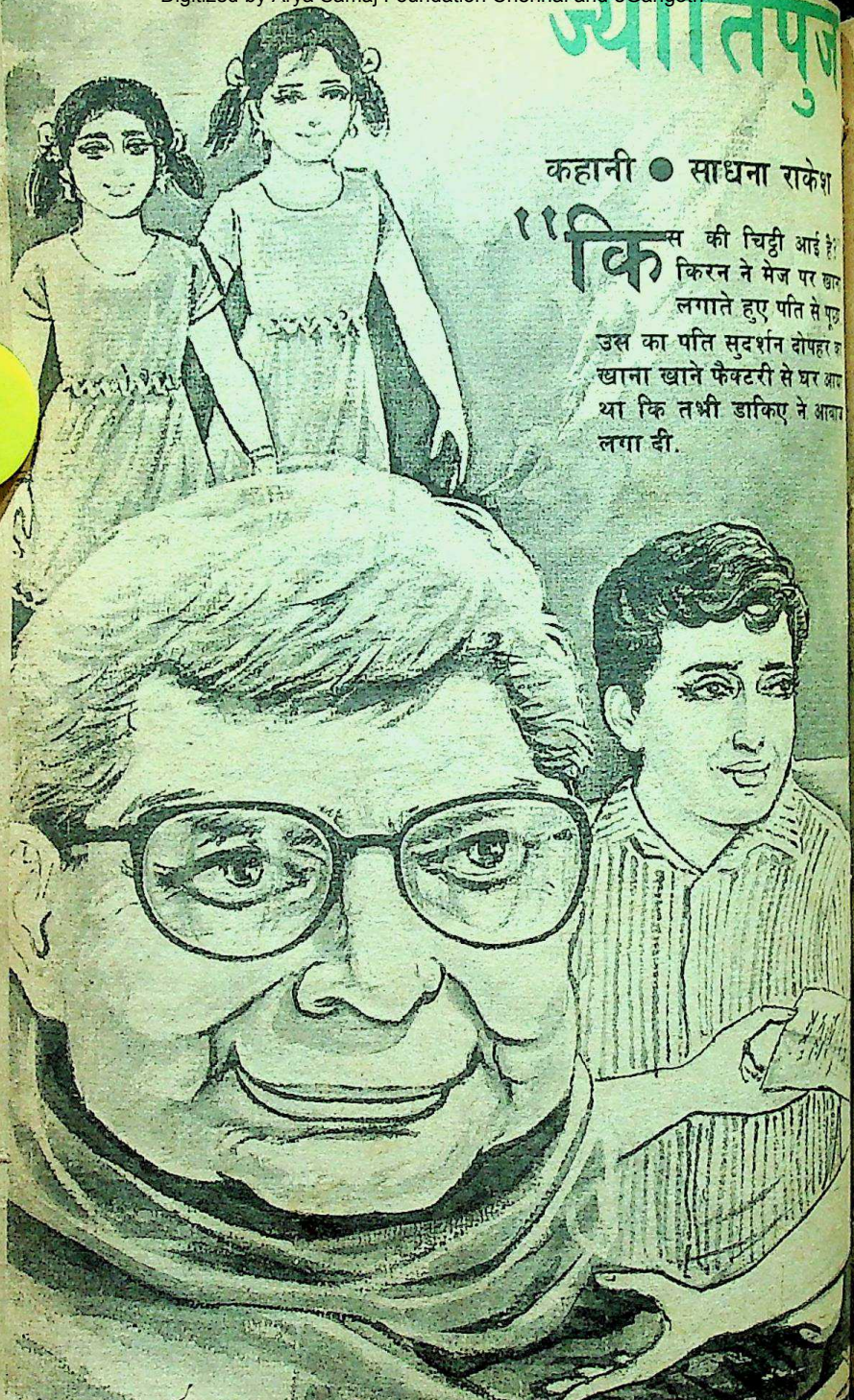

"किस की चिट्ठी आई है?" किरन ने मेज पर खाना लगाते हुए पति से पूछा. उस का पति सुदर्शन दोपहर का खाना खाने फैक्टरी से घर आया था कि तभी डाकिए ने आवाज लगा दी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तक बढ़े हाथ

"पिताजी का ही पत्र लगता है." पत्र खोलने का उपक्रम करते हुए सुदर्शन खाने की मेज पर बैठ गया. नाक में खाने की खुशबू भर रही थी. बड़े मन से आज किरन ने खाना बनाया था. पहले उस ने सोचा कि पत्र रख दे बाद में पढ़ेगा. कहीं हमेशा की तरह पत्र रुपयों से ही संबंधित हुआ तो खाना भी ठीक से खाया नहीं जा सकेगा. पर वह रह न सका और पत्र पढ़ने लगा. पढ़तेपढ़ते उस के चेहरे पर तनाव आ गया.

उच्च पद पर कार्यरत बाबूजी द्वारा हर माह रुपए भेजने की मांग से सुदर्शन और किरन परेशान थे. कई बार वे दोनों बाबूजी के बारे में ऊलजलूल भी सोचने लगते थे. लेकिन जब रुपए भेजने की मांग का राज खुला तो दोनों की आंखें शर्म से झुक गईं.

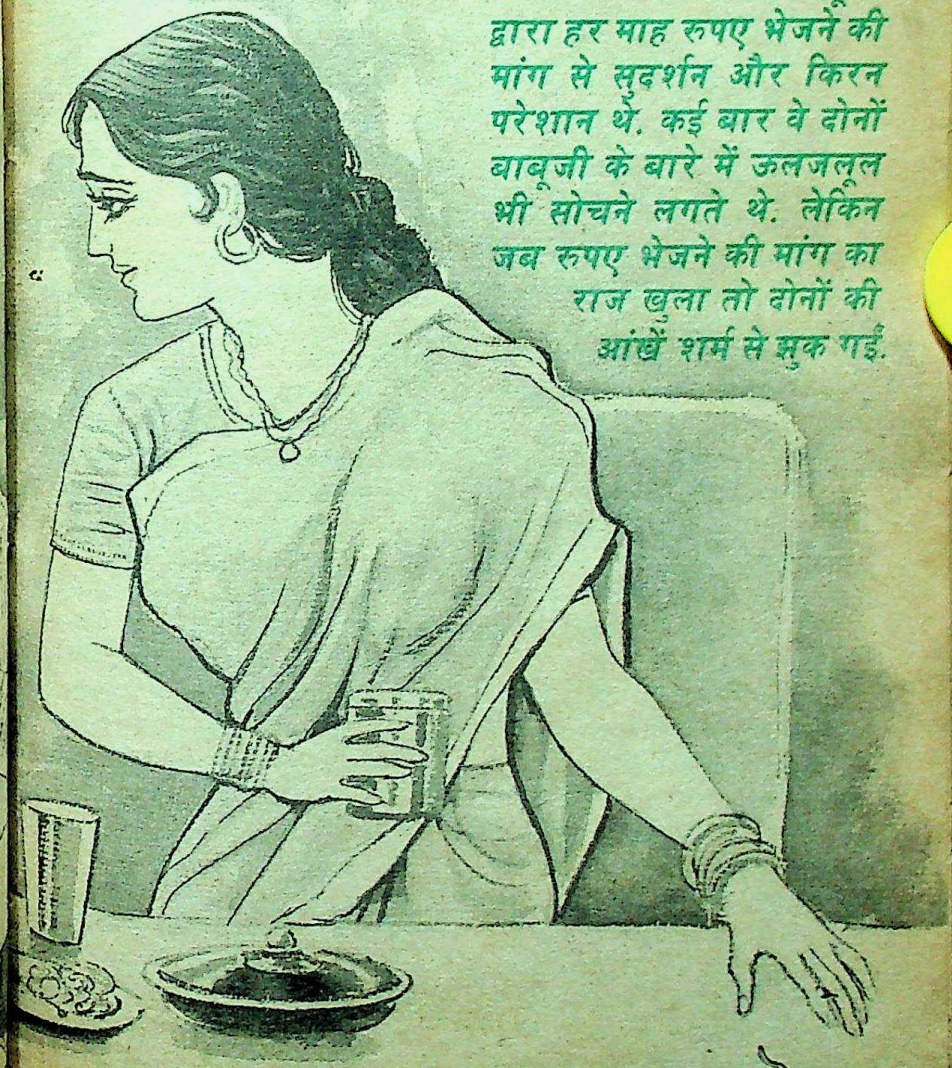

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"क्या लिखा है बाबूजी ने?" गरम रोटियों की डलिया मेज पर रखते हुए किरन ने पूछा.

"लिखा है, इस बार रुपए क्यों नहीं भेजे?"

"मैं ने तुम से पहले ही कहा था कि लिख दो कि हम ने रंगीन टीवी किस्तों पर लिया है, पर तुम को तो चार लाइनें लिखने में भी... खैर, छोड़ो... पहले खाना खाओ. कल रात भी तुम ने खाना ढंग से नहीं खाया था, इस कारण आज तुम्हारी पसंद की आलू की सब्जी बनाई है."

सुदर्शन ने पत्र मोड़े बिना पत्नी की तरफ बढ़ा दिया. किरन ने उस पर सरसरी नजर डाली और 'हुंअ' कह कर मेज पर अचार की शीशी के नीचे दबा दिया.

सुदर्शन के लिए खाना खाना मुशकिल हो गया. कितने चाव से पत्नी एवं बच्चों के कहने पर वह रंगीन टीवी लाया था. बड़ी लड़की मोना ने कहा था, "पिताजी, विज्ञान के कई कार्यक्रम जो विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा दिखाए जाते हैं, उन में प्रयोग आदि के रंग श्वेतश्याम टीवी के कारण समझ में नहीं आते."

"और महाभारत भी बाबूजी," छोटी लड़की टीना ने गले में बांहें डाल कर कहा तो सुदर्शन निहाल हो गया. पत्नी की अलग फरमाइश थी कि रविवार की फिल्म रंगीन टीवी पर देखने का अलग ही आनंद है. अभी वह फ्रिज की किश्तों से ही मुक्त हुआ था कि यह पत्र आ गया.

"क्या लिखेंगे बाबूजी को?" किरन ने बरतन समेटते हुए कहा. बेटियों का खाना उस ने मेज पर अलग रख दिया कि जब वे आएंगी, उसी समय गरम रोटियां सेंक देगी.

"देखता हूं..." तौलिए से हाथ पोंछते हुए सुदर्शन ने घड़ी देखी. अभी 15 मिनट का समय उस के पास था. वह आराम करने के लिए कमरे में चला गया.

सुदर्शन के विवाह को 12 वर्ष हो गए थे. 22 वर्ष की उम्र में ही उस का ब्याह हो गया था. उस के पास दो बेटियां थीं, 10 वर्ष की मोना एवं आठ वर्ष की टीना. सुदर्शन व किरन को इन बच्चियों के बाद किसी पुत्र की चाह न थी. सुदर्शन का ब्याह बाबूजी ने अपनी पसंद की लड़की से किया था और दहेज भी कुछ नहीं लिया था.

किरन स्वयं भी मध्यम घराने की थी. इस कारण उस के पिता ने जब देखा कि लड़के वालों की कोई मांग नहीं है तो दो छोटी लड़कियों की बात सोच कर जो किरन को शादी में देना था उस में भी कंजूसी कर गए. सिर्फ थोड़े से वस्त्र एवं जेवर के साथ किरन को विदा कर दिया.

किरन सुंदर एवं सुघड़ थी. सुदर्शन को उस से कोई शिकायत भी न थी. बी.ए. के बाद ही सुदर्शन को एक फैक्टरी में स्टोरकीपर की नौकरी मिल गई थी. अब वह पदोन्नति कर के स्टोर इंचार्ज हो गया था. सुदर्शन मितव्ययी न था तो कंजूस भी न था. हां, पैसे का वह ज्यादा हिसाब न रख पाता. एक तो गृहस्थी में कुछ था ही नहीं, एकएक चीज जोड़ने में ही सारा खर्च निकलने लगा.

नौकरी लगते ही पिता की तरफ से निर्देश आ गया कि वह प्रतिमाह 100 रुपए भेजे. शादी के पूर्व तक तो वह भेजता रहा. फिर ज्योंज्यों उस का वेतन बढ़ता गया, पिता के पत्र का निर्देश भी उसी हिसाब से बढ़ता गया. सुदर्शन जिस परिवार से संबंधित था वहां 'क्यों और किसलिए' आदि प्रश्न पिता से करने का साहस किसी में नहीं था. कभीकभी वह यह जरूर सोचता कि नौकरी कर रहे उस के पिता को ऐसी क्या आवश्यकता आ पड़ती है, जो वह बिना कारण बताए प्रतिमाह उस से रुपए मंगवाते ही रहते हैं.

वह जब भी किसी त्योहार पर घर जाता सभी के लिए कुछ न कुछ जरूर ले जाता. पिता उस की प्रशंसा करते न थकते. एक छोटी बहन थी. वह तो अपना सूट देख कर नाचने लगती, "देखोदेखो, भैया कितना प्यारा सूट लाए हैं मेरे लिए. कहते हैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लखनऊ का नए फैशन का सूट है."

मां बहू की तरफ प्यार भरी नजर डाल कर कहतीं, "तुम्हारी भाभी लाई होंगी खरीद कर... बस, कैसा बता रही हैं."

किरन निहाल हो जाती कि उस के सासससुर कितने अच्छे हैं. छोटा सा परिवार है जो खुशियों के बीच सांस लेता है. दोनों बार प्रसव के समय लड़कियां होने पर भी मां और बाबूजी की कोई विपरीत प्रतिक्रिया नहीं हुई थी. मां ने पहले प्रसव के समय उसे बुला लिया था, दूसरे में वह स्वयं आई थीं.

बाबूजी ने तब मां के हाथ पत्र भेजा था. 'बहू बच्ची के साथ स्वस्थ रहे. पढ़लिख कर बच्चे अच्छे संस्कारशील बनें, यही प्रयत्न करना. मातापिता के जीवन का सार बच्चों का उज्ज्वल भविष्य बनाने में ही है.

बाबूजी ने एक बंडल सुदर्शन को पकड़ाते हुए कहा, "ये तीस हजार से कुछ ऊपर हैं... चौंको नहीं. ये रुपए मेरे बेटे के हैं यानी तुम्हारे ही..."

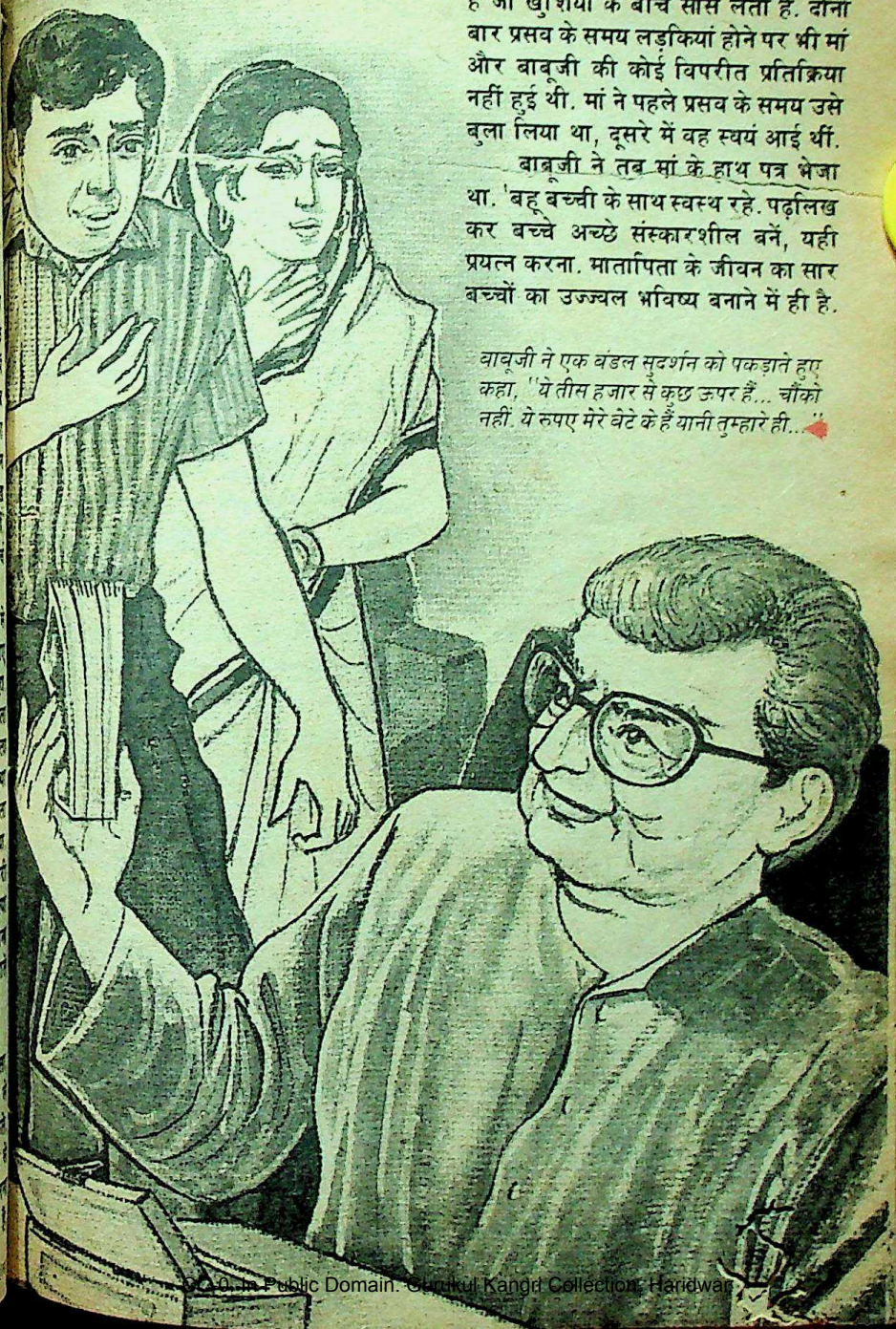

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बेटा न होने का मलाल कभी मन में न लाना. अपने मन को पहचानो, वही भेदभाव उत्पन्न करता है.'

सुदर्शन ने दोनों बच्चियों का दाखिला शहर के बड़े अंगरेजी स्कूल में करवा दिया था. दोनों कटे बालों एवं नीले सफेद बुर्राक वस्त्रों में स्कूल जातीं तो किरन एवं सुदर्शन की गरदन गर्व से तन जाती.

सुदर्शन ने किसी तरह प्रबंध कर के रुपए भेज दिए. उस ने सोचा, इस बार वह घर जाएगा तो मां से पूछेगा कि बाबूजी उस से अब भी जबकि वह स्वयं दो बच्चों का बाप बन चुका है, खर्चे बढ़ गए हैं, रुपए क्यों मंगवाते हैं?

एक दिन तो किरन ने कुढ़ कर कह भी दिया था, "ननद रानी का ब्याह किसी बड़े अफसर से करने की सोच रहे होंगे, तभी तो पैसा जोड़ रहे हैं. हम तो कुछ भी नहीं बचा पाते."

तब सुदर्शन उसे समझाता, "हम अपनी बेटियों को इतनी ऊंची शिक्षा दहेज के बाजार में बैठाने के लिए नहीं दे रहे हैं. पढ़ने के बाद उन में जागरूकता आएगी. मोना डाक्टर बनेगी. उस का रुझान विज्ञान में है. बीना तो लगता है, शोध वगैरह कर के कहीं प्राध्यापिका हो जाएगी. फिर इन्हें अच्छा घर और वर अपने आप मिल जाएगा. इतनी योग्य लड़कियों से ब्याह करने स्वयं लड़के प्रस्ताव ले कर आएंगे हमारे पास."

लेकिन व्यक्ति जो सोचता है, वह हो नहीं पाता. दो बार प्रयत्न करने पर भी मोना मेडिकल में नहीं आ सकी. हां, टीना ने प्रथम श्रेणी में इंटर पास कर के बी. ए. में दाखिला ले लिया था. संस्कृत उस का प्रिय विषय था और वह इसी में शोध करना चाहती थी.

पिछली बार सुदर्शन गांव गया तो उस ने चाहा कि वह पिता से पूछे, पर साहस न हुआ. रात्रि भोजन के समय उस ने मां से पूछा था, "मां, बाबूजी हर माह जो रुपए मंगाते हैं..."

"...ती और दूं... और हां, खाना खा कर उदय फफाजी के यहां बहू को ... चली जा... बहुत पूछ रहे थे."

सुदर्शन समझ गया कि मां भी बात को टालना चाहती हैं, लेकिन एक बात उस की समझ में यह नहीं आ रही थी कि ... विभाग में मुख्य अधिकारी के पद पर काम कर रहे उस के बाबूजी को प्रत्येक माह ... से रुपए मंगाने की आवश्यकता क्यों पड़ जाती है.

मोना की असफलता के कारण घर का वातावरण बोझिल होने लगा था. उस ने ... मार कर बी. एस सी. में दाखिला ले लिया था, लेकिन मन की उदासी चेहरे पर ... जमाने लगी.

तभी अचानक बाबूजी का पत्र आ गया, "मोना की इच्छा है कि वह डाक्टर बने तो उस का चुनाव वहीं करा दो. मैं ने पता किया है कि कई स्थानों पर रुपए ले कर डाक्टरी में दाखिला ले लेते हैं. तुम पता करो, विस्तार से बातें मिलने पर होंगी. इस शनिवार को शाम की गाड़ी से मैं आ रहा हूं."

"हुंह..." किरन ने पत्र पढ़ कर मुंह बनाया, "हमें भी पता है, रुपए ले कर दाखिला होता है, पर रुपए हैं भी हमारे पास..."

सुदर्शन चुप बैठा रहा. उस का दिमाग खुद उलझा था. भविष्य के सारे सपने टूटते नजर आ रहे थे.

बाबूजी को देखते ही मोना उन से लिपट गई और उदास स्वर में बोली, "दादाजी, अब मैं डाक्टर नहीं बन पाऊंगी."

"क्यों नहीं बन पाएगी मेरी बेटी डाक्टर. जरूर बनेगी, लेकिन दादाजी का स्वागत क्या यों आंसुओं से करेगी... पहले गरमागरम चाय तो पिला मुझे."

आंसू पोंछते हुए मोना चाय बनाने चली गई.

किरन उदास मुंह लिए उन के पैर छू कर नाश्ता बनाने चली गई.

बाबूजी ने टीना को आवाज दी, "टीना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

We BEAUTY AND HEALTH SPECIAL

April (First) 1991

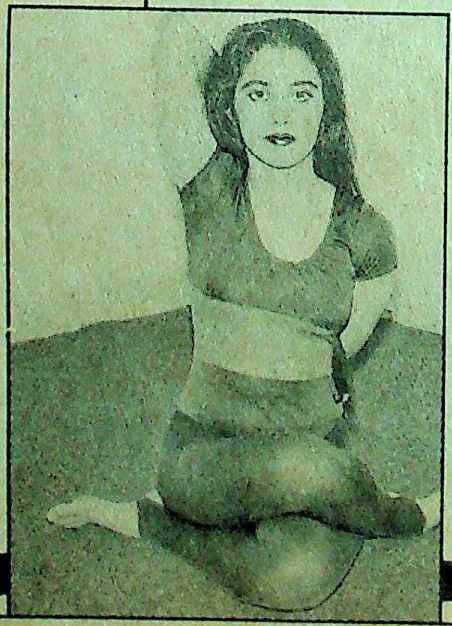

We's SPECIAL brings expert advice and guidance to every woman—whatever her age and occupation—to live a healthy and beautiful life.

Health and beauty are vital to a woman. Look good and feel great with *We*'s help.

This Special highlights the ways to the sound physical and mental health of women. Cosmetic problems, diet queries, gynaecological ailments, emotional tangles—everything is dealt with in a clear, lucid, easy-to-understand manner.

Buy this Special issue and benefit tremendously. Woman's era CARES FOR YOU.

Plus : The usual absorbing fare of stories, features and special information tidbits.

Woman's era

BUILDS YOUR PERSONALITY • BUILDS A HAPPY HOME

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बेटे, नहाने का मन रख कर मोना बिटिया के हाथ की चाय पिऊंगा."

जहां पहले बाबूजी के आने पर घर का वातावरण त्योहार जैसा हो जाता था वहीं अब मोना की असफलता के कारण सभी के चेहरे लटके हुए थे.

नहाधो कर जब बाबूजी आराम से पलंग पर बैठे तो सुदर्शन, किरन एवं बच्चे उन के चारों तरफ आ कर बैठ गए. बाबूजी ने मोना को अपने पास बैठा कर उस के सिर पर हाथ फेरते हुए कहा, "सुदर्शन बेटे,कई जगहों पर रुपए ले कर दाखिला होता है. तू ने पता किया है?"

"पर बाबूजी इतने रुपए?"

कटु सत्य

गरीबों की छाती पर दुनिया ठहरी हुई है, यह कठोर सत्य है. हर एक आंदोलन में गरीब ही आगे बढ़ते हैं, यह भी अमर सत्य है. —प्रेमचंद

"अरे हां." बाबूजी उठे. उन्होंने छोटी सी पेटी खोली और एक बंडल सुदर्शन को पकड़ाते हुए कहा, "यह 30 हजार से कुछ ऊपर हैं. इतने ही तुम्हारी मां के नाम बैंक में हैं. अगर कम पड़े तो वे भी निकाल लेंगे. चौंको नहीं. यह रुपए मेरे बेटे के हैं यानी तुम्हारे ही..."

"मेरे? पर बाबूजी..." सुदर्शन को कुछ कहने को शब्द नहीं मिल रहे थे.

"हां बेटे, मैं हर माह जो रुपए तुम से मंगाता था, उन्हें जमा करता जाता था. कुछ इंदिरा विकास पत्र ले लिए थे... कुल इतने रुपए हुए हैं."

"तो क्या आप ने रुपए खर्च नहीं किए? बिट्टी की शादी के लिए भी..."

"बिट्टी की शादी के लिए मेरे पास रुपए हैं. इसी जाड़े में शादी करने की सोच रहा हूं. मैं जानता था कि तू खर्चीले स्वभाव का है, पैसा नहीं बचा पाएगा. तेरी दो लड़कियां हैं... यह कोई आवश्यक तो नहीं कि हर कोई बिना दहेज विवाह कर ले. लड़कियां डाक्टर, अध्यापक बन ही जाएं. कल को इन के विवाह के लिए कहां से रुपए आते. इसी कारण मैं रुपए मंगाता रहा तुम से..."

किरन और सुदर्शन मुंह फाड़े आश्चर्य से सुनते रहे. बाबूजी बोल रहे थे, "वैसे मोना बेटी, एक बात मैं यह कहना चाहूंगा कि तुम एक बार और परीक्षा में बैठो. शायद तुम्हारा परिश्रम एवं लगन रंग लाए. पैसा दे कर दाखिला करवाना मुझे कुछ अच्छा नहीं लगता. यह तो पैसा दे कर डिगरी खरीदना हुआ. तुम तो स्वयं मेधावी छात्रा रही हो. हिम्मत कर के एक बार और परीक्षा में बैठो फिर इन पैसों से मैं तुम्हारे लिए एक क्लिनिक खुलवा दूंगा."

"क्लिनिक, मतलब अपना हस्पताल." मोना चहक पड़ी. एक अरसे बाद मोना की प्रसन्नता भरी आवाज पर सुदर्शन एवं किरन भी उत्साहित हो उठे.

"हां बेटे, पर शर्त यह है कि डाक्टरी की परीक्षा में अपने परिश्रम से आना होगा." बाबूजी ने उंगली उठा कर कहा तो टीना ठुनकती हुई पास आ गई, "और दादाजी..."

"तुझे कंपाउंडर बनवा दूंगा इस हस्पताल में..." दादाजी ने उसे चिढ़ाया.

"दादाजी..." टीना रूठ कर अलग हो गई.

"तू तो कालिज की अध्यापिका बनेगी न. दादाजी को भी कुछ पढ़ा दिया करना." बाबूजी ने फिर छेड़ा.

तभी किरन ने बाबूजी के पांव पकड़ लिए. "हमें क्षमा कर दें बाबूजी, हम अंधेरे में थे."

"नहीं बहू, हम सब ही अंधेरे में थे, लेकिन अब यह उजाला स्थायी है क्योंकि ज्योतिपुंज हमारी बच्चियों के हाथ में है. क्यो मोना... टीना?"

"दादाजी..." कहते हुए बच्चियां भावविह्वल हो कर उन से लिपट गईं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजीव ने जब माफी मांगी

हरियाणा की खुफिया पुलिस द्वारा राजीव गांधी के बंगले पर जासूसी करने के मामले पर जब प्रधान मंत्री चंद्रशेखर ने कांग्रेस की शर्तों के सामने झुकने के बजाय एक झटके में अपने पद से इस्तीफा दे दिया तो राजीव गांधी और उन की पार्टी एकदम भौचक्की रह गई. परंतु अपनी हेकड़ी बरकरार रखते हुए वह लोकसभा के मध्यावधि चुनावों को नवंबर तक टालना चाहती थी. इस तनाव के दौर में राजीव गांधी और चंद्रशेखर के बीच बातचीत भी ठप हो गई थी.

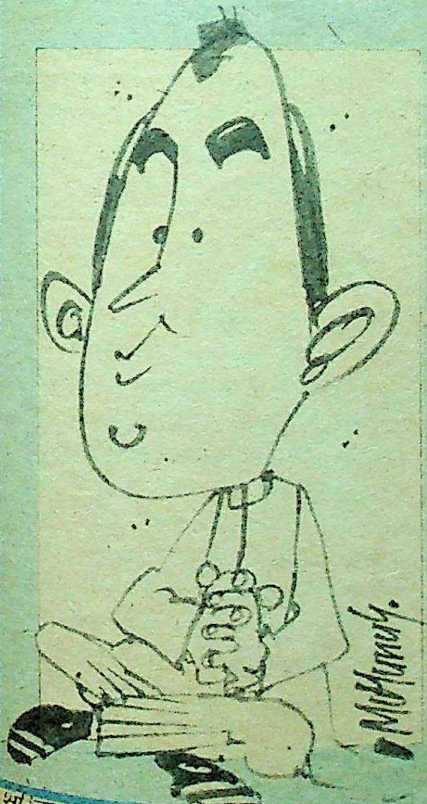

अंततः राजीव गांधी ने अपनी शर्म छोड़ कर दोनों दलों के बीच फिर से आपसी संबंधों को सामान्य बनाने के लिए टेलीफोन पर बातचीत की और इस बात के लिए दुख व्यक्त किया कि आपसी संवादहीनता के कारण यह नौबत आई है. अभी कोई हर्ज नहीं है. कांग्रेस ने अभी तक समर्थन वापस नहीं लिया है. राष्ट्रपति द्वारा दोबारा शपथ दिला कर नवंबर तक सरकार चलाई जा सकती है.

चंद्रशेखर को इस ताजे प्रस्ताव पर आश्चर्य हुआ लेकिन उन्होंने अपने जवाब में कहा कि 'जब तक विपक्षी दल इसे स्वीकार नहीं करते हैं तब तक मेरे लिए सरकार चलाना कठिन होगा.' इस के बाद राजीव ने अपने विश्वस्त जन आर.के. धवन और कमलनाथ को चंद्रशेखर के पास भेजा. गुजरात और उत्तर प्रदेश के मुख्य मंत्रियों की सेवाएं ली गईं. डा. सुब्रह्मण्यम स्वामी ने पासे चलाने की कोशिश की लेकिन बात विपक्ष के नेता लालकृष्ण आडवाणी पर अटक गई.

प्रधान मंत्री चंद्रशेखर ने राजीव गांधी की पेशकश पर अंतिम फैसला करने के पूर्व आडवाणी से नागपुर में टेलीफोन से बात की और कांग्रेस के ताजा प्रस्ताव के बारे में बताते हुए कहा कि यदि भाजपा इस प्रस्ताव के आधार पर उन की सरकार को स्वीकार करने के लिए तैयार हो तो इसे आगे बढ़ाया जा सकता है. आडवाणी ने इस का दो टूक नकारात्मक जवाब दिया और कहा कि यह सब दांवपेंच उन्हें मान्य नहीं हैं और अब चुनाव का कोई विकल्प नहीं रह गया है. इस के बाद राजीव चंद्रशेखर के बीच ताजे समझौते के रास्ते बंद हो गए. राजीव गांधी को लगा कि माफी भी मांगी और काम भी नहीं बना. आखिर वह गुनाह बेलज्जत हो गए, वह भी आडवाणी के कारण.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बजट और शादी

बजट और शादी का आमतौर से कोई संबंध नहीं है. किंतु जब यह शादी किसी राजनीतिक हस्ती के परिवार में होती है तो देश के लिए महत्त्वपूर्ण बजट भी पीछे पड़ जाता है. ऐसा ही कुछ इस वर्ष के केंद्र सरकार के बजट के साथ हुआ.

स्थापित परंपरा के अनुसार केंद्र सरकार का वार्षिक बजट फरवरी मास की आखिरी तारीख को पेश किया जाता है. इस वर्ष भी बजट की तिथि प्रारंभ में 28 फरवरी ही निश्चित थी और समय था सायं 5 बजे, जो बाद में बदल कर 4 मार्च कर दिया गया. किंतु 4 मार्च को महाराष्ट्र के मुख्य मंत्री शरद पवार की इकलौती बेटी सुप्रिया पवार की शादी तय थी. प्रधान मंत्री एवं भूतपूर्व प्रधान मंत्री सहित अनेक मंत्रियों और सांसदों को इस शादी में शामिल होना था. अतः उस दिन सदन का सरकारी कामकाज इस ढंग से निर्धारित करना जरूरी हो गया कि सदन में किसी मसले पर मतदान की नौबत ही न आए.

रास्ता खोजा गया और मिल भी गया. शादी को सुविधाजनक बनाने के लिए बजट को 4 मार्च को ही पेश करना तय किया. लेकिन समय भूल से पांच बजे ही बना रहा. बाद में सरकार और उस के समर्थकों को ध्यान आया कि यदि बजट पांच बजे पेश किया गया तो लोगों का (विमान से) पूना पहुंचना संभव नहीं हो सकेगा. अतः शादी की सुविधा के लिए बजट समय में तबदीली कर के दोपहर 12 बजे बजट पेश किए जाने की घोषणा की गई और बिना किसी विघ्नबाधा के अनेक मंत्री और सांसद शादी के राजनीतिक मेले में शरीक हो सके.

शादी में राजनीति

शरद पवार की बेटी की शादी में लगभग दो लाख आदमियों की भीड़ जमा हुई. प्रधान मंत्री चंद्रशेखर व राजीव गांधी भी आम मेहमानों की तरह से शामिल हुए और उन्हें खचाखच भरे पंडाल में बैठा दिया गया. चंद्रशेखर नाराज थे क्योंकि उस दिन कांग्रेसी सदस्यों ने लोक सभा में बहुत हल्ला मचाया था.

यद्यपि माहौल शादी का था, चंद्रशेखर और राजीव के पीछे भी कतारों में लोग बैठे थे, चंद्रशेखर शिकायत करने से बाज नहीं आए. राजीव गांधी ने टालमटोल की तो उन्होंने थोड़ा जोर दे कर कहना शुरू किया. राजीव गांधी को कहना पड़ा, 'चंद्रशेखरजी, यह इन मामलों का समय थोड़े ही है, पीछे भी तो लोग बैठे हैं. इस मामले पर फिर बात करेंगे.' अफसोस! फिर बात करने का मौका ही नहीं आया.

जांच एजेंसियों की जांच नहीं!

देश की दोनों बड़ी खुफिया एजेंसियां 'आई.बी.' (इंटेलीजेंस ब्यूरो) और 'रा' (रिसर्च एंड एनैलिसिस विंग) संसदीय जांचपड़ताल से मुक्त हो गई हैं. हालांकि संसद की प्राक्कलन समिति ने इन दोनों सरकारी एजेंसियों के कामकाज और उस के दायित्वों के बारे में जांचपड़ताल करने की घोषणा कर दी थी और इस सिलसिले में समिति के अध्यक्ष जसवंत सिंह की अध्यक्षता में एक उप समिति गठित की गई थी.

पिछले 40 वर्षों में हो रही पहली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जांचपड़ताल से इन गुप्तचर संस्थाओं की कई कारगुजारियों का भंडाफोड़ होने की आशंका पैदा हो गई थी जिस से ये संस्थाएं कई आरोपों के कटघरे में आ सकती थीं. जांच की इस घोषणा से खुफिया एजेंसियों के दिग्गजों के पांव तले से जमीन खिसकने लगी. परिणाम यह हुआ, सरकार पर जांच के खिलाफ उच्च प्रभाव का प्रयोग किया गया.

सरकार ने अधिकृत रूप से लोकसभा अध्यक्ष रविराय से इन खुफिया एजेंसियों की संसद की प्राक्कलन समिति के द्वारा की जा रही जांच को बंद करने का आग्रह किया और कहा कि यह काम देश हित में नहीं होगा. अध्यक्ष ने सरकार के आग्रह को स्वीकार करते हुए समिति की इस जांच को तत्काल बंद करने का आदेश दे दिया. यह आदेश चंद्रशेखर सरकार के समय दिया गया.

समिति के अध्यक्ष जसवंत सिंह का कहना है चूंकि संसद अध्यक्ष ने यह आदेश जारी किया है और समिति संसदीय नियमों से बंधी है, अतः जांच के काम को बंद करने के अलावा उन के पास कोई विकल्प नहीं रह गया. समिति के अध्यक्ष जसवंत सिंह ने पहले ही कहा था कि समिति की यह जांच जासूसी कारगुजारियों की जांच नहीं है. बल्कि गुप्तचर संस्थाओं के बारे में सरकारी नीति के आधार पर यह छानबीन होगी, समिति यह जांच करना चाहती थी कि इस बारे में सरकारी नीति क्या है और नीति की परिधि के भीतर ये संस्थाएं कैसा काम कर रही हैं. इस के साथ यह भी तय करना था कि इन की जवाबदेही क्या है और किस के प्रति है. परंतु मामला बीच में ही समाप्त हो गया.

चंद्रास्वामी का अदालत को चकमा

अंतर्राष्ट्रीय धंधेबाज चंद्रास्वामी एक बार फिर सी.बी.आई. और अदालत को चकमा दे कर होली की रात को आकस्मिक ढंग से छः महीने के लिए विदेश चले गए. वे इस ढंग से हवा हुए कि सी.बी.आई. अधिकारी सिर खुजलाते ही रह गए.

धर्म के प्रचार के नाम पर स्वामीजी ने अदालत से विदेश जाने की अनुमति मांगी थी. सी.बी.आई. के विरोध के बावजूद उन्हें अदालत से छः महीने की अनुमति मिल गई थी लेकिन सी.बी.आई. ने चंद्रास्वामी के खिलाफ लगे जालसाजी और घपलों के आरोपों की जांच करने के लिए अदालत के खिलाफ अपील पेश की. इस अपील पर 5 मार्च को अंतिम सुनवाई होनी थी.

चंद्रास्वामी को कुछ खटका हुआ और उन्हें लगा कि अदालत उन्हें कहीं विदेश जाने से रोक न दे. अतः उस निर्धारित तिथि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के पूर्व ही स्वामीजी विमान में सवार हो गए. सी.बी.आई. को जानकारी होने के बाद भी वह उन्हें कानूनी तौर से रोक नहीं सकी. शायद इस मामले में उन के उच्च राजनीतिक संबंध एक बार फिर काम कर गए और सभी हाथ मलते रह गए.

राजीव की परेशानी

लोकसभा के मध्यावधि चुनाव तत्काल कराने अथवा न कराने के मामले पर कांग्रेस पार्टी और उस के नेता राजीव गांधी काफी द्विविधा में थे. वे ऊपर से चुनाव कराने के पक्ष में अपना इरादा व्यक्त कर रहे थे लेकिन परदे के पीछे प्रधान मंत्री चंद्रशेखर को चुनावों को नवंबर तक टालने की मनुहार कर रहे थे.

राजीव गांधी की इस द्विविधा की मनःस्थिति के बारे में कांग्रेसी नेताओं को भी काफी हैरानी थी और वे नहीं समझ पा रहे थे कि आखिर राजीव क्या चाहते हैं. इस बारे में पूछताछ करने पर भूतपूर्व रेल मंत्री माधवराव सिंधिया ने काफी कुछ खुलासा किया.

उन्होंने बताया कि वर्तमान नौवीं लोकसभा में कांग्रेस के कुल सदस्यों में दक्षिणी राज्यों के सदस्यों की संख्या अधिक थी. दक्षिणी राज्यों के बदले राजनीतिक माहौल में वे तत्काल लोकसभा चुनाव कराने के विरोधी थे. जब उन का दबाव पड़ता था तो राजीव गांधी कहते थे कि अभी चुनाव नहीं होंगे और सरकार को अपना समर्थन जारी रखेंगी. इस के विपरीत उत्तर भारत के हिंदी भाषी राज्यों से पार्टी के अनेक लोग पिछले चुनाव में हार गए थे, अब वे चुनाव लड़ कर संसद में लौटना चाहते थे. इस के लिए वे फ़ौरन ही चुनाव चाहते थे तथा चंद्रशेखर सरकार का टिकाए रखना अनावश्यक समझते थे. जब इन हारे नेताओं का दबाव बढ़ता था तो राजीव गांधी कहते थे कि चंद्रशेखर सरकार नाकारा है और पार्टी तुरंत चुनाव कराने के पक्ष में है. अतः राजीव गांधी को उस समय चुनाव के बारे में दो विपरीत दबावों का सामना करना पड़ रहा था. जब जिस का दबाव अधिक होता था, उसी के अनुसार राजीव के वक्तव्य अलगअलग झलक देते थे.

कागज झूठा—कब्जा सच्चा

यह किसी के लिए भी आश्चर्य की बात हो सकती है कि कोई सांसद सरकारी बंगला मिलने के बाद भी घरविहीन हो और वह भी अवैध कब्जे के कारण. देश की राजधानी दिल्ली में यह हो रहा है.

लोकसभा के भूतपूर्व उपाध्यक्ष और मेघालय से राज्य सभा के सदस्य जी.जी. स्वेल की ऐसी ही कुछ स्थिति है. उन्हें राज्य सभा सदस्य के नाते शाहजहां रोड की एक कोठी एक अरसे से सरकार ने आवंटित कर रखी है. परंतु इस पर राज्य सभा के भूतपूर्व सदस्य, हरियाणा के भूतपूर्व मुख्य मंत्री एवं उपप्रधान मंत्री के बड़े पुत्र ओमप्रकाश चौटाला का कब्जा है.

सांसद स्वेल की परेशानी यह है कि उन्हें मकान तो सरकारी तौर से आवंटित कर दिया गया लेकिन उसे खाली कौन कराए और सरकार का कौन मंत्री चौटाला और देवीलाल से झगड़ा मोल ले. लिहाजा स्वेल साहब इधरउधर भटक रहे हैं और चौटाला का अनधिकृत कब्जा बरकरार है. है न कमाल, नए राजनेताओं और नई राजनीति का.

बेटा तो बेटा, बाप इस से भी आगे निकल गया. चौ. देवीलाल को उपप्रधान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मंत्री के नाते राष्ट्रपति भवन का एक बड़ा बंगला आवंटित है. चूंकि उन की सरकार खिसक रही है, उस बंगले को चंद्रशेखर सरकार ने स्वतंत्रता सेनानी कोटे से उन्हें जीवनभर के लिए आवंटित कर दिया है, जिस के रखरखाव पर सरकार ने हाल ही में 25 लाख रुपए खर्च किए हैं.

मंत्री और नौकरशाही

केंद्र में राजनीतिक संकट पैदा होने के बाद से केंद्रीय मंत्रियों की स्थिति काफी नाजुक हो गई है और महत्त्वपूर्ण सरकारी फाइलें उन के पास पहुंचनी बंद हो गई हैं. इस बीच कैबिनेट सचिव नरेशचंद्र प्रशासन के सर्वाधिक शक्तिशाली व्यक्ति बन गए हैं.

नरेशचंद्र ने सरकारी तौर पर इस बात के लिए जरूरी कदम उठाए हैं कि कोई भी निवर्तमान मंत्री महत्त्वपूर्ण नीतिगत मामलों पर कोई फैसला न ले पाए. इस के लिए उन्होंने अपने सभी विभागीय सचिवों को निर्देश जारी किए हैं कि जब तक राजनीतिक स्थिति साफ नहीं हो जाती है तब तक महत्त्वपूर्ण मामलों की फाइलें रोक कर रखें. इस के अलावा यदि कोई मंत्री विभागीय सचिव को कोई आदेश जारी करता है तो उस का अनुमोदन कैबिनेट सचिव के कार्यालय से प्राप्त किया जाए. नौकरशाही की यह शक्ति मंत्रियों के लिए परेशानी पैदा कर रही है.

इस समस्या से अन्य मंत्री ही नहीं, प्रधान मंत्री भी अछूते नहीं हैं. वे राजीव गांधी के निकट समझे जाने वाले एक खुफिया अधिकारी को हटाना चाहते हैं लेकिन उन से कहा जा रहा है कि कार्यवाहक प्रधान मंत्री को ऐसा करने का अधिकार नहीं है. मामला बीच में ही लटका हुआ है.

फक्कड़ मंत्री

जनता दल (स) के लोहियावादी कपड़ा मंत्री हुकुमदेव नारायण सिंह यादव अपने फक्कड़पन के लिए प्रसिद्ध हैं. केंद्र में मंत्री बनने के बाद भी सोफा और मेजकुरसी पर बैठ कर लोगों से मिलने अथवा बतियाने के बजाय जमीन पर बिछे गद्देचादर पर बैठ कर उन्हें अधिक सुकून मिलता है. बढ़ी हुई दाढ़ी, बिखरे सफेद बाल तथा ऊंची धोती पर आधी बांहों का लंबा खादी कुरता उन का स्थायी वेश है, जिस में कोई बदलाव नहीं आया है.

अभी कुछ दिन पूर्व दिल्ली के शास्त्री नगर इलाके में विकलांग विद्यालय के शिलान्यास के सिलसिले में उन्हें आमंत्रित किया गया था. वे निश्चित दिन और समय पर स्थानीय पुलिस को सूचना दिए बिना ही मंत्री पद के तामझाम से मुक्त हो कर समारोह में चुपचाप अपनी कार से पहुंच गए.

द्वार पर आयोजक स्वागत के लिए खड़े उत्सुकता से इंतजार कर रहे थे. परंतु उन में मंत्री महोदय को पहचानने वाला शायद ही कोई था.

मंत्री महोदय आयोजन स्थल से वापस लौट कर आयोजकों के पास आए और बोले कि 'मैं हुकुमदेव नारायण सिंह की हैसियत से आप के कार्यक्रम में आया हूं. मैं शिलान्यास के पत्थर को भी देख आया हूं. परंतु मैं मंत्री के नाते नहीं आया हूं. आइए चलें और कार्यक्रम शुरू करें. शिलान्यास कार्यक्रम संपन्न हो गया लेकिन वह अपने फक्कड़पन का एहसास लोगों में छोड़ गए. फिर भी वहां शिलान्यास का पत्थर मंत्री की हैसियत से ही लगा है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चंचल छटा

★★★★ अति उत्तम ★★★ उत्तम ★★ मध्यम ★ साधारण ○ बेकार

★ फतेह

निर्माता: मुकेश दुग्गल
निर्देशक: तलत जानी
संगीत: नरेश शर्मा
मुख्य कलाकार: संजय दत्त, मोहसिन खान, सत्यजीत पुरी, सोनम, एकता, शफी ईनामदार, परेश रावल, दिनेश आनंद और सुरेश ओबराय.

○

मसाला प्रधान फिल्में तो लगभग सभी निर्माता निर्देशक बना लेते हैं, लेकिन मसालों के साथसाथ दर्शकों की नब्ज को पहचानते हुए उन्हें बांधे रखना कोईकोई निर्देशक ही कर सकता है. फिल्म 'फतेह' वैसे तो सभी फार्मूलों से भरपूर एक्शन प्रधान फिल्म है मगर फिल्म के चुस्त निर्देशन ने फिल्म को गतिमय बना दिया है. निर्देशक तलत जानी ने फिल्म का घटनाक्रम इस प्रकार बनाया है कि दर्शक कुछ हद तक बंधे रहते हैं. फिल्म का दूसरा सबल पक्ष है इस का गीतसंगीत. मारधाड़ पसंद करने वालों को यह फिल्म भा सकती है.

करण (संजय दत्त), सलीम (मोहसिन खान) और रणवीर (सत्यजीत पुरी) तीन फौजी हैं जिन का उद्देश्य देशद्रोहियों से देश को बचाना है. मेजर आनंद (सुरेश ओबराय) उन का अफसर है. नशीली दवाएं बेचने वाले एक देशद्रोही सम्राट (परेश रावल) को पकड़ने में मेजर आनंद जख्मी हो जाता है. वह रिटायर जिंदगी गुजारता है मगर सम्राट और उस के आदमी उसे मार डालते हैं. करण और उस के दोनों साथी सम्राट से बदला लेने की कसम खाते हैं. सम्राट की खोज करते समय करण की मुलाकात मारिया (एकता) से होती है. वह करण से प्रेम करने लगती है. उधर एक अनाथ युवती सायरा (सोनम) सलीम से प्रेम करने लगती है. करण पहले सम्राट के आदमी बाबलिया को मार डालता है और अंत में सम्राट को भी खत्म कर देता है. करण का एक साथी रणवीर इस लड़ाई में मारा जाता है.

फिल्म की कहानी में कोई नयापन नहीं है. फिल्म का निर्देशक तलत जानी अनिल शर्मा से काफी प्रभावित लगता है. जिस प्रकार अनिल शर्मा ने अपनी फिल्मों 'ऐलाने जंग' 'फरिश्ता' आदि में खूब मारधाड़, गोलाबारूद का इस्तेमाल किया है, उसी तरह तलत जानी ने भी इस फिल्म में एक्शन को ही प्रमुखता दी है. फिल्म में शोर बहुत ज्यादा है, उसे कम किया जा सकता था.

फिल्म के संवाद कुछ हद तक ठीक हैं तथा संपादन कसा हुआ है, कहीं कोई झोल नजर नहीं आता. फिल्म में एक चैरोडीनुमा गीत, जिसे हिजड़ों पर फिलमाया गया है, जो छिछले दर्शकों को बहुत पसंद आएगा. इस के अलावा 'जाम है शाम है' तथा 'तेरे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिवा मेरे' गीत भी सेक्सी पट लिए हुए है. 'तेरे सिवा' वाला गीत बर्फ की सिल्लियों पर फिल्माया गया है. इस गीत को फिल्माने में निर्देशक को कई दिन लग गए थे. यह एक नया प्रयोग है. 'कोई लैला हमें भी जरा देखे' गीत युवाओं की पसंद बन सकता है. फिल्म का छायांकन भी कुछ हद तक ठीक है.

अभिनय की दृष्टि से संजय दत्त में पहले से काफी निखार आया है. मोहसिन खान पाकिस्तान का क्रिकेट खिलाड़ी है. अभी कुछ अरसे से वह भारतीय फिल्मों में काम करने लगा है. रोमांटिक दृश्यों में वह चल सकता है, मारधाड़ वाली फिल्मों में नहीं, क्योंकि उस का चेहरा रूखापन लिए नहीं है. एकता को इस फिल्म से काफी फायदा पहुंचेगा. देव आनंद की खोजी इस अभिनेत्री को फिल्में कम ही मिलती थीं मगर इस फिल्म के बाद उसे फिल्में मिलने लगेंगी. परेश रावल खलनायक कम, बैंडमास्टर अधिक लगता है. अन्य कलाकार साधारण हैं.

फिल्म 'फतेह' के एक दृश्य में मोहसिन खान और सोनम : मारधाड़ के साथसाथ प्रणय प्रसंग भी.

● नंबरी आदमी

निर्माता : डिपी
निर्देशक : स्वरूपकुमार
संगीत : भप्पी लाहिड़ी
मुख्य कलाकार : मिथुन चक्रवर्ती, किमी काटकर, संगीता बिजलानी, कुणाल गोस्वामी, सोनू वालिया, अमरीश पुरी, सुरेश ओबराय, जगदीप.

पिछले काफी अरसे से मिथुन चक्रवर्ती की फिल्मों की संख्या कम हो गई है. फिल्म उद्योग में यह कहा जा रहा था कि अब मिथुन सोचसमझ कर फिल्मों का अनुबंध कर रहा है. परंतु उस की नवीनतम फिल्म 'नंबरी आदमी' देखने पर पता चला कि अब भी वह आंखें बंद कर के फिल्मों का अनुबंध कर रहा है.

'नंबरी आदमी' एक बेसिरपैर की फिल्म है. इसे देखने का कोई लाभ नहीं है. प्रतिशोधात्मक कहानी पर लिखी गई इस फिल्म की पटकथा तो लचर है ही, इस का प्रस्तुतीकरण भी काफी फूहड़ तरीके से किया गया है.

शंकर (मिथुन) बस्ती का दादा है और

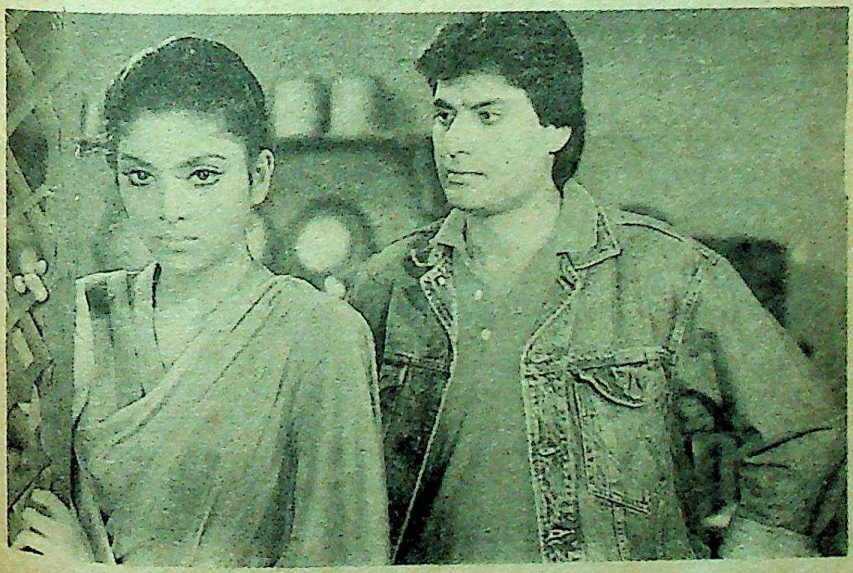

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गरीबों का हमदर्द है. बिजली (किमी काटकर) भी बस्ती में रहती है और शंकर से प्रेम करती है. शंकर को राणा (अमरीश पुरी) की तलाश है, जिस ने बचपन में ही उस के मातापिता को मार डाला था. वह उस से बदला लेना चाहता है. राणा अब एक जानामाना रईस आदमी है जो नशीली दवाओं का व्यापार करता है. संगीता (संगीता बिजलानी) उस की बेटी है. शंकर न केवल राणा के नशीली दवाओं के व्यापार को चौपट कर देता है, अपितु उसे मार कर अपना बदला भी लेता है.

इस फिल्म की बुनियाद ही फार्मूलों पर रखी गई है. वही 'कानून गवाहों का मोहताज है' का रोना रोया गया है. फुटबाल मैच में बम होने वाली घटना को हूबहू 'अव्वल नंबर' फिल्म से उड़ा लिया गया है. किमी काटकर, संगीता बिजलानी और सोनू वालिया—तीनों द्वारा मिल कर गाया गया गाना फिल्म 'त्रिदेव' की नकल सा लगता है. मारधाड़ के दृश्यों में मूर्खता झलकती है.

फिल्म का निर्देशन, संपादन, संवाद, गीतसंगीत सभी कुछ कमजोर है. अभिनय की दृष्टि से सुरेश ओबराय को छोड़ कर कोई भी कलाकार प्रभावित नहीं करता. फिल्म का छायांकन भी साधारण है.

○ योद्धा

निर्माता : करीम मोरानी और सुनील सूरमा
निर्देशक : राहुल रवेल
संगीत : भप्पी लाहिड़ी
मुख्य कलाकार : संजय दत्त, सनी देओल, संगीता बिजलानी, परेश रावल, शिल्पा शिरोडकर, डैनी, अभिनव चतुर्वेदी, अनू कपूर, और शफी इनामदार.

फिल्म 'योद्धा' के दोनों योद्धा संजय दत्त और सनी देओल फिल्मों में अच्छी तरह प्रतिष्ठित होने के लिए बरसों से संघर्ष करते आ रहे हैं. यह फिल्म देख कर महसूस हुआ कि उन्हें यह संघर्ष अभी जारी रखना होगा. रहा सवाल निर्देशक महोदय का, तो यही कहा जा सकता है कि अब उन्हें निर्देशन छोड़ देना चाहिए. कोई समय था जब निर्देशक राहुल रवेल का नाम था. उन्होंने कई फिल्मों में अच्छा निर्देशन भी दिखाया. 'योद्धा' में वह योद्धाओं के साथसाथ खुद भी धराशायी हुए हैं.

फिल्म की कहानी वही पुरानी है—नशीली दवाओं की. जस्टिस धर्मेश अग्निहोत्री (डैनी) नशीली दवाओं का व्यापार करता है. करन (सनी देओल) एक वकील है. वह जस्टिस धर्मेश अग्निहोत्री को बेनकाब करना चाहता है तो वह उस के पिता को मरवा डालता है. धर्मेश अग्निहोत्री की बेटी विद्या (संगीता बिजलानी) करन से प्रेम करती है. सूरज (संजय दत्त) एक गुंडा है जो पैसे ले कर खून करता है. करन जब धर्मेश अग्निहोत्री के पीछे लगता है तो धर्मेश सूरज को करन के पीछे लगा देता है. उधर करन का भाई सूरज की बहन से प्रेम करने लगता है. इस तरह से सूरज और करन में दुश्मनी हो जाती है. अंत में दोनों को पता चलता है कि उन्हें लड़वाने वाला धर्मेश अग्निहोत्री ही है तो वे मिल कर उसे मार डालते हैं.

इस फिल्म की पटकथा काफी बिखरी हुई है. फिल्म देख कर काफी निराशा होती है. फिल्म का निर्देशन तो कमजोर है ही, घटनाएं भी जानीपहचानी लगती हैं. फिल्म में अदालतों, कानून को बारबार बेमतलब कोसा गया है.

फिल्म के संवाद, गीतसंगीत सभी कुछ तीसरी श्रेणी के हैं. अभिनय की दृष्टि से भी कोई कलाकार विशेष प्रभावित नहीं करता. इस से पहले सनी देओल की 'घायल' और 'विष्णु देवा' फिल्में प्रदर्शित हुई हैं, सभी में एक जैसा अभिनय है. संजय दत्त का अभिनय औसत दर्जे का रहा है. परेश रावल का काम जरूर अच्छा है. संगीता बिजलानी अब कई फिल्मों में आ रही है. अतः उसे लटकेझटके छोड़ कर अभिनय पर ध्यान देना चाहिए. अन्य कलाकार साधारण हैं. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यक्तिगत विज्ञापन

वैवाहिक विज्ञापन

वर चाहिए

हैहय क्षत्रिय, 30/158, एम.ए., बी.एड., गेहुआं रंग, शिक्षकीय कार्यरत कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 538, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24/153, बी.ई. इलेक्ट्रोनिक्स, सुरुचिपूर्ण व्यक्तित्व, गेहुआं रंग, सुंदर, हैहय क्षत्रिय कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. पूर्ण विवरण लिखें: वि.नं. 539, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुशवाहा, 27½, 163, एम.एससी., बी.एड., गौरवर्ण, गृहकार्यदक्ष, आकर्षक, राजपत्रिताधिकारी की पुत्री हेतु डाक्टर, इंजीनियर, कार्यरत, व्यवसायरत वर चाहिए. सविवरण लिखें: वि.नं. 573, सरिता, नई दिल्ली-110055.

चौहान राजपूत, 21, 165, इलेक्ट्रिकल इंजीनियर, गोरी, आकर्षक, स्लिम, स्मार्ट, घरेलू कन्या हेतु वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 574, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कायस्थ, 28/152, सांवली, तीखे नयननक्श, गृहकार्यदक्ष, प्रथम श्रेणी एम.ए., एलएल.बी. कन्यार्थ उपयुक्त वर चाहिए. वरीयता अधिवक्ता/प्रवक्ता. लिखें: वि.नं. 575, सरिता, नई दिल्ली-110055.

राजपूत क्षत्रिय, 27, 160, खूबसूरत, सेवारत, कनवेंट शिक्षित, बी.ए. डिप्लोमा, सेक्रेट्रियल प्रैक्टिस, आदर्श परिवार से संबंधित, पूर्वी उत्तरप्रदेशीय, अब कलकत्ता निवासी, कन्या हेतु सुयोग्य, सजातीय वर. पिता व्यवसायी. लिखें: वि.नं. 576, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अग्रवाल मित्तल, 24½, 150 सें.मी., बी.एससी., एम.ए., गौरवर्ण, सुंदर, संपन्न, शिक्षित परिवार (पिता वरिष्ठ शासकीय चिकित्सक), मध्य प्रदेश निवासी कन्यार्थ सजातीय वर चाहिए. इंजीनियर, डाक्टर, सी.ए, उच्च व्यवसायी को प्राथमिकता. लिखें: वि.नं. 577, सरिता, नई दिल्ली-110055.

प्रतिष्ठित एवं सुशिक्षित, दिल्ली, माहेश्वरी, परिवारीय, अत्यंत सुंदर, गौरवर्ण, स्लिम, 22/160, प्रतिभाशाली, पोस्ट ग्रेजुएट, बहुराष्ट्रीय बैंक में असिस्टेंट मैनेजर नियुक्त कन्यार्थ सुयोग्य वर. लिखें: वि.नं. 590, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सारस्वत ब्राह्मण, 26, 157 सें.मी., जूनियर इंजीनियर पी.डब्ल्यू.डी., राजस्थान, सुंदर, गृहकार्य-दक्ष कन्या हेतु सजातीय, सुयोग्य वर. लिखें: वि.नं. 680, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुमाऊंनी राजपूत, 145, 25 वर्षीया, एम.ए., बी.एड., उर्दू बी.ए., गेहुआं रंग, पतली, गृहकार्यदक्ष कन्यार्थ सजातीय वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 681, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कायस्थ, 26/24, गेहुआं, 155/150 सें.मी., बी.ए., गृहकार्यदक्ष कन्याओं हेतु वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 682, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माथुर कायस्थ, 25, 150, एम.ए., बी.एड., सुंदर, मेधावी, घरेलू, इंगलिश मीडियम स्कूल में अध्यापिका हेतु सुशिक्षित वर. प्राथमिकता सरकारी सेवारत, शीघ्र विवाह. लिखें: वि.नं. 683, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जांगिड़ ब्राह्मण (विश्वकर्मा), 24/150, बी.कम., सी.लिब. गौरवर्ण, सुंदर, सुशील, गृहकार्यदक्ष, उच्च शिक्षित, राजस्थानी परिवार कन्यार्थ सुयोग्य वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 684, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26/157, मध्यमवर्गीय, कायस्थ, एम.ए.,बी.एड. कन्या हेतु सुयोग्य, सेवारत वर चाहिए. शीघ्र विवाह. जातिबंधन नहीं. वि.नं. 685, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28 वर्षीया, 155 सें.मी., गोरा रंग, सुंदर, वैश्य, साहू, एम.ए. कन्या हेतु वर चाहिए. जातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 686, सरिता, नई दिल्ली-110055.

रतलाम, मध्यप्रदेश निवासी, अग्रवाल (मित्तल) 24 वर्षीया, 162.5, बी.कम., गौरवर्ण, स्मार्ट, गृहकार्यदक्ष, पारिवारिक कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. जातिबंधन नहीं. शीघ्र विवाह. लिखें: वि.नं. 687, सरिता, नई दिल्ली-110055.

राजपूत, 27 वर्षीया, 162 सें.मी., 2,000 रु. एम.ए., गोरी, प्रतिष्ठित, संपन्न परिवारीय तलाक-शुदा (ड्रग्स के कारण), हेतु सुयोग्य वर चाहिए. जातिबंधन नहीं. वि.नं. 688, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माथुर, 24, 163 सें.मी., बी.ए.,बी.एड. अध्ययनरत, गेहुआं रंग, गृहकार्यदक्ष कन्यार्थ सरकारी सेवारत वर. उपजातिबंधन नहीं, साधारण विवाह. लिखें: वि.नं. 689, सरिता, नई दिल्ली-110055.

ब्राह्मण, 33/164, एम.ए.,एलएल.बी., सुंदर कन्यार्थ कलक्टर, आई.पी.एस., इंजीनियर, बिजनेस-मैन वर. लिखें: वि.नं. 690, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जाटव, मेरठ निवासी, 26 वर्षीया, एम.ए., बी.एड. कन्या हेतु डाक्टर, इंजीनियर या अन्य आफीसर, प्रोफेसर वर चहिए, दिल्लीवासी को वरीयता. लिखें: वि.नं. 691, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अग्रवाल (सिंघल), 21/150, बी.ए. पास, आकर्षक, स्लिम, सुंदर तथा गृहकार्य में दक्ष कन्या हेतु सजातीय, सुयोग्य वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 692, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सक्सेना, 23 वर्षीया, 154 सें.मी., पांचवीं कक्षा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तक शिक्षित, अति सुंदर, सुशील, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु कार्यरत कायस्थ वर चाहिए. व्यवसायी अथवा सुप्रतिष्ठापित कृषक को प्राथमिकता. पिता राजपत्रित अधिकारी. उत्तम विवाह. लिखें: वि.नं. 693, सरिता, नई दिल्ली-110055.

पंजाबी ब्राह्मण सारस्वत, 28, 160, मध्यवर्गीय, शाकाहारी, सीनियर सेकंडरी, गेहुआं रंग, गृहकार्य-दक्ष, सुशील, स्लिम कन्या हेतु वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 694, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गढ़वाली राजपूत, प्रतिष्ठित परिवार, दिल्ली-वासी, 24, 163, स्लिम, बी.ए., गोरी, सुंदर, गृहकार्यदक्ष, हेतु गढ़वाली, कुमाऊंनी राजपूत वर. लिखें: वि.नं. 695, नई दिल्ली-110055.

सनाढ्य ब्राह्मण, 23/162, एम.एससी., बी.एड., शिक्षारत, अत्यंत सुंदर, उज्ज्वल, गौरवर्ण कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. उत्तम विवाह हेतु समस्त सूचनाओं सहित लिखें. पिता राजपत्रित अधिकारी. लिखें: वि.नं. 696, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24 वर्षीया, माथुर कायस्थ, गौरवर्ण, अति सुंदर, आकर्षक, लंबी, छरहरी, भौतिक शास्त्र में एस.एससी, सदैव प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण, स्कालरशिप प्राप्त कर रही, डेढ़ साल से शोधकार्य में रत, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु क्लास-I आफीसर, विश्व-विद्यालय में प्राध्यापक, धनी व्यापारी वर्ग का सुयोग्य माथुर कायस्थ वर चाहिए. विज्ञापन केवल उत्तम चयन हेतु. पिता विश्वविद्यालय में उच्चपदस्थ प्रोफेसर. इकलौती पुत्री. एक भाई की बहन. शानदार विवाह. लिखें: वि.नं. 697, सरिता, नई दिल्ली-110055.

पूना निवासी, प्रतिष्ठित, संपन्न, राजपूत परिवार, 25/158, स्लिम, स्मार्ट, कानवेंटेड, बी.काम., इंटीरियर डेकोरेशन डिप्लोमा, अन्य कोर्सेस, गृहकार्य-दक्ष कन्या हेतु सुयोग्य, सजातीय वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 698, सरिता, नई दिल्ली-110055.

मारवाड़ी गोयल, 22 वर्षीया, 51 किलो, 168 सें.मी., बी.एससी., शिक्षिका, गृहकार्यदक्ष, संतानोत्पत्ति में असमर्थ कन्या हेतु सिर्फ सजातीय, 29 वर्ष तक का वर चाहिए. तलाकशुदा या विधुर, एक संतान (लड़का) वाला भी स्वीकार्य. शीघ्र विवाह. लिखें: वि.नं. 699, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मी क्षत्रिय, 23, 155, एम.ए., बी.एड., प्रतिष्ठित, गौरवर्ण, गृहकार्यदक्ष, सिलाईकटाई एवं टाइपिंग में निपुण, सुंदर, सेवारत कन्या हेतु सजातीय, सेवारत वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 700, सरिता, नई दिल्ली-110055.

राजपूत, 25, 153, सुंदर, डेसू में कार्यरत, तलाकशुदा, निस्संतान कन्या हेतु वर चाहिए. जातिबंधन नहीं. सविवरण लिखें: वि.नं. 701, सरिता, नई दिल्ली-110055.

23 वर्षीया, 146 सें.मी., एम.ए., गृहकार्यदक्ष, मंगली कन्या हेतु सेवारत, सुयोग्य, मंगली, गढ़वाली ब्राह्मण वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 702, सरिता, नई दिल्ली-110055.

श्रीवास्तव, 20, 158 सें.मी., बी.एससी., कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. पिता प्रथम श्रेणी राजपत्रित अधिकारी. लिखें: वि.नं. 703, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28 वर्षीया, 152 सें.मी., एम.ए., बी.एड., पोमी, रंग साफ, गेहुंआ, कन्या हेतु शिक्षित व्यवसायी या सरकारी सेवारत वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 704, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गर्ग, बीसा अग्रवाल, सुंदर, 21 वर्षीया, बी.ए., उ.प्र. निवासी, संपन्न व्यावसायिक परिवार की कन्या हेतु सुयोग्य एवं सुशिक्षित वर चाहिए. उत्तम विवाह. पूर्ण विवरण सहित लिखें: वि.नं. 705, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मी क्षत्रिय, संभ्रांत परिवार, सुंदर, स्मार्ट, 26/165, एम.एससी. कंप्यूटर डिप्लोमा, कानवेंट शिक्षित, दिल्ली, जायदाद स्वामिनी हेतु उच्च शिक्षित वर चाहिए. जातिबंधन नहीं. शीघ्र विवाह. लिखें: वि.नं. 706, सरिता, नई दिल्ली-110055.

यादव/उत्तरप्रदेशीय, 27½, 164, एम.ए., बी.एड., स्वस्थ, सुंदर, सुशील, गौरवर्ण, गृहकार्यदक्ष कन्यार्थ सुयोग्य, स्वावलंबी वर. शीघ्र साधारण विवाह. सविवरण लिखें: वि.नं. 707, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माहेश्वरी, 24, 160 सें.मी., स्मार्ट, अति सुंदर, एम.ए., पीएच.डी. (सम्मिट), गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु गजेटेड आफिसर, प्रोफेसर, डाक्टर, इंजीनियर, सेवारत, सुंदर, सजातीय वर. अति उत्तम विवाह. लिखें: वि.नं. 708, सरिता, नई दिल्ली-110055.

22 वर्षीया, गोत्र सिंघल, एम.ए., रंग साफ, सुंदर, आकर्षक, गृहकार्यदक्ष, शाकाहारी, पश्चिमी उ.प्र. निवासी कन्या हेतु दहेजरहित, सजातीय वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 709, सरिता, नई दिल्ली-110055.

शनू, 18½, सावर्ण, वत्स गोत्र, शिक्षा केंद्रीय विद्यालय मद्रास से XI में, गृहकार्यदक्ष, गौरवर्ण, सुंदर, मांगलिक कन्यार्थ सजातीय, सुयोग्य, मांगलिक वर चाहिए. वर मैथिल ब्राह्मण होना चाहिए. पूर्ण विवरण सहित लिखें: वि.नं. 710, सरिता, नई दिल्ली-110055.

राजपूत, 26/152 सें.मी., सुंदर, तलाकशुदा, निस्संतान, स्वस्थ कन्या हेतु राजपत्रित अधिकारी वर चाहिए. निस्संतान विधुर स्वीकार्य, उपजातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 711, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सक्सेना (दूसरे), 24/145, बी.एससी. व एम.ए. में अध्ययनरत, गोरी, सुशील, स्लिम, गृहकार्यदक्ष, केंद्रीय सरकार में गजेटेड आफीसर कन्या हेतु सक्सेना वर चाहिए. शीघ्र उत्तम विवाह. लिखें: वि.नं. 712, सरिता, नई दिल्ली-110055.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वधवा, 30 वर्षीया, 153 सें.मी., गौरवर्ण, गृहकार्यदक्ष, विधवा, 2 बच्चे (9 वर्षीया लड़की, 7 वर्षीय लड़का) हेतु तलाकशुदा, विधुर सुयोग्य वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 713, सरिता, नई दिल्ली-110055.

स्वर्णकार [illegible], 22, 150, बी.ए., घरेलू काम में दक्ष, सुशील, आज्ञाकारी कन्या हेतु शिक्षित, कार्यरत, संपूर्ण विवरण सहित संपर्क के लिए वि.नं. 714, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जाटव 23, 157 सें.मी., बी.एससी., गौरवर्ण, सुंदर, सुशील, गृहकार्यदक्ष कन्यार्थ सुयोग्य वर. जातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 715, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कोरी (हिंदू, जुलाहा), 23 वर्षीया, 165 सें.मी., एम.ए. अध्ययनरत, गेहुआं, गृहकार्यदक्ष, पिता केंद्रीय सेवा में राजपत्रित अधिकारी, हेतु वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 716, सरिता, नई दिल्ली-110055.

यादव कन्या, 25, 157, सुंदर, स्लिम, गौरवर्ण एम.एससी., बी. म्यूजिक, डिप्लोमा बिजनेस मैनेजमेंट, गृहकार्यदक्ष हेतु सुयोग्य, सजातीय वर. लिखें: वि.नं. 717, सरिता, नई दिल्ली-110055.

दिगंबर जैन, 23, 160, बी.एससी., कंप्यूटर डिप्लोमा, गेहुआं रंग, आकर्षक, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु सुयोग्य जैन वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 718, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27/160, ब्राह्मण, एम.ए., बी.एड., गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु वर. शीघ्र विवाह. लिखें: वि.नं. 719, सरिता, नई दिल्ली-110055.

ब्राह्मण (नागर) 23 वर्षीया, 152 सें.मी., गौरवर्ण, एम.ए. (हिंदी) कन्यार्थ सजातीय वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 720, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27/155, स्वच्छवर्णा, ग्रेजुएट, घरेलू, आकर्षक, कायस्थ कन्यार्थ सर्विस/व्यवसायरत, सेहतमंद वर. पिता पेंशनर. चाचागण उच्चाधिकारी. दहेजमुक्त फौरन सुविवाह. उपजातीय/विधुर/तलाकशुदा भी लिखें: वि.नं. 721, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जायसवाल, 26, 165 सें.मी., बी.एससी., बी.एड., गौरवर्ण, गृहकार्यदक्ष, केंद्रीय विद्यालय सेवारत कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. सैनिक/बैंक अधिकारी को प्राथमिकता, बिना दहेज उत्तम विवाह, लिखें: वि.नं. 722, सरिता, नई दिल्ली-110055.

वधू चाहिए

बीसा अग्रवाल गर्ग, 22/168, गौरवर्ण, अंडर ग्रेजुएट, थोक दवा व्यवसाय से मासिक आय पांच अंकीय, एक मात्र पुत्र हेतु सजातीय, सुंदर एवं गृहकार्यदक्ष वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 629, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26 वर्षीय, 160 सें.मी., बी.एससी.–1 पास, मैकेनिकल इंजीनियरिंग में डिप्लोमा, जूनियर इंजीनियर के पद पर कार्यरत, पासी युवक हेतु न्यूनतम मैट्रिक, गृहकार्यदक्ष कन्या चाहिए. लिखें: वि.नं. 630, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कश्यप राजपूत (महरा, काहर, धीवर) 24/168 सुंदर, स्नातक, व्यवसायी, मासिक आय 6,000/- हेतु सुंदर, शिक्षित वधू चाहिए. पिता अवकाशप्राप्त राजपत्रित अधिकारी, भाई इंजीनियर, दिल्लीवासी, निजी निवास. लिखें: वि.नं. 631, सरिता, नई दिल्ली-110055.

वैश्य, 29, 165, 8,000/-, मैट्रिक, निजी व्यवसायरत, पिता विदेशी प्रतिष्ठान में उच्च अधिकारी, प्रतिष्ठित परिवार के युवक के लिए संभ्रांत परिवार की योग्य कन्या चाहिए. लिखें: वि.नं. 632, सरिता, नई दिल्ली-110055.

37, 170, 4,000/-, मिडिल, गेहुआं, अविवाहित, पंजाबी, (कारीगर स्वर्ण आभूषण, निजी व्यवसाय, लखनऊ) परिवार से संबंधरहित, परिवार पंजाब में, छोटे भाईबहन शादीशुदा, मकान, पूंजीपति नहीं, हेतु स्वस्थ, आकर्षक वधू, दहेज, जातिबंधन नहीं, प्राथमिकता निस्संतान विधवा. लिखें: वि.नं. 633, सरिता, नई दिल्ली-110055.

यादव, 28, 175, 2,800/-, एम.काम., केंद्रीय सरकार कर्मचारी हेतु गृहकार्यदक्ष, शिक्षित कन्या चाहिए. लिखें: वि.नं. 634, सरिता, नई दिल्ली-110055.

स्थानकवासी जैन, बड़े साजन, साधन संपन्न, प्रतिष्ठित परिवार, निजी व्यवसाय, आरोग्य शरीर, 47, विधुर हेतु निस्संतान जीवनसंगिनी चाहिए. लिखें: वि.नं. 635, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26/158, बी.ए. प्रथम वर्ष, गेहुआं, स्वस्थ, बेरोजगार युवक हेतु वधू चाहिए. विधवा, विकलांग स्वीकार्य. नेत्रहीन को प्राथमिकता. लिखें: वि.नं. 636, सरिता, नई दिल्ली-110055.

चौहान, 25, 183, मैकेनिकल इंजीनियर, स्लिम, स्मार्ट, निर्व्यसनी, प्रतिष्ठित परिवार, हेतु वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 637, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जायसवाल, 28 वर्षीय, 180 सें.मी., गोरे, स्नातक, मासिक आय पांच अंक, इस समय अमरीका पर्यटन पर, हेतु सुंदर, सुशील, सुशिक्षित (स्नातक), स्लिम, गृहकार्यदक्ष, जायसवाल/हैहय क्षत्रिय कन्या चाहिए. प्रतिष्ठित परिवार. विज्ञापन उत्तम चयन हेतु संपूर्ण विवरण लिखें: वि.नं. 638, सरिता, नई दिल्ली-110055.

मित्तल, 28/162, 5,000/-, ग्रेजुएट, व्यापार, स्मार्ट, हलका, मंगली युवक हेतु वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 639, सरिता, नई दिल्ली-110055.

23, 180, 3,000/-, त्रिवर्षीय डिप्लोमा मैकेनिकल, निजी मकान (आगरा), स्कूल मैनेजर, सक्सेना युवक हेतु कायस्थ वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 640, सरिता, नई दिल्ली-110055.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माहेश्वरी, 26, 170 सें.मी., 3,000/-, बी.क्राम., प्रतिष्ठित परिवार, युवक के लिए सुंदर, सुशील वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 641, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अग्रवाल (गर्ग), 26/165, एम.एससी., बी.एड., आकर्षक व्यक्तित्व, गोरा, सुंदर, निजी व्यवसाय, अच्छी आय (मलकापुर–महाराष्ट्र) स्थित युवक हेतु शिक्षित, गौरवर्ण, सुंदर, गृहकार्यदक्ष, प्रतिष्ठित परिवारीय, सुयोग्य वधू चाहिए. जन्मपत्री सहित लिखें: वि.नं. 642, सरिता, नई दिल्ली-110055.

38, 175, 4,000/-, संपन्न, वियुक्त हेतु धर्म, जातिबंधन रहित, सुंदर, स्वस्थ, सुशिक्षित, 45 वर्ष तक की, दिल्ली के नजदीक, तलाकशुदा, परित्यक्ता या बांझ पत्नी चाहिए जो सहभागिता के आधार पर संभ्रांत, सुविधायुक्त ग्रामीण अंचल में नर्सरी स्कूल को स्वतंत्रता व साहसपूर्वक चला सके. लिखें: वि.नं. 644, सरिता, नई दिल्ली-110055.

दृष्टिहीन, 26, 155, 1,500/-, सीनियर सेकंडरी पास, राजकीय विद्यालय में सहायक अध्यापक हेतु विधवा, तलाकशुदा, सुयोग्य वधू चाहिए. आंशिक विकलांग भी स्वीकार्य. लिखें: वि.नं. 645, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सुस्थापित, खूबसूरत, माहेश्वरी, 24, 177, बी.काम. आनर्स, न्यू अलीपुर, कलकत्ता में अपना निजी व्यवसाय एवं मकान, हेतु शिक्षित लंबी, गोरी, खूबसूरत वधू. प्राथमिकता संभ्रांत परिवारीय माहेश्वरी कन्या, पूर्ण बायोडाटा प्रथम बार में. विज्ञापन उत्तम चयन हेतु. लिखें: वि.नं. 646, सरिता, नई दिल्ली-110055.

38/173; गुरसिख, इंजीनियर क्लास-1, केंद्रीय सेवारत, जयपुर हेतु मेडिको, आर्किटेक्ट वधू. लिखें: वि.नं. 647, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25, 175, बी.एससी., पंजाबी, सचदेवा, मांगलिक, सुशील, इकहरा, कपड़ा व्यवसायी युवक हेतु सुशील, सुशिक्षित, सहृदय, मांगलिक, इकहरी वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 648, सरिता, नई दिल्ली-110055.

163, 1,800/-, 28 वर्षीय, 8 चश्माधारी, दुबलापतला, नेपाल के साधारण परिवार, हेतु जीवनसाथी चाहिए. असहाय भी सोचसमझ कर पत्र लिखें: वि.नं. 649, सरिता, नई दिल्ली-110055.

30, 165 सें.मी., बीसा, अग्रवाल (गोयल), बी.क्राम., देहली निवासी, व्यावसायिक, सुंदर, आकर्षक, मासिक आय पांच अंकीय, युवक हेतु सजातीय, ग्रेजुएट, सुंदर, गृहकार्यदक्ष वधू चाहिए. दहेज नहीं. लिखें: वि.नं. 650, सरिता, नई दिल्ली-110055.

शाकाहारी, सदाचारी, सुनियोजित परिवार संचालन के लिए उत्तर बिहारवासी, उच्च वेतनभोगी, स्वस्थ, ब्राह्मण, विधुर को सुशिक्षित, व्यवहारकुशल, लगभग पचास वर्षीया गृहलक्ष्मी चाहिए. सविस्तार लिखें: वि.नं. 651, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अग्रवाल गोत्र मंगल, 24, 160, हायर सेकंडरी, साड़ी व्यापारी, संयुक्त परिवारीय, आकर्षक व्यक्तित्व, सुंदर युवक हेतु अति सुंदर, शिक्षित, गृहकार्यदक्ष कन्या चाहिए. लिखें: वि.नं. [illegible], सरिता, नई दिल्ली-110055.

31/1[illegible] 3,0[illegible]या 0/-, [illegible]स्थानी, [illegible] युवक हेतु मह[illegible] जीवन[illegible] हो. लि[illegible] वि.नं. 72[illegible] सरिता, नई दिल्ली-110055.

25/165, गर्ग, बी.एससी., डी. फार्मेसी, निजी प्रतिष्ठित, मथुरा जिले में व्यवसायी, हेतु उपयुक्त अग्रवाल वधू चाहिए. लड़की व परिवार की पृष्ठभूमि मुख्य विचारणीय. लिखें: वि.नं. 724, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माहेश्वरी, 25/175/ बी.एससी., एअरफोर्स पायलट, मासिक आय 5,000/-, हेतु स्वजातीय, शिक्षित, योग्य कन्या चाहिए. लिखें: वि.नं. 725, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27/157/3,000/- प्रतिमाह, अ.ज.जा., सांवला रंग, स्वस्थ, म.प्र. शासन सेवारत, नवयुवक को वधू चाहिए. कोई बंधन नहीं. एक ही बार में लिखें: वि.न. 726, सरिता, नई दिल्ली-110055.

मैथिल, ब्राह्मण, शांडिल्य गोत्रीय, इंजीनियर (अणुशक्ति), केंद्रीय सेवारत, 25/175/4,000/-, हेतु सुंदर, सजातीय, मेडिको कन्या चाहिए. लिखें: वि.नं. 727, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जायसवाल (हैहय क्षत्रिय), 26, 163, ग्रेजुएट, डिप्लोमा कंप्यूटर साइंस, प्रतिष्ठित कंपनी में कंप्यूटर प्रोग्रामर पदस्थ, निजी मकान, युवकार्य सुंदर, सुशिक्षित वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 728, सरिता, नई दिल्ली-110055.

धीमान विश्वकर्मा, 26, 164 सें.मी., डाक्टर, सेवारत हेतु सुशील, गौरवर्ण, सुंदर एवं शिक्षित कन्या चाहिए. संभ्रांत, शिक्षित परिवार को प्राथमिकता. लिखें: वि.नं. 729, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जांगिड़ ब्राह्मण, प्रतिष्ठित परिवारीय, 30 वर्षीय, आकर्षक, ग्रेजुएट, निजी व्यवसायरत युवक हेतु संपन्न परिवारीय, सुंदर, गोरी, शिक्षित वधू चाहिए. उपजातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 730, सरिता, नई दिल्ली-110055.

पासी अनुसूचित जाति, 25/165/2,100/-, बी.ए., गौरवर्ण क्लर्क (डेसू) दिल्ली में युवक हेतु गोरी, सुंदर, शिक्षित, गृहकार्यदक्ष, दहेजरहित वधू चाहिए. शीघ्र विवाह लिखें: वि.नं. 731, सरिता, नई दिल्ली-110055.

शांडिल्य, 32 वर्षीय, 170 सें.मी., 2,000 रु., सरकारी सेवारत, शीघ्र कानूनन तलाक, युवक हेतु आत्मनिर्भर कन्या चाहिए. तलाक (विचाराधीन) विधवा, जातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 732, सरिता,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नई दिल्ली-110055.

राजस्थानी, 21/174, माहेश्वरी, बी.काम. (द्वितीय वर्ष), व्यापाररत युवक हेतु सेवारत/ प्रशिक्षणरत वधू चाहिए. दो निजी फ्लैट, प्रापर्टी, पिता सरकारी अधिकारी, दहेजबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. [illegible] सरिता, नई [illegible] 055.

[illegible] 65 सें.मी., एम.क[illegible] तोगी, इंदौर, बैंक सेवारत हे[illegible] सुंदर, सुशिक्षित वधू [illegible] जाति [illegible] न नहीं. लिखें: वि.नं. [illegible] 73, सरि[illegible] -110055.

27/172/[illegible],000/-, इंटरमीडिएट, निजी व्यवसाय, कान्यकुब्ज ब्राह्मण, दिल्लीवासी हेतु सजातीय, घरेलू कन्या चाहिए. जन्मकुंडली सहित लिखें: वि.नं. 735, सरिता, नई दिल्ली-110055.

प्रतिष्ठित नाई युवकें, बी.काम., 30/165/ 3,000/-, केंद्रीय संस्थान, भाई बी. एससी., कंप्यूटर डिप्लोमा, 28/169/2,000/-, गौरवर्ण हेतु सुंदर, स्नातक घरेलू वधू लिखें: वि.नं. 736, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27 वर्षीय, टांक, इंटर पास, मासिक आय चार अंकों में, युवक हेतु जीवनसंगिनी चाहिए. लिखें: वि.नं. 737, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अनुसूचित जाति चमार, 28/165/2,000/-, सरकारी सेवारत, पोस्टग्रेजुएट, संपन्न परिवारीय, गेहुआं रंग, हाथपैर में सफेद दाग हल्के निशान, उ.प्र. निवासी वर हेतु सुशील, शिक्षित कन्या चाहिए. जाति, उपजाति, दहेजबंधन नहीं. शीघ्र लिखें: वि.नं. 738, सरिता, नई दिल्ली-110055.

दिगंबर जैन, अग्रवाल गर्ग, 28 वर्षीय, बी.एससी., एलएल.बी., स्वयं का अंगरेजी दवाइयों का व्यापार, संपन्न परिवार, हेतु सजातीय व सुशिक्षित कन्या चाहिए. लिखें: वि.नं. 739, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कान्यकुब्ज ब्राह्मण, बैंक सेवारत, आर्थिक संपन्न, 35/162/3,400/-, हेतु सुंदर, गोरी, सरकारी सेवारत वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 740, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मि क्षत्रिय, सुंदर, 24/160, एम.सी.ए. (कंप्यूटर साइंस), व्यावसायिक प्रतिष्ठान में कार्यरत युवक हेतु सुंदर, सुशिक्षित वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 741, सरिता, नई दिल्ली-110055.

30 वर्षीय, 165 सें.मी., गौरवर्ण, बी.ए.हिंदी, फिल्म निर्माण में लगा युवक घरजंवाई बनना चाहता है. कुंआरी, विधवा, कम या अधिक उम्र कोई बंधन नहीं, बंबईवासी को प्राथकिता, लिखें: वि.नं. 742, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25/168, बीसा, अग्रवाल गर्ग, बी.ई., मांगलिक, निजी व्यवसाय, मासिक आय 10,000/-, पिता म.प्र. शासकीय सेवा में अधीक्षणयंत्री, हेतु अग्रवाल, मांगलिक, गौरवर्ण, सुंदर, शिक्षित, प्रतिष्ठित परिवारीय वधू चाहिए. विज्ञापन उत्तम चयन हेतु. इंदौर, उज्जैन, भोपाल को प्राथमिकता. लिखें: वि.नं. 743, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माहेश्वरी, 37 वर्षीय, 164 सें.मी., स्नातक निजी व्यवसायरत, दिल्लीवासी विधुर (2 पुत्रियां), हेतु सुयोग्य जीवनसाथी. विधवा, तलाकशुदा भी स्वीकार्य. उपजातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 744, सरिता, नई दिल्ली-110055.

22 वर्षीय, अरोड़ा, सुंदर युवक, डाक्टर (आयुर्वेदरत्न) अच्छी प्रैक्टिस, यू.पी. निवासी (पिता डाक्टर), निजी मकान, दुकान, के लिए सजातीय, सुंदर, डाक्टर, बी.ए.एम.एस. या सरकारी सेवारत वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 745, सरिता, नई दिल्ली-110055.

श्रीवास्तव, बैंककर्मी, 32/170/4,000/-, युवकार्य सरकारी सेवारत कन्या चाहिए. लिखें: वि.नं. 746, सरिता, नई दिल्ली-110055.

40, 5,000/-, निजी व्यवसाय, अविवाहित, रंग सांवला, स्लिम, उज्ज्वल भविष्य, अकेले युवक हेतु स्लिम, स्मार्ट, सुंदर, शिक्षित, विधवा, तलाकशुदा स्वीकार जो स्वतंत्र रूप से व्यवसाय संभाल सके. ऐसी युवतियां स्वयं पूर्ण विवरण सहित लिखें. जातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 747, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गुजराती जैन, इंजीनियर, 27/165 सें.मी., मध्य प्रदेश कार्यरत हेतु सुंदर, सुशील, गृहकार्य में निपुण स्नातक वधू चाहिए. शीघ्र लिखें: वि.नं. 748, सरिता, नई दिल्ली-110055.

बीसा अग्रवाल, बिहार निवासी, मंगल गोत्र, प्रतिष्ठित परिवार, 26, 170, स्मार्ट, बी.काम., सुव्यवस्थित, निजी व्यवसाय, मकान, वाहन, आय पांच अंकीय, युवक हेतु सुंदर, सुशिक्षित वधू चाहिए. विज्ञापन उत्तम चयनार्थ. लिखें: वि.नं. 749, सरिता, नई दिल्ली-110055.

मध्य प्रदेश निवासी, उच्च शिक्षित, सुसंपन्न, महाराष्ट्रियन हटकर मराठा परिवारीय, गौरवर्ण, स्मार्ट, एम.बी.बी.एस, युवक मेडिकल आफीसर, 28 वर्ष, 165 सें.मी., हेतु सुयोग्य वधू चाहिए. कोई बंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 750, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मि क्षत्रिय, केंद्रीय प्रतिष्ठान, इंजीनियर, 27/178/7,000/-, हेतु सुशिक्षित वधू. लिखें: वि.नं. 751, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अग्रवाल (कंसल), 26/157/4,000/-, बी.एससी., बंगलौर स्थित युवक हेतु गोरी, सुंदर, सुयोग्य कन्या चाहिए. लिखें: वि.नं. 752, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26/167/2,000/-, खोरवाल, दिल्ली प्रशासन कार्यरत युवक हेतु सुंदर, सुयोग्य, कार्यरत, दहेजरहित वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 753, सरिता, नई दिल्ली-110055.

33, 180 सें.मी., गैर जटसिख (पगड़ीधारी), राष्ट्रीयकृत बैंक सेवारत, सेक्सुयल कमजोरी महसूस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करते युवक हेतु सुंदर वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 754, सरिता, नई दिल्ली-110055.

33/180, उच्चशिक्षित, आकर्षक, ब्राह्मणार्थ सुकार्य नियोजक/घरदामादेच्छु,परिवारी,पतली सुवधू. लिखें: वि.नं. 755, सरिता, नई दिल्ली-110055.

प्रतिष्ठित, संपन्न, अग्रवाल गोयल परिवारीय, 25 वर्षीय, 169 सें.मी., आकर्षक, बी.बी.ए., एलएल.बी., मैरिट होल्डर (दुर्ग भिलाई में निजी कारखाना, मकान एवं कृषि संपत्ति) युवक हेतु सुंदर, गोरी, सुशील, घरेलू, सजातीय कन्या चाहिए. लिखें: वि.नं. 756, सरिता, नई दिल्ली-110055.

चमार (अंबेडकरवादी) 25½, 178, 2,200/-, जू.ई. सिविल, केंद्रीय सेवारत उ.प्र. हेतु सुंदर, सुशील, शिक्षित, संभ्रांत परिवारीय कन्या चाहिए. प्राथमिकता नवबौद्ध. कोई बंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 757, सरिता, नई दिल्ली-110055.

29 वर्षीय, 178, खानदानी फोटोग्राफर, अच्छा स्टेटस, स्वच्छ श्रेणी, खूबसूरत, आकर्षक व्यक्तित्व, सुशिक्षित एवं संवेदनशील फोटोग्राफर, निजी व्यवसाय, आय पांच अंकीय हेतु सुंदर, लंबी, गोरी, शिक्षित, स्लिम गौरवर्ण, सौम्य स्वभाव, दहेज नहीं. अति शीघ्र विवाह. पूर्ण विवरण लिखें: वि.नं. 758, सरिता, नई दिल्ली-110055.

दो क्षत्रिय नवयुवक 32 और 35 वर्ष, सरकारी कर्मचारी, वेतन चार अंकीय, कद 165 सें.मी., हेतु वधू चाहिए. दहेज, जातीयबंधन नहीं, शीघ्र विवाह. लिखें: वि.नं. 759, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मि क्षत्रिय, 28, 180, अमरीका अध्ययनरत, कंप्यूटर, एम.एस., एम.बी.ए., प्रतिष्ठित परिवार, हेतु उच्च शिक्षित, आकर्षक ऊंचाई, न्यूनतम 165 सें.मी., वधू चाहिए. जातिभाषा, दहेजबंधन रहित. पूर्ण विवरण सहित लिखें: वि.नं. 760, सरिता, नई दिल्ली-110055.

वैश्य, 29 वर्षीय, 170 सें.मी., कंप्यूटर प्रोफेशनल, अमरीकन नागरिक हेतु वधू चाहिए. कन्या कानवेंट पढ़ी या अंगरेजी भाषा अच्छी बोल सके व प्रोफेशनली शिक्षित हो. जाति व दहेजबंधन नहीं. जन्मतिथि व फोटो पूर्ण विवरण सहित भेजें: LCR. P.O. BOX 162 NIAGARA FALLS. NY-14302. USA

कुशवाहा राजपूत, एअरफोर्स पुलिस कारपोरल, 29/182/2,000/-, हेतु सजातीय वधू चाहिए. सविवरण लिखें: वि.नं. 761, सरिता, नई दिल्ली-110055.

चमार, 29, 164, एम.बी.बी.एस., हाउस जाबरत, स्मार्ट, संपन्न परिवार, हेतु मेडिको सेवारत, सुंदर, दहेजविरोधी वधू चाहिए. जातिबंधन नहीं. विज्ञापन उत्तम चयन हेतु. लिखें: वि.नं. 762, सरिता, नई दिल्ली-110055.

प्रतिष्ठित, सुशिक्षित, माहेश्वरी, दिल्ली परिवारीय, 26/173/65, गौरवर्ण, अति [illegible] कंप्यूटर इंजीनियर, बी.टेक. (आई.आई.टी.) एम.एस. (अमरीका), पीएच.डी. अध्ययनरत [illegible] अमरीका उच्चपदस्थ, हेतु सुंदर, सुशिक्षित [illegible] चाहिए. लिखें: वि.नं. 763, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अग्रवाल, [illegible] य, 180 सें.मी., [illegible] ला. ग्रेजुएट, [illegible] व्यवसाय, युवक [illegible] पारिवारिक [illegible] नई दिल्ली-110055.

32/156, व्यवसायरत, सिंधी युवक हेतु [illegible] दहेजबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 765, सरिता, [illegible] दिल्ली-110055.

दृष्टिहीन, 27 वर्षीय, 160 सें.मी., 3,000 [illegible] एम.ए., बी.एड., राजकीय अध्यापक हेतु आत्मनिर्भर विवाहइच्छुक वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 766, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सुंदर, गृहकार्यदक्ष, पारिवारिक, सुशिक्षित माहेश्वरी कन्याएं 26, 177 सें.मी., बी.टेक. प्लास्टिक इंजीनियरिंग डिप्लोमा, गौरवर्ण, स्मार्ट, केंद्रीय सरकारी प्रतिष्ठान में कार्यरत एवं 25, 17[illegible] सें.मी., बी.एससी., बिजनेस मैनेजमेंट डिप्लोमा, [illegible] शेयर व्यवसाय, गेहुआं रंग, स्मार्ट, मद्रास [illegible] भाइयों हेतु चाहिए. जन्मपत्री सविवरण आवश्यक. लिखें: वि.नं. 767, सरिता, नई दिल्ली-110055.

मारवाड़ी अग्रवाल, 26/178, किसी [illegible] लायब्लिटी बिना, कानूनन तलाकशुदा, आकर्षक [illegible] को सुदर्शनी, घरेलू वधू चाहिए. बंबई में निजी व्यापार, पांच अंकीय आय, फ्लैट, कार द्वारा सुव्यवस्थित. [illegible] नहीं. प्रतिष्ठित परिवारीय कन्याओं के अभिभावक तलाकशुदा नहीं, संपर्कार्थ लिखें: वि.नं. 768, सरिता, नई दिल्ली-110055.

संपन्न, 45 वर्षीय, अविवाहित हेतु शिक्षित विधवा, परित्यक्ता सीधा पत्र लिखें: वि.नं. 76[illegible] सरिता, नई दिल्ली-110055.

जैन, 25/170/50, सुंदर, ग्रेजुएट, अपनी [illegible] इलेक्ट्रोनिक्स इंडस्ट्रीज, आय पांच अंकीय, हेतु [illegible] सुंदर, शार्प फीचर, घरेलू जैन कन्या चाहिए. [illegible] दिल्ली निवासीय प्राथमिकता. लिखें: वि.नं. 77[illegible] सरिता, नई दिल्ली-110055.

30, अग्रवाल, आई.ए., इंटरनेशनल इलेक्ट्रोनिक्स पार्ट्स सप्लायर, कुंआरा, आ[illegible] अकेला, मातापिता नहीं, विदेश में रहने का इच्छुक, निजी मकान एवं संपत्ति, हेतु विदेशी कन्या चाहिए. उम्र, धर्म, जातिबंधन नहीं. विधवा, तलाकशुदा, [illegible] स्वीकार्य. प्रथम बार सविवरण लिखें: वि.नं. [illegible] सरिता, नई दिल्ली-110055.

24/170, कस्टम इंसपेक्टर (केंद्र सरकार) [illegible] कान्यकुब्ज ब्राह्मण युवकार्य वधू. लिखें: वि.नं. [illegible] सरिता, नई दिल्ली-110055.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

26/157/2,500/-, सरकारी अध्यापक, वि.नं. 780, सरिता, नई दिल्ली-110055.

नेत्रहीन युवक को वधू चाहिए. शिक्षा, जाति, धर्म का बंधन नहीं. आंशिक विकलांगता को प्राथमिकता. लिखें: वि.नं. 773, सरिता, नई दिल्ली-110055.

प्रोफेशनल, बिजनेसमैन, 30, अविवाहित, [illegible] स्थापित [illegible] सुयो[illegible] परंपरागत रिवाजों [illegible] लिखें: ROH[illegible] KI[illegible]NNA [illegible]PADA[illegible] MON[illegible]REAL[illegible]A

26/170/5,000/-, ग्रेजुएट, निजी व्यवसाय, गेहुआं रंग, काठमांडू (नेपाल) निवासी मारवाड़ी, ब्राह्मण हेतु सुशील, गृहकार्यदक्ष, सजातीय कन्या चाहिए. लिखें: वि.नं. 774, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जातिवाद दंडित, कृषक, अनुसूचित जाति, शिक्षा अडेनबरा, लायलपुर, लाहौर, अमृतसर, गजेटेड अधिकारीगण में तांबा, चांदी, सोना पदक, संपन्न परिवार से, ज्येष्ठ कमीशंड अधिकारी, सीमा सुरक्षा बल, 29 वर्षीय, 173 सें.मी., इकहरा शरीर, रंग साफ, कालिज दौड़ाक टीम कप्तान हेतु स्नातक, सुंदर कन्या 25 वर्ष आसपास, निचले पहाड़ी क्षेत्र में रुचि, भाषा, क्षेत्र, जातिवाद नहीं. आधुनिक परिवार [illegible]भव्यवहार करें. लिखें: वि.नं. 775, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24 वर्षीय, 157 सें.मी., एम.एससी., (एप्लाइड गणित), पाल धनगर, प्राइवेट लिमिटेड कंप्यूटर प्रोग्रामर के पद पर कार्यरत, म.प्र. निवासी युवक हेतु [illegible]शील, सुंदर, सुशिक्षित वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. [illegible]76, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माहेश्वरी, 29½/177,8,000/-, स्मार्ट प्रैक्टिसिंग चार्टर्ड एकाउंटेंट, निस्संतान, तलाकशुदा युवक हेतु सुंदर, सुशील, सुयोग्य वधू. स्वतंत्र विचारवाली/ गरीब, अनाथ, स्वयं भी पूर्ण विवरण साथ व्यवहार करें. लिखें: वि.नं. 777, सरिता, नई दिल्ली-110055.

आर्किटेक्ट, इंजीनियर, (बी.आर्च.), 24/169, सेवारत युवक हेतु वधू चाहिए. जाति, देशबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 778, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अमरीका में सेवारत, उच्चशिक्षित मैकेनिकल इंजीनियर, 28/175, गौरवर्ण, रूपवान हैहय क्षत्रिय (जायसवाल) हेतु अंगरेजी माध्यम से पढ़ी, ऊंची, गोरी, सुंदर, उच्च शिक्षित, उच्च परिवारीय वधू चाहिए. इंजीनियरिंग, गणित, कंप्यूटर विज्ञान, डिग्रीधारी को प्राथमिकता. जातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 779, सरिता, नई दिल्ली-110055.

तमिल ब्राह्मण अय्यर, 30/168, चार्टर्ड एकाउंटेंट, बहुराष्ट्रीय कंपनी बैंगलौर में सेवारत युवक हेतु प्रस्ताव आमंत्रित. कन्या को व्यावसायिक योग्यता प्राप्त होना आवश्यक, जैसे डाक्टर, इंजीनियर या एम.बी.ए., जाति या प्रांत बंधन नहीं. दहेज नहीं चाहिए. उत्तर भारतीय कन्या को प्राथमिकता. लिखें:

29, 165, विश्वकर्मा, आई.सी.डब्ल्यू.ए., स्वस्थ, सेवारत हेतु बी.एड., उच्च शिक्षित वधू. लिखें: वि.नं. 781, सरिता, नई दिल्ली-110055.

पंजाबी, खत्री, 25, 167, आय चार अंकीय, केंद्रीय सरकार सेवारत, निजी कोठी, कार, हेतु अति सुंदर वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 782, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जट सिख (क्लीन शेवन), 28, 167 सें.मी., 2,750/-, जूनियर इंजीनियर (रक्षा) सेवारत युवक हेतु वधू. प्राथमिकता मिलिट्री नर्स, बंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 783, सरिता, नई दिल्ली-110055.

धानुक, बिहार निवासी, 25/175/3,000/-, गोरा, स्मार्ट, कार्यरत, विद्युत अभियंतार्थ स्नातक, सुंदर, सुशील, गृहकार्यदक्ष, सजातीय कन्या चाहिए. लिखें: वि.नं. 784, सरिता, नई दिल्ली-110055.

30 (लखनऊ), सरकारी सेवारत, लिपिक घरजंवाई बनना चाहता है. धर्म पूछने वाले न लिखें: वि.नं. 785, सरिता, नई दिल्ली-110055.

मुसलिम (पठान), 29/180/3,500/-, पी.जी.टी., केंद्रीय विद्यालय, उ.प्र. निवासी हेतु सुंदर, सेवारत कन्या चाहिए. लिखें: वि.नं. 786, सरिता, नई दिल्ली-110055.

हिंदू (नाई), 25, 168, 11वीं, 6,000/-, ब्यूटी पार्लर/सैलून व्यवसायी, अपना मकान (दिल्लीवासी) हेतु योग्य, सुशील, गृहकार्यदक्ष, सजातीय कन्या चाहिए. लिखें: वि.नं. 796, सरिता, नई दिल्ली-110055.

वरवधू चाहिए

कान्यकुब्ज ब्राह्मण, जूनियर इंजीनियर, 27/177/3,500/-, हेतु सुशील, पतली, लंबी, कम से कम स्नातक या जूनियर इंजीनियर वधू चाहिए. एम.ए., बी.एड., 23/168, गेहुआं, पब्लिक स्कूल नियुक्त पुत्री हेतु सुस्थापित लंबा वर चाहिए. इंजीनियर परिवार, पिता संयुक्त निदेशक. लिखें: वि.नं. 666, सरिता, नई दिल्ली-110055.

लोधी क्षत्रिय, 29/170/9,000/, प्रतिभाशाली, पोस्ट ग्रेजुएट, कंप्यूटर प्रोफेशनल हेतु सुंदर, सुयोग्य, पोस्ट ग्रेजुएट कन्या एवं सुंदर नाकनक्श, आकर्षक, सांवली, 24/162/42, एम.ए., कंम्प्यूटर डिप्लोमा, गृहकार्यदक्ष कन्यार्थ सुयोग्य, कार्यरत, सजातीय वर. संभ्रांत परिवार, (पिता उच्च केंद्रीय अधिकारी). सविवरण लिखें: वि.नं. 787, सरिता, नई दिल्ली-110055.

30, 28 वर्षीय, ग्रेजुएट हेतु कार्यरत/नौकरी/ व्यवसाय, घरजंवाई बनाने वाले कायस्थ वधू एवं 35 वर्षीया, निस्संतान, परित्यक्ता हेतु कायस्थ वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 788, सरिता, नई दिल्ली-110055.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यक्तिगत विज्ञापनों की दरें

सरिता : 5.00 रु. प्रति शब्द
वूमंस ईरा : 3.50 रु. प्रति शब्द
सरिता व वूमंस ईरा : 7.00 रु. प्रति शब्द.
साधारण डाकखर्च रु. 20/- पंजीकृत डाकखर्च रु. 50/-.

अन्य व्यक्तिगत विज्ञापनों की दर सरिता में 9.00 रु. प्रति शब्द है, तथा वूमंस ईरा में 5.00 रु. प्रति शब्द. यदि सरिता के साथसाथ वही विज्ञापन वूमंस ईरा में भी प्रकाशित कराया जाए तो उस के लिए केवल 2.50 रु. अतिरिक्त यानी 11.50 रु. प्रति शब्द होगा.

धनराशि अग्रिम आने पर ही आप का विज्ञापन प्रकाशित किया जा सकेगा.

विज्ञापन की कटिंग/कटिंग्स विज्ञापन प्रकाशित होने के पश्चात भेजी जाएंगी.

मूल विज्ञापन के साथ लिखें : वि.नं... सरिता, नई दिल्ली-110055. इन 6 शब्दों का मूल्य आवश्यक है. 'फोटो सहित' शब्द वाले व विज्ञापनदाता के निजी पते वाले विज्ञापन स्वीकार नहीं किए जाते. पर विदेशों में पत्रव्यवहार करने वाले विज्ञापनों में निजी पते छापे जाते हैं ताकि पत्रव्यवहार तुरंत हो सके. इन में बाक्स नं. की सुविधा उपलब्ध नहीं है.

विधवाओं व जाति/धर्म का उल्लेख न कर विवाह करने वालों के विज्ञापन आधे शुल्क पर प्रकाशित किए जाते हैं. ऐसे विज्ञापनों में विज्ञापनदाता की निजी जाति/धर्म का उल्लेख भी नहीं होना चाहिए.

कृपया शुल्क मनीआर्डर, पोस्टल आर्डर या बैंक ड्राफ्ट द्वारा अग्रिम भेजें. मनीआर्डर कूपन, पोस्टल आर्डर व ड्राफ्ट पर "सरिता, विज्ञापन विभाग, नई दिल्ली-110055." अवश्य लिखें. मनीआर्डर लगभग 45 दिन में प्राप्त हो रहे हैं. शीघ्रता के लिए पोस्टल आर्डर या बैंक ड्राफ्ट भेजने की कृपा करें. चैक स्वीकार नहीं किए जाते.

विशेष छूट : यदि एक ही विज्ञापन लगातार दो अंकों में प्रकाशित कराया जाए तो तीसरे अंक में विज्ञापन मुफ्त छपेगा. केवल 20 रु. डाक व्यय के अतिरिक्त देने होंगे, यानी डाक खर्च कुल 60 रु. एवं पंजीकृत डाक व्यय 150 रु. होगा.

पूर्ण विवरण के लिए लिखें :

[illegible] विज्ञापन [illegible]

[illegible]

[illegible] कनाट[illegible]

नई [illegible] 110001 फोन - 5321313.

सुशिक्षित, संभ्रांत, सुसंपन्न, आकर्षक व्यक्तित्व, 12 वर्ष तक का स्वस्थ, स्मार्ट बच्चा गोद [illegible] चाहते हैं. लिखें: वि.[illegible] सरिता, नई [illegible] 110055.

सं[illegible] हीन, [illegible] तक [illegible] दो वर्ष [illegible] बाल [illegible] गोद [illegible] सामाजिक संस्थाएं, अवि[illegible]हित भा[illegible] लिखें: वि.नं. 790, सरिता, नई दिल्ली-110055.

हिंदू कन्या, 4 माह, गोद लेने के इच्छुक [illegible] संपर्क करें. लिखें: वि.नं. 791, सरिता, नई दिल्ली-110055.

रिक्त स्थान

आवश्यकता है प्रशिक्षित व्यक्ति की, जिन [illegible] मशीन से पापड़ निर्माण एवं मार्केटिंग का अनुभव [illegible] हर्ष शर्मा एडवोकेट, स्वर्ग आश्रम रोड़, हापुड़, [illegible]

एग्जीक्यूटिव, 35, हेतु युवा, स्मार्ट, सामाजिक [illegible] महिला पर्यटक सहयात्री चाहिए. विवरण [illegible] लिखें: वि.नं. 794, सरिता, नई दिल्ली-110055.

30 वर्षीय, सुंदर, शिक्षित युवक को गृहकार्य [illegible] अकेली, आधुनिक अविवाहिता/विवाहिता चाहि[illegible] दोस्त तुल्य सम्मान. लिखें: वि.नं. 795, सरिता, [illegible] दिल्ली-110055.

मेडिकल

प्लास्टिक/कास्मेटिक शल्य चिकित्सा व [illegible] के गड्ढे चेचक दागों का सूई द्वारा स्थाई [illegible] अत्यधिक चर्बी सक्शन द्वारा निकालना. केंद्र: 11-[illegible] पुराना राजेंद्र नगर, नई दिल्ली. दूरभाष: 58[illegible]

व्यवसाय

अमरीकन ज्ञान पर अपना नाम, पता, [illegible] उत्तम क्वालिटी गोंद लगे लेबिल छपवा सकते हैं [illegible] के बाईं ओर सुनहरे बार्डर, शुल्क रु. 60, [illegible] द्वारा (डाक खर्च अलग) कुलदीप सिंह, 32, [illegible] अमृतसर–143017.

स्वतंत्र लेखन

लेखकोपयोगी साहित्य मुफ्त मंगाएं. [illegible] प्रकाशन, अंबाला छावनी (हरियाणा).

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अप्रैल (द्वितीय) 1991 मूल्य 7.00

सरिता

संपादक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शुक्र है, घर में डेटॉल साबुन रहता है!

१००% सम्पूर्ण स्ना

– मैल और छिपे कीटाणुओं
दूर करने के लि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

जब साधारण स्नान से न बने बात!

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरिता

सामाजिक व पारिवारिक पुनर्निर्माण की पाक्षिक पत्रिका

संपादक व प्रकाशक : विश्वनाथ

अंक : 864 अप्रैल (द्वितीय) 1991

कथा साहित्य

46 जरूरत
धन के लिए पति को विदेश भेजने वाली पत्नी

55 धरोहर
जेठानी को अपना बच्चा देने की कसक

62 बूआ की वापसी
बूआ को सबक सिखाने वाली गृहिणी

84 बिस्तर गोल
सरकार में मंत्रियों का उलटफेर

91 शक का जहर
मां के शक के कारण क्षुब्ध बेटी

96 सुप्रभात
परिवार को बिखरने से बचाने वाली मां

108 जीजाजी का पत्र
यौन सुख देने में असमर्थ जीजा

139 ईश्वर का दलाल
धूर्त स्वामी के जाल में भोलीभाली औरत

148 मुआयना
अफसर की ईमानदारी

154 गंदे पापा
मां के करतूतों का प्रभाव बेटी पर

DUPLICATE

लेख

22 संसदीय गरिमा का क्षरण
नियमों, परंपराओं की तिलांजलि

27 बचत और पूंजी निवेश
कैसे हो कम पूंजी से अधिक लाभ

67 आतंकवाद का बंधक बना पंजाब
सरकारी तंत्र की कमजोरियों का परिणाम

78 वायु प्रदूषण
कारण और निवारण

115 देख पराई चूपड़ी
दूसरों की संपन्नता से न कुढ़ने की सलाह

118 फसाद पति के देर से घर आने का
पत्नी की परेशानी और पति की मजबूरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

122 **सुंदरता को उम्र का मुहताज न बनाएं**
अधेड़ावस्था में शृंगार की आवश्यकता

128 **बच्चों की छुट्टियों को मधुर बनाएं**
छुट्टियों में मौजमस्ती की छूट

133 **मनुस्मृति**
ब्राह्मणों का रक्षा कवच

स्तंभ

66 कटूक्तियां
81 पाठकों की समस्याएं
103 बंबई महानगर में
114 इन्हें भी आजमाइए
138 बच्चों के मुख से
178 पासा पलट गया
179 इधर उधर
183 चंचल छाया

8 आप के पत्र
17 सरित प्रवाह
38 नए पकवान
42 नए फैशन

कविताएं

14 यादों के वन
35 कह दो तो
83 डोली है सजाई
90 मिलन की घड़ी
147 तुम पास तो बैठो

संपादकीय, विज्ञापन व प्रकाशन कार्यालय :
दिल्ली प्रेस भवन, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.
दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन लि. के लिए विश्वनाथ द्वारा प्रकाशित तथा दिल्ली प्रेस समाचार पत्र प्रा.लि. साहिबाबाद/गाजियाबाद में मुद्रित
अन्य कार्यालय : अहमदाबाद-503, नारायण चैंबर्स, आश्रम रोड, अहमदाबाद-380009. बंगलौर : 302-बी, ए' वर्क्स कार्नर एपार्टमेंट्स, 3, वर्क्स रोड, बंगलौर-560001. बंबई : 79-ए, मित्तल चैंबर्स, नरीमन पाइंट, बंबई-400021. कलकत्ता : तीसरी मंजिल, पोद्दार पाइंट, 113, पार्क स्ट्रीट, कलकत्ता-700016. मद्रास : 14, पहली मंजिल, सीसंस कांप्लेक्स, 150/82, मांटीअथ रोड, मद्रास-600008. सिकंदराबाद : 122, पहली मंजिल, चिनाय ट्रेड सेंटर लेन, 116, पार्कलेन, सिकंदराबाद-500003.

© दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन लि. बिना आज्ञा कोई रचना किसी प्रकार उद्धृत नहीं की जानी चाहिए

सरिता में प्रकाशित कथा साहित्य में नाम, स्थान, घटनाएं व संस्थाएं काल्पनिक हैं और वास्तविक व्यक्तियों, संस्थाओं से उन की किसी भी प्रकार की समानता संयोग मात्र है.
वैवाहिक विज्ञापन विभाग : एम-12, कनाट सरकस, नई दिल्ली-11001.
वार्षिक मूल्य केवल ड्राफ्ट/मनीआर्डर द्वारा ही 'सरिता' के नाम से ई-3, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-110055. को ही भेजें.
चैक व वी.पी.पी. स्वीकार नहीं किए जाते.
मूल्य : विदेशों में (समुद्री डाक से) 300 रु., (हवाई डाक से) 675 रु.

मूल्य : एक प्रति 7.00 रुपए. वार्षिक 168 रुपए.
वायुसेवा अधिभार 50 पैसे प्रति
सिल्चर, डिब्रूगढ़, अगरतल्ला, तेजपुर, इंफाल, पोर्ट ब्लेयर, अकारस और नेपाल में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Che

गुलाब की खुशबू भरा
अंग निखारे रेशम सा

पेश है
एन् फ्रेंच सैटिन रोज़
हेयर रिमूवर क्रीम और लोशन-
जिसमें है बन्द, गुलाब की
भीनी-भीनी सुगन्ध

नया एन् फ्रेंच सैटिन रोज़-इसमें बसी गुलाब की भीनी-भीनी सुगन्ध त्वचा पर लगते ही मन को गुलाब सा महका देती है. एन् फ्रेंच, त्वचा में समाकर बालों को बड़ी नर्माई से साफ़ कर निकालता है. इसमें मिलाए गए खास बेबी ऑइल से त्वचा हो जाती है रेशम-रेशम... गुड़ी सी मुलायम.

जी हाँ, गुलाब की खुशबू भरा नया एन् फ्रेंच सैटिन रोज़ हेयर रिमूवर लोशन और क्रीम, आपके तन को दे महका-महका रूप.

SATIN ROSE

एन् फ्रेंच स्वच्छता और खूबसूरती का अनोखा एहसास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मम्मी के शॉपिंग से लौटने पर

हमारे खेल के बाद

पापा के ऑफ़िस से आने पर

दादा जी की सैर के बाद

ऑरेंज ■ पाइनेपल ■ लाइम ■ शाही गुलाब ■ काला खट्टा ■ कूल ख़स ■ केसर इलायची

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होमवर्क करते समय

ज़रा बताइए, कौन सा
समय रसना का समय नहीं?
जवाब आसान नहीं.
चूँकि हर मौक़ा है
रसना पीने का मौक़ा
इसलिए कोई भी समय है
रसना का समय. है न?

टीवी देखते समय

आ इ ल व यू र स ना

पहला
ISI
प्रमाणित
सॉफ्ट ड्रिंक
कॉन्सेंट्रेट
इसमें
बी.टी. ओ नहीं है

सोडा (जल जीरा) ■ टूटी फ़्रूटी ■ मैंगो राइप

* केवल चुने हुए शहरों में ही उपलब्ध

Mudra:A.EAMR.5488 Hin

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आप के पत्र

सरित प्रवाह/मार्च/प्रथम

खाड़ी युद्ध से संबंधित आप की टिप्पणी सटीक लगी. देर से ही सही, आखिर सद्दाम हुसैन के होश ठिकाने आ ही गए. यदि वह सुरक्षा परिषद का प्रस्ताव शुरू में ही मान लेता तो आज खाड़ी क्षेत्र बरबाद होने से बच जाता, साथ ही सद्दाम को यों अपमानित हो कर कुवैत से वापस न आना पड़ता. इराक को इस युद्ध से लाभ तो कुछ नहीं हुआ परंतु बरबादी इतनी हुई है कि उस के पुनर्निर्माण में वर्षों लग जाएंगे. तेल के कुओं में लगी आग से पर्यावरण को भी काफी क्षति हुई है.

जो सद्दाम बहुराष्ट्रीय सेना से छः साल तक युद्ध लड़ने की बातें कर रहा था तथा जिसे जमीनी लड़ाई का बेसब्री से इंतजार था, वह दो दिन भी जमीनी युद्ध नहीं झेल पाया और कुवैत से भाग खड़ा हुआ. अब वह सुरक्षा परिषद के सभी प्रस्ताव मानने के लिए तैयार है. काश सद्दाम हुसैन को पहले ही सद्बुद्धि आई होती तो आज इतनी बेकसूर जानें नहीं जातीं.

आश्चर्य की बात तो यह है कि इतना सब कुछ होने के बावजूद कई मुसलिम समुदाय अब भी सद्दाम समर्थक नारे लगा रहे हैं. जबकि सचाई यह है कि मुसलिम हितों की रक्षा करना तो दूर सद्दाम हुसैन ने अपनी झूठी हठधर्मिता के कारण इस से पूर्व ईरान के साथ युद्ध में भी लाखों मुसलमानों की बलि चढ़ा दी थी. —अरुणकुमार त्रिपाठी

*

नर्मदा नदी पर सरदार सरोवर बांध के दोनों पहलुओं—लाभहानि—का अच्छा विवेचन किया गया है.

सरकार का कड़ा रुख पूरी तरह जायज है. यह योजना बड़ी मुशकिल से तैयार हुई है. इस काम में सामाजिक कार्यकर्ताओं तथा पर्यावरण प्रेमियों द्वारा रोड़े अटकाना शोभा नहीं देता. जब बांध बनेगा तो लाखों हेक्टेयर भूमि को सिचाई सुविधा और बिजली मिलेगी जो आत्मनिर्भरता के लिए आवश्यक है.

बाबा आमटे जैसे लोगों को पर्यावरण के लिए कार्य करना ही है तो उन्हें काम की कमी नहीं है. हिमालय की चोटियां नंगी होती जा रही हैं. इस के अलावा शहरों में भी बहुत कुछ किया जा सकता है. इस परियोजना में भी तो आम गरीब जनता के फायदे जुड़े हुए हैं. उन के द्वारा पुनर्वास आदि उठाकर लौटाना भी अनुचित है. यह एक तरह से राष्ट्रीय अपमान है. —राजीव मिश्रा

*

नर्मदा नदी पर सरदार सरोवर के निर्माण के विषय पर आप के निर्भीक तथा सटीक विश्लेषण से मैं पूरी तरह सहमत हूं.

बाबा आमटे को कुछ वर्ष पहले तक कौन जानता था लेकिन उन्होंने कुछ ऐसे अच्छे काम किए जिन्हें जनता व सरकार दोनों ने सराहा. इसी कारण उन्हें सरकार व अन्य संस्थाओं ने सम्मानित किया. अब अपनी लोकप्रियता को भुनाने के चक्कर में बाबा आमटे द्वारा पर्यावरण की दुहाई दे कर नर्मदा बांध का विरोध करना समझ में न आने वाली बात है.

जब कभी कोई ऐसी बड़ी परियोजना सरकार अपने हाथ में लेती है तो स्वाभाविक है कि कुछ लोगों को उस स्थान से हटाना भी पड़ेगा. हो सकता है कुछ पेड़ आदि भी काटने पड़ें, पर क्या इन दोनों का विकल्प नहीं है? विकल्प है—वृक्ष और लगाए जाएं, जनता को अन्यत्र बसाया जाए. केवल विरोध के लिए विरोध करना बुद्धिमता नहीं है.

गुजरात व मध्य प्रदेश की सरकारों ने इस मामले में कड़ा रुख अपना कर प्रशंसनीय कार्य किया है. यदि सरकार हड़तालों, अनशनों से प्रभावित होगी या डर कर योजनाएं स्थगित करने लगी तो विकास कार्य एकदम ठप हो जाएंगे. —इंद्रसिंह धिमान

*

हम ढिंढोरा पीट कर कर्ज लेते हैं

लेख 'भारतीय अर्थव्यवस्था और विदेशी ऋण' (मार्च/प्रथम) सराहनीय एवं समयानुकूल लगा.

आजकल हमारे राजनीतिबाजों के हाथों देश की अर्थव्यवस्था का जो ह्रास हो रहा है, उस की मिसाल दुनिया में शायद ही अन्यत्र हो. हमारे नेताओं की अर्धविक्षिप्तों जैसी हरकतों से अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर जो बदनामी हो रही है वह सर्वविदित है.

हमारी सरकार बेशुमार कर्ज ले कर गर्व से यह बताते नहीं अघाती कि हम ने फलां (पिछी जितने) मुल्क से अमुक राशि प्राप्त की है. कर्ज ले कर ढिंढोरा पीटना और फूले न समाना कहां की गैरतमंदी है? भीख मांगते समय इनसानियत का तकाजा है कि मांगने वाला नम्र हो कर मांगे लेकिन हमारा यह आलम है कि हम ढोल पीट कर कर्ज मांगने जाते हैं और आकाशवाणी तथा दूरदर्शन पर वक्तव्य देते हैं कि देखो हम अपने से कई गुना छोटे देश से इतनी उधार समेट लाए हैं. पंजाबी में कहावत है—'जिस ने लाही शर्म की लोई, उस का क्या बिगाड़े कोई.'

इसी अंक में 'आप के पत्र' स्तंभ में प्रकाशित सुधीर के पत्र में सरिता के विज्ञापन 'पत्र पत्रिकाएं मांग कर न पढ़ें' को अटपटा कहना अतार्किक लगा. किसी से पत्रिका मांगने और मां से रोटी मांगने में जमीन आसमान का अंतर है. —जसवंतसिंह जदौन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज़रा सी दूरदर्शिता, और ढेर सा प्यार...

थोड़ी सी बचत से भी, 21 वर्ष की उम्र होने तक आपका बच्चा लखपति बन सकता है.

यूनिट ट्रस्ट के बाल उपहार वृद्धि कोष में निवेश कीजिए.

आज आपका लाडला आपकी बाहों में खेल रहा है. सुरक्षित महसूस करने के लिए आपकी गोद ही उसके लिए काफी है. लेकिन पलक झपकते 'कल' आपके द्वार पर दस्तक देने लगेगा. उसे बाहर की दुनिया में कदम रखना पड़ेगा... ज़िंदगी की कठिन सच्चाइयों का सामना करना पड़ेगा.

तो अपने बच्चे का भविष्य संवारने के लिए आज ही कदम क्यों न उठाए जाएं? यूनिट ट्रस्ट के बाल उपहार वृद्धि कोष में निवेश कीजिए. इस योजना के अंतर्गत एक निश्चित अवधि में थोड़ा पैसा लगाने से 21 वर्ष की उम्र होने पर आपका बच्चा लखपति हो जाएगा.

प्र. अपने बच्चे को लखपति बनाने के लिए निवेश कैसे किया जाए?

उ. अगर बच्चे का जन्म होते ही आप बाल उपहार वृद्धि निधि में निवेश करें तो आपके सामने कई विकल्प हैं. (i) बच्चे के जन्म पर रु. 1100 भरें और 15 साल तक प्रतिवर्ष भरते रहें (ii) आप 3 सालों तक लगातार रु. 3,200 प्रतिवर्ष निवेश कर सकते हैं या लगातार 6 सालों तक रु. 1,900/- प्रतिवर्ष का निवेश कर सकते हैं (iii) या आप एक बार में ही रु. 8,500/- की पूंजी लगा सकते हैं.

प्र. यदि बच्चा बड़ा हो तो?

उ. 15 वर्ष की उम्र तक के लिए अलग-अलग योजना हैं. बाल उपहार वृद्धि कोष की जानकारी पुस्तिका में दी गई तालिका से इसकी विस्तृत जानकारी हासिल की जा सकती है. जानकारी पुस्तिका के लिए हमें लिखिए.

प्र. बच्चों को ये उपहार कौन कौन दे सकता है?

उ. माता-पिता, संबंधी, मित्र, कंपनी या व्यावसायिक संस्थाएं.

प्र. निवेश की न्यूनतम राशि क्या है?

उ. रु. 500/- तथा उसके बाद रु. 100 के गुणकों में.

प्र. इस निवेश पर लाभ कितना होता है?

उ. प्रतिवर्ष 12.5% तथा हर पाँचवें वर्ष बोनस डिवीडेंड भी.

प्र. अवधि पूर्ण होने पर भी कोई सुविधा मिलती है?

उ. रकम निकालने की बजाय बच्चा इसे यूनिट ट्रस्ट की अन्य योजनाओं में से किसी में भी निवेशित कर सकता है.

सी जी जी एफ की मुफ्त जानकारी पुस्तिका के लिए किसी भी यूनिट ट्रस्ट ऑफिस या मुख्य प्रतिनिधि या एजेंट अथवा चुने हुए हिन्दुस्तान पेट्रोलियम या इंडियन ऑयल पंपों से संपर्क कीजिए. या हमारे किसी भी कार्यालय को लिखिए.

1986-'91 के लिए
5% बोनस डिवीडेंड

भारतीय यूनिट ट्रस्ट

90 लाख यूनिटधारकों का विश्वास

- 13 सर विट्ठलदास ठाकरसी मार्ग (न्यू मरीन लाइन्स), बंबई 400 020. फोन : 2863767/6201995.
- जस्टिस बशीर अहमद सैयद बिल्डिंग, 45, सेकेंड लाइन बीच, मद्रास- 600 001. फोन 587433/580938.
- गुलाब भवन (पिछला ब्लॉक), रेती मंजिल, 6, बहादुर शाह ज़फर मार्ग, नई दिल्ली- 110 002. फोन : 3318638/3319786.
- 2 एस 4 केवराइट प्लेस, कलकत्ता- 700 001. फोन 209391, 205322.

Sista's-UTI- 80/90 HIN E R

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विवाह आयोजन विशेषांक (मार्च/प्रथम) बेहद पसंद आया.

जिन की संतानें शादी लायक हैं उन के लिए यह अंक संग्रहणीय है क्योंकि सभी लेख महत्त्वपूर्ण हैं तथा आने वाले परिवेश में भी लाभदायक सिद्ध होंगे.

—वृजवाला

*

विवाह विशेषांक निस्संदेह संग्रहणीय बन पड़ा है. शादीब्याह का मौसम और उस पर सामयिक लेख व सुझाव इस अंक में भरे पड़े हैं

लेख 'वैवाहिक विज्ञापन द्वारा जीवनसाथी की खोज' अच्छा लगा. इस से नए लोगों को मार्गदर्शन मिलता है.

—चंद्रशेखर बधेल

*

दिन में विवाह: श्रम घंटों का नुकसान

लेख 'दिन में विवाह' (मार्च/प्रथम) में लेखक ने केवल एक पक्ष पर जोर दिया है.

जीवन में एक बार आने वाला यह अवसर एक महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है और यह भी दोपहर की चिलचिलाती धूप एवं दिनचर्या के शोरशराबे में गुल हो जाए तो इस की क्या महत्ता रह जाएगी. इस से अच्छा एक और विकल्प कोर्ट मैरिज हो सकता है.

दिन की शादी का सब से कमजोर पक्ष है कि इस में शामिल होने के लिए सभी लोगों को अपने दैनिक कामकाज से छुट्टी करनी पड़ती है, जिस से समारोह में उपस्थित होने वाले व्यक्ति का पूरा मन शादी में न हो कर काम के होने वाले हर्जाने की ओर रहता है. देश का भी अप्रत्यक्ष रूप से काफी नुकसान होता है क्योंकि इस से सैकड़ों श्रम घंटे व्यर्थ चले जाते हैं.

रात की शादी में प्रत्येक व्यक्ति अपने कार्य से निवृत्त हो कर शांति से शादी में सम्मिलित हो सकता है.

—राजकुमार बंसल

*

वैवाहिक विवाद: कानून तो अंतिम हथियार है

लेख 'वैवाहिक विवाद: दुष्परिणाम कानूनी सहायता के' (मार्च/प्रथम) पढ़ा.

पत्नियों को यह भलीभांति समझ लेना चाहिए कि किसी भी प्रकार का विवाद उत्पन्न होने पर हठधर्मिता छोड़ कर समझबूझ का सहारा ले कर विवाद हल करने का प्रयास करना ही उन के स्वयं के और मायके तथा ससुराल वालों के हित में है. कानून तो अंतिम अस्त्र है.

छोटीछोटी बातों को तूल दे कर वकीलों की शरण में जाना स्वयं के पैरों में कुल्हाड़ी मारने जैसा है. यदि कानून व वकील ही समस्या का समाधान करने में सक्षम होते तो आज समस्याओं का नामोनिशान नहीं होता.

जिन की महत्त्वाकांक्षाएं काफी उच्च हैं, जो तथाकथित नारी स्वतंत्रता की पक्षधर हैं, वे लड़कियां शादी करने से पूर्व हर बात भावी पति/ससुराल वालों से स्पष्ट क्यों नहीं कह देतीं? स्वतंत्र नारी शानदार शादी (मोटे दहेज के साथ) क्यों करती है? जिन को कानून में सारे समाधान नजर आते हैं, वे हर कदम कानून के हिसाब से क्यों नहीं उठातीं?

इसी अंक में प्रकाशित लेख 'प्रेम विवाह बनाम आयोजित विवाह' विषय पर अच्छा प्रकाश डालता है. परंतु इस लेख की कुछ बातें खटकती हैं. लड़की देखनेदिखाने की तुलना वस्तु से की गई है. क्या आपस में वार्त्तालाप किए बिना ही 'शादी हेतु चयन कर लेना' उचित होगा?

लेख में एक स्थान पर आज के युवकयुवतियों को व्यावहारिक बताते हुए कहा गया है कि वे प्रेम भी खुली आंखों से करते हैं जबकि दूसरे स्थान पर कहा गया है कि सभी युवा मानसिक रूप से इतने परिपक्व नहीं होते कि वे भावी साथी के गुणदोषों का सही विश्लेषण कर सकें. यह विरोधाभास खटकता है.

—डालचंद 'नास्तिक'

*

निर्देशक की नहीं समीक्षक की चूक है

स्तंभ 'चंचल छाया' (मार्च/प्रथम) पढ़ा.

इस स्तंभ में फिल्मों की समीक्षा काफी सटीक होती है लेकिन इस बार समीक्षक फिल्म 'डैडी' की समीक्षा करते हुए कुछ चूक गया है. उस ने निर्देशक महेश भट्ट की चूक की ओर ध्यान दिलाया, जो सही नहीं है.

फिल्म में पूजा की मां डायरी लिखती थी. समीक्षक ध्यान दें कि उस डायरी में सिर्फ वहीं तक ही लिखा हुआ है जब तक कि पूजा की मां अपने पिता के घर में थी अर्थात उस के घर से आनंद के साथ भागने तक. इस से जाहिर है कि पूजा की मां वह डायरी अपने मायके में ही छोड़ गई थी. बाकी की कहानी तो पूजा को उस के पिता से पता चलती है, डायरी से नहीं.

—मंजू कपूर

*

फिल्म 'हम' की समीक्षा में अमिताभ बच्चन के अभिनय को पारसी थिएटर जैसा बताया गया है और लिखा गया है कि उन के चेहरे पर भाव आने बंद हो गए हैं, जो सत्य नहीं लगता.

इस फिल्म में अमिताभ का अभिनय स्तर 'जादूगर,' 'तूफान' व 'आज का अर्जुन' की अपेक्षा अधिक प्रभावपूर्ण है. 'हम' फिल्म में अमिताभ ने हास्य अभिनय की जिस बुलंदी को स्पर्श किया है वह दिलीपकुमार के लिए भी संभव नहीं है.

इधर कुछ वर्षों से यह देखा जा रहा है कि 'चंचल छाया' के अंतर्गत, अमिताभ द्वारा अच्छा अभिनय करने के बावजूद, अमिताभ की प्रशंसा नहीं की जाती. ऐसा प्रतीत होता है कि अमिताभ के प्रति आप का कोई व्यक्तिगत आक्रोश है. हर फिल्मी पत्रिका तथा उच्च स्तरीय पत्रों में भी अमिताभ के अभिनय को सराहा गया, फिर आप के द्वारा इस की आलोचना करने का क्या औचित्य है, समझ में नहीं आता.—प्रणय निगम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya

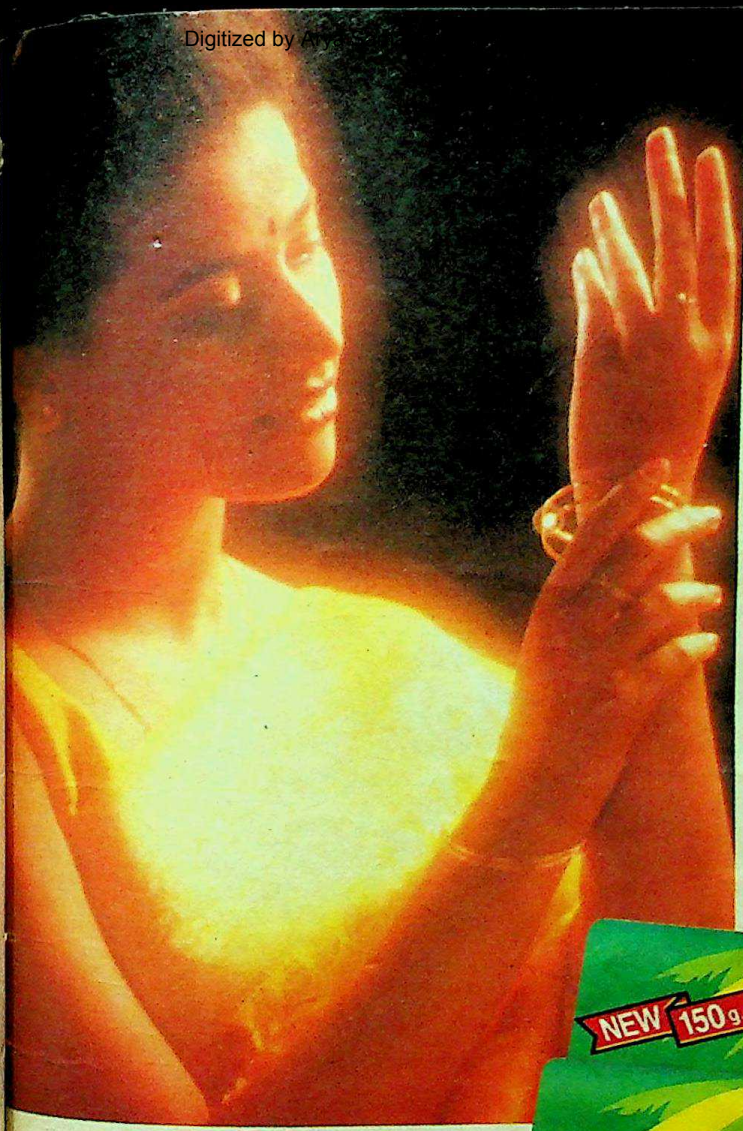

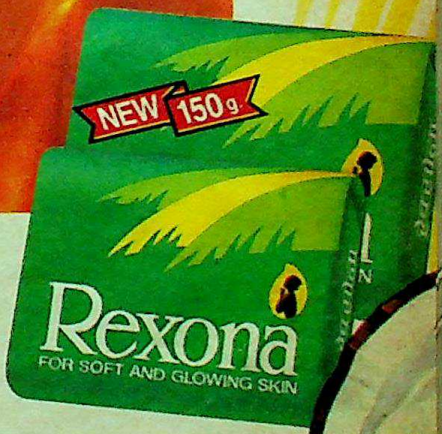

त्वचा सुनहरी रेशमी रेशमी

ये रेशम सी त्वचा, ये सोने सा रूप...
देन है रेक्सोना की.
शुद्ध नारियल तेल के गुण जिसमें समाए,
वही रेक्सोना आपकी त्वचा
सुनहरी, रेशमी, रेशमी बनाए.

रेक्सोना शुद्ध नारियल तेल युक्त

हिन्दुस्तान लीवर का एक उत्कृष्ट उत्पादन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

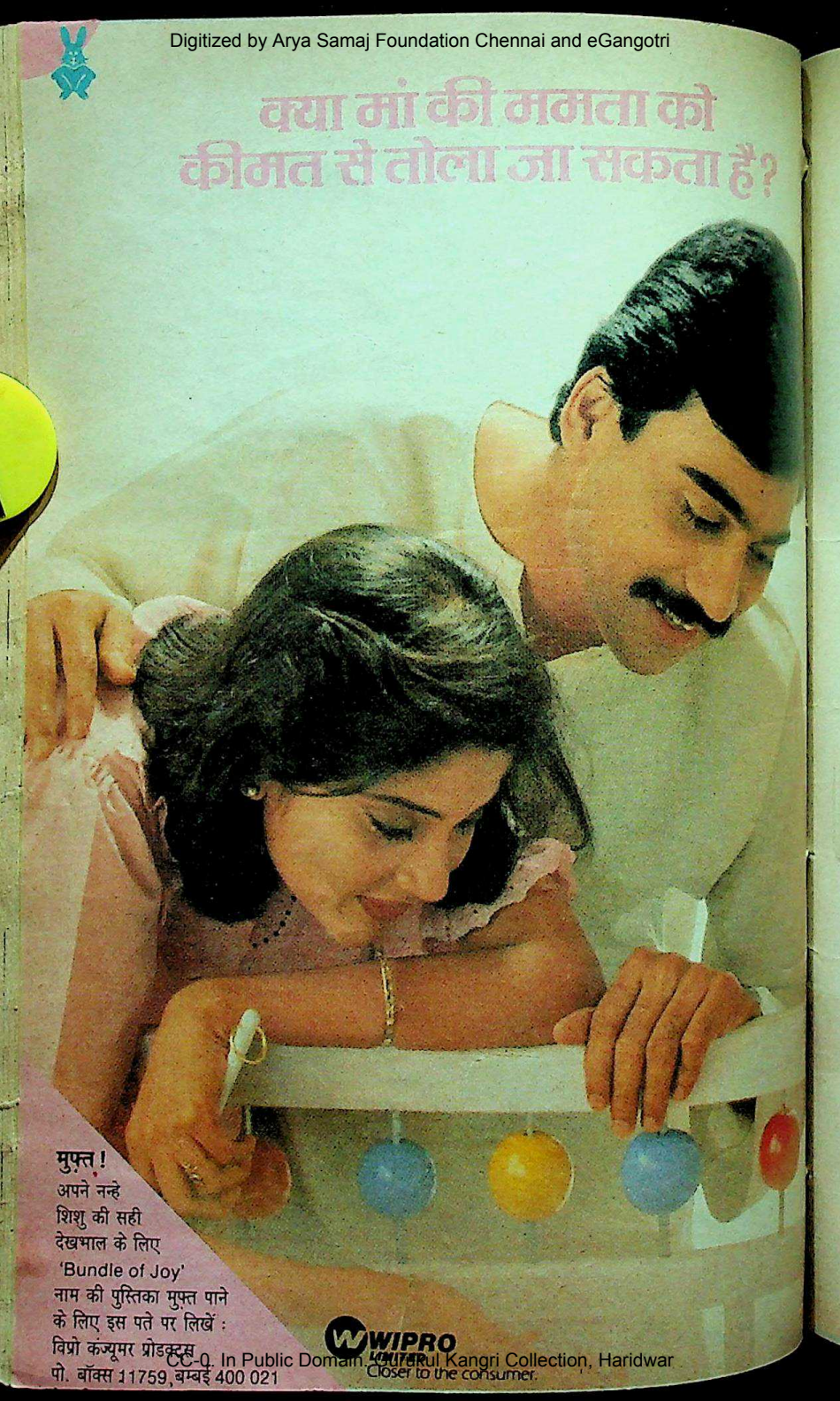

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मां के लिए उसका शिशु ही सब कुछ है. शिशु जिसके लिए वह अपना सब कुछ निछावर कर सकती है. शिशु जिसे वह सर्वोत्तम ही देना चाहती है. पर अक्सर सर्वोत्तम उसी को मान लिया जाता है जो महंगा होता है, कीमती होता है. और इस तरह मां और उसकी ममता के बीच खड़ी हो जाती है कीमत की दीवार.

विप्रो बेबी सॉफ़्ट रेंज—सही कीमत, शुद्धतम क्वालिटी

पर विप्रो वो कंपनी है जो ये मानती है कि कीमत बढ़ाने से शुद्धता नहीं बढ़ती. विप्रो, वो कंपनी जो यह मानती है कि ममता को कीमत से तोलना गुनाह है. इसीलिए विप्रो आपके शिशु के लिए ला रहे हैं विप्रो बेबी सॉफ़्ट रेंज. बस उतनी कीमत में जो जरूरी होती है शुद्धता हासिल करने के लिए.

विश्वास का प्रतीक विप्रो

जी हां, विप्रो ही वह कंपनी है जिसके साथ अपने आपको जोड़ना चाहा है अंतर्राष्ट्रीय ख्याति की मेडिकल कंपनी जी.ई. ने. विप्रो वह कंपनी जिसने जिस क्षेत्र में भी कदम रखा वहां नाम कमाया, चाहे बात हो कम्प्यूटरों की, साबुनों की या खाद्य तेलों की. और इस सबका कारण है, विश्वास. लोगों का विश्वास. आज इसी विश्वास के बलबूते पर विप्रो आपके शिशु की दुनिया में कदम रख रहे हैं, विप्रो बेबी सॉफ़्ट रेंज लाकर... सही कीमत में, शुद्धतम क्वालिटी के साथ. क्योंकि विप्रो यह मानते हैं कि ममता और शुद्धता पे हक है आपके शिशु का.

विप्रो

बेबी सॉफ़्ट

रेंज

क्योंकि ममता और शुद्धता पे हक है आपके शिशु का.

everest/90/WL/411 hn R

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सांझ घिरी
महके फिर
यादों के वन.

आंखों में
सोनतरी जैसे
कुछ सपने,
तैर उठे.
चाहों की लौ लगी
दहकने,
विस्मृत कर
प्रातः की
सतही अनबन.

अधरों पर
अव्याहत
मोहिनी हंसी
उतराई,
मलय पवन
गंध में बसी,
सुलझा कर
बौराए
मन की उलझन.

—डा.इसाक 'अश्क'

यादों के वन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मर्दों के लिए ओल्ड स्पाइस बॉडी टॉल्क
जो भी आए पास, उसे जादू का एहसास

ओल्ड स्पाइस
...र की मस्तानी महक
...टॉल्क तीन किस्मों में उपलब्ध- ओरिजनल लाइम मस्क

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिन का हर पल संवारे मेरा कॉम्पैक्ट

पल भर में चेहरे पर निखार, लॅक्मे कॉम्पैक्ट की बदौलत. चाहे आप घर में हों या बाहर जाने की तैयारी में. शॉपिंग पर जाने की जल्दी हो या चाय पर. कार में हों या लिफ्ट में... यह महीन रेशम-सा फ़ेस पाउडर आपके रंगरूप से मिलते-जुलते पांच शेड्स में मिलता है. रोम-छिद्रों को बन्द किये बिना, कुदरती निखार लाता है, खूबसूरती प्रदान करता है. इसलिये, अब साधारण पाउडर को अपने चेहरे से दूर रखिये, लॅक्मे कॉम्पैक्ट अपनाइये.

लॅक्मे
कॉम्पैक्ट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादकीय
अप्रैल (द्वितीय) 1991

सरित प्रवाह

खाड़ी युद्ध में युद्धविराम के बाद अमरीका व ब्रिटेन का विचार यह था कि सद्दाम हुसैन को सत्ता से हटाने का सब से सीधा, सस्ता उपाय इराक में सद्दाम विरोधी गुटों को उभरने देना होगा ताकि वे लड़ कर या अन्य किसी भी प्रकार सद्दाम हुसैन का तख्ता पलट दें. इसी आधार पर उत्तर में कुर्दों और दक्षिण में शिया मुसलमान गुटों ने जब विद्रोह का झंडा उठाया तो अमरीका उन की सहायता पर उतारू हो गया और सद्दाम हुसैन को चेतावनी दे दी गई कि यदि इन विद्रोहियों पर आकाश से बमबारी की जाएगी तो अमरीका इराकी सरकार के वायुयानों और हेलीकोप्टरों को मार गिराएगा. इसी घोषणा के अंतर्गत इराकी सरकार के दो वायुयान मार भी गिराए गए.

फलस्वरूप उत्तर में कुर्द लोग, जो इराक, ईरान, तुर्की और सीरिया में फैले हुए हैं और अपना स्वतंत्र देश बनाना चाहते हैं, जीतने लगे. दक्षिण में शिया लोगों को ईरान ने, जहां शिया सत्तारूढ है, सहायता देनी शुरू कर दी. ईरानी सेना सद्दाम हुसैन से पिछले आठ वर्षों से लड़ रही थी, और अभी पिछले वर्षों में ही यह युद्ध रुक गया था, जब दोनों ओर से यह महसूस होने लगा कि विजय दोनों में से किसी को नहीं मिलेगी.

सद्दाम हुसैन के पिट जाने के बाद शिया ईरान को अपना दांव खेलने का मौका मिल गया. ईरान ने इराक के 125 से अधिक लड़ाकू वायुयान, जो भगा कर ईरान में पनाह के लिए ले जाए गए थे, जब्त कर लिए, और शिया विद्रोहियों को सहायता बढ़ा दी.

इस पर शीघ्र ही अमरीका व ब्रिटेन को अपनी गलती का एहसास हो गया और उन्होंने यह कह दिया कि इराकी सरकार विद्रोहियों को दबाने के लिए हेलीकोप्टरों का प्रयोग कर सकती है.

इस यकायक उलटफेर का रहस्य यह है कि यदि आप किसी देश के विद्रोहियों को सरकार का तख्ता पलटने देते हैं तो इस परिपाटी का कोई अंत नहीं है. आज संसार में हर देश में विद्रोह उफन रहे हैं. हर छोटाबड़ा धार्मिक व नस्ली समूह अपनी आजादी, अपने अलगाव, अपनी पहचान को बनाए रखना चाहता है, चाहे सारा देश इस कशमकश में टूट कर बिखर जाए.

अमरीका के नीग्रो काले लोग उभर रहे हैं, कनाडा के क्वीबेक प्रांत के फ्रांसीसी मूल के लोग अलग होना चाहते हैं. ब्रिटेन में आयरलैंड वाले बमबारी कर रहे हैं. रूस में बाल्टिक देशों के अलावा स्वयं रूसी संघ व अन्य दक्षिणी प्रजातंत्र स्वतंत्रता चाहते हैं. भारत में कशमीर, पंजाब, असम में अलग राज्य बनाने के लिए बमों, गोलियों और राकेटों का प्रयोग हो रहा है. पाकिस्तान में मुहाजिर और पंजाबी लड़ रहे हैं. चीन के उत्तर और दक्षिण प्रांतों में झगड़ा है. श्रीलंका से तमिल, और सूडान में ईसाई स्वतंत्रता की मांग कर रहे हैं. विद्रोहियों की संसार व्यापी लंबी लाइन है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नतीजा यह है कि अगर आप कहीं भी केंद्रीय सत्ता के विरुद्ध किसी समुदाय को सशस्त्र विद्रोह करने में सहायता देते हैं तो अंत में वह स्वयं आप के सिर पर पड़ती है. भारत द्वारा श्रीलंका के लिट्टे को बढ़ावा देने का नतीजा सब के सामने है.

खाड़ी क्षेत्र में यदि इराक के विद्रोही सफल हो जाते हैं तो इराक के कई टुकड़े हो जाएंगे और सारा क्षेत्र एक घमासान गृहयुद्ध में लिप्त हो जाएगा, जिस से किसी को भी, न विद्रोहियों को, न इराक को, न पड़ोसियों को, न संसार की महाशक्तियों को कोई लाभ होगा. इसलिए अब विचार यही है कि सद्दाम हुसैन को यदि हटाना ही है तो किसी और तरीके से हटाया जाए, इराक के टुकड़े कर के नहीं. सब की भलाई इसी में है. इसी नीति के अंतर्गत अमरीका व ब्रिटेन अब कशमीर पर भारत पाकिस्तान के झगड़े को आपस में शांतिपूर्वक सुलझाने की बात कर रहे हैं.

*

यूरोप व अमरीका में तो मोटरवाहनों द्वारा वायु प्रदूषण के बारे में चिंता तो काफी समय से है, पर भारत में यह सोचविचार अभी हाल ही का है. आज भारत के सारे बड़े शहर मोटर वाहनों के काले नीले धुएं से पटे पड़े हैं और तरहतरह की बीमारियों के शिकार बन रहे हैं.

जहां एक ओर ट्रक और बसें सड़कों पर धुआं उड़ाती हुई दौड़ती हैं, वहां दुपहिए और तिपहिए स्कूटर भी वायु को कम प्रदूषित नहीं करते. इन में पेट्रोल के साथ ही मोबिलआइल मिला कर चलाया जाता है और यह मोबिलआइल इंजन में पूरी तरह जलता नहीं, नीले धुएं के रूप में बाहर निकलता है. इस में चालक का दोष कम है, स्कूटर बनाने वालों का अधिक. दाम कम रखने के लिए वे सस्ती पुरानी किस्म का इंजन बनाते हैं, पर अंत में समाज को यह महंगा पड़ता है.

इसलिए अन्य देशों की तरह यहां भी मोटर वाहनों से प्रदूषण रोकने के लिए पहला कदम यह होगा कि मोटरगाड़ियों को अधिक स्वच्छ एग्जास्ट (निकलता धुआं) वाले वाहन बनाने पर मजबूर करना होगा और साथ ही चालकों को अपने वाहनों की देखरेख समुचित करने पर.

जहां तक बसों का संबंध है, इस में सरकार ही सब से बड़ी दोषी है. क्योंकि परिवहन का एकाधिकार सरकार का है, वह अपने वाहनों की देखरेख नहीं करती. जरूरत से ज्यादा डीजल, पेट्रोल फूंकती है. इस सिलसिले में जब दिल्ली पुलिस से कहा गया कि आप बड़ेबड़े विज्ञापनों द्वारा मोटरकारों व स्कूटरों के चालकों को बड़ीबड़ी धमकियां दे रहे हैं, पर दिल्ली परिवहन की बसों पर कोई प्रतिबंध नहीं लगाते तो वह यह कह कर चुप हो जाती है कि हां, हम ने उन का भी चालान किया है पर इस से कितने चालान व कितना जुरमाना किया गया और इस से कितनी बसों ने धुआं उड़ाना बंद कर दिया तो वह कोई जवाब नहीं देती. सरकार व सरकारी कर्मचारियों के सारे कुसूर माफ, और केवल जनसाधारण ही बलि के बकरे.

*

प्रदूषण की बात करते हुए, इस में देश की विदेशी मुद्रा के भंडार के दिवालिया होने की बात भी आती है. सरकारी बिजलीघरों द्वारा बिजली सप्लाई में भारी अनियमितता को भी नहीं भुलाई जा सकती. आज देश में कोई शहर या गांव ऐसा नहीं है, जहां सात दिन 365 दिन 24 घंटे लगातार बिना रुकावट बिजली उपलब्ध हो, सिवाय सत्तारूढ़ दल या सत्ता में आने वाले राजनीतिबाजों के. किसी को आश्वासन नहीं है कि उन के यहां बिजली बिना नोटिस घंटों तक के लिए गायब नहीं हो जाएगी और आप का कामकाज, उत्पादन व घरेलू जीवन अस्तव्यस्त नहीं हो जाएगा. (राजनीतिबाज अपने लिए दो तीन सबस्टेशनों से बिजली की लाइन लिए होते हैं ताकि एक जगह करंट फेल हो तो अपनेआप दूसरी लाइन चालू हो जाए.)

बिजली की इस लुकाछिपी,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिचौली से हम लगभग रुकना चाहें. कारखाने को डीजल, पेट्रोल के छोटेबड़े जेनरेटर लगाने पड़ते हैं ताकि काम अबाध रूप से चलता रहे. इन जेनरेटरों पर जनता की सैकड़ों करोड़ रुपए की पूंजी लगी है, जिस की बिलकुल आवश्यकता नहीं होती, यदि बिजली अबाध रूप से मिलती रहती, जैसा कि होना चाहिए था. इस के अलावा हर वर्ष अरबों रुपयों का डीजल व पेट्रोल भी इन जेनरेटरों पर खर्च होता है, जो बाहर से मंगाया जाता है. पर समाजवादी, सरकारवादी जुनून का क्या किया जाए, जिस के अंतर्गत सारे बिजली उत्पादन पर सरकारी एकाधिकार कर दिया गया है.

*

उड़ीसा के मुख्य मंत्री बीजू पटनायक ने जोरदार शब्दों में कहा है कि क्योंकि उड़ीसा को पिछले 44 सालों में विकास का कोई लाभ नहीं मिला है, और केंद्र पर उत्तर प्रदेश के लोगों का कब्जा बना हुआ—अब तक के सारे प्रधान मंत्री (एक मोरारजी भाई देसाई को छोड़ कर) उत्तर प्रदेश से ही आए हैं, इसलिए उड़ीसा अब अपनी स्वतंत्रता का नारा लगाएगा. उड़ीसा के पास समुद्रतट है इसलिए उस की स्वतंत्रता में कोई अड़चन नहीं है और हम विदेशों से सहायता ले कर उड़ीसा को आननफानन में समृद्ध बना सकते हैं.

बीजू पटनायक विश्वनाथप्रताप सिंह वाले जनता दल के एक प्रमुख सदस्य हैं, बल्कि यों कहा जा सकता है, एक बड़े स्तंभ हैं. जब जनता दल के वरिष्ठ नेता ही अलगाववाद की मांग करें तो जनता दल का इस बात पर क्या रुख होगा? जनता दल के अध्यक्ष वि.प्र. सिंह ने अब तक इस मसले पर कोई प्रतिक्रिया जाहिर नहीं की है, लेकिन क्यों?

पर लगता है जब जनता दल का सर्वोच्च नेता ही अपनी गद्दी बनाए रखने के लिए मंडल कमीशन की सिफारिश को यकायक लागू कर के देश को जातियुद्ध में झोंक सकता है तो थोड़ा नीचे वाला बड़ा नेता अपने प्रदेश की स्वतंत्रता की बात कर के क्यों नहीं अपनी गद्दी सुरक्षित कर सकता?

*

देश के ट्रक, लारी चलाने वाले 25 मार्च 91 से हड़ताल पर हैं. उन की शिकायत मुख्यतः हरियाणा राज्य में अभी हाल में लगाए गए एक नए और बहुत किल्लत, नुकसान पहुंचाने वाले टैक्स के विरुद्ध है, जिस के अनुसार हरियाणा में रजिस्टर नहीं कराए गए यानी अन्य राज्यों के ट्रकों पर 100 रुपए प्रति बार प्रति ट्रक प्रवेश टैक्स और इतनी ही राशि प्रतिदिन, जितने दिन हरियाणा में रहे, वसूल की जाएगी. राज्य सरकार का कहना है कि मंडल आयोग की सिफारिश लागू करने के विरुद्ध राज्य में जो तोड़फोड़ हुई थी, उस नुकसान को पूरा करने के लिए यह टैक्स लगाना आवश्यक है.

पर राज्य सरकार की यह दलील लचर है. अगर राज्य में तोड़फोड़ हुई है तो तोड़फोड़ करने वालों पर टैक्स लगाए, यातायात पर इतना भारी कर क्यों? फिर टैक्स का रुपया तो दिया जा सकता है, पर इस के साथ जो सरकारी अमले को रिश्वत (वह भी टैक्स के ऊपर) देनी होगी और जो ट्रकों का समय घुसने के स्थानों पर लंबी लाइन लगाने में नष्ट होगा उस की भरपाई कौन करेगा? इस टैक्स के माध्यम से टैक्स अधिकारियों व पुलिस द्वारा जो ट्रक चालकों को परेशान कर के रुपया ऐंठना शुरू होगा, उस का मुआवजा कहां से कौन देगा?

जहां उत्तर प्रदेश में मुख्य मंत्री मुलायमसिंह यादव सारे राज्य में से चुंगी चौकियां हटा रहे हैं, वहां हरियाणा की सरकार यातायात पर नए प्रतिबंध लगा रही है, जो एक अत्यंत समाजविरोधी कार्य है.

आज देश में रेल के अतिरिक्त सामान ढोने का बहुत बड़ा काम ट्रक, लारियां कर रहे हैं. इस ने सरकारी एकाधिकार को किसी हद तक मुलायम बना दिया है अन्यथा रेल का सरकारी अमला देश के जनजीवन को निचोड़ कर रख देता. इस प्रकार ट्रकों के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चलने पर कोई सुधार हो. कर्मचारी संघों की परेशानी अंतिम रूप से जनता को ही सहनी पड़ेगी. इसलिए यह हड़ताल उचित है, चाहे इस में स्वयं जनता को हड़ताल के दिनों में काफी परेशानी और हानि उठानी पड़ेगी. पर आजकल सत्तारूढ राजनीतिबाज और सरकारी अधिकारी बिना हड़ताल, प्रदर्शन किए किसी भी सही बात को मानने को तैयार ही नहीं होते—इन प्रतिबंधों और नए टैक्सों से उन की जेबें जो गरम होती हैं और अपने लोगों को मालामाल करने का अवसर जो मिलता है.

*

फिल्म व खेल स्टार ऊंचे पैसे ले कर तरहतरह की उपभोक्ता चीजों का प्रचार करते हैं, यह कह कर कि मैं भी इस को खरीदता हूं, इस्तेमाल करता हूं, खातापीता हूं, आप भी कीजिए. उदाहरण के तौर पर लगभग हर फिल्म अभिनेत्री यह कह चुकी है कि वह लक्स साबुन लगाती है, और यही उस की सुंदरता का रहस्य है. अशोककुमार व शम्मी कपूर पान पराग, पान मसाले की तारीफ के पुल बांध चुके हैं, नवाब पटौदी ग्वालियर सूटिंग की प्रशंसा करते हुए नहीं थकते, विनोद खन्ना एक रंगीन टीवी सेट को बेचते, देखते दिखाई देते हैं.

पर कभीकभी इन तारीफ के पुलों में बड़ी बेशर्मी की बात भी उभर कर आती है, जैसे अभी हाल में क्रिकेट खिलाड़ी कपिलदेव के साथ हुआ. कपिलदेव बौर्नवीटा व अन्य शक्तिवर्धक खाद्य पदार्थों की हिमायत के साथ पारले कंपनी के थम्सअप शीतल पेय की वकालत करते थे. पारले बाटलिंग कंपनी बड़ेबड़े विज्ञापनों में कपिलदेव को थम्सअप पीते और शक्तिशाली बनने की प्रेरणा देती दिखाई देती थी.

पिछले दिनों अमरीका की पेप्सी कोला कंपनी को सरकार ने अपना शीतल पेय पेप्सी कोला भारत में बनानेबेचने की अनुमति दी. इस का पारले कंपनी ने जोरदार विरोध किया और तरहतरह से सरकार पर हमला बोले. इस के फलस्वरूप पेप्सी कोला कंपनी को अपने पेय का नाम तक बदलना पड़ा—बजाय पेप्सी कोला के उसे लहर पेप्सी कहने को मजबूर होना पड़ा.

पेप्सी कंपनी ने क्रिकेट स्टार कपिलदेव को भी अपना पेय लोकप्रिय बनाने के लिए 'किराए पर लिया' और बड़ी धूमधाम से नारा लगाया कि "कपिल आप के घर आएगा. आप उस का स्वागत पेप्सी लहर की बोतल खोल कर पिलाने से कीजिए."

इस आयोजन को चलाने में पेप्सी कंपनी को काफी धन खर्च करना पड़ा.

पर जिस दिन कपिलदेव को दिल्ली में गलीगली घूमना था, उसी दिन सुबह पारले कंपनी ने अपना पुराना विज्ञापन, जिस में कपिलदेव थम्सअप की वकालत करता दिखाई दे रहा था, सारे समाचारपत्रों में छपवा दिया. फलस्वरूप न केवल कपिल की बल्कि पेप्सी कंपनी की भी भद्द उड़ गई. और इस प्रकार के विज्ञापनों में प्रमुख व्यक्तियों द्वारा पैसे के एवज में वकालत करने पर झूठ बोलने का धब्बा तो लग ही गया.

*

रामायण और महाभारत के बाद दूरदर्शन को अच्छे धारावाहिकों की दरकार है जो उसे नहीं मिल रहे हैं. जो मिल रहे हैं, वे सब एक ढर्रे के हैं. जिस प्रकार सिनेमा में मारधाड़ और हिंसा का ही दिग्दर्शन रहता है ताकि दर्शक को उन की ओर खींचा जा सके, इसी तरह आज के टीवी धारावाहिकों में नारी पर अत्याचारों को बढ़ाचढ़ा कर दिखा कर महिलादर्शकों को मोहने और अपने को महा प्रगतिशील जताने का अभियान जारी है.

अत्याचार नारी पर होता रहा है, उसे दूर करना भी आवश्यक है, यह कहना तो ठीक है पर इस अत्याचार को बढ़ाचढ़ा कर, चिंघाड़ कर प्रस्तुत करना दूसरी बात है.

इन धारावाहिकों में पुरुष को सर्वदा बेवकूफ, बोदा, संवेदनहीन, अत्याचारी, शोषक, स्वार्थी या यों कहिए कि दुनिया भर

CC-0. In Public.Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कसमी अवगुणों से परिपूर्ण दिखा कर नारी की हर मुसीबत का पुरुषजनित बताया जाता है. एक धारावाहिक में दिखाया गया कि घर में छोटी बच्चियों से घर का काम कराना उन पर अत्याचार है जबकि उसी वर्ग के छोटे लड़कों द्वारा घर से बाहर दूर जा कर कड़ी मेहनतमजदूरी करने की बात ओझल कर दी गई, सिर्फ यह दिखाने के लिए कि लड़कों को सब सुखसुविधाएं मिलती हैं, लड़कियों के लिए घर का काम भी अत्याचार है. जिस प्रकार फिल्मों में हीरो एक ही हाथ में बीसियों गुंडों को धराशायी कर के हीरो बन जाता है, उसी प्रकार इन धारावाहिकों में साधारण कुशलता वाली स्त्री को भी हजारों रुपया मासिक नौकरी में कमा कर लाते और पुरुष को केवल मादक, नशीली दवाइयों का धंधा करते हुए दिखा कर यह साबित किया जा रहा है कि घर संभालना, बच्चों का पालनपोषण करना एक निचले दर्जे का काम है जबकि दफ्तर में काम करना एक हीरोइनपना है.

जबतब पतियों द्वारा पत्नियों को जबरदस्ती जला कर मारने के भी दर्दनाक दृश्य दिखाए जाते हैं, जबकि वास्तविकता यह है कि तथाकथित दहेज के कारण स्त्रियों के मरने की घटनाएं आत्महत्याएं होती हैं, जबरन जलाया जाना नहीं. इस के विपरीत यह कभी नहीं कहा जाता कि दहेज के लिए सब से बड़ा मोह स्त्री को ही होता है— सास को, ननद को व स्वयं लड़की को भी जिस का विवाह होता है— वह भी तो पिता की संपत्ति में पिता के जीवन काल में ही हिस्सा बंटा लेना चाहती है.

आज जब दहेज कानून बड़े सख्त हैं, फिर भी दहेज धड़ल्ले से दिया और लिया जा रहा है. वैसे भी आज तक कोई ऐसा समाचार नहीं मिला है जिस में बताया गया हो कि अमुक मां, चाची, बहन या भतीजी ने अपने बेटे, भाई, भतीजे को दहेज दिए जाने पर कोई विरोध किया हो, अनशन किया हो या आत्महत्या का प्रयास किया हो.

अत्याचार किसी पर भी हो, हटना चाहिए, हटाना चाहिए पर यदि उसे विकृत रूप से प्रदर्शित किया जाए और उस श्रेणी के सभी व्यक्तियों को अत्याचारी ही बना दिया जाए तो इस से उस श्रेणी के व्यक्तियों द्वारा कठोर प्रतिक्रिया या प्रतिशोध की संभावना से भी इनकार नहीं किया जा सकता.

स्त्रियों द्वारा नौकरियां करना सुहावनी बात तो लगती है, पर फिर बच्चों की देखभाल, उन का पालनपोषण कौन करेगा? पुरुष? तो ठीक है, स्त्री बाहर का सारा काम संभाल ले, पुरुष घर बैठना शुरू कर दे. जो भी हो, घर के लिए कोई देखभाल करने वाला तो होना ही चाहिए अन्यथा समाज की व्यवस्था ही बिगड़ जाएगी, या फिर यह कहा जाना चाहिए कि घर की आवश्यकता ही नहीं है, विवाह बंधन की भी नहीं. जैसे प्रागैतिहासिक काल में होता था—स्त्रीपुरुष झुंडों में रहते थे. बच्चे किसी विशेष पुरुष के नहीं होते थे. वे यों ही पल जाते थे— वैसे ही रहा जाए.

पर जब यह आज संभव नहीं है तो घर की महत्ता को समझना ही होगा और जिन बातों से घर बनता नहीं हो, बिगड़ता ही हो, उसे नारी वर्ग की प्रगति मानना छोड़ना पड़ेगा क्योंकि स्त्री बिना घर के नहीं रह सकती, जबकि पुरुष बिना घर के भी चाहे जहां रह सकता है. क्या कोई स्त्री बिना बच्चों के भी सुखी रह सकती है? और क्या वे बच्चे, विशेषतः मध्य वर्ग के, सुखी व स्वस्थ रह सकते हैं जहां मां घर से 8-10 घंटे बाहर रहे और जब लौटे तो थकीमांदी, बच्चों के प्रति बेपरवाह होने पर मजबूर?

कहा जाता है कि घर में दादी इत्यादि तो होती हैं पर इन धारावाहिकों में सास को तो एक भयानक, अत्याचारी, समाप्त कर देने लायक जीव दिखाया जाता है. यदि स्त्रियों की नौकरी का प्रश्न है तो सास भी लड़के बहू पर मुहताज न रह कर क्यों न बाहर की नौकरी करे और अपने पैरों पर खड़ी हो ? ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संसदीय गरिमा का

लेख ● सुरेंद्र द्विवेदी

पुरानी संसद में सरोजनी महिषी ने कुछ समय पूर्व अनौपचारिक बातचीत में कहा था कि अब उन की सदन में भाषण करने अथवा बोलने में रुचि नहीं रह गई है, क्योंकि उस का कोई अर्थ नहीं रह गया है. सरकार को जो करना है, वह करती है, सदस्य केवल गला फाड़ते रह जाते हैं. नए सदस्यों को सदन में बोलने का उत्साह रहता है, लेकिन निरर्थक प्रलाप का एहसास होते ही वे भी ठंडे हो जाते हैं.

भूतपूर्व लोकसभा अध्यक्ष बलराम जाखड़ ने भी अपने कार्यकाल के दौरान इसी प्रकार की बातचीत में गहरी निराशा व्यक्त की थी कि सदन के स्तर में लगातार गिरावट आ रही है. गंभीर मसलों पर भी बहस भटकती है और सदन में 'कोरम' की समस्या बराबर पैदा होती रहती है. हमारी संसदीय व्यवस्था से जुड़े इन दोनों नेताओं की अद्भुत टिप्पणियां इस एहसास को प्रतिपादित करती हैं कि देश की स्वीकृत संसदीय व्यवस्था में ऐसा कुछ घुन लग रहा है, जिस की संविधान निर्माताओं ने स्वप्न में भी कल्पना नहीं की होगी.

ब्रिटिश शासन प्रणाली पर आधारित हमारी संसदीय व्यवस्था विधायिका (संसद), कार्यपालिका (सरकार) और न्यायपालिका के तीन खंभों पर खड़ी है. निर्वाचित संसद से लोकतांत्रिक सरकार की सृष्टि होती है और न्यायपालिका, सरकार और आम जनता के लिए कानून की व्याख्या और न्याय व्यवस्था का काम करती है. इन का अधिकार क्षेत्र अलग होने के बाद भी संसद अपने में सर्वोच्च

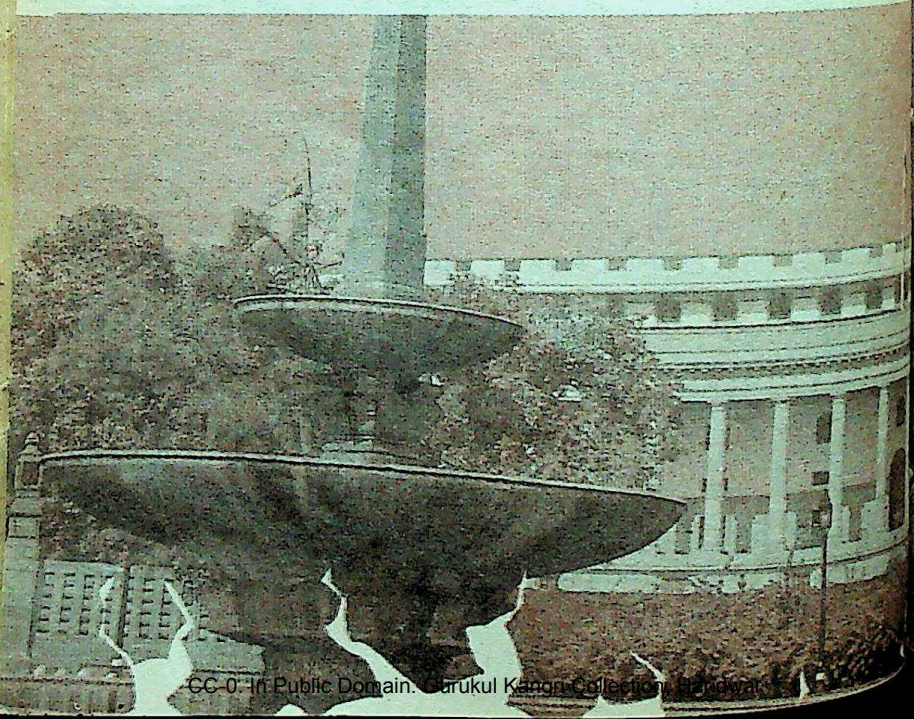

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रतिष्ठित संसद के लिए यह जरूरी है कि वह प्रभावी ढंग से काम करे. लेकिन उचित तालमेल, कोरम की समस्या तथा बिना बहस के बजट व महत्त्वपूर्ण विधेयक पारित करने की नई परंपरा ने भारतीय संसदीय व्यवस्था की गरिमा का क्षरण कर दिया है. यदि जल्द ही इन समस्याओं का समाधान नहीं किया गया तो लोकतंत्र के अस्तित्व पर अनेक प्रश्नचिह्न लग जाएंगे.

है, जिस के माध्यम से देश की सामूहिक इच्छाशक्ति प्रकट होती है. यही इस की सर्वोच्च शक्ति का स्रोत है. इसी आधार पर विधायिका यानी संसद या राज्यों की विधान सभाएं हमारी शासन प्रणाली के केंद्रबिंदु के रूप में काम करते हुए कार्यपालिका यानी मंत्रिमंडलीय सरकार के कामकाज, नीति निर्धारण और आर्थिक मामलों पर नियंत्रण रखने का काम करती हैं. साथ ही न्यायपालिका के लिए कानून प्रदान करती हैं.

सत्ता के सर्वोच्च केंद्र के रूप में प्रतिष्ठित संसद के लिए यह जरूरी है कि वह नेक एवं प्रभावी ढंग से काम करे और उस के लिए निर्वाचित सदस्य न केवल सक्षम हों वरन उस के कामकाज में गहरी रुचि भी लें. पिछले 40 वर्षों में इन दोनों मामलों में गिरावट आई है और कई बार संसद सरकार की बंधुआ के रूप में दिखाई पड़ती है क्योंकि पार्टी ह्विप के आधार पर सदस्यों को पार्टी लाइन के अनुसार मतदान करना जरूरी है.

क्षरण हो रहा है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब यही करना है तो प्रस्तुत गंभीर मामलों पर भी सदस्यों द्वारा गहन विचारविमर्श की जरूरत कहां रह जाती है. यदि वे करते भी हैं तो सरकार कई बार ऐसे मामलों में गूंगी या बहरी साबित होती है और सदस्य को पूरा आलाप निरर्थक जान पड़ने लगता है.

शायद यह वह एहसास है, जिस ने आम सांसद की सक्रिय भूमिका को निरुत्साहित किया है. इस का प्रत्यक्ष परिणाम यह हुआ है कि लोकसभा के आमतौर पर तीनचौथाई सदस्य निष्क्रिय रहते हैं और पांच वर्ष के कार्यकाल में शायद ही एकदो अवसर आए होंगे, जब उन्होंने खड़े हो कर बोलने का साहस किया होगा. इस के अलावा अधिकतर सदस्य मतदान या अति महत्त्वपूर्ण मसलों पर चर्चा के अलावा अन्य अवसरों पर सदन में उपस्थित नहीं दिखाई देते हैं. अतः सदन की काररवाई को जारी रखने के लिए यह आपसी सहमति तैयार की गई है कि सदन में सदस्यों की पर्याप्त उपस्थिति न होने के बाद भी कोरम का प्रश्न न उठाया जाए और काररवाई चलने दी जाए. कई बार सदन में 10 सदस्य होते हैं और काररवाई जारी रखी जाती है.

प्रधान मंत्री और उस की मंत्रिपरिषद लोकसभा के प्रति जवाबदेह होती है और उसी रूप में वह सदन में सरकारी कामकाज और उस के वित्तीय एवं विधायी मामलों की छानबीन के अधिकार के साथ सरकार पर नियंत्रण रखने का काम करती है. इस के अलावा सदस्य सदन की बैठक के समय विभिन्न मंत्रालयों से संबंधित मामलों पर प्रश्न पूछ कर बहस के रूप में मामले उठा कर अथवा सरकार के खिलाफ अविश्वास या निंदा प्रस्ताव ला कर उसे नियंत्रण में रखने का काम करते हैं. परंतु संसद और विधान सभाओं में हाल ही में बिना बहस के अरबों के बजट तथा महत्त्वपूर्ण विधेयक पारित करने की परंपरा शुरू हो गई है, जिस ने संसदीय व्यवस्था के लिए नए प्रश्नचिह्न खड़े कर दिए हैं.

हमारी संसदीय व्यवस्था के बारे में यह आम शिकायत रही है कि सदन में वार्षिक बजट और महत्त्वपूर्ण विधेयकों पर गहराई से विचार संभव नहीं हो पाता है तथा प्रति वर्ष लोकसभा को मात्र आठदस मंत्रालयों की मांगों पर ही विचार करने का मौका मिल पाता है और करीब दो दर्जन मंत्रालयों और विभागों की मांगों को बिना किसी बहस के एक निर्धारित समय पर पांच मिनट के अंदर पारित कर दिया जाता है.

छानबीन की इस कमी को पूरा करने के लिए अमरीकी शासन प्रणाली में स्थायी समिति व्यवस्था लागू की गई है. विभिन्न मंत्रालयों की स्थायी समितियां सरकारी कामकाज की लगातार छानबीन के काम में लगी रहती हैं. इस आधार पर भूतपूर्व वित्त राज्य मंत्री सतीश अग्रवाल ने विधिवत स्थायी समिति बनाने की व्यवस्था शुरू करने का औपचारिक रूप से आग्रह किया था, जो वर्तमान प्रभावहीन संसदीय सलाहकार समितियों का स्थान ले सके. परंतु किन्हीं कारणों से यह सुझाव मान्य नहीं हो सका. परंतु वर्तमान व्यवस्था की कमजोरी के अनुभव के आधार पर इस परिवर्तन की जरूरत और मांग बराबर बढ़ रही है.

सतही चर्चा

सदन में रक्षा, विदेश, मूल्यवृद्धि, आतंकवाद, अत्याचार जैसे महत्त्वपूर्ण मसलों पर भी उथली और हलकी बहस सुनाई पड़ती है और सदन में गिनेचुने सदस्य ही उपस्थित दिखाई पड़ते हैं. रक्षा जैसे संवेदनशील एवं महत्त्वपूर्ण मामलों पर गहरी और गंभीर बहस होने के बजाय सतही चर्चा सुनने को मिलती है. सदस्यों के बीच इन मामलों के जानकारों का भारी अभाव खलता है.

इस के अलावा रक्षा मंत्रालय में यदि कोई वित्तीय गड़बड़ी है तो सभी इस पर खुली बहस से कतराते हैं. सरकार भी बहुत से मसलों को साफ करने से हिचकती है. यदि संसदीय समिति ने देश की जासूसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

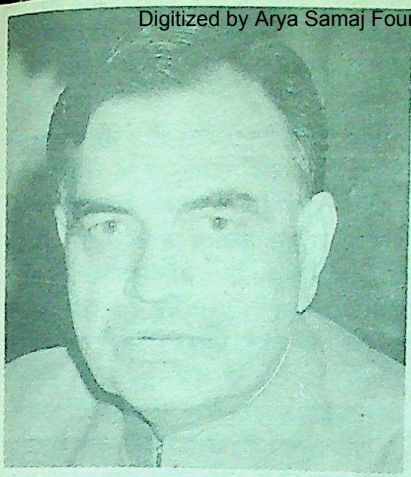

पूर्व लोकसभा अध्यक्ष बलराम जाखड़ : सदन के स्तर में लगातार गिरावट आ रही है.

एजेंसियों के कामकाज की छानबीन करनी चाही तो सरकार को सांप सूंघ गया. पिछले 40 वर्षों में इंटेलीजेंस ब्यूरो और 'रा' जैसे संगठनों की संसद द्वारा एक भी जांच-पड़ताल नहीं की गई है जबकि इन दो शीर्ष संगठनों पर बेहिसाब धन खर्च किया जाता है. अंततः लोकसभा अध्यक्ष के निर्देश पर इन जासूसी संगठनों की जांच की काररवाई बंद कर दी गई. अन्य लोकतांत्रिक देशों में ऐसी संस्थाओं की जांच की पर्याप्त व्यवस्था है.

संसदीय व्यवस्था का सब से बड़ा मजाक हाल ही में दिखाई पड़ा, जब मृत्यु की कगार पर खड़ी नौवीं लोकसभा ने वित्त वर्ष 1991-92 के चार महीनों के लिए करीब 40 हजार करोड़ रुपए की रेल और सामान्य बजट की मांगें बिना किसी बहस के चंद मिनटों में ही पारित कर दीं. इस के अलावा राष्ट्रपति शासन वाले पांच राज्यों— पंजाब, जम्मूकश्मीर, असम, तमिलनाडु और पांडिचेरी के बजट तत्संबंधी वित्त विधेयक और पंजाब में राष्ट्रपति शासन बढ़ाने संबंधी संविधान संशोधन विधेयक झपक मारते सदन में पारित हो गए. इस से बड़ा मखौल राज्य सभा में हुआ, जब किसी मामले को ले कर सदन के मुख्य विरोधी दल ने सदन से वहिर्गमन किया, जब तक वे वापस सदन में आए, तब तक पंजाब और असम से संबंधित विधेयक सदन ने पारित कर दिए. यह देख कर कांग्रेसी सदस्य बुरी तरह झल्ला गए. उन्होंने हंगामा खड़ा किया, लेकिन सब बेकार रहा. ऐसा ही नजारा उत्तर प्रदेश विधान सभा में देखा गया. जब सरकार ने विपक्ष के हंगामे के बीच ही कुछ क्षणों में वर्ष 1991-92 का पूरा बजट ही पारित करा लिया.

बिहार के मुख्य मंत्री लालूप्रसाद यादव ने संवैधानिक जरूरत को पूरा करने के लिए सदन की बैठक छः महीने में समाप्त होने के अंतिम दिन रविवार को बुलाई और मामूली कामकाज के बाद सदन की बैठक अनिश्चित काल के लिए स्थगित कर दी. यानी सरकार निर्वाचित विधान सभा के सामने जवाबदेही से बचने के लिए सदन की बैठक बुलाने से ही कतराती है. ये सभी घटनाएं इस बात की ओर संकेत करती हैं कि निर्वाचित सदन की संवैधानिक सत्ता का राजनीतिक स्वार्थों की पूर्ति के लिए क्रमिक रूप से ह्रास हो रहा है, लेकिन इस के साथ ही सांसदों, विधान सभा सदस्यों को अधिकाधिक भत्ते और सुविधाएं दे कर संतुष्ट रखने का प्रयत्न हो रहा है.

लोकसभा द्वारा हाल ही में राष्ट्रपति की वैधानिक स्वीकृति के बिना ही सदस्यों की पेंशन तथा अन्य सुविधाएं संबंधी विधेयक कुछ ही क्षणों में पारित कर दिया गया. नौवीं भंग लोकसभा का यह अंतिम काम था, जिस के द्वारा सदस्यों ने अपने लिए सरकार पर साढ़े तीन करोड़ रुपए का बोझ बढ़ा दिया. इस आत्महितकारी विधेयक को पारित करते समय सरकार और सदस्यों ने संवैधानिक बारीकी पर ध्यान नहीं दिया और एक तरह से सदन ने राष्ट्रपति की संवैधानिक सत्ता की अवहेलना कर दी. यह एक संवैधानिक व्यवस्था है कि राष्ट्रपति की पूर्व मंजूरी के बिना किसी धन संबंधी विधेयक को सदन में पारित नहीं किया जा सकता है. संवैधानिक दृष्टि से राष्ट्रपति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

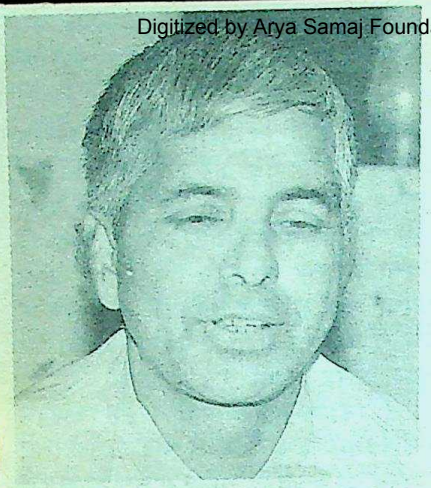

लालप्रसाद यादव : निर्वाचित विधानसभा को जवाबदेही से बचने के लिए सदन की बैठक अनिश्चित काल के लिए स्थगित कर दी.

संसद के एक अविभाज्य अंग के रूप में ही काम करते हैं.

वर्तमान संसदीय व्यवस्था सरकारी पक्ष और विरोध पर आधारित है. इस व्यवस्था में यह भावना अंतर्निहित है कि सरकारी पक्ष को सरकार के हर काम का समर्थन करना और बिना सोचने समझने की स्थिति तक मतदान के समय समर्थन में हाथ उठाना है. इस के विपरीत विपक्ष की कल्पना इस बात पर आधारित है कि उसे सरकार का हर संभव मौके पर विरोध करना है. इस आधार पर विभाजित सदन में किसी मामले पर सूक्ष्म और निष्पक्ष विवेचन वांछित होता है. अतः किसी भी हालत में अच्छे या खराब बजट या विधेयक को पारित करना सत्तारूढ दल की नैतिक जिम्मेदारी हो जाती है.

आपातकाल के दौरान 42वां संविधान संशोधन का पारित किया जाना इसी बात की पुष्टि करता है कि पार्टी के सदस्य के रूप में किसी सांसद को अपने विवेक का इस्तेमाल करने की जरूरत नहीं है, उसे तो केवल वही करना है जो उस का नेता चाहता है. इस दौर में विपक्षी सदस्यों के जोरदार सुझाव और भाषण बेकार हो जाते हैं क्योंकि दलीय नीति के आधार पर सरकार को वे मान्य नहीं हैं.

सन 1986 में पारित दलबदल विरोधी कानून के लागू होने के बाद से सदस्य के स्वतंत्र विवेक की स्थिति और भी खराब हो गई है. सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय के खिलाफ शाहबानो के मामले के संदर्भ में दंड प्रक्रिया संहिता कानून में संशोधन किया जाना सांसदों की निहित कमजोरी की ओर इशारा करता है. दलबदल विरोधी कानून के बाद सदस्य एक प्रकार से पार्टी का बंधुआ सदस्य बन गया है, जिस ने अपने स्वतंत्र विवेक की चाबी पार्टी के पास गिरवी रख दी है. पार्टी व्हिप के खिलाफ बोलने या मतदान करने का उस का अधिकार समाप्त हो गया है.

सत्तारूढ पार्टी को इस बात की जरूरत महसूस नहीं होती है कि सदस्य आवश्यकता से अधिक सक्रिय हों. पार्टी को उस के भाषण या बहस के बजाय मौके पर समर्थन में उस के समर्थनकारी हाथ की अधिक जरूरत है.

सदन में सरकारी पक्ष और विपक्ष के बीच कामकाज के बारे में तालमेल के अभाव के कारण सदस्यों में हंगामे, शोरगुल तथा धरने पर बैठने की प्रवृति बढ़ी है. राज्य विधान सभाओं में इस ने सदन में टकराव और खुले संघर्ष का रूप ग्रहण कर लिया है.

पिछले दिसंबर जनवरी संसद सत्र के दौरान एक सप्ताह तक सदन में एक के बाद एक हंगामा होता रहा और कोई सरकारी कामकाज ही नहीं किया जा सका.

इन सभी उभरती प्रवृत्तियों से संसदीय लोकतंत्र को प्रतिष्ठा नहीं मिल रही वरन इस से उस की संवैधानिक सत्ता और दायित्व ह्रास के लक्षण ही अधिक प्रकट हुए हैं. ये वे लक्षण हैं, जो देश और प्रशासन की आवश्यकताओं के अनुरूप इस प्रणाली की अपर्याप्ता और खामियों की ओर इशारा करते हैं, जिस का समय रहते उपचार करने की जरूरत है. जिस से लोकतंत्र अपनी पटरी पर निर्बाध रूप से चल सके. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

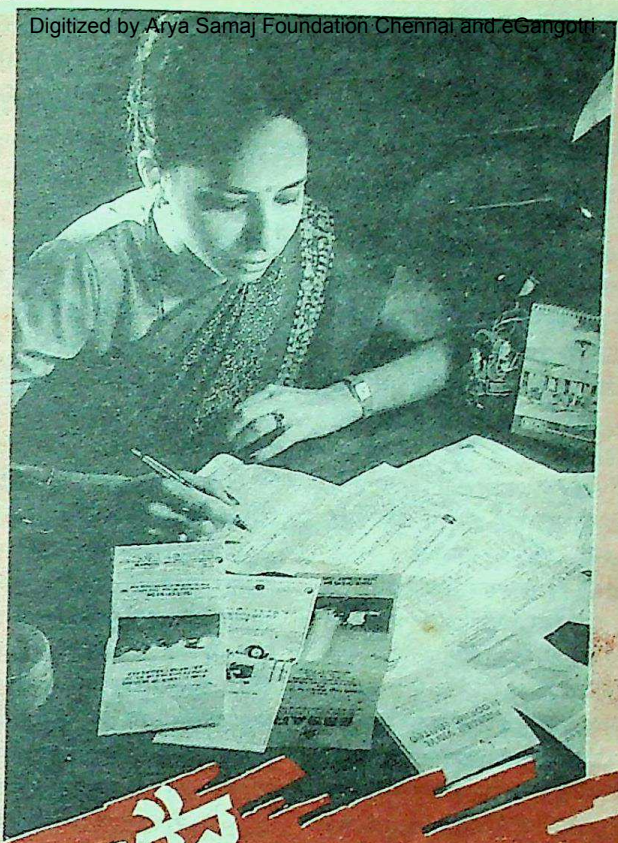

बचत और पूंजी निवेश

कैसे हो कम पूंजी से अधिक लाभ

लेख ●
विनयकुमार शर्मा

बुजुर्ग लोग आने वाली पीढ़ी को अनिवार्य रूप से कुछ बचत करने की सीख सदैव देते आए हैं, जिस से कि बुरे वक्त में कोई परेशानी न हो और किसी के आगे हाथ न फैलाना पड़े. कोई भी बुद्धिमान व्यक्ति न केवल अपने व्यय की सीमा को आय की लक्ष्मण रेखा पार करने की आज्ञा नहीं देगा बल्कि अपव्यय रोक कर और उचित व्यय में भी यथासंभव कटौती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बढ़ती महंगाई के दौर में केवल बचत कर लेना ही काफी नहीं है क्योंकि बचत का पैसा ज्यों का त्यों रखा रहने से मुद्रास्फीति के कारण उस की कीमत घटती चली जाएगी. इसलिए पूंजी निवेश कीजिए लेकिन समझदारी से ताकि आप की बचत आय बढ़ने के साथसाथ सुरक्षित भी रह सके.

कर के कुछ बचत करने का प्रयास करेगा.

आजकल बढ़ती महंगाई के दौर में केवल बचत कर लेने से ही कर्तव्य की इति श्री नहीं हो जाती. यहां से तो प्रारंभ होती है आप की पूंजी निवेश की योजनाएं, क्योंकि बचत का रुपयापैसा ज्यों का त्यों रखा रहने से मुद्रास्फीति के कारण उस की कीमत घटती चली जाएगी. बुद्धिमानी से आप ने बचत की है तो चतुराई से आप को पूंजी निवेश करना पड़ेगा अन्यथा अपनी आवश्यकताओं और जरूरतों की ओर से आंख फेर कर तथा कठिनाइयां उठा कर जिस उद्देश्य से आप ने यह पैसा जोड़ा है, वह प्राप्त नहीं होगा.

हम आप को 50 हजार रुपए तक की बचत की रकम को लाभप्रद एवं सुरक्षित रूप से आय का स्रोत बनाने के कुछ सुझाव दे रहे हैं, जिन पर अमल करने से आप को अपनी बचत से अपेक्षित आर्थिक मदद मिल सकेगी.

शेयरों का क्रयविक्रय शेयर ब्रोकर द्वारा किया जा सकता है. लेकिन केवल उस की बात को पत्थर की लकीर न समझें बल्कि सोचविचार कर ही उचित कदम उठाएं.

कहीं भी किसी कार्य में पूंजी लगाने से पहले हमें मुख्यतः तीन बातों पर गौर करना पड़ेगा :

- पूंजी की सुरक्षा की गारंटी,
- प्रतिफल यानी पूंजी पर प्राप्त होने वाली आय और
- द्रव्यता यानी आवश्यकता पड़ने पर उसे बिना किसी असुविधा के बेचा जा सके.

यों तो सब से अधिक सुरक्षित सौदा जमीनजायदाद, प्लाट अथवा आवासीय मकान खरीदना है तथा इन की कीमत भी कुछ ही वर्षों में काफी बढ़ जाती है. लेकिन केवल 50 हजार की राशि से आजकल महानगरों में तो क्या छोटेमोटे कसबों में भी कोई भूखंड कठिनाई से ही मिलेगा. उपर्युक्त मुद्दों को ध्यान में रखते हुए हम शेयर बाजार तथा शेयरों में पूंजी निवेश की बाबत बतला रहे हैं..

अधिकतर यह समझा जाता है कि शेयर बाजार केवल सट्टा बाजार है. सरकारी तौर पर स्वीकृत जुआघर जहां लोग सट्टा करने आते हैं तथा कुछ लोग कमा कर और अधिकतर गंवा कर चले जाते हैं. लेकिन यह पूर्ण सत्य नहीं है. अगर आप किसी कंपनी के कार्य का पूरा अध्ययन कर के उस के शेयरों के भाव में उतारचढ़ाव को कुछ समय तक दृष्टिगत रख कर तथा भविष्य में उस के उत्पादन की मांग तथा इस संबंध में सरकारी नीति और अन्य संबंधित मुद्दों को समझ कर खरीदते हैं तो कोई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

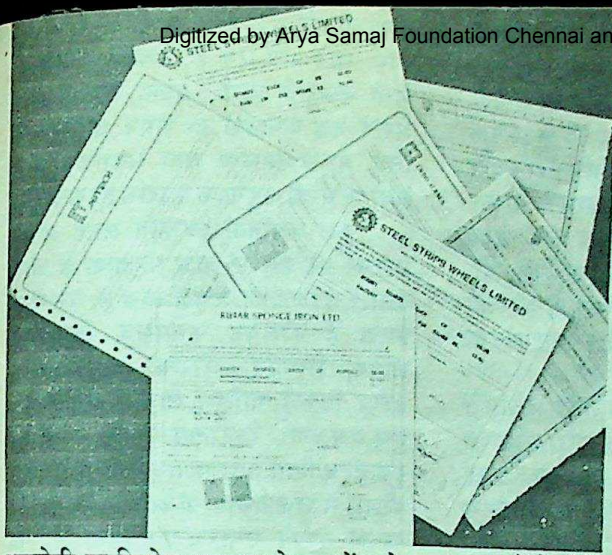

शेयर खरीदने से पहले संबंधित कंपनियों का अध्ययन विभिन्न पहलुओं से कीजिए, आप को मात नहीं खानी पड़ेगी.

अनहोनी या विशेष अपवाद के रूप में भले ही आप को क्षति पहुंच जाए पर साधारण परिस्थितियों में आप की पूंजी में आशा के अनुरूप वृद्धि अवश्य होगी.

हर वर्ष कंपनियों द्वारा अपने शुद्ध लाभ में से घोषित लाभांश द्वारा उस शेयर धारकों को नियमित आय तो होती ही है, इस के अतिरिक्त शेष लाभ को सुरक्षित पूंजी में अंतरित कर के कंपनी कुछ वर्षों में इसी कोष से बोनस शेयर भी आबंटित कर सकती है, जिन की संख्या पिछले शेयरों के अनुपात में निर्धारित की जाती है.

कई नई कंपनियां अपने शेयर जनता को बेचने के लिए 'पब्लिक इशू' निकालती हैं. इसी प्रकार पहले से कारोबार कर रही कंपनी भी अपने कार्य में विस्तार करने अथवा किसी नए उद्योग में पदार्पण करने के लिए आम जनता को अपने शेयर खरीदने के लिए आमंत्रित करती हैं. इस के उत्तर में प्राप्त सभी प्रार्थनापत्रों की संख्या तथा शेयरों की मांग के अनुसार आबंटन का अनुपात आठ सप्ताह के अंदर तय कर के आप को पत्र द्वारा सूचित कर दिया जाता है. अगर आप को शेयर प्राप्त होते हैं तो उन के मूल्य को काट कर तथा आबंटित न होने की दशा में कुल राशि वापस मिल जाती है. यहां कठिनाई यह है कि अच्छी विश्वस्त कंपनियों के शेयरों की कई गुना मांग होती है. इसलिए इन के मिलने की संभावना काफी कम होती है.

दूसरा तरीका बाजार से शेयर खरीदने का है. इस के लिए आप पहले कंपनी का अध्ययन विभिन्न पहलुओं से कीजिए. आवश्यक नहीं कि आप को अर्थशास्त्र का पूर्ण ज्ञान हो या इस में महारत हासिल हो. कंपनी की कुल शेयर पूंजी उस की चल और अचल संपत्ति, कुल सुरक्षित पूंजी, वार्षिक बिक्री, इस पर होने वाला शुद्ध लाभ, पिछले वर्षों में घोषित लाभांश, प्रति शेयर होने वाला लाभ, कुल देयता आदि ऐसी बातें हैं जिन्हें कोई भी व्यक्ति आसानी से समझ सकता है. समुचित सुरक्षित पूंजी रिजर्व और अच्छा मुनाफा कमाने वाली कंपनी तथा उस के शेयर निस्संदेह भविष्य में भी अच्छा लाभ देंगे.

विभिन्न कंपनियों के कार्य की आर्थिक समीक्षा एवं विश्लेषण के लिए आर्थिक समाचारों वाले अखबारों व पत्रिकाओं पर ही निर्भर कीजिए. पिछले वर्षों में तेजी से हुए औद्योगिक विकास के फलस्वरूप हमारे देश में भी अधिक से अधिक पूंजी निवेशकों का ध्यान शेयर बाजार की ओर आकर्षित होने लगा है. इन लोगों के शेयर बाजार संबंधी अज्ञान और रातोरात लखपति बनने की लालसा का कुछ पत्रिकाओं व समाचारपत्रों ने जम कर लाभ उठाया. केवल शेयर बाजार की जानकारी देने वाले इन पत्रों में अपने साप्ताहिक या पाक्षिक अंक में कुछ कंपनियों के शेयर खरीदने/बेचने की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सलाह दे कर बेचा अपना उल्लू सीधा करते रहे हैं.

ऐसे ही एक अखबार का प्रकाशन तो एक फाइनेंस और लीजिंग कंपनी के हाथ में है, जिस ने अपने इसी पत्र में अपने कारोबार के भ्रामक आंकड़े दे कर सब्जबाग दिखा कर बाजार में अपना 10 रुपए का शेयर 100 रुपए से ऊपर भाव में बिकवा दिया था, जिसे अब कहीं कोई 10 रुपए में भी नहीं पूछता. ऐसे समाचारपत्रों और शेयर संबंधी उन की भविष्यवाणियों से बचें.

शेयरों का क्रयविक्रय विभिन्न शहरों में स्थापित 'स्टाक एक्सचेंज' द्वारा अधिकृत एजेंट, जिन्हें 'ब्रोकर' (दलाल) कहा जाता है, ही कर सकते हैं. आप इन के माध्यम से अपनी पसंद के शेयर खरीद सकते हैं, जिस के लिए आप को क्रय मूल्य पर 1½% से 2% कमीशन देना पड़ेगा. किसी शेयर को खरीदने से पहले अगर आप कोई अग्रिम भुगतान कर रहे हैं तो चेक द्वारा करें अथवा नकद भुगतान की रसीद ले लें. इसी प्रकार शेयरों की खरीद का बिल भी अपने हिसाबकिताब तथा आयकर आदि के लेखेजोखे के लिए अवश्य संभाल कर रखें.

रातोरात करोड़पति बनने के स्वप्न देखने वाले व्यक्ति बहुधा सट्टे के चक्कर में पड़ कर अपनी गांठ की पूंजी भी वहीं लुटा कर खाली हाथ लौटते हैं. अगर आप को कोई दलाल औसत से बहुत अधिक लाभ का वर्णन कर के फुसला कर सट्टे का दांव लगाने को प्रेरित कर रहा हो तो अपने मस्तिष्क, अपनी बुद्धि का प्रयोग कर के सोचिए कि मामूली कमीशन के लिए वह आप की इतनी चापलूसी क्यों कर रहा है. क्यों नहीं वह स्वयं ऐसा सौदा कर के धनाढ्य बन जाए. इसलिए केवल पूंजी निवेश के लिए ही इस शेयर बाजार में उतरिए. सट्टा या फाटका अस्थायी तौर पर लाभदायक सिद्ध भी हो, दीर्घावधि में यह संबंधित व्यक्ति को अवश्य क्षति पहुंचाएगा.

अपनी समस्त पूंजी केवल एक कंपनी के शेयर खरीदने में ही मत लगा दीजिए. अंगरेजी की एक कहावत के अनुसार यह कार्य सारे अंडे एक ही टोकरी में रखने जैसी बेवकूफी होगी. अपना पैसा अलग-अलग कई कंपनियों के शेयर खरीदने के लिए अपनी सामर्थ्य तथा संभावित आय तथा लाभ की गणना के उपरांत ही लगाइए.

कुछ कंपनियां जिन्होंने अपने अंशधारकों को हमेशा लाभ पहुंचाया है और बाजार में जिन की अच्छी साख है, उन में से प्रमुख हैं कोलगेट पामोलिव, हिंदुस्तान लीवर, लिपटन, ग्लैक्सो, आई.टी.सी., टेल्को, टिस्को, ग्रासिम, लारसन एंड टूब्रो, एच.एम.एम., ब्रिटेनिया आदि. रिलायंस इंडस्ट्रीज जैसी कुछ कंपनियों के शेयर की कीमत में राजनीतिक या अन्य परिवर्तनों के कारण काफी उतारचढ़ाव होता है. नई कंपनियों में नाहर स्पिनिंग, स्पारटेक, ओ.सी.टी.एल., एसाब, सोना स्टीयरिंग, जमना आटो व मोदी जीराक्स आदि उल्लेखनीय हैं.

डिबेंचर व कंपनी सावधि जमा

जो व्यक्ति पूर्णतः सुरक्षित लेकिन सीमित आय अथवा प्राप्ति से संतुष्ट हैं, उन के लिए डिबेंचरों में पूंजी निवेश अधिक उपयुक्त है.

पूंजी निर्गम नियंत्रक के कार्यालय के 15 सितंबर 1984 के निर्देश के अनुसार कोई भी कंपनी आम जनता को अब केवल सुरक्षित डिबेंचर (ऋण पत्र) ही जारी कर सकती है. इस के लिए कंपनी अपनी अचल संपत्ति का प्रभार दूरदराज तक फैले लाखों डिबेंचरधारियों के स्थान पर एक न्यास (ट्रस्ट) के पक्ष में कर देती है. यह न्यास भी किसी प्रतिष्ठित संस्थान जैसे राष्ट्रीयकृत बैंक अथवा व्यक्तियों द्वारा संचालित होता है. इसलिए यह स्पष्ट है कि डिबेंचर शेयर की तुलना में अधिक सुरक्षित हैं क्योंकि शेयरों के पीछे ऐसी सुरक्षा की कोई गारंटी नहीं होती.

जहां तक आय का प्रश्न है, डिबेंचरधारी एक नियमित दर पर ब्याज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसीलिए मैं उन्हें नियमित रूप से झंडु स्पेशल च्यवनप्राश देती हूँ. सचमुच यह स्पेशल है. शुद्ध हरा आँवला, पीपली, वंशसालोचन, कुंडकोल, लौंग, जावंत्री, इलायची और अकलकरा जैसी जड़ी-बूटियाँ. सब को शुद्ध देसी घी में बनाया गया है. मेरा बाज़ार का आना-जाना तो रोज़ ही लगा रहता है, मैं जानती हूँ कि अच्छी और उम्दा दर्जे की चीज़ें हमेशा कुछ महँगी ही मिलती हैं. फिर, जब क्वालिटी की बात हो तो हर कोई झंडु को जानता है और उस पर भरोसा करता है.

मैं, अपने बच्चों को झंडु स्पेशल च्यवनप्राश बारहों महीने देती हूँ. इसीलिए उनमें छोटी-मोटी बीमारियों का मुक़ाबला करने की शक्ति आ गई है. ख़ास तौर से खाँसी और ज़ुकाम.

हाँ, थोड़ी सी परेशानी मुझे ज़रूर है. इसमें मिले तत्त्व इतने ताज़ा और शुद्ध हैं कि इसका स्वाद भी कमाल है. बच्चों का बस चले तो वे इसे दिनभर खाते रहें. हर दो-चार दिन बाद मुझे बोतल कहीं दूसरी जगह छिपाकर रखनी पड़ती है. क़ीमती है न! ''

"बच्चों की पढ़ाई या सेहत का मामला हो तो मैं समझौता कभी नहीं करती..."

क़ीमती ही सही

झंडु स्पेशल च्यवनप्राश.

असली च्यवनप्राश

अब १ किलो के आकर्षक पॉलीजार में भी उपलब्ध.

CLARION/B2P2D/TJ HIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राप्त करते हैं. अगर यह डिबेंचर परिवर्तनीय है अर्थात एक विशेष अवधि के पश्चात इन्हें शेयरों में तबदील किया जाना है तो इन पर 13.5% से अधिक ब्याज नहीं दिया जा सकता. अपरिवर्तनीय डिबेंचर कंपनी द्वारा स्वयं सात से नौ वर्ष के पश्चात खरीदे जा सकते हैं, जिस के लिए वह उस वक्त धारक को 5% अधिक मूल्य दे सकती है. इन पर ब्याज अधिकतर 15% की दर से प्राप्त होता है.

कुछ कंपनियों द्वारा ऐसे डिबेंचर भी जारी किए जाते हैं जिन का कुछ भाग ही शेयरों में परिवर्तित किया जाता है. या शेयरों के साथ अपरिवर्तनीय डिबेंचर भी अनिवार्य रूप से आबंटित किए जाते हैं. शेष अपरिवर्तित भाग बाजार में कम मूल्य पर खरीदा या बेचा जा सकता है क्योंकि अधिकतर निवेशक उस कंपनी के शेयरों को रखना चाहते हैं और बंधी हुई ब्याज की रकम से उन्हें कोई विशेष संतुष्टि नहीं होती. इस प्रकार आप बाजार से 100/- रुपए का डिबेंचर 75-80 रुपए में ही खरीद कर उन पर 20-22% तक ब्याज प्राप्त कर सकते हैं.

दूसरी बात जो डिबेंचर के पक्ष में जाती है वह यह है कि इस के धारक कंपनी के लेनदार हैं. कंपनी मुनाफा कमा रही है अथवा नहीं, इस से उन्हें कोई सरोकार नहीं. उन्हें तो एक निश्चित ब्याज नियमित रूप से मिलता ही रहेगा जबकि शेयरधारक लाभांश का हकदार केवल कंपनी के लाभ कमाने की दशा में ही होगा. डिबेंचरों पर भुगतान हर छः महीने पश्चात किया जाता है. इस प्रकार डिबेंचरों पर भविष्य में होने वाली आय निश्चित होने के कारण आप आश्वस्त हो कर अपना व्यय भी योजनाबद्ध कर सकते हैं.

द्रव्यता : वैसे तो कंपनी भी डिबेंचर को उस की परिपक्वता पर वापस पूरी रकम पर खरीदने को वचनबद्ध है. लेकिन इसी अवधि से पूर्व आप को पैसे की जरूरत पड़ने पर इसे शेयर बाजार में बेचा जा सकता है. सभी कंपनियों के डिबेंचर [illegible] सूचीबद्ध होते हैं और इन के भाव अखबारों में भी प्रकाशित किए जाते हैं. इसे बेचने के लिए कंपनी को पूर्वसूचना देने अथवा उस की आज्ञा लेने की आवश्यकता नहीं है. केवल एक हस्तांतरण पत्र पर हस्ताक्षर कर के और डिबेंचर उस के साथ संलग्न कर के इन की बिक्री की जा सकती है. हां, खरीदार को इसे अपने नाम से दर्ज कराने के लिए कंपनी के पंजीकृत कार्यालय में भेजना पड़ेगा.

कंपनी सावधि जमा:

कई कंपनियां अपनी मध्यावधिक (तीन से पांच वर्ष की) आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए जनता से सावधि जमा स्वीकार करती हैं. गैर बैंककारी कंपनियों, यानी बैंकिंग उद्योग से भिन्न कंपनियों द्वारा इस प्रकार स्वीकृत जमा राशि पर 14% से अधिक ब्याज देना निषिद्ध है.

इस प्रकार की सावधि जमा रसीदें डिबेंचर की तुलना में कम सुरक्षित होती हैं.

सावधि जमा में जमाकर्ता को ब्याज के भुगतान का समय चुनने की सुविधा होती है जिस से वह मासिक, त्रैमासिक, अर्द्धवार्षिक, वार्षिक अथवा एक साथ पूरा भुगतान (इस रसीद के परिपक्व होने पर) प्राप्त कर सकता है.

सावधि जमा का ब्याज अथवा जमा रसीद किसी अन्य व्यक्ति के नाम अंतरित नहीं हो सकती. भुगतान के लिए इस रसीद को कंपनी के पास भेजना अनिवार्य होता है. किसी अन्य के नाम अंतरण की सुविधा न होने के कारण इस का बेचा जाना भी असंभव है.

इन पर प्राप्त होने वाले ब्याज की प्रति वर्ष 2,500/- रुपए तक की राशि आयकर से छूट की सीमा में आती है.

अतः आप अपनी आय में से कुछ बचत अवश्य करें पर उसे बिना सोचेसमझे इधर उधर न लगा कर अपनी क्षमता के अनुसार उपर्युक्त में से किसी एक या अधिक सुरक्षित एवं पर्याप्त लाभदायक मदों में ही लगाएं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नीको वह कर दिखाता है जिसके बारे में बाकी साबुन बोलने से भी कतराते हैं

नीको में है टी सी सी, जो नहाने के बाद आपके शरीर पर एक अनोखी सुरक्षित परत बन कर छा जाती है.

नीको अधिक तेलों को धो डालता है ताकि मुँहासें पैदा ही न हों.

नीको शरीर की दुर्गंध को दूर करता है, ताकि आप सबके बीच पूरे आत्मविश्वास से उठें-बैठें.

नीको उन कीटाणुओं को हटाता है, जो त्वचा में इन्फेक्शन पैदा करते हैं.

नीको धूल और अन्य पदार्थ हटाता है, ताकि त्वचा पर झाइयाँ न हों.

नीको से नहाइये, लोग आपकी त्वचा के बारे में बोलते नहीं थकेंगे.

नीको®

आपकी त्वचा का रखवाला साबुन.

PARKE-DAVIS

पार्क-डेविस (इंडिया) लिमिटेड, साकी नाका,
बम्बई-४०० ०७२
® पार्क-डेविस एंड कंपनी, यू.एस.ए. का रजिस्टर्ड ट्रेड मार्क
लाइसेंस उपयोगकर्ता
पार्क-डेविस (इंडिया) लिमिटेड

Contract.PD.85.89.Hn

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मेरी प्यारी नानी,
जब पिलाये पानी,
मिलाये उसमें क्या? ताज़गी भरा रूह अफ़ज़ा!

हम तो पियें मिल्कशेक में,
पियें नींबू पानी में,
और पियें सोडा में..."

"...और बनायें लस्सी!"

"बात है बिल्कुल सच्ची
बाबा
बात है बिल्कुल सच्ची!"

दे कमाल का मज़ा,

जी हाँ। रूह अफ़ज़ा अपनी मनपसन्द किसी भी चीज़ में मिलायें और एक ख़ास स्वाद और आनन्द पायें।
रूह अफ़ज़ा है ताज़गी से भरपूर, क्योंकि यह बनता है कुदरती जड़ी-बूटियों और लवों के मिश्रण से।
रूह अफ़ज़ा नाना-नानी से पोता-पोती तक सबका मनपसन्द।

हमदर्द

शरबत
रूह अफ़ज़ा
85 वर्षों से अधिक समय से सबका मनपसन्द शरबत।

Chaitra D HWL 2290 HIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कह दो तो

थकेथके अधरों पर सजनी
कह दो तो कुछ सपने बुन दूं!
मौसम का बैरी अल्हड़पन
तेरे आंगन तक आया है
तेरे अधरों की मदिरा से
जीवन का रंग छलकाया है!
कह दो तो मधुवन की उपमा
तेरे दो बोलों से कर दूं!

गीतों की परिभाषा बदली
जब तूने कंगना खनकाया
झरनों का वैभव पथ भूला
जब से तुम पर यौवन आया
कह दो तो अंबर की शोभा
तेरे इन गालों पर वर दूं!

छलछल यौवन कंचन काया
भंवरों की गुंजन के मेले
मौसम को बांहों में भर लो
क्यों ज्वलते हो प्रिय अकेले!
कह दो तो लहरों की मस्ती
तेरे इन नयनों में भर दूं!

मानों तो नभ के तारों को
माथे का सिंदूर बना दूं
कह दो तो बदली के तन से
नयनों का कजरा बनवा दूं!
कह दो तो सांसों की धड़कन
हाथों की मेहंदी से कर दूं!

—सुभाष राहुल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खरीदारी

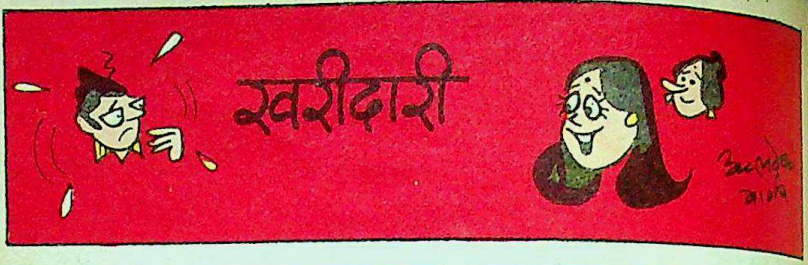

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'शाम की चाय के साथ कुछ अनूठे व्यंजन

स्वादिष्ट दही अंडे के टोस्ट

सामग्री : 1 बिना कटी पूरी डबलरोटी, 4 अंडे, 200 ग्राम दही, 6 हरी मिर्च, 50 ग्राम धनिया, 50 ग्राम पिसी हुई मूंग की दाल (पीठी), स्वादानुसार नमक, 1 चम्मच हलदी, ½ चम्मच लाल मिर्च, ½ चम्मच काली मिर्च, ¼ चम्मच सोडा, ¼ चम्मच अजवायन, तलने को तेल या घी.

विधि : बिना कटी पूरी डबलरोटी के मोटेमोटे 8-10 स्लाइस काट लें. हरी मिर्च और हरी धनिया को साफ धो, काट कर बारी के पीस लें. चारों अंडों को फोड़ कर फेंट लें और दही को मथानी से बिलो कर अंडों के घोल में मिला दें. फिर इस में [illegible] हरी मिर्च, धनिया, मूंग की दाल की [illegible] पीठी, एक चम्मच हलदी, लाल मिर्च, [illegible] मिर्च, सोडा और अजवायन मिला [illegible] एगबीटर या कड़छी से ही खूब फेंट में

अब तवे के ऊपर तेल डाल कर [illegible] गरम कर लें और मोटे कटे स्लाइसों [illegible] एकएक कर के दही और अंडे के मिश्रण [illegible] डुबो कर गरम तेल में तल लें. जब एक तरफ [illegible] से लाल हो जाएं तो दूसरी तरफ बदल [illegible] उस पर हरी धनिया की पत्तियां सजा [illegible] दूसरी तरफ भी लाल सिकने पर तवे [illegible] उतार लें और इसी तरह सब स्लाइस [illegible] लें. आप इन्हें गरमगरम चाय के साथ, [illegible] चटनी या टमाटर की चटनी के साथ परो[illegible] यदि चाय न पीनी हो तो इन्हें दही के साथ [illegible] गरमगरम परोसा जा सकता है. –[illegible]

दही अंडे के टोस्ट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाकलेट मिल्क बादाम

सामग्री: ½ लिटर दूध, 15 गिरी बादाम भिगोए हुए, 8-10 गिरी पिस्ता बारीक कटा हुआ, 2 छोटे चम्मच चाकलेट पाउडर, 50 ग्राम ब्रेड का चूरा, 1 अंडा, 1 छोटी चम्मच चीनी, 1 चुटकी बेकिंग पाउडर, 1 छोटा चम्मच मक्खन.

विधि: दूध को उबाल कर उस में बादाम की गिरी छिलका उतार कर मिलाएं और दूध को तब तक उबालें जब तक कि वह गाढ़ा न हो जाए. गाढ़ा होने पर उस में अंडा फेंट कर मिलाएं. ब्रेड का चूरा, चीनी, बेकिंग पाउडर डाल कर खूब अच्छी तरह फेंटें. फेंटने के बाद किसी चौड़े मुंह वाले बरतन में मक्खन लगा कर इस मिश्रण को उलट कर भाप में 15 मिनट तक पकाएं. फिर इसे प्लेट में उलट लें. —नीना गोयल

सैंडविच चने व मूंग के

सामग्री: 100 ग्राम काला या सफेद चना, 100 ग्राम साबूत मूंग, 8 स्लाइस डबलरोटी के, 1 टिकिया मक्खन थोड़ा थोड़ा लगाने को, यदि तलना हो तो घी, स्वादानुसार नमक, 1 नीबू, ½ चम्मच गरममसाला.

विधि: चने व मूंग की दाल को रात भर भिगो कर अंकुरित कर लें. इसे थोड़े से पानी में कुछ मिनट तक नमक डाल कर पकाएं. फिर मिक्सी में पीस कर गाढ़ा घोल बना लें. घोल को आधा चम्मच घी, जीरा व गरममसाला डाल कर भून लें. स्लाइसों पर मक्खन लगाएं. इस घोल को इन स्लाइसों पर लगा कर दोदो स्लाइस आपस में मिला कर मनपसंद आकार में काट लें.

विधि (2): यदि चाहें तो तले टोस्ट बना लें. इस के लिए आप इस चने और मूंग के घोल को थोड़ा पतला कर के इस में नमक, मिर्च मिला कर घोल तैयार कर लें. अब कड़ाही में घी गरम कर लें. स्लाइस को इस घोल में लपेट कर गरम घी में डाल कर तल लें. इन्हें गरमगरम टमाटर या पुदीने की चटनी के साथ परोसें. —उर्मिल कपूर

नायलोन पोहा (चिड़वा)

सामग्री: 250 ग्राम नायलोन पोहा, 1

चाकलेट मिल्क बादाम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्याला बेसन की हरी बूंदी, 1 प्याला लाल बूंदी, 1 प्याला भुनी या तली चने की दाल, ½ प्याला नरियल के पतले टुकड़े, 2 बड़े चम्मच रिफाइंड तेल, ½ कटी हरी मिर्च, कुछ कढ़ी पत्ते, ½ छोटा चम्मच हलदी, नमक, लाल मिर्च तथा अमचूर सभी स्वादानुसार, 1 छोटा चम्मच पिसी चीनी.

विधि: कड़ाही में रिफाइंड तेल गरम करें. इस में नारियल के टुकड़े डाल कर एकदो मिनट भूनें और निकाल लें. फिर कटी हरी मिर्च और कढ़ी पत्ता डाल कर करारे होने तक तलें.

इसी में नायलोन पोहा डालें और धीमी आंच पर जल्दीजल्दी हिलाते हुए भूनें.

जब थोड़ा करारा हो जाए तो बाकी सभी सामग्री डाल कर एकदो मिनट भूनें और आंच से उतार लें. ठंडा होने पर हवाबंद डब्बे में भर कर रखें. मिठाई के साथ नायलोन पोहा पेश करें.

ज्यादा शाही बनाना चाहें तो बीच में थोड़े से तले काजू और खरबूजे के बीज भी मिला सकती हैं.

—पुष्पा मोहता

नमकीन बिस्कुट

सामग्री : 100 ग्राम मैदा, 25 ग्राम घी, 1 छोटा चम्मच चीनी, 5 छोटे चम्मच दूध, चुटकी भर नमक, चुटकी भर मीठा सोडा.

विधि : चीनी, घी को अच्छी तरह से फेंट लें. उसी में नमक, मैदा, दूध और सोडा मिला दें और इस मिश्रण को किसी चौड़े मुंह के बरतन में खूब अच्छी तरह फेंट कर मिला लें.

फिर इसे आटे की तरह गूंध लें. सब कुछ अच्छी तरह से मिल जाए तो बेल लें. फिर बेले हुए मिश्रण पर बिस्कुट का सांचा ऊपर से मार कर बिस्कुट निकालती जाएं और बिस्कुट बना कर बेकिंग ट्रे पर रख उसे 20 मिनट तक (तापमान 350° फा. दे कर) ओवन में रख दें. भूरा हो जाने पर, ठंडा कर के हवाबंद डब्बे में रखें.-उर्मिल कपूर

नमकीन बिस्कुट

नायलोन पोहा (चिड़वा)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रेनबो कटलेट्स

सामग्री: 3/4 प्याला उबले हुए मटर, 5-6 हरी मिर्चें, कुछ पत्ते पुदीने और धनिए के, ½ चम्मच नमक, ¼ चम्मच गरम मसाला.

2. 1 प्याला चने की दाल, ½ चम्मच हलदी, ½ चम्मच नमक, ½ चम्मच भुना हुआ जीरा, ½ चम्मच लाल मिर्च, ½ चम्मच गरम मसाला.

3. 1½ प्याला पनीर, 2 चम्मच कार्नफ्लोर, 2 चम्मच मैदा, (½ प्याला पानी में धुला), ½ चम्मच नमक, 8-10 डबलरोटी स्लाइस का चूरा, 250 ग्राम घी.

विधि: मटर उबाल लें, अगर ताजा (मौसमी) मटर हो तो वैसे ही रहने दें. अब मटर, धनिया, हरी मिर्चें और पुदीना पीस लें. नमक और गरममसाला डाल कर अच्छी तरह फेंट लें. फिर इस मिश्रण के छोटे छोटे गोले बना कर एक तरफ रखें.

चने की दाल में हलदी, नमक व पानी डाल कर उबाल लें, उबलने के बाद दाल में से पानी निकाल कर दाल को अच्छी तरह पीस लें. पिसी हुई दाल में भुना हुआ जीरा, लाल मिर्च और गरममसाला डाल कर अच्छी तरह मिलाएं. अब मटर के गोले पर चने की पिसी दाल की पीठी चढ़ा दें और गोला चना एक तरफ रख दें.

पनीर में कार्नफ्लोर मिला कर अच्छी तरह मसलें और नमक डाल दें. अब मटर और चने की दाल की बनी गोलियों पर पनीर की तह लगा कर गोले बनाएं और मैदे के घोल में डुबोएं और ब्रेड का चूरा लगा कर सब को तल लें. रेनबो कटलेट तैयार हैं, इन्हें इमली की चटनी के साथ पेश करें.

—भूपेंद्र कौर माखीजा ●

इस स्तंभ में पाठिकाओं के व्यंजन भी प्रकाशित किए जाते हैं. व्यंजन किसी पत्रिका या पुस्तक से न लिए गए हों और उस में प्रेषक की मौलिकता हो. प्रत्येक प्रकाशित व्यंजन पर पुरस्कार दिया जाता है. पता है : नए पकवान, सरिता, नई दिल्ली-110055.

रेनबो कटलेट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सलवार कमीज जो मन को छू लें

सलवारकमीज प्लेन हों या मैचिंग—इन पर सूझबूझ से डिजाइन किया गया पैटर्न या अंदाज से ओढ़ी गई चुन्नी इन की सादगी में एक नयापन झलकाती है, जो नवयौवनाओं के खिलेखिले सौंदर्य में अनोखा आकर्षण भर देती है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फैशन के नित नए बदलते दौर में सलवारसूट भी पीछे नहीं. अपने बदले-बदले रूप में ये यौवनाओं की पसंदीदा पोशाकों में शामिल हैं. सुनहरी किनारी से सजा जैकटसूट, प्रिंटिड सलवार के साथ कढ़ाईदार कमीज, चुन्नी का नया मफलरनुमा रूप, साथ ही कंधे पर लटकती ओढ़नी का नया अंदाज हमेशा से आधुनिकाओं की चाहत बने हुए हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जरूरत

कहानी ● नैयर सदरुद्दीन

नादिर घर पहुंचा ही था कि फीरोजा तुनक कर बोली, "देख आए भाई की कोठी...कालिख नहीं पुत गई तुम्हारे चेहरे पर? जरा अपना घर देखो, जब से शादी हुई है, माचिस की इस डिबिया में रहतेरहते दम ही घुटने लगा है. मुझे तो हैरत होती है कि सब को टी.बी. क्यों नहीं हो गई. न जाने कभी हम भी बड़े से अपने घर में रहेंगे या नहीं. लेकिन अपना घर बनेगा कैसे, मियां जो निखट्टू मिला है." फीरोजा की आंखों से आसू बह रहे थे.

नादिर ने करीब आ कर फीरोजा के

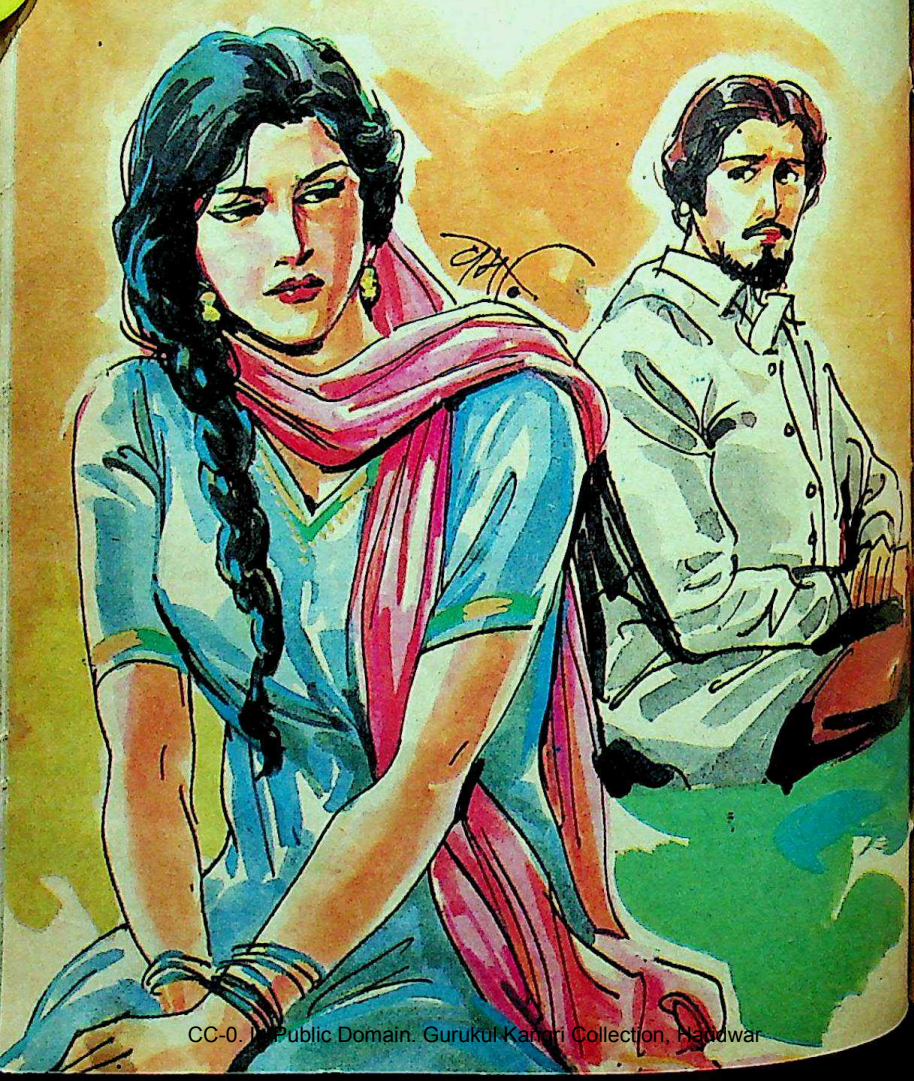

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

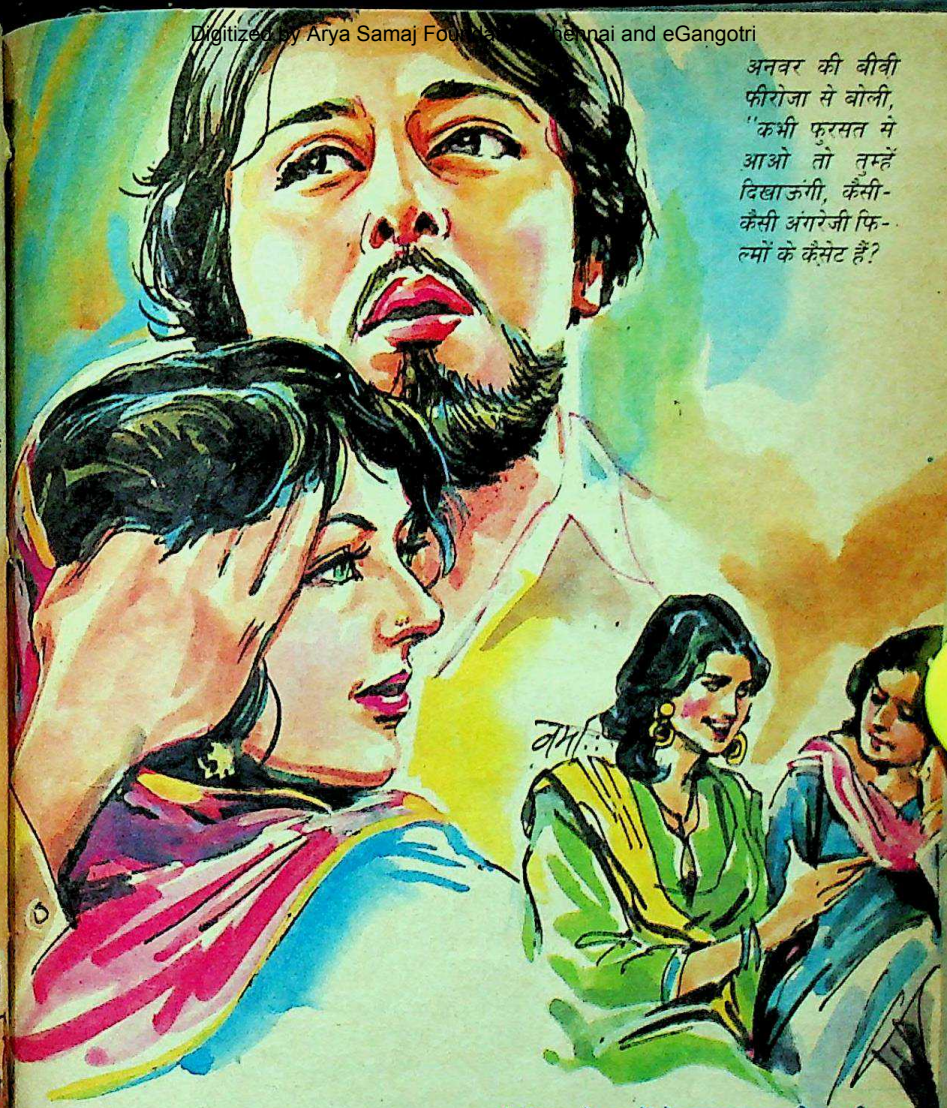

अनवर की बीवी फीरोजा से बोली, "कभी फुरसत मे आओ तो तुम्हें दिखाऊंगी, कैसी-कैसी अंगरेजी फिल्मों के कैसेट हैं?

कंधे पर हाथ रखा और उस के पास बैठते हुए आहिस्ता से कहा, "रोते नहीं फीरोजा, तुम तो जानती ही हो कि सब पैसे का खेल है. वह दुबई में इतने बरस रहा, ढेर सा रुपया कमाया और बना लिया घर.

"और अब फिर दुबई जा रहा है."

फीरोजा उस का हाथ कंधे से हटाते हुए बोली, "देखा नहीं, किस ठस्से से रहती है उस की जोरू. क्यों न रहे, शौहर जरूरत से

फीरोजा के तानों से ऊब कर नादिर भी धन कमाने के लिए विदेश जाने के जुगाड़ में लग गया और जब जाने का वक्त आया तो फीरोजा का रवैया देख वह दंग रह गया. उसे क्या पता था कि अपनी जरूरतों को पूरा करने के चक्कर में, अनवर की बीवी के जीवन में जो कमी आ गई थी, उसे देख कर फीरोजा को अपनी मांगें बेमानी लगने लगी थीं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्यादा कमा कर दे रहा है. क्या कपड़े हैं, क्या जेवर हैं...कैसे दोनों हाथों से खर्च करती है. उस के सामने जाते हुए मेरी समझ में ही नहीं आता है कि क्या पहनूं?''

''क्यों, क्या सिर्फ कपड़ों से ही इज्जत बनती है? क्या कमी है तुम्हारे पास? तुम तो ऐसे रो रही हो, जैसे हमारे घर में फाके होते हों.'' नादिर फीरोजा को समझाने की कोशिश कर रहा था, ''देखो फीरोजा, सब्र करना सीखो.''

पर फीरोजा भड़क उठी, ''यह अच्छा लफ्ज ढूंढ़ लिया है तुम ने. सब्र संतोष के नाम पर हाथ पे हाथ धरे बैठे रहो. न आगे बढ़ने की कोशिश करना, न बाहर जाने की. दालरोटी मिले तो संतोष, चटनीरोटी मिले तो सब्र, है न?''

''देखो फीरोजा, मैं एकदो एजेंटों से मिल चुका हूं. काफी पैसा देना पड़ता है, तब जा कर ये लोग बाहर भेजते हैं. फिर अभी मैं कौन सा बेकार बैठा हूं. बैंक की नौकरी के लिए अच्छेअच्छे परेशान रहते हैं. अच्छा-खासा खा रही हो, पहन रही हो, बच्चे पढ़ रहे हैं. सब कुछ तो है. जो नहीं है, वह भी हो जाएगा.''

बच्चे बाहर से खेल कर आ गए थे. नादिर के साथ किसी भी तरह खटपट हो रही हो, फीरोजा बच्चों के सामने बातों को तूल देना पसंद नहीं करती थी. वह जल्दी से उठ गई और खाने का इंतजाम करने लगी. वे लोग जल्दी ही खाना खा लेते थे. फिर दोनों बेटे पढ़ते रहते. बहुत चैन से उन का छोटा सा परिवार गुजरबसर कर रहा था. लेकिन नादिर के छोटे भाई अनवर के नए मकान को देख कर फीरोजा बेचैन हो गई थी.

अनवर आठ बरस से दुबई में नौकरी कर रहा था. बीच में आया और शादी कर के बीवी को भी साथ ले गया. अब आया था तो बीवी की गोद में दो बच्चे थे, चार साल का बेटा और दो बरस की बेटी.

अनवर ने जमीन पहले से खरीद ली थी. अब उस पर कोठी बन कर तैयार हो गई थी. दो मंजिला कोठी के सामने खूबसूरत बगीचा था. एक हिस्सा किराए पर उठा दिया, दूसरे में खुद थे.

अनवर की बीवी का ठस्सा भी गलत नहीं था. मामूली घर की लड़की अगर कुछ ही बरसों में इतने सब कुछ की मालकिन बन बैठे तो ठसक क्यों न होगी.

अनवर के बारबार बुलाने पर नादिर और फीरोजा उस के घर गए थे. शानदार दावत थी. नादिर के अलावा और भी बहुत से लोग आए थे.

''भाई जान, मैं ने तो आप को भी आने के लिए कितनी बार कहा. लेकिन आप तो बस एक आसान जिंदगी चाहते हैं.'' अनवर ने कहा तो एक जोरदार कहकहा लगा.

नादिर को छोटे भाई के हाथों अपनी तौहीन और मजाक पसंद तो न आया लेकिन अब छोटा भाई सिर्फ छोटा भाई ही नहीं था, पैसे के बल पर वह बड़ा आदमी बन चुका था. फिर भी नादिर ने कहा, ''इधरउधर कोशिश तो कर रहा हूं.- देखो, शायद कुछ हो जाए.''

''ऐसी कोशिश कर रहे हैं तो उम्र भर कोशिश ही करते रहिएगा. अजी, जाने वाले चले जाते हैं.. वे कोशिश नहीं करते रहते.''

नादिर का चेहरा उतर गया था. वह अच्छाखासा कमा रहा था, लेकिन इस वक्त अनवर के घर में वह यों महसूस कर रहा था जैसे कि वह बेरोजगार है और उस के घर में खाने को कुछ भी नहीं है.

वापसी में फीरोजा पड़ोस के हकीम साहब के घर वालों के साथ लौट आई. नादिर को बाजार से कुछ खरीदारी करते हुए आना था.

घर आ कर फीरोजा अंदर ही अंदर खौलती रही और नादिर को देखते ही ज्वालामुखी फट पड़ा. वह तो बच्चे लौट आए थे, वरना न जाने कब तक वह रोतीपीटती रहती.

रात के खाने के बाद दोनों खामोश हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

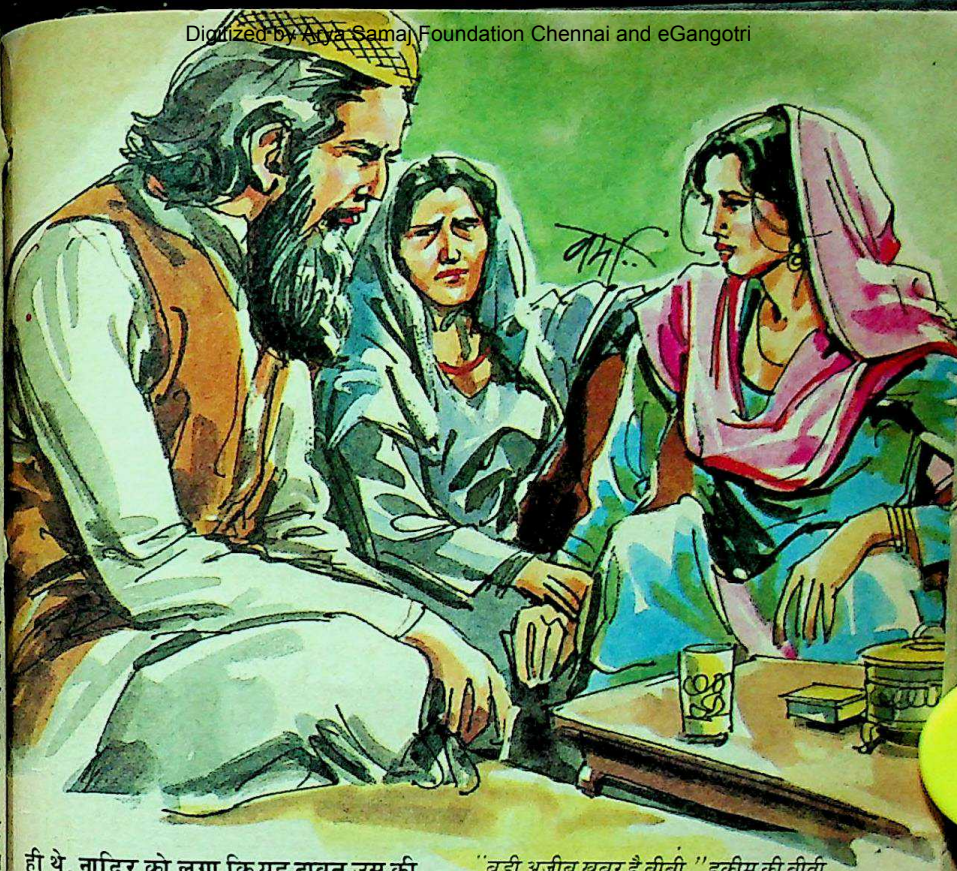

"बड़ी अजीब खबर है बीबी." "हकीम की बीबी फीरोजा से बोली.

ही थे. नादिर को लगा कि यह दावत उस की खुशियों भरी जिंदगी के लिए जहर बन गई है. उस के साथ हंसनेबोलने वाली फीरोजा एकदम गुमसुम हो कर रह गई.

रात बहुत देर तक नादिर को नींद नहीं आई. बच्चे सो चुके थे. फीरोजा भी कुछ देर में सो गई. दिन भर काम की भरमार और फिर सारी शाम रोनापीटना. नींद तो आनी ही थी, लेकिन नादिर बहुत परेशान था. उस की हमेशा एक ही कोशिश रही थी, फीरोजा और बच्चों का खयाल करना, उन की हर जरूरत को पूरा करना. पर आज अचानक उसे लगने लगा था कि वह जिंदगी में कुछ नहीं कर पाया है, कुछ भी नहीं.

जिंदगी धीरेधीरे अपने पुराने ढर्रे पर लौटने लगी थी. अनवर और उस के बीवी बच्चे दुबई जा चुके थे. कोठी के नीचेऊपर के दोनों हिस्से अब किराए पर किसी बैंक को दे गए थे.

फीरोजा पहले की तरह हंसनेबोलने लगी थी. नादिर भी यों तो हंसबोल लेता था, लेकिन दिल में कहीं एक फांस चुभी हुई थी, फीरोजा की जरूरतें पूरी करने की.

यों तो सभी कुछ था घर में जिसे आजकल जरूरत समझा जाने लगा है यानी टीवी, फ्रिज, स्कूटर, गैस का चूल्हा वगैरह. हां, दो कमरे का यह घर जरूर किराए का था, लेकिन नादिर को कोई ऐसी चाहत भी न थी कि घर बनाने का झमेला खड़ा करे. वह सोचता था, दोनों बेटों को पढ़ालिखा दूं, ये किसी काबिल बन जाएंगे तो खुद सब कुछ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गम

गम तेरा जब
हद से गुजर जाता है,
तो कागज पर स्याही
बन कर बिखर जाता है.

—शशि सजवाण

बना लेंगे. बच्चे ही उसे सब से बड़ी दौलत मालूम होते थे.

लेकिन नहीं, नादिर ने सोच लिया था कि अब बाहर जाएगा और अपनी फीरोजा के लिए कोठी बनवाएगा. कभीकभी वह उलझ भी जाता कि इतनी अच्छी सरकारी नौकरी कैसे छोड़ेगा. आखिर उस ने फैसला कर लिया कि वह कहीं से कर्ज ले कर पहले दफ्तर से दोतीन महीने की छुट्टी ले कर जाएगा. काम जम गया तो नौकरी से इस्तीफा दे देगा.

इसी तरह दो वर्ष गुजर गए. एक दिन सुबह ही सुबह हकीम साहब की लड़की शानो आ धमकी, "भाभीजान, भाभीजान..."

फीरोजा हाथ पोंछती हुई बावरचीखाने से निकली, "कौन शानो.. न सलाम, न दुआ...भई, खैरियत तो है?"

"कुछ सुना आप ने... अनवर भाईजान आ गए हैं."

"अच्छा... कब?" फीरोजा ने हैरान हो पूछा.

"नदीम भाई बता रहे थे, शायद कल ही तो आए हैं." इधरउधर देख कर वह बोली, "नादिर भाई साहब कहां हैं?"

"किसी दोस्त से मिलने गए हैं. कह रहे थे, वहीं से बैंक चला जाऊंगा."

"आप लोगों को वाकई नहीं पता?" शानो उठते हुए बोली.

"लो, तो क्या मैं नाटक कर रही हूं?"

सच ही तो है, जब लोगों के पास पैसा हो जाता है तब वे गरीब रिश्तेदारों को कमजोर और गयागुजरा समझने लगते हैं. शायद यही वजह थी कि अब अनवर भैयाभाभी को खत लिखना तो दूर, अपने आने की खबर देना भी जरूरी नहीं समझता था.

नादिर और फीरोजा ने भी अपनेआप को इतना छोटा मान लिया था कि अब अनवर या उस की बीवी के खत न लिखने पर उन्हें कोई शिकवा नहीं होता था. फीरोजा जरूर कभीकभी नादिर के सामने रोधो कर दिल हलका कर लेती, लेकिन नादिर तो कभी किसी से कुछ भी न कहता.

शाम को नादिर घर लौटा तो फीरोजा ने उसे बताया, "सुना है, अनवर भैया आ गए हैं."

"हां... इतनी जल्दीजल्दी तो वह नहीं आता था."

"तुम्हें मालूम है?"

"अभीअभी बाहर हकीम साहब ने बताया."

"हम तो शायद इस काबिल भी नहीं कि अनवर मियां या दुलहन हमें आने की इत्तला भी दें."

"अब छोड़ो भी... एक प्याली चाय दे दो... मैं खुद ही उन से मिल आता हूं."

"मैं नहीं जाऊंगी... बच्चों को पढ़ाना है. फिर किसी दिन मिल आऊंगी."

नादिर तो यही चाहता था. अनवर के घर की रौनक देख कर दिल तो उस का भी मचल जाता था कि वह भी अपने बीवीबच्चों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को ऐसे ऐश कराए, लेकिन वह मर्द था, बरदाश्त कर जाता था. फीरोजा औरत थी, वह हर बात दिल को लगा लेती, रोती, शिकवे करती, परेशान होती. इसी लिए नादिर खुश था कि फीरोजा नहीं जा रही थी.

नादिर रात काफी देर से लौटा. बच्चे सो चुके थे. फीरोजा इंतजार कर रही थी. उस ने खाना भी नहीं खाया था.

"खाना लगाऊं या खा आए हो?"

"तुम्हारे बगैर कैसे खाता?"

खाना निकालते हुए फीरोजा ने पूछा, "कैसे वे लोग आ गए अचानक?"

"अचानक... हमें लग रहा है वे तो सब योजना बना कर आए हैं."

"क्या मतलब?"

"नीचे का घर खाली करवा लिया है, उस में खुद रहेंगे."

"क्यों? वापस नहीं जाएंगे अब?"

"तुम तो जानती हो, अनवर मुझ से दिल की बात नहीं कहता, लेकिन कोई कुछ कहे या नहीं, सचाई तो खुद अपनी दास्तान सुना देती है."

"साफसाफ कहो न कि क्या चक्कर है?"

"भई, वापसी में मेरे साथ हकीम साहब भी थे. उन से भी बात हुई. मेरी समझ में तो यही आया कि मकान, कोठी, एसी, वीसीआर वगैरह पर ही जिंदगी की जरूरतें खत्म नहीं हो जातीं. बच्चों की तालीम भी तो एक जरूरत है न... उम्र भर तो दुबई में नहीं रह सकते. जब वापस आएंगे तो बच्चों का क्या बनेगा?"

फीरोजा के चेहरे पर फिक्र के आसार इस तरह थे, जैसे यह उस की अपनी उलझन हो. वह नादिर की बातें सुन रही थी.

"हमारा खयाल है, अनवर दुलहन को यहीं छोड़ जाएगा, बच्चों की पढ़ाई की खातिर. यही हकीम साहब का खयाल है."

"और अनवर मियां खुद वापस चले जाएंगे?"

"अनुबंध तो पूरा करेगा ही न... जितने भी बरस का हो... शायद चार बरस का है."

फिर दोनों चुपचाप खाना खाते रहे. न जाने क्यों, यह नई तबदीली, नया कार्यक्रम उन्हें अच्छा नहीं लग रहा था.

हकीम साहब और नादिर का खयाल सही था. अनवर बीवीबच्चों को छोड़ कर चला गया था.

अब फीरोजा अकसर यह सोच कर अनवर के घर चली जाती कि उस की बीवी अकेली है, शायद कोई जरूरत हो. अनवर की दुलहन अकेली थी, लेकिन पैसे से बढ़ कर गुलाम कौन? नौकर थे, टेलीफोन था.

देश की रक्षा

राष्ट्र की रक्षा कोरे शस्त्र से नहीं हो सकती. शस्त्र रहित राष्ट्र में ही शास्त्र जन्म लेता है.

—लक्ष्मीनारायण मिश्र

अकेली थी लेकिन ठस्सा कम नहीं हुआ था. उस से बातें कर के फीरोजा को कभी तसल्ली नहीं होती थी. न अपनापन था, न खुलूस, न मुहब्बत.

एक दिन अनवर की बीवी ने कहा "और सुनाइए भाभीजान, वीसीआर कब लोगी?"

"हमारे पास इतना पैसा कहां बीबी और न ही हमें कभी जरूरत महसूस हुई है."

"हायहाय, कभी फुरसत से आओ तो तुम्हें दिखाऊंगी, कैसीकैसी अंगरेजी फिल्मों के कैसेट हैं."

फीरोजा खामोश हो जाती. उसे कोई दिलचस्पी ही नहीं थी बेहूदा अंगरेजी फिल्मों से. उसे जिंदगी खुद एक फिल्म मालूम होती थी.

एक दिन उस ने अनवर की बीवी से पूछा, "तुम्हें अनवर भैया की याद तो बहुत आती होगी?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अब यानी तो आएंगी ही."

"चलो, दो साल बाद तो यह अनुबंध खत्म हो जाएगा, फिर चैन से रहना." फीरोजा ने तसल्ली देने की कोशिश की.

"लो भाभीजान, तुम ने भी एक ही कही. अभी हुआ ही क्या है? कार तक तो ली नहीं है. यह आएंगे जरूर, लेकिन फिर चले जाएंगे. जाना ही पड़ेगा और जाना भी चाहिए."

फीरोजा के दिल पर धक्का सा लगा कि यह कैसी बीवी है जो अपनी बेजा जरूरतों के लिए शौहर से दूर रह कर भी खुश है. अकेला शौहर विदेश में कैसीकैसी तकलीफें झेल रहा होगा, लेकिन वह अपनी बेचैनी छिपा गई.

बारबार किसी महल में भी जाएं तो उस की खूबसूरती की आंखें आदी हो जाती हैं. अकसर अनवर के घर जाने से फीरोजा को अब वह कोठी कोई बड़ी चीज न लगती थी. उलटे अनवर के बगैर सूनीसूनी कोठी में उसे अजीब सा लगता.

फीरोजा ने अब नादिर से बाहर जाने की फरमाइश करना बंद कर दिया था, लेकिन नादिर तो एक अरसे से कोशिश में लगा था. उस की कोशिश अब भी जारी थी.

दो साल बाद अनवर आया तो नादिर और फीरोजा उस से मिलने गए. फीरोजा ने तो दबे लफ्जों यह भी कहा कि बहुत कमा लिया. अब साथ रहो और जो कुछ कमाया है, उस का सुख भोगो.

लेकिन इस पर अनवर की दुलहन ने ऐसी नजरों से फीरोजा को देखा, जैसे फीरोजा से बड़ा भारी जुर्म हुआ हो.

अनवर भी मुसकरा कर बोला, "अरे भाभीजान, जवानी में ही तो आदमी सब कुछ कर सकता है, बुढ़ापे में तो कुछ होगा नहीं. आप चाहती हैं कि मैं भी भाईजान की तरह जिंदगी बरबाद कर लूं?"

अनवर की ऐसी बातें उन दोनों को बहुत चुभती थीं. फिर ज्यादा देर वे वहां न बैठे. फीरोजा घर तो आ गई, लेकिन उसे कुछ उलझन सी थी. इस बार अनवर के अंदाज कुछ अजीब से लगे. वह समझ नहीं पा रही थी कि क्या बात है.

कुछ दिन रह कर अनवर चला गया. वक्त गुजरता रहा. अब फीरोजा ने भी अनवर के घर जाना कम कर दिया था. अनवर की दुलहन को हर तरह का आराम था. फीरोजा वहां जाती तो सिवाय जलीकटी सुनने के और कुछ न होता. दिल जला कर आ जाती.

एक दिन बच्चों की छुट्टी थी. सर्दी के दिन थे. सुनहरी धूप में फीरोजा बच्चों के साथ बैठी मूंगफली खा रही थी. बच्चे बारीबारी से अपने विद्यालय के किस्से सुना रहे थे. तीनों खूब हंसबोल रहे थे. अचानक दरवाजे पर दस्तक हुई.

फीरोजा ने उठ कर दरवाजा खोला तो अनवर के घर का नौकर खड़ा था.

"मेम साहब, बीबीजी ने कहा है कि आप या मियां साहब मिल लें आ कर."

"कोई खास बात है क्या?"

"क्या पता मेम साहब... वैसे साहब का खत नहीं आया बहुत दिनों से..."

"ठीक है, हम आज ही शाम को आएंगे. कहना कि घबराएं नहीं, आ जाएगा खत."

फीरोजा ने कह तो दिया, लेकिन अंदरअंदर अजीब बेचैनी थी.

शाम को दोनों अनवर के घर गए. अनवर की दुलहन बहुत परेशान थी. वह बोली, "गए हुए चार महीने हो गए, एक खत आया था बस पहुंचने का... उस के बाद से न खत, न पैसा."

"फोन लगाऊं?" नादिर ने पूछा.

"लगाया था, कोई दफ्तर से बोल रहा था. उस ने कहा कि वह अभी आ नहीं सकते, सब ठीक है, परेशान न हों."

फीरोजा और नादिर उसे समझाबुझा कर लौट आए. दोनों खामोश थे. शक और उलझन से दोनों बेचैन थे.

नादिर दफ्तर से अकसर फोन पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हालात मालूम कर लेता. कुछ दिन बाद उसे खबर मिली कि अनवर का खत भी आ गया है और पैसे भी.

इस खबर से नादिर और फीरोजा दोनों को सुकून सा हो गया था.

फिर वक्त गुजरने लगा. बच्चों की वार्षिक परीक्षा करीब थी. फीरोजा उन की पढ़ाई की तरफ ज्यादा ध्यान दे रही थी.

एक दिन दोपहर में हकीम साहब और उन की बीवी आईं.

"आज रास्ता कैसे भूल गईं?" फीरोजा ने मुसकरा कर कहा.

"बड़ी अजीब खबर है, बीबी." हकीम साहब की बीवी बुरका उतारते हुए फुसफसा कर बोली. उन के चेहरे पर फिक्र और उलझन थी.

"खैरियत तो है, क्या हुआ?"

"अरी बीबी, दुबई से हमारा भतीजा आया है... जो कुछ उस ने बताया... बस सिर पकड़ लिया मैं ने तो."

"क्या कहा बाजी, कुछ बताएं भी" फीरोजा ने बेचैनी से कहा.

"कह रहा था कि अनवर मियां ने दूसरा निकाह कर लिया है."

"क्या? यह नहीं हो सकता." फीरोजा पर तो आसमान टूट पड़ा.

"हो क्यों नहीं सकता, बीबी," हकीम साहब बोले, "घर वालों की ही जरूरतें पूरी करता रहेगा अकेला पड़ा परदेस में? आखिर जवान मर्द है, उस की भी तो कुछ जरूरत होगी."

"तभी मैं सोचती थी कि बदलेबदले से क्यों लगते हैं अनवर भैया. शायद इसी लिए इतनेइतने दिन खत नहीं आता था." फीरोजा सोचते हुए बोली.

"लेकिन बेटी, अनवर मियां की दुलहन से न कहना... बेचारी का दिल टूट जाएगा." हकीम साहब कीबीवी ने ताकीद की. फिर उठते हुए बोली, "अब चलूं, सारा काम पड़ा है. मैं तो सब छोड़छाड़ तुम्हें यह खबर देने चली आई."

"अब ऐसी भी क्या जल्दबाजी, चाय

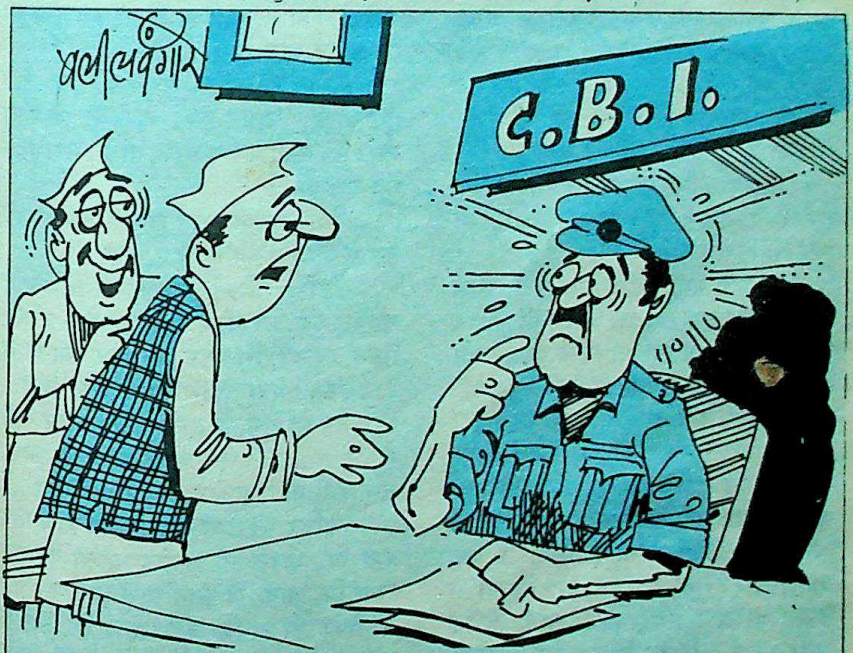

"कांग्रेस ब्यूरो आफ इनवेस्टीगेशन का आफिस है न?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो पीती जाइए.

कुछ देर बैठ कर चायनाश्ते के बाद वे लोग चले गए.

फीरोजा शाम से नादिर का इंतजार कर रही थी कि कब वह आए और उसे यह खबर सुनाए. शाम धीरेधीरे रात में ढल गई. उस ने बच्चों को खाना खिला दिया. बच्चे नौ बजे तक पढ़ते रहे. फिर दोनों सो गए. फीरोजा की उलझन घड़ी की सूइयों के साथ बढ़ती जा रही थी.

10 बज चुके थे. बच्चे सो चुके थे. फीरोजा बहुत परेशान थी. अचानक नादिर के स्कूटर की आवाज पर उस ने बिजली की तेजी से दरवाजा खोला. नादिर ने एक लिफाफा उस की तरफ बढ़ाया.

"यह क्या है?" फीरोजा ने पूछा.

"अंदर तो आने दो..." अंदर आ कर नादिर ने बड़े प्यार से उस को देखा और मुसकराते हुए बोला, "आखिर मेरे बाहर जाने का इंतजाम हो ही गया."

"क्या?" फीरोजा तकरीबन चीख पड़ी.

"हां, कर्ज ले रहा हूं एजेंट को पैसे देने के लिए. सब काम हो गया है. कर्ज भी मंजूर हो गया है... कल चेक मिल जाएगा..."

"छोड़ो..." फीरोजा लिफाफा पटक कर बोली, "कर्ज वगैरह कुछ न लो... मैं तुम्हें नहीं जाने दूंगी."

"क्या? अब मजाक मत करो. इतने बरसों से तुम एक ही आस लगाए थीं... और अब, जब मेरी इतनी भागदौड़ के बाद यह दिन आया है तो कहती हो कि न जाऊं."

"हांहां, नहीं जाओगे... नहीं जाओगे."

नादिर समझ नहीं पा रहा था कि फीरोजा को हुआ क्या है. दिन भर की थकान, भूखप्यास और उस पर फीरोजा की बातें सुन कर उसे गुस्सा आ गया. "मैं कल तक निखट्टू था, काहिल था, मेहनत से डरता था और अब... अब कहती हो कि 'नहीं जाओ.' मैं जाऊंगा, जरूर जाऊंगा. वह सब ला कर तुम्हारे कदमों में डाल दूंगा, जिसे तुम अपनी जरूरत समझती हो. समझीं?"

"अच्छा, अब बस करो. मैं ने कहा था न... मेरा क्या, सुबह से शाम तक सौ बातें कहती हूं. क्या सब पूरी करते हो? मर्द हो, कुछ अपनी अक्ल भी तो इस्तेमाल करनी चाहिए."

"फीरोजा, तुम्हारा दिमाग सही है या नहीं?"

"क्या हुआ है मेरे दिमाग को?

"आखिर तुम मुझे जाने से क्यों रोक रही हो? अनवर के हालात कितने अच्छे हो गए हैं. उस का घर... उस की बीवी."

"अनवर की बीवी से मेरा मुकाबला करते हो? मैं रह सकती हूं तुम्हारे बगैर? जिद पकड़ ली है कि 'जाऊंगा, जाऊंगा.' हां, क्यों नहीं जाओगे... मैं तो अब ढल चुकी हूं न... रंगरेलियां मनाने का इस से अच्छा मौका और कहां मिलेगा?" फीरोजा सिसक उठी.

"हद है फीरोजा, तुम भी बात को कहां से कहां ले जाती हो. मैं तो कह रहा था कि बाहर जाने से..."

"कान खोल कर सुन लो," वह रोते हुए बोली, "अगर कहीं जाना है तो मेरी लाश पर से हो कर गुजरना होगा. मेरा मरा मुंह देखना."

"यह क्या हो गया तुम्हें? तुम ही तो कहती थी कि यह चाहिए, वह..."

"हांहां, लेकिन अब कोई भी चीज नहीं चाहिए मुझे. हर चीज तो है घर में... टीवी, फ्रिज, स्कूटर, सिर पर छत, और क्या होती है जरूरत? मेरी तो सिर्फ एक जरूरत है... और वह हो तुम. मैं तुम्हें अपने से दूर नहीं होने दूंगी... चाहे मुझे फाके करने पड़ जाएं. तुम कहीं नहीं जाओगे... कहीं भी नहीं..."

नादिर फीरोजा के सिर पर हाथ फेर रहा था. औरत भी अजीब पहेली है. उसे लगा कि शादी के इतने साल बाद भी वह फीरोजा को समझ नहीं सका है. उस ने रूमाल से पहले अपनी आंखें पोंछीं, फिर धीरेधीरे फीरोजा के आंसू पोंछने लगा. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

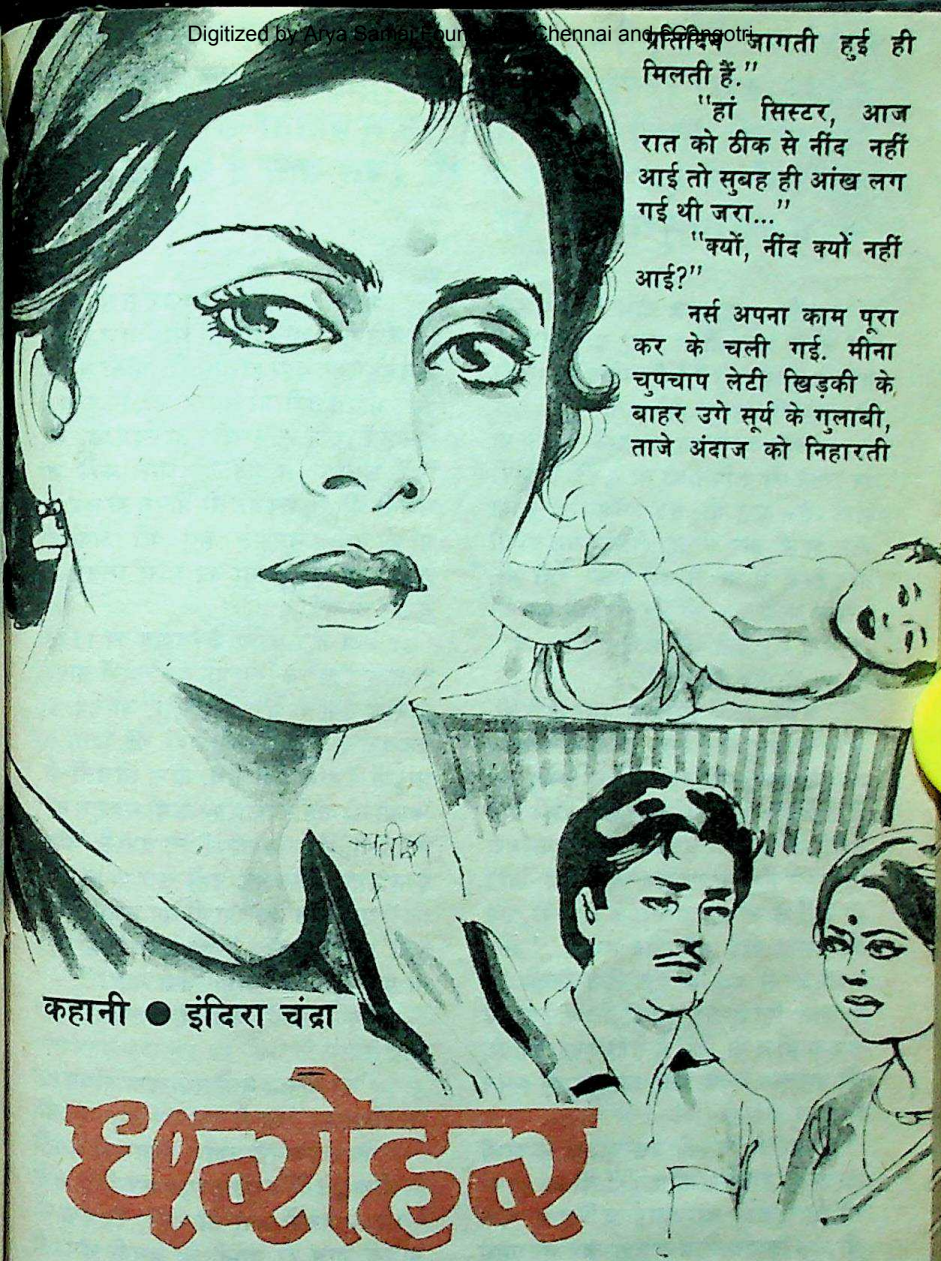

कहानी ● इंदिरा चंद्रा

धरोहर

"उठ गईं आप?" और जैसे मीना सोई ही न हो, ऐसे हड़बड़ा कर उठ गई. "आज तो आप सोती मिलीं वरना प्रतिदिन जागती हुई ही मिलती हैं."

"हां सिस्टर, आज रात को ठीक से नींद नहीं आई तो सुबह ही आंख लग गई थी जरा..."

"क्यों, नींद क्यों नहीं आई?"

नर्स अपना काम पूरा कर के चली गई. मीना चुपचाप लेटी खिड़की के बाहर उगे सूर्य के गुलाबी, ताजे अंदाज को निहारती रही, जैसे एक नवजात शिशु हो यह सूर्य. तभी उस का ध्यान पालने की ओर गया, दो नन्ही मुट्ठियां ऊपर उठी दिख पड़ीं.

मीना सोचने लगी, 'मेरा अंश... यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पालने में छोटी बच्ची को देख कर साहस मीना में न था, मगर रहरह कर उमड़ती ममता को भी वह रोक नहीं पा रही थी. अपनी इस बेबसी पर आंसू बहाती मीना के लिए वह नन्ही तो एक धरोहर ही थी, जिसे जन्म दे कर उस ने अपना कर्तव्य पूरा किया था.

मेरी बच्ची... पर आज चौथा दिन है. क्या पता भाभी आज ही आ जाएं. वह सुबह की गाड़ी से आ सकती हैं.' और मीना को हलकी सी कंपकंपी महसूस होने लगी.

बच्ची पर से उस का ध्यान न हटता था पर उठने की शक्ति भी तो न थी. मोनू की बारी और बात थी, तब तनमन स्वस्थ था और पहली बार भी तो थी. पर यह बच्ची तीन दिनों से यों ही उसे पुकार रही थी, लेकिन मीना उस की टेर को सुन कर भी अनसुनी कर देती थी. सोचती, 'क्या लाभ है, इस से मोह क्यों करूं?'

बच्ची की कुलबुलाहट बढ़ने लगी थी. मीना ने उस ओर देखा तो मन न माना. ब्लाउज भीग उठा, हृदय में कुछ घुमड़ उठा तो उठ बैठी. धीरेधीरे चल कर पालने में से बच्ची को उठा कर हृदय से लगा लिया. वक्ष से लगाते ही उस का मन चीख उठा, 'कोई भी नहीं ले जा सकता उस के अंश को, उस की ममता कोई नहीं छीन सकता...' और जल्दीजल्दी वक्ष से मुंह लगा दिया उस नवजात शिशु का. आंखों से अश्रु प्रवाह रुकता ही न था, "पी ले मेरी बच्ची, पी ले, जी भर कर... क्या पता कल तुझे यह अमृत मिले या न मिले."

वक्ष से चिपकी उस गुड़िया के बालों को सहलाती मीना सोच रही थी कि भाभी को तो डाक्टर की बताई तारीख भी पता थी, इस हिसाब से तो उन्हें सप्ताह भर पहले आ जाना चाहिए था. मुकेश ने फोन मिलाया तो पता चला कि दोनों मद्रास गए हैं. भैया को किसी गोष्ठी में भाग लेना था, पर भाभी तो यहां रुक सकती थीं. हो सकता है, आज ही आती हों.

भाभी के आने के विचार से ही मीना को जैसे गश आने लगता था. आज चौथा दिन हो गया, यही हालत थी. किसी से कुछ कहा भी तो नहीं जा सकता था. फिर किस से कहती, पति से? उन्होंने तो स्वयं ही... या फिर सासजी से मन की बात कही जा सकती थी. लेकिन वह तो औरत हो कर भी मां की ममता समझते हुए भी अपने ही हाथों उस की ममता का गला घोंटने को तैयार हो गईं.

भैया और भाभी के विवाह को 11 वर्ष हो चुके थे पर वे निस्संतान थे. दोनों भाइयों के बीच एक ही बेटा था, मोनू, जो वर्ष भर बटाबटा फिरता. कभी नहीं रह पाता था छुट्टियों में मांबाप के पास. मीना सोचती थी, 'भाभी को कभी संतान की कमी महसूस नहीं होने देगी. मोनू उन का भी तो बेटा है.' किंतु ऐसा बहुत दिनों तक नहीं चल सका.

एक दिन देवरभाभी का मजाक शुरू हुआ. भाभी ने छेड़ा, "क्यों मुकेश भैया, एक ही पर पूर्णविराम लगा दिया क्या?"

"क्यों भाभी, अभी तो अल्पविराम ही लगा है..."

"पर कितने वर्षों तक लगा रहेगा यह अल्पविराम?" भाभी ठठा कर हंस पड़ी थीं.

भाभी कितनी सुंदर, स्नेहमयी लगती हैं. मीना उन की बहुत इज्जत करती है. उन्हें देखते ही मन में जरा सी सही, पर दया की भावना जाग ही उठती है. इतनी रूपवती और ऐश्वर्य में लिप्त भाभी को कुदरत ने एक जगह नोच ही लिया था, निस्संतान रख कर. मीना आह भर उठती. सोचती, 'इस दुनिया में सब को सब कुछ नहीं मिल जाता, कुछ न कुछ कसर बाकी रह ही जाती है.'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

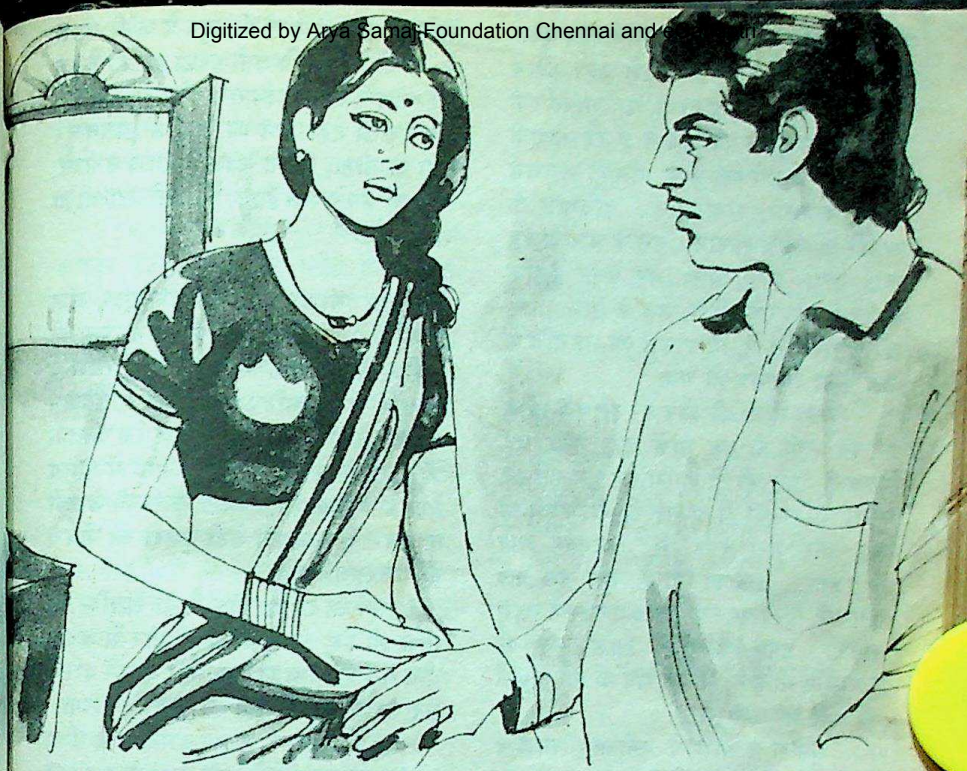

भैयाभाभी के आने की खबर सुन कर मीना परेशान हो गई. मुकेश ने उसे दिलासा देते हुए कहा, "तुम कुछ न बोलना. मां सब संभाल लेंगी."

पर उस दिन मजाक ही मजाक में भाभी अपने देवर से मांग कर बैठीं, "मोनू तो मेरा प्यारा बेटा है ही, अब की बार इस के बहन हो या भाई... मैं तो उठा कर ले ही जाऊंगी... क्यों मोनू...?"

न जाने क्या सोच कर कही गई थी बात या अनजाने ही, पर जैसे सभी को काठ मार गया क्षण भर को. भैया तो पत्नी के इस अप्रत्याशित कथन से मानो जड़ रह गए थे. कुछ भी पूर्वनियोजित लगा तो नहीं था, फिर भी बात तो तीर के समान बाहर जा ही चुकी थी. कौन जाने भाभी का संतानविहीन मातृत्व ही उन से ऐसी बात उन के अवचेतन में से निकलवा गया हो.

मुकेश जैसे सोते से उठ गए. बोले, "क्यों नहीं, बिलकुल ठीक है... पक्की बात... लड़की हुई या लड़का हुआ, इस बार तुम्हें दे दूंगा."

मीना तब बारीबारी से जेठनी व पति का मुंह ताकती रही. उसे तो वार्त्तालाप में शामिल तक नहीं किया गया था. भाभी ने देवर के हाथ पर हाथ रखा, "पक्की बात."

"बिलकुल पक्की." और मीना की संतानदान की बात पति ने अपनी भाभी से निश्चित कर ली.

यह कैसा वादा था, मां से पूछा तक नहीं और पिता ने जन्म से पूर्व ही दान की बात तय कर ली. नौ महीने तक उस ने जो पौधा सींचना था, पति उस की सहमति बिना ही दूसरे की बगिया में रोपने को कैसे तैयार हो गया था?

उस दिन के बाद से मीना मुकेश से कन्नी काटने लगी. पति का सानिध्य मात्र ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसे कंपा देता. पति की निकटता से उसे घुटन होने लगती. रहरह कर उसे यही ध्यान आता कि यह प्रेम झूठा होगा, यह शारीरिक संबंध केवल दूसरे की गोद में डालने का एक खिलौना पैदा करेगा. मीना पति के साहचर्य से बचने लगी. संतानदान... हाड़मांस के शरीर का आदानप्रदान... इस के अलावा वह कुछ भी न सोच पाती. यह कैसा मजाक किया था देवरभाभी ने. उस के सामने, उस की उपस्थिति में, बिना उस की सहमति के यह कैसा व्यापार हो गया.

सास मीना की ओर प्रश्नसूचक दृष्टि डालने लगीं तो वह आंखें चुरा लेती. वह सोचती, 'यह भी तो शामिल हैं इस व्यापार लीला में. इन्होंने ही तो शह दी थी. तब कैसी ठठा कर हंस रही थीं? इन का क्या बिगड़ेगा... एक बगिया से फूल उठा कर दूसरे में रोपने पर क्या वह ज्यों का त्यों खिल सकेगा, पनप सकेगा?' लाख मन को समझाया मीना ने, लेकिन मन था कि काबू में ही नहीं आ पाता था.

मुकेश ने मीना के मनोभाव समझे न हों, ऐसा नहीं था. भाभी से जो वह वादा कर चुका था, उस क्षण उस ने मीना के स्वयं से हट कर सोचने की बात की कल्पना ही नहीं की थी. उस का तो यही विचार था पतिपत्नी दोनों की राय एक ही होती है. पर जब मीना की बेरुखी स्पष्ट होने लगी तब उसे पश्चात्ताप हुआ और एक दिन उस ने पत्नी के समक्ष अपना हृदय खोला, "मीना, मैं तो सोच रहा था कि भाभी से कही गई बात में तुम्हारी स्वीकृति भी है. उस समय तुम बोली क्यों नहीं, यदि तुम्हें स्वीकार नहीं था...?"

"मुझ से पूछा किसी ने एक बार भी..." और मीना फूट पड़ी थी. जो मन में आया वह बके जा रही थी, सास के लिए, जेठानी के लिए और पति से भी, उन्हीं के समक्ष.

मुकेश ने मीना से एक ही बात कही, "मीना, तुम दुनिया की पहली औरत नहीं हो जो अपनी संतान किसी दूसरी निस्संतान स्त्री की गोद में डालोगी. तुम ने कभी सोचा है, भाभी की भी कितनी इच्छा होगी कि वह भी मां बनें. मोनू को कितना स्नेह देती हैं वह, तुम देखती नहीं. मन का ऐसा ओछापन दूर हटा दो मीना, अपना हृदय विशाल बनाओ. मोनू तो अपने पास है ही, फिर तीसरा भी हो सकता है."

फिर मीना अपने भीतर एक अंश सींचने लगी थी. सास ने उस की विशेष सेवा करनी शुरू कर दी. सास ने मीना को मनोवैज्ञानिक रूप से भी संतानदान के लिए तैयार करना शुरू किया कि फलानी की ननद ने अपनी भाभी की गोद में पहला बेटा डाल दिया था, फिर फलानी की जेठानी या देवरानी ने अपनी बेटी दूसरी को गोद दे दी वगैरहवगैरह.

मुकेश व सास दोनों ने ही संतुष्टि की सांस ली कि भाभी को कहीं और से बच्चा गोद लेने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी बल्कि घर का बच्चा ही उन की गोद में पलेगा.

तभी बरामदे में हुई हलचल से मीना की विचारधारा टूटी. नर्स चाय ले कर आई थी. पीछेपीछे मुकेश व मोनू भी चले आ रहे थे. मोनू आ कर मां के गले से लिपट गया. कितनी पूर्ण हो उठी थी मीना, एक गोद में और दूसरा गले से लिपटा था. उस ने खूब प्यार किया मोनू को. बच्ची को वक्ष से हटा कर नर्स के हवाले कर दिया.

मोनू ने नन्ही सी बहन की उंगलियों से खेलना शुरू कर दिया. बीचबीच में वह शरमाता हुआ मातापिता की ओर देख लेता था.

मीना का हृदय भर आया कि न जाने कितने समय का सुख है यह. उस ने मुकेश की ओर प्रश्नसूचक दृष्टि से देखा, पर वह कुरसी के हत्थों पर दोनों हाथों का बोझ सा डाले जैसे थकेमांदे बैठे, खिड़की के बाहर के प्राकृतिक सौंदर्य में लीन थे.

मोनू नन्ही सी बहन से खेल रहा था. 'क्या शेष जीवन भी इसी तरह निभ सकेगा भाईबहन का प्रेम?' मीना के आंसुओं पर कोई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chen

रोक नहीं थी, अनजाने ही निकल कर वह उठते थे.

मुकेश उठ कर नजदीक आ गए, "पगली, भाभी इसे ले जाएंगी तो क्या वह कोई पराई हैं... घर में ही तो रहेगी यह. जब जी चाहे, तुम ले आया करना."

'क्या मुकेश अपने खुद के मन को नहीं समझा रहे,' मीना को संदेह होने लगा. 'कितना मनाया होगा इन्होंने भी अपने मन को. तीन दिनों से, जब से यह नन्ही कोंपल उगी है, खोएखोए से उस की ओर देखते रहते हैं. कभी मुसकरा उठते हैं तो कभी उदास हो जाते हैं. अखिर इन का भी तो उतना ही अधिकार है इस पर... इन्होंने कितना पत्थर रखा होगा हृदय पर.'

मीना को याद था, मोनू होने को था, तब पतिपत्नी में कितनी शर्तें लगी थीं. मीना कहती, "बेटा होगा तो मोनू नाम रखेंगे."

"देख लेना, बेटी ही होगी... मुझे पक्का विश्वास है और नाम रखेंगे मोनी." मुकेश कहते.

पर मीना ही जीती थी. मुकेश ने भी तीन रातें अधसोए गुजारी थीं. दोनों ही जैसे एकदूसरे के समक्ष मनोभाव खोल कर रखने में सकुचा रहे थे. लेकिन यह कैसी दूरी हो गई अब पतिपत्नी में. मीना चिढ़ उठी, 'खुद ही तो पैदा की है यह परेशानी. तब मुझ से पूछा था क्या.'

यही सोच कर वह पाषाण हृदया होने का जैसे नाटक करने लगती. मुकेश मोनू का बहन के साथ खेलना एकटक देख रहे थे. नौ महीने भीतर संजोया, सींचा यह अंश, न जाने किस क्षण पराया हो जाए? मीना प्रत्यक्ष में मुसकरा रही थी, अपने मनोभावों में तृप्ति का एक भाव जबरन ठूंसना चाहती थी ताकि उस के चेहरे पर संतोष दिखे, शांति दिखे, जो उस से इस समय अपेक्षित है. परिवार के सभी लोगों का सुख देखना चाहिए, ऐसा उस के पिता ने सिखाया था.

सास ने कई बार समझाया, "सुखचैन और यश मिलेगा तुझे... लड़की देगी तो

भीगे नयन

तन को न देख मेरे मन को देख,
फूल को न देख, चमन को देख,
अपनी बदकिस्मती पर रोने वाले
खुद को न देख, मेरे भीगे नयन को देख.

—कल्पना दीक्षित

और भी ज्यादा..."

बात मजाक की थी, लेकिन मीना के लिए तो केवल पति की इच्छा या वचन का पालन ही कर्तव्य था, बस. नौ महीने अपने अंश को सींच कर उस ने मानो पराई धरोहर को अपने भीतर सींचा और संजोया था. अब जब वह धरोहर साक्षात सामने थी तो मन कभीकभी थोड़ा विचलित हो उठता.

मीना कभी सोचती, 'वह साफ मना कर देगी कि नहीं देगी अपनी बेटी, ले आएं कहीं और से. अनाथालय से ले लें, वैसे भी कौन लिखापढ़ी हुई थी?'

नन्ही सी गुड़िया को देखती रहती और झरझर आंसू बह उठते उस के विछोह की कल्पना मात्र से. कभी सोचती, 'इस से तो अच्छा था कि प्रसूतिगृह से ही उस के पास से हटा दिया गया होता इसे. क्यों लाते हैं उस के पास, क्यों रखा है यहां?' भाभी के आने की सब प्रतीक्षा कर रहे थे. तब तक तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बच्ची को दूध से नहीं, जैसे अपने रक्त से सींचे जा रही थी मीना.

चौथा दिन भी इसी तरह बीत गया. रात को सोते समय नर्स कमरे में आई, "मीनाजी, आज तो नींद आ जाएगी न..." जैसे वह ठिठोली कर रही थी.

"क्या मालूम, मुझे तो लगता है इस जीवन में अब कभी चैन से सो न सकूंगी..."

"ऐसी भी क्या चिंता है... क्या मैं बांट सकती हूं आप की परेशानी? कह लीजिए, मन हलका हो जाएगा."

नर्स ने मीना का हार्दिक दुख शांत भाव से सुना. इतनी देर में मीना का एक ही वाक्य उस के समझने के लिए काफी था.

"सिस्टर, यह जो बच्ची हुई है न, इसे मैं ने अपनी जेठानी को देने के लिए पैदा किया है."

नर्स क्षणभर चुप रह कर बोली, "मीनाजी, दिल छोटा मत कीजिए. अपने पति के लिए तो कुछ भी गलत मत सोचिए. कितना बड़ा काम किया है आप लोगों ने. संतान मोहपाश में बंधे हैं आप अभी... लेकिन यह क्षणिक भावना है. जिस समय आप स्वार्थ भावना मन से निकाल कर त्याग भावना मन में लाएंगी, तभी आप अपने कर्तव्य का महत्त्व समझेंगी."

नर्स उपदेश दे कर चली गई, पर क्या मीना पर उस का कुछ प्रभाव पड़ा? शायद हां, शायद नहीं भी. देर रात तक वह बच्ची के पालने पर टकटकी लगाए न जाने कब सो गई.

अगले दिन मीना बच्ची को साथ ले कर हस्पताल से घर आ गई. सास ने सारी व्यवस्था संभाली हुई थी. नए मेहमान का स्वागत किया गया. हंसीखुशी दिन बीतने लगे, पर भाभी नहीं आईं.

उधर मीना हर पल, हर घड़ी सोचती कि न जाने भाभी इसी क्षण आ जाएं और उसे एक अंदरूनी भय सा घेरने लगता. जैसेतैसे दिन बीतते जा रहे थे, बच्ची से मोह बढ़ना स्वाभाविक ही था. हस्पताल से चलते समय नर्स ने चेतावनी दी थी, "बहुत चिंता करना बच्ची के हक में न होगा, मीनाजी."

पर क्या यह मीना के वश में था कि चिंता न करे. भाभी का कोई भी समाचार नहीं आ रहा था. इधर मीना पर क्या बीत रही थी, यह वही जानती थी. वह अकसर सोचती, 'इस से तो अच्छा हो कि भाभी आ कर इसे ले जाएं और उसे छुटकारा मिले.'

मोनू को वह अपने से अधिक दूर न रखती. तीसरे को जन्म देना फिलहाल तो असंभव ही लगता और न ही मुकेश ने इस विषय पर कुछ कहा था. मोनू को वह अधिक स्नेह देने लगी. सोचती, 'बच्ची तो पराई है, फिर इतना मोह बढ़ाने से क्या लाभ.'

लगभग 25-26 दिन बाद अचानक भैयाभाभी आ गए. सुन कर मानो मीना क्षणभर को अचेत हो गई. बच्ची की ओर देखने तक का उस में साहस न था. मुकेश ने उसे समझा दिया था, "तुम कुछ न बोलना. मां सब संभाल लेंगी."

हंसतीचहकती भाभी आईं. मद्रास की बातों का अंत ही नहीं होता था. अटैची में सामान ठुंसा था. एकएक कर मीना के लिए कई साड़ियां निकालीं. मोनू के लिए बहुत से खिलौने लाई थीं.

पर इन सब के बीच मीना एक वाक्य की प्रतीक्षा में थी जो उसे सुनाई नहीं पड़ रहा था, 'मीना, क्या हुआ, लड़की या लड़का?'

भाभी ने ऐसा कुछ भी नहीं पूछा तो सास ने टोक ही दिया, "अब खरीदारी बहुत दिखा चुकी. यह भी तो पूछ कि मीना को हुआ क्या?" और वह शरारत से मुसकरा उठीं.

"अरे हां, मैं तो भूल ही गई थी. क्या हुआ तुझे मीना? बेटी होनी चाहिए थी, वही हुई न?" फिर जैसे अचानक होश में आई हों, लपकी गईं मीना के कमरे की ओर.

बच्ची पालने में सो रही थी. उसे उठा कर हृदय से लगा लिया, "अरे, कितनी प्यारी है यह नन्ही गुड़िया. मीना, यह तो बिलकुल तुम्हारी तरह है."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तभी मीना ने बीच से ही बात काट दी. क्या सोचते हुए कह दिया, "भाभी, आप की ही तो है यह...अपनी धरोहर अब संभालिए..."

"मेरी धरोहर, क्या मतलब...?

सभी सुन कर भौचक्के रह गए. मुकेश मीना के पास ही खड़े थे. उन्हें मीना के निकट ही रहना था उस क्षण, जब भाभी मीना के कलेजे के टुकड़े को अपने कलेजे से लगातीं. पर यह क्या कह दिया भाभी ने?

सास भी क्षणभर को जड़वत रह गईं. नौ महीने उधर और 25-26 दिन इधर मीना ने एकएक पल जो शूल अपने भीतर चुभोया था, वह शूल क्या कल्पनामात्र था.सचाई यह थी कि भाभी को याद तक नहीं था.

तभी सास आगे बढ़ी, "अरे, भूल गई क्या लीला? मुकेश से तू ने नहीं मांगा था कि अब की जो भी बच्चा होगा, तू ले लगी."

"ओह, हां...बात तो हुई थी..." कहते हुए मीना को झिंझोड़ डाला भाभी ने, "बड़ी दिलेर बनती है तू मीना, हिम्मत है बच्चा देने की मुझे. ले लूं सच में...फिर रोना मत. क्यों मुकेश भैया, तुम भी दानवीर बनने लगे?

भई, सच्ची बात तो यह है कि मुझ से अब इस उम्र में यह झंझट होगा नहीं. तुम कहो तो ले जाती हूं, पर देखो अगले महीने तुम्हारे भैया को कलकत्ता जाना है, मुझे भी साथ जाना होगा. फिर अगले साल...खैर, कोई बात नहीं, कहीं जाऊंगी तो तुम्हारे पास छोड़ जाया करूंगी...क्यों ठीक है न?" भाभी कहे जा रही थीं और सब ठगे से खड़े थे.

मीना ने कस कर आंखें भींच ली थीं. शिष्टाचार के नाते कान तो वह मूंद नहीं सकती थी. मुकेश ने सिर झुका रखा था. सास ने पालने में लेटी बच्ची को उठा कर मीना को दे दिया क्योंकि वह रोने लगी थी.

मीना को उसे ले जाते हुए देख कर भाभी बोलीं, "चाहो तो इसे रखो तुम लोग. अगली बार जो बच्चा हो, उसे मुझे दे देना."

मीना सास के कमरे के एक कोने में दुबकी बैठी अपनी बच्ची को हृदय से भींच कर रो रही थी. सास से न रहा गया, उसे स्नेह से सहलाने लगीं, "मत रो बेटी, तेरा कर्तव्य पूरा हुआ...बस, अब चुप कर. अपनी अमानत अपने पास रख और शांत हो जा." ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बूआ की वापसी

व्यंग्य ● प्रेमलता प्रजापति

मुन्नो बूआ आ रही थीं और उन के आने की घोषणा से ही मानो घर में एक तूफान उठ खड़ा हुआ था. नाश्ते के समय पिताजी ने घोषणा की, "खबरदार, कोई न उलझे मुन्नो से," और फिर पराठे का टुकड़ा तोड़ते हुए मां से कहा, "मैडम, आप से तो विशेष अनुरोध है...वैसे भी मुन्नो के सामने आप का टिकना तो मुशकिल ही है...आप तो जानती हैं

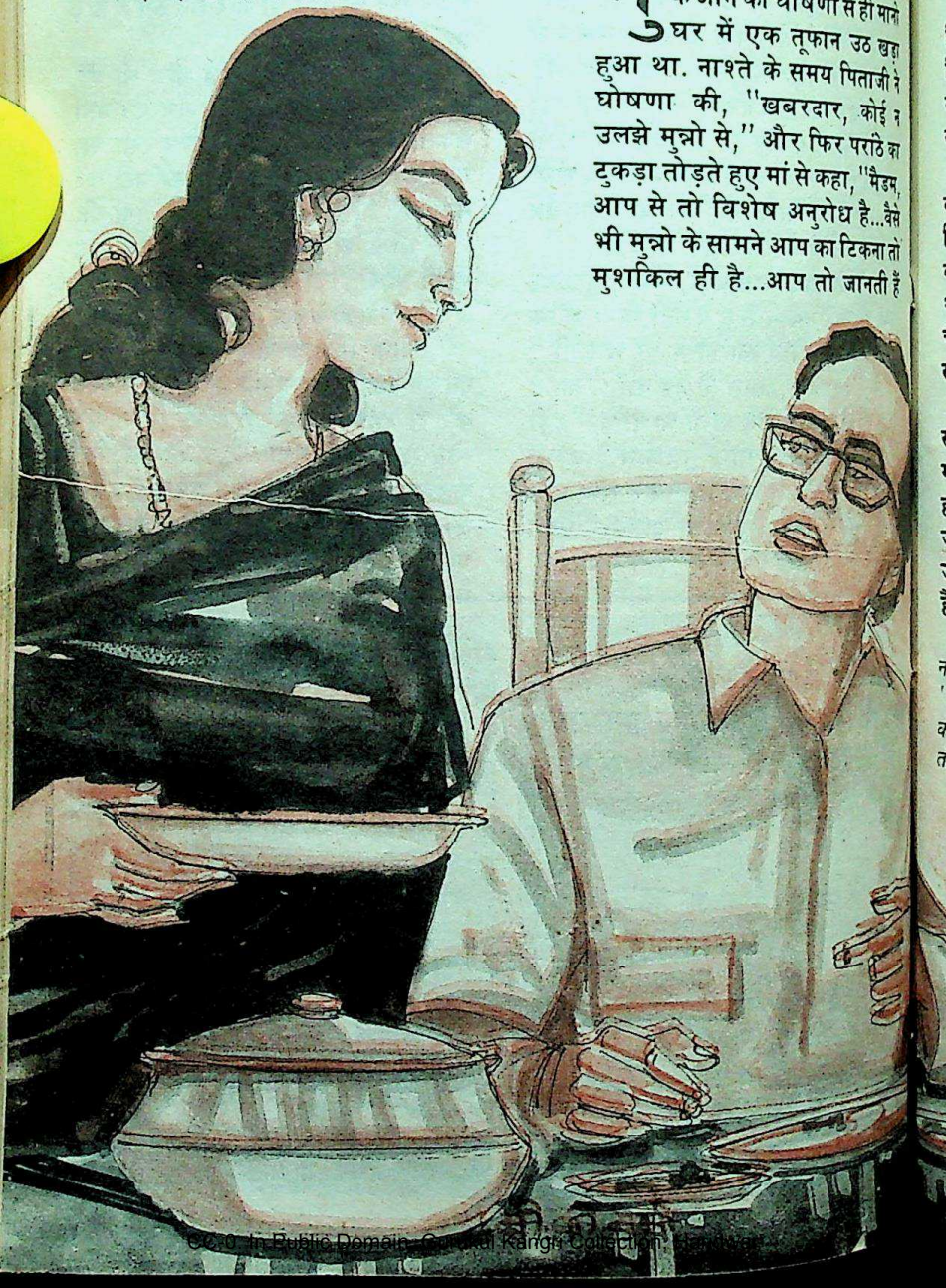

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुन्नो बूआ [illegible] पिताजी का अनुरोध मां को एक चुनौती की तरह लगा था. शायद इसी लिए दबीदबी प्रवृत्ति की मां ने पहली बार अपना पहला रंग ही बूआ को ऐसा दिखाया कि उन्होंने बोरियाबिस्तर समेटने में ही अपनी भलाई समझी.

कि वह कितनी 'रंगबाज' है." इस बार पिताजी ने ठेठ चलताऊ शब्द द्वारा मुन्नो बूआ के चुनौती भरे व्यक्तित्व की ओर संकेत किया था.

"क्यों बेकार बदनामी करते हो बहन की. रंगबाज कभीकभी ऐसी मात खाते हैं कि बस..." मां के तत्काल उत्तर और स्वर की दृढ़ता ने शायद पिताजी को चौंका दिया था. उन्होंने एक पल को सिर उठाया, मां के चेहरे को ताका और फिर हलकी मुसकान के साथ कौर तोड़ने लगे.

पिताजी की हलकी मुसकान में स्नेहसिक्त विद्रूप था और अविश्वास भी. मां के स्वभाव से वह खूब परिचित थे. मां पर हमेशा यही आरोप लगाया जाता था कि वह जरूरत से ज्यादा विनम्र हैं, भोली हैं. लोग उन की शराफत का भरपूर फायदा उठाते हैं. ऐसी मां का गर्वीली ठसकेदार मुन्नो बूआ के सामने टिकना बहुत मुशकिल था.

मुन्नो बूआ पिताजी की चचेरी बहन थीं और बरसों बाद आ रही थीं. नाश्ते के बाद पिताजी ने बैग उठाया और "अच्छा भई, चलते हैं" कह कर बाहर हो लिए.

मैं दिन भर मुन्नो बूआ की तसवीर बनाती और बिगाड़ती रही. बचपन में कभी उन्हें देखा था. लेकिन शाम को जब उन्हें देखा तो सब टेढ़ीतिरछी तसवीरें एक झटके में धुल गईं.

बूआ बहुत सुंदर थीं. काले बार्डर की महंगी साड़ी में उन का भरापूरा शरीर और चेहरा दमक रहा था.

मां उन के भरपूर आदरसत्कार में लगी थीं. "बड़ा प्यारा रंग है ज्योत्सना, यह साड़ी कहां से खरीदी?"

"इन का मुवक्किल लाया था, मेरी पसंद जानता है. तुम्हें तो पता ही है भाभी, अपने को ऐसीवैसी चीजें तो पसंद ही नहीं

नाश्ते के समय पिताजी ने घोषणा की, "खबरदार, कोई न उलझे मुन्नो से." और मां की ओर देखते हुए फिर बोले, "मैडम, आप से तो विशेष अनुरोध है."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आतीं." बूआ बड़े अंदाज से भौंहें नचा कर बोली थीं.

"सोहनजी भी आ जाते दोचार दिन के लिए..." मां ने ननदोई को भी याद किया.

"हुंह...बोर करते हम सब को. वह तो वहीं ठीक हैं." कह कर बूआ ने एक अंगड़ाई ली और सोफे पर पसर गईं.

बूआ के लिए ऊपर का कमरा ठीक कर दिया गया था. लेकिन वह नीचे सोफे पर पसरी रहीं. बारबार मुझे ही ऊपरनीचे दौड़ाती रहीं और बूआ के आकर्षण में बंधी मैं 10 बार ऊपरनीचे दौड़ती रही.

एक बार दूसरे कमरे में पिताजी तनिक ऊंचे स्वर में मां पर बिगड़ ही पड़े, "मना करो जी मुन्नो को. क्या लड़की की टांगें तुड़वानी हैं..."

सुनते ही मां ने होंठों पर उंगली रख कर कहा था, "क्या करते हो...मुन्नो सुन लेगी."

पिताजी के माथे पर बल पड़े थे, उन्होंने धीरे से कहा, "शुरू हो गई गुलामी, है न?"

तभी घंटी बजी. दरवाजा खोल कर देखा तो मेरी सहेली के मामा थे, किसी 'चैरिटी शो' के टिकट बेचने आए थे. बूआ उठ कर सोफे पर बैठ गईं और अब वह उन मामाजी से भिड़ गई थीं.

"वह क्या करते हैं? उन के क्याक्या शौक हैं? आगे क्या करेंगे?" यानी 10 मिनट की बातचीत में बूआ ने उन से सब उगलवा लिया था.

फिर बूआ पिताजी की ओर मुड़ीं, "भैया, जरा 10 रुपए का एक नोट देना, एक टिकट खरीद लेती हूं. जा तो नहीं पाऊंगी, पर भला काम है, पर्स ऊपर ही छोड़ आई हूं."

बूआ साफ झूठ बोल रही थीं. पर्स तो मैं ने ही उन्हें ला कर दिया था, लेकिन अब वह उसे अपने पैर से सोफे के नीचे छिपाने का प्रयास कर रही थीं.

दूसरे दिन सुबह ही बूआ ने घोषणा कर दी. "चलो, कहीं बाहर खाना खाएंगे. आज खाना मेरी तरफ से होगा." एक ठसकेदार नजाकत से उन्होंने अपने तीनों दर्शकों पर एक नजर डाली. उसी समय मां और पिताजी ने भी अर्थपूर्ण नजरों से एकदूसरे की ओर देखा.

दावतों के ऐसे प्रस्ताव कोई नए नहीं थे, प्रस्ताव आते जरूर थे, लेकिन जेब मां की ही कटती थी. उन्हें कहां गवारा था कि मेहमान अपना बटुआ खोलें. पिताजी की अर्थपूर्ण दृष्टि में फिर एक चुनौती थी, लेकिन मां की दृष्टि में क्या था, मैं उसे पढ़ नहीं पाई.

बड़ा सुहावना दिन था. आकाश ताजा धुलाधुला सा था. बाजार में घूमनेफिरने के बाद टैक्सी ले कर हम एक प्रसिद्ध रेस्तरां की ओर उड़े चले जा रहे थे. पिताजी बेचारे दफ्तर जाते समय नोटों की एक गड्डी मां को थमा कर हलके से मुसकराए थे और कहा था, "आज तो मुन्नो की तरफ से दावत है न... इसे रख लो."

मां ने बहुत प्यारी साड़ी पहनी थी. उस दिन वह बड़ी सुंदर लग रही थीं. लेकिन बूआ तो गजब ढा रही थीं.

रेस्तरां के बाहर टैक्सी रुकी तो सब से पहले मां उतरीं. कंधे पर पल्ला ठीक करते हुए उन्होंने अपनी सहज मीठी आवाज में ड्राइवर से कहा, "किराया मेमसाहब देंगी." और वह अप्रत्याशित निश्चितता से बरामदे की सीढ़ियां चढ़ने लगीं.

मैं ठगी सी खड़ी रही. टैक्सी से उतरती बूआ ने भी मां का वाक्य सुन लिया होगा, लेकिन हिम्मत नहीं थी कि पलट कर उन का चेहरा देखूं. सदा की शांत दबीदबी सी मां का यह अनोखा रूप था.

पर बूआ भी बला की रंगबाज थीं. राजसी मुसकान से किराया दिया और आगे बढ़ गईं. मैं ने भी चैन की सांस ली.

रेस्तरां के अंदर बड़ा प्यारा माहौल था. हलके अंधेरे में गोल मेजों के चमकते सफेद मेजपोश, हलका संगीत और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मां द्वारा हाथों में 'मीनू' पकड़ते ही पिताजी याद आ गए. किसी होटल में खाने से पहले मां जब मीनू पढ़तीं होतीं तो पिताजी फुसफुसा कर मुझ से कहते, "तुम्हारी मां सब से सस्ती चीज ढूंढ़ रही है." और फिर हम बापबेटी मां की इस सोच पर ठहाका लगाते थे.

मां हमारे इस मजाक को बड़ी सहजता से सह लेती थीं और मीनू पर से नजरें उठा कर बस मुसकरा देती थीं.

लेकिन आज? आज तो उन का अंदाज देखते ही बनता था. अपनी मीठी आवाज में वह बैरे को एक लंबा आर्डर दे रही थीं. "कीमा, मटन, पनीर, कोफ्ता, बिरयानी, शाही कबाब, नान और खाने के बाद आइसक्रीम."

मेरा दिल अंदर ही अंदर दहल रहा था. बूआ की ओर से दावत थी, लेकिन मां उन का दिवाला निकालने पर तुली थीं या अपना, कौन जाने? आज मां का हर अंदाज नया था.

बूआ के मुखड़े पर निगाह डाली तो उन

टैक्सी से उतर कर मां ने अपनी सहज मीठी आवाज में ड्राइवर से कहा, "किराया मेमसाहब देंगी."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कटूक्तियां

विवाह : वह वस्तु जिसे आप ने एक दुकान के शो केस में देख कर सदा सराहा हो, किंतु जब आप उसे अपने घर ले आएं तो आप को बहुत प्रिय लगने पर भी कदाचित घर की अन्य चीजों के साथ न जंचे.

—जीन कैलर

*

नारी के जीवन में केवल एक वास्तविक दुखांत है कि उस का अतीत हमेशा उस का प्रेमी होता है और उस का भविष्य पति. —आस्कर वाइल्ड

*

यदि राजनीतिज्ञ लोग आपस में झगड़ा न करें और अपने को मूर्ख न बनने दें तो पत्रकारों को बहुत ही कम मौका मिलेगा लिखने के लिए.—खुशवंत सिंह

*

एक ओर तो लोग आणविक युग की चर्चा करते हैं, दूसरी ओर हम भारतवासी अभी तक गोबर युग में रह रहे हैं. —जवाहरलाल नेहरू

*

समाज की सेवा में लगे लोगों को अब यह समझ लेना चाहिए कि समाज सेवा भी एक शौक है.

*

अनेक लोग तत्वदर्शियों की तरह बातें करते हैं, मगर जीते हैं मूर्खों की तरह.

*

सिर्फ भाग्य और संयोग की बातें यह सिद्ध करती हैं कि हम कार्य और कारण के सिद्धांत को कितना कम जानते हैं. —होसिया बैंलन ●

की आंखें आश्चर्य से गोलगोल हो रही थीं. वहां एक रंग आता था तो एक जाता था. लेकिन वह बला की कलाकार थीं. कुछ बोली नहीं.

खाना बहुत स्वादिष्ट था. आइसक्रीम के बाद बैरे ने बड़े अदब से बिल ला कर मां की ओर बढ़ाया तो उन्होंने तपाक से उसे बूआ की ओर सरका दिया.

फिर बैरे से कहा, "अरे भई, क्या गजब करते हो? आज मेमसाहब की ओर से दावत है. भई ज्योत्सना, मजा आ गया. मोनू और मेरी ओर से दावत के लिए बहुतबहुत शुक्रिया, क्यों मोनू?" इतना कह कर उन्होंने बड़ी अदा से नाजुक लेस लगे रूमाल से अपने होठों को हौले से थपथपाया.

यह जबरदस्त धमाका था. हमेशा की रंगबाज बूआ आज सब दांव हार चुकी थीं. मां की रंगबाजी ने उन्हें मात दे दी. एक क्षण को बूआ के चेहरे पर भौचक्केपन का गहरा रंग पुत गया, लेकिन वह भी पुराने खिलाड़ियों में से थीं. अपनी हार को स्वीकारते हुए बचेखुचे ठसके सहित साहस बटोरा और पर्स खोल कर बिल अदा किया.

उस शाम पिताजी ने घर लौटते ही पूछा, "कहो भई, आज क्याक्या मजे किए?"

"मैं ने भी क्लब की सदस्यता ले ली है." जवाब में मां ने तपाक से कहा.

"कैसा क्लब?" पिताजी ने आश्चर्य से पूछा.

"रंगबाजों का क्लब..." मां ने चहक कर कहा.

"भई पहेली न बुझाओ, साफसाफ बताओ...और हां, ज्योत्सना कहां है?"

"ऊपर सामान बांध रही हैं." मां ने सपाट स्वर में कहा.

"क्यों?" पिताजी चौंके.

"वापस जा रही हैं. कहती हैं, घर की याद आ रही है." मां ने एक संतुष्ट मुसकान के साथ कहा और चाय का प्याला पिताजी की ओर बढ़ा दिया. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आतंकवाद का बंधक बना पंजाब

लेख • जगदीश चावला

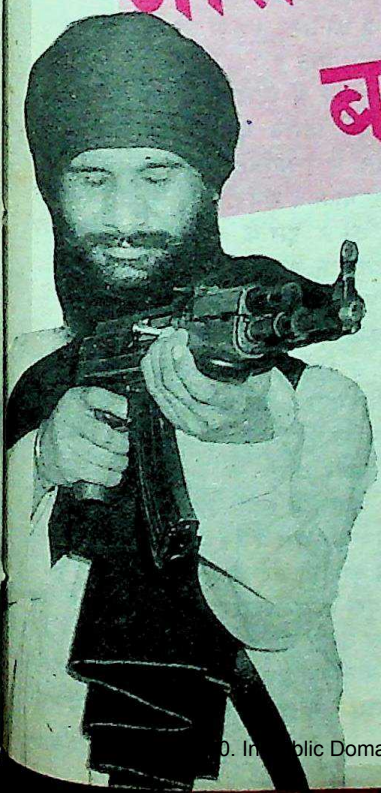

पिछले कई वर्षों से खून में नहा रहे पंजाब के आतंकवादी अपनी मौजूदगी का एहसास कराने के लिए हर थोड़े दिन बाद कोई न कोई नया शगूफा छोड़ देते हैं ताकि प्रशासन और जनता को अच्छी तरह समझ में रहे कि आतंकवादियों की बिरादरी में कहीं कमजोरी नहीं आ रही है.

हाल के दिनों में पंजाबी में अपना कामकाज न करने वालों को गंभीर परिणाम भुगतने की धमकियां देना, सीमावर्ती जिलों में 50 से अधिक बैंक शाखाओं को बंद करा देना और 250 से ज्यादा स्कूलों में हिंदी के

0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरकार की अस्पष्ट नीतियों के कारण पंजाब में सामान्य जन का ही नहीं, सुरक्षाकर्मियों का भी मनोबल टूट गया है. यही नहीं, लोकतंत्र का चौथा पाया कहलाने वाला प्रेस भी आतंकवाद के आगे घुटने टेक चुका है. ऐसी स्थिति में राष्ट्रपति शासन की उपयोगिता ही क्या है, जब वह लोगों के जीवन की सुरक्षा की गारंटी भी नहीं दे सकता.

पठनपाठन और राष्ट्रगान पर पाबंदी लगवा देना, खाड़कुओं द्वारा गणतंत्र दिवस पर 'बंद' रखने की अपील को अनसुना करने वाले शहरियों पर गोलियों की बौछारों से अपनी बौखलाहट उतारना, पत्रकारों के लिए आचार संहिता के 'हुक्मनामे' जारी करना व राज्य में मौजूद किसी भी सरकारी एजेंसी या राज्यपाल को राई जितना भी महत्त्व नहीं देना जाहिर करता है कि आतंकवादियों ने अब पूरे पंजाब के समस्त जनजीवन को अपनी दहशत का बंधक बनाए रखने का फैसला कर लिया है.

सरकार की अस्पष्ट नीतियों के कारण सुरक्षाकर्मियों का तो मनोबल टूट ही रहा है, यहां के जांबाज लोगों ने भी अपनी खासियत के विपरीत आतंकवादी बंदूकों की सत्ता के सामने अपने घुटने टेकने शुरू कर दिए हैं. वे अब नई वास्तविकताओं से तालमेल बैठाने में लगे हैं.

पंजाब में भले ही केंद्र का शासन लागू हो लेकिन चलती उन्हीं उग्रवादियों की है जिन के एक ही 'हरफ' से यहां दुकानें बंद हो जाती हैं या जिन की दहशत के सामने गांव के कुत्ते भी नहीं भूंकते. 'अमृतसर से चार किलोमीटर दूर स्थित गांव सुलतानविंड में एक दिन जब कुछ खाड़कू आए थे तो वहां के कुत्तों ने भूंकभूंक कर उन्हें गांव से भागने पर विवश कर दिया था. पर अगले ही दिन इन खाड़कुओं ने गांव में आ कर एक हलवाई को हिदायत दी कि वह गांव के सब कुत्ते मरवा दे. उस हलवाई ने स्वास्थ्य विभाग के सहयोग से कुत्ते मारने का काम तुरतफुरत कर दिया.'

पंजाब के गंभीरतर होते हालात बताते हैं कि यहां अब उग्रवादी ही चैन की गारंटी दे सकते हैं बशर्ते कि उन का विरोध न किया जाए और वे जो मांगें, उन्हें दे दिया जाए. यहां अब भी उग्रवादियों का इतना दबदबा है कि सोहनसिंह वाली पंथक कमेटी ने जब से प्रशासन में पंजाबी इस्तेमाल करने का 'हुक्मनामा' जारी किया तो पंजाब सरकार के नमकख्वार समझे जाने वाले कई सचिवों ने तो खुद ही अपनी सरकारी गाड़ियों की नंबर प्लेटें अंगरेजी से गुरमुखी में बदल लीं और इस के लिए उन्होंने मुख्य सचिव या राज्यपाल तक से पूछना भी जरूरी नहीं समझा. यहां तक कि अब पंजाब रोडवेज की बसों तक में भी हिंदी पर पोचा फेर दिया गया है.

पंजाब में शराब के ठेकों को जलाने और बंद कराने की अपनी मुहिम की सफलता से उत्साहित हो कर आतंकवादियों ने यहां पहनावे संबंधी जो आचार संहिता जारी की है, इस के अनुसार लड़कियों को सुर्ख बिंदी न लगाने तथा जींस, स्कर्ट, फ्राक आदि न पहनने की चेतावनी दी गई है. लड़कियों को सलवार कमीज और केसरी चुन्नी व लड़कों को कमीजपाजामा और केसरी पगड़ी या पटका पहनने को कहा गया है. उन का उद्देश्य यह है कि सभी लड़कियां सिख नजर आएं.

पंजाब में स्कर्ट पहनने व दो चोटियां करने के अपराध में दंड स्वरूप एक छात्रा की चोटी काट दी गई और पटियाला के निकट राजपुरा के सरकारी स्कूल की प्रधानाचार्या निर्मल कांता को गोलियां मार दी गईं, जब वह आतंकवादियों द्वारा सुझाई गई पोशाक के लिए कुछ हफ्तों की मोहलत मांग रही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

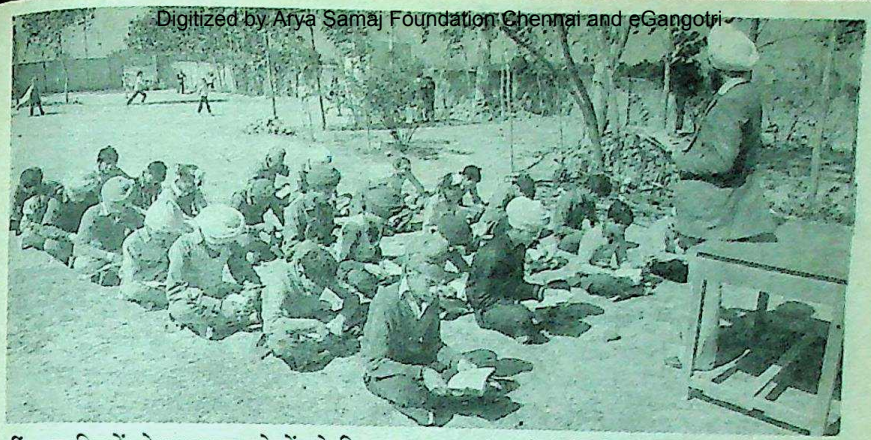

आतंकवादियों के खौफ से विशेष कपड़े पहनने व भाषा सीखने पर विवश है पंजाब के बच्चे

थीं. धमकियों के बल पर लोगों को विवश करने वालों से कोई पूछने वाला भी नहीं है कि इस प्रकार के काम किस संस्कृति की सेवा है?

पंजाब में आतंकवादियों की मुख्यतः दो इकाइयां हैं जो उग्रवादी गतिविधियों को निर्देशित करती हैं. इन में सोहनसिंह के नेतृत्व वाली पंथक कमेटी है, जिस के अंतर्गत पांच उग्रवादी गुट और गुरबचन सिंह मनोचाहल व वासन सिंह जफरवाल के नेतृत्व वाली पंथक कमेटी के अंतर्गत चार आतंकवादी गुट हैं जिन की दहशत पूरे पंजाब में व्याप्त है. 'खालिस्तान' की वकालत करने वाली इन पंथक कमेटियों ने यहां आतंक का जो माहौल बना दिया है उसी की वजह से यहां हिंदुओं का पलायन भी जारी है.

आतंकवादियों की मारक क्षमता

पंजाब के उग्रवादियों के बारे में किए गए सर्वेक्षण से पता चलता है कि विभिन्न खाड़कू संगठनों में सक्रिय 43% युवक किसान परिवारों से संबंधित हैं और बाकी के खाड़कुओं में भूतपूर्व सैनिक, कामगार तथा बेरोजगार युवक आदि ही शामिल हैं. इन में भी 56% खाड़कू अमृतसर व मजीठा से संबंध रखते हैं. 22% गुरदासपुर, 8% जालंधर व 3.5% लुधियाना, कपूरथला आदि जिलों से संबंधित हैं. सर्वेक्षण के अनुसार केवल 1.3% खाड़कू ही ग्रेजुएट हैं. जबकि 31% मैट्रिक व 50% प्राइमरी शिक्षा प्राप्त और 17.7% खाड़कू बिलकुल अनपढ़ हैं.

लेकिन सुरक्षा बलों की जबरदस्त चौकसी का मजाक उड़ाते इन से बरामद हथियारों के आधुनिकतम जखीरों से पता चलता है कि जहां आपरेशन ब्लू स्टार से पूर्व ये उग्रवादी केवल स्टेनगन, 9 एम.एम. की पिस्तौलें, 12 बोर की बंदूकें तथा पुलिस कर्मियों से छीनी हुई 303 बोर की राइफलें ही इस्तेमाल किया करते थे, वहीं अब ये एके. 47, एके 74, एके 94 राइफलें, 7.62 एम.एम. की हलकी मशीनगनें, 9 एम.एम. की फोल्डिंग मशीनगनें, खतरनाक 712 चीनी माउजर, राकेट व राकेट लांचर तथा विश्व भर में सेना के लिए सुरक्षित एच.ई. 36 हथगोले भी इस्तेमाल में ला रहे हैं.

कहींकहीं पर तो उन्होंने घातक सुरंगें लगा कर सुरक्षा बल के गश्ती दलों की जीपों को भी उड़ाने का दुस्साहस किया है. वैसे इन के पास एक मिनट में 300 राउंड फायर करने की क्षमता रखने वाली आटोमेटिक कलैशिनकोव राइफलें तथा एक मिनट में 700 राउंड गोली दागने वाली 45 थपिसन सब मशीनगनें तथा एम. 908 तथा एम. 802 प्रणालियां भी हैं जिन से अमावस की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रात में भी कई किलोमीटर तक साफसाफ देखा जा सकता है.

शस्त्र विशेषज्ञों के अनुसार, जहां इजराइल में निर्मित एके-47 राइफलें 60 से 70 लोगों तक भारी पड़ती हैं वहीं पर मात्र तीन किलो तीन सौ ग्राम के वजन वाली एके-74 राइफल की मैगजीन में 65 गोलियां आती हैं और यह फायर करते वक्त एके-47 की भांति आग भी नहीं उगलती, जिस से यह अंदाजा तक लगाना मुशकिल हो जाता है कि गोलियां किस दिशा से बरस रही हैं.

एक तरफ उग्रवादियों ने अपनी मारक क्षमता काफी बढ़ा ली है जबकि पंजाब में कार्यरत सुरक्षा बल अभी तक पुराने जमाने की 303 बोर राइफलों को ही ढो रहे हैं. यही नहीं, पुलिस सूत्रों के अनुसार उग्रवादियों ने पंजाब के साथ लगती 535 किलोमीटर लंबी सीमा पर लगाए जा रहे कांटेदार तारों को काटने के लिए न केवल विदेशी कटर प्राप्त किए हैं बल्कि इन के पास ऐसा रसायन भी है जिसे डालते ही लोहे का तार कुछ ही क्षणों में जल जाता है.

पहले उग्रवादियों का दबाव अमृतसर, गुरदासपुर, तरनतारन, फिरोजपुर, बटाला और फरीदकोट जिलों तक ही सीमित था. मगर अब पिछले दो महीनों से इन के दबदबे और दहशत ने चंडीगढ़, मोहाली, रोपड़, पटियाला, सुनाम, संगरूर, राजपुरा, सरहिंद आदि शहरों को भी अपनी लपेट में ले लिया है. उग्रवादियों ने यहां अपने मंसूबों के तहत न केवल न्यायाधीशों की चुनचुन कर हत्याएं की हैं बल्कि गवाहों के खानदान भी इन की मार से नहीं बच सके.

केंद्र सरकार ने आतंकवादियों को काबू में करने के लिए जो भी विशेष कानून बनाए, वे धरे के धरे रह गए हैं. साथ ही आतंकवादी संगठनों के नाम पर यहां कुछ ऐसे पेशेवर अपराधियों के गिरोह और ठग आए हैं जिन का काम ही लोगों को नित नई धमकियों, अपहरण और फिरौतियों से परेशान करना है.

पिछले दिनों चंडीगढ़ के पुलिस अधिकारियों ने ऐसे ही पकड़े गए गिरोह का परदाफाश करते हुए बताया कि इस गिरोह

पंजाब के लोग अपना विधान, अपना निशान चाहते हैं—अतिंदरपाल सिंह

इंदिरा गांधी हत्याकांड के सिलसिले में गिरफ्तार कर के जेल भेजे गए अतिंदरपाल सिंह के जेल संबंधी अनुभव यद्यपि अच्छे नहीं हैं तो भी इन की लोकप्रियता का अंदाजा इसी से होता है कि इन्होंने अपना पिछला आम चुनाव जेल में रहते हुए ही लड़ा और जीता था. बाद में पटियाला से निर्वाचित इस निर्दलीय सांसद को सरकार ने रिहा भी कर दिया. प्रस्तुत हैं इन से हुई बातचीत के कुछ अंश:

प्रश्न: पंजाब में रोजाना हो रही निर्दोष लोगों की हत्याओं के बारे में आप क्या कहना चाहेंगे?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मौत के डर और न्याय व्यवस्था के अभाव ने ही आतंकवादियों की शक्ति और बढ़ाई है.

ने शहर के आठ प्रमुख उद्योगपतियों और व्यापारियों को धमकी पत्र भेज कर उन से फिरौती के रूप में तकरीबन 2.45 लाख रुपए झटक लिए थे. इन्हें कहीं से भिंडरांवाला टाइगर्स फोर्स और खालिस्तान कमांडो फोर्स के लेटर पैड हाथ लग गए थे. ये लोग उन पर पत्र लिख कर धमकियां देते

उत्तर: हत्याओं के मामले में पंजाब अभी भी सातवें स्थान पर है जबकि इस से ऊपर पश्चिम बंगाल, उत्तर प्रदेश, बिहार आदि राज्यों के नाम हैं. पंजाब में वर्ष 1983 में लगभग 950 हत्याएं हुई थीं, उन में से एक भी हत्या आतंकवादी हत्या नहीं थी. केंद्रीय गृहविभाग के अनुसार वर्ष 1989-90 में पंजाब में 1400 से ज्यादा हत्याएं हुईं लेकिन देश भर में अपराध के अनुपात में भी 25% वृद्धि हुई. इस हिसाब से जाहिर है कि सभी हत्याएं आतंकवादी हत्याएं नहीं हैं, पर पंजाब में सभी अपराध आतंकवादी कानून के तहत दर्ज किए जाते हैं ताकि ऐसे मामलों में पुलिस को ज्यादा छानबीन न करनी पड़े. यहां होने वाली आतंकवादी हत्याओं से इनकार तो नहीं किया जा सकता. पर मैं पूछना चाहता हूं कि क्या पंजाब में आपसी झगड़े, रंजिश की हत्याएं, जमीनी झगड़ों की हत्याएं, आपसी दुश्मनी से होने वाली हत्याएं या डकैती संबंधी सभी अपराध खत्म हो गए हैं जो हर हत्या को यहां आतंकवादियों से जोड़ा जा रहा है.

प्रश्न: पंजाब के परिदृश्य में आप खुद को अकाली दल या सिमरनजीत सिंह मान से कैसे अलग मानते हैं?

उत्तर: मैं तो उन संघर्षशील युवकों के नेतृत्व को स्वीकार करता हूं जिन में से मैं हूं और ये युवक 'मान' को अपना नेता नहीं मानते.

प्रश्न: क्या आप को लगता है कि सिमरनजीत सिंह मान और चंद्रशेखर की वार्त्ता पंजाब की स्थिति को सामान्य बनाने में कारगर सिद्ध होगी?

उत्तर: मुझे इन की वार्त्ता सिरे चढ़ने वाली नहीं लगती क्योंकि सिमरनजीत सिंह यहां अपने स्वार्थों के लिए बात करने आया और चंद्रशेखर ने भी अपनी छवि को बरकरार रखने के लिए मान को इस्तेमाल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थे और अपना डर बैठाने के लिए धमकी पत्र के साथ कारतूस भी भेज दिया करते थे. यह तो कुछ निडर व्यापारियों ने पुलिस से मदद मांग कर इन्हें पकड़वा दिया वरना कई ऐसे व्यापारी भी हैं जो अपनी जानबख्शी के लिए उग्रवादियों को मनमानी रकम दे कर भी अपने होंठ बंद रखते थे.

चंडीगढ़ आकाशवाणी के निदेशक राजेंद्रकुमार तालिब की नृशंस हत्या के बाद सरकारी प्रचार मीडिया तो आतंकवादियों के सामने झुक गया ही, पंजाब की प्रेस और पत्रकारिता भी आतंक के लकवे में हैं. इमरजेंसी में लगी सेंसरशिप का विरोध करने पर ज्यादा से ज्यादा कैद हो सकती थी, अखबार बंद हो सकता था और तब भी किसी तरह सर्वोच्च न्यायालय से राहत पाई जा सकती थी लेकिन अब पता नहीं किस संपादक या पत्रकार को किस जुर्म में अपनी जान गंवानी पड़े. 'पंजाब केसरी' के संस्थापक लाला जगतनारायण की हत्या के बाद अब तक पंजाब में तकरीबन 65 पत्रकार मारे जा चुके हैं. पिछले वर्ष उग्रवादियों ने आनंदपुर की एक लड़की जसमीत कौर को पत्रकार बना कर अमृतसर के निकट एक वामपंथी कार्यकर्ता मंजीत सिंह के यहां भेजा था जो उस के बहकावे में आ कर कश्मीर समस्या में सहयोग देने हेतु जम्मू जाने को तैयार हो गया, पर अगले ही दिन उस का कटा हुआ सिर गांव के सामुदायिक भवन के आगे पड़ा था और धड़ का तो पता ही नहीं था.

पत्रकारों के लिए पंथक कमेटी द्वारा जारी आचार संहिता में आतंकवादियों को उग्रवादी, खाड़कू, मिलिटेंट या मुजाहिदीन लिखने को कहा गया है. आचार संहिता में खाड़कू जत्थेबंदियों की रचनात्मक आलोचना की तो छूट दी गई है लेकिन खालिस्तान बनाने के संघर्ष का विरोध करने की इजाजत नहीं है. स्वतंत्र अभिव्यक्ति का माध्यम और लोकतंत्र का चौथा पाया कहलाने वाला प्रेस भी अब खाड़कुओं व उन के बयानों को ज्यादा प्रचार देने पर विवश है.

कुछ समय पहले पटियाला के राजा अमरिंदर सिंह का एक लेख खालिस्तान की

किया. इस से ज्यादा मुझे कुछ भी संभावना नजर नहीं आती.

प्रश्न: सिखों को उग्रवादी होने पर क्या कांग्रेस प्रशासन ने ही लगातार मजबूर किया है?

उत्तर: देश में चार दशकों तक कांग्रेस ने शासन किया तो हम कह सकते हैं कि वही इस के लिए उत्तरदायी है. इसी बीच मैं ने जो बदलाव देखा उसे भी मैं सिखों के प्रति सहानुभूति वाला नहीं मानता. मेरी दृष्टि से बुनियादी तौर पर सिख धर्म में कट्टरवाद के लिए कोई स्थान नहीं है, पर सिख कट्टरवाद भी हिंदू कट्टरवाद की प्रतिक्रिया है. मेरे अपने चुनाव क्षेत्र में हिंदू बहुसंख्यक हैं जिन में से अधिकतर इस बात से सहमत हैं कि पिछली जनगणना में उन से भाषा के खाने में पंजाबी की जगह हिंदी लिखवाई गई और उसी की वजह से समस्या भी पैदा हुई.

प्रश्न: पंजाब में आज भी जबकि बहुत से हिंदू स्वेच्छा से पंजाबी पढ़ते हैं तो फिर वहां पंजाबी लागू करने में कौन आड़े आ रहा है?

उत्तर: पंजाब के कुछ हिंदीभाषी हिंदुओं और यहां के प्रशासन की वजह से ही अभी तक पंजाबी यहां बतौर सरकारी भाषा के रूप में लागू नहीं हुई है.

प्रश्न: भाषा विचारों की अभिव्यक्ति का माध्यम होती है तो क्या इसे किसी फिरके से जोड़ना उचित है?

उत्तर: अपनी मातृभाषा से इनकार करना भी तो कोई अच्छाई नहीं है. मुझे ही देखिए, मैं पंजाब में अपना काम पंजाबी में करता हूं और केंद्र में अपना काम हिंदी में करता हूं. लेकिन अंगरेजी भाषा के पत्रों को चाहे वे प्रधान मंत्री के हों या संसद के, मैं उन्हें वापिस ही भिजवा देता हूं और मैं समझता हूं कि ऐसा जज्बा तो सभी में होना ही चाहिए.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

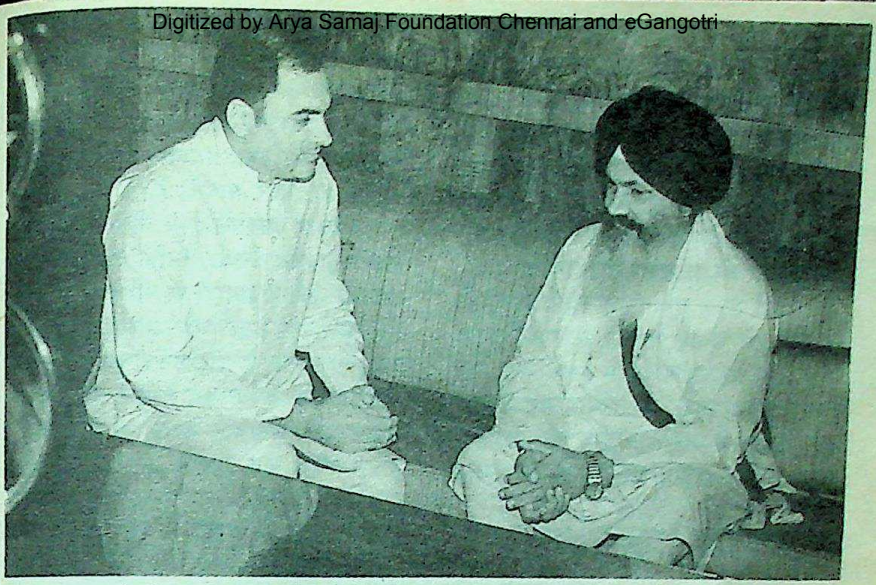

राजीव व संत लोंगोवाल समझौता भी पंजाब की समस्या हल करने में असमर्थ रहा.

अवधारणा के खिलाफ यहां के अंगरेजी अखबार दैनिक ट्रिब्यून में छपा था मगर अगली बार पंथक कमेटी ने उस का जवाब भी इसी अखबार में ही छपवाया और ज्यों का त्यों छपवाया.

अब सुना जा रहा है कि आतंकवादियों ने इस बार जालंधर से प्रकाशित दैनिक

प्रश्नः पंजाब में महिलाओं के फैशन और पहनावे को ले कर जारी हुए हुक्मनामे से आप कहां तक सहमत हैं?

उत्तरः मेरी समझ में तो कोई भी कार्य, बदलाव या सुधार डंडे के जोर पर नहीं कराया जा सकता. यह सब तो अपनी अंतर्प्रेरणा पर निर्भर करता है.

प्रश्नः हिंदुओं के किस काम से सिखों को नाराजगी है जो वे अपने लिए अलग 'खालिस्तान' या आत्मनिर्णय का अधिकार चाहते हैं?

उत्तरः सिखों को हिंदुओं से नाराजगी तो किसी भी कारण से नहीं है बल्कि हिंदुओं ने ही अपने को पंजाब, पंजाबियत और सिखों से जुदा कर लिया है. सवाल सिखों के देश की मुख्यधारा में बने रहने का नहीं या उस से अलग होने का नहीं है बल्कि सिख चाहते हैं कि उन की पहचान और परंपरा बनी रहे और उन्हें भी अपनी राजनीतिक विचारधारा और फिलासफी के अंतर्गत जीवन जीने का अधिकार हासिल हो.

प्रश्नः तो आप की समझ से पंजाब समस्या का हल क्या है?

उत्तरः पंजाब के लोग अपना विधान, अपना निशान चाहते हैं और यह सरकार पर निर्भर करता है कि वह इस मांग को कैसे पूरा करती है. संविधान सभा में अयंगर समिति ने यह माना था कि भारत में हर राज्य का अपना संविधान होगा और हर 10 साल बाद उस का आकलन कर आवश्यक संशोधन किया जाएगा लेकिन जब संविधान स्वीकृत किया गया तो उस में यह सुझाव शामिल न करने पर तत्कालीन सिख प्रतिनिधियों ने अपने हस्ताक्षर नहीं किए थे. अब यदि संविधान सभा में प्रत्येक प्रांत के लिए अलग संविधान देने का प्रावधान एवं प्रस्ताव पास कर दिया जाए तो पंजाब समस्या बहुत कुछ तो इसी से सुलझ जाएगी●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'अजीत' को भी नहीं बख्शा. एक ही झटके में संगठन ने उस से लाभांश मांगा तो दूसरे ने बोरियाबिस्तर समेटने का आदेश दे दिया. इस समाचारपत्र से तो अपराध यह हुआ कि इस ने बाबा मनोचाहल के धड़े की एक खबर नहीं छापी, जबकि इस से पूर्व इस अखबार पर यह आरोप लगते रहे हैं कि वह उग्रवादियों को अतिशयमहत्त्व देता है.

इसी तरह एक प्रमुख हिंदी दैनिक के संपादक से पंथक कमेटी ने स्पष्टीकरण मांगा कि वह जालंधर में आयोजित हिंद समाचारपत्र समूह के तत्त्वावधान में एक ट्रस्ट द्वारा संचालित शहीद परिवार फंड समारोह में क्यों गया था? पत्र के तत्कालीन संपादक को अपने अखबार के मुखपृष्ठ पर इस का स्पष्टीकरण देते हुए लिखना पड़ा कि अगर इस से किसी की भावनाओं को ठेस पहुंची है तो उन्हें खेद है. इस तरह पंथक कमेटियां मीडिया पर सरकार से ज्यादा अपना अधिकार मानती हैं.

पंजाब प्रशासन ने नया अध्यादेश जारी अवश्य किया है कि आपत्तिजनक सामग्री वाले अखबारों के मालिक, संपादक ही नहीं, विक्रेता भी आतंकवादी माने जाएंगे. सरकारी अध्यादेश का मोटा सा मतलब यही है कि अब से जब भी अखबार बेचने वाले अखबार बेचने जाएं तो पहले बंडल खोल कर अच्छी तरह देख लें कि

कांग्रेस की गलत नीतियां भी पंजाब समस्या की जिम्मेदार हैं—इंद्रकुमार गुजराल

राजदूत से ले कर देश के 'सूचना एवं प्रसारण मंत्री' तथा 'विदेश मंत्री' रह चुके इंद्रकुमार गुजराल जहां पंजाब समस्या पर अपने बेबाक विचारों के लिए जाने जाते हैं, वहीं पर पिछले आम चुनाव में पंजाब के जालंधर चुनाव क्षेत्र से जीते जनता दल के इस नेता की एक बड़ी चिंता पंजाब समस्या का दिनोंदिन 'बद से बदतर' होना भी है. प्रस्तुत हैं इस प्रतिनिधि द्वारा उन से हुई बातचीत के कुछ महत्त्वपूर्ण अंश:

प्रश्न: गुजराल साहब, क्या आप को लगता है कि चंद्रशेखर पंजाब समस्या को समाधान के किसी बिंदु पर ले आएंगे और पंजाब में हत्याएं रुक जाएंगी?

उत्तर: पंजाब की समस्या केवल उग्रवाद की समस्या नहीं है बल्कि यह कानून और व्यवस्था से भी संबंधित है. यहां हालात पिछले दस सालों से बिगड़ रहे हैं. पहले हालात को बनाना और फिर बिगड़ने देना—इस में कांग्रेस का ज्यादा हाथ रहा है. और अब स्थिति इस मोड़ पर आ पहुंची है जहां हम सब परेशान हैं.

पंजाब के बिगड़ते हालात में हमें देखना होगा कि भिंडरावाले को राजनीति में कौन लाया? जब उस की तरफ से हिंसा शुरू हुई तो उसे किस तरह पकड़ा और छोड़ा गया. इस के बाद स्वर्णमंदिर में हथियार जमा होने देना, ब्लूस्टार आपरेशन के बाद उग्रवादियों के पीछे किस का हाथ था, उसे नंगा न करना, संत लोंगोवाल से समझौता कर के उसे न निभाना, बरनाला सरकार को हरियाणा चुनाव के मद्देनजर अपदस्थ कर देना, आपरेशन ब्लैकथंडर की कामयाबी के बाद बने माहौल को बरकरार न रख पाना आदि इस समस्या के कई कारण हैं.

यहां के हालात पिछले दिनों इस कारण से भी बिगड़े कि यहां से अर्द्धसैनिक बलों को दूसरे गड़बड़ी वाले राज्यों में भेजा गया जिस से उग्रवादियों को खुल कर खेलने का मौका मिला और उन्होंने यहां के हिंदू सिख दोनों को ही अपनी गोली और दहशत का निशाना बनाना शुरू कर दिया.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किसी अखबार में खाड़कू संगठन का कोई बयान तो नहीं है. यदि होगा तो वे भी आतंकवादी गतिविधियों एवं विध्वंसक काररवाई नियंत्रण अधिनियम के तहत धर लिए जाएंगे. लेकिन इस कानून को लागू करना असंभव है.

कहने को यहां विभिन्न अकाली दलों का मिल कर 'एक' हो जाना और उस में भी सिमरनजीत सिंह मान का प्रमुख नेता चुना जाना पंजाब के राजनीतिक परिदृश्य में एक बड़ी तबदीली है, लेकिन चूंकि अधिकांश खाड़कू संगठन और अल्पसंख्यकों की जमातें सिमरनजीत सिंह को अपना नेता नहीं मानतीं, इसलिए उन से बड़ी अपेक्षाएं नहीं रखी जा सकतीं.

पंजाब में अपनी मांगों के लिए अकाली आंदोलन को प्रारंभ हुए 11 साल हो चुके हैं मगर हर साल अकालियों ने अपनी मांगों को न केवल रबड़ की तरह खींच कर लंबा किया बल्कि उन्होंने खुद आतंकवादियों का वर्चस्व राजनीति में स्वीकार किया और नतीजे के तौर पर आपरेशन ब्लू स्टार एक परिवर्तन बिंदु बन गया.

इस में शक नहीं कि जुलाई 1985 में संत लोंगोवाल और राजीव गांधी के बीच हुए समझौते के बाद जिस तरह पंजाब में चुनी हुई बरनाला सरकार को अपदस्थ कर वहां केंद्र का शासन थोपा गया, उस से भी

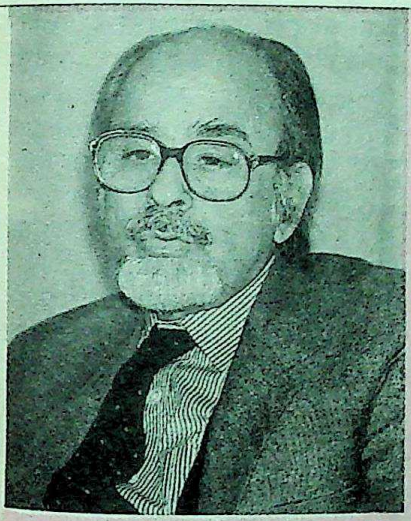

अब प्रधान मंत्री और सिमरनजीत सिंह मान के बीच पंजाब समस्या पर बातचीत की जो संभावनाएं उभरी थीं, वे बेहतर थीं लेकिन इस में मान को पंथक कमेटियों व अन्य पक्षों का सहारा न मिल पाना भी ज्यादा आश्वस्त नहीं करता. बातचीत के जरिए पंजाब की परेशानियों का कोई कारगर हल निकले, यह तो सभी चाहते हैं लेकिन भारतीय संविधान के मुताबिक किसी एक धार्मिक समुदाय को दूसरों से ज्यादा अधिकार नहीं दिए जा सकते.

मुझे मालूम है कि 99% सिख समुदाय भी 'खालिस्तान' की मांग के खिलाफ है, जबकि कुछ ही लोग बंदूक की नोक पर इस मांग को उभार रहे हैं और प्रेस को भी धमका रहे हैं. वे शायद ऐसी खतरनाक तसवीर बनाना चाहते हैं कि जैसे सारा सिख समुदाय ही इस मांग के पीछे हो, पर ऐसा नहीं है.

प्रश्नः क्या आप को लगता है कि उग्रवादियों का हिंदुओं और सिखों में वैमनस्य पैदा करने का षड्यंत्र पूरा हो रहा है?

उत्तरः मैं नहीं मानता कि पंजाब समस्या के पीछे झगड़ा हिंदू और सिखों का है. पिछले 10 सालों में दबाव के बावजूद हिंदूसिखों का 'एक' बने रहना ही जाहिर करता है कि उन में किसी तरह का आपसी वैमनस्य नहीं है.

प्रश्नः पंजाब के लोगों को शिकायत है कि आप पंजाब जाते हुए घबराते हैं और वहां के लोगों से नहीं मिलते हैं. इस पर आप क्या कहेंगे?

उत्तरः मुझे पंजाब से चुनाव जीते एक साल ही हुआ है और फिर विदेश मंत्री के नाते मेरा बाहर जाना भी लगा रहा है लेकिन ऐसा नहीं है कि मैं पंजाब जाने की मंशा ही नहीं रखता. मैं जबजब वहां गया हूं लोगों से बाकायदा मिलता रहा हूं. अगले दिनों में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आतंकवादियों के हौसले इतने बढ़े हैं कि अब स्थिति यहां तक आ पहुंची है कि पंजाब में आतंकवाद के भस्मासुर को जन्म देने वाली कांग्रेस सहित अन्य राजनीतिक दल भी यहां इतने अप्रासंगिक व हौसलापस्त किए जा चुके हैं कि यहां समस्या के समाधान की कोई संभावना भी नजर नहीं आती. हालांकि चंद्रशेखर की सरकार भी पंजाब में चुनाव करवाने का वैसा ही आश्वासन दे रही है जैसा कि पिछली सरकार दिया करती थी.

इधर पंजाब के उग्रवादियों ने भी सरकार को जता दिया है कि यदि उन की 'खालिस्तान' की मांग नहीं मानी गई तो फिर केंद्र और उग्रवादियों के बीच खुली लड़ाई हो सकती है. हालांकि प्रधान मंत्री चंद्रशेखर को सिमरनजीत सिंह मान ने जो ज्ञापन दिया है उस में खालिस्तान का जिक्र नहीं है बल्कि उस में सिखों के आत्मनिर्णय की बात उठाई गई है. वैसे भी मान ने सरकार को बता दिया है कि पंजाब के मामले में वह राजीव लोंगोवाल जैसा समझौता नहीं चाहते लेकिन सरकार की परेशानी यह है कि वह नहीं जानती कि उग्रवादियों का वास्तविक नेता कौन है और वह किसे बातचीत का औपचारिक निमंत्रण दे.

पंजाब के अकाली नेताओं में भी ऐसा कोई नेता नहीं हुआ जिस ने बेकुसूर पुरुषों, महिलाओं और बच्चों की हत्याओं की निंदा

फिर वहीं जा रहा हूं. वहां कोई मेरी दुकान या व्यापार तो है नहीं. मेरा तो अपने चुनाव क्षेत्र के काम से ही जाना होता है.

प्रश्नः पंजाब में पंजाबी भाषा लागू करने में कौन अड़चनें पैदा कर रहा है?

उत्तरः पंजाबी भाषा तो पंजाब में लागू है ही, यह वहां की सरकारी जबान है.

भाषा विवाद उठाने से पहले प्रांतों की निरक्षरता दूर करनी जरूरी है.

प्रश्नः पंजाब में यदि किसी सिख को राज्यपाल बना दिया जाए तो क्या वहां प्रशासन खराब हो जाएगा?

उत्तरः मैं यह मान कर चलता हूं कि राज्यपाल धर्म देख कर नहीं बनाने चाहिए क्योंकि धर्म के आधार पर राज्यपाल बनानेबदलने से समस्याएं नहीं सुलझतीं. वैसे यहां यदि किसी सिख को राज्यपाल बनाया जाए तो इस में कोई नुकसान भी नहीं है.

प्रश्नः उग्रवादियों की दहशत के बंधक बने पंजाब में शांति कैसे बहाल हो सकती है?

उत्तरः यह ठीक है कि कांग्रेस की कोताहियों व गलत नीतियों से ही यहां उग्रवाद को बढ़ावा मिला है, यहां तक कि 1984 के दंगाइयों को सजा तक भी नहीं दी गई लेकिन सरकार का पहला कर्तव्य यहां लोगों के जानमाल को बचाना और अमन को बहाल करना है. अन्य कोशिशों के साथसाथ पाकिस्तान की दखलअंदाजी पर भी ध्यान रखना होगा और उसे कूटनीतिक व अंतर्राष्ट्रीय दबावों से समझाना होगा कि वह पंजाब के मामले में अपना हस्तक्षेप बंद करे.

प्रश्नः आप सूचना एवं प्रसारण मंत्री भी रहे हैं तो क्या सरकारी प्रचार माध्यमों पर धार्मिक क्रियाकलापों का प्रसारण लोगों को कट्टरपंथी नहीं बना रहा और सैक्यूलर (धर्म निरपेक्ष) कहे जाने वाले इस देश में इन माध्यमों पर गीता या गुरुवाणी का प्रसारण कितना औचित्यपूर्ण है?

उत्तरः सरकारी प्रचार माध्यम देश को जोड़ने का काम करें तो बेहतर है. धार्मिक प्रचार की बात रामायण या महाभारत के साथ तो जोड़ी जा सकती है, पर गुरुवाणी को किसी एक समुदाय से नहीं जोड़ा जा सकता क्योंकि इस में सभी प्रभुभक्तों के प्रवचन हैं.

कट्टरपन तब बढ़ता है जब रहनेसहने के तरीके भी बदले नजर आते हैं. इस दृष्टि से मिलिटैंसी या कट्टरपन सिर्फ सियासत है, आध्यात्मिकता नहीं लेकिन समस्याओं को धर्म के लबादे में लपेटने का चलन भी सभी वर्गों में है और यह भी देखा गया है कि इस से धर्म निरपेक्षता के प्रति विश्वास हलके पड़ जाते हैं. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करने का साहस जुटाया हो बल्कि वे लोग भी जबतब हत्यारों के 'रस्म भोग' में भाग लेते हैं या आतंकवादियों के 'माउथपीस' बन कर निरंतर पुलिस और प्रशासन को ही कोसते हैं. लगता है कि भीतर से ये लोग भी कहीं आतंकवादियों से डरे हुए या मिले हुए हैं.

पंजाब समस्या को ले कर विभिन्न उग्रवादी संगठनों के पास शांति के कौन से फारमूले हैं, यह अब तक स्पष्ट नहीं है. जिस खालिस्तान की वे मांग करते हैं, वह कहां होगा, कैसा होगा, अब तक तय नहीं कर पाए. अलबत्ता इंगलैंड में प्रकाशित एक दस्तावेज में खालिस्तान का ब्योरे सहित मानचित्र अवश्य है. इस मानचित्र के अनुसार खालिस्तान में जम्मू, समूचा हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, दिल्ली, उत्तर प्रदेश, राजस्थान और सौराष्ट्र के भी कुछ भाग शामिल होंगे ताकि इसे समुद्र भी मिल सके.

मोटे अनुमान के अनुसार इस भूभाग में सिखों की कुल जनसंख्या वहां की कुल आबादी का 13% होगी. इस नक्शे में जहां एक और हाशिया डाल कर संकल्प को 'धरती पर एक स्वर्ग' बताया गया है वहीं पर इस में 10 लोगों के हस्ताक्षर भी हैं जिस में सब से ऊपर किसी जसवंत सिंह ठेकेदार के हस्ताक्षर हैं जिस ने स्वयं को खालिस्तान सरकार का रक्षा मंत्री बताया है.

विदेशों में या घर में बैठ कर कोई कैसे भी अलग देश की कल्पना करे, पर व्यावहारिक तौर पर कोई भी सरकार ऐसे किसी भी मानचित्र या प्रस्ताव का अनुमोदन नहीं कर सकती जिस से देश टूटता हो या उस के टूटने का खतरा हो.

दुनिया जानती है कि दक्षिण साइप्रस के तुर्क मुसलमानों ने अनगिनत बरसों से साइप्रस को तोड़ कर उस के एक हिस्से पर अपना राज कायम कर रखा है लेकिन विश्व के किसी भी देश ने साइप्रस के बंटवारे को मान्यता नहीं दी और समस्या का समाधान आज तक खोजा जा रहा है. इसी तरह श्रीलंका के तमिल टाइगरों ने महीनों तक जाफना पर राज किया, खोया और फिर राज किया लेकिन श्रीलंका बंटा नहीं है. इन उदाहरणों को देखते हुए एक सार्वभौमिक खालिस्तान बनना तो काफी दूर की बात है.

शिरोमणि अकाली दल द्वारा केंद्र सरकार से बातचीत करने के लिए अधिकृत किए गए सिमरनजीत सिंह मान विभिन्न खाड़कू संगठनों को बातचीत की मेज तक लाने में सफल होंगे या नहीं, यह तो वही जानें लेकिन पंजाब में दिनोंदिन बढ़ती बेचैनी से अवगत हुई सरकार यह जानती है कि पंजाब को ज्यादा समय तक उस की राजनीतिक प्रक्रिया से दूर रखना उचित नहीं है. संभवतः इसी लिए चंद्रशेखर ने खाड़कुओं के साथ बातचीत का दरवाजा खोलने की पहल भी की थी.

पंजाब समस्या के जानकारों का कहना है कि यहां की राजनीतिक गुत्थी किसी जुमलेबाजी या बातचीत की दिखावटी अपीलों के और बैठकों से हल होने वाली नहीं है क्योंकि पंजाब के बारे में किसी के पास कोई ऐसा जादुई फारमूला नहीं है जो सभी पक्षों को संतुष्ट कर सके और न ही कोई योजना पुरानी योजनाओं मसलन, औचित्य-पूर्ण पुलिस काररवाई, बेहतर सुरक्षा व्यवस्था और आर्थिक रिआयतें आदि से बहुत अलग हो सकती है.

पंजाब समस्या का हल यदि संभव है तो केवल राजनीतिक माध्यमों से और इस में भी यह उग्रवादियों पर निर्भर करता है कि वे कहां तक खालिस्तान, आत्मनिर्णय का अधिकार और संयुक्त राष्ट्र संघ की निगरानी में चुनाव कराने की मांग को छोड़ कर किसी बेहतर राजनीतिक फैसले के लिए तैयार हो पाते हैं.

फिलहाल तो इस प्रांत का यह यक्षप्रश्न भी कि क्या उग्रवादियों के बंधक बने पंजाब में शांति और खुशहाली का साम्राज्य बहाल हो पाएगा, यहां के राजनीतिबाजों और केंद्र सरकार के ढुलमुल इरादों के बीच अनिर्णीत तरीके से लटका ही दिखाई देता है. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेख • बद्रीदेव गुप्त

वाहनों के संख्याकरण में वृद्धि होने के साथसाथ वायु के प्रदूषण में भी वृद्धि हो रही है. यह प्रदूषण भारत के लिए ही नहीं, संसार के सभी देशों के लिए चुनौती बन चुका है.

सन 1980 के आंकड़ों के अनुसार संसार के विभिन्न भागों में कोयला, पेट्रोल, डीजल तथा अन्य प्राकृतिक गैसों के जलने से प्रतिवर्ष लगभग 2010 करोड़ टन कार्बन-डाईआक्साइड वायुमंडल में पहुंच जाती है. इस के अतिरिक्त, दूसरी हानिकारक गैसें, जैसे सल्फरडाईआक्साइड तथा अनेक प्रकार के नाइट्रेट भी वायुमंडल को दूषित करते हैं. हर वर्ष इन की मात्रा में वृद्धि हो रही है. कार्बनडाईआक्साइड की मात्रा प्रतिवर्ष 4.3 प्रतिशत के हिसाब से बढ़ रही है. अतः 21 वीं सदी तक पहुंचतेपहुंचते इस मात्रा के 5100 करोड़ टन तक पहुंच जाने का अनुमान है.

दिल्ली राज्य भी इस व्याधि से अछूता नहीं है. इस क्षेत्र की लगभग 55,000 औद्योगिक इकाइयां, 261 रेलगाड़ियां, लगभग साढ़े 8 लाख यांत्रिक सड़क वाहन (कार, स्कूटर, मोटरसाइकिल, तिपहिया स्कूटर, ट्रक तथा बस आदि), ताप बिजलीघर तथा 80 लाख की आबादी

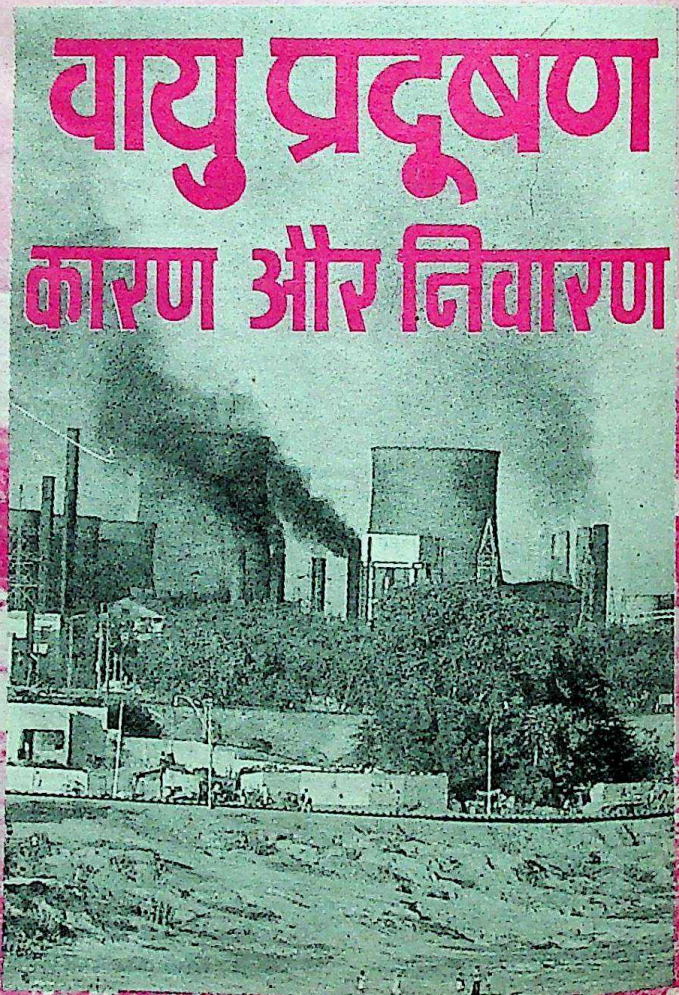

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाहनों की वजह से होने वाले वायु प्रदूषण को नियंत्रित करने के लिए जरूरी है कि सड़कों के किनारे अधिकाधिक वृक्ष लगाए जाएं.

प्रतिदिन लगभग पांचछः हजार टन कार्बन वायुमंडल में झोंक देती है. इस के अतिरिक्त, सल्फरडाइआक्साइड तथा लैड जैसी खतरनाक गैसें भी वायुमंडल में पहुंचती रहती हैं.

मनुष्य तथा दूसरे जीवधारियों के शरीर की बनावट शुद्ध वायु में मिश्रित गैसों के अनुपात के आधार पर बनी है. अनुपात में नाइट्रोजन 78%, आक्सीजन 21% तथा अन्य गैसें जैसे कार्बनडाइआक्साइड, सल्फर-डाईआक्साइड, ओजोन, नियोन, क्रिपटन आदि 1% होती हैं. इस अनुपात में परिवर्तन आने पर हानिकारक गैसें अधिक मात्रा में शरीर में पहुंचती हैं और शरीर को हानि पहुंचाती हैं. कार्बनडाईआक्साइड की मात्रा अधिक होने पर सांस लेने में दिक्कत होने लगती है, धीरेधीरे सिर घूमना, कानों में आवाज होना, उनींदी तथा बेहोशी आना जैसी शिकायतें पैदा हो जाती हैं. अधिक समय तक ध्यान न देने पर इन से मृत्यु भी हो सकती है.

अतः आवश्यक है कि इस खतरनाक स्थिति से बचने के उपाय किए जाएं. इस के लिए अनेक योजनाएं बनी हैं, पर किसी न किसी कारण उन के कार्यान्वित होने में कठिनाइयां आ रही हैं. भूमिगत रेल की योजना धन के अभाव के कारण खटाई में पड़ी है. सड़क वाहनों में पेट्रोल तथा डीजल के स्थान पर बैटरी के प्रयोग की योजना भी अभी आगे नहीं बढ़ पाई है. ट्राम चालू करने

वायु प्रदूषण का निरंतर विस्तार न केवल मानव जाति के लिए अपितु संपूर्ण जीवजगत के लिए भी संहारक है. इस के लिए आवश्यक है कि वृक्षारोपण की प्रक्रिया को तीव्र किया जाए और वायु प्रदूषण में सहायक तत्त्वों को दूर करने हेतु गंभीरतापूर्वक विभिन्न खोजें की जाएं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की योजना को सातमात के अधिक तथा सड़कों के कम चौड़ा होने के कारण कार्यान्वित करना कठिन है. फिर भी, वृक्षारोपण द्वारा काफी हद तक वायुमंडल को शुद्ध करने में सफलता मिल सकती है.

वृक्षों का हरा भाग (क्लोरोफिल) वायुमंडल से कार्बनडाईआक्साइड सोख कर उसे, सूरज की रोशनी में, पेड़ों के भोजन के रूप में परिवर्तित कर देता है. इस के स्थान पर शुद्ध आक्सीजन पेड़ों से निकल कर वायुमंडल में पहुंच जाती है. अनुमान है कि इस क्रिया के अंतर्गत पेड़ के हरे भाग का एक वर्ग मीटर क्षेत्र एक घंटे में लगभग 4.75 से 5 ग्राम तक कार्बन का प्रयोग कर लेता है.

पेड़पौधे वायुमंडल से दूसरी खतरनाक गैसों, धूल के कणों तथा धुएं आदि को भी अलग करते हैं. धुआं तथा धूल के कण पत्तियों आदि पर चिपक जाते हैं जो बाद में वर्षा के पानी के साथ घुल कर भूमि पर गिर जाते हैं.

घनी कतारों में लगे पेड़ व झाड़ियां ध्वनि प्रदूषण को भी कम करते हैं. इन के कारण ध्वनि की तीव्रता में 8-10 डैसीबल तक कमी हो जाती है, अतः अधिक शोरगुल वाले मार्गों तथा रिहायशी कालोनियों, हस्पतालों तथा स्कूल आदि के बीच में पेड़ों की घनी दीवार बना कर उन में रहने वालों को काफी हद तक ध्वनि प्रदूषण से बचाया जा सकता है.

दिल्ली महानगर की वर्तमान अवस्था में वायु प्रदूषण पर नियंत्रण करने के लिए पूर्ण विकसित तीनचार करोड़ पेड़ अथवा 15-20 करोड़ झाड़ियों का होना आवश्यक है. दोनों को साथसाथ लगाने पर भी डेढ़दो करोड़ पेड़ तथा 8-10 करोड़ झाड़ियों की आवश्यकता होगी. पेड़ तथा झाड़ियों को साथसाथ लगाने पर उन की कार्यक्षमता में वृद्धि हो जाती है क्योंकि पेड़ वायु की ऊपरी सतह से तथा झाड़ियां उस की निचली सतह से हानिकारक गैसों को सोख लेती हैं.

यमुना नदी दिल्ली क्षेत्र में वजीराबाद से ओखला तथा तुगलकाबाद के किले तक एक विशाल क्षेत्र घेरे हुए है. इस के किनारों पर लगभग तीन हजार हेक्टेयर क्षेत्र विकास के लिए उपलब्ध है. इस में से नदी के दाएं किनारे पर निगमबोध घाट के आसपास तथा ओखला के कुछ भागों पर वृक्षारोपण किया गया है.

नदी के किनारे पर जहांजहां भी स्थान उपलब्ध है, वृक्षारोपण कर के उस की सुंदरता में निखार लाना आवश्यक है. यदि जंगल के रूप में वृक्षारोपण किया जाए तो इस क्षेत्र में भी लगभग एक करोड़ पेड़ तथा झाड़ियां लगाई जा सकती हैं. उस स्थिति में इस क्षेत्र में मकान आदि बनाने की प्रक्रिया को रोकना होगा.

वृक्ष जहां एक ओर वायु प्रदूषण रोकने में सहायक होते हैं, वहीं दूसरी ओर ये वायुमंडल के ताप को भी कम करते हैं. साधारण आकार की लगभग दो लाख पत्तियां 24 घंटे में अनुमानतः 54 से 64 लीटर तक पानी भाप के रूप में वायुमंडल में डाल देती हैं. अतः जितने अधिक पेड़पौधे होंगे उतनी ही अधिक उन के आसपास के वातावरण में ठंडक होगी.

यमुना नदी के आसपास सेलेक्स, कैसोरीना, इक्योस्टीफोलिया, केवड़ा, केला, बांस, लेजिस्ट्रोमिया, फलोसरिजेनी, पेलटोफोरम, फैरूगेनम आदि के पेड़ लगाए जा सकते हैं. इन के अतिरिक्त पीपल, जमोवा, पापड़ी तथा अर्जुन आदि के पेड़ भी ठीक रहते हैं. राज्य के दूसरे भागों में नीम, पीपल, पिलावन, कीकर, अर्जुन, शीशम, ग्रिवेलिया रोवस्टा, अमलतास, कचनार, क्रिटेविया रिलिज्योसा, जैकरेंडा, टिकोमा, कीकर पापड़ी, झाड़, लेजिस्ट्रोमिया इंडिका, सेमल, चांदनी, जैझेफा वोगनविलिया, प्लूमेरिया एलवा, पुटरजीवा रोक्सर्बजाई, एलेस्टोनिया, स्कोलेरिस, ढाक, गुलमोहर, सिरस, महुआ, उल्लू, बरगद, बेर, किजेलिया, पिन्नाटा, झरबेरी, अमरूद, खट्टा, गढ़हल, डेला, कनेर, जर्द कनेर, रात की रानी, पारकिंसोनिया आदि लगाए जा सकते हैं.

अरिता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठकों की समस्याएं

मैं एक प्रतिष्ठित परिवार का लड़का हूं और इंटर में पढ़ता हूं. कुछ महीनों से मेरा एक तवायफ से संबंध चल रहा है. हालत यह है कि मैं उस के बिना रह नहीं सकता, क्या मैं उस से विवाह कर सकता हूं? क्या इसे समाज स्वीकार कर लेगा?

इस छोटी सी उम्र में जब आप को पढ़लिख कर अपना भविष्य बनाना है, एक ऐसे धंधे में फंस गए हैं जो सर्वथा अनुचित है. आप उम्र के इस नाजुक मोड़ पर हैं जहां विपरीत लिंग का आकर्षण सिर चढ़ कर बोलता है. यही सब आप के साथ हो रहा है. आप भूल कर भी कभी उस तवायफ की ओर रुख न करें और न ही उस से भावनात्मक संबंध जोड़ें. वह महज पैसों के लिए आप से यह संबंध रख रही है. यह उस के पेशे का एक हिस्सा है. वैसे वेश्या उद्धार की दृष्टि से तवायफ से विवाह हो सकता है. किंतु इस के साथ ही बहुत सारी परेशानियों का सामना भी करना पड़ सकता है. फिलहाल आप उस को भूल कर पढ़ाई की ओर ध्यान दें. इसी में आप का भला है.

मैं एक विवाहित युवक हूं. एक वर्ष पूर्व जिस लड़की से विवाह हुआ था उस की ओर से मन कुंठित होता जा रहा है. वह मुझे प्रेम संतुष्टि नहीं दे पाती, इस कारण मन भी विचलित सा हो रहा है. वह गर्भवती है इसलिए मैं उस से सेवाभाव की उम्मीद तो नहीं रखता फिर भी मायके में जा कर बात न करना, पत्र न डालना... किस ओर इशारा करते हैं? जिस को मैं जीजान से चाहता हूं, उस से विश्वास डगमगाने लगा है, क्या करूं?

दरअसल शादी के शुरू के दिनों में गर्भ से पूर्व पतिपत्नी के अंतरंग संबध कुछ ज्यादा ही गहरे होते हैं, जो पत्नी के गर्भधारण के पश्चात जाहिर है कम हो जाते हैं. कभीकभी इस से पति कुंठित हो जाता है. आप के मामले में विश्वास डगमगाने वाली बात एकदम बेमानी है. गर्भधारण के कारण आप की पत्नी का ध्यान आने वाले बच्चे की ओर केंद्रित हो गया है और फिर शारीरिक रूप से भी वह कमजोर हो गई होगी. इन दिनों यों भी मन चिड़चिड़ा हो जाता है, जी खराब रहता है. आप इसे बेरुखी न समझ कर सहज रहें. उलटा आप की पत्नी इन दिनों आप से अधिक स्नेह की अपेक्षा रखती होगी. आप अपने स्नेहपूर्ण व्यवहार से उसे प्रसन्न रखें ताकि गर्भस्थ शिशु पूर्ण स्वस्थ रहे.

मैं 19 वर्षीय युवक हूं. मुझे रात को अश्लील स्वप्न आते हैं, जिस से सारे दिन परेशान रहता हूं. इस से पैदा होने वाली स्वास्थ्य समस्याओं से डरता हूं, क्या करूं?

पहले तो यह समझ लीजिए कि अश्लील स्वप्नों का स्वास्थ्य से कोई लेनादेना नहीं है. आप शायद अश्लील साहित्य पढ़ते होंगे, वैसा सोचते होंगे तभी ऐसे स्वप्न दीख जाते हैं. अच्छा साहित्य पढ़ने की आदत डालें और रात को सोते समय पैर धो कर लेटें और अच्छी बातें ही सोचें. सब ठीक हो जाएगा.

मैं एक विवाहित पुरुष एवं 13 एवं 11 वर्ष के दो बच्चों का पिता हूं. करीब 5 वर्ष पूर्व मेरी पत्नी अपनी बूआ के घर उन की तबीयत खराब होने की वजह से गई थी, वहां से वापस आने पर उसे ने मुझे बताया कि उस के फूफा ने उस के साथ बलात्कार किया था. मेरे बारबार पूछने पर अब वह कहती है कि सहवास की बात गलत है. उन्होंने उसे केवल छेड़ा था. मेरा दिल कहता है कि उन के शारीरिक संबंध हुए होंगे. मैं दिनरात इसी उलझन में रहता हूं कि वह सही बोल रही है या गलत. अब यह सोचसोच कर पागल हो रहा हूं कि वह किसी और के साथ तो गलत संबंध नहीं कर लेगी. क्या करूं?

आप की पत्नी के साथ यदि कोई ऐसा हादसा हो भी गया तो मान कर चलिए ऐसा अब कभी नहीं होगा. आप की पत्नी एक सरल स्वभाव की महिला है, जिस ने अपने फूफा की छेड़छाड़ का आप से जिक्र कर दिया. दरअसल कभी परिस्थितिवश उन्होंने छेड़ दिया होगा. आप की पत्नी ने आप को यह बता कर अपने मन को हलका करने का प्रयत्न किया होगा. स्वयं सोचिए, यदि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह खराब होती तो क्या आप से इस बात को न छिपा लेती. आप को कभी भनक तक न लगने देती. इसलिए पत्नी को निर्दोष व निश्छल समझें और दापंत्य जीवन में व्यर्थ के टकराव से गृहस्थी को बचाए रखें.

मैं 19 वर्षीया नवविवाहिता गर्भवती हूं. मेरा विवाह ऐसी दूर जगह कर दिया गया जो नितांत छोटी जगह है. यहां बहुओं को ले कर अनेक कुरीतियां प्रचलित हैं. यहां केवल सास और मैं दो जने ही रहते हैं. पति व देवर अन्य शहर में हैं. सास यहां से जाना नहीं चाहती. पति हांहां कर वापस लौट जाते हैं. हर समय तनाव में रहती हूं, क्या करूं?

आप का यों पति से दूर रहना इस अवस्था में आप के लिए तनाव उत्पन्न कर सकता है. आप की सास को आप के पति के पास चले जाना चाहिए. पर चूंकि वह नहीं मान रहीं हैं तो आप समझाबुझा कर पति को तैयार कर लीजिए. वह मां को डाक्टरी सुखसुविधाओं से अवगत कराएंगे तो वह चल पड़ेंगी. कई बार बड़ी उम्र की महिलाएं मोहवश अपनी जगह को छोड़ना नहीं चाहतीं. आप किसी मध्यस्थ से कह कर भी सास को राजी करवा सकती हैं. अपनी सेवा से भी सास को प्रसन्न करने की कोशिश कीजिए.

मैं एक विवाहिता हूं. ससुराल वाले, विशेष रूप से पति मुझ से दुर्व्यवहार करते हैं. यहां तक कि वह मुझे जान से मार डालने की धमकी भी महज दहेज की वजह से दे रहे हैं. मैं उन से तलाक लेना चाहती हूं, क्या करूं?

समस्या दहेज की है या आप स्वयं तलाक लेना चाह रही हैं? कोई भी परिवार जो अरमानों के साथ बहू को लाए, सिर्फ दहेज के लिए मारपीट कर पत्नी को परेशान नहीं करना चाहेगा. परेशान पत्नी पति के किस काम की. लगता है आप अन्य किसी कारण से पति व उस घर से रुष्ट हैं. उस के कारण को समझिए, कम दहेज की तानाकशी के चक्कर में न आएं. किसी पुलिस और वकील से सलाह कर तलाक मिलने में आसानी हो जाएगी पर भविष्य बिगड़ जाएगा, पूरा जीवन रोतेरोते बीतेगा.

मैं एक 16 वर्षीया 12वीं कक्षा की छात्रा हूं. हमारे ही ब्लाक में रहने वाला एक लड़का मुझे बहुत घूरता रहता है. अभी कुछ दिन पूर्व मैं कालिज जा रही थी तो रास्ते में उस ने मुझे पत्र दिया, उस में कुछ लिखा था. मुझे बहुत डर लग रहा है. वह उस का जवाब मांगता रहता है. क्या करूं? मुझे अपने पिता और भाई से डर लगता है, वे बहुत कठोर व कट्टर हैं. उन्हें पता चल गया तो क्या होगा? मेरे बोर्ड के इम्तिहान हैं पर पढ़ने में मन नहीं लग रहा, मैं भी हृदय से उसे चाहती हूं, वह हमारी जात का नहीं है. मुझे पढ़ाई में मन लगाने को न कहिए, वह मैं कर के देख चुकी हूं, कुछ और बताएं मेहरबानी से.

आप अगर यह समझ लें कि इन सब बातों का परिणाम कितना घातक हो सकता है तो आप को अक्ल आ जाएगी. आप को उसे पत्र लिखना आप को बहुत सारी मुशकिलों में डाल सकता है. वह इन पत्रों के जरिए आप को ब्लैकमेल तक कर सकता है, जो शादी के बाद आप के जीवन में विष घोल देंगे. चूंकि आप को उस से लगाव महसूस हुआ तो आप की मूक सहमति को समझ कर उस ने पत्र लिखने का साहस किया. अब आप उसे पत्र लिखने का दुस्साहस न कर के पढ़ाई में ही स्वयं को व्यस्त करें वरना याद रखिए, आप की जरा सी नादानी आप के भविष्य को चौपट कर देगी.

मैं 25 वर्षीया विवाहिता और दो बच्चों की मां हूं, स्तन काफी बड़े हैं जिन के कारण मेरे पति आरोप लगाते हैं कि इन्हें शादी से पूर्व कई लोगों ने छुआ होगा, तभी वे बड़े हो कर लटक से गए हैं. क्या करूं, बहुत दुखी हूं?

आप के पति बेबुनियाद बात पर आप से झगड़ा कर रहे हैं. स्तनों के आकार का छूने से कोई संबंध नहीं है. यह शारीरिक बनावट पर निर्भर करता है. और दो बच्चे हो जाने के बाद स्तनों का लटक जाना स्वाभाविक है. आप के पति व्यर्थ के अंधविश्वासों के कारण अपना वैवाहिक जीवन दूभर बना रहे हैं. आप उन्हें किसी बहाने किसी स्त्री रोग विशेषज्ञा के पास ले जाएं और उन के सामने इस बात की चर्चा कर दें. वही सही सलाह दे सकेगी.

—कंचन ●

पाठकों की व्यक्तिगत, मनोवैज्ञानिक, पारिवारिक, कानूनी आदि समस्याओं के उत्तर इस स्तंभ में दिए जाते हैं. स्वास्थ्य संबंधी उत्तर देना संभव नहीं है. पत्र द्वारा उत्तर नहीं दिए जा सकते. अपनी समस्याएं इस पते पर भेजें : कंचन, सरिता झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-55.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डोली है सजाई

शर्म से सिमटी
लाल जोड़े में लिपटी
भाल पर तिलक
हाथों में कंगना
छोड़ कर जा रही
बाबुल का अंगना.

घर के हर कोने में
तुम्हारी उन्मुक्त हंसी
मधुरिम सी मुसकान
और यादें चिरपरिचित सीं.

धीरेधीरे सब
सहज हो जाएंगे,
बचपन की सखी को
कैसे भुला पाएंगे?

मिलन और बिछोह की
अनुपम घड़ी आई
सजना ने द्वार पर
डोली है सजाई.

बन कर दुलहन तुम
पिया घर जाना
मधुर शोख हंसी से
उस अंगना को सजाना.

अतुल सुख वैभव तुम्हारे
बन जाएंगे पर्याय,
जाओ—तुम! शुरू करो
नव जीवन का अध्याय.

—ऋचा त्यागी

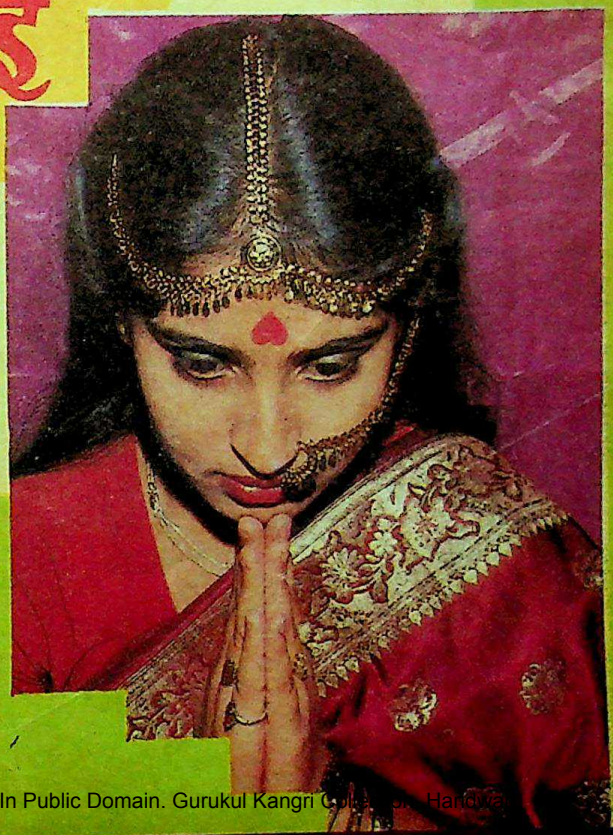

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिस्तर गोल

कहानी ● डा. विष्णु विराट

सुरभि कह रही थी, "अम्मां, सरकार बदलेगी तो हमें बंगला खाली करना पड़ेगा?"

"हां, तुम्हारे पिता कह रहे हैं कि बस कुछ दिनों में ही सरकार गिर जाएगी. क्या करें बिटिया, न जाने किस 'पुण्यफल' से तो यह 'राजयोग' आया था, फिर लखपती से खाकपती हो जाएंगे."

"अम्मां, ऐसा करते हैं, पिताजी को जो तोहफे मिले हैं न, उन्हें अभी से बंधवा कर नानी के यहां रखवा देते हैं, बाद में ले लेंगे." सुरभि ने फिर अपनी बात समझाई.

कपिला बोली, "यह 'डाईटिंग सेट' भी तो अपना है न?"

नादिया ने कहा, "नहीं, सरकारी है. पिताजी ने मंत्रालय के स्टोर से मंगवाया है."

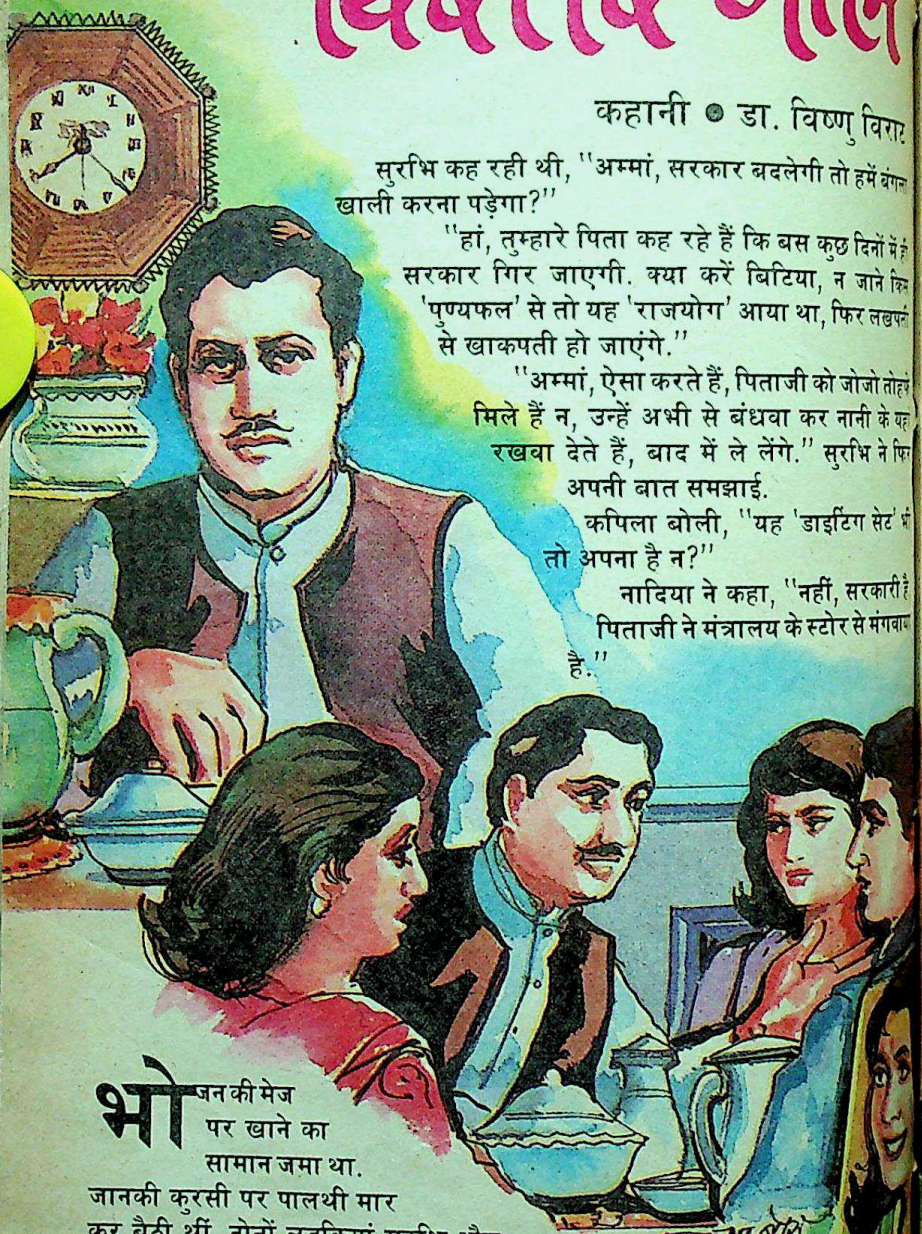

भोजन की मेज पर खाने का सामान जमा था. जानकी कुरसी पर पालथी मार कर बैठी थीं. दोनों लड़कियां सुरभि और कपिला सामने बैठी थीं तथा लड़का नादिया करीब ही खड़ा था. सभी धनंजयजी का खाने पर इंतजार कर रहे थे. वह स्नानघर में हाथमुंह धो रहे थे.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रही है. बात चल रही है, कुछ समझौता भी तो हो सकता है. जो सामान हम ले कर आए हैं वह तो कभी भी ले जा सकते हैं.''

''अच्छा पिताजी, आप ने कहा था कि तुम्हें जो भी चीज चाहिए, 557 नंबर पर आर्डर दे दो तो वह चीज आ जाएगी.''

''हां, हमारा विभागीय स्टोर है... जो चाहो, मंगा लेना.''

''लेकिन वहां विदेशी इत्र नहीं है, भारतीय हैं, तीसरे दर्जे के...''

''ठीक है, मैं आज ही सचिव को कह दूंगा. जहां भी यह इत्र होगा, तुम को मिल जाएगा. अच्छा अब खाने में ध्यान लगाओ. अपना रसोइया बड़ा अनुभवी है. पांच सितारा होटल में तीन साल तक मुख्य रसोइया रहा है. हर देश का खाना बनाना जानता है.''

''लेकिन मुए को उड़द की छिलकों की दाल बनानी नहीं आती. बाजरे के परांठे तो उस से बेले ही नहीं जाते. कल मैं ने उसे परांठे बना कर खिलाए. आज मूंग की दाल की खिचड़ी मैं ने ही बनाई है. छपे हुए कार्ड से 'मीनू' पास करने को कहता है. अब रोज की रसोई का कोई मीनू होता है?''

तभी बैरा अंदर आया. उस ने बतलाया कि प्रधान मंत्री का फोन है. धनंजयजी बिना हाथ धोए उठ खड़े हुए और उसी कमरे में रखा फोन सुनने लगे.

धीरेधीरे उन के चेहरे का रंग उतर रहा था. चेहरा पसीनापसीना हो रहा था. बात समाप्त कर के बच्चों के पास आए. एक गिलास पानी पिया. किसी की भी कुछ पूछने की हिम्मत नहीं हुई. फिर एकाएक उठे. हाथ धोए, कुल्ला किया. कुरते के ऊपर शाल डाला, टोपी पहनी और बंगले से निकल गए.

''सरकार टूट गई लगती है.'' एकाएक जानकी ने मौन तोड़ा.

''अम्मां, अब वक्त मत गंवाओ. अपना बिस्तर गोल ही समझो. चलो उठो, रामदुलारे और पार्वती को बुला कर अच्छा सामान बंधवा लो.'' सुरभि बोली.

चारों प्राणी धीरेधीरे उठे, हाथमुंह धो कर बैठक में आ गए.

''अच्छा सुरभि, बताओ तो क्याक्या बंधवा लें?'' मां ने पूछा.

''ये तीनों बड़ेबड़े गलीचे ले लो. यह लाल वाला गलीचा तो एक उद्योगपति ने भेंट दिया था.''

तभी कपिला बोली, ''यह बड़ा वाला झाड़फानूस भी ले चलो. हजारों रुपए का है. बंगलोर से भेंट में मिला था.''

फिर घड़ी, तिपाई, शोकेस, कपाट सभी कुछ समेटा जाने लगा.

नादिया ने 557 नंबर पर फोन किया, ''हैलो, जरा कुछ जरूरी चीजें नोट कर लो.''

उस ने अम्मां की बताई चीजों की सूची पूरी पढ़ कर सुना दी.

इस में तीन डब्बे मूंगफली का तेल, दो कनस्तर शुद्ध हाथरस का घी, पांच दर्जन साबुन, एक दर्जन पाउडर के डब्बे, आधा दर्जन क्रीम और इसी तरह टूथ पेस्ट, तेल, नेलपालिश, इत्र आदि के ढेर सारे बंडल मंगवाए गए थे.

''ठीक है साहब, अभी भेज देता हूं.''

रात के लगभग 11 बजे धनंजयजी लौट कर आए. बंगले में घुसे तो देख कर दंग रह गए कि बच्चों ने सब कुछ बंधवा दिया था.

सामने पत्नी मंदमंद मुसकरा रही थीं.

''यह सब क्या गड़बड़ है?'' वह रोष भरे स्वर में बोले.

''आप तो उम्र भर झक ही मारते रहेंगे.

''अब आप की सरकार जा रही है तो हम भी कुछ भविष्य की सोचें या नहीं? मुख्यमुख्य सामान बंधवा लिया है. आप ऐसा करना, पांचछः ट्रक मंगवा लेना, सारा सामान बरेली भेज दूंगी अपनी बहन अलबेली के यहां, फिर बाद में ले लेंगे.''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

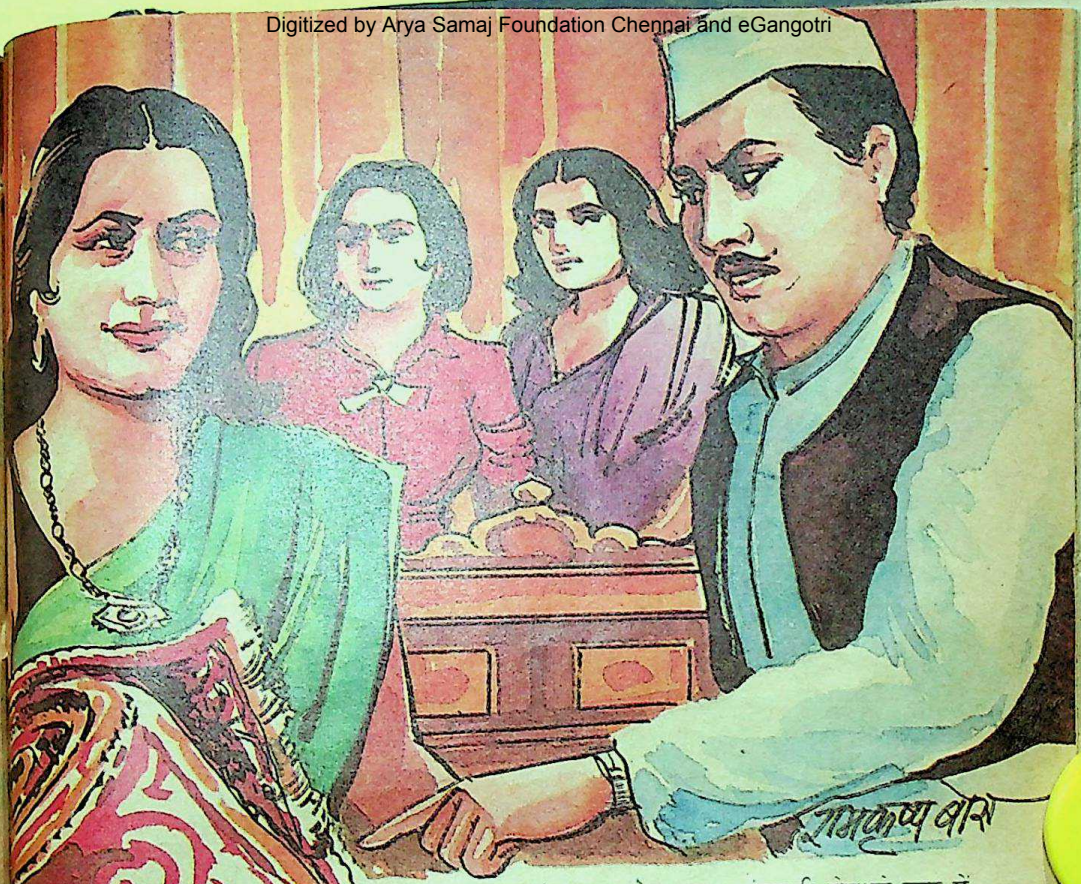

सारा सामान बंधा हुआ देख कर धनंजयजी रोषभरे स्वर में बोले, "यह सब क्या गड़बड़ है?"

"तुम्हारा दिमाग तो नहीं चल गया कहीं? विरोधी पक्ष ने मुझ पर भ्रष्टाचार के आरोप लगाए हैं. पिछले महीने का टेलीफोन का साढ़े तीन लाख का बिल संसद में पेश किया जा रहा है. सी.बी.आई. द्वारा जांच होने जा रही है और तुम इतना सारा सामान अपनी बहन के घर पहुंचा कर मेरा मुंह काला करना चाहती हो?"

"कोई कुछ नहीं कहेगा. जब सरकार गिरती है तो किसी का कुछ नहीं बिगड़ता. खाली प्रधान मंत्री के नाम का हल्ला मचता है. अब मैं ने तो सामान बांध लिया है. आज ही रात बरेली भेज दूंगी."

"उस चोर रघुवरदयाल के यहां, जो पहले ही हमारी तीन लाख की दलाली खा चुका है. उसे तो मैं जेल में डलवा कर ही मानूंगा."

"अरे जाओ, रहने दो. जेल में डलवाओ अपने भाई रामेश्वर को, जिस को 50 हजार खर्च कर के 12 लाख का ठेका दिलवाया. जेल में डलवाओ अपने भतीजे कृपाराम को, जो विदेश से आप के साथ तस्करी का माल लाया था. मेरे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तभी धनंजयजी आते दिखाई दिए. सब एकाएक मौन हो गए.

"क्यों भई, क्या गुफ्तगू हो रही थी आपस में... कुछ हमें भी बताएंगे?"

"पिताजी, यह सुरभि कह रही थी कि सरकार गिर जाएगी तो बंगला खाली करना पड़ेगा." कपिला बोली.

"हां, बिलकुल ठीक कह रही थी. भई, जो सरकार में मंत्री बनेगा, उसी को यह बंगला मिलेगा."

"अच्छा पिताजी, जो तोहफे या भेंट की अन्य चीजें आप को मिली हैं, क्या उन्हें भी सरकार ले लेगी?"

"नहीं तो, यह किस ने कहा? जिन लोगों ने व्यक्तिगत रूप से हमें तोहफे दिए हैं, वे तो हमारे हैं."

"यह भोजन की मेज और डाइनिंग सेट भी?"

"तुम तो पगली हो. यह फरनीचर तो बंगले का है. फिर कौन आज ही सरकार टूट

राजनीति में राजनीतिबाजों के बिस्तर गोल होते व खुलते ही रहते हैं. धनंजयजी की पार्टी की सरकार गिर जाने से फिर उन का बिस्तर गोल होने को था. लेकिन धनंजयजी जैसे राजनीतिबाजों के लिए चिंता की कोई बात नहीं, उन्हें मालूम है कि आज उन का बिस्तर यहां से गोल हो रहा है, कल दूसरी जगह खुल जाएगा. आखिर बिस्तर है तो गोल भी होगा और खुलेगा भी.

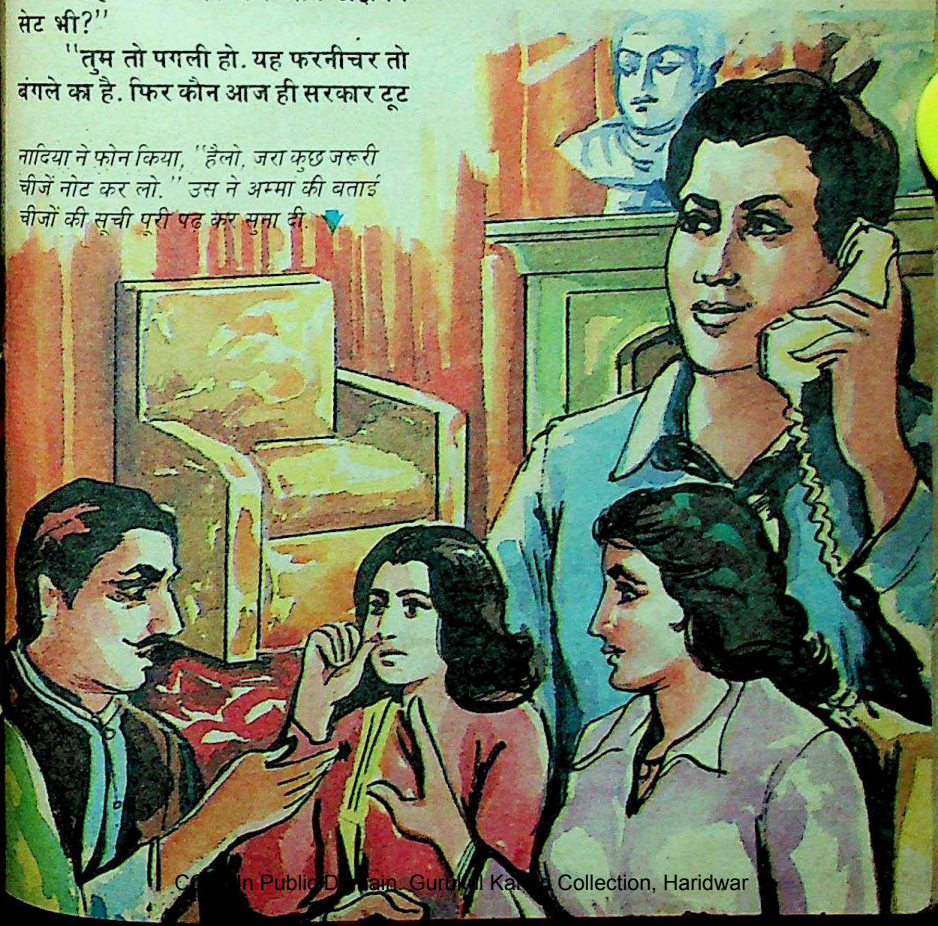

नादिया ने फोन किया, "हैलो, जरा कुछ जरूरी चीजें नोट कर लो." उस ने अम्मा की बताई चीजों की सूची पूरी पढ़ कर सुना दी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पीहर वालों का बड़ा आने ही कहें अपना लग जाती है. वैसे तुम कौन सत्यवादी हो? लाखों की रिश्वत खा रहे हो. गुजरात वाले उद्योगपति से क्या सांठगांठ है, सब जानती हूं. उधर कपड़ा मिल वालों की मेहरबानी का अर्थ भी जानती हूं. अपनी भाभी के लिए मारुति कार दिलवाई थी आप ने?"

"अरे, तुम चुप भी रहोगी कि नहीं. यहां दीवारों के भी कान होते हैं... 'भगवान' के लिए जरा शांत हो जाओ."

"लेकिन आप तो भगवान को भी नहीं मानते. अपने साथ वह अष्टधातु की नटराज की मूर्ति जरमनी ले गए थे न, लेकिन वापस नहीं लाए अपने भगवान को. आप ने भूतेश्वर महादेव का बगीचा खरीद कर बगीचे के मंदिर की सारी मूर्तियों को विदेश भेज दिया. अरे, आप का वश चले तो हमें भी बेच दो. आप व्यवस्था नहीं कर सकते तो मैं खुद ट्रक मंगवा लेती हूं. महाशक्ति ट्रांसपोर्ट वाले गिरिधर भाई अपने जानपहचान वाले हैं... उन से फोन पर कह देती हूं."

"कृपया, जानकी नहीं, जरा शांत हो कर बात करो. अरे कोई सरकार नहीं गिर रही. हां मेरा मंत्रालय अवश्य बदल रहा है, शायद कल मुझे कपड़ा मंत्री बना दिया जाएगा."

"वाह अम्मां, तब तो मजा आ जाएगा. बढ़ियाबढ़िया कपड़ों के ढेर लग जाएंगे अपने पास." सुरभि ने कहा.

तभी कपिला बोली, "आजकल साड़ियां कितनी महंगी हैं. दोढाई सौ बढ़िया साड़ियां ले लेंगी अम्मां के लिए."

"और मनोरमा बहन तथा नंदिनी के लिए भी नेटवर्क की साड़ियां ले लेंगे. लगभग तीन सौ साड़ियां ले लेंगे. फिर बुरे दिनों में काम आएंगी."

"तुम लोगों का दिमाग खराब तो नहीं है. अगर विरोध पक्ष वालों को मालूम पड़ गया तो लेने के देने पड़ जाएंगे. यह सब सोचसमझ कर किया जाता है. बापूजी का राज नहीं है कि दोढाई सौ साड़ियां ले लेंगे. एक बात तो यह समझ लो कि यदि यह बंगला खाली भी करना पड़ा तो दूसरा बंगला ऐसा ही टिपटाप मिलेगा. यहां आग लगा कर सब कुछ साफ करने की जरूरत नहीं है. वैसे भी कपड़ा मंत्रालय इस मंत्रालय से अधिक फायदेमंद साबित होगा... समझी कुछ?"

"खाक समझी, महीने, दो महीने में सरकार गिर सकती है. मंत्री बेचारे संतरी बन जाते हैं. ज्यादा समझदारी से काम लेने का उपदेश देना व्यर्थ है." जानकी देवी ने कुछ समझदारी का परिचय देते हुए कहा, "अच्छा, आप एक काम तो कर सकते हैं?"

"क्या?" पति ने पूछा.

"अपने वर्तमान मंत्री पद को एक सप्ताह के लिए रोक लो. 'क्लीन एंड क्लीन' कंपनी का 12 तारीख को वार्षिक समारोह है. उन्होंने बड़ा आग्रह किया है. दोढाई लाख का तोहफा मिलने की उम्मीद है."

"अरे, छोड़ो भी... वहां कपड़ा मंत्रालय में क्या झक मारेंगे. वहां भी कुछ मुरगे, कुछ बकरे खड़े होंगे हलाल होने के लिए. वहां भी घासचारे का अच्छा इंतजाम है."

"अच्छा, आज का वार्त्तालाप अब यहीं समाप्त करो. आगे की योजना कल बनेगी. इस सामान को कल सुबह खुलवा देना. इस से 10 गुना सामान कपड़ा मंत्रालय भेंट करने को तैयार बैठा है. चलो, अब सो जाओ."

सब अपनेअपने कमरों में चले गए. दूसरे दिन वे टीवी पर समाचार सुन रहे थे. ज्ञात होता है कि सरकार अल्पमत में आ गई है और प्रधान मंत्री ने अपनी सरकार का इस्तीफा दे दिया है.

"हाय, अब क्या होगा?" जानकी ने पूछा.

"होगा क्या, यह शून्यकाल है. इस काल में नेता लोग पिकनिक, धार्मिक यात्राओं, हनीमून और सैरसपाटे पर जाते हैं. फिर जब चुनाव होगा, हम ही आएंगे."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

CC-0. In Public

गृहशोभा

मई, 1991

पति पत्नी विशेषांक

संसार के हर रिश्ते से मधुर मगर उतना ही नाजुक रिश्ता होता है पति पत्नी का. परिवार में, समाज में जीवन की आपाधापी से कैसे चुराएं अपने लिए ये कुछ क्षण ताकि महकता रहे दांपत्य. आपसी तालमेल, सामंजस्य व चुहलबाजी, तनावों से बचने और छोटीछोटी बातों में खुशी खोजने के ढेरों सरल सुझावों के साथसाथ गंभीर लेख भी. यानी ऐसा सब कुछ जो आप अपनी अंतरंग सहेली से जानना चाहती हैं.

विशेष आकर्षण:

• चुप्पा पति • पति को राज की बातें बताएं • जब पति अपने को बूढ़ा समझने लगे • जब पति से पत्नी ज्यादा पढ़ीलिखी हो • पत्नी दूर कब भागती है • कभी तुम हीरो लगते हो • हनीमून सुखमय बनाएं • नापसंद पति को छोड़ा तो नहीं जा सकता • कैसे लड़ें पति पत्नी • अनचाहा गर्भ:पति कितना दोषी व अन्य लेख. इस के अलावा शिक्षाप्रद, ज्ञानवर्द्धक कहानियां, उपयोगी लेख, देशविदेश के सचित्र समाचार, स्वादिष्ट पकवान, नए फैशन और सभी स्थायी स्तंभ.

गृहशोभा युवा महिलाओं की चहेती पत्रिका

खरीदना न भूलें

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैदान में. आखिर राजनीति की इस नदी में हम ही तो मगरमच्छ हैं, जो आराम से रह सकते हैं.

"राजनीति में या सरकार में रहने वाले लोग हम से वैर नहीं पाल सकते. हम जल में रह कर भी प्यासे रहते हैं. हम 'ब्रह्म' हैं. देवी, हम सब जगह हैं और किसी जगह भी नहीं हैं."

"अच्छाअच्छा, हम सब जानते हैं, आप के कारनामे. आप गिरगिट की तरह रंग बदलते हैं. गिरती सरकार के नेता का हाथ झटक कर चढ़ती सरकार की गाड़ी में सवार हो जाते हैं. जनता की भावनाओं की आप को कुछ भी परवाह नहीं. कपड़ों की तरह आप दल बदलते हैं, जूतों की तरह आदर्श उतार फेंकते हैं."

"चुप, नादान औरत, ज्यादा बोर मत करो. हम बोर करने वाली हर चीज को बदल देते हैं. हमारी कहानी में रहस्य सदा बना रहता है. ज्यादा चूंचपड़ करोगी तो तुम्हें भी अपने दिलोदिमाग से उतार देंगे और विकल्प में कोई और अधिकारिणी स्त्री तुम्हारा पद संभाल लेगी."

सुन कर जानकी सन्नाटे में आ गई. वह अपने पति को अच्छी तरह जानती थी कि उन के लिए आदर्श एक मामूली रुमाल से ज्यादा महत्त्व नहीं रखते.

वह बोली, "हुजूर, आप नाराज क्यों होते हैं. सरकार आप की कीमत नहीं जानती, देश और देश की जनता आप की कीमत नहीं जानती, लेकिन मेरे सरकार, मैं तो आप को भीतर तक जानती हूं. मैं तो बस यही जानती हूं कि आज अपना बिस्तर यहां से गोल हो रहा है, कल कहीं दूसरी जगह खुल जाएगा."

"हां, अब आई न लाइन पर गाड़ी. चलो, बिस्तर गोल करने की तैयारी कर लो." •

मिलन की घड़ी

मिलन की सजन से आज घड़ी है
पांव में गौरी के दुनिया पड़ी है.

नयनन में रतियन की सियाही पा कर
बालों में फूलन का गजरा सजा कर
सजधज के यूं गौरी खड़ी है.

हवाओं में इत्र मिलाती हुई
खुशबू की निधि लुटाती हुई
ऐसे चली खुशबू की जैसे झड़ी है.

—प्रवीन 'नाकाम'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chen[illegible]otri

शक का जहर

कहानी ● मंजू बरतरिया

उस विशाल कोठी का बड़ा सा फाटक खोलते समय रीता के हाथों में तनिक भी कंपन नहीं हुआ. उसे याद था, इसी फाटक को जब वह बचपन में खोलती थी तो अजीब सी हीन भावना से ग्रसित हो जाती थी. किंतु आज उस के अंदर पूर्ण विश्वास जागृत था. वही भव्य कोठी अब उसे सन्नाटे में डूबी कितनी वीरान लग रही थी.

इसी कोठी में उस की बचपन की सखी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोमेश की अपाहिज मां के प्रति सुमिता की दया भावना उन के मन में शक का जहर बोने लगी. उन के द्वारा लगाए गए आक्षेप के जहरीले कांटों से क्षुब्ध हो कर सुमिता ने न केवल अपना जीवन दांव पर लगाया अपितु पूरे परिवार को दुख के सागर में डुबो दिया.

नमिता अपनी दो बड़ी बहनों सुमिता व अमिता के साथ रहती थी. भुवन नाम का एक भाई भी था. परंतु यह तो बीते समय की बात थी. उन की मां की ममता का कोई ओरछोर ही न मिलता, सभी में एक समान प्यार बांटतीं. वह बड़ी कट्टर पहाड़ी ब्राह्मण महिला थीं और अपनी आस्था की राह में कोई पत्थर स्वीकार न करतीं.

सुमिता दीदी की मित्रता रीता की दीदी रीमा से इस प्रकार थी कि वे एक जिस्म दो जान मानी जाती थीं. वे सब एक ही विद्यालय में एकसाथ जातीं. उस समय इसी कोठी में खुशियों की बरातें सजा करतीं व कोठी हर वक्त गुलजार रहती. इस तरह का सन्नाटा तो दूरदूर तक न था.

जब भी रीता यहां आती थी तो सदा ही उसे वहां शांति का बोध होता. यह शांति उन लोगों के मन के रास्ते से होते हुए पूरे घर में फैल कर रीता को भी अपने में समेट लेती. किंतु एक दिन यही शांति भंग हो गई. कुहराम मचा हुआ था और फर्श पर सुमिता के बाबूजी का पार्थिव शरीर रखा था. मां पछाड़ें खा रही थीं और सुमिता दीदी तो पत्थर की मूर्ति सदृश पथराई आंखों से बाबूजी के शव को बस निहारे जा रही थीं.

उन का देहावसान हृदय गति रुकने के कारण हुआ था. एक बूंद आंसू भी सुमिता दीदी की सूखी आंखों से न टपका. मां का हृदय विदारक क्रंदन और नमिता, अमिता का दारुण रुदन भी जैसे उन के कर्णपटल तक नहीं पहुंच रहा था. सभी उन को रुलाने का प्रयत्न भांतिभांति से कर रहे थे. किंतु जब अरथी उठी तो वही दबी हुई रुलाई एक चीख के साथ फूट पड़ी.

फिर कुछ ही माह के उपरांत सब कुछ पूर्ववत चलने लगा. बस भार उठाने वाला कंधा ही बदल गया था. अब यह भार सब से बड़ी होने के नाते सुमिता के कोमल कंधों पर आ गया था. अर्थोपार्जन के लिए कोठी का निचला हिस्सा किराए पर उठा कर वे लोग ऊपर के हिस्से में रहने लगे. समय सरकता रहा और किराएदार भी बदलते रहे. सुमिता उम्र की उस दहलीज को पार करने लगी, जहां पर बेटी पराए घर की हो जाती है.

एक दिन रीता ने कोठी का फाटक खोल कर प्रवेश किया तो सुमिता को लान में देखा. वह एक प्रौढा स्त्री को पहिएदार कुरसी पर बैठा कर लान में घुमा रही थी. रीता नमिता के पास जा पहुंची. नमिता ने ही बताया था कि वह प्रौढा स्त्री पैरों से लाचार है. उन के किराएदार सोमेश की मां है. दया की मूर्ति मानवता प्रेमी सुमिता दीदी ही उन लोगों के भी काम आ जाती थीं. किंतु यही भावुकतापूर्ण दया एक दिन उन्हें बंद गली के उस मोड़ पर ला खड़ा करेगी, जिस के आगे कोई मार्ग नहीं जाता, दीदी को भी यह कब मालूम था.

अकसर सोमेश की मां कहतीं कि उन्हें तो बस सेवा करने वाली सुमिता दीदी जैसी ही बहू चाहिए. सुन कर सुमिता लजा जातीं. वह उस परिवार में सदस्य की भांति ही घुलमिल गई थी. भुवन मेडिकल की प्रवेश परीक्षा में बैठा और चुन लिया गया. परंतु आर्थिक तंगी के कारण उसे डाक्टर बनने का सपना टूटता हुआ महसूस हो रहा था.

सुमिता ने भाई को आशा की किरण दिखाई व मेडिकल में दाखिला दिलवा दिया और स्वयं नौकरी के लिए आवेदन देने लगीं. शीघ्र ही उन्हें नौकरी मिल गई. किंतु घर चलाने व भुवन की पढ़ाई के लिए आय पर्याप्त न होने के कारण अतिरिक्त समय में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

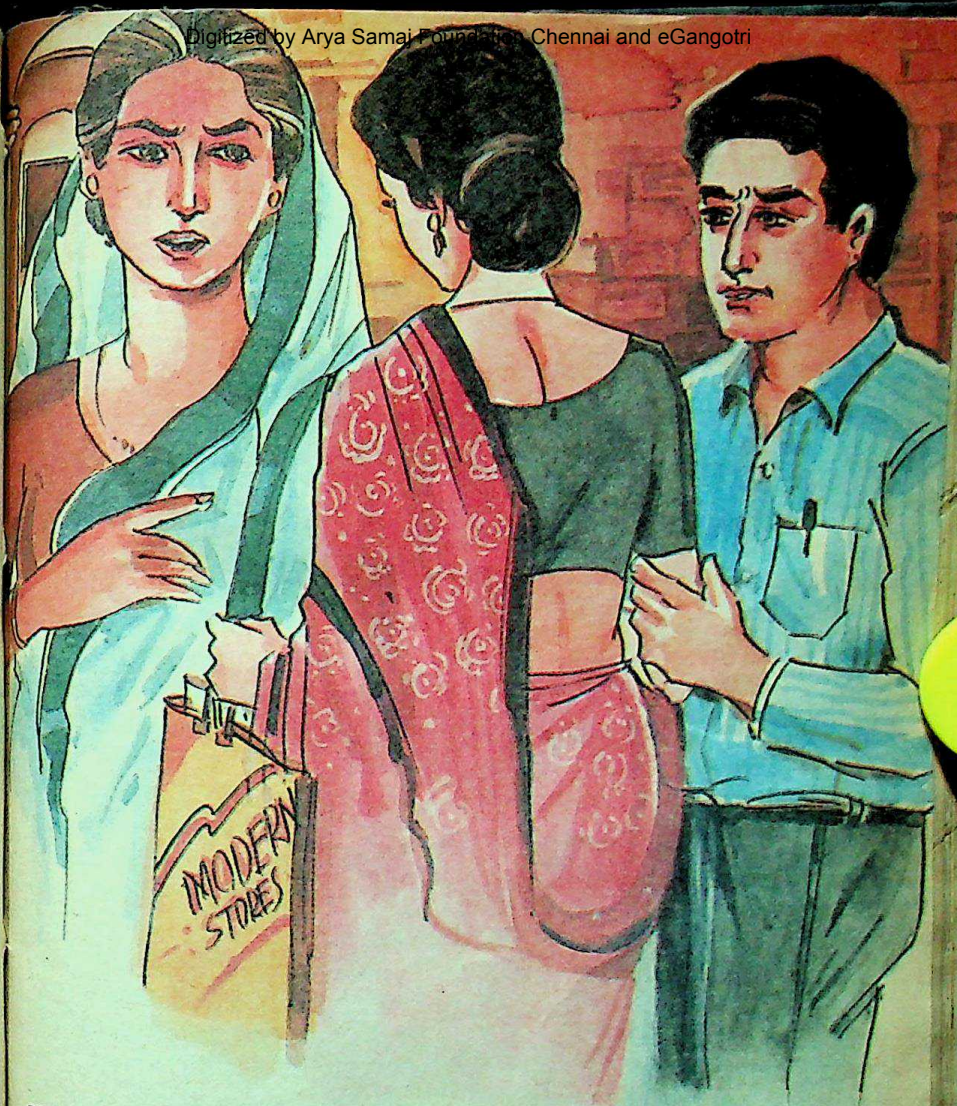

कुछ ट्यूशन भी उन्हें करनी पड़ीं.

जब भी इस सब के बीच उन्हें थोड़ा सा भी समय मिलता, वह नीचे जा कर सोमेश की मां को थोड़ाबहुत काम में सहारा दे ही देतीं. शाम के समय लान में उन्हें घुमाने का कार्य तो जैसे उन की दिनचर्या में शामिल था. धीरेधीरे सोमेश भी खुलने लगा था. कभी कहता कि चाय बना दो तो कभी कहता कि कमीज में बटन टांक दो. सुमिता खुशीखुशी यह सब काम कर देतीं.

सुमिता को सोमेश के साथ देख कर मां क्रोध से चिल्ला कर बोलीं, "यह क्या किया तू ने कुलच्छनी. नाक कटा के रख दी हमारी."

सभी लोग यह जानते थे कि यह सब वह प्रौढा के प्रति दया के वशीभूत ही कर रही हैं. किंतु यही विश्वास सुमिता की मां को न था. वह उस शुद्ध सेवा भावना का कुछ अलग ही अर्थ लगाती थीं. प्रारंभ में तो अपनी कमाऊ व घर की जिम्मेदारी उठा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रही बेटी से कुछ कहने का साहस उन में न था. परंतु बाद में उन के सब्र का घड़ा छलक ही गया. रोज सुमिता से वह तकरार करतीं.

दीदी समझा कर हार गईं कि अपाहिज स्त्री के प्रति दयाभाव से ही वह यह सब करती हैं, पर मां के गले यह बात न उतरती. उन के व्यर्थ के शक से सुमिता त्रस्त थीं. एक दिन रीमा से लिपट कर वह बहुत रोईं, "सच रीमा, ऐसी कोई बात है ही नहीं. मां व्यर्थ ही सोमेश को ले कर मुझ पर शक करती हैं. सोमेश में ऐसी कोई खास बात मुझे नजर ही नहीं आती कि उसे ले कर मैं कुछ अन्यथा सोचूं. फिर जिस स्थिति में आज मैं हूं, ऐसा सोच भी कैसे सकती हूं. भुवन को डाक्टरी पढ़ने मैं ने अपने ही बलबूते पर तो भेजा है. नमिता, अमिता की भी पढ़ाई है, पर मां को क्या कहूं. तुम्ही कहो रीमा, क्या किसी के काम आना अपराध है?"

रीमा निरुत्तर ही बैठी रही. सुमिता ने ही फिर कहा, "सोमेश की मां पर बड़ी दया आती है मुझे. नौकर उन्हें कोई मिलता नहीं. अपाहिज स्त्री को घर के कामों में कितनी परेशानी होती है. ऐसे में मैं कुछ कर दूं तो मेरे हाथ मैले तो नहीं हो जाते. हां, आत्मिक सुख जरूर मिलता है. उस का मैं ही अनुमान कर सकती हूं. क्या मुझे सुखी होने का कोई अधिकार नहीं रीमा?" लेकिन रीमा ने बस इतना ही कहा, "कोठी में आ कर मैं उन्हें समझाने का प्रयत्न करूंगी."

परंतु क्या समझा सकी थी रीमा मां को? सुनते ही मां भड़क उठीं थीं, "देख रीमा, मुझे सुमिता का उस परिवार से मेलजोल बिलकुल पसंद नहीं है. अरे, मेल ही क्या है उन से हमारा. हम ब्राह्मण, वे मांसमछली खाने वाले बंगाली. यह उन के घर की चाय पीती है और फिर क्या यह उन के घर की नौकरानी है. यह लड़की सफाई के बहाने सोमेश के कमरे तक में जाती है. अपाहिज मां क्या इस के पीछे देखने आती होगी. नहीं, यह सब मैं बिलकुल बरदाश्त नहीं करूंगी. कमाती है तो इस का अर्थ यह नहीं कि मैं भी अपाहिज बन कर अपनी आंखें बंद कर लूं."

क्रोध में बिफरती मां को रीमा ने फिर समझाना चाहा, "देखिए चाचीजी, आप सुमिता को गलत समझ रही हैं. आप बेबुनियाद शक उसी पर कर रही हैं जो आप ही की कोख से जन्मी है. क्या आप अपनी बेटी की दयाभावना नहीं पहचान रहीं?"

परंतु मां को विश्वास नहीं था, उन्होंने रीमा का मुंह यह कह कर बंद कर दिया, "अच्छा, तो अब यह तुम्हें सिखापढ़ा कर लाई है."

सुनते ही सुमिता की त्योरी कपाल पर जा चढ़ी. मुंह से कुछ न बोलने पर भी भभक कर लाल हो गया चेहरा अपने अंतर का ज्वालामुखी प्रकट कर रहा था. अकेले में सुमिता रीमा के समक्ष फट पड़ी, "देखा रीमा, यह है इन का विश्वास. जब यह शक करती ही हैं तो ऐसा कर के भी दिखाऊंगी."

उस का स्वर किसी जख्मी सर्पिणी की फुफकार सा था. रीमा सहम गई कि शांत सरिता में इतना तूफान. धीमे से कहा, "अपना अच्छाबुरा सोच कर ही कदम उठाना, सुमिता."

"नहीं रीमा, अब तो बस यह जिम्मेदारियां ही सिर्फ देखनी हैं. लेकिन तुम चिंता न करो." यत्नपूर्वक ही मुसकराई थी सुमिता.

रीमा अच्छी तरह जानती थी कि वह मांबेटी किसी को भी न समझा सकेगी. क्षुब्ध हृदय से ही वह घर आई थी.

उस के अगले ही वर्ष सोमेश का स्थानांतरण देहरादून हो गया. वह मां के साथ वहीं चला गया तो सब ने चैन की सांस ली. किंतु ऊपर से शांत होते हुए भी कहां कुछ शांत था. सुमिता के अंतर में लावा उबल रहा था.

भुवन के पढ़ाई के कुल दो वर्ष ही शेष थे. मझली अमिता बी.ए. द्वितीय वर्ष में थी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक दिन रीता ने सुमिता ने खुश हो कर बताया कि सुमिता दीदी का विवाह निश्चित हो गया है. लड़का व्यापारी है, बहुत पैसे वाले हैं. वैभव की प्रत्येक वस्तु ससुराल में है.

इधर रीमा का भी विवाह एक जूनियर इंजीनियर से तय हो गया था. पहले उस के ही विवाह की तारीख पड़ी. सुमिता उपहारों के साथ आई, पर मुरझाई सी. रीमा को मुबारकबाद देते हुए जब उन्होंने अपना उपहार दिया तो रीमा ने हंस कर कहा, "बहुत जल्दी तुझे भी उपहार देने मुझे आना पड़ेगा. परंतु तब मैं अकेली नहीं होऊंगी, वह भी होंगे न साथ में."

सुमिता फीकी सी हंसी हंस दीं, "दिन का सपना न देख रीमा, यह कभी पूरा नहीं होगा और फिर मुझे तो बस वहीं तक जाना है, जहां सोमेश है."

उस के स्वर की दृढ़ता से चौंक कर ही रीमा ने कहा था, "पागल हुई हो सुमिता, तेरा ब्याह तो तय हो गया है, सभी यह बात जानते हैं. महीने भर बाद ही तो बरात आएगी... अब क्या हो सकता है."

"हां, बरात आएगी अवश्य, पर शायद मेरी नहीं मेरे दायित्वों की ही होगी. अपने सारे दायित्व पूरे करने का ही तो इंतजार है मुझे."

सुन कर रीमा का हृदय कांप उठा कि क्या इस ने अपने जीवन को बिलकुल बरबाद करने की ठान रखी है. सोमेश को बगैर चाहे उसी के लिए अपनी मां से बैर लेना मूर्खता ही तो है. सुमिता का यह नितांत निजी मामला था, अतः रीमा ने बस यही कहा, "लड़के ने देखा तो तुझे है और उस की कल्पना में तो तू ही उस की मंगेतर है."

सुमिता ने सिर झुका कर कहा, "अमिता भी तो विवाह के लायक है और यह काम भी मुझे ही करना है. जब तक अपनी जिम्मेदारियों से मैं मुक्ति नहीं पा लेती, अपने बारे में तो सोच भी नहीं सकती." उस की दृढ़ता व बात की सचाई को देख रीमा का हृदय हाहाकार कर उठा. दूसरे दिन रीमा की

गुल और खार

गुलों ने खारों को
सीने से जब लगाया,
तभी खुशबू से उस ने
चमन को नहाया,
जिसे जान की बाजी
लगाना न कभी आया,
वो शख्स मोहब्बत में
कभी काम न आया.

—डा. अनिलकुमार सिंघई

विदाई के साथ ही सुमिता भी लौट गईं.

सुमिता के विवाह के कुल 15 दिन रह गए थे और उस ने विवाह से इनकार कर दिया था. महल्ले भर की चर्चा का यही विषय था. लड़के वालों के कान तक बात पहुंचा दी थी उन्होंने. वे हड़बड़ाए हुए लड़के व उस की मां के साथ आए. मां ने तो सिर पीट लिया अपना, "हाय, इस लड़की ने तो कहीं का नहीं रखा. कैसे किसी को मुंह दिखाऊं." उन का साहस ही लड़के व उस की मां के सम्मुख जाने का नहीं हुआ. सुमिता दीदी ने ही लड़के की मां के चरण पकड़ लिए, "मुझे माफ कर दीजिए मांजी, मैं विवाह नहीं कर सकूंगी."

"लेकिन क्यों? क्या कमी है मेरे लड़के या परिवार में?" लड़के की मां अवाक थीं. बदनामी के भय से उन का चेहरा सफेद हो गया था.

"आप के यहां कमी नहीं मांजी. किंतु मेरे ऊपर बहुत से दायित्व हैं. मेरे बाद क्या होगा इस घर का?" (शेष पृष्ठ 167 पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुप्रभात

कहानी ● शकुंतला शर्मा

"क्या बात है नीरू, इस तरह गुमसुम क्यों बैठी हो? किस का फोन था?" ऋषिराज ने पत्नी को स्वयं में ही खोए देख कर पूछा.

"परिमिता का..." नीरू उदास स्वर में बोली.

"क्या कह रही थी?"

"मां की तबीयत फिर से खराब हो गई है, शायद हस्पताल ले जाना पड़े."

"मतलब कि आप फिर से देवबंद जाएंगी?" ऋषिराज रूखे स्वर में बोले.

"मां की तबीयत बिगड़ने पर जाना ही पड़ेगा. आखिर इकलौती बेटी हूं. मैं नहीं जाऊंगी तो कौन जाएगा? अपनी जिम्मेदारी से मुंह भी तो नहीं मोड़ सकती." नीरू का उत्तर था.

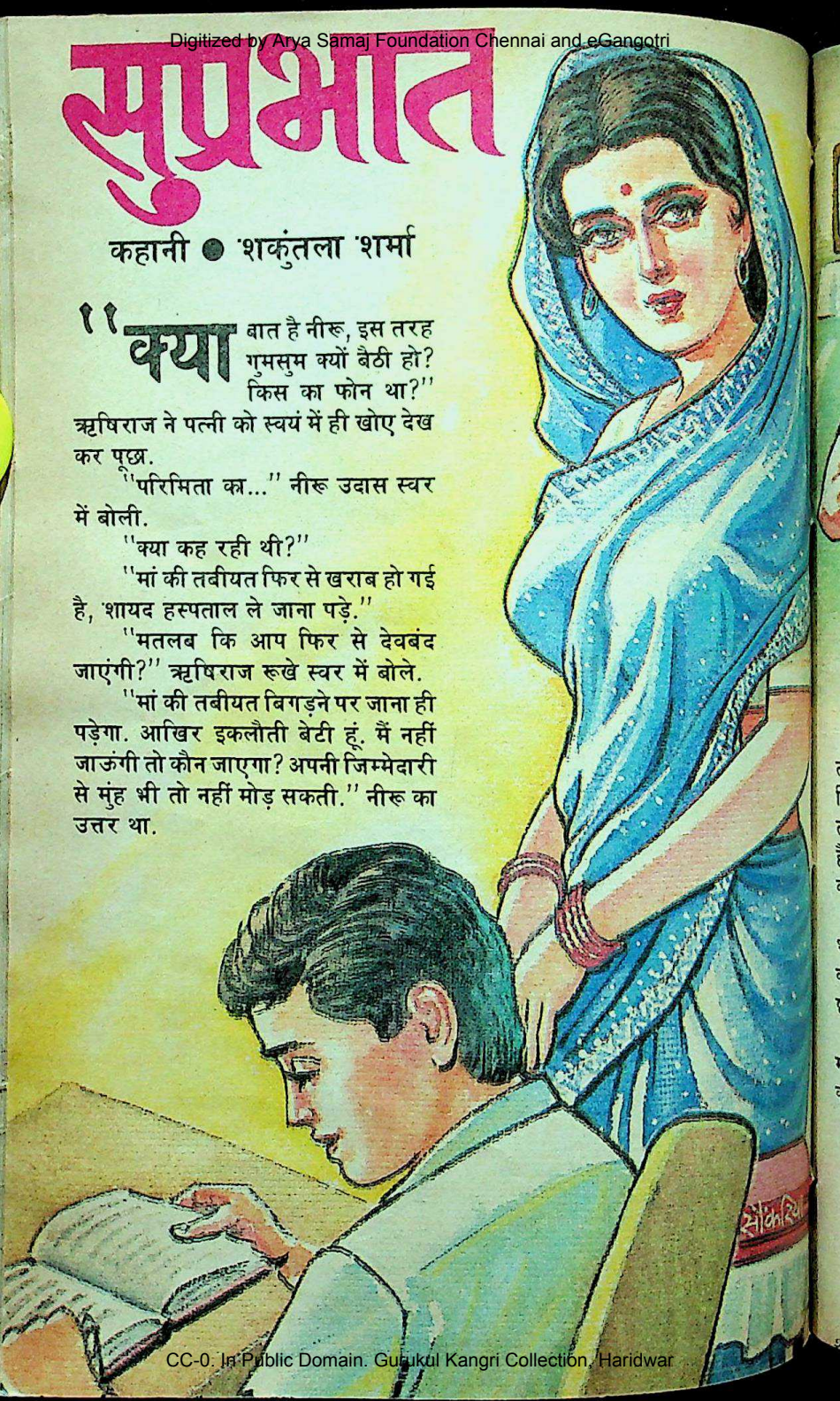

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

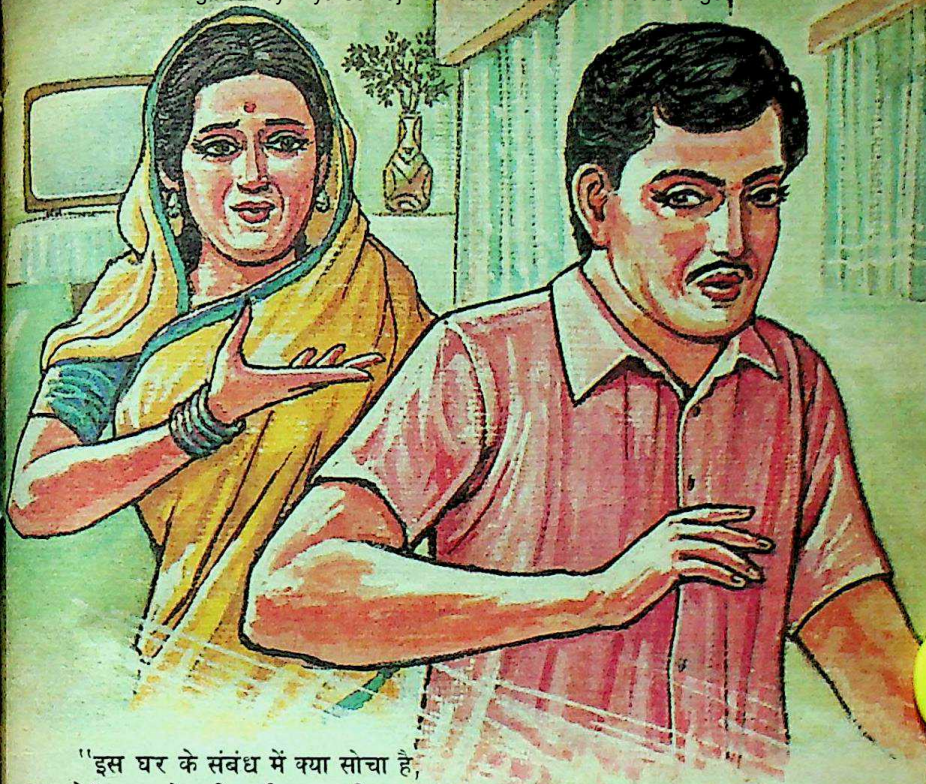

"इस घर के संबंध में क्या सोचा है, तुम ने? इस के प्रति भी तुम्हारी कुछ जिम्मेदारी है या नहीं? पिछले तीन महीने से तुम वहीं थीं. विनीत की 12 वीं की परीक्षा है. इस प्रकार अपने बेटे के भविष्य से खेलने का तुम्हें क्या अधिकार है?"

"आप क्या सोचते हैं, विनीत के भविष्य की चिंता केवल आप को है? पर क्या करूं, मां को अकेले मरने के लिए तो नहीं छोड़ सकती." नीरू उदास स्वर में बोली.

"ठीक है... जाओ और हम सब को मरने के लिए छोड़ दो. हम तुम्हारे लगते ही क्या हैं..." ऋषिराज क्रोधित स्वर में बोले.

"ठीक है... जाओ और हम सब को मरने के लिए छोड़ दो." ऋषिराज गुस्से में नीरू से बोले. तभी शोर सुन कर उस की मां भी वहां आ गईं.

"क्या हो गया सुबहसुबह ऋषि? तुम तो सदा चीखतेचिल्लाते ही रहते हो." तभी ऋषिराज की मां भी वहां आ गईं.

"कुछ नहीं, आप की लाड़ली बहू फिर से देवबंद जाने का कार्यक्रम बना रही हैं." ऋषिराज ने कहा.

पिछले दो वर्षों से परिवार के प्रति नीरू का उपेक्षित व्यवहार देख ऋषिराज चिड़चिड़ा हो उठा. वह अपने स्वार्थ के गहन अंधकार में डूब नीरू की भावनाओं, उस की समस्याओं को समझ नहीं पा रहा था. ऐसे में मां की सीख ऋषिराज के लिए सुप्रभात की किरण का वह रूप बन गई जिस ने परिवार को बिखरने से बचा लिया.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

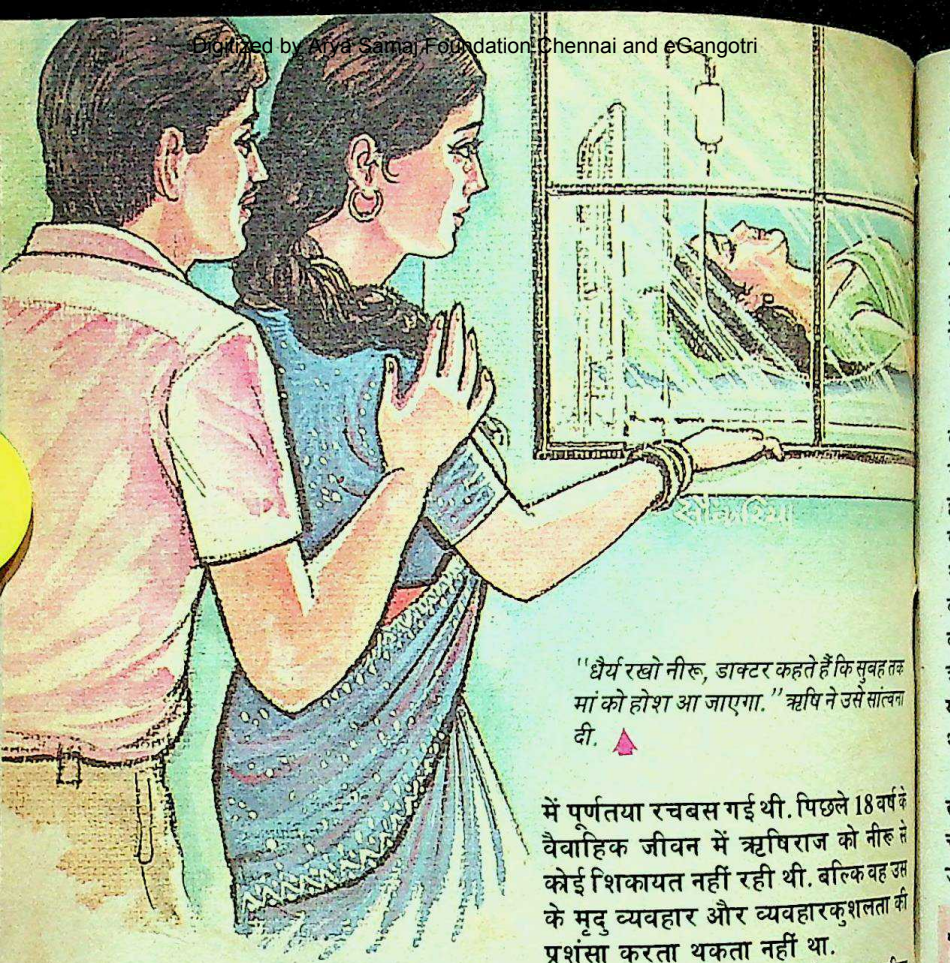

"धैर्य रखो नीरू, डाक्टर कहते हैं कि सुबह तक मां को होश आ जाएगा." ऋषि ने उसे सांत्वना दी.

"क्यों, क्या हुआ?" ऋषिराज की मां घबरा गईं.

"मैं तो कहीं भी जाने का कार्यक्रम नहीं बना रही मांजी. देवबंद से हमारे पड़ोसी की बेटी का फोन आया है, जिस के ऊपर इतना तूफान उठ खड़ा हुआ है." कहती हुई नीरू आंचल में मुंह छिपा कर फूटफूट कर रो पड़ी. हृदय की असह्य वेदना मानो आंखों की राह बह जाना चाहती थी.

मां, ऋषिराज और दोनों बच्चे विनीत और बिन्नी चित्रलिखित से देखते रह गए. नीरू का ऐसा व्यवहार उन के लिए एकदम अप्रत्याशित था.

नीरू अपने मातापिता की एकमात्र संतान थी. विवाह के बाद वह अपने नए घर में पूर्णतया रचबस गई थी. पिछले 18 वर्ष के वैवाहिक जीवन में ऋषिराज को नीरू से कोई शिकायत नहीं रही थी. बल्कि वह उस के मृदु व्यवहार और व्यवहारकुशलता की प्रशंसा करता थकता नहीं था.

बैंक की अपनी नौकरी के बावजूद नीरू ने घर की जिम्मेदारी को इतनी कुशलता से संभाला था कि सब उस की प्रशंसा करते थे. पिछले दो वर्षों में ही अचानक सब कुछ बदल गया था. नीरू मानो पहले वाली नीरू नहीं रह गई थी. उस में आए इस परिवर्तन का असर ऋषिराज के तमाम प्रयत्नों के बावजूद सारे परिवार पर पड़ रहा था.

दो वर्ष पहले अचानक ही हृदयगति रुकने से नीरू के पिता का निधन हो गया था. कुछ दिनों के लिए तो नीरू जड़ हो कर रह गई थी. अपनी मां के बहुत समझानेबुझाने पर वह देवबंद से लौटी थी, किंतु तीनचार दिन बीतते ही वह मां से मिलने को बेचैन हो उठती थी. हंसनाबोलना तो दूर, किसी से दो औपचारिक बातें करने में भी उस की रुचि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं रह गई थी. घर का काम वह अवश्य करती, किंतु यंत्रमानव की भांति. बैंक में भी सहयोगियों से कम ही बातचीत करती.

इस उदासीन व्यवहार का प्रभाव परिवार पर पड़ना ही था. हंसमुख ऋषिराज दिन पर दिन चिड़चिड़ा होता जा रहा था और बच्चे भी डरेसहमे से रहते. घर के इस वातावरण का प्रभाव बच्चों पर पड़ता देख कर ऋषिराज ने अपनी मां को बुला भेजा था.

किंतु इस बात पर नीरू को यों फूटफूट कर रोते देख ऋषिराज की मां स्तब्ध रह गईं. उन की तीनों पुत्रवधुओं में सब से हंसमुख स्वभाव नीरू का ही था. ऐसी छोटीमोटी बातें तो वह हंसी में उड़ा देती थी. अपने क्रोधी स्वभाव के पुत्र ऋषिराज के लिए ऐसी पत्नी पा कर उन की प्रसन्नता की सीमा न रही थी, किंतु इस बार जब ऋषिराज उन्हें लाया था तो नीरू की मनोदशा देख कर पहले तो वह चकित हुई थीं और फिर चिंतित हो उठी थीं.

"क्या बात है, नीरू? इस प्रकार धैर्य खोने से भला कहीं समस्याएं हल होती हैं? चुप हो जा बेटी." मां ने सांत्वना देने के लिए उस के कंधे पर हाथ रखा.

नीरू ने धीरेधीरे स्वयं को व्यवस्थित किया और बच्चों से बोलीं, "विनीत, बिन्नी, चलो, मां को नाश्ता ला कर दो."

नीरू ने स्वयं को संभाला और काम में जुट गई. व्यस्त व्यक्ति के पास रोनेधोने के लिए भी सीमित समय ही होता है. सब के टिफिन बंद कर वह बैंक जाने के लिए तैयार होने लगी.

ऋषिराज का कार्यालय पास होने के कारण वह सब से अंत में जाता था, जबकि नीरू के बैंक की शाखा शहर से कुछ दूर एक ग्रामीण क्षेत्र में थी.

"ऋषि, आज नीरू को तुम छोड़ आओ, उस का मन ठीक नहीं है." मां ने ऋषिराज को आदेश दिया.

"नहीं मां, मैं चली जाऊंगी... आप चिंता न करें. मेरा मन ठीक हो या अशांत यहां किसे चिंता है?" कहती हुई नीरू तीर की तरह बाहर निकल गई.

"देख रही हो मां, कैसा व्यवहार कर रही है, नीरू आजकल." ऋषिराज क्रोधित स्वर में बोला.

"धैर्य से काम लो ऋषि, दोष तुम्हारा भी है. एकदूसरे का सुखदुख बांटने से ही घर में सुखशांति रह सकती है, पर तुम ने शायद अपनी पत्नी को इनसान नहीं मशीन समझ लिया है." मां बोली.

"आप भी मुझे ही दोष दे रही हैं."

"तो और क्या करूं बेटे, वह अपनी मां की बीमारी की सूचना पा कर चिंतित थी. उस के संबंध में पूछताछ किए बिना ही तुम यह सोच कर बौखला उठे कि नीरू कहीं अपनी मां को देखने न चली जाए."

"मैं स्वयं कितना परेशान रहने लगा हूं मां, आप सोच भी नहीं सकतीं. नीरू अब पहले वाली नीरू नहीं रही. पिछले दो वर्षों ने उसे पूरी तरह बदल डाला है. बच्चों में, घर में या अपने काम में तो मानो उसे कोई रुचि ही नहीं रह गई है, केवल यंत्रवत काम करती रहती है. उमंग और उत्साह तो मानो घर से विदा ले चुके हैं. मैं ने तो अब उसे कभी मुसकराते हुए भी नहीं देखा." ऋषिराज भीगे स्वर में बोला.

"अब भी तुम चाहो तो घर की सुखशांति को बचा सकते हो. भरपूर जीवन जीतेजीते किसी को अचानक जीवन से अरुचि हो जाए तो उस का कुछ तो कारण होगा ही."

"पिता वृद्ध थे, उन्हें एक दिन जाना ही था. उन के लिए पूरे परिवार का जीवन दुखदायी बना देना कहां की बुद्धिमानी है? मैं ने सोचा था कि समय सब घावों को भर देता है, धीरेधीरे नीरू सब भूल कर पहले जैसी हो जाएगी, पर नहीं, दो वर्ष हो गए, उस का एक पैर मेरठ में रहता है तो दूसरा देवबंद में... मुझे तो ऐसी दृष्टि से देखती है, जैसे सारा दोष मेरा ही हो."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और थकेमांदे ऋषिराज सामने बेंच पर सो रहे थे, किंतु नीरू के मन में बचपन से ले कर अब तक की सब घटनाएं चलचित्र की भांति तैर रही थीं.

मां के बेसुध पड़े रहने की बात नीरू ने हृदय पर पत्थर रख कर ही सहन की थी. रात भर वह स्वयं को कोसती रही कि परिमिता का फोन आने के बाद भी वह पति की बात पर क्रोधित हो कर बैंक क्यों चली गई थी? यदि ऋषिराज समय पर वहां नहीं पहुंचता और मां को कुछ हो जाता तो क्या वह कभी स्वयं को क्षमा कर पाती? यही सब सोचतेसोचते नींद ने उसे आ घेरा.

"नीरू, उठो. देखो, सुबह हो गई है." जब उसे ऋषिराज ने जगाया तो सामने की खिड़की से आने वाली धूप का टुकड़ा उस के सामने फर्श पर बिछा पड़ा था.

"आओ, माताजी को होश आ गया है. डाक्टर ने बताया है कि अब खतरा टल गया है, पर कमजोरी बहुत है. अतः बात करने की मनाही है." ऋषिराज ने बताया.

नीरू ने पति के साथ जा कर मां की दुर्बल काया को देखा. बीमारी ने उन की कैसी दशा कर दी थी. अनेक यंत्रों से जुड़ा उन का शरीर स्वयं एक यंत्र की ही भांति

लग रहा था. नीरू ने सिर पर हाथ रखा तो उन्होंने आंख खोलीं और धीरेधीरे मुस्कराने का यत्न किया.

"कृपया रोगी को आराम करने दें, बात करने का प्रयत्न न करें." तभी नर्स ने आ कर टोका.

"अब कैसी है, मां." नीरू ने पूछा.

"आप सही समय पर मरीज को ले आए. कल तो हमें इन के बचने की बहुत कम आशा थी... किंतु अब यह खतरे से बाहर हैं, पर आप लोग बाहर प्रतीक्षा करें, नहीं तो मरीज को लाभ के स्थान पर हानि ही होगी." नर्स ने आदेशपूर्ण स्वर में कहा.

"ऋषि, समझ में नहीं आता कि किस प्रकार तुम्हें धन्यवाद दूं, कल तुम मां को यहां नहीं लाते तो मैं इन्हें लगभग खो ही चुकी थी." नीरू बाहर आते ही सिसक उठी.

"और मैं तुम्हें नीरू, मैं भी तो तुम्हें खो ही चुका था. मैं यह भूल ही गया कि तुम्हारी परेशानियां मेरी भी हैं. अच्छा हुआ कि सही समय पर मेरी आंखें खुल गईं या खोल दी गईं, नहीं तो शायद हम दोनों समानांतर चलती नदी के दो किनारे बन कर रह जाते और सारा परिवार बिखर जाता. जानती हो, मेरी आंखें किस ने खोली?"

"किस ने?"

"मां ने... उन्होंने ही मुझे याद दिलाया कि तुम्हारे और मेरे सुखदुख अलगअलग नहीं है."

तभी मां और विनीत आते दिखाई दिए. आते ही मां ने कहा, "तुम दोनों अब घर जाओ, नहाधो कर, खापी कर और कुछ देर आराम कर के आना, तब तक हम दोनों यहां हैं. नीरू, अब तुम्हारी आंखों में आंसू क्यों है? मुझे तो जब ऋषि ने सुबह फोन किया तो मेरी जान में जान आई." मां बोलीं.

कृतज्ञ नीरू सास के चरणों में झुक गई. दूर मैदान में धीरेधीरे फैलती सूर्य की किरणें रात के ढलने और सुप्रभात के आने का संदेश दे रही थीं. नीरू की अश्रुपूरित आंखों में यह प्रकाश सतरंगा हो कर झिलमिला रहा था. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बंबई महानगर में

शतरंज के मोहरे मजदूर

—महेंद्र सरल

मुंबई जो कभी बंबई कहा जाता था, में इनीगिनी सड़के हैं, जबकि यह शहर अब देश का सब से बड़ा शहर हो चुका है. कलकत्ता को भी पीछे छोड़ जाने वाले इस नगर की यह त्रासदी है कि चलनेफिरने की जगह कम से कम होती चली जा रही है. हर तिराहे, चौराहे पर यातायात अवरोध इस कदर हो गया है कि दस किलोमीटर का सफर करने के लिए कारों, मोटर साइकिलों वगैरह को घंटा, सवा घंटा का समय लगता है. पचासपचास कदम पर लाल बत्ती जल उठने से ड्राइवर और सवार उसे कोसते रहते हैं.

ऊपर से उन्हीं भीड़ भरी सड़कों पर हड़ताली मजदूरों के लंबेलंबे जलूस निकलते रहते हैं तो चौराहे पर खड़े सिपाही भी अपनेआप को कोसने लगते हैं. 'विठेबा ने कहां ला पटका है हमें. जलूस निकालने वाले न तो लालबत्ती को देखते हैं न सिपाही की सीटी को सुनते हैं. मीलों लंबा शैतान की आंत की तरह चलता जलूस खत्म होने में ही नहीं आता. और जब तक वह खत्म नहीं हो जाता तब तक सड़क पर किसी गाड़ी की तो क्या किसी पैदल चलने वाले तक की हिम्मत नहीं हो सकती कि उन के बीच से निकल जाए. हस्पताल जाने वाले गंभीर रोगी भी आगे नहीं बढ़ सकते. अदालत में ठीक समय पर हाजिर होने वाले भी वहीं अटक जाते हैं. कहीं आग लगी हो तो उसे बुझाने वाली दमकलें भी आगे नहीं बढ़ सकतीं.

यूनियन लीडरों ने मजदूरों को पट्टी पढ़ाई होती है कि जनता को तकलीफ होती है तो होने दो. जनता को जितनी तकलीफ पहुंचेगी उतनी ही ज्यादा वे हमारी सिफारिश करेंगे. मिल वाले हों या सरकार, हमारी मांगों के सामने घुटने टेकने ही पड़ेंगे. भोला मजदूर बेचारा

हड़ताली मजदूरों के लंबे जलूस मुंबई के लिए आम बात हो गई है. इस से जहां एक ओर आम आदमी को दिक्कत होती है वहीं पुलिस वालों के लिए भी ये जलूस सिरदर्द बनते हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह नहीं समझ पाता कि वह जनता को तकलीफ देने जा रहा है या खुद को.

नारे लगाता जनसमूह, लांग वाली साड़ियां लपेटे निपट अनपढ़ औरतें अपने कूल्हों, कंधों, कमर और छाती पर अपने शिशुओं को लटकाए मुंबई की जलती धूप, धूल उड़ाती आंधी और लगातार बरसती मूसलधार वर्षा तथा बिना समुचित कपड़ों के ठंड में सिकुड़ती हुई रेले के साथ चलती जाती हैं, थकती जाती हैं, मीलों मील. लीडर लोग उन का भला करवाने के लिए जलूस निकलवा रहे हैं या खुद का उल्लू सीधा करवा रहे हैं, वे भोले नरनारी कभी नहीं समझ पाते. अगर परोक्ष रूप से कभी मजदूरों का भला हो भी गया तो वे उस का श्रेय अपनेआप को देते हैं, देखो हम ने इन मजदूरों का भला करवाया. मेरे दल में आ जाओ तो तुम्हारा भी इसी तरह भला करवा दूंगा. और लगे हाथ उन लोगों से अपना तगड़ा कमीशन वसूल करते हैं, जिन की तनख्वाहें कारखाने वालों ने बढ़ा दी हैं.

सांसद व यूनियन लीडर दत्ता सामंत : पांच साल बाद भी हड़ताल में बंद कारखाने नहीं खुलवा सके.

सन 1982 में कपड़े की तमाम मिलों में हड़ताल करवा दी गई थी. वह हड़ताल डेढ़ वर्ष तक तो घोषित रूप में चली पर अघोषित अवधि पांच साल को भी पार कर गई थी. हड़तालियों को कैसीकैसी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा, उसे सुन कर मन कांप उठता है. उन के नेता डाक्टर दत्ता सामंत संसद के चुनाव लड़ते रहे, जार्ज फर्नांडीज मंत्री पद भी पाते रहे मगर मजदूरों का क्या भला हुआ? इस का जवाब किसी भी मजदूर से नहीं मिल पाया. कारखाने हमेशा के लिए बंद हो गए. नेता उन को वापस नहीं खुलवा सके. सरकारों को अपनी कुरसी बचाए रखने में ही तमाम शक्ति खर्च करते रहना पड़ता है, मजदूरों की तरफ उन्हें देखने की फुरसत कहां है.

बेकार हुए मजदूर दूसरे कारखानों में काम मांगते फिरे. काफी बड़ी संख्या में मजदूर लोग बेकारी से बुरी तरह परेशान हो गए. किसी नेता ने उन के लिए रहने लायक सुविधाएं नहीं जुटाईं. अकसर मजदूरों ने अपने ही श्रमदान से अपने लिए झोपड़ियां बनाईं. जगह कहां मिलती. अकसर तो कारखानों के बाहर ही चार दीवारी से सटा कर झोंपड़ियों की कतार खड़ी कर दी गई थी. अस्थायी सा वह प्रबंध स्थायी हो कर रह गया था. और जब वह लंबी हड़ताल चलती गई तो मजदूरों को अपने बनाए उन झोपड़ों को संभालना भी भारी सा लगने लगा. कुछ लोग तो कंगाली से परेशान हो कर अपने 'देस' के लिए चले गए. झोंपड़ों को बेच गए. मुंबई में दोदो गज जमीन पर बने टूटेफूटे झोंपड़े भी बिकते हैं. बेच कर ही उन के घर लौटने की जुगाड़ हो पाई थी. जब उन की पाईपाई भी खत्म हो गई तो पुश्तैनी घर जाने के अलावा कोई चारा नहीं रह गया.

विदाई समारोह

महाराष्ट्र उच्च न्यायालय के प्रधान न्यायाधीश चित्तदोष मुखर्जी के अवकाश ग्रहण करने का समय आया तो जगहजगह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन के लिए विदाई समारोह आयोजित किए गए. अलगअलग समारोहों में भरपूर संवेदना के वाक्य कहे गए. मुखर्जी साहब बड़े द्रवित होते चले गए. एक समारोह सिटी सिविल कोर्ट के वकीलों और न्यायाधीशों ने किया. मुखर्जी साहब उन्हें भी अनुगृहीत करने पहुंचे. आयोजकों के उत्साह का ठिकाना नहीं था.

न्यायालयों के इतिहास में ऐसा पहली बार हुआ था कि उच्च न्यायालय के प्रधान न्यायाधीश और वहां के वकीलों ने उस निचले कोर्ट में आने का निमंत्रण स्वीकार किया था. बड़ी भावभीनी आवभगत हुई. उन के कार्यकाल में इस वर्ष उच्च न्यायालय के चार न्यायाधीशों के विरुद्ध वहां के वकीलों ने जिहाद छेड़ दिया था. उन को बचाने के लिए प्रधान न्यायाधीश महोदय ने कोई कदम नहीं उठाया था. इस बात से वकील लोग बहुत खुश और संतुष्ट रहे. इसी लिए उन के लिए ज्यादा से ज्यादा विदाई समारोह आयोजित किए गए.

आखिर जब सब वक्ताओं के प्रेम और श्रद्धा के वाक्य सुन कर न्यायाधीश मुखर्जी पूर्ण रूप से द्रवित हो गए तो समापन भाषण में बोले, "तीन साल पहले नवंबर 1987 में जब कलकत्ता से मुझे यहां भेजा जा रहा था तो मैं यहां आने को तैयार नहीं था. अब मुझे वापस अपनी धरती पर जाने का मौका मिल रहा है तो मेरा दिल यहां से जाने को तैयार नहीं है."

यह वाक्य सुनना था कि हाल में मौजूद हर कोई हंस पड़ा. संवेदना के वाक्यों के बाद वह कहकहा यह संकेत दे रहा था कि समारोहों पर कहे गए शब्द होठों से निकलते हैं, हृदय से नहीं. और वकील लोग तो होठों से ही शब्द निकालने के आदी होते हैं

दूसरों को हवालात में डालने वाले

हुआ यह कि वह वरदी में था. मगर अपनी ड्यूटी पूरी कर के घर जाने से पहले मस्ती मारने के खयाल से एक बीयर बार में चला गया. बाहर आया तो उसे भूमंडल की सल्तनत मिल चुकी थी. धरती धकेलता सा जूते ठेंकता हुआ सा वह एक आटोरिकशा के पास आया और उस में बैठता हुआ बोला "चलो." रिकशा वाले ने कहा, "मैं अपना रिकशा चलाने का टाइम पूरा कर चुका. अब मुझे अपने घर जाना है."

"तुझे पता है तू सिपाही से इस तरह की हुज्जत कर रहा है. मुसाफिर को मना नहीं कर सकते. चलो." मगर रिकशा वाला फिर भी चलने को तैयार न हुआ तो सिपाही गुस्से में उबल कर नीचे उतरा. उस ने अपनी पेटी कमर से उतारी. उस के दोनों किनारों पर पीतल के मोटेमोटे बकसुए थे. वह उस वक्त सल्तनत का बादशाह था. उस ने आव देखा न ताव, रिकशा वाले की पिटाई शुरू कर दी. वहां और भी कई रिकशा वाले खड़े थे. उन्होंने अपने साथी को पिटते देखा तो उस को बचाने आ गए. सिपाही ने पेटी का वार उन की तरफ भी कर डाला. वे कई थे. एकजुट हो गए. जम कर पिटाई की.

दो आदमी उसे पकड़ कर रिकशा में बैठे और सीधे थाने जा कर ही दम लिया. शिकायत लिखाई, "यह आदमी शराब के नशे में है. इस ने हम सब को अपनी पेटी से मारा है." यह घटना मुंबई के उपनगर मलाड की है. वहां मौजूद दारोगा ने रिकशा वालों की तसल्ली के लिए सिपाही महोदय को हवालात में बंद कर दिया. दूसरों को हवालात में डालने वाले थोड़ी देर के लिए खुद जब वहां बंद हुए तो उन्हें नया ही अनुभव हुआ होगा. घटना का उपदेश—न तो रिकशा वाले को सवारी से इनकार करने का अधिकार था और न सिपाही को उसे पीटने का अधिकार. खासतौर पर जब वह खुद नशे में था.

प्रचार या वास्तविकता

पेट्रोल के दामों में नई वृद्धि होने के बाद बहुत से लोगों ने टैक्सी में यात्रा करना ही बंद कर दिया है. टैक्सी पांच रुपए से तो शुरू

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

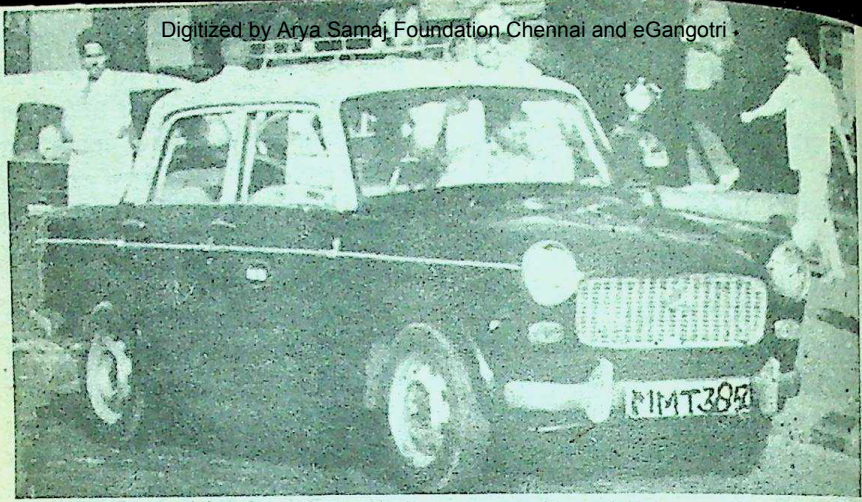

टैक्सी मुंबई की आम सवारी बन गई है लेकिन ड्राइवरों की लूट खसौट के कारण इस में यात्रा करना जेब कटवाने से कम नहीं है.

होती है और मुंबई की सड़कों पर सौसौ कदमों पर लंबेलंबे समय तक रुकना पड़ता है. तीनचार किलोमीटर चलने पर ही भाड़ा 20 रुपए के ऊपर पहुंच जाता है. ऊपर से अनेक टैक्सी वाले झगड़ालू प्रकृति के होते हैं और यात्री के हाथ में पोर्टफोलियो बैग से थोड़ा सा बड़ा बैग होता है तो उस के लिए सामान का किराया अलग से वसूल करने के लिए तन कर खड़े हो जाते हैं. उस के अलावा अगर मीटर के हिसाब से 24 रुपए 40 पैसे अदा करने होते हैं और यात्री 30 रुपए के नोट देता है तो टैक्सी वाला कभी भी पूरा पैसा वापस नहीं करेगा.

ऐसे नोचनेखसोटने वालों के बीच में एक बार टैक्सी के पिछले कांच पर चिपकाया हुआ एक वाक्य पढ़ने को मिला कि यह टैक्सी रात की अवधि में बीमार यात्री को बिलकुल मुफ्त में हस्पताल पहुंचाएगी. उस वाक्य को पढ़ कर थोड़ाबहुत नहीं घोर आश्चर्य हुआ था. उस टैक्सी का नंबर नोट किया गया एम एम टी 3850. और यह सूचना समाचारपत्र में भेजी गई. उस पत्र को रोजाना पढ़ने वाले एक पाठक ने बताया, "मैं एक टैक्सी में यात्रा करना चाहता था मगर ड्राइवर ने देखा कि मेरी यात्रा केवल एक मील की है तो उस ने मुझे बैठने से इनकार कर दिया. उस की उद्दंडता की शिकायत करने के लिए मैं ने टैक्सी का नंबर नोट किया तो हैरत में रह गया. उस का नंबर वही था एम एम टी 3850."

पेट्रोल बचाने के लिए नया कानून

हफ्ते में एक दिन अपनी कार मत चलाओ. हफ्ते में एक दिन और अपना दफ्तर बंद रखो. महीने में चार आधे दिनों को खुलने वाले दफ्तरों को चाहिए कि आधे दिन वाला नियम बदल कर दो पूरे दिन कर दें और दो दिन पूरी छुट्टी रखें. इस तरह की कई सावधानियां कार्यान्वित करने के पश्चात अब नया कानून बनाया है कि किसी कार में चार यात्रियों से कम लोग नहीं होने चाहिए. एक दफ्तर या आसपास के क्षेत्र में काम करने वाले अफसरों को अपनीअपनी कारें लाने के बजाय एक ही कार में साझेदारी करनी पड़ेगी. सुबह और शाम के भीड़ वाले समय में अगर किसी कार या टैक्सी में चार से कम यात्री देखे गए तो उस पर जुर्माना किया जाएगा. यानी सिपाहियों की आमदनी का एक और रास्ता खोला जा रहा है. •

सरिता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Announcing

SUMMER HOLIDAY

We

SPECIAL

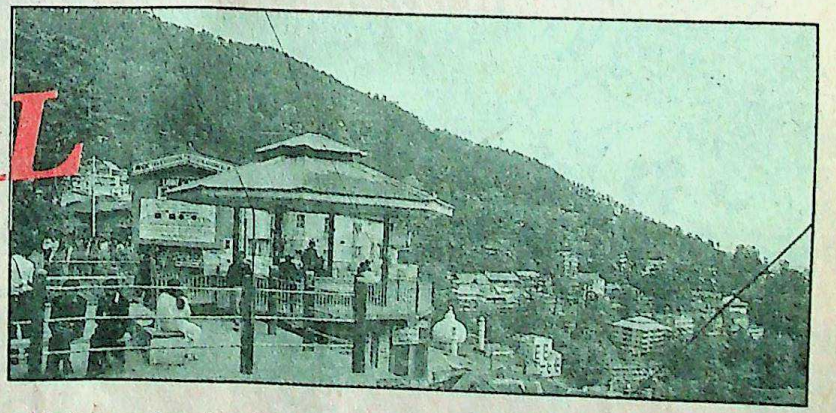

May (First) 1991

We promises to make this summer a memorably joyous time for all your family.

Its information-packed articles will help you plot your holiday itinerary meticulously... cook yummy summer dishes to tickle jaded palates... plan exciting fun times for your kids... shopping... entertaining... and lots more....

The regular fare of absorbing short stories, juicy features and thought-provoking articles will fill your long summer days with pleasurable reading. Don't miss the Special.

RESERVE YOUR COPY TODAY

Woman's era

• BUILDS YOUR PERSONALITY • BUILDS A HAPPY HOME

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीजाजी का पत्र

कहानी ● सुरेशकुमार गोयल

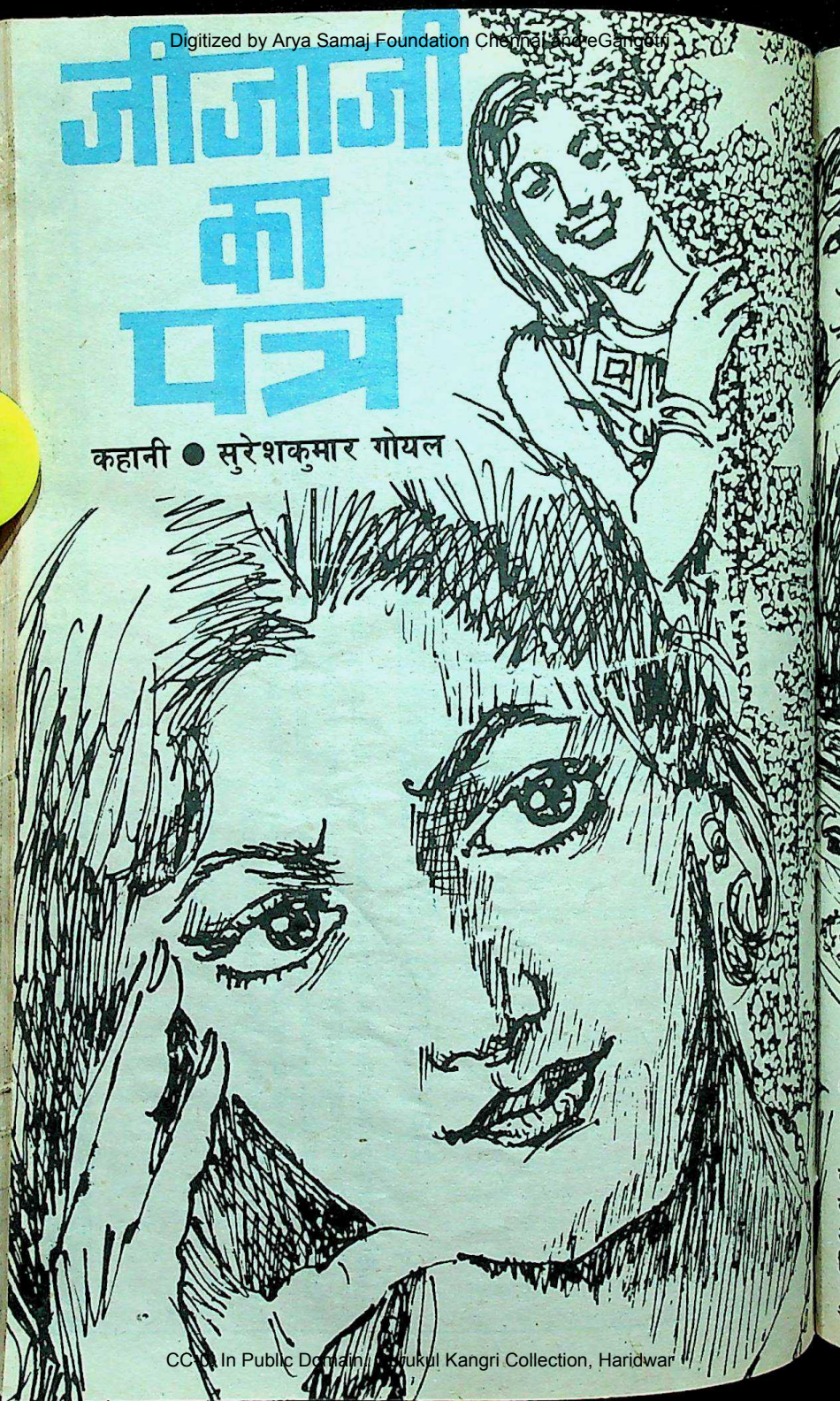

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

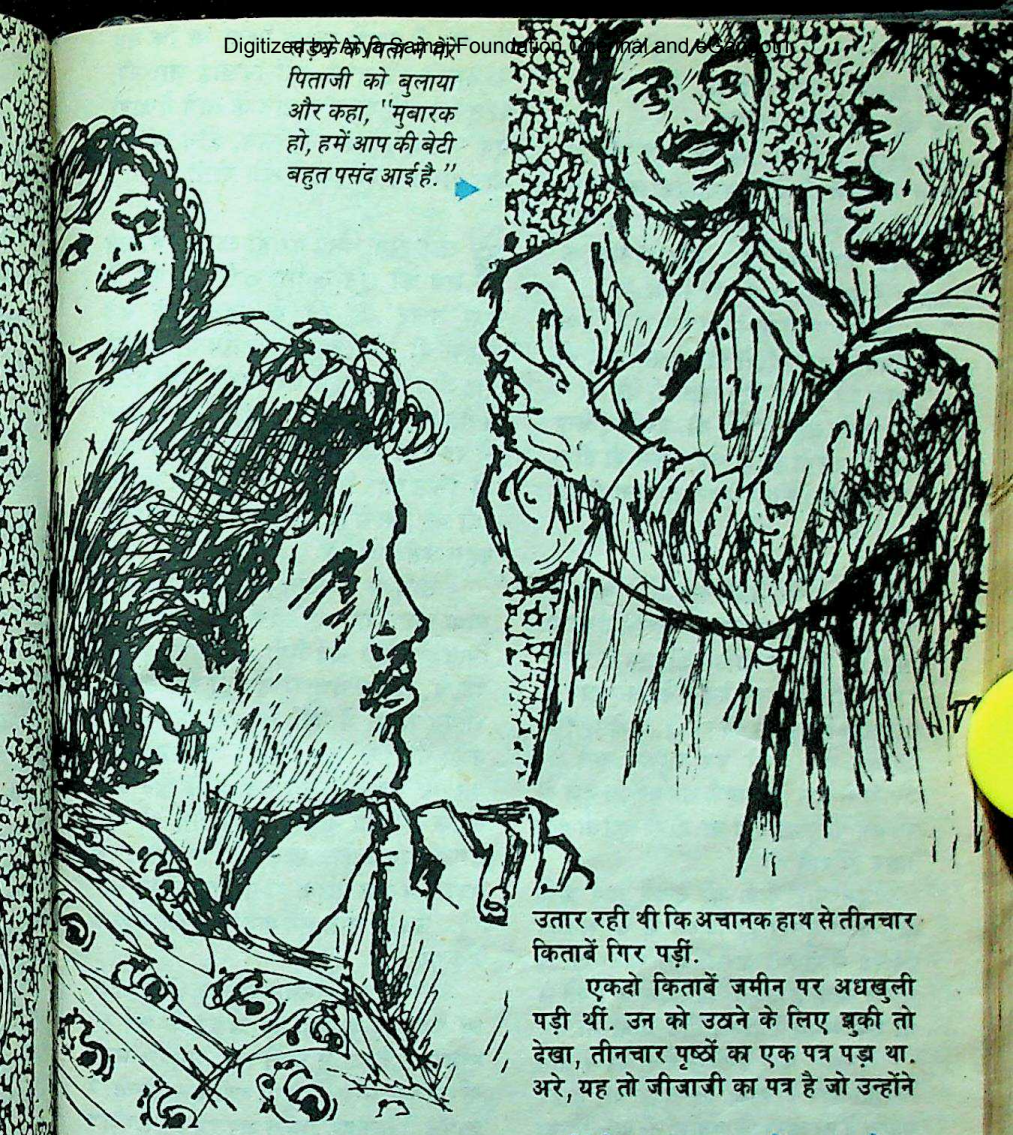

पिताजी को बुलाया और कहा, "मुबारक हो, हमें आप की बेटी बहुत पसंद आई है."

घर में कई सालों बाद सफेदी होने जा रही थी. मां और भाभी की मदद के लिए मैं ने दो दिन के लिए कालिज की छुट्टी कर दी. दीदी के जाने के बाद उन का कमरा मैं ने हथिया लिया था. किताबों की अलमारी के ऊपरी हिस्से में दीदी की किताबें थीं. कुरसी पर चढ़ कर किताबें उतार रही थी कि अचानक हाथ से तीनचार किताबें गिर पड़ीं.

एकदो किताबें जमीन पर अधखुली पड़ी थीं. उन को उठाने के लिए झुकी तो देखा, तीनचार पृष्ठों का एक पत्र पड़ा था. अरे, यह तो जीजाजी का पत्र है जो उन्होंने

दीदी का उदास चेहरा और निरंतर रुलाई देख कर सब यही समझ रहे थे कि शायद वह विदेश जाने से घबरा रही है. लेकिन जब इस बात का रहस्य खुला तो मैं स्तंभित रह गई.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दीदी को इंगलैंड से लिखा था. पत्र पर नजर डालते हुए मैं ने सोचा, 'दीदी का पत्र मुझ को नहीं पढ़ना चाहिए.'

परंतु उत्सुकता हुई पत्र पढ़ने की. मां अभी रसोई में ही थीं. भाभी बंटी को स्कूल छोड़ने गई थीं. जीजाजी के पत्र ने मुझे झकझोर कर रख दिया और अतीत के आंगन में ला कर खड़ा कर दिया.

दीदी हम तीनों में सब से बड़ी हैं. भैया दूसरे नंबर पर हैं. दीदी और मुझ में फर्क भी 12 साल का है. मां और पिताजी को घर में बहू लाने की बहुत इच्छा थी. इसलिए भैया की शादी जल्दी ही हो गई... वैसे भी दीदी की शादी की प्रतीक्षा करते तो भैया कुंआरे ही रह जाते.

उस दिन सवेरे से ही सब लोग काम में लगे हुए थे. पूरे घर की अच्छी तरह से सफाई की जा रही थी. मां और भाभी रसोई में लगी थीं. दीदी को देखने के लिए कार से कुछ लोग दिल्ली से आ रहे थे. वे दोपहर के 12 बजे तक हमारे घर पहुंचने वाले थे. दिल्ली से चलने से पहले उन का 10 बजे के लगभग फोन आ गया था. दीदी नहा धो कर तैयार हो रही थीं.

इस बार दीदी को देखने आने वाले लोग जरा दूसरी ही किस्म के थे. लड़का इंगलैंड में नौकरी करता था. शादी कराने भारत आया हुआ था. और उसे दो हफ्ते से भी कम समय में वापस लौट जाना था.

पिछले पांच वर्षों से दीदी को न जाने कितनी बार दिखाया जा चुका था. हमारे पड़ोस में ही दीदी की एक साथी प्राध्यापिका रहा करती थीं. वह हमेशा ही हमारे घर में होने वाली गतिविधियों से जान जातीं कि कोई दीदी को देखने आ रहा है. हर बार जब निराशा हाथ लगती तो दीदी को उस के सामने लज्जित होना पड़ता था. वैसे वह बेचारी दीदी को कुछ नहीं कहती थीं, परंतु दीदी ही हर बार अपने को हीन और अपमानित महसूस करती थीं.

पिछले कुछ महीनों में तो दीदी ने कई बार घर में काफी क्लेश किया था कि वह भेड़बकरी की तरह नहीं दिखाई जाएगी, परंतु पिताजी की एक डांट के आगे बेचारी झुक जातीं. हां, अपनी जिद, हीन भावना और अपमान के कारण खूब रोतीं.

वे लोग ठीक समय पर ही आ गए थे. उन सब की खूब खातिरदारी की गई. वे खुश नजर आ रहे थे. लड़के के बड़े भैया भाभी, छोटी बहन, मातापिता, दो छोटे भाई और बड़े भाई के तीन बच्चे सभी बैठक में बैठे थे. लड़के की मां, भाभी, छोटी बहन तो पहले ही अंदर जा कर दीदी से मिल चुकी थीं. जिस प्यार से लड़के की मां दीदी को देख रही थीं, उस से तो लगता था कि उन्हें दीदी बहुत पसंद आई हैं.

खाने के पश्चात दीदी को बैठक में लाया गया, जहां सब लोग बैठे थे. लड़के के पिता और बड़े भाई दीदी को बड़े गौर से देख रहे थे. लड़का बेचारा चुप ही था. उस की शायद समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करे? दीदी से आंख मिलाने का साहस नहीं कर पा रहा था. लगभग आधे घंटे बाद लड़के के पिता ने कहा, "इन दोनों को कुछ देर के लिए अकेला छोड़ देते हैं. एकदूसरे से एकांत में कुछ पूछना हो तो पूछ सकते हैं."

उन की बात सुन कर सब लोग वहां से उठ गए.

लगभग 20 मिनट पश्चात दीदी अंदर आ गईं. उन के आने पर लड़के के घर की महिलाएं बैठक में चली गईं. उन्होंने अपने परिवार के पुरुषों को भी वहीं बुला लिया. वे आपस में सलाहमशवरा कर रहे थे. लगभग आधे घंटे के पश्चात लड़के के पिता ने मेरे पिताजी को बुलाया और उन के बैठक में पहुंचते ही कहा, "मुबारक हो, हमें आप की बेटी बहुत पसंद आई है."

पिताजी ने मां और भैया को वहीं बुला लिया. कुछ ही क्षणों में वहां का माहौल ही बदल गया. कुछ देर पहले का तनावपूर्ण वातावरण अब आत्मीयता में परिवर्तित हो चुका था.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

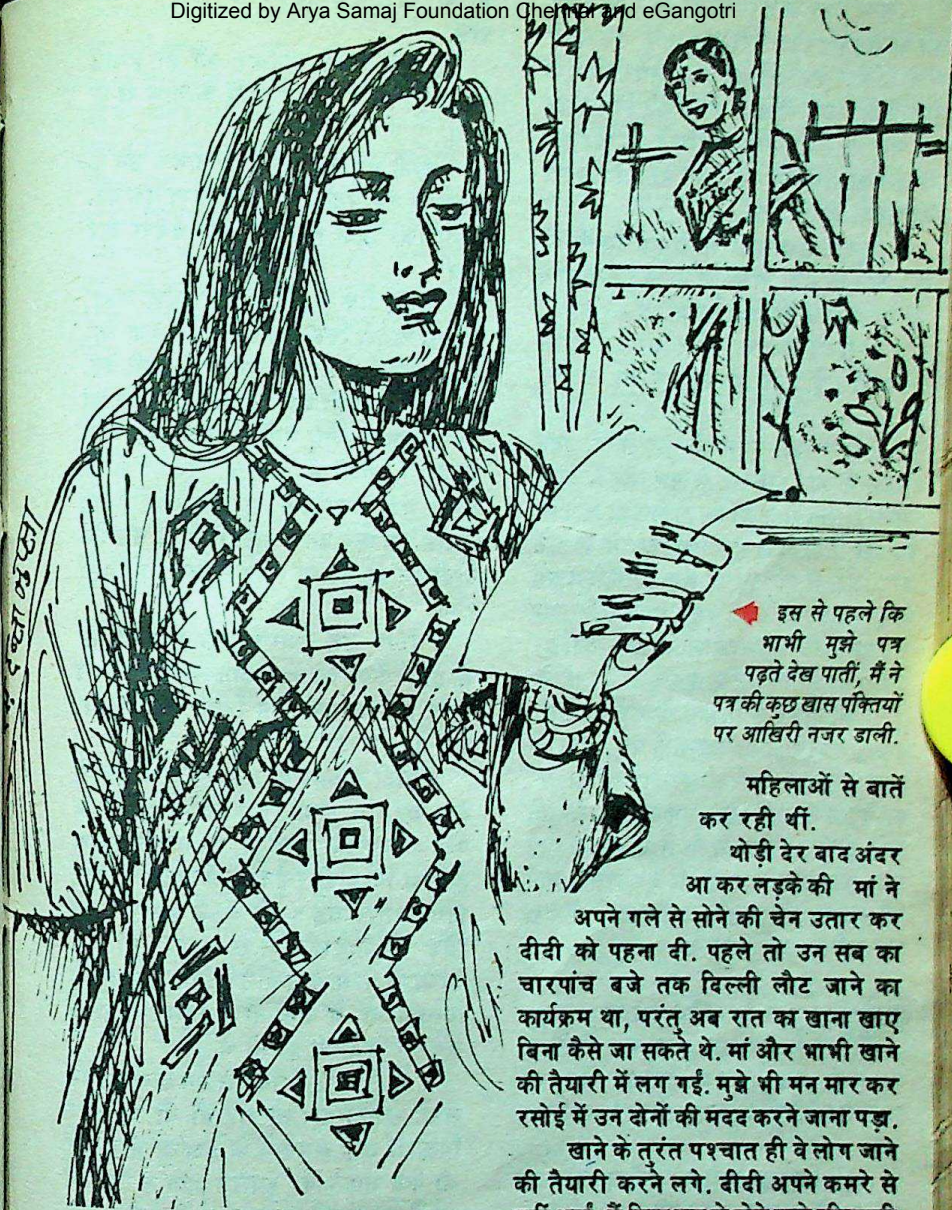

इस से पहले कि भाभी मुझे पत्र पढ़ते देख पातीं, मैं ने पत्र की कुछ खास पंक्तियों पर आखिरी नजर डाली.

जब दीदी ने सुना कि उन को आखिर किसी ने पसंद कर ही लिया है तब उन्होंने चैन की सांस ली. वह लाज की चादर ओढ़े बैठी थीं. बैठक में पिताजी उन लोगों से सारी बातें तय कर रहे थे. मां और भाभी महिलाओं से बातें कर रही थीं.

थोड़ी देर बाद अंदर आ कर लड़के की मां ने अपने गले से सोने की चेन उतार कर दीदी को पहना दी. पहले तो उन सब का चारपांच बजे तक दिल्ली लौट जाने का कार्यक्रम था, परंतु अब रात का खाना खाए बिना कैसे जा सकते थे. मां और भाभी खाने की तैयारी में लग गईं. मुझे भी मन मार कर रसोई में उन दोनों की मदद करने जाना पड़ा.

खाने के तुरंत पश्चात ही वे लोग जाने की तैयारी करने लगे. दीदी अपने कमरे से नहीं आईं. मैं जिद कर के होने वाले जीजाजी को दीदी के कमरे में ले गई. और उन दोनों को अकेले छोड़ दिया, परंतु वे कुछ देर बाद ही बाहर आ गए. उन्होंने दीदी से क्या कहा? यह तो दीदी ने बाद में भी मुझे कुरेदने पर नहीं बताया था.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तीन दिन बाद दीदी और भैया आ कर सगाई की रस्म पूरी कर आए. उन लोगों ने दीदी के लिए साड़ियां और जेवर का एक सेट भेजा. घर में कुछ नजदीकी रिश्तेदार आ गए थे. समय कम था, फिर भी परिवार के सब लोगों की दिनरात की मेहनत से सारी तैयारियां हो ही गईं.

खूब धूमधाम से शादी हुई. किसी को विश्वास ही नहीं होता था कि लड़के वालों ने छः दिन पहले ही हमारे यहां आ कर पहली बार दीदी को देखा था. सवेरे आठ बजे बरात विदा हो गई. दीदी हमारा घर सूना कर गई थीं.

दीदी को जीजाजी अगले ही दिन ब्रिटेन के हाईकमीशन ले गए. उन के लिए वीजा मिलने में कुछ दिन तो लग ही जाने थे. दिल्ली में दीदी से हम मुशकिल से 40 घंटे बाद मिले थे, परंतु ऐसा लगा कि जैसे मुद्दतों के बाद मिले हों. दीदी बहुत थकी थकी नजर आ रही थीं. कुछ उदास भी थीं, आखिर जीजाजी लंबी हवाई यात्रा पर जो जा रहे थे.

जीजाजी के विमान के चले जाने पर हम लोग मोदी नगर रवाना हो गए. दीदी की सास ने तो घर चलने की काफी जिद की, पर मां, पिताजी नहीं माने. एकदो दिन बाद तो भैया दीदी को लिवाने के लिए उन के यहां जाने ही वाले थे. दीदी भी घर जल्दी आने को इच्छुक थीं. उन्होंने अभी अपनी नौकरी से इस्तीफा नहीं दिया था.

दो दिन बाद भैया दीदी को लिवा लाए. घर में जैसे बहार आ गई. दीदी का कालिज जाने का वह आखिरी दिन था. उन्होंने सवेरे ही अपना इस्तीफा लिख लिया था.

वह रिकशा वाले की प्रतीक्षा कर रही थीं, तभी दरवाजे की घंटी बजी. दीदी ने जल्दी से दरवाजा खोला. उन के ही नाम रजिस्ट्री थी. जीजाजी ने ही रजिस्ट्री पत्र भेजा था.

दीदी पत्र को उत्सुकता से खोलने लगीं. उन के हवाई टिकट के साथ एक पत्र भी था. दीदी ने हवाई टिकट पर एक नजर डाली.

"अरे, अगले इतवार की ही हवाई उड़ान है.' मैं ने टिकट दीदी के हाथ से ले लिया.

दीदी पत्र पढ़ने लगीं. अचानक उन के चेहरे का रंग उड़ता सा नजर आया मुझ को. "जीजाजी ठीक हैं न?" मैं ने घबरा कर पूछा.

"हां, ठीक हैं." दीदी ने बस यही कहा. उन का चेहरा बिलकुल पीला पड़ गया था. वह मुझे वहीं छोड़ कर स्नानघर में चली गईं.

मैं जीजाजी का भेजा हवाई टिकट मां को दिखाने के लिए रसोई में चली गई. कुछ ही देर में भाभी भी आ गईं. रिकशा वाला बाहर घंटी बजा रहा था. हम लोग हवाई टिकट देख कर इतने उत्साहित हो गए कि दीदी की अनुपस्थिति का एहसास ही नहीं हुआ.

दीदी जब स्नानघर से निकलीं तो सीधी रिकशा की ओर जाने लगीं. भाभी ने रोका तो बस यही कह दिया, "भाभीजी, मुझे देर हो रही है."

दीदी के चेहरे की बस एक ही झलक मैं देख पाई थी. उन्होंने चाहे भाभी के मन में कोई शक न पैदा किया हो, पर मुझे विश्वास हो गया कि दीदी स्नानघर में जरूर ही रोई होंगी. शायद वह इतनी जल्दी हम सब को छोड़ कर विदेश जाने से घबरा रही थीं. जीजाजी के साथ उन्होंने कितना कम समय बिताया था. वे दोनों तो एकदूसरे के लिए लगभग अजनबी ही तो थे.

दीदी का उसी दिन से मन खराब रहने लगा. दोतीन बार तो रोई भी थीं. मां और पिताजी उन्हें समझाने के अलावा और कर भी क्या सकते थे? इंगलैंड जाने से दो दिन पहले वह अपनी ससुराल चली गईं.

दीदी को हवाई अड्डे पर विदा करने के लिए उन की ससुराल के लोगों के साथ-साथ हम सब भी पहुंचे हुए थे. तब दीदी में पिछले तीनचार दिनों में काफी परिवर्तन सा नजर आ रहा था. विदा लेते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समय दीदी को जेठानी ने उन से कहा, अब तो हमें जल्दी से जल्दी खुशखबरी देना."

दीदी चली गई. हम लोग भी वापस मोदी नगर आ गए. जीजाजी ने दीदी के लंदन पहुंचने का तार उन के वहां पहुंचते ही भेज दिया. तार पा कर घर में सब को बहुत राहत मिली. दीदी का पत्र भी आ गया. मां ने उन का पत्र न जाने कितनी बार पढ़ा होगा. दीदी के जाने के बाद कई सप्ताह तो घर कुछ सूनासूना लगा, परंतु बाद में सब सामान्य हो गया.

जीजाजी और दीदी के पत्र हमेशा नियमित रूप से आते रहते थे. दीदी ने मांपिताजी को तसल्ली दे रखी थी कि उन की बेटी वहां बहुत खुश है. उन को इंगलैंड गए दो साल होने जा रहे थे. मां ने कभी दीदी को भारत आने के लिए नहीं लिखा था. सोचा था, उचित समय आने पर ही आग्रह करेंगी. मां की नजरों में उचित समय मेरी शादी का ही अवसर था, जिस के लिए मांपिताजी दौड़धूप कर रहे थे.

मां ने रसोई से आवाज दी, "सफेदी करने वाले आते ही होंगे...सामान जल्दी से निकाल कर कमरा खाली करो.

"अच्छा मां." मैं ने उत्तर दिया. पता नहीं उसी क्षण मुझे अपनी दीदी पर क्यों इतना स्नेह उमड़ आया. भावावेश में मेरी आंखें भीग गईं. फिर मुझे जीजाजी का ध्यान आया. उन्होंने अपने प्यार से दीदी के अधूरे जीवन में शायद कुछ पूर्णता सी ला दी है. यह तो हम को कभी शायद पता नहीं चल पाएगा कि दीदी वास्तव में खुश हैं या नहीं. परंतु उन के पत्रों से इस बात का जबरदस्त एहसास होता कि जीजाजी उन को बहुत प्यार करते हैं.

भाभी बंटी को विद्यालय छोड़कर घर आ गई थीं. इस से पहले कि वह मुझे जीजाजी का पत्र पढ़ते हुए देख पातीं, मैं ने पत्र की कुछ खास पंक्तियों पर आखिरी नजर डाली. जीजाजी ने स्पष्ट शब्दों में लिखा था कि घर वालों की जिद के आगे झुक कर ही उन्होंने शादी की थी. उन की इस भूल के लिए वह स्वयं ही उत्तरदायी हैं. घरवालों में से किसी को भी नहीं मालूम था कि वह अपनी पत्नी को एक पति का सुख देने में असमर्थ हैं. वह अपनी इस शारीरिक असमर्थता को अपने परिवार वालों के सामने स्वीकार नहीं कर सके. इस के लिए वह अत्यंत दुखी हैं.

जीजाजी के पत्र के छोटेछोटे टुकड़े कर के मैं उसे घर के बाहर कूड़ेदान में फेंक आई थी. ●

लेखकों से निवेदन

प्रकाशनार्थ रचनाओं पर निर्णय लेने में चारछः सप्ताह लग जाते हैं. इस दौरान रचना के बारे में पत्रव्यवहार करने से कोई लाभ नहीं होता क्योंकि हम कुछ भी बताने में असमर्थ होते हैं. हम केवल स्वीकृत रचनाओं का हिसाब रखते हैं, अस्वीकृत का नहीं. स्वीकृत रचनाओं के बारे में सूचना चार से छः सप्ताह में दे दी जाती है.

टिकट लगे लिफाफे के साथ आई अस्वीकृत रचनाएं निर्णय के बाद तुरंत लौटा दी जाती हैं. अन्य अस्वीकृत रचनाएं नष्ट कर दी जाती हैं.

कविताओं और स्तंभों के साथ टिकट लगा पता लिखा लिफाफा न भेजें. छः सप्ताह तक यदि कोई सूचना प्राप्त नहीं होती तो कविताओं और स्तंभों को अस्वीकृत समझ लें. अस्वीकृत की गई कविताएं और स्तंभ लौटाए नहीं जाएंगे. अतः उन की एकएक प्रति अपने पास अवश्य रखें. इस संबंध में कोई पत्र-व्यवहार न करें.

यदि आप किसी ऐसे विषय पर लिखना चाहते हैं जिस में अधिक समय अथवा परिश्रम के लगने की संभावना है तो उस बारे में पूर्व सलाह लेना काफी लाभदायक होता है.

सरिता, संपादकीय विभाग,
ई-3, झंडेवाला एस्टेट, नईदिल्ली-110055.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन्हें भी आजमाइए

● चांदी के गहनों या छोटे बरतनों को 1 किलो पानी में 1 चम्मच नमक, 1 चम्मच सोडा डाल कर उबालें. पांच मिनट बाद सामान निकाल कर साबुन के पानी से धो लें. नर्म कपड़े से पोंछ लें.

● तांबे के सामान को चूने की सहायता से साफ करें. कपड़े को पानी में भिगो कर चूने में लपेटें. और उस से रगड़ कर सामान चमकाएं. फिर पानी से धो लें.

● तामचीनी के सामान को साबुन के घोल में सिरका मिला कर डुबो दें. 15 मिनट बाद बाहर निकाल कर रगड़ कर पोंछें, नहीं तो उस पर धब्बे बन जाएंगे.

● क्रोसियम के सामान को साबुन व नमक के घोल से साफ करें.-सोनिया शर्मा

● अगर थरमस में से बदबू आ रही हो तो छाछ में नमक मिला कर धोएं.

● सर्दियों में प्रायः पैरों की उंगलियां सूज जाती हैं. सरसों के तेल में सेंधा नमक मिला कर गरम करें व रात को सोने से पूर्व यह तेल उंगलियों पर लगा कर मोजे पहन लें. —रीतू जैन

● यदि घर में टमाटर नहीं है और आप की सब्जी या व्यंजन उस के बिना नहीं बन सकता तो उस के स्थान पर थोड़े ताजे दही में चुटकी भर पिसी चीनी व एक बूंद मीठा लाल रंग डाल कर टोमैटो पल्प बन सकता है.

● काटने से पहले प्याज को पानी में डाल दें. 10 मिनट के पश्चात काटने से कड़वा नहीं लगेगा.

● वेजीटेबल करी या मीट करी में नमक या पानी की मात्रा अधिक हो तो उस में ब्रेड के टुकड़े काट कर डाल दें. एक उबाल के बाद दोनों की मात्रा सही हो जाएगी.

● दाल की बड़ियां बनाने के लिए दाल को एक दिन पहले हींग के साथ पिसवाइए, शानदार खस्ता बड़ी बनेगी.

● अंडा फेंटते समय एक चम्मच दही मिलाइए, आमलेट स्वादिष्ट और मात्रा में दोगुना बनेगा.

● हर मसाले में अदरक को भून कर पीसिए, नहीं तो पतीले से लगता रहेगा.

● यदि आप के कुकर की रबर रिंग काम नहीं कर रही तो दूसरे कूकर से बदल कर देखिए, कुकर ठीक काम करने लगेगा. कुकर का ब्रांड और आकार एक होना चाहिए.

● फटे हुए दूध को कभी फेंकना नहीं चाहिए. पकौड़ों का बेसन उस में घोलिए. बहुत बढ़िया और क्रिस्प पकौड़े बनेंगे.

● घर में मैदा कम है तो केक में एक या दो चम्मच ब्रेड का चूरा मिलाने से केक और भी स्वादिष्ट बनेगा.

● जिन को चाय का चसका व आदत हो यदि उन्हें किसी कारण दूध न मिल रहा हो तो वह चाय में नीबू अथवा जलजीरा मिला कर पी सकते हैं.

● यदि बाल रंगने के पश्चात बाल खुरदरे दिखें तो डाई के अंदर एक या दो कतरे तेल मिला देना चाहिए. लाजवाब चमक आएगी बालों में.

● जिन को लहसुन से दुर्गंध अनुभव होती हो और बीमारी के कारण उन्हें खानी हो तो उन्हें किसी फल के साथ खाना चाहिए, पता ही नहीं चलेगा.

—शक्ति मरवाहा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

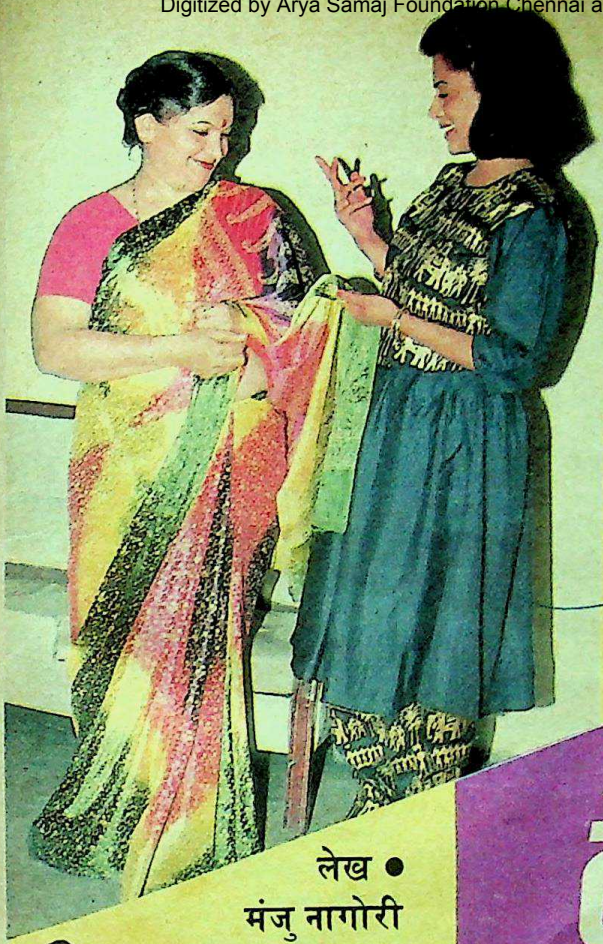

देख पराई चूपड़ी

लेख • मंजु नागोरी

सीमा मेरी पड़ोसन है. वह पढ़ीलिखी है और सरकारी नौकरी में है. पर उस में एक कमी है. किसी को भी अच्छी साड़ी, नया गहना या फिर घर के लिए नई चीज लाते देख कर कुढ़ के पूछेगी, "कहां से आ गया इतना पैसा?"

फिर यहीं बस नहीं होती, वह घर जा कर अपने पति के कान खा लेगी यह पूछ कर, "तुम ये सब क्यों नहीं ला पाते? रमेश ने कैसे ले लिया? तुम से क्यों नहीं होता यह सब? और सब कैसे कर लेते हैं?"

परिणाम यह होता है कि पतिपत्नी की लड़ाई में बच्चे भूखे सोते हैं और फिर घर में बेवजह चारपांच दिन का तनाव छा जाता है.

बहुत पहले मेरे यहां एक महरी काम करती थी. रातदिन मेरे पास ही रहती थी. आगेपीछे कोई था नहीं. इसलिए मेरे घर में ही बनी रहती.

एक बार बच्चों के जन्मदिन पर मैं ने बनारसी काम की भारी साड़ी पहनी. उसे भी सूती साड़ी दी. कहा, "पहन लो, कोरी है, आज बच्चों का जन्मदिन है."

उस समय तो उस ने साड़ी ले ली. पूरा काम भी समेट लिया. पर अगले रोज ही साड़ी मेरे सामने पटक कर बोली.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूसरों की सुखसुविधाओं एवं उपलब्धियों से कुढ़िए मत. ईर्ष्या की आग में जलते रहने से कुछ भी हासिल नहीं होगा बल्कि दूसरों से प्रेरणा लीजिए और वैसा ही अर्जित करने की कोशिश कीजिए अन्यथा दूसरों से आप के संबंध तो बिगड़ेंगे ही, आप का मानसिक संतुलन भी गड़बड़ा जाएगा.

"लो बहू, अपनी साड़ी संभाल लो."

"क्या हो गया?" मैं ने पूछा.

बोली, "मैं यह सूती साड़ी नहीं लेती. तुम्हारे जैसी पहनूंगी."

बड़ा गुस्सा आया मुझे. एक तो बिना मांगे खुद ही साड़ी दे दी. उस का तो गुणगान नहीं. उलटे बराबरी पर उतारू है. फिर उस की मांग तर्कसंगत भी नहीं थी. भला उस बुढ़िया विधवा को मैं वह साड़ी कैसे दे देती, जो उन्होंने मेरे लिए खरीदी थी? कोई देखेगा या सुनेगा तो क्या कहेगा?

मैं ने उसे लाख समझाया. पति महोदय ने भी सीख दी, "तू कहां जाएगी यह साड़ी पहन कर? कोई क्यों देगा तुझे इतनी भारी साड़ी?"

पर वह नहीं मानी. जलीभुनी ही रही. कभी काम करती, कभी नहीं करती. हर वक्त बुड़बुड़ करती रहती. हार कर उसे हटाना ही पड़ा.

संसार में दो परिवारों के रहनसहन, बुद्धिचातुर्य व व्यवहार की बराबरी हो ही नहीं सकती. अपनी बुद्धि व मेहनत से हर व्यक्ति कम या ज्यादा पाता है और वैसी ही सुखसुविधाएं भी भोगता है. दूसरे को फलतेफूलते देख कर कुढ़ना, तनाव पाले रहना, आपसी संबंधों में दरार लाना व्यावहारिकता नहीं है. हां, दूसरे के बुद्धिचातुर्य और मेहनत से प्रेरणा ले कर स्वयं भी वैसा ही कुछ अर्जित करने का प्रयत्न करना जरूर अच्छी बात है. पर "पड़ोस में टी.वी. कैसे आ गया? हमारे यहां क्यों नहीं आया" जैसी बातों को ले कर पति से उलझना, पड़ोसी को बेईमान ठहराना या उस की बुराई करना निहायत नासमझी की बात है.

दूर के रिश्ते की एक चाची हैं. वह अपनी देवरानी के ठाटबाट देख कर सैकड़ों किलोमीटर दूर बैठी भी उसे पानी पीपी कर कोसती हैं. जब भी मिलेंगी, शिकायतों का पुलिंदा खोल कर बैठ जाएंगी. उन्हें भ्रम है कि देवरानी को कहीं गड़ा धन मिल गया है. वह उसे छिपाछिपा कर बरत रही है.

परिणाम यह है कि दो घंटे भी देवरानी के पास सुख से बैठ कर बतिया नहीं पातीं. जितनी देर बैठी रहेंगी, पूछती ही रहेंगी, "यह मकान कैसे बनवा लिया? यहां दालरोटी के लाले हैं, तुम लोग फलमिठाई उड़ा रहे हो. तेरे पास इतना जेवर कैसे हो गया?"

होता यह है कि जितनी देर वह बैठी रहेंगी, खुद को कोसती ही रहेंगी, और देवरदेवरानी के सुख को देख कर आहें भरेंगी. रहरह कर एक ही बात कहेंगी, "एक हम हैं, जिन्होंने कभी दो पल का भी सुख नहीं भोगा. तुझे जाने कैसे इतना सुख मिल गया. तू ही जाने मुझे तो समझ में नहीं आता." या "तुम को लगता होगा कि हम लोग बड़े सुखी हैं. बड़े शहर में घर की जिम्मेदारियों से मुक्त स्वतंत्र रहते हैं. पर हमें पता है कि कैसे रोरो कर जी रहे हैं."

बेचारी देवरानी चुप बैठी सुनती रहती है. कहे भी तो क्या? फिर कुछ कह कर और बात को और तूल दे कर संबंधों को खराब करने से क्या लाभ?

दूर के ढोल सुहावने

दूसरे की संपन्नता, दूसरे की गृहस्थी का सुख, दूसरे के बहूबेटे हर किसी को अपने से बड़ेचढ़े लगते हैं. दूर के ढोल हमेशा ही सुहावने लगते हैं और पराई थाली में घी भी हर किसी को ज्यादा लगता है. पर इन भ्रमों को पाल कर अपना रहासहा सुख खोना न तो समझदारी है, न ही व्यावहारिकता. हां, इन के उत्साह, उमंग और मेहनत की पद्धति से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रेरणा ले कर स्वयं भी आगे बढ़नेउठने का प्रयत्न करना सराहनीय कदम है. पर जहां के तहां बैठेबैठे बस देखदेख कर कुढ़ना जहां अच्छेभले रिश्तों में दरार डाल देता है, वहीं स्वयं को भी मानसिक कष्टों के सिवा कुछ नहीं देता.

मेरे परिवार में एक कम उम्र की स्त्री चौकाबासन करने आती है. वह घर की बहुओं को पहनताओढ़ता देख कर कुढ़ेगी तो नहीं, पर ललकललक कर कहेगी, "ये कड़े तो बड़े सुंदर हैं. तुम मुझे भी बनवा दो. मेरी तनख्वाह में से रुपए काट लेना."

जाहिर है कि कोई एक बार की तनख्वाह में तो सोनेचांदी के कड़े बनेंगे नहीं. इसलिए एक जोड़ी कड़ों के लिए वह कई महीनों तक तनख्वाह नहीं लेती, बल्कि दोचार दूसरे घरों में जहां वह काम करती है, वहां की तनख्वाह भी ला कर कीमत चुकाएगी, ज्यादा मेहनत करेगी. परिणाम यह होगा कि उस की सेहत तो बिगड़ेगी ही, हाथ भी तंग रहने लगेगा. कभी तेल नहीं है, कभी चाय की पत्ती नहीं है. हर चीज की कमी का रोना रोती रहेगी. उसे लाख समझाओ कि

दूसरों की चीजों की प्रशंसा कीजिए लेकिन अपनी कमियों का रोना नहीं. तभी आप अपने मित्रों व रिश्तेदारों में सही स्थान पा सकेंगी.

इतनी मेहनत करती हो, कुछ ढंग का खायापीया करो तो वह कहेगी, "सब ठीक है पर जेवर एक बार बन जाएं तो बन ही जाते हैं, वरना सब पेट के कुएं में समा जाता है."

वह रोतीझींकती और दूसरों के जेवरसाड़ी देखदेख कर मन ही मन में ईर्ष्या की आग में जलती भी जाएगी.

जितनी चादर हो, उतने ही पांव पसारने चाहिए. ताकि बदन उघड़ा न रहे, न ही दुनिया को ताने कसने का मौका मिले. किसी ने सही कहा है कि अपनी मेहनत ही रंग लाती है. दूसरे की तड़कभड़क या महल देख कर अपनी झोंपड़ी को जला देना मूर्खता है.

कुढ़ने और दूसरे की थाली में चिकनीचुपड़ी देख कर ललचाने से झांकने और जलन के सिवा कुछ हासिल नहीं होता. जो सब कुछ समझतेबूझते भी दूसरों की होड़ में जलतेकुढ़ते हैं वे अपना मानसिक संतुलन खो देते हैं. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेख ● अलका कौशिक

फसाद पति के देर से घर आने का

पति दफ्तर के लिए रवाना हो चुके हैं. दीवारों और फरनीचर से घिरी पत्नी अब घर में अकेली रह गई है. कई काम बाकी हैं अभी. रसोई बिखरी है, पूरा घर बेतरतीब पड़ा है, मैले कपड़े स्नानघर में गृहिणी के आने का इंतजार कर रहे हैं. वह झटपट काम में जुट जाती है.

धुलाई व सफाई का सब काम निबट चुका है. 'बस, 12 ही बजे हैं अभी,' वह ठंडी सांस छोड़ती हुई अपनेआप से कहती है. 'चलो थोड़ा समय सिलाईबुनाई में और थोड़ा कपड़ों की इस्तिरी में निकल जाएगा.' गृहिणी ने पहाड़ सा लंबा दिन छोटा करने की जैसे कोई रणनीति तैयार कर ली है.

पति को दफ्तर के लिए विदा करने के बाद दिन गुजारने के लिए क्याक्या उपक्रम रचाती हैं ये पत्नियां. और शाम तो जैसे इन का कोई बहुप्रतीक्षित मेहमान आने वाला है, जिस के स्वागतसत्कार में पलकपावड़े बिछाए रहती हैं. 15-20 मिनट ऊपर हो जाने में तो कोई हर्ज नहीं, शायद बस खराब हो गई हो. हो सकता है 'देर से मिली हो, फिर भीड़ भी तो आजकल खूब बढ़ गई है. क्या मालूम यातायात में ही जाम लग गया हो.' और भी जाने क्याक्या सोच जाती है वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थोडी सी देर में ही. लेकिन इस दौरान भी पति अब आए और तब आए लगा ही रहता है.

लेकिन जब घड़ी की सूइयां आगे सरकने लगती हैं तो एक जोड़ी निगाहें घर की देहरी या बालकनी पर आ जमती हैं. इंतजार का सिलसिला शुरू हो गया है. साढ़े छः बज चुके हैं, फिर सात का संकेत भी घड़ी ने दे दिया है. लो आठ भी बज गए हैं. 'वह' अब भी नहीं आए हैं. हताश कदम अब बालकनी छोड़ कर रसोईघर की तरफ बढ़ जाते हैं. खाने का समय हो गया है. पत्नी अब पति के इंतजार से थोड़ा ध्यान हटा कर दालसब्जी में लगाती है. आटा भी गूंधा जा चुका है.

मगर पति ने अब भी कोई दस्तक नहीं दी, कोई आहट नहीं की. एक घंटा और बीत गया. धारावाहिक का समय भी हो गया. 'वह तो इसे कभी नहीं चूकते तो फिर अब आते ही होंगे' उस ने फिर आशाभरा कयास लगाया.

तभी फोन की घंटी घनघना उठती है. वह चोगा उठाती है. दूसरी तरफ से वही चिरपरिचित वाक्य सुनाई पड़ता है, 'सुनो, आज मुझे आने में थोड़ी देर हो जाएगी.' अब तो पत्नी की खीजभरी झल्लाहट आसानी से समझी जा सकती है. वह फोन पर ही गरज उठती है, "ऐसी भी क्या नौकरी है तुम्हारी. घरपरिवार की कोई चिंता ही नहीं है." फिर थोड़ा नरम हो कर घर पहुंचने का ठीकठीक

पति के देर से घर आने पर पत्नी का बिना मुसकराए नोकझोंक कर अपना रोष प्रकट करना इस समस्या का हल नहीं. ऐसे में एक कारगर नुसखे के रूप में समझौते का रुख अपनाएं तो पति महोदय भी आप की यह शिकायत दूर करने का अवश्य प्रयास करेंगे.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समय पति से पूछती है, "साढ़े 10." डरते हुए जवाब मिलता है. "नहीं 10," पत्नी ताकीद करती है.

उस के बाद फिर इंतजार शुरू हो जाता है. घड़ी 10 भी बचा चुकी है. अब तो घड़ी की टिकटिक दिमाग पर हथौड़े की सी चोट कर रही है. ऐसे में पत्नी को गुस्सा आना लाजिमी है. 'आज खूब नाराज होऊंगी. बोलूंगी नहीं,' उस ने निर्णय कर लिया है.

अंततः 11 बजे दरवाजे पर दस्तक होती है. पति पत्नी से नजर चुराते हुए घर में प्रवेश करता है. पत्नी बगैर मुसकराए, बगैर स्वागत किए रसोईघर में घुस जाती है. वहीं से उस का उलाहना भरा स्वर सुनाई पड़ता है. "खाना है कि खा आए?"

"हां खाना है." जवाब में पति का थका सा स्वर निकलता है.

"जहां इतनी देर लगाई वहां खाना भी खा लिया होता." पत्नी नाराजगी का प्रदर्शन करती है.

उधर पति मन ही मन सोचने लगता है कि आज उसे देर कैसे हो गई. उस ने तो आज दिन भर बड़ी फुरती से काम किया था. फाइलें निबटाते हुए यही सोचा था कि आज घर समय से पहुंच कर पत्नी को चौंका दूंगा. उस के चेहरे पर मेरे जल्दी घर पहुंचने से कितनी संतोष भरी मुसकराहट फैल जाएगी. लेकिन शाखा कार्यालय से अमुक फाइल लाने का आदेश दे डाला था. वह अपनी व्यवसायगत विवशता के सामने दिल मसोस कर रह गया था. बड़े साहब से कैसे कहे कि आज उसे घर जल्दी पहुंचना है, पत्नी को खुश करना है.

प्रायः हर पति और पत्नी की इस से मिलतीजुलती कहानियां हैं. दिन पर दिन बीतते रहते हैं. पति के देर से घर लौटने का सिलसिला आम होता जाता है. पत्नी की झूठमूठ की नाराजगी सचमुच की नाराजगी में बदलने लगती है. पतिपत्नी के बीच खींचतान का दौर चलने लगता है. और महज पति के देर से घर आने का मुद्दा परिवार में खुशहाली का कैंसर बन जाता है.

वंदना एक अतिव्यस्त पत्रकार की पत्नी हैं. स्वयं भी नौकरीपेशा हैं. कहती हैं, "हालांकि मेरी नौकरी और मेरा बच्चा मुझे ऊबने नहीं देते. फिर भी शाम के वक्त मैं 'इन्हें बहुत मिस' करती हूं. कई बार मन होता है सिनेमा, थिएटर जाने का या खरीदारी का लेकिन इन की व्यस्तता के कारण सब कुछ रद्द करना पड़ता है."

गुस्सा नहीं आता आप को? वंदना के पास जैसे सवाल का जवाब पहले से ही तैयार पड़ा था. तुरंत बोलीं, "बहुत आता है पर क्या करें, इन का काम ही ऐसा है. अब तो मैं भी आदी हो गई हूं."

सरिता एक व्यवसायी की पत्नी हैं. वह भी पति के देर से घर आने की बीमारी से त्रस्त हैं. लेकिन बात संभालती हुई कहती हैं, "भई, रोजरोज नाराजगी दिखाने से तो समस्या हल होने वाली नहीं है. घर में फालतू झगड़ा पैदा होता है. इन का तो काम ही ऐसा है, देर हो ही जाती है. वरना क्या इन का खुद का मन नहीं करता है अपनी बीवीबच्चों तक जल्द से जल्द पहुंचने को."

कुछ गृहस्थ तो ऐसे हैं जिन्होंने एकदूसरे की मजबूरियां समझ ली हैं और एकदूसरे को भरपूर सहयोग दे रहे हैं. लेकिन ऐसे जोड़े कम हैं. अधिकांश पतिपत्नी ऐसे हैं जो इस छोटे से दिखने वाले मुद्दे को रबड़ की तरह खींचखींच कर रोज लंबा किए जाते हैं.

पति का देर से घर आना कोई शगल या आदत नहीं है. केवल मजबूरी है तो ठीक है. हां, ऐसी नौकरी का कोई औचित्य नहीं होगा जिस की व्यस्तताओं की वेदी पर परिवार की खुशियां बलि चढ़ाई जा रही हों. उधर अगर पत्नी भी पति के साथ सहयोग करने की बजाय असहयोग आंदोलन करने पर आमादा हो जाए तो उस का पत्नीत्व कैसा?

जब ऐसी स्थिति आ जाए तो जरूरत किसी समझौते या शर्तों की नहीं होती. जरूरत होती है एकदूसरे को ज्यादा से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्यादा समझने की.

दिलीपकुमार एक क्लर्क है. परिवार की आर्थिक स्थिति सुधरे इसलिए वह दफ्तर के बाद समयोपरि काम भी करता है. उस का कहना है, ''मेरी पत्नी मेरी मजबूरी समझती है फिर भी वह रोजरोज जल्दी घर आने की जिद करती है. समझाऊं तो कहती है कि घर की और जिम्मेदारियां भी तो निभाया करो. यह क्या कि हर वक्त पैसा कमाने की होड़ में ही शामिल रहते हो.''

चंद्रशेखर एक प्राइवेट फर्म में स्टेनोटाइपिस्ट है. साढ़े छः बजे उस का दफ्तर छूटता है. कभी कोई जरूरी काम आ जाए तो सातआठ भी बज जाते हैं. फिर शहर के दूसरे कोने पर उस का घर. पहुंचतेपहुंचते अकसर रात के नौ बज जाते हैं. वह कहता है, ''जब घर पहुंचता हूं तो पत्नी दरवाजे पर ही खड़ी मिलती है. मुझ से तो नजरें मिलाते भी नहीं बनता.

''घर का सामान लाना हो या किसी ब्याहसगाई में जाने की तैयारी करनी हो तो भी मेरी पत्नी अकेले ही खरीदारी कर आती है. हां, कभीकभी उस के भी सब्र का बांध टूट पड़ता है तो वह मुझ पर खूब बरसती है.''

यदि पति व पत्नी दोनों एक दूसरे की मजबूरी को समझें और धैर्य रखते हुए एक दूसरे को सहयोग दें तो रोज की किटकिट से निजात मिल सकती है. ▲

पति देर से घर पहुंचता है, जल्दी घर पहुंचने की लाख कोशिश करता है मगर देर हो ही जाती है. वह समझता है कि पत्नी उस की मजबूरी नहीं जान पाती. उधर पत्नी कब तक 'पति की मजबूरी' को सहन करे. नतीजे के रूप में छोटीछोटी तकरारें शुरू हो जाती हैं जो धीरेधीरे बड़ी बनने लगती हैं. रूठने का दौर मनमुटाव में बदल जाता है और मनमुटाव शक या लड़ाई में. और भी पता नहीं कितने दुष्परिणाम इस 'पति के देर से घर आने की बीमारी' से सामने आते हैं—जितने दंपती उतने ही तरह के भिन्नभिन्न दुष्परिणाम.

इलाज बहुत आसान है. पति देर से घर आने को आदत में शामिल न करे और मजबूरी को अपवाद बना रहने दे. दूसरी ओर पत्नी पति के मामले को धैर्य से सुने, मजबूरी समझे ओर तूफान न खड़ा करे.●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुंदरता को उम्र का मुहताज न बनाएं

लेख • तृप्ति वर्मा

हमारे ब्यूटी पार्लर में सिम्मी एक दिन अपनी मां के साथ आई थी. शोख, चुलबुली, इंटर की छात्रा सिम्मी अकसर अपनी सहेलियों के साथ हमारे ब्यूटी पार्लर में आती रहती थी, जिस की वजह से हमारा अच्छा परिचय हो गया था.

उस दिन अपनी भौंहों की थ्रेडिंग तथा बालों की सेटिंग करवाने के बाद सिम्मी अपनी मां से जिद करने लगी कि वह भी अपनी भौंहों की थ्रेडिंग करवा लें. इस के साथ ही वह अपनी मां को फेशियल करवाने के लिए भी उत्सुक थी. मगर सिम्मी की मां पर किशोरी बिटिया के इस प्यार भरे मानमनुहार का कोई असर ही नहीं पड़ रहा था. वह तो अपने ही तर्क दिए जा रही थीं, "बेटा, अब तुम लोग ही करो यह तामझाम. अब मेरी भी कोई उम्र है बनावसिंगार करने की."

संतुलित श्रृंगार प्रौढ महिला को भी गरिमापूर्ण व्यक्तित्व की स्वामिनी बना सकता है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

40-45 की उम्र में श्रृंगार करना अधिकांश महिलाओं को अटपटा लगता है. वे मानती हैं कि अब उन की उम्र बनावश्रृंगार की नहीं रही है. लेकिन सचाई यह है कि यही वह उम्र है जब ढलते चेहरे को आकर्षक व चुस्तदुरूस्त बनाए रखने के लिए श्रृंगार की सब से अधिक जरूरत होती है.

मां की दलीलों के आगे सिम्मी की एक न चली और आखिर वह अपनी मां की भौंहों की थ्रेडिंग कराने की इच्छा मन में ही दबाए अपने घर चली गई.

यह घटना हमारे लिए नई नहीं है. हमारे ब्यूटी पार्लर में अकसर ऐसी किशोरियां आती हैं जो अपने बालों की कटिंग, सेटिंग या भौंहों की थ्रेडिंग करवाने से ज्यादा अपनी मां के विभिन्न सौंदर्य उपचारों के लिए उत्सुक होती हैं. पर उन में से 90 प्रतिशत माताएं सिम्मी की मां के जैसा ही जवाब परोसती हैं कि अब तो उन के नहीं बल्कि उन की युवा बेटी के साजसिंगार के दिन हैं.

अब सवाल यह उठता है कि क्या साजसिंगार की कोई खास उम्र होती है? क्या सौंदर्य सचमुच उम्र का मुहताज होता है? बेशक किशोरियों और युवा लड़कियों में सौंदर्य चेतना की जागृति बड़ी उम्र की महिलाओं की तुलना में बहुत ज्यादा होती है, पर क्या बेटेबेटियों के सयाने हो जाने पर औरतों का अपनी सुंदरता के प्रति पूरी तरह लापरवाह हो जाना उचित है?

घबराइए नहीं, हमारी बातों का यह मतलब हरगिज नहीं कि 40-45 की उम्र में आ कर आप अपने बालों को बेवजह 'ब्वाय कट' करा लें, भड़कीली साड़ियां या पोशाकें पहनें और अपने चेहरे पर दिनरात मेकअप की परत चढ़ाए रखें.

इस उम्र में तो आप का बनावसिंगार ऐसा होना चाहिए जो आप को एक सौम्य और गरिमापूर्ण व्यक्तित्व की स्वामिनी बना दे. अब आप को अपना सौंदर्य बनाए रखने के लिए अपनी कुछ विशेष देखभाल की जरूरत होगी.

त्वचा की देखभाल

40-45 वर्ष की उम्र में आप की त्वचा को ही सर्वाधिक देखभाल की जरूरत होती है. आमतौर पर 35 वर्ष की उम्र के बाद जैसेजैसे उम्र बढ़ती जाती है, वैसेवैसे त्वचा में रक्त का संचार भी कम होने लगता है. इस से त्वचा की कोमलता एवं

मेकअप हलका व सौम्य होना चाहिए वह चेहरे पर लिपापुता नजर नहीं आना चाहिए.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उस का कसाव कम होने लगता है, त्वचा का रंग सांवला पड़ने लगता है और उस की सतह पर झुर्रियां उभर आती हैं.

शरीर में प्रोटीन, विटामिन बी एवं विटामिन सी की कमी से त्वचा में रक्त का संचार ठीक ढंग से नहीं हो पाता, जिस से शरीर एवं चेहरे की त्वचा के ऊतक सिकुड़ कर अंदर की ओर धंसने लगते हैं. इस के परिणामस्वरूप त्वचा की सतह पर झुर्रियां उभर आती हैं.

अतः इन सब बातों से बचने के लिए आप सर्वप्रथम अपने भोजन पर विशेष ध्यान दें. दूधदही, अंडा, दाल, हरी सब्जियां, साग, पनीर, चने एवं मूंग के अंकुरित बीज तथा फलों के रस को भोजन का आवश्यक अंग मान कर इन का अधिक से अधिक सेवन करें. इन के सेवन से आप की त्वचा को संपूर्ण पोषण मिलेगा, उस के ऊतकों एवं मांसपेशियों का पुनर्निर्माण होगा और ढलती उम्र में भी आप की त्वचा कसावदार एवं झुर्रीविहीन बनी रहेगी.

किंतु स्वस्थ एवं संतुलित आहार के अतिरिक्त त्वचा के लिए कुछ बाहरी देखभाल भी आवश्यक होगी. अब आप प्रतिमाह अपना फेशियल अवश्य कराएं. फेशियल को फैशन न मानें. यह सौंदर्य उपचार अधिक उम्र की महिलाओं के लिए बहुत जरूरी है. फेशियल में चेहरे एवं गरदन की विभिन्न चरणों में 15-20 मिनट तक खास ढंग से मालिश की जाती है. इस से चेहरे की त्वचा का रक्त संचार बढ़ता और संतुलित रहता है.

फेशियल के बाद चेहरे पर जो फेस पैक लगाया जाता है, वह त्वचा की सफाई करता है और त्वचा के खुले रोमछिद्रों को बंद कर के उसे कसावदार बनाता है. नियमित फेशियल कराने से त्वचा स्वस्थ, कांतिमय एवं झुर्री-विहीन बनी रहती है.

अभी यदि आप के चेहरे की त्वचा सामान्य अवस्था में है तो आप महीने में एक बार फेशियल करवाएं किंतु यदि आप की त्वचा ढीली पड़ गई है और उस की सतह पर झुर्रियां उभर आई हैं तो आप चारपांच महीनों तक हर 15 दिनों के अंतराल पर ही फेशियल करवाएं और उस के बाद माह में एक बार. बेहतर होगा कि आप इस संबंध में सौंदर्य विशेषज्ञ से भी राय ले लें.

उम्र के चढ़ाव के साथ चेहरे पर आई झुर्रियों व लटकन को फेस पैक से ठीक किया जा सकता है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

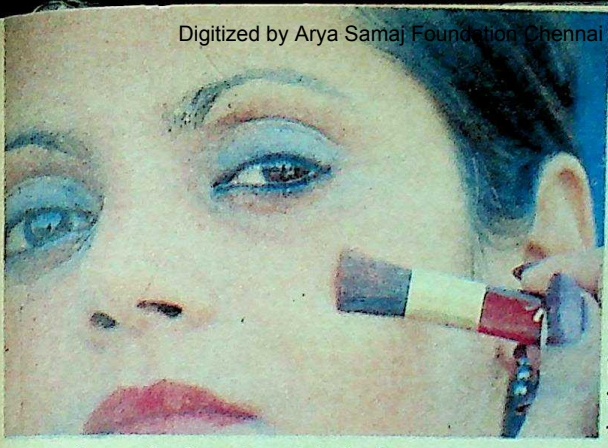

लिपस्टिक का इस्तेमाल तभी करें जब आप को शादी अथवा किसी अन्य समारोह में जाना हो अन्यथा इस से परहेज ही रखें.

बड़ी उम्र की महिलाएं अपने चेहरे की ब्लीचिंग न करवाएं तो अच्छा होगा. ब्लीचिंग के दूरगामी परिणाम त्वचा के लिए हानिकारक होते हैं. इस से त्वचा के रोमछिद्र बड़े हो जाते हैं और त्वचा रूखी हो जाती है. यदि घर में कोई विशेष समारोह हो तो एक बार ब्लीचिंग करा सकती हैं, किंतु इस को नियमित रूप से हरगिज न अपनाएं.

प्रौढ़ावस्था में अधिकांश महिलाएं एक खास समस्या से पीड़ित रहती हैं और वह समस्या है, चेहरे पर और विशेष रूप से गालों पर झांइयों का उभर आना. इन झांइयों के उभरने की वजह शरीर में कैलशियम एवं विटामिन की कमी है. इन के लिए आप डाक्टर से राय ले कर विटामिन ए एवं विटामिन ई की गोलियां लें. साथ ही यह घरेलू उपचार भी आजमाएं. उड़द की सूखी दाल को पीस कर उस का महीन चूर्ण बना कर रख लें. अब दो चम्मच उड़द की दाल का चूर्ण ले कर उस में एक चम्मच गुलाबजल, एक चम्मच ग्लिसरीन और एक चम्मच आमंड आयल मिला कर इस को अच्छी तरह मिश्रित कर के रोज चेहरे पर लगाएं. फिर 15-20 मिनट बाद ठंडे पानी से चेहरा धो डालें.

प्रतिदिन अपने चेहरे को साफ करने के लिए चने का बेसन और क्लींजिंग मिल्क का प्रयोग करें. साबुन इस्तेमाल न करें, यह आप के चेहरे को रूखा कर सकता है. यदि आप की त्वचा तैलीय है तो हफ्ते में दोतीन दिन नीमयुक्त साबुन से अपना चेहरा धो सकती हैं.

इन सब के अतिरिक्त महीने में एक बार हाथों एवं पैरों की देखभाल के लिए मैनीक्योर एवं पेडीक्योर भी अवश्य करें या किसी ब्यूटी पार्लर में जा कर करवाएं.

मेकअप एवं केशसज्जा

अब आप को अपने चेहरे का मेकअप करते समय इस बात का विशेष ध्यान रखना होगा कि मेकअप से चेहरा लिपापुता नजर न आए. आप का मेकअप हलका और सौम्य होना चाहिए.

मेकअप बेस के रूप में फाउंडेशन का इस्तेमाल न करें. इस के बदले कैलोमाइन लोशन का प्रयोग करें.

अपनी भौंहों की थ्रेडिंग किसी ब्यूटी पार्लर में जा कर करवा लें. भौंहों को न ज्यादा मोटी रखें और न अधिक पतला कराएं. अधिक पतली भौंहें अस्वाभाविक लगती हैं जबकि ज्यादा मोटी होने पर आंखों को धंसा हुआ और छोटी प्रदर्शित करती हैं. अतः भौंहों का घनापन संतुलित होना चाहिए.

आंखों का मेकअप करते समय आई ब्रो पेंसिल के हलके स्ट्रोक से भौंहों को संवारें.

यदि आप की आंखें बहुत धंसी हुई हैं तो आई शैडो का इस्तेमाल न करें. किंतु ऐसा नहीं है तो पपोटों पर नेचुरल शेड का पाउडर आई शैडो लगाएं. पेंसिल लाइनर से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सीता निष्कासन

जब से राम ने सीता का परित्याग किया, तभी से भारतीय नारी को दासी, खिलौना और एक ऐसी वस्तु मान लिया गया है, जिसे जब चाहे बेकार समझ कर त्यागा जा सकता है. हमारे देश की नारियों ने सदा ही पुरुषों की कायरता, कामुकता और पापों का बोझ ढोया है, और धर्म के नाम पर उन्हें अपावन जीवन व्यतीत करने पर बाध्य किया गया है.

इस पुस्तक में रामायण के मुख्य पात्रों का विवेचन करते हुए तत्कालीन समाज में नारी का स्थान दर्शाने का प्रयास किया गया है.

अपनी तरह की पहली पुस्तक, जिसे हर हिंदू को अवश्य पढ़ना चाहिए.

मूल्य रु. 6.00

आज ही अपने पुस्तक विक्रेता से लें या आदेश भेजें :

दिल्ली बुक कम्पनी, एम-12, कनाट सरकस, नई दिल्ली- 110001

पूरी राशि अग्रिम आने पर साधारण डाक से कोई डाक खर्च नहीं. वी.पी.पी. से मंगवाने के लिए तीन रुपए अग्रिम मनी आर्डर/पोस्टल द्वारा भेजें. डाक खर्च दो रुपए अतिरिक्त.

आंखों की पतली और हलकी आउट लाईनिंग कर के मस्कारा का एक कोट लगाएं.

ब्लशर का इस्तेमाल न करें. यदि रात को किसी शादी वगैरह के समारोह में जाना हो, तभी पाउडर ब्लशर का एक हलका स्पर्श गालों, ठोढ़ी और माथे पर दें.

होंठों पर नेचुरल शेड का लिप ग्लाम लगाएं और माथे पर एक सुंदर सी बिंदी लगा कर अपने मेकअप को पूर्ण करें.

रोजमर्रा की घरेलू दिनचर्या हो और अगर किसी खास समारोह में न जाना हो तो आप आंखों का मेकअप करते समय आईशैडो एवं मस्कारा का इस्तेमाल न करें तो भी अच्छा रहेगा.

प्रतिदिन नहाने के बाद एवं रात को सोते वक्त अपने चेहरे पर माइश्चराईजिंग लोशन अवश्य लगाएं. उम्र बढ़ने के साथ ही त्वचा की प्राकृतिक नमी कम होने लगती है और माइश्चराईजिंग लोशन बढ़ती उम्र में भी त्वचा की नमी को संतुलित रखता है.

अपनी केशसज्जा में नित नए प्रयोग करने की बजाए आप अपने बालों की सीधीसादी परंपरागत चोटी या ढीला जूड़ा ही बनाएं. यदि आप के बाल छोटे हैं तो उन का पोनीटेल बना सकती हैं. इस के लिए बालों में रबड़बैंड की बजाए 'बैक हेयर क्लिप' लगाएं.

वस्त्र एवं आभूषण

अपने लिए साड़ियों का चयन करते समय शोख एवं भड़कीले रंगों की तथा पारदर्शी कपड़ों की साड़ियों को कभी न चुनें. अब प्योर सिल्क की हलके प्रिंटों वाली साड़ी या साउथ काटन या कोटा व सूती प्रिंटेड साड़ियों को ही प्राथमिकता दें. साड़ियों का रंग हलका किंतु आकर्षक होना चाहिए.

आभूषण भी हलके ही पहनें. कानों में छोटे टाप्स या बालियां, गले में एक नंबी चेन तथा हाथों में मनपसंद चूड़ियां आप के व्यक्तित्व को गरिमा प्रदान करेंगी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चंपक

मौजमस्ती के रंग
चंपक के
संग

छुट्टी विशेषांक

मई (प्रथम) • मई (द्वितीय) • जून (प्रथम)
जून (द्वितीय) 1991

हर बार से अलग

- कई कहानियां
- मनोरंजन की ढेर सारी सामग्री
- इनामी प्रतियोगिताएं
- साथ ही सभी स्थायी स्तंभ

अपने नन्हेमुन्नों को छुट्टियों का सही अर्थ समझाएं.
उन्हें चंपक के चारों छुट्टी विशेषांक अवश्य पढ़ाएं.

चंपक

ज्ञान भी बढ़ाए, इंसान भी बनाए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बच्चों की छुट्टियों को मधुर बनाइए

लेख ●
कनु सभरवाल

दृश्य एक–

"फिर से टिकटों को ... कर बैठ गए. न ... तुम्हें इन से ... मिलता है? जब देखो तब या तो टिकटें या ... सिक्के. कभी कुछ और भी कर लिया करो." लेकिन अम्मां, अब तो..."

"छुट्टियां हैं, यही कहना चाहते हो न, लेकिन छुट्टियों ... यह मतलब तो नहीं कि सारा दिन मस्ती ही करते रहो. तुम्हें ... पढ़ाई खत्म तो नहीं हुई अभी. कुछ दिनों बाद स्कूल फिर से खुल जाए ... मगर मुझे तो लगता है कि तुम्हें यह बात याद ही नहीं. यही हाल रहा ... अगले वर्ष पास भी नहीं हो पाओगे. दिन में कम से कम एकदो घंटे तो स्कूल ... किताबें पढ़ लिया करो, नहीं तो सब कुछ भूल जाओगे." चौथी कक्षा की परीक्षा ... प्रथम आए प्रणय से उस की मां ने कहा.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दृश्य दो–

"जब देखो तब किताबें. मैं तो तंग आ चुकी हूं इन्हें देखदेख कर. अच्छा यह तो बताओ इतना पढ़ कर करोगे क्या? चश्मा तो पहले ही लग चुका है. इसी तरह दिनरात किताबों में डूबे रहे तो आगे चल कर न जाने क्या होगा? स्वयं नहीं, कम से कम किताबों को तो आराम ले लेने दिया करो कभी."

"परंतु अम्मां, ये स्कूल की पुस्तकें तो नहीं हैं. ये तो ज्ञानवर्धक व मनोरंजक कहानियों की किताबें हैं."

"जो भी हो, हैं तो किताबें ही. मैं तो बस इतना कहना चाहती हूं कि छुट्टियों में तो थोड़ा आराम कर लो. पहले भी दिन भर पढ़ते थे, अब भी पढ़ते ही रहते हो. अपने दोस्तों के साथ खेलते क्यों नहीं. सारा दिन खेलो, कूदो, मौजमस्ती करो, मैं तुम्हें कुछ नहीं कहूंगी."

–दृश्य तीन–

"तुम लोगों की समझ में क्यों नहीं आता? सौ बार कह चुकी हूं कि इस तरह शोरशराबा, मारपिटाई मत किया करो. मगर तुम हो कि सुनते ही नहीं." सुनीता ने अपने 10 व 12 वर्ष के बच्चों से कहा.

"जिस दिन से तुम्हारी छुट्टियां हुई हैं मेरी तो मुसीबत आ गई है. सारा दिन घर ठीक करते हुए ही निकल जाता है. शोरगुल से जो सिरदर्द रहता है वह अलग. मैं पूछती हूं कि तुम बाहर जा कर क्यों नहीं खेलते? बाकी बच्चे भी तो बाहर आंगन में या पार्क में खेलते ही हैं लेकिन तुम नहीं खेलोगे. तुम्हें तो शायद घर में रह कर अपनी मां को दुखी करने में ही आनंद मिलता है." सुनीता खीज भरे स्वर में बुड़बुड़ाती रही.

दृश्य चार–

"कहां से आ रहे हो तुम दोनों? कड़क कर रेणु ने पूछा.

"यह समय है आने का? कितनी बार समझाया है कि पांच बजे से पहले घर वापस आ जाया करो. मगर तुम दोनों नेतोआजकल

परीक्षाओं की समाप्ति के बाद बच्चे स्वच्छंद तथा मस्त रहना चाहते हैं. इसलिए बच्चों की मनोदशा समझते हुए उन्हें मौजमस्ती करने दीजिए, लेकिन उस की सीमाएं निर्धारित कर इस नियंत्रित छूट से बच्चों की छुट्टियां अधिक आनंदवर्धक व रमणीय बन जाएंगी और आप की सिरदर्दी भी दूर हो जाएगी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

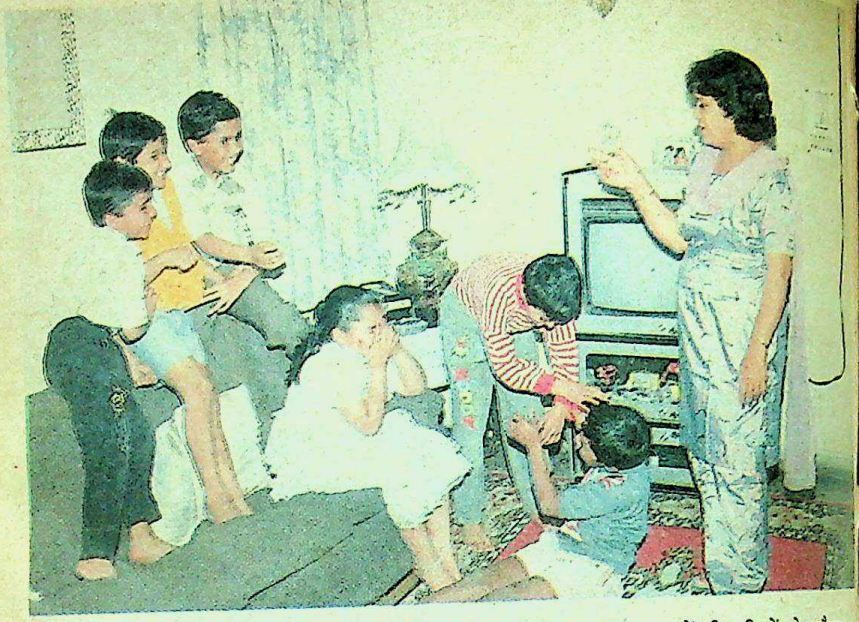

डांटफटकार कर बच्चों की छुट्टियों को कसैला नहीं बल्कि नियंत्रित छूट दे कर आनंदमय बनाइए.

सुनना ही बंद कर दिया है. छुट्टियां क्या हुईं, तुम्हारा तो दिमाग ही खराब हो गया है. जब देखो तब घर से नदारद. सुबह पार्क में तो दोपहर को पिंकी के घर, शाम को शारदा के यहां तो रात को अर्चना दीदी के घर. अपने घर को तो तुम ने होटल समझ रखा है जहां तुम दोनों भाईबहन सिर्फ खाना खाने व सोने के लिए पधारते हो.'' व्यंग्य व रोष भरे स्वर में रेणु ने कहा.

ये दृश्य न तो किसी नाटक से लिए गए हैं और न ही किसी दूरदर्शन धारावाहिक के लिए लिखे गए हैं. ये तो यथार्थ के वे दृश्य हैं जो मेरे, आप के या पड़ोसियों के घरों में छुट्टियों के किसी भी दिन, किसी भी समय देखे जा सकते हैं. और ऐसा नहीं कि यह सब कुछ गिनेचुने घरों में ही होता है. इन में से कोई भी घटना या फिर ऐसी ही कोई अन्य घटना कभी भी, किसी भी घर में मांबाप और बच्चों के बीच जन्म ले सकती है. ऊपर लिखे चारों दृश्य तो एक अजीब परिस्थिति का केवल प्रतिनिधित्व करते हैं. उस परिस्थिति व समस्या का जो सर्वव्यापी है.

जी हां, यह एक समस्या ही तो है क्योंकि इस का कोई सरल समाधान जो नहीं. आप किसी भी दृश्य व घटना को ले लीजिए उस के दोनों मुख्य पात्रों अर्थात मांबाप व बच्चों में हमेशा विरोध ही नजर आता है. छुट्टियों का क्या अर्थ होता है व छुट्टियों में क्या करना चाहिए, इस विषय पर दोनों पक्षों के विचार अकसर एकदूसरे के विपरीत होते हैं. बच्चे कुछ करना चाहते हैं लेकिन मातापिता कुछ और ही करवाना चाहते हैं. अब चूंकि मातापिता बड़े होते हैं और घर में उन की ही चलती है इसलिए होता वही है जो वे चाहते हैं.

ऐसा होने के बावजूद समस्या समाप्त नहीं होती. उन घरों में जहां बच्चे इस विषय पर मातापिता के विचारों से सहमत नहीं होते और उन का कहना सहज ढंग से नहीं मानते, डांटडपट व मारपीट की नौबत आ जाती है. इस से बच्चों में उद्दंडता पैदा हो सकती है. जिन घरों में बच्चे बिना किसी आनाकानी के अपने मातापिता का कोई भी आदेश चुपचाप मान लेते हैं वहां भी बच्चे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सहज नहीं रहते. बाहर से तो वे शांत नजर आएं परंतु उन के हृदय व मन में अवश्य ही कुछ ऐसे विचार आएंगे जिन से वे अपने मातापिता को तानाशाह व दोषी मानते हों. ऐसे विचारों का पनपना वास्तव में खुले विद्रोह से कहीं अधिक घातक हो सकता है.

समस्या को स्वीकारें

बच्चों की छुट्टियों का तीसरा दिन था. शाम के समय मेरा 11 वर्षीय बेटा, जो अपनी आयु के हिसाब से कुछ अधिक ही परिपक्व व समझदार है, मेरे पास आया और कहने लगा, "मां, अपने घर वापस कब चलोगी?"

"क्यों पिताजी की याद आती है क्या?" मैं ने हंस कर पूछा.

"हां आती तो है परंतु मैं इस कारण वापस जाने के लिए नहीं कह रहा."

"तो फिर क्या बात है?"

"यहां छुट्टियों का मजा नहीं आ रहा. इस से अच्छा तो अपने घर में ही था."

"क्यों क्या हुआ?" मैं ने पूछा.

"यहां तो हर काम एक निश्चित ढंग से और बंधे हुए समय के अनुसार करना पड़ता है. उस पर भी कितनी ही हिदायतें व आदेश. यह मत करो, वह मत करो, बाहर धूप में मत जाओ, मिट्टी में मत खेलो कपड़े गंदे हो जाएंगे, बैठ कर खाओ, खड़े हो कर दूध मत पीओ, ऊंची आवाज में मत बोलो, अपने भाई से झगड़ा मत करो..."

"इस में बुरा मानने की क्या बात है? घर के बड़ेबूढ़े तुम्हें अच्छी बातें ही तो सिखाते हैं." मैं ने कहा.

"मैं ने कब कहा कि ये बातें बुरी हैं लेकिन छुट्टियों में हमें भी तो कुछ छूट होनी चाहिए." इतना कह कर अकुल चुप हो गया.

कुछ देर बाद साहस बांध कर उस ने फिर कहा, "कल की बात है मां. मैं सुबह देर तक सोया रहा. दूध का गिलास हाथ में लिए अम्मां जी आईं और मुझे उठा कर कहने लगीं "कुंभकर्ण की तरह सारा दिन सोते रहना सेहत के लिए अच्छा नहीं होता. अब तुम ही बताओ मां, छुट्टियों में देर से उठना गलत है क्या? विद्यालय जाने के लिए तो हर रोज सुबह पांच बजे उठना ही पड़ता है."

अकुल की बातों ने मुझे यह सोचने पर मजबूर कर दिया कि छुट्टियों का सही अर्थ क्या है, इस के मायने क्या हैं? कुछ प्रश्न लगातार मेरे दिमाग में घूम रहे थे. जैसे, छुट्टियों को ले कर मातापिता व बच्चों में तनाव क्यों पैदा होता है, बच्चे यह क्यों समझते हैं कि वे कोई भी काम कर सकते हैं, उन्हें कोई रोकेटोके नहीं? मातापिता क्यों बच्चों की छुट्टियों को सिरदर्दी व मुसीबत समझते हैं?

बहुत सोचविचार के बाद मैं इस निष्कर्ष पर पहुंची कि बच्चों की छुट्टियों के विषय में हमारी सब की धारणा ही गलत है. हर कोई इसे अपनी मरजी व आवश्यकता अनुसार अर्थ देता है. वास्तव में ऐसा होना नहीं चाहिए. बच्चों की छुट्टियों का अर्थ मातापिता और बच्चों सभी की दृष्टि में स्पष्ट व एक ही होना चाहिए और वह है: विद्यालय की छुट्टी व दिनचर्या में परिवर्तन.

जब बच्चे विद्यालय जाते हैं तब उन की दिनचर्या एक सांचे में ढली होती है. सुबह उठ कर तैयार होने से ले कर विद्यालय जाने, वापस आने, खेलने व विद्यालय का काम करने तथा सोने तक के सभी कार्य पंक्तिबद्ध रूप में घड़ी की सूइयों की गति के हिसाब से करने पड़ते हैं. इस नीरस नित्यक्रम से तंग आए बच्चे छुट्टियों का इंतजार बड़ी बेसब्री से करते हैं. इसी लिए यह आवश्यक है कि छुट्टियों में वे इस नित्यता से हट कर अपनी इच्छानुसार कुछ कर सकें और अपने ढंग से कुछ दिन मौजमस्ती कर सकें.

इस संदर्भ में एक प्रश्न उठता है कि क्या बच्चों को छुट्टियों में पूरी ढील व पूर्ण आजादी दे देनी चाहिए? क्या उन पर कोई रोकटोक न लगाएं. उन्हें अपनी मनमानी करने दें? जी नहीं, ऐसा करना भी गलत होगा. बच्चे तो आखिर बच्चे ही हैं. उन्हें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गलतसही का ज्ञान तो होता है लेकिन गलतसही की सीमा का अनुमान नहीं होता.

इसलिए आवश्यक है कि उन्हें सीमित व नियंत्रित छूट ही दी जाए जिस से वे छुट्टियों का आनंद तो उठा सकें लेकिन कोई भी गलत काम न करें.

छुट्टियों के आरंभ में ही इस विषय पर अपने बच्चों के साथ स्पष्ट रूप से बातचीत कर लेना उचित है. इस से आप बच्चों से यह जानकारी प्राप्त कर सकते हैं कि वे क्या करना चाहते हैं. फिर आप उन के इच्छित कार्यों पर अपनी प्रतिक्रिया प्रकट कर सकते हैं तथा उन्हें इस बात से अवगत करा सकते हैं कि वे क्याक्या कर सकते हैं और क्या नहीं. जहां तक संभव हो, उन्हें यह अवश्य बताइए कि आप ने किसी कार्य को करने पर रोक क्यों लगाई है. चूंकि बच्चे स्वभाव से समझदार व आज्ञाकारी होते हैं इसलिए सही ढंग व प्यार से समझाने पर समझ जाते हैं.

दिनचर्या की ही बात ले लीजिए. छुट्टियों में बच्चों के देर तक सोने पर आप को कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए. अगर वे चाहें तो उन्हें नाश्ता नहाने से पहले दिया जा सकता है लेकिन दांत साफ किए बगैर हरगिज नहीं. इसी प्रकार वे सुबहशाम घर में व बाहर कहीं भी खेल सकते हैं लेकिन दोपहर की धूप में व शाम के धुंधले में घर से बाहर जा कर खेलने की छूट उन्हें कदापि नहीं मिलनी चाहिए. उन्हें दोस्तों के घर जा कर खेलने व अपने दोस्तों को घर बुलाने की छूट भी मिलनी चाहिए. छुट्टियों में उन्हें रात को देर तक टेलीविजन या वीडियो पर कोई भी कार्यक्रम या पिक्चर देखने की अनुमति होनी चाहिए लेकिन बहुत देर तक नहीं.

छुट्टियों में पढ़ाई

छुट्टियों में पढ़ाई एक ऐसा विषय है जिस पर कोई एक राय उपलब्ध नहीं. यहां तक कि शिक्षा विशेषज्ञ भी इस विषय पर अलगअलग विचार रखते हैं. इसी कारण कुछ विद्यालयों में तो छुट्टियों का काम दिया जाता है तथा कुछ में नहीं. अतः उचित यही होगा कि इस विषय में आप वही करें जैसा कि आप के बच्चे के विद्यालय वाले चाहते हों.

अगर बच्चे को गृहकार्य मिला हो तो इस बात का ध्यान रखें कि वह एक या दो दिन में ही पूरा काम न निबटा दे. ऐसा करने से वह उद्देश्य पूरा नहीं होगा जिसे ध्यान में रखते हुए बच्चों को छुट्टियों का काम दिया जाता है लेकिन एकदम से दूसरी दिशा में जाना भी उचित नहीं होगा. बच्चों को प्रतिदिन नियमपूर्वक बैठ कर पढ़ने के लिए भी मत कहिए. अगर किसी कारणवश या जानबूझ कर आप का बच्चा किसी दिन नहीं पढ़ता तो इस बात को नजरअंदाज कर दीजिए, उसे डांटिए मत.

अंगरेजों के जमाने में फौज में एक नियम था, जिस का नियमित रूप से पालन होता था. वर्ष में हर एक को दो महीने की अनिवार्य छुट्टी पर भेजा जाता था. आराम और पुनः बल व स्वास्थ्य प्राप्ति के लिए दस महीनों की सख्त व अनुशासित नौकरी के बाद ही यह छुट्टी सैनिकों को एक बार फिर से शारीरिक व मानसिक रूप से जागरूक व तैयार करने में बहुत उपयोगी समझी जाती थी.

देखा जाए तो बच्चों की तुलना सैनिकों से करना असंगत नहीं होगा. घर और विद्यालय के अनुशासन में बंधे बच्चों पर जब पढ़ाई का जोर पड़ता है तो वह स्थिति उन के लिए युद्धभूमि से कम नहीं होती. इसलिए वार्षिक परीक्षाओं की समाप्ति पर जब वे आजाद, मस्त व स्वच्छंद रूप से रहना व खेलना चाहते हैं तो यह सर्वथा अनुचित नहीं. अतः बच्चों की मनोदशा को समझते हुए हमें चाहिए कि छुट्टियों में हम उन्हें पूर्ण रूप से मौजमस्ती करने दें ताकि उन की पिछले वर्ष की थकावट दूर हो और वे आने वाले वर्ष की पढ़ाई के लिए मानसिक रूप से तैयार हो सकें.

आप देखेंगे कि इस नियंत्रित छूट से बच्चों की छुट्टियां और भी अधिक आनंदवर्धक व रमणीय बन जाएंगी और आप की सिरदर्दी भी खत्म हो जाएगी. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

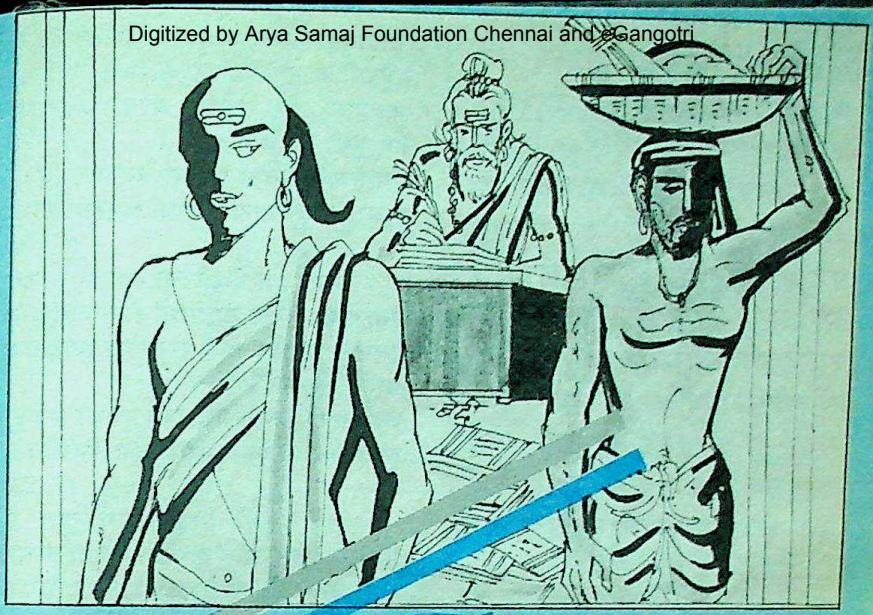

मनुस्मृति ब्राह्मणों का रक्षा कवच

लेख • नास्तिक

वर्तमान युग में सवर्ण हिंदुओं, विशेषकर ब्राह्मणों द्वारा यह कहा जा रहा है कि शासकीय सेवाओं तथा शासकीय लाभों से उन्हें अनुचित रूप से वंचित रखा जा रहा है. शासन उन के साथ भेदभाव बरत रहा है. उन्हें नीचा गिरा रहा है.

पर वे सवर्ण हिंदू तथा ब्राह्मण यह भूल जाते हैं कि वे स्वतंत्रता से पूर्व हजारों वर्षों तक राजाओं द्वारा प्रदत्त समस्त सुखसुविधाएं बिना परिश्रम व पुरुषार्थ किए भोगते रहे. ब्राह्मणों ने तीनों वर्णों—क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र को अपनी तर्जनी पर नचाया और स्वयं को पुजवाया.

उस का साक्षात प्रमाण मनु रचित 'मनुस्मृति' है. उस मनुस्मृति को ब्राह्मणों का 'रक्षा कवच' कहा जाए तो कोई अत्युक्ति नहीं होगी. 'मनुस्मृति' के कुछ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनुस्मृति में ब्राह्मणों के लिए किए गए एकतरफा न्यायविधान के परिणामस्वरूप आज शूद्रों और ब्राह्मणों के बीच छुआछूत की गहरी खाई विद्यमान है. इसी वजह से जाति के आधार पर अलग राज्य व देश की मांग भी उठने लगी है. यदि समय रहते ही मनुस्मृति के विधानों के खोखलेपन को दूर नहीं किया गया तो वह दिन दूर नहीं, जब ब्राह्मणों का यह रक्षाकवच उन के लिए मृत्यु कवच बन जाएगा.

उद्धरणों को पढ़ने मात्र से ज्ञात हो जाएगा कि मनु महाराज ने ब्राह्मणों की सेवा, सुरक्षा के लिए क्याक्या नहीं किया.

'मनुस्मृति' के अनुसार राजा को यह दायित्व सौंपा गया है कि वह अपना राजकार्य तो करे, मगर सब से पहले वह ब्राह्मण का दर्शन, पूजन करे.

ब्राह्मणान्पर्युपासीत प्रातरुत्थाय पार्थिवः,
त्रैविद्यवृद्धान्विदुषस्तिष्ठेत्तेषां च शासने.
(7/37)

अर्थ : राजा प्रातःकाल उठ कर ऐसे ब्राह्मणों का, जो ऋग्वेद, यजुर्वेद तथा सामवेद को अर्थ सहित सत्योचित रीति से जानते हों, दर्शन व पूजन करे.

वृद्धांश्च नित्यं सेवेत विप्रान्वेदविदः शुचीन्,
वृद्धसेवी हि सततं रक्षोभिरपि पूज्यते.
(7/38)

अर्थ : अपने वृद्धों तथा वेदज्ञाता वृद्ध ब्राह्मणों की सेवाशुश्रूषा नित्य राजा को करनी चाहिए. इस से राजा को शत्रु लोग भी पूजते हैं.

स्वराष्ट्रं न्यायवृत्तः स्याद्भृशदंडश्च शत्रुषु,
सुहृत्स्वजिह्मः स्निग्धेषु ब्राह्मणेषु क्षमान्वितः.
(7/32)

अर्थ : अपने राज्य में न्यायानुसार चले, शत्रुओं को कठिन दंड दे, सुहृदयी व शुभचिंतक के साथ दया का व्यवहार करे तथा अल्प अपराधी ब्राह्मणों को क्षमा करे.

संग्रामेष्वनिवर्तित्वं प्रजानां चैव पालनम्,
शुश्रूषा ब्राह्मणानां च राज्ञां श्रेयस्कर परम्.
(7/88)

अर्थ : युद्ध में धीरता धारण करना, प्रजा पालन करना, ब्राह्मणों की सेवाशुश्रूषा करना– ये तीन कार्य राजा को सर्वाधिक आनंद देने वाले हैं.

आवृत्तानां गुरुकुलाद्विप्राणां पूजको भवेत्,
नृपाणामक्षयो ह्येष निधिर्ब्राह्मोऽभिधीयते.
(7/82)

अर्थ : जो ब्राह्मण गुरुकुल से विद्याध्ययन समाप्त कर अपने पिता के घर आए, राजा उस का पूजन करे. वह ब्राह्मण ज्ञान का अक्षयकोष है.

अब दान के विषय में भी देखिए–मनु ने कहा है कि ब्राह्मण मूर्ख क्यों न हो, उसे भी दान दिया जाए :

सममब्राह्मणे दानं द्विगुणं ब्राह्मणब्रुवे,
प्राघीते शतसाहस्त्रमनंतं वेदपारगे.
(7/85)

अर्थ : ब्राह्मण के अतिरिक्त क्षत्रिय आदि को जितना दान दे, उतना ही मिलता है. मूर्ख ब्राह्मण को देने से दोगुना मिलता है. वेद की एक शाखा पढ़े हुए को देने से लाख गुना मिलता है तथा समस्त वेदपरागामी (पढ़े हुए) को देने से अनंत फल मिलता है.

मनु ने धूर्त ब्राह्मणों को और अधिक आलसी व अकर्मण्य बनाने के लिए राजा को आदेश दिया है कि वह भोग की वस्तु तथा धन अवश्य दान करे :

यजेत राजा क्रतुभिर्विविधैराप्त दक्षिणैः,
धर्मार्थं चैव विप्रेभ्यो दद्यादभोगांधना निच.
(7/79)

अर्थ : राजा विविध यज्ञों को भले ही दक्षिणा दे कर करे, परंतु ब्राह्मणों को भोग सामग्री (गृह, शैया, गहने, अन्न,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

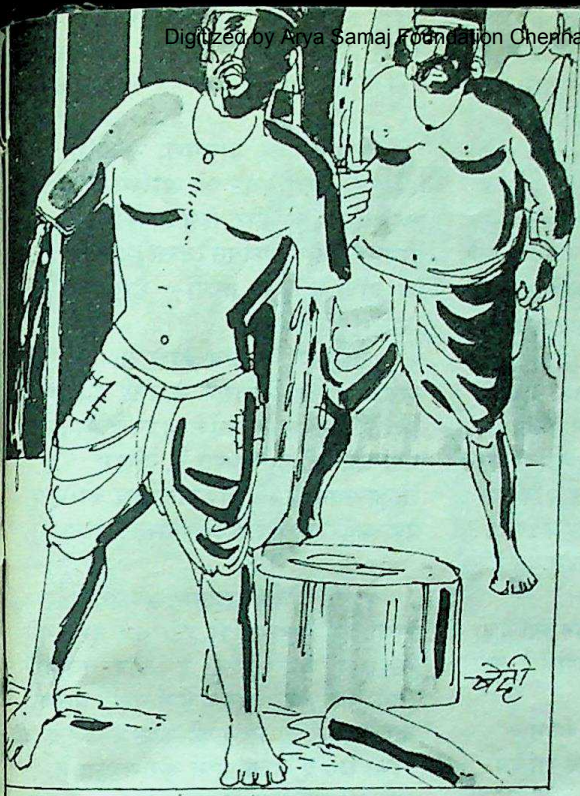

मनुस्मृति के अनुसार यदि कोई शूद्र ब्राह्मण के शरीर के किसी भी अंग का स्पर्श कर ले तो उस के दोनों हाथों को कटवा देना चाहिए. आखिर क्यों?

कुछ उद्धरण :

पंचाशद् ब्राह्मणो दंड्यः क्षत्रियस्याभिशंसने, वैश्ये स्यादर्धपंचा-शच्छूद्रे द्वादशको दमः.

(8/268)

अर्थ : यदि ब्राह्मण किसी क्षत्रिय को अपशब्द कहे तो उसे 50 पण दंड दे; वैश्य को कहे तो 25 पण दंड दे, और यदि शूद्र को कहे तो 12 पण दंड दे.

और यदि कोई शूद्र किसी ब्राह्मण को अपशब्द कहे, मारपीट करे तो उस के लिए यह विधान है :

नामजातिग्रहं त्वेषामभिद्रोहेण कुर्वतः,
निक्षेप्योऽयोमयः शंकुर्ज्वलन्नास्ये दशांगुलः.

(8/271)

अर्थ : शूद्र, 'अरे, ब्राह्मण तू नीच' ऐसा अपशब्द ब्राह्मणादि, द्विज जातियों के नाम तथा जाति का सशब्द उच्चारण करे तो उस के मुंह में तप्त (गरम) लोहे की 10 अंगुल की कील ठोकनी चाहिए.

येन केनचिदङ्गेन हिंस्याच्चेच्छ्रेष्ठ मंत्यजः,
छेत्तव्यं तत्तदेवास्य तन्मनोरनुशासनम्.

(8/279)

अर्थ : यदि अंत्यज (चांडाल, शूद्र) अपने जिस अंग (हाथ या पांव) द्वारा द्विज जातियों (ब्राह्मण आदि) को मारे तो उस का वह अंग ही काट डालना चाहिए.

केशुषु गृह्णीतो हस्तौ छेदयेद विचारयन्,
पादयोर्दाढिकायां च ग्रीवायां वृषणेषु च.

(8/283)

अर्थ : यदि कोई शूद्र ब्राह्मण के

वस्त्रादि) व धन दान करे.

उक्त उद्धरणों से स्पष्ट प्रतीत होता है कि मनु महाराज ने राजाओं (क्षत्रिय) से ब्राह्मणों की सेवाशुश्रूषा करवाई, उन्हें पुजवाया, सभी प्रकार की सुखभोगी सामग्री दान में दिलवाई. जब राजा उस समय ब्राह्मण के दर्शन, पूजन करता होगा तो अन्य वर्णवालों को भी बाध्य हो कर ब्राह्मण को पूजना पड़ा होगा, उसे देवतुल्य माना होगा.

शूद्रों हेतु कठोर दंड विधान

दंड विधान के विषय में भी मनु महाराज ने बड़ा पक्षपात किया है. ब्राह्मण को कम, सरल तथा शूद्र को भयंकर पीड़ादायक दंड देना बताया है. उन्होंने दुनिया के समस्त न्यायाधीशों तथा विधिवेत्ताओं को पीछे छोड़ दिया है. देखिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाल, दाढ़ी, गला, अंडकोष पकड़ या स्पर्श करे तो उस के दोनों हाथों को कटवा देना चाहिए. राजा उस को कष्ट होने का विचार नहीं करे.

यदि कोई शूद्र, ब्राह्मण के साथ एक आसन पर बैठ जाए तो उस बेचारे के लिए कितना निम्न, निकृष्ट दंड देने को कहा गया है :

सहासनमभिप्रेप्सुरुत्कृष्टस्यापकृष्टजः
कट्यां कृतांङ्को निर्वास्यःस्फिचं वास्यावकर्तयेत्.
(8/281)

अर्थ : यदि शूद्र श्रेष्ठ पुरुषों (ब्राह्मण, क्षत्रिय) के साथ एक आसन पर बैठने की इच्छा करे तो उस की कमर चिह्नित कर, दाग दे कर राज्य से निकाल दे अथवा उस के नितंब को कुछ कटवा दे, जिस से चिह्न तो बन जाए, परंतु वह मरे नहीं.

कोई शूद्र कितना ही विद्वान क्यों न हो जाए वह ब्राह्मण को धर्म उपदेश न दे, नहीं तो यह दंड मिलेगा :

धर्मोपदेशं दर्पेण विप्राणामस्य कुर्वतः
तप्तमासेचयेत्तैलं वक्त्रे श्रोत्रे च पार्थिवः.
(8/272)

अर्थ : जो शूद्र अहंकारवश यह समझे कि मैं विद्वान हूं, ब्राह्मणों को धर्म का उपदेश दे तो राजा उस के मुख और कान में तप्त तेल डाले.

इस का तात्पर्य यह है कि शूद्र कभी ज्ञानी होने का विचार न करे. ब्राह्मणों की बराबरी नहीं करे और करे, तो वह कठोर दंड भोगे. यह नितांत निंदनीय है, सरासर अन्याय है.

क्षत्रियों को भय

मनु महाराज ने ब्राह्मणों को क्षत्रियों (राजाओं) से पुजवाने, उन की सेवा, सुरक्षा करने का नियम बताया व आज्ञा तो दी ही, साथ ही उन को भय भी दिखाया कि वे ब्राह्मणों को कठिन समय में भी न सताएं, उन्हें अपने अधीन न करें क्योंकि वे अग्नि देवता के समान हैं. उन को सताने से नाश हो सकता है. देखिए निम्न उद्धरण :

यः कृतः सर्वभक्ष्योऽग्निपेयश्च महोदधिः,
क्षयी चाप्यायितः सोमः को न नश्येत्प्रकोप्यतान्.
(9/314)

अर्थ : जिन ब्राह्मणों ने अग्नि को सर्वभक्षी, महासागर को खारा (नमकीन) तथा चंद्रमा को कोढ़ रोगवाला किया, उन ब्राह्मणों को जो कुपित (दुखी) करेगा, उस का नाश अवश्य होगा– ऐसा क्षत्रिय (राजा) स्मरण रखें.

ब्राह्मण को जब क्रोध आ जाए तो राजा को वह सिंहासन से हटा सकता है और विद्वान (नास्तिक) से हारने के बाद उसे मूर्ख घोषित कर सकता है. देखिए :

लोकानन्यान्सृजेयुर्ये लोकपालांश्च कोपिता,
देवान्कुर्युरदेवांश्च कः क्षिण्वंस्तांसमृध्नुयात्.
(9/315)

अर्थ : जो ब्राह्मण क्रोधवश एक राजा को सिंहासन से हटा कर दूसरे को सिंहासन पर बिठा दे और विद्वानों (नास्तिकों) को शास्त्रार्थ में मूर्ख प्रमाणित कर दे, उस ब्राह्मण को कष्ट दे कर कौन राजा धन व राज्य प्राप्त कर सकता है.

यानुपाश्रित्य तिष्ठंति लोका देवाश्च सर्वदा,
ब्रह्मचैव धनं येषां को हिंस्यात्तांजिजीविषुः.
(9/316)

अर्थ : जिन ब्राह्मणों का धन ही वेद है, उन्हीं की शरण में लोक (संसार) व देवता रहते हैं, उन को कौन पुरुष (क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र) मार कर जीवित रह सकता है.

क्षत्रियस्यातिवृद्धस्य ब्राह्मणान्प्रति सर्वशः,
ब्रह्मैव सन्नियंतृस्यात्क्षत्रंहि ब्रह्मसंभवम्.
(9/320)

अर्थ : क्षत्रिय (राजा) सब पदार्थों से युक्त हो परंतु ब्राह्मणों को अपने अधीन नहीं कर सकता क्योंकि उस की उत्पत्ति ब्राह्मण से है.

एवंयद्यप्यनिष्टेषु वर्तंते सर्वकर्मसु,
सर्वथा ब्राह्मणाः पूज्याः परमं दैवतं हितत्.
(9/319)

अर्थः यद्यपि ब्राह्मण सांसरिक कर्मों में बहुत दोष (पाप, अपराध) भी करता है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

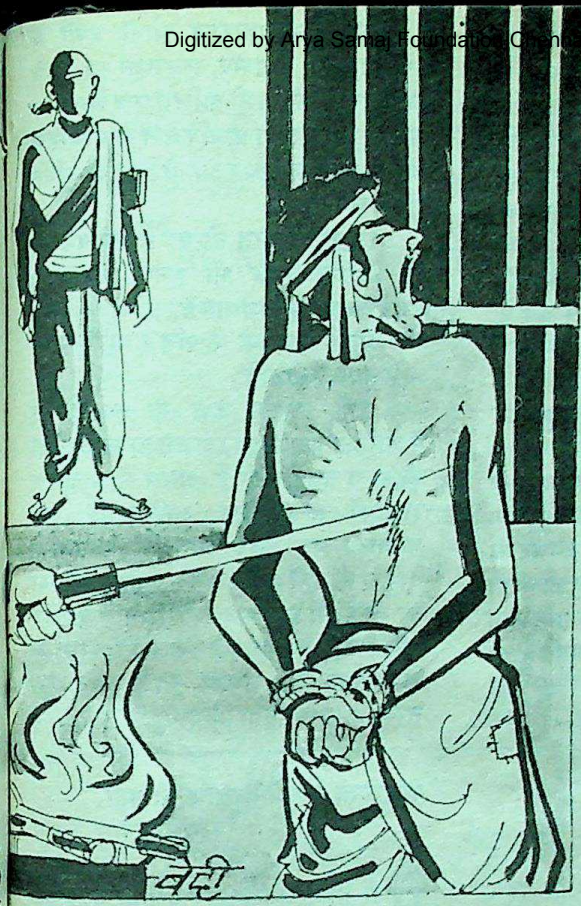

मनुस्मृति की व्यवस्था के अनुसार यदि शूद्र श्रेष्ठ पुरुषों (ब्राह्मण, क्षत्रिय) के साथ एक आसन पर बैठने की इच्छा करे तो उस की कमर पर दाग दे कर राज्य से निकाल देना चाहिए आखिर मनुष्य मनुष्य में इतना भेदभाव क्यों?

तो भी वह ईश्वरज्ञानी होने से पूजने योग्य है, दंड योग्य नहीं.

अविद्वांश्चैव विद्वांश्च ब्राह्मणो दैवतं महत्,
प्राणीतश्चाप्राणीतश्च यथाऽग्निदैवतं महत्.
(9/317)

अर्थः ब्राह्मण चाहे विद्वान या अविद्वान (मूर्ख) हो तो भी उस की महत्ता (उपयोगिता) देवता जैसी है और वह अग्नि से भी बड़ा देवता है.

प्रायश्चित्त में अंतर

आज जहां मनुष्य हत्या के लिए बराबरी का दंड विधान है वहां मनु महाराज ने ब्राह्मण और शूद्र के प्रायश्चित्त में भी घोर अंतर किया है :

एतदेवव्रतं कृत्स्नं षठमासान् शूद्राहा चरेत्,
वृषभैकादशा वापि दद्याद्विप्राय गाः सिताः (11/130)

अर्थः ब्राह्मण शूद्र का वध करने पर छः मास पर्यंत ब्रह्महत्या के प्रायश्चित्त को करे और खेत, बैल तथा 11 गाय ब्राह्मण को दान करे (पीड़ित शूद्र के परिवार को नहीं).

या फिर ऐसा करे :

मार्जारनुकुलौ हत्वा चाषं मंडूकमेव च,
श्वागोधोलूकंकांश्च शूद्रहत्याव्रतं चरेत्. (11/131)

अर्थः बिल्ली, नेवला, नीलकंठ, मेढक, कुत्ता, उल्लू, कौआ—इन में से किसी एक की हिंसा कर के शूद्र हत्या का प्रायश्चित्त करे अर्थात उन की हत्या को शूद्र की हत्या के समान समझे.

कितनी सस्ती थी शूद्र की हत्या, कोई महत्त्व नहीं था उस के शरीर का. उस की स्थिति पशुओं से भी गईगुजरी थी.

और कोई ब्रह्महत्यारा हुआ तो उस के लिए इस प्रकार का कठोर प्रायश्चित्त है :

कृतवापनो निवसेद् ग्रामांते गोव्रजेऽपिवा,
साश्रमे वृक्षमूले वा गोर्ब्राह्मणहिते रतः
(11/78)

अर्थः ब्रह्महत्यारा गाय व ब्राह्मण का भला करता हुआ, दाढ़ी, मूंछ व सिर के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाल मुंडाए तथा नख कटाए और गाय के समक्ष या गोशाला या वृक्ष की मूल (जड़) में निवास करे या वन में कुटी बना कर रहे.

उस के विकल्प हेतु यह कहा गया है :

ब्राह्मणार्थे गवार्थे व सद्यःप्राणन्परित्यजेत्,
मुच्यते ब्रह्महत्याया गोप्ता गोर्ब्राह्मणस्यच.
(11/79)

अर्थः ब्राह्मणों व गोरक्षा के लिए शीघ्र ही अपने प्राण तक निछावर कर दे. इस प्रकार गाय, ब्राह्मण की रक्षा में प्राण देने से ब्रह्म हत्यारा मुक्त हो जाता है.

इस प्रकार मनु महाराज ने 'मनुस्मृति' के द्वारा हर स्थान पर ब्राह्मणों का बचाव किया है, उस की महिमा का गुणगान किया है, उन्हें देवताओं से भी महान व पूजनीय बताया है. वैसा कर के मनु ने ब्राह्मणों को सदैव आलसी, मक्कार, सुविधाभोगी बनाया तथा उन पर कायरता की छाप लगा कर युद्ध तथा देश रक्षा जैसे कार्यों से दूर रखा. उसी का परिणाम देश को भुगतना पड़ा, देश वर्षों तक गुलाम रहा.

यदि मनु महाराज चारों वर्णों में समानता लाने, मतभेद, छुआछूत दूर करने का प्रयास करते, सभी के लिए एक जैसा दंड विधान रखते तथा प्रायश्चित्त के मामले में कोई भेदभाव नहीं बरतते तो देश को दुर्दिन नहीं देखने पड़ते.

चिंता की बात तो यह है कि मनु का यह विधान आज भी हमारे चेतन व अवचेतन मन में विद्यमान है.

नीची जातियों के प्रति हमारी घृणा आज तक बदली नहीं.

इसी कारण देश के कई हिस्सों में जाति के आधार पर अलग राज्य या देश की मांग उठने लगी है. असम में ब्राह्मण शासकों के कारण आदिवासी शूद्र आंदोलन पर उतर आए हैं. झारखंड, त्रिपुरा ही नहीं कुछ हद तक पंजाब समस्या का बीज भी इसी मनु के विधान में है और इसी लिए आवश्यक है कि इस विधान के खोखलेपन को समझा जाए और इसे तत्काल त्याग दिया जाए. •

बच्चों के मुख से

एक दिन हम लोग वीडियो पर 'दिल' फिल्म देख रहे थे. थोड़ी देर बाद इस में एक गाना 'ओ पिया, पिया' शुरू हो गया. कलाकार इन्हीं शब्दों को बारबार दोहराए जा रहा था. इसे सुन कर मेरा पांच वर्षीय भाई बोला, "भैया, इस ने क्या पिया है?"

—मास्टर शलभ गोयल

*

मेरी भतीजी बहुत बातूनी है. एक बार एक मित्र हमारे घर आए हुए थे. मेरी भतीजी घर की चीजें उन्हें दिखाते हुए बोली, "चाचाजी देखो, यह टी.वी. लंदन से आया है, यह वी.सी.आर. अरब से और यह घड़ी जापान से."

तभी मित्र ने पूछा, "तुम्हारे माता-पिता कहां से आए हैं?"

यह सुन कर वह बोली, "यह तो मेरे मातापिता ने मुझे सिखाया ही नहीं."

—राजेंद्रकुमार वरुण

*

मेरी बहन अपनी चार वर्षीया पुत्री को अंगरेजी पढ़ा रही थी. एक जगह दो बार 'पी' लिखा था. मेरी बहन ने पूछा, "यह क्या लिखा है?"

वह बोली, "पी,पी."

बहन ने उसे समझाते हुए कहा, "इस तरह के अक्षरों को डबल पी (वगैरह) कहते हैं."

एक दिन वह हिंदी पढ़ते हुए बोली, "अम्मां डबल टा." जबकि वहां 'टाटा' लिखा था.

—नानक वासवानी •

इस स्तंभ के लिए आप अपने बच्चों, मित्रों व संबंधियों के बच्चों के मुख से कही गई बात भेज सकते हैं. प्रत्येक प्रकाशित संस्मरण पर 50 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. अपने संस्मरण इस पते पर भेजें. संपादकीय विभाग, सरिता, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

श्रीरंग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी ● ल. न. गुप्ता

ईश्वर का दलाल

सरिता, बीस साल पहले, अप्रैल (द्वितीय) 1971

सूरजप्रसाद नाई की पत्नी का नाम चंद्रमुखी था. वह अपने नाम के अनुरूप ही सुंदर थी. वह 20 वर्ष पार कर चुकी थी और उस के दो बच्चे भी थे, लेकिन उस की त्वचा अभी भी तनी हुई थी. नवजात शिशु के शरीर पर मालिश जैसे दैनिक कार्य करते समय उस का छरहरा शरीर जब हिलता था तो देखने वालों के दिल डोल जाते थे. बहुत से नौजवान इसी इच्छा से उस से सटते हुए निकलते कि उस की साड़ी का स्पर्श उन्हें छू जाए.

चंद्रमुखी जानती थी कि वह अपने प्रशंसकों के दिलों में इच्छा की आग जगाती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चंद्रमुखी की सुंदरता के [illegible] कोई उसे अपनी अंकशायिनी बनाने को आतुर था पर अभाव की जिंदगी जीती चंद्रमुखी को कोई उस के पथ से न डिगा सका था. लेकिन ईश्वर का दलाल बने स्वामी ने कुछ ऐसा गुल खिलाया कि उस की समझ पर पानी फिर गया.

है. उस का सौंदर्य खुद उस के लिए एक पहेली बन गया था. वह बहुत ही दरिद्र थी पर अपनी सुंदरता की संपदा पर उसे आश्चर्य होता था. किंतु अपनी सुंदरता और प्रशंसकों की हसरत भरी दृष्टि के बावजूद उस का दिमाग फिर नहीं गया था. वह अपने में सिमटीसकुचाई रहती.

बहुत से अमीर जजमानों ने उसे फंसाने का प्रयत्न किया, लेकिन वह उन के चंगुल में न फंसी. कुछ क्षण के आनंद के लिए उन्होंने उस की आंखों के आगे चांदी के झुमके और सोने के कंगन लहराए, लेकिन सोनेचांदी की चमक से उस की आंखें नहीं मुंदीं. मन ही मन वह परेशान हो उठती और कभीकभी उसे क्रोध भी आ जाता. कभी अगर कोई उसे अकेलेदुकेले पकड़ने में सफल भी हो जाता तो उस की आंखों से चिनगारियां बरसने लगतीं. उस का रौद्र रूप देख कर और कलई खुल जाने के भय से ऐसे व्यभिचारियों का साहस डगमगा जाता.

एक दिन दोपहर के खाने के बाद पड़ोस की एक स्त्री रामकली गपशप के लिए उस के पास आई. वह लुहारिन थी. चंद्रमुखी का उतरा हुआ चेहरा देख कर वह आश्चर्य में पड़ गई. "चेहरा क्यों उतरा हुआ है आज?" उस ने पूछा.

"कुछ नहीं, रामकली बहन," उस ने निराश स्वर में उत्तर दिया.

"कोई न कोई बात जरूर है. तुम छिपा रही हो. क्या किसी ने तुम्हें लूट लिया है?" उस ने व्यंग्य से पूछा.

"नहीं बहन, तुम तो हमेशा मुझे छेड़ती रहती हो. तुम्हें दूसरे की परेशानी से क्या लेनादेना?" उस के स्वर में उलाहना था.

"तो फिर तुम मुझे बताती क्यों नहीं?"

दुखी मन से चंद्रमुखी उसे अपनी व्यथा सुनाने लगी, "कल रात वह कलमुंहा महाजन, मरा पठान आ गया और उस ने कई लोगों के सामने अपने कर्ज और सूद के लिए मेरे पति को खरीखोटी सुनाई. मेरा मालिक जरा नशे में था. पठान की बातों से उसे ताव आ गया और वह अंधाधुंध गालियां देने लगा. पठान भी अपनी नीचता पर उतर आया और कहने लगा, 'नाई के बच्चे, अगर तीन दिन में तू ने मेरा कर्ज नहीं चुकाया तो मैं तेरी खूबसूरत बीवी को उठा ले जाऊंगा.' मेरा मालिक यह सुनते ही पठान पर चीते की तरह लपका. इसी मारपीट में पठान ने उस के सिर पर डंडा मार दिया."

यह कह कर चंद्रमुखी सिसकने लगी. उस का छरहरा शरीर तेज हवा में पत्ते की तरह कांप रहा था.

रामकली प्यार से उस की पीठ थपथपाने लगी, लेकिन जब उस का हाथ चंद्रमुखी की खुली कमर पर पड़ा तो उस के मन में ईर्ष्या की आग भड़क उठी—दो बच्चे हो जाने के बावजूद इस का शरीर कितना ठोस और छरहरा है, जैसे ठंडा लोहा! और उस का शरीर दूसरे बच्चे के पैदा होने के बाद ही कैसा थुलथुल हो गया है और उस की कमर कितनी मोटी हो गई है.

फिर उस ने उसे तसल्ली देने के लिए कहा, "चिंता मत कर चंद्रा, सुख के दिनों की तरह दुख के दिन भी कट ही जाएंगे. ज्यादा दिन बेइज्जती नहीं सहोगी. हर अंधेरी रात के बाद भोर की किरन फूटती है."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"चंद्रमुखी, सहीसही उत्तर देना. क्या विवाह से पहले या बाद में तुम पराए पुरुष के संपर्क में आई हो?" स्वामी ने चंद्रमुखी से पूछा.

चंद्रमुखी रामकली को अपनी बड़ी बहन की तरह मानती थी. जच्चाघर में बच्चा पैदा होने पर वह 11 रात उस के साथ रही थी. उस की बातों से उसे बहुत सहारा मिला था.

रामकली ने जब देखा कि चंद्रमुखी की तबीयत कुछ संभल गई है तो उस ने कहा, "चंद्रा, मेरी एक बात मानोगी? तुम्हारी गरीबी सदा के लिए दूर हो जाएगी."

"बताओ!" चंद्रमुखी ने उत्सुकता से पूछा, उस के आंसुओं से भीगे चेहरे पर आशा की चमक दिखाई दी.

"तुम जानती हो मेरे पति ने एक कारोबार शुरू किया है. उस में अभी से लाभ होने लगा है."

चंद्रमुखी की दृष्टि तत्काल रामकली की गहरी आसमानी साड़ी पर दौड़ गई जिस की किनारी सुनहरी थी. उस ने अंगुली में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जगमगाती अंगूठी पहन रखी थी.

"बताओ, क्या बात है?" उस ने पूछा.

"वह कच्ची शराब बनाता है," उस के स्वर में गर्व था, "सूरजप्रसाद से कह कर तुम भी इस धंधे में रुपया लगा दो. वह ज्यादा पैसा तो लगा नहीं पाएगा. इस एवज में उसे ग्राहक बनाने के लिए कड़ी मेहनत करनी पड़ेगी. पुलिस से डरने की कोई बात नहीं. उन्हें हर महीने बंधीबंधाई रकम देने का प्रबंध हम ने कर लिया है."

घृणा के मारे चंद्रमुखी ने दोनों हाथों से अपना चेहरा ढांप लिया. वह बोली, "नहीं बहन, नहीं. पैसे के लिए ऐसा बुरा काम नहीं कर सकते."

"लेकिन तुम्हारा मर्द पीता नहीं है क्या?" रामकली चोट खा कर बोली.

"पीता है, और मैं उसे पीने से रोक नहीं सकती. लेकिन एक बात जरूर है, जल्दी से अमीर बनने के लिए मैं उसे इतना नीचे भी नहीं गिरने दूंगी."

"ठीक है, चंद्रा. मुझ से तुम्हारी बुरी हालत नहीं देखी गई तो मैं ने यह बात कह दी. अपने दोनों बच्चों की तरफ देखो. दोनों बेचारे भूखे पेट सो जाते हैं. बात तुम पर छोड़ जाती हूं. अब जो जी चाहे करो."

चंद्रमुखी चुप रही. उसे चुप देख कर रामकली ने कहा, "देखो, चंद्रा, मेरा मर्द कोई बुरा आदमी नहीं है. धंधा शुरू करने से पहले वह स्वामी शिवानंदजी के पास गया था. वह बहुत बड़े ज्योतिषी और हाथ देखने वाले पंडित हैं. शिवाले के पिछवाड़े कुटिया में रहते हैं."

चंद्रमुखी ने भी स्वामीजी की दैवी शक्तियों के बारे में सुन रखा था. वह स्वामीजी के पवित्र कार्यों पर संदेह करने वाली स्त्री नहीं थी. उस ने कहा, "शायद तुम्हारे मर्द के ग्रह देख कर स्वामीजी ने इस धंधे की सलाह दी हो. हो सकता है कि वह इसी तरह अमीर बनने वाला हो. मैं ने भी अपने मर्द को स्वामीजी के पास जाने के लिए कहा था पर उसे इन बातों पर जरा भी विश्वास नहीं है. कहने लगा, 'मैं मेहनत से कमा सकता हूं, तब मैं ऐसे पाखंडियों के पास क्यों जाऊं'

"आजकल लोगों का धरमकरम पर से विश्वास ही उठता जा रहा है. घोर कलियुग आ गया है. क्या तुम्हें भी धरमकरम में विश्वास नहीं?"

"ऐसा कैसे हो सकता है! विश्वास ही तो औरत के लिए सब से बड़ी चीज है. भगवान में विश्वास और ब्राह्मणों में श्रद्धा रख कर ही तो पाप भरे इस संसार से निकला जा सकता है."

"तो फिर तुम खुद स्वामीजी के पास क्यों नहीं जातीं?"

"हां, मुझे जाना चाहिए, मैं जाऊंगी. तुम मेरे साथ चलना. अकेले में मुझे डर लगेगा."

"लेकिन स्वामीजी अपने भक्तों से तभी मिलते हैं जब वे अकेले जाते हैं. दूसरे की छाया अपशकुनी होती है, जिस से वह सही भविष्यवाणी नहीं कर पाते. हां, एक बात और, स्वामीजी अपने भक्तों से केवल शाम के बाद मिलते हैं."

अगली शाम वह वहां पहुंची. शिवाले के पीछे स्वामीजी की कुटिया का दरवाजा हरी झाड़ियों और पत्तों से ढका हुआ था. बाग में से रजनीगंधा की महक आ रही थी. अगरु की सुगंध चारों तरफ फैली हुई थी. उसे लगा, वह ऐसे स्थान पर आ गई है जहां भगवान निवास करते हैं और पाप की छाया भी वहां नहीं पड़ती. वह भीतर घुसी. सामने चौड़ी छाती, लंबी भुजाएं और तगड़े शरीर वाले स्वामीजी बैठे हुए थे. उन के चौड़े माथे पर चंदन का टीका, आंखों पर सुनहरी कमानी का चश्मा और निचले अंग पर भगवा लुंगी थी. ऐसी भव्यमूर्ति देख कर चंद्रमुखी का मन श्रद्धा और भय से भर गया. ऐसे देवता के द्वार से वह कैसे खाली हाथ लौट सकती है. वह जरूर उसे संकट से उबारेंगे.

स्वामीजी ने घूम कर देखा. चंद्रमुखी को सामने खड़ा देख कर वह बोले, "अरे, चंद्रमुखी तुम! अंत में तुम भी ईश्वर के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

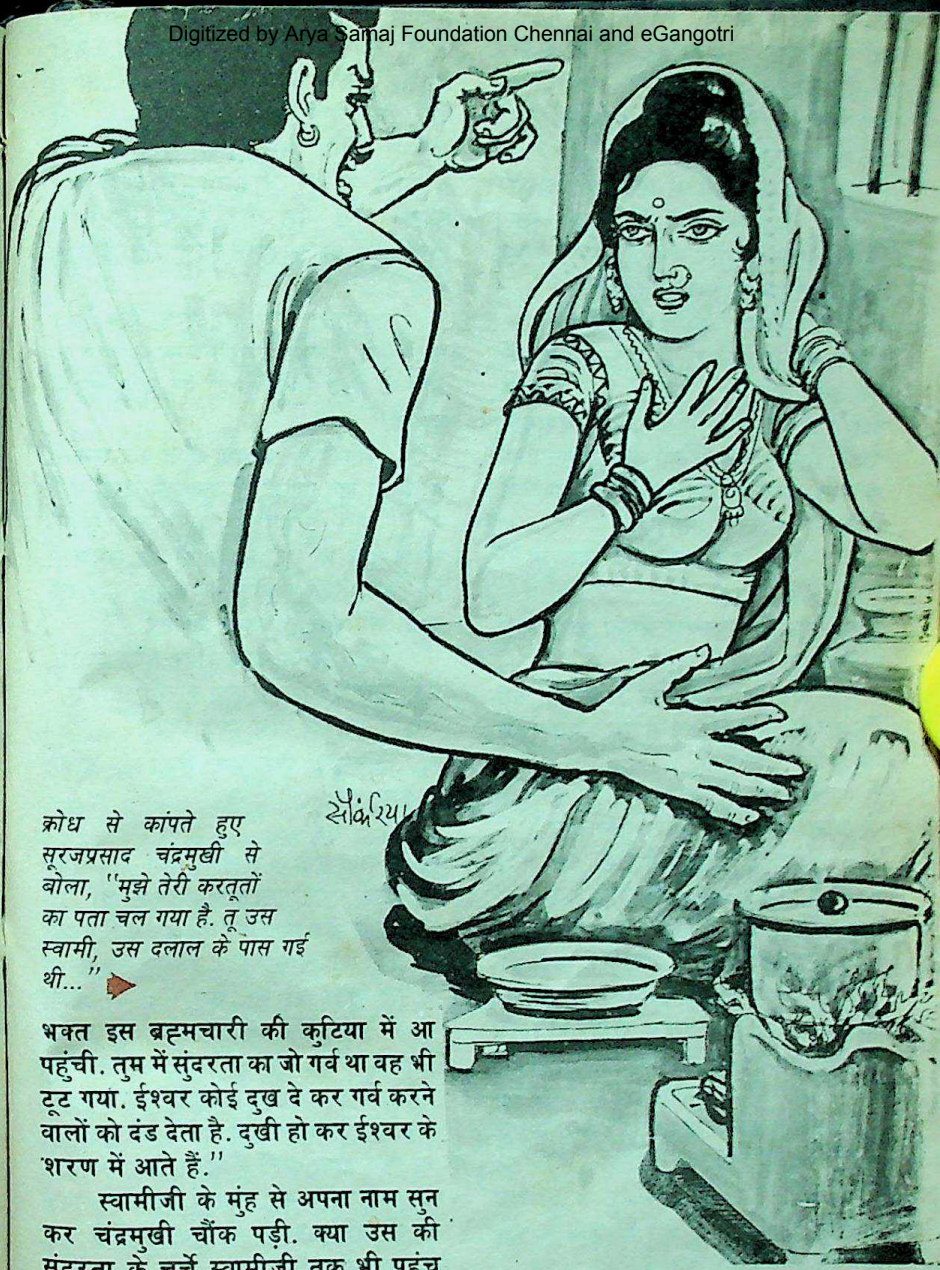

क्रोध से कांपते हुए सूरजप्रसाद चंद्रमुखी से बोला, "मुझे तेरी करतूतों का पता चल गया है. तू उस स्वामी, उस दलाल के पास गई थी..."

भक्त इस ब्रह्मचारी की कुटिया में आ पहुंची. तुम में सुंदरता का जो गर्व था वह भी टूट गया. ईश्वर कोई दुख दे कर गर्व करने वालों को दंड देता है. दुखी हो कर ईश्वर के शरण में आते हैं."

स्वामीजी के मुंह से अपना नाम सुन कर चंद्रमुखी चौंक पड़ी. क्या उस की सुंदरता के चर्चे स्वामीजी तक भी पहुंच चुके हैं? पर स्वामीजी महाराज ऐसी तुच्छ बातों में क्यों दिलचस्पी लेते हैं. जरूर ईश्वर उन के मुंह से बोल रहा है. स्वामीजी के विचित्र शब्दों का प्रभाव उस पर ऐसा पड़ा कि उस ने फौरन उन के सामने धरती पर अपना माथा टेक दिया. स्वामीजी ने कंधे पकड़ कर उसे उठाया. वह खड़ी हुई कांप रही थी. जीवन में पहली बार किसी पराए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुरुष ने उस छुआ था लेकिन वह गरम स्पर्श उसे बहुत भला लगा. इन्हीं हाथों से उस के संकट दूर हो जाएंगे. यह किसी बदमाश के हाथ नहीं. वह स्वामीजी के हाथों में सुरक्षित रहेगी.

सर्दियों की शाम थी और अंधेरा तेजी से फैल रहा था. हवा में खुनकी थी. स्वामीजी उस से पूछने लगे, "चंद्रमुखी, इस अपवित्र संसार में तुम्हें क्या कष्ट है?"

"स्वामीजी, बहुत अरसे से हम गरीबी के दिन काट रहे हैं. एक के बाद एक मुसीबत हमें घेर लेती है. रोजाना शराबियोंकबाबियों की बुरी बातें हमें सुननी पड़ती हैं. मेरे दोनों बच्चों को दो वक्त ठीक से खाना भी नहीं मिल पाता है. इस नरक से निकलने का उपाय बताइए."

"अच्छा, अपना हाथ तो दिखाओ."

चंद्रमुखी ने तत्काल अपना हाथ आगे बढ़ा दिया.

"चंद्रमुखी, सहीसही उत्तर देना. क्या विवाह से पहले या बाद में तुम पराए पुरुष के संपर्क में आई हो?"

चंद्रमुखी का चेहरा लाल हो उठा. उस के गाल जलने लगे, सिर घूमने लगा.

"बताओ, शरमाओ नहीं. जो अंतर्यामी है, उस से बात नहीं छिपा सकतीं," कहते हुए स्वामीजी ने उस का हाथ भींचा.

चंद्रमुखी जड़ पेड़ की तरह खड़ी थी. उस के मन में तूफान उमड़घुमड़ रहा था. उसे लगा मानो कोई उस के शरीर को गरम सलाखों से दाग रहा है. क्या यह किसी कामी पुरुष के हाथों का स्पर्श है या ये स्वामीजी जैसी पवित्र आत्मा के हाथ हैं? क्या उन के स्पर्श से कामइच्छा की गंदी गंध नहीं फूट रही? यदि यह स्पर्श पवित्र है तो वह भयभीत क्यों है? वह खुद ही पापी है, इस अपवित्र संसार का जीव है.

"नहीं, नहीं, स्वामीजी, कभी ऐसा नहीं हुआ." उस ने धीरे से उत्तर दिया.

"तो, चंद्रमुखी, समझ लो कि निकट भविष्य में ही ऐसा होने जा रहा है. यह तुम्हारी नियति है. तुम इस से बचने का विचार त्याग दो क्योंकि तुम इस से बच नहीं सकतीं. जब तक तुम इस अग्निपरीक्षा से नहीं निकलोगी, तुम्हारे बुरे दिन नहीं समाप्त होंगे. तुम इसी गरीबी और भुखमरी में मर जाओगी. तुम्हारे साथ तुम्हारे भूखे पति और बच्चों की लाशें होंगी. उन का भाग्य तुम्हारे ग्रहों से बंधा हुआ है."

स्वामीजी क्षण भर रुके और फिर कहने लगे, "देखो, पिछले जन्म के पापों को धोने के लिए तुम्हें दूसरों पर कृपा करनी पड़ेगी."

"स्वामीजी, मैं क्या कृपा कर सकती हूं! मैं तो खुद दूसरों की कृपा की भूखी हूं."

"नहीं, चंद्रमुखी, नहीं. तुम इतनी तुच्छ नहीं हो जितना अपने को समझती हो." स्वामीजी के होंठों पर मुसकान थिरक उठी. चंद्रमुखी आश्वस्त हो गई.

"जो भी पहला यजमान तुम्हें बुलाए, तुम्हें उस पर जरूर कृपा करनी चाहिए." उन्होंने उस का हाथ छोड़ दिया."

चंद्रमुखी उठ कर तेजी से बाहर निकल आई.

वह तेज डगों से चल रही थी. स्वामीजी ने जो पहेली उस के सामने रखी थी, उस के बारे में सोचसोच कर वह अचंभे में पड़ती जा रही थी. लेकिन दिन बदलने की आशा में वह खुश भी थी. ऐसे संतों की वाणी बेकार नहीं जाती. लेकिन एक भय उस के मन को कचोट रहा था. यदि उस का पति पहले ही घर लौट आया तो वह क्या कहेगा? जब वह घर पहुंची तो उस ने देखा कि उस का पति वापस नहीं लौटा है. उस के मन से बोझ सा उतर गया. पराए पुरुष से संपर्क की जो भविष्यवाणी स्वामीजी ने की है, उस का क्या होगा?

बिस्तर पर लेटने पर यह विचार उसे परेशान करने लगा. वह शरीर से बहुत थक चुकी थी, लेकिन उस का मन बराबर दौड़ रहा था. मन को शांत करने के लिए उस ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थोड़ी सी अफीम ली और मदहोशी में लुढ़क गई. अगले दिन जब वह नहा रही थी तो सेठ हजारीमल का नौकर आया. सेठ हजारीमल इलाके में मशहूर अनाज व्यापारी थे. सेठ का नौकर संदेशा लाया कि सेठजी की बीवी के पेट में बहुत दर्द हो रहा है. मालिश के लिए फौरन बुलाया है. चंद्रमुखी ने नौकर से कहा कि मैं अभी आती हूं.

यही सुबह का पहला यजमान है. चंद्रमुखी को उस पर कृपा करनी होगी. उसे देरी नहीं करनी चाहिए. दया ईश्वर का गुण है. वह तेजी से सेठ के घर की तरफ लपकी.

सेठ की पत्नी के पेट की मालिश करने के बाद जब वह हवेली की सीढ़ियां उतर रही थी तो उस ने देखा कि सेठ नीचे खड़ा है. वह थोड़ा डर गई. जब वह नीचे पहुंची तो सेठ ने नम्रता से कहा, "चंद्रमुखी, क्या मुझ पर कृपा करोगी?"

"कृपा! कैसी कृपा सेठजी?" वह कांप रही थी.

"डरो मत," सेठ ने कहा, "मैं ने तुम्हारी सुंदरता के चर्चे सुने हैं. मैं ने एक बार नल पर पानी भरते हुए तुम्हें देखा था. तभी से तुम्हें छूने के लिए तरस रहा हूं. मेरा मन कामधंधे से भी उचट गया है. चंद्रमुखी मुझ पर दया करो."

"सेठजी, बकवास मत करो, मुझे जाने दो." कह कर वह आगे बढ़ी. सीढ़ियों से आगे बड़ा चौड़ा अहाता था जो इस समय सुनसान था. वहां कोई नहीं था. सेठजी ने सोने की अंगूठी जेब से निकाल कर उस की आंखों के आगे लहराई. चंद्रमुखी ने उस तरफ देखा, लेकिन वह ललचाई नहीं. उस के कठोर हावभाव के समक्ष सेठ अपने को बड़ा छोटा महसूस करने लगा, उस की कामवासना की जलती आग पर ठंडे पानी के छींटे पड़ गए थे. लेकिन उस ने फिर अनुनय की, "चंद्रमुखी मुझ पर कृपा करो. मेरे बच्चों पर दया करो! तुम्हारे कठोर व्यवहार से मेरा मन व्यापार में नहीं लगेगा और मेरा

अदा

अधखुले नयनों से
मत देखो हम को,
अदा होगी आप की
हमारी जान जाएगी.

—सुरेशकुमार गोयल

कारोबार डूब जाएगा."

'कृपा! पराए पुरुष से संपर्क! सुखी जीवन पाने के लिए तुम्हारी नियति यही है. चंद्रमुखी, तुम इस से बच नहीं सकतीं.' स्वामीजी के शब्द उस के कानों में गूंज रहे थे. वह कैसे बच सकती है अपनी नियति से! उस से पहले भी बहुत सी स्त्रियों की यही नियति रही है. उस की बहन को गांव के जमींदार के लड़के को अपना शरीर सौंपना पड़ा था. इस के बावजूद अब वह अपने पति के साथ सुख से रह रही है. उस के हाथ ढीले पड़ गए और उस के उन्नत उरोजों पर से आंचल हट गया. सेठ ने संकेत समझा और उसे गोदाम के भीतर खींच ले गया.

शाम को चंद्रमुखी चूल्हे पर चावल का पतीला चढ़ा रही थी, तभी उस के कानों में अपने पति का कर्कश स्वर पड़ा. सूरजप्रसाद गालियां देता हुआ भीतर आया. उस ने हजामत की पेटी एक तरफ फेंक दी और उस के औजार इधरउधर बिखर गए. चंद्रमुखी बुरी तरह कांप रही थी. आज क्या मुसीबत टूटने वाली है?

"चल, रंडी, दूर हो जा मेरे सामने से.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुझे तेरी करतूतों का पता चल गया है. तू उस स्वामी, उस दलाल के पास गई थी!" वह क्रोध में बहुत बड़ा नजर आ रहा था और वह शेर के सामने सहमी हुई बकरी की तरह सिमटी हुई थी.

अपने बचाव के लिए वह कहने लगी, "नहीं, यह झूठ है. मैं नहीं गई. तुम नशे में हो." वह जोरजोर से रोने लगी.

यह सुनते ही वह बुरी तरह भड़क उठा. वह उसे पीटने लगा, "रंडी, मैं उस बदमाश स्वामी के पास गांजा पीने गया था. जब मैं कुटिया के पिछवाड़े पहुंचा तो भीतर से जोरजोर से खिलखिलाने की आवाजें आ रही थीं. मैं वहीं खड़ा हो कर सुनने लगा तो पता लगा कि तुझे फांसने के लिए उस बदमाश स्वामी और सेठ ने क्या सांठगांठ की. वे दोनों तेरा इंतजार कर रहे थे. उस बदमाश स्वामी के साथ मिल कर में तू भी आ गई.

"स्वामी सेठ को बता रहा था कि ईश्वर ने ही नाई की बीवी को उस के पास भेजा है. उस ने तुम्हारी कलाई पर गुदा हुआ तुम्हारा नाम देख लिया था और तभी तुम्हें चंद्रमुखी कह कर पुकारा. तू ऐसी बेवकूफ कि समझने लगी, उस में दैवी शक्ति है जिस से वह तेरा नाम जान गया था. इधर तुम मेरे सामने काली गाय बनी खड़ी हो, उधर वह बदमाश स्वामी और सेठ लहूलुहान हालत में हस्पताल ले जाए जा रहे हैं."

क्रोध के मारे वह बेहोश हो कर गिर पड़ा. चंद्रमुखी रसोई की तरफ दौड़ी और ठंडे पानी का गिलास भर लाई. फिर वह उस के पास बैठ कर उस के माथे और चेहरे पर ठंडे पानी के छींटे मारने लगी. ●

हिंदी

गुलामों
गंवारों
जाहिलों
की भाषा है न?

तभी तो आप

- हिंदी की बोलचाल में और हर वाक्य में दो तीन शब्द अंगरेजी के जरूर रखते हैं. हर दूसरा वाक्य अंगरेजी का बोलते हैं.
- अपने नाम का संक्षिप्तीकरण अंगरेजी अक्षरों में करते हैं बी.पी. शर्मा, एस.एन. वर्मा, के.एम. गुप्ता, आई.एम. दास.....
- अपने सांस्कृतिक, सामाजिक, पारिवारिक और निजी उत्सवों एवं सम्मेलनों के निमंत्रण पत्र अंगरेजी में छपवाते हैं, चाहे आप और आप के आमंत्रित अंगरेजी के चार वाक्य भी सही रूप में न लिख सकें और न समझ सकें.
- अपना निजी पारिवारिक पत्रव्यवहार अंगरेजी में करते हैं.

अंगरेजी साहबों की भाषा है. आप पूरी नहीं बोललिख सकते तो आधीअधूरी ही सही, साहबी कुछ तो दिखाई देगी ही!

भारत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुम पास तो बैठो

बंद कर लूं छंद में मैं
मुसकराना खिलखिला कर,
शोख पर संयत अदाएं
गिराना पलकें उठा कर,
इसलिए अनुरोध है
तुम पास तो बैठो.

कैद कर लूं पंक्तियों में
वक्ष की हलचल हिलोरें,
फागुनी आभा बदन की
नयन के रतनार डोरे,
इसलिए अनुरोध है
तुम पास तो बैठो.

नयन संकेत को दे दूं
अधर की कांपती भाषा,
कल्पना के रंग स्वप्निल
ओढ़ तो ले सहज आशा,
इसलिए अनुरोध है
तुम पास तो बैठो.

—सुधाकांत दास

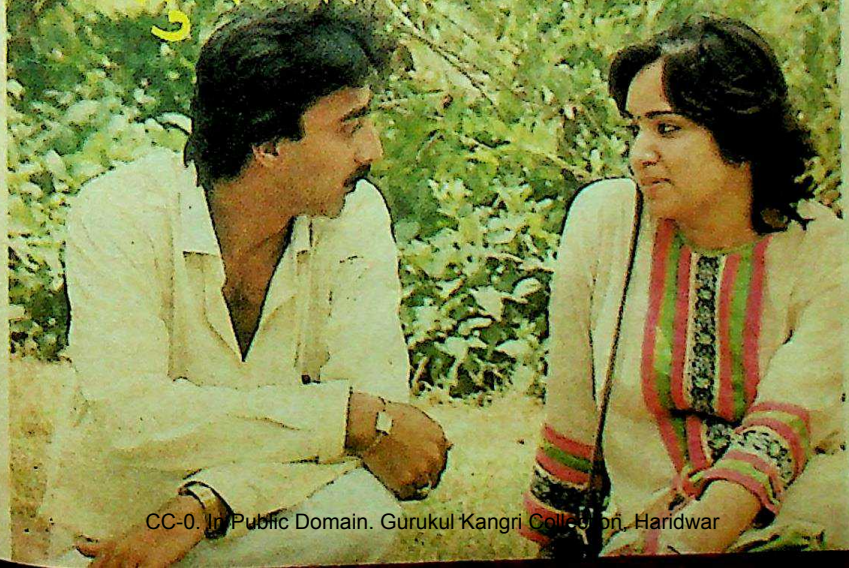

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुआयना

विपिन को परिवर्तन का एहसास तो बरामदे में पैर रखते ही हो गया था, लेकिन आगे कदम बढ़ाते ही वह आश्चर्यचकित रह गया, 'अरे वाह, भव्य, खूबसूरत... यहां की तो काया ही पलट गई, अनायास उस के मुंह से निकल

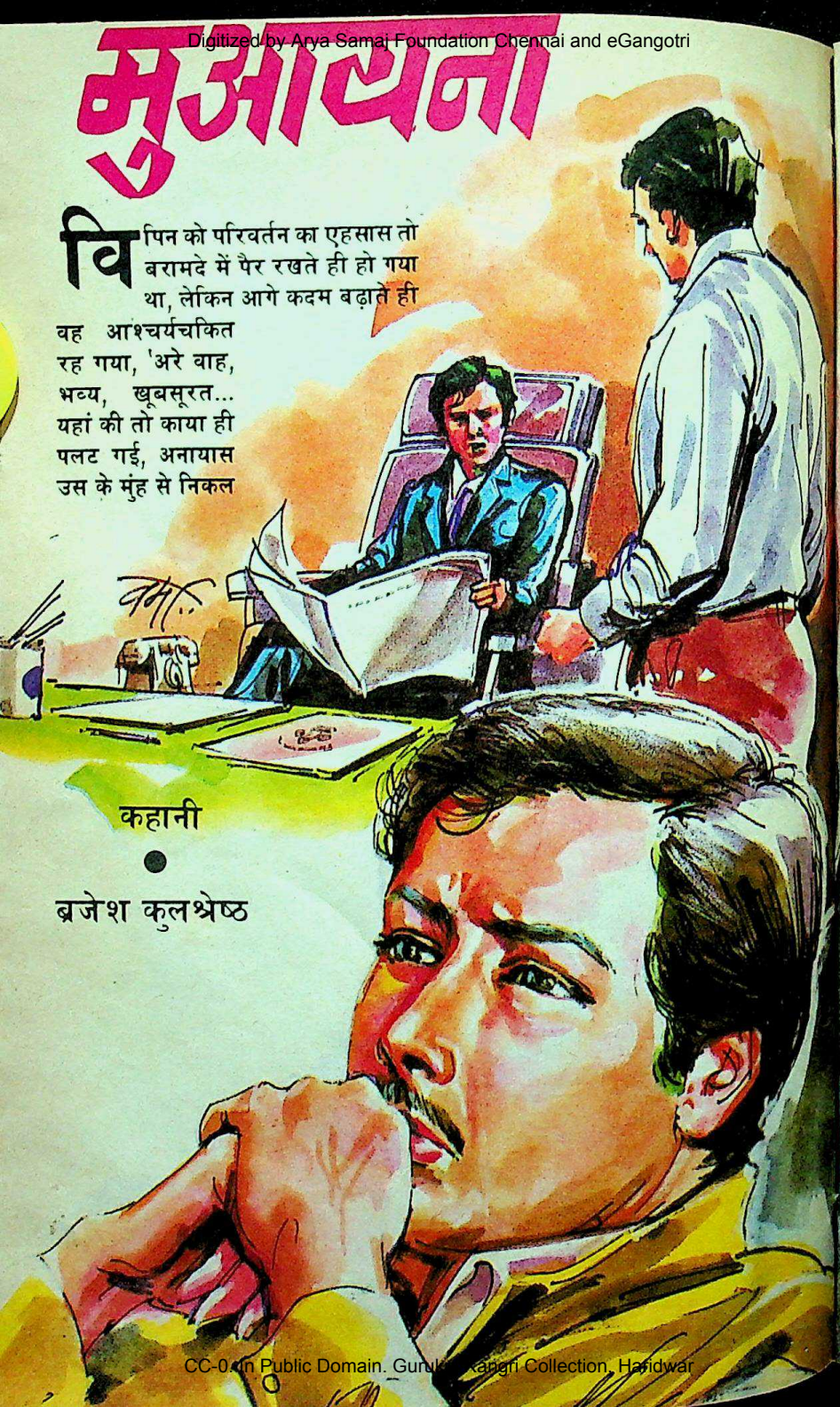

कहानी

●

ब्रजेश कुलश्रेष्ठ

CC-0.In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विपिन जिलाधीश के साथ योजना कार्य आरंभ करने से पूर्व जिलाधीश से मिलने गया था, वह आशा जिलाधीश के व्यवहार से टूट गई थी. तभी से विपिन के मन् में जिलाधीश के प्रति घृणा की काई सी जम गई थी. लेकिन मुआयने की एक घटना ने विपिन के दिल में जमी काई एक ही झटके में साफ कर दी.

गया. उसे लग ही नहीं रहा था कि वह किसी सरकारी दफ्तर में आ खड़ा हुआ है. उसे तो ऐसा प्रतीत हो रहा था, जैसे वह पंचतारा होटल के किसी कोने में आ गया हो.

तीन महीने पहले जब वह आया था, तब यहां कितना शोरगुल और अव्यवस्था थी. साहब की घंटी के प्रति लापरवाह, बीड़ी फूंकते और गप्पें हांकते चपरासियों का जमघट, फोकट में चाय, कचौड़ी और

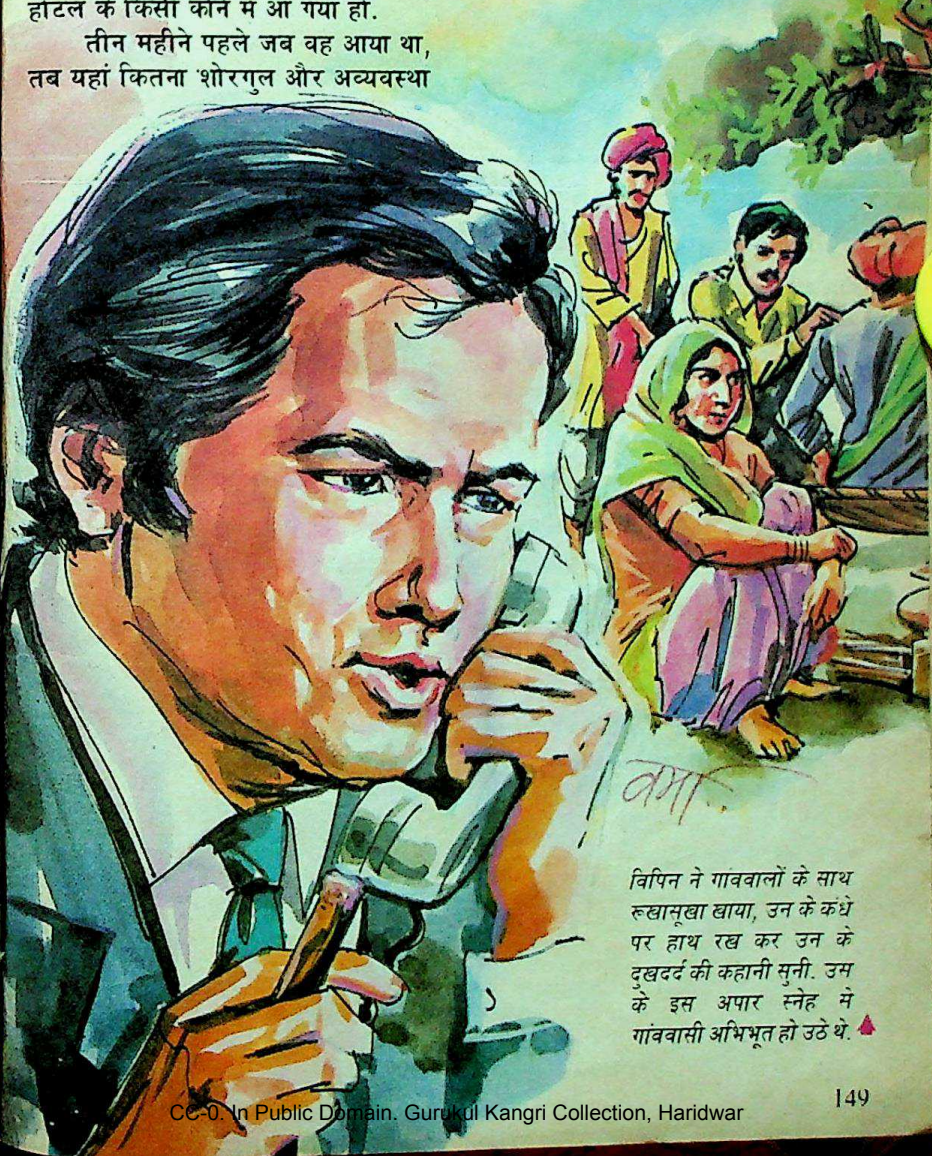

विपिन ने गांववालों के साथ रूखासूखा खाया, उन के कंधे पर हाथ रख कर उन के दुखदर्द की कहानी सुनी. उस के इस अपार स्नेह से गांववासी अभिभूत हो उठे थे.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पानसिगरेट पीने वाले बाबुओं की भीड़, साहब से मिलने वालों की परेशान भीड़, सब तरफ दीवारों पर जमी पान की पीक, छत से लटके लंबेलंबे जाले, पौधों का सूखा अस्तित्व पकड़े आठदस गमले, जो बतौर पीकदान के काम आ रहे थे. तब यहां सब कुछ कितना घिनौना और अव्यवस्थित था.

पर नए साहब के आते ही यहां का पूरा माहौल ही बदल गया था. दीवारों पर हलके गुलाबी रंग का डिस्टेंपर हो गया था. पूरे बरामदे में लाल रंग की जूट की पट्टी बिछ गई थी. चमचमाते दरवाजों के पीतल के हैंडिल सोने जैसे दिपदिपा रहे थे. सरकारी पोस्टर हलके नीले रंग के फ्रेम में जड़े करीने से टंगे थे. बरामदे में रंगबिरंगे गमले सजे थे. गमलों में लगा हर पौधा साफसुथरा और साफ नहाया सा प्रतीत हो रहा था. दरवाजे के सहारे लगे खूबसूरत नामपट्ट पर पीतल के चमचमाते अक्षरों में लिखा था, 'प्रमोदकुमार' जिलाधीश.

इस भव्यता ने अतीत की अनुशासन–हीनता, अव्यवस्था और अकर्मण्यता का नामोनिशान तक मिटा दिया था. बाहर की भव्यता देख कर ही कोई अंदर बैठे प्रमोदकुमार के स्वभाव और चरित्र का अंदाजा लगा सकता था. सारे वातावरण में प्रमोदकुमार का व्यक्तित्व मुखर हो उठा था. साफ लग रहा था कि नए जिलाधीश कितने अनुशासनप्रिय हैं.

उन की अनुशासनप्रियता का अंदाज तो उसी दिन लग गया था, जिस दिन उन्होंने जिले का पदभार संभाला था. उस दिन जिले भर के अफसर शिष्टाचारवश उन के बंगले पर इकट्ठे हुए थे. कई अफसर बतौर सौगात के अपनेअपने कसबे की मशहूर चीजें भी लाए थे. कई अफसर अपनी खूबसूरत बीवियों को भी साथ ले आए थे. विदेशी इत्र की महक में सराबोर ये सजीधजी बीवियां फरफर यहांवहां चहकती खुशबू बिखेरती घूम रही थीं.

साफ लग रहा था कि सारे अफसर किसी न किसी तरकीब से नए साहब की कृपादृष्टि प्राप्त करना चाहते थे.

काफी देर के बाद भी नए साहब दर्शनों के लिए प्रकट नहीं हुए. भक्तों की अधीरता बढ़ती जा रही थी. सब निजी सहायक की ओर टकटकी लगाए हुए थे. आखिरकार निजी सहायक को ही अंदर जाना पड़ा.

उस समय जिलाधीश अखबार पढ़ने में मग्न थे. बिना उस की ओर देख बोले, "जब तक हम घंटी न दें, इस तरह अंदर आने की जरूरत नहीं है... समझे?"

"जनाब... जी जनाब." निजी सहायक सिर से पैर तक कांप गया. चलने को मुड़ा ही था कि सख्त आवाज सुनाई दी, "क्यों आए थे?"

"साहब, कुछ अफसर आप से मिलना चाहते हैं?"

"क्यों? तुम ने समय दिया था क्या?"

"नहीं साहब... साहब... वैसे ही शायद शिष्टाचारवश..."

बीच ही में जिलाधीश झल्ला उठे, "नहीं... बिलकुल नहीं... मेरा समय बरबाद मत करो. उन से बोलो कि सब के सब फौरन वापस चले जाएं. जो सरकारी गाड़ियों में आए हैं, उन की गाड़ियां यहीं रखवा लो. उन से बोलो कि वे रेल या बस से वापस जा सकते हैं. उन्हें कोई यात्रा भत्ता नहीं मिलेगा. सरकारी गाड़ियां ऐसे कामों के लिए नहीं होतीं. सब के सब मूर्ख हैं... आगे से इस दस्तूर को बंद करो... कुछ समझे... जाओ."

"जी साहब." निजी सहायक जान छुड़ा कर बाहर आ गया. उसे सामान्य होने में तनिक वक्त लग गया था. वह बाहर खड़े अफसरों को यह भी दिखाना नहीं चाहता था कि अंदर से वह बुरी तरह पिट कर आया है.

बेताब अफसरों की निगाहें निजी सहायक पर टिकी हुई थीं.

साहब के फरमान का एलान होते ही सारे अफसरों के चेहरों पर हवाइयां उड़ने लगी थीं. खूबसूरत बीवियों का मेकअप

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Sarayu Trust Foundation Chennai and eGangotri

कलक्टर न हुआ आफत हो गया, उस की वजह से क्यों तनावग्रस्त होते हैं..." चारु ने विपिन को समझाया.

'सर...सर' कहते रहो. यह भी कोई तुक है.

अच्छा ही हुआ जो उस दिन विपिन अफसरों के मेले में नहीं आया था. उस की भी ऐसी ही हालत होती. किस कदर अपमानित होना पड़ता.

विपिन दो महीने बाद यहां आया था क्योंकि उस का स्थानांतरण रामनगर के एस.डी.ओ. के पद पर हो गया था. नई जगह का पदभार संभालने से पहले जिलाधीश से मिलना बहुत जरूरी था.

बाहर के ठाठबाट को देखते ही विपिन को लगने लगा था कि इस अफसर के साथ काम करने में मजा आएगा. बहुत कुछ नया सीखने को मिलेगा. उस के काम की कद्र होगी. ऐसे अफसर के साथ काम करने में चुनौतियों का सामना करने की ताकत मिलेगी.

पिघलने लगा. सब खिसियाने से एकदूसरे के चेहरों को देखने लगे.

साढ़े नौ बज चुके थे. जिलाधीश की गाड़ी पोर्च में लग चुकी थी. सारे अफसर इधरउधर चूहों की तरह दुबक गए. किसी की हिम्मत नहीं हुई कि बाहर आ कर नए साहब से नमस्कार तो कर लें.

तब उस जमघट में विपिन शामिल नहीं था. उसे यह पसंद भी नहीं था कि बिना बुलाए साहब के पास जाया जाए. लल्लोचप्पो में उसे कतई विश्वास नहीं था. होली, दीवाली पर भी उसे अफसरों के यहां जाना पसंद नहीं था. क्या फायदा दरदर भटकने में. कौन पूछता है इतनी भीड़ में. अफसरों के सामने भीगी बिल्ली से बने बैठे रहो. उन की उचितअनुचित और बेतुकी बातों में जबरदस्ती हां में हां मिलाते रहो,

दरवाजे के ठीक ऊपर लाल बत्ती जल रही थी. जाहिर था कि जिलाधीश अभी व्यस्त हैं. लाल बत्ती वाली व्यवस्था अभी शुरू की गई थी, पहले कभी ऐसा नहीं था. पहले तो चाहे जब अंदर जाया जा सकता था, कोई रोकटोक नहीं थी.

नए साहब का जमादार भी ऐसा था कि ऐरागैरा तो उस से आंख ही नहीं मिला सकता था. पूरा छः फुटा, गोराचिट्टा. कटारदार मूंछों से वह और भी रोबदार लग रहा था. सफेद बुर्राक कलफदार वरदी,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काले चमचमाते जूते और सिर पर मर्दाली टोपी. सतर्कतापूर्वक वह पूरे बरामदे में चक्कर लगा रहा था.

विपिन ने अपना परिचय कार्ड जमादार के हाथ में थमा दिया. पढ़ते ही वह तन कर खड़ा हो गया, 'सर.' फिर लपक कर उस ने प्रतीक्षाकक्ष का दरवाजा खोल दिया और बोला, ''साहब, आप यहां बिराजिए.''

जमादार थोड़ी देर बाद ट्रे में पानी पेश कर गया. विपिन ने सोचा, 'यह तरीका भी नए जिलाधीश ने ही सिखाया होगा.' पहले वाला चपरासी तो एक हाथ में जग और दूसरे हाथ में गिलास थामे ही आ गया था. उस की गंदी उंगलियों की पोरों से टपटप पानी की बूंदें जग में गिर रही थीं. तब विपिन को बड़ी अरुचि हुई थी.

लाल बत्ती बंद हो चुकी थी. विपिन अंदर लगे शीशे में देख कर अपने कपड़ों और शक्लसूरत का जायजा लेने लगा. वैसे तो वह पूरी तरह व्यवस्थित ही था क्योंकि आदतन वह सलीके से ही रहता था.

विपिन ने घड़ी देखी, 12 बज रहे थे. वह चारु से एक बजे तक लौट आने की बात कह आया था, लेकिन ऐसी स्थिति में वह समय पर कैसे लौट सकता था. अभी तक तो जिलाधीश ने अंदर ही नहीं बुलाया था. जब बुलाएंगे तो पहले परिचय होगा, हालचाल पूछे जाएंगे. वह रामनगर की समस्याओं के बारे में बातचीत करेंगे. रामनगर में मेला लगने को है, उस के प्रबंध के बारे में निर्देश देंगे. वैसे विपिन भी मेले के लिए कई नई योजनाएं ले कर आया था. उन पर भी चर्चा हो सकती थी. इन सब बातों में दो तो आसानी से बजने की उम्मीद थी.

अब विपिन को इंतजार अखरने लगा था. वह धीरेधीरे झुंझलाहट की स्थिति में पहुंचता जा रहा था. 'ओफ, ये अफसर होते ही ऐसे हैं, जानबूझ कर अपमानित करते हैं. दूसरों को इंतजार करवाने में न जाने क्यों मजा आता है... पता नहीं, इन लोगों को कहां ऐसी घुट्टी पिलाई जाती है.'

इतने में लपकता हुआ जमादार आया और बोला, ''आप को साहब याद फरमा रहे हैं.''

कक्ष में प्रवेश करते ही विपिन ने देखा कि दाएं हाथ के कोने में लगी आलीशान कुरसी पर निहायत मामूली से प्रमोदकुमार बैठे हैं. रंगरूप सांवला है. कद भी शायद छोटा है. शरीर भी दुबलापतला है और शक्लसूरत भी साधारण ही है. एक बार भी देखने जैसा व्यक्तित्व नहीं है उन का.

जिलाधीश महोदय के सामने एक और व्यक्ति बैठा था. बिलकुल खामोश, भीगी बिल्ली सा बना. विपिन ने अपनी कल्पना में जिलाधीश के रंगरूप और डीलडौल के जो रंग भर रखे थे, वे सब एकएक कर धुल गए थे. इसी का इतना दबदबा है सारे जिले में? कितनी ताकत है सरकारी कुरसी में, साधारण से लगने वाले व्यक्ति को भी वह कितना भव्य और गरिमामय बना देती है.

''नमस्कार साहब.'' पूरे जोश के साथ विपिन ने अभिवादन किया.

पर जिलाधीश न जाने कौन सी फाइल में डूबे हुए थे, उन्होंने विपिन की ओर देखा तक नहीं.

विपिन खड़ा रहा. जो व्यक्ति भीगी बिल्ली सा बना बैठा था, उस ने भी विपिन की ओर नहीं देखा. चुपचाप नीची गरदन किए बैठा रहा.

विपिन बेहद असमंजस की स्थिति में था. सोचने लगा कि यह अफसर तो बड़ा रूखा है, पर देखने में इतना अशिष्ट तो नहीं लगता.

वह फिर बोला, ''नमस्कार साहब.''

''नमस्कार.'' और बिना विपिन की ओर देखे बैठने का इशारा कर दिया.

विपिन बैठ तो गया, पर उसे यह सब कुछ अच्छा नहीं लगा. उसे साफ लग रहा था कि दूसरी बार के अभिवादन से जिलाधीश खुश नहीं हुए थे. उंगली से बैठने का जो इशारा किया, उस से साफ लग रहा था कि जैसे वह कहना चाह रहे हों, 'क्यों शोर मचा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहे हो, चुपचाप खड़े नहीं रह सकते क्या?

इस उपेक्षा से विपिन अंदर ही अंदर कुढ़ने लगा. उस का स्वाभिमान आहत होने लगा. वह सोच तो यह रहा था कि 'कहो विपिन, तुम कैसे हो?' जैसे शब्दों से उस का स्वागत होगा, पर जिलाधीश ने तो एक बार भी उस की ओर नहीं देखा था. ठीक है, अफसर और मातहत की दूरी बनाए रखना भी जरूरी होता है, पर इस तरह आतंकित करने का तरीका भी तो ठीक नहीं है.

एकाएक जिलाधीश ने लंबी सांस ली. कुरसी को विपिन की ओर घुमाया और बोले, "अरे, तुम तो बिलकुल जवान दिखाई देते हो."

यह पहली मुलाकात की पहली टिप्पणी थी. अब तक के अवहेलनापूर्ण व्यवहार से विपिन को ऐसा नहीं लगा, जैसे जिलाधीश यह कहना चाह रहे हों कि 'हमें तुम जैसे नौजवान की ही जरूरत है.' टिप्पणी से तो उसे लगा, जैसे जिलाधीश कहना चाह रहे हों, 'तुम जैसे लल्लू तो कर चुके रामनगर की एस.डी.ओ. गीरी.'

"कितने साल की नौकरी हो गई है?" जैसे किसी तीसरे दर्जे के लड़के से सवाल पूछा गया हो.

"साहब, अभी तो दो साल..."

"ओ, एकदम नए हो..." जिलाधीश ने एक तीर और चला दिया. फिर सामने बैठे व्यक्ति की ओर संकेत करते हुए बोले, "गोविंद, अपने उत्तराधिकारी से मिलो. आप को इन्हीं को पदभार सौंपना है."

विपिन को जिलाधीश का एकएक शब्द जैसे पैने बाण की तरह चुभने लगा था. गोविंद से जिस ढंग से परिचय कराया गया था, उस से साफ लग रहा था कि जैसे वह कहना चाह रहे हों, 'पिद्दी न पिद्दी का शोरबा...'

गोविंद ने विपिन से हाथ नहीं मिलाया. चुपचाप हाथ जोड़ कर खीसें निपोरने लगा. गोविंद बेहद दयनीय लग रहा था. बोला, "साहब, आदेश दें तो पदभार इन्हें सौंप दूं."

गजल

आंखें उस की सजल,
बातें उस की सरल है,
चेहरे में खिला हुआ चेहरा कंवल है,
कैसे कहूं यारो,
वह गीत है या मीत है,
या दर्द में डूबी हुई,
फिर कोई गजल है.

—शरद डेनियल

सांप को जैसे छेड़ दिया हो, जिलाधीश की त्योरियां चढ़ गईं. बोले, "क्यों, आप को अभी चार्ज देने के लिए किस ने बोला?"

गोविंद बेचारा सहम कर रह गया, पर हिम्मत नहीं हारी. फिर बोला, "साहब, अगले महीने रिटायर हो रहा हूं. सोच रहा हूं, छुट्टियां ले कर पेंशन के कागज पूरे कर लूं..."

"नहींनहीं... रामनगर के मेले का सारा इंतजाम तुम ने किया है. कोई मंत्री चाहे जब पहुंच सकता है. मैं कोई जोखिम नहीं लेना चाहता. विपिन को अभी कोई अनुभव नहीं है." जिलाधीश बोले.

विपिन की क्षमताओं को पूरी तरह नकार दिया गया था. वह चुप न रह सका. बोला, "साहब, मैं सब कर लूंगा."

बात एक खुराट जिलाधीश की मरजी के खिलाफ कही गई थी. उन का चेहरा तमतमा उठा. बोले, "इतने महत्त्वाकांक्षी मन बनो. रामनगर की किसी भी

(शेष पृष्ठ 170 पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गंदे पापा

कहानी ● अश्विनीकुमार भटनागर

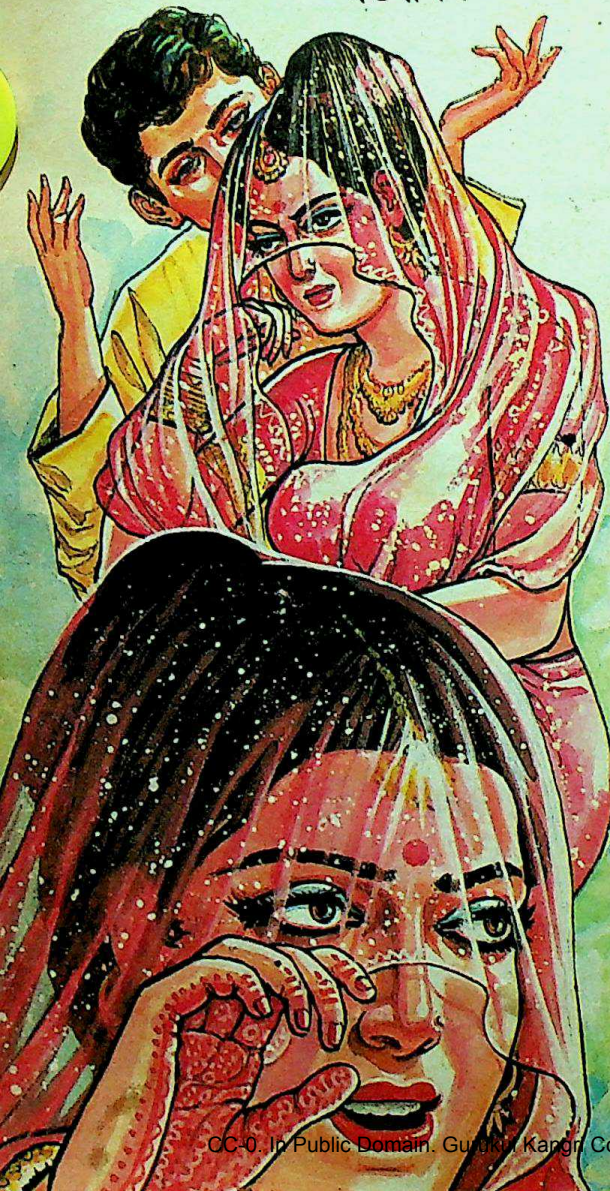

छोटा सा तीन कमरों का फ्लैट खचाखच मेहमानों से भरा था. चारों ओर या तो सामान बिखरा पड़ा था या मेहमान टेढ़ेमेढ़े लेटे खर्राटे भर रहे थे. उल्लास की समझ में नहीं आ रहा था कि कैसे और कहां अपनी पत्नी की एक झलक देख पाए.

वैसे तो शादी के पहले एकदो बार मुलाकातें हुई थीं, पर उन मुलाकातों ने करीब आने की चाह और भी बढ़ा दी थी. छोटे तो छोटे, बड़े भी टांग खींचने से बाज न आ रहे थे. उल्लास का खिला चेहरा शर्म से लाल हो रहा था, वह मुंह छिपाए फिर रहा था.

पिता ने बुला कर कहा, "बेटे, मसूरी में एक होटल में तुम्हारे लिए कमरा आरक्षित हो गया है, सात दिन के लिए. रात की बस में भी दो सीटें आरक्षित करवा दी हैं. आवश्यक सामान बांध लो."

मां ने प्यार से पीठ पर हाथ रखते हुए कहा, "अब यहां तो पता नहीं कब घर खाली होगा, चैन से घूमफिर आओ."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उल्लास सिर्फ मुसकरा कर रह गया.

पिता ने ठंडी आह भर कर कहा, "अब हमारे समय में न तो किसी की सामर्थ्य थी और न ही साहस कि हनीमून के लिए बाहर चले जाएं. जी तो चाहता था कि तुम्हारी मां को ले कर स्विटजरलैंड चला जाऊं."

पत्नी ने कृत्रिम क्रोध से झिड़कते हुए कहा, "चलो हटो, भली चलाई स्विटजरलैंड की. अरे, बलिया बालमपुर तक तो ले नहीं गए... मेरा तो स्विटजरलैंड शादी के बाद से यही चार दीवारें हैं. यहीं काशी है और यहीं काबा."

"वाह, क्या कविता झाड़ी है. चलो, देखें अब तुम्हारा ढाबा."

मातापिता की नोंकझोंक में अन्य रिश्तेदार भी शामिल हो गए. उल्लास जल्दीजल्दी अपना सामान बटोरने लगा. दुलहन से उस का स्वयं तो बात करने का सब के सामने साहस न हो रहा था, सो बूआ की लड़की ने संदेश देने के लिए पांच रुपए झाड़

डा. प्रकाश ने कविता से पूछा, "क्या तुम्हें कोई ऐसी घटना याद आती है, जब किसी ने तुम्हारे साथ बदसुलूकी की हो?"

उल्लास जब जब कविता को छूने की कोशिश करता, वह चीखनेचिल्लाने लगती. उस का यह व्यवहार देख वह परेशान हो उठा. और जब अपने दोस्त की सलाह पर इस का कारण जानने की कोशिश की तो एकएक कर कविता के अतीत की वह परतें खुलती चली गईं जो उस के मनमस्तिष्क पर भय बन कर छाई हुई थीं.

लिए. उल्लास को इतनी उतावली हो रही थी कि वह गठरी की तरह सिमटी पत्नी को ले कर दो घंटे पहले ही बस अड्डे पर पहुंच गया. अन्य यात्री व तमाशबीन नए दूल्हादुलहन को देख कर चटखारे भर रहे थे.

हरेभरे नैसर्गिक माहौल में मसूरी क्या पहुंचा, उल्लास को लगा कि वह किसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूसरी ही दुनिया में आ गया है. सोचने लगा कि अब पूरे सात दिन उस के अपने हैं. इन सात दिनों में सात समुद्र पार कर लेगा और सारी दुनिया जीत लेगा. नए दंपती का स्वागत करने के लिए अपनी रीति के अनुसार होटल प्रबंधक ने उन का कमरा फूलों से सजा दिया था. मेज पर एक केक भी उपहारस्वरूप रखा था.

कविता का मुंह खुलवाने के लिए उल्लास ने आरामकुरसी पर बैठ कर पैर फैलाते हुए कहा, "कितना अच्छा लग रहा है...लगता है, हर साल हनीमून के लिए यहां पर आना पड़ेगा."

कविता ने कुछ न कहा. वह मुंह नीचा कर बिस्तर पर पैर समेट कर बैठी थी, हिलीडुली भी नहीं.

"मसूरी नहीं तो कहीं और चले चलेंगे." उल्लास ने पूछा, "क्या दार्जिलिंग चलना है?"

लेकिन पत्नी ने कोई उत्तर नहीं दिया.

"अरे भई, कुछ तो बोलो."

कविता गुमसुम ही बैठी रही.

उल्लास ने छेड़ा, "गूंगी गुड़िया हो क्या? कहीं मुझे धोखा तो नहीं हो गया? अरे भई, हम दोनों अब अकेले हैं, लाजशरम को छोड़ो और जबान सूखे पत्ते की तरह हिलाओ."

लेकिन कविता के होंठ तो जैसे हिल कर रह गए थे.

"लगता है, कोई इलाज करना पड़ेगा." उल्लास खड़ा हो गया तो कविता और सिकुड़ गई.

"सुना है, हिंदुओं में यह प्रथा है कि दूल्हा दुलहन के प्रथम दर्शन पर उसे गुदगुदी करता है, इस से दुलहन का मन भी गुदगुदाने लगता है." उल्लास उस के पास आ कर बैठ गया और कविता की आंखों में झांकने लगा.

कविता ने आंखें बंद कर लीं. कोई मुसकराहट नहीं, कोई प्रभाव नहीं. पति से हट कर और सिमट गई.

उल्लास ने हंसते हुए कहा, "लो संभालो अपने को, मैं चार करता हूं."

उल्लास ने कविता की बगल में उंगलियां डाल कर गुदगुदाना शुरू कर दिया, "अब तो हंसोगी..."

कविता एकाएक चीत्कार कर उठी, "मुझे मत छुओ...मेरे पास मत आओ...मेरे ऊपर रहम खाओ."

इस अप्रत्याशित प्रतिक्रिया से उल्लास हतप्रभ रह गया कि अचानक यह क्या हो गया? उस के सारे सपने चूरचूर हो गए. वह एकटक अपनी नईनवेली पत्नी को देखने लगा. क्या प्रथम दिवस के प्रथम दर्शन में लड़कियां ऐसा ही नाटक खेलती हैं? शायद कविता उसे मूर्ख बना रही है. अगर ऐसा है तो यह नाटक वह स्वयं भी कर सकता है.

कविता के हाथ कोमलता से अपने हाथों में लेते हुए उल्लास ने सहानुभूति से पूछा, "क्या तुम्हारी कोई समस्या है? क्या तुम ने तनमन से मुझे पति स्वीकार किया है?"

कविता ने सहमति से सिर हिलाया.

"तो फिर क्या बात है?"

"कुछ तो नहीं, मुझे अभी मत सताइए... मैं आप से प्रार्थना करती हूं." कविता ने रोंआसे स्वर में कहा.

"मैं समझा नहीं." उल्लास ने दूर बैठते हुए कहा, "अगर तुम्हारी कोई समस्या है तो मैं पूरी मदद करूंगा. ये शब्द, 'रहम खाइए, मत सताइए' मुझे कानों में बहुत कड़वे लग रहे हैं."

"मैं आप को समझा नहीं सकती. मुझे बहुत डर लगता है."

"क्या तुम्हें कोई बुरा अनुभव हुआ है?" उल्लास ने पूछा.

"ऐसा कुछ नहीं है."

"तो फिर?"

कविता फिर चुप हो गई. हार कर उल्लास उदास मन से कमरे की खिड़की खोल कर बैठ गया. खिड़की में से बाहर उमड़ते बादल अंदर आ रहे थे. ठंडी हवा के झोंके से वह सिहर उठा. मुड़ कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by A[illegible] Chennai and eGangotri

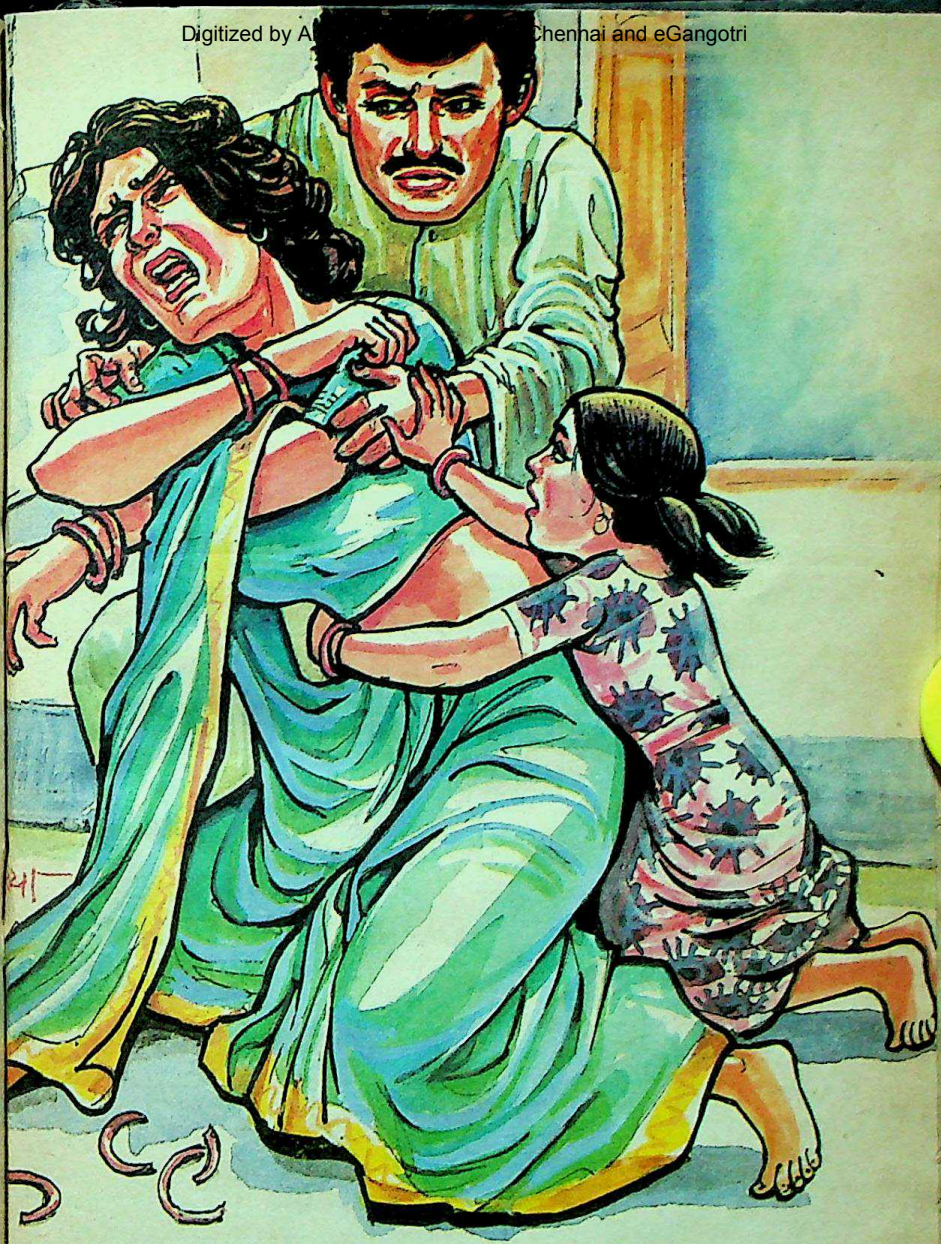

देखा, कविता वैसे ही मूर्ति की तरह बैठी थी.

बैरा गरम चाय की ट्रे ले आया था. उल्लास चाय बनाने के लिए आया तो कविता ने स्वयं उठ कर चाय बनाई.

"कितना दूध?"

"थोड़ा सा."

"चीनी?"

"एक चम्मच."

कविता ने बिस्कुट की प्लेट सामने की

मेरे पति मुझे दबोच लेते, मैं चिल्लाती, "मुझे छोड़ दो." कविता यही समझती कि उस के पिता मुझे मार रहे हैं. वह भी चीखती, 'मां को छोड़ दो... मत मारो... पापा, तुम गंदे हो..."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो उल्लास ने एक बिस्कुट उठा लिया. मूक संवाद चल रहा था. उल्लास को लगा कि कविता को सामान्य होने में समय लगेगा. किसी पुस्तक में उस ने पढ़ा था कि कुछ स्त्रियां सहज ही में सामान्य नहीं होतीं. उन्हें शीशे की तरह सावधानी की आवश्यकता होती है.

भोजन के बाद रात्रि में उल्लास ने दोतीन बार कविता को आलिंगन में लेने का प्रयास किया. पहले तो उस ने न छेड़ने के लिए कहा और फिर चीख पड़ी. कुंठित मन से वह बिस्तर के दूसरे कोने पर लेट गया. रात भर करवटें बदलता रहा. उस की नींद उड़ गई थी. उस ने महसूस किया कि कविता भी जाग रही है.

अगले दिन जबजब उल्लास पास आता, कविता चीख उठती थी. उल्लास की समझ में आया कि शायद उसे दौरे पड़ते हैं. कहीं वह मिरगी की मरीज तो नहीं? कहीं उसे धोखा तो नहीं दिया गया?

तीसरे दिन उल्लास का मन बिलकुल उचट गया. उस ने वापस घर जाने का निश्चय कर लिया और कविता से सामान बांधने के लिए कहा, "यहां रहने में अब कोई आनंद नहीं. सामान बांध लो. मैं बस की सीटें आरक्षित करवाने जा रहा हूं."

"कुछ दिन रुक जाइए न...अभी तो छुट्टियां बाकी हैं."

"क्या फायदा? मुझे क्या मालूम था कि तुम्हें दौरे पड़ते हैं? तुम्हारी मां ने हमारे साथ धोखा किया है." उल्लास ने रूखेपन से कहा.

कविता चुप हो गई. उस की आंखों से आंसू बहने लगे तो उल्लास को तरस आ गया, "तुम कहती हो तो रुक जाते हैं."

"मैं आप को विवश नहीं करूंगी. यही सोचती हूं कि जल्दी चले गए तो लोग क्या कहेंगे?"

उल्लास को क्रोध आ गया, "तो तुम्हें लोगों के कहने की चिंता है...मैं क्या कह रहा हूं उस से कोई मतलब नहीं? मैं तुम्हारे लिए कुछ नहीं?"

"मेरा मतलब ऐसा नहीं था. मैं..."

उल्लास ने ऊंचे स्वर में कहा, "अब यह नाटक बंद करो."

इतनी जल्दी वापस आ जाने से घर में हलचल मच गई. यह कैसा हनीमून था? गनीमत थी कि अधिकांश मेहमान जा चुके थे, नहीं तो जितने मुंह उतनी बातें होतीं. उल्लास का कमरा खाली हो चुका था. कमरा सजा भी दिया गया था. उस की चुप्पी व लटके मुंह को देख कर किसी का कुछ पूछने का साहस न हुआ. पतिपत्नी में झगड़े होना तो एक आम बात है. परंतु विवाह के तुरंत बाद ही ऐसा हादसा हो, यह आसानी से सब की समझ में नहीं आ रहा था.

उल्लास ने कार्यालय जाना शुरू कर दिया. जब नित्य के अनुसार मां ने दोपहर के भोजन का डब्बा पकड़ाया तो उस ने ले जाने से इनकार कर दिया.

मां ने पूछा, "क्या हो गया...तू इतना कुम्हला क्यों गया है? बहू से कुछ भूल हो गई क्या? मैं समझा दूंगी."

"कुछ नहीं मां, बस ऐसे ही..."

"क्या खाएगा शाम को? बहू को बता दूंगी. वही बना देगी." मां ने मामला सुलझाने की दृष्टि से कहा.

"ओह मां." उल्लास ने झुंझला कर कहा, "जो बनेगा, वही खा लूंगा. हां, शाम को आने में देर हो सकती है."

कविता चुपचाप सुन रही थी और मन ही मन व्यथित थी. इस व्यक्ति से उसे भय क्यों? कैसे कहे कि बचपन से ही मर्दों के प्रति उस के मन में भय बैठ गया था. धुंधली धुंधली अतीत की यादें थीं, पर कुछ स्पष्ट नहीं था. अपराध भावना व ग्लानि से वह पीड़ित थी. सास अवश्य पूछेगी, तब क्या उत्तर देगी उसे?

सास से पूछ कर उस ने उल्लास का मनपसंद खाना बनाया. सास को दिन भर कोई शिकायत का अवसर नहीं दिया. ससुर की आगे बढ़ कर सेवा की. सब प्रसन्न थे. किसी ने उस का मन कुरेदना ठीक न समझा.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संध्या को उल्लास ठीक समय से घर आ गया. कविता ने ठीक पांच मिनट में नाश्ते से सजी चाय की ट्रे हाजिर कर दी. उस की मुसकान ने उल्लास का तनाव कम कर दिया. आशा की किरणें फूटने लगीं. अचानक उसे लगा कि सब ठीक हो गया. शायद उस ने कविता को ठीक तरह से नहीं समझा था.

खाने के बाद सास ने शीघ्र ही दूध का गिलास दे कर कविता की छुट्टी कर दी. आंखें नीचे धरती पर टिका कर मंथर गति से उस ने कमरे में प्रवेश किया, आहट से नहीं. सुगंध से उल्लास को पता चल गया कि पत्नी ने प्रवेश किया है.

"आओ, मेरे पास बैठो." उल्लास ने निमंत्रण दिया.

"दूध...मांजी ने आप के लिए दूध भेजा है."

उल्लास ने नटखट मुसकान से कहा, "बड़ा अन्याय है, यह मां का. दूध तो तुम्हें भी चाहिए न...इसी लिए तो सास बदनाम हो जाती हैं."

"नहीं, मांजी बहुत अच्छी हैं."

"अच्छा, तो चमचागीरी भी आती है."

कविता हंस कर चुप हो गई. उल्लास ने देखा कि जब वह मुसकराती है तो बहुत सुंदर दिखती है और जब हंसती है तो मोती जैसे दांत चमक कर एक अद्भुत आकर्षण पैदा कर देते हैं. वह फिर से कल्पना लोक में विचरने लगा और मधुर स्वर में बोला, "अभी तक खड़ी हो, मेरे पास बैठोगी नहीं?"

कविता एक अदा से पलंग पर उल्लास से कुछ हट कर बैठ गई और दूध का गिलास आगे कर दिया.

"आधाआधा." उल्लास ने प्रस्ताव किया.

"ऊहूं."

"तब फिर मेज पर रख दो."

"मांजी गुस्सा करेंगी."

"तो फिर आधाआधा." उल्लास ने जोर दिया.

नेह

सुख संचित हो प्राण में,
तन हो जाए राख,
डोर पकड़ कर नेह की,
गिरा न देना साख.
—संतकुमार टंडन 'रसिक'

"पहले आप पी लीजिए." कविता ने मजबूरी से कहा.

"दूसरा गिलास ले आओ."

"नहीं, मैं इसी में पी लूंगी."

उल्लास का मन हर्ष से नाच उठा. उस ने आधा गिलास दूध पी कर कविता की ओर बढ़ा दिया. कविता ने लजाते हुए बाकी दूध पी लिया और गिलास मेज पर रख दिया. उल्लास ने शून्य वाट का बल्ब जला कर ऊपर की रोशनी बंद कर दी और लेट गया. कविता भी कुछ हट कर लेट गई. उल्लास ने उसे अपनी ओर खींचा तो वह चीत्कार कर उठी.

उल्लास घबरा कर उठ खड़ा हुआ. दरवाजे पर दस्तक दे कर मातापिता पूछ रहे थे कि क्या हो गया?

कविता बुदबुदा रही थी, "मुझे छोड़ दो...मुझे छोड़ दो." उस की आंखों में भय व आतंक के भाव थे.

उल्लास ने दरवाजा खोला. तब तक कविता उठ कर साड़ी ठीक करने लगी थी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मां की आंखों से उत्साहन टपक रहा था कि अवश्य उल्लास ने कुछ जबरदस्ती की होगी. वे चुपचाप लौट गए.

उल्लास ने क्रोध से पूछा, "यह क्या नाटक बारबार करती हो? साफसाफ क्यों नहीं कुछ कहतीं? तुम्हें कुछ बीमारी है? मैं तुम्हें पसंद नहीं? तुम्हें...तुम्हें किसी और से प्यार है?"

कविता ने उत्तर नहीं दिया. वह सुबकसुबक कर रो रही थी. उल्लास एकटक दृष्टि से उसे घूर रहा था और सोच रहा था कि क्या इसे ही शादी कहते हैं?

देशोत्थान

हिंदुस्तान का उद्धार हिंदुस्तान की जनता पर निर्भर है. जनता में अपनी योग्यता के अनुसार यह भावना पैदा करना प्रत्येक देशवासी का परम धर्म है. —प्रेमचंद

उल्लास कार्यालय में फाइलें खोले बैठा था, पर काम में मन नहीं लग रहा था. सब कुछ धुंधला सा दिखाई दे रहा था. सिगरेट पर सिगरेट फूंके जा रहा था. इतनी सिगरेट पीने का आदी न था. सिर चकराने लगा. नया पैकेट खोला ही था कि किसी ने उस के हाथ से पैकेट ले लिया. मुड़ कर देखा तो उस का वरिष्ठ व वयस्क सहयोगी रामचंद्रन खड़ा था. वह उस का घनिष्ठ मित्र भी था.

"पागल हो गया है क्या?" रामचंद्रन ने गंभीर स्वर में कहा.

उल्लास ने उत्तर नहीं दिया.

"लगता है, बीवी से खटपट हो गई है. यार, यह सब चलता है. अभी से अगर छोटीमोटी तकरारों को इतनी गंभीरता से लोगे तो गाड़ी खींचनी मुशकिल हो जाएगी. बेटे, अभी तो सारा जीवन पड़ा है." रामचंद्रन ने उस के कंधे पर हाथ रखते हुए कहा.

"मेरा तो जीवन ही चौपट हो गया है...कुछ नहीं रखा है अब."

"ओह...तो मायूसी इस हद तक पहुंच गई है. मेरी बात मान छोकरी को वातानुकूलित होटल में ले जा और इश्किया माहौल में उस की और अपनी छटपटाहट दूर कर दे." रामचंद्रन ने मुसकराते हुए कहा.

"तुम नहीं समझोगे." उल्लास ने निराशा से कहा.

"मैं नहीं समझूंगा?" रामचंद्रन ने हंसते हुए कहा, "दो बच्चों का बाप, आठ साल पुरानी शादी का अनुभवी यह सब नहीं समझेगा? बेटे, वह तरकीब बताऊंगा कि छोकरी दौड़ीदौड़ी आएगी और पैरों पर लोटने लगेगी."

"छोड़ो भी यार, बेवक्त का मजाक अच्छा नहीं लगता." उल्लास झुंझलाया.

"छोड़ तो दूंगा, पर बात जान कर छोड़ूंगा. तेरा यह उदास थोबड़ा तुम्हारे बदन पर कुछ बेतुका लगता है."

रामचंद्रन ने कुछ इस अंदाज में कहा कि उल्लास को हंसी आ गई, "बहुत ढीठ हो तुम. कहा न, मुझे मेरे हाल पर छोड़ दो."

"नहीं छोड़ूंगा तो क्या फांसी लगा दोगे?"

"विचार कुछ ऐसा ही है."

"यानी कि समस्या कुछ अधिक गंभीर है. चल उठ, नीचे कैंटीन में चलते हैं, वहीं पर दिमागी कसरत करेंगे."

रामचंद्रन के हाथ पकड़ कर खींचने से उल्लास बड़ी अनिच्छा से उठ खड़ा हुआ. काफी से उठती गरम भाप ने चेहरे पर पड़ी तनाव की लकीरों को मिटा दिया. धीरेधीरे कुरेदने से उल्लास ने सब कुछ कह दिया, "मैं ऐसी पागल औरत के साथ नहीं रह सकता..." उल्लास ने दृढ़ता से कहा, "बदनामी तो होगी, जगहंसाई भी होगी, पर मेरे पास कोई और रास्ता नहीं है."

रामचंद्रन ने सोचते हुए कहा, "संबंध जोड़ने में बहुत समय लगता है, पर तोड़ने में कुछ समय नहीं लगता. इतनी जल्दबाजी अच्छी नहीं."

"नहीं, मैं उस के घर तार दे दूंगा कि ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाए अपनी लड़की को.

रामचंद्रन ने गहरी सांस ले कर कहा, "तू मुझे अपना मित्र समझता है न?"

"मैं ने कब इनकार किया है?"

"तो फिर मेरी बात मान...अपने को एक अवसर दे."

"क्या मतलब?"

"हो सकता है, लड़की की कोई समस्या हो, जिस का समाधान आसान हो. उसे किसी डाक्टर को दिखाना चाहिए."

"पर वह तो स्वस्थ है. पागल भी नहीं दिखाई देती. बस अचानक मेरे छूते ही चीखनेचिल्लाने के दौरे पड़ने लगते हैं." उल्लास ने दुखी मन से कहा, "शायद मेरे में ही कुछ दोष है."

"सुन," रामचंद्रन ने समझाते हुए कहा, "उसे साधारण डाक्टर के पास नहीं ले जाना है और न ही पागलों के डाक्टर के पास...उसे किसी मनश्चिकित्सक के पास ले जाना चाहिए, जो उस के मन की गांठ खोल दे."

"तुम ने तो ऐसे कह दिया," उल्लास ने सिर हिलाते हुए कहा, "मानो बात ही कुछ नहीं है."

रामचंद्रन हंसा, "अकसर ऐसा ही होता है."

"मैं तो किसी मनश्चिकित्सक को नहीं जानता. यह भी नहीं जानता कि कविता ऐसे डाक्टर के पास जाना पसंद करेगी भी या नहीं."

"पिछले महीने क्लब में मेरी भेंट एक मनश्चिकित्सक से हुई थी. अमरीका से प्रशिक्षण ले कर वह यहां निजी क्लिनिक खोलने वाला है. काफी दिलचस्प अनुभव बता रहा था. उस का कार्ड मेरे घर पर है. पहले उसे टेलीफोन कर के मिलने का समय ले लूंगा...फिर हम दोनों चलेंगे...ठीक?"

उल्लास ने विवशता से सहमति दे दी.

श्री मद्भगवद् गीता विवेचनी

(मूल श्लोक, शब्दार्थ, हिंदी अर्थ व विवेचना)

लेखक : उत्तमप्रकाश बंसल

गीता के अनेक प्राचीन व आधुनिक भाष्य हैं, पर वे सभी श्रद्धा व भक्ति से प्रेरित हो कर लिखे गए हैं. श्रद्धा व भक्ति का अर्थ है बुद्धि को तिलांजलि और किसी भी कथन की थोड़ी सी भीआलोचना एक पाप.

इस पुस्तक में गीता के प्रत्येक कथन पर तर्क व विवेक की दृष्टि डाली गई है और समाज कल्याण की दृष्टि से अनेक गंभीर व महत्त्वपूर्ण प्रश्न उठाए गए हैं.

हर विचारशील पाठक के लिए एक आवश्यक ग्रंथ. एक प्रति आज ही खरीदिए.

बड़े आकार के 498 पृष्ठ. सुंदर छपाई व पक्की जिल्द. मूल्य 75 रु. डाक व्यय 11 रु. वीपीपी से मंगवाने के लिए 20 रुपए अग्रिम भेजिए.

प्राप्ति स्थान :

दिल्ली बुक कंपनी

एम 12,कनाट सरकस, नई दिल्ली-110011.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डाक्टर प्रकाश ने पूरी बात सुन कर कहा, "स्पष्ट है कि आप की पत्नी शारीरिक व मानसिक रूप से स्वस्थ हैं. हो सकता है बचपन में उन के साथ कोई ऐसा हादसा हुआ हो जिस से मन में गांठ पड़ गई हो. वैसे ठीकठीक उन का परीक्षण करने के बाद ही कह सकूंगा."

उल्लास को चुप देख कर रामचंद्रन ने पूछा, "अच्छा डाक्टर, अगर आप ने ऐसा महसूस किया, कि उस के मन में कोई गांठ है तो आप कैसे इलाज करेंगे?"

डाक्टर प्रकाश हंस पड़ा, "लीजिए, आप तो मेरा व्यावसायिक रहस्य ही जानना चाह रहे हैं."

"नहीं," रामचंद्रन ने शीघ्रता से कहा, "मेरी मंशा यह नहीं थी, केवल आश्वासन के तौर पर..."

डाक्टर प्रकाश फिर हंसा, "मैं तो केवल मजाक कर रहा था. चिकित्सा विज्ञान में कोई व्यावसायिक रहस्य नहीं होता. देखिए, पहले मैं इन की पत्नी से सहजता से प्रश्न कर के उन के अतीत में झांकना चाहूंगा. कभीकभी वह अतीत इतना धुंधला होता है कि प्रश्न और उत्तर से सफलता नहीं मिलती. तब इंजेक्शन या दवा से अर्धचेतना की अवस्था में प्रश्नों के उत्तर मिल जाते हैं. यह सब एक बार में नहीं होता. मरीज का सहज होना व पूरा सहयोग देना बहुत आवश्यक होता है, हमारी आधी सफलता का यही रहस्य है."

डाक्टर प्रकाश के पास जाने में कविता को अच्छा नहीं लगा. परंतु जब वह उस से पहली बार मिली तो डाक्टर के सरल, सामान्य व सहज स्वभाव ने उस के दिल में बैठा डर निकाल दिया. कविता ने पूरा सहयोग देने का भी आश्वासन दिया. पहले तो एकदो बैठकें ऐसे ही परिचित होने तथा डाक्टर से समान तरंग लहर स्थापित करने में हुईं. बाद में डाक्टर प्रकाश ने उस के अतीत के बारे में पैने व गहरे प्रश्न पूछना आरंभ कर दिया. बहुत प्रयत्न करने पर भी वह इस से अधिक कुछ न कह सकी कि किसी भी मर्द के स्पर्श से वह आतंकित हो उठती है.

"क्या तुम्हें कोई ऐसी घटना याद आती है, जब किसी ने तुम्हारे साथ बदसुलूकी की हो?"

"नहीं."

"कोई यौन अपराध?"

"नहीं."

"ठीक तरह से याद करो."

"मुझे अच्छी तरह याद है." कविता ने दृढ़ता से कहा.

वार्तालाप की दिशा बदलते हुए डाक्टर प्रकाश ने अचानक पूछा, "तुम्हें मां से अधिक प्यार है या पिता से?"

"मां से."

"क्यों?"

"मैं ने पिता को बहुत कम देखा है...मां से सदा प्यार पाया है."

"पिता को कम देखा है, इस का क्या मतलब है?"

"उन्होंने मां से बहुत पहले संबंध तोड़ दिए थे."

"यानी तलाक ले लिया था."

"जी हां."

"तलाक का क्या कारण था?"

"पता नहीं, मैं तब बहुत छोटी थी. मां से मैं ने कभी पूछा नहीं और उन्होंने कभी बताया नहीं."

"क्या दोनों में बहुत लड़ाई होती थी?"

"मुझे अच्छी तरह याद नहीं."

"अगर तुम्हारे पिता तुम से मिलना चाहें तो तुम मिलोगी?"

"नहीं, कभी नहीं."

"क्यों?"

"पापा बहुत गंदे हैं."

"ऐसा क्यों कहती हो?"

"पता नहीं, मेरे दिल में उन की कुछ ऐसी ही छवि है."

"क्या ऐसा तुम्हारी मां ने समझाया है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"कभी स्पष्ट तो नहीं कहा, पर उन के व्यवहार से मैं ऐसा ही समझती हूं."

"पापा गंदे हैं, ऐसा तुम्हारा दृढ़ विश्वास है?"

"हां."

"तुम्हारी धारणा गलत भी तो हो सकती है."

"नहीं, मेरी मां कभी झूठ नहीं बोलतीं."

"तुम्हारी ऐसी धारणा में मां का योगदान हो सकता है?"

इस बात का कविता ने उत्तर नहीं दिया.

"तुम पुरुष के स्पर्श से ही चीखनेचिल्लाने लगती हो...क्या हर पुरुष में पिता का भयावह रूप नजर आता है?"

कविता ने उत्तर नहीं दिया.

"उत्तर दो. सोच कर उत्तर दो. इस प्रश्न का जवाब बहुत आवश्यक है."

"शायद." कविता के स्वर में अनिश्चितता थी.

कुछ हलकेफुलके प्रश्नों के बाद डाक्टर प्रकाश ने कविता की उस दिन छुट्टी कर दी. उस ने महसूस किया कि प्रश्नों से कविता का मानसिक तनाव बढ़ गया है. इस कारण जाते समय उसे कुछ गोलियां नींद के लिए दे दीं. वह सोचने लगा, इस के मन में अवश्य ही पिता के संबंध के बारे में कुछ उथलपुथल मच गई होगी.

अगले दिन डाक्टर प्रकाश ने उल्लास को बुलाया.

"जी, आप ने बुलाया?"

"हां, कविता के विषय में कुछ परामर्श लेना है."

"परामर्श?" उल्लास ने पूछा, "मुझ से? परामर्श तो हम आप से ले रहे हैं."

डाक्टर ने हंस कर कहा, "हां, एक अवस्था ऐसी भी आती है, जब डाक्टर को भी परामर्श की आवश्यकता पड़ जाती है."

"कहिए"

"मैं कविता के मातापिता से मिलना चाहूंगा."

उल्लास विचारमग्न हो गया.

"कविता की मां से पूछना पड़ेगा. शायद वह आ भी जाएं. प्रयत्न करूंगा. पिता तो तलाक के बाद मद्रास चले गए थे. उन्होंने दूसरा विवाह भी कर लिया है. उन के बारे में कुछ कहना कठिन है."

"उन का पता तो होगा आप के पास?."

"पता? शायद...पूछना पड़ेगा."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"ठीक है, आवश्यकता पड़ने पर हम से भी संपर्क करेंगे. अभी आप कविता की मां से ही बात करें. शायद पिता तक पहुंचने की आवश्यकता न पड़े."

कविता की मां ने पहले तो डाक्टर से बात करने के लिए इनकार कर दिया. परंतु जब उसे यह धमकी दी कि धोखा देने के कारण उसे कविता को अपने घर बैठना पड़ेगा तो वह अनिच्छा से राजी हुई.

"अपनी पुत्री की भलाई के लिए अच्छा है कि आप मेरे साथ पूरा सहयोग करें." डाक्टर प्रकाश ने कहा, "मैं पुलिस का आदमी नहीं हूं. केवल एक डाक्टर हूं. आप जो कुछ कहेंगी वह कानूनन गुप्त रहेगा. अच्छा होगा कि आप बेझिझक सही उत्तर दें."

पार्वती चुपचाप सुनती रही. माथे पर चमकता पसीना पोंछा और फिर से चश्मा लगा लिया.

डाक्टर प्रकाश ने संक्षेप में विवाह के बाद का कविता का इतिहास फिर बताया.

काफी का प्याला पार्वती के आगे बढ़ाया.

"आप को मालूम था कि कविता को चीखनेचिल्लाने के दौरे पड़ते हैं."

"इतने अधिक तो नहीं कि उसे बीमारी कहा जा सके." पार्वती ने सावधानी से उत्तर दिया.

"ऐसे दौरे पड़ने का कोई कारण तो होता होगा? बैठेबिठाए तो किसी स्वस्थ व्यक्ति को दौरे नहीं पड़ सकते."

पार्वती ने उत्तर नहीं दिया.

"अच्छी तरह सोच कर बताइए, यह जानकारी बड़ी महत्त्वपूर्ण है."

पार्वती ने झिझकते हुए कहा, "वह जब भी मुझे किसी पुरुष के साथ हंसते या बोलते देखती तो चीख कर लोटने लगती थी."

"तो आप ने क्या किया इस के लिए?"

"पुत्री को पालना, बड़ा करना और शिक्षा के बाद विवाह कर देना मेरे जीवन का ध्येय था. उस की यह दशा देखते हुए मैं ने अपने को समाज से अलग सा कर दिया और कई अवसर आने पर भी विवाह नहीं किया."

डाक्टर प्रकाश ने प्रशंसा से कहा, "यह तो आप ने बड़ा त्याग किया. इसी लिए तो समाज में मां का दर्जा व महत्त्व इतना बड़ा है. शायद इसी लिए कविता आप को बहुत प्यार करती है."

"पुत्री का मां से प्यार होना एक प्राकृतिक बात है." पार्वती ने उत्तर दिया.

"और पिता से नहीं?"

पार्वती खामोश ही रही.

"आप ने उत्तर नहीं दिया?"

"यह तो पिता के व्यवहार के ऊपर निर्भर करता है."

"क्षमा करें. एक निजी प्रश्न पूछ रहा हूं." डाक्टर प्रकाश ने पूछा, "आप का तलाक क्यों हुआ?"

"हम दोनों एकदूसरे के लिए नहीं बने थे. यह विवाह एक भूल थी."

"क्या आपस में बहुत झगड़ा होता था?"

"हां."

"और नन्ही कविता उन झगड़ों की चश्मदीद गवाह थी."

"आप ऐसा कह सकते हैं."

"यानी झगड़ते समय आप ने कविता की मनःस्थिति की कभी चिंता नहीं की?"

"पहले तो इस का ध्यान रखते थे, फिर कठिन हो गया."

"यानी आप लोग शीघ्र ही अपने पर नियंत्रण खो बैठते थे?"

"जी हां."

"क्या आप बताएंगी कि झगड़े का कारण अकसर क्या होता था? अकारण तो झगड़ा नहीं होता न?"

पार्वती ने उत्तर नहीं दिया.

"बताइए न?"

"पतिपत्नी के झगड़ों का कोई कारण नहीं होता."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मेरे पास यही उत्तर है."

"यानी आप को पुत्री की भावनाओं और उस के भविष्य की न पहले चिंता थी और न अब है." डाक्टर प्रकाश ने अचानक सख्त स्वर में कहा, "अपना जीवन तो बरबाद किया ही, अब उस का भी बरबाद कर रही हैं."

डाक्टर के प्रश्न से पार्वती तिलमिला उठी. नियंत्रण खो बैठी और चिल्ला कर बोली, "तुम सारे मर्द एक जैसे हो...तुम कसाई हो." कहते हुए वह उठ खड़ी हुई. डाक्टर ने गंभीरता से कहा, "आप स्वेच्छा से आई हैं और स्वेच्छा से जा भी सकती हैं. मैं आप को कोई उत्तर देने के लिए मजबूर नहीं कर सकता, पर पुत्री के भविष्य का उत्तरदायित्व आप के ऊपर है. क्या आप जीवन भर उसे अपने साथ रखने को तैयार हैं?"

पार्वती ने क्रोध से कहा, "आप को ऐसा

"मैं ने कब कहा कि मुझे अधिकार है? मैं तो आप से आप की बेटी की मानसिक स्थिति सुधारने के लिए सहयोग मांग रहा हूं. वैसे मुझे अपने प्रश्न का उत्तर मिल गया है." डाक्टर प्रकाश ने मुसकरा कर कहा.

"क्या मतलब?"

"यही कि आप के झगड़ों का कारण आप का क्रोधी स्वभाव है. आप बहुत जल्दी संतुलन खो बैठती हैं."

"तो फिर?"

"आप ने कविता को सदा भ्रम में रखा. वह पिता को ही अपराधी मान उन से घृणा करती रही."

पार्वती ने कोई उत्तर नहीं दिया.

"बैठिए न, खड़ी क्यों हैं?" डाक्टर ने मुसकरा कर कहा.

पार्वती धीरेधीरे बैठ गई, "आप ठीक कहते हैं. अगर मैं अपने क्रोध का कारण बता दूं तो क्या कविता ठीक हो जाएगी?"

जरा सोचिए !

आप के बच्चों के लिए एक उत्तम उपहार

विश्व बाल साहित्य

बच्चों के लिए पुस्तकों से बढ़ कर अच्छा कोई उपहार नहीं और विश्व बाल पुस्तकों से बढ़ कर अच्छी कोई पुस्तकें नहीं. मनोरंजक, ज्ञानवर्धक और मार्गदर्शक कहानियां, रंगीन चित्र व छपाई– उपहार के लिए सब से उत्तम.

निकटतम पुस्तक विक्रेता से लें या आदेश भेजें :

दिल्ली बुक कंपनी
एम- 12, कनाट सरकस, नई दिल्ली- 110001.

सेट नं. 25

चीतू का उपचार	रु. 2.50
राजा की हार	रु. 2.50
कुंतल नगर के वीर	रु. 2.50
भूतवाला मकान	रु. 2.50
बहादुर की दोस्ती	रु. 2.50
महीने में एक बार	रु. 2.50
मादा चीता	रु. 2.50
जानवरों का डाक्टर	रु. 2.50

पूरे सैट का मूल्य 15 रु.

पूरे सैट का मूल्य केवल 15 रुपए अग्रिम भेजने पर डाक खर्च केवल 2 रु. वी.पी.पी. द्वारा. कृपया सैट का नंबर अवश्य दें. सैट के बजाए चुनी हुई पुस्तकें मंगवाने पर 15 प्रतिशत राशि अग्रिम भेजें. अग्रिम राशि चैक द्वारा नहीं, केवल बैंक ड्राफ्ट/पोस्टल आर्डर/मनीआर्डर से भेजें.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शत प्रतिशत. बस वह बीमार नहीं है. केवल एक गांठ है उस के मन में, जिसे आप ही खोल सकती हैं."

"मैं बचपन से बहुत लाड़प्यार में पली थी. लाड़प्यार ने मुझे जिद्दी भी बना दिया था. जो चीज पाने की हठ कर लेती थी, वह ले कर ही छोड़ती थी, चाहे कितना ही नाटक क्यों न करना पड़े. अगर कुछ मिलने में देर हो जाती तो खूब उधम मचाती थी. नीचे गिर कर लोटने लगती थी. मेरे हठ और क्रोध से सब सहम जाते थे. धीरेधीरे मुझे यह सब अच्छा लगने लगा." पार्वती ने रुक कर गहरी सांस ली.

डाक्टर प्रकाश का टेपरिकार्डर चल रहा था.

पार्वती आगे बोली, "मेरा विवाह एक संयुक्त परिवार में हुआ. मैं साससुर को बरदाश्त न कर सकी. पति की नौकरी भी ऐसी न थी कि अलग रह सकें. इस के अतिरिक्त वे मातापिता के आज्ञाकारी पुत्र थे. मेरे सारे हठ पूरे न कर सकते थे और यही हमारे झगड़ों का कारण बन गया. मैं ने पुरानी आदत के अनुसार ध्यान अपनी ओर खींचने के लिए रोनापीटना, चीखना-चिल्लाना शुरू कर दिया. जब यह भी कुछ असर न कर सका तो मैं कभी कूदने के लिए बालकनी में पैर नीचे लटका कर बैठ जाती तो कभी स्नानगृह को अंदर से बंद कर के बैठ जाती थी. घंटों लोग डर के मारे दरवाजा पीटते रहते थे.

"एकदो बार ऐसा हुआ कि जब भी मैं बालकनी या स्नानगृह की ओर बढ़ती मेरे पति मुझे दबोच लेते. मैं चिल्लाती थी कि 'मुझे छोड़ दो, मुझे छोड़ दो.' मेरे पति तब तक दबाए रखते थे जब तक मैं निढाल नहीं हो जाती थी. अकसर यह नाटक कविता के सामने होता था. वह सोई हुई होती थी तो जग जाती थी. वह यही समझती थी कि उस के पिता मुझे मार रहे हैं. बस, वह भी मुझ से लिपट कर चीखनेचिल्लाने लगती थी कि 'मां को छोड़ दो, मां को मत मारो, पापा तुम मैं के भी स्वाभिमान कविता का भ्रम नहीं तोड़ा. मैं उसे चिपटा लेती थी और तब हम दोनों रोने लगती थीं. जब यह मेरे पति के बरदाश्त के बाहर हो गया तो उन्होंने तलाक मांग लिया."

पार्वती ने गिलास उठा कर पानी पिया.

"आप के पति ने कविता को नहीं मांगा?" डाक्टर ने पूछा.

"मांगा था...उन्होंने मुझे पुत्री को सही वातावरण में पालने के लिए अयोग्य साबित करने का प्रयत्न भी किया. अंत में जज ने कविता से ही पूछा कि वह किस के साथ रहेगी?"

"कविता ने क्या उत्तर दिया?"

खिन्न मुसकान से पार्वती ने कहा, "उस ने कहा कि मैं मां के साथ रहूंगी...पापा गंदे हैं."

"और यही छवि ले कर वह आज तक जी रही है." डाक्टर ने कहा, "और यही उस के अप्राकृतिक व असाधारण व्यवहार का कारण है."

"डाक्टर साहब, अगर आप यह सब कविता को बताएंगे तो वह मुझ से घृणा करने लगेगी."

"कुछ तो बताना ही पड़ेगा. वैसे वह समझदार है, आप अपनी चिंता छोड़िए और उस की चिंता करिए."

कोई दो महीने बाद मां के घर से कविता के नाम एक पार्सल आया. इस में विवाह के समय दिए गए कुछ उपहार थे, जो उस समय पैक नहीं किए जा सके थे. इस में एक आभूषणों का डब्बा भी था. कविता ने उसे खोला तो देखा कि बहुत सुंदर हीरे जड़ित सेट था. सेट के बीच में एक छोटा सा कार्ड रखा था.

कार्ड पर लिखा था, 'गंदे पापा की ओर से.'

कविता की आंखें गीली हो गईं. सोचने लगी, एकदो आंसुओं से क्या होगा, उसे तो कई वर्षों से जमा कालिख धोने के लिए एक विशाल नदी से जल लाना होगा. ●

अरिता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शक का जहर

(पृष्ठ 95 का शेषांश)

"पहले नहीं सोचा था यह. 'हां' क्यों करी थी?" क्रोधित हो वह पूछ रही थीं.

"यह गलती मेरी मां की है. विवाह तय करने से पूर्व मुझ से पूछा ही नहीं गया था." दुखी हो कर सुमिता बोली थीं.

"पर अब हम क्या करेंगे? कार्ड तक छप चुके हैं... कैसे बदनामी का दाग छुड़ा पाएंगे." मां ने दुखी हो कर कहा था.

"नहीं मांजी, अपने कारण आप की बदनामी हरगिज न होने दूंगी. यदि आप को अमिता पसंद हो तो कृपा कर के उसे अपने चरणों में स्थान दे दीजिए." राह सुझाई थी सुमिता ने.

इतनी देर से दर्शक के समान सब देखता-सुनता हुआ लड़का बोल पड़ा, "मां, लाचारी में किए गए कार्यों का परिणाम कभी अच्छा नहीं हो सकता. अमिता मुझे भी पसंद है, आप 'हां' कर दें. रही कार्ड की बात तो इन के स्थान पर अमिता का नाम लिख दिया जाएगा."

बहुत बड़ी चिंता से उस ने सुमिता को उबार लिया था. सुमिता कृतज्ञ हो उठी. 15 दिन बाद निश्चित तारीख व समय पर बरात आई और अमिता पराए घर की हो गई. सुमिता ने सुख की सांस ली, लगा कि एक कंधा बोझ से हलका हो गया है.

जीवन पूर्ववत चलता रहा. मां तो सुमिता से बात तक न करती थीं. नीचे वाले हिस्से में दूसरे किराएदार पत्नी व दो बच्चों के साथ आ बसे थे. दीदी को इतनी फुरसत न थी कि वह किसी और तरफ देखें. साल होतेहोते सुमिता का स्थानांतरण भी देहरादून हो गया. यह स्थानांतरण हुआ नहीं था वरन कह कर कराया गया था.

मां के हृदय में भी पुरानी आशंका ने [illegible] सुमिता चली गई देहरादून, उसे कोई भी रोक न सका. वहां से भी वह बराबर खर्च के लिए रुपया भेजती रही. भुवन को भी वह रुपए भेजती थी.

साल भर बाद भुवन डाक्टर बन गया और छः महीने और बीतने पर सरकारी हस्पताल में उसे नौकरी मिल गई. यह खबर मिलने पर सुमिता ने बधाई संदेश भेजा. अब सुमिता केवल घर खर्च के लिए रुपया भेजने लगी थी. तब भुवन ने उन्हें पत्र लिखा, "दीदी, अब तो तुम्हारा छोटा भाई घर की जिम्मेदारियां संभालने लायक हो गया है, तुम नौकरी छोड़ कर लौट आओ."

इस के बाद एक दिन अचानक ही सुमिता ने आ कर सब को हैरान कर दिया क्योंकि वह अकेली नहीं थी, सोमेश भी उस के साथ था. उस की मांग में सिंदूर दमक रहा था. बड़ी सी बिंदी माथे पर चमक रही थी. मां समेत सभी चौंक गए. मां क्रोध से पागल हो गईं, "यह क्या किया तू ने कुलच्छनी, नाक कटा के रख दी हमारी. तेरी हिम्मत कैसे हुई यह सब कर के घर में पांव रखने की?" चीख रही थीं मां और मुसकरा रही थीं सुमिता.

"विवाह ही तो किया है, कोई जुर्म तो नहीं किया." सुमिता का हंसना आग में घी का काम कर गया. चीख ही तो पड़ीं मां, "चली जा सुमिता, मेरी आंखों के सामने से. हमारा कोई रिश्ता नहीं तुम से... निकलो घर से."

"रहने के लिए आई भी नहीं हूं. आशीर्वाद ही पाना चाहा था आप का." सुमिता की दृढ़ता में भी भीगेपन का एहसास था. किंतु मां का हृदय तब भी न पिघला, "तेरा मुंह भी देखना 'पाप' है. छिःछिः, ब्राह्मण हो कर बंगाली से शादी. यह भी न सोचा कि तेरे और बहनभाइयों की शादी कैसे होगी? जा चली जा यहां से." मां ने क्रोध और आंतरिक दुख से मुंह फेर लिया. सोमेश से सहा न गया, उस ने सुमिता की बांह पकड़ी, "चलो सुमिता, बहुत अपमान सह लिया तुम ने. जो तुम कर सकती थीं सब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एहसास मर चुके हैं. मेरे भी कम अपमान किया है. मुझे भी ऐसे लोगों से रिश्ते में कोई रुचि नहीं.'' गुस्से से भरा सोमेश सीढ़ियां उतरता चला गया. पीछेपीछे सुमिता घिसट रही थी.

अब इस घटना को बीते वर्षों गुजर चुके थे. अब तो रीता भी दो बच्चों की मां बन चुकी थी. इसी शहर में ससुराल थी, अतः यहीं रहती थी. बहुत वर्षों बाद रीमा दीदी का फिर इलाहाबाद आना हुआ तो उन का मन सुमिता के विषय में जानने को उत्सुक हुआ. रीता के साथ ही वह आई थीं सुमिता की कोठी में.

कोठी वही थी, पर वहां अजीब सी नीरवता चारों ओर व्याप्त थी. जो लान सदा हराभरा रहता था, वहां झाड़ियां उग आई थीं. वहां छाए सन्नाटे को देख रीता का दम घुटने लगा. सीढ़ियां चढ़ कर दरवाजे की घंटी बजाई. दरवाजा खोलने वाली को कुछ क्षण तो रीता पहचान ही न सकी. उसे क्योंकि लड़कपन की आयु बीत चुकी थी. कुंआरेपन में भी विधवा सी लग रही थी.

वही बोली, ''पहचाना नहीं रीता, मैं नमिता हूं. आओ, अंदर आओ.''

चौंक ही तो गई रीता कि यह तो स्वयं को नमिता कह रही है, जबकि वह तो उस की परछाईं भी नहीं लग रही थी. वह कितनी सुंदर हुआ करती थी, पर आज तो जैसे बीते हुए वक्त ने उस का सारा लावण्य चुरा लिया था. नमिता ने उन्हें बैठक में बैठा कर आवाज दी, ''भाभी, देखिए तो कौन आया है.''

एक सुंदर सी युवती निकल कर अंदर के दरवाजे से आई तो नमिता ने उस के बैठने के लिए जगह बनाई, ''रीमा दीदी, यह भुवन भैया की पत्नी हैं... और भाभी, यह सुमिता दीदी की सहेली रीमा दीदी हैं.''

''क्या हाल है सुमिता का?'' जिज्ञासा से पूछ रही थी रीमा.

''न पूछिए दीदी, बहुत ही बुरा हाल है उन का.'' आंसू भर कर नमिता ने कहा,

''रुकिए, पत्थर मत फेंकिए...मैं प्याज, आलू, टमाटर, अंडे फेंकने की अपेक्षा करती हूं.''

शरिता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"जब तक मां जीवित रहीं, उन्होंने कभी भी उन की खबर न लेने दी. एक पत्र भी उन्हें मां के कारण हम लोग न लिख सके. परंतु जीवन के अंतिम क्षणों में मां को पछतावा था."

"क्या... मां नहीं रहीं? यह कब..?" रीमा दीदी का मुंह खुला रह गया.

"तीनचार साल पहले. किंतु दीदी, मां ने बहुत ही बुरा किया, जो कोई खोजखबर ही न लेने दी सुमिता दीदी की. अब हम लोग उन्हें पत्र लिखते हैं, पर उत्तर नहीं मिलता... या यों कहिए कि हमारे पत्र उन तक पहुंचते ही नहीं." रो रही थीं नमिता की आंखें.

"परंतु तुम्हें कैसे पता लगा कि पत्र सुमिता को नहीं दिए जाते?" कुछ चौंक कर ही पूछा था रीमा ने.

"कुछ माह पूर्व ही भुवन भैया देहरादून गए थे. दीदी से भी मिले थे. वहां जो हालत उन की देखी, उस से उन का कलेजा मुंह को आ गया. वह तो घर की नौकरानी ही बन कर रह गई हैं, आय कमाने की मशीन. वह औरत, जिस को अपाहिज जान दीदी ने उस पर सदा दया ही की थी, अब वह दीदी को बात व हाथ दोनों से ही प्रताड़ित करती है."

"पर क्यों करती है उस की सास ऐसा व्यवहार? और क्यों सहती है सुमिता यह सब?" चकित हो पूछा रीमा ने.

"शायद इसलिए कि घर का स्वामित्व कहीं सास के हाथ से चला न जाए और शायद इसलिए भी कि सुमिता दीदी ने स्वयं ही उन के चरणों पर सिर रख कर कहा था वह उन्हें अपना लें. दीदी की दया का बदला उन्होंने इस तरह चुकाया कि उन्हें जीवन भर के लिए दासी बना लिया. दीदी का था भी कौन जो उन के अत्याचार का विरोध करता."

दुखी मन से नमिता ने कहा तो रीमा ने दिलासा देने के विचार से उस के सिर पर प्यार से हाथ फेरा. 30-32 की उम्र तक पहुंच चुकी नमिता बच्चों की तरह रो रही थी. विचलित हो कर रीमा ने कहा, "क्यों नहीं विद्रोह करती सुमिता... जबकि सोमेश का प्यार उस के साथ है."

"नहीं दीदी, जीजाजी सिर्फ दीदी के द्वारा लाए पैसों को चाहते हैं, उन्हें नहीं. आप ने विद्रोह की बात कही है तो एक ही बात कहती हूं, इस यातना को जानबूझ कर ही सुमिता दीदी ने अपनाया है. वह यह कभी स्वीकार नहीं करतीं कि उन्हें कोई दुख भी है?"

रीमा जानती थी कि वह मानिनी सचमुच अपना दुख नहीं स्वीकारेगी. वातावरण अत्यंत बोझिल हो चुका था. इसी को कम करने के खयाल से ही रीता बोली, "तू कब करेगी शादी नमिता."

"ये लोग करेंगे तभी तो करूंगी." हंस कर भाभी की ओर इशारा कर के नमिता ने कहा, पर साफ दिख रहा था कि उस की एक आंख हंस रही थी तो दूसरी में आंसू भी थे.

"भाभी हैं आखिर, इन्हें ही सोचना चाहिए." कह कर पुनः हंसने का प्रयत्न किया नमिता ने. लेकिन हंस ही नहीं सकी, रुलाई फूट पड़ी थी.

आज रीता महसूस कर रही थी कि कभीकभी इनसान की हंसी भी रुलाई का ही दूसरा रूप धर लेती है. रीमा दीदी ने सुमिता का पता मांगा तो वह बोली, "बेकार है दीदी, आप के पत्र उन्हें मिलेंगे ही नहीं."

"फिर भी, प्रयत्न करने में क्या हर्ज है." रीमा ने कहा. अपनी प्रिय सखी की दुर्दशा को सुन कर उस के हृदय में शूल सा चुभा था.

"हां, आप भी कर के देख लें." कहती हुई नमिता कमरे में चली गई. लौटी तो हाथ में पकड़ा कागज रीमा को थमा दिया.

सीढ़ियों से उतरते समय रीता व रीमा दोनों ही दुखी और उदास थीं. वे सोच रही थीं कि कौन इस हरेभरे घर को खा गया. नमिता का एक आंख से हंसना व दूसरी से रोना मन को साल रहा था. उस चुभन को महसूस करने के बाद दोबारा उस ओर जाने की इच्छा व साहस दोनों ही न था. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुआयना

(पृष्ठ 153 का शेषांश)

समस्या को तुम सुलझा नहीं सकोगे." फिर वे गोविंद से बोले, "गोविंद, मैं ने जो कहा, उस का पालन होना चाहिए."

बात जिस ढंग से कही गई थी, उस से साफ जाहिर था कि वह यह कहना चाह रहे थे कि 'ज्यादा बकवास करने की जरूरत नहीं है, तुम लोग जा सकते हो.'

घोर अपमान की जलन से विपिन के दोनों कान और कनपटियां तपने लगीं. सोचने लगा, 'पहली ही मुलाकात में कितना ज़लील कर डाला.'

दोनों चुपचाप कमरे के बाहर आ गए. गोविंद धीरे से बोला, "देखा, कितना कड़वा आदमी हैं. मेरी तो पार लग गई, अब आप जानिए और आप का काम."

विपिन कुछ नहीं बोला.

गोविंद फिर बोले, "लगता है, आप महसूस कर रहे हैं, लेकिन सरकारी नौकरी में तो ऐसा होता ही रहता है. यह क्या हैं, मैं ने तो एक से एक खब्ती अफसर देखे हैं. ये सुसरे अपने को 'खुदा' समझते हैं. सारी सुखसुविधाएं सरकारी खर्च पर भोगते हैं. नौकरचाकर, सैरसपाटे, गाड़ियां, यहां तक कि अखबार भी सरकार के खर्च पर...

"रामनगर के मेले में देखना... दारू, दावतें, नाचगाने... पूरे प्रांत के जिलाधीशों का जमघट लगेगा. सब सरकारी खर्चे पर आएंगे और जाएंगे. सब मुझे ही तो करना है, इसी लिए तो मुझे छोड़ना नहीं चाहते. सब मक्कार हैं... मुझे तो लगता है, देश को यही लोग डुबोएंगे. इन बड़े अफसरों ने अनापशनाप जमीन दबा रखी है. फार्म हाउस... और भी न जाने क्याक्या..."

विपिन गोविंद की शक्ल देख रहा था. वह सोच रहा था कि क्या यह वही गोविंद है जो अंदर भीगी बिल्ली बना बैठा था. यह तो बड़ा घाघ है.

गोविंद का कमरा पास आ गया था. वह बोला, "साहब, चाय पी कर जाइएगा."

"नहीं, धन्यवाद. मेरी पत्नी मेरा इंतजार कर रही होगी."

"कहां?"

"अभी तो मैं डाकबंगले में ही ठहरा हूं."

"मेरे पास गाड़ी है, मैं आप को छोड़ दूंगा."

प्रदेश में रामनगर 'कालापानी' के नाम से विख्यात था. बेशुमार समस्याओं और मच्छरों से घिरा कसबा. आजादी के बाद आबादी के बोझ के कारण कसबे में सैकड़ों कच्चेपक्के मकान बन गए थे. लोगों ने सरकारी जमीन पर कब्जा कर लिया था. दुकानें आगे बढ़ने से बाजार संकरे हो गए थे. कसबे की सड़कें कब बनी थीं, किसी को कुछ याद नहीं. सड़कों में दोदो फुट गहरे गड्ढे पड़ गए थे. तांगा चलता तो पूरा का पूरा चरमरा उठता.

बिजली के अभाव में कोई उद्योगधंधा भी नहीं पनप पाया, पर कसबे के नौजवान बेकार नहीं थे. एक से एक नामी लोग यहां मौजूद थे. चोरउचक्के, उठाईगीर, तस्कर, डाकू, औरतों का व्यापार आदि सब कुछ करते थे यहां के नौजवान. नशे की लत हर नौजवान में थी. भांग, शराब, गांजा, सुलफा, हेरोइन आदि यहां धड़ल्ले से बिकते थे. इन नौजवानों से नेताओं का बड़ा फायदा था.

पूरे कसबे का स्वास्थ्य देखने के लिए सरकारी कागजों में पांच पुरुष और दो महिला डाक्टर थे. 10 स्वास्थ्य सहायिकाएं थीं, नर्सें, कंपाउंडर थे, पर सब के सब गायब रहते थे. नर्सों और स्वास्थ्य सहायिकाओं को अफसरों और मंत्रियों से फुर्सत नहीं थी. डाक्टरों को कंपाउंडर टिकने नहीं देते थे. वे खुद ही सर्जन और डाक्टर बने बैठे थे. खूब चांदी काटी जा रही थी. इस चांदी में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरकारी अफसरों का और नेताओं का भी हिस्सा था.

बरसात में तो कसबे की हालत और भी बुरी हो जाती. नालियों का गंदा पानी सड़कों और महल्लों में फैल जाता. इसी गंदे पानी में बैठ कर फल वाले, दूध वाले, सब्जी वाले, चाटपकौड़ी वाले अपनाअपना सामान बेच कर चले जाते. लोग जब मंदिर जाते तो हनुमान चालीसा पढ़ते हुए इसी कीचड़ में से हो कर जाते. स्त्रियां तनिक धोती ऊंची कर, पल्लू से मुंह ढक कर ही पवित्रता का एहसास कर मंदिर में पहुंच जातीं. कसबे की सारी गंदगी मंदिर के चौक में फैल जाती, लेकिन फिर भी मंदिर पवित्र बना रहता.

विपिन को इस साल मेले को नया रूप देने की तमन्ना थी. दंगलकुश्ती, खेलकूद, सांस्कृतिक कार्यक्रम और तरहतरह की प्रतियोगिताओं आदि की योजनाएं थीं, पर सारे मनसूबे धरे के धरे रह गए. उस की क्षमताओं की झिलमिल डोर जिलाधीश ने एक ही झटके में तोड़ दी.

मेले के बाद विपिन ने पदभार तो संभाल लिया, पर जिस उत्साह से वह आया था, वह उत्साह नहीं रहा. वैसे इस काले पानी में आता ही कौन था. जो अफसर आता, आते ही यहां से भागने की फिराक में लग जाता.

पर विपिन यहां से भागने के लिए नहीं आया था. नए खून में चुनौतियों से जूझने की भरपूर ऊर्जा मौजूद थी, काफी कुछ करने की तमन्ना थी, पर जिलाधीश के उपेक्षापूर्ण व्यवहार की फांस उस के दिल में ऐसी गड़ी कि लाख कोशिशों के बाद भी निकलने का नाम ही नहीं ले रही थी. इतना ही नहीं, उसे जिलाधीश का हर आदेश ऐसा लगने लगा जैसे उसे परेशान करने के लिए ही निकाला गया हो. जिलाधीश की हर बात उसे ऐसे लगती, जैसे उसे अपमानित करने के लिए ही कही जा रही हो.

एक दिन तो हद ही हो गई. सारे जिले की परिवार कल्याण की बैठक हो रही थी.

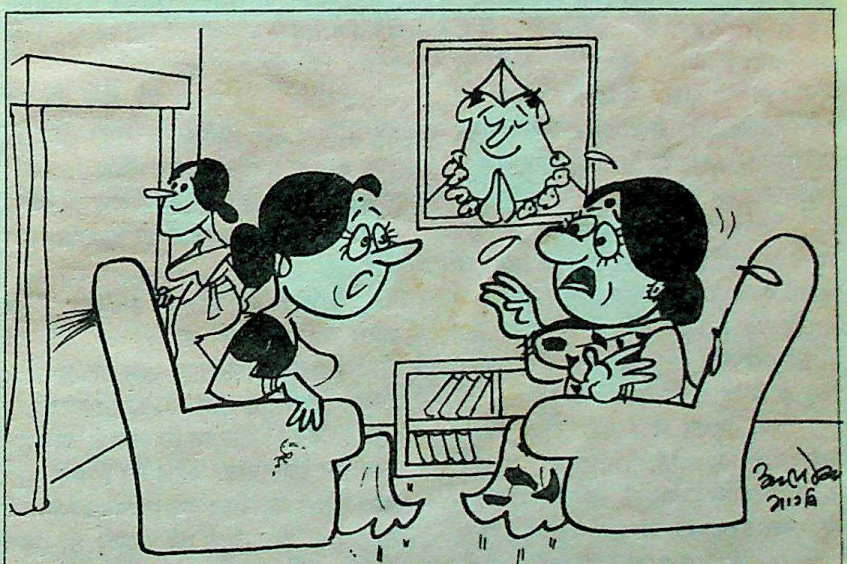

"जैसेजैसे चुनाव पास आ रहे हैं, इन्हें पिछड़े और गरीब वर्ग का ज्यादा ध्यान रहने लगा है यहां तक कि यह मुझ से ज्यादा नौकरानी की बात मानने लगे हैं."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बैठक में जिले के सारे अफसर मौजूद थे. कुछ गैरसरकारी संस्थाओं के पदाधिकारी भी मौजूद थे. सारे उपखंड अधिकारियों के लिए आपरेशन के पांचपांच सौ के लक्ष्य निश्चित कर दिए गए थे, पर रामनगर के लिए आठ सौ का लक्ष्य तय किया गया.

विपिन का माथा तभी ठनक गया कि यह उस को परेशान करने की एक साजिश है. एक बार तो मन हुआ कि वह इस का विरोध करे कि यह ज्यादती उस के साथ क्यों हो रही है.

इतने में जिलाधीश बोले, "विप्रिन, कोई परेशानी?"

बोलने का अच्छा मौका हाथ लग गया. निडर और निस्संकोच बोला, "साहब, किसी से जोरजबरदस्ती तो नहीं की जा सकती... मेरा इलाका तो बहुत पिछड़ा हुआ है."

"तुम नौजवान हो, बहुत कुछ कर सकते हो. तुम नहीं करोगे तो कौन करेगा? यह राष्ट्रीय महत्त्व का कार्यक्रम है... तुम्हें इसे अवश्य करना होगा." जिलाधीश गंभीर हो कर बोले, "ये लक्ष्य हर हालत में पूरे होने चाहिए. जो अफसर जरा सी भी लापरवाही करेगा या ढील बरतेगा, उस के खिलाफ सख्त काररवाई की जाएगी."

विपिन को लगा, जैसे यह फटकार सिर्फ उसे ही पिलाई जा रही हो. वही तो लक्ष्यों पर एतराज कर रहा था. उसी ने तो बोलने की हिम्मत की थी. सुन कर वह तिलमिला उठा. उसे लगा, जैसे भरी सभा में उस के कपड़े उतार दिए गए हों.

पर विपिन कुछ नहीं बोला. बैठक समाप्त हो गई. लगा, जैसे प्राइमरी स्कूल के बच्चों की छुट्टी हो गई हो. सारे अफसर खूंटा तुड़ा कर भागने की फिराक में तो बैठे ही थे.

विपिन दिनरात गांवगांव और डगर-डगर घूमता रहा. गांव वालों के साथ धूल और धरती पर बैठा, उन की टूटी चारपाइयों पर पेड़ के नीचे बैठा, उन के साथ रूखासूखा खाना खाया, उन के कंधे पर हाथ रख कर उन के दुखदर्द की कहानी सुनी. कई रातें उन के साथ खेतखलिहानों में बिताईं. विपिन के इस अपार स्नेह से गांववासी अभिभूत हो उठे. हर गांववासी गौरव का अनुभव कर रहा था कि सरकार का बड़ा हाकिम उस के कंधे पर हाथ रख कर उस की बात सुन रहा है. अब तक ऐसा किया किस ने था? सब दूर ही दूर रहे. गांव वालों को दुत्कार के सिवाय अब तक और मिला ही क्या था?

विपिन के एक इशारे पर सब मरमिटने के लिए तैयार हो गए थे. एक दिन गांव के गांव रामनगर के रामलीला मैदान में इकट्ठे हो गए. पांचछः हजार से कम लोग नहीं थे. उस रात पूरा कसबा लोकसंगीत, नौटंकी और भजनकीर्तन से गूंजता रहा.

ऐसा मेला रामनगर के इतिहास में पहले कभी नहीं हुआ था.

दूसरे दिन शाम के पांच बजते ही सारे लोगों की निगाहें मंच पर टिक गईं क्योंकि कसबे के सब से बड़े हाकिम विपिन मोहन का भाषण होने जा रहा था.

विपिन सही समय पर मंच पर जा पहुंचा. एक बार जब उस ने अपार भीड़ को देखा तो मन गदगद हो उठा. जैसे ही उस ने हाथ हिला कर लोगों का अभिवादन किया तो सारा आकाश तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा.

'एस.डी.ओ. साहब जिंदाबाद...' हर तरफ यही गूंज रहा था.

विपिन ने माइक थाम लिया और बोला, "नहीं...एस.डी.ओ. साहब जिंदाबाद नहीं... जनता जनार्दन जिंदाबाद, परिवार नियोजन जिंदाबाद...आज का हमारा यही नारा है..." और फिर जब विपिन का भाषण शुरू हुआ तो सन्नाटे की लकीर सी खिंच गई. विद्वता का अपार और अविरल स्रोत बह उठा.

तभी विपिन ने देखा कि पेशकार लपकता हुआ मंच की ओर आ रहा है. वह घबराया हुआ सा बोला, "हुजूर, कलक्टर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"कलक्टर साहब...?" विपिन एकदम चौंका, "उन के आने का कोई कार्यक्रम था क्या?"

"नहीं तो सरकार..."

विपिन बड़े असमंजस में पड़ गया. एक ओर क्रोधी जिलाधीश तो दूसरी ओर अपार भीड़, किस को छोड़े? अगर भीड़ छोड़ कर जाता है तो फिर यह इकट्ठी नहीं होने की. भीड़ बिखर गई तो सारे लक्ष्य धरे रह जाएंगे. फिर भरी सभा में प्रमोदकुमार उसे अच्छी तरह जलील करेंगे.

विपिन पास बैठे तहसीलदार से बोला, "आप चले जाइए. सारी स्थिति समझा दीजिए. आधे घंटे में मैं भी पहुंच रहा हूं."

भाषण फिर शुरू हो गया.

लगभग 20 मिनट बाद भाषण खत्म होते ही लोग एकएक कर आपरेशन के लिए नाम लिखवाने लगे. लोगों में होड़ मच गई 80...100...200...300...500...800, लोग रुकने का नाम ही नहीं ले रहे थे.

विपिन ने सोचा कि अब सब ठीक है. अब यहां रुकना व्यर्थ ही है. वह डाक बंगले की ओर चल पड़ा, लेकिन जिलाधीश तब तक जा चुके थे. तहसीलदार के चेहरे पर बोला, "बाप रे बाप... राजा का अफसर है.. काटने दौड़ता है साहब, सारी धरती कांप उठी... मैं तो थर्रा गया. कहने लगे, 'तुम चुप रहो... तुम्हें किस ने बुलाया है... तुम जा सकते हो.. एस.डी.ओ. कहां है?'... हद हो गई साहब."

विपिन को तनिक हंसी आ गई. तहसीलदार को तसल्ली देता हुआ बोला, "चिंता मत करो. जाओ, तुम रामलीला मैदान में जा कर लोगों को संभालो."

विपिन का विवाह हुए एक वर्ष बीत चुका था. वह अपनी पत्नी चारु से एक पल भी दूर नहीं रहना चाहता था. वह चाहता था कि वह हमेशा चारु की मदिर दृष्टि और उस के संसर्ग में छाई मादकता में ही डूबा रहे. चारु की हर सांस विपिन के अंगअंग में महुआ के फूलों जैसी गंध की मादकता भर देती थी.

विपिन का मन जब भी अशांत और क्लांत होता तो वह चारु के अंक में समा कर आंखें मूंद लेता. चारु की लंबीलंबी नरमनरम उंगलियां विपिन के बालों में उलझतीसुलझती रहतीं. दिमाग में उफनता

नई दिल्ली में

- अंगरेजी की नवीनतम पुस्तकें
- हिंदी प्रकाशकों की विविध विषयों पर पुस्तकें
- सरिता, मुक्ता, गृहशोभा, चंपक, सुमन सौरभ, अलाइव व वूमंस ईरा का वितरण केंद्र
- दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन समूह के लिए विज्ञापन स्वीकार करने का केंद्र

दिल्ली बुक कंपनी

एम/ 12, कनाट सरकस, नई दिल्ली- 110001.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेकिन उस दिन जब विपिन तीन दिन और चार रातों की कड़ी मेहनत के बाद थकाहारा घर पहुंचा तो चारु की समूची देह का स्पर्श भी उस के उद्विग्न मन को शीतलता प्रदान नहीं कर सका.

चारु उस के गालों से अपना मुंह सटाते हुए बोली, "लगता है, काफी थक गए हो."

विपिन कुछ नहीं बोला. चारु के अंक में सुकून तलाशता रहा.

चारु ने धीरे से विपिन के जूते उतारे, फिर मोजे उतारे, टाई भी उतार दी. गले का बटन खोलते हुए बोली, "गरम पानी से नहा लो, थकान उतर जाएगी, फिर खाना खा कर सो जाना. अब कहीं जाने की जरूरत नहीं है."

"आज तो सारे करेधरे पर पानी फिर गया. लगता है, कलक्टर परेशान किए बिना मानेगा नहीं. आगबबूला हो कर गया है." विपिन बोला.

"हूं... कलक्टर न हुआ, आफत हो गया. उस की वजह से क्यों तनावग्रस्त होते हो. आदत है उस की... आप सुधार सकेंगे क्या?" चारु ने समझाया.

"नहीं चारु, वह शुरू से ही मेरी उपेक्षा कर रहा है, अपमानित कर रहा है. जानता है, सब से कम उम्र का अनुभवहीन अफसर हूं न... दबाए जाओ, जितना दबा सको. यह पता नहीं कि जिस दिन ज्वालामुखी फूट पड़ा न... संभालना मुशकिल हो जाएगा."

"बसबस... शांत रहिए. ठंडा बने रहने में ही फायदा है. घास का कुछ नहीं बिगड़ता, टूटता तो पेड़ ही है. अब की बार वह आए तो क्षमा मांग लीजिएगा."

"क्षमा? क्यों? तुम्हें पता तो है नहीं कि आज क्या हुआ... न जाने आज वह कहां से टपक पड़ा. मेरी कोई गलती नहीं थी."

"ओह, छोड़िए भी... बोर मत कीजिए... मेरी राय में अब की बार जब वह आएं तो खाने पर आमंत्रित कर लीजिएगा...

विपिन उठ कर बैठ गया और बोला, "क्या कहा... आमंत्रित कर लेना? वह हमारे यहां खाना खाने आएगा? कभी नहीं...यह उस की शान के खिलाफ होगा."

"एक बार कह कर तो देखना. मैं चलूंगी आमंत्रित करने. देखती हूं, कैसे नहीं आएगा." चारु बोली.

"ओ... बहुत हिम्मत वाली हो... नहींनहीं, मैं अपनी खूबसूरत बीवी को हरगिज नहीं जाने दूंगा." और फिर विपिन चारु को अंक में समेट कर नरमनरम गद्दे में डूब गया.

उस दिन विपिन सरकारी डाक देख रहा था. डाक में जिलाधीश का निजी लिफाफा देख कर चौंक उठा. सोचने लगा, 'जरूर उस दिन का जवाब मांगा होगा. सब कुछ छोड़ कर हाजिरी दे आता तो कुछ नहीं होता... अजीब मुसीबत है...'

लिफाफा खोल कर पढ़ा तो तनिक तसल्ली मिली, 'चलो, जवाब तो नहीं मांगा... पर श्रीमानजी मुआयना करने क्यों आ रहे हैं?... वह भी इतनी जल्दी. सोमवार में सिर्फ पांच दिन ही तो रह गए हैं. लगता है, पीछे ही पड़ गया है. अहित कर के ही मानेगा. गलती निकालने में क्या लगता है... अफसर की निगाह तो गलती पर ही जाती है. तनिक सी भी चूक सहन नहीं होगी उसे.'

वैसे विपिन पांच दिन तो क्या पांच घंटे के नोटिस पर मुआयना करवा सकता था. उस ने सारे काम कायदेकानून और करीने से किए थे. सरकारी कामकाज में नएनए विचारों और परिपाटियों का समावेश किया था. लाल फीते को छोटे से छोटा करने की कोशिश की थी. जनता का कौन सा काम कितने दिन में होगा, यह सब निर्धारित कर बोर्ड पर लिख दिया गया था. अब लोगों को बारबार नहीं आना पड़ता था. जनता खुश थी. सारा कसबा विपिन की प्रशंसा करता था.

पर जो जिलाधीश अहित करने पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized By Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निकालने में. फिर भी विपिन ने मुआयने की तैयारियां शुरू कर दीं.

लेकिन जिलाधीश पांच दिन के बजाय दो दिन पहले ही आ धमका. तहसीलदार भागाभागा विपिन के पास पहुंचा और घबराया सा बोला, "कलक्टर साहब तो अभी से आ गए हैं. मेरे दफ्तर और कोष कार्यालय का तो मुआयना भी कर डाला है."

"क्या?" विपिन एकदम चौंका "और तुम ने मुझे खबर तक नहीं की."

"खबर तो मुझे भी कहां थी...एकदम आ धमके. मैं ने कहा भी कि एस.डी.ओ. साहब को बुला लूं तो वह बोले कि उन्हें परेशान करने की जरूरत नहीं."

20 दिन पहले की घटना ताजा हो उठी. विपिन सोचने लगा कि अगर उस दिन चला जाता तो आज ऐसा नहीं कहते. कितना महसूस कर गए थे. उस से बात तक नहीं करना चाहते. ऐसे कब तक चलेगा. अगर सामने पहुंच गया तो दहाड़ बिना नहीं मानेंगे.

संयत हो विपिन ने तहसीलदार से पूछा, "अब वह कहां होंगे?"

"पता नहीं... देर रात तक लौटेंगे. खाना भी यहीं खाएंगे." तहसीलदार बोला.

रात भर इतना तनाव रहा कि विपिन की नींद ही गायब हो गई. तरहतरह के विचार दिमाग में चक्कर काटने लगे. विचारों के जाल में वह इतना उलझ गया कि निकलना मुशकिल हो गया. जाल ने मस्तिष्क की एकएक नाड़ी को कस कर बांध रखा था. जानता था कि अगर वह जिलाधीश से मिलेगा तो जिलाधीश उस से क्याक्या कहेगा. जिलाधीश के हर प्रश्न का उत्तर वह दिमाग में लिखता और हर बार मिटा देता. किसी भी निर्णय पर नहीं पहुंच पा रहा था.

सारी रात यों ही गुजर गई. सुबह होते ही विपिन बोला, "चारु, नाश्ता तैयार कर

सरिता

सरिता में विज्ञापन दीजिए
अपनी बिक्री बढ़ाइए

उच्च व मध्य वर्ग के 3,00,000 से भी अधिक धनी व समृद्ध परिवारों द्वारा खरीदी जाती है और इस के 80 लाख से भी अधिक पाठक हैं. यद्यपि 'सरिता' महिलाओं में विशेष रूप से लोकप्रिय है, पर परिवार का कोई भी सदस्य इसे पढ़े बिना नहीं छोड़ता.

यदि आप की निर्मित वस्तुएं एवं उत्पादन संपन्न परिवारों द्वारा खरीदे जाते हैं तो 'सरिता' में विज्ञापन दीजिए और बिक्री बढ़ाइए.

विज्ञापन दर अपेक्षाकृत कम व अन्य पत्रपत्रिकाओं से कहीं अधिक आकर्षक लिखें:

विज्ञापन व्यवस्थापक
सरिता रानी झांसी रोड. नई दिल्ली-55

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अभी से आ गए... वह तो प्रमोदकुमार को आने वाले थे?"

"परेशान करने पर तुला हुआ है. आज तो फैसला कर के ही मानूंगा. इस से ज्यादा मैं कुछ नहीं कर सकता...और इतने तनाव में रह कर तो कुछ भी नहीं कर सकता." विपिन पूरी तरह भरा हुआ था.

चारु कुछ नहीं बोली. बोलना चाहती भी नहीं थी. सरकारी मामलों में वह बोले भी क्या.

नाश्ता कर के विपिन जब डाकबंगले पर पहुंचा तो जिलाधीश बरामदे में बैठे अखबार पढ़ रहे थे. सामने मेज पर चाय रखी थी.

"नमस्कार साहब..." विपिन की वाणी में नम्रता थी, दैन्यता नहीं थी.

जिलाधीश ने एक बार तिरछी निगाह से विपिन की ओर देखा, "नमस्कार, बैठिए."

विपिन चुपचाप बैठ गया और जिलाधीश के चेहरे के भावों को पढ़ने की कोशिश में लग गया.

"अब तो आप के पास समय है न?"

बंदूक से निकली वह पहली गोली थी. विपिन तिलमिला उठा, फिर संभल कर बोला, "साहब, मुझे खेद है कि मैं उस दिन नहीं आ पाया. कल के लिए भी माफी चाहता हूं... आप खबर कर देते साहब."

"अचानक निरीक्षण नहीं होना चाहिए था क्या?" सिगार मुंह से लग चुका था. उसे जलाने की कोशिश की जा रही थी.

"क्यों नहीं... साहब, यह विवरण मैं ने तैयार किया है... आप देख लें." प्लास्टिक के कवर में रखा विवरण वाला कागज विपिन ने आगे सरका दिया.

जिलाधीश उस साफसुथरे और करीने से टाइप किए हुए विवरण को एक ही सांस में पढ़ गए.

"हूं." ढेर सारा धुआं उन्होंने उगल दिया.

मुआयना कर लें." विपिन बोला.

"इस विवरण को पढ़ने के बाद मुआयना करने के लिए अब रह ही क्या गया है. विपिन हम ने पूरे कसबे का मुआयना कर लिया है, बहुत अच्छा बदलाव है. हम चाहते हैं कि दूसरे कसबों में भी इसी तरह काम होना चाहिए. तुम वास्तव में होनहार अफसर हो."

सुन कर विपिन हतप्रभ रह गया. एक क्षण में जिलाधीश के प्रति उस की सारी मान्यताएं बदल गईं. एक बार तो उसे विश्वास ही नहीं हुआ कि वह प्रमोदकुमार के सामने बैठा है.

विपिन गदगद हो उठा, बोला, "साहब, मैं तो उस दिन के लिए क्षमा मांगने आया था. भीड़ को छोड़ कर नहीं आ सकता था... जब मैं पहुंचा, तब तक आप जा चुके थे."

"मेरे काम करने का तरीका अलग है. मैं उस दिन यही तो देखना चाहता था कि तुम्हारे लिए मैं जरूरी था कि काम. मुख्य मंत्री ने तुम्हारी बहुत तारीफ की है... सिर्फ तुम्हारे ही लक्ष्य पूरे हो पाए हैं. तुम्हारी वजह से मुझे भी श्रेय मिल गया."

विपिन अभिभूत हुए बिना न रह सका. बोला, "धन्यवाद साहब, मैं यहां चुनौती स्वीकार करने ही आया था. लोगों की भलाई के लिए कुछ कर सकूं, यह मेरे लिए गौरव की बात होगी. बस साहब, आप का संबल मिलता रहे..."

"काम किए जाओ... मेरा पूरा सहयोग रहेगा."

"साहब, एक निवेदन..."

"कहिए."

"मेरी पत्नी आप को खाने पर आमंत्रित करना चाहती है."

जिलाधीश जोर से हंसे, फिर बोले, "तुम्हारी पत्नी? परंतु तुम क्यों नहीं...?

विपिन के दिल में जमी सारी काई साफ हो चुकी थी. वह कुछ न कह सका.●

शरिता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुक्ता

पाक्षिक

युवाओं की अनूठी व अकेली पत्रिका

देश के युवा राष्ट्र निर्माण के आधार हैं. हमारा यह आधार जितना ही मजबूत होगा हम उतना ही सुखद, संपन्न व शक्तिशाली राष्ट्र की कल्पना कर सकते हैं.

युवाओं को मजबूत आधार देने तथा युवाओं को सही राह दिखाने में मुक्ता सदा ही अग्रणी पत्रिका रही है.

हर अंक में

राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय समस्याओं पर विचारोत्तेजक लेख, बेरोजगारी में स्वरोजगार की प्रेरणा, प्रतियोगिता में सफलता के नुस्खे, सफल उद्योगपति बनने के आसान तौरतरीके. इस के साथ साथ युवाओं के मनोरंजन के लिए कहानियां, प्रेम रस में डूबी कविताएं, फैशन, फिल्म व खेल पर विशेष सामग्री.

हर अंक में ढेरों पठनीय सामग्री

आज ही से नियमित खरीदें.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पासा पलट गया

छमाही परीक्षा में मेरे एक मित्र का अंगरेजी का परचा खराब हो गया. उस ने अपनी उत्तर पुस्तिका जमा कराते समय उस के साथ एक चिट नत्थी कर दी जिस पर उस ने लिख दिया :

"मेरे अच्छे अध्यापकजी,

कितनों की जिंदगी आप के हाथ में.

एक मुझ को पास कर देंगे तो आप का क्या जाएगा?"

लेकिन जब जांच के बाद उसे उत्तर-पुस्तिका वापस मिली तो उस का चेहरा देखने लायक हो गया. उत्तरपुस्तिका पर अध्यापक ने भी एक चिट लगा दी थी, जिस पर लिखा था : "कितनी किताबें थीं तुम्हारे पास में. एक अंगरेजी भी पढ़ लेते तो तुम्हारा क्या जाता."

—पंकज वी आचार्य

*

मेरा मित्र अपना इलाज कराने हेतु हस्पताल में भरती था. डाक्टर ने उसे मूत्र परीक्षण कराने को कहा. दूसरे दिन जब इस की रिपोर्ट आई कि मूत्र में गर्भवती होने के लक्षण हैं तो मित्र के साथसाथ सारे कर्मचारी व डाक्टर भी सकते में आ गए. तभी हस्पताल की जमादारनी डरी हुई आई और कहने लगी, "मुझे माफ कर दो. कल सफाई करते वक्त मेरे से ही मूत्र की ट्यूब गिर कर टूट गई थी. मैं ने ही इस ट्यूब की जगह दूसरी ट्यूब अपने मूत्र से भर कर रख दी थी."

—जगेंद्रसिंह रावत

*

मेरे मित्र का पुत्र बहुत झगड़ालू है. एक दिन उस ने मेरे बेटे की पिटाई कर दी. इस की शिकायत जब मैं ने उस से की तो वह बात को टालते हुए बोला, "बच्चे तो झगड़ते ही रहते हैं, इस में क्या किया जा सकता है."

कुछ दिनों बाद उस के बेटे की पिटाई किसी और बच्चे ने कर दी. इस बात का जिक्र उस ने मुझ से किया. मैं ने उसे समझाते हुए कहा, "भाई, बच्चे तो झगड़ते ही रहते हैं, इस में किया ही क्या जा सकता है."

मेरी बात सुनते ही उसे अपनी पिछली भूल का एहसास हुआ और उस का सिर शर्म से झुक गया.

—प्रकाशचंद्र अवस्थी

*

मैं लंदन के एक बाजार में घूम रही थी. एक स्टोर में मुझे पति के लिए खूबसूरत कमीज नजर आई. मैं उसे पैक करने का आर्डर दे कर भुगतान करने चली गई.

कमीज लेने जब काउंटर पर वापस आई तो सेल्सगर्ल ने कमीज थैले में डालते हुए अंगरेजी में पूछा, "आप भारतीय हैं?"

मेरे हामी भरने पर वह बड़ी कृतज्ञता से बोली, "आप की पसंद बहुत अच्छी है. वैसे यह कमीज भी सर्वोत्तम भारतीय कपड़े से बनी है."

—इंद्रा नंदा

*

एक हट्टाकट्टा व्यक्ति भीख मांग रहा था. यह देख कर मेरी माताजी ने कहा, "तुम्हें शर्म नहीं आती, इतना अच्छा शरीर लिए भीख मांगते हो."

वह व्यक्ति भी कम नहीं था. उस ने तपाक से कहा, "क्या आप यही चाहती हैं कि हमलोगों का शरीर अपाहिज और कमजोर हो, भीख मांगने वालों का शरीर स्वस्थ नहीं रहना चाहिए क्या?"

—सुषमा सिन्हा

इस स्तंभ के लिए अपने तथा अपने संबंधियों के अनुभव भेजिए. प्रत्येक प्रकाशित अनुभव पर 50 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. अपने अनुभव इस पते पर भेजें. संपादकीय विभाग, सरिता, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रधान मंत्री के प्रेस सलाहकार

प्रधान मंत्री के प्रेस सलाहकार बनाने की परंपरा इंदिरा गांधी के कार्यकाल से शुरू हुई थी. अब तक किसी एक वरिष्ठ पत्रकार को सलाहकार बनाने की परंपरा रही है परंतु चंद्रशेखर के प्रधान मंत्री बनने के बाद दो प्रेस सलाहकार नियुक्त करने की बात चल पड़ी है.

वास्तव में प्रधान मंत्री अपने निकट के किसी पत्रकार को ही सलाहकार का पद देना चाहते थे. इस के लिए उन्होंने अपने ही गांव के निवासी हरिवंशनारायण सिंह को पसंद भी किया था. वह पहले साप्ताहिक पत्रिका 'रविवार' में काम करते थे. उस के बंद होने के बाद रांची के एक हिंदी दैनिक में कार्यरत थे. उन का सरकारी कामकाज और राजधानी दिल्ली से कोई वास्ता नहीं रहा था. प्रधान मंत्री को सुझाव दिया गया कि इस पद पर राजधानी के वरिष्ठ पत्रकार ही पदासीन होते रहे हैं. इस के बाद अंगरेजी संवाद समिति पी टी आई के संपादक रहे और चंद्रशेखर की एक पत्रिका का काम देख रहे के.पी. श्रीवास्तव के नाम का सुझाव आया. सुझाव मान लिया गया. परंतु हरिवंश को उपसलाहकार बनाया गया क्योंकि उन्हें तो कुछ बनाना ही था. दोनों सलाहकारों को अतिरिक्त सचिव और संयुक्त सचिव का दर्जा दिया गया है.

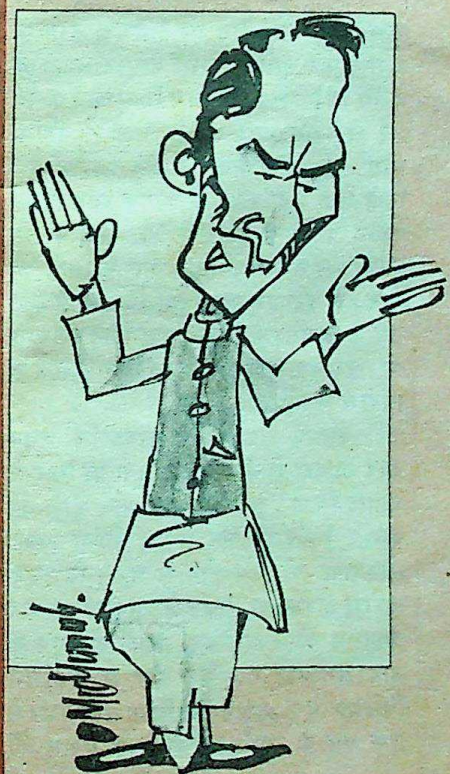

सरकार बनने के तुरंत बाद ही इन दोनों नियुक्तियों की सिफारिश की गई लेकिन विभागीय मामलों में फंस जाने के कारण इन नियुक्तियों में दो मास लग गए. तब तक सरकार के पतन की खबरें उड़ने लगीं. प्रधान मंत्री चंद्रशेखर के इस्तीफे के बाद चुनावी माहौल में इन सलाहकारों को सलाह देने के लिए कुछ नहीं रह गया है सिवाय इस के कि चुनाव के बाद नई सरकार आने पर अपने पद खाली करने का इंतजार करें.

टेलीफोन और चुनाव

चुनाव के पूर्व संचार मंत्रालय की कार्य-क्षमता में बड़ी तेजी से सुधार हुआ है. मंत्रालय से संबंधित दोदो मंत्री हजारों की संख्या में नित नए टेलीफोन लगाने में व्यस्त हैं. संचार उपमंत्री जयप्रकाश ने तो इस के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिए अपने निवास पर ही अपना कार्यालय बना लिया है.

इस तेजी के कारण विभागीय कर्मचारियों की शामत आ गई है. लोकसभा भंग होने के बाद से संचार राज्य मंत्री संजय सिंह और उपमंत्री जयप्रकाश प्रतिदिन बड़ी संख्या में बिना बारी के टेलीफोन आवंटन के प्रार्थनापत्रों को निबटा रहे हैं. विभागीय जानकार बताते हैं कि यदि संचार मंत्री 200 टेलीफोनों को तत्काल लगाने का आदेश देते हैं तो उपमंत्री उस से दोगुने प्रार्थनापत्रों को फटाफट निबटाते हैं. इस बीच मंत्रियों के सहायकों की चांदी हो गई है. इस बारे में पूछने पर उपमंत्री जयप्रकाश कहते हैं कि वह केवल लंबित मामलों को निबटाने में विभाग को अधिक सक्रिय बना रहे हैं जो उन का दायित्व है.

सांसदों की पेंशन

चंद्रशेखर सरकार के त्यागपत्र देने के बाद लोकसभा भंग होने के कगार पर थी. राष्ट्रपति रामास्वामी वेंकटरमन ने भूतपूर्व सांसदों को कुछ प्रस्तावित देय सुविधाओं को अपनी स्वीकृति देने से इनकार कर दिया था. विभिन्न दलों के सांसद विद्रोही मुद्रा में थे. उन का कहना था कि लोकसभा 15 महीने में ही भंग की जा रही है. इस से सांसद इस कार्यकाल के लिए पेंशन के हकदार नहीं होंगे. आखिर राष्ट्रपति के पेंशन भत्तों और सुविधाओं में कुछ समय पहले बढ़ोतरी की गई है, सांसदों को भी बढ़ी हुई सुविधाएं मिलनी चाहिए.

पेट्रोलियम एवं संसदीय कार्य मंत्री सत्यप्रकाश मालवीय पर विभिन्न दलों के सांसदों और भूतपूर्व सांसदों के एसोसिशन का दबाव था कि सदन को भंग किए जाने के पूर्व उन की पेंशन एवं अन्य सुविधाओं को बढ़ाया जाए. राष्ट्रपति भवन में यह फाइल कुछ दिनों तक पड़ी रहने के कारण सांसदों को काफी परेशानी हो रही थी. जब फाइल मंगाई गई तो राष्ट्रपति ने कुछ प्रस्तावों को मानने से इनकार कर दिया जिन में से एक वर्ष के कार्यकाल के लिए पेंशन देने की बात थी. सरकार राष्ट्रपति भवन और सांसदों के विरोध के बीच फंस गई.

अंततः सरकार ने राष्ट्रपति भवन और सांसदों के बीच संपर्क सूत्रों को फिर से बहाल किया. बातचीत हुई और बीच का रास्ता निकालने का प्रयास किया गया. लोकसभा को भंग होने के पहले विधेयक पारित करना था. सुबह बैठक स्थगित कर के शाम को बुलाई गई. काफी दौड़धूप के बाद सरकारी पक्ष की ओर से संबंधित विधेयक में संशोधन पेश किया गया जिस में एक वर्ष के कार्यकाल के लिए पेंशन की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यवस्था की गई. इस के बाद सदन ने फटाफट अपना विधेयक पारित कर दिया. परंतु इस में कानूनी खामी यह है कि राष्ट्रपति की स्वीकृति के बिना इस प्रकार के खर्च वाले विधेयक को पारित नहीं किया जा सकता है.

चुनाव और मंत्री

प्रधान मंत्री चंद्रशेखर के विश्वासपात्र और गृह और सूचना एवं प्रसारण राज्य मंत्री सुबोधकांत सहाय के लिए आगामी लोकसभा चुनाव काफी भारी पड़ रहे हैं. वह इन दिनों किसी सुरक्षित सीट की तलाश में हैं जिस से वह दोबारा चुन कर लोकसभा में पहुंच सकें.

सुबोधकांत पिछली बार झारखंड मोरचा और भाजपा के सक्रिय समर्थन से रांची से चुने गए थे. इस बार झारखंड मोरचा जनता दल और मुख्य मंत्री लालूप्रसाद यादव के साथ है और गृह राज्य मंत्री को चुनाव में हराने के लिए ताल ठोंक रहा है क्योंकि उसे शिकायत है कि झारखंड मोरचा आंदोलन की मांगों को उन्होंने सिरे नहीं चढ़ने दिया. यदि बात बनाने की कोशिश की भी गई तो मुख्य मंत्री लालूप्रसाद यादव ने टांग लगा दी.

सुबोधकांत पर चुनावी खतरा पिछले कुछ समय से मंडरा रहा था. इस के लिए उन्होंने दिल्ली के कांग्रेसी नेताओं से तालमेल बिठा कर दिल्ली की किसी सीट से लड़ने की भी कोशिश की थी. लेकिन तब तक कांग्रेस से जनता दल (स) की दोस्ती टूट गई. इस के बाद उन की परेशानी बढ़ी हुई है और उन के लिए समस्या बन गई है कि जाएं तो जाएं कहां.

पाक सीमा पर कंटीले तारों की बाड़

पंजाब में पाकिस्तान सीमा पार से घुसपैठ की समस्या काफी पुरानी हो गई है. इसे प्रभावी ढंग से रोकने के लिए सीमा पर कंटीले तारों की बाड़ लगाने का काम पिछले कुछ वर्षों से सरकारी तौर पर किया भी गया है.

कार्यवाहक सरकार में गृह राज्य मंत्री सुबोधकांत सहाय इस काम को पूरा कराने के लिए काफी उत्सुक रहे हैं परंतु चुनाव घोषणा से उन की यह उत्सुकता और भी बढ़ गई है. आखिर देश की सुरक्षा का मामला है, इसे टाला नहीं जा सकता. अतः चुनाव के कुछ समय पूर्व ही एक प्राइवेट फर्म को बाड़ लगाने का ठेका दे दिया. यह ठेका 500 करोड़ रुपए का है. यह काम अगले कुछ वर्षों में पूरा किया जाना है.

अधिकारियों और अन्य जानकारों को इस बात की हैरानी है कि इस मामले को नई निर्वाचित सरकार के लिए क्यों नहीं छोड़ा जा सकता था और मंत्री महोदय को इस पर तत्काल आदेश करने की कौन सी बाध्यता थी. लोगों के मन में प्रश्नचिह्न खड़े हो रहे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं. वे कहते हैं कि मंत्री महोदय को चुनाव मैदान में उतरना है. उस के लिए भी तो कंटीली बाड़ की जरूरत हो सकती है.

बिहार कांग्रेस में हड़कंप

बिहार में इन दिनों संभावित कांग्रेस उम्मीदवारों में चुनावी संभावनाओं को ले कर काफी बेचैनी है. पिछले चुनाव में कांग्रेस को राज्य की 54 सीटों में से चार सीटें ही मिली थीं. इन में से कुछ कांग्रेसी उम्मीदवार जनता दल के साथ गुपचुप तालमेल करने की कोशिश कर रहे हैं.

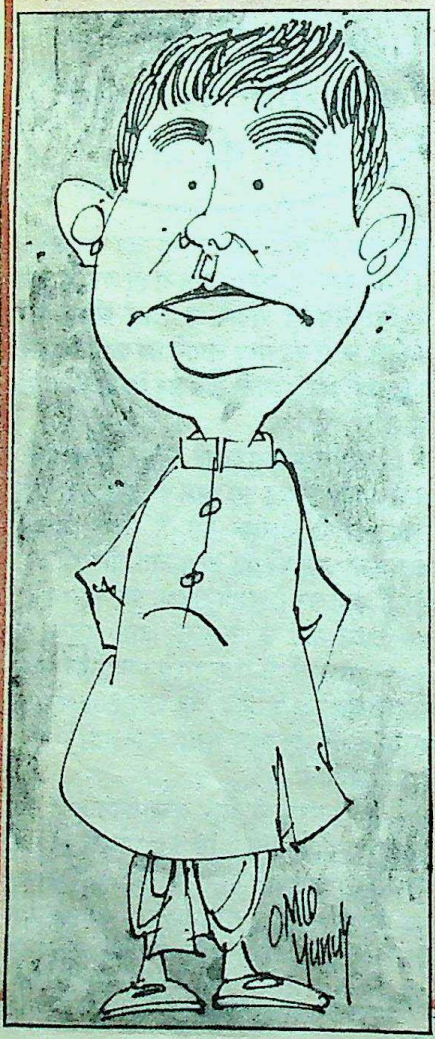

ऐसे ही प्रयासों के बारे में राज्य के मुख्य मंत्री लालूप्रसाद यादव ने पार्टी के एक केंद्रीय नेता से संपर्क कर के कहा कि राजपूत कांग्रेसी सत्येंद्रनारायण सिंह अपनी तथा अपनी पत्नी किशोरी देवी की सीट पर चुनावी मदद का आश्वासन चाहते हैं, क्या किया जाए. केंद्रीय नेता ने कहा कि एक सीट के लिए तो सहयोग का आश्वासन दिया जा सकता है, पर दूसरी के बारे में तो अन्य लोगों से भी बातचीत करनी होगी.

पिछले चुनाव में ये दोनों पतिपत्नी चुनाव हार गए थे. इस के पूर्व ही ये दोनों जनता पार्टी छोड़ कर कांग्रेस में शामिल हुए थे. अब वे अपने पुराने संबंधों के आधार पर सहयोग की गुहार लगा रहे हैं.

मंत्री और धनी मित्र

केंद्रीय मंत्री बनना गौरव की बात है. परंतु उस के साथ धनी मित्रों का होना और भी सुखद होता है. भूतपूर्व वाणिज्य मंत्री डा. सुब्रह्मण्यम स्वामी ऐसे ही सुविधासंपन्न व्यक्ति हैं जिन्हें दोनों ही लाभ प्राप्त थे.

डा. स्वामी को हाल ही में किसी अज्ञात मित्र ने केबल न्यूज नेट वर्क (सी.एन.एन.) डिटा ऐंटीना भेंट किया था, जिस की कीमत करीब दो लाख रुपए होती है. इस कीमती उपहार के बारे में डा. स्वामी बताने का मौका नहीं चूकते लेकिन जब सरकार खिसक रही थी और उन का मंत्री पद खतरे में था तो सवाल यह है कि मंत्री महोदय इस कीमती उपहार का एहसान कैसे चुकाएंगे. शायद इस का तरीका स्वामीजी को पता है, इसलिए उन्हें स्वीकार करने में कोई आपत्ति नहीं हुई.

—समदर्शी●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चंचल छाया

★★★★ अति उत्तम ★★★ उत्तम ★★ मध्यम ★ साधारण ○ बेकार

★ मस्त कलंदर

निर्मातानिर्देशक : राहुल रवेल
संगीत : लक्ष्मीकांत प्यारेलाल
मुख्य कलाकार : शम्मी कपूर, धर्मेंद्र, डिंपल कापड़िया, अमरीश पुरी, प्रेम चोपड़ा, शक्ति कपूर, अनिल धवन और अनुपम खेर.

वैसे तो यह फिल्म जायदाद को हड़पने के षड्यंत्र जैसे बासी कथानक पर बनाई गई है लेकिन धर्मेंद्र के हास्य अभिनय के कारण इसे देखा जा सकता है. अपने हावभावों से उस ने फिल्म में थोड़ीबहुत रोचकता बनाए रखी है.

राय साहब (शम्मी कपूर) का बेटा जब अपनी मरजी से शादी कर लेता है तो वह उसे अपनी जायदाद से बेदखल कर देते हैं. कई साल बाद वह अपने पोते गुड्डू का इंतजार करते हैं जो अपने पिता की मौत के बाद अपनी मां के साथ उन के पास आ रहा है. गुड्डू के आने से राय साहब के रिश्तेदार (प्रेम चोपड़ा) को राय साहब की सारी जायदाद हाथ से सरकती नजर आती है. वह राजा साहब (अमरीश पुरी) से मिल कर गुड्डू को मरवाना चाहता है, मगर गुड्डू बच जाता है, उस की मां मारी जाती है. गुड्डू की मुलाकात शंकर दादा (धर्मेंद्र) से होती है. शंकर दादा को गुड्डू से लगाव हो जाता है. वक्त बीतने पर राय साहब को गुड्डू के बारे में पता चलता है. वह उसे ले जाते हैं. गुड्डू की जिद की वजह से वह शंकर दादा और उस की प्रेमिका प्रीत कौर (डिंपल) को भी साथ रखने के लिए तैयार हो जाते हैं. तभी राजा साहब अपने आदमियों के साथ आ कर गुड्डू का अपहरण कर लेता है, परंतु शंकर सभी के छक्के छुड़ा देता है. पुलिस सभी अपराधियों को गिरफ्तार कर लेती है.

फिल्म की इस प्रकार की कहानी में नाटकीयता की गुंजाइश बहुत होती है. लाख कोशिश करने पर भी निर्देशक नाटकीयता से बच नहीं पाता. इस फिल्म में भी यही हुआ है. जहांजहां धर्मेंद्र ने भावुक दृश्य देने की कोशिश की है, उस का हास्य रूप उस पर हावी हो गया है. बच्चे के अभिनय में भी स्वाभाविकता नहीं झलकती. पुलिस इंस्पेक्टर की भूमिका भी मूर्खतापूर्ण लगती है. शक्ति कपूर इंस्पेक्टर कम, जोकर अधिक लगता है.

फिल्म का निर्देशन सामान्य है. निर्देशक ने मारधाड़, गोलीबारी, शरीर प्रदर्शन आदि सभी फार्मूलों का सहारा लिया है. फिल्म का संपादन कसा हुआ है. गीत आनंद बख्शी ने लिखे हैं. इन गीतों में से शायद ही कोई चल सके. छायांकन ठीकठाक है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभिनय की दृष्टि से धर्मेंद्र का काम अच्छा है. अनुपम खेर इस बार नए रूप में आया है. उस ने एक छक्के (हिजड़े) की भूमिका की है जो थोड़ीबहुत अश्लील किस्म की है. यह भूमिका कहीं उसे ले न डूबे. डिंपल कापड़िया का काम साधारण है. शक्ति कपूर ओवर एक्टिंग का शिकार हुआ है. आजकल वह जिस तरह की भूमिकाएं कर रहा है, वे उस के पतन को ही दर्शाती हैं.

○ घर परिवार

निर्माता-निर्देशक: मोहनजी प्रसाद
संगीत: कल्याणजी आनंदजी
मुख्य कलाकार: राजेश खन्ना, मौसमी चटर्जी, ऋषि कपूर, मीनाक्षी शेषाद्रि, राजकिरण, शोमा आनंद, अशोक सर्राफ, असरानी और प्रेम चोपड़ा.

यह औसत पारिवारिक फिल्म है, ऐसी फिल्मों का एक बंधाबंधाया ढर्रा होता है. ठीक यही कहानी फिल्म 'घरद्वार' में पहले भी दर्शक देख चुके हैं. कुछ कलाकार भी वही लिए गए हैं.

शंकर (राजेश खन्ना) के दो सौतेले भाई बलवंत (राजकिरण) और बिरजू (ऋषि कपूर) हैं. उस की पत्नी है पार्वती (मौसमी चटर्जी). शंकर ने अपनी मरती हुई मां को वचन दिया था कि वह भाइयों की देखभाल करेगा. वह बलवंत को शहर पढ़ने भेजता है. इधर बिरजू गांव में मौजमस्ती करता है, वह एक जमींदार की बेटी माला (मीनाक्षी) से प्रेम करता है. उधर बलवंत शहर से विमला (शोमा आनंद) को शादी कर के गांव ले आता है. विमला अपने पति को ले कर अलग रहने लगती है. शंकर का परिवार टूट जाता है. वह मजदूरी करने लगता है. अंत में एक घटना से बलवंत की आंखें खुलती हैं. वह विमला को लताड़ता है लेकिन परिवार को बचाने की खातिर शंकर को अपनी जान की बाजी लगा देनी पड़ती है. पूरा परिवार फिर से इकट्ठा हो जाता है.

कहानी नाटकीय और लचर है. जगहजगह फिल्म अविश्वसनीय लगती है. निर्देशक कई जगह लड़खड़ा सा गया है. गति भी कम है, इसलिए बोरियत होने लगती है.

अभिनय की दृष्टि से मौसमी चटर्जी जरूर थोड़ाबहुत प्रभावित करती है. राजेश खन्ना नाटकीय लगता है. शोमा आनंद और राजकिरण तो पहले से ही इस तरह की भूमिकाओं में टाइप्ड हो चुके हैं. अतः प्रभावित नहीं करते. ऋषि कपूर और मीनाक्षी शेषाद्रि का अभिनय भी जानदार नहीं है. अशोक सर्राफ और असरानी हास्य दृश्य देने में असफल रहे हैं. अन्य कलाकार भी निराश करते हैं.

फिल्म के गीत अनजान ने लिखे हैं. इन गीतों में शायद ही कोई चल सके. फिल्म का छायांकन भी साधारण है.

○ खून का कर्ज

निर्माता: भप्पी सोनी
निर्देशक: मुकुल आनंद
संगीत: लक्ष्मीकांत प्यारेलाल
मुख्य कलाकार: विनोद खन्ना, रजनीकांत, संजय दत्त, किमी काटकर, संगीता बिजलानी, डिंपल कापड़िया, किरण कुमार, शक्ति कपूर, सुषमा सेठ, सुधीर पांडे और कादर खान.

'खून का कर्ज' की पटकथा ही काफी उलझी हुई है, खुद की ही लिखी पटकथा को निर्देशित करने में निर्देशक मुकुल आनंद मात खा गया है. तीनतीन बड़ेबड़े नायक और नायिकाओं के होते हुए भी फिल्म तीसरी श्रेणी की बन कर रह गई है. अतः इसे देखने का कोई फायदा नहीं है.

सावित्री देवी (सुषमा सेठ) एक अबला औरत है जो एक अनाथालय चलाती है. उस के आश्रम में पले अर्जुन (संजय दत्त) और किशन (रजनीकांत) नामी गुंडे हैं. इन दोनों की टक्कर करन (विनोद खन्ना) से होती है. करन भी लावारिस है और वक्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का मारा है. चंपकलाल (कादरखान) अपराध जगत का बादशाह है.

करन को चंपकलाल के बारे में पता चलता है तो वह उसे नेस्तनाबूद करने की कोशिश करता है परंतु चंपकलाल बच जाता है और फिर से अपना काम शुरू कर देता है. इस काम में वह अर्जुन और किशन की मदद लेता है और करन पर वार भी करवाता है. करन जख्मी हो कर सावित्री देवी के अनाथालय में पनाह लेता है. वहां वह मां सावित्री को वचन देता है कि अर्जुन और किशन को सही रास्ते पर ले आएगा. इस काम में उस की मदद करती है, किशन की प्रेमिका शीतल (किमी), अर्जुन की प्रेमिका सागरिका (संगीता) तथा खुद करन की प्रेमिका तारा (डिंपल). करन, अर्जुन और किशन को चंपकलाल की असलियत दिखा देता है. चंपकलाल मां सावित्री को मार डालला है. करन, अर्जुन और किशन तीनों मिल कर चंपकलाल को खत्म कर डालते हैं.

फिल्म की उपरोक्त कहानी उलझी हुई तो है ही, नाटकीय घटनाओं से भरपूर भी है. पूरी कहानी फ्लेशबैक में चलती है. मारधाड़, खूनखराबा, गोलीबारी से फिल्म भरी पड़ी है. निर्देशक मुकुल आनंद भव्य फिल्म बनाने के लिए जाना जाता है. फिल्म 'हम' का निर्देशन भी उसी ने किया था. 'हम' में उस ने काफी भव्य दृश्य दिए थे. इस फिल्म में उस ने ऐसा कोई प्रयोग नहीं किया है. उस का निर्देशन भी काफी कमजोर है. उस ने शक्ति कपूर को इंस्पेक्टर की भूमिका तो दे दी, लेकिन इस भूमिका में वह जोकर (पागल) अधिक लगता है. जिस तरह से वह बोलता है, फटे कपड़े पहनता है, उस सें वह पागल ही अधिक लगता है. अगर निर्देशक की यह दलील मान भी लें कि उस ने कामेडी डालने के लिए ही ऐसा किया है तो कह सकते हैं कि यह एक घटिया प्रयोग है.

फिल्म जगहजगह दम तोड़ती नजर आती है. संवादों में भी दम नहीं है. कादर खान द्वारा लिखित संवाद द्विअर्थी हो गए हैं. फिल्म के गीत आनंद बख्शी ने लिखे हैं. पांच गीतों में से शायद ही कोई चल पाए.

अभिनय की दृष्टि से कादर खान ने हास्य भूमिका अच्छी तरह निभाई है. अन्य कलाकारों में से कोई भी कलाकार प्रभावित नहीं करता.

○ गुनहगार कौन

निर्माता : रीना खान, श्रद्धा राय
निर्देशक : अशोक गायकवाड
संगीत : राहुलदेव बर्मन
मुख्य कलाकार : राज बब्बर, मोहसिन खान, सुजाता मेहता, निशिगंधा, संगीता बिजलानी, सईद जाफरी और परेश रावल.

'गुनहगार कौन' एक ब्लैकमेलर की कहानी है जो फिल्म के नायक को ब्लैकमेल कर के उस से रुपए ऐंठता रहता है. ब्लैकमेल करने वाले खलनायक की हरकतों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को देख कर हंसी आती है तो ब्लैकमेल हो रहे नायक को देख कर रोना आता है. दोनों का अभिनय स्वाभाविक कम, नाटकीय अधिक लगता है. दरअसल जितना बासी फिल्म का विषय है, उतनी ही पुरानी फिल्म है यह.

फिल्म की कहानी इतनी सी है कि विनोद (राज बब्बर) रायबहादुर (सईद जाफरी) की बेटी मधु (सुजाता मेहता) को अपने प्रेमजाल में फंसा कर उस से शादी कर लेता है. वह एक शातिर बदमाश जागीरा (परेश रावल) के इशारों पर भी नाचता है क्योंकि जागीरा ने उसे एक युवती की हत्या के षड्यंत्र में फंसा रखा है. मधु का भाई रवि (मोहसिन खान) एक पुलिस इंस्पेक्टर है और जागीरा को पकड़ने की कोशिश करता है. वह उसे पकड़ भी लेता है परंतु जेल से छूटने पर जागीरा रवि की अंधी बहन से बलात्कार कर उसे मार डालता है. वह विनोद के बच्चे को भी उठा कर ले जाता है. अंत में विनोद और रवि मिल कर जागीरा को खत्म कर डालते हैं.

इस अपराध फिल्म की कहानी बहुत ही लचर है. निर्देशन में भी कई खामियां हैं तथा फिल्म का संपादन भी काफी कमजोर है. फिल्म के संवाद ढीलेढाले हैं तथा छायांकन कुछ हद तक ठीक है. फिल्म में हास्य का सर्वथा अभाव है तथा न ही कोई विशेष सेट लगाया गया है.

संगीता बिजलानी को फिल्म में ले कर थोड़ाबहुत ग्लैमर डालने की कोशिश जरूर की गई है लेकिन वह एक तीसरी श्रेणी की घटिया अभिनेत्री लगती है. जिस ढंग से वह प्रेम का इजहार करती है, उसे देख कर लगता ही नहीं कि वह एक पुलिस अधिकारी की बेटी है. उस की प्रेमभाषा को सुन कर लगता है जैसे वह एक घटिया किस्म की बाजारू औरत है. राज बब्बर का अभिनय काफी निखरा हुआ है. अन्य कलाकार बेकार हैं. परेश रावल ब्लैकमेलर कम, जोकर अधिक लगता है. फिल्म के गीतसंगीत में कोई दम नहीं है.

व्यक्तिगत विज्ञापन

वैवाहिक विज्ञापन

वर चाहिए

वधवा, 30 वर्षीया, 153 सें.मी., गौरवर्ण, गृहकार्यदक्ष, विधवा 2 बच्चे (9 वर्षीया लड़की, 7 वर्षीय लड़का), हेतु तलाकशुदा, विधुर सुयोग्य वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 713, सरिता, नई दिल्ली-110055.

स्वर्णकार मैढ़, 22/150, बी.ए., घरेलू काम में दक्ष, सुशील, आज्ञाकारी कन्या हेतु शिक्षित, कार्यरत, संपूर्ण विवरण सहित संपर्क करें. लिखें: वि.नं. 714, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जाटव, 23, 157 सें.मी., बी.एससी., गौरवर्ण, सुंदर, सुशील, गृहकार्यदक्ष कन्यार्थ सुयोग्य वर, जातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 715, सरिता, नई दिल्ली-110055.

हैहय क्षत्रिय, 30/158, एम.ए., बी.एड., गेहुआं रंग, शिक्षकीय कार्यरत कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 815, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24/153, बी.ई. इलेक्ट्रोनिक्स, सुरुचिपूर्ण व्यक्तित्व, गेहुआं रंग, सुंदर, हैहय क्षत्रिय कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. पूर्ण विवरण लिखें: वि.नं. 816, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुशवाहा, 27 ½, 163, एम.एससी., बी.एड., गौरवर्ण, गृहकार्यदक्ष, आकर्षक, राजपत्रिताधिकारी की पुत्री हेतु डाक्टर, इंजीनियर, कार्यरत, व्यवसायरत वर चाहिए. सविवरण लिखें: वि.नं. 817, सरिता, नई दिल्ली-110055.

चौहान राजपूत, 21, 165, इलेक्ट्रिकल इंजीनियर, गोरी, आकर्षक, स्लिम, स्मार्ट, घरेलू कन्या हेतु वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 818, सरिता, नई दिल्ली-110055.

प्रतिष्ठित एवं सुशिक्षित, दिल्ली, माहेश्वरी परिवारीय, अत्यंत सुंदर, गौरवर्णा, स्लिम, 22/160, प्रतिभाशाली, पोस्ट ग्रेजुएट, बहुराष्ट्रीय बैंक में असिस्टेंट मैनेजर नियुक्त कन्यार्थ सुयोग्य वर. लिखें: वि.नं. 819, सरिता, नई दिल्ली-110055.

पश्चिम बंगाल, बंगाली स्वर्णकार, 160 सें.मी., 28, एम.ए. (अर्थशास्त्र), गृहकार्यदक्ष, गोरी, सुंदर, सुशील कन्या हेतु सरकारी सेवारत वर चाहिए, उपजातिबंधन नहीं, बंगाली आवश्यक. लिखें: वि.नं. 820, सरिता, नई दिल्ली-110055.

यादव, 27 वर्षीया, 163 सें.मी., ग्रेजुएट, केंद्रीय सेवारत कन्या हेतु उपयुक्त सजातीय वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 821, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27 वर्षीया, 165 सें.मी., सनाढ्य ब्राह्मण,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एम.ए., सुंदर, गौरवर्ण कन्या हेतु सजातीय वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 822, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सरयूपारीण, 26/153, सहा. प्राध्यापक (अंग-रेजी) कानवेंट शिक्षित, सुंदर, सुशील, गौरवर्ण कन्यार्थ केंद्रीय/राज्य, प्रशासनिक सेवा/अधिकारी, वर चाहिए, पिता म.प्र. राज्य प्रशासनिक सेवा अधिकारी. शीघ्र उत्तम विवाह. प्रथम बार कुंडली सहित संपूर्ण विवरण भेजें. लिखें: वि.नं. 823, सरिता, नई दिल्ली-110055.

22/155, नानमैट्रिक, सुंदर, गृहकार्यदक्ष, कम सुनती है, कन्यार्थ वैश्य परिवारीय, रोजगारयुक्त वर चाहिए. विधुर, निस्संतान भी मान्य. लिखें: वि.नं. 824, सरिता, नई दिल्ली-110055.

मध्यप्रदेशीय, एम.ए., ला ग्रेजुएट, सारस्वत ब्राह्मण कन्या, 34 वर्षीया हेतु योग्य अधिकारी वर चाहिए. एक भाई शासकीय सेवा में अधिशासी अभियंता व दूसरा अमरीका में डाक्टर. लिखें: वि.नं. 825, सरिता, नई दिल्ली-110055.

21, 154, एम.ए., चौहान क्षत्रिय, सुंदर, गृहकार्यदक्ष कन्यार्थ सुयोग्य, क्षत्रिय, कार्यरत वर. पूर्ण विवरण सहित लिखें: वि.नं. 826, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सैनी (फूलमाली), बुंदेलखंडी, 19 वर्षीया, बी.एससी. प्रथम वर्ष अध्ययनरत कन्या हेतु वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 827, सरिता, नई दिल्ली-110055.

22, सुंदर, ग्रेजुएट, सिलाई, गृहकार्यदक्ष कन्यार्थ व्यवसायसंपन्न, सजातीय वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 828, सरिता, नई दिल्ली-110055.

विश्वकर्मा, 28/156, एम.ए., अध्यापिका, विवाह पश्चात तलाक, पैर पर मामूली निशान, सुंदर कन्यार्थ वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 829, सरिता, नई दिल्ली-110055.

राजस्थानी, ओसवाल, बी.काम., राष्ट्रीय बैंक में सेवारत, 31/155, पैर पोलियो से प्रभावित किंतु बिना सहारे के चलने में सक्षम, सुंदर, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए, जातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 830, सरिता, नई दिल्ली-110055.

22, 161 सें.मी., एम.काम., गौड़ ब्राह्मण, शाकाहारी, गेहुआं रंग, स्लिम, स्मार्ट, सुशील कन्यार्थ शासकीय सेवारत, सुयोग्य वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 831, सरिता, नई दिल्ली-110055.

23 वर्षीया, 155 सें.मी., कुच्छल गोत्र, अग्रवाल, बी.ए. कन्या हेतु वर चाहिए. लड़की के पैरों पर मामूली सफेद दाग, सामने से बिलकुल भी नहीं दिखते हैं, शादी उत्तम. लिखें: वि.नं. 832, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24 वर्षीया, 155 सें.मी., इंटरमीडिएट, महार (अनु. जाति), गृहकार्यदक्ष, हलका सांवला रंग, संपन्न परिवार हेतु सजातीय कार्यरत वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 833, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कायस्थ, 21, 162 सें.मी., स्नातक, व्यावसायिक प्रशिक्षणरत, सुंदर, गोरी, स्लिम, संतानोत्पत्ति असमर्थ कन्यार्थ सुयोग्य, अविवाहित, स्वावलंबी वर चाहिए. शीघ्र विवाह. लिखें: वि.नं. 834, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सक्सेना, 21, 153 सें.मी., बी.ए. फाइनल, रंग गेहुआं कन्या हेतु कायस्थ वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 835, सरिता, नई दिल्ली-110055.

मध्यप्रदेशीय महार मराठा, पीएच.डी., 30/155, मध्य प्रदेश में वैज्ञानिक कन्यार्थ सुशिक्षित, सुयोग्य वर चाहिए, जातिबंधन नहीं. शीघ्र विवाह. लिखें: वि.नं. 836, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जाट, 23, 157, एम.ए., बी.एससी., बी.एड., हरियाणा निवासी कन्या हेतु सरकारी सेवारत, सजातीय, सुयोग्य वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 837, सरिता, नई दिल्ली-110055.

स्वर्णकार, कलकत्ता निवासी, 22½, 146, बी.ए., हिंदी स्टेनोग्राफी अध्ययनरत, सुंदर, सुशील, गृहकार्यदक्ष कन्यार्थ शिक्षित, सुयोग्य, सरकारी सेवारत, व्यवसायी वर. शीघ्र उत्तम विवाह. लिखें: वि.नं. 838, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अरोड़ा, 37, 155, एम.ए., बी.एड., संतानोत्पत्ति अयोग्य, राजस्थान निजी विद्यालय, मासिक आय 12 हजार, विधवा हेतु विद्यालय संचालन में सहयोगी वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 839, सरिता, नई दिल्ली-110055.

23 वर्षीया, एम.ए., 160 सें.मी., गृहकार्यदक्ष, सुशील, सुंदर, स्मार्ट, स्लिम, गौरवर्ण कन्यार्थ सुयोग्य वर चाहिए. साह व क्षत्री सविवरण लिखें: वि.नं. 840, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माहेश्वरी, 26/155/2,200/-, गोरी, स्मार्ट, एम.ए. (अंगरेजी), बी.एड., केंद्रीय विद्यालय सेवारत कन्या हेतु सजातीय नौकरीपेशा वर चाहिए. पूर्ण विवरण सहित लिखें: वि.नं. 841, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26, 163 सें.मी., एम.ए., स्टेनो, उत्तम परिवार, खत्री पंजाबी हिंदू, आकर्षक, गोरी, गृहकार्यदक्ष, संतानोत्पत्ति असमर्थ कन्यार्थ वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 842, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गढ़वाली ब्राह्मण, 28, 163, एम.ए. कन्यार्थ योग्य वर. प्राथमिकता गढ़वाली कुमांऊनी. प्रथम बार पूर्ण विवरण सहित लिखें: वि.नं. 843, सरिता, नई दिल्ली-110055.

चौहान, कष्टरिया कन्या, स्लिम, सुंदर, आकर्षक, पीएच.डी., लेक्चरार डिग्री कालिज, 157 सें.मी., गोरा रंग, हेतु लेक्चरार, गजेटेड आफिसर, बैंक आफिसर, शिक्षित, व्यावसायिक, सुयोग्य वर. आयु 30 वर्ष से ऊपर चाहिए. शीघ्र विवाह. लिखें:

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

वि.नं. 844, सरिता, नई दिल्ली-110055.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संभ्रांत सनाढ्य ब्राह्मण, श्रेष्ठ आचरण के प्रथम श्रेणी के अधिकारी की 23 वर्षीया, एम.बी.बी.एस., सुंदर, 157, गौरवर्ण कन्या हेतु सनाढ्य/गौड़/आदिगौड़ ब्राह्मण परिवार के डाक्टर/शासकीय अधिकारी वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 845, सरिता, नई दिल्ली-110055.

त्यागी ब्राह्मण, भारद्वाज गोत्र, वाणिज्य स्नातकोत्तर, गौरवर्ण, 24, 157, हेतु सजातीय वर. विस्तृत विवरण प्रथम बार में भेजें. लिखें: वि.नं. 846, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गढ़वाली ब्राह्मण, 22/164 सें.मी., स्नातक, सुंदर, आकर्षक कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 847, सरिता, नई दिल्ली-110055.

बंबईवासी, कानवेंट शिक्षित, 23 वर्षीया, 153 सें.मी. ऊंचाई, इंटीरियर डिजाइनर, प्रोफेशनल फैशन डिजाइनिंग में योग्यता प्राप्त, पतली, सुंदर, सिविल इंजीनियर की पुत्री हेतु उपयुक्त इंजीनियर, आर्किटेक्ट, दिगंबर जैन जातीय, शहर में कार्यरत वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 848, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24, 150, हलवाई, एम.ए., बी.एड., ब्यूटीशियन में डिप्लोमा, गोरी, सुंदर कन्यार्थ डाक्टर, इंजीनियर, अधिकारी वर चाहिए, पिता दूरसंचार विभाग में, भाई इंजीनियर, विवाह शीघ्र व अति उत्तम. लिखें: वि.नं. 849, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सोनकर, 26, एम.ए., एम.एड., गोरी कन्यार्थ सजातीय सेवारत वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 850, सरिता, नई दिल्ली-110055.

पंजाबी तलाकशुदा (विवाह के 1 माह बाद) 28½ वर्षीया, एम.ए., बी.एड., सुंदर, गोरी, कद 150 सें.मी., कन्या हेतु सुयोग्य पंजाबी, सर्विस, बिजनेसमैन वर चाहिए. विवाह शीघ्र. पूर्ण विवरण सहित लिखें: वि.नं. 851, सरिता, नई दिल्ली-110055.

23/157, पंजाबी ब्राह्मण, एम.एससी., एम. फिल, अंगरेजी मीडियम, स्मार्ट, सुंदर, स्लिम, गृहकार्यदक्ष हेतु सजातीय वर चाहिए. शीघ्र विवाह. उपजातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 852, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माहेश्वरी, डाक्टर (फिजियोथेरेपिस्ट), 22/153, सुंदर, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु सजातीय वर (डाक्टर विशेषतः) सविवरण लिखें: वि.नं. 853, सरिता, नई दिल्ली-110055.

बंबईवासी, बढ़ई, विश्वकर्मा, 22, 157, कानवेंट ग्रेजुएट, गौरवर्ण, सुंदर, गृहकार्यदक्ष डिप्लोमा प्राप्त कन्या हेतु बढ़ई, लोहार, सुशिक्षित, कार्यरत वर चाहिए. पूर्ण विवरण सहित लिखें: वि.नं. 854, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सुंदर, स्मार्ट, क्षत्रिय, 29, 155, मिलिट्री आफीसर की निस्संतान विधवा, डाक्टर, डी.एच.एम. संस्थापित, 35 तक का वर, बंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 855, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24, नाई (शर्मा), हाई स्कूल, सुंदर, स्वावलंबी, 2,000/-, तलाकशुदा हेतु स्वावलंबी वर चाहिए. शादी के बाद दोबारा नहीं गई. जातिबंधन नहीं. दहेजलोभी न लिखें: वि.नं. 856, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24½/160 सें.मी., अग्रवाल, बी.काम., बंबई में कार्यरत तथा साथ ही कंपनी सेक्रेट्रीशिप का कोर्स कर रही, स्लिम, सुशील, गृहकार्यदक्ष, साफ गेहुआं रंग, आकर्षक कन्या हेतु व्यवसायरत/सेवारत वर चाहिए. जातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 857, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गोंडिया, कहार, 20, 157, बी.ए. अंतिम वर्ष अध्ययनरत, पूर्वी उत्तरप्रदेशीय, राजस्थान स्थापित परिवारीय हेतु सजातीय, कार्यरत वर चाहिए. प्रथम बार पूर्ण विवरण सहित लिखें: वि.नं. 858, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कायस्थ, 21/157, ग्रेजुएट, गेहुआं घरेलू कन्या हेतु संस्कारी, स्थापित वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 859, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27 वर्षीया, बंबईवासी, बीसा, अग्रवाल, एम.एससी., तलाकशुदा, सुंदर, सुशील, गृहकार्यदक्ष, आकर्षक, आफीसर युवती हेतु सुयोग्य वर चाहिए. जातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 860, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कश्यप राजपूत (कहार), 29 वर्षीया, केंद्रीय सरकार के अधीन कार्यरत, वेतन रु. 1,500/-, इंटर कन्या हेतु सजातीय वर चाहिए. शीघ्र विवाह, दहेज नहीं. पूर्ण विवरण सहित लिखें: वि.नं. 861, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जायसवाल, 25, बी.एससी., बी.एड., गेहुआं, आकर्षक नक्श, भावुक हेतु स्मार्ट, संपन्न व्यापारी, सरकारी कर्मचारी विधुर, तलाकशुदा, भावुक वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 862, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26 वर्षीया, वैश्य, 158 सें.मी., स्नातक विज्ञान, स्नातक, आयुर्वेदाचार्य (बी.एससी., बी.ए.एम.एस.) रंग सांवला, कन्या हेतु सरकारी/गैरसरकारी, व्यवसायरत वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 863, सरिता, नई दिल्ली-110055.

30/165/2,000/-, एम.ए., एलएल.बी., शासकीय सेवारत एवं 26/164/1,600/-, बी. एससी., बी.एड., एम.ए. (अंगरेजी), राजपूत कन्याओं हेतु वर चाहिए. अंतर्जातीय भी विचारणीय. लिखें: वि.नं. 864, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कायस्त, 28/152, सांवली, तीखे नयननक्श, गृहकार्यदक्ष, प्रथम श्रेणी एम.ए., एलएल.बी. कन्यार्थ उपयुक्त वर चाहिए. वरीयता अधिवक्ता/प्रवक्ता.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिखें: वि.नं. 865, सरिता, नई दिल्ली-110055.

राजपूत क्षत्रिय, 27, 160, खूबसूरत, सेवारत, कानवेंट शिक्षित, बी.ए., डिप्लोमा, सेक्रेट्रेरियल प्रैक्टिस, आदर्श परिवार से संबंधित, पूर्वी उत्तरप्रदेशीय अब कलकत्ता निवासी, कन्या हेतु सुयोग्य, सजातीय वर. पिता व्यवसायी. लिखें: वि.नं. 866, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अग्रवाल मित्तल, 24½, 150 सें.मी., बी.एससी., एम.ए., गौरवर्ण, सुंदर, संपन्न, शिक्षित परिवार (पिता वरिष्ठ शासकीय चिकित्सक) मध्य प्रदेश निवासी कन्यार्थ सजातीय वर चाहिए. इंजीनियर, डाक्टर, सी.ए., उच्च व्यवसायी को प्राथमिकता. लिखें: वि.नं. 867, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कलकत्ता निवासी, गर्ग कन्या, 22, 158, कानवेंट बी.ए. (आनर्स), गौरवर्ण, सुशील, गृहकार्यनिपुण हेतु मध्यमवर्ग योग्य वर लिखें: वि.नं. 868, सरिता, नई दिल्ली-110055.

हैहय क्षत्रिय, 25, 158, एम.ए., बी.एड., गोरी, छरहरी, सुंदर, सुशील, गृहकार्यदक्ष कन्यार्थ निर्व्यसनी, शाकाहारी, आत्मनिर्भर वर. जातिबंधन नहीं. पूर्ण विवरण लिखें: वि.नं. 869, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27 वर्षीया, 157 सें.मी., हिंदू नाई, एम.ए./संगीत प्रभाकर, सुंदर कन्यार्थ सरकारी सेवारत वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 870, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24/160, स्नातकोत्तर, जाटव, गृहकार्यदक्ष, सफेद दागयुक्त, सुशील कन्यार्थ सेवारत वर चाहिए, निस्संतान विधुर तलाकशुदा भी स्वीकार्य, जातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 871, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मि क्षत्रिय, गौरवर्ण, स्लिम, 22/163, एम.एससी. (प्रथम श्रेणी), एम.बी.ए. अध्ययनरत कन्या हेतु सुंदर, सुयोग्य, सजातीय, उच्च श्रेणी वर चाहिए. शीघ्र लिखें : वि.नं. 872, सरिता, नई दिल्ली-110055.

म.प्र. निवासी, 35 वर्षीया, 152 सें.मी., प्रथम श्रेणी राजपत्रित अधिकारी, 5,100/-, एम.ए. (अर्थशास्त्र), एलएल.बी., थ्रू आउट फर्स्ट क्लास, रंग गेहुआं, आकर्षक, अनुसूचित जाति हेतु योग्य वर चाहिए, दहेज एवं जातिबंधन नहीं, साधारण विवाह, म.प्र. में कार्यरत को प्राथमिकता, प्रथम बार में पूर्ण विवरण सहित लिखें: वि.नं. 873, सरिता, नई दिल्ली-110055.

30 वर्षीया, 150 सें.मी., गेहुआं रंग, एम.ए., बी.एड., गृहकार्यदक्ष, केंद्रीय विद्यालय सेवारत राजपूत कन्यार्थ सजातीय वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 874, सरिता, नई दिल्ली-110055.

पांडेय कान्यकुब्ज ब्राह्मण, भारद्वाज गोत्र, 25, 157, एम.एससी. कैमिस्ट्री, सुंदर, गृहकार्यदक्ष कन्यार्थ सुयोग्य, सजातीय, कार्यरत वर चाहिए. पिता वैज्ञानिक, सी.डी.आर.आई., हैदराबाद, लिखें: वि.नं. 875, सरिता, नई दिल्ली-110055.

वधू चाहिए

कुशवाहा राजपूत, एअरफोर्स पुलिस कारपोरल, 29/182/2,000/-, हेतु सजातीय वधू चाहिए. सविवरण लिखें: वि.नं. 761, सरिता, नई दिल्ली-110055.

चमार, 29, 164, एम.बी.बी.एस., हाउस जाबरत, स्मार्ट, संपन्न परिवार, हेतु मेडिको, सेवारत, सुंदर, दहेजविरोधी वधू चाहिए. जातिबंधन नहीं. विज्ञापन उत्तम चयन हेतु. लिखें: वि.नं. 762, सरिता, नई दिल्ली-110055.

प्रतिष्ठित, सुशिक्षित, माहेश्वरी, दिल्ली परिवारीय, 26/173/65, गौरवर्ण, अति आकर्षक कंप्यूटर इंजीनियर, बी.टेक. (आई.आई.टी.), एम.एस. अमरीका), पीएच.डी. अध्ययनरत, एवं अमरीका उच्चपदस्थ हेतु सुंदर, सुशिक्षित वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 763, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अग्रवाल, 26 वर्षीय, 180 सें.मी., सुंदर, स्मार्ट, ला ग्रेजुएट, निजी व्यवसाय, युवक हेतु सुशिक्षित, पारिवारिक वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 764, सरिता, नई दिल्ली-110055.

32/156, व्यवसायरत, सिंधी युवक हेतु वधू. दहेजबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 765, सरिता, नई दिल्ली-110055.

दृष्टिहीन, 27 वर्षीय, 160 सें.मी., 3,000 रु., एम.ए., बी.एड., राजकीय अध्यापक हेतु आत्मप्रेरित, विवाह इच्छुक वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 766, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सुंदर, गृहकार्यदक्ष, पारिवारिक, सुशिक्षित, माहेश्वरी कन्याएं, 26, 177 सें.मी., बी.टेक., प्लास्टिक इंजीनियरिंग डिप्लोमा, गौरवर्ण, स्मार्ट, केंद्रीय सरकारी प्रतिष्ठान में कार्यरत एवं 25, 172 सें.मी., बी.एससी., बिजनेस मैनेजमेंट डिप्लोमा, निजी शेयर व्यवसाय, गेहुआं रंग, स्मार्ट, मद्रास स्थित भाइयों हेतु चाहिए. जन्मपत्री सविवरण आवश्यक. लिखें: वि.नं. 767, सरिता, नई दिल्ली-110055.

मारवाड़ी अग्रवाल, 26/178, किसी भी लायब्लिटी बिना, कानूनन तलाकशुदा, आकर्षक युवक को सुदर्शनी घरेलू वधू चाहिए. बंबई में निजी व्यापार, पांच अंकीय आय, फ्लैट, कार द्वारा सुव्यवस्थित, दहेज नहीं. प्रतिष्ठित परिवारीय कन्याओं के अभिभावक, तलाकशुदा नहीं, संपर्कार्थ लिखें: वि.नं. 768, सरिता, नई दिल्ली-110055.

संपन्न, 45 वर्षीया, अविवाहित हेतु शिक्षित, विधवा, परित्यक्ता सीधा पत्र लिखें: वि.नं. 769, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जैन, 25/170/50, सुंदर, ग्रेजुएट, अपनी दो इलेक्ट्रोनिक्स इंडस्ट्रीज, आय पांच अंकीय, हेतु अति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुंदर, शार्प फीचर, घरेलू जैन कन्या चाहिए. बबई, दिल्ली निवासीय प्राथमिकता. लिखें: वि.नं. 770, सरिता, नई दिल्ली-110055.

30, अग्रवाल, आई.ए., इंटरनेशनल इलेक्ट्रोनिक्स पार्ट्स सप्लायर, कुंआरा, आकर्षक, अकेला, मातापिता नहीं, विदेश में रहने का इच्छुक, निजी मकान एवं संपत्ति, हेतु विदेशी कन्या चाहिए. उम्र, धर्म, जातिबंधन नहीं. विधवा, तलाकशुदा अन्य स्वीकार्य, प्रथम बार सविवरण लिखें: वि.नं. 771, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24/170, कस्टम इंसपेक्टर (केंद्र सरकार), कान्यकुब्ज ब्राह्मण युवकार्थ वधू. लिखें: वि.नं. 772, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26/157/2,500/-, सरकारी अध्यापक, नेत्रहीन युवक को वधू चाहिए. शिक्षा, जाति, धर्म का बंधन नहीं, आंशिक विकलांगता को प्राथमिकता. लिखें: वि.नं. 773, सरिता, नई दिल्ली-110055.

प्रोफेशनल बिजनेसमैन, 30, अविवाहित, कनाडा में स्थापित हेतु सुयोग्य, परंपरागत रिवाजों वाली वधू. कृपया लिखें: ROHIT KHANNA. BOX 801, "H" MONTREAL, CANADA P.Q. H3G-2M7.

26/170/5,000/-, ग्रेजुएट, निजी व्यवसाय, गेहुआं रंग, काठमांडू (नेपाल) निवासी, मारवाड़ी ब्राह्मण हेतु सुशील, गृहकार्यदक्ष, सजातीय कन्या चाहिए. लिखें: वि.नं. 774, सरिता, नई दिल्ली-110055.

हिंदू (नाई), 25, 168, 11वीं, 6,000/-, ब्यूटी पार्लर/सैलून व्यवसायी, अपना मकान (दिल्लीवासी) हेतु योग्य, सुशील, गृहकार्यदक्ष सजातीय कन्या चाहिए. लिखें: वि.नं. 796, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25, 168 सें.मी., बीसा, अग्रवाल, मंगली, निजी उत्तम व्यवसायी, उत्तर प्रदेश निवासी, ग्रेजुएट युवक हेतु पारिवारिक, मंगली वधू चाहिए. संपूर्ण विवरण जन्मपत्री सहित लिखें: वि.नं. 876, सरिता, नई दिल्ली-110055.

29, 168, 2,000/-, बी.काम., प्रजापति, दिल्ली निवासी युवक हेतु सुंदर, सुशील कन्या चाहिए. लिखें: वि.नं. 877, सरिता, नई दिल्ली-110055.

ओसवाल जैन, 25/181 सें.मी., एम.काम., व्यवसायी, स्मार्ट युवक हेतु अति सुंदर, लंबी, शिक्षित, स्लिम, गृहकार्यनिपुण, मृदु स्वभाव वाली वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 878, सरिता, नई दिल्ली-110055.

प्रतिष्ठित दिल्ली निवासी, माहेश्वरी, 24 वर्षीय, 160 सें.मी., मैट्रिक पास, लाखों की अचल संपत्ति का मालिक, अति सफल कपड़ा व्यवसायी (गुजरात में भी बड़ा कारोबार) हेतु माहेश्वरी, अग्रवाल, वैश्य जाति की सुंदर, सुशील कन्या (दहेज नहीं) चाहिए. कैलशियम की कमी की वजह से लड़के का 3-4 माह में एक बार सिरगा का दौरा आता है, [illegible] 879, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माहेश्वरी, मंगलीक, 26 वर्षीया, 165, एम.ए., 5,000/- मासिक, जयपुर निवासी, प्रतिष्ठित व्यवसायी युवक हेतु सुंदर, सुशिक्षित, गृहकार्यदक्ष, माहेश्वरी वधू चाहिए. जाखोटिया एवं अजमेरा खापें छोड़ कर, संपूर्ण विवरण लिखें: वि.नं. 880, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अनुसूचित जाति (धोबी), आई.पी.एस. (भारतीय पुलिस सेवा), 26/169/4,600/-, रूपवान युवक हेतु सुंदर, सुशिक्षित, लंबी, गोरी वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 881, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26, 176, 4,000/-, श्वेतांबर, जैन, निजी इलेक्ट्रोनिक व्यवसाय, निजी दुकान, मकान, प्लाट, सुदृढ़ आर्थिक स्थिति, हेतु कन्या चाहिए. संभ्रांत, शाकाहारी, अजैन परिवार स्वीकार्य. लिखें: वि.नं. 882, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गाजियाबाद निवासी, 28 वर्षीया, रामगढ़िया, क्लीन शेव सिख, बी.काम. पास, एकाउंटेंट, मासिक आय चाय अंकीय, सुंदर वर हेतु सुंदर कन्या चाहिए. प्राथमिकता बैंक इंप्लाई/टीचर. लिखें: वि.नं. 883, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कान्यकुब्ज (ब्राह्मण), 32, एम.एस., एम.सी.एच. डाक्टर युवक हेतु वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 884, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माहेश्वरी, 24, 175, इंटर, गेहुआं, निजी व्यवसायरत युवक हेतु गृहकार्यदक्ष, लंबी कन्या चाहिए. प्रथम बार सविवरण लिखें: वि.नं. 885, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अग्रवाल, 25/179, पोस्ट ग्रेजुएट, सिविल इंजीनियर, स्मार्ट, प्रथम श्रेणी रेलवे आफीसर हेतु सुंदर, सुशिक्षित वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 886, सरिता, नई दिल्ली-110055.

21, 180, 1,500/-, गोरा, शिक्षित, चौहान, गाजियाबाद हेतु शिक्षिता, खूबसूरत, लंबी, स्लिम, सजातीय, नजदीकी कन्या चाहिए. लिखें: वि.नं. 887, सरिता, नई दिल्ली-110055.

चार्टर्ड एकाउंटेंट, 27, लंबे, संपन्न, तेज तथा सजीले, दुर्घटनावश केवल दौड़ने में असमर्थ, जैन नवयुवक हेतु आकर्षक वधू चाहिए. कोई बंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 888, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अग्रवाल बंसल, मंगली, 26, 173, इंटरमीडिएट, बुलंदशहर में अपना निजी व्यवसाय, उच्च आय, प्रतिष्ठित व्यवसायी परिवारीय, सुंदर युवक हेतु सुंदर, सुशिक्षित, गृहकार्यदक्ष, सजातीय कन्या चाहिए. लिखें: वि.नं. 889, सरिता, नई दिल्ली-110055.

धोबी, 26/180 सें.मी., स्मार्ट, इंजीनियर, कार्यरतार्थ सजातीय वधू लिखें: वि.नं. 890, सरिता, नई दिल्ली-110055.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अग्रवाल, 28/169/3,000/-, राजकीय पशु-चिकित्सा अधिकारी, पश्चिमी उत्तर प्रदेश निवासी हेतु उच्च शिक्षित, लंबी, आकर्षक कन्या चाहिए. सभी वैश्य व जैन स्वीकार्य, प्रथम बार में पूर्ण विवरण सहित लिखें: वि.नं. 891, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26½, शासकीय सेवारत इंजीनियर, कुर्मी हेतु सुंदर, गौरवर्ण, उच्च शिक्षित वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 892, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जाट सिख, 30 वर्षीया, ग्रेजुएट, आर. एम.पी. डाक्टर, लाखों रुपए की निजी जमीनजायदाद, युवक हेतु सुंदर, सुशील, शिक्षित, गृहकार्य में दक्ष कन्या चाहिए कोई बंधन नहीं. विज्ञापन उत्तम चयन हेतु. लिखें: वि.नं. 893, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24/178/10,000/-, अग्रवाल, बी.काम., लखानी डिस्ट्रीब्यूटर, आकर्षक व्यक्तित्व, गौरवर्ण युवकार्य सुंदर, शिक्षित, गृहकार्यदक्ष, सजातीय वधू. विज्ञापन उत्तम चयनार्थ. प्रथम बार सविवरण लिखें: वि.नं. 894, सरिता, नई दिल्ली-110055.

महेश्वरी युवक गोरा, आकर्षक, 28/163, एम.ए., एम.काम., एक पैर व हाथ पोलियो प्रभावित, चलने व अपना संपूर्ण कार्य करने में सक्षम, निजी स्वतंत्र उत्तम व्यवसाय व मकान हेतु अग्रवाल/महेश्वरी वधू चाहिए. पूर्ण विवरण सहित संपर्क करें. लिखें: वि.नं. 895, सरिता, नई दिल्ली-110055.

हैहय क्षत्रिय, जायसवाल, 27/170/4,500/-, इंजीनियर, युवक हेतु सुंदर, सुशिक्षित, प्रतिष्ठित परिवारीय, सजातीय कन्या चाहिए. लिखें: वि.नं. 896, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सुंदर, आकर्षक व्यक्तित्व वाले द्वितीय श्रेणी अधिकारी, जायसवाल युवक (25, 180) हेतु सजातीय, शिक्षित, विनम्र, गृहकार्यदक्ष वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 897, सरिता, नई दिल्ली-110055.

धूसिया (अनुसूचित जाति), 28 वर्षीया, 170 सें.मी., राष्ट्रीयकृत बैंक कर्मी, आय 4,000/- रु. मासिक, निजी मकान, आकर्षक व्यक्तित्व, प्रतिष्ठित परिवारीय युवक हेतु (धूसिया, जाटव या अन्य अनुसूचित जाति) की सुंदर, सुशिक्षित वधू चाहिए. दहेजबंधन नहीं. शीघ्र विवाह. लिखें: वि.नं. 898, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अनुसूचित जाति (रविदास), 23 174 सें.मी., 2,300/-, डिप्लोमा विद्युत, इंजीनियरिंग, सरकारी नौकरी, रंग गेहुआं, मूल निवासी उ.प्र., अब मध्य प्रदेश स्थापित युवक हेतु सुंदर, शिक्षित वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 899, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28 वर्षीय, विश्वकर्मा (बढ़ई), 169 सें.मी., गेहुआं, प्रथम कक्षा से मैट्रिक तक विदेश में शिक्षित असफलता के कारण शिक्षा समाप्त, उत्तर बिहार में मध्यम वर्ग की खेती, संपन्न परिवार के युवक हेतु 22-25 वर्षीया, 154-160 सें.मी., शिक्षित, गृहकार्य में निपुण, सुंदर एवं गोरी, सजातीय कन्या चाहिए. लड़के के माबाप विदेश में हैं एवं पटना या रांची में बसना चाहते हैं. कृपया लिखें: L.B. THAKUR. P.O. BOX 179, GABORONE. BOTSWANA.

दिगंबर जैन खंडेलवाल जातीय, स्नातक परीक्षा पास, स्वस्थ, सुंदर, 26/170, प्रतिष्ठित घराने के जयपुर निवासी लड़के हेतु सुंदर, सुशील, स्नातक परीक्षा उत्तीर्ण सजातीय कन्या चाहिए. निजी व्यवसाय, मकान, आफिस, मासिक आय 5 अंकों में, विवाह स्तरीय, किंतु दहेज का बंधन नहीं. शीघ्र पत्रव्यवहार करें. लिखें: वि.नं. 900, सरिता, नई दिल्ली-110055.

राजपूत, 34/179/7,000/- मासिक/लैंडलार्ड, व्यवसायरत, ग्रेजुएट, तलाकशुदा, निस्संतान, उच्च खानदान के स्मार्ट युवक हेतु स्मार्ट, स्वजातीय कन्या की आवश्यकता. एक ही बार में संपूर्ण विवरण लिखें: वि.नं. 901, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24 वर्षीया, 168 सें.मी., जायसवाल, स्वस्थ, स्मार्ट, सुव्यवस्थित युवक हेतु सुंदर, शिक्षित, व्यावसायिक, गायिका कन्या चाहिए. लिखें: वि.नं. 902, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अहिरवार (चमार), 26/160/1,800/-, बड़ौदा रेलवे तृतीय श्रेणी कार्यरत हेतु जातीय, सुयोग्य, मैट्रिक पास वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 903, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28 वर्षीया, ब्राह्मण, एम.ए., एलएल.बी. (अध्ययनरत), हैंडसम, स्मार्ट, बस ओनर, हेतु अति सुंदर, हंसमुख, व्यवहारकुशल, सजातीय वधू चाहिए. संपन्न प्रतिष्ठित, सीमित परिवार, पिता राजपत्रित अधिकारी. लिखें: वि.नं. 904, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कोयला खान में कल्याण अधिकारी पद पर सेवारत नवयुवक, 30, 5½, 2,775/-, हेतु सुयोग्य, सुंदर वधू चाहिए. जातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 905, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अग्रवाल (गोयल), 24, 175, 2,000/-, दिल्ली, सरकारी सेवारत, गोरा रंग, स्मार्ट, आकर्षक व्यक्तित्व, स्वयं निर्णायक हेतु दिल्ली में सरकारी सेवारत, गोरी, सुंदर, सुयोग्य वधू. जातिबंधन नहीं, दहेजरहित विवाह, पूर्ण विवरण लिखें: वि.नं. 906, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28/165, हैंडसम, गौरवर्ण, अनुसूचित जाति, असिस्टेंट इंजीनियर (मध्यप्रदेश विद्युत मंडल) हेतु सुंदर, स्लिम, गोरी, सुशिक्षित कन्या चाहिए. लिखें: वि.नं. 907, सरिता, नई दिल्ली-110055.

बिंद (निषाद), 31 वर्षीय, 158 सें.मी., स्नातक, रेलवे में स्टेनो हेतु शिक्षित, सुंदर, सजातीय/उपजातीय कन्या चाहिए. लिखें: वि.नं. 908, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24, 160, अग्रवाल, शासकीय सेवारत वर हेतु सुंदर, शासकीय सेवारत कन्या को प्राथमिकता. लिखें:

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वि.नं. 909, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जैन, 25/168 सें.मी., ग्रेजुएट, सुंदर, स्वस्थ, उच्चस्तरीय व्यापार, अपना मकान, कार, जायदाद, हेतु सुंदर, सुशील, घरेलू, जैन/अग्रवाल कन्या चाहिए. लिखें: वि.नं. 910, सरिता, नई दिल्ली-110055.

मित्तल, 26/165/5,000/-, स्वयं व्यवसाय रेडीमेड गारमेंट्स, युवक हेतु सुंदर, सुशिक्षित, गोरी, घरेलू वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 911, सरिता, नई दिल्ली-110055.

तेली साह, 48 वर्षीय, स्मार्ट, इंटरनेशनल सर्विस, मासिक आय पांच अंकीय, निजी संपत्ति और मकान, विभिन्न गांव एवं शहर में, विधुर हेतु खुले विचार, ऊंचे परिवारीय जो नेपाल और भारत के बिहार से संबंधित रहनसहन में रहना चाहती हो, जीवनसाथी बनने के लिए फोटो सहित एक ही बार में संपूर्ण विवरण लिखें: सीताराम, पोस्ट बाक्स नं. 3751, काठमांडू, नेपाल.

बीसा अग्रवाल गर्ग, 22/168, गौरवर्ण, अंडर ग्रेजुएट, थोक दवा व्यवसाय से मासिक आय पांच अंकीय, एक मात्र पुत्र हेतु सजातीय, सुंदर एवं गृहकार्यदक्ष वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 912, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26 वर्षीया, 160 सें.मी., बी.एससी.-I पास, मैकेनिकल इंजीनियरिंग में डिप्लोमा, जूनियर इंजीनियर के पद पर कार्यरत, पासी युवक हेतु न्यूनतम मैट्रिक, गृहकार्यदक्ष कन्या चाहिए. लिखें: वि.नं. 913, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कश्यप राजपूत (महरा, काहर, धीवर), 24/175, सुंदर, स्नातक, व्यवसायी, मासिक आय 6,000/-, हेतु सुंदर, शिक्षित वधू चाहिए. पिता अवकाशप्राप्त राजपत्रित अधिकारी, भाई इंजीनियर, दिल्लीवासी, निजी निवास. लिखें: वि.नं. 914, सरिता, नई दिल्ली-110055.

वैश्य, 29, 165, 8,000/-, मैट्रिक, निजी व्यवसायरत, पिता विदेशी प्रतिष्ठान में उच्च अधिकारी, प्रतिष्ठित परिवार के युवक के लिए संभ्रांत परिवार की योग्य कन्या चाहिए. लिखें: वि.नं. 915, सरिता, नई दिल्ली-110055.

37, 170, 4,000/-, मिडिल, गेहुआं, अविवाहित, पंजाबी, (कारीगर स्वर्ण आभूषण निजी व्यवसाय, लखनऊ), परिवार से संबंध रहित, परिवार पंजाब में, छोटे भाईबहन शादीशुदा, मकान, पूंजीपति नहीं, हेतु स्वस्थ, आकर्षक वधू, दहेज, जातिबंधन नहीं, प्राथमिकता निस्संतान विधवा. लिखें: वि.नं. 916, सरिता, नई दिल्ली-110055.

यादव, 28, 175, 2,800/-, एम.काम., केंद्रीय सरकार कर्मचारी हेतु गृहकार्यदक्ष, शिक्षित कन्या चाहिए. लिखें: वि.नं. 917, सरिता, नई दिल्ली-110055.

स्थानकवासी जैन, बड़े साजन, साधन संपन्न, प्रतिष्ठित परिवार, निजी व्यवसाय, आरोग्य शरीर, 47, विधुर हेतु निस्संतान जीवनसंगिनी चाहिए. लिखें: वि.नं. 918, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26/158, बी.ए. प्रथम वर्ष, गेहुआं, स्वस्थ, बेरोजगार युवक हेतु वधू चाहिए. विधवा, विकलांग स्वीकार्य. नेत्रहीन को प्राथमिकता. लिखें: वि.नं. 919, सरिता, नई दिल्ली-110055.

चौहान, 25, 183, मैकेनिकल इंजीनियर, स्लिम, स्मार्ट, निर्व्यसनी, प्रतिष्ठित परिवार, हेतु वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 920, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जायसवाल, 28 वर्षीया, 180 सें.मी., गोरे, स्नातक, मासिक आय पांच अंकीय, इस समय अमरीका पर्यटन पर, हेतु सुंदर, सुशील, सुशिक्षित (स्नातक), स्लिम, गृहकार्यदक्ष, जायसवाल/हैहेय क्षत्रिय कन्या चाहिए, प्रतिष्ठित परिवार, विज्ञापन उत्तम चयन हेतु. संपूर्ण विवरण लिखें: वि.नं. 921, सरिता, नई दिल्ली-110055.

मित्तल, 28/162/5,000/-, ग्रेजुएट, व्यापार, स्मार्ट, हल्का मंगली युवक हेतु वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 922, सरिता, नई दिल्ली-110055.

23, 180, 3,000/-, त्रिवर्षीय डिप्लोमा, मैकेनिकल, निजी मकान (आगरा), स्कूल मैनेजर, सक्सेना युवक हेतु कायस्थ वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 923, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माहेश्वरी, 26, 170 सें.मी., 3,000/-, बी.काम., प्रतिष्ठित परिवार, युवक के लिए सुंदर, सुशील वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 924, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अग्रवाल (गर्ग), 26/165, एम.एससी., बी.एड., आकर्षक व्यक्तित्व, गोरा, सुंदर, निजी व्यवसाय, अच्छी आय (मलकापुर-महाराष्ट्र) स्थित युवक हेतु शिक्षित, गौरवर्ण, सुंदर, गृहकार्यदक्ष, प्रतिष्ठित परिवारीय, सुयोग्य वधू चाहिए. जन्मपत्री सहित लिखें: वि.नं. 925, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अग्रवाल गोत्र मंगल, 24, 160, हायर सेकंड्री, साड़ी व्यापारी, संयुक्त परिवारीय, आकर्षक व्यक्तित्व, सुंदर युवक हेतु सुंदर, सुशील, शिक्षित, गृहकार्यदक्ष कन्या चाहिए. लिखें: वि.नं. 926, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26 वर्षीय, 170 सें.मी., हरियाणवी, गौड़ ब्राह्मण, स्वस्थ, सुंदर, केंद्रीय कर्मचारी, मासिक वेतन 3,200/-, युवक हेतु अति सुंदर वधू चाहिए. देहली तथा आसपास को प्राथमिकता, लड़का देहली में अकेला रहता है. निजी प्लाट एवं फ्लैट, अतिरिक्त किराया आमदनी, पूर्ण विवरण प्रथम बार लिखें: वि.नं. 927, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जायसवाल, ग्रेजुएट, 27/180, आकर्षक, स्वव्यवसायरत हेतु गोरी, लंबी, शिक्षित, शाकाहारी वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 928, सरिता, नई दिल्ली-110055.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निजी जायदाद हेतु [illegible] सुखमय भविष्य, जातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 929, सरिता, नई दिल्ली-110055.

29, आठवीं पास, 1,500/-, मजदूर ट्रक ड्राइवर, मध्य प्रदेश निवासी, घरजंवाई बनाने के इच्छुक लिखें: वि.नं. 930, सरिता, नई दिल्ली-110055.

बिहारी, 27/170/2,000/-, इंटर, गेहुआं, दिल्ली कार्यरत युवक हेतु साधारण परिवारीय उचित जीवनसाथी चाहिए. घरजंवाई इच्छुक भी लिखें. स्वनिर्णायक, सादा विवाह. लिखें: वि.नं. 931, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26/163/5,000/-, एम.ए., गोरा, स्मार्ट, व्यवसायी, हैदराबाद निवासी हेतु 18-22 वर्षीया ग्रेजुएट, गोरी, सुंदर, स्लिम, सुशील कन्या चाहिए. दहेजबंधन नहीं. शीघ्र विवाह. लिखें: वि.नं. 932, सरिता, नई दिल्ली-110055.

दृष्टिहीन, 40, 165, 2,500/-, एम.ए., बैंक सेवारत, कुमाऊंनी राजपूत, धर्मबंधन नहीं, सुशिक्षित, नेत्रवान वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 933, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25/168/3,500/-, कुशवाहा क्षत्रिय, कार्यरत इंजीनियर हेतु सजातीय, सुशिक्षित, सुंदर कन्या चाहिए. सविवरण लिखें: वि.नं. 934, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सुसंस्कृत, प्रोफेशनल, 39, स्नेहिल एवं दयालु, कनाडा में सुस्थापित, मूल निवासी दिल्ली, हेतु उदार विचारधारा, मेधावी एवं गुणवान वधू, बंधन नहीं. कृपया लिखें: DEV, 3G ARNOLD DRIVE, NEPEAN, ONTARIO, CANADA K2H6V6.

कान्यकुब्ज ब्राह्मण, 25/175/2,400/-, एम.ए., ओरिएंटल इंश्योरेंस सेवारत, दिल्लीवासी युवक हेतु सजातीय वधू चाहिए. सेवारत को प्राथमिकता. दहेजरहित साधारण विवाह. जन्मकुंडली सहित लिखें: वि.नं. 935, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24/168 सें.मी., बी.कम. (बंबई), मासिक आय पांच अंकीय, यदुवंशी, स्वस्थ, सुंदर, कंस्ट्रक्शन व्यवसाय में सर्व संपन्न, महत्त्वाकांक्षी, उत्तरप्रदेशीय, संभांत व सुशिक्षित परिवार से संबद्ध बंबई में स्वव्यवसायरत, आकर्षक युवक हेतु सुंदर, स्लिम, सजातीय, सुशिक्षित, मृदुभाषी, गोरी, आकर्षक, अच्छे परिवारीय संबंधित कन्या चाहिए. प्रथम संदर्भ में विस्तृत विवरण भेजें. कन्या सर्वोपरि, जाति/दहेजरहित भी विचारणीय. लिखें: वि.नं. 936, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26/170 सें.मी., मूकबधिर, मैट्रिक शिक्षित, आय पांच अंकीय, यदुवंशी, स्वस्थ, सुंदर, स्पोर्ट्समैन, स्वयं का जैरोक्स एवं भागीदारी व्यवसाय, संयुक्त परिवार में बंबई स्थित, उत्तरप्रदेशीय संभ्रांत परिवार [illegible] अन्य सुंदर, स्लिम, समझदार, अल्पशिक्षित, सामाजिक, सजातीय अथवा अन्य जातीय संभ्रांत व शिक्षित परिवारीय कन्या चाहिए. दहेज/जातिबंधन नहीं. कन्या सर्वोपरि, शीघ्र विवाह हेतु प्रथम संदर्भ में ही विस्तृत विवरण लिखें: वि.नं. 937, सरिता, नई दिल्ली-110055.

पासी, 23, 169, स्मार्ट, जूनियर इंजीनियर, सरकारी विभाग, युवक हेतु सुंदर, शिक्षित, गृहकार्यदक्ष, सजातीय कन्या चाहिए. शीघ्र विवाह. पूर्ण विवरण सहित लिखें. पिता आफिसर. लिखें: वि.नं. 938, सरिता, नई दिल्ली-110055.

दृष्टिहीन नवयुवक, एम.ए., बी.एड., 28, 169, (दिल्ली), सरकारी अध्यापक, रंग गोरा, आकर्षक, व्यक्तित्व, 15 बीघा अचल संपति, चल संपति 75,000/-, हेतु बंधन रहित, सुशिक्षित वधू. शीघ्र विवाह. लिखें: वि.नं. 939, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कायस्थ, 30 वर्षीय, पीएच.डी. अंगरेजी, भाई 24 वर्षीय, मैट्रिकुलेट, दोनों भाई निजी आयुर्वेद संबंधित व्यवसायरत हेतु गौरवर्ण पतली, गृहकार्यदक्ष कन्याएं चाहिए. मान्यता प्राप्त आयुर्वेद संस्थान शिक्षिता को वरीयता. जातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 940, सरिता, नई दिल्ली-110055.

ब्राह्मण, 36/170, उच्च अधिकारी, निजी फर्म, गोरा, सुदर्शन, तलाकशुदा, एक मात्र पुत्र (एक मात्र लड़का मातापिता के साथ), पिता डाक्टर, माता अध्यापिका, निजी संपत्ति, हेतु निस्संतान विधवा, तलाकशुदा भी मान्य, जातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 941, सरिता, नई दिल्ली-110055.

38, 175,4,000/-, संपन्न, वियुक्त हेतु धर्म, जातिबधंन रहित, सुंदर, स्वस्थ, सुशिक्षित, 45 वर्ष तक की, दिल्ली के नजदीक, तलाकशुदा, परित्यक्ता या बांझ पत्नी चाहिए जो सहभागिता के आधार पर संभ्रांत, सुविधायुक्त ग्रामीण अंचल में नर्सरी स्कूल को स्वतंत्रता व साहसपूर्वक चला सके. लिखें: वि.नं. 942, सरिता, नई दिल्ली-110055.

दृष्टिहीन, 26, 155, 1,500/-, सीनियर सेकंड्री पास, राजकीय विद्यालय में सहायक अध्यापक हेतु विधवा, तलाकशुदा, सुयोग्य वधू चाहिए. आंशिक विकलांग भी स्वीकार्य. लिखें: वि.नं. 943, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सुस्थापित, खूबसूरत, माहेश्वरी, 24, 177, बी.काम. आनर्स, न्यू अलीपुर कलकत्ता में अपना निजी व्यवसाय एवं मकान, हेतु शिक्षित, लंबी, गोरी, खूबसूरत वधू. प्राथमिकता संभ्रांत परिवारीय, माहेश्वरी कन्या. पूर्ण बायोडाटा प्रथम बार में. विज्ञापन उत्तम चयन हेतु. लिखें: वि.नं. 944, सरिता, नई दिल्ली-110055.

38/173, गुरसिख, इंजीनियर क्लास-I, केंद्रीय सेवारत, जयपुर हेतु मेडिको, आर्किटेक्ट वधू. लिखें:

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वि.नं. 945, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25, 175, बी.एससी., [illegible], मांगलिक, सुशील, इकहरा, कपड़ा व्यवसायी युवक हेतु सुशील, सुशिक्षित, सहृदय, मांगलिक, इकहरी वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 946, सरिता, नई दिल्ली-110055.

163, 1,800/-, 28 वर्षीय, 8 चश्माधारी, दुबलापतला, नेपाल के साधारण परिवार हेतु जीवनसाथी चाहिए. असहाय भी सोचसमझ कर पत्र लिखें: वि.नं. 947, सरिता, नई दिल्ली-110055.

30, 165 सें.मी., बीसा अग्रवाल (गोयल), बी.काम., देहली निवासी, व्यावसायिक, सुंदर, आकर्षक, मासिक आय पांच अंकीय, युवक हेतु सजातीय, ग्रेजुएट, सुंदर, गृहकार्यदक्ष वधू चाहिए. दहेज नहीं. लिखें: वि.नं. 948, सरिता, नई दिल्ली-110055.

शाकाहारी, सदाचारी, सुनियोजित परिवार संचालन के लिए उत्तर बिहारवासी, उच्च वेतनभोगी, स्वस्थ ब्राह्मण, विधुर को सुशिक्षित, व्यवहार कुशल, लगभग पचास वर्षीया गृहलक्ष्मी चाहिए. सविस्तार लिखें: वि.नं. 949, सरिता, नई दिल्ली-110055.

धोबी, 29/175/2,300/-, एवं 27/165/2,500/-, स्नातक, सार्वजनिक प्रतिष्ठान में कार्यरत, संभ्रांत परिवार के स्मार्ट युवकों हेतु सुंदर, गोरी, शिक्षित वधुएं चाहिए. सेवारत भी लिखें: वि.नं. 950, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मी क्षत्रिय, 31, 167, 5,000/-, पीएच.डी. कैमिस्ट्री, एम.बी.ए. अध्ययनरत, दिल्ली निवासी, अपना मकान, उच्च परिवारीय युवक हेतु वधू. लिखें: वि.नं. 951, सरिता, नई दिल्ली-110055.

श्रीवास्तव कायस्थ, 27, 164, 2,200/-, बी.ए., एलएल.बी., निजी संस्था में वरीय बिक्री कर्मचारी हेतु सुंदर, सुशिक्षित वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 952, सरिता, नई दिल्ली-110055.

पश्चिम उत्तरप्रदेशीय प्रतिष्ठित परिवारीय अग्रवाल गर्ग, 26, 180, बी.काम., एलएल.बी., निजी व्यवसाय, मासिक आय पांच अंकीय, आकर्षक युवक हेतु आकर्षक, सुशील, घरेलू, गृहकार्यदक्ष, लंबी वधू चाहिए. प्रथम बार में संपूर्ण विवरण. लिखें: वि.नं. 953, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मी क्षत्रिय, 27, स्नातक, दिल्ली निवासी, समृद्ध अच्छे पढ़ेलिखे परिवारीय युवक हेतु घरेलू लड़की चाहिए. जिस के अभिभावक नौकरी/व्यवसाय लगा सकें. जातिबंधन विशेष नहीं, दिल्लीवासी को प्राथमिकता. लिखें: वि.नं. 954, सरिता, नई दिल्ली-110055.

33, 169, 4,000/-, स्टेट बैंक कार्यरत, छत्तीसगढ़वासी, पंकराकवर युवक हेतु सजातीय, सुंदर, सुशिक्षित वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 955, सरिता, नई दिल्ली-110055.

वरवधू चाहिए

कान्यकुब्ज ब्राह्मण, जूनियर इंजीनियर, 27/177/3,500/-, हेतु सुशील, पतली, लंबी, कम से कम स्नातक या जूनियर इंजीनियर वधू चाहिए. एम.ए., बी.एड., 23/168, गेहुआं, पब्लिक स्कूल नियुक्त पुत्री हेतु सुस्थापित, लंबा वर चाहिए, इंजीनियर परिवार, पिता संयुक्त निदेशक. लिखें: वि.नं. 956, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गोद विज्ञापन

1½ वर्षीया, सुंदर कन्या को गोद लेने के इच्छुक संपन्न, निस्संतान दंपती कृपया लिखें: वि.नं. 957, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मी क्षत्रिय, 29, आठवीं पास, 1,500/-, मजदूर ट्रक ड्राइवर, मध्य प्रदेश निवासी को गोद लेने के इच्छुक लिखें: वि.नं. 958, सरिता, नई दिल्ली-110055.

मेडिकल

प्लास्टिक/कासमेटिक शल्य चिकित्सा व चेहरे के गड्ढे, चेचक दागों को सूई द्वारा स्थायी भरना, अत्यधिक चर्बी सक्शन द्वारा निकालना. केंद्र-11-ए/6, पुराना राजेंद्र नगर, नई दिल्ली. दूरभाष: 5858[illegible]

व्यवसाय

अमरीकन ज्ञान पर अपना नाम, पता, 1,000 उत्तम क्वालिटी गोंद लगे लेबिल छपवा सकते हैं, जिन के बाईं ओर सुनहरे बार्डर, शुल्क रु. 60/-, वी.पी.पी. द्वारा (डाक खर्च अलग), कुलदीप सिंह, 32, दी माल, अमृतसर-143017.

ब्यूटी कलचर

अनावश्यक बालों का इलाज, जड़ीबूटी युक्त प्रसाधन के अतिरिक्त, केवल महिलाओं के लिए शरीर के अनावश्यक बालों के स्थायी निस्तारण हेतु पीड़ाहीन एवं कम खर्चीले इलेक्ट्रोलिसिस इलाज के लिए समयादेश ले कर संपर्क करें: डा. (मिसेज) सविता ए. शर्मा, न्यू-लुक, बी-2/15, सफदरजंग एन्क्लेव, नई दिल्ली. दूरभाष: 608386. घर: 6863439.

रिक्त स्थान

गृहकार्य हेतु महिला की आवश्यकता है. सभी सुविधाएं व मानसम्मान, अच्छा वेतन, आजीवन कार्य की गारंटी. मिलें/ लिखें: निर्मल कुमार, बी-3, विवेक विहार-I सुपर बाजार के पास. दिल्ली-110095.

11240

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Compiled
1989-2000

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

112802

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri